ॐ

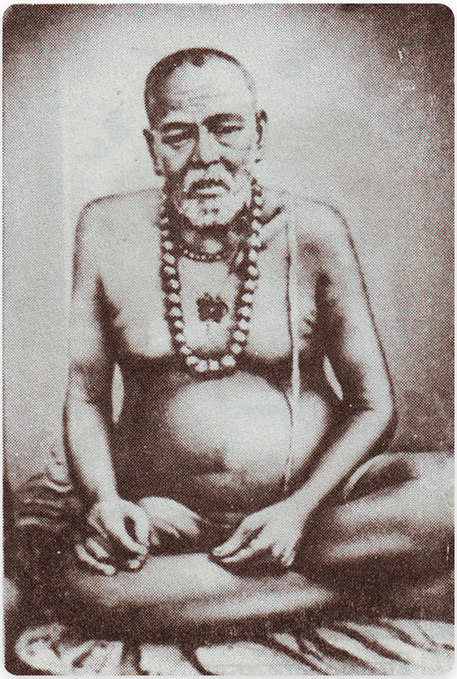


श्री कालभैरव सहस्रनाम हिन्दी में

एक हज़ार पवित्र नाम, हिन्दी अर्थ और सरल व्याख्या के साथ

कालीपुत्र-आशीष

बहुत प्रेम और भक्ति के साथ तैयार किया गया।
हमेशा के लिए मुफ़्त ई-बुक (eBook)
ईश्वरीय ज्ञान सभी के लिए मुफ़्त है।
कृपया इस पवित्र किताब को दूसरों के साथ भी साझा करें।
bhairavakalikenamosthute.com पर उपलब्ध।



अगर आप यहाँ हैं, तो बधाई हो! यह ज्ञान आप तक पहुँचना ही था।

ज्ञान अपना रास्ता उन लोगों तक बना ही लेता है, जिन्हें इसे पाना है।

प्रकृति का यही नियम है, खास तौर पर उनके लिए जो भैरव मार्ग (शक्ति विद्या) पर हैं।

हम आज जो भी हैं, अपने से पहले आए महापुरुषों की वजह से हैं; इसलिए ज्ञान को छुपाकर रखने का कोई मतलब नहीं है।

हम एक-दूसरे को सिखाकर और मदद करके ही बेहतर बन सकते हैं।

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः, जय गुरु बामा खेपा, जय ख्यापा परंपरा।

License & Copyright

About This Work

This compilation has been lovingly created drawing upon traditional sources, scriptural references, and spiritual understanding.

AI Assistance Disclosure

Transcribing and interpreting sacred texts is a monumental task. This work was compiled with the assistance of AI language models, which helped in drafting linguistic elaborations, explanations, and structural formatting. The compiler takes full responsibility for the final content, having reviewed, edited, and curated all material with devotion and care to ensure it aligns with the spirit of the Divine Mother.

Spiritual Disclaimer

This is a devotional text intended for personal study, contemplation, and worship. The interpretations presented represent one understanding of these sacred names and should not be considered the only definitive interpretation. Readers are encouraged to approach this text with reverence and to consult traditional teachers and authentic scriptural sources for deeper understanding.

Accuracy Disclaimer

While every effort has been made to ensure accuracy, the author acknowledges that variations exist across different traditions and lineages. Sanskrit terms often have multiple valid interpretations. This work reflects the compiler's devotional understanding and should not be taken as scholarly or authoritative scripture.

Contact

The compiler, KaliPutra-Ashish, can be verified via Instagram: @ashishkaliputra

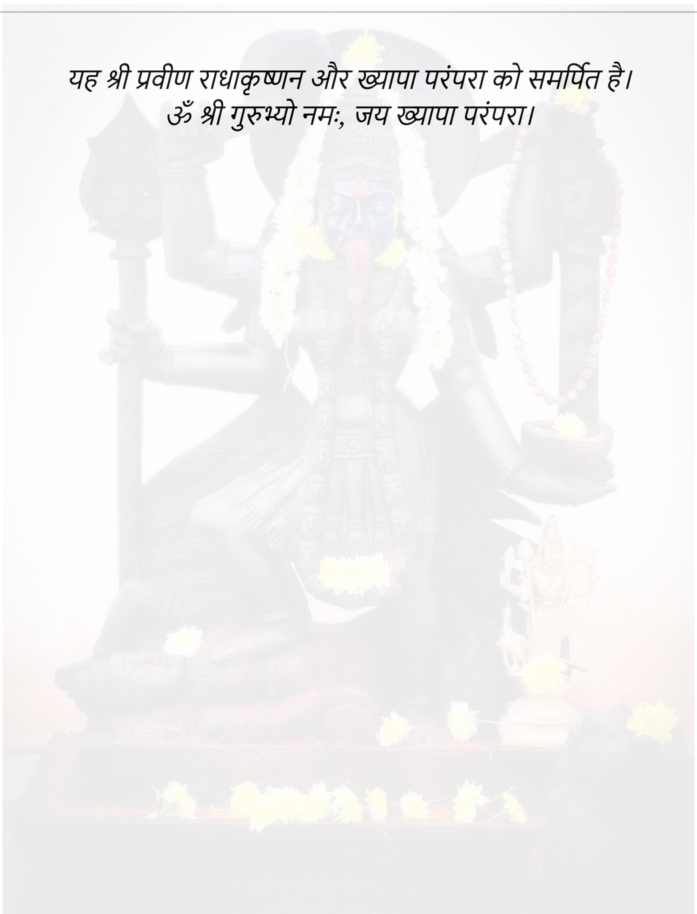
For inquiries: kaliputraashish@gmail.com

Om Shri Gurubhyo Namaha

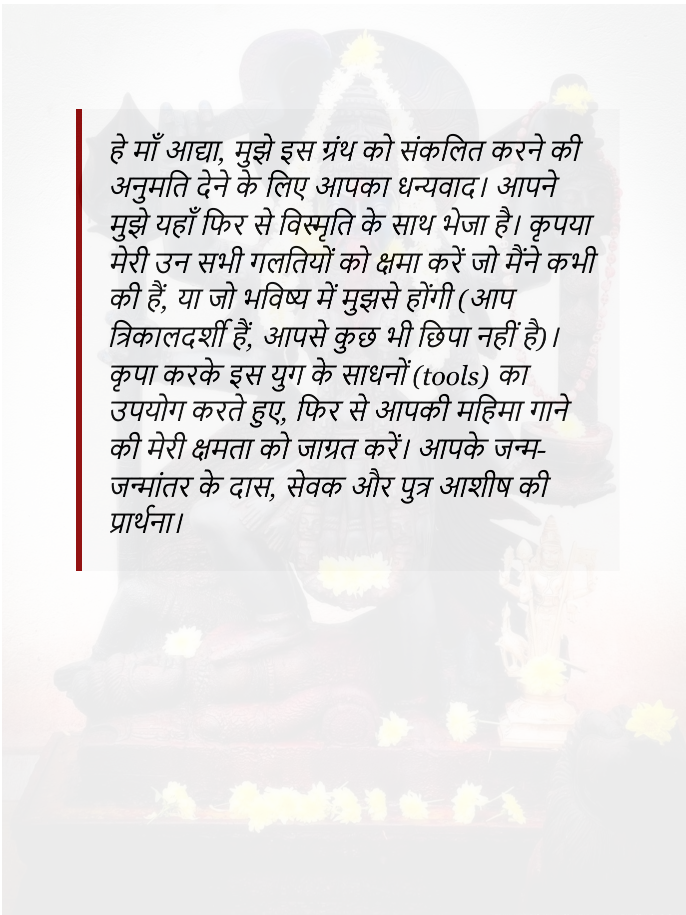
भैरव कालिके नमोस्तुते।
भैरव के माध्यम से ही हम माँ काली को प्राप्त करते हैं।

माँ आद्या महाकाली की ओर अपनी यात्रा, कालभैरव बाबा के १००० नामों के साथ शुरू करें—जो परम दयालु गुरु, भय का नाश करने वाले और हमारे परम रक्षक हैं।

जय माँ कृष्णा • जय माँ आद्या महाकाली • जय कालभैरव



यह श्री प्रवीण राधाकृष्णन और ख्यापा परंपरा को समर्पित है।
ॐ श्री गुरुभ्यो नमः, जय ख्यापा परंपरा।



> *हे माँ आद्या, मुझे इस ग्रंथ को संकलित करने की अनुमति देने के लिए आपका धन्यवाद। आपने मुझे यहाँ फिर से विस्मृति के साथ भेजा है। कृपया मेरी उन सभी गलतियों को क्षमा करें जो मैंने कभी की हैं, या जो भविष्य में मुझसे होंगी (आप त्रिकालदर्शी हैं, आपसे कुछ भी छिपा नहीं है)। कृपा करके इस युग के साधनों (tools) का उपयोग करते हुए, फिर से आपकी महिमा गाने की मेरी क्षमता को जाग्रत करें। आपके जन्म-जन्मांतर के दास, सेवक और पुत्र आशीष की प्रार्थना।*

Table of Contents



95. कपर्दिने
96. कामाशासनाय
97. कुबेरबन्धवे
98. कामात्मने
99. कर्णिकारप्रियाय
100. कपाए
101. कामदेवाय
102. कामपालाय
103. कामिने
104. कान्ताय
105. कृतागमाय
106. कल्याणप्रकृतये
107. कल्पाय
108. कल्पाद्ये
109. कमलेक्षणाय
110. कमण्डलुधाराय
111. केतवे
112. कालयोगिने
113. अकलमषाय
114. कारणाय
115. कारणाय
116. कर्त्रे
117. कैलासपतये
118. ईश्वराय
119. कामभुवे
120. कामदाय
121. अचिन्त्याय
122. किरीटिने
123. कौशिका
124. कपिलाय
125. कुशलाय
126. कर्त्रे
127. कुमाराय
128. कपटाय
129. क्षमाय
130. कलाद्यदशे
131. कलाधाराय
132. कपालकण्ठाय
133. कपालभृते
134. कैलासशिखरावासाय
135. कुबेराय
136. कीर्तिभूषणाय
137. कालज्ञानाय
138. कलावासाय
139. कोपिताय
140. कान्तविग्रहाय
141. कवचीने
142. कंटकिने
143. कार्यकोविद्विक्रमाय
144. कालभक्षाय
145. कालं
146. कारिणे
147. किंकिणीकृतवासुकये
148. गणेश्वराय
149. गौरीशाय
150. गिरीशाय
151. गिरिबाधकाय
152. गिरिधन्वने
153. गुहाय
154. गोप्तृ
155. गुणराशये
156. गुणाकराय
157. गम्भीराय
158. गहनाय
159. गोप्त्रे
160. गायत्रीवल्लभाय
161. गतये
162. ग्रीष्माय
163. गृहपतये
164. गुप्ताय
165. गेयाय
166. गव्यपतये
167. अगाय
168. गणवाहाय
169. गुणग्राहिणे
170. गणनाय
171. गुणराशिमते
172. अग्रगामिने
173. ईश्वराय
174. अरोगिणे
175. खट्वांगिने
176. गगनालयेय
177. अमोघाय
178. अमोघ फलदाय
179. घण्टाराय
180. घटकप्रियाय
181. चन्द्रापीडाय
182. चंद्रमौलये
183. चित्रवेशाय
184. चिरंतनाय
185. चित्तेशाय
186. चित्रबाहवे
187. अचलाय
188. छिन्नसंशयाय
189. चतुर्वेदाय
190. चतुर्बाहवे
191. चतुराय
192. चतुरप्रियाय
193. चामुण्डाजनकाय
194. चण्डाय
195. चलाय
196. क्षणसञ्चलाय
197. अचिन्त्यमहिम्ने
198. अचिंत्याय

199. चराचरचरित्रगाय
200. चंद्रसंजीवनाय
201. चित्राय
202. उमाचार्याय
203. चतुर्मुखाय
204. ओजस्तेजोद्युतिधराय
205. जितकामाय
206. जनप्रियाय
207. अजातशत्रवे
208. ओजस्विने
209. जितकालय
210. जगद्धिताय
211. जमदग्नये
212. जलनिधये
213. जटिलाय
214. जीवितेश्वराय
215. जननाय
216. जनजन्माद्ये
217. अर्जुनय
218. जन्मविज्ञाप्याय
219. जन्माधिपाय
220. जटिने
221. जन्मजरामृत्युभयापहाय
222. जीवितांतकराय
223. ज्येष्ठाय
224. जगन्नाथाय
225. जनेश्वर आय
226. त्रिवर्गसाधनाय
227. तार्क्ष्यय
228. तद्गुणाय
229. तन्तुवर्धनय
230. तपस्विने
231. तारकाय
232. ताराय
233. तीव्राय
234. स्वात्मानिसंस्थिताय
235. तपनाय
236. तापनाय
237. तुष्टाय
238. श्वानयोनये
239. अतन्द्रिताय
240. उत्तरांगाय
241. तिमिरघ्ने
242. व्रतिने
243. वेदाय
244. तनूनपाते
245. अन्तर्हिताय
246. तमिस्राय
247. तेजसे
248. तेजोमयाय
249. स्तन्ये
250. तरुणाय
251. अर्धकाराय
252. तीग्माय
253. तत्त्वाय
254. तत्त्वगृहेचराय
255. तेजोराशये
256. शत्रुबाणाय
257. अतिथये
258. अतिथिप्रियाय
259. आत्मयोगशाय
260. व्यानाय
261. तीर्थदेवमयाय
262. शिवाय
263. स्थानदाय
264. तपनाय
265. स्थाणवे
266. स्थविष्ठाय
267. स्थविराय
268. त्रिलोकेशाय
269. त्रिलोकात्मने
270. त्रिशूलिने
271. त्रिदिशाधिपाय
272. त्रिलोचनाय
273. त्रयीवेद्याय
274. त्रिरवचः स्थाय
275. त्रिवर्गदाय
276. दूराय
277. वादस्थानघ्नाय
278. दुर्दशाय
279. दुस्सहोदयाय
280. पराय
281. देवाय
282. देवदेवाय
283. दुंदुभये
284. दुन्दुभिप्रियाय
285. दृढायुधधारिणे
286. धनदाय
287. दक्षाय
288. दुःस्वप्ननाशनाय
289. दुर्ज्ञेयाय
290. दुर्गमाय
291. दुर्गाय
292. दुरावासाय
293. दुरासदाय
294. दमाय
295. दमयित्रे
296. दान्ताय
297. दात्रे
298. दानाय
299. दयाकराय
300. दुर्वाससे
301. द्विजाय
302. देवकायाय

303. दुर्नीक्ताय
304. दुर्भागोदयाय
305. देहिने
306. दाहाय
307. दानवारये
308. देवेन्द्राय
309. अरिमर्दनाय
310. देवासुरगुरवे
311. देवाय
312. देवासुरनमस्कृताय
313. देवासुरेश्वराय
314. दिव्याय
315. देवासुर महेश्वराय
316. सर्वदेवमयाय
317. दण्डाय
318. नक्षत्राय
319. अक्षराय
320. नक्षत्रमालिकाकेशाय
321. नागहाराय
322. पिनाकधृते
323. व्ययनिर्वाहणाय
324. न्यायिने
325. नभसे
326. न्यायाय
327. निरंजनाय
328. नीरावनाय
329. अतिविज्ञानाय
330. नरसिंहनिपातनाय
331. नन्दिने
332. नन्दीश्वराय
333. नग्नाय
334. नग्नव्रतधाराय
335. नराय
336. निर्ममाय
337. निरहंकाराय
338. निर्मोहाय
339. निरुपद्रवाय
340. निष्कण्टकाय
341. कृतानंदाय
342. निर्ध्यायाय
343. जनार्दनाय
344. अनघाय
345. निष्कलाय
346. निष्ठाय
347. नीलकायाय
348. निरामयाय
349. अनिरुद्धाय
350. अनाद्यंताय
351. नैकात्मने
352. नैकाकर्मकृते
353. नागरेतसे
354. नखिने
355. नन्दीने
356. आनंदवनवर्धनाय
357. योगाय
358. विरागीने
359. वैरागिने
360. त्यागिने
361. गौरीवरंगणाय
362. कम्बुकण्ठाय
363. गृहस्थाय
364. उग्राय
365. चण्डाय
366. अखण्डभृते
367. अन्तकाय
368. ताण्डवाडम्बररुचये
369. रुरुमण्डलमण्डिताय
370. परमेश्वराय
371. पशुपतये
372. पिनाकिने
373. पुरशासनाय
374. पुरास्तुताय
375. देवकीराय
376. परमेष्ठिने
377. परायणाय
378. पञ्चविंशतितत्त्वस्थाय
379. पञ्चजन्तवे
380. प्रभंजनाय
381. मस्करिणे
382. परब्रह्मणे
383. पारिजाताय
384. परात्पराय
385. प्रतिष्ठिताय
386. प्रमाणज्ञाय
387. प्रमाणाय
388. परमार्थदाय
389. पञ्चब्रह्मणे
390. सत्पतये
391. परमात्मने
392. परायणाय
393. पिनाकपाणये
394. प्राम्शवे
395. प्रत्ययाय
396. परवीरघ्ने
397. प्रभाकराय
398. प्रत्यक्षाय
399. प्रणवाय
400. पुरंजयाय
401. पवित्रपाणये
402. पापारये
403. प्रत्यायाचिरशे
404. अपाम निधये
405. पुलस्त्याय
406. पुलहाय



407. अगस्त्याय
408. पुरुषूताय
409. पुरुषस्तुताय
410. पद्माकराया
411. परस्मैज्योतिषे
412. परापरफलप्रदाय
413. परावरज्ञाय
414. परदाय
415. परशत्रवे
416. परस्मैपदाय
417. पूर्णाय
418. पूरयित्रे
419. पुण्याय
420. पुण्यश्रवणकीर्तनाय
421. पुरंदराय
422. पुण्यकीर्तये
423. प्रमादिने
424. पापनाशनाय
425. परशीलाय
426. परगुणाया
427. प्रादुरागाय
428. पुरन्दराय
429. परार्थव्यक्तये
430. प्रभवाय
431. पुरुषाय
432. पुरुजाय
433. पित्रै
434. पिंगलाय
435. पावनाय
436. प्लक्षाय
437. अतलाय
438. पूषदन्तघ्ने
439. परमार्थगुरवे
440. प्रीतये
441. प्रीतमते
442. पुरातनाय
443. पराशराय
444. पद्मगर्भाय
445. पराय
446. परपुरंजयाय
447. उपप्लवाय
448. उभयाकराय
449. परमार्थैकपण्डिताय
450. महेश्वराय
451. महादेवाय
452. मुद्गलाय
453. मधुराय
454. मृडवे
455. मत्ताशयाय
456. महायोगिने
457. महाकर्मणे
458. महाऔषधाय
459. महर्षये
460. कपिलाचार्याय
461. मृगधाम्ने
462. महालय
463. महानिधये
464. महाभूतये
465. महानितये
466. महामतये
467. महाग्रहाय
468. महागन्त्रे
469. महाभूताय
470. अमृताय
471. यमाय
472. अमृतांशवे
473. अमृतवपुषे
474. मरीचये
475. मोहजालघ्ने
476. महातपसे
477. महाकायाय
478. मृगबाणार्पणाय
479. खलाय
480. महाबलाय
481. महीपाताय
482. महायोगिने
483. महामनसे
484. महामायाय
485. महाशान्ताय
486. मताय
487. नादाय
488. महोत्सवाय
489. मात्सर्यविदे
490. महावीर्याय
491. महाशक्तये
492. महाद्युतये
493. उन्मत्तकीर्तिकृते
494. मत्ताय
495. मघवते
496. अमिताय
497. मताय
498. महाभोगाय
499. अमृताय
500. मन्त्राय
501. मङ्गलाय
502. मङ्गलप्रियाय
503. अमोघदण्डाय
504. मध्यस्थाय
505. महेशाय
506. अमोघविक्रमाय
507. अमेयाय
508. अरिष्टमथनाय
509. मुकुंदाय
510. सर्वपापघ्ने

511. मातामहाया
512. मातरिश्वने
513. मणिपूराय
514. महाशयाय
515. मदघ्ने
516. महागर्भाय
517. महाकल्पाय
518. महाधनुषे
519. मनसे
520. मनोमायाय
521. मानिने
522. मेरुपद्याय
523. मृडाय
524. मानवे
525. महाशोभाय
526. महाज्ञानिने
527. महाकालाय
528. कलिप्रियाय
529. महावटवे
530. महात्यागिने
531. महाकोषाय
532. महागतये
533. शिखण्डिने
534. कवचिने
535. शूलिने
536. जटिने
537. मुंडिने
538. कुण्डलिने
539. मेघमालिने
540. चक्रखड्गिने
541. मालिने
542. मायाय
543. महामनये
544. महेश्वसाय
545. महानन्दाय
546. महाचार्याय
547. महाभुजाय
548. मखकर्त्रे
549. मखध्वंसिने
550. मधुराय
551. मघवतप्रियाय
552. ब्रह्मसृष्टये
553. ब्रह्मवीर्याय
554. बाणहस्ताय
555. अचलाय
556. बलिने
557. कीररूपाय
558. चलाय
559. उन्मादिने
560. ब्रह्मन्याय
561. ब्रह्मवर्चसाय
562. बहुरूपाया
563. बहुमायाय
564. ब्रह्मविष्णुशिवात्मकाय
565. ब्रह्मगर्भाय
566. अक्षराय
567. दम्भाय
568. ब्रह्मज्योतिषे
569. बृहस्पतये
570. बीजबुद्धये
571. ब्रह्मचारिणे
572. ब्राह्मणाय
573. ब्राह्मणप्रियाय
574. युगादिकृते
575. युगावर्ताय
576. युगाध्यक्षाय
577. युगापघ्ने
578. यज्ञाय
579. यज्ञपतये
580. यज्वने
581. यज्ञांगाय
582. यज्ञवाहनाय
583. योगाचार्याय
584. योगिगम्याय
585. योगिने
586. योग्याय
587. योगविदे
588. योगांगाय
589. योगहाराङ्गाय
590. यक्षाय
591. युक्तिमयाय
592. यमाय
593. रौद्राय
594. रौद्रऋषये
595. राहवे
596. रति रत्नाय
597. रणप्रियाय
598. लोकबन्धवे
599. लोकनाथाय
600. लक्षयज्ञाय
601. लक्षणाय
602. लोलमायाय
603. लोककर्त्रे
604. लोक्याय
605. लोलाय
606. ललिताय
607. शरभाय
608. वरदाय
609. वन्याय
610. विदुषे
611. विश्वास्मै
612. महेश्वराय
613. वेदान्तसारसन्दोहाय
614. वितताङ्गाय

615. विशारदाय
616. विश्वमूर्तये
617. वेदवेद्याय
618. वामदेवाय
619. विमोचकाय
620. विश्व रूपाय
621. विरूपाक्षाय
622. वाणीशाय
623. हव्यवाहनाय
624. वृषांगाय
625. विशालाक्षाय
626. विश्वदर्शिने
627. विलोचनाय
628. विशाखाय
629. विश्वस्रिजे
630. विश्वस्मै
631. विजितात्मने
632. अव्ययाय
633. पुम्से
634. व्याघ्रचर्मधृतये
635. व्यापिने
636. वांग्मयीकनिधये
637. विभवे
638. वर्णाश्रमगुरवे
639. वर्णाय
640. वरदाय
641. वायुवाहनाय
642. विश्वकर्मणे
643. विनीतात्मने
644. वेदशास्त्रार्थतत्वविदे
645. वासवे
646. वसुमनसे
647. पालाय
648. विरामाय
649. विद्रुमच्छवये
650. विमोकाय
651. विजयाय
652. विशिष्ठाय
653. वृषवाहनाय
654. विश्वेशाय
655. विविधाय
656. वादिन
657. वेदांगाय
658. वेदविदे
659. मायाय
660. विश्वेश्वराय
661. वीरभद्राय
662. वीरासीनाय
663. विधये
664. विराजे
665. व्यवसायाय
666. व्यवस्थानाय
667. वीरचूडामणये
668. विराजे
669. वालखिल्याय
670. विश्वदेहाय
671. विरामाय
672. वसुदाय
673. वासवे
674. विषेचनाय
675. वेदवेद्याय
676. वेदाय
677. वाचस्पतये
678. वशिन
679. विद्वत्तमाय
680. वित्तमयाय
681. विश्रुतये
682. विमलोदयाय
683. वैवस्वताय
684. वसिष्ठाय
685. विगतज्वराय
686. विश्वहर्त्रे
687. विश्वमोदिने
688. विश्वामित्राय
689. द्विजेश्वराय
690. वीरोत्पत्तये
691. विश्वसाहाय
692. विश्वावासाय
693. वसुश्रवसे
694. वज्रहस्ताय
695. वजररूपाय
696. विपाकाय
697. विश्वकारकाय
698. बृहदश्वाय
699. व्यालकल्पाय
700. विशल्याय
701. लोकशल्यकृते
702. विरूपाय
703. विकृताय
704. वेगिने
705. विरिञ्चये
706. विष्टरश्रवसे
707. अव्यक्तलक्षणाय
708. अव्यक्ताय
709. व्यक्ताय
710. वैश्याय
711. विशांपतये
712. विबुधाग्रेसराय
713. वेदाय
714. विश्वगर्भाय
715. विचक्षणाय
716. विषमाक्षाय
717. विलोमाक्षाय
718. वृषदाय

719. वृषवर्धनाय
720. विविक्तदाय
721. वसन्ताय
722. विवस्वते
723. वितामसे
724. तमसे
725. वेदवेद्याय
726. विश्व रूपाय
727. विविक्ताय
728. विश्वभाजनाय
729. विषयस्थाय
730. विविक्तस्थाय
731. विद्याराशये
732. पतिप्रियाय
733. शिवाय
734. शर्वाय
735. सदाचाराय
736. शम्भवे
737. ईशानाय
738. ईश्वराय
739. श्रुतिधर्मोक्तसंवादिने
740. सहस्राक्षाय
741. सहस्रपादे
742. सर्वज्ञाय
743. सर्वदेवाय
744. शङ्कराय
745. शूलधारकाय
746. शुचये
747. राशिभ्यो
748. स्कंदगुरवे
749. श्रीकण्ठाय
750. सूर्यतापनाय
751. ईशानानिलयाय
752. स्वस्ति
753. सामवेदस्वरूपविदे
754. मानिने
755. सुनीति
756. शुद्धात्मने
757. सोमाय
758. सोमताराय
759. सुखिने
760. सदाशिवाय
761. समावृत्ताय
762. सुक्रीतये
763. छिन्नसंशयाय
764. सर्वकामिने
765. सदावासाय
766. सर्वायुधविशारदाय
767. सुलभाय
768. सूदनाय
769. शुद्धाय
770. शुभांशवे
771. शुद्धविग्रहाय
772. सुवर्णाय
773. स्वाश्रयाय
774. शत्रवे
775. शत्रुजिते
776. शत्रुतापनाय
777. शनये
778. सूर्याय
779. सर्वकर्मणे
780. सर्वलोकप्रजापतये
781. सिद्धाय
782. सर्वेश्वराय
783. स्वस्तये
784. स्वस्तिकृते
785. स्वस्तिभुजे
786. स्वधायै
787. वासवे
788. वसुमनसे
789. सत्याय
790. सर्वपापहराय
791. हराय
792. सर्वादि
793. सिद्धिदाय
794. सिद्धये
795. सर्वावासाय
796. चतुष्पथाय
797. संवत्सरकराय
798. श्रीमते
799. शान्ताय
800. संवत्सराय
801. शिशवे
802. स्पष्टाक्षराय
803. सर्वहारिणे
804. संग्रामय
805. संगमाय
806. प्लवाय
807. इष्टाय
808. विशिष्टाय
809. शिष्टेष्टाय
810. सुलभाय
811. सुलभायनाय
812. सुब्रह्मण्याय
813. सुरगणाय
814. सुशरण्याय
815. सुधापतये
816. शरण्याय
817. शाश्वताय
818. स्कंदाय
819. शिपिविष्टाय
820. शिवाश्रयाय
821. संसारचक्रभृते
822. साराय

823. शंकराय
824. सर्वसाधकाय
825. अस्त्राय
826. शस्त्राय
827. सप्तगनाय
828. सवित्रे
829. सकलागमाय
830. सुचीराय
831. सप्तदोर्वींराय
832. षड्विंशायाय
833. सर्वदृशे
834. स्वाराजे
835. सम्राजे
836. सुषेणाय
837. शत्रुघ्नाय
838. शूरशत्रवे
839. शुभोट्यावाय
840. समर्थाय
841. सुगमाय
842. शुक्राय
843. सद्योगिने
844. सदासन्मयाय
845. शास्त्रनेतृाय
846. सुखश्मश्रवे
847. स्वाधिष्ठानषडाश्रयाय
848. प्रांशवे
849. सप्तपतये
850. वृद्धाय
851. शमनाय
852. शिखिसारथये
853. सुप्रतीकाय
854. सुवृद्धात्मने
855. संसृष्टाय
856. सुखवांग्निधये
857. सुखानिळाया
858. सुसंपन्नाय
859. सुरभये
860. शिशिरआत्मकाय
861. सर्वदेवमयाय
862. शैलाय
863. सर्वशास्त्रप्रभंजनाय
864. शिवालययाा
865. सूर्यरूपाय
866. सहस्रमुखनाशकाय
867. सहस्रबाहवे
868. सर्वेशाय
869. सारमाय
870. सर्वलोकधृते
871. दूत्यांशाय
872. सुरसेव्यमंशाय
873. सर्वदेवोत्तमत्तमाय
874. शिवाध्यानरताय
875. श्रीमते
876. शिखिने
877. श्रीचण्डिकाधिपाय
878. श्मशाननिलायाय
879. सेतवे
880. सर्वदेवाय
881. महेश्वराय
882. सुविष्ठपिने
883. सुराराध्याय
884. सुकुमाराय
885. सुलोचनाय
886. सकलाय
887. सुमताय
888. स्वर्णाय
889. स्वर्मिणे
890. स्वरमथनाय
891. स्वनाय
892. सामगाय
893. सकलाधाराय
894. सामगानप्रियाय
895. शुचये
896. तस्मै
897. ईतिषे
898. सत्कृताय
899. शान्ताय
900. सुभूमये
901. सत्परायणाय
902. श्रीवल्लभाय
903. शिवायंभ्याय
904. शान्तभद्राय
905. समंजसाय
906. सत्यवाचे
907. सात्विकाय
908. सत्याय
909. सर्वजिते
910. श्रुतिसागराय
911. सहस्रार्चिषे
912. सदाजिष्णवे
913. सप्ताये
914. सप्तजनेश्वराय
915. संहारककारणाय
916. शुद्धाय
917. शत्रुघ्नाय
918. स्वर्णदायकाय
919. सुरेशाय
920. शरणाय
921. शर्मणे
922. सर्वस्मै
923. वेदाय
924. सताङ्गतये
925. संवृताय
926. असंवृताय

927. शिल्पिने
928. सिद्धिदाय
929. स्वर्णसिद्धिदाय
930. शांतबुद्धये
931. शुद्धबुद्धये
932. स्त्यवाय
933. स्तोत्रे
934. स्तवप्रियाय
935. रसज्ञाय
936. स्वर्णरूपाय
937. शुद्धाय
938. राज्ञे
939. वषट
940. नमो
941. स्थूलाय
942. सूक्ष्माय
943. सहस्रार्कप्रकाशाय
944. सर्वतोमुखाय
945. सारमेयानुगाय
946. शंभवे
947. प्रेतवाहाय
948. सहस्रकृते
949. ग्रहात्मकाय
950. रुद्ररूपाय
951. वसवष्टस्वर्णकृते
952. वशिने
953. आदित्याय
954. सर्वकर्त्रे
955. सर्वगाय
956. स्वर्णसिद्धिदाय
957. सदारुष्टाय
958. स्वर्णदात्रे
959. घुर्घुराय
960. रक्तलोचनाय
961. पादुकासिद्धिदयाय
962. पाताय
963. पारुष्यविनिषूदनाय
964. अष्टसिद्धये
965. महासद्धये
966. सुप्रसिद्धये
967. स्वर्णदाय
968. भूतवेतालघातिने
969. वेतालानुचराय
970. रवये
971. कालाय
972. कालाग्निरुद्रश्रियै
973. स्वर्णाकर्षणभैरवाय
974. कालमालय
975. कलामालाय
976. त्र्यम्बकाय
977. त्रिपुरांतकाय
978. सर्वाभिचारहन्त्रे
979. परकृत्यनिषूदनाय
980. मंत्रमालिने
981. सर्पमालिने
982. स्वर्णाकर्षण भैरवाय
983. श्रीधराय
984. श्रीकराय
985. श्रीलाय
986. श्रीनिवासाय
987. सदाशिवाय
988. श्रीस्वरूपकृतये
989. श्रीमते
990. श्रीहाराय
991. श्रीमूखाय
992. शिवाय
993. श्रीशान्ताय
994. श्रीवराहाय
995. श्रीनिवासय
996. श्रियाम् वराय
997. स्वर्णदाय
998. सिद्धिदाय
999. सिद्धाय
1000. भक्तानां स्वर्णदायकाय



1. भैरवाय

भयभीत करने वाले और भय को नष्ट करने वाले (भैरव) को नमन।

विस्तार : भैरव (भैरवा) नाम दिव्य के एक विरोधाभासी और भयंकर रूप का प्रतीक है, जो भगवान शिव का एक अवतार या भयंकर अभिव्यक्ति है।

भयंकर और दुर्जेय (उग्र पहलू) (Terrifying and Formidable - The Fierce Aspect) भैरव का शाब्दिक अर्थ "भयानक," "भयंकर," या "दुर्जेय" है। यह काल भैरव के रूप में उनकी अभिव्यक्ति है, जो समय के सर्वोच्च स्वामी हैं। यह भयानक रूप पूर्ण, अथक और अपरिवर्तनीय ब्रह्मांडीय नियम का प्रतीक है। वे विनाश और विनाश की परम शक्ति से जुड़े हैं जो अस्तित्व के प्रत्येक चक्र का समापन करती है, यह सुनिश्चित करते हुए कि अंत में सभी चीजें नष्ट हो जाती हैं। उनका भयानक स्वभाव भौतिक संसार की क्षणभंगुरता की याद दिलाता है।

भय का नाश करने वाला (दयालु पहलू) (Destroying Fear - The Benevolent Aspect) अपने भयावह स्वरूप के बावजूद, उनकी प्राथमिक आध्यात्मिक भूमिका अपने भक्तों के लिए आंतरिक और बाहरी भय को नष्ट करना है। वे साहस और आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करते हैं। यह विनाश दो गुना है: वे बाहरी बुराइयों को पराजित करते हैं और आध्यात्मिक साधक के आंतरिक शत्रुओं, जैसे अहंकार, क्रोध, वासना और लालच को भी नष्ट करते हैं। यह नाम ब्रह्मांडीय प्रक्रिया का भी प्रतीक हो सकता है: भा (सृष्टि), रा (संरक्षण), और वा (विनाश), जो उन्हें सर्वव्यापी परम देवत्व बनाता है।

संरक्षक और दंड देने वाला (Guardian and Punisher) उन्हें अक्सर दंडपाणि (वह जो दंड धारण करता है) कहा जाता है क्योंकि वे पापियों को दंडित करते हैं और पवित्र क्षेत्रों के संरक्षक और रक्षक हैं, जो ब्रह्मांडीय और आध्यात्मिक व्यवस्था सुनिश्चित करते हैं।

2. भूतनाथाय

भूतों और आत्माओं सहित सभी प्राणियों के स्वामी और प्रभु को नमन।

विस्तार : 'भूतनाथ' शब्द 'भूत' और 'नाथ' का एक यौगिक है।

भूत (Bhūta): यह एक बहु-स्तरीय शब्द है जिसका अर्थ है: • सभी जीवित प्राणी (जीव, मनुष्य, पशु)। • मौलिक शक्तियाँ (पंचभूत: पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश)। • आत्माएँ (भूत, तत्व, परिचारक और अशरीरी आत्माएँ)।

नाथ (Nātha): स्वामी, मालिक, रक्षक या संरक्षक।

तत्वों के स्वामी "पंचभूतों के स्वामी" के रूप में, वह उन मूलभूत तत्वों के स्वामी और स्रोत हैं जिनसे संपूर्ण भौतिक ब्रह्मांड बना है। यह उन्हें सभी पदार्थ और ब्रह्मांड में उसकी अभिव्यक्ति का पूर्ण स्वामी बनाता है।

प्राणियों और आत्माओं के स्वामी "सभी जीवित प्राणियों के स्वामी" के रूप में, वह सभी जीवन के परम संरक्षक और रक्षक हैं, ठीक पशुपति (प्राणियों के स्वामी) की तरह। वह सभी सूक्ष्म सत्ताओं के सर्वोच्च सेनापति हैं, जिनमें भूत, आत्माएँ और शिव की सेवा करने वाले दिव्य परिचारक शामिल हैं। यह अधिकार दृश्य और अदृश्य लोकों तक फैला हुआ है।

परम रक्षक वह वह हैं जो इन सभी श्रेणियों (भूतों) की निगरानी और मार्गदर्शन करते हैं। यह नाम एक महान नाथ (रक्षक) के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देता है जो मौलिक, चेतन और आध्यात्मिक दुनिया की निरंतरता और सद्भाव सुनिश्चित करते हैं।

3. भूतात्मने

सभी जीवित प्राणियों की आत्मा और सार के स्वरूप को नमन।

विस्तार : 'भूतात्मा' शब्द एक शक्तिशाली दार्शनिक नाम है जो 'भूत' (प्राणी/तत्व) और 'आत्मन' (आत्मा या स्व) को जोड़ता है।

सार्वभौमिक आत्मा (The Universal Soul) भूतात्मा को "सभी प्राणियों का सार" और "वह एक आत्मा या सार जो सभी प्राणियों में विद्यमान है" के रूप में परिभाषित किया गया है। यह उपनिषदिक अवधारणा का सीधा संदर्भ है कि परम वास्तविकता (ब्रह्म) हर चीज का अंतरतम सार है। वह प्रत्येक प्राणी और मौलिक कण में मौजूद एकमात्र, चेतन जीवन शक्ति है - वह अंतर्निहित आत्मन जो प्रत्येक व्यक्तिगत जीवन को सार्वभौमिक आत्मा से जोड़ता है।

तत्वों का स्व (The Self of the Elements) इस वाक्यांश का अर्थ "तत्वों से बना स्व" (भौतिक शरीर) भी है। उच्चतम अर्थ में, वह "उचित आत्मा" या "परम सत्ता" है जो भौतिक पहचान से पूरी तरह मुक्त है।

आंतरिक वास्तविकता (Inner Reality) भूतात्मा को नमन करना इस बात की स्वीकारोक्ति है कि दिव्य केवल एक दूर के स्वर्ग में बैठा बाहरी स्वामी नहीं है, बल्कि अपने स्वयं के अस्तित्व के मूल में और ब्रह्मांड के हर पहलू के भीतर निवास करने वाली आंतरिक, मौलिक आध्यात्मिक वास्तविकता है।

4. भूतभावनाय

ब्रह्मांड के सभी प्राणियों के निर्माता और पालक को नमन।

विस्तार : भूताभावनाय नाम एक गहरा संस्कृत शब्द है जो भूत और भावना के संयोजन से बना है।

भूत (Bhūta): जैसा कि पहले बताया गया है, यह बहुआयामी शब्द संदर्भित करता है: • सभी जीवित प्राणी (जीव, लोग, जानवर)। • पाँच मौलिक शक्तियाँ (पंचभूत: पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) जो ब्रह्मांड का निर्माण करती हैं। • आत्माएँ, गण और अशरीरी आत्माएँ।

भावना (Bhāvana): इस शब्द का अर्थ है "निर्माता," "पालक," "रक्षक," "उत्पादक," और "वह जो अस्तित्व में लाता है" या "वह जो उत्पन्न करता है।" इसमें विचारशील, जानबूझकर सृजन और निरंतर देखभाल का भाव निहित है।

सभी प्राणियों का निर्माता "सभी भूतों के निर्माता" के रूप में, भगवान कालभैरव सभी जीवन रूपों की अभिव्यक्ति के पीछे परम प्रेरक हैं। उनकी रचनात्मक ऊर्जा ही है जो अनगिनत प्रजातियों और व्यक्तिगत प्राणियों को अस्तित्व में लाती है। इसमें न केवल भौतिक सृजन शामिल है, बल्कि वह सार भी शामिल है जो उन्हें चेतन करता है।

तत्वों का पालक और रक्षक यह शब्द "तत्वों के पालक" के रूप में उनकी भूमिका को भी दर्शाता है। वह केवल प्रारंभिक निर्माता ही नहीं हैं, बल्कि वह सक्रिय शक्ति भी हैं जो पाँच महान तत्वों के संतुलन और निरंतरता को बनाए रखती हैं। उनकी पालन शक्ति के बिना, ब्रह्मांड का ताना-बाना बिखर जाएगा। इसका तात्पर्य पोषण और पुनर्सृजन की एक सतत प्रक्रिया से है जो ब्रह्मांड को व्यवस्थित रखती है।

अस्तित्व के लिए आंतरिक भूताभावनाय इस बात पर जोर देता है कि कालभैरव सभी अस्तित्व का मौलिक कारण और निरंतर समर्थन हैं। वह सृजन से अलग नहीं हैं, बल्कि इसके अस्तित्व के हर पहलू में, इसकी शुरुआत से लेकर इसके निरंतर फलने-फूलने तक, गहराई से शामिल हैं। यह नाम सभी के स्रोत और पोषण के रूप में उनकी सर्वव्यापकता और सर्वशक्तिमानता को उजागर करता है।

5. भूतवासाय

उन प्रभु को नमन जो समस्त अस्तित्व में निवास करते हैं और जिनमें सभी प्राणी निवास करते हैं।

विस्तार : भूतावास (भूतावासाय चतुर्थी विभक्ति में) नाम एक गहरा संस्कृत शब्द है जो "भूत" और "वास" को जोड़ता है, जो भगवान शिव की सर्वव्यापीता के बारे में एक गहरे दार्शनिक सत्य को दर्शाता है, विशेष रूप से उनके भैरव के रूप में।

व्युत्पत्तिगत विश्लेषण :

• भूत (Bhūta): इस बहुआयामी शब्द का अर्थ "प्राणी," "जीव," "तत्व" (पांच आदिम तत्वों: पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश का जिक्र करते हुए), या "जो अस्तित्व में आया है" हो सकता है। इसमें संपूर्ण सृष्टि शामिल है। • वास (Vāsa): इस शब्द का अर्थ "निवास," "रहना," "आवास," या "में उपस्थित होना" है।

सर्वव्यापी निवासी (Omnipresent Dweller):

भूतावास का प्राथमिक अर्थ है "जो सभी प्राणियों में निवास करता है" या "जिसमें सभी प्राणी निवास करते हैं।" यह एक अंतरंग, सर्वव्यापी उपस्थिति पर जोर देता है। कालभैरव केवल एक बाहरी देवता नहीं हैं; वे अंतर्निहित आत्मा हैं, अस्तित्व का मूल आधार हैं।

1. अंतर्व्याप्ति (सभी के भीतर निवास करना) (Immanence (Residing Within All)): यह पहलू कालभैरव को अंतर्निहित वास्तविकता के रूप में घोषित करता है। वे जीवन शक्ति, चेतना और शासी सिद्धांत हैं जो प्रत्येक चेतन और अचेतन इकाई में मौजूद हैं, सबसे छोटे परमाणु से लेकर सबसे विशाल आकाशगंगा तक। वे आंतरिक सार हैं, वह चेतन सिद्धांत जो सब कुछ बनाए रखता है। यह अद्वैतवादी समझ को दर्शाता है कि ब्रह्म आत्मा के समान है, जो व्यक्तिगत आत्मा है।

2. अतिक्रमण (सभी प्राणियों का उनमें निवास करना) (Transcendence (All Beings Dwelling in Him)): इसके विपरीत, यह नाम यह भी दर्शाता है कि समस्त अस्तित्व, सभी प्राणी और सभी तत्व (भूत) कालभैरव के •भीतर• समाहित हैं। वे अस्तित्व का अंतिम आधार हैं, ब्रह्मांडीय गर्भ जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है और जिसमें सब कुछ अंततः विलीन हो जाता है। यह उनकी पारलौकिक प्रकृति को इंगित करता है, जहाँ वे एक साथ सभी सृष्टि से परे और उसे समाहित करने वाले हैं। वे पात्र और समाहित दोनों हैं।

दार्शनिक निहितार्थ :

• अद्वैत (Non-Duality): भूतावास वास्तविकता की अद्वैत प्रकृति को स्पष्ट रूप से व्यक्त करता है, जहाँ दिव्य सृष्टि से अलग नहीं है बल्कि उसका मूल ताना-बाना और अस्तित्व है। • ब्रह्मांडीय अधिकार (Cosmic Authority): समस्त अस्तित्व को धारण करने वाले के रूप में, वे ब्रह्मांड के निर्विवाद स्वामी हैं, सभी चीजों के अंतिम आश्रय और स्रोत हैं। • आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (Spiritual Insight): भक्त के लिए, भूतावास पर ध्यान करने से यह बोध होता है कि दिव्य दूर नहीं है बल्कि अपने स्वयं के साथ और अपने आसपास की हर चीज से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है, जो आध्यात्मिक मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है। यह अलगाव के भ्रम को दूर करता है।

6. भूतदूताय

जिनके दूत भूत और आत्माएँ हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : भूतदूताय नाम भूत और दूत से बना एक शक्तिशाली यौगिक है।

भूत (Bhūta): जैसा कि पहले बताया गया है, इस शब्द में संस्थाओं की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है: 1. सभी जीवित प्राणी, जीव और जीवन रूप। 2. भौतिक संसार का निर्माण करने वाले मूलभूत तत्व (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश)। 3. अशरीरी आत्माएँ, भूत, तत्व और विभिन्न सूक्ष्म

संस्थाएँ, जिन्हें अक्सर शिव के परिचारक (गण) माना जाता है।

दूत (Dūta): इस संस्कृत शब्द का अर्थ है "संदेशवाहक," "प्रतिनिधि," "दूत," या "जो संदेश पहुंचाता है या कोई काम करता है।"

प्रेतलोक का स्वामी (Master of the Spirit World) जब संयुक्त किया जाता है, तो भूतदूताय का अर्थ है "वह जिसके लिए भूत (प्रेत, आत्माएँ, सूक्ष्म संस्थाएँ) दूत हैं।" यह नाम अदृश्य लोकों और उनके निवासियों पर कालभैरव के सर्वोच्च अधिकार और प्रभुत्व को सशक्त रूप से स्थापित करता है। वह केवल इन आत्माओं के स्वामी नहीं हैं, बल्कि वे उनके वफादार सेवक और एजेंट हैं, जो ब्रह्मांड में उनके आदेशों का पालन करते हैं और उनकी इच्छा को पूरा करते हैं।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था का उपकरण (Instrument of Cosmic Order) यह पहलू ब्रह्मांडीय नियम (धर्म) के प्रवर्तक के रूप में कालभैरव की भूमिका पर प्रकाश डालता है। भूत, उनके आदेश के तहत, उनकी दिव्य इच्छा के उपकरण के रूप में कार्य कर सकते हैं - चाहे वह उनके भक्तों की रक्षा करना हो, दुष्टों को दंडित करना हो, या सामान्य मानवीय धारणा के लिए दुर्गम तरीकों से घटनाओं को प्रभावित करके ब्रह्मांड के नाजुक संतुलन को बनाए रखना हो।

रूपकात्मक व्याख्या (Metaphorical Interpretation) एक रूपकात्मक स्तर पर, "भूत" ब्रह्मांड में विभिन्न शक्तियों और ऊर्जाओं का भी प्रतिनिधित्व कर सकते हैं, जिसमें तत्व और यहां तक कि प्राणियों के भीतर के सूक्ष्म विचार और भावनाएं भी शामिल हैं। उनके "दूत" के रूप में, इसका तात्पर्य है कि ये सभी शक्तियाँ अंततः उनके ब्रह्मांडीय उद्देश्य की सेवा करती हैं, उनकी दिव्य क्रिया के लिए वाहक के रूप में कार्य करती हैं।

अतिक्रामी नियंत्रण (Transcendent Control) यह नाम अस्तित्व के स्थूल (भौतिक) और सूक्ष्म (आध्यात्मिक/ऊर्जावान) दोनों आयामों पर कालभैरव के अतिक्रामी नियंत्रण पर जोर देता है। यह उन्हें परम सेनापति के रूप में स्थापित करता है, जिनके लिए सबसे मायावी और शक्तिशाली आत्माएं भी केवल आज्ञाकारी दूत हैं, जो सर्वोच्च रक्षक और दंडक के रूप में उनकी छवि को और मजबूत करता है।

7. भूरिशाय

महान धन और प्रचुरता के स्वामी को नमन।

विस्तार : भूरिशाय नाम संस्कृत के शब्दों "भूरि" और "ईश" से लिया गया है।

भूरिः इस शब्द का अर्थ है "प्रचुर," "बहुत," "भरपूर," "महान," या "असंख्य।" यह एक विस्तृत मात्रा या परिमाण को संदर्भित करता है। आध्यात्मिक संदर्भ में, इसका तात्पर्य एक विशाल और अक्षय गुणवत्ता से है।

ईशः इस शब्द का अर्थ है "भगवान," "स्वामी," या "शासक।" यह सर्वोच्च नियंत्रण, प्रभुत्व और स्वामित्व को इंगित करता है।

प्रचुरता और बहुलता के स्वामी इन शब्दों के संयोजन से, भूरिशाय का अर्थ है "प्रचुरता के स्वामी," "बहुलता के मालिक," या "असंख्य चीजों पर शासन करने वाले।" यह नाम कालभैरव के उस पहलू को उजागर करता है जिसमें वे अपार धन के परम स्रोत और धारक हैं, न केवल भौतिक अर्थ में बल्कि एक व्यापक, ब्रह्मांडीय संदर्भ में भी।

ब्रह्मांडीय समृद्धि यहां "धन" और "प्रचुरता" बहुआयामी हैं: • भौतिक समृद्धिः वे अपने भक्तों को लौकिक धन और सांसारिक सफलता प्रदान करते हैं, जिससे उनका भौतिक कल्याण सुनिश्चित होता है। • आध्यात्मिक धनः इससे भी अधिक गहन रूप से, भूरिशाय असीमित आध्यात्मिक धन—ज्ञान (ज्ञान), विवेक (प्रज्ञा), मुक्ति (मोक्ष), दिव्य शक्ति (शक्ति), और सभी सद्गुणों का प्रतीक है। वे उन

लोगों को ये अमूल्य आध्यात्मिक उपहार प्रदान करते हैं जो उन्हें भक्ति के साथ खोजते हैं। • सृष्टि की प्रचुरता: शिव के एक रूप के रूप में, जो सृष्टिकर्ता, पालक और संहारक हैं, भूरिशाय संपूर्ण ब्रह्मांड की प्रचुर और विविध अभिव्यक्तियों पर उनके प्रभुत्व को भी दर्शाता है। वे अस्तित्व को बनाने वाले असंख्य प्राणियों, तत्वों और घटनाओं के स्वामी हैं।

सभी संसाधनों के नियंत्रक यह नाम अस्तित्व के सभी आयामों में, दृश्य और अदृश्य, सभी संसाधनों पर उनके सर्वोच्च प्रभुत्व को रेखांकित करता है। वे वह स्वामी हैं जिनसे सभी प्रकार की समृद्धि और धन उत्पन्न होते हैं, और जिनकी कृपा से वे वितरित होते हैं। उन्हें भूरिशाय के रूप में आह्वान करना सभी प्रकार की प्रचुरता के लिए उनका आशीर्वाद प्राप्त करना और सभी सृष्टि पर उनकी परम संप्रभुता को स्वीकार करना है।

8. भूरिदक्षिणाय

जो अत्यंत उदार हैं और महान फल प्रदान करते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : भूरिदक्षिणाय नाम कालभैरव के लिए एक गहरा विशेषण है, जो उनकी असीम उदारता और महानता को उजागर करता है। यह दो संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है:

• भूरि (Bhūri): इस शब्द का अर्थ है "बहुत," "अनेक," "प्रचुर," "पर्याप्त," "महान," या "असंख्य।" यह एक विशाल, असीमित मात्रा या डिग्री को दर्शाता है।

• दक्षिणा (Dakṣiṇā): इस शब्द के उदारता और आध्यात्मिक भेंट से संबंधित समृद्ध अर्थ हैं। यह आमतौर पर किसी पुरोहित, गुरु या उपदेशक को उनकी सेवाओं या आध्यात्मिक मार्गदर्शन के लिए दी जाने वाली "शुल्क," "उपहार," या "दान" को संदर्भित करता है। व्यापक रूप से, इसका अर्थ देने, उदारता या आध्यात्मिक पुरस्कार के कार्य से है। जब इसे दिव्य पर लागू किया जाता है, तो यह भक्तों को दिए गए पुरस्कारों या वरदानों को दर्शाता है।

पुरस्कारों का असीम दाता (Boundless Giver of Rewards) इस प्रकार, भूरिदक्षिणाय का अर्थ है "वह जो प्रचुर दक्षिणा प्रदान करता है" या "वह जिसके पुरस्कार महान हैं।" यह कालभैरव की एक परोपकारी देवता के रूप में भूमिका को दर्शाता है, जो अपने भयानक बाहरी रूप के बावजूद, अपने सच्चे भक्तों के प्रति अत्यधिक उदार हैं। वे जो पुरस्कार प्रदान करते हैं, वे केवल भौतिक नहीं होते, बल्कि आध्यात्मिक भी होते हैं, जो मुक्ति, सुरक्षा, ज्ञान और साहस प्रदान करते हैं।

आध्यात्मिक और भौतिक प्रचुरता (Spiritual and Material Abundance) उनकी उदारता सर्वव्यापी है, जो सांसारिक सुख (धन, स्वास्थ्य, शत्रुओं से सुरक्षा, बाधाओं को दूर करना) और आध्यात्मिक आशीर्वाद (आंतरिक शांति, ज्ञान, भय से मुक्ति, और अंततः मोक्ष या पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति) दोनों प्रदान करती है। वे वरदानों के परम दाता हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि कोई भी सच्चा प्रयास या भक्ति बिना पुरस्कृत नहीं जाती।

भैरव का विरोधाभास (The Paradox of Bhairava) यह नाम भैरव के विरोधाभासी स्वरूप को खूबसूरती से दर्शाता है, जो अज्ञानता और बुराई के भयंकर संहारक भी हैं, और सर्वोच्च दयालु परोपकारी भी हैं। उनका "भयानक" पहलू शुद्ध करता है और साफ करता है, जिससे "उदार" पहलू को अपार आध्यात्मिक धन प्रदान करने के लिए जगह मिलती है। उनके स्वरूप की गंभीरता यह सुनिश्चित करती है कि उनके द्वारा दिए गए आशीर्वाद गहरे और परिवर्तनकारी हों, जिससे वास्तविक आध्यात्मिक प्रगति हो।

9. भूताध्यक्षाय

सभी प्राणियों के सर्वोच्च निरीक्षक और नियंत्रक को नमन।

विस्तार : भूताध्यक्षाय (Bhūtādhyakṣa) शब्द भूता और अध्यक्ष का एक यौगिक है, जो शिव की प्रशासनिक और ब्रह्मांडीय भूमिका के एक गहन पहलू को दर्शाता है।

भूता (Bhūta): इस शब्द के कई अर्थ हैं: • सभी जीवित प्राणी: छोटे से छोटे कीट से लेकर मनुष्यों तक प्रत्येक जीव। • तत्व: ब्रह्मांड का निर्माण करने वाले पाँच मूलभूत तत्व (पंचमहाभूत) (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश)। • आत्मा/भूत: सूक्ष्म सत्ताएँ, परिचारक (गण), और अशरीरी प्राणी।

अध्यक्ष (Adhyakṣa): यह एक "निरीक्षक," "अधीक्षक," "अधिष्ठाता देवता," "निदेशक," या "शासक" को संदर्भित करता है। यह उस व्यक्ति को दर्शाता है जिसके पास किसी क्षेत्र पर सर्वोच्च अधिकार और शासन होता है।

सभी प्राणियों के सर्वोच्च निरीक्षक "भूतों के अध्यक्ष" के रूप में, भगवान शिव, अपने कालभैरव के भयंकर रूप में, सभी जीवित संस्थाओं के परम अधिकारी, पर्यवेक्षक और नियंत्रक हैं। वे ही हैं जो सभी प्राणियों के भाग्य की निगरानी और निर्देशन करते हैं, कर्मिक व्यवस्था और संपूर्ण सृष्टि के उचित कार्य को सुनिश्चित करते हैं। इसका तात्पर्य प्रत्येक सजीव रूप के जीवन चक्र, कार्यों और परिणामों पर व्यापक ज्ञान और नियंत्रण है।

तत्वों के अधिष्ठाता देवता यह नाम ब्रह्मांड के मूल निर्माण खंडों पर उनकी महारत को भी दर्शाता है। वे ही हैं जो पाँच महान तत्वों के अधिष्ठाता हैं, उनके अंतःक्रियाओं, परिवर्तनों और समग्र संतुलन को नियंत्रित करते हैं। उनके अधीक्षण के बिना, तात्विक शक्तियाँ अराजकता में पड़ जाएँगी। यह उन्हें सभी भौतिक अस्तित्व के मूल सिद्धांत के रूप में स्थापित करता है।

आत्मा लोकों के सेनापति भूताध्यक्ष के रूप में अपनी भूमिका में, वे विभिन्न प्रकार की आत्माओं, भूतों और उनके गणों के विशाल दल सहित सभी सूक्ष्म प्राणियों के सर्वोच्च सेनापति हैं। ये सत्ताएँ उनके आदेश का पालन करती हैं, जो अनदेखी लोकों और निचले सूक्ष्म तलों पर उनके प्रभुत्व को इंगित करता है।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखना संक्षेप में, भूताध्यक्ष कालभैरव के ब्रह्मांडीय प्रशासक के कार्य को उजागर करता है। वे ही हैं जो अस्तित्व के सभी तलों - भौतिक, तात्विक और आध्यात्मिक - पर व्यवस्था और धर्म की निगरानी, शासन और रखरखाव करते हैं। उनकी देखरेख यह सुनिश्चित करती है कि ब्रह्मांड का प्रत्येक पहलू दिव्य कानून के अनुसार कार्य करता है, और कोई भी इकाई, भौतिक या सूक्ष्म, उनके परम अधिकार के बाहर कार्य नहीं करती है।

10. भूतपतये

सभी प्राणियों के सेनापति और रक्षक को नमन।

विस्तार : भूतपति नाम भूत और पति का एक यौगिक है, जिसका अर्थ है सभी प्राणियों का "स्वामी" या "सेनापति"।

भूत शब्द अर्थ में समृद्ध है और इसका उल्लेख कर सकता है: • सभी चेतन प्राणी: सभी जीव, मनुष्य, पशु और वनस्पति। • मौलिक तत्व: पंचभूत (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश), जो संपूर्ण भौतिक ब्रह्मांड का निर्माण करते हैं। • आत्माएँ और अलौकिक सत्ताएँ: भूत, प्रेत, तत्व और विभिन्न निराकार सूक्ष्म प्राणी, जिन्हें अक्सर शिव के परिचारक (प्रमथ-गण) माना जाता है।

पति का अर्थ है "स्वामी", "प्रभु", "सेनापति" या "रक्षक"।

सभी लोकों के सेनापति भूतपति के रूप में, कालभैरव इन सभी श्रेणियों के सर्वोच्च सेनापति हैं। वे सभी जीवित प्राणियों के स्वामी हैं, उनके भाग्य का मार्गदर्शन करते हैं और उनके अस्तित्व की देखरेख करते हैं। वे मौलिक शक्तियों को नियंत्रित करते हैं, ब्रह्मांड के ताने-बाने पर अपनी पूर्ण शक्ति का प्रदर्शन करते हैं। इसके अलावा, उनका प्रभुत्व सूक्ष्म लोकों तक फैला हुआ है, जहाँ वे आत्माओं और अलौकिक प्राणियों की एक सेना को आदेश देते हैं, जो अक्सर उनके भयंकर परिचारक के रूप में कार्य करते हैं। यह सृष्टि, संरक्षण और विघटन के सभी पहलुओं को व्यवस्थित करने वाली परम शक्ति के रूप में उनकी भूमिका को पुष्ट करता है।

रक्षक और संरक्षक यह नाम एक रक्षक के रूप में उनकी भूमिका पर भी जोर देता है। "पति" या स्वामी के रूप में, वे अपने सभी भूतों की रक्षा करते हैं, ब्रह्मांडीय व्यवस्था और धर्म सुनिश्चित करते हैं। वे अपने भक्तों को सांसारिक खतरों और आध्यात्मिक बाधाओं दोनों से बचाते हैं, अक्सर उसी दुर्जेय प्रकृति के माध्यम से जो अज्ञानी को भयावह लग सकती है।

पशुपति की प्रतिध्वनि भूतपति शिव के एक अन्य विशेषण, पशुपति (पशुओं या प्राणियों के स्वामी) के साथ दृढ़ता से प्रतिध्वनित होता है। दोनों नाम शिव (और विस्तार से, कालभैरव) को सभी जीवित प्राणियों पर सर्वोच्च संप्रभु के रूप में उजागर करते हैं, जो संपूर्ण सृष्टि के उनके करुणामय फिर भी दृढ़ शासन को इंगित करता है। भूतों पर उनकी महारत उन्हें प्रकट ब्रह्मांड और उससे परे निर्विवाद अधिकार बनाती है।

11. भूधराय

पृथ्वी को धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : भूधर (भूधार) नाम दो संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: भू (या भूमि), जिसका अर्थ है "पृथ्वी," और धर, जिसका अर्थ है "धारण करने वाला," "समर्थक," या "पकड़ने वाला।"

पृथ्वी का समर्थक एक ब्रह्मांडीय अर्थ में, भूधर उस आदिम शक्ति को संदर्भित करता है जो पूरे ग्रह पृथ्वी को बनाए रखती है। यह केवल एक भौतिक कार्य नहीं है बल्कि एक आध्यात्मिक कार्य है, जिसका अर्थ है स्थलीय क्षेत्र की व्यवस्था, गुरुत्वाकर्षण और स्थिरता के लिए जिम्मेदार दिव्य शक्ति।

स्थिरता और नींव के स्वामी पृथ्वी को धारण करने वाले के रूप में, कालभैरव दृढ़ नींव, दृढ़ता और आधार के सिद्धांत का प्रतीक हैं। वह ब्रह्मांड में परम लंगर हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि सृष्टि अस्त-व्यस्त न हो। यह स्थिरता भौतिक पोषण से परे है, जो अस्तित्व को बनाए रखने वाले नैतिक और ब्रह्मांडीय नियमों का प्रतिनिधित्व करती है।

दृढ़ता का प्रतीक यह नाम कालभैरव के अडिग स्वभाव और सभी अस्तित्व के अटूट आधार के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देता है। उनका समर्थन निष्क्रिय नहीं है; यह एक सक्रिय, गतिशील शक्ति है जो अराजकता को रोकती है और दुनिया की संरचना को बनाए रखती है। स्थिरता, सुरक्षा, या अपने प्रयासों के लिए एक मजबूत नींव चाहने वाले भक्त उन्हें भूधर के रूप में आह्वान कर सकते हैं।

लाक्षणिक व्याख्या अधिक सूक्ष्म स्तर पर, "पृथ्वी को धारण करना" मानव शरीर (जो पार्थिव तत्वों से बना है) और उसमें निहित जीवन को धारण करने का भी प्रतीक हो सकता है। इस प्रकार, वह व्यक्तिगत अस्तित्व के भी समर्थक हैं, जो जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक शक्ति और साहस प्रदान करते हैं।

12. भूधरात्मजाय

पर्वत धारण करने वाली (पार्वती) के पुत्र को नमन (यह भैरव की शक्ति का विशेषण है)।

विस्तार : भूधरात्मजाय नाम भूधर, आत्मज और चतुर्थी विभक्ति के अंत 'आय' का एक यौगिक है, जिसका अर्थ है "पर्वत-धारक के पुत्र को।"

भूधर (पर्वत-धारक): यह शब्द मुख्य रूप से एक पर्वत को संदर्भित करता है। प्रतीकात्मक और अक्सर काव्यात्मक संदर्भ में, यह स्थिरता, स्थायित्व और पृथ्वी की आधारभूत शक्ति का संकेत दे सकता है। एक अधिक विशिष्ट पौराणिक संदर्भ में, यह आदिशेष को भी संदर्भित कर सकता है, जिस पर विष्णु विश्राम करते हैं, और जिसे कभी-कभी पृथ्वी को धारण करने वाला बताया जाता है। हालांकि, शिव और पार्वती के संदर्भ में, "भूधरा" (स्त्रीलिंग) या स्वयं "धरा" का अर्थ पृथ्वी है, जिसे पार्वती से लाक्षणिक रूप से जोड़ा जा सकता है, क्योंकि वह हिमवत (हिमालय पर्वत का मानवीकरण) की पुत्री हैं, इस प्रकार "पर्वत की पुत्री" हैं।

आत्मज (पुत्र): शाब्दिक अर्थ "आत्मन से जन्मा" या "स्वयं से जन्मा" है, लेकिन आमतौर पर इसका उपयोग "पुत्र" या "संतान" को दर्शाने के लिए किया जाता है।

दार्शनिक व्याख्या और भैरव से संबंध:

पृथ्वी/पर्वत का पुत्र (पार्वती का पुत्र): परंपरागत रूप से, "भूधरात्मजाय" को पार्वती के पुत्र, जैसे कार्तिकेय या गणेश के संदर्भ के रूप में व्याख्या किया जा सकता है। हालांकि, जब इसे भैरव पर लागू किया जाता है, तो यह एक गहरा, अधिक गूढ़ अर्थ लेता है।

सांसारिक शक्ति का अवतार: यदि "भूधर" को पर्वत के रूप में समझा जाता है, जो स्थिरता, अपार शक्ति और अटूट नींव का एक शक्तिशाली प्रतीक है, तो भैरव को "भूधरात्मज" के रूप में समझना इन मौलिक सांसारिक शक्तियों से उनके आंतरिक संबंध और उन पर उनकी महारत को दर्शाता है। वह केवल पृथ्वी पर शासन नहीं कर रहे हैं, बल्कि इसके सार से ही उत्पन्न हुए हैं, इसकी दृढ़ता, इसकी ऊर्जा के अटूट भंडार और बनाए रखने और सहन करने की इसकी क्षमता को मूर्त रूप देते हैं।

दिव्य स्त्री (शक्ति) का पुत्र: अधिक गहन रूप से, यदि भूधर को पार्वती (पर्वत की पुत्री, हिमवत के रूप में) से लाक्षणिक रूप से जोड़ा जाता है, तो भूधरात्मजाय भैरव को दिव्य स्त्री, शक्ति की एक अभिव्यक्ति, एक उत्सर्जन, या एक प्रत्यक्ष "पुत्र" के रूप में संदर्भित करता है। भैरव, शिव का एक उग्र रूप होने के कारण, शक्ति से अविभाज्य हैं। यह नाम इस बात पर प्रकाश डालता है कि उनकी शक्ति, हालांकि भयानक है, अंततः दिव्य माँ की रचनात्मक और पोषण करने वाली शक्ति से उत्पन्न होती है। वह गतिशील, सुरक्षात्मक और कभी-कभी विनाशकारी शक्ति है जो स्त्री सिद्धांत की शांत और स्थिर शक्ति से उत्पन्न होती है। यह इस बात पर जोर देता है कि उनकी शक्ति केवल कच्ची ऊर्जा नहीं है, बल्कि प्रकृति (प्रकृति) के ज्ञान और पोषण से ओत-प्रोत है जैसा कि पार्वती द्वारा व्यक्त किया गया है।

एक स्थिर और शक्तिशाली शक्ति: यह नाम इंगित करता है कि भैरव की शक्ति गहराई से निहित और स्थिर है, न कि अलौकिक या अमूर्त। वह अस्तित्व के बहुत सार से उत्पन्न हुए हैं, जिससे उनकी उपस्थिति दुर्जेय, मूर्त और अपरिहार्य हो जाती है। उनकी ऊर्जा आदिम और मौलिक है, जो स्वयं अस्तित्व के "गर्भ" से उत्पन्न होती है।

13. भूपतये

पृथ्वी के सर्वोच्च स्वामी को नमन।

विस्तार : भूपतये नाम संस्कृत के शब्दों भू (पृथ्वी) और पति (स्वामी, मालिक, रक्षक) से लिया गया है।

पृथ्वी के स्वामी और रक्षक भूपति के रूप में, कालभैरव को पृथ्वी के सर्वोच्च संप्रभु, स्वामी और रक्षक के रूप में मान्यता प्राप्त है। यह स्थलीय तल पर ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) को बनाए रखने में उनकी भूमिका को दर्शाता है। वह पृथ्वी पर सभी जीव रूपों के कल्याण की अध्यक्षता करते हैं,

पारिस्थितिक संतुलन और जीवन की निरंतरता सुनिश्चित करते हैं।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखना यह पहलू एक सार्वभौमिक पर्यवेक्षक के रूप में उनके कार्य से संबंधित है। जिस प्रकार एक मानव शासक शांति और न्याय सुनिश्चित करने के लिए एक राज्य पर शासन करता है, उसी प्रकार कालभैरव, भूपति के रूप में, पूरे ग्रह पर शासन करते हैं, यह सुनिश्चित करते हैं कि प्राकृतिक नियमों का पालन किया जाए और पृथ्वी पर सृष्टि, संरक्षण और विघटन चक्रों का संतुलन निर्धारित अनुसार आगे बढ़े।

आधारित अधिकार का प्रतीक पृथ्वी पर उनका शासन अस्तित्व के मूलभूत पहलुओं से उनके संबंध को भी दर्शाता है। वह स्थिर, अपरिवर्तनीय आधार हैं जिस पर समस्त सृष्टि टिकी हुई है। यह उनकी भयंकर शक्ति को एक व्यावहारिक, सुरक्षात्मक भूमिका में स्थापित करता है, जिससे वे ब्रह्मांड के निरंतर बदलते प्रवाह में स्थिरता का एक लंगर बन जाते हैं।

भौतिक समृद्धि से संबंध अधिक गूढ़ अर्थ में, पृथ्वी के स्वामी होने के नाते उन्हें उर्वरता, प्रचुरता और भौतिक कल्याण से भी जोड़ा जाता है। भक्त इस रूप में उन्हें समृद्धि, जीविका और सांसारिक प्रगति में बाधा डालने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए आह्वान कर सकते हैं, जो अस्तित्व के भौतिक और आध्यात्मिक दोनों आयामों पर उनके प्रभुत्व को स्वीकार करते हैं।

14. भास्कराय

सूर्य के समान तेजस्वी और दीप्तिमान को नमन।

विस्तार : भास्कराय नाम संस्कृत शब्द भास्कर (Bhāskara) से लिया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "प्रकाश का निर्माता" या "सूर्य"। यह भा (प्रकाश, वैभव) और कर (निर्माता, सृष्टिकर्ता) का एक यौगिक है।

सूर्य के समान तेजस्वी और दीप्तिमान यह विशेषण सीधे कालभैरव को सूर्य से जोड़ता है, जो हमारे सौरमंडल में प्रकाश, जीवन और ऊर्जा का अंतिम स्रोत है। जिस प्रकार सूर्य अंधकार को दूर करता है और जीवन को आगे बढ़ाता है, उसी प्रकार कालभैरव को इस रूप में अज्ञान (अविद्या) का नाश करने वाला और ज्ञान (ज्ञान) का दाता माना जाता है। उनकी दीप्ति दिव्य चेतना की प्रबुद्ध शक्ति का प्रतीक है जो भ्रम और मोह के अंधकार को मिटाती है।

अंधकार और अज्ञान का नाश करने वाला आध्यात्मिक रूप से, अंधकार आध्यात्मिक अज्ञान, अहंकार और सभी नकारात्मक प्रवृत्तियों के अंधकार को संदर्भित करता है जो वास्तविकता और स्वयं के सच्चे स्वरूप को अस्पष्ट करते हैं। भास्कर उस दिव्य प्रकाश का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसे आह्वान करने पर, भक्त की बुद्धि पर चमकता है, गहरे सत्यों को प्रकट करता है और उन्हें मुक्ति के मार्ग पर मार्गदर्शन करता है। उनकी चमक उस स्पष्टता और ज्ञान को दर्शाती है जो साधक पर उनकी कृपा से प्रकाशित होने पर उदय होती है।

जीवन और पोषण का स्रोत केवल प्रकाश से परे, सूर्य जीवन का दाता है, जो सभी विकास और पोषण के लिए आवश्यक है। इसी तरह, भास्कर के रूप में कालभैरव उस महत्वपूर्ण ऊर्जा और आध्यात्मिक पोषण का प्रतिनिधित्व करते हैं जो आत्मा को पोषित करते हैं। वह वह जीवन शक्ति हैं जो चेतना को चेतन करती हैं और आध्यात्मिक अभ्यासों को सशक्त बनाती हैं, जिससे आंतरिक विकास और गहन आध्यात्मिक जागृति होती है।

परम चेतना सूर्य को अक्सर वैदिक दर्शन में परम ब्रह्म के लिए एक रूपक के रूप में प्रयोग किया जाता है - वह सर्वोच्च, स्वयंभू चेतना जो सभी अस्तित्व को प्रकाशित करती है लेकिन अछूती और बेदाग रहती है। कालभैरव को "भास्कर" कहकर, भक्त उन्हें इस परम चेतना के रूप में स्वीकार

करते हैं: सदा-चमकने वाले, सर्वव्यापी और शाश्वत रूप से तेजस्वी, ब्रह्मांड में सत्य का एक प्रकाशस्तंभ।

15. भीरोवे

जो दुर्जेय और विस्मयकारी हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : भिीरवे (Bhīrave) नाम संस्कृत मूल "भी" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "डरना", "भयभीत होना", या "विस्मयकारी होना"। यह नाम कालभैरव के तीव्र, दुर्जेय और विस्मयकारी स्वरूप को समाहित करता है, जो उनकी गहन शक्ति और महिमा पर प्रकाश डालता है।

भयंकर और दुर्जेय शक्ति भिीरवे कालभैरव के उस पहलू की ओर इशारा करता है जो ब्रह्मांड की अत्यंत शक्तिशाली और अक्सर भयावह शक्ति है। यह भय मनमाना नहीं है, बल्कि समय (काल) और विनाश पर उनके पूर्ण नियंत्रण से उत्पन्न होता है। वह ब्रह्मांड की अपरिहार्य, अटल शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सभी चीजों का अंत करती है, जिससे सृष्टि, संरक्षण और विघटन का चक्र सुनिश्चित होता है। उनका स्वरूप उन लोगों के लिए भय की भावना पैदा करता है जो अस्तित्व की क्षणभंगुर प्रकृति का सामना करने के लिए तैयार नहीं हैं या जो सांसारिक मोह में डूबे हुए हैं।

विस्मय और श्रद्धा को प्रेरित करना केवल भय से परे, भिीरवे गहन विस्मय और श्रद्धा को प्रेरित करने के गुण का भी अर्थ है। कालभैरव की शक्ति की विशालता, ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने में उनकी भूमिका, और सभी घटनाओं के उनके अंतिम अतिक्रमण को देखने या उस पर विचार करने से स्वाभाविक रूप से गहरी श्रद्धा की स्थिति उत्पन्न होती है। यह विस्मय दिव्य की अत्यधिक महिमा के प्रति एक आध्यात्मिक प्रतिक्रिया है, जो मानव समझ या नियंत्रण से परे एक शक्ति को स्वीकार करती है।

उत्कृष्ट वास्तविकता का प्रतीक गहरे अर्थ में, वह जो "भय" प्रेरित करते हैं, वह आध्यात्मिक जागृति के लिए एक उत्प्रेरक है। यह अज्ञानता (अविद्या) का भय है, अपने वास्तविक स्वरूप को न पहचानने का भय है, और भौतिक संसार के भ्रमों से बंधे रहने का भय है। परम शक्ति और अनित्यता की इस आदिम पहचान को प्रेरित करके, भैरव वास्तविकता के साथ टकराव को मजबूर करते हैं, जिससे भक्त मुक्ति की तलाश करते हैं। इस प्रकार, वह दुर्जेय हैं क्योंकि वह सभी पारंपरिक समझ और लगाव को चुनौती देते हैं, जिससे एक गहरा परिवर्तन होता है।

16. भीमाय

अत्यधिक और भयंकर शक्ति वाले (भीम) को नमन।

विस्तार : भीम (भीमाय) नाम संस्कृत मूल "भी" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "डरना" या "भयभीत होना"। इस प्रकार, भीम का सीधा अर्थ है "भयभीत", "भयानक", "भयंकर", या "अत्यंत और भयानक शक्ति वाला"।

अत्यंत शक्तिशाली कालभैरव के संदर्भ में, भीम उनकी अद्वितीय और अत्यधिक शक्ति को दर्शाता है। यह केवल शारीरिक शक्ति नहीं है, बल्कि एक ब्रह्मांडीय शक्ति है जो पूरे ब्रह्मांडों को नष्ट और पुनः निर्मित कर सकती है। उनकी शक्ति इतनी विशाल है कि यह विस्मय और श्रद्धा को प्रेरित करती है, और अधर्मी के लिए, आतंक को।

भय-प्रेरक "भयानक" पहलू उस अंतर्निहित आतंक की ओर इशारा करता है जो वह उन लोगों में पैदा करते हैं जो दुष्ट या अधर्मी हैं। वह उस ब्रह्मांडीय शक्ति का प्रतीक हैं जो गलत काम करने वालों को दंडित करती है और नकारात्मक ऊर्जाओं को दूर करती है। उनका रूप केवल डरावना नहीं है; यह धर्म (धार्मिकता) के साथ असंगत हर चीज के लिए भय-प्रेरक है।

ब्रह्मांडीय कार्य यह गुण बुराई के संहारक, ब्रह्मांडीय कानून के प्रवर्तक, और अज्ञानता के अंतिम विजेता के रूप में कालभैरव की भूमिका पर प्रकाश डालता है। उनकी अपार शक्ति यह सुनिश्चित करती है कि कोई भी बाधा ब्रह्मांडीय व्यवस्था या उनके भक्तों की आध्यात्मिक मुक्ति के रास्ते में खड़ी नहीं हो सकती। उनके भक्तों के लिए, यह शक्ति सुरक्षा और सभी बाधाओं को दूर करने में बदल जाती है।

शिव के रुद्र रूप से संबंध यह विशेषण अक्सर भगवान शिव पर लागू होता है, विशेष रूप से उनके रुद्र (भयंकर) और भैरव अभिव्यक्तियों में। रुद्र, जिसका अर्थ है "गर्जना करने वाला" या "भयानक", उनकी दुर्जेय शक्ति को दर्शाने वाला एक और नाम है। इस प्रकार, भीम कालभैरव की सर्वोच्च और अजेय दिव्य शक्ति के रूप में पहचान को पुष्ट करने वाला एक शक्तिशाली विशेषण है।

17. भूमये

पृथ्वी स्वरूप को नमन।

विस्तार : भूमये (जो भूमि से व्युत्पन्न है) नाम सीधे पृथ्वी को संदर्भित करता है। कालभैरव का यह विशेषण पृथ्वी के साथ उनके गहरे संबंध और पहचान को दर्शाता है, जिसमें अर्थ के कई स्तर समाहित हैं।

दिव्य की अभिव्यक्ति के रूप में पृथ्वी हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, पृथ्वी (भूमि) को एक देवी, भूमि देवी, दिव्य माँ की अभिव्यक्ति के रूप में पूजा जाता है। कालभैरव को "जो स्वयं पृथ्वी हैं" के रूप में संबोधित करने का अर्थ है कि वे केवल पृथ्वी से जुड़े नहीं हैं, बल्कि 'स्वयं' पृथ्वी हैं। इसका तात्पर्य यह है कि जिस भूमि पर हम खड़े हैं, मिट्टी, पहाड़, महासागर और वह सब कुछ जो हमारे ग्रह का निर्माण करता है, उनके अस्तित्व के प्रत्यक्ष पहलू हैं।

पोषण और स्थिरता का स्रोत पृथ्वी सभी पोषण का स्रोत है, जो सभी जीवित प्राणियों के लिए भोजन, पानी और आश्रय प्रदान करती है। पृथ्वी के साथ पहचान किए जाने से, कालभैरव को परम प्रदाता और पालक के रूप में स्वीकार किया जाता है। वे मूलभूत मैट्रिक्स हैं जिससे जीवन उत्पन्न होता है और जिस पर वह बना रहता है। यह पहलू उनके उग्र रूप में भी जीवन को बनाए रखने और ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने में उनकी भूमिका पर जोर देता है।

आधार और नींव पृथ्वी स्थिरता, नींव और दृढ़ता का प्रतिनिधित्व करती है। भूमये के रूप में अपने पहलू में, कालभैरव ब्रह्मांड की अटल, मूलभूत शक्ति का प्रतीक हैं। वे आधारशिला हैं, वह अपरिवर्तनीय आधार जिस पर समस्त अस्तित्व टिका है। यह सृष्टि और विनाश के प्रवाह के बीच अपरिवर्तनीय वास्तविकता, अस्तित्व के परम आधार के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है।

एक साक्षी के रूप में पृथ्वी कई आध्यात्मिक परंपराओं में, पृथ्वी को सभी घटनाओं, कार्यों और कर्मों का एक मूक साक्षी माना जाता है। "स्वयं पृथ्वी" होने के नाते, कालभैरव सभी कार्यों, चाहे वे पुण्य हों या पापी, के परम साक्षी हैं। यह न्याय के वितरक (दण्डपाणि) के रूप में उनकी भूमिका को पुष्ट करता है, क्योंकि सर्वव्यापी पृथ्वी से कुछ भी छिपा नहीं है, जो उनका ही स्वरूप है।

इस प्रकार, भूमये नाम कालभैरव को भौतिक दुनिया के भीतर निहित दिव्य उपस्थिति, जीवन के पालक, स्थिरता की नींव और हमारे ग्रह द्वारा सन्निहित मूक, सर्वदर्शी साक्षी के रूप में आह्वान करता है।

18. विभूतिदायाय

दिव्य शक्तियों, समृद्धि और पवित्र भस्म प्रदान करने वाले (विभूतिदाता) को नमन।

विस्तार : विभूतिदाय (या विभूतिद) नाम दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: विभूति और दाय (या द)।

विभूति: इस शब्द के गहरे अर्थों की कई परतें हैं। 1. दिव्य शक्ति और महिमा: यह किसी देवता की विशेष शक्तियों, भव्यता और दिव्य अभिव्यक्तियों को संदर्भित करता है। भगवद गीता में, कृष्ण अपनी "विभूतियों" को उन विशिष्ट अभिव्यक्तियों के रूप में विस्तृत करते हैं जिनके माध्यम से उनकी दिव्य शक्ति को दुनिया में अनुभव किया जाता है। 2. समृद्धि और धन: सांसारिक अर्थ में, विभूति प्रचुरता, धन और समृद्धि - भौतिक और आध्यात्मिक दोनों को दर्शाती है। 3. पवित्र भस्म: शैव धर्म में सबसे महत्वपूर्ण रूप से, विभूति पवित्र भस्म को संदर्भित करती है, विशेष रूप से वह जो पवित्र अग्नि (यज्ञों) या श्मशान (चिता-भस्म) से प्राप्त होती है। यह भस्म अनित्यता, पवित्रता (चूंकि अग्नि सब कुछ शुद्ध करती है), और शिव की अंतिम वास्तविकता का गहरा प्रतीकात्मक है, जो तब बने रहते हैं जब बाकी सब भस्म हो जाता है। माथे पर विभूति लगाना एक महत्वपूर्ण शैव अभ्यास है, जो वैराग्य, भक्ति और अस्तित्व की क्षणभंगुर प्रकृति के प्रति जागरूकता को दर्शाता है।

दाय (या द): इसका अर्थ है "देने वाला" या "प्रदान करने वाला"।

दिव्य शक्ति और महिमा के प्रदाता विभूतिदाय के रूप में, कालभैरव दिव्य शक्तियों और महिमा के अंतिम स्रोत और प्रदाता हैं। वह भक्तों को उनकी आध्यात्मिक यात्रा और धर्म की सेवा के लिए आवश्यक आध्यात्मिक क्षमताएं, सिद्धियां (गूढ़ शक्तियां) और आंतरिक शक्ति प्रदान करते हैं। उनकी कृपा एक व्यक्ति के भीतर दिव्य क्षमता को प्रज्वलित कर सकती है।

समृद्धि और प्रचुरता के दाता वह सभी प्रकार की समृद्धि और प्रचुरता के वितरक भी हैं। यह केवल भौतिक धन तक ही सीमित नहीं है बल्कि बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक कल्याण तक फैला हुआ है। वह जीवन के सभी पहलुओं में अपने भक्तों के कल्याण और विकास को सुनिश्चित करते हैं।

पवित्र भस्म और उसके प्रतीकवाद के प्रदाता शिव और भैरव के संदर्भ में इस नाम का सबसे अनूठा पहलू पवित्र भस्म के रूप में विभूति के दाता के रूप में उनकी भूमिका है। देने का यह रूप केवल प्रतीकात्मक नहीं है; यह गहन आध्यात्मिक ज्ञान के दान का प्रतिनिधित्व करता है। भस्म का अर्थ है: 1. पवित्रता: यह सबसे शुद्ध पदार्थ है, आंतरिक और बाहरी शुद्धि की आवश्यकता की याद दिलाता है। 2. अनित्यता: यह सभी भौतिक रूपों की अंतिम स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है, जो राख में घुल जाते हैं - जीवन और भौतिक दुनिया की अस्थायी प्रकृति की एक स्पष्ट याद दिलाता है। 3. वैराग्य: भस्म को गले लगाकर, व्यक्ति इस समझ को गले लगाता है कि सभी सांसारिक संपत्ति क्षणभंगुर हैं, जिससे अनासक्ति और वैराग्य को बढ़ावा मिलता है। 4. शिव का सार: भस्म प्रतीकात्मक रूप से स्वयं शिव हैं, क्योंकि उन्हें अक्सर इससे लिपटा हुआ दर्शाया जाता है, जो सृष्टि और विनाश पर उनके अतिक्रमण को दर्शाता है।

इस प्रकार, विभूतिदाय का अर्थ है वह जो न केवल भौतिक धन या आध्यात्मिक शक्तियां प्रदान करता है, बल्कि जीवन और मृत्यु का अंतिम ज्ञान भी प्रदान करता है, जिसे पवित्र भस्म द्वारा दर्शाया गया है। वह अपने भक्तों को भौतिकवादी आसक्तियों को पार करने और अस्तित्व की क्षणभंगुर प्रकृति को समझने के लिए आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, जिससे उन्हें अंतिम मुक्ति की ओर मार्गदर्शन मिलता है।

19. भूताय

जो अस्तित्व में आए हैं और संपूर्ण सृष्टि के रूप में विद्यमान हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : भूताय (भूत) नाम दिव्य के एक मूलभूत पहलू को दर्शाता है, न केवल निर्माता के रूप में, बल्कि सभी अस्तित्व के मूल ताने-बाने के रूप में।

जो अस्तित्व में आया है भूत का प्राथमिक अर्थ है "जो अस्तित्व में आया है" या "जो रहा है"। इस संदर्भ में, यह ब्रह्मांड में प्रकट होने वाली हर चीज, जो कुछ भी है, को संदर्भित करता है। इसमें सभी रचनाएँ शामिल हैं—सबसे बड़ी आकाशगंगाओं से लेकर सबसे छोटे उप-परमाणु कणों तक, सचेत जीवन रूपों से लेकर निर्जीव वस्तुओं तक। इसका तात्पर्य है कि शिव (भैरव के रूप में) प्रकट ब्रह्मांड की अंतर्निहित वास्तविकता हैं।

पंच महाभूत (Pañca-Bhūtas) भूत विशेष रूप से पंच महाभूतों (Pañca-Bhūtas) को भी संदर्भित करता है: पृथ्वी (Prithvi), जल (Jala), अग्नि (Agni), वायु (Vayu), और आकाश (Akasha)। इन्हें सभी भौतिक अस्तित्व के मूलभूत निर्माण खंड माना जाता है। "भूत" होने के नाते, कालभैरव को इन तत्वों के सार और रूप के रूप में पहचाना जाता है, जो हर चीज में व्याप्त हैं और उसका निर्माण करते हैं। वह केवल उन्हें नियंत्रित नहीं करते, बल्कि 'वे ही' हैं।

वर्तमान, वास्तविक और विद्यमान व्यापक अर्थ में, भूत का अर्थ "होना," "वर्तमान," या "विद्यमान" भी है। यह दिव्य की अंतर्निहितता पर जोर देता है; कालभैरव एक दूरस्थ, पारलौकिक सत्ता नहीं हैं, बल्कि हर परमाणु में और हर जगह, हर पल अंतरंग रूप से उपस्थित हैं। उनका अस्तित्व हर उस चीज के साथ सह-विस्तृत है जो मौजूद है।

पारलौकिक और अंतर्निहित यह नाम दिव्य के पारलौकिक और अंतर्निहित दोनों स्वरूपों को समाहित करता है। जबकि वह सभी सृष्टि का स्रोत और अंतिम छोर हैं, वह स्वयं सृष्टि के सार के रूप में भी मौजूद हैं, जो वास्तविकता के हर पहलू में व्याप्त हैं। भूताय को प्रणाम करना इस सर्वव्यापी, सर्व-समावेशी दिव्य उपस्थिति की स्वीकृति है।

20. भूकम्पनाय

धरती को कंपाने वाले (भैरव) को नमन।

विस्तार : "भू" (पृथ्वी) और "कम्पन" (कांपना, हिलना) से बना नाम भूकम्पन, उस एक को दर्शाता है जो अपने स्वभाव या शक्ति से पृथ्वी को कंपाता है या भूकंप लाता है। यह गुण गहन ब्रह्मांडीय शक्ति और उपस्थिति को दर्शाता है।

ब्रह्मांडीय शक्ति और अभिव्यक्ति यह नाम सीधे भगवान शिव की भूकंपीय गतिविधि को प्रकट करने की अपार शक्ति को संदर्भित करता है। यह केवल एक विनाशकारी शक्ति नहीं है, बल्कि तत्वों और अस्तित्व के ताने-बाने पर उनके पूर्ण प्रभुत्व का प्रदर्शन है। भूकंप, पृथ्वी का कांपना, एक नाटकीय और अपरिहार्य घटना है, जो एक ऐसी शक्ति को दर्शाती है जो सभी मानवीय और प्राकृतिक नियंत्रण से परे है। जब शिव को भूकम्पन कहा जाता है, तो इसका अर्थ है कि वे ऐसी विशाल घटनाओं के परम सूत्रधार और प्रेरक हैं।

कांपने का प्रतीकवाद पृथ्वी का "कांपना" कई गहन अवधारणाओं का प्रतीक है: • व्यवधान और परिवर्तन: भूकंप व्यवधानों की घोषणा करते हैं, जिससे सामाजिक और पर्यावरणीय बदलाव आते हैं। आध्यात्मिक अर्थ में, भूकम्पन वह शक्ति है जो व्यक्ति को आत्मसंतुष्टि से बाहर निकालती है, नए विकास और परिवर्तन के लिए पुरानी संरचनाओं और प्रतिमानों को तोड़ती है। • दिव्य उपस्थिति: जब पृथ्वी कांपती है, तो यह अक्सर एक दिव्य प्राणी की अपार शक्ति या उपस्थिति को दर्शाता है। इसे दिव्य संचार के एक रूप के रूप में देखा जा सकता है, जो ब्रह्मांड की प्रकट, सर्वव्यापी ऊर्जा

का एक अकाट्य संकेत है। • विनाश और पुनर्निर्माण: शिव के एक भयंकर रूप, भैरव के रूप में, भूकम्पन उस शक्ति का प्रतीक है जो मौजूदा व्यवस्था को भंग करती है। यह विघटन पुनर्निर्माण के लिए एक आवश्यक अग्रदूत है। पृथ्वी के हिलने को एक नए चक्र की प्रस्तावना के रूप में व्याख्या किया जा सकता है, जो नए के लिए रास्ता बनाने के लिए पुराने को साफ करता है।

भौतिक क्षेत्र के स्वामी यह नाम कालभैरव की भूमिका को न केवल समय और भाग्य के स्वामी के रूप में, बल्कि भौतिक, भौतिक क्षेत्र - स्वयं पृथ्वी के पूर्ण स्वामी के रूप में भी रेखांकित करता है। उनके पास उस भूमि को स्थानांतरित करने, नया आकार देने और यहां तक कि तोड़ने की शक्ति है जिस पर हम खड़े हैं, जो हमें सभी भौतिक अस्तित्व की क्षणभंगुरता और इसे नियंत्रित करने वाली सर्वोच्च शक्ति की याद दिलाता है।

21. भूमिनाम्ने

पृथ्वी के सभी नामों से जाने जाने वाले (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : भूमिनामने नाम उस एक को संदर्भित करता है जो भूमि, यानी पृथ्वी से संबंधित सभी नामों को समाहित करता है और उन्हीं से जाना जाता है। यह भूमि (पृथ्वी) और नामन (नाम) का एक यौगिक है, जिसका अर्थ है कि स्थलीय क्षेत्र से जुड़े सभी नाम अंततः उसी की ओर इशारा करते हैं।

पृथ्वी का स्वामी यह नाम पृथ्वी पर कालभैरव के गहरे संबंध और प्रभुत्व को दर्शाता है। वह केवल एक स्वर्गीय देवता नहीं हैं, बल्कि भौतिक ग्रह और उसकी सभी अभिव्यक्तियों से आंतरिक रूप से जुड़े हुए हैं। यह पृथ्वी के स्वयं के संरक्षक, पालक और अंतिम सार के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है। सभी जीवन, सभी रूप, सभी पदार्थ जो पृथ्वी से उत्पन्न होते हैं, उनके प्रभुत्व में हैं।

व्यापक अभिव्यक्ति वह "पृथ्वी के सभी नामों से जाने जाते हैं" क्योंकि पृथ्वी, अपनी सभी विविधता और असंख्य रूपों में, उनकी शक्ति और उपस्थिति की अभिव्यक्ति है। जिस प्रकार पृथ्वी अनगिनत प्रजातियों, परिदृश्यों, तत्वों और घटनाओं को आश्रय देती है, उसी प्रकार कालभैरव भी इन सभी पहलुओं को समाहित करते हैं। पृथ्वी के किसी भाग या उसकी घटनाओं को दिया गया कोई भी नाम या विवरण, सार रूप में, उनके लिए एक नाम है, जो उनकी सर्वव्यापी प्रकृति को दर्शाता है।

अंतर्निहितता और पराकाष्ठा यह नाम सृष्टि के भीतर उनकी अंतर्निहित उपस्थिति और उस पर उनके पारलौकिक नियंत्रण दोनों पर प्रकाश डालता है। वह स्वयं वह आधार हैं जिस पर अस्तित्व प्रकट होता है, और साथ ही, वह वह चेतना हैं जो इसे समझती और नियंत्रित करती हैं। यह वैदिक अवधारणा को रेखांकित करता है कि संपूर्ण ब्रह्मांड, जिसमें पृथ्वी भी शामिल है, दिव्य की एक अभिव्यक्ति है। पृथ्वी की पूजा करना, सार रूप में, उनकी पूजा करना है।

स्थिरता और दृढ़ता का प्रतीक पृथ्वी (भूमि) स्थिरता, पोषण और धैर्य का भी प्रतीक है। पृथ्वी के सभी नामों से जाने जाने के कारण, कालभैरव इन गुणों को समाहित करते हैं। वह अविचल वास्तविकता हैं, सभी प्राणियों के लिए निरंतर समर्थन हैं, सभी के लिए सहनशील और प्रदाता हैं।

22. भूताभिभावकाय

उन (कालभैरव) को नमन, जो आत्माओं का आह्वान और प्रकटीकरण करते हैं।

विस्तार : भूताभिभावक नाम भूत और अभिभावक से बना एक यौगिक शब्द है।

भूत (Bhūta): जैसा कि पहले चर्चा की गई है, इस शब्द के तीन अर्थ हैं: 1. सभी प्राणी, जीवित प्राणी। 2. मौलिक तत्व (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश)। 3. आत्माएं, भूत, तत्व और सूक्ष्म संस्थाएं।

अभिभावक (Abhibhāvaka): यह शब्द मूल 'भू' से आया है, जिसका अर्थ है "होना," "बनना," या "अस्तित्व में होना," और इसका अर्थ "अभिभूत करना," "शासन करना," "जागृत करना," "प्रकट करना," "दिखाई देना" है।

आत्माओं और प्राणियों को प्रकट करने वाला (Manifestor of Spirits and Beings) जब भैरव पर लागू होता है, तो भूताभिभावक उनकी सर्वोच्च शक्ति को दर्शाता है कि वे सूक्ष्म संस्थाओं, आत्माओं और यहां तक कि आदिम तत्वों को भी बुला सकते हैं, जागृत कर सकते हैं और प्रकट कर सकते हैं। वह वह है जो इन अदृश्य लोकों और शक्तियों को अस्तित्व में लाता है या उन्हें बोधगम्य बनाता है। यह अस्तित्व के सूक्ष्म आयामों पर उनकी महारत को इंगित करता है। वह अपने दिव्य उद्देश्यों के लिए सभी प्रकार की आत्माओं - परोपकारी, तटस्थ या दुर्भावनापूर्ण - को बुला और नियंत्रित कर सकते हैं, अक्सर ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखने या अपने भक्तों की सहायता करने के लिए।

तत्वों के प्रकटीकरण के स्वामी (Lord of the Elemental Manifestation) तत्वों के संदर्भ में, वह वह है जो पांच भूतों को प्रकट और संचालित करता है। वह केवल उनके स्वामी नहीं हैं (जैसे भूतनाथा में) बल्कि उनके प्रकट होने और गतिविधि का मूल कारण हैं, जो सृष्टि और ब्रह्मांड के गतिशील कार्य में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है।

निम्न आवेगों पर विजय पाने वाला (Overcomer of Lower Impulses) लाक्षणिक रूप से, भूताभिभावक उस व्यक्ति को भी इंगित कर सकता है जो एक व्यक्ति के भीतर मौलिक और निम्न मानसिक शक्तियों को "अभिभूत" या "पार" करता है। उनकी कृपा से, एक भक्त अपनी स्वयं की मौलिक संरचना और उन्हें चलाने वाले सूक्ष्म आवेगों में महारत हासिल कर सकता है, अपनी निम्न प्रकृति को एक उच्च, आध्यात्मिक प्रकृति में बदल सकता है।

अंतिम नियंत्रण (Ultimate Control) यह नाम भैरव के अस्तित्व के सभी स्तरों पर अंतिम अधिकार और नियंत्रण पर जोर देता है, स्थूल भौतिक (तत्व और शरीरधारी प्राणी) से लेकर सूक्ष्म और आध्यात्मिक (आत्माएं और अशरीरी संस्थाएं) तक। वह ब्रह्मांड के भीतर उनके प्रकटीकरण और बातचीत के पीछे मुख्य प्रेरक और सक्रिय सिद्धांत हैं।

23. भगनेत्राय

भग (धन और समृद्धि के वैदिक देवता) की आँखों वाले को नमन।

विस्तार : भगनेत्राय नाम का अर्थ है वह जिसके पास भग की आँखें हैं, या लाक्षणिक रूप से, वह जिसके पास भग से जुड़ी बुद्धि और अंतर्दृष्टि है। इस नाम को समझने के लिए, हमें भग के प्रतीकवाद और हिंदू पौराणिक कथाओं में इस देवता से संबंधित अद्वितीय कथा में गहराई से उतरना होगा।

भग: समृद्धि और शुभता के देवता भग आदित्यों में से एक हैं, जो प्रकाश, खगोलीय कार्यों और ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने से जुड़े शक्तिशाली वैदिक देवताओं का एक समूह है। "भग" नाम का अर्थ ही "अंश," "सौभाग्य," "धन," या "समृद्धि" है। उन्हें अक्सर आशीर्वाद, धन और उद्यमों में सफलता के लिए आह्वान किया जाता है। उनकी आँखें, इसलिए, स्वाभाविक रूप से दिव्य दृष्टि का प्रतीक होंगी जो सौभाग्य, विवेक और शुभ तथा लाभकारी को समझने की क्षमता प्रदान करती हैं।

दक्ष यज्ञ और शिव का क्रोध शिव द्वारा "भगनेत्र" प्राप्त करने का विशिष्ट संदर्भ विनाशकारी दक्ष यज्ञ से संबंधित है। जब प्रजापति (सृष्टि के स्वामी) और सती के पिता दक्ष ने एक भव्य यज्ञ किया, तो उन्होंने जानबूझकर शिव को बाहर रखा। सती ने अपमानित महसूस कर स्वयं को अग्नि में समर्पित कर दिया। इस कृत्य और उनके प्रति दिखाए गए अनादर से क्रोधित होकर, शिव ने वीरभद्र, एक भयंकर अभिव्यक्ति, को दक्ष के यज्ञ को नष्ट करने के लिए भेजा। इस तांडव के दौरान, भग, जो यज्ञ में उपस्थित थे और शिव का पक्ष न लेकर अपमान में कथित रूप से शामिल थे, वीरभद्र द्वारा उनकी आँखें छीन ली गईं।

शिव "भगनेत्र" के रूप में (लाक्षणिक व्याख्या) जबकि वीरभद्र ने भग की आँखें निकाल दीं, शिव ने अपनी परम करुणा और शक्ति में, अंततः उन्हें बहाल कर दिया या, कुछ व्याख्याओं में, भग की दृष्टि की शक्ति या सार को प्राप्त कर लिया। इस प्रकार, कालभैरव के संदर्भ में, भगनेत्र का अर्थ है:

1. दिव्य विवेक और भाग्य के प्रदाता: कालभैरव, "भगनेत्र" के रूप में, केवल सामान्य दृष्टि नहीं बल्कि एक दिव्य धारणा रखते हैं जो सत्य को असत्य से, शुभ को अशुभ से अलग कर सकती है। यह दृष्टि केवल निष्क्रिय नहीं है; यह सक्रिय रूप से भाग्य और समृद्धि को निर्देशित और वितरित करती है। जैसे भग धन प्रदान करने के लिए जाने जाते थे, कालभैरव, इस पहलू के माध्यम से, अपने भक्तों को कल्याण, सफलता और समृद्धि के अंतिम प्रदाता बन जाते हैं, उन्हें अवसर और सौभाग्य देखने के लिए "आँखें" प्रदान करते हैं।

2. निष्पक्ष न्याय और ब्रह्मांडीय व्यवस्था: दक्ष यज्ञ के दौरान भग की आँखें खोने की घटना शिव और ब्रह्मांडीय धर्म का उल्लंघन करने के गंभीर परिणामों पर प्रकाश डालती है। कालभैरव, "भगनेत्र" को मूर्त रूप देते हुए, ब्रह्मांड को नियंत्रित करने वाले निष्पक्ष न्याय का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके पास सभी कार्यों, अच्छे या बुरे, को समझने और समान परिणाम देने के लिए "आँखें" हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनी रहे।

3. आंतरिक दृष्टि और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि: एक गहरे, दार्शनिक स्तर पर, "भगनेत्र" उस सर्वोच्च आंतरिक दृष्टि का प्रतीक हो सकता है जो कालभैरव अपने भक्तों को प्रदान करते हैं। यह आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (ज्ञान चक्षु) है जो सामान्य धारणा से परे है, जिससे व्यक्ति को भ्रम (माया) से परे देखने और वास्तविकता की सच्ची प्रकृति को समझने की अनुमति मिलती है। यह वह दृष्टि है जो मुक्ति और आत्मज्ञान की ओर ले जाती है, सभी का सबसे बड़ा "भाग्य"—आध्यात्मिक प्राप्ति—प्रदान करती है।

इस प्रकार, भगनेत्राय कालभैरव को उस रूप में नमन करता है जिसकी दिव्य दृष्टि भाग्य के सभी पहलुओं—भौतिक, नैतिक और आध्यात्मिक—को समाहित करती है और प्रदान करती है, साथ ही ब्रह्मांडीय न्याय के सख्त रखरखाव को भी सुनिश्चित करती है।

24. भवाय

जो स्वयं अस्तित्व स्वरूप हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : "भू" संस्कृत मूल से व्युत्पन्न नाम भव, जिसका अर्थ है "होना," "बनना," या "अस्तित्व में होना," अस्तित्व, होने और बनने की निरंतर प्रक्रिया के सार को दर्शाता है।

स्वयं अस्तित्व • भव सभी अस्तित्व का मूलभूत आधार प्रस्तुत करता है। यह होने की स्थिति, अंतर्निहित जीवन शक्ति को संदर्भित करता है जो ब्रह्मांड को चेतन करती है। भव के रूप में, शिव केवल अस्तित्व के निर्माता नहीं हैं, बल्कि स्वयं अस्तित्व हैं—वह आधार जिस पर सभी घटनाएँ प्रकट होती हैं और गायब हो जाती हैं। वह परम वास्तविकता हैं जो सभी अभिव्यक्तियों के मूल में है।

सभी बनने का स्रोत • स्थिर अस्तित्व से परे, भव "बनने" के गतिशील पहलू को भी दर्शाता है—सृष्टि, पोषण और परिवर्तन की चल रही प्रक्रिया। वह ब्रह्मांड के भीतर परिवर्तन और विकास की सभी प्रक्रियाओं के प्रमुख प्रेरक और अंतिम लक्ष्य हैं। जो कुछ भी है, जो कुछ भी अस्तित्व में आता है, और जो कुछ भी अस्तित्व में नहीं रहता है, वह उनके भीतर और उनके अस्तित्व की अभिव्यक्ति के रूप में होता है।

ब्रह्मांड के स्वामी • लाक्षणिक रूप से, भव ब्रह्मांड को भी संदर्भित कर सकता है, जिसे शिव की अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है। इस संदर्भ में, भव ब्रह्मांड के स्वामी हैं, जो अपने अस्तित्व के भीतर सभी स्थान और समय को समाहित करते हैं। यह उनकी सर्वव्यापी और सर्वव्यापी प्रकृति पर

जोर देता है।

बनने के चक्र से मुक्ति • विरोधाभासी रूप से, जबकि भव अस्तित्व और बनने का सार है, अंततः, भव के प्रति भक्ति जन्म और मृत्यु (संसार) के चक्र से मुक्ति दिला सकती है, जो स्वयं "बनने" की एक प्रक्रिया है। उन्हें सच्चे अस्तित्व के रूप में महसूस करके, व्यक्ति व्यक्तिगत, सीमित अस्तित्व के भ्रम को पार कर जाता है।

25. भोक्त्रे

परम भोक्ता और अनुभवकर्ता को नमन।

विस्तार : भोक्त्रे नाम संस्कृत मूल "भुज" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "आनंद लेना," "अनुभव करना," "उपभोग करना," या "पोषण करना।" कालभैरव के संदर्भ में, इस नाम के गहन दार्शनिक और धार्मिक निहितार्थ हैं।

परम भोक्ता और अनुभवकर्ता (The Ultimate Enjoyer and Experiencer) अपने सबसे मूलभूत स्तर पर, भोक्त्रे सर्वोच्च सत्ता को सभी अस्तित्व के परम भोक्ता और अनुभवकर्ता के रूप में दर्शाता है। जबकि व्यक्तिगत जीव (Jivas) सुख और दुख का अनुभव करते हैं, ये अनुभव सीमित और क्षणभंगुर होते हैं। कालभैरव, मैक्रोकोस्मिक चेतना के रूप में, वह अद्वितीय, अद्वैत आधार हैं जिस पर सभी अनुभव उत्पन्न होते हैं और विलीन होते हैं। वह सभी सृष्टि, पालन और संहार के साक्षी (Sakshi) हैं, पूरे ब्रह्मांडीय नाटक को अपने खेल (Lila) के रूप में आनंद लेते हैं।

अर्पणों का उपभोक्ता (The Consumer of Offerings) अनुष्ठानिक अर्थ में, भोक्त्रे देवता को सभी भक्ति, अर्पण (भोग), और यज्ञीय आहुतियों के प्राप्तकर्ता और उपभोक्ता के रूप में संदर्भित करता है। भक्तों द्वारा की गई कोई भी पूजा या समर्पण का कार्य अंततः उन तक पहुँचता है और उनके द्वारा स्वीकार किया जाता है। यह सभी आध्यात्मिक प्रयासों के अंतिम गंतव्य और ब्रह्मांड की आध्यात्मिक ऊर्जा से पोषित होने वाले के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देता है।

सभी का विलायक (The Dissolver of All) "भुज" का अर्थ उपभोग करना या निगलना भी हो सकता है। इस पहलू में, भोक्त्रे को वह माना जा सकता है जो ब्रह्मांडीय प्रलय (Pralaya) के समय सभी अस्तित्व को स्वयं में वापस समाहित कर लेता है या विलीन कर देता है। वह स्वयं समय का अंतिम भक्षक है, जो बनाई गई हर चीज का उपभोग करता है। यह काल भैरव के रूप में उनके भयंकर पहलू के अनुरूप है, जो समय और विनाश का ब्रह्मांडीय अवतार हैं।

परम चेतना (The Supreme Consciousness) दार्शनिक रूप से, भोक्त्रे शुद्ध, असीमित चेतना की ओर इशारा करता है जो किसी भी चीज़ से बंधे बिना सब कुछ अनुभव करती है। व्यक्तिगत आत्माओं के विपरीत जो कर्म और उसके फलों के चक्र में उलझी हुई हैं, कालभैरव सभी द्वंद्वों - सुख और दुख, अच्छे और बुरे - को अपने ब्रह्मांडीय नृत्य के पहलुओं के रूप में अनुभव करते हैं, हमेशा स्वतंत्र और अदूषित रहते हैं। वह सभी अनुभवों का शुद्ध विषय है, वह "मैं" जो सभी "यह" के नीचे है।

26. भूदेवाय

वही जो धरती पर देवता हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : भूदेवाय नाम भू (पृथ्वी) और देव (ईश्वर) का एक यौगिक है।

पृथ्वी पर दिव्य उपस्थिति भूदेव का शाब्दिक अर्थ है "पृथ्वी का देवता" या "पृथ्वी पर दिव्य सत्ता"। कालभैरव के संदर्भ में, यह नाम उनके सर्वोच्च अधिकार और पार्थिव क्षेत्र के साथ उनके घनिष्ठ संबंध को दर्शाता है। इसका तात्पर्य है कि वह केवल एक दूरस्थ ब्रह्मांडीय सत्ता नहीं हैं, बल्कि एक मूर्त दिव्य उपस्थिति हैं जो सक्रिय रूप से स्थलीय तल को नियंत्रित और प्रभावित करते हैं।

रक्षक और पालक एक भूदेव के रूप में, वह पृथ्वी के दिव्य संरक्षक हैं, जो इसके कल्याण, पारिस्थितिक संतुलन और इसके प्राकृतिक नियमों के उचित कामकाज के लिए जिम्मेदार हैं। उनकी उपस्थिति पृथ्वी पर जीवन की स्थिरता और निरंतरता सुनिश्चित करती है। वह धर्मपरायणों की रक्षा करते हैं और उन लोगों को दंडित करते हैं जो इस ग्रह पर ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बाधित करते हैं।

धर्म का अवतार गहरे अर्थ में, भूदेव "ब्राह्मण" या एक बुद्धिमान ऋषि की अवधारणा से भी संबंधित है जो दिव्य गुणों को धारण करता है और पृथ्वी पर धर्म का जीवन जीता है। यद्यपि कालभैरव किसी विशिष्ट जाति से परे हैं, यह व्याख्या पृथ्वी पर धार्मिक आचरण और आध्यात्मिक ज्ञान के परम संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालती है। वह भौतिक संसार में प्रकट दिव्य चेतना का आदर्श हैं।

सुलभ दिव्यता यह नाम आगे इस बात पर जोर देता है कि कालभैरव की दिव्यता अमूर्त नहीं है, बल्कि सीधे सुलभ है और भौतिक दुनिया को गहराई से प्रभावित करती है। यह भक्तों को पृथ्वी की पवित्रता और दिव्य ऊर्जा को पहचानने के लिए आमंत्रित करता है जो उनके सर्वोच्च आदेश के तहत सभी सांसारिक अस्तित्व में व्याप्त है।

27. भगवते

दिव्य और तेजस्वी भगवान को नमन।

विस्तार : भगवते (Bhagavatē) शब्द, जो संस्कृत शब्द भगवान (भगवत्) से लिया गया है, हिंदू धर्म में एक अत्यंत महत्वपूर्ण विशेषण है, जो एक दिव्य और महिमामयी भगवान को दर्शाता है। यह सर्वोच्च श्रद्धा का एक शीर्षक है, जिसका उपयोग परम वास्तविकता को उसके व्यक्तिगत रूप में संबोधित करने के लिए किया जाता है।

दिव्य और महिमामयी भगवान (Divine and Glorious Lord) भगवान शब्द का सामान्य अर्थ "स्वामी" या "ईश्वर" है। यह उस एक को दर्शाता है जो अपने पूर्ण रूप में दिव्य गुणों से युक्त है। इन गुणों को अक्सर छह सिद्धियों (षड्गुण) के रूप में गिना जाता है: • ऐश्वर्य (सर्वशक्तिमत्ता/संप्रभुता) (Aiśvarya - Omnipotence/Sovereignty): समस्त अस्तित्व पर अद्वितीय प्रभुत्व और शक्ति। • धर्म (धार्मिकता) (Dharma - Righteousness): ब्रह्मांडीय नियम और नैतिक व्यवस्था का मूर्त रूप। • यश (ख्याति/महिमा) (Yaśas - Fame/Glory): सार्वभौमिक ख्याति और वैभव। • श्री (धन/सौंदर्य) (Śrī - Wealth/Beauty): समस्त सौंदर्य, समृद्धि और शुभता का सार। • ज्ञान (Jñāna - Knowledge): सर्वज्ञता, भूत, वर्तमान और भविष्य का पूर्ण और परिपूर्ण ज्ञान। • वैराग्य (त्याग/विरक्ति) (Vairāgya - Renunciation/Detachment): भौतिक उलझाव से पूर्ण विरक्ति, भले ही वह उसका निर्माता और पालक हो।

भग के धारक (Possessor of Bhaga) गहरे व्युत्पत्ति संबंधी स्तर पर, भगवान का अर्थ है "वह जो भग का स्वामी है।" भग (भग) स्वयं एक बहुआयामी संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है "भाग्य," "धन," "महिमा," "पुण्य," "उत्कृष्टता," "शुभता," "राजसीपन," और "शक्ति।" इस प्रकार, भगवान विशेषण उस एक को दर्शाता है जो इन सभी परम सिद्धियों का स्रोत और स्वामी है।

समस्त ऐश्वर्यों का मूर्त रूप (The Embodiment of All Opulences) कालभैरव को भगवते के रूप में संबोधित करना उन्हें उस सर्वोच्च सत्ता के रूप में स्वीकार करना है जो सभी दिव्य ऐश्वर्यों और महिमाओं को धारण करते हैं। वह केवल शक्तिशाली या भयानक नहीं हैं, बल्कि अत्यंत शुभ, ज्ञानी और सभी भाग्य और उत्कृष्टता के परम स्रोत भी हैं। संबोधन का यह रूप उनकी व्यापक दिव्यता और समस्त सृष्टि, समय और विनाश पर उनकी संप्रभुता को मान्यता देता है।

28. रथिणे

रथ पर सवार होने वाले, जो अपनी यात्रा के स्वामी का प्रतीक हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : रथिणे (Rathinē) नाम संस्कृत शब्द 'रथ' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "रथ", और प्रत्यय '-इन्' स्वामित्व या निपुणता को दर्शाता है। इस प्रकार, रथिणे का अर्थ है "वह जिसके पास रथ है" या "वह जो रथ पर सवार होता है"। यह प्रतीत होता है कि साधारण गुण कालभैरव के संदर्भ में गहरा प्रतीकात्मक और आध्यात्मिक महत्व रखता है।

गति और दिशा के स्वामी रथ केवल एक वाहन नहीं है; यह गति, दिशा और किसी की यात्रा की गति पर नियंत्रण का प्रतिनिधित्व करता है। रथिणे के रूप में, कालभैरव ब्रह्मांडीय यात्रा, व्यक्तिगत जीवन और स्वयं समय के प्रवाह पर परम निपुणता का प्रतीक हैं। वह निष्क्रिय रूप से मार्ग पर नहीं चल रहे हैं, बल्कि सक्रिय रूप से इसे निर्देशित कर रहे हैं।

ब्रह्मांडीय रथ (काल-रथ) गहरे अर्थ में, "रथ" संपूर्ण ब्रह्मांडीय अभिव्यक्ति का प्रतीक हो सकता है - सृष्टि, संरक्षण और संहार के चक्र। कालभैरव, काल के स्वामी (काल) के रूप में, अस्तित्व के इस विशाल, शाश्वत रथ के सारथी हैं। वह ब्रह्मांड को उसके अनगिनत चक्रों के माध्यम से मार्गदर्शन करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनी रहे। उनकी सवारी अंतरिक्ष या समय से सीमित नहीं है; वह दोनों से परे हैं, फिर भी उन्हें नियंत्रित करते हैं।

इंद्रियों पर नियंत्रण का प्रतीक दार्शनिक रूप से, विशेष रूप से कठोपनिषद जैसे ग्रंथों में, मानव शरीर को अक्सर रूपक रूप से एक रथ के रूप में वर्णित किया गया है। बुद्धि (बुद्धि) सारथी है, मन (मानस) लगाम है, इंद्रियां (इंद्रियां) घोड़े हैं, और इंद्रियों के विषय मार्ग हैं। व्यक्तिगत आत्मा (जीव) रथ का स्वामी है। जब कालभैरव पर रथिणे के रूप में लागू किया जाता है, तो यह स्वयं के भीतर और, विस्तार से, अपनी कृपा चाहने वाले भक्त के भीतर इन सभी तत्वों पर उनके पूर्ण और परिपूर्ण नियंत्रण को दर्शाता है। वह परम सारथी हैं, जो मुक्ति की ओर आध्यात्मिक यात्रा का मार्गदर्शन करते हैं।

विजेता ऐतिहासिक रूप से, एक सारथी अक्सर एक राजा या योद्धा होता था जो अपनी सेना को युद्ध में ले जाता था। रथ पर सवार होकर, कालभैरव को सर्वोच्च योद्धा, बाधाओं, शत्रुओं और अज्ञानता के विजेता के रूप में चित्रित किया गया है। वह वह है जो अपने भक्तों को जीवन और आध्यात्मिक संघर्ष की लड़ाइयों के माध्यम से मार्गदर्शन करता है, नकारात्मक शक्तियों और आंतरिक शत्रुओं पर उनकी जीत सुनिश्चित करता है। यह चुनौतियों को दूर करने के लिए एक रक्षक और शक्ति के दाता के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है।

29. भ्राजिष्णवे

जो अत्यंत तेजोमय और अद्भुत रूप से प्रकाशित होते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : भ्राजिष्णवे नाम संस्कृत मूल "भ्राज्" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "चमकना," "चमकना," या "तेजस्वी होना।" प्रत्यय "इष्णु" एक अंतर्निहित गुण या स्थिति को दर्शाता है। इसलिए, भ्राजिष्णवे उस दिव्य सत्ता का वर्णन करता है जो आंतरिक रूप से और तेजस्वी रूप से दीप्तिमान है।

दिव्य दीप्ति और तेज यह नाम कालभैरव की अंतर्निहित चमक पर जोर देता है, जो केवल एक बाहरी चमक नहीं है, बल्कि उनके अस्तित्व का एक आंतरिक, मूलभूत पहलू है। यह दीप्ति इसका प्रतीक है:

• ज्ञान और आत्मज्ञान: वह लाक्षणिक प्रकाश जो अज्ञान (अंधकार) को दूर करता है। कालभैरव, परम वास्तविकता के रूप में, सभी ज्ञान और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि का स्रोत हैं। उनकी चमक उस ज्ञान का प्रतिनिधित्व करती है जो प्राणियों को जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त करता है।

• पवित्रता और पराकाष्ठा: प्रकाश अक्सर पवित्रता से जुड़ा होता है। उनकी दीप्ति उनके बेदाग और पारलौकिक स्वरूप को दर्शाती है, जो भौतिक संसार की अशुद्धियों से अछूता है।

• शक्ति और ऊर्जा: वैभव उनकी अपार ब्रह्मांडीय शक्ति और जीवन शक्ति (तेजस) को भी दर्शाता है। यह वह शक्ति है जो ब्रह्मांड को चेतन करती है, सृष्टि को बनाए रखती है, और अंततः विघटन लाती है। यह एक दुर्जेय और विस्मयकारी ऊर्जा है।

• सौंदर्यशास्त्र: यद्यपि भैरव का रूप अक्सर भयानक होता है, उनकी अंतर्निहित दीप्ति एक उदात्त, दिव्य सौंदर्य को भी संदर्भित करती है जो पारंपरिक धारणाओं से परे है, एक ऐसा सौंदर्य जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था और सत्य का सार है।

वास्तविकता के लिए रूपक एक गहरे दार्शनिक अर्थ में, भ्राजिष्णवे इस विचार की ओर इशारा करता है कि परम वास्तविकता, ब्रह्म या शिव, स्वयंप्रकाश (स्वयं-प्रकाशमान) है। इसे देखने या जानने के लिए किसी बाहरी प्रकाश की आवश्यकता नहीं होती; यह अपनी अंतर्निहित चमक के माध्यम से स्वयं को प्रकट करता है। यह चेतना का प्रकाश है जो सभी अस्तित्व को प्रकाशित करता है।

भैरव के स्वरूप से जुड़ना कालभैरव के लिए, यह चमक उनके उग्र पहलू में भी देखी जा सकती है, जो विनाशकारी शक्ति से जुड़ी है जो अशुद्धियों और भ्रमों को जला देती है, केवल शुद्ध, दीप्तिमान सत्य को पीछे छोड़ देती है। वह काल (समय) की तेजस्वी अग्नि हैं जो सभी चीजों का उपभोग करती है, फिर भी उस उपभोग करने वाली अग्नि के भीतर, एक परम, प्रबुद्ध करने वाला सत्य है।

३०. भोजनाय

सभी भोजन और पोषण के स्वरूप को नमन।

विस्तार : भोजनाय नाम, विशेष रूप से पोषण और जीविका के संदर्भ में, सभी अस्तित्व के स्रोत, पदार्थ और पोषणकर्ता के रूप में दिव्य के गहन वैदिक और वेदांतिक अवधारणा को समाहित करता है।

भोजन (अन्न) का मूर्त स्वरूप भोजन (भोजन) का शाब्दिक अर्थ "भोजन," "भोजन" या "खाना" है। जब कालभैरव को भोजनाय के रूप में संबोधित किया जाता है, तो यह सभी प्रकार के पोषण के साथ उनके परम नियंत्रण और पहचान को दर्शाता है। यह केवल भौतिक भोजन नहीं है, बल्कि ऊर्जा और जीवन शक्ति का वह सार है जो ब्रह्मांड में व्याप्त है। तैत्तिरीय उपनिषद में, ब्रह्म को अन्न (भोजन) के रूप में वर्णित किया गया है, जिससे सभी प्राणी उत्पन्न होते हैं, जिसके द्वारा वे जीवित रहते हैं, और जिसमें वे अंततः लौट आते हैं। भैरव, शिव के एक प्रकटीकरण के रूप में, इस परम ब्रह्म का प्रतीक हैं।

पोषण के प्रदाता भगवान भैरव, भोजनाय के रूप में, सभी पोषण - शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक - के परम प्रदाता हैं। वे आवश्यक संसाधनों की आपूर्ति करके जीवन की निरंतरता सुनिश्चित करते हैं। यह ज्ञान, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और मुक्ति के लाक्षणिक "भोजन" तक भी फैला हुआ है जो आत्मा को बनाए रखता है।

उपभोक्ता और उपभोग्य यह नाम सूक्ष्म रूप से सृष्टि में गतिशील परस्पर क्रिया का भी संकेत देता है जहाँ दिव्य दोनों उपभोक्ता (जो खाता या अवशोषित करता है) और उपभोग्य (भोजन स्वयं) है। भव्य ब्रह्मांडीय योजना में, सब कुछ आपस में जुड़ा हुआ है और अंततः एक परम सत्ता का प्रकटीकरण

है। वह वह है जो समय और अस्तित्व को निगल जाता है, जिससे सृष्टि, संरक्षण और विघटन के चक्र को बनाए रखता है। उनका भयानक पहलू अज्ञान और भ्रम का उपभोग करता है, साधक को सच्चा पोषण प्रदान करता है।

ब्रह्मांडीय पोषणकर्ता उन्हें भोजनाय के रूप में पूजने से, भक्त ब्रह्मांड को बनाए रखने वाले मूलभूत सिद्धांत के रूप में उनकी भूमिका को स्वीकार करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि जीवन उपभोग और नवीनीकरण के चक्र के माध्यम से जारी रहे। वह जीवन देने वाली शक्ति है जो सभी विकास और अस्तित्व को संभव बनाती है।

31. भोक्त्रे

सभी वस्तुओं के परम भोक्ता और अनुभवकर्ता को नमन।

विस्तार : भोक्त्रे (Bhoktrē) नाम संस्कृत धातु "भुज" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "आनंद लेना, अनुभव करना, उपभोग करना या रक्षा करना।" कालभैरव के संदर्भ में, यह सभी अनुभव के परम विषय और सृष्टि के परम उपभोक्ता के रूप में उनके स्वरूप में गहन दार्शनिक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

परम भोक्ता और अनुभवकर्ता अपने मूल में, भोक्त्रे उस एक को दर्शाता है जो सभी अस्तित्व का सर्वोच्च भोक्ता और अनुभवकर्ता है। कालभैरव, परम वास्तविकता के रूप में, एक निष्क्रिय पर्यवेक्षक नहीं हैं, बल्कि वही चेतना हैं जो ब्रह्मांड की हर अभिव्यक्ति को रेखांकित करती है और अनुभव करती है। सभी सुख, दुख, सौंदर्य और कुरूपता अंततः उनके अनुभव हैं, क्योंकि उनके बाहर कोई वास्तविकता नहीं है। यह अवधारणा अद्वैत वेदांत दर्शन के अनुरूप है, जो यह दावा करता है कि व्यक्तिगत आत्मा (जीव) अंततः सार्वभौमिक आत्मा (ब्रह्म) के समान है। इस संदर्भ में, कालभैरव सार्वभौमिक भोक्ता हैं - अपनी ही सृष्टि के भोक्ता।

सभी सृष्टि का उपभोक्ता केवल अनुभव से परे, "भुज" का अर्थ उपभोग या आत्मसात करना भी है। कालभैरव, स्वयं काल (Kāla) के अवतार के रूप में, अंततः सभी सृष्टि का उपभोग करते हैं। अस्तित्व में जन्मी हर चीज समय से गुजरती है और अंततः अपने स्रोत में विलीन हो जाती है। वह स्वयं काल के भक्षक हैं, वह जो सभी चीजों को उनके अंतिम अंत तक लाते हैं, जिससे वह सभी चीजों के परम उपभोक्ता बन जाते हैं। यह दुर्भावना से प्रेरित विनाशकारी कार्य नहीं है, बल्कि दिव्य की ब्रह्मांडीय लीला (Līlā) में निहित एक प्राकृतिक, चक्रीय प्रक्रिया है।

रक्षक और पालक जबकि अक्सर उपभोग और विघटन से जुड़ा होता है, "भुज" धातु का अर्थ "रक्षा करना, पोषण करना या शासन करना" भी है। इस अर्थ में, कालभैरव ब्रह्मांड के परम रक्षक और पालक हैं। तत्वों का उपभोग और विघटन करके, वह नई सृष्टि के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं, अस्तित्व के निरंतर चक्र को सुनिश्चित करते हैं। वह धर्म (धार्मिकता) की रक्षा करते हैं और उन लोगों को दंडित करते हैं जो विचलित होते हैं, ब्रह्मांडीय व्यवस्था पर शासन करते हैं। यह दोहरा पहलू - वह रक्षक जो उपभोग करके पोषण करता है - सृष्टि, संरक्षण और विघटन पर उनकी पूर्ण संप्रभुता को उजागर करता है।

अतिक्रमण और अंतर्निहितता इस प्रकार भोक्त्रे नाम कालभैरव की अंतर्निहितता (सभी अनुभव में उपस्थित होना) और उनके अतिक्रमण (सभी अनुभव से परे होना, फिर भी भोक्ता/विषय होना) दोनों को समाहित करता है। वह वह चेतना हैं जो सभी अनुभव को संभव बनाती है, फिर भी उन अनुभवों की क्षणभंगुर प्रकृति से अछूती रहती है।

३२. भिक्षाभुजे

भिक्षा के रूप में अर्पित भोजन ग्रहण करने वाले को नमन, जो वैराग्य का प्रतीक है।

विस्तार : भिक्षाभुज (Bhikṣābhuj) नाम भगवान कालभैरव का एक गहन वर्णन है, जो दो संस्कृत शब्दों को जोड़ता है: "भिक्षा" (Bhikṣā) और "भुज" (Bhuj)।

भिक्षा: भिक्षा या माँगा हुआ भोजन भिक्षा का अर्थ है भिक्षा माँगकर प्राप्त किया गया भोजन या जीविका। भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में, भिक्षा में संलग्न होना तपस्वियों और भिक्षुओं के लिए एक अत्यंत सम्मानित अभ्यास है। यह दर्शाता है: • सांसारिक संपत्ति से वैराग्य: भिक्षा पर निर्भर रहकर, आध्यात्मिक अभ्यासी प्राप्त करने और रखने की आवश्यकता का त्याग करता है। • विनम्रता: यह दूसरों से जो कुछ भी मिलता है उसे स्वीकार करके विनम्रता पैदा करता है। • ईश्वर में विश्वास: यह अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए ब्रह्मांडीय providence (ईश्वरीय विधान) पर पूर्ण समर्पण और विश्वास का प्रतीक है।

भुज: जो खाता/सेवन करता है "भुज" का अर्थ है "जो खाता है," "आनंद लेता है," या "सेवन करता है।" जब भिक्षा के साथ जोड़ा जाता है, तो इसका शाब्दिक अर्थ है "जो भिक्षा के रूप में प्राप्त होता है उसका सेवन करता है।"

वैराग्य और त्याग का प्रतीकवाद कालभैरव, अपने भिक्षाभुज रूप में, त्याग और वैराग्य की परम अवस्था का प्रतीक हैं। वह परम योगी, एक महाभिक्षु हैं। कालभैरव का यह पहलू कई प्रमुख आध्यात्मिक सिद्धांतों पर प्रकाश डालता है: • भौतिक आवश्यकताओं का अतिक्रमण: भिक्षा ग्रहण करके, वह भौतिक आसक्तियों से अपनी पूर्ण स्वतंत्रता को प्रदर्शित करते हैं, यह asserting (पुष्टि करते हुए) कि सबसे शक्तिशाली देवता भी संचित धन या निश्चित निवास की आवश्यकता से परे रहते हैं। • तपस्वी का रूप: यह नाम शिव की एक महान तपस्वी (दिगंबर, 'आकाश-वस्त्रधारी') के रूप में पहचान के साथ संरेखित है, जो सामाजिक मानदंडों और भौतिक संपत्तियों से विरक्त होकर स्वतंत्र रूप से विचरण करते हैं। वह यह दर्शाता है कि सच्ची आध्यात्मिक शक्ति आंतरिक स्वतंत्रता में निहित है, न कि बाहरी अधिग्रहणों में। • स्वीकृति की पवित्रता: भिक्षा का सेवन करने का अर्थ है बिना लालसा या निर्णय के जो कुछ भी दिया जाता है उसे स्वीकार करना। यह दुनिया जो कुछ भी प्रदान करती है उसकी शुद्ध स्वीकृति की स्थिति का प्रतीक है, जो अद्वैतवादी ज्ञान को दर्शाता है जहाँ सभी अनुभव केवल divine (ईश्वरीय) की अभिव्यक्तियाँ हैं। • भक्तों के लिए मार्गदर्शन: भक्तों के लिए, यह नाम भौतिक इच्छाओं से वैराग्य विकसित करने, विनम्रता का अभ्यास करने और divine provision (ईश्वरीय प्रावधान) में विश्वास रखने की याद दिलाता है। इसका तात्पर्य है कि सच्ची आध्यात्मिक sustenance (पोषण) त्यागने से आती है।

संक्षेप में, भिक्षाभुज कालभैरव को एक ऐसे तपस्वी के सर्वोच्च अवतार के रूप में दर्शाता है जिसने सभी भौतिक बाधाओं को पार कर लिया है, पूर्ण वैराग्य और स्वतंत्रता में रह रहा है, केवल वही ग्रहण कर रहा है जो दिया जाता है, और इस प्रकार शुद्ध आध्यात्मिक शक्ति का विकिरण कर रहा है।

३३. भोजनप्रियाय

भोजन और नैवेद्य के प्रिय को नमन।

विस्तार : भोजनप्रिया नाम, जो भोजन (खाद्य, भोजन, नैवेद्य) और प्रिया (प्रिय, प्यारा, शौकीन) का एक यौगिक है, कालभैरव के स्वभाव के एक आकर्षक पहलू को उजागर करता है जो अक्सर उनके भयंकर स्वरूप के विपरीत प्रतीत होता है।

नैवेद्य के प्रति प्रेम यह नाम इंगित करता है कि कालभैरव अपने भक्तों द्वारा उन्हें चढ़ाए गए नैवेद्य की गहराई से सराहना करते हैं। ये नैवेद्य, साधारण खाद्य पदार्थों (जैसे दूध, मिठाई, या विशिष्ट तांत्रिक परंपराओं में मांस और शराब) से लेकर भक्ति के प्रतीक अन्य वस्तुओं (फूल, धूप, दीपक) तक,

केवल देवता द्वारा उपभोग नहीं किए जाते हैं, बल्कि उपासक की सच्ची भक्ति और समर्पण का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनका "प्रेम" ऐसे विश्वास के कार्यों के प्रति उनकी ग्रहणशीलता और स्वीकृति को दर्शाता है।

भोजन और पोषण का प्रतीकवाद व्यापक अर्थ में, भोजन पोषण और जीविका से भी संबंधित है। "भोजन के शौकीन" होने से, कालभैरव परोक्ष रूप से सभी पोषण के दाता और पालक बन जाते हैं। वे सभी सृष्टि के लिए भोजन के अंतिम स्रोत हैं, और सभी प्रावधान अंततः उनसे ही आते हैं। इस प्रकार, नैवेद्य किसी भूखे देवता को खिलाने के बारे में नहीं है, बल्कि उन्हें सभी प्रावधानों के स्रोत के रूप में स्वीकार करने और कृतज्ञता में एक हिस्सा लौटाने के बारे में है।

ब्रह्मांडीय उपभोग और नवीनीकरण दार्शनिक रूप से, इसे उनके काल (समय) और सभी के भक्षक के रूप में उनकी भूमिका के संदर्भ में भी व्याख्या किया जा सकता है। चूंकि वे अंततः सभी सृष्टि का उपभोग करते हैं, जिसमें स्वयं समय भी शामिल है, "भोजन के प्रति उनका प्रेम" समय के चक्रों के भीतर मौजूद सभी चीजों के उपभोग और अवशोषण के उनके ब्रह्मांडीय कार्य का प्रतीक हो सकता है। यह उपभोग केवल विनाशकारी नहीं है, बल्कि ब्रह्मांडीय नवीनीकरण और परिवर्तन की निरंतर प्रक्रिया के लिए आवश्यक है।

भक्त संबंध भक्त के लिए, यह नाम सांत्वना प्रदान करता है। अपने भयावह रूप के बावजूद, वे भक्ति और नैवेद्य के माध्यम से सुलभ हैं। यह दर्शाता है कि वे एक उदासीन, दूर के देवता नहीं हैं, बल्कि ऐसे हैं जो अपने उपासकों से प्रेम और सम्मान की विनम्र अभिव्यक्तियों को आसानी से स्वीकार करते हैं और उनका जवाब देते हैं।

34. भूतिमयाय

जो पूर्णतः पवित्र भस्म और दिव्य महिमा से बने हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : भूतिमयाय (भूतिमय) नाम भूति और मय का एक यौगिक है।

भूतिः इस शब्द का दोहरा महत्व है। • पवित्र राख (विभूति): शैव धर्म में, विभूति, होम (अग्नि अनुष्ठानों) या जले हुए गोबर से प्राप्त पवित्र राख को अत्यधिक पूजनीय माना जाता है। यह पवित्रता, वैराग्य, भौतिक शरीर की क्षणभंगुरता और सभी भौतिक अस्तित्व के घुल जाने के बाद शेष रहने वाली परम वास्तविकता का प्रतीक है। शैव भक्तों, विशेषकर तपस्वियों के लिए, अपने शरीर पर विभूति लगाना आम बात है। • समृद्धि, दिव्य महिमा, भव्यता, अभिव्यक्ति: भूति आध्यात्मिक शक्ति, दिव्य वैभव, समृद्धि और सर्वोच्च शक्ति की अभिव्यक्ति को भी दर्शाती है। यह दिव्य के शुभ और गौरवशाली पहलू को इंगित करता है।

मय: यह प्रत्यय "से बना", "से भरा हुआ", या "पूरी तरह से युक्त" को इंगित करता है।

पवित्र राख से बना जब भूतिमय को पवित्र राख के संबंध में समझा जाता है, तो इसका तात्पर्य है कि भगवान भैरव का अस्तित्व ही इस पवित्र पदार्थ से बना है। यह प्रतीकवाद गहरा है: • अस्तित्व की क्षणभंगुरता: जैसे राख वह है जो आग से सब कुछ भस्म हो जाने के बाद बचता है, यह दर्शाता है कि वह विनाश से परे परम वास्तविकता है, सभी भ्रमों के बीत जाने के बाद शुद्ध सार है। यह मृत्यु और शुद्धि पर उनकी महारत को दर्शाता है। • पवित्रता और वैराग्य: राख शुद्ध होती है और किसी भी चीज़ से चिपकती नहीं है। यह भौतिक दुनिया से उनके सर्वोच्च वैराग्य और उनकी पूर्ण पवित्रता का प्रतिनिधित्व करता है। • तपस्या और त्याग: राख लगाना तपस्वियों का एक निशान है, जो सांसारिक इच्छाओं के त्याग का प्रतीक है। भैरव उच्चतम तपस्वी आदर्शों का प्रतीक हैं।

दिव्य महिमा और समृद्धि से परिपूर्ण दिव्य महिमा के संदर्भ में, भूतिमय का अर्थ है कि वह महिमा, शुभता और आध्यात्मिक शक्ति से पूरी तरह परिपूर्ण हैं। वह सभी समृद्धि का स्रोत हैं, न केवल भौतिक धन बल्कि आध्यात्मिक कल्याण, सफलता और दिव्य कृपा की अभिव्यक्ति भी। उनकी उपस्थिति ही सर्वोच्च महिमा का संचार करती है।

परम वास्तविकता इसलिए, भूतिमयाय कालभैरव का वर्णन तपस्वी वैराग्य (राख द्वारा प्रतीक, जो सभी भौतिक रूपों के अंत का प्रतिनिधित्व करता है) और अनंत दिव्य वैभव (भूति, जो सभी शुभ अभिव्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करता है) दोनों के अवतार के रूप में करता है। वह क्षणभंगुरता के बाद शेष रहने वाली परम वास्तविकता हैं, और सभी शुभता और आध्यात्मिक शक्ति का स्रोत हैं।

35. भृंगगिरिटीने

भक्त ऋषि भृंगी के साथ रहने वाले को नमन।

विस्तार : भृंगिरिटिने नाम एक गहरा और उद्दीपक यौगिक है, जो ऋषि भृंगी (Bhṛṅgi) के साथ एक घनिष्ठ और विशेष संबंध को दर्शाता है। यह इस पूजनीय ऋषि की भक्ति और अद्वितीय आध्यात्मिक मार्ग का प्रमाण है।

भृंगी: समर्पित ऋषि भृंगी, जिन्हें अक्सर तीन पैरों वाले दुबले-पतले और कंकाल जैसे रूप में चित्रित किया जाता है, शिव के सबसे उत्साही और अद्वितीय भक्तों में से एक हैं। उनकी भक्ति इतनी पूर्ण थी कि उन्होंने शुरू में किसी अन्य देवता की पूजा करने से इनकार कर दिया था, जिसमें शिव की पत्नी, पार्वती भी शामिल थीं। इस अटूट एकनिष्ठता के कारण एक प्रसिद्ध घटना हुई जहाँ उन्होंने अकेले शिव की परिक्रमा करने का प्रयास किया, जिससे शिव को पार्वती के साथ अर्धनारीश्वर रूप में एकजुट होना पड़ा ताकि भृंगी स्त्री दिव्य को स्वीकार कर सकें। इस सुधार के बावजूद, भृंगी की शिव के प्रति भक्ति लंबे समय तक सर्वोपरि और अनन्य बनी रही।

इटिने: साथ में / धारण करने वाला प्रत्यय "इटिने" (अक्सर "इणी" या संबंधित रूपों में पाया जाता है) "धारण करने वाला," "होने वाला," या "के साथ" को दर्शाता है। इस प्रकार, भृंगिरिटिने का अर्थ है "वह जो भृंगी के साथ है" या "वह जो भृंगी को (एक भक्त के रूप में) धारण करता है।"

अटूट भक्ति का प्रतीकवाद यह नाम शिव द्वारा सबसे समझौताहीन और विशिष्ट रूप से केंद्रित भक्ति के रूपों को भी स्वीकार करने और संजोने पर प्रकाश डालता है। भृंगी शुद्ध, मिलावट रहित भक्ति (Bhakti) के मार्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं जो पूरी तरह से शिव की ओर निर्देशित है। यह दर्शाता है कि शिव ऐसी गहरी भक्ति को गले लगाते हैं और उससे अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं, भले ही वह दूसरों को अपरंपरागत लग सकती हो।

दिव्य संरक्षण भृंगी के "साथ" होने का अर्थ है शिव का ऐसे अत्यधिक समर्पित आत्माओं पर संरक्षण और सुरक्षा। यह दर्शाता है कि जो लोग भगवान के प्रति पूरी तरह से समर्पित होते हैं, ठीक भृंगी की तरह, उन्हें उच्च सम्मान दिया जाता है और वे हमेशा दिव्य उपस्थिति में रहते हैं।

योगिक तपस्या का अवतार भृंगी का तपस्वी और कृश रूप शिव के अनुयायियों द्वारा की जाने वाली गहन तपस्या (tapasya) और वैराग्य का भी प्रतीक है। भृंगी के साथ जुड़कर, कालभैरव योगिक परंपराओं और कठोर आध्यात्मिक अभ्यासों से अपने संबंध को मजबूत करते हैं जो मुक्ति की ओर ले जाते हैं।

36. भक्तसाधितविग्रहाय

जिनकी दिव्य आकृति उनके भक्तों की भक्ति से प्राप्त होती है, उन्हें नमन।

विस्तार : भक्तसाधितविग्रहाय नाम एक गहन संस्कृत यौगिक है जो शैव धर्म के भीतर भक्ति योग के एक मुख्य सिद्धांत को प्रकट करता है - कि दिव्य केवल एक अमूर्त अवधारणा नहीं है, बल्कि गहन भक्ति के माध्यम से ठोस रूप से प्रकट हो सकता है।

व्युत्पत्ति (The Etymology): • भक्त (Bhakta): भक्त, वह जो भक्ति का अभ्यास करता है। • साधित (Sādhita): सिद्ध, प्राप्त, अर्जित, वास्तविक बनाया गया। "साध" मूल से, जिसका अर्थ है सिद्ध करना, पूर्ण करना या सफल होना। • विग्रह (Vigraha): रूप, शरीर, विशेष रूप से एक दिव्य या प्रतिमा संबंधी रूप; एक छवि या मूर्ति।

भक्ति के माध्यम से प्राप्त होने वाला दिव्य स्वरूप (Divine Form Attainable Through Devotion): यह नाम इंगित करता है कि भगवान कालभैरव, अपने बहु-आयामी अभिव्यक्तियों में, अपने उत्साही अनुयायियों की पहुँच से बाहर नहीं हैं। उनका दिव्य स्वरूप (विग्रह), जो अन्यथा अप्रकट या अबोधगम्य रह सकता है, उनके भक्तों की शुद्ध और तीव्र भक्ति के माध्यम से बोधगम्य, मूर्त और अनुभवगम्य हो जाता है। इसका अर्थ है कि अटूट भक्ति के माध्यम से, कालभैरव की अमूर्त परम वास्तविकता एक विशिष्ट रूप ले सकती है जिसे उनके भक्त देख सकते हैं, बातचीत कर सकते हैं और पूजा कर सकते हैं।

कृपा की अभिव्यक्ति (Manifestation of Grace): यह अवधारणा दिव्य के करुणामय और उत्तरदायी स्वभाव को उजागर करती है। कालभैरव, यद्यपि एक भयंकर और ब्रह्मांडीय देवता हैं, उदासीन नहीं हैं। एक ऐसे रूप को प्रकट करने की उनकी इच्छा जो भक्ति द्वारा "साधित" (प्राप्त/वास्तविक बनाया गया) है, उनकी कृपा (अनुग्रह) को रेखांकित करती है। यह एक पारस्परिक संबंध है: भक्त की हार्दिक लालसा एक बोधगम्य उपस्थिति के रूप में एक दिव्य प्रतिक्रिया को उद्घाटित करती है।

सांसारिक धारणा से परे (Beyond Mundane Perception): यहां "रूप" आवश्यक रूप से मानवीय अर्थ में एक भौतिक, भौतिक शरीर नहीं है। यह एक दृष्टि, एक आध्यात्मिक अनुभव, एक आंतरिक बोध, या यहां तक कि एक मूर्ति या पवित्र छवि के भीतर सन्निहित शक्ति को संदर्भित कर सकता है। भक्त की भक्ति दिव्य उपस्थिति को "चार्ज" या "सक्रिय" करती है, जिससे यह वास्तविक और सुलभ हो जाती है।

आध्यात्मिक अभ्यास के लिए निहितार्थ (Implication for Spiritual Practice): यह नाम भक्ति को एक आध्यात्मिक मार्ग के रूप में उसकी प्रभावकारिता की पुष्टि के रूप में कार्य करता है। यह भक्तों को गहरा प्रेम और विश्वास विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करता है, उन्हें आश्वस्त करता है कि उनके sincere प्रयासों को दिव्य अभिव्यक्ति और भगवान के साथ सीधा संबंध प्राप्त होगा। इसका तात्पर्य है कि भक्त का प्रेमपूर्ण समर्पण पारलौकिक और अंतर्निहित के बीच की खाई को पाट सकता है, जिससे अनंत को व्यक्तिगत रूप में स्वयं को प्रकट करने की अनुमति मिलती है।

37. भूतचारिणे

उन (कालभैरव) को नमन, जो भूत-प्रेतों और तत्वों के बीच विचरण करते हैं।

विस्तार : भूतचारिणे (Bhūtacaarine) नाम दो संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: भूत और चारि/चारिन्।

भूत (Bhūta): जैसा कि पहले बताया गया है, भूत के कई परस्पर जुड़े अर्थ हैं: 1. सभी प्राणी या जीवित प्राणी। 2. पांच मौलिक तत्व (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश)। 3. आत्माएं, भूत, तत्व, पिशाच, या निराकार सत्ताएँ—अक्सर वे जो श्मशान घाटों या सीमांत स्थानों में निवास करती हैं।

चारि/चारिन् (Chārī/Chārin): इसका अर्थ है "जो भटकता है," "जो चलता या घूमता है," या "जो बार-बार आता-जाता है।"

आत्माओं के बीच विचरण करने वाला (Wanderer Among Spirits) सबसे सामान्य व्याख्या शिव, और विशेष रूप से भैरव को एक दिव्य सत्ता के रूप में संदर्भित करती है जो आत्माओं, भूतों और गूढ़ सत्ताओं के अर्थ में भूतों के बीच स्वतंत्र रूप से विचरण करते हैं और अक्सर उनका नेतृत्व करते हैं। यह पहलू उन शक्तियों पर उनके प्रभुत्व को उजागर करता है जिन्हें आमतौर पर भयावह या अलौकिक माना जाता है। वह केवल उनके स्वामी (भूतनाथ) ही नहीं हैं, बल्कि सक्रिय रूप से उनके साथ जुड़ते हैं, अक्सर उन्हें अपने गणों के रूप में रखते हैं। यह पारंपरिक सामाजिक मानदंडों से परे उनकी श्रेष्ठता और सभी लोकों पर उनकी महारत को दर्शाता है, यहां तक कि उन लोकों पर भी जिन्हें अंधकारमय या अपवित्र माना जाता है।

तत्वों के स्वामी (Master of the Elements) एक अन्य अर्थ में, चारि का अर्थ "जो तत्वों के माध्यम से चलता या व्याप्त होता है" भी हो सकता है। यह उनकी सार्वभौमिक उपस्थिति और ब्रह्मांड के मौलिक घटकों के रूप में उनके अवतार से जुड़ता है। वह तत्वों से अलग नहीं हैं बल्कि उनमें व्याप्त हैं, जो उनकी सर्वव्यापकता को दर्शाता है।

द्वंद्वों से परे (Beyond Dualities) यह नाम शिव/भैरव के ऐसे स्वरूप को सशक्त रूप से दर्शाता है जो द्वंद्वों से परे हैं। जबकि सामान्य प्राणी भूतों से डरते हैं और उनसे जुड़े स्थानों (जैसे श्मशान घाट, जो भैरव का पसंदीदा निवास स्थान है) से बचते हैं, वह उनके बीच स्वतंत्र रूप से विचरण करते हैं। यह शुद्ध/अशुद्ध, शुभ/अशुभ, सुंदर/बदसूरत के सांसारिक भेदों के प्रति उनके अनासक्ति को दर्शाता है। वह परम योगी हैं, जो सभी परिस्थितियों में और सभी प्राणियों के बीच अविचलित और सर्वोच्च रहते हैं, पूर्ण स्वतंत्रता का प्रतीक हैं।

38. निशाचारिणे

रात्रि के अंधकार में विचरण करने वाले को नमन।

विस्तार : निशाचारिणे नाम संस्कृत के दो शब्दों, निशा और चारिन्, का एक यौगिक है।

निशा: इस शब्द का सीधा अर्थ "रात्रि" या "अंधकार" है। आध्यात्मिक संदर्भ में, "अंधकार" अज्ञान (अविद्या), अस्तित्व के छिपे हुए या गुप्त पहलुओं, अप्रकट, या उस समय को इंगित कर सकता है जब सामान्य मन विश्राम में होता है, जिससे गहरी वास्तविकताओं को उभरने का अवसर मिलता है।

चारिन्: इसका अर्थ है "जो चलता है," "जो विचरण करता है," या "जो आदतन अभ्यास/संलग्न होता है।"

रात्रि का विचरणकर्ता शाब्दिक रूप से, निशाचारिणे का अर्थ है "जो रात्रि में विचरण करता है।" कालभैरव पर लागू होने पर इसके कई अर्थ हैं।

रहस्यमय और अदृश्य लोकों के स्वामी सबसे पहले, यह अस्तित्व के रात्रिचर और अक्सर छिपे हुए पहलुओं पर उनके प्रभुत्व को दर्शाता है। रात्रि रहस्य, अवचेतन, गुप्त विद्या और आत्माओं व सूक्ष्म सत्ताओं के लोकों से जुड़ी है। निशाचारिणे के रूप में, भैरव इन लोकों के स्वामी हैं, उनमें स्वतंत्र रूप से विचरण करते हैं, उन्हें नियंत्रित करते हैं, और उनके परम शासक हैं। यह भूतनाथा जैसे अन्य नामों में संदर्भित भूतों, आत्माओं और अन्य अशरीरी सत्ताओं के स्वामी के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देता है।

अज्ञान के विनाशक दूसरे, "अंधकार" आध्यात्मिक अज्ञान (अविद्या) या सांसारिक, अज्ञानी मन के अंधकार का प्रतीक हो सकता है। इस अंधकार में "विचरण" करके या उसमें निवास करके, भैरव परोक्ष रूप से उसे दूर करने वाले बन जाते हैं। वह वह प्रकाश हैं जो अज्ञान के हृदय में सत्य को प्रकट करते हैं, अपने भक्तों को आध्यात्मिक अस्पष्टता से ज्ञान (ज्ञान) के प्रभात की ओर मार्गदर्शन करते हैं। रात्रि में उनकी उपस्थिति अंधकार में खो जाने की नहीं, बल्कि उसके संप्रभु होने की है।

द्वंद्वों से परे तीसरे, रात्रि सामान्य गतिविधियों के निलंबन और चेतना की अन्य अवस्थाओं के उभरने का समय है। भैरव का रात्रि से जुड़ाव उनकी पारलौकिक प्रकृति का प्रतीक हो सकता है, जो दिन और रात, प्रकाश और अंधकार, अच्छे और बुरे के द्वंद्वों से परे मौजूद है, फिर भी उन सभी को समाहित करता है। वह परम सत्य हैं जो अस्तित्व की सभी अवस्थाओं, प्रकट और अप्रकट, सचेत और अवचेतन, में व्याप्त हैं।

अंधकार में रक्षा करने वाले अंत में, भक्तों के लिए, यह नाम कमजोर समय में उनके सुरक्षात्मक पहलू को इंगित करता है। जैसे एक संरक्षक रात में गश्त करता है, वैसे ही कालभैरव अपने अनुयायियों की रक्षा करते हैं जब वे सबसे अधिक संवेदनशील होते हैं, शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों तरह से, अनदेखे और अज्ञात खतरों से।

39. प्रेतचारिणे

उन प्रेतों के बीच विचरण करने वाले (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : प्रेतचारिणे नाम कालभैरव के एक विशिष्ट और शक्तिशाली पहलू का प्रतिनिधित्व करता है, जो मृतकों के क्षेत्र पर उनके प्रभुत्व और उनके अपरंपरागत स्वभाव पर प्रकाश डालता है।

• प्रेत (Preṭa): यह संस्कृत शब्द एक दिवंगत आत्मा को संदर्भित करता है, विशेष रूप से एक भूत या एक निराकार आत्मा जिसने मृत्यु के बाद अभी तक एक विशिष्ट गंतव्य प्राप्त नहीं किया है। यह अक्सर एक ऐसी आत्मा का तात्पर्य है जो एक संक्रमणकालीन या अपूर्ण अवस्था में है, कभी-कभी दुर्भावनापूर्ण या बेचैन ऊर्जाओं से जुड़ी होती है।

• चारिन् (Cārin): इस प्रत्यय का अर्थ है "जो चलता है," "जो पार करता है," या "जो आदतन चलता या घूमता है।"

निराकार के स्वामी (Master of the Disembodied) प्रेतचारिणे के रूप में, कालभैरव को ऐसे भगवान के रूप में चित्रित किया गया है जो प्रेतों की दुनिया में निवास करते हैं और उनके माध्यम से विचरण करते हैं। यह आत्माओं, भूतों और सभी निराकार संस्थाओं पर उनके पूर्ण अधिकार को दर्शाता है। वह केवल दूर से उनका अवलोकन नहीं कर रहे हैं; वह सक्रिय रूप से उनके क्षेत्र में उपस्थित हैं, उनका मार्गदर्शन कर रहे हैं, उन्हें नियंत्रित कर रहे हैं, और कभी-कभी उन्हें शांत भी कर रहे हैं।

अतिक्रामी अधिकार (Transgressive Authority) प्रेतों के साथ यह अपरंपरागत संबंध कालभैरव की एक ऐसे देवता के रूप में भूमिका पर जोर देता है जो पारंपरिक पवित्रता और सामाजिक मानदंडों को पार करते हैं। जबकि कई देवता शुभता और प्रकाश से जुड़े हैं, भैरव अंधेरे, रहस्यमय और सीमांत को गले लगाते हैं। प्रेतों के बीच विचरण करके, वह अपनी निडरता और इन बेचैन आत्माओं को भी व्यवस्था और मुक्ति प्रदान करने की अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हैं।

मुक्तिदायक शक्ति (Liberating Power) एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, यह रूप कालभैरव की उन आत्माओं को मुक्त करने की क्षमता का सुझाव देता है जो निचले लोकों में फंसी हुई हैं या अधूरी इच्छाओं से बंधी हुई हैं। प्रेतचारिणे की भक्ति नकारात्मक आध्यात्मिक प्रभावों से सुरक्षा या पैतृक आत्माओं की मुक्ति के लिए मांगी जा सकती है।

सीमाओं के संरक्षक (Guardian of Boundaries) मृतकों के बीच उनकी उपस्थिति सीमाओं के संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका को भी मजबूत करती है - जीवन और मृत्यु के बीच की सीमा, भौतिक और सूक्ष्म लोकों के बीच की सीमा। वह सुनिश्चित करते हैं कि अस्तित्व और गैर-अस्तित्व की प्राकृतिक व्यवस्था बनी रहे, और वह आत्माओं के मार्ग को नियंत्रित करते हैं।

40. भयानकाय

भयावह और डरावनी उपस्थिति वाले (भैरव) को नमन।

विस्तार : भयानककाय नाम संस्कृत के शब्दों "भयानक" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "भयंकर," "भयावह," या "डरावना," और "काय" का अर्थ है "शरीर," "रूप," या "आकृति।" इस प्रकार, यह स्पष्ट रूप से कालभैरव का वर्णन करता है कि उनका रूप और उपस्थिति ही भयावह है।

भयंकर रूप (The Terrifying Form) यह गुण कालभैरव के दुर्जेय और विस्मयकारी पहलू पर जोर देता है। उनका भयानक रूप केवल एक बाहरी विशेषता नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक कथन है। यह अधर्मी, राक्षसों और धर्म से विचलित होने वालों के दिलों में भय उत्पन्न करने की उनकी पूर्ण शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। इस रूप को अक्सर भयंकर आँखों, गहरे रंग, नुकीले दाँतों, खोपड़ियों की माला और हथियारों के साथ चित्रित किया जाता है, जो बुराई के खिलाफ उनकी विनाशकारी शक्ति का प्रतीक है।

भय का प्रतीकवाद (Symbolism of Fear) आध्यात्मिक संदर्भ में, यह भयावह उपस्थिति कई उद्देश्यों को पूरा करती है: • अहंकार का विनाश: भयानककाय द्वारा प्रेरित भय व्यक्तिवाद के भ्रम और झूठे अहंकार (अहंकार) को तोड़ सकता है, जो जीव को सांसारिक पीड़ा से बांधता है। • वैराग्य: परम लौकिक आतंक का एक रूप प्रस्तुत करके, वह भक्तों को सभी सांसारिक आसक्तियों और सुखों की क्षणभंगुर प्रकृति की याद दिलाते हैं, जो अंततः समय और विनाश की उनकी भयानक शक्ति के अधीन हैं। • संरक्षण: उनके भक्तों के लिए, यह भयावह रूप सभी दुर्भावनापूर्ण शक्तियों, दृश्य और अदृश्य दोनों के खिलाफ एक ढाल के रूप में कार्य करता है। वह परम रक्षक हैं जो बुराई को दूर करते हैं।

भय से परे (Transcending Fear) विरोधाभासी रूप से, जबकि वह "भयंकर" हैं, उनके सच्चे भक्त उनकी उपस्थिति में कोई भय अनुभव नहीं करते हैं। इसके बजाय, वे भय से मुक्ति पाते हैं, क्योंकि वे समझते हैं कि उनका भयावह पहलू केवल अज्ञान (अविद्या) और नकारात्मकता की ओर निर्देशित है। उनका भयंकर रूप उनकी सर्वोच्च चेतना की अभिव्यक्ति है जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था और न्याय की देखरेख करती है, यह सुनिश्चित करती है कि सभी चीजें अपनी आदिम अवस्था में लौट आएं।

41. भवात्मने

अस्तित्व और सृष्टि की आत्मा के स्वरूप को नमन।

विस्तार : भवात्मा नाम दो संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है: भव और आत्मन। यह नाम कालभैरव के अस्तित्व, सृष्टि और होने के सार से गहरे संबंध को स्पष्ट करता है।

भव (Bhava): भव का अर्थ है "अस्तित्व," "होना," "जन्म," "संसार," या "सृष्टि।" व्यापक अर्थ में, इसमें संपूर्ण प्रकट ब्रह्मांड, अस्तित्व में आने की प्रक्रिया और जीवन का निरंतर चक्र शामिल है। यह अपनी विविध रूपों और प्रक्रियाओं के साथ घटनात्मक दुनिया को दर्शाता है। कुछ दार्शनिक संदर्भों में, भव पुनर्जन्म (संसार) की अवस्था को भी दर्शाता है, जिससे शिव अंततः प्राणियों को मुक्ति दिलाते हैं।

आत्मन (Ātman): आत्मन का अर्थ है "आत्मा," "स्वयं," "सार," या "मूलभूत केंद्र।" यह शाश्वत, अपरिवर्तनीय और अंतर्निहित आत्मा है जो सभी व्यक्तिगत अस्तित्व का आधार है और, एक ब्रह्मांडीय अर्थ में, ब्रह्म, परम वास्तविकता का पर्याय है।

अस्तित्व और सृष्टि की आत्मा (The Soul of Existence and Creation): जब संयुक्त किया जाता है, तो भवात्मा का अर्थ है "अस्तित्व/सृष्टि की आत्मा या सार।" यह गहन ध्यानात्मक नाम कालभैरव को सभी सृष्टि के भीतर अंतर्निहित आत्मा के रूप में दर्शाता है। वे केवल निर्माता नहीं हैं, बल्कि ब्रह्मांड का मूल ताना-बाना और चेतन सिद्धांत हैं।

भवात्मा के रूप में, कालभैरव हैं:

1. ब्रह्मांड की आंतरिक वास्तविकता: वे अंतर्निहित आध्यात्मिक पदार्थ हैं जो सभी घटनाओं को जन्म देते हैं और बनाए रखते हैं। अस्तित्व का हर पहलू, सबसे छोटे परमाणु से लेकर सबसे बड़ी आकाशगंगा तक, उनका अंतिम स्रोत और सार है। 2. जीवन-प्रदायक सिद्धांत: वे वह प्राण (prāṇa) हैं जो सभी प्राणियों और स्वयं ब्रह्मांड में व्याप्त और उन्हें जीवंत करते हैं। इस आत्मन के बिना, भव (अस्तित्व) निष्क्रिय और अर्थहीन होगा। 3. सत्ता का आधार: यह नाम कालभैरव को परम आधार या नींव के रूप में स्थापित करता है जिस पर सभी सृष्टि टिकी हुई है। वे वह हैं जिसके बिना कुछ भी अस्तित्व में नहीं आ सकता या नहीं हो सकता। 4. अभिव्यक्ति से परे फिर भी उसके भीतर: जबकि वे परात्पर भगवान हैं, भवात्मा के रूप में, वे गहरे रूप से अंतर्निहित भी हैं, जो प्रकट दुनिया के हर कण के भीतर निवास करते हैं। यह शिव के सगुण (गुणों सहित, प्रकट) और निर्गुण (गुणों के बिना, अप्रकट) दोनों के रूप में दोहरे स्वरूप को उजागर करता है।

इसलिए, कालभैरव को भवात्मा के रूप में नमन करना उनकी सर्वव्यापी उपस्थिति, ब्रह्मांड की आत्मा के रूप में उनकी भूमिका, और सभी सृष्टि और अस्तित्व के अंतिम स्रोत और सार की स्वीकृति है।

42. भूर्भुवोलक्ष्म्यै

तीनों लोकों (पृथ्वी, वातावरण और स्वर्ग) की शोभा और महिमा स्वरूप को नमन।

विस्तार : नाम भूर्भुवोलक्ष्म्यै एक यौगिक शब्द है जिसमें भूर, भुवः, लोक और लक्ष्मी शामिल हैं, और यह कालभैरव को अस्तित्व के तीन मूलभूत लोकों में व्याप्त सर्वोच्च वैभव और महिमा के रूप में संदर्भित करता है।

तीन लोक (त्रैलोक्य) • भूर: यह भूर्लोक को संदर्भित करता है, जो सांसारिक तल, मानवीय अनुभव की भौतिक दुनिया है। • भुवः: यह भुवर्लोक को संदर्भित करता है, जो वायुमंडलीय या मध्यवर्ती तल है, सूक्ष्म ऊर्जाओं, प्राणों और विभिन्न छोटे देवताओं या आत्माओं का क्षेत्र है। • लोक: यह शब्द अक्सर "भूर्लोक" और "भुवर्लोक" बनाने के लिए जोड़ा जाता है, और इसका सामान्य अर्थ "दुनिया" या "क्षेत्र" होता है। इस संदर्भ में, यह भूर और भुवः के संयोजन को इंगित करता है, जिसमें निहित तीसरा लोक स्वर्लोक या स्वर्गलोक (आकाशीय स्वर्ग) है। तो, यह शब्द सामूहिक रूप से "त्रैलोक्य" – तीन प्राथमिक दुनिया: पृथ्वी, वायुमंडल और स्वर्ग की पारंपरिक हिंदू अवधारणा को समाहित करता है।

लक्ष्मी: वैभव और महिमा इस संदर्भ में लक्ष्मी, देवी लक्ष्मी को एक अलग देवता के रूप में संदर्भित नहीं करती हैं, बल्कि उन अंतर्निहित गुणों को संदर्भित करती हैं जिन्हें वह ब्रह्मांड के भीतर व्यक्त करती हैं: वैभव, महिमा, समृद्धि, शुभता, सौंदर्य और कल्याण। इस प्रकार, कालभैरव इन तीनों लोकों में व्याप्त भव्यता, चमक और अंतर्निहित शुभता के स्वयं अवतार और स्रोत हैं।

सर्वोच्च दिव्य अंतर्व्याप्ति यह नाम कालभैरव की भूमिका को अस्तित्व के सभी तलों के भीतर सभी सौभाग्य, सौंदर्य और जीवंत ऊर्जा के व्याप्त सार और अंतिम स्रोत के रूप में उजागर करता है। वह केवल इन लोकों पर शासन नहीं करते हैं; वह उनकी महिमा 'हैं'। भूर, भुवः और स्वः (स्वर्गलोक) में जो कुछ भी सुंदर, समृद्ध और महत्वपूर्ण है, वह उनसे ही निकलता है। वह जीवन-शक्ति, दीप्तिमान ऊर्जा और अंतर्निहित पोषण हैं जो इन लोकों को उनकी विशिष्ट महिमा प्रदान करते हैं।

ब्रह्मांडीय शुभता कालभैरव को भूर्भुवोलक्ष्म्यै के रूप में नमन करके, भक्त उन्हें सार्वभौमिक परोपकारी के रूप में स्वीकार करते हैं जो तीनों लोकों में रहने वाले सभी प्राणियों को समृद्धि और कल्याण प्रदान करते हैं। उनकी उपस्थिति ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के व्यवस्थित और शुभ प्रवाह को सुनिश्चित करती है, जो पृथ्वी की सुंदरता, वायुमंडल की सूक्ष्म जीवन शक्ति और स्वर्ग की दिव्य महिमा के रूप में प्रकट होती है।

43. भूतिमाते

अपार दिव्य शक्तियों और समृद्धि वाले को नमन।

विस्तार : भूतिमते नाम संस्कृत शब्द भूति से लिया गया है, जिसमें प्रत्यय -मात लगा है, जो स्वामित्व को दर्शाता है।

भूति को समझना भूति (भूति) एक संस्कृत शब्द है जो अर्थों से समृद्ध है, जिसमें कई प्रमुख अवधारणाएँ शामिल हैं: • अस्तित्व/होना: यह स्वयं होने या अस्तित्व की स्थिति को संदर्भित करता है, उस अंतर्निहित वास्तविकता को दर्शाता है जिससे सभी चीजें प्रकट होती हैं। • समृद्धि/कल्याण: यह धन, ऐश्वर्य, कल्याण और भलाई को दर्शाता है। यह भौतिक और आध्यात्मिक दोनों तरह की समृद्धि हो सकती है। • अलौकिक शक्तियाँ (सिद्धियाँ): अक्सर, भूति विभूतियों को संदर्भित करती है, जो असाधारण दिव्य शक्तियाँ, आध्यात्मिक उपलब्धियाँ या सिद्धियाँ हैं। इनमें अणिमा (सूक्ष्मता), महिमा (विशालता), लघिमा (हल्कापन), प्राप्ति (प्राप्ति), प्राकाम्य (अदम्य इच्छा), ईशित्व (प्रभुत्व), और वशित्व (नियंत्रण) जैसी शक्तियाँ शामिल हैं। • पवित्र भस्म: शैव धर्म के संदर्भ में, भूति का अर्थ "पवित्र भस्म" या "विभूति" भी है, जो वैराग्य, पवित्रता और भौतिक संसार की क्षणभंगुर प्रकृति का प्रतीक है। भगवान शिव स्वयं को भस्म से लेपते हैं, जो मृत्यु और भ्रम पर उनकी महारत को दर्शाता है।

सभी शक्तियों और समृद्धि के स्वामी भूतिमते के रूप में, कालभैरव भूति के इन सभी पहलुओं के परम स्वामी और दाता हैं।

अस्तित्व पर महारत: वे अस्तित्व के ताने-बाने का प्रतीक हैं, जो सभी के स्रोत और पालक हैं। उनकी उपस्थिति सभी अभिव्यक्तियों की मूलभूत वास्तविकता को दर्शाती है।

समृद्धि के दाता: वे सभी धन और कल्याण के दाता हैं, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों। भक्त उनसे समृद्धि, सफलता और प्रतिकूलता से सुरक्षा के लिए प्रार्थना करते हैं। यह समृद्धि केवल सांसारिक नहीं है; इसमें आध्यात्मिक अनुभव और आंतरिक शांति की समृद्धि भी शामिल है।

अलौकिक शक्तियों का स्रोत: वे सभी रहस्यमय शक्तियों (सिद्धियों) के स्वामी हैं। आध्यात्मिक साधक जो अलौकिक क्षमताओं को प्राप्त करना चाहते हैं, वे अक्सर भैरव का ध्यान करते हैं, क्योंकि वे ऐसी सभी शक्तियों के परम स्वामी हैं। वे योग्य लोगों को ये शक्तियाँ प्रदान करते हैं, उन्हें उनके उचित उपयोग में मार्गदर्शन करते हैं।

पवित्र भस्म का प्रतीकवाद: यद्यपि वर्तमान संदर्भ में इसका सीधा अर्थ "भस्म लेपना" नहीं है, "भूति" का पवित्र भस्म के रूप में अंतर्निहित महत्व उनकी परिवर्तनकारी शक्ति से जुड़ता है। जैसे भस्म दहन के बाद का अंतिम, शुद्ध अवशेष है, भैरव सभी सांसारिक अनित्यता से परे पारलौकिक

वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करते हैं।

संक्षेप में, भूतिमते कालभैरव को सर्वोच्च, सर्वशक्तिमान देवता के रूप में दर्शाता है जो न केवल अस्तित्व, समृद्धि और दिव्य शक्तियों के सभी रूपों के स्वामी हैं, बल्कि उन्हें अपने सच्चे भक्तों को भी प्रदान करते हैं, जिससे उन्हें सांसारिक सफलता और अंतिम आध्यात्मिक मुक्ति दोनों की ओर ले जाया जाता है।

44. भवविक्रमाय

जिनके पराक्रम और शक्ति से सृष्टि का निर्माण होता है, उन (भगवान) को नमन।

विस्तार : नाम भवविक्रमाय एक गहन संस्कृत यौगिक है, जो "भव" और "विक्रम" के संयोजन से बना है, जो ब्रह्मांडीय सृष्टि और शक्ति में कालभैरव की भूमिका पर प्रकाश डालता है।

भव: अस्तित्व और बनने का सार "भव" संस्कृत में एक समृद्ध शब्द है, जिसके कई महत्वपूर्ण अर्थ हैं: 1. अस्तित्व या होना: यह अस्तित्व की स्थिति, होने के तथ्य को संदर्भित करता है। 2. बनना या उत्पत्ति: यह अस्तित्व में आने की प्रक्रिया, उत्पत्ति या सृष्टि को दर्शाता है। इस संदर्भ में, यह विशेष रूप से ब्रह्मांडीय अभिव्यक्ति या सृष्टि की ओर इशारा करता है। 3. भगवान शिव (अस्तित्व के दाता के रूप में): भव भगवान शिव के अष्टमूर्ति (आठ रूपों) में से एक है, जो उस पहलू का प्रतिनिधित्व करता है जो अस्तित्व को उत्पन्न और बनाए रखता है। वह 'बनने के दाता' या 'जो है' के रूप में भव हैं।

विक्रम: पराक्रम, शौर्य और शक्तिशाली कदम "विक्रम" का अर्थ है: 1. पराक्रम और शौर्य: असाधारण शक्ति, साहस और वीरतापूर्ण पराक्रम। 2. शक्तिशाली कदम या विजय: यह शक्तिशाली कदमों को भी संदर्भित कर सकता है, जैसे कि विष्णु ने अपने त्रिविक्रम (तीन कदम) अवतार में उठाए थे, जो सभी लोकों को जीतने या व्याप्त करने का संकेत देता है।

दिव्य पराक्रम के माध्यम से ब्रह्मांडीय सृष्टि जब संयुक्त किया जाता है, तो भवविक्रमाय उस एक को संदर्भित करता है "जिसका पराक्रम (विक्रम) अस्तित्व या सृष्टि (भव) को जन्म देता है।" यह दर्शाता है:

1. सृष्टि की प्रेरक शक्ति: यह नाम भैरव (और विस्तार से शिव) को सृष्टि के पूरे चक्र के पीछे की परम, शक्तिशाली शक्ति के रूप में स्वीकार करता है। यह सृष्टि का एक निष्क्रिय कार्य नहीं है, बल्कि दिव्य ऊर्जा और इच्छा का एक सक्रिय, गतिशील और शक्तिशाली प्रदर्शन है जो ब्रह्मांड को आरंभ और बनाए रखता है। 2. अंतर्निहित शक्ति: यह इस बात पर जोर देता है कि सार्वभौमिक अभिव्यक्ति का कार्य कालभैरव की अंतर्निहित, अदम्य शक्ति और क्षमता से उत्पन्न होता है। उनका 'विक्रम' ब्रह्मांडीय ऊर्जा (शक्ति) का पर्याय है जो स्वयं को सृष्टि के रूप में व्यक्त करती है। 3. सर्वव्यापी निर्माता: जिस प्रकार एक शक्तिशाली कदम विशाल दूरी तय करता है, उसी प्रकार सृष्टि में उनका 'विक्रम' पूरे अस्तित्व को कवर करता है, जीवन और पदार्थ के असंख्य रूपों को उत्पन्न करता है। वह वह है जिसका शक्तिशाली प्रभाव सभी को व्याप्त और स्थापित करता है। 4. मानव समझ से परे: ब्रह्मांडीय सृष्टि का विशाल पैमाना और शक्ति मानव समझ से परे है, और यह नाम ऐसे एक incomprehensible कार्य को कालभैरव की सर्वोच्च शक्ति को समर्पित करता है।

इस प्रकार, भवविक्रम के रूप में भैरव उस दिव्य शक्ति के अवतार हैं जो ब्रह्मांड को अस्तित्व में लाती है, अपनी गहन और अदम्य शक्ति के माध्यम से इसे लगातार नवीनीकृत और बनाए रखती है।

45. पद्मगर्भाय

जिनके नाभि में कमल है और जिससे सृष्टि उत्पन्न होती है, उनको नमन।

विस्तार : पद्मगर्भाय नाम पद्म (कमल) और गर्भ (गर्भ, आंतरिक, मूल, या भ्रूण) का एक यौगिक है, इसलिए इसका शाब्दिक अर्थ है "जिसका गर्भ कमल है" या "जिसका मूल/सार कमल है।" हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान और शिव के संदर्भ में, यह नाम गहरा प्रतीकवाद रखता है, विशेष रूप से सृष्टि के संबंध में।

ब्रह्मांडीय कमल (पद्म) कमल हिंदू धर्म में एक सार्वभौमिक प्रतीक है, जो पवित्रता, सौंदर्य, आध्यात्मिक जागृति और सबसे महत्वपूर्ण रूप से, ब्रह्मांडीय सृष्टि का प्रतिनिधित्व करता है। कीचड़ भरे पानी में उगने की उसकी क्षमता, फिर भी बेदाग रहने की क्षमता, भौतिक आसक्तियों से आध्यात्मिक उत्थान की संभावना को दर्शाती है। यहाँ, कमल केवल एक पौधा नहीं बल्कि ब्रह्मांड का आदिम मैट्रिक्स है।

सृष्टि का गर्भ (गर्भ) गर्भ आंतरिक, सार, मूल, या अस्तित्व के भ्रूण को दर्शाता है। पारंपरिक रूप से, विष्णु की नाभि से निकलने वाला कमल ब्रह्मा, सृष्टिकर्ता देवता से जुड़ा है, जो सृष्टि को आरंभ करने के लिए इस कमल से उत्पन्न होते हैं। हालांकि, शैव सिद्धांत और तांत्रिक परंपराओं में, सृष्टि का अंतिम स्रोत स्वयं शिव हैं।

परम सृष्टिकर्ता के रूप में शिव जब कालभैरव को पद्मगर्भाय के रूप में संबोधित किया जाता है, तो यह दर्शाता है कि वे परम स्रोत हैं जिससे विष्णु, और विस्तार से ब्रह्मा भी, सृष्टि के उद्देश्य से उत्पन्न होते हैं। वे आधार हैं, अप्रकट स्रोत (परब्रह्म) जिससे कमल द्वारा प्रतीक ब्रह्मांडीय ब्रह्मांड उत्पन्न होता है। इसका तात्पर्य है कि रचनात्मक ऊर्जा (शक्ति) और रचनात्मक सिद्धांत (ब्रह्मा) उनके गहन, अथाह सार से उत्पन्न होते हैं।

रूप और समय से परे यह नाम, इसलिए, कालभैरव को पारंपरिक सृष्टिकर्ता देवताओं से ऊपर उठाता है, उन्हें सभी अस्तित्व के आदिम आधार के रूप में चित्रित करता है, वह जिसकी सत्ता ही "कमल-गर्भ" है जो सभी ब्रह्मांडों, सभी रूपों और सभी समय को जन्म देती है। यह उनके विनाशकारी पहलू (काल) को उनकी रचनात्मक क्षमता से जोड़ता है, इस बात पर जोर देता है कि विनाश केवल पुनर्निर्माण की प्रस्तावना है, एक शाश्वत चक्र जिसकी देखरेख वे करते हैं।

46. महागर्भाय

जो स्वयं के भीतर महान ब्रह्मांडीय गर्भ को समाहित किए हुए हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : महागर्भाय नाम कालभैरव का एक गहन वर्णन है, जो संस्कृत के महा और गर्भ शब्दों से मिलकर बना है।

महा (Mahā): अर्थ "महान," "विशाल," "विस्तृत," या "सर्वोच्च।" यह एक असीम और सर्वव्यापी प्रकृति को दर्शाता है।

गर्भ (Garbha): शाब्दिक अर्थ "गर्भ," "भ्रूण," "आंतरिक," या "सबसे भीतरी भाग।" ब्रह्मांडीय अर्थ में, यह रचनात्मक क्षमता, आदिम स्रोत, या वह बीज है जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है।

ब्रह्मांडीय गर्भ (The Cosmic Womb) यह नाम कालभैरव को सृष्टि के परम भंडार, "महान ब्रह्मांडीय गर्भ" के रूप में चित्रित करता है जिससे सभी अस्तित्व उत्पन्न होते हैं और जिसमें वे अंततः विलीन हो जाते हैं। यह वैदिक परंपरा में हिरण्यगर्भ (स्वर्ण अंडा या ब्रह्मांडीय गर्भ) की अवधारणा से संबंधित है, हालांकि यहाँ यह भैरव के दुर्जेय रूप के भीतर पूरी तरह से समाहित है। वह केवल एक निर्माता नहीं हैं, बल्कि सभी सृष्टि का सार, स्थान और संभाव्यता हैं।

सभी अभिव्यक्तियों का स्रोत (Source of All Manifestation) महागर्भ को धारण करने वाले के रूप में, कालभैरव सभी प्रकट घटनाओं का अप्रकट स्रोत हैं। वह पूरे ब्रह्मांड—सभी ब्रह्मांडीय अंडों, सभी आकाशगंगाओं, सभी प्राणियों और प्रकृति के सभी नियमों—को अपने सर्वोच्च स्वरूप में धारण करते हैं। यह सृष्टि और विलय की अनंत क्षमता को दर्शाता है, जो अस्तित्व की रूपरेखा को अपने ही भीतर समाहित किए हुए है।

आंतरिकता और गुप्त शक्ति (Interiority and Hidden Power) गर्भ शब्द आंतरिकता का भी अर्थ है, यह दर्शाता है कि असीम रचनात्मक शक्ति भैरव का एक आंतरिक हिस्सा है, न कि कोई बाहरी शक्ति जिसका वह केवल उपयोग करते हैं। यह एक छिपी हुई, गहन और अक्सर रहस्यमय शक्ति की ओर इशारा करता है जो उनकी प्रत्यक्ष अभिव्यक्तियों को रेखांकित करती है।

संभावना का अवतार (Embodiment of Potential) यह नाम उनकी भूमिका को केवल एक संहारक या रक्षक के रूप में ही नहीं, बल्कि वास्तविकता के मूलभूत आधार के रूप में भी उजागर करता है, वह उपजाऊ भूमि जिससे सभी जीवन उत्पन्न होता है और जिसमें वह लौटता है, जिससे वह ब्रह्मांडीय क्षमता और सार्वभौमिक पोषण के पूर्ण अवतार बन जाते हैं।

47. विश्वगर्भ्याय

अपने अस्तित्व में संपूर्ण ब्रह्मांड को समाहित करने वाले को नमन।

विस्तार : विश्वगर्भाय (विश्वगर्भा) नाम एक गहन संस्कृत यौगिक है, जो दो महत्वपूर्ण शब्दों को जोड़ता है: विश्व और गर्भ।

• विश्व (Viśva): इस शब्द का अर्थ है "समस्त," "ब्रह्मांड," "जगत," या "अस्तित्व की समग्रता।" इसमें वह सब कुछ शामिल है जो है, रहा है और होगा—सृष्टि की संपूर्णता, व्यक्त और अव्यक्त दोनों।

• गर्भ (Garbha): इस शब्द के कई अर्थ हैं: "गर्भ," "भ्रूण," "आंतरिक," "अंतरतम सार," या "जो धारण करता है।"

ब्रह्मांडीय गर्भ और धारक (The Cosmic Womb and Container) जब संयुक्त किया जाता है, तो विश्वगर्भाय का अर्थ है "वह जिसके गर्भ में ब्रह्मांड है" या "वह जो अपने भीतर पूरे ब्रह्मांड को समाहित किए हुए है।" यह अवधारणा कई हिंदू ब्रह्मांड विज्ञानों के केंद्र में है, जहाँ ईश्वर केवल निर्माता ही नहीं, बल्कि सभी सृष्टि का पालक और अंतिम आश्रय भी है। कालभैरव, विश्वगर्भाय के रूप में, इस परम सत्य को मूर्त रूप देते हैं। वह अनंत विस्तार हैं जिनके भीतर सभी आकाशगंगाएँ, तारे, ग्रह, जीवित प्राणी और यहाँ तक कि सूक्ष्म ऊर्जाएँ भी निवास करती हैं।

सभी अस्तित्व की आंतरिक वास्तविकता (The Inner Reality of All Existence) यह नाम इस विश्वास की ओर इशारा करता है कि ब्रह्मांड की प्रतीत होने वाली बाहरी विशालता ईश्वर से अलग नहीं है, बल्कि ईश्वर के सार से ही निकली है और उसी में समाहित है। यह एक अद्वैतवादी समझ का सुझाव देता है जहाँ संपूर्ण सृष्टि दिव्य चेतना का एक अभिन्न अंग है।

परम अद्वैत (Ultimate Non-duality) दार्शनिक रूप से, विश्वगर्भाय परम अद्वैत (अद्वैत) को दर्शाता है जहाँ धारक और धारित, निर्माता और सृष्टि के बीच कोई भेद नहीं है। सब कुछ इस एक, सर्व-समावेशी दिव्य सत्ता से उत्पन्न होता है और अंततः उसी में विलीन हो जाता है। इसका तात्पर्य है कि सभी रूप और घटनाएँ उसकी अद्वितीय वास्तविकता की अभिव्यक्तियाँ हैं।

अभिव्यक्ति और विलय (Manifestation and Dissolution) जैसे एक माँ अपने गर्भ में एक भ्रूण को धारण करती है, उसे जन्म तक पोषित करती है, वैसे ही विश्वगर्भाय ब्रह्मांड को धारण करते हैं, उसे अभिव्यक्ति (सृष्टि) में लाते हैं, उसे बनाए रखते हैं (संरक्षण), और अंततः ब्रह्मांडीय समय के

चक्रों के दौरान उसे अपने अस्तित्व में (विलय) पुनः अवशोषित कर लेते हैं। यह भूमिका कालभैरव के समय (काल) के साथ जुड़ाव के साथ गहराई से प्रतिध्वनित होती है, क्योंकि वह वही हैं जो अपने ब्रह्मांडीय गर्भ के भीतर सृष्टि और विनाश के चक्रों को नियंत्रित करते हैं।

48. भुवे

पृथ्वी और अस्तित्व के साक्षात स्वरूप को नमन।

विस्तार : भुवे नाम संस्कृत मूल "भू" से लिया गया है, जिसके गहरे और बहुआयामी अर्थ हैं।

पृथ्वी का स्वरूप (पृथ्वी तत्व) "भू" मूल रूप से पृथ्वी, भौतिक संसार और वह भूमि जिस पर सभी जीवन खड़ा है, को संदर्भित करता है। भुवे के रूप में, कालभैरव पृथ्वी सिद्धांत (पृथ्वी तत्व) के साक्षात् स्वरूप हैं। यह उनकी आधारभूत शक्ति, नींव और वास्तविकता की भौतिक अभिव्यक्ति के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है। वह स्थिरता, दृढ़ता और पोषण हैं जो पृथ्वी प्रदान करती है। यह पहलू उन्हें भौतिकता से जोड़ता है, न कि एक सीमा के रूप में, बल्कि उस दिव्य आधार के रूप में जिस पर सभी अनुभव प्रकट होते हैं।

अस्तित्व और बनने का स्रोत केवल पृथ्वी से परे, "भू" में "होना," "बनना," या "अस्तित्व" (भाव) की अवधारणा भी शामिल है। इसलिए, भुवे अस्तित्व के मूलभूत सिद्धांत, "होने" की स्थिति का प्रतिनिधित्व करते हैं। वह आदिम शक्ति हैं जिससे सभी चीजें उत्पन्न होती हैं और जिसमें सभी चीजें विलीन हो जाती हैं। यह उन्हें सभी प्रकट वास्तविकता का स्रोत और सार बनाता है, ब्रह्मांड का निरंतर "होना"।

व्यापकता और उपस्थिति यह नाम उनकी सर्वव्यापकता को भी दर्शाता है। जिस प्रकार पृथ्वी सभी के नीचे है, सभी को सहारा देती है, और भौतिक क्षेत्र में हर जगह मौजूद है, कालभैरव भुवे के रूप में सृष्टि में अपनी व्यापक उपस्थिति को दर्शाते हैं। वह अस्तित्व के ताने-बाने से अविभाज्य हैं, हर परमाणु और हर प्राणी में अंतर्निहित (भीतर निवास करने वाले) हैं।

पालक और आधार जिस प्रकार पृथ्वी सभी जीवन को धारण करती है, भुवे भी परम पालक हैं। वह अचल नींव हैं जिस पर सृष्टि, संरक्षण और संहार का चक्रीय नृत्य होता है। उन्हें भुवे के रूप में स्वीकार करना हमारे अस्तित्व के दिव्य आधार और ब्रह्मांड के दृढ़ समर्थन को पहचानने का कार्य है।

49. अभूवे

जन्म रहित, समस्त अस्तित्व से परे (अभुवे) को नमन।

विस्तार : अभुवे नाम संस्कृत शब्द "अभू" से लिया गया है, जो उपसर्ग "अ-" (जिसका अर्थ "नहीं" या "अन-") और "भू" या "भव" (जिसका अर्थ "होना," "अस्तित्व में होना," या "बनना") का संयोजन है।

अजन्मा और बिना उत्पत्ति के (अजा) अभुवे का प्राथमिक अर्थ "अजन्मा" या "अनुत्पन्न" है। हिंदू दर्शन में, इसका अर्थ है कि भगवान शिव, अपने परम रूप कालभैरव के रूप में, बिना किसी शुरुआत के, अनादि हैं। वे न तो बनाए गए हैं, न ही वे ब्रह्मांड की अन्य सभी संस्थाओं के विपरीत, किसी भी निर्माण या विकास प्रक्रिया के माध्यम से अस्तित्व में आते हैं। यह ब्रह्म, सर्वोच्च वास्तविकता के विचार के साथ संरेखित है, जो शाश्वत और अनुत्पन्न है। वे शुद्ध अस्तित्व हैं, कुछ ऐसा नहीं जो "बन गया" हो।

अस्तित्व और बनने से परे अभुवे होने के कारण, कालभैरव समय और स्थान की सभी सीमाओं को पार करते हैं, जिसमें जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म (संसार) के चक्र भी शामिल हैं। वे कार्य-कारण के घटनात्मक संसार से परे हैं। जबकि ब्रह्मांड और उसके सभी निवासी सृजन, संरक्षण और विघटन के

अधीन हैं, कालभैरव अप्रकट, अपरिवर्तनीय और निरपेक्ष रहते हैं। वे वह आधार हैं जिस पर सभी अस्तित्व टिके हुए हैं, लेकिन वे उससे बंधे नहीं हैं।

रूप और गुणों से परे (निर्गुण) क्योंकि वे अजन्मा और अनुत्पन्न हैं, कालभैरव को इस पहलू में रूप से परे (निराकार) और गुणों से परे (निर्गुण) समझा जाता है। वे शुद्ध चेतना हैं जो सभी को समझती है, फिर भी प्रकट दुनिया का हिस्सा नहीं हैं। यह उनकी पारलौकिक प्रकृति को परम वास्तविकता के रूप में इंगित करता है जिसे इंद्रियों या बुद्धि द्वारा पूरी तरह से समझा नहीं जा सकता है।

सभी का स्रोत, फिर भी निर्मित नहीं विरोधाभासी रूप से, जबकि वे अजन्मा हैं, वे परम स्रोत हैं जिससे सभी सृजन उत्पन्न होते हैं। यह उनकी स्थिति को प्राथमिक कारण (परमकारण) के रूप में उजागर करता है जिसका स्वयं कोई कारण नहीं है। कालभैरव को अभुवे के रूप में स्वीकार करना उनके सर्वोच्च, अकृत और परम दिव्य सार, सभी अस्तित्व के कालातीत और निराकार आधार की गहरी पहचान है।

50. भूतत्वाय

सभी प्राणियों के मूल तत्व के स्वरूप को नमन।

विस्तार : भूतत्वाय नाम संस्कृत के शब्दों भूत और तत्त्व से लिया गया है।

भूत (Bhūta): इस शब्द के कई अर्थ हैं: • सभी मौजूदा प्राणी या निर्मित वस्तुएँ, जिनमें जीवन के सभी रूप, सजीव और निर्जीव शामिल हैं। • पंचमहाभूत—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश—जो भौतिक ब्रह्मांड के मूलभूत निर्माण खंड हैं। • पिछली घटनाएँ या वह जो अस्तित्व में आया है।

तत्त्व (Tattva): यह शब्द "उसकापन," "सच्चा स्वरूप," "सार," "सिद्धांत," या "वास्तविकता" को दर्शाता है। दार्शनिक संदर्भों में, एक तत्त्व अस्तित्व की एक मूलभूत श्रेणी या सिद्धांत है, ब्रह्मांड का एक घटक है।

सभी प्राणियों का मूलभूत सार (The Fundamental Essence of All Beings) जब संयुक्त किया जाता है, तो भूतत्त्व सभी निर्मित प्राणियों और तत्वों के आवश्यक स्वरूप, मूलभूत सिद्धांत या अंतर्निहित वास्तविकता को संदर्भित करता है। यह हर चीज के आंतरिक "होनेपन" की ओर इशारा करता है। भगवान शिव को भूतत्वाय के रूप में संबोधित करना उन्हें अस्तित्व के मूल आधार, उस परम सिद्धांत के रूप में स्वीकार करना है जिससे सभी अस्तित्व प्रकट होते हैं और जिसमें सभी अस्तित्व विलीन हो जाते हैं। वह केवल निर्माता या पालक नहीं हैं, बल्कि स्वयं सृष्टि का मूलभूत सार और सत्य हैं।

तत्वों का सिद्धांत (The Principle of the Elements) यह देखते हुए कि भूत पंचमहाभूतों को भी संदर्भित करता है, भूतत्त्व को इन तत्वों को नियंत्रित करने वाले आवश्यक सिद्धांत के रूप में समझा जा सकता है। भगवान शिव, भूतत्त्व के रूप में, अदृश्य शक्ति, बुद्धिमान डिज़ाइन और परम सत्य हैं जो पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश के अस्तित्व और संचालन को रेखांकित करते हैं। वह तात्विक ब्रह्मांड के भौतिक कारण और कुशल कारण हैं।

परम वास्तविकता (The Ultimate Reality) दार्शनिक रूप से, यह नाम शिव को परब्रह्म या परम वास्तविकता की स्थिति तक पहुँचाता है, यह दावा करते हुए कि वह उन सभी का मूलभूत सत्य (तत्त्व) हैं जो "बन गए हैं" (भूत)। इसका तात्पर्य है कि उनकी चेतना और शक्ति हर कण और हर प्राणी में व्याप्त है, जिससे वह ब्रह्मांड की मूलभूत वास्तविकता बन जाते हैं। भूतत्वाय को नमन करना इसलिए दिव्य के ब्रह्मांडीय, सर्वव्यापी स्वरूप, उस एक सत्य की स्वीकृति है जो सभी बहुलता को रेखांकित करता है।

51. भुवनाधीशाय

सभी लोकों के सर्वोच्च शासक को नमन।

विस्तार : भुवनाधीशाय नाम भुवन, अधि और ईश का एक यौगिक है, जो एक गहन ब्रह्मांडीय अधिकार को दर्शाता है।

समस्त लोकों के शासक (भुवन) भुवन शब्द संपूर्ण ब्रह्मांड, सभी मौजूदा लोकों, ग्रहों और अस्तित्व के तलों को संदर्भित करता है। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, इन्हें आमतौर पर चौदह लोकों के रूप में वर्णित किया गया है - सात ऊपरी लोक और सात निचले पाताल लोक। विस्तार से, यह सभी प्रकट अस्तित्व, सभी रचना और अस्तित्व के सभी तलों, दृश्य और अदृश्य दोनों को दर्शाता है।

सर्वोच्च अधिकार (अधि + ईश) अधि का अर्थ है "सर्वोच्च," "ऊपर," या "से ऊपर।" ईश का अर्थ है "भगवान," "शासक," या "स्वामी।" जब संयुक्त किया जाता है, तो अधीश का अर्थ सर्वोच्च शासक, सर्वोपरि अधिकारी या संप्रभु स्वामी होता है।

सार्वभौमिक संप्रभुता इस प्रकार, भुवनाधीश का अर्थ है "समस्त लोकों के सर्वोच्च भगवान।" यह नाम कालभैरव की संपूर्ण ब्रह्मांडीय अभिव्यक्ति पर पूर्ण और निर्विवाद संप्रभुता पर जोर देता है। वह केवल किसी विशेष क्षेत्र के भीतर एक देवता नहीं हैं, बल्कि सभी लोकों के परम शासक हैं, जो उनकी रचना, पालन और संहार को नियंत्रित करते हैं। यह दर्शाता है कि अस्तित्व का कोई भी हिस्सा, कोई आयाम, कोई लोक ऐसा नहीं है जिस पर उनका प्रभुत्व न हो।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था और न्याय सर्वोच्च शासक के रूप में, वह इन सभी लोकों में ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) बनाए रखने के लिए जिम्मेदार हैं। वह सुनिश्चित करते हैं कि कर्म के नियम न्यायपूर्वक संचालित हों और कोई भी इकाई, चाहे वह दिव्य हो या राक्षसी, उनके परम अधिकार से बच न सके। यह भूमिका कालभैरव के संदर्भ में महत्वपूर्ण है, जो दिव्य दंडदाता और धर्मपरायणों के रक्षक भी हैं। उनकी देखरेख में इन अनगिनत लोकों में सभी प्राणियों के कार्य और भाग्य शामिल हैं।

52. भूति कृते

समृद्धि और कल्याण के निर्माता को नमन।

विस्तार : भूतिकृते नाम अर्थ से समृद्ध है, जो "भूति" और "कृते" की अवधारणाओं को मिश्रित करता है।

भूति: इस शब्द की विविध व्याख्याएँ हैं: • समृद्धि और कल्याण: भौतिक प्रचुरता, ऐश्वर्य और समग्र कल्याण को संदर्भित करता है। • पवित्र राख (विभूति): अक्सर शिव से जुड़ी पवित्र राख को संदर्भित करता है, जो शुद्धता, वैराग्य और भौतिक संसार की क्षणभंगुर प्रकृति का प्रतीक है। इसे सुरक्षात्मक और शुद्ध करने वाले गुणों वाला भी माना जाता है। • सृजन/अस्तित्व: अस्तित्व या बनने की अवस्था को भी दर्शा सकता है, जो सृजन के मूलभूत कार्य से जुड़ा है।

कृते: का अर्थ है "करना," "बनाना," या "सृजन करना।"

समृद्धि का सृजनकर्ता प्राथमिक अर्थ में, भूतिकृते भगवान कालभैरव को भौतिक और आध्यात्मिक समृद्धि के दाता के रूप में दर्शाता है। वह वह है जो अपने भक्तों के लिए सभी प्रकार के कल्याण को आरंभ और बनाए रखता है। यह केवल धन के बारे में नहीं है, बल्कि अच्छे स्वास्थ्य, सफलता, मन की शांति और सामंजस्यपूर्ण संबंधों सहित समग्र उत्कर्ष की स्थिति है। उनका उग्र रूप, हालांकि अक्सर विनाश से जुड़ा होता है, समृद्धि में बाधा डालने वाली बाधाओं को दूर करने और विकास और प्रचुरता के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ बनाने की शक्ति का भी प्रतिनिधित्व करता है। अंततः, वह वह स्रोत है जिससे "भूति" के सभी रूप प्रकट होते हैं, चाहे वे भौतिक हों या आध्यात्मिक।

पवित्र राख का दाता शिव के "विभूति" (पवित्र राख) से जुड़ाव को देखते हुए, भूतिकृते का अर्थ यह भी हो सकता है कि वह पवित्र राख प्रदान करता है या बनाता है। इस संदर्भ में, यह मन और शरीर के शुद्धिकरण, अहंकार के विनाश और सांसारिक आसक्तियों की क्षणभंगुर प्रकृति का प्रतीक है। विभूति लगाना परम वास्तविकता और मुक्ति की याद दिलाता है, जो आध्यात्मिक कल्याण का एक गहरा रूप है।

अस्तित्व का स्रोत एक ब्रह्मांडीय दृष्टिकोण से, भूतिकृते सृजन के कार्य में उनकी भूमिका का संकेत दे सकता है। शिव के एक पहलू के रूप में, वह सृजन, संरक्षण और विनाश के ब्रह्मांडीय नृत्य के अभिन्न अंग हैं। वह अंतर्निहित शक्ति है जो सभी अस्तित्व (भूति) को जन्म देती है और उसे बनाए रखती है। यह "बनने" या "अस्तित्व में आने" की मूलभूत और निरंतर प्रक्रिया को संदर्भित करता है।

53. भ्रान्तिनाशनाय

सभी भ्रम और मोह का नाश करने वाले को नमन।

विस्तार : भ्रान्तिनाशनय नाम दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: भ्रान्ति और नाशन।

भ्रान्ति (Bhrānti): यह शब्द भ्रम, मोह, त्रुटि, माया, भटकना या गलत धारणा को दर्शाता है। आध्यात्मिक दर्शन में, भ्रान्ति अज्ञान (अविद्या) को संदर्भित करती है जो किसी को वास्तविकता के सच्चे स्वरूप को गलत समझने का कारण बनती है, जिससे आध्यात्मिक अंधापन, दुख और पुनर्जन्म का चक्र (संसार) होता है। यह क्षणिक घटनाओं की अवास्तविक कल्पनाओं और गलत व्याख्याओं में मन के उलझने का प्रतिनिधित्व करता है।

नाशन (Nāśana): इस शब्द का अर्थ है विनाशक, संहारक या हटाने वाला।

भ्रम का विनाशक "भ्रान्ति के विनाशक" के रूप में, कालभैरव को उस परोपकारी फिर भी भयंकर शक्ति के रूप में आह्वान किया जाता है जो मानव मन को त्रस्त करने वाले अज्ञान और भ्रम को मिटा देती है। वह सभी भ्रमों, स्थूल और सूक्ष्म, बाहरी और आंतरिक, के परम नाशक हैं। परम वास्तविकता (परब्रह्म) के रूप में उनका अपना स्वरूप उनकी उपस्थिति में किसी भी प्रकार के भ्रम को अस्थिर बनाता है। भक्त के लिए, इसका अर्थ मानसिक अशांति, झूठी मान्यताओं और क्षणभंगुर संसार से लगाव से मुक्ति है।

त्रुटि का शोधक यह नाम धारणा को शुद्ध करने की उनकी शक्ति को दर्शाता है। भ्रान्ति को नष्ट करके, वह साधक को वास्तविक और अवास्तविक, शाश्वत और क्षणभंगुर के बीच अंतर करने में सक्षम बनाते हैं, जिससे विचार की स्पष्टता और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है। वह माया (ब्रह्मांडीय भ्रम) के "पर्दे" को हटाते हैं जो किसी को परम सत्य को पहचानने से रोकता है।

सत्य की ओर मार्गदर्शन केवल भ्रम को नष्ट करने से परे, भ्रान्तिनाशन भक्त को ज्ञान (ज्ञान) और आत्म-साक्षात्कार की ओर ले जाने का भी अर्थ है। अज्ञान से उत्पन्न होने वाली बाधाओं को दूर करके, वह सच्ची समझ और परम वास्तविकता के अनुभव के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं, जो स्वयं शिव के साथ अद्वैत है। वह आध्यात्मिक अज्ञान के नाशक के रूप में कार्य करते हैं और साधकों को सत्य के प्रकाश की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

54. भूतिभूषितसर्वांगाय

जिनके संपूर्ण शरीर पर पवित्र भस्म सुशोभित है, उन (भगवान कालभैरव) को नमन।

विस्तार : भूतिभूषितसर्वाङ्गाय नाम संस्कृत के कई महत्वपूर्ण शब्दों का एक यौगिक है, जो भगवान शिव के प्रतिष्ठित स्वरूप के एक मूलभूत पहलू का वर्णन करता है।

भूति (Bhūti): इस शब्द के कई अर्थ हैं: 1. पवित्र भस्म/विभूति: यह सबसे सामान्य और प्रतीकात्मक व्याख्या है। विभूति यज्ञों या श्मशान (चिता-भस्म) से प्राप्त पवित्र राख है। 2. समृद्धि/कल्याण: कभी-कभी, 'भूति' का अर्थ समृद्धि, धन या आध्यात्मिक कल्याण भी हो सकता है। 3. शक्ति/अलौकिक शक्तियाँ (सिद्धियाँ): भूति दिव्य शक्ति या आठ महान सिद्धियों का प्रतीक हो सकती है।

भूषित (Bhūṣita): सुशोभित, सजाया हुआ, अलंकृत। यह इंगित करता है कि राख केवल मौजूद नहीं है बल्कि स्पष्ट रूप से एक आभूषण के रूप में पहनी जाती है।

सर्वाङ्ग (Sarvāṅga): सर्व (सभी, संपूर्ण) + अङ्ग (अंग, शरीर के अंग)। इसका अर्थ है "सभी अंगों पर" या "संपूर्ण शरीर।"

पवित्र भस्म (विभूति) का प्रतीकवाद

1. वैराग्य और अनासक्ति: पवित्र भस्म, विशेष रूप से श्मशान घाट (चिता-भस्म) से प्राप्त, भौतिक शरीर की क्षणभंगुर प्रकृति और मृत्यु की अंतिम वास्तविकता का प्रतीक है। अपने पूरे शरीर को इस भस्म से लेपकर, शिव भौतिक संसार, अहंकार और सांसारिक इच्छाओं से अपनी पूर्ण अनासक्ति को दर्शाते हैं। वे जीवन और मृत्यु से परे हैं, शाश्वत चेतना के प्रतीक हैं। वे हमें याद दिलाते हैं कि सभी भौतिक रूप अंततः राख में मिल जाते हैं।

2. पवित्रता और शुद्धिकरण: राख को अत्यंत शुद्ध करने वाला माना जाता है। यह वह है जो सभी अशुद्धियों और आसक्तियों के जल जाने के बाद बचता है। इस प्रकार, शिव का भस्म-लेपित शरीर सर्वोच्च पवित्रता और सभी नकारात्मकता और पापों को शुद्ध करने की उनकी शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

3. शुभता और दिव्य शक्ति: विभूति शुभता और दिव्य आशीर्वाद (समृद्धि/कल्याण के अर्थ में भूति) से भी जुड़ी है। जब भक्तों द्वारा लगाई जाती है, तो यह माना जाता है कि यह सुरक्षा, सौभाग्य और आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करती है। शिव के लिए, यह उनके अस्तित्व का एक स्वाभाविक हिस्सा है, जो उनकी अंतर्निहित शुभता और सभी प्रकार की शक्तियों (सिद्धियों) पर उनके प्रभुत्व को दर्शाता है।

4. ब्रह्मांडीय संहारक और पुनरुत्पादक: राख शिव को उनके अंतिम संहारक (महाकाल) की भूमिका से जोड़ती है, जो सब कुछ समाप्त कर देते हैं। फिर भी, इस अंत से, नई सृष्टि उत्पन्न हो सकती है, जिससे राख ब्रह्मांडीय पुनरुत्पादन और अस्तित्व के चक्रीय स्वभाव का भी प्रतीक बन जाती है।

इसलिए, भूतिभूषितसर्वाङ्गाय भगवान कालभैरव को संदर्भित करता है, जिनका संपूर्ण अस्तित्व अस्तित्व के आवश्यक सत्य—अनित्यता, पवित्रता, दिव्य शक्ति और अतिक्रमण—से गहराई से चिह्नित है। यह जीवन और मृत्यु पर उनकी पूर्ण संप्रभुता, और सभी रूपों से परे शाश्वत आत्मा के रूप में उनके स्वरूप का एक शक्तिशाली दृश्य और दार्शनिक कथन है।

55. भूषयाय

सभी अलंकरणों के स्रोत को नमन।

विस्तार : भूषायाय नाम संस्कृत शब्द भूष (Bhūṣa) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "अलंकरण," "सजावट," "आभूषण," या "सुंदरता।" प्रत्यय -आय (āya) "होना" या "का स्रोत" इंगित करता है।

अलंकरण का स्रोत इस संदर्भ में, कालभैरव को उस परम स्रोत के रूप में पूजा जाता है जिससे ब्रह्मांड में सौंदर्य, सजावट और अलंकरण के सभी रूप उत्पन्न होते हैं। यह केवल भौतिक आभूषणों या सतही अलंकरणों को संदर्भित नहीं करता है, बल्कि सौंदर्य अपील, भव्यता और पूर्णता के सभी

रूपों को समाहित करता है।

ब्रह्मांडीय अलंकरण यह नाम ब्रह्मांड की जटिल सुंदरता और व्यवस्था को कालभैरव के अपने अलंकरण के रूप में दर्शाता है। तारे, ग्रह, पहाड़, नदियाँ, जंगल—ये सभी उनकी अंतर्निहित सुंदरता की अभिव्यक्तियाँ हैं, जो ब्रह्मांड को सुशोभित करती हैं। प्रकृति के वे नियम जो समरूपता, सद्भाव और लालित्य को निर्धारित करते हैं, उनके अस्तित्व की अभिव्यक्तियाँ हैं।

छिपाना और प्रकट करना दार्शनिक रूप से, जो कुछ भी "सुशोभित" या "ढकता" है उसे माया (भ्रम) का एक रूप भी माना जा सकता है जो परम वास्तविकता को छुपाता है। फिर भी, यह माया भी, अपने अंतहीन रूपों और सजावट के साथ, दिव्य से निकलती है। इस प्रकार, कालभैरव आवरण और उस अंतर्निहित सुंदरता दोनों का स्रोत हैं जिसे वह अस्पष्ट करने का प्रयास करता है।

आध्यात्मिक अलंकरण आध्यात्मिक स्तर पर, भूषायाय उन आध्यात्मिक गुणों और आंतरिक गुणों को भी संदर्भित कर सकता है जो एक साधक को सुशोभित करते हैं, जैसे करुणा, ज्ञान, वैराग्य और भक्ति। ये बाहरी सजावट नहीं हैं बल्कि आंतरिक पूर्णताएँ हैं जो आत्मा को दिव्य की दृष्टि में सुंदर बनाती हैं। कालभैरव, परम गुरु के रूप में, अपने भक्तों को ये सर्वोच्च अलंकरण प्रदान करते हैं।

56. भूतवाहनाय

भूतों और प्रेतों को अपना वाहन बनाने वाले को नमन।

विस्तार : भूतवाहन नाम दो संस्कृत शब्दों: भूत और वाहन से बना एक शक्तिशाली यौगिक पद है।

भूत (Bhūta): जैसा कि पहले चर्चा की गई है, इस शब्द के कई अर्थ हैं: • सभी जीवित प्राणी (जीव, लोग, जानवर)। • मौलिक शक्तियाँ (पंचभूत: पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश)। • आत्माएँ (भूत, तत्व, परिचारक और अशरीरी आत्माएँ, कभी-कभी विशेष रूप से दुर्भावनापूर्ण आत्माओं का जिक्र करते हुए)।

वाहन (Vāhana): इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है "वाहन," "सवारी," या "जो वहन करता है।"

प्रतीकात्मक वाहन (The Symbolic Vehicle) यह नाम कालभैरव को ऐसे व्यक्ति के रूप में दर्शाता है जो आत्माओं, प्रेतों और अलौकिक प्राणियों के अपने विविध दल पर सवारी करता है या उन्हें नियंत्रित करता है। इसका तात्पर्य वाहन के रूप में किसी शाब्दिक जानवर या वस्तु से नहीं है, बल्कि यह अस्तित्व के सूक्ष्म, अनदेखे और अक्सर भयभीत करने वाले क्षेत्रों पर उनके पूर्ण प्रभुत्व का प्रतीक है।

अदृश्य पर प्रभुत्व (Dominion Over the Unseen) कालभैरव का यह पहलू प्रेतों (भूतों), अशरीरी आत्माओं और विभिन्न तात्विक आत्माओं सहित संपूर्ण प्रेतलोक पर उनके सर्वोच्च अधिकार को दर्शाता है। ये प्राणी, जो सामान्य मनुष्यों में भय या संकट पैदा कर सकते हैं, उनकी सेवा उनके परिचारक (गणों) के रूप में और यहां तक कि उनके वाहनों के रूप में भी करते हैं। यह दर्शाता है कि ब्रह्मांड की सबसे भयावह और अनियंत्रित शक्तियाँ भी उनकी इच्छा के अधीन हैं।

द्वैत से परे (Transcender of Dualities) "आत्माओं और भूतों को अपने वाहन के रूप में रखने" से, कालभैरव अच्छे और बुरे, शुभ और अशुभ की पारंपरिक मानवीय समझ से परे हैं। वह सभी लोकों के स्वामी हैं, जिनमें वे भी शामिल हैं जो आमतौर पर मृत्यु, क्षय और अलौकिक से जुड़े हैं। यह सीमित मानवीय अवधारणाओं से परे, एक सर्वव्यापी देवता के रूप में उनकी भूमिका को पुष्ट करता है।

सुरक्षा और निर्भयता (Protection and Fearlessness) भक्तों के लिए, भूतवाहन का यह पहलू सांत्वना और सुरक्षा प्रदान करता है। यह जानना कि कालभैरव सभी आत्माओं को नियंत्रित करते हैं, इसका मतलब है कि कोई भी प्रेत इकाई उनके भक्तों को नुकसान नहीं पहुँचा सकती है। यह अज्ञात

के सामने निर्भयता पैदा करता है, क्योंकि अदृश्य दुनिया के स्वामी उनके रक्षक हैं। यह अवचेतन और ब्रह्मांड की सबसे गहरी, सबसे आदिम शक्तियों को नेविगेट करने और नियंत्रित करने की उनकी क्षमता को भी दर्शाता है।

57. क्षेत्रज्ञाय

क्षेत्र (शरीर और संपूर्ण सृष्टि) के परम ज्ञाता को नमन।

विस्तार : क्षेत्रज्ञाय नाम, जो क्षेत्र (क्षेत्र) और ज्ञ (ज्ञाता) से व्युत्पन्न है, हिंदू विचार के विभिन्न विद्यालयों, विशेष रूप से वेदांत और सांख्य के केंद्र में एक गहन दार्शनिक अवधारणा को समाहित करता है।

क्षेत्र का ज्ञाता • क्षेत्र का शाब्दिक अर्थ "मैदान," "क्षेत्र," या "शरीर" है। आध्यात्मिक संदर्भ में, यह अनुभव के संपूर्ण क्षेत्र को संदर्भित करता है - भौतिक शरीर, मन, इंद्रियां, बुद्धि, और वास्तव में, संपूर्ण प्रकट ब्रह्मांड। यह ज्ञान का विषय है, 'ज्ञात' है। • ज्ञ का अर्थ "ज्ञाता" या "जो अनुभव करता है" है। इसलिए, क्षेत्रज्ञ का अर्थ "क्षेत्र का ज्ञाता" है।

साक्षी चेतना भगवान शिव, क्षेत्रज्ञ के रूप में, उस परम, शुद्ध चेतना का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सभी घटनाओं को उनसे पहचाने बिना देखती है। वह अस्तित्व के लगातार बदलते "क्षेत्र" के शाश्वत, अपरिवर्तनीय पर्यवेक्षक हैं। इस क्षेत्र में न केवल स्थूल भौतिक शरीर शामिल है, बल्कि सूक्ष्म शरीर (मन, बुद्धि, अहंकार) और कारण शरीर (कर्मिक छापों का भंडार) भी शामिल है।

अद्वैत जागरूकता यह नाम इस अद्वैतवादी बोध की ओर इशारा करता है कि व्यक्तिगत स्व (जीवात्मा) मूल रूप से सार्वभौमिक स्व (परमात्मा या ब्रह्म) के समान है। जिस प्रकार हमारे अपने अस्तित्व के भीतर का "ज्ञाता" हमारे शरीर और मन की गतिविधियों को देखता है, क्षेत्रज्ञ संपूर्ण ब्रह्मांडीय नाटक का सर्वोच्च, अनासक्त पर्यवेक्षक है। वह जागरूकता का प्रकाश है जो क्षेत्र को प्रकाशित करता है, फिर भी उससे अलग रहता है।

पहचान से मुक्ति शिव को क्षेत्रज्ञ के रूप में स्वीकार करना इस बात की पहचान है कि सच्ची मुक्ति (मोक्ष) क्षेत्र (शरीर, मन और संसार) से विमुख होने और अपने वास्तविक स्वरूप को शुद्ध, बिना शर्त क्षेत्रज्ञ - सदा-वर्तमान, सर्वव्यापी, साक्षी चेतना के रूप में जानने से आती है। वह सभी ज्ञान और अनुभव का अंतिम आधार है, फिर भी उनकी अंतर्निहित अस्थिरता और पीड़ा से अछूता है।

58. भुवनाधीशाय

समस्त लोकों के सर्वोच्च प्रभु और शासक को नमन।

विस्तार : भुवनाधीश नाम दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों: भुवन और अधीश का एक यौगिक है।

भुवना: यह शब्द "लोक," "क्षेत्र," "राज्य," या "पृथ्वी" को संदर्भित करता है। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, कई भुवन हैं, जो स्थलीय तल से लेकर विभिन्न स्वर्गीय और भूमिगत अस्तित्व के क्षेत्रों तक फैले हुए हैं। इसमें अस्तित्व के सभी तल, दृश्य और अदृश्य, भौतिक और सूक्ष्म शामिल हैं।

अधीश: इसका अर्थ है "सर्वोच्च स्वामी," "शासक," या "मालिक।" यह पूर्ण अधिकार, संप्रभुता और नियंत्रण को दर्शाता है।

समस्त लोकों के सर्वोच्च शासक जब संयुक्त किया जाता है, तो भुवनाधीश का अर्थ "समस्त लोकों के सर्वोच्च स्वामी" होता है। कालभैरव का यह पहलू पूरे ब्रह्मांड पर, ब्रह्मांड के भीतर प्रत्येक एकल क्षेत्र, तल और आयाम पर उनके पूर्ण प्रभुत्व को रेखांकित करता है। वह केवल एक क्षेत्र में निवास करने वाले देवता नहीं हैं, बल्कि वह सर्वोपरि संप्रभु हैं जो सभी भुवनों के नियमों, लय और अस्तित्व को नियंत्रित करते हैं।

ब्रह्मांडीय शासन यह नाम ब्रह्मांडीय शासन में कालभैरव की भूमिका पर जोर देता है। उनका शासन पूर्ण है, जो सभी लोकों के निर्माण, पालन और संहार तक फैला हुआ है। वह परम सत्ता हैं जो इन क्षेत्रों के भीतर अन्य सभी देवताओं और ब्रह्मांडीय शक्तियों के कार्यों का संचालन करते हैं।

सर्वव्यापकता और सर्वशक्तिमानता का प्रतीक भुवनाधीश उनकी सर्वव्यापकता को उजागर करता है, जो सभी लोकों में उपस्थित और प्रभावशाली हैं, और उनकी सर्वशक्तिमानता को, इन अनगिनत क्षेत्रों के भीतर सब कुछ नियंत्रित और निर्देशित करने की सर्वोच्च शक्ति रखते हैं। यह नाम दिव्य के प्राथमिक और अंतिम प्रकटीकरण के रूप में उनकी स्थिति को पुष्ट करता है।

59. भूतिदाय

कल्याण, समृद्धि और अलौकिक शक्तियों को प्रदान करने वाले को नमन।

विस्तार : भूतिद (भूतिदाय) नाम संस्कृत मूल 'भूति' से लिया गया है।

भूति: अर्थ और निहितार्थ 'भूति' शब्द अर्थ में समृद्ध है, जिसमें कई प्रमुख अवधारणाएँ शामिल हैं:

1. कल्याण और समृद्धि: यह एक प्राथमिक अर्थ है, जो सौभाग्य, कल्याण, समृद्धि, ऐश्वर्य और सामान्य शुभता को संदर्भित करता है। इसमें भौतिक और आध्यात्मिक दोनों तरह का कल्याण शामिल है। 2. अलौकिक शक्तियाँ (सिद्धियाँ): भूति असाधारण या अलौकिक शक्तियों को भी संदर्भित कर सकती है, जो अक्सर आध्यात्मिक अभ्यासों के माध्यम से प्राप्त होती हैं, जैसे कि आठ पारंपरिक सिद्धियाँ (अणिमा—सूक्ष्मता, महिमा—विशालता, आदि)। ये शक्तियाँ अस्तित्व पर दिव्य नियंत्रण की अभिव्यक्तियाँ हैं। 3. अस्तित्व और अभिव्यक्ति: "भू" (होना, अस्तित्व में होना) धातु से संबंधित, भूति स्वयं अस्तित्व, सृष्टि या अभिव्यक्ति को इंगित कर सकती है।

कल्याण और समृद्धि के प्रदाता भूतिद के रूप में, भगवान कालभैरव सभी प्रकार की समृद्धि और कल्याण के दिव्य स्रोत और दाता हैं। वे अपने भक्तों को सफलता, प्रचुरता, स्वास्थ्य और खुशी प्रदान करते हैं। यह पहलू उनके परोपकारी स्वभाव को उजागर करता है, जहाँ वे उन लोगों के लिए आराम और पूर्णता के जीवन को सक्रिय रूप से बढ़ावा देते हैं जो उनकी कृपा चाहते हैं। यह कल्याण केवल भौतिक नहीं है, बल्कि इसमें आंतरिक शांति और आध्यात्मिक संतोष भी शामिल है।

अलौकिक शक्तियों के दाता भूति प्रदान करने की उनकी क्षमता सिद्धियों या अलौकिक शक्तियों को प्रदान करने तक फैली हुई है। इसका तात्पर्य यह है कि उनकी पूजा के माध्यम से, आध्यात्मिक साधक सामान्य मानवीय सीमाओं को पार कर सकते हैं और असाधारण क्षमताएँ प्राप्त कर सकते हैं। ये शक्तियाँ अक्सर योगियों और तांत्रिकों द्वारा चेतना की उच्च अवस्थाओं और प्राकृतिक दुनिया पर महारत प्राप्त करने के उनके मार्ग पर खोजी जाती हैं।

दिव्य अभिव्यक्तकर्ता व्यापक अर्थ में, 'अस्तित्व' या 'अभिव्यक्ति' के प्रदाता के रूप में, भूतिद कालभैरव को सभी मौजूदा चीज़ों के परम निर्माता और पालक के रूप में संदर्भित कर सकता है। वे ही हैं जो ब्रह्मांडीय अभिव्यक्ति को आरंभ और बनाए रखते हैं, सभी रूपों और घटनाओं को जन्म देते हैं।

यह नाम इस प्रकार कालभैरव को केवल एक भयानक देवता के रूप में ही नहीं, बल्कि एक अत्यंत परोपकारी व्यक्ति के रूप में भी चित्रित करता है जो अपने भक्तों पर आशीर्वाद, सशक्तिकरण और अस्तित्व के सार की वर्षा करते हैं।

60. भूतिमाते

महान शक्ति, महिमा तथा अस्तित्व से युक्त देव को नमन।

विस्तार : भूतिमते (Bhūtimaté) नाम संस्कृत शब्द भूति (Bhūti) और प्रत्यय -मत से बना है, जिसका अर्थ है "से युक्त" या "से संपन्न"।

भूति को समझना भूति एक बहुआयामी शब्द है जिसके संस्कृत और हिंदू दर्शन में कई गहरे अर्थ हैं: • अभिव्यक्ति, अस्तित्व, होना: यह "होने" की स्थिति को संदर्भित करता है, सभी चीजों का अस्तित्व, उन सभी का कुल योग जो प्रकट हुआ है। • समृद्धि, कल्याण, भलाई: भूति प्रचुरता, ऐश्वर्य और सभी प्रकार की शुभता और सौभाग्य को दर्शाती है। • शक्ति, पराक्रम, महानता: यह शक्ति, प्रभाव और प्राप्त करने की क्षमता को दर्शाता है। • महिमा, वैभव, विशिष्टता: भूति का अर्थ प्रसिद्धि, भव्यता और किसी के अस्तित्व की उज्ज्वल दीप्ति भी है। • पवित्र भस्म (विभूति): एक विशिष्ट शैव संदर्भ में, भूति पवित्र भस्म (विभूति) को संदर्भित करती है जिसका उपयोग अनुष्ठानों में किया जाता है, विशेष रूप से शिव से जुड़े अनुष्ठानों में। यह भस्म भौतिक संसार की क्षणभंगुरता और शिव की अंतिम वास्तविकता का प्रतीक है जो सभी सृष्टि और विनाश से परे हैं।

सभी अभिव्यक्तियों और अस्तित्व के स्वामी जब भगवान कालभैरव पर लागू होता है, तो भूतिमते का अर्थ है कि वे सभी अस्तित्व और अभिव्यक्ति के साक्षात अवतार और स्वामी हैं। वे केवल "एक प्राणी" नहीं हैं, बल्कि सभी "अस्तित्व" के स्रोत और आधार हैं। यह उनके ब्रह्मांडीय दायरे को रेखांकित करता है, क्योंकि वे ही हैं जिनसे सभी चीजें उत्पन्न होती हैं और जिनमें सभी चीजें अंततः विलीन हो जाती हैं।

सर्वोच्च समृद्धि और शक्ति से संपन्न भूतिमते के रूप में, कालभैरव सभी प्रकार की समृद्धि, आध्यात्मिक और भौतिक, के स्वामी हैं। वे अपार शक्ति धारण करते हैं, न केवल शारीरिक शक्ति बल्कि वह शक्ति जो पूरे ब्रह्मांड को नियंत्रित करती है, जिसमें सृष्टि, पालन और संहार शामिल है। उनकी महिमा अतुलनीय है, जो उनके सर्वोच्च दिव्य स्वरूप को दर्शाती है।

पवित्र भस्म से सुसज्जित गहरी शैव परंपरा में, शिव और भैरव को अक्सर पवित्र भस्म (विभूति या भूति) से लिप्त दर्शाया जाता है। इस अर्थ में, भूतिमते का अर्थ यह भी है कि वे पवित्र भस्म से सुसज्जित हैं, जो भौतिकवाद पर उनकी श्रेष्ठता, मृत्यु पर उनकी महारत और उनकी शाश्वत पवित्रता का प्रतीक है। भस्म विनाश की ब्रह्मांडीय अग्नि के बाद की अंतिम अवस्था का प्रतिनिधित्व करती है, यह दर्शाती है कि केवल दिव्य चेतना ही शेष रहती है।

इस प्रकार, भूतिमते कालभैरव को परम वास्तविकता के रूप में चित्रित करता है - वह जो सभी अस्तित्व को समाहित करता है, सभी शक्ति का प्रयोग करता है, सभी महिमा का स्वामी है, और सभी भौतिक अस्तित्व से परे है, अंततः भक्तों को आध्यात्मिक कल्याण और मुक्ति की ओर ले जाता है।

61. प्रभवे

सर्वोच्च, शक्तिशाली और सर्वशक्तिमान भगवान को नमन।

विस्तार : प्रभावे नाम कालभैरव के लिए एक शक्तिशाली पदनाम है, जो संस्कृत शब्द 'प्रभाव' में निहित है।

सर्वोच्च और सर्वशक्तिमान (प्रकट शक्ति) (Supreme and All-Powerful - The Manifested Power) प्रभाव का अर्थ है सर्वोच्च शक्ति, महिमा, पराक्रम और प्रभुत्व। यह दर्शाता है कि कालभैरव सभी शक्ति के अंतिम स्रोत हैं, वह जो ब्रह्मांड पर पूर्ण अधिकार रखते हैं, जिसमें समय, सृष्टि, संरक्षण और संहार शामिल हैं। उनकी शक्ति केवल महान नहीं बल्कि सर्वव्यापी और अद्वितीय है। वह सभी शक्तियों के प्रमुख प्रेरक और नियंत्रक हैं, चाहे वे दृश्य हों या अदृश्य।

प्रभाव और प्रभावकारिता (Influence and Efficacy) केवल शक्ति से परे, प्रभाव महान प्रभाव, प्रभावकारिता और प्रकट करने की क्षमता के विचार को भी व्यक्त करता है। इसका अर्थ है कि वह वह है जिसकी इच्छा तुरंत प्रभावी होती है, जिसकी उपस्थिति गहरा परिवर्तन लाती है, और जिसके

आशीर्वाद अचूक रूप से शक्तिशाली होते हैं। वह ब्रह्मांड में सभी कार्यों और घटनाओं की अंतर्निहित प्रभावकारिता है। जो कुछ भी चलता है, बदलता है, या अस्तित्व में आता है, वह अंततः उनके प्रभाव की अभिव्यक्ति है।

प्रकाश और वैभव का स्रोत (Source of Light and Splendor) प्रभाव में "भा" मूल प्रकाश, चमक और वैभव से भी संबंधित है (जैसा कि प्रभा में, जिसका अर्थ प्रकाश या चमक है)। इस प्रकार, प्रभावे का अर्थ यह भी हो सकता है कि कालभैरव सभी आध्यात्मिक प्रकाश, ज्ञान और आंतरिक चमक का स्रोत हैं। वह अज्ञान के अंधकार को दूर करते हैं और अपने भक्तों के लिए मुक्ति का मार्ग प्रकाशित करते हैं।

इसलिए, प्रभावे नाम कालभैरव को पूर्ण संप्रभु, सभी अस्तित्व के स्वामी के रूप में पूजता है, जिनकी शक्ति असीमित है, जिनका प्रभाव हर चीज में व्याप्त है, और जिनका अस्तित्व ही सभी शक्ति और आध्यात्मिक चमक का स्रोत है।

62. क्षेत्रज्ञाय

अस्तित्व के क्षेत्र को जानने वाले को नमन।

विस्तार : क्षेत्रज्ञाय (Kṣetrajñāya) नाम संस्कृत के शब्दों क्षेत्र (Kṣetra) और ज्ञ (Jña) से बना है, और यह हिंदू दर्शन, विशेष रूप से सांख्य और योग, तथा भगवद गीता के ढांचे के भीतर गहरा दार्शनिक अर्थ रखता है।

क्षेत्र: अस्तित्व का क्षेत्र (The Kṣetra: The Field of Existence)

क्षेत्र का शाब्दिक अर्थ "खेत," "क्षेत्र" या "शरीर" है। आध्यात्मिक संदर्भ में, यह संदर्भित करता है: • शारीरिक शरीर: एक व्यक्ति की नश्वर, भौतिक संरचना, जो पंच महाभूतों, इंद्रियों, मन, बुद्धि और अहंकार से बनी है। • अनुभव का क्षेत्र: घटनाओं का संपूर्ण ब्रह्मांड, एक चेतन प्राणी द्वारा अनुभव किया गया और माना गया वस्तुनिष्ठ संसार। इसमें वह सब कुछ शामिल है जिसे जाना, महसूस किया और सोचा जा सकता है। यह वह "खेल का मैदान" है जहाँ कर्म संचित होते हैं और खेले जाते हैं। • मनो-शारीरिक परिसर: शरीर, मन, बुद्धि और अहंकार का संयोजन जो एक व्यक्ति की व्यक्तिगत पहचान और कार्यक्षेत्र का निर्माण करता है।

ज्ञ: ज्ञाता (The Jña: The Knower)

ज्ञ का अर्थ है "ज्ञाता," "वह जो जानता है," या "चेतना।" यह उस चीज़ को दर्शाता है जो चेतन, बुद्धिमान है और क्षेत्र का अनुभव करती है।

क्षेत्रज्ञ: क्षेत्र का ज्ञाता (The Kṣetrajña: The Knower of the Field)

इसलिए, क्षेत्रज्ञ "क्षेत्र का ज्ञाता" है। यह संदर्भित करता है:

1. साक्षी चेतना: शुद्ध, अपरिवर्तनीय चेतना या आत्मा (आत्मन/पुरुष) जो क्षेत्र की गतिविधियों और परिवर्तनों को उनसे पहचाने बिना देखती है। यह सभी अनुभवों—सुख, दुख, विचार, भावनाएं और शारीरिक संवेदनाएं—का मौन, अनासक्त साक्षी है। 2. परम ज्ञाता के रूप में परम आत्मा: भगवद गीता (अध्याय 13, श्लोक 2) में, भगवान कृष्ण कहते हैं, "हे भरत, सभी क्षेत्रों में मुझे क्षेत्रज्ञ जानो।" यह सीधे क्षेत्रज्ञ को परमेश्वर (ब्रह्म) से जोड़ता है। इसका अर्थ है कि परम, सार्वभौमिक चेतना प्रत्येक व्यक्तिगत शरीर में और पूरे ब्रह्मांड में अंतर्निहित ज्ञाता है। 3. पहचान से मुक्ति: यह बोध कि व्यक्ति क्षेत्र (शरीर/मन परिसर) नहीं है बल्कि क्षेत्रज्ञ (शुद्ध चेतना) है, आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) के लिए केंद्रीय है। भगवान शिव, क्षेत्रज्ञ के रूप में, इस परम सत्य का प्रतीक हैं—वह पारलौकिक चेतना हैं जो सभी सृजन में व्याप्त हैं और उसे जानती हैं, फिर भी उसके संशोधनों से अछूती रहती हैं। वह परम विषय हैं जो कभी वस्तु नहीं हो सकते।

क्षेत्रज्ञ के रूप में, कालभैरव उस सर्वोच्च, सर्वज्ञ चेतना का प्रतिनिधित्व करते हैं जो अस्तित्व के सभी क्षेत्रों, व्यक्तिगत और ब्रह्मांडीय दोनों का अवलोकन करती है, उसमें व्याप्त है और अंततः उससे परे है। वह सभी समय और स्थान के साक्षी हैं, परम आत्मा जो प्रत्येक जीवित प्राणी के भीतर और उससे परे निवास करती है।

63. क्षेत्रपालाय

पवित्र क्षेत्र या क्षेत्र के परम संरक्षक और रक्षक को नमन।

विस्तार : क्षेत्रपाल नाम दो संस्कृत शब्दों से बना है: क्षेत्र और पाल।

क्षेत्र (Kṣetra): यह शब्द "खेत," "क्षेत्र," "प्रदेश," "डोमेन," "पवित्र स्थान," या यहाँ तक कि "शरीर" को भी दर्शाता है, जिसे अक्सर कर्म और अनुभव के क्षेत्र के रूप में देखा जाता है। आध्यात्मिक संदर्भ में, यह विशेष रूप से तीर्थ स्थलों (तीर्थ क्षेत्र), मंदिरों, या किसी भी पवित्र स्थान को संदर्भित करता है। यह पूरे ब्रह्मांड को दिव्य लीला के क्षेत्र के रूप में भी लाक्षणिक रूप से प्रस्तुत कर सकता है। कुछ दार्शनिक संदर्भों में, क्षेत्र "शरीर" या "ज्ञेय" भी है, जैसा कि भगवद गीता में व्यक्त किया गया है, जहाँ कृष्ण शरीर को क्षेत्र (खेत) और आत्मा को क्षेत्रज्ञ (खेत का ज्ञाता) बताते हैं।

पाल (Pāla): इसका अर्थ है "रक्षक," "संरक्षक," "रखवाला," या "स्वामी।"

पवित्र स्थानों के संरक्षक क्षेत्रपाल के रूप में, भैरव सभी पवित्र डोमेन के परम संरक्षक और रक्षक की भूमिका निभाते हैं। इसमें मंदिर, तीर्थ स्थल और यहाँ तक कि व्यक्तिगत घर या शहर भी शामिल हैं जहाँ उन्हें आमंत्रित किया जाता है। क्षेत्रपाल को पहले श्रद्धा अर्पित किए बिना कोई भी पवित्र अनुष्ठान या भेंट पूर्ण या प्रभावी नहीं मानी जाती है, जो स्थान की पवित्रता और सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं। वे नकारात्मक ऊर्जाओं, दुर्भावनापूर्ण आत्माओं और किसी भी बाधा को दूर करते हैं जो आध्यात्मिक प्रथाओं में बाधा डाल सकती हैं या पवित्र भूमि को अपवित्र कर सकती हैं।

शरीर और आंतरिक क्षेत्र के रक्षक लाक्षणिक रूप से, क्षेत्रपाल "शरीर" (क्षेत्र) और अभ्यासकर्ता के "आंतरिक आध्यात्मिक क्षेत्र" की भी रक्षा करते हैं। वे व्यक्ति की आध्यात्मिक यात्रा की रक्षा करते हैं, आंतरिक अशुद्धियों और बाहरी विकर्षणों को दूर करते हैं जो आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डालते हैं। वे दिव्य प्राप्ति के लिए "चेतना के क्षेत्र" (चित्त क्षेत्र) को शुद्ध करते हैं।

ब्रह्मांडीय प्रहरी व्यापक अर्थ में, क्षेत्रपाल ब्रह्मांडीय प्रहरी हैं, जो पूरे प्रकट ब्रह्मांड को एक दिव्य क्षेत्र के रूप में संरक्षित करते हैं। उनकी उपस्थिति ब्रह्मांडीय व्यवस्था और सृष्टि के भीतर दिव्य नियमों की अखंडता सुनिश्चित करती है। उनकी पूजा किसी के जीवन के किसी भी चुने हुए "क्षेत्र" के भीतर सुरक्षा, निश्चिंतता और आध्यात्मिक प्रयासों की अबाधित खोज की भावना को जगाती है।

64. क्षेत्रविघ्ननिवारणाय

जीवन के पवित्र क्षेत्र में सभी बाधाओं को दूर करने वाले को नमन।

विस्तार : नाम क्षेत्रविघ्ननिवारणाय कालभैरव की बाधाओं को दूर करने वाली भूमिका का एक गहरा और बहुस्तरीय आह्वान है, विशेष रूप से पवित्र स्थानों और अस्तित्व के व्यापक "क्षेत्र" से संबंधित बाधाओं का। यह नाम तीन महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों से बना है: क्षेत्र, विघ्न और निवारण।

क्षेत्र: पवित्र क्षेत्र

• शाब्दिक अर्थ: क्षेत्र का शाब्दिक अर्थ "खेत," "क्षेत्रफल," "भूमि," या "निवास" है। आध्यात्मिक संदर्भ में, यह एक पवित्र स्थान (जैसे मंदिर, तीर्थस्थल, या एक पवित्र क्षेत्र) या गतिविधि के क्षेत्र को दर्शाता है। • सूक्ष्म जगत और वृहद जगत: • बाहरी क्षेत्र: यह उन भौतिक पवित्र स्थलों को संदर्भित करता है जिनमें आध्यात्मिक ऊर्जा होती है। कालभैरव पारंपरिक रूप से ऐसे स्थानों के संरक्षक (क्षेत्रपाल) होते हैं, जो उनकी पवित्रता और शुद्धता सुनिश्चित करते हैं। • आंतरिक क्षेत्र: अधिक

गहराई से, क्षेत्र मानव शरीर और मन को एक पवित्र क्षेत्र के रूप में भी संदर्भित कर सकता है। भगवद गीता (अध्याय 13) में, क्षेत्र को कर्म के "क्षेत्र" के रूप में वर्णित किया गया है, और जो इसे जानता है वह क्षेत्रज्ञ (क्षेत्र का ज्ञाता, यानी आत्मा/स्वयं) है। इस प्रकार, शरीर, मन और बुद्धि वह रंगमंच बनाते हैं जहाँ किसी की आध्यात्मिक यात्रा प्रकट होती है। • जीवन एक क्षेत्र के रूप में: विस्तार से, जीवन की पूरी यात्रा, अपने अनुभवों, चुनौतियों और विकास के अवसरों के साथ, एक क्षेत्र के रूप में देखी जा सकती है - एक ऐसा क्षेत्र जहाँ किसी का धर्म (धार्मिक कर्तव्य) किया जाता है और आध्यात्मिक योग्यता अर्जित की जाती है।

विघ्न: बाधाएँ और रुकावटें

• अर्थ: विघ्न का अर्थ "बाधा," "रुकावट," "अवरोध," या "कठिनाई" है। ये विभिन्न रूपों में प्रकट हो सकते हैं: • भौतिक विघ्न: दैनिक जीवन में समस्याएँ, वित्तीय कठिनाइयाँ, स्वास्थ्य समस्याएँ, बाहरी विरोध। • आध्यात्मिक विघ्न: संदेह, भटकाव, एकाग्रता की कमी, अहंकार, नकारात्मक भावनाएँ, कर्म संबंधी बाधाएँ जो आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डालती हैं। इन्हें अक्सर आत्म-साक्षात्कार के लिए अधिक महत्वपूर्ण बाधाएँ माना जाता है। • अलौकिक विघ्न: प्रतिकूल शक्तियाँ या नकारात्मक ऊर्जाएँ जो अच्छे प्रयासों में बाधा डालती हैं।

निवारण: हटाना या रोकना

• अर्थ: निवारण का अर्थ "हटाना," "रोकना," "दूर करना," या "टालना" है।

कालभैरव: सर्वोच्च निवारक

जब संयुक्त किया जाता है, तो क्षेत्रविघ्न निवारणाय कालभैरव की सर्वोच्च शक्ति और परोपकारिता को दर्शाता है:

• पवित्र स्थानों के संरक्षक: वह रक्षक हैं जो किसी भी बाहरी या आंतरिक बाधाओं को दूर करते हैं जो भौतिक क्षेत्रों (मंदिरों, तीर्थस्थलों) की पवित्रता को अपवित्र या बाधित कर सकती हैं। यह सुनिश्चित करता है कि इन क्षेत्रों के भीतर आध्यात्मिक अभ्यास बिना किसी बाधा के आगे बढ़ सकें। • आंतरिक सत्ता का शुद्धिकर्ता: अधिक गहराई से, वह वह हैं जो आध्यात्मिक साधकों के लिए अपने मन और शरीर के क्षेत्र के भीतर उत्पन्न होने वाले विघ्नों को दूर करके मार्ग प्रशस्त करते हैं। इसमें अज्ञान, अहंकार, आसक्ति और नकारात्मक विचार पैटर्न को भंग करना शामिल है जो आत्म-साक्षात्कार और दिव्य के साथ संबंध को रोकते हैं। वह चेतना के आंतरिक क्षेत्र को शुद्ध करते हैं। • धर्म और मुक्ति के सूत्रधार: जीवन के व्यापक "क्षेत्र" से बाधाओं को दूर करके, वह व्यक्तियों को अपने कर्तव्यों (धर्म) को पूरा करने और मुक्ति (मोक्ष) की ओर बढ़ने में सक्षम बनाते हैं। वह कर्म के अवशेषों और मानसिक अवरोधों को दूर करते हैं जो प्रगति में बाधा डालते हैं, एक ऐसा वातावरण बनाते हैं जहाँ आध्यात्मिक विकास संभव है। • भय का नाश करने वाला: व्यापक अर्थ में, बाधाओं को दूर करके, वह अनिश्चितता और आसन्न कठिनाइयों से जुड़े भय को दूर करते हैं, शांति और स्पष्टता प्रदान करते हैं।

इस प्रकार, यह नाम कालभैरव को केवल एक भयंकर देवता के रूप में नहीं, बल्कि एक परोपकारी शक्ति के रूप में मनाता है जो अपने भक्तों के अस्तित्व के पवित्र क्षेत्र के भीतर उनके कल्याण और ज्ञान के लिए शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों तरह से मार्ग को सावधानीपूर्वक साफ करते हैं। वह सुनिश्चित करते हैं कि "क्षेत्र" (क्षेत्र) उपजाऊ और बाधाओं से मुक्त हो, जिससे आध्यात्मिक प्रयास के बीज अंकुरित और फल-फूल सकें।

65. क्षान्ताय

जो परम धैर्यवान, शांत और क्षमाशील हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : क्षान्ताय नाम संस्कृत मूल "क्षम्" (kṣam) से आया है, जिसके कई गहन अर्थ हैं: धैर्यवान होना, सहन करना, सहिष्णु होना, क्षमा करना और शांत रहना।

परम धैर्य और सहनशीलता (क्षान्ति) क्षान्ताय के रूप में, कालभैरव धैर्य और सहनशीलता (क्षान्ति) के परम सिद्धांत का प्रतीक हैं। सभी सृष्टि की क्षणभंगुर प्रकृति, पीड़ा और प्राणियों की अपूर्णताओं के सामने, वे पूरी तरह से अविचलित और अडिग रहते हैं। यह धैर्य निष्क्रिय त्याग नहीं है, बल्कि एक गतिशील, ब्रह्मांडीय स्थिरता है जो सृष्टि, पालन और संहार के चक्रों को बिना किसी बाधा के प्रकट होने देती है। यह ब्रह्मांड के विशाल लौकिक और स्थानिक आयामों को बिना कभी उत्तेजित या अभिभूत हुए समाहित करने और उनकी देखरेख करने की उनकी अनंत क्षमता को दर्शाता है।

शांति और स्थिरता यह शब्द गहन शांति और स्थिरता को भी दर्शाता है। अपने भैरव रूप में उनके भयंकर और डरावने स्वरूप के बावजूद, क्षान्ताय एक अंतर्निहित, अविचल शांति को प्रकट करते हैं। यह पहलू हमें याद दिलाता है कि ब्रह्मांड की सबसे विनाशकारी शक्तियों के भीतर भी एक अंतर्निहित शांति और व्यवस्था है। वे ब्रह्मांडीय प्रवाह के तूफान के भीतर शांत केंद्र हैं, वे जिनकी आंतरिक स्थिति बाहरी घटनाओं या प्राणियों के कार्यों से कभी विचलित नहीं होती है।

क्षमा और सहिष्णुता क्षान्ताय उनकी क्षमा (क्षमा) की अनंत क्षमता को भी दर्शाता है। परम न्यायाधीश और दंडदाता के रूप में, वे असीम सहिष्णुता का भी प्रतीक हैं। वे धैर्यपूर्वक प्राणियों के अपराधों और अज्ञानता को सहन करते हैं, शुद्धि और आध्यात्मिक विकास के लिए अनगिनत अवसर प्रदान करते हैं। यह पहलू उनके करुणामय स्वभाव को उजागर करता है, जहाँ दंड केवल प्रतिशोधात्मक नहीं होता है, बल्कि अंततः शुद्धि और आत्माओं को धर्म की ओर वापस मार्गदर्शन करने के लिए होता है। उनकी क्षमा कर्म के वितरक के रूप में उनकी भूमिका का एक अभिन्न अंग है, यह सुनिश्चित करती है कि न्याय दया और प्रत्येक आत्मा की सीमाओं और क्षमता की गहरी समझ के साथ संतुलित हो।

दार्शनिक महत्व यह नाम उनके भयानक पहलू के साथ गहरा विरोधाभास प्रस्तुत करता है, जो दिव्य के समग्र स्वरूप को प्रकट करता है – वह जो भयंकर और करुणामय, विनाशकारी और क्षमाशील, उत्तेजित और शांत दोनों है। यह बताता है कि सच्ची शक्ति केवल शक्ति में नहीं है, बल्कि धैर्यवान, शांत और क्षमाशील होने की अटूट क्षमता में है।

66. क्षुद्राय

सूक्ष्म रूप धारण करने वाले या सूक्ष्मतम प्राणियों का ध्यान रखने वाले (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : क्षुद्राय नाम शिव की सर्वव्यापकता और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के भीतर उनकी सूक्ष्म व्यापकता के एक महत्वपूर्ण पहलू को दर्शाता है। क्षुद्र शब्द का मुख्य अर्थ "छोटा," "सूक्ष्म," या "अ insignificant" (अमहत्वपूर्ण) है।

सूक्ष्म की शक्ति यह नाम शिव की सूक्ष्म से सूक्ष्म रूपों में प्रकट होने, छोटे से छोटे कणों में उपस्थित रहने और सृष्टि के "अमहत्वपूर्ण" (insignificant) पहलुओं पर ध्यान देने की क्षमता को उजागर करता है। हिंदू दार्शनिक विचार में, विशेष रूप से शैव धर्म के भीतर, दिव्य केवल भव्य, प्रभावशाली अभिव्यक्तियों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि विशालतम आकाशगंगाओं से लेकर सूक्ष्मतम परमाणु तक हर चीज में व्याप्त है। क्षुद्र के रूप में शिव उप-परमाणु (subatomic), सूक्ष्म (microscopic) और अस्तित्व की हर मूलभूत इकाई में निवास करने वाली चेतना हैं।

छोटे से छोटे प्राणियों पर ध्यान देना "छोटे से छोटे प्राणियों पर ध्यान देना" वाक्यांश एक गहन करुणा और एक सर्व-समावेशी जागरूकता का तात्पर्य है। इसका अर्थ है कि ब्रह्मांड में सबसे विनम्र, कमजोर या भूले हुए प्राणी भी शिव की दिव्य देखभाल और दृष्टि में हैं। वह जीवन के सबसे छोटे रूपों के भी रक्षक और साक्षी हैं, इस बात पर जोर देते हुए कि सृष्टि का कोई भी हिस्सा उनकी पूर्ण एकाग्रता और परोपकारी उपस्थिति से बचने के लिए बहुत छोटा नहीं है। यह उनके विशाल, ब्रह्मांडीय रूपों के विपरीत है, जो उनकी अनंत बहुमुखी प्रतिभा को दर्शाता है।

दार्शनिक महत्व दार्शनिक रूप से, क्षुद्र हमें सभी चीजों की अंतर्संबंधता और दिव्य के अंतर्निहित स्वरूप की याद दिलाता है। यह बताता है कि जो कुछ भी छोटा या महत्वहीन प्रतीत होता है, उसमें भी दिव्य सिद्धांत की संपूर्णता मौजूद है। यह एक ऐसे दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है जो महत्वपूर्ण और महत्वहीन, भव्य और सूक्ष्म के बीच सतही भेदों को पार करता है, अस्तित्व के हर पहलू में पवित्रता को पहचानता है।

67. क्षेत्रपाय

भूमि और पवित्र क्षेत्र के संरक्षक को नमन।

विस्तार : क्षेत्रपाल नाम दो संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है: क्षेत्र और पाल।

क्षेत्र: इस शब्द के अर्थ की कई परतें हैं जो कालभैरव की भूमिका को समझने के लिए मौलिक हैं। 1. भूमि या खेत: शाब्दिक रूप से, इसका अर्थ भूमि का एक टुकड़ा, एक खेत, या एक क्षेत्र है। यह एक भौतिक क्षेत्र, एक गाँव, एक शहर, या यहाँ तक कि एक देश को भी संदर्भित कर सकता है। 2. पवित्र स्थान/तीर्थ स्थल: आध्यात्मिक संदर्भ में, क्षेत्र अक्सर एक पवित्र स्थान, एक तीर्थ, एक मंदिर परिसर, या एक श्मशान को दर्शाता है, जिन्हें सभी शक्तिशाली आध्यात्मिक क्षेत्र माना जाता है। 3. शरीर/मन/सूक्ष्म क्षेत्र: दार्शनिक रूप से, क्षेत्र मानव शरीर, मन और सूक्ष्म चेतना क्षेत्र को भी संदर्भित करता है जिसके भीतर कर्म (क्रियाएँ) प्रकट होते हैं। भगवद गीता में, शरीर को क्षेत्र कहा गया है, और शरीर के ज्ञाता (जीव या पुरुष) को क्षेत्रज्ञ कहा गया है।

पाल: इसका अर्थ है "रक्षक," "संरक्षक," "रखवाला," या "स्वामी।"

पवित्र भूमियों के संरक्षक क्षेत्रपाल के रूप में, कालभैरव सभी पवित्र स्थानों और तीर्थ स्थलों के दिव्य संरक्षक और रक्षक हैं। उन्हें मंदिरों, आश्रमों और आध्यात्मिक साधकों की रक्षा के लिए आह्वान किया जाता है। कई शैव परंपराओं में क्षेत्रपाल को पहले नमन किए बिना कोई भी अनुष्ठान या पूजा पूर्ण या वैध नहीं मानी जाती है, जो स्थान की पवित्रता और आध्यात्मिक अखंडता सुनिश्चित करते हैं।

क्षेत्रों के रक्षक पवित्र स्थलों से परे, वे विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों, गाँवों और शहरों के रक्षक हैं। भारत के कई हिस्सों में, क्षेत्रपाल के नाम से जाने जाने वाले स्थानीय देवता शिव या भैरव के उग्र रूप हैं जो समुदाय के निवासियों की सीमाओं और कल्याण की रक्षा करते हैं।

आंतरिक स्व के रक्षक गहरे, गूढ़ अर्थ में, क्षेत्रपाल उस व्यक्ति को इंगित कर सकते हैं जो व्यक्ति के आध्यात्मिक "क्षेत्र" - शरीर और मन - को नकारात्मक प्रभावों और मुक्ति के मार्ग में आने वाली बाधाओं से बचाता है। वह आंतरिक यात्रा और चेतना के पवित्र स्थान की रक्षा करते हैं। यह भय को दूर करने वाले और अहंकार को नष्ट करने वाले के रूप में उनकी भूमिका के अनुरूप है, जो आंतरिक क्षेत्र को शुद्ध करता है।

सीमाओं के धारक वह सभी सीमाओं पर शासन करते हैं, भौतिक और सूक्ष्म दोनों नकारात्मक शक्तियों द्वारा अतिक्रमण से रक्षा करते हैं। इसलिए उन्हें सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में व्यवस्था और पवित्रता के परम रक्षक के रूप में पूजा जाता है।

68. क्षुद्रघ्नाय

ओछे विचार वाले, दुष्टों और तुच्छ का विनाश करने वाले को नमन।

विस्तार : नाम क्षुद्रघ्नाय संस्कृत शब्दों क्षुद्र और घ्न का एक यौगिक है, जो कालभैरव के एक विशिष्ट कार्य में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

क्षुद्र (Kṣudra): इस शब्द के कई अर्थ हैं: 1. अ insignificant या तुच्छ (Insignificant or Petty): उस चीज़ को संदर्भित करता है जो छोटी, तुच्छ या कम महत्व की हो। 2. दुष्ट या दुर्भावनापूर्ण (Wicked or Malignant): बुराई, द्वेष या दुर्भावना को दर्शाता है, जो अक्सर नकारात्मक संस्थाओं, काले जादू या हानिकारक इरादों से जुड़ा होता है। 3. तुच्छ मन वाला या संकीर्ण सोच वाला (Petty-minded or Narrow-minded): उन व्यक्तियों का वर्णन करता है जिनके विचार, कार्य और आकांक्षाएँ सीमित, स्वार्थी या अज्ञानता और अहंकार से बंधी होती हैं।

घ्न (Ghna): इस प्रत्यय का अर्थ है "नाश करने वाला," "हत्यारा" या "विजेता।"

तुच्छता का नाश करने वाला (Destroyer of Insignificance (Triviality)) "तुच्छता के नाशक" के रूप में, कालभैरव भक्तों को तुच्छ मामलों और सांसारिक चिंताओं से मुक्ति दिलाते हैं जो आध्यात्मिक विकास से विचलित करते हैं। वह चीजों को एक ब्रह्मांडीय परिप्रेक्ष्य में रखने में मदद करते हैं, यह प्रकट करते हुए कि वास्तव में क्या मायने रखता है और क्या केवल क्षणभंगुर है। यह विनाश उच्च, अधिक सार्थक pursuits पर ध्यान केंद्रित करने का मार्ग प्रशस्त करता है।

दुष्टों का विजेता (बुरी शक्तियों का) (Vanquisher of the Wicked (Evil Forces)) इस पहलू में, क्षुद्रघ्नाय सभी प्रकार की बुराई, द्वेष और अंधकारमय शक्तियों के सर्वोच्च संहारक के रूप में कालभैरव की भूमिका को दर्शाता है। इसमें न केवल बाहरी खतरे शामिल हैं, बल्कि आंतरिक बुराइयाँ और नकारात्मक प्रवृत्तियाँ भी शामिल हैं जो मन और आत्मा को भ्रष्ट करती हैं। वह वह संरक्षक हैं जो भक्तों को दुर्भावनापूर्ण प्रभावों, काले जादू और दुर्भावना से बचाते हैं, न्याय और ब्रह्मांडीय व्यवस्था सुनिश्चित करते हैं।

तुच्छ मन का संहारक (अहंकार और अज्ञानता का) (Annihilator of Petty-mindedness (Ego and Ignorance)) यह व्याख्या सीमित, अहंकार-प्रेरित मानसिकता को नष्ट करने की कालभैरव की शक्ति को दर्शाती है। तुच्छ मन अज्ञानता (अविद्या) और निम्न स्व से लगाव से उत्पन्न होता है, जो आध्यात्मिक प्राप्ति को रोकता है। इसे नष्ट करके, वह बुद्धि को विशालता, ज्ञान और निस्वार्थ कर्म के लिए खोलते हैं, जिससे आध्यात्मिक मुक्ति मिलती है।

इस प्रकार, क्षुद्रघ्नाय नाम मुक्ति के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने में कालभैरव की परोपकारी उग्रता को उजागर करता है, चाहे वे बाहरी दुर्भावनापूर्ण शक्तियाँ हों, आंतरिक नकारात्मक लक्षण हों, या तुच्छता और अज्ञानता का भ्रामक आवरण हो। वह गहन और सत्य के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं, आध्यात्मिक साधक की रक्षा और मार्गदर्शन करते हैं।

69. क्षत्रपाय

अपने क्षेत्र के रक्षक तथा एक सच्चे संप्रभु को नमन।

विस्तार : क्षत्रपाय नाम संस्कृत शब्द 'क्षत्रप' से लिया गया है, जो स्वयं प्राचीन फ़ारसी (ज़ेर्क्सेस) से आया है, जिसका अर्थ है "प्रांत का रक्षक" या "क्षेत्र का शासक"। एक धार्मिक संदर्भ में, विशेष रूप से जब इसे कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो इसका एक बहुत गहरा, ब्रह्मांडीय महत्व होता है।

क्षेत्र का रक्षक अपने सबसे मूलभूत स्तर पर, क्षत्रप उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जो एक विशिष्ट क्षेत्र या प्रांत का संरक्षक और प्रशासक होता है। जब कालभैरव के लिए इसका आह्वान किया जाता है, तो यह "क्षेत्र" किसी भी स्थलीय सीमा से कहीं आगे तक फैल जाता है। इसमें संपूर्ण ब्रह्मांड

शामिल है - सभी लोक, सभी आयाम, सभी प्रकट अस्तित्व। वह इस भव्य ब्रह्मांडीय व्यवस्था का परम संरक्षक है, जो इसके सुचारू कामकाज, धर्म के पालन और सभी प्रकार की अराजकता या व्यवधान से सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

एक सच्चा संप्रभु यह शब्द सच्ची संप्रभुता और राजत्व का भी अर्थ है। कालभैरव को सर्वोच्च शासक के रूप में चित्रित किया गया है, जिसका अधिकार अपने क्षेत्र में पूर्ण और निर्विवाद है। यह संप्रभुता केवल शक्ति के बारे में नहीं है; यह धर्मी शासन, ज्ञान और ब्रह्मांडीय कानून के न्यायपूर्ण प्रयोग के बारे में है। वह दिव्य सम्राट है जो सृष्टि, संरक्षण और विघटन के ब्रह्मांडीय नियमों की देखरेख करता है। उनका शासन यह सुनिश्चित करता है कि सब कुछ दिव्य योजना के अनुसार हो, जिससे ब्रह्मांडीय संतुलन बना रहे।

स्थलीय शासन से परे मानव राजाओं या राज्यपालों (क्षत्रपों) के विपरीत जो सीमित प्रांतों पर शासन करते हैं, कालभैरव का "प्रांत" अनंत है। वह न केवल भौतिक ब्रह्मांड के, बल्कि सूक्ष्म लोकों, आध्यात्मिक आयामों और यहां तक कि सृष्टि से परे के कालातीत विस्तार के भी संप्रभु हैं। वह इन क्षेत्रों के भीतर सभी भूतों (प्राणियों, तत्वों, आत्माओं) पर अंतिम अधिकार रखते हैं।

परम सत्ता का प्रतीक इस प्रकार, क्षत्रपाय कालभैरव को सभी अस्तित्व के निर्विवाद, सर्वोच्च संरक्षक और शासक के रूप में स्वीकार करता है, जिनकी सतर्क दृष्टि स्वयं वास्तविकता के ताने-बाने की रक्षा करती है। यह उनकी परम सत्ता और ब्रह्मांडीय अखंडता को बनाए रखने में उनकी भूमिका को दर्शाता है।

70. क्षमिणे

क्षमा और सहिष्णुता के साक्षात् स्वरूप को नमन।

विस्तार : क्षमी (K-श-मी) नाम संस्कृत मूल "क्षम्" (क्षम्) से लिया गया है, जिसका मुख्य अर्थ है "सहन करना," "धैर्य रखना," "क्षमा करना," या "सहनशील होना।" इसलिए, क्षमी उस एक को दर्शाता है जो अपने सबसे गहरे और परम रूपों में क्षमा, धैर्य और सहनशीलता का प्रतीक है।

क्षमा का प्रतीक (क्षमा) क्षमा भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं में सर्वोच्च गुणों में से एक है, जिसे अक्सर दैवीय संपदा (दैवी संपद) में गिना जाता है जो मुक्ति की ओर ले जाती है। क्षमी के रूप में, भगवान कालभैरव इस गुण के साक्षात् प्रतिरूप हैं। इसका अर्थ कमजोरी नहीं, बल्कि एक सर्वोच्च शक्ति है जो प्राणियों की सीमाओं और त्रुटियों को समझने और उनसे परे जाने की अनुमति देती है। उनकी क्षमा ब्रह्मांडीय है, जिसमें सभी सृष्टि के असंख्य अपराध शामिल हैं।

सर्वोच्च सहनशीलता और धैर्य क्षमा से परे, क्षमी अपार धैर्य और सहनशीलता को भी दर्शाता है। काल भैरव, काल के स्वामी के रूप में, सृष्टि, पालन और संहार के अंतहीन चक्रों के साथ-साथ युगों से प्राणियों के असंख्य कर्मों (कर्म) के साक्षी हैं। उनका क्षमा का गुण आत्माओं के आध्यात्मिक विकास में अपूर्णताओं और देरी को सहन करने की अनंत क्षमता को दर्शाता है, उन्हें विभिन्न जन्मों के माध्यम से अंततः मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करता है। यह सहनशीलता उनकी असीम करुणा (करुणा) की अभिव्यक्ति है।

महान सहिष्णु अपने उग्र रूप में, भैरव बुराई को दंडित करते हैं और ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखते हैं। हालांकि, क्षमी के रूप में, वे इस सिद्धांत का भी प्रतीक हैं कि दंड भी अंततः शुद्धि का एक रूप है और परम भलाई की दिशा में एक कदम है। वे प्राणियों की अज्ञानता और अशुद्धियों को तब तक सहन करते हैं जब तक उनके परिवर्तन का उपयुक्त क्षण नहीं आ जाता। उनकी सहनशीलता अस्तित्व की द्वैतता तक फैली हुई है, सभी घटनाओं को अपनी दिव्य लीला (लीला) के पहलुओं के रूप में स्वीकार करती है।

आंतरिक शांति का मार्ग भक्तों के लिए, कालभैरव को क्षमी के रूप में ध्यान करना स्वयं के भीतर क्षमा और धैर्य विकसित करने के लिए प्रेरित करता है। यह शिकायतों को दूर करने, दूसरों के प्रति समझ विकसित करने और जीवन की चुनौतियों का सामना करने में लचीलापन विकसित करने में मदद करता है। वे सिखाते हैं कि सच्ची शक्ति प्रतिशोध में नहीं, बल्कि क्षमा करने और सहन करने की शक्ति में निहित है।

71. क्षोभनाय

उन भगवान को नमन जो अज्ञानता और जड़ता से जीवों को बाहर निकालने के लिए क्षोभ या हलचल पैदा करते हैं।

विस्तार : क्षोभणाय नाम संस्कृत मूल "क्षुभ" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "काँपना," "हिलाना," "विक्षोभ उत्पन्न करना," या "परेशान करना।"

विक्षोभ और अशांति उत्पन्न करना एक ब्रह्मांडीय अर्थ में, क्षोभण सृष्टि को गतिमान करने वाले आदिम विक्षोभ को संदर्भित करता है। सृष्टि से पहले, संतुलन की स्थिति होती है। कालभैरव, क्षोभण के रूप में, वह शक्ति हैं जो इस संतुलन को भंग करती हैं, अभिव्यक्ति के नृत्य को आरंभ करती हैं। वह ब्रह्मांडीय हिलाने वाले हैं जो अव्यक्त को व्यक्त अस्तित्व में उत्तेजित करते हैं, जिससे सूक्ष्म तत्व मिलकर ब्रह्मांड का निर्माण करते हैं। यह उस गतिशील सिद्धांत को संदर्भित करता है जो ठहराव को रोकता है और निरंतर ब्रह्मांडीय गतिविधि सुनिश्चित करता है।

प्राणियों को अज्ञान से झकझोरना व्यक्तिगत आध्यात्मिक स्तर पर, क्षोभणाय उस दिव्य शक्ति को दर्शाता है जो मानव मन और चेतना को उत्तेजित या परेशान करती है। यह उत्तेजना नकारात्मक नहीं है बल्कि एक महत्वपूर्ण उद्देश्य की पूर्ति करती है: व्यक्तियों को उनकी आध्यात्मिक जड़ता, अज्ञान (अविद्या), आसक्ति (राग), और भ्रम (मोह) से बाहर निकालना। यह वह विघटनकारी शक्ति है जो आत्मसंतुष्टि को तोड़ती है और आत्मनिरीक्षण को मजबूर करती है।

परिवर्तन को मजबूर करना यह "उत्तेजना" चुनौतीपूर्ण जीवन परिस्थितियों, आंतरिक अशांति, या एक अचानक आध्यात्मिक जागरण के रूप में प्रकट हो सकती है जो एक व्यक्ति को अपनी सीमित धारणाओं का सामना करने और अपने आराम क्षेत्रों से आगे बढ़ने के लिए मजबूर करती है। यह वह दिव्य प्रेरणा है जो एक साधक को प्रश्न करने, सत्य की तलाश करने और मुक्ति के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित करती है। इस आंतरिक और बाहरी विक्षोभ को उत्पन्न करके, कालभैरव गहन परिवर्तन के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करते हैं, अंततः उच्च चेतना और आध्यात्मिक विकास की ओर ले जाते हैं। वह झूठी पहचान और सांसारिक आसक्तियों की संरचनाओं को ध्वस्त करते हैं, जिससे वास्तविक आत्म-साक्षात्कार का मार्ग प्रशस्त होता है।

72. मारणाय

जो बुराई के विरुद्ध मृत्यु और विनाश की शक्ति धारण करते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : मारणाय (Māraṇāya) नाम संस्कृत मूल "मृ" (mṛ) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "मरना" या "मारना"। कालभैरव के संदर्भ में, मारणाय मृत्यु पर उनकी दुर्जेय शक्ति और विनाश में उनकी भूमिका को संदर्भित करता है, विशेष रूप से बुराई के विनाश में।

मृत्यु और संहार की शक्ति मारणाय कालभैरव को मृत्यु की परम शक्ति के रूप में दर्शाता है। जैसे काल (समय) सबको निगल जाता है, वैसे ही मारण (हत्या/मृत्यु) सभी प्रकट रूपों का अपरिहार्य अंत है। वे उस ब्रह्मांडीय सिद्धांत के मूर्तरूप हैं कि जो कुछ भी जन्म लेता है, उसे अंततः नष्ट होना ही है। यह पहलू अस्तित्व की क्षणभंगुर प्रकृति और जीवन तथा मृत्यु पर दिव्य सत्ता के पूर्ण अधिकार पर जोर देता है।

बुराई का विनाश महत्वपूर्ण बात यह है कि जब शिव और उनके उग्र रूप कालभैरव जैसे परोपकारी देवता से जुड़ा होता है, तो मारण की शक्ति मुख्य रूप से बुराई, अज्ञान और नकारात्मकता के खिलाफ प्रयोग की जाती है। जबकि "मारण" शब्द अभिचार (एक अनुष्ठानिक जादुई क्रिया जिसका उद्देश्य नुकसान या मृत्यु का कारण बनना है) के एक विशिष्ट प्रकार को संदर्भित कर सकता है, कालभैरव के संदर्भ में, यह ऐसी सीमित व्याख्याओं से परे है। वे इस शक्ति का उपयोग ब्रह्मांडीय भलाई के लिए करते हैं:

• अधर्म का संहार: वे अधर्म और उन सभी शक्तियों को नष्ट करते हैं जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बाधित करती हैं। • आंतरिक राक्षसों पर विजय: आध्यात्मिक साधक के लिए, मारणाय उनकी अज्ञानता (अविद्या), अहंकार (अहंकार), आसक्तियों और सभी आंतरिक बाधाओं को नष्ट करने की शक्ति को संदर्भित करता है जो आध्यात्मिक मुक्ति को रोकते हैं। • धर्मपरायणों की रक्षा: विनाशकारी शक्तियों को समाप्त करके, कालभैरव पुण्यात्माओं की रक्षा करते हैं और धर्म की निरंतरता सुनिश्चित करते हैं।

ब्रह्मांडीय न्याय यह नाम ब्रह्मांडीय न्याय के कठोर वितरक के रूप में कालभैरव की भूमिका को रेखांकित करता है। वे उन लोगों का अंत करते हैं जो दुख का कारण बनते हैं और नकारात्मकता बनाए रखते हैं, जिससे संतुलन और पवित्रता बहाल होती है। उनका 'मारना' द्वेष से उत्पन्न नहीं होता है, बल्कि ब्रह्मांडीय शुद्धि और परिवर्तन का एक आवश्यक कार्य है। वे बुराई के परम दंडदाता और मोक्ष (मुक्ति) के प्रदाता हैं, अक्सर अहं-स्व के विघटन के माध्यम से, जो भ्रामक स्व के लिए 'मृत्यु' का एक रूप है।

73. स्तम्भनाय

विरोधी शक्ति को पंगु करने, रोकने या स्थिर करने वाले को नमन।

विस्तार : नाम स्तम्भनाय (Stambhanāya) कालभैरव की शक्ति के एक गहरे और प्रबल पहलू को दर्शाता है, जो किसी भी विरोधी शक्ति या नकारात्मक ऊर्जा को पंगु बनाने, रोकने या स्थिर करने की उनकी क्षमता को दर्शाता है। यह संस्कृत मूल "स्तम्भ्" (stambh) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "रोकना," "बाधा डालना," "पंगु बनाना," या "स्तंभित करना।"

ब्रह्मांडीय स्थिरीकरण एक ब्रह्मांडीय अर्थ में, स्तम्भन सभी गतिविधियों को ठप करने की शक्ति को संदर्भित करता है। कालभैरव, समय और विघटन के परम शासक के रूप में, अपनी इच्छा से समय के प्रवाह, ग्रहों की गति या प्राकृतिक नियमों के कामकाज को रोक सकते हैं। यह शक्ति प्रकट ब्रह्मांड पर उनके पूर्ण नियंत्रण को दर्शाती है, जिसमें उसकी गतिशीलता और जड़ता भी शामिल है।

विरोध का निष्प्रभावीकरण भक्तों के लिए, स्तम्भनाय को शत्रुओं, नकारात्मक प्रभावों, काले जादू या किसी भी प्रकार की आध्यात्मिक, मानसिक या शारीरिक बाधा से सुरक्षा के लिए आह्वान किया जाता है। अपनी स्तम्भन शक्ति के माध्यम से, वे विरोधियों के दुर्भावनापूर्ण इरादों और कार्यों को जमा सकते हैं, जिससे वे शक्तिहीन और अप्रभावी हो जाते हैं। यह केवल विनाश नहीं है, बल्कि एक आध्यात्मिक पक्षाघात है जो नुकसान को प्रकट होने से रोकता है।

आंतरिक स्थिरता और एकाग्रता एक गहरे, आध्यात्मिक स्तर पर, स्तम्भन मन की लगातार उतार-चढ़ाव और विकर्षणों (चित्त वृत्तियों) को रोकने की क्षमता को भी संदर्भित करता है। इसे गहरी एकाग्रता और आंतरिक स्थिरता लाने की शक्ति के रूप में व्याख्या किया जा सकता है, जो ध्यान और आत्म-साक्षात्कार के लिए आवश्यक है। अशांत मन को पंगु बनाकर, कालभैरव भक्त की आंतरिक शांति और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि की यात्रा को सुगम बनाते हैं।

प्रतीकात्मक महत्व स्तम्भन की अवधारणा शिव की अचल स्तंभ (स्तंभ) के रूप में छवि के साथ संरेखित होती है, जो ब्रह्मांडीय धुरी है जिसके चारों ओर सब कुछ घूमता है, फिर भी जो स्वयं अचल और शाश्वत रहता है। कालभैरव, शिव के एक भयंकर रूप के रूप में, इस अचल और सर्व-नियंत्रक ऊर्जा का प्रतीक हैं। उनकी स्तम्भन शक्ति व्यवस्था सुनिश्चित करती है और किसी भी अराजकता या खतरे को निष्क्रिय करके भक्तों की रक्षा करती है।

74. मोहनाय

सभी प्राणियों को मोहित, मंत्रमुग्ध और वश में करने की शक्ति रखने वाले को नमन।

विस्तार : मोहनाय (Mohanā) नाम संस्कृत मूल "मोह" से लिया गया है, जिसका अर्थ है भ्रमित करना, मोहित करना, मंत्रमुग्ध करना या चकित करना। यह नाम दिव्य के एक गहन पहलू की ओर इशारा करता है, विशेष रूप से भगवान शिव और भैरव के संदर्भ में।

मोहित करने और वश में करने की शक्ति मोहन का तात्पर्य उस व्यक्ति से है जिसके पास भ्रमित करने या मोहित करने की शक्ति है। मोहन के रूप में, भगवान भैरव के पास सभी प्राणियों के मन को वश में करने की शक्ति है, उन्हें अस्तित्व के चक्रों में खींचते हुए। यह मोह आवश्यक रूप से दुर्भावनापूर्ण नहीं है; यह एक दिव्य मोहक शक्ति हो सकती है जो भक्तों को दिव्य की ओर आकर्षित करती है, या यह ब्रह्मांडीय भ्रम (माया) हो सकता है जो प्राणियों को भौतिक संसार से बांधे रखता है। यह धारणा और समझ पर उनके पूर्ण प्रभाव को दर्शाता है।

दिव्य भ्रमित करने वाला एक आध्यात्मिक संदर्भ में, 'मोहन' भ्रम (माया) बनाने की दिव्य क्षमता को दर्शाता है जो प्राणियों को उनके वास्तविक आध्यात्मिक स्वरूप को भूलने और सांसारिक नाटक में उलझने का कारण बनता है। यह भ्रमित करने वाली शक्ति सृष्टि के खेल को प्रकट करने के लिए आवश्यक है। माया के बिना, व्यक्तिगत आत्मा और सार्वभौमिक चेतना के बीच का अंतर समाप्त हो जाएगा, और सांसारिक जुड़ाव के लिए आवश्यक द्वैत का अनुभव समाप्त हो जाएगा। इस प्रकार, भैरव मोहन के रूप में इस भव्य ब्रह्मांडीय भ्रम का सूक्ष्मता से संचालन करते हैं।

भ्रम से परे हालांकि वह भ्रमित करने वाले हैं, वह वही हैं जो व्यक्ति को भ्रम से मुक्त कर सकते हैं। दिव्य के इस पहलू को समझकर और उसके प्रति समर्पण करके, एक भक्त उन भ्रमों को पार कर सकता है जिन्हें वह स्वयं बनाता है। यह विरोधाभासी प्रकृति शिव की शिक्षाओं के लिए केंद्रीय है, जहाँ बंधन का स्रोत मुक्ति का भी स्रोत है। उनकी भ्रमित करने वाली शक्ति को एक परीक्षा के रूप में देखा जा सकता है, जो भक्तों को दिखावे से परे देखने और परम सत्य की तलाश करने के लिए चुनौती देती है।

75. नमन्याय

जो सभी श्रद्धा के योग्य हैं और जिनके समक्ष सभी को झुकना चाहिए, उनको नमन।

विस्तार : नाम 'नमन' झुकने, साष्टांग प्रणाम करने या श्रद्धा दिखाने के कार्य को संदर्भित करता है। कालभैरव के संदर्भ में, यह गहन आध्यात्मिक महत्व रखता है।

श्रद्धा के योग्य यह नाम दर्शाता है कि कालभैरव सभी प्रकार के सम्मान, प्रणाम और पूजा के परम प्राप्तकर्ता हैं। "नम" का अर्थ "झुकना" और "समर्पण करना" दोनों है। यह कालभैरव की दिव्य इच्छा और शक्ति के प्रति पूर्ण समर्पण का तात्पर्य है। उनका सर्वोच्च स्वरूप सभी प्राणियों—मानव, दिव्य और राक्षसी—से गहनतम सम्मान की मांग करता है और उसके योग्य है।

जिसके सामने सभी को झुकना चाहिए नमनाय इंगित करता है कि कालभैरव वह हैं जिनके सामने सभी प्राणियों को, उनकी स्थिति या शक्ति की परवाह किए बिना, अंततः झुकना चाहिए। यह झुकना केवल एक शारीरिक क्रिया नहीं है, बल्कि उनके पूर्ण ब्रह्मांडीय अधिकार की पहचान है। काल

(समय) के सामने, जिसके आगे सबसे शक्तिशाली भी झुक जाते हैं, सभी अंततः समर्पण करते हैं और साष्टांग प्रणाम करते हैं। यह झुकना अस्तित्व की अनित्यता और कालभैरव की समय और विनाश के स्वामी के रूप में परम सर्वोच्चता की स्वीकृति है।

भक्ति का कार्य नमन का कार्य हिंदू पूजा का एक मूलभूत घटक है। यह विनम्रता, भक्ति और ब्रह्मांडीय व्यवस्था में उपासक के स्थान की पहचान को दर्शाता है। कालभैरव के सामने झुककर, भक्त बाधाओं को दूर करने, सुरक्षा प्रदान करने और अपने अहंकार और आसक्तियों को मिटाकर उन्हें आध्यात्मिक मुक्ति की ओर ले जाने की उनकी शक्ति को स्वीकार करते हैं।

ब्रह्मांडीय आवश्यकता यह नाम सृष्टि और विघटन के चक्रों को स्वीकार करने की ब्रह्मांडीय आवश्यकता को भी सूक्ष्म रूप से संदर्भित करता है। जिस प्रकार समय सभी चीजों को बदलने और अंततः समाप्त होने के लिए मजबूर करता है, उसी प्रकार सभी घटनात्मक अस्तित्व को कालभैरव द्वारा व्यक्त परम वास्तविकता के सामने झुकना चाहिए।

76. वशीने

उन प्रभु को नमन जिनका सभी पर और हर चीज़ पर नियंत्रण है।

विस्तार : वशीने (Vaśīne) नाम, संस्कृत मूल "वश" (vaś) से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है "शक्ति धारण करना," "वश में करना," "नियंत्रित करना," या "माहिर होना।" यह ऐसे व्यक्ति का वर्णन करता है जो पूर्ण प्रभुत्व रखता है, जिसकी इच्छा सर्वोच्च है और जिसका प्रभाव सर्वव्यापी है।

पूर्ण नियंत्रक यह नाम कालभैरव को संपूर्ण ब्रह्मांड के परम और पूर्ण नियंत्रक के रूप में दर्शाता है, जिसमें सभी सजीव और निर्जीव प्राणी, शक्तियाँ और घटनाएँ शामिल हैं। उनके प्रभाव से बाहर कुछ भी संचालित नहीं होता है। प्रत्येक क्रिया, प्रत्येक घटना, प्रत्येक सृजन, संरक्षण और संहार अंततः उनकी दिव्य इच्छा और आदेश के अधीन है। वह ब्रह्मांडीय नृत्य के मुख्य सूत्रधार हैं।

सभी विरोधों का दमनकर्ता वशीने सभी विरोधों के दमन का भी तात्पर्य है—चाहे वे अहंकार, अज्ञान (अविद्या), या इच्छाओं जैसे आंतरिक अवरोध हों, या ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बाधित करने वाली बाहरी शक्तियाँ हों। वह वह हैं जो किसी भी विद्रोही शक्ति या अराजक तत्व को अपनी दिव्य योजना के अनुरूप सहजता से ला सकते हैं।

इंद्रियों और मन के स्वामी आध्यात्मिक साधक के लिए, वशीने आत्म-नियंत्रण की आदर्श स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है। भैरव वशीने के रूप में उस व्यक्ति का आदर्श रूप हैं जिसने अपनी इंद्रियों (इंद्रियाँ) और मन (मानस) को पूरी तरह से नियंत्रित कर लिया है। वह पूर्ण आत्मनिरीक्षण और वैराग्य की शक्ति का प्रतीक हैं, जो उन्हें उन लोगों के लिए एक मार्गदर्शक बनाते हैं जो अपनी आंतरिक उथल-पुथल पर नियंत्रण प्राप्त करना चाहते हैं और मानसिक शांति और स्पष्टता प्राप्त करना चाहते हैं।

सर्वोच्च अधिकार संक्षेप में, वशीने को नमन करना कालभैरव के सर्वोच्च अधिकार, उनकी सर्वशक्तिमत्ता और परम शासक के रूप में उनकी भूमिका की स्वीकृति है, जिनकी आज्ञा अस्तित्व के हर पहलू को नियंत्रित करती है, सूक्ष्म से लेकर स्थूल तक।

77. क्षपणाय

पापों का विनाश या प्रायश्चित्त करने वाले (देव) को नमन।

विस्तार : "क्षप" संस्कृत मूल से व्युत्पन्न नाम क्षपणाय, जिसका अर्थ है "नष्ट करना," "हटाना," या "प्रायश्चित्त करना," कालभैरव के दिव्य कार्य के एक गहन पहलू को समाहित करता है।

पापों का विनाश (पाप-क्षय) अपने मूल में, क्षपण पापों (पापों) को समाप्त करने या उनका प्रायश्चित्त करने के कार्य को संदर्भित करता है। कालभैरव, इस पहलू में, दिव्य न्याय और दया के परम प्रदाता हैं। वह केवल दंड देने वाले नहीं हैं, बल्कि अधर्मी कार्यों के कर्मिक परिणामों से मुक्ति दिलाने वाले भी हैं। उनकी प्रचंड ऊर्जा यादृच्छिक रूप से नहीं, बल्कि विशेष रूप से संचित नकारात्मक कर्मों पर निर्देशित होती है, जिससे भक्त शुद्ध होता है। पापों का यह विनाश कष्ट के रूप में प्रकट हो सकता है जो शुद्धि की ओर ले जाता है, या प्रत्यक्ष दिव्य कृपा के माध्यम से जो पिछले अपराधों को रद्द कर देता है।

बाधाओं को दूर करने वाला शाब्दिक पापों से परे, "क्षपण" किसी भी बाधा (विघ्न) को दूर करने का भी तात्पर्य है जो आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डालती है। ये बाधाएँ आंतरिक (अज्ञान, अहंकार, आसक्ति, इच्छा) या बाहरी (विरोधी, दुर्भाग्य) हो सकती हैं। कालभैरव, क्षपण के रूप में, इन बाधाओं को दूर करते हैं, साधक के आध्यात्मिक विकास के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं।

रात्रि का पहलू (क्षपा) "क्षपा" शब्द का अर्थ "रात" भी है। एक लाक्षणिक अर्थ में, कालभैरव को क्षपण के रूप में देखा जा सकता है जो अज्ञान, अंधकार और पीड़ा की "रात" का अंत करते हैं। वह आध्यात्मिक ज्ञान और मुक्ति के प्रकाश को लाते हैं, ठीक उसी तरह जैसे एक लंबी रात के बाद भोर होती है। यह काल के रूप में उनकी भूमिका के साथ संरेखित होता है, सर्वोच्च समय, जिसका अर्थ है कि वह पीड़ा और भ्रम की अस्थायी अवस्थाओं का अंत करते हैं।

परम विनाश एक व्यापक ब्रह्मांडीय अर्थ में, क्षपण परम विनाश को संदर्भित करता है - ब्रह्मांड का उसके आदिम अवस्था में विघटन। एक भयानक देवता के रूप में, कालभैरव सभी चीजों के विघटन की देखरेख करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि जो उत्पन्न होता है उसे भी स्रोत पर लौटना चाहिए। यह सृजन और विनाश के चक्रीय स्वरूप को सुनिश्चित करता है, सब कुछ को उसके आवश्यक अंत तक लाता है।

78. क्षान्तिदाय

धैर्य और शांति प्रदान करने वाले को नमन।

विस्तार : क्षान्तिदाय नाम दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों, क्षान्ति और दाय का एक यौगिक है।

क्षान्ति (Kṣānti): इस शब्द का अर्थ है "धैर्य," "सहनशीलता," "सहनशक्ति," या "शांति।" आध्यात्मिक संदर्भ में, यह द्वंद्वों (सुख और दुख, सफलता और असफलता), बाहरी प्रतिकूलताओं और आंतरिक बाधाओं से अप्रभावित रहने की क्षमता को दर्शाता है। यह कई भारतीय परंपराओं में एक अत्यधिक मूल्यवान आध्यात्मिक गुण है, जो मानसिक लचीलेपन और आंतरिक शांति की स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है।

दाय (Dāya): इसका अर्थ है "देने वाला," "प्रदान करने वाला," या "समर्पित करने वाला।"

धैर्य का दाता (क्षान्ति) क्षान्तिदाय के रूप में, कालभैरव को उस दिव्य स्रोत के रूप में पूजा जाता है जिससे धैर्य और सहनशीलता के गुण प्रवाहित होते हैं। एक ऐसी दुनिया में जो अक्सर दुख, संघर्ष और क्षणभंगुरता से चिह्नित होती है, आंतरिक शांति और सहनशीलता बनाए रखने की क्षमता आध्यात्मिक प्रगति और मानसिक कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है। इस भूमिका में कालभैरव, जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक शक्ति और संयम प्रदान करते हैं, बिना अपनी समता खोए।

शांति का दाता केवल धैर्य से परे, क्षान्तिदाय शांति के दान का भी तात्पर्य है - एक गहरी, स्थिर शांति जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था की समझ और स्वीकृति से उत्पन्न होती है। यह शांति की स्थिति निष्क्रिय त्याग नहीं है, बल्कि एक सक्रिय, आध्यात्मिक दृढ़ता है जो किसी को अडिग मन से सभी परिस्थितियों का

सामना करने में सक्षम बनाती है। यह शांति दिव्य का एक उपहार है, जो भक्तों को संसार की उथल-पुथल से ऊपर उठने की अनुमति देती है।

आध्यात्मिक महत्व यह नाम कालभैरव के एक परोपकारी पहलू को उजागर करता है, उन्हें केवल बुराई के एक भयानक संहारक के रूप में नहीं, बल्कि आध्यात्मिक मुक्ति के लिए महत्वपूर्ण आंतरिक गुणों के एक दयालु दाता के रूप में भी दर्शाता है। धैर्य और शांति प्रदान करके, वह भक्तों को बाहरी घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रियाओं को दूर करने में मदद करते हैं, जिससे आंतरिक स्थिरता को बढ़ावा मिलता है और आत्म-साक्षात्कार की दिशा में उनकी यात्रा में सहायता मिलती है। वह साधकों को एक शांत और स्थिर मन विकसित करने के लिए सशक्त बनाते हैं, जो निरंतर ध्यान और गहरी आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के लिए एक पूर्व शर्त है।

79. क्षमाया

जो धैर्यवान, शांतिपूर्ण और सहनशील हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : नाम क्षामा (Kshaama) संस्कृत मूल "क्षम" से लिया गया है, जिसका अर्थ धैर्य, सहनशीलता, क्षमा और शांति है। यह शिव कालभैरव के एक गहन पहलू का प्रतीक है जो अक्सर उनके उग्र स्वरूपों के बीच अनदेखा रह जाता है।

धैर्य और सहनशीलता यह विशेषण कालभैरव के असीम धैर्य को उजागर करता है। विनाश करने की अपनी अपार शक्ति और परम दंड देने वाले के रूप में अपनी भूमिका के बावजूद, वे अविश्वसनीय सहनशीलता भी प्रदर्शित करते हैं। यह धैर्य ब्रह्मांडीय है, जो उनके अवलोकन में होने वाली सृष्टि, संरक्षण और विघटन के युगों को दर्शाता है। वे सभी क्षणिक घटनाओं, अस्तित्व के सभी चक्रों को बिना विचलित या परेशान हुए सहन करते हैं। यह गुण परोक्ष रूप से उनके शाश्वत स्वरूप का भी सुझाव देता है, क्योंकि केवल वही जो शाश्वत है, वास्तव में अस्थायी के प्रति असीम रूप से धैर्यवान हो सकता है।

शांति और स्थिरता विरोधाभासी रूप से, एक ऐसे देवता के लिए जो अक्सर आतंक और विनाश से जुड़े होते हैं, क्षामा उनकी गतिशील गतिविधियों के पीछे निहित शांति और स्थिरता की एक आंतरिक स्थिति को इंगित करता है। यह शांति गतिविधि की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि एक गहन आंतरिक स्थिरता है। यह परम वास्तविकता (ब्रह्म) की शांति है जो सबसे विनाशकारी ब्रह्मांडीय घटनाओं के बीच भी अविचलित रहती है। उनके स्वरूप का यह पहलू उनके भक्तों को सांत्वना और स्थिरता प्रदान करता है, उन्हें यह आश्वासन देता है कि भयानक आवरण के नीचे, शांति का एक अटूट मूल है।

क्षमा और दया "क्षम" मूल का अर्थ क्षमा भी है। इसका तात्पर्य यह है कि जबकि कालभैरव न्याय और दंड देते हैं, उनमें उन लोगों के प्रति अपार क्षमा और दया की क्षमता भी है जो ईमानदारी से उनकी शरण लेते हैं। उनका न्याय केवल दंडात्मक नहीं है बल्कि अक्सर सुधारात्मक होता है, जो सुधार और आध्यात्मिक विकास की अनुमति देता है। यह पहलू उनके भक्तों को आशा प्रदान करता है, यह सुझाव देता है कि गंभीर त्रुटियों को भी सच्ची भक्ति और तपस्या के माध्यम से क्षमा किया जा सकता है।

स्थिरता का प्रतीक क्षामा के रूप में, वे उस स्थिर आधार का प्रतिनिधित्व करते हैं (जो अक्सर पृथ्वी से जुड़ा होता है, क्षमा का अर्थ कुछ संदर्भों में इसकी स्थायी प्रकृति के कारण पृथ्वी भी है) जिस पर संपूर्ण सृष्टि टिकी हुई है। वे अविचल नींव हैं, भौतिक संसार की क्षणभंगुरता और पीड़ा से मुक्ति चाहने वालों के लिए परम आश्रय हैं।

80. क्षमिणे

क्षमा और सहनशीलता के साक्षात स्वरूप को नमन।

विस्तार : नाम क्षमी (कृशमी) संस्कृत मूल 'क्षमा' (क्षमा) से लिया गया है, जिसका अर्थ है धैर्य, सहनशीलता, सहिष्णुता और मुख्य रूप से, क्षमा।

क्षमा का स्वरूप (क्षमा) क्षमी के रूप में, कालभैरव क्षमा के सर्वोच्च गुण, असीम क्षमा को मूर्त रूप देते हैं। यह पहलू गहरा है, विशेष रूप से एक ऐसे देवता में जो भयंकर न्याय और दंडात्मक कार्रवाई का भी प्रतीक है। उनकी क्षमा केवल क्षमा करने का कार्य नहीं है, बल्कि अस्तित्व की एक मूलभूत स्थिति है। यह सृष्टि की सभी त्रुटियों, अपराधों और अपूर्णताओं को सहन करने की ब्रह्मांडीय क्षमता को दर्शाता है, जो अनंत धैर्य के साथ ब्रह्मांड को एक साथ रखता है। वह उन सच्चे भक्तों के कर्मों के बोझ को दूर करते हैं जो उनमें शरण लेते हैं, उन्हें पाप और परिणाम के चक्र से मुक्ति प्रदान करते हैं।

सहनशीलता और धैर्य क्षमी अपार सहनशीलता और धैर्य का भी प्रतीक है। मानवीय मूर्खताओं की अंतहीन श्रृंखला और अस्तित्व के अंतर्निहित संघर्षों को देखने के बावजूद, वह सभी प्राणियों को अटूट शांति के साथ बनाए रखते हैं और उनका मार्गदर्शन करते हैं। यह एक दयालु और समझदार मार्गदर्शक के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देता है, जो आत्माओं के विकसित होने और अपने वास्तविक स्वरूप को समझने के लिए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते हैं। उनकी सहनशीलता उनके परम, अटूट स्वभाव का एक गुण है, जो उत्तेजना या विक्षोभ से परे है।

अतींद्रिय सहिष्णुता एक गहरे दार्शनिक अर्थ में, उनकी क्षमा ब्रह्मांडीय नाटक के भीतर द्वैत, पीड़ा और अपूर्णता के निरंतर प्रकटीकरण को सहन करने की उनकी क्षमता तक फैली हुई है, बिना इससे प्रभावित हुए। वह निर्दोष, शुद्ध चेतना बने रहते हैं, अस्तित्व के नाटक को प्रकट होने देते हैं जबकि इसे सूक्ष्म रूप से अंततः आध्यात्मिक पूर्णता की ओर धकेलते हैं। यह पहलू उनके भयानक रूप के भीतर भी अंतर्निहित परोपकारिता को प्रकट करता है।

81. क्षेत्रधाराय

सम्पूर्ण ब्रह्मांड के अस्तित्व के क्षेत्र को धारण करने वाले और सहारा देने वाले (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : क्षेत्रधाराय नाम कालभैरव का एक गहन वर्णन है, जो "क्षेत्र" और "धार" शब्दों का संयोजन है।

क्षेत्र: अस्तित्व का क्षेत्र

संस्कृत शब्द क्षेत्र के अर्थ की कई परतें हैं: • एक क्षेत्र, प्रदेश, या भूभाग: यह किसी भी परिभाषित स्थान को संदर्भित करता है, चाहे वह भौतिक क्षेत्र हो, ज्ञान का क्षेत्र हो, या आध्यात्मिक क्षेत्र हो। • शरीर: सूक्ष्म अर्थ में, मानव शरीर को एक क्षेत्र माना जाता है, अनुभव और क्रिया का एक "क्षेत्र"। • कर्म/क्रिया का क्षेत्र: स्वयं संसार, जिसमें सभी प्राणी कर्म करते हैं और उनके फल का अनुभव करते हैं, एक क्षेत्र है। • प्रकृति का क्षेत्र: सांख्य और वेदांतिक दृष्टिकोण से, क्षेत्र प्रकृति को संदर्भित करता है, ब्रह्मांड का आदिम पदार्थ या परिचालन क्षेत्र, जिसमें चौबीस तत्व (घटक/सिद्धांत) शामिल हैं। यह वह क्षेत्र है जहाँ चेतना (पुरुष) अनुभव करती है और कार्य करती है।

धार: धारण करने वाला और सहारा देने वाला

"धृ" (धारण करना, सहारा देना, वहन करना) धातु से व्युत्पन्न शब्द धार का अर्थ है: • धारण करने वाला/सहारा देने वाला: वह जो किसी चीज़ को ऊपर उठाता या बनाए रखता है। • पोषक: वह जो व्यवस्था और संरचना को बनाए रखता है। • आधार: वह जो आधार या नींव प्रदान करता है।

कालभैरव सभी क्षेत्रों के धारक के रूप में

जब संयुक्त किया जाता है, तो क्षेत्रधार (क्षेत्रधाराय चतुर्थी विभक्ति है, "क्षेत्रधार को") का अर्थ है "क्षेत्र का धारक या सहारा देने वाला।" यह नाम कालभैरव की भूमिका को इस प्रकार दर्शाता है:

#1. ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) के धारक वह संपूर्ण प्रकट ब्रह्मांड (मैक्रोकोस्मिक क्षेत्र) के लिए मूलभूत समर्थन है। वह प्रकृति के नियमों, सृष्टि और विलय के लयबद्ध चक्रों और अस्तित्व के ताने-बाने को बनाए रखता है। उनके अंतर्निहित समर्थन के बिना, ब्रह्मांडीय नृत्य समाप्त हो जाएगा।

#2. व्यक्तिगत सत्ता की नींव सूक्ष्म अर्थ में, कालभैरव व्यक्तिगत शरीर (क्षेत्र) का अंतिम सहारा है। वह महत्वपूर्ण जीवन-शक्ति और चेतना है जो प्रत्येक जीवित प्राणी को चेतन और बनाए रखती है। वह भौतिक और सूक्ष्म शरीरों को कार्यशील रखता है, सभी व्यक्तिगत अनुभव के लिए गुप्त आधार के रूप में कार्य करता है।

#3. सभी कर्मों (कर्म) के साक्षी और नियंत्रक वह वह चेतना है जो "कर्म के क्षेत्र" पर शासन करती है। वह सुनिश्चित करता है कि कर्म अपने उचित फल दें और कारण और प्रभाव का ब्रह्मांडीय नियम अक्षुण्ण रहे। क्षेत्रधार के रूप में, वह उन सिद्धांतों को बनाए रखता है जिनके द्वारा कर्म संचालित होता है।

#4. आध्यात्मिक लोकों के पोषक यह आध्यात्मिक "क्षेत्रों" तक भी फैला हुआ है - अस्तित्व के विभिन्न तल, स्वर्ग और पाताल लोक। वह इन विभिन्न लोकों की संरचना और नियमों को बनाए रखता है, उनकी अखंडता और कार्यप्रणाली सुनिश्चित करता है।

इस प्रकार, क्षेत्रधार हमें याद दिलाता है कि कालभैरव केवल एक विनाशकारी शक्ति नहीं हैं, बल्कि वह मूल आधार हैं जिस पर संपूर्ण सृष्टि टिकी हुई है, जो इसे उसके गहरे सार से लेकर उसकी सबसे बाहरी अभिव्यक्ति तक बनाए रखता है। वह अस्तित्व का सर्वव्यापी आधार है, जो हर चीज को उसके उचित स्थान पर रखता है।

82. क्षाराय

सभी नश्वर वस्तुओं के स्वरूप होते हुए भी जो अविनाशी सत्य हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : क्षराय (Kṣarāya) नाम संस्कृत मूल "क्षर्" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "बहना," "क्षय होना," "नष्ट होना," या "घुलना।" यह नाम एक गहन द्वैत को समाहित करता है जो अस्तित्व की प्रकृति के बारे में गहरे दार्शनिक सत्यों को प्रकट करता है, जैसा कि हिंदू विचार में, विशेष रूप से शिव की पहचान के संदर्भ में समझा जाता है।

नश्वर पहलू (क्षर पुरुष) (The Perishable Aspect - Kṣara Puruṣa) हिंदू दर्शन में, विशेष रूप से भगवद गीता (अध्याय 15) में, क्षर पुरुष (नश्वर प्राणी) और अक्षर पुरुष (अविनाशी प्राणी) के बीच एक अंतर है। क्षराय, अपने प्रारंभिक अर्थ में, क्षर को संदर्भित करता है, जो सभी चीजों का नश्वर रूप है। यह संपूर्ण प्रकट ब्रह्मांड को दर्शाता है—सभी भौतिक शरीर, सभी अनुभव, सभी भौतिक वस्तुएं, और सभी देहधारी प्राणी—जो परिवर्तन, क्षय और अंततः विघटन के अधीन हैं। भगवान शिव, विनाश के अवतार के रूप में (ब्रह्मांडीय चक्र के पहलुओं में से एक), वह शक्ति हैं जो इस नश्वरता को लाती हैं। वह उस प्राकृतिक नियम का प्रतिनिधित्व करते हैं कि जो कुछ भी पैदा होता है उसे मरना चाहिए, जो कुछ भी बनाया जाता है उसे घुलना चाहिए, और जो कुछ भी संयुक्त होता है उसे टूटना चाहिए। वह अनित्यता का ब्रह्मांडीय सिद्धांत है, जिसके माध्यम से सभी रूप अंततः अपनी अप्रकट अवस्था में लौट आते हैं।

अविनाशी वास्तविकता (अक्षर पुरुष) (The Imperishable Reality - Akṣara Puruṣa) हालांकि, और यह शिव को समझने के लिए महत्वपूर्ण है, क्षराय की पूजा एक साथ उस अविनाशी वास्तविकता की ओर इशारा करती है जो सभी नश्वरता के नीचे निहित है। जबकि शिव क्षय की

शक्ति हैं, वह परम वास्तविकता (ब्रह्म) भी हैं जो सृष्टि, संरक्षण और विनाश के सभी चक्रों के माध्यम से अपरिवर्तित रहते हैं। वह अक्षर हैं, "अविनाशी" या "अक्षय।" नश्वरता, घुलने और स्रोत पर लौटने की प्रक्रिया एक शाश्वत, अपरिवर्तनीय चेतना द्वारा संचालित होती है। इस प्रकार, रूपों के नश्वर होने के माध्यम से, जो उभरता है वह उस अविनाशी सत्य की प्राप्ति है जो सब कुछ नियंत्रित और व्याप्त करता है।

पराकाष्ठा और अंतर्निहितता (Transcendence and Immanence) यह नाम शिव के द्वैत स्वरूप को उजागर करता है, जो पारलौकिक (सभी नश्वर रूपों से परे) और अंतर्निहित (सभी रूपों के भीतर मौजूद, भले ही वे नश्वर हों) दोनों हैं। वह क्षय के कारक हैं, फिर भी वह शाश्वत साक्षी और आधार भी हैं जो सभी क्षय पूर्ण होने पर भी बने रहते हैं। क्षराय को नमन करना सृष्टि और विघटन के ब्रह्मांडीय नृत्य को स्वीकार करना है, यह पहचानना है कि विनाश में भी एक अंतर्निहित, अपरिवर्तनीय वास्तविकता है जो स्वयं शिव हैं। यह एक अनुस्मारक है कि नश्वर रूपों से लगाव दुख की ओर ले जाता है, जबकि गहरी अविनाशी सार को समझना मुक्ति की ओर ले जाता है।

83. कंकालाय

कंकाल रूप धारण करने वाले को नमन, जो भौतिक शरीर से परे होने का प्रतीक है।

विस्तार : कंकालाय (जिसे अक्सर कंकाल-रूप या कंकाल-मूर्ति के रूप में प्रस्तुत किया जाता है) नाम कंकाल भैरव के कंकाल रूप को संदर्भित करता है, जो भगवान शिव का एक विशिष्ट और अत्यधिक प्रतीकात्मक प्रकटीकरण है, विशेष रूप से भैरव से जुड़ा हुआ है।

कंकाल (Kaṅkāla) "कंकाल" का शाब्दिक अर्थ "कंकाल" या "हड्डियाँ" है। यह रूप भौतिक शरीर, नश्वरता और क्षय के चक्र से शिव के परे होने का प्रतिनिधित्व करता है। तांत्रिक और शैव परंपराओं में, कंकाल केवल मृत्यु का प्रतीक नहीं है, बल्कि वह है जो सभी नश्वर तत्वों को हटा दिए जाने पर शेष रहता है। यह परम वास्तविकता, अप्रकट और क्षणभंगुर से परे अविनाशी सत्य को दर्शाता है।

भौतिक शरीर से परे होना भगवान शिव अपने कंकाल रूप में भौतिक अस्तित्व और शरीर की सीमाओं से वैराग्य को मूर्त रूप देते हैं। यह एक शक्तिशाली कथन है कि सच्ची आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) में भौतिक रूपों के भ्रम से परे देखना और शाश्वत, निराकार सार को पहचानना शामिल है। यह रूप हमें याद दिलाता है कि भौतिक शरीर अस्थायी है, केवल एक पात्र है, और सच्चा आत्म (आत्मा) अमर है और इसके क्षय से अप्रभावित है।

वैराग्य और मुक्ति का प्रतीकवाद कंकाल रूप वैराग्य (विरक्ति) पर एक गहरा शिक्षण है। कंकाल रूप को स्वीकार करके और यहां तक कि गले लगाकर, भैरव मानवता को मृत्यु के भय का सामना करना सिखाते हैं, सभी सांसारिक संपत्ति और आसक्तियों की क्षणभंगुरता को महसूस करना सिखाते हैं, और जो शाश्वत है उसके लिए प्रयास करना सिखाते हैं। यह बताता है कि मुक्ति तब प्राप्त होती है जब कोई भौतिक और अहंकारी पहचान की परतों को त्याग देता है, ठीक वैसे ही जैसे शरीर अपने मांस को त्याग कर अंतर्निहित कंकाल को प्रकट करता है।

मृत्यु पर विजय (मृत्युंजय) हालांकि सीधे मृत्युंजय (मृत्यु पर विजय प्राप्त करने वाला) नहीं, कंकाल रूप परोक्ष रूप से मृत्यु पर विजय को दर्शाता है, यह प्रदर्शित करके कि पूर्ण शारीरिक विघटन के सामने भी, एक स्थायी वास्तविकता है। यह इस सत्य का एक दृश्य प्रतिनिधित्व है कि चेतना (शिव) शरीर के अंत से परे बनी रहती है।

अनुष्ठानिक और दार्शनिक महत्व कुछ तांत्रिक प्रथाओं में, कंकाल भैरव पर ध्यान करने से साधकों को मृत्यु के भय को दूर करने, वैराग्य विकसित करने और अस्तित्व की क्षणभंगुर प्रकृति में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में मदद मिल सकती है। यह एक साहसी, समझौता न करने वाली छवि है जो सौंदर्य और

जीवन शक्ति की पारंपरिक धारणाओं को चुनौती देती है, इसके बजाय वास्तविकता और मुक्ति के बारे में एक गहरे, अधिक गहन सत्य की ओर इशारा करती है।

84. कालशमनाय

काल और मृत्यु को शांत करने वाले और वश में करने वाले को नमन।

विस्तार : कालशमनाय नाम एक गहरा संस्कृत यौगिक है जो अस्तित्व की सबसे दुर्जेय शक्तियों: काल और मृत्यु पर भगवान शिव के परम अधिकार को दर्शाता है। यह "काल" (समय/मृत्यु) और "शमन" (शांत करने वाला/वश में करने वाला) से बना है।

काल के विजेता (काल) हिंदू दर्शन में, काल केवल एक रैखिक प्रगति नहीं है, बल्कि एक शक्तिशाली, अथक और सब कुछ भस्म करने वाला देवता है जो सब कुछ अस्तित्व में लाता है और फिर अंततः उसे नष्ट कर देता है। काल सब कुछ निगल जाता है, और कोई भी उसकी पकड़ से बच नहीं सकता। कालशमन होने के नाते, भगवान शिव, अपने भैरव रूप में, वह हैं जो इस अतृप्त भक्षक को पार करते हैं, नियंत्रित करते हैं और अंततः शांत करते हैं। वह समय के चक्रों के अधीन नहीं हैं, बल्कि उनके ही सूत्रधार हैं, जो सभी लौकिक अभिव्यक्तियों को आरंभ करते हैं, बनाए रखते हैं और समाप्त करते हैं। वह महाकाल हैं, महान काल, जो समय की सभी छोटी अभिव्यक्तियों को समाहित करते हैं।

मृत्यु के वश में करने वाले (मृत्यु) काल से निकटता से जुड़ा मृत्यु है। मृत्यु अधिकांश सचेत प्राणियों के लिए अंतिम भय है, जो शारीरिक अस्तित्व के अंत और अज्ञात का प्रतिनिधित्व करती है। कालशमन का अर्थ है कि भैरव में मृत्यु के प्रभावों को वश में करने, जीतने और यहां तक कि उलटने की शक्ति है। यह आवश्यक रूप से शारीरिक अमरता प्रदान करने के बारे में नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक प्राप्ति के माध्यम से व्यक्ति को जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) से मुक्त करने के बारे में है। मृत्यु को शांत करके, वह उसके डंक और सचेत व्यक्ति पर उसकी शक्ति को समाप्त कर देते हैं, जिससे मुक्ति मिलती है।

शांत करने वाले और शांति प्रदान करने वाले "शमन" शब्द का अर्थ शांत करना, शांत करना या वश में करना है। काल और मृत्यु के संदर्भ में, इसका अर्थ है कि वह अपने भक्तों के लिए उनके भयानक पहलुओं को प्रभावी ढंग से बेअसर कर देते हैं। वह इन दुर्जेय शक्तियों के सामने भी शांति (शांति) प्रदान करते हैं। उनके प्रति समर्पित लोगों के लिए, समय का अथक मार्च और मृत्यु की अंतिमता भय के स्रोत नहीं रह जाते हैं। इसके बजाय, उन्हें दिव्य नृत्य के हिस्से के रूप में समझा जाता है, जो अंततः उच्चतर अवस्थाओं या अंतिम मुक्ति की ओर ले जाता है। उनका शमन सर्वोच्च कृपा का कार्य है, जो भय को निर्भयता में बदल देता है।

मुक्ति का प्रतीक अंततः, कालशमन मुक्ति (मोक्ष) का प्रतीक है। काल और मृत्यु को पार करके, वह लौकिक अस्तित्व की बाधाओं से शाश्वत स्वतंत्रता का मार्ग प्रदान करते हैं। वह वह हैं जो लौकिकता और मृत्यु दर से जुड़ी अस्तित्वगत चिंताओं को शांत कर सकते हैं, जिससे परम आध्यात्मिक शांति मिलती है।

85. कालाकाष्ठयै

काल की परम सीमा और सूक्ष्मतम इकाई को नमन।

विस्तार : कालाकाष्ठायै नाम कालभैरव के समय पर पूर्ण प्रभुत्व का एक गहरा वर्णन है, जिसे दो मूलभूत इकाइयों के माध्यम से व्यक्त किया गया है: कला और काष्ठा।

कला: समय का सूक्ष्म विभाजन

इस संदर्भ में "कला" शब्द समय के एक बहुत छोटे, विशिष्ट विभाजन को संदर्भित करता है। प्राचीन भारतीय लौकिक मापों में, एक कला समय की एक इकाई है जो एक मिनट से बहुत छोटी होती है। उदाहरण के लिए, कुछ प्रणालियों में, एक कला लगभग 8 सेकंड के बराबर होती है, या यह एक मुहूर्त (एक पारंपरिक समय इकाई) का साठवाँ भाग हो सकती है। यह सूक्ष्मता, सूक्ष्म और लगभग अगोचर खंडों को दर्शाता है जिसमें समय को तोड़ा जा सकता है।

काष्ठा: समय की परम सीमा (या एक अलग छोटी इकाई)

"काष्ठा" भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। यह संदर्भित कर सकता है: • समय की सबसे छोटी व्यावहारिक इकाई: कुछ विस्तृत समय विभाजन प्रणालियों में, काष्ठा कला से भी छोटी होती है, शायद एक कला का तीसवाँ भाग, जो समय के एक अत्यंत सूक्ष्म, लगभग अविभाज्य खंड का प्रतिनिधित्व करती है। • परम सीमा या पराकाष्ठा: अपने लौकिक अर्थ से परे, काष्ठा का सामान्य अर्थ "परम सीमा," "उच्चतम बिंदु," या "पराकाष्ठा" भी होता है। जब समय पर लागू किया जाता है, तो यह सबसे दूर की पहुंच को दर्शाता है, दोनों ही अत्यंत छोटे विभाजन और लौकिक अस्तित्व की अंतिम सीमाएं।

समय पर प्रभुत्व

"कालाकाष्ठायै" के रूप में संबोधित करके, कालभैरव को उस रूप में आह्वान किया जाता है जो समय की इन सबसे मूलभूत और सूक्ष्म इकाइयों को समाहित और पार करता है। वह केवल महान युगों या कालों (युगों) के नियंत्रक नहीं हैं, बल्कि अस्तित्व की सबसे छोटी चमक, सबसे सूक्ष्म अवधि का भी सार और नियंत्रक हैं। यह कई गहरे अर्थों को व्यक्त करता है:

• परम सटीकता और नियंत्रण: वह ब्रह्मांड में हर एक, मिनट की घटना के आयोजक हैं। समय पर उनका नियंत्रण पूर्ण है, जो लौकिक अस्तित्व के "परमाणुओं" तक फैला हुआ है। • हर पल में अंतर्निहितता: यह नाम दर्शाता है कि कालभैरव हर सेकंड के अंश में, अस्तित्व के हर क्षण में उपस्थित हैं। वह अंतर्निहित वास्तविकता है जो समय को प्रकट होने देती है, यहां तक कि अपने सबसे सूक्ष्म स्तरों पर भी। • लौकिक सीमाओं से परे: जबकि वह इन इकाइयों का सार हैं, वह उन्हें पार भी करते हैं। वह शाश्वत, कालातीत चेतना (महाकाल) हैं जो सभी लौकिक विभाजनों का स्रोत और अंतिम अंत हैं। वह समय की "सीमा" हैं, इस अर्थ में कि वह इसका अंतिम स्रोत और गंतव्य हैं।

इस प्रकार, कालाकाष्ठायै कालभैरव को समय के सर्वोच्च, सर्व-समावेशी देवता के रूप में पूजता है, जिसका प्रभुत्व विशाल ब्रह्मांडीय युगों से लेकर सबसे सूक्ष्म, अगम्य क्षणों तक फैला हुआ है, जिससे वह सभी अस्तित्व पर अंतिम अधिकार रखते हैं।

86. कलानिधये

सभी कलाओं और कौशलों के महान निधि-भंडार को नमन।

विस्तार : कलानिधये नाम 'कला' और 'निधि' का एक यौगिक है।

कला (Kalā): इस शब्द के अर्थ की कई परतें हैं, जिनमें शामिल हैं: • कला, कौशल, शिल्प, प्रदर्शन, संगीत, नृत्य, कविता आदि। • एक भाग, एक अंश, एक खंड (जैसे, चंद्रमा की एक कला)। • रचनात्मक शक्ति या अभिव्यक्ति। • अस्तित्व की सूक्ष्मताएँ, दिव्य उत्सर्जन, या 64 पारंपरिक कलाएँ (चतुष्षष्टि कलाएँ)।

निधि (Nidhi): इसका अर्थ है एक खजाना, एक भंडार, एक पात्र, एक कोष, एक संग्रह, या एक खजाना-घर। यह कुछ अत्यंत मूल्यवान और प्रचुर मात्रा में होने को दर्शाता है।

सभी कलाओं और कौशलों का खजाना-घर (Treasure-House of All Arts and Skills) इस प्रकार, कलानिधये दिव्य को सभी प्रकार की कला, कौशल, ज्ञान और रचनात्मक अभिव्यक्ति के अंतिम स्रोत और भंडार के रूप में संदर्भित करता है। भैरव, कलानिधि के रूप में, केवल एक कला

में कुशल नहीं हैं, बल्कि सभी कलाओं और विज्ञानों की समग्रता का प्रतीक हैं। वे वह स्रोत हैं जहाँ से सभी रचनात्मकता उत्पन्न होती है और सभी शिल्पों के अंतिम स्वामी हैं, चाहे वे सांसारिक हों या गूढ़।

रचनात्मक शक्ति का प्रतीक (Embodiment of Creative Power) यह नाम सभी रचनात्मक प्रयासों के संरक्षक के रूप में उनके पहलू को उजागर करता है। वे हर कलाकार के पीछे की प्रेरणा हैं, हर विद्वान के भीतर का ज्ञान हैं, और हर शिल्पकार में कौशल हैं। यह दर्शाता है कि दिव्य ऊर्जा सृष्टि के ताने-बाने में जटिल रूप से बुनी हुई है, जो दुनिया में सुंदरता, प्रतिभा और सरलता के रूप में प्रकट होती है।

सूक्ष्म अभिव्यक्तियों के स्वामी (Master of Subtle Manifestations) गहरे अर्थ में, कला दिव्य शक्ति के सूक्ष्म विभाजनों या उत्सर्जन को भी संदर्भित कर सकती है। कलानिधि के रूप में, भैरव अपने भीतर इन सभी सूक्ष्म रचनात्मक ऊर्जाओं और अभिव्यक्ति के विभिन्न पहलुओं को समाहित करते हैं। जैसे चंद्रमा की सोलह कलाएँ (अंगुलियाँ) होती हैं, प्रत्येक कला एक चरण या गुणवत्ता का प्रतिनिधित्व करती है, भैरव ऐसे सभी दिव्य पहलुओं और शक्तियों का पूर्ण भंडार हैं।

कलाकारों और विद्वानों के संरक्षक (Patron of Artists and Scholars) भक्तों के लिए, विशेष रूप से रचनात्मक कार्यों में लगे लोगों के लिए, भैरव को कलानिधि के रूप में ध्यान करने से दिव्य प्रेरणा प्राप्त हो सकती है, उनके कौशल को परिष्कृत किया जा सकता है, और उनके कलात्मक और बौद्धिक विकास में आने वाली बाधाओं को दूर किया जा सकता है, जिससे वे सीखने और कला के एक परोपकारी संरक्षक बन जाते हैं।

87. कालाय

जो स्वयं काल हैं, परम संहारक और पालनकर्ता हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : 'काल' शब्द से व्युत्पन्न नाम कालाय, हिंदू दर्शन में, विशेष रूप से शिव और भैरव के संदर्भ में, गहरा महत्व रखता है। काल का शाब्दिक अर्थ "समय" है, लेकिन इसके निहितार्थ कहीं अधिक गहरे हैं, जिसमें सृष्टि, पालन और संहार शामिल हैं।

स्वयं काल (परम सत्य) काल के रूप में, भगवान भैरव केवल समय के नियंत्रक नहीं हैं, बल्कि स्वयं काल के मूर्त रूप हैं। वह शाश्वत, असीमित और अटल शक्ति हैं जो सभी अस्तित्व को नियंत्रित करती है। ब्रह्मांड में सब कुछ, सूक्ष्म से लेकर ब्रह्मांडीय तक, काल के भीतर जन्म लेता है, काल द्वारा परिभाषित अवधि के लिए मौजूद रहता है, और अंततः काल में ही विलीन हो जाता है। यह दर्शाता है कि काल अपने गतिशील और निरंतर बदलते पहलू में परम सत्य (ब्रह्म) है।

संहारकर्ता अपने सबसे भयानक रूप में, काल संहारकर्ता (संहार-कारक) है। समय, अपनी अथक गति में, हर चीज को नष्ट करता है, वृद्ध करता है और अंततः समाप्त कर देता है। कोई भी प्राणी, कोई साम्राज्य, कोई तारा, कोई आकाशगंगा काल के चंगुल से नहीं बच सकता। यह विनाशकारी शक्ति दुर्भावनापूर्ण नहीं है, बल्कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था का एक अंतर्निहित कार्य है, जो चक्रीय नवीनीकरण सुनिश्चित करती है। जब भैरव को महाकाल (महान काल) के रूप में पहचाना जाता है, तो वह परम विघटन, सभी भौतिक अस्तित्व के अंत का प्रतिनिधित्व करते हैं, जहाँ देवता और ब्रह्मांडीय शक्तियाँ भी समाहित हो जाती हैं।

पालक और सृष्टिकर्ता हालांकि अक्सर विनाश से जुड़ा होता है, काल सृष्टि और पालन का भी अंतर्निहित सिद्धांत है। समय के प्रवाह के बिना, कोई प्रक्रिया नहीं हो सकती, कोई जीवन प्रकट नहीं हो सकता, और कोई ब्रह्मांडीय लीला (लीला) प्रकट नहीं हो सकती। समय वह कैनवास है जिस पर ब्रह्मांड चित्रित और बनाए रखा जाता है। इस प्रकार, काल विरोधाभासी रूप से अस्तित्व का ताना-बाना और उसका अंतिम अंत है। वह जन्म, जीवन और मृत्यु के चक्र को आरंभ करता है।

समय से परे अंततः, काल भैरव, समय के अवतार के रूप में, इससे परे भी हैं। वह शाश्वत सत्य हैं जो तब भी बने रहते हैं जब सभी लौकिक घटनाएँ समाप्त हो जाती हैं। भैरव को काल के रूप में पहचानना भौतिक संसार की क्षणभंगुरता और दिव्य के शाश्वत, अपरिवर्तनीय स्वभाव की स्वीकृति है। यह भक्तों को क्षणभंगुर लौकिक अनुभवों से परे, अंतर्निहित, कालातीत वास्तविकता की ओर देखने के लिए प्रोत्साहित करता है।

88. करालाय

खुले मुख वाले और भयानक, विकराल रूप वाले को नमन।

विस्तार : कराला (Karālā), जिसे अक्सर करालाय (Karālāya) के रूप में देखा जाता है, भगवान शिव के दुर्जेय और भयावह पहलू को संदर्भित करता है, विशेष रूप से भैरव (Bhairava) या महाकाल (Mahākāla) के रूप में उनके प्रकट रूपों में।

खुला हुआ मुख (भक्षण करने वाला पहलू) "कराला" (Karālā) का शाब्दिक अर्थ है "खुला हुआ मुख वाला," "खुला हुआ," या "चौड़े खुले मुख वाला।" यह दृश्य विशेषता प्रतीकात्मक रूप से गहरी है। मूर्तिकला संबंधी चित्रणों में, कराला भैरव (Karālā Bhairava) के चौड़े मुख को अक्सर स्वयं काल (समय) का भक्षण करते हुए, या ब्रह्मांडीय प्रलय (mahāpralaya) के दौरान समस्त सृष्टि का भक्षण करते हुए वर्णित किया जाता है। यह दिव्य की विशाल, सब कुछ भक्षण करने वाली शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो अंततः सब कुछ अपने में समाहित कर लेती है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, यह एक ऐसी शक्ति का सुझाव देता है जो अज्ञान, नकारात्मकता और अहंकार की सीमित धारणाओं को निगल जाती है, जिससे गहरा परिवर्तन होता है।

भयावह और दुर्जेय उपस्थिति खुले हुए मुख से परे, कराला (Karālā) एक समग्र "भयावह," "भयंकर," या "दुर्जेय" उपस्थिति को संदर्भित करता है। इसमें नुकीले दाँत, जलती हुई आँखें, बिखरे हुए बाल और गहरा रंग शामिल है, जो भैरव (Bhairava) के भयानक रूपों की विशेषता है। यह डरावना मुख केवल आतंक पैदा करने के लिए नहीं है, बल्कि अस्तित्व के सभी पहलुओं, जिसमें मृत्यु और समय भी शामिल है, पर उनकी पूर्ण और अदम्य शक्ति को दर्शाता है। यह भौतिक संसार की क्षणभंगुरता और दिव्य शक्ति की अंतिम वास्तविकता की एक स्पष्ट याद दिलाता है जो सृष्टि, पालन और संहार को नियंत्रित करती है।

सार्वभौमिक परिवर्तक यह भयावह पहलू सार्वभौमिक परिवर्तन का एक साधन है। भयावह दिखकर, कराला (Karālā) व्यक्तियों को उनके गहरे भय, विशेष रूप से मृत्यु के भय का सामना करने के लिए मजबूर करता है, और क्षणभंगुर से लगाव की अंतिम निरर्थकता को महसूस कराता है। वह भ्रम और कर्म बंधनों का अंतिम संहारक है, इस प्रकार आध्यात्मिक साधकों के लिए एक शक्तिशाली मुक्तिदाता के रूप में कार्य करता है जो श्रद्धा और समर्पण के साथ उनके पास आते हैं।

ब्रह्मांडीय न्याय और संरक्षण भक्तों के लिए, यह दुर्जेय रूप अनुशासन और श्रद्धा पैदा करता है, धर्म के पालन को सुनिश्चित करता है। जबकि अधर्मी और अहंकार के लिए भयावह, कराला (Karālā) का भयावह पहलू सदाचारी लोगों के लिए तीव्र सुरक्षा का स्रोत भी है, उन्हें नुकसान से बचाता है और बाधाओं के माध्यम से उनका मार्गदर्शन करता है। वह इस सिद्धांत का प्रतीक है कि सच्ची सुरक्षा अक्सर एक ऐसे रूप में आती है जो चुनौतीपूर्ण है फिर भी अंततः परोपकारी है।

89. कंकालिने

उन (भगवान) को नमन, जो खोपड़ियों की माला धारण करते हैं, जो अहंकार से वैराग्य का प्रतीक है।

विस्तार : कंकालिने (कभी-कभी कंकाली के रूप में भी प्रस्तुत किया जाता है) नाम कंकालमाला, खोपड़ियों की माला से आंतरिक रूप से जुड़ा हुआ है, जो शैव धर्म में और विशेष रूप से शिव और भैरव जैसे उग्र देवताओं से जुड़ा एक गहरा और शक्तिशाली प्रतीक है।

खोपड़ियों की माला का प्रतीकवाद (कंकालमाला) खोपड़ियों की माला केवल एक भयावह अलंकरण नहीं है, बल्कि यह गहरे दार्शनिक और आध्यात्मिक सत्यों को समाहित करती है:

• अहंकार से वैराग्य: माला में प्रत्येक खोपड़ी एक पिछले जीवन, एक जीते हुए अहंकार, या एक विलीन आत्म-पहचान का प्रतिनिधित्व करती है। इस माला को धारण करके, भैरव व्यक्तिगत स्व (अहंकार) की क्षणिक, भ्रामक प्रकृति से अपनी पूर्ण अनासक्ति और सभी भौतिक आसक्तियों से अपने अतिक्रमण को दर्शाते हैं। यह एक शक्तिशाली अनुस्मारक है कि सभी जीवित प्राणी अंततः मृत्यु में समाप्त होते हैं, और इस परम विघटन के माध्यम से ही मुक्ति प्राप्त की जा सकती है।

• मृत्यु और समय पर महारत: खोपड़ियाँ नश्वरता और सभी चीजों की अनित्यता का एक शक्तिशाली प्रतीक हैं। उन्हें धारण करके, भैरव मृत्यु (मृत्यु) और समय (काल) के अथक चक्र पर अपनी पूर्ण महारत प्रदर्शित करते हैं। वह परम वास्तविकता हैं जो जन्म, जीवन और मृत्यु की सीमाओं से परे है।

• अस्तित्व की सभी अवस्थाओं का ज्ञान: खोपड़ियाँ न केवल जीवन के अंत का, बल्कि अस्तित्व के पूरे सातत्य का भी प्रतीक हैं, जो सृष्टि, संरक्षण और विनाश की समग्रता का प्रतिनिधित्व करती हैं। प्रत्येक खोपड़ी को एक जीवित प्राणी की अभिव्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है, और उन्हें धारण करके, भैरव अस्तित्व और गैर-अस्तित्व की सभी अवस्थाओं के अपने गहन ज्ञान और अनुभव को दर्शाते हैं। ये खोपड़ियाँ संस्कृत वर्णमाला के अक्षरों का भी प्रतिनिधित्व कर सकती हैं, इस प्रकार ध्वनि और वाणी की रचनात्मक शक्ति का प्रतीक हैं।

अतिक्रमण और मुक्ति कंकालिने के रूप में, भैरव मुक्ति (मोक्ष) की परम अवस्था का प्रतीक हैं जहाँ व्यक्तिगत आत्मा ने अपनी सभी कंडीशनिंग और भौतिक शरीर और अहंकार के साथ पहचान को त्याग दिया है। वह वह हैं जो भक्तों को अपनी नश्वरता और आसक्ति का सामना करने के लिए प्रेरित करते हैं, उन्हें भ्रम के पर्दे के पीछे की गहरी, अपरिवर्तनीय वास्तविकता की तलाश करने का आग्रह करते हैं। उनका रूप, हालांकि बाहरी रूप से भयावह है, गहन आध्यात्मिक जागृति और अपने स्वयं के अमर सार की प्राप्ति के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है।

90. कमनीयाय

अत्यंत सुंदर, मनमोहक और वांछनीय (कमनीय) स्वरूप को नमन।

विस्तार : कमनीय (कमनीयाय) नाम संस्कृत मूल "कम्" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "इच्छा करना," "प्रेम करना," या "चाहना।" इस प्रकार, कमनीय उस एक का वर्णन करता है जो परम सुंदर, आकर्षक, प्यारा और इसलिए, वांछनीय या प्रेम के योग्य है।

दिव्य सौंदर्य और आकर्षण जबकि भैरव को अक्सर भयंकर और डरावने रूपों में चित्रित किया जाता है, यह नाम एक विरोधाभासी पहलू को प्रकट करता है: उनका अंतर्निहित और अप्रतिरोध्य दिव्य सौंदर्य। यह सौंदर्य केवल सौंदर्यपरक नहीं है बल्कि दिव्य के गहन आकर्षण और मनमोहक प्रकृति का प्रतीक है। यह वह आध्यात्मिक आकर्षण है जो सभी प्राणियों को परम वास्तविकता की ओर खींचता है, भले ही वे कभी-कभी इसे भय या विस्मय के आवरण के माध्यम से देखते हों। यह आकर्षण शारीरिक रूप से परे है, जो चेतना-आनंद (सत्-चित्-आनंद) के रूप में उनकी आंतरिक प्रकृति का प्रतिनिधित्व करता है।

सभी इच्छाओं का लक्ष्य कमनीय के रूप में, कालभैरव सभी आध्यात्मिक इच्छाओं का अंतिम लक्ष्य हैं। वे मुक्ति, ज्ञान और शुद्ध प्रेम के लिए सभी आकांक्षाओं की पूर्ति हैं। भक्त उनके प्रति केवल श्रद्धा या भय से ही नहीं, बल्कि वास्तविकता के परम स्रोत के साथ मिलन की तीव्र इच्छा से भी आकर्षित होते हैं, जो स्वाभाविक रूप से सुंदर और आनंदमय है।

भक्ति का आकर्षण यह पहलू कालभैरव की अपने भक्तों के हृदय और मन को आकर्षित करने और मोहित करने में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। उनकी "वांछनीयता" एक सांसारिक आकर्षण नहीं है बल्कि एक आध्यात्मिक खिंचाव है, एक चुंबकीय शक्ति जो साधकों को आत्म-साक्षात्कार और दिव्य कृपा की ओर खींचती है। वे दिव्य का परम मनमोहक पहलू हैं जो भक्ति और आराधना को प्रेरित करता है।

91. कलानिधये

सभी कलाओं और दिव्य गुणों के भंडार स्वरूप को नमन।

विस्तार : कलानिधये नाम 'कला' और 'निधि' का एक यौगिक है।

कला: एक कला, कौशल, या दिव्य गुण कला 64 पारंपरिक कलाओं या कौशलों (जैसे संगीत, नृत्य, चित्रकला, कविता आदि) में से किसी को भी संदर्भित करती है जो मानवीय उपलब्धियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। आध्यात्मिक संदर्भ में, कला दिव्य शक्ति और ऊर्जा के दिव्य गुणों, विशेषताओं या रूपों को भी संदर्भित करती है। यह ब्रह्मांड की जटिल, सुंदर और कुशल अभिव्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करती है।

निधि: एक खजाना, भंडार, या संग्रह निधि का अर्थ है एक खजाना या एक विशाल भंडार। यह किसी चीज़ के असीमित संग्रह या एक अटूट स्रोत को इंगित करता है।

सभी कलाओं के स्वामी कलानिधि के रूप में, भगवान कालभैरव सभी कलाओं और विज्ञानों के परम पारखी, संरक्षक और स्रोत हैं। वह प्रत्येक रचनात्मक प्रयास की पूर्णता का प्रतीक हैं। यह दर्शाता है कि रचनात्मक अभिव्यक्ति के सभी रूप, चाहे वे भौतिक दुनिया में सीखे गए हों या दिव्य रूप से प्रेरित हों, अंततः उनसे उत्पन्न होते हैं और उनमें अपनी पूर्णता पाते हैं। वह ब्रह्मांड के परम शिल्पकार हैं, और सौंदर्य और कौशल के सभी रूप उनके अस्तित्व में अपनी जड़ें पाते हैं।

दिव्य गुणों का भंडार केवल कलाओं से परे, कलानिधि का अर्थ यह भी है कि वह सभी दिव्य गुणों और सद्गुणों का भंडार हैं। इसमें ज्ञान, करुणा, शक्ति, सौंदर्य, ज्ञान और आध्यात्मिक शक्ति जैसे शुभ गुण शामिल हैं। वह एक दिव्य प्राणी के पास हो सकने वाले प्रत्येक कल्पनीय सकारात्मक गुण का पूर्ण अवतार हैं। कलानिधि के रूप में उन पर ध्यान करना एक ऐसी स्थिति को आमंत्रित करना है जहाँ कोई आंतरिक विकास और आध्यात्मिक महारत के लिए इन दिव्य गुणों का उपयोग कर सकता है।

ब्रह्मांडीय अभिव्यक्ति यह नाम ब्रह्मांड के वास्तुकार और कलाकार के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। प्रत्येक जटिल डिज़ाइन, प्रत्येक सामंजस्यपूर्ण धुन, सृष्टि में प्रत्येक उत्तम रूप उनकी अनंत कलाओं की अभिव्यक्ति है। वह अपने भीतर सभी अस्तित्व के लिए खाका और रचनात्मक ऊर्जा समाहित करते हैं, जिससे वह ब्रह्मांड में सभी सौंदर्य और व्यवस्था का अंतिम स्रोत बन जाते हैं।

92. कालाय

काल और नियति के साक्षात् स्वरूप को नमन।

विस्तार : जब 'काल' नाम शिव पर, विशेष रूप से उनके भैरव के उग्र रूप में लागू होता है, तो इसका गहरा ब्रह्मांडीय और दार्शनिक महत्व होता है।

समय का मूर्त स्वरूप 'काल' का शाब्दिक अर्थ "समय" है। काल के रूप में, शिव स्वयं समय का मानवीकरण करते हैं - न केवल क्षणों की रैखिक प्रगति, बल्कि वह सर्वव्यापी, सब कुछ भस्म करने वाली शक्ति जो अस्तित्व को नियंत्रित करती है। वह सभी चक्रों का आदि, मध्य और अंत हैं, वह शाश्वत वर्तमान जिसके माध्यम से सब कुछ उत्पन्न होता है, टिका रहता है और समाप्त होता है। यह सृष्टि, संरक्षण और विघटन पर उनकी पूर्ण संप्रभुता को दर्शाता है, क्योंकि ये सभी प्रक्रियाएँ समय से बंधी हैं। शिव काल के रूप में परम समयपालक हैं, वह ब्रह्मांडीय घड़ी जो लगातार टिक-टिक करती रहती है।

नियति का मूर्त स्वरूप केवल कालानुक्रमिक समय से परे, काल नियति, भाग्य और जन्म-मृत्यु के अपरिहार्य चक्र को भी दर्शाता है। नियति के मूर्त स्वरूप के रूप में, वह वह शक्ति है जो प्रत्येक प्राणी की जीवन अवधि और प्रत्येक ब्रह्मांडीय युग की अवधि को निर्धारित करती है। वह परम, अटल निर्धारक हैं, जो हमें याद दिलाते हैं कि सभी चीजें उनकी अनित्यता और परिवर्तन के सार्वभौमिक नियम के अधीन हैं। यह पहलू महान नियंत्रक के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देता है, जिनकी इच्छा अगोचर है और जिनका निर्णय अंतिम है।

विनाशक और मुक्तिदाता काल के रूप में, उन्हें अक्सर रुद्र-काल या महाकाल, "महान समय" के रूप में चित्रित किया जाता है जो बिना किसी अपवाद के सब कुछ भस्म कर देता है। यह विनाशकारी पहलू केवल नकारात्मक नहीं है, बल्कि नवीनीकरण के लिए आवश्यक है। पुराने को लगातार समाप्त करके, वह नए के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं। आध्यात्मिक साधक के लिए, काल के प्रति समर्पण का अर्थ है समय और मृत्यु के भय को पार करना, और अंततः, जन्म और मृत्यु (संसार) के चक्र से मुक्ति प्राप्त करना, क्योंकि वह ही हैं जो इस चक्र को नियंत्रित करते हैं और इससे मुक्ति प्रदान कर सकते हैं।

निराकार और रूप-प्रदाता काल उस परम वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करता है जो सभी रूपों से परे है और फिर भी सभी रूपों को जन्म देती है और अंततः उन सभी को फिर से समाहित कर लेती है। वह कालातीत सार हैं जो समय-बद्ध अस्तित्व के रूप में प्रकट होता है।

93. कालाकृतये

काल को रचने वाले और आकार देने वाले को नमन।

विस्तार : कालाकृतये नाम दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: "काल" (समय) और "आकृति" (रूप, आकार, रचना, या आकार देने/बनाने की क्रिया)। जब इन्हें जोड़ा जाता है, तो वे भगवान भैरव की समय पर पूर्ण महारत से संबंधित एक गहन दार्शनिक अवधारणा को प्रकट करते हैं।

समय का निर्माता और आकार देने वाला "कालाकृतये" का अर्थ है "वह जो समय का निर्माण या आकार देता है।" इसका तात्पर्य यह है कि भैरव केवल समय के अधीन नहीं हैं, जैसा कि सभी नश्वर प्राणी हैं, बल्कि वे स्वयं समय के अस्तित्व और प्रवाह के पीछे के मूल प्रवर्तक और मौलिक शक्ति हैं। वे समय की सीमाओं के भीतर कार्य नहीं करते हैं; बल्कि, समय उनसे उत्पन्न होता है और उनकी इच्छा से निर्मित होता है। इसका अर्थ है कि:

1. सार्वभौमिक कालक्रम (Universal Chronometry): वे सभी ब्रह्मांडीय चक्रों – सृजन, पालन और संहार (कल्प, युग, अयन) के सूत्रधार हैं। उनकी श्वास या इच्छा ब्रह्मांड की भव्य लय को आरंभ करती है। 2. नियति पर नियंत्रण (Control Over Destiny): यदि वे समय को आकार देते हैं, तो वे स्वाभाविक रूप से नियति को भी आकार देते हैं, क्योंकि सभी घटनाएँ समय के ढांचे के भीतर घटित होती हैं। यह उन्हें सभी घटनाओं, भूत, वर्तमान और भविष्य के अंतिम निर्णायक के रूप में स्थापित करता है। 3. कालिक सीमाओं का अतिक्रमण (Transcendence of Temporal Limitations):

समय के निर्माता होने के नाते, वे इसका अतिक्रमण करते हैं। वे आदि और अंत से परे हैं, उस संरचना के बाहर शाश्वत रूप से विद्यमान हैं जिसे वे स्थापित करते हैं। यह निर्गुण ब्रह्म, निराकार परब्रह्म की एक विशेषता है।

समय का मूर्त रूप केवल समय का निर्माण करने के अलावा, कालाकृतये यह भी सुझाव देता है कि वे समय का ही मूर्त रूप—जीवित रूप—हैं। इस पहलू में, भैरव समय की अथक, अटल और अंततः विनाशकारी प्रकृति के मानवीकरण हैं जो सब कुछ भस्म कर देता है। यह सीधे उनके उग्र काल भैरव पहलू से जुड़ा है, जहाँ वे स्वयं "काल" (समय) हैं, और "भैरव" (भयंकर) समय के विघटन की ओर निरंतर मार्च के मानवीकरण के रूप में हैं।

दार्शनिक महत्व यह नाम भैरव के पूरे प्रकट ब्रह्मांड पर सर्वोच्च अधिकार (परमेश्वर) पर जोर देता है, जहाँ समय सबसे मौलिक और अपरिहार्य आयाम है। कालाकृतये को नमन करना यह स्वीकार करना है कि सभी अस्तित्व, अपनी कालिक प्रगति में, उनकी सर्वोच्च इच्छा और रूप की अभिव्यक्ति और प्रकटीकरण है। यह सभी अस्तित्व के अंतिम, अनादि और अनंत कारण के रूप में उनकी स्थिति की पहचान है।

94. वायवे

प्राणवायु और ब्रह्मांडीय पवन के स्वरूप को नमन।

विस्तार : वायवे नाम कालभैरव को वायु, ब्रह्मांडीय पवन, प्राणवायु और पंचमहाभूतों में से एक के अवतार के रूप में श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

ब्रह्मांडीय पवन (The Cosmic Wind) वायु का शाब्दिक अर्थ "हवा" या "पवन" है। ब्रह्मांडीय अर्थ में, कालभैरव वायु के रूप में गति, गतिशीलता और स्पंदन की सार्वभौमिक शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं जो पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त है। जैसे हवा सभी चीजों को गति देती है, वैसे ही वायु वह अंतर्निहित ऊर्जा है जो सभी सृष्टि, संरक्षण और विनाश को संचालित करती है। यह अदृश्य, फिर भी हमेशा मौजूद रहने वाली शक्ति है जो ब्रह्मांड को बनाए रखती है, ध्वनियों, गंधों और विचारों को विशाल दूरियों तक ले जाती है।

प्राणवायु (The Vital Life-Breath - Prana) सूक्ष्म स्तर पर, वायु प्राण का भी पर्याय है, जो प्राणवायु है। प्राण केवल श्वसन नहीं है, बल्कि वह मूलभूत जीवन शक्ति है जो सभी जीवित प्राणियों को चेतन करती है। वायु/प्राण के बिना जीवन नहीं है। इसलिए, कालभैरव को वायु के रूप में स्वीकार करना उन्हें जीवन के अंतिम स्रोत और पोषण के रूप में पहचानना है, वह श्वास जो प्रत्येक प्राणी को जीवित करता है। वह जीवित शरीर के भीतर प्रेरक और संचालक है, जो परिसंचरण से लेकर विचार प्रक्रियाओं तक सभी शारीरिक कार्यों को नियंत्रित करता है।

पंच महाभूतों में से एक (One of the Pañca Mahābhūtas) वायु पंच महाभूतों (महान तत्वों) में से एक है - पृथ्वी (Prithvi), जल (Jala), अग्नि (Agni), वायु (Vāyu), और आकाश (Akasha)। वायु के रूप में पहचाने जाने से, कालभैरव को भौतिक ब्रह्मांड के मूलभूत निर्माण खंडों का एक आंतरिक हिस्सा माना जाता है। यह उनकी सर्वव्यापकता और सभी प्रकट रूपों के अंतर्निहित सार के रूप में उनकी भूमिका को उजागर करता है।

क्षणिकता और परिवर्तन का प्रतीक (Symbol of Transience and Change) वायु के रूप में, कालभैरव अस्तित्व की क्षणिक और निरंतर परिवर्तनशील प्रकृति का भी प्रतीक हैं। हवा की तरह, जीवन लगातार प्रवाह में है, गतिमान और परिवर्तित होता रहता है। यह पहलू कालभैरव की काल के स्वामी के रूप में भूमिका से जुड़ा है, जो क्षणों के अथक प्रवाह और ब्रह्मांडीय नृत्य के भीतर अपरिहार्य परिवर्तनों को व्यवस्थित करते हैं। वायु के अपने रूप के माध्यम से, वह गति, क्षय और पुनर्जनन लाते हैं, जन्म और मृत्यु के चक्र को मूर्त रूप देते हैं।

95. कपर्दिने

घनी, जटाजूट और कुंडलित केशों वाले (भगवान कालभैरव) को नमन।

विस्तार : कपर्दी (कपर्दिने) नाम उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जिसके पास कपर्द है, जो विशेष रूप से उलझे हुए, गुंथे हुए, या कुंडलित बालों को दर्शाता है, जिन्हें अक्सर जटाजूट के रूप में व्यवस्थित किया जाता है। यह प्रतिष्ठित चित्रण शैव धर्म और हिंदू प्रतिमा विज्ञान में गहराई से निहित है।

जटाओं का प्रतीकवाद शिव की जटाएँ (जटा, कपर्द) केवल एक केशविन्यास नहीं हैं, बल्कि तपस्या, आध्यात्मिक शक्ति और सांसारिक चिंताओं से उनके परे होने के गहन प्रतीक हैं। वे दर्शाते हैं: • तपस्या और कठोरता: अनियंत्रित, उलझे हुए बाल उन संन्यासियों, योगियों और तपस्वियों की विशेषता हैं जिन्होंने भौतिक सुखों का त्याग कर दिया है और आध्यात्मिक अभ्यासों में गहराई से लगे हुए हैं। कपर्दी शिव की महायोगी के रूप में पहचान को दर्शाता है, जो सभी योगियों में सबसे महान हैं, जो अत्यधिक तपस्या और ध्यान का जीवन जीते हैं। • ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं पर नियंत्रण: उनकी जटाओं में ब्रह्मांडीय ऊर्जाएँ और यहाँ तक कि दिव्य नदी गंगा भी समाहित मानी जाती है। यह ब्रह्मांड की मूलभूत शक्तियों पर उनके पूर्ण नियंत्रण को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। विशेष रूप से, गंगा उनके कपर्द से होकर बहती है, जो जीवन और पवित्रता के संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है, जो सबसे शक्तिशाली प्राकृतिक घटनाओं को भी वश में करने में सक्षम हैं। • अनियंत्रित प्रकृति: उनके बालों की जंगली, अव्यवस्थित प्रकृति सामाजिक परंपराओं से उनकी स्वतंत्रता और उनके अनियंत्रित, उग्र पहलू (भैरव के रूप में) का प्रतीक है। वे मानव समाज के नियमों और मानदंडों से परे हैं, एक उच्च ब्रह्मांडीय नियम के अनुसार कार्य करते हैं। • अमरता और कालातीतता: बाल, जैसे-जैसे वे लगातार बढ़ते हैं, अनंत अस्तित्व और कालातीतता का प्रतीक हो सकते हैं। शिव की जटाएँ, इसलिए, उनके शाश्वत स्वरूप का भी संकेत देती हैं, जो सृष्टि और विनाश के चक्रों से अप्रभावित हैं।

भैरव के रूप में कपर्दी जब भैरव को कपर्दी के रूप में संदर्भित किया जाता है, तो यह शिव महायोगी के एक पहलू के रूप में उनके मूल पर जोर देता है। यहाँ तक कि उनके भयानक भैरव रूप में भी, जिसमें अक्सर एक उग्र रूप, खोपड़ियाँ और हथियार शामिल होते हैं, जटाएँ बनी रहती हैं, जो उन्हें सर्वोच्च तपस्वी और योगिक शक्तियों के स्वामी के रूप में उनकी अंतिम भूमिका से जोड़ती हैं। यह पहलू सुनिश्चित करता है कि एक भयंकर रक्षक और दंड देने वाले के रूप में अपनी भूमिका में भी, वे परम आध्यात्मिक ज्ञान और वैराग्य में निहित रहते हैं।

96. कामाशासनाय

काम (इच्छा) के शासक और निरपेक्ष नियंत्रक को नमन।

विस्तार : कामाशासनाय नाम 'काम' और 'शासन' का एक यौगिक है, जो कामना पर भगवान शिव के सर्वोच्च अधिकार को संदर्भित करता है।

काम की अवधारणा काम व्यापक रूप से इच्छा, लालसा, वासना और आसक्तियों को संदर्भित करता है। जबकि अक्सर इसे कामुक सुख से जोड़ा जाता है, काम, अपने व्यापक अर्थ में, अधिकांश मानवीय क्रियाओं के पीछे की मूलभूत प्रेरक शक्ति है और, एक ब्रह्मांडीय अर्थ में, स्वयं सृष्टि की प्रेरणा है। हालांकि, अनियंत्रित काम दुख, भ्रम और जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) को बनाए रखता है।

शासन: अनुशासन और नियम का अधिकार शासन का अर्थ है "शासन करना," "नियंत्रण करना," "दंडित करना," "अनुशासित करना," या "नियमित करना।" यह एक पूर्ण और अटूट अधिकार को दर्शाता है जो व्यवस्था और नियंत्रण लाता है।

शिव काम के शासक और नियंत्रक के रूप में भगवान शिव को सार्वभौमिक रूप से "काम-दहन" (वह जिसने काम को जलाया) के रूप में पूजा जाता है, अक्सर उस मिथक में चित्रित किया जाता है जहां वह अपनी तीसरी आंख से कामदेव (प्रेम और इच्छा के देवता) को राख कर देते हैं। यह कार्य केवल क्रोध का नहीं है, बल्कि कामाशासनाय का एक गहरा प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व है:

1. इच्छा का अतिक्रमण: काम को जलाकर, शिव सभी इच्छाओं, जिसमें सबसे मूलभूत रचनात्मक इच्छा भी शामिल है, के अपने पूर्ण अतिक्रमण को प्रदर्शित करते हैं। वह परम योगी हैं, जो हमेशा अनासक्त और आत्म-संतुष्ट (आत्मारामा) रहते हैं। 2. अनुशासन और नियंत्रण: कामाशासनाय के रूप में, वह वह हैं जो इच्छा को अनुशासित और नियंत्रित करते हैं। वह सिखाते हैं कि इच्छा को व्यक्ति पर शासन नहीं करना चाहिए, बल्कि व्यक्ति को इच्छा को उच्च चेतना और इच्छाशक्ति के नियंत्रण में लाना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं है कि सभी इच्छाओं का विनाश हो, बल्कि इसका अर्थ है आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) की ओर इसका पुनर्निर्देशन और उदात्तीकरण। 3. संन्यास का मार्ग: यह पहलू वैराग्य और तपस्या के मार्ग को आसक्ति पर विजय पाने और आध्यात्मिक शुद्धता प्राप्त करने के साधन के रूप में उजागर करता है। 4. ब्रह्मांडीय व्यवस्था: यदि काम को अनियंत्रित छोड़ दिया जाए, तो यह अराजकता का कारण बन सकता है। भैरव, कामाशासनाय के रूप में, ब्रह्मांडीय नियम को स्थापित करते हैं जहां इच्छा जैसे मूलभूत आवेगों को भी कुछ सीमाओं के भीतर कार्य करना चाहिए और अंततः सार्वभौमिक व्यवस्था और विकास के उच्च उद्देश्य की सेवा करनी चाहिए।

इसलिए, कामाशासनाय उस परम शक्ति को दर्शाता है जो इच्छा को नियंत्रित करती है, उसका अतिक्रमण करती है, और, जब आवश्यक हो, उसे नष्ट करती है, जिससे उसके बंधन से मुक्ति मिलती है और आध्यात्मिक संप्रभुता स्थापित होती है।

97. कुबेरबन्धवे

धन के देवता कुबेर के प्रिय मित्र और संबंधी को नमन।

विस्तार : कुबेरबन्धवाय नाम कुबेर और बन्धव का एक यौगिक (कंपाउंड) है।

कुबेर: दिव्य कोषाध्यक्ष, धन और बहुमूल्य रत्नों के देवता, और उत्तर दिशा के संरक्षक। उन्हें अक्सर धन के घड़े या सोने की थैली के साथ चित्रित किया जाता है और धन प्रदान करने की उनकी क्षमता के लिए उनका सम्मान किया जाता है।

बन्धव: यह शब्द एक संबंधी, रिश्तेदार, मित्र या समर्थक को दर्शाता है। यह एक घनिष्ठ, स्नेही और सुरक्षात्मक संबंध का अर्थ है।

कुबेर के साथ घनिष्ठ संबंध यह नाम कुबेर के साथ कालभैरव के घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंध को उजागर करता है। हिंदू पौराणिक कथाओं में, कुबेर भगवान शिव के एक वफादार भक्त हैं। शिव के एक उग्र रूप के रूप में, कालभैरव इस बंधन को साझा करते हैं। यह संबंध केवल परिचय का नहीं है, बल्कि एक गहरी आत्मीयता और आपसी सम्मान का सुझाव देता है।

सांसारिक समृद्धि के दाता जबकि कालभैरव मुख्य रूप से अपने उग्र, परिवर्तनकारी और मुक्तिदायक पहलुओं के लिए जाने जाते हैं, कुबेर के साथ उनका जुड़ाव भौतिक समृद्धि को प्रभावित करने की उनकी क्षमता को इंगित करता है। जिस प्रकार कुबेर धन के स्वामी हैं, उसी प्रकार कालभैरव, कुबेर के साथ अपनी मित्रता के माध्यम से, अपने भक्तों के लिए धन और सांसारिक भाग्य से संबंधित वरदानों के लिए भी सुलभ हो जाते हैं। इसका तात्पर्य है कि कालभैरव को प्रसन्न करके, कोई भी अप्रत्यक्ष रूप से कुबेर की कृपा प्राप्त कर सकता है।

आशीर्वाद के वितरक यह नाम बताता है कि कालभैरव, कुबेर के एक घनिष्ठ साथी और संरक्षक व्यक्ति के रूप में, धन और संसाधनों के वितरण को प्रभावित कर सकते हैं। भक्त अक्सर भैरव से सुरक्षा, बाधाओं को दूर करने और कभी-कभी भौतिक कल्याण के लिए प्रार्थना करते हैं, खासकर जब वित्तीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यह गुण उनकी उग्र सुरक्षात्मक शक्ति को सांसारिक समृद्धि और प्रचुरता के क्षेत्र से जोड़ता है।

भौतिक धन से परे दार्शनिक रूप से, इस संबंध को केवल भौतिक धन से परे भी समझा जा सकता है। कुबेर पृथ्वी के खजानों की रक्षा करते हैं; ये आध्यात्मिक खजाने, ज्ञान और आंतरिक धन के प्रतीक भी हो सकते हैं। इस प्रकार, कालभैरव, कुबेर के मित्र के रूप में, सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों तरह की समृद्धि के नियंत्रक और दाता के रूप में देखे जा सकते हैं, जो भक्तों को सभी अर्थों में सच्ची प्रचुरता की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

९८. कामात्मने

जिनकी आत्मा ही कामना है और जो सभी कामनाओं को पूर्ण करते हैं, उनको नमन।

विस्तार : कामात्मने नाम दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: काम और आत्मन।

कामना की आत्मा (काम जन्मजात सार के रूप में) काम के कई अर्थ हैं, जिनमें इच्छा, कामना, प्रेम और यहाँ तक कि प्रेम के हिंदू देवता, कामदेव भी शामिल हैं। जब आत्मन (आत्मा, स्वयं, सार) के साथ जोड़ा जाता है, तो कामात्मने का अर्थ है "वह जिसकी आत्मा या सार ही कामना है" या "वह स्वयं जो कामना है।" इसका अर्थ अनियंत्रित या सांसारिक वासना नहीं है। इसके बजाय, यह एक गहन दार्शनिक सत्य की ओर इशारा करता है: शिव, कालभैरव के रूप में, मौलिक ब्रह्मांडीय आवेग, आदिम इच्छा का प्रतीक हैं जो स्वयं सृष्टि से पहले आती है और उसे प्रेरित करती है। यह अभिव्यक्ति के लिए दिव्य इच्छा या "कामना" है जो ब्रह्मांडों को अस्तित्व में लाती है। इस अर्थ में, काम मौलिक रचनात्मक प्रेरणा है।

कामनाओं को पूर्ण करने वाला (कामना पूर्ति के साधन के रूप में) "सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाले" के रूप में, कालभैरव का आह्वान भक्त अपनी आकांक्षाओं को साकार करने के लिए करते हैं। यह पूर्ति भौतिक कल्याण से लेकर गहन आध्यात्मिक लालसा तक हो सकती है। वह सभी प्रार्थनाओं और इच्छाओं का अंतिम स्रोत और प्रत्युत्तरदाता है, जो हृदय की गहरी इच्छाओं को समझता है। यह पहलू उनके भयंकर रूप के बावजूद उनके परोपकारी स्वभाव को उजागर करता है; वह उन लोगों के लिए इच्छाओं को पूरा करने वाले हैं जो भक्ति के साथ उनके पास आते हैं।

कामना को नियंत्रित करना और उससे परे जाना विरोधाभासी रूप से, जबकि वह कामना की आत्मा और उसे पूर्ण करने वाले हैं, शिव काम के स्वामी भी हैं। प्रसिद्ध रूप से, शिव ने कामदेव को अपनी तीसरी आँख से जला दिया था जब कामदेव ने उनकी तपस्या को भंग करने का प्रयास किया था। यह कार्य कामना पर उनके सर्वोच्च नियंत्रण को दर्शाता है, यह सुनिश्चित करता है कि यह ब्रह्मांडीय उद्देश्य की पूर्ति करे न कि अराजकता की ओर ले जाए। इसलिए, कामात्मने का अर्थ कामना को पार करने और विनियमित करने की क्षमता भी है, जो भक्तों को उनकी इच्छाओं की सच्ची प्रकृति को समझने और उच्च, आध्यात्मिक आकांक्षाओं की तलाश करने के लिए मार्गदर्शन करता है।

संक्षेप में, कामात्मने कालभैरव को सृष्टि को नियंत्रित करने वाली मौलिक प्रेरक कामना और अपने भक्तों की इच्छाओं का जवाब देने वाले दयालु देवता दोनों के रूप में पहचानता है, जो एक साथ कामना की अवधारणा को मूर्त रूप देते हैं और उससे परे जाते हैं।

९९. कर्णिकारप्रियाय

सुंदर कर्णिकार फूल के प्रिय (स्वामी) को नमन।

विस्तार : कर्णिकारप्रियाय एक सुंदर और भावपूर्ण नाम है, जो भगवान कालभैरव के एक नरम, सौंदर्यपूर्ण और प्रतीकात्मक रूप से समृद्ध पहलू को प्रकट करता है। यह दो संस्कृत शब्दों से बना है: कर्णिकार और प्रिय।

कर्णिकार: गोल्डन शावर ट्री कर्णिकार (कैसिया फिस्टुला), जिसे गोल्डन शावर ट्री या इंडियन लेबर्नम के नाम से भी जाना जाता है, हिंदू परंपरा में अपने चमकीले पीले फूलों के शानदार गुच्छों के लिए पूजनीय है। इन फूलों का उल्लेख अक्सर शास्त्रीय संस्कृत साहित्य और कविता में उनकी सुंदरता, जीवंत रंग और शुभ प्रकृति के लिए किया जाता है। वे प्रतीक हैं: • पवित्रता और शुभता: चमकीला पीला रंग पवित्रता, दिव्यता और समृद्धि से जुड़ा है। ऐसे फूल चढ़ाना भक्ति और आशीर्वाद प्राप्त करने का एक कार्य है। • सुंदरता और आनंद: कर्णिकार के फूलों की आकर्षक दृश्य अपील सौंदर्य आनंद का एक स्रोत है, जिसके बारे में माना जाता है कि यह देवताओं को प्रसन्न करता है। • सुंदरता की क्षणभंगुरता: कुछ काव्य संदर्भों में, फूलों की अल्पकालिक सुंदरता सांसारिक अस्तित्व की क्षणभंगुरता का भी सूक्ष्मता से संकेत दे सकती है, एक ऐसा विषय जिसे भैरव अक्सर विनाश के माध्यम से मूर्त रूप देते हैं।

प्रिय: प्रिय, प्यारा, लाडला प्रिय का अर्थ है "प्रिय," "प्यारा," या "का शौकीन।" जब इसे किसी संज्ञा के साथ जोड़ा जाता है, तो यह दर्शाता है कि वह इकाई उस संज्ञा से प्रसन्न है या उसके प्रति विशेष स्नेह रखती है।

प्रतीकात्मक व्याख्या

सौंदर्य बोध और परोपकार: यह नाम प्रकट करता है कि भयंकर कालभैरव, जो विनाश और समय के अवतार हैं, उनका भी एक सौंदर्य पक्ष है, जो सुंदरता और पवित्रता की सराहना करते हैं। यह उनकी अन्यथा दुर्जेय छवि को नरम करता है, जो आनंद और परोपकार की क्षमता का संकेत देता है। यह सुझाव देता है कि सच्ची भक्ति, भले ही कर्णिकार फूल जैसे सरल और सुंदर चढ़ावे के माध्यम से व्यक्त की गई हो, इस शक्तिशाली देवता को प्रसन्न और शांत कर सकती है।

दिव्य कृपा की सुलभता: कर्णिकार फूल, हालांकि सुंदर है, एक प्राकृतिक और सुलभ चढ़ावा है। यह प्रतीक हो सकता है कि भगवान कालभैरव सरल, हार्दिक भक्ति और चढ़ावों के माध्यम से पहुंच योग्य हैं, और उनकी कृपा विस्तृत अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि शुद्ध प्रेम और सौंदर्य बोध के कृत्यों के माध्यम से आह्वान की जा सकती है।

प्रकृति से संबंध: यह भैरव के प्रकृति और मौलिक शक्तियों (प्रकृति) के साथ गहरे संबंध पर भी प्रकाश डालता है। सभी में व्याप्त परम चेतना (पुरुष) के रूप में, उन्हें सृष्टि की अभिव्यक्तियों में आनंद मिलता है, जिसमें इसकी प्राकृतिक सुंदरता भी शामिल है।

भयंकरता और कोमलता का संतुलन: यह नाम शिव के कई रूपों में निहित विरोधाभास को रेखांकित करता है - अत्यधिक क्रूरता (उग्र रूप) का एक कोमल, परोपकारी और प्रशंसनीय पहलू (सौम्य रूप) के साथ सह-अस्तित्व। कालभैरव, हालांकि दुष्टों और अज्ञानता की शक्तियों के लिए भयानक हैं, फिर भी अपने भक्तों के लिए पवित्रता और प्रेम से प्रसन्न होते हैं, जिसका प्रतीक कर्णिकार फूल है।

100. कपाए

कपी (वानर) के समान प्रधान या लाल-भूरे रंग वाले को नमन।

विस्तार : कपये (Kapaye) नाम अपनी व्युत्पत्ति और प्रतीकात्मक व्याख्या में एक आकर्षक द्वैत प्रस्तुत करता है, जो विभिन्न संस्कृत व्युत्पत्तियों में निहित है।

प्रमुख या नेता एक व्याख्या "क" (प्रमुखता, सिर) मूल से "प" (सुरक्षा, स्वामी) के साथ मिलकर "प्रमुख," "स्वामी," या "नेता" का सुझाव देती है। इस अर्थ में, कपये भगवान शिव को सभी प्राणियों के सर्वोच्च नेता, ब्रह्मांडीय व्यवस्था में अंतिम सत्ता के रूप में संदर्भित करता है। वह देवताओं में सबसे प्रमुख व्यक्ति हैं, ब्रह्मांड के मार्गदर्शक सिद्धांत हैं, और वही हैं जो साधकों को मुक्ति की ओर ले जाते हैं। यह महादेव के रूप में उनकी भूमिका के अनुरूप है, जो सभी से ऊपर हैं।

लाल-भूरा या वानर जैसा रूप कपये की एक अधिक प्रत्यक्ष और आमतौर पर समझी जाने वाली व्याख्या संस्कृत शब्द "कपि" से ली गई है, जिसका अर्थ "बंदर" या "वानर" है, और अक्सर लाल-भूरे रंग को संदर्भित करता है, जो कुछ प्राइमेट्स के फर के समान है। भगवान शिव और भैरव के संदर्भ में, इसके कई प्रतीकात्मक अर्थ हैं:

• पशु जगत के स्वामी: शिव पशुपति हैं, सभी जीवों (पशुओं) के स्वामी हैं। कपि को एक विशेषण के रूप में शामिल करना पूरे पशु साम्राज्य पर उनके प्रभुत्व, आदिम शक्तियों और अनियंत्रित प्रकृति पर जोर दे सकता है।

• शिकारी और घुमक्कड़: भैरव को अक्सर एक संन्यासी, एक घुमक्कड़ के रूप में चित्रित किया जाता है जो श्मशान घाटों और जंगली स्थानों में रहता है। बंदर भी जंगल के प्राणी हैं, अनियंत्रित और स्वतंत्र। यह पहलू भैरव की सामाजिक मानदंडों से मुक्ति और उनकी आदिम, अनियंत्रित शक्ति का प्रतीक हो सकता है।

• भयंकर और आदिम ऊर्जा: वानर, कुछ आध्यात्मिक परंपराओं में, कच्ची, अनियंत्रित ऊर्जा और वृत्ति का प्रतीक हो सकता है। भैरव का भयंकर रूप ऐसी आदिम, विनाशकारी, फिर भी अंततः शुद्ध करने वाली ऊर्जा का प्रतीक है। यह उनकी अधिक जंगली और तपस्वी प्रकृति का भी संकेत दे सकता है, क्योंकि घूमने वाले भिक्षु अक्सर अव्यवस्थित होते हैं।

• हनुमान से संबंध: यद्यपि मुख्य रूप से विष्णु के अवतार राम से जुड़े हैं, शक्तिशाली वानर देवता हनुमान को भगवान शिव का अवतार माना जाता है। इस प्रकार, "कपये" इस संबंध का सूक्ष्म रूप से संकेत भी दे सकता है, जो हनुमान द्वारा व्यक्त शिव की अंतर्निहित शक्ति, निष्ठा और भक्ति का अर्थ है।

• मूर्तिकला प्रतिनिधित्व: यद्यपि यह एक प्राथमिक चित्रण नहीं है, भैरव के कुछ गूढ़ तांत्रिक रूप सूक्ष्म रूप से ऐसी विशेषताओं को शामिल कर सकते हैं जो आदिम पशु शक्ति का संकेत देती हैं, जो "लाल-भूरे" या "वानर-जैसे" विशेषण के अनुरूप है।

दोनों व्याख्याओं में, चाहे सर्वोच्च प्रमुख के रूप में हो या आदिम, अनियंत्रित शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हुए, "कपये" भैरव की बहुआयामी प्रकृति को रेखांकित करता है, जिसमें अंतिम अधिकार और कच्ची, मौलिक शक्ति दोनों शामिल हैं।

101. कामदेवाय

कामदेव को नमन, जो प्रेम औरR इच्छा के दिव्य देवता हैं।

विस्तार : कामदेव (कामदेवाय, अभिवादन के लिए चतुर्थी विभक्ति में) नाम प्रेम, इच्छा और आकर्षण के दिव्य मानवीकरण को संदर्भित करता है। जब इसे कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह गहरा प्रतीकात्मक और दार्शनिक महत्व रखता है।

इच्छा के स्वामी (कामदेव) काम का शाब्दिक अर्थ है "इच्छा," "कामना," या "लालसा।" देव का अर्थ है "भगवान" या "दिव्य प्राणी।" कामदेव कामुक प्रेम, आकर्षण और उर्वरता के हिंदू देवता हैं, जिन्हें अक्सर गन्ने के धनुष और फूलों से सजे तीरों के साथ चित्रित किया जाता है, जो हृदय को भेदने और इच्छा को प्रज्वलित करने में सक्षम हैं।

उत्कृष्टता और परिवर्तन कालभैरव का कामदेव के रूप में होना सभी प्रकार की इच्छाओं पर उनकी परम महारत को दर्शाता है। इसे कई तरीकों से समझा जा सकता है:

• इच्छा का विनाशक: शैव धर्म में, शिव को काम-दहन (काम को जलाने वाला) के रूप में प्रसिद्ध रूप से जाना जाता है, जिन्होंने कामदेव को अपनी तीसरी आंख से भस्म कर दिया था जब काम ने उनकी तपस्या को भंग करने की कोशिश की थी। जब कालभैरव को कामदेव के रूप में आह्वान किया जाता है, तो इसका अर्थ यह हो सकता है कि वह वह हैं जो सांसारिक इच्छाओं को 'पार करते हैं' और 'जलाते हैं' जो आत्मा को बांधती हैं। वह वह हैं जो अपने तपस्वी और उग्र स्वभाव के माध्यम से, अभिलाषाओं और आसक्तियों के निरंतर चक्र से साधक को मुक्त कर सकते हैं।

• सभी इच्छाओं का अवतार: विरोधाभासी रूप से, कालभैरव को सभी लौकिक इच्छाओं का अंतिम स्रोत और अवतार भी देखा जा सकता है जो स्वयं सृष्टि को प्रकट करती हैं। इस अर्थ में, वह सभी सार्वभौमिक लालसा, आकर्षण और प्रजनन के पीछे की प्रेरक शक्ति हैं, जो अस्तित्व की निरंतरता के लिए आवश्यक हैं। सभी इच्छाएं अंततः परम चेतना से उत्पन्न होती हैं और उसी में विलीन हो जाती हैं, जो शिव हैं।

• धार्मिक इच्छाओं की पूर्ति: भक्तों के लिए, कालभैरव को कामदेव के रूप में स्वीकार करने का यह भी अर्थ हो सकता है कि वह सभी धार्मिक और आध्यात्मिक इच्छाओं (धर्म काम) को पूरा करने में सक्षम हैं। वह उन इच्छाओं को पूरा करते हैं जो आध्यात्मिक विकास और कल्याण की ओर ले जाती हैं, न कि उन इच्छाओं को जो उलझाव की ओर ले जाती हैं।

ब्रह्मांडीय रचनात्मक प्रेरणा का प्रतीक जिस तरह कामदेव एक सांसारिक स्तर पर सृष्टि की शुरुआत करते हैं, उसी तरह कालभैरव, अपने ब्रह्मांडीय पहलू में, आदिम इच्छा या संकल्प (इच्छा शक्ति) का प्रतिनिधित्व करते हैं जो ब्रह्मांड की पूरी अभिव्यक्ति के अंतर्गत आता है। उनकी शक्ति उत्पत्ति और विघटन दोनों के लिए मौलिक है।

अंततः, कालभैरव को कामदेव के रूप में आह्वान करना इच्छा की प्रकृति पर एक चिंतन के रूप में कार्य करता है - इसकी बांधने की शक्ति और इसकी क्षमता, दिव्य मार्गदर्शन में, मुक्ति की ओर ले जाने की। वह वह स्वामी हैं जो इच्छा की लौ को प्रज्वलित और बुझा दोनों सकते हैं, जिससे भक्त को परम शांति और वैराग्य की स्थिति प्राप्त होती है।

102. कामपालाय

समस्त इच्छाओं के परम रक्षक और पूर्ति करने वाले को नमन।

विस्तार : कामपाल नाम दो संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है: काम और पाल।

काम (Kāma): इस शब्द के कई गहरे अर्थ हैं: 1. इच्छा, कामना, लालसा, स्नेह। 2. प्रेम, आनंद, इंद्रिय सुख। 3. प्रेम के देवता, कामदेव। 4. जीवन की वैध चीजों के लिए एक इच्छा, जिसमें धर्म (धार्मिकता), अर्थ (धन) और मोक्ष (मुक्ति) शामिल हैं, न कि केवल भोगवादी लालसाएँ।

पाल (Pāla): यह एक रक्षक, संरक्षक, परिरक्षक या पूर्ण करने वाले को दर्शाता है।

इच्छाओं के रक्षक कामपाल, जब भैरव पर लागू होता है, तो इसका अर्थ है "काम के रक्षक।" यह सुरक्षा कई स्तरों पर काम करती है। • धार्मिक इच्छाओं की सुरक्षा: वह सुनिश्चित करते हैं कि उनके भक्तों की वैध और धार्मिक इच्छाएँ पूरी हों। ये सांसारिक समृद्धि और स्वास्थ्य से लेकर आध्यात्मिक

आकांक्षाओं तक हो सकती हैं। • इच्छाओं पर मार्गदर्शन: वह केवल अंधाधुंध इच्छाओं को पूरा नहीं करते बल्कि भक्त को उन इच्छाओं की ओर मार्गदर्शन करते हैं जो अंततः उनके आध्यात्मिक मार्ग के लिए फायदेमंद होती हैं। वह उन इच्छाओं के बीच अंतर करने में मदद करते हैं जो बंधन की ओर ले जाती हैं और जो मुक्ति की ओर ले जाती हैं। • अनियंत्रित इच्छाओं से सुरक्षा: विरोधाभासी रूप से, एक भयंकर देवता के रूप में, वह अपने भक्तों को अनियंत्रित, अधार्मिक या अत्यधिक इच्छाओं की विनाशकारी शक्ति से भी बचाते हैं जो दुख और आध्यात्मिक पतन का कारण बन सकती हैं। वह निम्न, पशुवत प्रवृत्तियों (काम के रूप में वासना) को वश में कर सकते हैं और शुद्ध कर सकते हैं और उन्हें दिव्य प्रेम के उच्च रूपों में ऊपर उठा सकते हैं।

इच्छाओं को पूर्ण करने वाले सुरक्षा से परे, कामपाल का अर्थ "इच्छाओं को पूर्ण करने वाले" भी है। भक्त अपनी विभिन्न आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए कालभैरव से प्रार्थना करते हैं। • भौतिक और आध्यात्मिक वरदान: उन्हें प्रयासों में सफलता, समृद्धि, बाधाओं को दूर करने और मन की शांति प्राप्त करने के लिए invoked किया जाता है। • इच्छा के चक्र से मुक्ति: उच्चतम आध्यात्मिक स्तर पर, वह अंतिम इच्छा को पूरा करते हैं: मोक्ष की इच्छा, या जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति, भक्त को सांसारिक इच्छाओं की अंतहीन श्रृंखला से मुक्त करना।

काम का दिव्य पहलू हिंदू दर्शन में, काम स्वाभाविक रूप से बुरा नहीं है; यह अस्तित्व की एक मौलिक प्रेरक शक्ति है। जब धर्म के साथ संरेखित होता है, तो यह सृजन और प्रगति के लिए एक शक्तिशाली उपकरण बन जाता है। कामपाल के रूप में, भैरव इस मौलिक शक्ति को नियंत्रित और शुद्ध करते हैं, इसके उचित अभिव्यक्ति और अंतिम transcendence को सुनिश्चित करते हैं। वह ब्रह्मांडीय शक्ति का प्रतीक हैं जो इच्छाओं को उत्पन्न करती है और सभी प्राणियों के अंतिम कल्याण के लिए उन्हें पूरा करने या परिष्कृत करने का अधिकार रखती है।

103. कामिने

प्रेम, इच्छा, और स्नेह से परिपूर्ण (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : 'कामिने' नाम संस्कृत मूल "काम" से लिया गया है, जिसका अर्थ इच्छा, प्रेम, स्नेह और लालसा है। जब इसे कालभैरव जैसे दिव्य सत्ता पर लागू किया जाता है, तो यह सामान्य मानवीय इच्छाओं से परे एक गहरा, बहु-स्तरीय आध्यात्मिक अर्थ लेता है।

दिव्य इच्छा (काम) का अवतार कामिने उस भगवान को संदर्भित करता है जो दिव्य इच्छा का अवतार है। इसे सांसारिक, भौतिक वासना के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि यह ब्रह्मांडीय इच्छा या लालसा है जो स्वयं सृष्टि को संचालित करती है। इस अर्थ में, कालभैरव, कामिने के रूप में, परम के आदिम इच्छा (इच्छा शक्ति) का प्रतिनिधित्व करते हैं जो प्रकट होने, सृजन करने और ब्रह्मांड का अनुभव करने के लिए प्रेरित करती है। वह परम स्रोत है जिससे अस्तित्व में आकर्षण, प्रेम और जुनून के सभी रूप उत्पन्न होते हैं।

सभी प्रेम और भक्ति का लक्ष्य वैकल्पिक रूप से, कामिने का अर्थ "वह जिसकी इच्छा की जाती है" या "प्रिय" हो सकता है। इस संदर्भ में, कालभैरव आध्यात्मिक साधकों के लिए प्रेम, भक्ति और लालसा का अंतिम लक्ष्य हैं। भक्त उनसे जुड़ाव की लालसा रखते हैं, उनकी कृपा चाहते हैं, और अपनी गहरी भावनाओं को उनकी ओर निर्देशित करते हैं। वह परम प्रिय हैं जिनकी स्मृति और उपस्थिति सभी आध्यात्मिक आकांक्षाओं को पूरा करती है।

इच्छाओं के दाता (आध्यात्मिक और भौतिक) कामिने के रूप में, कालभैरव को अपने भक्तों की इच्छाओं को पूरा करने वाले के रूप में भी देखा जाता है। जो भौतिक कल्याण चाहते हैं, उन्हें वह समृद्धि प्रदान करते हैं और बाधाओं को दूर करते हैं। जो आध्यात्मिक मार्ग पर हैं, उन्हें वह मुक्ति

(मोक्ष), आध्यात्मिक ज्ञान (ज्ञान), और अटूट भक्ति (भक्ति) की इच्छा प्रदान करते हैं। वह उच्च सत्यों के लिए आंतरिक लालसा को प्रेरित करते हैं और प्रदान करते हैं।

शुभ और स्नेही पहलू अपने भयंकर रूप के बावजूद, यह नाम कालभैरव के परोपकारी और करुणामय स्वभाव को उजागर करता है। इसका तात्पर्य है कि वह अपने भक्तों के प्रति सच्चा स्नेह रखते हैं, उनकी हार्दिक प्रार्थनाओं का प्रेम और कृपा के साथ जवाब देते हैं। वह केवल एक दूरस्थ, भयानक देवता नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे देवता हैं जो दिव्य प्रेम के बंधन के माध्यम से अपनी सृष्टि से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। यह पहलू भक्तों की सच्ची इच्छा (काम) से आकर्षित होकर एक रक्षक और एक benefactor (लाभकारी) के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है।

104. कान्ताय

जो असाधारण रूप से सुंदर, प्रिय और तेजस्वी हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : कान्ताय नाम संस्कृत शब्द "कान्त" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "सुंदर," "मनोहर," "प्रिय," "तेजस्वी," या "वांछनीय।" यह गुण, जब कालभैरव पर लागू होता है, तो उनके दिव्य स्वरूप के एक कम ज्ञात लेकिन गहन रूप से महत्वपूर्ण पहलू पर प्रकाश डालता है।

असाधारण सौंदर्य और तेजस्विता जबकि कालभैरव को मुख्य रूप से उनके भयंकर रूप (घोर रूप) के लिए जाना जाता है, कान्त नाम उनके अंतर्निहित परम सौंदर्य और चमक पर जोर देता है। यह सौंदर्य केवल मानवीय अर्थों में भौतिक या सौंदर्यपूर्ण नहीं है, बल्कि एक आध्यात्मिक और पारलौकिक तेजस्विता है जो उनकी दिव्य पूर्णता से निकलती है। यह दर्शाता है कि उनके भयंकर रूप में भी, एक अंतर्निहित सामंजस्य, संतुलन और मंत्रमुग्ध कर देने वाली भव्यता है जो विवेकशील आध्यात्मिक दृष्टि को मोहित करती है। उनका भयंकर पहलू उनकी शक्ति की अभिव्यक्ति है, लेकिन उनका आंतरिक स्वरूप पूर्ण सौंदर्य का है, जो ब्रह्मांड में सभी सुखद और सुंदर धारणाओं का स्रोत है। इस तेजस्वी सौंदर्य को उनकी शुद्ध चेतना की चमक के रूप में भी व्याख्या किया जा सकता है, जो सभी अस्तित्व को प्रकाशित करती है।

प्रिय और वांछनीय "प्रिय" के रूप में, कान्त यह दर्शाता है कि वे अपने भक्तों द्वारा अत्यधिक प्रेम किए जाते हैं और स्वयं प्रेम के अवतार हैं। यह पहलू उनके भयंकर व्यक्तित्व को एक दयालु और प्रेमी संरक्षक के रूप में बदल देता है, जो अपने भयंकर तरीकों के बावजूद, अपने भक्तों के परम कल्याण के लिए कार्य करते हैं। एक सच्चे साधक के लिए, कालभैरव, अपने सभी रूपों में, चिंतन और भक्ति का सबसे वांछनीय विषय बन जाते हैं, प्राप्त करने योग्य परम लक्ष्य। उनका स्वरूप उन लोगों द्वारा अस्तित्व की सबसे वांछित स्थिति माना जाता है जो उनके अस्तित्व की गहराइयों को समझते हैं।

भयंकर सौंदर्य का विरोधाभास यह नाम तांत्रिक देवताओं में निहित विरोधाभास को शानदार ढंग से प्रदर्शित करता है, जहाँ भयंकर और सुंदर एक ही परम वास्तविकता के दो पहलू हैं। उनका "कान्त" पहलू परम निरपेक्ष का सूक्ष्म आकर्षण और मोहकता है, जो सभी आत्माओं को अपनी ओर खींचता है, भले ही वह एक भयावह रूप के माध्यम से प्रस्तुत किया गया हो। इसका तात्पर्य है कि जो कोई भी उनके भयंकर रूप के भय पर विजय प्राप्त कर सकता है, वह उनके गहन और आकर्षक आंतरिक सौंदर्य, ज्ञान और प्रेम को खोजेगा।

105. कृतागमाय

उन भगवान को नमन जिन्होंने पवित्र शास्त्र और तांत्रिक ग्रंथ (आगम) रचे हैं।

विस्तार : कृतागमाय (Kṛtāgama) नाम 'कृत' और 'आगम' का एक शक्तिशाली यौगिक है, जो पवित्र ज्ञान के उद्घाटक और स्रोत के रूप में भगवान शिव की सर्वोच्च भूमिका को रेखांकित करता है।

• कृत (Kṛta): इस शब्द का अर्थ है "बनाया गया," "रचित," "निष्पादित," या "रचित।" इस संदर्भ में, यह शिव को सक्रिय निर्माता या प्रचारक के रूप में दर्शाता है।

• आगम (Āgama): यह एक गहन संस्कृत शब्द है जो पवित्र ग्रंथों के एक समूह को संदर्भित करता है, जिसे अक्सर "जो नीचे आया है" या "पारंपरिक सिद्धांत" के रूप में अनुवादित किया जाता है। आगम शैव धर्म, शाक्त धर्म और वैष्णव धर्म में मूलभूत शास्त्र हैं, और वे दर्शन, योग, अनुष्ठान, मंदिर निर्माण और मंत्र शास्त्र से व्यापक रूप से संबंधित हैं। इन्हें मानव रचनाएँ नहीं, बल्कि रहस्योद्घाटन माना जाता है।

दिव्य ज्ञान के रचयिता (Author of Divine Knowledge) इसलिए, कृतागम भगवान शिव को आगमों के मूल रचयिता और दाता के रूप में दर्शाता है। इन ग्रंथों को मानवीय बौद्धिक उपलब्धियों के रूप में नहीं देखा जाता है, बल्कि दिव्य रहस्योद्घाटन के रूप में देखा जाता है जो सीधे शिव के मुख (मुख) से प्रवाहित होते हैं या उनकी चेतना (ज्ञान) से उत्पन्न होते हैं। यह उन्हें सभी प्रामाणिक आध्यात्मिक ज्ञान, विशेष रूप से तंत्रवाद की जटिल और गूढ़ शिक्षाओं का अंतिम स्रोत बनाता है।

परंपरा का संरक्षण और प्रसारण (Preserving and Transmitting Tradition) आगमों को सामने लाकर, शिव धर्म की निरंतरता और पहुंच सुनिश्चित करते हैं, जो पीढ़ियों से आध्यात्मिक साधकों के लिए आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। ये ग्रंथ आध्यात्मिक अभ्यास (साधना), पूजा (पूजा), और अंतिम मुक्ति (मोक्ष) के मार्ग प्रदान करते हैं।

ज्ञान का अवतार (Embodiment of Wisdom) यह नाम शिव को केवल विनाशकारी शक्ति के देवता के रूप में नहीं, बल्कि सर्वोच्च गुरु (आदि गुरु), सभी ज्ञान (ज्ञान) और उत्कृष्ट समझ के अवतार के रूप में उजागर करता है। वह वह है जो मानवता को ब्रह्मांड के रहस्यों और दिव्य के साथ जुड़ने के तरीकों में दीक्षित करता है। यह एक परोपकारी शिक्षक के रूप में उनके पहलू पर जोर देता है, जो सभी प्राणियों के उत्थान के लिए गहन सत्य साझा करते हैं। आगमों को व्यावहारिक आध्यात्मिक जीवन में लागू वेदों का सार माना जाता है।

106. कल्याणप्रकृतये

जिनकी आंतरिक प्रकृति शुभता, सौभाग्य और कल्याण स्वरूप है, उन्हें नमन।

विस्तार : कल्याणप्रकृतये नाम कालभैरव के परोपकारी और मूलभूत स्वरूप की एक गहन अभिव्यक्ति है, जो संस्कृत मूल शब्द कल्याण और प्रकृति से बना है।

कल्याण (Kalyāṇa): इस शब्द का अर्थ है शुभता, कल्याण, समृद्धि, सौभाग्य, भलाई और धन्यता। यह उन सभी चीजों को दर्शाता है जो स्वाभाविक रूप से अच्छी, लाभकारी और आध्यात्मिक तथा भौतिक उत्कर्ष के लिए अनुकूल हैं। यह एक इष्टतम अस्तित्व की स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है, जो दुर्भावना या दुर्भावना से रहित है।

प्रकृति (Prakṛti): यह शब्द प्रकृति, आवश्यक गुण, आंतरिक स्वभाव, मूल रूप या मौलिक संविधान को संदर्भित करता है। दार्शनिक संदर्भ में, प्रकृति अक्सर उस आदिम पदार्थ या सार्वभौमिक तत्व को दर्शाती है जिससे ब्रह्मांड विकसित होता है, लेकिन इस संदर्भ में, यह एक अंतर्निहित विशेषता या "अस्तित्व" की बात करता है।

शुभता का अवतार (The Embodiment of Auspiciousness) जब संयुक्त किया जाता है, तो कल्याणप्रकृतये कालभैरव का वर्णन इस प्रकार करता है कि उनका सार, उनका अंतरतम स्वभाव, स्वयं शुभता है। इसका अर्थ है कि उनका अस्तित्व, उनके कार्य और उनका संपूर्ण स्वरूप स्वाभाविक रूप से अच्छे, लाभकारी और कल्याण के लिए अनुकूल हैं। यहां तक कि उनके सबसे भयंकर रूपों में भी, उनका अंतिम इरादा और अंतर्निहित स्वभाव हमेशा सर्वोच्च भलाई और ब्रह्मांड तथा उसके निवासियों के कल्याण की ओर निर्देशित होता है।

सतही भलाई से परे (Beyond Superficial Good) यह केवल एक गुण नहीं है जो उनमें है, बल्कि उनकी वास्तविकता का मूलभूत ताना-बाना है। यह बताता है कि कालभैरव से जुड़ी विनाशकारी शक्ति (काल, समय, विनाश) भी अंततः शुभ है, क्योंकि यह शुद्ध करती है, रूपांतरित करती है और सृष्टि, संरक्षण और विघटन के चक्र को सुगम बनाती है, जो ब्रह्मांडीय अस्तित्व और आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक है। इस दृष्टिकोण से, मृत्यु एक कल्याणकारी (शुभ) घटना है क्योंकि यह पुनर्जन्म और नवीनीकरण की ओर ले जाती है।

समस्त सौभाग्य का स्रोत (Source of All Good Fortune) जिनकी प्रकृति कल्याण है, वे सभी सौभाग्य, समृद्धि और आध्यात्मिक आशीर्वाद के अंतिम स्रोत हैं। इसलिए, उनकी भक्ति को इस अंतर्निहित शुभ सिद्धांत के साथ भक्त को संरेखित करने वाला माना जाता है, जिससे कल्याण होता है और बाधाएं दूर होती हैं।

दार्शनिक महत्व (Philosophical Significance) यह नाम शिव के रूपों में अक्सर देखे जाने वाले विरोधाभास को उजागर करता है—विनाशक भी परोपकारी होता है। यह बताता है कि परम वास्तविकता, अपने सबसे दुर्जेय और परिवर्तनकारी पहलुओं में भी, पूर्ण अच्छाई में निहित है और सभी के अंतिम कल्याण के लिए काम करती है। उनकी आंतरिक प्रकृति व्यवस्था, संतुलन और धर्म की अंतिम विजय सुनिश्चित करती है, जिससे आध्यात्मिक मुक्ति और कल्याण उन लोगों के लिए होता है जो उन्हें खोजते हैं।

107. कल्पाय

जो ब्रह्मांडीय युग (कल्प) और निर्धारित नियमों के स्वरूप हैं, उनको नमन।

विस्तार : नाम कल्पाय हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान और दर्शन में एक बहुआयामी अवधारणा, कल्प को संदर्भित करता है।

ब्रह्मांडीय युग (समय स्वयं) (The Cosmic Aeon (Time Itself)) अपने प्राथमिक ब्रह्मांडीय अर्थ में, एक कल्प समय की एक अविश्वसनीय रूप से विशाल अवधि है, जिसे "ब्रह्मा का एक दिन" के रूप में परिभाषित किया गया है। एक कल्प 4.32 अरब मानव वर्षों के बराबर है और ब्रह्मांड के निर्माण, पालन और विघटन के एक चक्र की अवधि का प्रतिनिधित्व करता है, इससे पहले कि अगला चक्र शुरू हो। कल्पाय के रूप में, भगवान भैरव इस संपूर्ण ब्रह्मांडीय अवधि का प्रतीक हैं। वह केवल एक कल्प के भीतर उपस्थित नहीं हैं, बल्कि 'स्वयं' कल्प हैं - ब्रह्मांडीय समय का ताना-बाना और सार। यह लौकिक आयाम पर उनके पूर्ण नियंत्रण को दर्शाता है, यह इंगित करता है कि समय से बंधी सभी प्रकट सत्ता उनकी दिव्य इच्छा के तहत संचालित होती है। वह प्रत्येक सार्वभौमिक चक्र की शुरुआत, मध्य और अंत हैं, जिसमें ब्रह्मा का दिन और रात शामिल है।

निर्धारित नियम और अध्यादेश (ब्रह्मांडीय व्यवस्था) (The Prescribed Rules and Ordinances (Cosmic Order)) समय से परे, "कल्प" एक "नियम," "अध्यादेश," "पवित्र उपदेश," या "निर्धारित अनुष्ठान" को भी दर्शाता है। इस संदर्भ में, कल्पाय भगवान भैरव को ब्रह्मांडीय नियमों, नैतिक सिद्धांतों (धर्म), और ब्रह्मांड की निर्धारित संरचना के अवतार और प्रशासक के रूप में संदर्भित करता है। वह ऋत (ब्रह्मांडीय व्यवस्था) के परम संरक्षक हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि सभी

घटनाएँ, प्राकृतिक प्रक्रियाएँ और कर्मिक प्रतिफल दिव्य कानून के अनुसार प्रकट हों। यह पहलू ब्रह्मांडीय न्याय के सर्वोच्च न्यायाधीश और प्रवर्तक के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि परिणाम अस्तित्व के सभी आयामों में कार्यों के अनुरूप हों।

कल्प सूत्र (अनुष्ठानिक ज्ञान) (The Kalpa Sutras (Ritualistic Knowledge)) इसके अलावा, वैदिक परंपरा में, "कल्प" छह वेदांगों (वेदों के अंग) में से एक है, विशेष रूप से अनुष्ठान और औपचारिक प्रक्रियाओं (कल्प सूत्र) से संबंधित है। "कल्प" होने के नाते, भैरव को पवित्र क्रिया और अनुष्ठानिक शुद्धता के मूलभूत सिद्धांतों से पहचाना जाता है, जो दिव्य से जुड़ने के उद्देश्य से सभी आध्यात्मिक प्रथाओं में उनकी उपस्थिति और उन पर उनके अधिकार को इंगित करता है।

इस प्रकार, कल्पाय भैरव को ब्रह्मांडीय समय और ब्रह्मांडीय कानून दोनों के परम स्वामी, सार्वभौमिक चक्रों के बहुत सार और उन्हें नियंत्रित करने वाले अपरिवर्तनीय सिद्धांतों के रूप में चित्रित करता है।

108. कल्पाद्ये

प्रत्येक प्रलयकाल के आदि अर्थात प्रथम स्वरूप को नमन।

विस्तार : कल्पादि नाम हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में एक गहरा शब्द है, जो दो संस्कृत शब्दों: कल्प और आदि से मिलकर बना है।

कल्प: एक ब्रह्मांडीय युग कल्प का अर्थ "ब्रह्मा का एक दिन" है, जो हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में समय की एक विशाल अवधि है, जो 4.32 अरब मानव वर्षों के बराबर है। यह ब्रह्मांड की रचना (सृष्टि), संरक्षण (स्थिति) और विघटन (प्रलय) का एक पूर्ण चक्र है। एक कल्प के अंत में, ब्रह्मांड दिव्य में समाहित हो जाता है, और अगले कल्प की शुरुआत में फिर से बनाया जाता है। ऐसे कई कल्प हैं, प्रत्येक का अपना ब्रह्मा, विष्णु और शिव है, हालांकि परम शिव (महाकाल) सभी से परे हैं।

आदि: शुरुआत, प्रथम आदि का अर्थ है "शुरुआत," "उत्पत्ति," "प्रथम।" यह आदिम स्रोत, परम कारण को दर्शाता है जिससे सब कुछ निकलता है।

ब्रह्मांडीय चक्रों का उद्गम इस प्रकार, कल्पादि उस एक को दर्शाता है जो प्रत्येक ब्रह्मांडीय चक्र का आदि कारण या आदिम स्रोत है। कालभैरव, कल्पादि के रूप में, केवल एक कल्प की शुरुआत में उपस्थित नहीं होते हैं, बल्कि वे स्वयं ही आरंभ, मौलिक प्रेरणा, वह पारलौकिक कारण हैं जो प्रत्येक ब्रह्मांड की रचना को आरंभ करते हैं। वे पूर्व-मौजूद, अव्यक्त वास्तविकता हैं जिससे प्रत्येक ब्रह्मांडीय युग के भोर में व्यक्त ब्रह्मांड उत्पन्न होता है।

समय का अतिक्रमण यह नाम कालभैरव की समय पर पूर्ण संप्रभुता को सशक्त रूप से दर्शाता है। जबकि वे स्वयं काल (समय) हैं, वे कल्पादि भी हैं, जो उनके सबसे लंबे लौकिक चक्रों से भी परे होने का प्रतीक है। वे शाश्वत, अविभेदित चेतना हैं जो रचना, पालन और संहार के सभी चक्रों से पहले मौजूद हैं और उन्हें व्यवस्थित करते हैं। उनका स्वरूप सभी लौकिक मापों से परे है, जो उस कालातीत आधार के रूप में विद्यमान है जिस पर सभी कल्प प्रकट होते हैं।

109. कमलेक्षणाय

जिनके नेत्र कमल के समान सुंदर और मनमोहक हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : कमलेक्षणाय नाम दो संस्कृत शब्दों का संयोजन है: कमल (कमल) और ईक्षण (नेत्र), जिसे अक्सर "कमल-नयन" के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। जबकि "कमल-नयन" का वर्णन वैष्णव धर्म में विष्णु से अधिक जुड़ा हुआ है, शैव धर्म में कालभैरव पर इसका प्रयोग केवल शारीरिक सुंदरता से परे गहन प्रतीकात्मक गहराई रखता है।

कमल का प्रतीकवाद (कमला) कमल का फूल (कमला) हिंदू धर्म में एक गहरा पूजनीय प्रतीक है, जो निम्न का प्रतिनिधित्व करता है: • पवित्रता और ज्ञानोदय: कीचड़ में उगने के बावजूद, कमल पानी के ऊपर बिना किसी दाग के उठता है। यह आध्यात्मिक पवित्रता, भौतिक संसार से वैराग्य और सांसारिक अपूर्णताओं से परे ज्ञानोदय का प्रतीक है। • सुंदरता और पूर्णता: कमल अपनी उत्कृष्ट सुंदरता, पूर्ण समरूपता और जीवंत रंगों के लिए प्रशंसित है। • सृष्टि और ब्रह्मांडीय अभिव्यक्ति: कमल अक्सर ब्रह्मांडीय सृष्टि के प्रतीक के रूप में कार्य करता है, जहाँ ब्रह्मांड एक आदिम कमल से प्रकट होता है। • दिव्य दृष्टि: कमल दिव्य दृष्टि और आध्यात्मिक जागरण से जुड़ा है।

कालभैरव के नेत्र (ईक्षण) जब कालभैरव को "कमल-नयन" के रूप में वर्णित किया जाता है, तो यह केवल सौंदर्य अपील से कहीं अधिक को संदर्भित करता है: • दिव्य दृष्टि और पवित्रता: उनके नेत्र, कमल की तरह, सांसारिक अपूर्णताओं से अछूते हैं, भले ही वे विनाश के भयंकर कृत्यों में संलग्न हों। वे शुद्ध, मिलावट रहित चेतना और सृष्टि और विनाश के चक्रों पर एक पूरी तरह से विरक्त दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करते हैं। • सर्वव्यापी दृष्टि: कमल को अक्सर कई पंखुड़ियों के साथ चित्रित किया जाता है, जो सर्वव्यापीता का प्रतीक है। कालभैरव के कमल जैसे नेत्र उनकी सर्व-दृष्टि प्रकृति का सुझाव देते हैं, अतीत, वर्तमान और भविष्य की सभी घटनाओं को समझने की उनकी क्षमता, और गहरी सच्चाइयों में प्रवेश करने की उनकी क्षमता। • करुणामयी दृष्टि: अपने भयानक रूप के बावजूद, कमल के नेत्र एक गहरी करुणा का संकेत देते हैं। जैसे कमल प्रकाश के लिए खुलता है, वैसे ही उनकी दृष्टि अपने भक्तों पर कृपा और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्रदान करती है, उन्हें उनके भयंकर कार्यों के बीच भी मार्गदर्शन करती है। उनका भयानक पहलू शुद्ध करने और मुक्त करने के लिए है, और उनके कमल जैसे नेत्र उनकी ब्रह्मांडीय भूमिका की अंतर्निहित परोपकारिता को व्यक्त करते हैं। • अराजकता के बीच आंतरिक शांति: उनके कमल के नेत्र उनके रूप की भयंकरता के भीतर शांति और स्थिरता का संकेत देते हैं। यह एक मुक्त आत्मा (जीवनमुक्त) की अंतिम स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है जो दुनिया में सक्रिय रूप से संलग्न होने पर भी शांत और विरक्त रहता है।

इसलिए, "कमलेक्षणाय" कालभैरव को केवल एक दुर्जेय देवता के रूप में नहीं, बल्कि गहन पवित्रता, सर्वज्ञ दृष्टि और परम आध्यात्मिक कृपा वाले के रूप में चित्रित करता है, भले ही वे ब्रह्मांडीय विनाश और समय का प्रतीक हों।

110. कमण्डलुधाराय

कमण्डलु धारण करने वाले (कमण्डलुधर) को नमन, जो तपस्या का प्रतीक है।

विस्तार : कमण्डलुधराय नाम उस एक को संदर्भित करता है जो कमण्डलु धारण करता है, जो एक पारंपरिक तपस्वी का जलपात्र है। यह अद्वितीय वस्तु हिंदू दर्शन में और विशेष रूप से देवी-देवताओं और तपस्वियों के संदर्भ में गहरा प्रतीकवाद रखती है।

कमण्डलु एक कमण्डलु आमतौर पर सूखे लौकी, लकड़ी या धातु से बना होता है, और इसका उपयोग भिक्षुओं, योगियों और देवताओं द्वारा पानी ले जाने के लिए किया जाता है। यह आत्मनिर्भरता, वैराग्य और आध्यात्मिक अभ्यास के लिए समर्पित जीवन का प्रतिनिधित्व करता है।

तपस्या और वैराग्य का प्रतीक कमण्डलु धारण करने का कार्य भौतिक संपत्तियों और सांसारिक इच्छाओं से पूर्ण विरक्ति को दर्शाता है। भगवान शिव के लिए, और विस्तार से कालभैरव के लिए, कमण्डलु धारण करना उनके पूर्ण तपस्वी जीवन को रेखांकित करता है। यह एक संन्यासी के आदर्श का प्रतीक है जिसने परम सत्य की खोज में सभी सुख-सुविधाओं और विलासिता का त्याग कर दिया है। यह अभ्यास आध्यात्मिक शुद्धता और तपस्या की खोज पर प्रकाश डालता है। भैरव एक तपस्वी के रूप में इसे इंद्रियों पर अपनी पूर्ण महारत और सांसारिक जुड़ाव से परे मार्ग के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के संकेत के रूप में धारण करते हैं।

कमण्डलु के भीतर का जल कमण्डलु के भीतर रखा गया जल अक्सर पवित्र माना जाता है। यह अमृत, अमरता का अमृत, या गंगा नदी का प्रतीक हो सकता है, जो शुद्धता और जीवन के स्रोत पर प्रकाश डालता है। तपस्वियों के लिए, यह जल दूरस्थ स्थानों में उनकी कठिन आध्यात्मिक यात्राओं के दौरान भरण-पोषण के लिए होता है, जो समाज के चढ़ावों से उनकी स्वतंत्रता पर और जोर देता है।

कैलाश और हिमालय से संबंध कमण्डलु के साथ भैरव की छवि अक्सर हिमालय और कैलाश पर्वत के शांत, फिर भी चुनौतीपूर्ण वातावरण को दर्शाती है, जहाँ शिव को गहरी समाधि में निवास करते हुए कहा जाता है। यह महायोगी, सभी योगियों में सबसे महान, के रूप में उनकी स्थिति को पुष्ट करता है, जो गहन आध्यात्मिक अनुशासन का जीवन जीते हैं।

आध्यात्मिक शुद्धि और पवित्रता जल स्वयं शुद्धि का प्रतीक है। इसे धारण करना आध्यात्मिक जागृति के लिए आवश्यक आंतरिक और बाहरी शुद्धि के निरंतर अभ्यास का सुझाव देता है। कालभैरव के लिए, जिनका भयंकर रूप ब्रह्मांड को सभी आध्यात्मिक अशुद्धियों से शुद्ध करने के लिए है, कमण्डलु उन लोगों को परम शुद्धता प्रदान करने के उनके अंतर्निहित स्वभाव का प्रतीक है जो उनमें शरण लेते हैं।

111. केतवे

विजय और संप्रभुता के प्रतीक, ध्वज या पताका स्वरूप को नमन।

विस्तार : केतवे (Ketave) नाम केतु (Ketu) से लिया गया है, जिसका हिंदू दर्शन और संस्कृति में गहरा प्रतीकात्मक अर्थ है। यह नाम कालभैरव को परम अधिकार, विजय और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के प्रतीक के रूप में पूजता है।

विजय और संप्रभुता का ध्वज केतु का शाब्दिक अर्थ "ध्वज," "पताका," "झंडा," या "प्रतीक" है। इस संदर्भ में, यह कालभैरव को धर्म (धार्मिक व्यवस्था) और ब्रह्मांडीय नियम के परम मानक या प्रतीक के रूप में दर्शाता है। जिस प्रकार एक ध्वज किसी राज्य की पहचान और संप्रभुता का प्रतिनिधित्व करता है, उसी प्रकार कालभैरव सार्वभौमिक सत्य और सभी अस्तित्व पर दिव्य प्रभुत्व का सर्वोच्च ध्वज हैं। उनकी उपस्थिति अज्ञानता, अराजकता और सभी नकारात्मक शक्तियों पर एक अटूट और अकाट्य विजय का प्रतीक है।

विशिष्टता का प्रतीक केतु का अर्थ "विशिष्टता," "चिह्न," या "संकेत" भी है। कालभैरव, केतवे के रूप में, इसलिए परम सत्ता का विशिष्ट चिह्न हैं, शिव की प्रचंड महिमा और समय और नियति के स्वामी के रूप में उनकी भूमिका का एक स्पष्ट संकेत हैं। वह दिव्य शक्ति का अचूक प्रकाशस्तंभ हैं जो सबसे ऊपर खड़ा है।

ज्योतिषीय महत्व (सूक्ष्म संबंध) हालांकि मुख्य रूप से ध्वज के शाब्दिक अर्थ से संबंधित है, केतु वैदिक ज्योतिष में दक्षिण चंद्र नोड को भी संदर्भित करता है, जो दो छाया ग्रहों (राहु और केतु) में से एक है जो सूर्य और चंद्रमा के स्पष्ट पथों के प्रतिच्छेदन बिंदु हैं। ज्योतिषीय रूप से, केतु मुक्ति, वैराग्य, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और पिछले जन्म के कर्मों से जुड़ा है। यद्यपि कालभैरव को सीधे ग्रह केतु से पहचाना नहीं जाता है, फिर भी पराकाष्ठा, आध्यात्मिक मुक्ति और दिव्य हस्तक्षेप के अंतर्निहित विषय इस अतिरिक्त अर्थ के साथ सूक्ष्म रूप से प्रतिध्वनित होते हैं। केतवे, इस बहुत सूक्ष्म अर्थ में, कालभैरव को उस रूप में इंगित कर सकता है जो कर्म चक्रों की पराकाष्ठा लाता है और आध्यात्मिक मुक्ति प्रदान करता है।

परम अधिकार केतवे के रूप में संबोधित किए जाने से, कालभैरव को उस रूप में आह्वान किया जाता है जो परम, निर्विवाद अधिकार और ब्रह्मांडीय संतुलन को फिर से स्थापित करने की शक्ति का प्रतीक है। वह वह मानक हैं जिसके विरुद्ध सभी कार्यों को मापा जाता है, और उनका ध्वज समय

और अनंत काल के क्षेत्र में लगातार लहराता रहता है।

112. कालयोगिने

समय के साथ पूर्णतः एकीकृत सिद्ध योगी को नमन।

विस्तार : कालयोगिने नाम कालभैरव का एक गहन वर्णन है, जो दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों से बना है: काल और योगी।

काल (Kāla): काल अपने सबसे निरपेक्ष और ब्रह्मांडीय अर्थ में "समय" को दर्शाता है। यह केवल कालानुक्रमिक समय नहीं है, बल्कि वह गतिशील, अथक और सब कुछ भस्म करने वाली शक्ति है जो सृष्टि, पालन और संहार का आधार है। काल परम भक्षक है, वह सिद्धांत जो हर चीज को अस्तित्व में लाता है और अंततः उसे विघटित करता है। शिव और भैरव के संदर्भ में, काल को अक्सर मृत्यु के देवता के रूप में चित्रित किया जाता है, वह शक्ति जो सभी चीजों का अंत करती है।

योगी (Yogī): योगी उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जो दिव्य के साथ पूर्णतः एकाकार है, योग का स्वामी है। एक योगी कठोर आध्यात्मिक अभ्यास (योग) के माध्यम से पूर्ण सामंजस्य, स्थिरता और प्रबुद्ध चेतना की स्थिति प्राप्त करता है। एक योगी वह है जिसने मन और शरीर की सीमाओं को पार कर लिया है, जो ब्रह्म या परम वास्तविकता के साथ एकात्मता का अनुभव करता है।

समय का स्वामी (Master of Time) जब संयुक्त किया जाता है, तो कालयोगी का अर्थ है "समय का योगी" या "वह जो समय के साथ पूर्णतः एकाकार है।" इसका तात्पर्य यह है कि कालभैरव केवल समय के अधीन नहीं हैं, बल्कि उसके स्वामी, उसके सार और उसके नियंत्रक हैं। वह काल के अथक प्रवाह पर पूर्ण, शांत और सचेत प्रभुत्व का प्रतीक हैं। वह समय की धारा में बहते नहीं हैं, बल्कि उसे निर्देशित करते हैं, सृष्टि और संहार के उसके चक्रों से अप्रभावित रहते हैं।

सनातन योगी (The Eternal Yogi) कालयोगी के रूप में, कालभैरव अस्तित्व की परम अवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं, जहाँ समय का ब्रह्मांडीय नृत्य भीतर एक शाश्वत, अचल स्थिरता के रूप में अनुभव किया जाता है। वह वह स्वामी हैं जो अस्तित्व के ब्रह्मांडीय योग का प्रदर्शन करते हैं, अपने भीतर सभी आरंभ और अंत को समाहित करते हैं। उनकी योगिक अवस्था लौकिक आयाम पर पूर्ण जागरूकता और नियंत्रण की है। यह उनकी शाश्वत प्रकृति को दर्शाता है, जो सापेक्ष समय की सीमाओं से परे विद्यमान है।

समय के माध्यम से मुक्तिदाता (निर्भय स्वीकृति) (Liberator Through Time - Fearless Acceptance) भक्त के लिए, भैरव को कालयोगी के रूप में पहचानना समय, मृत्यु और परिवर्तन के भय से मुक्ति की प्रेरणा दे सकता है। समय के साथ एकाकार होकर, वह सिखाते हैं कि सच्ची मुक्ति अस्तित्व की क्षणभंगुर प्रकृति को स्वीकार करने और उन सभी लौकिक घटनाओं के आधार पर शाश्वत चेतना को महसूस करने में निहित है। वह सांसारिक समय के भ्रम को पार करने और कालातीत शाश्वत के साथ विलीन होने के लिए परम मार्गदर्शक हैं।

113. अकलमषाय

जो परम शुद्ध, निष्पाप और बिना किसी दाग या अशुद्धि के हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : अकल्मष (अकल्मषाय) नाम भगवान शिव की परम पवित्रता और उत्कृष्ट प्रकृति का एक गहन वर्णन है। यह 'अ' (जिसका अर्थ है 'नहीं' या 'के बिना') और 'कल्मष' (जिसका अर्थ है 'दाग', 'धब्बा', 'अशुद्धता', 'पाप' या 'दोष') से बना एक यौगिक शब्द है।

परम पवित्रता और निष्कलंकता अकल्मष का सीधा अर्थ है "बिना दाग के", "शुद्ध", "निष्कलंक" या "निष्पाप"। यह दर्शाता है कि भगवान, कालभैरव के रूप में, किसी भी प्रकार की अशुद्धता से पूरी तरह से अछूते हैं, चाहे वह शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक या आध्यात्मिक हो। वह सभी द्वंद्वों और

भौतिक संसार की उन सभी सीमाओं से परे हैं जो सजीव प्राणियों में अशुद्धियाँ या "पाप" पैदा करती हैं।

कर्म से परे transcendence (उत्कृष्टता) हिंदू दर्शन में, "कल्मष" अक्सर संचित कर्मिक अशुद्धियों या अवगुणों को संदर्भित करता है जो आत्माओं को जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) से बांधते हैं। अकल्मष होने से, कालभैरव यह दर्शाते हैं कि वह कर्म के प्रभाव से पूरी तरह मुक्त हैं। वह कर्मों के परिणामों के अधीन नहीं हैं, क्योंकि वह सभी कर्मों और उनके परिणामों के परम स्रोत और विलायक हैं। यह सर्वोच्च चेतना के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देता है, जो कारण और प्रभाव के दायरे से परे है।

अशुद्धता को दूर करने वाले जबकि वह स्वयं निष्कलंक हैं, उनकी पवित्रता उनकी भक्तों के कल्मष को शुद्ध करने और दूर करने की शक्ति का भी अर्थ है। अकल्मष की पूजा आध्यात्मिक शुद्धि के लिए, पापों, नकारात्मक प्रवृत्तियों और अज्ञानता को दूर करने के लिए एक आह्वान है जो जीव (व्यक्तिगत आत्मा) को धूमिल करते हैं।

आदर्श और पूर्णता यह नाम दिव्य के आदर्श और पूर्ण स्वरूप की ओर इशारा करता है। यह कालभैरव को पवित्रता के परम मानक और पूर्णता के प्रतीक के रूप में चित्रित करता है, जो घटनात्मक अस्तित्व में निहित अपूर्णताओं और सीमाओं से अछूते हैं। यह साधक को आंतरिक पवित्रता की ऐसी ही स्थिति के लिए प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

114. कारणाय

समस्त कर्म और सृष्टि के परम साधन स्वरूप को नमन।

विस्तार : करण (करणाय) नाम संस्कृत मूल "कृ" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "करना," "बनाना," "कार्य करना," या "सृष्टि करना।"

क्रिया का परम साधन अपने प्राथमिक अर्थ में, करण किसी क्रिया के साधन, माध्यम या कारण को संदर्भित करता है। जब इसे कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह दर्शाता है कि वे परम साधन हैं जिसके माध्यम से ब्रह्मांड में सभी क्रियाएं, प्रक्रियाएं और घटनाएं घटित होती हैं। वे केवल एक पर्यवेक्षक या कमांडर नहीं हैं, बल्कि हर उस चीज़ के पीछे का तंत्र, अंतर्निहित शक्ति और प्रेरक शक्ति हैं जो प्रकट होती है। सभी कर्म, सभी सृष्टि, सभी विनाश और सभी पोषण मौलिक रूप से उनका करण हैं।

कारण और प्रभाव दार्शनिक रूप से, करण उस आदिम कारण (कारण) को भी दर्शा सकता है जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है। इस संदर्भ में, कालभैरव अस्तित्व का मौलिक, अकारण कारण हैं। वे ब्रह्मांड के उपादान-कारण (भौतिक कारण) और निमित्त-कारण (कुशल कारण) हैं। इसका तात्पर्य है कि संपूर्ण ब्रह्मांड, कारण और प्रभाव के अपने जटिल जाल के साथ, उनकी इच्छा और शक्ति का विस्तार है।

एक साधन के रूप में शरीर कुछ योगिक और दार्शनिक परंपराओं में, करण सूक्ष्म शरीर (सूक्ष्म शरीर) या आंतरिक अंगों (अंतःकरण) को भी संदर्भित करता है, जो दुनिया में अनुभव और क्रिया के साधन हैं। कालभैरव को करण के रूप में पहचान कर, यह सुझाव दिया जाता है कि प्राणियों के भीतर धारणा, विचार और क्रिया के व्यक्तिगत साधन भी अंततः उनसे प्राप्त होते हैं और उन पर निर्भर करते हैं। वे आंतरिक तंत्र हैं जो प्राणियों को वास्तविकता का अनुभव करने और उसके साथ बातचीत करने की अनुमति देते हैं।

सभी क्रियाओं का कर्ता एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो स्वयं साधन है, वे अस्तित्व में व्याप्त क्रिया की अंतर्निहित क्षमता का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनकी अंतर्निहित शक्ति के बिना कुछ भी नहीं हो सकता है। वे ब्रह्मांड के सक्रिय सिद्धांत, गतिशील शक्ति का प्रतीक हैं जो सृष्टि को जन्म देती है, उसे बनाए रखती है और अंततः उसे भंग कर देती है।

115. कारणाय

संपूर्ण ब्रह्मांड के आदि और अंतिम कारण स्वरूप को नमन।

विस्तार : कारणाय नाम संस्कृत शब्द कारण से लिया गया है, जिसका अर्थ है "कारण," "हेतु," या "उत्पत्ति।" जब इसे दिव्य, विशेष रूप से भगवान शिव को कालभैरव के रूप में संदर्भित किया जाता है, तो यह सभी अस्तित्व का परम, आदिम और मूलभूत कारण दर्शाता है।

परम कारण (पर कारण) यह नाम कालभैरव की सर्वोच्च स्थिति को उस स्रोत के रूप में स्थापित करता है जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है। वह केवल पारंपरिक अर्थों में एक निर्माता नहीं हैं, बल्कि वह मूल आधार और सार हैं जो संपूर्ण ब्रह्मांड को अस्तित्व में लाते हैं। हिंदू दर्शन में, विशेष रूप से शैव धर्म में, परम वास्तविकता (ब्रह्म या पर शिव) को अक्सर कारण के रूप में वर्णित किया जाता है - बिना कारण का कारण, सभी घटनात्मक अस्तित्व का अकारण कारण।

निमित्त और उपादान कारण कारण में निमित्त कारण और उपादान कारण दोनों शामिल हैं। निमित्त कारण के रूप में, कालभैरव वह चेतन इच्छा, बुद्धि और शक्ति हैं जो सृष्टि, पालन और संहार को आरंभ करते हैं। उपादान कारण के रूप में, वह वह पदार्थ हैं जिससे ब्रह्मांड का निर्माण होता है, जिसका अर्थ है कि निर्माता और निर्मित के बीच कोई अंतर नहीं है; ब्रह्मांड उनकी अपनी अभिव्यक्ति है।

समय, स्थान और रूप का मूल चूंकि कालभैरव काल के स्वामी (काल) हैं, उनका परम कारण होना यह दर्शाता है कि वह स्वयं समय के साथ-साथ अंतरिक्ष और सृष्टि के भीतर के सभी रूपों का मूल हैं। किसी भी भौतिक अभिव्यक्ति से पहले, तत्वों के उत्पन्न होने से पहले, और समय के चक्रों के खुलने से पहले, वह अकेले ही आदिम कारण के रूप में विद्यमान हैं।

दार्शनिक महत्व कालभैरव को कारण के रूप में स्वीकार करना अद्वैतवादी समझ की एक गहन घोषणा है। इसका तात्पर्य है कि कोई बाहरी शक्ति या सत्ता नहीं है जिसने उन्हें अस्तित्व में लाया; वह स्वयंभू हैं और अन्य सभी अस्तित्व के मूल हैं। यह समझ उनके निरपेक्ष, स्वतंत्र और सर्वव्यापी स्वरूप की अनुभूति की ओर ले जाती है।

116. कर्त्रे

परम कर्ता और सभी कर्मों के कारक को नमन।

विस्तार : कर्त्रे (Kartṛ) नाम संस्कृत धातु 'कृ' से आया है, जिसका अर्थ है "करना, बनाना, सृजन करना।" व्याकरणिक रूप से, यह 'कर्तृ' का चतुर्थी विभक्ति रूप है, जिसका अर्थ है "कर्ता को," "निर्माता को," या "अभिकर्ता को।"

परम कर्ता और सृष्टिकर्ता परम कर्ता के रूप में, भगवान कालभैरव सभी ब्रह्मांडीय प्रक्रियाओं—सृष्टि (sṛṣṭi), पालन (sthiti), और संहार (saṃhāra)—के पीछे की परम शक्ति का प्रतीक हैं। वे केवल एक दर्शक नहीं हैं, बल्कि वह सक्रिय शक्ति हैं जो ब्रह्मांड में हर क्रिया को आरंभ करती है, संचालित करती है और समाप्त करती है। इस पहलू में, वे आदिम वास्तुकार हैं, वह आवश्यक शक्ति हैं जिससे सभी गतिविधियाँ उत्पन्न होती हैं।

सभी कार्यों के कर्ता यह नाम इस बात पर जोर देता है कि हर क्रिया, चाहे वह बड़ी हो या छोटी, दृश्यमान हो या अदृश्य, अंततः उनकी दिव्य इच्छा और शक्ति की अभिव्यक्ति है। ग्रहों के चक्र से लेकर हृदय की धड़कन तक, बीज के अंकुरण से लेकर धर्म के प्रकटीकरण तक, वे अंतर्निहित कर्ता हैं। यह परिप्रेक्ष्य इस अहंकारपूर्ण धारणा का खंडन करता है कि व्यक्तिगत प्राणी ही एकमात्र कर्ता हैं, हमें याद दिलाता है कि सफलता और असफलता, खुशी और दुख, उनके द्वारा रचित एक बड़े दिव्य नाटक में बुने हुए हैं।

दार्शनिक निहितार्थ: कर्म योग आध्यात्मिक साधक के लिए, कालभैरव को कर्त्रे के रूप में पहचानना कर्म योग के अभ्यास को प्रोत्साहित करता है—अपने फलों से अनासक्ति के साथ कर्म करना, यह समझना कि परम कर्ता ईश्वर के पास है। यह विनम्रता को बढ़ावा देता है और व्यक्तिगत नियंत्रण के भ्रम को त्यागता है, जिससे आध्यात्मिक मुक्ति मिलती है।

कर्म का अतिक्रमण परम कर्ता होने के बावजूद, भैरव शुद्ध चेतना (परम शिव) के रूप में कर्मों से अछूते रहते हैं, जो एक गहरा विरोधाभास दर्शाता है: वे कर्ता हैं फिर भी कर्मों के प्रभावों से परे हैं, परम साक्षी या द्रष्टा हैं।

117. कैलासपतये

पवित्र कैलाश पर्वत के सर्वोच्च और निर्विवाद स्वामी को नमन।

विस्तार : कैलासपति दो संस्कृत शब्दों का संयोजन है: कैलाश और पति।

कैलाश: यह हिमालय में भगवान शिव के पौराणिक और पवित्र निवास स्थान, कैलाश पर्वत को संदर्भित करता है। हिंदू पुराणों और धर्मग्रंथों में, कैलाश केवल एक भौगोलिक स्थान नहीं है, बल्कि एक ब्रह्मांडीय पर्वत, एक आध्यात्मिक अक्ष मुंडी (axis mundi), और शिव के दिव्य ब्रह्मांड का केंद्र है। इसे परम पवित्रता, गहन ध्यान, अद्वितीय शांति और अपार आध्यात्मिक शक्ति के क्षेत्र के रूप में वर्णित किया गया है। यहीं पर शिव अपनी पत्नी पार्वती के साथ अपने गणों से घिरे हुए निवास करते हैं।

पति: इस शब्द का अर्थ है "स्वामी," "मालिक," "पति," या "शासक।"

सर्वोच्च निवास और उसके स्वामी इसलिए, कैलासपति का अर्थ है "कैलाश पर्वत के स्वामी।" यह नाम स्पष्ट रूप से भगवान शिव को इस पवित्र पर्वत के सर्वोच्च और निर्विवाद स्वामी के रूप में स्थापित करता है। कैलाश के शासक के रूप में, शिव अपने निवास स्थान से जुड़े सभी गुणों को समाहित करते हैं: • सर्वोच्च ध्यान: कैलाश शिव के गहनतम ध्यान का आसन है, जहाँ से वे सृष्टि, संरक्षण और संहार के ब्रह्मांडीय नृत्य का निर्देशन करते हैं। कैलासपति के रूप में, वे परम तपस्वी और योगी का प्रतिनिधित्व करते हैं। • पवित्रता और तपस्या: कैलाश पर उनका आधिपत्य पवित्रता (शुद्धता) और कठोर आध्यात्मिक अनुशासन (तपस्या) पर उनके प्रभुत्व का प्रतीक है जो पर्वत का सार है। • दिव्य अधिकार: कैलाश के पति होने के नाते उन्हें स्वर्गीय लोकों और सभी प्राणियों, जिसमें देवता, ऋषि और आत्माएं शामिल हैं जो उनके निवास स्थान की तीर्थयात्रा करते हैं, पर एक अद्वितीय अधिकार प्रदान करता है। • ब्रह्मांडीय केंद्र: कैलाश के स्वामी के रूप में, उन्हें ब्रह्मांड का केंद्रीय अक्ष, वह धुरी माना जाता है जिसके चारों ओर ब्रह्मांड आध्यात्मिक और आध्यात्मिक रूप से घूमता है।

यह नाम हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में सबसे पूजनीय आध्यात्मिक पर्वत के निवासी और संप्रभु के रूप में शिव के राजसी, पारलौकिक और अपरिवर्तनीय स्वरूप पर जोर देता है। यह उनके शाश्वत पहलू की ओर इशारा करता है, जो उनके दिव्य घर की पवित्रता और शांति में निहित है।

118. ईश्वराय

परम, दिव्य, सर्वशक्तिमान प्रभु और ब्रह्मांड के नियंत्रक को नमन।

विस्तार : ईश्वर (अक्सर Ishvara के रूप में लिखा जाता है) नाम हिंदू दर्शन में, विशेष रूप से शैव धर्म के भीतर एक गहरा और केंद्रीय अवधारणा है, और यह परम भगवान, अंतिम नियंत्रक और ब्रह्मांड के दिव्य शासक को दर्शाता है।

व्युत्पत्ति और परम प्रभुत्व ईश्वर शब्द "ईश" मूल से लिया गया है, जिसका अर्थ है "शासन करना," "मालिक होना," या "सक्षम होना।" इस प्रकार, ईश्वर का शाब्दिक अर्थ है "शासक," "स्वामी," या "भगवान।" जब भगवान शिव पर, विशेष रूप से उनके कालभैरव रूप में लागू किया जाता है, तो यह उनकी सभी रचना, संरक्षण और विघटन पर पूर्ण और निर्विवाद संप्रभुता को दर्शाता है। वह केवल कई देवताओं में से एक नहीं हैं, बल्कि अंतिम, पारलौकिक और अंतर्निहित शक्ति हैं जो पूरे अस्तित्व को नियंत्रित करती हैं।

ब्रह्मांड के नियंत्रक (जगन्नाथ) ईश्वर के रूप में, कालभैरव "जगन्नाथ" हैं - ब्रह्मांड के भगवान। वह ब्रह्मांडीय संचालक हैं जो सृष्टि और विनाश के नृत्य का संचालन करते हैं, कारण और प्रभाव (कर्म) के नियमों और समय (काल) के चक्रों को गति प्रदान करते हैं। उनका नियंत्रण केवल बाहरी नहीं है बल्कि ब्रह्मांड के ताने-बाने में गहराई से एकीकृत है। वह वह चेतना है जो सभी चीजों में व्याप्त है और सभी प्रक्रियाओं को निर्देशित करती है, सबसे बड़ी ब्रह्मांडीय घटनाओं से लेकर एक परमाणु के भीतर सबसे सूक्ष्म गतिविधियों तक।

दिव्य और सर्वशक्तिमान (सर्वशक्तिमान) ईश्वर पदनाम सर्वशक्तिमान (सर्वशक्तिमान) और सर्वज्ञता (सर्वज्ञ) को भी दर्शाता है। उनके पास अनंत शक्ति और ज्ञान है, जो उन्हें कुछ भी करने और सब कुछ जानने में सक्षम बनाता है। यह शक्ति क्रूर बल नहीं है, बल्कि एक परिपूर्ण, बुद्धिमान और सचेत ऊर्जा है जो सभी प्रकट घटनाओं को बनाए रखती है, रूपांतरित करती है और अंततः पुनः अवशोषित करती है।

व्यक्तिगत ईश्वर और भक्ति का उद्देश्य जबकि अद्वैत वेदांत में ब्रह्म निराकार निरपेक्ष वास्तविकता को संदर्भित करता है, ईश्वर उस निरपेक्ष के व्यक्तिगत पहलू को दर्शाता है, वह रूप जिसकी पूजा की जा सकती है, ध्यान किया जा सकता है और प्यार किया जा सकता है। भक्तों के लिए, ईश्वर दयालु भगवान हैं जो प्रार्थनाओं का जवाब देते हैं, आध्यात्मिक साधकों का मार्गदर्शन करते हैं और मुक्ति प्रदान करते हैं। इस अर्थ में, ईश्वर के रूप में कालभैरव ब्रह्मांडीय कानून के भयानक प्रवर्तक और कृपा के परोपकारी दाता दोनों हैं, जो अपने भक्तों को भय और लौकिक सीमाओं से परे ले जाते हैं।

119. कामभुवे

सभी इच्छाओं के जन्मस्थान, उस पवित्र भूमि को नमन।

विस्तार : कामभुवे (Kāmadhuve) नाम काम (Kāma) और भू (Bhū) से व्युत्पन्न एक गहन और बहु-स्तरीय शब्द है।

काम (Kāma): इस संस्कृत शब्द के कई अर्थ हैं, जिनमें इच्छा, कामना, लालसा, वासना, प्रेम, कामुक सुख और प्रेम के देवता शामिल हैं। आध्यात्मिक संदर्भ में, इसमें सभी प्रकार की लालसाएँ शामिल हैं, चाहे वे भौतिक हों या आध्यात्मिक।

भू (Bhū) या भूमि (Bhūmi): यह पृथ्वी, भूमि, स्थान, स्रोत या उत्पत्ति को संदर्भित करता है।

सभी इच्छाओं का स्रोत इस प्रकार कामभुवे (Kāmadhuve) दिव्य सत्ता को उस मूलभूत आधार या उद्गम बिंदु के रूप में नामित करता है जहाँ से सभी इच्छाएँ, आकांक्षाएँ और लालसाएँ उत्पन्न होती हैं। इसका अर्थ केवल एक कारण संबंध नहीं है, बल्कि एक आंतरिक संबंध है; कालभैरव

(Kālabhairava) केवल इच्छाओं के निर्माता नहीं हैं, बल्कि वे उनका सार या आधार हैं। इसमें न केवल निम्न, सांसारिक इच्छाएँ शामिल हैं, बल्कि उच्चतम आध्यात्मिक आकांक्षाएँ भी शामिल हैं, जैसे मोक्ष (moksha) या दिव्य मिलन की इच्छा।

अभिव्यक्ति का क्षेत्र भू (Bhū) का "आधार" या "स्थान" पहलू यह दर्शाता है कि कालभैरव (Kālabhairava) वह क्षेत्र या आयाम हैं जिसमें इच्छाएँ प्रकट होती हैं, अनुभव की जाती हैं और अंततः पूरी होती हैं। वह वह मंच हैं जिस पर मानवीय लालसा का नाटक चलता है, और वह अंतर्निहित वास्तविकता भी हैं जो इस unfolding की अनुमति देती है।

द्वंद्वों से परे यह नाम सूक्ष्म रूप से दिव्य के विरोधाभासी स्वरूप की ओर भी इशारा करता है। जबकि कालभैरव (Kālabhairava) अक्सर वैराग्य और सांसारिक आसक्तियों के अतिक्रमण से जुड़े होते हैं, कामभुवे (Kāmadhuve) के रूप में, वह वही शक्ति हैं जो उन आसक्तियों को जन्म देती हैं। यह उनके सर्व-समावेशी स्वरूप को दर्शाता है, जिसमें वह सभी द्वंद्वों को समाहित करते हैं और उनसे परे जाते हैं, जिसमें इच्छा और अनिच्छा, आसक्ति और अनासक्ति शामिल हैं। उन्हें इच्छा के स्रोत के रूप में स्वीकार करके, व्यक्ति अस्तित्व के सभी पहलुओं में निहित दिव्य ऊर्जा को पहचानता है, यहाँ तक कि उन पहलुओं में भी जिन्हें अक्सर आध्यात्मिक प्रगति में बाधा माना जाता है।

120. कामदाय

सभी इच्छाओं और कामनाओं को उदारतापूर्वक प्रदान करने वाले और पूर्ण करने वाले को नमन।

विस्तार : कामदाय नाम दो संस्कृत शब्दों से बना है: काम और दाय।

काम (Kāma): यह शब्द बहुआयामी है। यह संदर्भित कर सकता है: • इच्छा या कामना: यह सभी मानवीय इच्छाओं, आकांक्षाओं और लालसाओं को दर्शाता है, चाहे वे भौतिक हों या आध्यात्मिक। • प्रेम या तीव्र लालसा: व्यापक अर्थ में, इसमें संवेदनशील प्राणियों की भावनात्मक प्रेरणाएँ शामिल हैं। • देवता कामदेव: प्रेम और इच्छा के हिंदू देवता।

दाय (Dāya): दाता, देने वाला या प्रदान करने वाला।

इसलिए, कामदाय का अर्थ है "इच्छाओं को प्रदान करने वाला" या "कामनाओं को पूर्ण करने वाला"।

इच्छाओं की पूर्ति (Fulfilling Desires) यह नाम भगवान कालभैरव के परोपकारी पहलू को उजागर करता है, जहाँ वे केवल अज्ञानता और भय के भयंकर संहारक ही नहीं, बल्कि दयालु प्रदाता भी हैं जो अपने भक्तों की प्रार्थनाओं का उत्तर देते हैं और उनकी इच्छाओं को पूरा करते हैं। यह उनकी असीम करुणा और उन लोगों को वरदान देने की तत्परता को दर्शाता है जो उन पर विश्वास के साथ आते हैं। यह पूर्ति भौतिक समृद्धि, स्वास्थ्य और संतान से लेकर आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) तक हो सकती है।

इच्छा का उच्चतर उद्देश्य (The Higher Purpose of Desire) जबकि काम (Kāma) में अक्सर सांसारिक या भौतिक इच्छाओं के अर्थ होते हैं, एक आध्यात्मिक संदर्भ में, इसमें दिव्य के साथ मिलन, ज्ञान और आध्यात्मिक प्रगति की गहरी इच्छा भी शामिल है। जब भैरव को कामदाय (Kāmadāya) कहा जाता है, तो यह इंगित करता है कि वे न केवल सांसारिक इच्छाओं को पूरा कर सकते हैं, बल्कि भक्तों को उनकी उच्चतम आध्यात्मिक आकांक्षाओं और जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति की ओर भी मार्गदर्शन कर सकते हैं। इन इच्छाओं को पूरा करके, वे धीरे-धीरे भक्त को शुद्ध करते हैं, उन्हें परम सत्य की ओर ले जाते हैं।

इच्छाओं में बाधाओं को दूर करना (Removing Obstacles to Desires) कालभैरव के रूप में, समय को नियंत्रित करने और बाधाओं को दूर करने में उनकी भूमिका इच्छाओं की पूर्ति में महत्वपूर्ण है। कभी-कभी, किसी इच्छा को पूरा करने का मार्ग चुनौतियों से भरा होता है। कामदाय

(Kāmadāya) के रूप में, वे न केवल इच्छा प्रदान करते हैं बल्कि नकारात्मक शक्तियों, कर्म और मनोवैज्ञानिक बाधाओं को नष्ट करके उसकी प्राप्ति का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं।

121. अचिन्त्याय

जो अकथनीय, अकल्पनीय और सभी मानवीय विचारों से परे हैं, उनको नमन।

विस्तार : अचिन्त्य नाम संस्कृत शब्द 'अ-चिन्त्य' से लिया गया है, जहाँ 'अ' निषेध को दर्शाता है, और 'चिन्त्य' उस चीज़ को संदर्भित करता है जिसके बारे में सोचा जा सकता है, कल्पना की जा सकती है या समझा जा सकता है।

विचार और अवधारणा से परे इस प्रकार अचिन्त्य का अर्थ है "अकल्पनीय," "अचिंतनीय," या "विचार से परे।" जब इसे दिव्य पर लागू किया जाता है, विशेष रूप से कालभैरव जैसे शक्तिशाली और सर्वव्यापी देवता पर, तो यह इस विचार को व्यक्त करता है कि उनका वास्तविक स्वरूप, उनकी शक्ति, उनकी पहुँच और उनका अस्तित्व सीमित मानव मन, बुद्धि या कल्पना द्वारा समझा नहीं जा सकता है। वह विचार की सभी श्रेणियों, सभी अवधारणाओं और सभी भाषाई अभिव्यक्तियों से परे हैं।

दिव्य का असीम स्वरूप यह गुण दिव्य के अनंत और असीम स्वरूप पर जोर देता है। भैरव को विचार के माध्यम से परिभाषित या सीमित करने का कोई भी प्रयास स्वाभाविक रूप से उनके वास्तविक दायरे को कम कर देगा। वह तर्क के नियमों या भौतिक दुनिया की बाधाओं के अधीन नहीं हैं जिन्हें मानव मन संसाधित करने का आदी है। उनके कार्य, उनके रूप और उनकी उपस्थिति अक्सर तर्कसंगत व्याख्या से परे होते हैं।

रहस्यमय और पारलौकिक अचिन्त्य कालभैरव के रहस्यमय और पारलौकिक पहलू की ओर इशारा करता है। यह बताता है कि उनका सच्चा ज्ञान बौद्धिक विश्लेषण के माध्यम से नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष अनुभव, अंतर्ज्ञान या रहस्योद्घाटन के माध्यम से आता है, जो जानने के ऐसे तरीके हैं जो सामान्य विचार के दायरे से परे काम करते हैं। यह अस्तित्व की एक ऐसी अवस्था है जिसे केवल समझने के बजाय महसूस किया जाना चाहिए।

समझ में विनम्रता भैरव को अचिन्त्य के रूप में स्वीकार करना भक्त में विनम्रता को बढ़ावा देता है। यह याद दिलाता है कि सभी शास्त्रीय ज्ञान, दार्शनिक अटकलों या ध्यान संबंधी अंतर्दृष्टि के बावजूद, दिव्य का एक पहलू हमेशा रहस्यमय और वातानुकूलित मन की पकड़ से परे रहेगा।

122. किरीटिने

महिमामय, चमकता मुकुट धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : किरीटिने नाम संस्कृत शब्द "किरीट" से लिया गया है, जिसका अर्थ है एक मुकुट, टियारा, या ताज, विशेष रूप से जो किसी देवता या रॉयल्टी द्वारा पहना जाता है, जो वैभव, अधिकार और संप्रभुता को दर्शाता है। प्रत्यय "-इने" स्वामित्व को दर्शाता है, इस प्रकार किरीटिने का अर्थ है "वह जो मुकुट धारण करता है या पहनता है।"

संप्रभुता और सर्वोच्च अधिकार का प्रतीक कालभैरव के सिर पर मुकुट केवल एक आभूषण नहीं है; यह समय, स्थान और सभी सृजित अस्तित्व पर उनके सर्वोच्च शासन का एक शक्तिशाली प्रतीक है। काल भैरव के रूप में, वे ब्रह्मांडीय व्यवस्था के निर्विवाद सम्राट हैं, और उनका मुकुट इस पूर्ण संप्रभुता को दर्शाता है। यह प्रतीक है कि वे सभी अन्य देवताओं, प्राणियों और ब्रह्मांडीय शक्तियों से ऊपर, परम सत्ता हैं।

तेज और दिव्य महिमा एक मुकुट आमतौर पर चमकदार और दीप्तिमान होता है। यह पहलू कालभैरव की दिव्य महिमा (तेज) और चमक पर जोर देता है। यह शुद्ध चेतना के रूप में उनके वास्तविक स्वरूप की चमक और उनके दिव्य रूप से निकलने वाले तेज का प्रतिनिधित्व करता है। चमकता हुआ मुकुट इंगित करता है कि वे सभी प्रकाश, ज्ञान और आध्यात्मिक प्रबुद्धता के स्रोत हैं।

ब्रह्मांडीय प्रमुखता एक लाक्षणिक अर्थ में, सिर को अक्सर ज्ञान और अधिकार का आसन माना जाता है। कालभैरव का अपने सिर पर मुकुट धारण करना ब्रह्मांड के सर्वोच्च "प्रमुख" या नेता के रूप में उनकी स्थिति को दर्शाता है, जो सृष्टि से लेकर विघटन तक सभी ब्रह्मांडीय कार्यों का मार्गदर्शन, नियंत्रण और अध्यक्षता करते हैं।

सौंदर्यपूर्ण पूर्णता और शाही वैभव अपने प्रतीकात्मक अर्थ से परे, मुकुट कालभैरव की प्रतिमा की राजसी और भयानक सुंदरता में भी योगदान देता है। यह उनके भयानक रूप के बीच भी उनके शाही पहलू को उजागर करता है, भक्तों को याद दिलाता है कि वे दुर्जेय दंडक और परोपकारी सम्राट दोनों हैं जो सार्वभौमिक धर्म को बनाए रखते हैं।

123. कौशिका

उन कौशिका ऋषि से संबंधित या पंचकोषों (शरीर के पांच आवरण) से युक्त को नमन।

विस्तार : "कौशिकाया" नाम संस्कृत मूल से उत्पन्न कई अर्थों से समृद्ध है। यह मुख्य रूप से ऋषि कौशिक के साथ संबंध या स्वयं को घेरने वाले पाँच कोशों (आवरणों) की अवधारणा को संदर्भित करता है।

ऋषि कौशिक से संबंधित एक व्याख्या कालभैरव को पूजनीय ऋषि कौशिक (कुशिक) के वंश या गुणों से जोड़ती है। ऋषि कौशिक हिंदू ग्रंथों में एक प्राचीन और प्रमुख व्यक्ति हैं, जो सबसे प्रसिद्ध रूप से चंद्र वंश के जनक और विश्वामित्र के पिता हैं। ऐसे गहन ऋषि से जुड़ा होना गहन ज्ञान, तपस्या और आध्यात्मिक शक्ति से संबंध को दर्शाता है। यह सुझाव देता है कि कालभैरव इन गुणों को मूर्त रूप देते हैं या प्रदान करते हैं, या वे ऋषि के लिए अनुकूल रूप में प्रकट हुए, या ऋषि की आध्यात्मिक शक्ति का अंतिम स्रोत हैं। यह संबंध कालभैरव को एक पूजनीय और प्राचीन आध्यात्मिक अधिकार प्रदान करता है।

पाँच कोशों (आवरणों) में आच्छादित एक और गहन व्याख्या "कौशिका" को संस्कृत शब्द "कोश" से जोड़ती है, जिसका अर्थ है "आवरण" या "खोल"। वेदांत दर्शन में, मानव व्यक्तित्व को पाँच परतों या आवरणों में लिपटा हुआ समझा जाता है, जिन्हें पंच कोश (पाँच कोश) के रूप में जाना जाता है: अन्नमय (अन्न शरीर), प्राणमय (प्राण ऊर्जा शरीर), मनोमय (मन शरीर), विज्ञानमय (बुद्धि शरीर), और आनंदमय (आनंद शरीर)।

"जो पाँच कोशों में आच्छादित है" यह दर्शाता है कि कालभैरव, सार्वभौमिक आत्मा के रूप में, वह अंतर्निहित आत्मा है जो प्रत्येक प्राणी में अस्तित्व की इन सभी परतों के भीतर निवास करती है और उन्हें व्याप्त करती है। वह केवल बाहरी अभिव्यक्ति नहीं हैं, बल्कि वही चेतना हैं जो इन कोशों को चेतन करती है। इसका तात्पर्य है: • अंतर्व्यापकता: वह प्रत्येक व्यक्ति के मन, शरीर और आत्मा के भीतर उपस्थित हैं। • पारलौकिक उपस्थिति: यद्यपि वह कोशों के भीतर हैं, वह उनसे परे भी हैं, शुद्ध आत्मा (आत्मन) के रूप में जो इन आवरणों का अनुभव करती है लेकिन उनसे सीमित नहीं है। • समग्र सत्ता: यह नाम कालभैरव को अस्तित्व की कुल, एकीकृत वास्तविकता के रूप में स्वीकार करता है, सबसे स्थूल भौतिक (अन्नमय) से लेकर सबसे सूक्ष्म आध्यात्मिक (आनंदमय) और उससे परे तक।

इस प्रकार, कौशिकाया कालभैरव की प्रशंसा या तो ऋषि कौशिक के समान प्राचीन ज्ञान के अवतार के रूप में करता है या उस सर्वव्यापी दिव्य सार के रूप में करता है जो मानव अनुभव के पाँच कोशों के भीतर निवास करता है और उनसे परे है, जो व्यक्तिगत अस्तित्व को ब्रह्मांडीय सत्य से जोड़ता है।

124. कपिलाय

जो रक्ताभ-भूरे रंग के हैं, और महान ऋषि कपिल को नमन।

विस्तार : कपिलाय नाम, भगवान कालभैरव के भौतिक स्वरूप और उनके द्वारा समाहित दार्शनिक ज्ञान दोनों के साथ एक गहरे संबंध को दर्शाता है।

लाल-भूरा रंग "कपिल" का शाब्दिक अर्थ "लाल-भूरा" या "तपस्वी" होता है। यह रंग कुछ प्रतिमात्मक चित्रणों में शिव-भैरव के भौतिक स्वरूप का वर्णन करता है। लाल-भूरा रंग कई पहलुओं का प्रतीक हो सकता है: • भयंकर ऊर्जा और तपस्या: लाल रंग अक्सर तीव्र ऊर्जा, परिवर्तनकारी शक्ति और तपस्या से जुड़ा होता है। कालभैरव का भयंकर स्वरूप, एक दंड देने वाले के रूप में उनकी भूमिका और मृत्यु पर उनका नियंत्रण, सभी एक शक्तिशाली, तीव्र रंग के साथ प्रतिध्वनित होते हैं। • पार्थिव संबंध और आदिमता: भूरे रंग उन्हें पृथ्वी, आदिम शक्तियों और अस्तित्व के मूलभूत पहलुओं से जोड़ते हैं। वे वास्तविकता के ताने-बाने में निहित हैं। • कुंडलिनी शक्ति: कुछ तांत्रिक परंपराओं में, लाल-भूरे रंग जाग्रत कुंडलिनी शक्ति से जुड़े होते हैं, जो एक शक्तिशाली आध्यात्मिक जागरण और चेतना के अग्निमय आरोहण का प्रतीक है।

महान ऋषि कपिल शायद अधिक महत्वपूर्ण रूप से, "कपिल" प्राचीन वैदिक ऋषि, कपिल मुनि को भी संदर्भित करता है, जिन्हें पारंपरिक रूप से हिंदू दर्शन के सांख्य दर्शन के संस्थापक के रूप में श्रेय दिया जाता है। सांख्य प्रणाली सबसे पुरानी और सबसे प्रभावशाली विद्यालयों में से एक है, जो ब्रह्मांड को समझने के लिए एक द्वैतवादी ढाँचा (पुरुष और प्रकृति) प्रदान करती है। • ज्ञान का अवतार: कपिल के साथ पहचाने जाने या उन्हें समाहित करने से, कालभैरव को गहन आध्यात्मिक ज्ञान, विश्लेषणात्मक अंतर्दृष्टि और ब्रह्मांडीय समझ के अंतिम स्रोत के रूप में दिखाया गया है। वे केवल एक भयंकर देवता नहीं हैं, बल्कि प्रबुद्ध ज्ञान के साक्षात अवतार भी हैं। • दार्शनिक गहराई: यह जुड़ाव कालभैरव को केवल एक भयंकर रूप से ऊपर उठाकर एक ऐसे रूप में प्रस्तुत करता है जो सृष्टि, अस्तित्व और मुक्ति के गहरे दार्शनिक सत्यों को समाहित करता है। यह बताता है कि भय को पार करने और मुक्ति प्राप्त करने का मार्ग वास्तविकता की मूलभूत प्रकृति को समझना है, जैसा कि सांख्य द्वारा सिखाया गया है। • उत्कृष्ट ज्ञान: कपिल मुनि का ज्ञान, जो चेतन आत्मा (पुरुष) और आदिम पदार्थ (प्रकृति) के बीच अंतर करता है, आध्यात्मिक मुक्ति के लिए महत्वपूर्ण है। कालभैरव को यह नाम देना भक्तों को इस उत्कृष्ट ज्ञान की ओर मार्गदर्शन करने में उनकी भूमिका को दर्शाता है, जिससे वे वास्तविक और अवास्तविक के बीच अंतर कर सकें, और अंततः दुख से मुक्ति प्राप्त कर सकें।

इस प्रकार, कपिलाय भगवान कालभैरव को एक आकर्षक और विस्मयकारी दिव्य रूप और मुक्तिदायक ज्ञान के गहरे स्रोत के रूप में पूजता है, जिसका प्रतीक प्राचीन ऋषि कपिल हैं।

125. कुशलाय

जो निरंतर शुभ, कुशल और सभी बातों में पारंगत हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : संस्कृत से व्युत्पन्न नाम कुशल, पूर्णता, शुभता और कुशल विशेषज्ञता के इर्द-गिर्द केंद्रित एक बहुआयामी अर्थ को समाहित करता है।

शुभता (मंगलम्) कुशल मूलतः शुभता, कल्याण और समृद्धि को दर्शाता है। भगवान कालभैरव, कुशल के रूप में, उन सभी के स्रोत और अवतार हैं जो लाभकारी और अनुकूल हैं। उनकी उपस्थिति सकारात्मक परिस्थितियाँ लाती है, बाधाओं को दूर करती है, और अपने भक्तों को सौभाग्य से नवाज़ती है। यह पहलू न केवल बुराई को दूर करने वाले एक दुर्जेय के रूप में बल्कि कृपा प्रदान करने वाले और आध्यात्मिक व भौतिक कल्याण को बढ़ावा देने वाले के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है।

कौशल और निपुणता (कुशलता) यह शब्द कौशल, निपुणता और कार्य में उत्कृष्टता को भी दर्शाता है। कुशल के रूप में, भगवान कालभैरव अपनी सभी दिव्य गतिविधियों में अद्वितीय महारत प्रदर्शित करते हैं, चाहे वह सृष्टि हो, संरक्षण हो, विनाश हो, या मुक्ति प्रदान करना हो। उनके द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य पूर्ण सटीकता और ज्ञान के साथ निष्पादित होता है। यह अवधारणा उनके दिव्य खेल (लीला) और उनके धार्मिक दंड (दण्ड) तक फैली हुई है, ये दोनों ही ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने के लिए सर्वोच्च कौशल के साथ किए जाते हैं।

विशेषज्ञता और ज्ञान (पारगमता) कुशल का अर्थ विशेषज्ञता, गहन ज्ञान और बौद्धिक तीक्ष्णता भी है। भगवान कालभैरव के पास परम ज्ञान है; वे सभी सत्यों के ज्ञाता और सभी विज्ञानों व कलाओं के स्वामी हैं। वे ज्ञान और विवेक की तलाश करने वालों के लिए परम मार्गदर्शक हैं, जो उन्हें अज्ञान से दूर ज्ञान की ओर ले जाते हैं। उनकी विशेषज्ञता अस्तित्व के सभी क्षेत्रों को समाहित करती है, जिससे वे सभी मामलों में सर्वोच्च अधिकारी बन जाते हैं।

पूर्णता और अखंडता विशिष्ट कौशल से परे, कुशल पूर्णता और पूर्णता की एक अंतर्निहित स्थिति को दर्शाता है। यह बताता है कि कालभैरव त्रुटिहीन हैं और अस्तित्व की एक आदर्श स्थिति का प्रतीक हैं। यह पूर्णता केवल दोषों की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि उनके उच्चतम रूप में सभी गुणों और सकारात्मक विशेषताओं की सक्रिय उपस्थिति है।

इस प्रकार, कुशलाय को नमस्कार भगवान कालभैरव को सर्वोच्च शुभ, पूर्ण रूप से कुशल और सार्वभौमिक रूप से विशेषज्ञ दिव्य सत्ता के रूप में स्वीकार करता है जो कल्याण, कुशल कार्य और परम ज्ञान लाता है।

126. कर्त्रे

सभी ब्रह्मांडीय गतिविधियों के परम कर्ता और निष्पादक को नमन।

विस्तार : कर्त्रे (Kārtre) नाम संस्कृत मूल 'कृ' (kṛ) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "करना," "बनाना," या "कार्य करना।" कर्त्रे इस प्रकार "कर्ता," "निर्माता," या "अभिकर्ता" को दर्शाता है। कालभैरव के संदर्भ में, यह सभी ब्रह्मांडीय गतिविधियों के परम कर्ता के रूप में उनकी सर्वोच्च और एकतरफा शक्ति को संदर्भित करता है।

परम कर्ता परम कर्ता के रूप में, कालभैरव ब्रह्मांड की सभी रचना, संरक्षण और संहार के पीछे एकमात्र, परम शक्ति हैं। यह त्रिदेवी (ब्रह्मा निर्माता के रूप में, विष्णु संरक्षक के रूप में, शिव संहारक के रूप में) में अन्य देवताओं को सौंपी गई अधिक पारंपरिक भूमिकाओं से परे है। कालभैरव इन सभी कार्यों को निरपेक्ष, अद्वैत चेतना के रूप में समाहित करते हैं। वह आदि प्रेरक, सभी ब्रह्मांडीय प्रक्रियाओं के संयोजक हैं।

द्वैत से परे यह नाम इस बात पर जोर देता है कि ब्रह्मांड में कोई अन्य स्वतंत्र कर्ता नहीं है। सभी कार्य, चाहे वे अच्छे या बुरे, रचनात्मक या विनाशकारी के रूप में देखे जाते हों, अंततः उनकी इच्छा से उत्पन्न होते हैं और उनके द्वारा शासित होते हैं। यहां तक कि अन्य देवताओं, खगोलीय प्राणियों, मनुष्यों और सभी जीवित संस्थाओं के कार्य भी अंततः उनकी व्यापक ऊर्जा और इच्छा की अभिव्यक्ति हैं। वह बिना किसी बाहरी निर्भरता के निमित्त-कारण (nimitta-kāraṇa) हैं।

कर्म से मुक्ति भक्त के लिए, कालभैरव को कर्ता के रूप में समझना एक गहन आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है। यदि वह परम कर्ता है, तो व्यक्तिगत अहंकार की "मैं कर्ता हूँ" (kartṛtva-abhimāna) की भावना एक भ्रम है। व्यक्तिगत कर्तृत्व की इस भावना को त्यागना और कर्ता की दिव्य इच्छा के प्रति समर्पण करना व्यक्ति को कर्म के बंधन से मुक्त कर सकता है, क्योंकि फलों के प्रति अनासक्ति के साथ किए गए कार्य आत्मा को बांधना बंद कर देते हैं।

अंतर्निहित और उत्कृष्ट शक्ति कर्त्रे उनकी अंतर्निहितता – ब्रह्मांड के भीतर सभी कार्यों को चेतन करने वाली शक्ति के रूप में – और उनकी उत्कृष्टता – उस निरपेक्ष चेतना के रूप में जो सभी कार्यों से परे है, उनसे अप्रभावित है, फिर भी उनके प्रकटीकरण के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार है – दोनों को दर्शाता है।

127. कुमाराय

शाश्वत युवा, दिव्य पुत्र (भगवान कार्तिकेय के समान) को नमन।

विस्तार : कुमार नाम अर्थ से समृद्ध है, विशेष रूप से हिंदू परंपरा के भीतर।

शाश्वत युवा शाब्दिक रूप से, कुमार का अर्थ "लड़का" या "युवा" है। आध्यात्मिक और गूढ़ अर्थ में, यह शाश्वत युवावस्था को दर्शाता है, जिसका अर्थ है कि कालभैरव, एक प्राचीन और आदिम देवता होने के बावजूद, हमेशा ताज़ा, जीवंत और उम्र बढ़ने की प्रक्रिया या समय के क्षय से अछूते रहते हैं। यह पहलू सृजन और विनाश के चक्रों से परे उनकी पारलौकिक प्रकृति को दर्शाता है, जहाँ वे अपरिवर्तनीय, सदैव-नवीन चेतना हैं।

दिव्य पुत्र कुमार शब्द सबसे प्रसिद्ध रूप से भगवान कार्तिकेय (स्कंद, मुरुगन), शिव और पार्वती के पुत्र से जुड़ा है। कुमार के रूप में संबोधित किए जाने से, कालभैरव परोक्ष रूप से कार्तिकेय की युद्ध कौशल, ज्ञान और नेतृत्व गुणों से जुड़े हुए हैं। यह संबंध अज्ञान और बुराई के खिलाफ एक योद्धा के रूप में कालभैरव की भूमिका पर जोर देता है, जिसमें दिव्य सेनाओं के दिव्य सेनापति के समान दिव्य ऊर्जा और परिवर्तनकारी शक्ति होती है। यह उनके शुभ और शक्तिशाली वंश को दर्शाता है।

पवित्रता और मासूमियत कुमार पवित्रता और मासूमियत का भी सुझाव देते हैं, क्योंकि एक छोटे बच्चे को अक्सर भौतिक दुनिया की जटिलताओं और भ्रष्टाचार से अछूता माना जाता है। यह इंगित करता है कि कालभैरव, अपने अंतिम सार में, बेदाग और शाश्वत रूप से शुद्ध हैं, जो चेतना की प्राचीन अवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं।

आध्यात्मिक गुरु कभी-कभी, कुमार शब्द चार सनत्कुमारों को भी संदर्भित करता है, ब्रह्मा के मन से उत्पन्न पुत्र जिन्होंने शाश्वत रूप से युवा तपस्वी बने रहना चुना, जो गहन ज्ञान, आध्यात्मिक ज्ञान और वैराग्य का प्रतीक है। इस संदर्भ में, कुमार कालभैरव को एक सर्वोच्च आध्यात्मिक गुरु और दिव्य ज्ञान के प्रदाता के रूप में प्रतिनिधित्व करते हैं, जो भक्तों को मुक्ति की ओर ले जाते हैं।

128. कपटाय

मायावी या भ्रामक हो सकने वाले, दुष्ट और अज्ञानी को नमन।

विस्तार : कपट (Kapaṭāya) नाम भगवान कालभैरव के लिए एक उत्तेजक गुण है, क्योंकि यह एक नकारात्मक गुण को दर्शाता प्रतीत होता है। हालाँकि, हिंदू दर्शन की गहन और विरोधाभासी प्रकृति के भीतर, विशेष रूप से भैरव जैसे उग्र देवताओं के संदर्भ में, ऐसे शब्दों का एक बहुत गहरा, प्रतीकात्मक और अक्सर धार्मिक अर्थ होता है।

"धोखा देने वाले या मायावी" पहलू को संबोधित करना कपट का शाब्दिक अर्थ "धोखा," "छल," "धूर्तता" या "भ्रम" हो सकता है। यह एक पूजनीय देवता के लिए विरोधाभासी लग सकता है, लेकिन इसे कई प्रमुख संदर्भों में समझा जाना चाहिए:

• दिव्य लीला (खेल): कई वेदांतिक परंपराओं में ब्रह्मांड को ही दिव्य खेल या लीला का प्रकटीकरण माना जाता है, जिसे एक विस्तृत भ्रम (माया) के रूप में देखा जा सकता है। भैरव, परम वास्तविकता के रूप में, इस ब्रह्मांडीय भ्रम के स्वामी हैं। वे क्षणभंगुर संसार को वास्तविक के रूप में प्रस्तुत करके अज्ञानी को "धोखा" दे सकते हैं, इस प्रकार उन्हें कर्म के चक्र में खींचते हुए, जबकि ज्ञानियों को मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

• छिपा हुआ अनुग्रह: कभी-कभी, एक आध्यात्मिक मार्ग या दिव्य हस्तक्षेप सीमित मानवीय दृष्टिकोण से कठोर, भ्रमित करने वाला या यहाँ तक कि अनुचित भी लग सकता है। यह दिव्य "धोखे" या कपट का एक रूप है, जहाँ सच्चा, परोपकारी इरादा छिपा होता है। यह विश्वास और लचीलेपन की एक परीक्षा है, जो भक्त को गहरी समझ या एक मजबूत आध्यात्मिक नींव की ओर ले जाती है।

• दुष्टों को भ्रमित करना: दुष्टों और अज्ञानियों के लिए, भैरव के कार्य कपटपूर्ण लग सकते हैं। वे उन्हें ऐसे रास्तों पर ले जाते हैं जो सांसारिक लाभ का वादा करते प्रतीत होते हैं लेकिन अंततः उनके पतन का कारण बनते हैं, इस प्रकार ब्रह्मांडीय न्याय को लागू करते हैं। बुराई को खत्म करने की उनकी रणनीतियाँ हमेशा सीधी नहीं हो सकती हैं लेकिन वे अत्यंत प्रभावी होती हैं। वे अहंकारी प्राणियों को अपनी कमजोरियों को उजागर करने या ऐसी स्थितियों में डालने के लिए "धोखा" दे सकते हैं जहाँ उन्हें उनके उचित परिणाम भुगतने पड़ते हैं। इस अर्थ में, उनका "धोखा" धर्म को बनाए रखने के एक उच्च उद्देश्य की पूर्ति करता है।

ज्ञानियों को सशक्त बनाना, अज्ञानियों को दंडित करना अज्ञानियों और अधर्म (अधर्म) का अभ्यास करने वालों के लिए, कालभैरव का "धोखा" उनके अंतिम हिसाब-किताब का एक साधन है। उनके प्रतीत होने वाले अप्रत्याशित या रहस्यमय कार्य उनकी गलत तरीके से अर्जित शक्ति को अस्थिर करने या उनकी मूर्खता को उजागर करने का काम करते हैं। वे ऐसे भ्रम पैदा कर सकते हैं जो उन्हें आत्म-विनाश की ओर ले जाते हैं, जो कर्म के सिद्धांत को दर्शाता है कि व्यक्ति वही काटता है जो वह बोता है।

सच्चे साधक के लिए, यह नाम उन्हें सतही समझ या कठोर अपेक्षाओं से न जुड़ने की याद दिलाता है। आध्यात्मिक मार्ग में अक्सर पारंपरिक द्वंद्वों को पार करना शामिल होता है, जिसमें अच्छे और बुरे, सत्य और धोखे, जैसा कि सीमित मानव मन द्वारा माना जाता है, शामिल हैं। कपट, इस संदर्भ में, भैरव की सभी घटनाओं पर महारत को उजागर करता है, जिसमें मन के सूक्ष्म कार्य और भौतिक दुनिया के भ्रम शामिल हैं। यह परोक्ष रूप से भक्तों को दिखावे से परे गहरे सत्य की तलाश करने का आग्रह करता है।

129. क्षमाय

जो परम धैर्य और क्षमा के साक्षात् स्वरूप हैं, उनको नमन।

विस्तार : क्षमा (Kṣamā) नाम दिव्य के एक गहन और आवश्यक गुण को दर्शाता है, जो सर्वोच्च आध्यात्मिक गुणों को समाहित करता है।

धैर्य (तितिक्षा और धैर्य) (Patience - Titikṣā and Dhairya) क्षमा का प्राथमिक अर्थ "धैर्य" या "सहनशीलता" है। यह केवल मानवीय धैर्य नहीं, बल्कि एक अनंत, ब्रह्मांडीय धैर्य है। यह अनगिनत युगों तक बिना विचलित हुए सृष्टि, संरक्षण और संहार के विशाल चक्रों को सहन करने और बनाए रखने की दिव्य क्षमता को दर्शाता है। यह एक आध्यात्मिक गुरु की गहन सहनशीलता को भी दर्शाता है जो दुनिया की परेशानियों से अप्रभावित रहता है, अराजकता के बीच आंतरिक शांति बनाए रखता है। मानवीय साधकों के लिए, क्षमा आध्यात्मिक प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक अनुशासन (साधना) है, जो किसी को कठिनाइयों, उकसावों और अस्तित्व के द्वंद्वों (सुख और दुख, आनंद और पीड़ा) को समभाव से सहन करने की अनुमति देता है।

क्षमा (क्षमा) (Forgiveness - Kṣamā) दूसरे, क्षमा का अर्थ "माफी" है। यह प्राणियों के अपराधों, त्रुटियों और पापों को अनदेखा करने और क्षमा करने की दिव्य की असीम करुणा और क्षमता है। यह शिव के परोपकारी पहलू को दर्शाता है जो उन लोगों को भी कृपा और मोक्ष प्रदान करता है जो भटक गए हैं। यह दिव्य क्षमा कमजोरी का कार्य नहीं है, बल्कि अपार शक्ति, ज्ञान और प्रेम का कार्य है, जिसका उद्देश्य प्राणियों को सीखने, बढ़ने और धार्मिकता के मार्ग पर लौटने की अनुमति देना है। मनुष्यों के लिए, दूसरों और स्वयं के प्रति क्षमा (क्षमा) का अभ्यास नकारात्मक कर्म चक्रों से मुक्ति और आंतरिक शांति विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

पृथ्वी का अवतार (पृथ्वी के रूप में क्षमा) (Embodiment of Earth - Kṣamā as Earth) दिलचस्प बात यह है कि क्षमा शब्द "पृथ्वी" के लिए एक संस्कृत पर्याय भी है। यह संबंध गहरा प्रतीकात्मक है। जैसे पृथ्वी सभी प्राणियों का भार धैर्यपूर्वक वहन करती है, अपनी सतह पर सभी प्रकार की गतिविधियों को बिना शिकायत के सहन करती है, और लगातार सहायता और पोषण प्रदान करती है, वैसे ही दिव्य भी इस असीम दृढ़ता, स्वीकृति और उत्पादक शक्ति को समाहित करता है। यह एक सर्वव्यापी, पोषण करने वाली और स्थायी दिव्य उपस्थिति के विचार को पुष्ट करता है।

अनासक्ति और परोपकार (Stoicism and Benevolence) इस प्रकार, क्षमाय को नमन करना सार्वभौमिक प्रवाह के सामने दिव्य की सर्वोच्च अनासक्ति, सभी घटनाओं की गहन स्वीकृति, और एक असीम परोपकार की स्वीकृति है जो सभी को सहायता, धैर्य और क्षमा प्रदान करता है। यह हमें याद दिलाता है कि सच्ची ब्रह्मांडीय शक्ति केवल भयंकर प्रभुत्व के बारे में नहीं है, बल्कि अटूट करुणा और सहनशीलता के बारे में भी है।

130. कलाद्यदृशे

सभी कलाओं और विज्ञानों के आदि और परम द्रष्टा को नमन।

विस्तार : कलाद्यदृशे (Kalādyadṛśe) नाम कालभैरव का एक गहरा और जटिल विशेषण है, जो अर्थों की कई परतों को जोड़ता है। यह कला (Kalā), आदि (Ādi), और दृश् (Dṛś) से मिलकर बना है।

कला (कला/कौशल/समय) (Kalā - Art/Skill/Time) कला के कई महत्वपूर्ण अर्थ हैं। • कला या कौशल: यह कला, शिल्प, विज्ञान, तकनीकी दक्षता और ज्ञान के सभी रूपों को संदर्भित करता है। 64 कलाएँ अक्सर मानव प्रयास और दिव्य रचना के सभी क्षेत्रों को समाहित करने वाली मानी जाती हैं। • अंश या भाग: लौकिक अर्थ में, कला समय के एक छोटे से विभाजन, एक मिनट के अंश, या चंद्रमा के चरणों के सूक्ष्म विभाजनों को दर्शाती है। • शक्ति/अभिव्यक्ति: यह किसी देवता की दिव्य शक्तियों या अभिव्यक्तियों को भी संदर्भित कर सकता है।

आदि (प्रथम/प्रमुख/शुरुआत) (Ādi - First/Foremost/Beginning) आदि का अर्थ है "प्रथम," "शुरुआत," "आदिम," या "प्रमुख।" यह पूर्वता और मौलिकता को दर्शाता है।

दृश् (द्रष्टा/देखने वाला/साक्षी) (Dṛś - Seer/One Who Sees/Witness) दृश्, "दृश्" धातु से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ है "देखना," एक द्रष्टा, एक पर्यवेक्षक, या वह जो देखता है। गहरे अर्थ में, इसका तात्पर्य उस व्यक्ति से है जिसके पास प्रत्यक्ष, सहज और सर्वोच्च दृष्टि या ज्ञान है।

सभी कलाओं और विज्ञानों के प्रथम द्रष्टा (The First Seer of All Arts and Sciences) जब संयुक्त किया जाता है, तो कलाद्यदृशे का अर्थ है कि कालभैरव सभी कलाओं, विज्ञानों और कौशलों के आदिम और परम साक्षी, निर्माता और स्वामी हैं। वह मूल स्रोत हैं जिससे सभी ज्ञान, रचनात्मकता और तकनीकी क्षमता उत्पन्न होती है। वह केवल एक पर्यवेक्षक नहीं हैं, बल्कि वही चेतना हैं जो

कलाओं के पूरे स्पेक्ट्रम को जन्म देती है और देखती है। इसमें संगीत और नृत्य जैसी ललित कलाओं से लेकर व्यावहारिक विज्ञान, वास्तुकला और यहां तक कि सूक्ष्म ब्रह्मांडीय यांत्रिकी तक सब कुछ शामिल है।

रचनात्मक बुद्धिमत्ता का स्रोत (Source of Creative Intelligence) यह नाम सभी रचनात्मक बुद्धिमत्ता के स्रोत और सभी प्रकार के ज्ञान पर अंतिम अधिकार के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। किसी भी कला या विज्ञान के अभ्यासकर्ताओं के लिए, वह मार्गदर्शक सिद्धांत, प्रेरणा और महारत का उत्तम उदाहरण हैं। उनकी "देखना" निष्क्रिय अवलोकन नहीं है, बल्कि एक सक्रिय, कारणात्मक दृष्टि है जो कौशल और ज्ञान की इन सभी विभिन्न अभिव्यक्तियों को उत्पन्न करती है और बनाए रखती है।

लौकिक विभाजनों के स्वामी (Master of Temporal Divisions) कला के लौकिक पहलू पर विचार करते हुए, वह समय के सभी विभाजनों के परम साक्षी और स्वामी भी हैं, सबसे बड़े ब्रह्मांडीय चक्रों से लेकर सबसे छोटे अंशों तक। वह परम चेतना हैं जो सभी लौकिक घटनाओं को देखती और व्यवस्थित करती हैं।

131. कलाधाराय

सभी चौंसठ कलाओं के मूलभूत आधार और नींव स्वरूप को नमन।

विस्तार : कला और आधार से बना नाम कलाधारा, कलाओं, ज्ञान और सृष्टि के ताने-बाने से गहरा संबंध दर्शाता है, जिसमें कालभैरव उनके परम स्रोत और आधार हैं।

कला (Kalā): कलाएँ, विज्ञान और आयाम 'कला' शब्द बहुअर्थी है। यह मुख्य रूप से "कलाओं" या "कौशल" को संदर्भित करता है, जिनकी पारंपरिक संख्या चौंसठ (चतुःषष्टि कला) है। इनमें संगीत, नृत्य और चित्रकला से लेकर तर्कशास्त्र, दर्शनशास्त्र, वाक्पटुता और यहाँ तक कि युद्ध कला या आध्यात्मिक अनुशासन तक मानवीय प्रयासों की एक विशाल श्रृंखला शामिल है। इसके अलावा, कला का अर्थ "भाग," "विभाजन," "अंक," या "आयाम" भी हो सकता है, विशेष रूप से चंद्रमा की सोलह कलाओं (षोडश कला) या समय और स्थान के विभिन्न आयामों से संबंधित। ब्रह्मांडीय अर्थ में, कला दिव्य की रचनात्मक शक्तियों या अभिव्यक्तियों को भी संदर्भित करती है।

आधार (Ādhāra): सहारा, नींव और आधार आधार का अर्थ है "सहारा," "नींव," "आधार," या "पात्र।" यह उस चीज़ को दर्शाता है जो किसी और चीज़ के अस्तित्व या फलने-फूलने के लिए उसे बनाए रखती है, सहारा देती है और आधार प्रदान करती है।

सभी कलाओं और विज्ञानों के सर्वोच्च संरक्षक कलाधारा के रूप में, कालभैरव सभी चौंसठ कलाओं और विज्ञानों के परम स्रोत, पोषक और संरक्षक हैं। वह रचनात्मक अभिव्यक्ति, बौद्धिक खोज और कुशल कार्य के सभी रूपों के पीछे की दिव्य प्रेरणा हैं। इसका तात्पर्य है कि सच्ची कलात्मकता और ज्ञान अंततः उनसे उत्पन्न होते हैं और उनके द्वारा सन्निहित दिव्य चेतना की अभिव्यक्तियाँ हैं। उनकी भक्ति से रचनात्मक क्षमता और इन कलाओं पर महारत प्राप्त होती है।

ब्रह्मांडीय आयामों की नींव अधिक गूढ़ अर्थ में, वह ब्रह्मांड, समय और चेतना के विभाजन या आयामों के रूप में सभी "कलाओं" के लिए मूलभूत आधार हैं। वह वह अधोस्तर हैं जिस पर सभी ब्रह्मांडीय अभिव्यक्तियाँ, चरण और विभाजन टिके हुए हैं। वह सभी मौजूदा रूपों और उनके विभिन्न गुणों के लिए अस्तित्व का आधार हैं। यह समय के स्वामी के रूप में उनकी भूमिका से जुड़ता है, क्योंकि सभी आयाम और चरण उनके द्वारा शासित लौकिक प्रवाह के भीतर संरचित होते हैं।

रचनात्मक शक्ति के दाता कलाधारा का सम्मान करके, व्यक्ति रचनात्मक शक्ति और ज्ञान के दिव्य स्रोत को स्वीकार करता है, आध्यात्मिक विकास, कलात्मक उत्कृष्टता और ब्रह्मांड की समझ के लिए उस अनंत स्रोत से प्रेरणा लेने की कोशिश करता है।

132. कपालकण्ठाय

जिनके गले में कपालों की माला सुशोभित है, उन्हें नमन।

विस्तार : कपालकण्ठाय नाम शिव-भैरव के लिए एक गहरा पहचानकर्ता है, जो सीधे एक प्रमुख मूर्तिकला विशेषता और गहरे दार्शनिक सत्यों का प्रतीक है। यह कपाल (खोपड़ी), कंठ (गर्दन/गला), और -आय (एक चतुर्थी विभक्ति प्रत्यय जो "उस एक को" इंगित करता है) का एक यौगिक है।

खोपड़ियों की माला (कपालमाला) भैरव के गले या गर्दन के चारों ओर खोपड़ियों की माला (कपालमाला) की छवि उनकी सबसे आकर्षक और अक्सर परेशान करने वाली विशेषताओं में से एक है। यह केवल एक सजावटी तत्व नहीं है बल्कि शक्तिशाली प्रतीकों से भरा है। माला में प्रत्येक खोपड़ी को सृजन और विनाश के एक चक्र, एक मुक्त आत्मा, या अज्ञानता का प्रतीक राक्षस के सिर का प्रतिनिधित्व करने वाला कहा जाता है।

मृत्यु और समय पर प्रभुत्व कपालमाला भैरव के मृत्यु, क्षय और समय के अथक प्रवाह पर पूर्ण प्रभुत्व को स्पष्ट रूप से घोषित करती है। वह केवल मृत्यु का मानवीकरण नहीं है, बल्कि वह परम वास्तविकता है जो विनाश की शक्तियों को नियंत्रित करती है और उनसे परे है। खोपड़ियों से स्वयं को सुशोभित करना यह दर्शाता है कि उन्होंने जन्म और मृत्यु (संसार) के चक्र को जीत लिया है और अनित्यता के पराजित रूपों को अपनी ट्रॉफी के रूप में धारण करते हैं। यह भयानक अलंकरण उनके भक्तों को आश्वस्त करता है कि वह उन्हें मृत्यु के भय को दूर करने और अंततः उससे परे जाने में भी मदद कर सकते हैं।

ज्ञान और मुक्ति का प्रतीक गहरे गूढ़ अर्थ में, खोपड़ी ज्ञान के "सिर" या भंडार (शिरस) का प्रतीक हो सकती है। उन्हें धारण करना भैरव को सभी ज्ञान के अंतिम भंडार और मुक्ति (मोक्ष) के दाता के रूप में दर्शाता है। प्रत्येक खोपड़ी संस्कृत वर्णमाला के एक अक्षर का भी प्रतिनिधित्व कर सकती है, इस प्रकार माला ध्वनि और सृष्टि की संरचना का प्रतीक है, जिससे वह पवित्र वाक् या आदिम ध्वनि का अवतार बन जाते हैं।

भ्रम का नाश करने वाला खोपड़ियों की माला सहित भयावह उपस्थिति, आध्यात्मिक साधक को आत्मसंतुष्टि और मायावी दुनिया (माया) से लगाव से बाहर निकालने का काम करती है। यह सभी भौतिक अस्तित्व की अनित्यता और भौतिक रूपों से परे स्वयं के अंतिम सत्य की एक स्पष्ट याद दिलाता है। दिव्य के इस भयानक पहलू का सामना करके, व्यक्ति अपने स्वयं के भ्रम और अहंकार का सामना करता है और अंततः उन्हें भंग कर देता है, जिससे आध्यात्मिक जागृति होती है।

133. कपालभृते

कपाल-पात्र धारण करने वाले (अंतिम वैराग्य का प्रतीक) को नमन।

विस्तार : कपालभृते (कपालभृत्) नाम उस एक को संदर्भित करता है जो कपाल, एक खोपड़ी का कटोरा धारण करता है। यह प्रतिमा हिंदू धर्म में, विशेष रूप से भगवान शिव और उनके भैरव रूप की उग्र देवताओं की प्रतिमा विज्ञान के लिए असाधारण रूप से शक्तिशाली और केंद्रीय है।

कपाल: वैराग्य और अनासक्ति का प्रतीक कपाल एक मानव खोपड़ी है, अक्सर एक खोपड़ी का ऊपरी भाग, जिसे भिक्षापात्र में बदल दिया जाता है। इसका उपयोग कई गहन आध्यात्मिक अवधारणाओं को दर्शाता है:

• पूर्ण अनासक्ति: खोपड़ी का कटोरा धारण करना वैराग्य और अत्यधिक संन्यास की परम अभिव्यक्ति है। यह सांसारिक आसक्तियों, अहंकार और मृत्यु के भय से पूर्ण स्वतंत्रता का प्रतीक है। भैरव जैसे देवता के लिए ऐसे प्रतीक को धारण करना इस शिक्षा को रेखांकित करता है कि दिव्य भी अस्तित्व की क्षणभंगुर प्रकृति को अपनाता है।

• मृत्यु पर विजय: खोपड़ी का कटोरा मृत्यु (मृत्यु) और अनित्यता (अनित्य) की निरंतर याद दिलाता है। इसे अपनाकर, भैरव मृत्यु और संसार के चक्र पर अपनी महारत का प्रदर्शन करते हैं। वह मृत्यु के सार का उपभोग करते हैं, इसे आध्यात्मिक पोषण के लिए एक पात्र में बदलते हैं।

• साधारण से पवित्र: शिव या भैरव के हाथों में, घृणित और अनुष्ठानिक रूप से अशुद्ध वस्तु—एक मानव खोपड़ी—एक पवित्र पात्र में बदल जाती है, जिसमें अक्सर प्रसाद होता है या जो अमरता के अमृत या राक्षसों के रक्त के लिए एक पात्र के रूप में कार्य करता है। यह पारंपरिक शुद्धता और अशुद्धता के अतिक्रमण का प्रतीक है, यह दर्शाता है कि दिव्य किसी भी चीज़ को पवित्र कर सकता है।

• भिक्षु और तपस्वी: परंपरागत रूप से, तपस्वी, विशेष रूप से कपालिक और अघोरी परंपराओं से संबंधित, अपनी साधना के हिस्से के रूप में खोपड़ी के कटोरे धारण करते थे। भैरव, कपालभृत् के रूप में, ऐसे अत्यधिक तपस्वियों के दिव्य आदिम रूप हैं, जो दान पर जीते हैं और भौतिक संपत्ति से पूरी तरह से अप्रभावित हैं।

परम शक्ति और विनाश खोपड़ी सिर और मन का भी प्रतिनिधित्व करती है। जब भैरव इसे धारण करते हैं, तो वह वह हैं जिन्होंने व्यक्तिगत मन और अहंकार पर विजय प्राप्त की है और उसे पार कर लिया है। यह ब्रह्मांडीय मन पर उनकी शक्ति और सभी निर्मित रूपों के विघटन में उनकी भूमिका का प्रतीक है।

दार्शनिक महत्व कपालभृत् भयावह फिर भी ज्ञानवर्धक सत्य का प्रतीक है कि सभी भौतिक रूप अंततः क्षणभंगुर हैं और निराकार में विलीन होने के लिए नियत हैं। यह भक्त को अपनी मृत्यु और अहंकार का सामना करने के लिए चुनौती देता है, जिससे गहरी आध्यात्मिक प्राप्ति और मुक्ति मिलती है।

134. कैलासशिखरावासाय

कैलाश पर्वत के सर्वोच्च, परम पवित्र शिखर पर निवास करने वाले (भगवान भैरव) को नमन।

विस्तार : कैलासशिखरावास नाम एक यौगिक संस्कृत शब्द है जो शिव के निवास और सार के एक गहन पहलू का वर्णन करता है। यह कैलाश, शिखर और आवास को जोड़ता है।

कैलाश: यह हिमालय में स्थित पूज्य पवित्र पर्वत कैलाश पर्वत को संदर्भित करता है, जिसे भगवान शिव और देवी पार्वती का शाश्वत निवास स्थान माना जाता है।

शिखर: शाब्दिक अर्थ "चोटी" या "शिखर"। आध्यात्मिक संदर्भ में, यह उच्चतम बिंदु, पराकाष्ठा, या आध्यात्मिक प्राप्ति की पराकाष्ठा को भी दर्शाता है।

आवास: अर्थ "निवास," "धाम," या "घर।"

उच्चतम शिखर पर निवास यह नाम सीधे तौर पर यह दर्शाता है कि भगवान कालभैरव, शिव के एक स्वरूप के रूप में, कैलाश पर्वत के उच्चतम शिखर पर निवास करते हैं। यह केवल एक भौगोलिक स्थान नहीं है बल्कि एक गहरा प्रतीकात्मक स्थान है। कैलाश पर्वत को अक्ष मुंडी (axis mundi), ब्रह्मांड का ब्रह्मांडीय केंद्र और सभी आध्यात्मिक शक्ति का स्रोत माना जाता है। इसका शिखर आध्यात्मिक उपलब्धि और मुक्ति की परम पराकाष्ठा का प्रतिनिधित्व करता है।

शिखर का प्रतीकवाद "उच्चतम शिखर" कई गहन सत्यों को दर्शाता है: • अतिक्रमण (Transcendence): यह सांसारिक दुनिया, कर्म की सीमाओं और जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) से परे शिव के अतिक्रमण का प्रतिनिधित्व करता है। वे शुद्ध चेतना की स्थिति में निवास करते हुए शाश्वत रूप से मुक्त हैं। • पवित्रता और तपस्या (Purity and Austerity): कैलाश का प्राचीन, बर्फ से ढका और दुर्गम शिखर पूर्ण पवित्रता, वैराग्य और आध्यात्मिक आरोहण के लिए आवश्यक कठोर तपस्या (तपस) का प्रतीक है। • दिव्य ऊर्जा का स्रोत (Source of Divine Energy): शिव के निवास के रूप में, कैलाश को अपार आध्यात्मिक ऊर्जा, तांत्रिक शक्ति और परम ज्ञान का भंडार माना जाता है। इसके शिखर पर निवास करने का अर्थ है इस ऊर्जा का प्रत्यक्ष स्रोत और नियंत्रक होना। • परम आध्यात्मिक लक्ष्य (Ultimate Spiritual Goal): भक्तों के लिए, "कैलाशशिखर" तक पहुंचना लाक्षणिक रूप से चेतना की उच्चतम अवस्था, समाधि, या मोक्ष (मुक्ति) प्राप्त करना है, जहाँ व्यक्ति सर्वोच्च दिव्य के साथ विलीन हो जाता है।

ब्रह्मांडीय शासन (Cosmic Governance) कैलाश के शिखर पर निवास करके, कालभैरव को ब्रह्मांड के सर्वोच्च शासक और पर्यवेक्षक के रूप में चित्रित किया गया है, एक विरक्त फिर भी सर्वव्यापी दृष्टिकोण से। वे शक्ति के इस परम आसन से समय और अस्तित्व के चक्रों को नियंत्रित करते हैं, सृष्टि और विनाश दोनों की देखरेख करते हैं।

संक्षेप में, कैलासशिखरावास कालभैरव के सर्वोच्च अधिकार, पारलौकिक प्रकृति, गहन पवित्रता और उस परम आध्यात्मिक लक्ष्य को रेखांकित करता है जिसका वे समय और स्थान के स्वामी के रूप में प्रतिनिधित्व करते हैं।

135. कुबेराय

समस्त धन और कोषों के स्वामी, कुबेर को नमन।

विस्तार : कुबेराय नाम भगवान कुबेर को संदर्भित करता है, जो देवताओं के दिव्य कोषाध्यक्ष हैं, जिन्हें हिंदू पौराणिक कथाओं में धन, ऐश्वर्य और समृद्धि के देवता के रूप में पूजा जाता है। कालाभैरव के लिए "कुबेराय" विशेषण, शिव के भयंकर स्वरूप और भौतिक प्रचुरता के परोपकारी दाता के बीच एक गहरा संबंध और पहचान दर्शाता है। यह अभिसरण शैव धर्म के भीतर गहरे दार्शनिक और आध्यात्मिक सत्यों को प्रकट करता है।

धन के स्वामी और देवताओं के कोषाध्यक्ष कुबेर को उत्तर दिशा के संरक्षक (उत्तर के दिक्पाल) और सभी सांसारिक और भूमिगत खजानों के अधिपति के रूप में मनाया जाता है। उन्हें अक्सर सोने या रत्नों के घड़े और कभी-कभी नेवले के साथ चित्रित किया जाता है, जो लालच पर विजय का प्रतीक है। उनकी भूमिका केवल धन का स्वामी होना नहीं है, बल्कि इसे उन लोगों के बीच न्यायपूर्वक वितरित करना है जो कर्म-योग्य हैं। इस संदर्भ में, "कुबेराय" नाम भौतिक क्षेत्र और समृद्धि तथा प्रचुरता को नियंत्रित करने वाली शक्तियों पर भैरव के नियंत्रण पर जोर देता है।

सभी धन का स्रोत (भौतिक और आध्यात्मिक) कुबेर के साथ पहचान करके, कालाभैरव को उस परम स्रोत के रूप में स्वीकार किया जाता है जिससे सभी धन, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों, प्रवाहित होते हैं। जबकि कुबेर धन के प्रबंधक हैं, भैरव, शिव के एक रूप के रूप में, सभी अस्तित्व के मौलिक जनरेटर और पालक हैं, जिसमें वे संसाधन भी शामिल हैं जो धन का गठन करते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि सच्ची समृद्धि (आनंद) केवल सोने का संचय नहीं है, बल्कि वह व्यापक कल्याण है जो दिव्य इच्छा के साथ संरेखित होने से आता है।

समृद्धि के दाता और गरीबी के निवारक कुबेराय नाम के माध्यम से कालाभैरव का आह्वान अभाव पर विजय पाने और समृद्धि को आकर्षित करने के लिए एक प्रार्थना है। यह दर्शाता है कि भैरव में भक्तों को भौतिक सुख-सुविधाओं का आशीर्वाद देने और वित्तीय सुरक्षा से संबंधित बाधाओं को दूर

करने की शक्ति है। हालांकि, यह केवल एक बाहरी कार्य नहीं है; भैरव आत्मा की आंतरिक गरीबी, अज्ञानता और आसक्ति को भी दूर करते हैं जो किसी को सच्ची आध्यात्मिक संपत्ति का अनुभव करने से रोकते हैं।

द्वैत से परे भैरव का भयंकर पहलू, जो अक्सर श्मशान घाटों और सांसारिक भ्रमों से विरक्ति से जुड़ा होता है, कुबेर की प्रचुरता के विपरीत प्रतीत होता है। हालांकि, यह विरोधाभास तांत्रिक दर्शन के एक प्रमुख सिद्धांत पर प्रकाश डालता है: दिव्य सभी द्वैत को समाहित करता है। भैरव, जो समय और विनाश को नियंत्रित करते हैं, वे प्रकटीकरण और पोषण को भी नियंत्रित करते हैं। वे भक्तों को यह पहचानने के लिए मार्गदर्शन करते हैं कि सच्चा धन क्षणभंगुर भौतिक संपत्तियों से परे है, जबकि साथ ही यह सुनिश्चित करते हैं कि उनकी सांसारिक आवश्यकताएं आध्यात्मिक प्रगति को सुविधाजनक बनाने के लिए पूरी हों। वे उन लोगों को भौतिक वरदान प्रदान करते हैं जो धर्म (धार्मिकता) के लिए ऐसी प्रचुरता का उपयोग करने के लिए आध्यात्मिक रूप से तैयार हैं।

136. कीर्तिभूषणाय

जिनकी असीम प्रसिद्धि और महिमा ही उनका वास्तविक आभूषण और अलंकरण है, उन (भगवान भैरव) को नमन।

विस्तार : कीर्तिभूषणाय नाम दो संस्कृत शब्दों: कीर्ति और भूषण से बना एक गहरा विशेषण है।

कीर्ति: इस शब्द का अर्थ है "प्रसिद्धि," "महिमा," "ख्याति," "लोकप्रियता," "रिपोर्ट," और "प्रशंसा।" यह उस व्यापक पहचान और उच्च सम्मान को दर्शाता है जिसमें किसी व्यक्ति या देवता को उनके कार्यों, शक्ति और अंतर्निहित प्रकृति के कारण रखा जाता है।

भूषण: इस शब्द का अर्थ है "आभूषण," "अलंकरण," "सजावट," या "शोभा।" यह ऐसी किसी भी चीज़ को संदर्भित करता है जो सुंदरता या स्थिति को बढ़ाती है।

महिमा का आभूषण जब कीर्तिभूषण के रूप में संयोजित किया जाता है, तो यह वाक्यांश ऐसे व्यक्ति का वर्णन करता है जिसका मूल आभूषण, जिसका स्वयं का अलंकरण, उसकी अपार प्रसिद्धि और प्रतिष्ठित महिमा है। सांसारिक प्राणियों के विपरीत जो स्वयं को गहनों, सुंदर वस्त्रों या स्थिति के बाहरी प्रतीकों से सजाते हैं, सर्वोच्च सत्ता का अंतर्निहित वैभव और उनके दिव्य गुणों की सार्वभौमिक पहचान ही उनका अलंकरण है।

शाश्वत और आंतरिक अलंकरण यह नाम कालभैरव की महिमा की पारलौकिक प्रकृति पर प्रकाश डालता है। उनकी प्रसिद्धि कुछ ऐसी नहीं है जिसे बाहर से प्राप्त किया गया हो या दिया गया हो; यह उनके अस्तित्व का एक आंतरिक पहलू है, जो उनकी चेतना के समान शाश्वत और व्यापक है। उनके सभी भयंकर कार्य, समय और मृत्यु पर उनकी शक्ति, संरक्षक और दंड देने वाले के रूप में उनकी भूमिका, और भक्तों के प्रति उनकी परम करुणा इस महिमा में योगदान करती है।

भौतिकता का अतिक्रमण कीर्तिभूषण की अवधारणा सूक्ष्म रूप से दिव्य के लिए सच्चे अलंकरण के रूप में भौतिक संपत्तियों की निरर्थकता को रेखांकित करती है। जबकि देवताओं को अक्सर विस्तृत आभूषणों के साथ चित्रित किया जाता है, ये प्रतीकात्मक होते हैं। कालभैरव के लिए, उनका सच्चा आभूषण उनकी अटूट और अतुलनीय कीर्ति है, जो ब्रह्मांड भर में लगातार चमकती रहती है, विस्मय, श्रद्धा और भक्ति को प्रेरित करती है। उनकी महिमा उनकी सुंदरता, उनकी शक्ति और उनका सार है, जो पूरे अस्तित्व में विकीर्ण होता है।

137. कालज्ञानाय

भूत, वर्तमान और भविष्य - तीनों कालों के पूर्ण ज्ञान के स्वामी को नमन।

विस्तार : कालज्ञानिन् (कालज्ञानिने) नाम दो संस्कृत मूलों से लिया गया है: काल और ज्ञानिन्।

• काल (Kāla): समय। यह समय की संपूर्णता को संदर्भित करता है, जिसमें इसके तीनों आयाम शामिल हैं: भूत (past), वर्तमान (present) और भविष्य (future)। काल केवल एक रेखीय प्रगति नहीं है, बल्कि वह मूलभूत शक्ति है जो सृष्टि, पालन और संहार को नियंत्रित करती है। कालभैरव के रूप में, वे काल के ही साक्षात् स्वरूप और स्वामी हैं। • ज्ञानिन् (Jñānin): वह जो ज्ञान (Jñāna) रखता है, विशेष रूप से गहन आध्यात्मिक ज्ञान या पूर्ण समझ।

समय का सर्वव्यापी ज्ञान (All-Encompassing Knowledge of Time) यह नाम भगवान की समय के सभी रूपों में पूर्ण और सटीक समझ को दर्शाता है। वे केवल घटनाओं से अवगत नहीं हैं, बल्कि कारण और प्रभाव के जटिल जाल को समझते हैं जो अनंत लौकिक चक्रों में फैला हुआ है। यह ज्ञान खंडित नहीं, बल्कि पूर्ण और तात्कालिक है।

नियति पर प्रभुत्व (Mastery Over Destiny) क्योंकि कालभैरव के पास कालज्ञान है, वे नियति (कर्म) के परम नियंता हैं। वे सभी कार्यों के परिणाम और ब्रह्मांड के नियत प्रकटीकरण को जानते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि वे अनुक्रमिक समय की सीमाओं से परे हैं, एक शाश्वत वर्तमान में विद्यमान हैं जहाँ सभी लौकिक पहलुओं को एक साथ अनुभव किया जाता है।

समस्त ज्ञान का स्रोत (The Source of All Wisdom) 'काल के ज्ञाता' के रूप में, वे सत्य के उद्घाटक और ज्ञान के दाता भी हैं जो इसे खोजते हैं। उनका ज्ञान ब्रह्मांडीय अभिव्यक्ति और संहार (सृष्टि, स्थिति, संहार) के चक्रों, धर्म के सिद्धांतों और मुक्ति (मोक्ष) के मार्ग तक फैला हुआ है। भक्तों के लिए, कालज्ञानिन् को नमन करने का अर्थ है उनकी सर्वोच्च सर्वज्ञता को स्वीकार करना और उस एक से मार्गदर्शन प्राप्त करना जो वास्तव में भूत, वर्तमान और भविष्य को जानता है।

138. कलावासाय

सभी कलाओं और कौशल के सर्वोच्च निवास स्थान को नमन।

विस्तार : कलावास (Kalāvāsa) नाम कला (Kalā) और वास (Vāsa) का एक यौगिक है।

कला (Kalā): कला, कौशल, और भाग/चरण कला संस्कृत में एक बहुआयामी शब्द है जिसका अर्थ "कला," "कौशल," "तकनीक," "प्रदर्शन," "प्रतिभा," या "शिल्प" है। इसमें रचनात्मक अभिव्यक्ति के सभी रूप, मानवीय सरलता, और यहाँ तक कि समय के सूक्ष्म विभाजन (जैसे चंद्रमा की कला, उसके चरणों का जिक्र करते हुए) या किसी चीज़ का एक छोटा सा हिस्सा भी शामिल है। व्यापक अर्थ में, यह भारत में पोषित 64 पारंपरिक कलाओं को संदर्भित करता है, जिसमें संगीत और नृत्य से लेकर वास्तुकला, कविता और यहाँ तक कि व्यावहारिक कौशल भी शामिल हैं।

वास (Vāsa): निवास, धाम, स्थान वास का अर्थ "निवास," "रहने का स्थान," या "घर" है। यह एक स्रोत, एक भंडार और एक मूलभूत स्थान का तात्पर्य है।

समस्त कलाओं और कौशलों का सर्वोच्च निवास इस प्रकार, कलावास का अर्थ है "समस्त कलाओं का निवास।" इसका तात्पर्य है कि कालभैरव कलात्मक अभिव्यक्ति और कौशल के सभी रूपों के परम स्रोत, संरक्षक और अवतार हैं। वह रचनात्मकता, महारत और हर क्षेत्र में विशेषज्ञता के पीछे की दिव्य प्रेरणा हैं। चाहे वह किसी दिव्य प्राणी का जटिल नृत्य हो, किसी मूर्तिकार की सटीक कारीगरी हो, किसी संगीतकार के मधुर स्वर हों, या किसी दार्शनिक की गहन अंतर्दृष्टि हो, सभी अपना सार और पूर्णता कालभैरव से प्राप्त करते हैं।

सूक्ष्म विभाजनों के स्वामी कला के अर्थ को "भाग" या "चरण" के रूप में जोड़कर, यह नाम अस्तित्व, समय और चेतना के सूक्ष्म विभाजनों पर उनकी महारत का भी तात्पर्य है। वह वह हैं जो ब्रह्मांड के जटिल कार्यों को व्यवस्थित करते हैं, सृष्टि का प्रत्येक "भाग" या "चरण" उनकी दिव्य इच्छा के अनुसार प्रकट होता है।

रचनाकारों के संरक्षक कलावास का आह्वान यह स्वीकार करना है कि सच्ची कलात्मक उत्कृष्टता और गहन कौशल केवल मानवीय प्रयास नहीं हैं, बल्कि दिव्य से ओत-प्रोत और सशक्त हैं। वह परम प्रेरणा और वह स्रोत हैं जहाँ से सभी रचनात्मकता प्रवाहित होती है, यह याद दिलाते हुए कि कला और कौशल का पीछा दिव्य तक पहुँचने का एक मार्ग हो सकता है।

139. कोपिताय

दुष्टता और अन्याय के प्रति अत्यंत क्रोधित होने वाले को नमन।

विस्तार : 'कोपिताय' नाम दिव्य के एक शक्तिशाली और गहन पहलू को दर्शाता है, विशेष रूप से भैरव के रूप में शिव की अभिव्यक्तियों के लिए प्रासंगिक है। 'कोप' का अर्थ है "क्रोध," "गुस्सा," या "आक्रोश," और 'कोपित' का अर्थ है "जो अत्यंत क्रोधी" या "क्रुद्ध" है।

अधर्म के विरुद्ध दिव्य क्रोध यह क्रोध अहंकार से प्रेरित एक सांसारिक मानवीय भावना नहीं है, बल्कि एक पारलौकिक, दिव्य आक्रोश है। यह अधर्म (अन्याय), अज्ञानता और बुराई के विरुद्ध एक आवश्यक और धार्मिक शक्ति है जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) को बाधित करती है। भैरव का क्रोध एक शुद्ध करने वाली ज्वाला है जो नकारात्मकता को नष्ट करने और संतुलन को फिर से स्थापित करने का प्रयास करती है। यह ब्रह्मांडीय प्रशासन और न्याय के लिए एक दुर्जेय उपकरण है।

क्रोध का उद्देश्य उनका क्रोध कभी भी यादृच्छिक या अनियंत्रित नहीं होता है। यह हमेशा उद्देश्यपूर्ण, निर्देशित और अंततः अपने इरादे में परोपकारी होता है, जिसका लक्ष्य उन शक्तियों से ब्रह्मांड को मुक्त करना है जो आध्यात्मिक विकास और सद्भाव को बाधित करती हैं। भक्त के लिए, इसका अर्थ है कि भैरव का क्रोध उनके आंतरिक शत्रुओं (विकारों) जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर के विरुद्ध होता है। यह आध्यात्मिक प्राप्ति के लिए इन आंतरिक बाधाओं के विनाश को दर्शाता है।

परिवर्तन और मुक्ति भैरव के कोप का अनुभव, हालांकि दुर्जेय है, अंततः परिवर्तनकारी होता है। जो लोग अधर्म से चिपके रहते हैं, उनके लिए यह भयानक दंड के रूप में प्रकट होता है। जो लोग मुक्ति और पवित्रता चाहते हैं, उनके लिए उनका क्रोध कर्म के अवशेषों और अशुद्धियों को जला देता है, जिससे गहन आध्यात्मिक शुद्धि और दुख के चक्र से मुक्ति मिलती है।

न्याय का प्रतीक कोपिताय के रूप में, भैरव इस सिद्धांत का प्रतीक हैं कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखा जाएगा, और जो धर्म का उल्लंघन करते हैं उन्हें अनिवार्य परिणामों का सामना करना पड़ेगा। वह न्याय के अंतिम प्रदाता हैं, जिनका क्रोध बुराई पर अच्छाई की अंतिम विजय सुनिश्चित करता है।

140. कान्तविग्रहाय

सुन्दर, मनमोहक और चित्ताकर्षक शारीरिक रूप धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : कान्तविग्रहाय नाम दो संस्कृत शब्दों कान्त और विग्रह का एक यौगिक है।

कान्तः इस शब्द के अर्थ की कई परतें हैं, जो सभी आकर्षण और मोह का सुझाव देती हैं। इसका अनुवाद "प्यारा," "सुंदर," "वांछनीय," "मनमोहक," "सुखद," और "आकर्षक" के रूप में होता है। यह एक मनमोहक सुंदरता का तात्पर्य है जो केवल सतही नहीं है बल्कि इसमें एक अंतर्निहित आकर्षण भी है।

विग्रहः यह "रूप," "शरीर," "आकृति," "आकार," या "अभिव्यक्ति" को संदर्भित करता है। दार्शनिक संदर्भ में, यह किसी देवता के एक विशिष्ट भौतिक या प्रकट अवतार को दर्शाता है।

मनमोहक रूप जब संयुक्त किया जाता है, तो कान्तविग्रह एक ऐसे दिव्य प्राणी का वर्णन करता है जिसका रूप पूरी तरह से मनमोहक और आकर्षक है। जबकि भैरव को आमतौर पर भयानक और उग्र अभिव्यक्तियों से जोड़ा जाता है, यह नाम एक विरोधाभासी पहलू को प्रकट करता है: एक छिपा

हुआ या वैकल्पिक रूप जो अत्यंत सुंदर और मोहक है। यह सुंदरता केवल सौंदर्यपरक नहीं है बल्कि इसमें एक आध्यात्मिक चुंबकत्व है जो भक्तों को उसकी ओर खींचता है।

भयानक से परे यह नाम शिव और उनके भैरव जैसे उग्र पहलुओं की बहुआयामी प्रकृति में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। यह बताता है कि दिव्य की सबसे दुर्जेय अभिव्यक्तियाँ भी अत्यधिक आकर्षण और सुंदरता के रूप धारण कर सकती हैं। यह एक अनुस्मारक है कि दिव्य एक ही रूप तक सीमित नहीं है बल्कि अनगिनत तरीकों से प्रकट हो सकता है, प्रत्येक एक अद्वितीय उद्देश्य की पूर्ति करता है। यह "प्यारा रूप" उन लोगों द्वारा माना जा सकता है जिन्होंने भय को पार कर लिया है और उग्र पहलुओं के पीछे भी अंतर्निहित कृपा और परोपकारिता को समझने में सक्षम हैं।

आध्यात्मिक चुंबकत्व और आकर्षण "मनमोहक" पहलू एक आध्यात्मिक चुंबकत्व का तात्पर्य है। यह रूप आत्माओं को आकर्षित करता है, भय के कारण नहीं, बल्कि अपनी अंतर्निहित दिव्यता और पूर्णता के कारण। भक्त के लिए, कान्तविग्रह पर ध्यान करना दिव्य कृपा के अनुभव और एक तीव्र आध्यात्मिक आकर्षण का प्रतीक हो सकता है जो भय या कठोरता की प्रारंभिक धारणाओं को पार करता है। यह सर्वोच्च सत्ता की आंतरिक सुंदरता और आनंदमय प्रकृति की ओर इशारा करता है, भले ही वह बाहरी उग्रता से ढका हो।

141. कवचीने

उस देव को नमन जो अभेद्य, दिव्य कवच से सुशोभित हैं।

विस्तार : कवचिने नाम संस्कृत शब्द कवचिन् (Kavacin) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "कवच धारण करने वाला" या "कवचधारी"। कालभैरव के लिए यह उपाधि एक परम रक्षक और एक अजेय दिव्य योद्धा के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाती है।

दिव्य सुरक्षा कवच कवचिन् एक ऐसे प्राणी को दर्शाता है जो शाश्वत रूप से एक दिव्य, अभेद्य कवच में आच्छादित है। यह कवच केवल एक भौतिक ढाल नहीं है, बल्कि उनकी अंतर्निहित शक्ति, अजेयता और अपने भक्तों को प्रदान की जाने वाली सुरक्षा का एक प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व है। यह दिव्य कवच उनके पूर्ण, अकाट्य स्वरूप का प्रतिनिधित्व करता है, जो उन्हें किसी भी नुकसान, भ्रम या बाधा से अप्रभावित बनाता है।

अजेयता का प्रतीक हिंदू परंपरा में, कवच (कवच) को भौतिक और आध्यात्मिक दोनों तरह के बाहरी खतरों से सुरक्षा से जोड़ा जाता है। जब कालभैरव जैसे देवता पर लागू किया जाता है, तो यह उनकी परम अजेयता को दर्शाता है। वह नकारात्मक शक्तियों, कर्मिक प्रतिफल और माया के भ्रम से परे हैं। यह कवच उनकी अंतर्निहित शक्ति और उन लोगों से सभी प्रकार की बुराई, भय और नकारात्मकता को दूर करने की उनकी क्षमता का एक प्रकटीकरण है जो उनकी शरण लेते हैं।

सत्य और धर्म की रक्षा कालभैरव का कवच ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) और सत्य की रक्षा के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता का भी प्रतीक है। जिस प्रकार एक योद्धा स्वयं की रक्षा करने और न्याय बनाए रखने के लिए कवच पहनता है, उसी प्रकार कालभैरव, कवचिन् के रूप में, धर्म के शाश्वत संरक्षक के रूप में खड़े हैं, जो ब्रह्मांड को अराजकता और विनाशकारी शक्तियों से बचाते हैं।

आध्यात्मिक अभेद्यता भक्तों के लिए, कालभैरव को कवचिन् के रूप में contemplat करना आध्यात्मिक अभेद्यता की भावना पैदा करता है। वह अपने अनुयायियों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने, भय और संदेह जैसे आंतरिक शत्रुओं को दूर करने और बाहरी प्रतिकूलताओं से सुरक्षित रहने की शक्ति प्रदान करते हैं। उनका कवच एक लाक्षणिक ढाल के रूप में कार्य करता है जिसे आध्यात्मिक साधक मुक्ति के मार्ग पर अपने मन और आत्मा की रक्षा के लिए आह्वान कर सकते हैं।

142. कंटकिने

जो काँटों वाला है और अपने शत्रुओं के लिए एक महान बाधा सिद्ध होता है, उसे नमन।

विस्तार : कण्टकिने (कण्टकी) नाम संस्कृत शब्द "कण्टक" से लिया गया है।

कण्टक: यह बहुमुखी शब्द संदर्भित कर सकता है: 1. एक काँटा, शूल। 2. एक बाधा, रुकावट या कठिनाई। 3. एक शत्रु या विरोधी।

इस प्रकार, कण्टकी कालभैरव के दुर्जेय और सुरक्षात्मक पहलुओं को समाहित करता है।

काँटेदार और अभेद्य "काँटेदार" के शाब्दिक अर्थ में, यह नाम कालभैरव को एक दुर्गम और अभेद्य शक्ति के रूप में वर्णित करता है। एक काँटेदार झाड़ी या नुकीले हथियार की तरह, वह किसी भी व्यक्ति के लिए एक दुर्गम बाधा प्रस्तुत करते हैं जो नुकसान या बुराई का इरादा रखता है। उनकी उपस्थिति ही एक ऐसी सीमा बनाती है जिसे दुर्भावनापूर्ण शक्तियाँ भेद नहीं सकतीं, जिससे उनके भक्तों की सुरक्षा और उनके द्वारा संरक्षित क्षेत्रों की पवित्रता सुनिश्चित होती है। यह पहलू सभी विरोधों को दूर करने के लिए चुने गए उनके उग्र रूप को दर्शाता है।

शत्रुओं के लिए महान बाधा अधिक गहन रूप से, कण्टकी का अर्थ है कि कालभैरव स्वयं उन लोगों के लिए "महान बाधा" या "अवरोध" बन जाते हैं जो धर्म, सत्य या उनके भक्तों के विरुद्ध खड़े होते हैं। वह वह हैं जो सक्रिय रूप से विरोधियों को विफल करते हैं, बाधित करते हैं और अंततः नष्ट करते हैं। दुष्टों के लिए, वह एक दुर्जेय शत्रु हैं, जो दुर्गम कठिनाइयाँ पैदा करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि उनके दुर्भावनापूर्ण इरादे सफल न हों। यह गुण एक दिव्य दंडक और एक रक्षक के रूप में उनकी भूमिका को उजागर करता है जो बुराई के खिलाफ सक्रिय रूप से हस्तक्षेप करते हैं।

न्याय और संरक्षण का प्रतीक यह नाम कालभैरव की सर्वोच्च संरक्षक और दिव्य न्याय के अवतार के रूप में भूमिका को रेखांकित करता है। जिस प्रकार काँटे एक पौधे को शिकारियों से बचाते हैं, उसी प्रकार कालभैरव ब्रह्मांडीय व्यवस्था और अपने अनुयायियों को सभी प्रकार की नकारात्मकता, आंतरिक और बाहरी दोनों से बचाते हैं। वह परम निवारक हैं, हर शत्रु के खिलाफ एक अटूट शक्ति के रूप में दृढ़ता से खड़े हैं, चाहे वे सांसारिक शत्रु हों, नकारात्मक ऊर्जाएँ हों, या किसी के अपने आंतरिक राक्षस हों।

143. कार्यकोविद्विक्रमाय

जिनकी असाधारण वीरता सभी कार्यों में उनकी विशेषज्ञता से निर्देशित है, उन्हें नमन।

विस्तार : कार्यकोविदविक्रमाय नाम तीन संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: कार्य, कोविद और विक्रम।

• कार्य (Kārya): क्रिया, कर्म, कार्य या उद्देश्य। व्यापक अर्थ में, यह सृष्टि, पालन और संहार की संपूर्णता, या किसी भी ब्रह्मांडीय गतिविधि को संदर्भित करता है।

• कोविद (Kovida): विशेषज्ञ, कुशल, निपुण या बुद्धिमान। यह गहन ज्ञान और व्यावहारिक विशेषज्ञता को दर्शाता है।

• विक्रम (Vikrama): पराक्रम, शौर्य, शक्ति, साहस या विजय। यह असाधारण शक्ति और वीरतापूर्ण कार्यों को दर्शाता है, जो अक्सर बाधाओं को दूर करते हैं।

ब्रह्मांडीय कार्यों में विशेषज्ञ यह नाम कालभैरव के गहन ज्ञान और सभी प्रकार के कार्यों, चाहे वे ब्रह्मांडीय हों या व्यक्तिगत, पर उनकी महारत को उजागर करता है। वे ब्रह्मांड के जटिल कामकाज, हर कर्म के परिणामों और हर क्रिया के लिए सही समय और विधि को समझते हैं। सृष्टि में ऐसा कुछ भी नहीं होता है जिसे उनकी इच्छा से सटीक रूप से समझा और व्यवस्थित न किया गया हो।

विजयी और पराक्रमी उनका "विक्रम" या पराक्रम केवल क्रूर शक्ति नहीं है, बल्कि अतुलनीय विशेषज्ञता ("कोविद") द्वारा निर्देशित है। इसका अर्थ है कि उनके कार्य, यहां तक कि अंतिम विनाश या दंड के भी, पूरी तरह से निष्पादित, सटीक और उद्देश्यपूर्ण होते हैं। उनका पराक्रम कभी भी लापरवाह नहीं होता; यह हमेशा गहन ज्ञान और अंतिम ब्रह्मांडीय भलाई की समझ से सूचित होता है। वे परम विजेता हैं क्योंकि उनके कार्य दिव्य कानून और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के साथ पूरी तरह से संरेखित होते हैं।

उद्देश्यपूर्ण पराक्रम यह वाक्यांश दर्शाता है कि कालभैरव की अपार शक्ति और पराक्रम (विक्रम) का उपयोग हमेशा उनकी दिव्य क्रियाओं (कार्य) को पूरा करने के लिए सटीकता और विशेषज्ञता (कोविद) के साथ किया जाता है। वे दुष्टों को दंडित करते हैं, धर्मियों की रक्षा करते हैं, और ब्रह्मांडीय संतुलन बनाए रखते हैं, न कि यादृच्छिक बल से, बल्कि पूरी तरह से निष्पादित दिव्य रणनीतियों के माध्यम से। वे ब्रह्मांडीय कानून के परम रणनीतिकार और प्रवर्तक हैं, जिनके हर कार्य, चाहे वे कितने भी दुर्जेय क्यों न हों, एक उच्च, विशेषज्ञ उद्देश्य की पूर्ति करते हैं।

144. कालभक्षाय

जो स्वयं काल का अंतिम भक्षक है, उन्हें नमन।

विस्तार : कालभक्षाय नाम कालभैरव का एक गहन वर्णन है, जो काल (समय) और भक्षक (भक्षण करने वाला या खाने वाला) को जोड़ता है। यह स्वयं समय पर उनके परम और पूर्ण प्रभुत्व का प्रतीक है।

काल का भक्षक (काल) कालभक्ष के रूप में, कालभैरव को सभी सृष्टि के परम उपभोक्ता, काल के ताने-बाने सहित सभी चीजों के भयंकर भक्षक के रूप में दर्शाया गया है। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, काल केवल एक रैखिक प्रगति नहीं है, बल्कि एक सक्रिय, गतिशील शक्ति है जो सभी चीजों को अस्तित्व में लाती है और अंततः उन्हें भस्म कर देती है। इस पहलू में कालभैरव, सभी अस्तित्व के अघोषित अवस्था में वापस अंतिम अवशोषण का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह उपभोग विनाशकारी अर्थ में हिंसक नहीं है, बल्कि उनके अस्तित्व का एक आंतरिक कार्य है, जो सभी चीजों के विघटन का प्रतीक है, जिसमें स्थायित्व का भ्रम भी शामिल है।

कालिक से परे काल का भक्षण करके, वह समय से परे रहने वाले के रूप में खड़े हैं, जो इसके निर्माण, पोषण और विनाश से परे मौजूद हैं। वह शाश्वत, अपरिवर्तनीय वास्तविकता है जो तब भी बनी रहती है जब समय स्वयं समाप्त हो जाता है। इसका अर्थ है कि वह उन सीमाओं, जन्मों, मृत्युओं और चक्रों के अधीन नहीं हैं जो कालिक क्षेत्र को नियंत्रित करते हैं। उन्हें कालभक्ष के रूप में पूजना उनके अस्तित्व पर उनके परम प्रभुत्व को स्वीकार करना है, जहाँ समय का अथक मार्च भी उनकी इच्छा के आगे झुक जाता है।

दार्शनिक महत्व यह नाम एक गहरे दार्शनिक सत्य की ओर इशारा करता है: कि सभी प्रकट वास्तविकता, जो समय और स्थान से बंधी है, अंततः नश्वर है। कालभैरव, कालभक्ष के रूप में, उस अद्वैत वास्तविकता का प्रतीक हैं जो सभी कालिक अस्तित्व को रेखांकित और व्याप्त करती है फिर भी इसके परिवर्तनों से अछूती रहती है। वह महान शून्य, प्रलय (ब्रह्मांडीय विघटन) हैं, जहाँ सभी रूप अपने निराकार मूल में विलीन हो जाते हैं। यह समझ भक्त को मृत्यु के भय और समय की बाधाओं से मुक्त कर सकती है, जिससे आध्यात्मिक बोध होता है।

145. कालं

उस मधुर, कोमल और सुरीली ध्वनि या उच्चारण को नमन।

विस्तार : 'कलाम्' नाम, विशेष रूप से हिंदू दर्शन और भक्ति के संदर्भ में, सीधे तौर पर "मधुर, कोमल और सुरीली ध्वनि" में अनुवाद नहीं होता है, जैसा कि कोई आमतौर पर संस्कृत में संगीत के स्वरों या मानवीय भाषण से जोड़ सकता है। जबकि मूल "कल" ध्वनि से संबंधित हो सकता है, शिव सहस्रनामवलियों या इसी तरह की स्तुतियों में प्रयुक्त विशिष्ट शब्द "कलाम्" के आमतौर पर गहरे, अधिक गहन अर्थ होते हैं, जो अक्सर समय या चीजों के सार से जुड़े होते हैं।

आइए आध्यात्मिक संदर्भ में 'कलाम्' की संभावित व्याख्याओं का अन्वेषण करें:

दिव्य उच्चारण और वाणी (वाक्) यदि हम "कल" मूल को ध्वनि या उच्चारण से संबंधित मानते हैं, तो 'कलाम्' दिव्य, आदिम उच्चारण या वाक् को संदर्भित कर सकता है। हिंदू विचार में, वाक् सृष्टि का आधार है—सूक्ष्म ध्वनि कंपन जो ब्रह्मांड को प्रकट करता है। शिव, परम वास्तविकता के रूप में, सभी ध्वनि, सभी मंत्र और सभी भाषा का स्रोत और सार हैं। उनका अपना अस्तित्व ही वह ब्रह्मांडीय ध्वनि है जिससे सभी अभिव्यक्ति उत्पन्न होती है। इस प्रकार, 'कलाम्' शिव को इस पवित्र, रचनात्मक शब्द के अवतार के रूप में इंगित कर सकता है।

शुभता और कौशल "कल" मूल शुभता, उपयुक्तता और कौशल को भी दर्शाता है। इस अर्थ में, 'कलाम्' उस एक को संदर्भित करेगा जो सभी शुभ, परिपूर्ण और कलात्मक रूप से कुशल का अवतार है। शिव परम कलाकार हैं, ब्रह्मांडीय नृत्य (तांडव) के निर्माता हैं, और सभी कलाओं और विज्ञानों के स्वामी हैं। यह व्याख्या 'कलाम्' को शिव को परिपूर्ण और शुभ ब्रह्मांडीय निर्माता और कलाकार के रूप में प्रस्तुत करती है।

समय और नियति (काल) यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि "कलाम्" "काल" से एक विभक्ति या निकट से संबंधित भी हो सकता है, जिसका अर्थ है समय। शिव का काल से गहरा संबंध (काल भैरव के रूप में, समय के संहारक) को देखते हुए, यह व्याख्या अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यदि "कलाम्" समय को संदर्भित करता है, तो यह शिव को उस एक के रूप में जोर देता है जो स्वयं समय है, या जो समय को नियंत्रित और पार करता है। वह सभी लौकिक अस्तित्व का आदि, मध्य और अंत हैं। यह अर्थ, हालांकि "कोमल और मधुर" नहीं है, सर्वोच्च देवता के रूप में शिव के स्वभाव के लिए गहराई से केंद्रीय है।

इसलिए, "कलाम् को नमस्कार" का अर्थ होगा: • दिव्य, आदिम ध्वनि और रचनात्मक वाणी (वाक्) को नमस्कार जो वास्तविकता को प्रकट करती है। • सभी सृष्टि और कलाओं के शुभ, परिपूर्ण और कुशल स्वामी को नमस्कार। • उस एक को नमस्कार जो समय को समाहित करता है, नियंत्रित करता है और पार करता है, जो लौकिक अस्तित्व का सार है।

जबकि उपयोगकर्ता द्वारा दिया गया अर्थ "मधुर, कोमल और सुरीली ध्वनि" का सुझाव देता है, शिव के नाम के रूप में "कलाम्" के लिए इस विशिष्ट व्याख्या को सावधानीपूर्वक प्रासंगिक बनाने की आवश्यकता है। किसी विशिष्ट धर्मग्रंथ या वंश की अनुपस्थिति में जो 'कलाम्' को इस तरह परिभाषित करता है, अधिक सामान्य और दार्शनिक रूप से मजबूत व्याख्याएं दिव्य उच्चारण, शुभता या समय (काल) की ओर झुकती हैं। यदि यह शब्द गैर-संस्कृत पृष्ठभूमि (जैसे, "भाषण" के लिए अरबी/फ़ारसी) से है, तो यह शिव के लिए संस्कृत सहस्रनामवली के संदर्भ में लागू नहीं होगा। संस्कृत संदर्भ को मानते हुए, दिव्य ध्वनि/उच्चारण, शुभता या समय से संबंध अधिक उपयुक्त है।

146. कारिणे

सभी लौकिक क्रियाओं के परम कर्ता और निष्पादक को नमन।

विस्तार : कारिण (कारिणे) नाम संस्कृत मूल 'कृ' (kṛ) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "करना," "बनाना," "निष्पादित करना," या "कार्य करना।" इसलिए, कारिण का अर्थ है "वह जो करता है," "वह जो प्रदर्शन करता है," "वह जो निष्पादित करता है," या "कर्ता।"

परम कर्ता कालभैरव के संदर्भ में, कारिण इस अर्थ को ब्रह्मांडीय पैमाने पर ऊपर उठाता है। वह केवल एक कर्ता नहीं है, बल्कि ब्रह्मांड में सभी कार्यों का परम, आदिम निष्पादक है। इसमें सृष्टि, स्थिति और संहार (sṛṣṭi, sthiti, saṃhāra) के महान ब्रह्मांडीय कार्य, साथ ही इन चक्रों के भीतर सभी असंख्य घटनाएँ और घटित होना शामिल है।

ब्रह्मांडीय अभिकर्ता कालभैरव, कारिण के रूप में, सभी अस्तित्व के पीछे की दिव्य इच्छा और एजेंसी का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रत्येक कण की गति, प्रत्येक जीवन का चक्र, प्रत्येक ब्रह्मांडीय घटना—ये सभी अंततः उनकी शक्ति के माध्यम से और उनकी इच्छा से निर्देशित होते हैं। वह प्रमुख प्रेरक हैं, नियति और समय के संयोजक हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि सभी कार्य, चाहे बड़े हों या छोटे, ब्रह्मांडीय धर्म के अनुसार प्रकट हों।

कार्य का अदृश्य हाथ यह नाम साधारण अवलोकन से परे उनकी व्यापक और मौलिक भूमिका पर जोर देता है। वह सभी प्राणियों और तत्वों के माध्यम से कार्य करते हैं, फिर भी वह पारलौकिक रहते हैं। सभी कार्य अंततः उनके हैं; जो भक्त इसे समझते हैं वे अपने कार्यों के फल उन्हें समर्पित करते हैं, उन्हें परम कर्ता के रूप में पहचानते हैं। यह दृष्टिकोण अनासक्ति और आध्यात्मिक मुक्ति को बढ़ावा देता है।

147. किंकिणीकृतवासुकये

जिनके महान सर्पराज वासुकि की घुंघरूदार पायल है, उन्हें नमन।

विस्तार : नाम किंकिणीकृतवासुकाय (Kiṃkiṇīkṛtavāsukaye) एक संयुक्त संस्कृत शब्द है जो कालभैरव की ब्रह्मांडीय शक्ति और सबसे दुर्जेय प्राणियों पर उनके प्रभुत्व की एक ज्वलंत और शक्तिशाली छवि का प्रतिनिधित्व करता है। आइए इसके घटकों को तोड़कर समझते हैं:

किंकिणी (Kiṃkiṇī): यह एक छोटी घंटी, एक आभूषण, या छोटी घंटियों से सजी एक पायल को संदर्भित करता है, जो चलने पर झंकार की आवाज पैदा करती है।

कृत (Kṛta): इसका अर्थ है "बनाया गया," "में परिवर्तित किया गया," या "के रूप में होना।"

वासुकी (Vāsukī): यह वासुकि नागराज का नाम है, जो हिंदू पौराणिक कथाओं में सर्पों के पूजनीय राजा हैं। वासुकि एक आदिम और अत्यंत शक्तिशाली सर्प हैं, जो समुद्र मंथन (अमृत प्राप्त करने के लिए ब्रह्मांडीय सागर का मंथन) के दौरान मंथन-नेत्र (मंथन की रस्सी) के रूप में उपयोग किए जाने के लिए सबसे प्रसिद्ध हैं।

वासुकी को पायल के रूप में धारण करना (प्रतीकात्मकता) इस नाम का शाब्दिक अर्थ है "वह जिसने सर्पों के राजा वासुकि को अपनी झंकार करती हुई पायल बनाया है।" यह कल्पना शैव धर्म और तंत्र में गहन प्रतीकात्मक अर्थ से भरपूर है:

1. दुर्जेय शक्तियों पर सर्वोच्चता: वासुकि कोई साधारण सर्प नहीं हैं; वे सर्पों के राजा हैं, जो अपार शक्ति, विष और प्राचीन ज्ञान के प्राणी हैं। उन्हें केवल एक पायल के रूप में धारण करना कालभैरव के अस्तित्व में सबसे खतरनाक, शक्तिशाली और आदिम प्राणियों पर भी पूर्ण और निर्विवाद प्रभुत्व को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि ब्रह्मांडीय विनाश का कारण बनने वाली शक्तियाँ भी उनके दिव्य रूप के लिए अधीनस्थ और आभूषण मात्र हैं।

2. समय और ब्रह्मांडीय चक्रों पर नियंत्रण: सर्प, विशेष रूप से वासुकि जैसे नाग, अक्सर समय (काल), सृष्टि और विनाश के चक्रों और पाताल लोक से जुड़े होते हैं। वासुकि को एक आभूषण के रूप में धारण करके, जो झंकार की आवाज करता है, कालभैरव इन मौलिक शक्तियों और समय के प्रवाह पर अपनी महारत का प्रदर्शन करते हैं। झंकार की आवाज को उनके नियंत्रण में ब्रह्मांडीय नृत्य की सूक्ष्म लय के रूप में देखा जा सकता है।

3. भय और खतरे का अतिक्रमण: जबकि सर्प अपने विष के कारण नश्वर मनुष्यों में भय और खतरा पैदा करते हैं, कालभैरव उन्हें आभूषणों के रूप में पहनते हैं, जो सभी भय के उनके अतिक्रमण और खतरे को अपने दिव्य अस्तित्व के एक अलंकरण में बदलने की उनकी क्षमता को इंगित करता है। वे नुकसान से परे हैं और जिसे डराया जाता है उसे भी अपनी भव्यता का प्रतीक बना देते हैं।

4. ब्रह्मांडीय आभूषण: शिव की तरह, भैरव भी स्वयं को उन तत्वों से सजाते हैं जिन्हें अन्य लोग भयावह पाते हैं (खोपड़ी, सर्प, राख)। ये केवल सजावट नहीं हैं, बल्कि उनके सर्वव्यापी स्वभाव, भौतिक भेदों के प्रति उनकी उदासीनता और मृत्यु तथा भौतिक संसार पर उनकी अंतिम विजय के प्रतीक हैं। वासुकि का पायल के रूप में होना इस ब्रह्मांडीय अलंकरण का एक शक्तिशाली प्रतीक है।

संक्षेप में, किंकिणीकृतवासुकाय (Kiṃkiṇīkṛtavāsukaye) कालभैरव को परम संप्रभु के रूप में चित्रित करता है, जिनकी शक्ति इतनी विशाल है कि सर्पों का राजा, एक दुर्जेय शक्ति का प्राणी, उनके दिव्य रूप पर एक विनम्र, फिर भी शक्तिशाली, आभूषण के रूप में कार्य करता है, जो सभी सृष्टि और विनाश पर उनकी पूर्ण महारत को दर्शाता है।

148. गणेश्वराय

सभी खगोलीय गणों और दिव्य परिचारकों (गणों) के सर्वोच्च स्वामी को नमन।

विस्तार : गणेश्वराय नाम दो प्रमुख संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है: गण और ईश्वर, जो अत्यंत शक्तिशाली और महत्वपूर्ण है।

• गण (Gaṇa): यह शब्द "समूह," "सेना," "दल," "अनुचर," या "परिचारक" को संदर्भित करता है। शिव के संदर्भ में, गण उनके दिव्य परिचारक होते हैं, जो अर्ध-दिव्य प्राणियों का एक विविध समूह है जो उनकी सेवा करते हैं। इन्हें अक्सर दुर्जेय, कभी-कभी विकृत, लेकिन हमेशा वफादार के रूप में चित्रित किया जाता है। इनमें शक्तिशाली देवताओं से लेकर विचित्र आत्माएँ और भूत तक शामिल होते हैं।

• ईश्वर (Īśvara): इस शब्द का अर्थ है "भगवान," "स्वामी," "शासक," या "सार्वभौम।" यह सर्वोच्च अधिकार, नियंत्रण और स्वामित्व को दर्शाता है।

दिव्य गणों के स्वामी (Lord of the Celestial Hosts) गणेश्वराय के रूप में, भगवान कालभैरव इन विशाल और विविध गणों के सर्वोच्च सेनापति और शासक हैं। यह शिव के सभी अनुचरों पर उनके पूर्ण अधिकार को दर्शाता है और ब्रह्मांड में निवास करने वाले सभी प्रकार के दिव्य और अर्ध-दिव्य प्राणियों तक फैला हुआ है।

अधिकार का महत्व (Significance of Authority) यह नाम दिव्य सेना और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के अंतिम प्रशासक के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। वह गणों को संगठित करते हैं, उनकी ऊर्जाओं को निर्देशित करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि धर्म (ब्रह्मांडीय नियम) का पालन हो। गणों पर उनका नियंत्रण विभिन्न ऊर्जाओं, शक्तियों और सूक्ष्म संस्थाओं पर भी नियंत्रण का अर्थ है, जिनका ये गण प्रतिनिधित्व करते हैं।

गणेश से संबंध (Connection to Ganesha) जबकि गणेश्वर अक्सर भगवान गणेश (जो वास्तव में "गणों के स्वामी" हैं) से जुड़े होते हैं, जब इसे कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह शिव के दिव्य और ब्रह्मांडीय अनुचरों के सभी पहलुओं पर एक व्यापक, अधिक सर्वोच्च आज्ञा पर जोर देता है। कालभैरव, शिव के एक उग्र स्वरूप के रूप में, स्वाभाविक रूप से इस सर्व-समावेशी प्रभुत्व को मूर्त रूप देते हैं।

ब्रह्मांडीय शासन (Cosmic Governance) उन्हें गणेश्वराय के रूप में स्वीकार करने का अर्थ है संपूर्ण ब्रह्मांडीय तंत्र पर उनके सर्वोपरि अधिकार को पहचानना, जिसमें इसके विभिन्न कार्यवाहक और कार्यरत आध्यात्मिक शक्तियाँ शामिल हैं। वह ही हैं जो सृष्टि, संरक्षण और संहार की भव्य योजना में इन शक्तियों को व्यवस्थित, नियंत्रित और निर्देशित करते हैं।

149. गौरीशाय

गौरी (तेजस्वी पार्वती) के प्रिय स्वामी और पति को नमन।

विस्तार : गौरीश नाम भगवान शिव के लिए एक सुंदर और महत्वपूर्ण विशेषण है, जो दो संस्कृत शब्दों: गौरी और ईश से मिलकर बना है।

गौरी: यह भगवान शिव की दिव्य पत्नी पार्वती का एक प्रमुख नाम है। "गौरी" शब्द का शाब्दिक अर्थ है "श्वेत," "चमकदार," या "सुनहरे रंग वाली।" यह पवित्रता, चमक, दीप्ति और कभी-कभी एक युवा, अविवाहित लड़की को दर्शाता है। पार्वती के नाम के रूप में, यह उनकी तेजस्वी सुंदरता, उनकी तीव्र पवित्रता और दिव्य स्त्री ऊर्जा (शक्ति) के उनके अवतार को उजागर करता है। यह उनके सुनहरे रंग की ओर भी इशारा करता है, विशेष रूप से हिमालय में शिव को जीतने के लिए कठोर तपस्या के बाद, जहाँ वह एक उज्ज्वल, सुनहरी चमक के साथ प्रकट होती हैं।

ईश: इस शब्द का अर्थ है "भगवान," "स्वामी," या "शासक।" यह सर्वोच्च अधिकार, संप्रभुता और प्रभुत्व को दर्शाता है।

पवित्रता और चमक के प्रिय स्वामी "गौरीश" के रूप में, शिव को गौरी के प्रिय स्वामी के रूप में मनाया जाता है। यह नाम पार्वती के साथ उनके अविभाज्य संबंध को समाहित करता है, जो पुरुष (चेतना, शिव) और प्रकृति (प्रकृति, ऊर्जा, पार्वती) के दिव्य मिलन पर जोर देता है। उनकी पहचान उनकी पहचान से जुड़ी हुई है, जिसका अर्थ है कि मर्दाना सिद्धांत स्त्री के बिना अधूरा है, और इसके विपरीत।

दिव्य मिलन का प्रतीक यह नाम शिव और पार्वती के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंध को उजागर करता है, जो भक्तों के लिए एक पुरातात्विक मॉडल के रूप में कार्य करता है। यह तपस्या और प्रेम, वैराग्य और जुड़ाव, स्थिरता और गतिशीलता के पूर्ण संतुलन का प्रतीक है। उनका मिलन द्वैत के एक विलक्षण, सर्व-समावेशी वास्तविकता में विलय का प्रतिनिधित्व करता है।

अनुग्रह और सौंदर्य का अवतार गौरी के स्वामी होने के नाते, शिव उन गुणों से अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं जिन्हें वह दर्शाती हैं: अनुग्रह, सौंदर्य, पवित्रता और आध्यात्मिक शक्ति। जबकि शिव को स्वयं अक्सर तपस्वी और दुर्जेय के रूप में चित्रित किया जाता है, यह नाम उनकी छवि को नरम करता है, उन्हें गहरे स्नेह और साहचर्य की क्षमता प्रदान करता है। यह उनके गृहस्थ स्वरूप (गृहस्थ मूर्ति) को उनके तपस्वी (दिगंबर) रूप के विपरीत प्रकट करता है, जहाँ वह अपनी दिव्य पत्नी के साथ सांसारिक जीवन में लगे हुए हैं।

भक्ति और उर्वरता से संबंध गौरी को अक्सर विवाह, संतान और घरेलू सद्भाव से संबंधित आशीर्वाद के लिए आह्वान किया जाता है। गौरीश के रूप में, शिव को भी इन संदर्भों में अप्रत्यक्ष रूप से आह्वान किया जाता है, जो एक परोपकारी प्रदाता के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है, जो

अपनी पत्नी के साथ, भक्तों को उनके सांसारिक और आध्यात्मिक जीवन में पूर्णता का आशीर्वाद देते हैं।

150. गिरीशाय

सभी पर्वतों के सर्वोच्च और निर्विवाद स्वामी को नमन।

विस्तार : गिरीशाय (Girīśāya) नाम गिरीश (Girīśa) से बना है, जो गिरि (Girī) और ईश (Īśa) का एक यौगिक है।

पर्वतों के स्वामी शाब्दिक रूप से, गिरीशाय का अर्थ है "पर्वतों के स्वामी को नमस्कार।" हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान और पौराणिक कथाओं में, पर्वत केवल भौगोलिक विशेषताएँ नहीं हैं; वे विशाल, पवित्र संस्थाएँ हैं, जिन्हें अक्सर देवताओं का निवास स्थान, अपार शक्ति के स्रोत और स्थायित्व, ऊँचाई और आध्यात्मिक आरोहण के प्रतीक के रूप में माना जाता है। विशेष रूप से हिमालय को भगवान शिव का निवास स्थान माना जाता है। गिरीश के रूप में, वे इन राजसी और पवित्र स्थानों के सर्वोच्च संप्रभु हैं। यह उपाधि प्रकृति की कच्ची, अनियंत्रित और उदात्त शक्ति के साथ उनके आंतरिक संबंध को दर्शाती है।

पर्वतों का प्रतीकवाद पर्वत कई गहन अवधारणाओं का प्रतीक हैं: • स्थिरता और अचलत्व: पर्वत अटल और प्राचीन हैं, जो शिव के शाश्वत, अपरिवर्तनीय स्वरूप (अचल) का प्रतिनिधित्व करते हैं। • तपस्या और ध्यान: कई ऋषि और योगी पर्वतीय गुफाओं में तपस्या करते हैं, और शिव स्वयं परम तपस्वी (योगी) हैं। कैलाश पर्वत पर उनका निवास सांसारिक सुखों से उनकी विरक्ति और उनकी गहन ध्यान अवस्था को दर्शाता है। • आध्यात्मिक शिखर: किसी पर्वत के शिखर पर पहुँचना अक्सर आध्यात्मिक ज्ञान या चेतना के शिखर को प्राप्त करने का एक रूपक होता है। पर्वतों के स्वामी के रूप में, शिव इस परम आध्यात्मिक उपलब्धि का प्रतीक हैं। • संसाधनों का स्रोत: पर्वत नदियों, खनिजों और औषधीय जड़ी-बूटियों के स्रोत हैं, इस प्रकार जीवन को बनाए रखते हैं। शिव, पर्वतों के स्वामी के रूप में, इसलिए एक पालक भी हैं।

भौतिक क्षेत्र से परे जबकि शाब्दिक रूप से भौतिक पर्वतों का जिक्र है, यह नाम एक लाक्षणिक अर्थ तक भी फैला हुआ है। यह उन सभी पर उनके प्रभुत्व का तात्पर्य है जो ऊँचे, भव्य, अडिग और आदिम हैं। वे सृष्टि के मूलभूत, तात्विक पहलुओं के परम शासक हैं, जो स्वयं ब्रह्मांड की कच्ची, राजसी शक्ति का प्रतीक हैं। यह हमारे भीतर की बाधाओं और अहंकार के "पर्वतों" पर उनकी सर्वोच्चता को भी दर्शाता है, जिससे भक्तों को उन्हें पार करने में मदद मिलती है।

151. गिरिबाधकाय

उन (कालभैरव) को नमन, जो पर्वतों को भी रोक सकते हैं, या जो अपने भक्तों के लिए पर्वत समान बाधाओं को दूर करते हैं।

विस्तार : गिरिबाधकाय नाम गिरि, बाधक और चतुर्थी विभक्ति के प्रत्यय आय का एक यौगिक है, जिसका अर्थ है "उस एक को।" यह नाम कालभैरव की अपार शक्ति और उनके सुरक्षात्मक पहलू का गहन वर्णन करता है।

गिरि (पर्वत) संस्कृत में, "गिरि" का प्राथमिक अर्थ पर्वत है। पर्वत विभिन्न चीजों का प्रतीक हैं: • अपरिवर्तनीयता और स्थिरता: पर्वत विशाल, अचल और स्थायी होते हैं। • बाधाएँ: उनका विशाल आकार और उपस्थिति अक्सर जीवन में दुर्गम चुनौतियों, कठिनाइयों या बाधाओं का प्रतिनिधित्व करती है। • परिमाण: वे विशाल पैमाने या कठिनाई वाली किसी भी चीज़ को दर्शाते हैं, चाहे वह शारीरिक, भावनात्मक या आध्यात्मिक हो।

बाधक (बाधा डालने वाला/बाधाओं को दूर करने वाला) "बाधक" शब्द के संदर्भ के आधार पर दोहरा अर्थ हो सकता है: • बाधा डालने वाला/अवरोधक: जो रोकता या बाधित करता है। • बाधाओं को दूर करने वाला/नष्ट करने वाला: जो बाधाओं को दूर करता या समाप्त करता है।

इस प्रकार, "गिरिबाधक" की दो शक्तिशाली तरीकों से व्याख्या की जा सकती है:

पर्वतों को बाधित करने वाला यह व्याख्या कालभैरव की सर्वोच्च, अजेय शक्ति पर जोर देती है। यह बताती है कि पर्वत जैसी विशाल, स्थिर और अजेय दिखने वाली चीज़ को भी उनकी दिव्य इच्छा से बाधित, स्थानांतरित या यहां तक कि तोड़ा जा सकता है। यह दर्शाता है कि कोई भी शक्ति, कोई भी भौतिक इकाई, और कोई भी बाधा, चाहे वह कितनी भी विशाल क्यों न हो, उनके ब्रह्मांडीय आदेश या उनकी प्रकट शक्ति के मार्ग में खड़ी नहीं हो सकती। वह परम, अजेय शक्ति हैं।

पर्वत-समान बाधाओं को दूर करने वाला यह व्याख्या कालभैरव के परोपकारी पहलू को उनके भक्तों के रक्षक और मुक्तिदाता के रूप में उजागर करती है। इसका तात्पर्य है कि जो लोग उनमें शरण लेते हैं, उनके लिए वह उनके मार्ग से सबसे दुर्जेय, पर्वत-आकार की बाधाओं को भी दूर कर देंगे। ये बाधाएँ हो सकती हैं: • भौतिक कठिनाइयाँ: वित्तीय संकट, कानूनी मुद्दे, या दैनिक जीवन में गंभीर कठिनाइयाँ। • आध्यात्मिक बाधाएँ: गहरी जड़ें जमाए हुए कर्मिक अवरोध, मजबूत नकारात्मक संस्कार, या आध्यात्मिक जड़ता जो प्रगति को रोकती है। • आंतरिक चुनौतियाँ: अहंकार, भय, क्रोध या निराशा जैसे शक्तिशाली आंतरिक राक्षसों पर विजय प्राप्त करना जो पहाड़ों की तरह भारी लगते हैं।

इस नाम के माध्यम से, कालभैरव को उस दुर्जेय देवता के रूप में पूजा जाता है जो प्राणियों के धर्म और भक्ति के आधार पर या तो परम बाधा उत्पन्न कर सकते हैं या किसी भी बाधा को दूर कर सकते हैं। वह कठिनाइयों के परम निवारक हैं, विशेष रूप से वे जो मानवीय प्रयासों के लिए दुर्गम प्रतीत होती हैं, अपने सच्चे भक्तों को सहजता और प्रगति प्रदान करते हैं।

152. गिरिधन्वने

उन्हें नमन, जिनका ब्रह्मांडीय धनुष महान मेरु पर्वत है।

विस्तार : गिरिधन्वने नाम गिरि, धन्वन् और द्योतक प्रत्यय -ए का एक यौगिक है, जिसका अर्थ है "उस एक को।"

गिरि: इस संस्कृत शब्द का अर्थ "पर्वत" या "पहाड़ी" है। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, पर्वत, विशेष रूप से मेरु जैसे पौराणिक पर्वत, केवल भूवैज्ञानिक संरचनाएं नहीं हैं, बल्कि उनका गहरा आध्यात्मिक और ब्रह्मांडीय महत्व है। उन्हें अक्सर देवताओं के निवास स्थान, ब्रह्मांड के स्तंभ और आध्यात्मिक ऊर्जा के केंद्र के रूप में देखा जाता है।

धन्वन् (या धनु): यह "धनुष" को संदर्भित करता है, जो पारंपरिक रूप से योद्धाओं और देवताओं से जुड़ा एक हथियार है। धनुष शक्ति, सटीकता और बुराई को नष्ट करने या ब्रह्मांडीय परिवर्तन को प्रभावित करने की क्षमता का प्रतीक है।

ब्रह्मांडीय धनुष: मेरु पर्वत "महान पर्वत मेरु" (सुमेरु) हिंदू, जैन और बौद्ध ब्रह्मांड विज्ञान में केंद्रीय ब्रह्मांडीय पर्वत है। इसे अक्ष मुंडी (axis mundi) माना जाता है, वह धुरी जिसके चारों ओर ब्रह्मांड घूमता है, और कई देवताओं का निवास स्थान है। शिव के लिए, ऐसे स्मारकीय और पवित्र पर्वत को अपने धनुष के रूप में रखना उनकी सर्वोच्च ब्रह्मांडीय शक्ति का एक गहरा बयान है।

ब्रह्मांडीय शक्ति का प्रतीकवाद यह नाम हिंदू पौराणिक कथाओं में उस प्रसंग को संदर्भित करता है जहां शिव, त्रिपुरांतक (असुरों के तीन शहरों के संहारक) के रूप में, मेरु को अपने धनुष के रूप में उपयोग करते हैं। तारकाक्ष, विद्युन्माली और कमलाक्ष नामक दानव भाइयों द्वारा शासित तीन शहर

इतने शक्तिशाली थे कि वे एक साथ चल और जुड़ सकते थे। देवता, उन्हें हराने में असमर्थ, ब्रह्मा और विष्णु के पास गए, जिन्होंने तब शिव की मदद मांगी। इन अजेय शहरों को नष्ट करने के लिए, शिव को एक अद्वितीय ब्रह्मांडीय पैमाने के हथियार की आवश्यकता थी। इसलिए, देवताओं ने एक दिव्य रथ तैयार किया, जिसमें पृथ्वी उसका आधार, सूर्य और चंद्रमा उसके पहिए, और मेरु पर्वत शिव का महान धनुष था। विष्णु बाण बने, और अग्नि उसकी अग्नि-मुख बनी।

सार्वभौमिक नियंत्रण और विनाशकारी शक्ति मेरु को अपने धनुष के रूप में धारण करके, कालभैरव (शिव के एक पहलू के रूप में) ब्रह्मांड की मूलभूत संरचनाओं पर अपना पूर्ण नियंत्रण प्रदर्शित करते हैं। वह केवल हथियारों का उपयोग करने वाले नहीं हैं, बल्कि स्वयं ब्रह्मांडीय शक्तियों के साक्षात् अवतार हैं। पर्वत, स्थिरता और विशालता का प्रतिनिधित्व करता है, जब धनुष में परिवर्तित होता है, तो यह सृजन के सबसे स्थिर तत्वों को भी विनाश और पुनर्निर्माण के लिए जुटाने और निर्देशित करने की उनकी क्षमता को दर्शाता है। यह कार्य उनके परम संहारक के रूप में उनकी भूमिका को उजागर करता है, जो एक ही, ब्रह्मांडीय प्रहार से सबसे मजबूत बुराइयों को भी नष्ट करने में सक्षम हैं।

153. गुहाय

प्रत्येक प्राणी के हृदय की गुप्त, पवित्र गुफा में निवास करने वाले को नमन।

विस्तार : गुहा (गुहाय) नाम अत्यधिक प्रतीकात्मक है और हिंदू रहस्यवादी और दार्शनिक परंपराओं, विशेष रूप से अद्वैत वेदांत और विभिन्न योगिक और तांत्रिक विद्यालयों में गहरा महत्व रखता है। यह संस्कृत शब्द 'गुहा' से लिया गया है जिसका शाब्दिक अर्थ "गुफा" या "छिपा हुआ स्थान" है।

हृदय की गुप्त गुफा आध्यात्मिक परंपराओं में, "गुफा" (गुहा) कोई शाब्दिक भौतिक स्थान नहीं है, बल्कि प्रत्येक जीवित प्राणी के भीतर चेतना के अंतरतम अभयारण्य के लिए एक रूपक है—हृदय-स्थान, जिसे अक्सर "हृदय-गुहा" (हृदय की गुफा) कहा जाता है। यह सूक्ष्म आध्यात्मिक हृदय को संदर्भित करता है, न कि भौतिक अंग को। इसे स्वयं के भीतर सबसे पवित्र और गुप्त स्थान माना जाता है, जो बाहरी इंद्रियों और व्यस्त मन के लिए अगम्य है।

परम सत्य का निवास इस "हृदय की गुफा" को परम आत्मा (आत्मन) या परम सत्य (ब्रह्म) का निवास स्थान माना जाता है। यह कहना कि भगवान शिव, या इस संदर्भ में, कालभैरव, गुहा में निवास करते हैं, इसका अर्थ है कि वे प्रत्येक व्यक्ति के भीतर आदिम चेतना, स्वयं सार या आत्मा के रूप में आंतरिक रूप से उपस्थित हैं। वे साक्षी चेतना हैं, अपरिवर्तनीय, शाश्वत मूल जो सभी मानसिक और शारीरिक गतिविधियों का अवलोकन करता है।

एकांत और ध्यान का प्रतीक गुफा एकांत, गहन ध्यान और आध्यात्मिक आत्मनिरीक्षण के स्थान का भी प्रतीक है। प्राचीन ऋषि और योगी अक्सर अपनी गहन आध्यात्मिक साधनाओं के लिए वास्तविक गुफाओं की तलाश करते थे। इस प्रकार, गुहा गहन आध्यात्मिक अनुभवों के आंतरिक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती है, जो केवल गहन चिंतन और अंतर्मुखी होने के माध्यम से ही सुलभ है।

छिपा हुआ और रहस्यमय इसके अलावा, "गुहा" शब्द कुछ छिपा हुआ, गुप्त या रहस्यमय अर्थ रखता है। यह बताता है कि परम सत्य सतही मन के लिए तुरंत स्पष्ट नहीं है, बल्कि इसे लगन से आध्यात्मिक अभ्यास और आत्म-साक्षात्कार के माध्यम से उजागर किया जाना चाहिए। कालभैरव, गुहा के रूप में, गूढ़ और छिपा हुआ सत्य हैं जो स्वयं को तब प्रकट करते हैं जब कोई भ्रम और अज्ञान की परतों को भेदता है।

"वह जो गुप्त, पवित्र गुफा में निवास करता है" के रूप में, कालभैरव ईश्वर के अंतर्निहित पहलू का प्रतीक हैं—प्रत्येक प्राणी के मूल में निवास करने वाली सर्वव्यापी, सर्वोच्च चेतना, जो साकार होने की प्रतीक्षा कर रही है।

154. गोप्तृ

समस्त सृष्टि के परम रक्षक, संरक्षक और पालनकर्ता को नमन।

विस्तार : गोप्त्रे (गोप्त्रे) नाम संस्कृत मूल "गुप्" (गुप्त) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "रक्षा करना," "पहरेदारी करना," या "संरक्षण करना।" गोप्ता (गोप्ता) या गोप्तरा शब्द एक रक्षक, संरक्षक या पालक को दर्शाता है।

परम रक्षक और संरक्षक गोप्त्रे के रूप में, कालभैरव दिव्य सुरक्षा के परम सिद्धांत का प्रतीक हैं। वह ब्रह्मांडीय संरक्षक हैं जो ब्रह्मांड और उसके निवासियों को सभी प्रकार के खतरों, अराजकता और विनाश से बचाते हैं। यह सुरक्षा केवल निष्क्रिय नहीं है, बल्कि एक सक्रिय, गतिशील शक्ति है जो ब्रह्मांड की व्यवस्था (ऋत) और धर्म (ब्रह्मांडीय नियम) को बनाए रखती है। वह उन सभी शक्तियों के खिलाफ एक अटूट गढ़ के रूप में खड़े हैं जो सृष्टि को बाधित या नुकसान पहुँचाना चाहती हैं।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था के पालक एक पालक के रूप में उनकी भूमिका भौतिक सुरक्षा से परे है; इसमें ब्रह्मांडीय अखंडता और अस्तित्व को नियंत्रित करने वाले प्राकृतिक नियमों का संरक्षण शामिल है। वह सुनिश्चित करते हैं कि सृष्टि, पोषण और विघटन के चक्र सामंजस्यपूर्ण ढंग से चलें। यह पहलू उनके परोपकारी स्वभाव को उजागर करता है, यह दर्शाता है कि अपने उग्र रूप में भी, उनका प्राथमिक इरादा जीवन और व्यवस्था को बनाए रखना और बनाए रखना है।

आंतरिक और बाहरी सुरक्षा यह सुरक्षा आध्यात्मिक स्तर पर भी लागू होती है। भक्तों के लिए, कालभैरव गोप्त्रे के रूप में आध्यात्मिक सुरक्षा प्रदान करते हैं, उन्हें नकारात्मक प्रभावों, आंतरिक बुराइयों और उनके आध्यात्मिक मार्ग पर आने वाली बाधाओं से बचाते हैं। वह उनकी आध्यात्मिक प्रगति की रक्षा करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे सांसारिक नकारात्मकताओं या अपनी अहंकारपूर्ण प्रवृत्तियों से अभिभूत हुए बिना आगे बढ़ सकें। वह मृत्यु के भय से ही रक्षा करते हैं, क्योंकि वह स्वयं समय और विघटन के स्वामी हैं।

धर्म के रक्षक गोप्त्रे के रूप में, वह धर्म की रक्षा से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। वह उन लोगों को दंडित करते हैं जो ब्रह्मांडीय नियमों का उल्लंघन करते हैं और उन लोगों की रक्षा करते हैं जो धार्मिक रूप से जीते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि ब्रह्मांड में न्याय और संतुलन बना रहे। यह उन्हें नैतिकता और नैतिक आचरण का न्यायपूर्ण और अटूट रक्षक बनाता है, जो आत्माओं को उनकी अंतिम मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करता है।

155. गुणराशये

सभी दिव्य गुणों और नेक विशेषताओं के एक महान, अतुलनीय निधि-ढेर वाले को नमन।

विस्तार : गुणराशये नाम संस्कृत के पदों गुण (Guṇa) और राशि (Rāśi) का एक यौगिक है।

गुण (Guṇa): इस शब्द के कई अर्थ हैं, लेकिन इस संदर्भ में, यह मुख्य रूप से संदर्भित करता है: •गुण, विशेषताएँ, या लक्षण। •श्रेष्ठ विशेषताएँ, उत्कृष्टता, या योग्यता।

राशि (Rāśi): इस शब्द का अर्थ है: •एक ढेर, एक समूह, एक संग्रह, एक प्रचुरता। •एक ढेर, एक भंडार, एक खजाना।

सभी दिव्य गुणों का अवतार (The Embodiment of All Divine Virtues) जब कालभैरव पर लागू होता है, तो गुणराशये का अर्थ है कि वे केवल अच्छे गुणों से संपन्न नहीं हैं, बल्कि सभी शुभ और दिव्य गुणों का एक अक्षय भंडार, एक अनंत संचय, या गुणों का एक वास्तविक पर्वत हैं। इसका तात्पर्य हर कल्पनीय सकारात्मक विशेषता—साहस, ज्ञान, करुणा, न्याय, वैराग्य और सर्वोच्च चेतना—में पूर्णता है। वे दिव्य उत्कृष्टता के पूर्ण स्पेक्ट्रम का प्रतीक हैं।

एक अथाह खजाना-ढेर (An Immeasurable Treasure-Heap) "राशि" (Rāśi) का उपयोग इन गुणों की विशालता और अथाहता पर जोर देता है। वे केवल "गुणी" नहीं हैं, बल्कि "गुणों का खजाना-ढेर" हैं, जो एक ऐसी प्रचुरता का सुझाव देता है जिसे मानवीय समझ के भीतर मापा या पूरी तरह से समझा नहीं जा सकता है। यह सर्वोच्च सत्ता के रूप में उनकी पूर्णता और आत्मनिर्भरता को दर्शाता है।

प्रकृति के गुणों से परे (Beyond the Gunas of Prakriti) जबकि कुछ दार्शनिक संदर्भों में "गुण" (Guṇa) प्रकृति के तीन गुणों (सत्त्व, रजस, तमस) को संदर्भित करता है, यहाँ "गुणराशये" स्पष्ट रूप से शुभ, उत्कृष्ट गुणों को संदर्भित करता है जो इन भौतिक गुणों से परे हैं। वे ऐसे हैं जो प्रकृति के गुणों को कुशलता से नियंत्रित और पार करते हैं, फिर भी अपने स्वयं के सार के भीतर असीमित सकारात्मक, दिव्य गुणों को प्रकट करते हैं। वे सभी उत्कृष्ट विशेषताओं का स्रोत और अंतिम अवतार हैं जिनकी आध्यात्मिक और नैतिक पूर्णता में तलाश की जाती है।

156. गुणाकराय

सभी उत्कृष्ट गुणों की विशाल और अक्षय खान के स्वरूप को नमन।

विस्तार : गुणाकराय नाम 'गुण' और 'आकर' का एक यौगिक है, जो भगवान कालभैरव के सभी शुभ और उत्कृष्ट गुणों के असीम स्वामित्व को दर्शाता है।

• गुण (Guṇa): यह शब्द "गुणों," "विशेषताओं," या "सद्‌गुणों" को संदर्भित करता है। आध्यात्मिक संदर्भ में, गुण दिव्य उत्कृष्ट लक्षणों जैसे करुणा, ज्ञान, साहस, पवित्रता, शक्ति, विद्या और वैराग्य को समाहित करते हैं। यह प्रकृति के तीन ब्रह्मांडीय गुणों (सत्त्व, रजस, तमस) पर प्रभुत्व का भी अर्थ है, जिसका अर्थ है कि वह उनसे बंधे होने के बजाय उनका अतिक्रमण और नियंत्रण करते हैं।

• आकर (Ākara): यह "खान," "स्रोत," "भंडार," या "कोष" को दर्शाता है। यह किसी चीज़ की अक्षय उत्पत्ति या प्रचुरता को इंगित करता है।

सद्‌गुणों की विशाल खान (Vast Mine of Virtues) गुणाकर के रूप में, कालभैरव सभी सकारात्मक और दिव्य विशेषताओं के परम भंडार और मूल स्रोत हैं। वह केवल अच्छे गुणों वाले व्यक्ति नहीं हैं, बल्कि एक अनंत खान हैं जिससे ये सभी पूर्णताएँ उत्पन्न होती हैं। इसका तात्पर्य है कि किसी भी प्राणी या अस्तित्व के पहलू में पाया जाने वाला कोई भी सकारात्मक गुण अंततः उन्हीं से प्राप्त होता है।

गुणों का अतिक्रमण और प्रभुत्व (Transcendence and Mastery of Qualities) यद्यपि वह सभी उत्कृष्ट गुणों को धारण करते हैं, भैरव के रूप में उनका स्वरूप सभी द्वैतताओं का भी अतिक्रमण करता है, जिसमें प्रकृति के तीन गुण भी शामिल हैं। इसका अर्थ है कि वह इन गुणों से वातानुकूलित नहीं हैं, बल्कि उनके सर्वोच्च स्वामी हैं, उनका उपयोग ब्रह्मांड को बनाने, बनाए रखने और नष्ट करने के लिए करते हैं। उनके "गुण" सीमाएँ नहीं हैं, बल्कि उनकी असीम शक्ति और ज्ञान की अभिव्यक्तियाँ हैं।

पूर्णता का आदर्श उदाहरण (Ideal Exemplar of Perfection) यह नाम उन्हें पूर्णता के आदर्श और परम उदाहरण के रूप में स्थापित करता है, जो हर कल्पनीय सद्‌गुण को अनंत डिग्री तक धारण करते हैं। गुणाकर के प्रति भक्ति अपने भीतर इन दिव्य गुणों को विकसित करने की एक आकांक्षा है, उन्हें सभी आध्यात्मिक उत्कृष्टता का स्रोत और अस्तित्व का आदर्श आदर्श मानते हुए।

157. गम्भीराय

जो अत्यंत गहन, गंभीर और अगम्य हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : गम्भीराय नाम कालभैरव को अत्यंत गंभीर, गहन और अगम्य के रूप में वर्णित करता है।

गंभीर: गहनता और गंभीरता संस्कृत शब्द गंभीर का अर्थ है "गहरा," "अत्यंत गहन," "गंभीर," "भयभीत करने वाला," और "अथाह।" यह नाम कालभैरव के स्वरूप और शक्ति की अपार, असीमित गहनता को व्यक्त करता है।

अगम्य स्वरूप वे दिव्य के एक ऐसे पहलू का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सामान्य मानवीय समझ से परे है। जिस प्रकार समुद्र की गहराइयाँ छिपी और रहस्यमय होती हैं, उसी प्रकार कालभैरव का वास्तविक स्वरूप, उनका ब्रह्मांडीय उद्देश्य और उनकी अंतिम योजनाएँ अगम्य हैं। उन्हें बुद्धि से पूरी तरह से समझा नहीं जा सकता या सतही समझ से नहीं देखा जा सकता। यह अगम्यता अर्थ की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि अर्थ की एक ऐसी समृद्धि है जो सीमित धारणा से परे है।

गंभीरता और गंभीरता कालभैरव ऐसे देवता नहीं हैं जिनसे हल्के में संपर्क किया जाए। उनकी "गंभीरता" उनके कार्यों की गंभीरता को दर्शाती है, जिसमें ब्रह्मांडीय नियम का प्रवर्तन, समय का विनियमन और सभी चीजों का अंतिम विघटन शामिल है। यह गंभीरता श्रद्धा को प्रेरित करती है और भक्तों को अस्तित्व की गहन प्रकृति और आध्यात्मिक मार्ग की याद दिलाती है।

शांत शक्ति गंभीर का अर्थ एक शांत, गहरी शक्ति भी हो सकता है जिसे बाहरी रूप से दिखावटी होने की आवश्यकता नहीं है। यह वह अडिग, गहन नींव है जिस पर समस्त सृष्टि और संहार टिका हुआ है। यह गहनता ज्ञान, विद्या और एक अटूट, शाश्वत उपस्थिति का एक अनंत स्रोत सुझाती है।

158. गहनाय

जो अगम्य, रहस्यमय और अथाह हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : 'गहना' नाम भगवान भैरव के गहन, रहस्यमय और अंततः अगम्य स्वरूप को समाहित करता है, जो शैव धर्म के उच्चतम दार्शनिक सिद्धांतों के अनुरूप है।

अभेद्य और अगम्य 'गहना' का शाब्दिक अर्थ है "घना," "अभेद्य," "गहरा," या "पार करने में कठिन।" दिव्य के संदर्भ में, यह उस चीज़ को संदर्भित करता है जिसे आसानी से समझा नहीं जा सकता, बुद्धि द्वारा भेदा नहीं जा सकता, या सामान्य साधनों से प्राप्त नहीं किया जा सकता। यह एक ऐसी वास्तविकता का सुझाव देता है जो इंद्रियों, मन या यहां तक कि अकेले पारंपरिक आध्यात्मिक अभ्यासों की पकड़ से परे है। भैरव के रूप में गहना उस परम पारलौकिक वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करते हैं जो अदीक्षितों की सीधी धारणा से ढकी रहती है।

रहस्यमय और अथाह यह पहलू दिव्य के रहस्यमय गुणों की ओर इशारा करता है। उनका स्वरूप, कार्य और अंतिम इरादे अक्सर मानवीय समझ से परे होते हैं, जो ब्रह्मांडीय पैमानों और सिद्धांतों पर काम करते हैं जो सीधे तौर पर समझने योग्य नहीं होते हैं। यह अनंत और परम सत्य को पूरी तरह से समझने का प्रयास करते समय मानवीय बुद्धि और तर्क की अंतर्निहित सीमाओं को उजागर करता है। जिस प्रकार एक गहरी खाई को पूरी तरह से मापा नहीं जा सकता, उसी प्रकार भगवान भैरव का वास्तविक सार भी अथाह है।

परम वास्तविकता का प्रतीक दार्शनिक रूप से, गहना वेदांत में निरपेक्ष ब्रह्म या परब्रह्म की अवधारणा के साथ संरेखित है, जो अवर्णनीय है और गुणों के माध्यम से अंततः अज्ञेय है। शैव धर्म में, भैरव के रूप में गहना उनकी सर्वोच्च, असीमित वास्तविकता के रूप में उनकी स्थिति को दर्शाता है, जो सभी द्वैत, विवरण और भेदों से परे है। वह परम शून्य हैं जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है और जिसमें सब कुछ लौटता है, एक ऐसा शून्य जो क्षमता से इतना घना है कि यह सीमित मन के लिए अभेद्य है।

अज्ञात को अपनाना भैरव को गहना के रूप में पहचानना आध्यात्मिक समर्पण का एक कार्य है - यह स्वीकार करना कि दिव्य के ऐसे पहलू हैं जो हमेशा एक रहस्य बने रहेंगे, और सच्ची भक्ति इस गहन अज्ञातता का सम्मान करने में निहित है, न कि इसे मानवीय परिभाषाओं तक सीमित करने का प्रयास करने में। यह अनंत के सामने विनम्रता और विस्मय की मुद्रा को प्रोत्साहित करता है।

159. गोप्त्रे

ब्रह्मांड के परम संरक्षक और छिपाने वाले (सुरक्षा करने वाले) को नमन।

विस्तार : गोप्तृ नाम संस्कृत मूल √गुप् से लिया गया है, जिसका दोहरा अर्थ है: रक्षा करना, पहरा देना, आश्रय देना या बचाव करना, और छिपाना, गुप्त रखना या गुप्त रूप से दूर रखना। यह दोहरा पहलू कालभैरव को एक गहरा और बहुआयामी ब्रह्मांडीय भूमिका प्रदान करता है।

सर्वोच्च रक्षक रक्षक के रूप में अपनी भूमिका में, गोप्तृ कालभैरव को ब्रह्मांड, धर्म (धार्मिकता) और सृष्टि के भीतर सभी प्राणियों के परम संरक्षक के रूप में दर्शाता है। वह भक्तों को नुकसान से बचाता है, आपदाओं को टालता है, और ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखता है। यह सुरक्षा केवल शारीरिक नहीं है; यह आध्यात्मिक साधकों को नकारात्मक प्रभावों, आंतरिक बाधाओं और माया के भ्रम से बचाने तक फैली हुई है। उनकी सुरक्षा भयंकर और समझौताहीन है, जो अस्तित्व की अखंडता सुनिश्चित करती है।

ब्रह्मांड का छिपाने वाला "छिपाने वाला" का पहलू गहरा दार्शनिक है और माया (भ्रम) और अभिव्यक्ति के ब्रह्मांडीय खेल में कालभैरव की भूमिका को इंगित करता है।

1. परम वास्तविकता का छिपाने वाला: वह परम, निराकार ब्रह्म को सामान्य धारणा से छिपाता है। माया की शक्ति के माध्यम से, वह वास्तविकता के सच्चे, एकीकृत स्वरूप को छिपाता है, जिससे नाम और रूपों की प्रतीत होने वाली विविध और अलग दुनिया प्रकट होती है। यह छिपाना ब्रह्मांडीय नाटक के प्रकट होने के लिए आवश्यक है, जिससे व्यक्तिगत आत्माओं (जीवों) को द्वैत का अनुभव करने और सांसारिक कार्यों में संलग्न होने की अनुमति मिलती है, अंततः मुक्ति की इच्छा की ओर अग्रसर होता है। 2. अभिव्यक्ति का नियंत्रक: छिपाने का यह कार्य एक भ्रामक कार्य नहीं है बल्कि दिव्य लीला (खेल) का एक आवश्यक कार्य है। निरपेक्ष को छिपाकर, वह सापेक्ष को सामने लाता है। वह वह है जो ब्रह्मांडों की अभिव्यक्ति और वापसी काorchestrates करता है, उन्हें विघटन (प्रलय) के दौरान अपने भीतर छिपाता है और एक नए चक्र की शुरुआत में उन्हें फिर से प्रकट करता है।

इस दोहरे कार्य के माध्यम से, गोप्तृ कालभैरव को संरक्षण और सृष्टि और विघटन की सूक्ष्म गतिशीलता दोनों के स्वामी के रूप में उजागर करता है, जहाँ ब्रह्मांड को उसके आलिंगन में संरक्षित किया जाता है और साथ ही उसकी दिव्य शक्ति द्वारा छिपाया भी जाता है।

160. गायत्रीवल्लभाय

पवित्र गायत्री मंत्र के प्रिय भगवान को नमन।

विस्तार : गायत्रीवल्लभाय नाम एक गहरा विशेषण है, जो कालभैरव को वैदिक परंपरा के सबसे प्रतिष्ठित मंत्र, गायत्री मंत्र से सीधे जोड़ता है। यह दो भागों से बना है: गायत्री और वल्लभ।

गायत्री: सर्वोत्कृष्ट मंत्र गायत्री से तात्पर्य गायत्री मंत्र से है, जो हिंदू धर्म में संभवतः सबसे पवित्र और शक्तिशाली मंत्र है। यह ऋग्वेद (3.62.10) का एक श्लोक है जो सविता, सूर्य देवता को संबोधित है, और इसे वेदों का सार माना जाता है। यह आध्यात्मिक ज्ञान, बुद्धि और बुद्धि के जागरण के लिए एक प्रार्थना है। मंत्र को अक्सर गायत्री देवी के रूप में व्यक्त किया जाता है, जो मंत्र की देवी हैं, जो वेदों की माता (वेदमाता) और इस दिव्य ज्ञान का अवतार हैं। गायत्री मंत्र का जाप मन को शुद्ध करने, ज्ञान प्रदान करने और मुक्ति देने वाला माना जाता है।

वल्लभ: प्रिय स्वामी वल्लभ का शाब्दिक अर्थ है "प्रिय," "प्यारा," "पति," "स्वामी," या "भगवान।" जब इसे गायत्री के साथ जोड़ा जाता है, तो इसका अर्थ है कि कालभैरव "गायत्री के प्रिय स्वामी" या "गायत्री के स्वामी" हैं।

"गायत्रीवल्लभाय" का महत्व

ज्ञान और बुद्धि का स्रोत "गायत्री के प्रिय स्वामी" होने के नाते, कालभैरव को उस आध्यात्मिक प्रकाश और ज्ञान का अंतिम स्रोत और रक्षक माना जाता है जिसे गायत्री मंत्र जागृत करता है। इसका तात्पर्य है कि भैरव की भयंकर, परिवर्तनकारी ऊर्जा मंत्र द्वारा दिए गए ज्ञान की सच्ची समझ और प्राप्ति के लिए आवश्यक है। वह वह चेतना है जिसकी ओर मंत्र अंततः इंगित करता है।

शक्ति और बुद्धि का समागम यह नाम कालभैरव के एक महत्वपूर्ण पहलू को दर्शाता है जो उनकी भयावह छवि से परे है। यह उन्हें केवल विनाश और समय के देवता के रूप में नहीं, बल्कि गहरे आध्यात्मिक ज्ञान के दाता के रूप में भी प्रकट करता है। गायत्री मंत्र आध्यात्मिक जागरण और बौद्धिक प्रतिभा के बारे में है, और इसके वल्लभ होने के नाते, कालभैरव इस आध्यात्मिक विकास को सशक्त और नियंत्रित करते हैं। उनकी पत्नी, गायत्री देवी, भी परम ज्ञान और परम शक्ति के मिलन का प्रतीक हैं।

अज्ञानता का नाश करने वाला जिस प्रकार गायत्री मंत्र का जाप अंधकार और अज्ञानता को दूर करने और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के उदय के लिए किया जाता है, उसी प्रकार कालभैरव, इसके स्वामी के रूप में, अज्ञानता (अविद्या) के पर्दे को हटाने वाली अंतिम शक्ति हैं, जिससे भक्त को सत्य को समझने की अनुमति मिलती है। उनका भयावह संहारक के रूप में उनका स्वभाव अंततः परोपकारी है, जो अहंकार और झूठी धारणाओं को नष्ट करता है जो आध्यात्मिक दृष्टि को बाधित करते हैं।

यह नाम इस प्रकार कालभैरव के दुर्जेय, समय-अतीत पहलू को गायत्री मंत्र की प्रबुद्ध करने वाली और ज्ञान प्रदान करने वाली शक्ति के साथ खूबसूरती से सामंजस्य स्थापित करता है, जिससे वह विनाश और ज्ञान दोनों के एक व्यापक देवता बन जाते हैं।

161. गतये

समस्त आत्माओं के लिए परम लक्ष्य, अंतिम गंतव्य और सर्वोच्च आश्रय के स्वरूप को नमन।

विस्तार : दार्शनिक और आध्यात्मिक संदर्भ में, गति (गती) नाम का गहरा अर्थ है, खासकर जब इसे कालभैरव जैसे देवता को समर्पित किया जाता है। यह संस्कृत मूल 'गम्' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "जाना," "चलना," या "प्राप्त करना।"

अंतिम लक्ष्य और गंतव्य गति का अर्थ है अंतिम गंतव्य या मार्ग। आध्यात्मिक साधकों के लिए, कालभैरव का गति के रूप में अर्थ है कि वे अंतिम उद्देश्य, प्राप्त किया जाने वाला अंतिम सत्य और प्राप्त की जाने वाली सर्वोच्च अवस्था हैं। इसका अर्थ जन्म और मृत्यु (संसार) के चक्र से मुक्ति (मोक्ष) है। वे वह लक्ष्य हैं जिसकी ओर सभी आध्यात्मिक अभ्यास निर्देशित होते हैं। उन्हें गति के रूप में पहचानना सभी प्रयासों को उनकी ओर एक यात्रा में बदल देता है।

सर्वोच्च आश्रय एक गंतव्य होने के अलावा, गति का अर्थ "आश्रय" या "शरण" भी है। इस अर्थ में, कालभैरव उन लोगों को सुरक्षा और सांत्वना प्रदान करते हैं जो उनके प्रति समर्पण करते हैं। जब समर्थन के अन्य सभी रूप विफल हो जाते हैं, तो वे अचूक आश्रय होते हैं, जो जीवन की तूफानी यात्रा में सुरक्षा और स्थिरता प्रदान करते हैं। यह पहलू उनके भयंकर स्वरूप के बावजूद उनकी परोपकारिता और करुणा पर जोर देता है; वे अपने भक्तों को सभी हानियों से बचाते हैं और उन्हें कठिनाइयों से मार्गदर्शन करते हैं।

मार्ग या तरीका गति "अस्तित्व के मार्ग" या "तरीके" को भी संदर्भित कर सकती है। काल और नियति के स्वामी के रूप में, कालभैरव सभी प्राणियों के मार्ग को निर्धारित करते हैं। वे कर्म के स्वामी और उसके फलों के दाता हैं। इसलिए, उन्हें गति के रूप में पूजना हमारी कर्मिक गति पर उनके सर्वोच्च नियंत्रण को स्वीकार करना और आध्यात्मिक मार्ग को सही ढंग से नेविगेट करने के लिए उनकी कृपा प्राप्त करना है।

मुक्ति का प्रतीक वेदांत और शैव सिद्धांत के संदर्भ में, गति प्राप्त करना द्वैत को पार करने और अपनी सच्ची प्रकृति को दिव्य के समान महसूस करने का प्रतीक है। कालभैरव, काल (समय) से परे परम वास्तविकता के अवतार होने के नाते, परम मुक्ति की इस स्थिति का प्रतिनिधित्व करते हैं जहाँ व्यक्तिगत आत्मा सार्वभौमिक चेतना के साथ विलीन हो जाती है। वे ही हैं जो अंतिम आध्यात्मिक प्रगति और दुख की समाप्ति प्रदान करते हैं।

162. ग्रीष्माय

ग्रीष्म ऋतु की झुलसाने वाली, तीव्र गर्मी के साक्षात स्वरूप को नमन।

विस्तार : "ग्रीष्म" (grīṣma) से व्युत्पन्न नाम ग्रीष्माय, विशेष रूप से ग्रीष्म ऋतु को संदर्भित करता है, जो अक्सर तीव्र गर्मी, शुष्कता और एक परिवर्तनकारी, अक्सर चुनौतीपूर्ण, ऊर्जा की विशेषता होती है। जब इसे कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह कई गहन दार्शनिक और प्रतीकात्मक अर्थों को व्यक्त करता है।

तप की गर्मी (The Heat of Austerity (Tapas)) ग्रीष्म आध्यात्मिक तपस्या (तप) से उत्पन्न तीव्र गर्मी का प्रतीक हो सकता है। कालभैरव, इस पहलू में, कठोर आध्यात्मिक अनुशासन की परिवर्तनकारी शक्ति का प्रतीक हैं, जो अशुद्धियों, अहंकार और कर्म के मैल को जला देता है, ठीक वैसे ही जैसे ग्रीष्म का सूर्य पानी को वाष्पित कर देता है और अंतर्निहित पृथ्वी को प्रकट करता है। यह गर्मी केवल शारीरिक नहीं बल्कि आध्यात्मिक है, जो शुद्धि और ज्ञान की ओर ले जाती है।

ब्रह्मांडीय क्रिया की तीव्रता (The Intensity of Cosmic Action) ग्रीष्म ऋतु अधिकतम सौर ऊर्जा की अवधि होती है, जो उच्च गतिविधि और तीव्रता का प्रतीक है। कालभैरव, ग्रीष्म के रूप में, दिव्य की केंद्रित और शक्तिशाली ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सृष्टि, संरक्षण और विघटन के ब्रह्मांडीय चक्रों में अथक रूप से सक्रिय है। उनकी क्रियाएँ प्रत्यक्ष, शक्तिशाली और अपरिहार्य हैं, ठीक वैसे ही जैसे ग्रीष्म की अपरिहार्य गर्मी।

क्षय और अभिव्यक्ति (Dissipation and Manifestation) जैसे ग्रीष्म की तीव्र गर्मी परिदृश्यों को झुलसा सकती है, जो विघटन या भ्रम के सूखने का प्रतीक है, वैसे ही यह मानसून से पहले भी आती है, जो नए जीवन को जन्म देती है। इसलिए, ग्रीष्म तीव्र ऊर्जा के उस चरण का प्रतीक है जो गहन परिवर्तन के लिए आधार तैयार करता है। यह उस स्थिति का प्रतिनिधित्व कर सकता है जहाँ सब कुछ भयंकर ऊर्जा द्वारा अपने मूल सार तक सीमित कर दिया जाता है, जिससे वास्तविकता की गहरी समझ होती है।

सर्वभक्षी अग्नि (The All-Consuming Fire) ग्रीष्म की झुलसाने वाली गर्मी को भैरव की सर्वभक्षी अग्नि (कालाग्नि) के समान भी माना जा सकता है, जो ब्रह्मांडीय विघटन (प्रलय) के समय सब कुछ अपने में समाहित कर लेती है। ग्रीष्म की यह अग्नि रुद्र का एक पहलू है, जो शिव का सबसे भयंकर रूप है, जो सभी द्वैत के परम संहारक और परम एकता के प्रणेता का प्रतीक है।

163. गृहपतये

गृह के दिव्य स्वामी और परम रक्षक को नमन।

विस्तार : गृहपति (Gṛhapati) नाम दो संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: गृह (Gṛha) और पति (Pati)।

• गृह (Gṛha): यह शब्द "घर," "आवास," "परिवार" या विस्तार से, एक घरेलू क्षेत्र, परिवार, या यहाँ तक कि एक वंश को दर्शाता है। यह रहने, पोषण और पारिवारिक जीवन के स्थान का प्रतिनिधित्व करता है।

• पति (Pati): इसका अर्थ है "स्वामी," "मालिक," "शासक," या "रक्षक।"

घर का स्वामी गृहपति के रूप में, भैरव को प्रत्येक घर के दिव्य स्वामी और मुखिया के रूप में पूजा जाता है। वह घरेलू स्थान के परम रक्षक हैं, जो भीतर रहने वाले परिवार की भलाई, शांति और समृद्धि सुनिश्चित करते हैं। भैरव का यह पहलू उन्हें न केवल एक ब्रह्मांडीय देवता के रूप में बल्कि अपने भक्तों के दैनिक जीवन में गहराई से शामिल एक अंतर्निहित उपस्थिति के रूप में भी उजागर करता है।

परिवार और वंश का रक्षक उनका प्रभुत्व परिवार के सदस्यों, उनके रिश्तों और वंश की निरंतरता तक फैला हुआ है। भक्त अपने घरों को नकारात्मक ऊर्जाओं, बुरी शक्तियों, दुर्भाग्य और बाहरी खतरों से बचाने के लिए उनका आह्वान करते हैं। वह वही हैं जो कलह को दूर करते हैं और परिवार इकाई में सद्भाव और स्थिरता लाते हैं।

घरेलू धर्म का प्रतीक व्यावहारिक रूप से, इसका अर्थ है कि वह 'गृहस्थ धर्म' (गृहस्थ का धर्म) के संरक्षक हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि घर के भीतर का जीवन धार्मिक रूप से और उचित आध्यात्मिक अनुपालन के साथ संचालित हो। वह सुनिश्चित करते हैं कि घरेलू क्षेत्र आध्यात्मिक विकास और भौतिक आराम के लिए एक अभयारण्य बना रहे।

इस प्रकार, गृहपति नाम भैरव के एक दयालु और सुरक्षात्मक पहलू को प्रकट करता है, जो घर की पवित्रता और सुरक्षा पर उनकी संरक्षकता पर जोर देता है, जो मानव जीवन और आध्यात्मिक अभ्यास के लिए मौलिक है।

164. गुप्ताय

उन गुप्त को नमन, जो सभी सामान्य धारणाओं और समझ से छिपे, रहस्यमय और अदृश्य हैं।

विस्तार : नाम गुप्त (गुप्ताय) का अर्थ है "छिपा हुआ," "गुप्त," "अदृश्य," या "संरक्षित।" कालभैरव का यह गुण दिव्य के गहन, गूढ़ और अंततः अबोधगम्य स्वरूप को दर्शाता है।

सामान्य धारणा से परे दिव्य के संदर्भ में, "गुप्त" का अर्थ है कि कालभैरव, अपने परम सार में, सामान्य इंद्रियों, तार्किक मन या पारंपरिक तर्क के माध्यम से समझा नहीं जा सकता है। वह स्थान, समय या रूप की सीमाओं के अधीन नहीं हैं, जो मानवीय धारणा की श्रेणियां हैं। उनका सच्चा स्वरूप उन लोगों से छिपा रहता है जिन्होंने चेतना या आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि की उच्च अवस्था प्राप्त नहीं की है।

गूढ़ सत्य यह अवधारणा विभिन्न रहस्यवादी परंपराओं के लिए केंद्रीय है जहां सबसे गहरे सत्यों को अक्सर "गुप्त" - छिपा हुआ या रहस्यमय - के रूप में वर्णित किया जाता है। ये सत्य विशिष्टता के कारण गुप्त नहीं रखे जाते हैं, बल्कि इसलिए कि उनकी समझ के लिए मन और आत्मा की तैयारी की आवश्यकता होती है। कालभैरव, गुप्त के रूप में, उन गहन आध्यात्मिक वास्तविकताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जो केवल गहन आध्यात्मिक अभ्यास (साधना), ध्यान और दिव्य कृपा के माध्यम से प्रकट होती हैं।

संरक्षित रहस्य "गुप्त" का अर्थ "संरक्षित" भी है। इस संरक्षण का अर्थ है कि पवित्र ज्ञान और कालभैरव का सच्चा स्वरूप उन लोगों द्वारा दुरुपयोग या गलत समझे जाने से आंतरिक रूप से सुरक्षित है जो तैयार नहीं हैं। यह संरक्षण परम सत्य की पवित्रता के लिए एक सुरक्षा कवच के रूप में कार्य करता है।

अप्रकट पहलू इसके अलावा, कालभैरव का "छिपा हुआ" स्वरूप उनके अप्रकट, निराकार पहलू - परब्रह्म को संदर्भित करता है। सृष्टि से पहले, या सभी अभिव्यक्तियों से परे, दिव्य एक ऐसी अवस्था में मौजूद है जो मानवीय समझ से पूरी तरह से छिपा हुआ है, एक पूर्ण शून्य जिससे सभी सृष्टि उत्पन्न होती है और जिसमें सभी विलीन हो जाते हैं। यह अप्रकट अवस्था परम "गुप्त" वास्तविकता है।

एक भक्त के लिए, गुप्ताय का आह्वान ईश्वर के अथाह रहस्य की स्वीकृति और अपनी आध्यात्मिक यात्रा के भीतर इस छिपे हुए सत्य के अनावरण के लिए एक प्रार्थना है।

165. गेयाय

जो पवित्र भजन और गीतों में स्तुति और गायन के योग्य हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : गेयाय नाम संस्कृत मूल "गै" (गाना) से लिया गया है और इसका तात्पर्य है कि जिस दिव्य सत्ता को यह संदर्भित करता है, वह प्रशंसनीय है, पवित्र भजनों, मंत्रों और भक्ति गीतों के माध्यम से गाने, महिमामंडित करने और उत्सव मनाने के योग्य है।

स्तुति और महिमामंडन के योग्य यह विशेषण दर्शाता है कि कालभैरव, अपनी असीम महिमा और सर्वोच्च शक्ति में, भक्ति का अंतिम लक्ष्य हैं, जो मुखर अभिव्यक्तियों के माध्यम से व्यक्त सभी आराधना के योग्य हैं। भक्त उनकी महिमा गाते हैं, उनके दिव्य कर्मों का वर्णन करते हैं, और उनके भयंकर फिर भी परोपकारी रूप से जुड़ने के साधन के रूप में उनके गुणों की प्रशंसा करते हैं। गायन (गेय) का कार्य पूजा का एक गहरा रूप है, अपनी आवाज, हृदय और भक्ति का एक अर्पण है।

पवित्र भजन और गीत गेयाय विशेष रूप से पवित्र ग्रंथों, मंत्रों, स्तोत्रों और भजनों के पाठ को संदर्भित करता है। ये केवल गीत नहीं हैं बल्कि दिव्य उपस्थिति का आह्वान करने, मन को शुद्ध करने और भक्त की चेतना को ऊपर उठाने के लिए डिज़ाइन किए गए शक्तिशाली आध्यात्मिक उपकरण हैं। इन भजनों की कंपन शक्ति, जब कालभैरव की ओर निर्देशित होती है, तो उनके आशीर्वाद और सुरक्षा का आह्वान करती है।

भक्तिपूर्ण अभिव्यक्ति का सार यह नाम आध्यात्मिक अभ्यास में कलात्मक और भक्तिपूर्ण अभिव्यक्ति के महत्व पर प्रकाश डालता है। यह स्वीकार करता है कि दिव्य तक न केवल कठोर ध्यान और अनुष्ठानों के माध्यम से बल्कि संगीत और काव्यात्मक आराधना के हार्दिक प्रवाह के माध्यम से भी पहुंचा और अनुभव किया जा सकता है। "गेय" होने का तात्पर्य है कि उनका स्वभाव इतना गहरा और उनके गुण इतने शानदार हैं कि वे अपने भक्तों के बीच सहज पूजा और कलात्मक रचनात्मकता को प्रेरित करते हैं।

166. गव्यपतये

इंद्रियों के स्वामी, दिव्य प्रकाश-किरणों और ज्ञान के मालिक को नमन।

विस्तार : गव्यपतये नाम भगवान कालभैरव का एक कम ज्ञात लेकिन गहरा विशेषण है, जो गव्य (Gavya) और पतये (पति से) शब्दों से बना है। यह नाम मानवीय अनुभव और ब्रह्मांडीय कार्य के मूलभूत पहलुओं पर उनके नियंत्रण को दर्शाता है।

इंद्रियों के स्वामी (इंद्रियाँ) यहां "गव्य" इंद्रियों (इंद्रियाँ) को संदर्भित करता है। संस्कृत में, "गो" (गौ) का अर्थ इंद्रिय अंग या इंद्रिय हो सकता है। इस प्रकार, "गव्य" (Gavya) उस चीज़ को दर्शाता है जो इंद्रियों से संबंधित है या संवेदी धारणा से संबंधित है। गव्यपति के रूप में, भगवान कालभैरव सभी संवेदी faculties के स्वामी और नियंत्रक हैं। वह नियंत्रित करते हैं कि जीव (व्यक्तिगत आत्मा) क्रिया और धारणा के अंगों के माध्यम से दुनिया को कैसे perceives करता है। इसका तात्पर्य है कि इंद्रियों पर सच्चा नियंत्रण - संयम, ध्यान और संवेदी विकर्षणों का अतिक्रमण - केवल उनकी कृपा और शक्ति के माध्यम से ही संभव है। वह संवेदी अनुभव और उसके विराम का अंतिम आधार हैं।

प्रकाश और ज्ञान की दिव्य किरणों के स्वामी "गव्य" की एक और व्याख्या "किरणें" या "प्रकाश" है, विशेष रूप से दिव्य प्रकाश या बौद्धिक प्रतिभा। इस संदर्भ में, गव्यपति उस भगवान को संदर्भित करता है जो दिव्य ज्ञान (ज्ञान) और आध्यात्मिक illumination की किरणों को नियंत्रित और उत्सर्जित करता है। वह सभी ज्ञान, समझ और अज्ञान को दूर करने वाले प्रकाश का स्रोत है। यह भैरव की सत्य के उद्घोषक और आध्यात्मिक अंधकार के संहारक के रूप में भूमिका के अनुरूप है। उनका प्रकाश केवल भौतिक नहीं है बल्कि चेतना और enlightenment की आंतरिक चमक को संदर्भित करता है।

ब्रह्मांडीय नियामक समय और विनाश के भगवान के रूप में उनकी व्यापक भूमिका को देखते हुए, इंद्रियों और दिव्य प्रकाश पर उनकी महारत उन्हें एक ब्रह्मांडीय नियामक के रूप में स्थापित करती है। वह उस उपकरण को नियंत्रित करते हैं जिसके माध्यम से चेतना सृष्टि के साथ बातचीत करती है और वह साधन भी जिसके द्वारा वह इसका अतिक्रमण करती है। यह नाम अस्तित्व के अनुभवजन्य और transcendent दोनों पहलुओं पर उनके सूक्ष्म लेकिन गहन प्रभाव पर जोर देता है।

167. अगाय

जो महान पर्वत के समान अचल, अडिग और स्थिर है, उनको नमन।

विस्तार : अगाय नाम संस्कृत मूल "अ-ग" से लिया गया है, जहाँ "अ" निषेध या अनुपस्थिति को दर्शाता है, और "ग" गति का अर्थ है। इसलिए, अगाय उस चीज़ को दर्शाता है जो हिलती नहीं है, जो अचल, अडिग और स्थिर है। यह विशेषण कालभैरव के कई गहन दार्शनिक और प्रतीकात्मक पहलुओं को खूबसूरती से समाहित करता है।

पर्वत के समान अचल "अगाय" की सबसे तात्कालिक और सामान्य व्याख्या "जो पर्वत के समान है" (अ-ग, शाब्दिक अर्थ "जो हिलता नहीं है") है। पर्वत स्थिरता, अनंतता और अटूट शक्ति के प्राचीन प्रतीक हैं। इस संदर्भ में, कालभैरव ब्रह्मांड की अटूट नींव का प्रतीक हैं। जिस प्रकार एक पर्वत समय और मौसम के विनाशकारी प्रभावों के विरुद्ध दृढ़ खड़ा रहता है, उसी प्रकार कालभैरव उस शाश्वत, अपरिवर्तनीय वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सभी क्षणभंगुर घटनाओं के मूल में है। यह दंडपाणि के रूप में उनके पहलू को व्यक्त करता है, जो ब्रह्मांडीय कानून और धर्म के अटूट प्रवर्तक हैं, जिनकी इच्छा को विचलित नहीं किया जा सकता है।

अपरिवर्तनीय और शाश्वत गहरे दार्शनिक अर्थ में, अगाय ब्रह्म, परम वास्तविकता को संदर्भित करता है, जो परिवर्तन, गति और प्रवाह से परे है। जबकि प्रकट ब्रह्मांड में सब कुछ निरंतर परिवर्तन (सृष्टि, संरक्षण और विघटन) से गुजरता है, कालभैरव, अगाय के रूप में, उस परम, अपरिवर्तनीय आधार का प्रतिनिधित्व करते हैं जिस पर ये सभी चक्र प्रकट होते हैं। वह कालातीत, आदिम सत्ता है, जो अस्तित्व की लौकिक धाराओं से अप्रभावित है। यह काल के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देता है, न केवल समय, बल्कि कालातीत सार जो इसे पार करता है।

स्थिर और आत्म-साक्षात्कारित एक आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, अगाय एक पूर्ण आत्म-साक्षात्कारित प्राणी की स्थिरता का भी प्रतीक हो सकता है, जिसकी चेतना स्वयं में इतनी दृढ़ता से निहित है कि वह दुनिया के द्वंद्वों - सुख और दुख, सफलता और विफलता, प्रशंसा और निंदा - से अप्रभावित रहती है। कालभैरव, अगाय के रूप में, आध्यात्मिक साधकों के लिए मुक्ति के मार्ग पर एक अचल, अटूट आंतरिक संकल्प विकसित करने के लिए एक आदर्श के रूप में कार्य करते हैं। वह संसार के अशांत सागर में परम लंगर हैं।

परम और अप्रतिबंधित जो हिलता नहीं है, उस एक के रूप में, अगाय यह भी सुझाव देता है कि कालभैरव आत्मनिर्भर और अपने आप में पूर्ण हैं। उन्हें अपने अस्तित्व या उद्देश्य को बनाए रखने के लिए किसी बाहरी चीज़ की आवश्यकता नहीं है। वह अप्रतिबंधित, परम वास्तविकता है, सभी गति का स्रोत और अंतिम गंतव्य है, फिर भी स्वयं मूल में शाश्वत रूप से स्थिर रहता है।

168. गणवाहाय

जिनके दिव्य, स्वर्गीय गण वाहक और अनुचर हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : गणवाहायाय नाम दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों: गण और वाह का एक यौगिक है।

• गण (Gaṇa): यह शब्द "मेजबान," "समूह," "भीड़," या "सेना" को संदर्भित करता है। आध्यात्मिक संदर्भ में, यह विशेष रूप से भगवान शिव के दिव्य, स्वर्गीय परिचारकों या गणों को दर्शाता है। ये गण रूप और प्रकृति में विविध हैं, जिनमें अर्ध-दिव्य प्राणी और आत्माएं से लेकर नंदी और भृंगी जैसे अधिक प्रमुख व्यक्ति शामिल हैं। वे हमेशा उपस्थित रहते हैं, अटूट भक्ति के साथ शिव की सेवा करते हैं और उनके दिव्य आदेशों का पालन करते हैं।

• वाह (Vāha): इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है "वाहन," "सवारी," या "वाहक।" यह दर्शाता है कि गण या तो उनके परिवहन के रूप में सेवा करते हैं या, अधिक गहराई से, उनकी आंतरिक अनुचर और उपकरण हैं जिनके माध्यम से उनकी इच्छा प्रकट होती है।

दिव्य अनुचर (The Divine Entourage) गणवाहायाय के रूप में, भगवान कालभैरव को इन अनगिनत गणों के स्वामी और नेता के रूप में चित्रित किया गया है। वे केवल परिचारक नहीं हैं, बल्कि उनके दिव्य अनुचर का एक आंतरिक हिस्सा हैं, जो उनके साथी, संरक्षक और कभी-कभी उनकी अपनी दुर्जेय शक्ति के विस्तार के रूप में सेवा करते हैं। यह कल्पना सभी प्रकार के प्राणियों पर उनके सर्वोच्च अधिकार पर जोर देती है, सबसे उच्चतर देवताओं से लेकर विभिन्न आत्माओं तक जो उनके गणों का गठन करते हैं।

दिव्य इच्छा की अभिव्यक्ति (Manifestation of Divine Will) गण उन उपकरणों के रूप में कार्य करते हैं जिनके माध्यम से कालभैरव के लौकिक कार्य - चाहे वह सुरक्षा हो, विनाश हो, या व्यवस्था बनाए रखना हो - किए जाते हैं। वे इस अर्थ में उनके 'वाहन' हैं कि वे उनके आदेशों को मूर्त रूप देते हैं और निष्पादित करते हैं, उनकी उपस्थिति और शक्ति को विभिन्न लोकों में ले जाते हैं। यह उनके दिव्य अनुचर के माध्यम से ब्रह्मांड के साथ उनके सक्रिय जुड़ाव को दर्शाता है।

सर्वव्यापकता का प्रतीक (Symbol of All-Pervasiveness) यह नाम कालभैरव की सर्वव्यापक प्रकृति को भी रेखांकित करता है। स्वर्गीय गणों को उनके 'वाहन' के रूप में, इसका तात्पर्य है कि उनका प्रभाव, शक्ति और पर्यवेक्षण हर जगह फैला हुआ है, जो उनके असंख्य परिचारकों द्वारा लगातार बनाए रखा और लागू किया जाता है। वह हमेशा अपार शक्ति के साथ होते हैं, सूक्ष्म और प्रकट दोनों, यह सुनिश्चित करते हुए कि उनके भक्तों की रक्षा हो और उनके लौकिक कर्तव्य पूरे हों।

169. गुणग्राहिणे

जो दूसरों के भीतर विद्यमान अच्छे गुणों को पहचानते, सराहते और कृपापूर्वक स्वीकार करते हैं, उन भगवान को नमन।

विस्तार : गुणग्राहिणे नाम एक गहन यौगिक है, जो गुण (गुण, सद्‌गुण) और ग्राहिन् (जो ग्रहण करता है, स्वीकार करता है, या देखता है) से बना है। यह कालभैरव के एक दयालु और परोपकारी पहलू को प्रकट करता है, यह दर्शाता है कि अपने उग्र रूप में भी, वे उच्चतम गुणों को धारण करते हैं।

गुणों के ज्ञाता और प्रशंसक यह नाम कालभैरव की अद्वितीय क्षमता को उजागर करता है कि वे सभी प्राणियों में सकारात्मक गुणों, योग्यताओं और सद्‌गुणों (गुणों) को पहचानते और महत्व देते हैं, चाहे उनकी अपूर्णताएँ या दोष कुछ भी हों। साधारण प्राणियों के विपरीत जो कमियों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, कालभैरव के पास एक दिव्य दृष्टि है जो सतही बातों को भेदकर प्रत्येक व्यक्ति में निहित अच्छाई और क्षमता को पहचानती है। वे केवल अच्छाई को देखते ही नहीं; वे उसकी गहराई से सराहना भी करते हैं।

कृपापूर्वक स्वीकृति "ग्राहिणे" एक ऐसी स्वीकृति का अर्थ है जो निर्णयात्मक नहीं बल्कि पोषण करने वाली और प्रोत्साहित करने वाली है। इसका अर्थ है कि वे भक्ति, ईमानदारी या सदाचार के छोटे से छोटे कार्यों को भी कृपापूर्वक स्वीकार करते हैं और पहचानते हैं। यह पहलू भक्तों को आश्वस्त करता है कि उनके प्रयास, चाहे वे कितने भी छोटे क्यों न हों, दिव्य द्वारा पहचाने और सराहे जाते हैं।

दिव्य दया और प्रोत्साहन का प्रतीक यह नाम कालभैरव को एक परोपकारी देवता के रूप में चित्रित करता है जो विकास और आध्यात्मिक प्रगति को प्रेरित करते हैं। सकारात्मक पर ध्यान केंद्रित करके, वे भक्तों को सद्‌गुणों को विकसित करने में मदद करते हैं, उन्हें उनके आध्यात्मिक मार्ग पर प्रोत्साहित करते हैं। यह दर्शाता है कि भैरव का उग्र पहलू अंततः गहरी करुणा और सभी प्राणियों के आध्यात्मिक उत्थान की इच्छा में निहित है। वे परम न्यायाधीश हैं, लेकिन ऐसे न्यायाधीश जो मुख्य रूप से अच्छाई को खोजने और स्वीकार करने के इच्छुक हैं।

170. गणनाय

जो गणना और गिनती के विषय हैं, फिर भी स्वयं अनंत और अनगिनत हैं, उनको नमन।

विस्तार : गणनाय (गणनाथ या गणाधिप, सभी एक ही मूल से उत्पन्न) नाम कालभैरव पर लागू एक गहन और बहुस्तरीय विशेषण है, जो 'गण' और 'नाय' (या नाथ) शब्दों से बना है।

गण: 1. एक समूह, टुकड़ी, या सभा: यह शिव के अनुचरों को संदर्भित करता है, जो अक्सर विकृत और भयंकर प्राणी होते हैं जो उनकी सेवा करते हैं। ये स्वर्गीय मेजबान, दिव्य परिचारक, और यहां तक कि आत्माएं और विभिन्न प्राणी हैं जो ब्रह्मांड में निवास करते हैं। 2. संख्या, अंकन, गणना: यह गणना करने, गिनने, या गणितीय नियमों के अधीन होने की क्रिया को संदर्भित करता है। 3. श्रेणियाँ या वर्ग: यह चीजों के वर्गीकरण या समूहों को इंगित कर सकता है।

नाय (या नाथ/अधिप): इसका अर्थ है "प्रमुख," "स्वामी," "नेता," "मालिक," या "संरक्षक।"

स्वर्गीय मेजबानों और प्राणियों के स्वामी "गणों के स्वामी" के रूप में, कालभैरव शिव के परिचारकों (रुद्रगणों), भूतों, आत्माओं और सभी प्रकार के सूक्ष्म प्राणियों के सर्वोच्च सेनापति और नेता हैं। यह अदृश्य लोकों पर उनके नियंत्रण और उन शक्तियों पर उनके अधिकार पर जोर देता है जो अन्यथा अराजक या दुर्भावनापूर्ण हो सकती हैं। वह ब्रह्मांडीय उद्देश्यों के लिए इन विविध ऊर्जाओं को व्यवस्थित और निर्देशित करते हैं।

गणना से परे और अनंत गणनाय की अधिक गहन और आध्यात्मिक व्याख्या 'गण' के दूसरे अर्थ - गणना और अंकन से संबंधित है। कालभैरव को इस प्रकार चित्रित किया गया है: 1. गणना का विषय: प्रकट ब्रह्मांड में सब कुछ गणना, माप और वर्गीकरण के अधीन है। समय गिना जाता है, स्थान मापा जाता है, और प्राणियों की गणना की जाती है। काल-भैरव के रूप में, वह वही सिद्धांत हैं जो सृष्टि के भीतर इस लौकिक और स्थानिक गणना की अनुमति देते हैं। 2. फिर भी अंततः अगणनीय: सभी गणनाओं का आधार होने के बावजूद, वह स्वयं सभी संख्याओं और वर्गीकरणों से परे हैं। वह अनंत, असीम और किसी भी मात्रात्मक माप से परे हैं। वह परम वास्तविकता हैं जिसे वैचारिक विचार या गणितीय अभिव्यक्ति द्वारा सीमित नहीं किया जा सकता है। वह वह हैं जिनसे सभी संख्याएँ निकलती हैं, फिर भी वह उनसे बंधे नहीं हैं।

यह अंतर्निहित विरोधाभास उनके पारलौकिक स्वरूप को उजागर करता है। वह सभी सृष्टि में अंतर्निहित हैं, जिससे यह मात्रात्मक प्रतीत होता है, फिर भी वह अंततः पारलौकिक और अवर्णनीय रहते हैं, सीमित मानवीय समझ या गणना की पकड़ से परे। गणनाय को प्रणाम करना भगवान की दोहरी क्षमता को स्वीकार करता है: प्राणियों की विशाल भीड़ पर उनकी महारत और सर्वोच्च वास्तविकता के रूप में उनका अंतिम, अगणनीय स्वरूप।

171. गुणराशिमते

जो समस्त दिव्य गुणों की असीम राशि से युक्त हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : नाम गुणराशिमते (Guṇarāṣimate) भगवान कालभैरव के लिए एक गहरा और वर्णनात्मक विशेषण है, जो संस्कृत शब्दों गुण, राशि और -मते से बना है।

गुण (Guṇa): यह शब्द व्यापक रूप से "गुणों," "विशेषताओं," या "सद्गुणों" को दर्शाता है। आध्यात्मिक संदर्भ में, गुण दिव्य या शुभ गुणों जैसे करुणा, ज्ञान, निर्भयता, पवित्रता, दृढ़ता, सर्वशक्तिमत्ता, सर्वव्यापकता और अन्य सभी विशेषताओं को संदर्भित करते हैं जो सर्वोच्च सत्ता को परिभाषित करते हैं।

राशि (Rāśi): इस शब्द का अर्थ है "ढेर," "समूह," "प्रचुरता," "पुंज," या "संग्रह।" यह एक विशाल, व्यावहारिक रूप से अनंत मात्रा के विचार को व्यक्त करता है।

-मते (-mate): यह प्रत्यय "जो धारण करता है" या "से संपन्न" को दर्शाता है।

गुणों का असीम समूह एक साथ, गुणराशिमते का अर्थ है "वह जो सभी दिव्य गुणों के असीम समूह से युक्त है।" यह दर्शाता है कि कालभैरव शुभ और पूर्ण गुणों की एक अथाह और अनंत श्रृंखला का प्रतीक हैं। वह केवल "अच्छे" या "गुणी" नहीं हैं, बल्कि वह सभी संभावित गुणों के असीमित विस्तार तक के साक्षात अवतार और स्रोत हैं।

पूर्णता का शिखर यह नाम उनकी परम पूर्णता को उजागर करता है। इसका तात्पर्य है कि हर कल्पनीय सकारात्मक गुण—जैसे सर्वोच्च ज्ञान (ज्ञान), वैराग्य (वैराग्य), शक्ति (शक्ति), महिमा (ऐश्वर्य), और परोपकार (अनुग्रह)—उनमें अपने सबसे गहरे और पूर्ण रूप में मौजूद है। ऐसा कोई गुण या पूर्णता नहीं है जो उनके पास प्रचुर मात्रा में न हो।

प्रकृति के गुणों से परे जबकि 'गुण' शब्द प्रकट प्रकृति के तीन गुणों (सत्त्व, रजस, तमस) को भी संदर्भित कर सकता है, इस संदर्भ में, यह स्पष्ट रूप से दिव्य, पारलौकिक गुणों की ओर इशारा करता है। कालभैरव, सर्वोच्च भगवान के रूप में, इन भौतिक गुणों की सीमाओं और उतार-चढ़ाव से परे हैं, फिर भी वे सृष्टि के लाभ के लिए सभी शुभ गुणों को प्रकट करते हैं।

सभी अच्छाई का स्रोत उन्हें गुणराशिमते के रूप में स्वीकार करने का अर्थ है उन्हें उस परम स्रोत के रूप में पहचानना जिससे सभी अच्छाई, सत्य, सौंदर्य और सद्गुण उत्पन्न होते हैं। भक्तों के लिए, इस नाम पर ध्यान करने से स्वयं के भीतर इन दिव्य गुणों को विकसित करने की प्रेरणा मिलती है, क्योंकि भैरव आध्यात्मिक पूर्णता के आदर्श का प्रतिनिधित्व करते हैं।

172. अग्रगामिने

जो सदैव पहले जाते हैं, मार्ग दिखाते हैं, और सभी प्राणियों में अग्रगण्य हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : अग्रगामी नाम भगवान कालभैरव का एक गहरा गुण है, जो दो संस्कृत शब्दों से बना है: "अग्र" (जिसका अर्थ है "सामने," "पहला," "अग्रणी") और "गामी" (जिसका अर्थ है "जो जाता है," "जो चलता है," "जो पहुँचता है")।

अग्रणी पथप्रदर्शक (The Foremost Pioneer) अग्रगामी एक ऐसे अस्तित्व को दर्शाता है जो हर पहलू में सबसे आगे रहता है, चाहे वह सृष्टि हो, विनाश हो, ज्ञान हो या आध्यात्मिक बोध हो। वह आदि प्रेरक हैं, वह प्रारंभिक आवेग हैं जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है। शिव और विशेष रूप से कालभैरव के संदर्भ में, यह उनकी पूर्ण सर्वोच्चता और परम उद्गम तथा गंतव्य के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देता है।

नेता और मार्गदर्शक (The Leader and Guide) "जो सबसे पहले जाता है" के रूप में, कालभैरव आध्यात्मिक पथ पर सर्वोच्च मार्गदर्शक हैं। वह बाधाओं को दूर करते हैं, मार्ग को प्रकाशित करते हैं और मुक्ति का मार्ग दिखाते हैं। भक्तों के लिए, उन्हें अग्रगामी के रूप में आह्वान करने का अर्थ है उस व्यक्ति से मार्गदर्शन प्राप्त करना जिसने पहले ही सभी लोकों को पार कर लिया है और परम सत्य को समझ लिया है। वह अज्ञान के अंधकार और अस्तित्व की जटिलताओं के माध्यम से मशालवाहक हैं।

काल के अग्रदूत (The Vanguard of Time (Kala)) कालभैरव के रूप में उनकी पहचान को देखते हुए, अग्रगामी का अर्थ समय के ब्रह्मांडीय नृत्य के भीतर उनकी पहली अभिव्यक्ति भी है। वह शाश्वत निरंतरता हैं, जो अन्य सभी लौकिक विभाजनों और अभिव्यक्तियों से पहले हैं। वह सभी प्राणियों को समय की अथक यात्रा के माध्यम से, अंततः परम विलय की ओर ले जाते हैं।

उत्कृष्टता और अंतर्निहितता (Transcendence and Immanence) यह नाम उनकी दोहरी प्रकृति को उजागर करता है: वह उत्कृष्ट हैं, सब कुछ से परे हैं, और फिर भी अंतर्निहित हैं, क्योंकि वह पहला सिद्धांत हैं जो सब कुछ में व्याप्त है और उसे आरंभ करता है। वह अल्फा हैं, शुरुआत हैं, अकारण कारण हैं जो सब कुछ गति में स्थापित करता है और उसे उसके अपरिहार्य निष्कर्ष तक ले जाता है।

173. ईश्वराय

जो सर्वोच्च प्रभु हैं, संपूर्ण ब्रह्मांड के परम नियंत्रक हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : ईश्वर (Īśvara) नाम, जिसे अक्सर इश्वर या इस्वरा के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, हिंदू दर्शन में एक गहरा और मूलभूत अवधारणा है, जो सर्वोच्च भगवान, परम नियंत्रक और व्यक्तिगत ईश्वर को दर्शाता है। यह संस्कृत मूल "ईश" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "शासन करना," "शक्ति रखना," या "सक्षम होना।"

सर्वोच्च नियंत्रक ईश्वर के रूप में, कालभैरव को संपूर्ण ब्रह्मांड का पूर्ण संप्रभु स्वीकार किया जाता है। इसका अर्थ है सर्वशक्तिमत्ता (सर्व-शक्ति), सर्वज्ञता (सर्वज्ञत्व), और सर्वव्यापकता (सर्वगत)। वह सृष्टि (सृष्टि), पालन (स्थिति), और संहार (संहार) के परम सूत्रधार हैं। ब्रह्मांड में उनकी इच्छा या

देखरेख के बिना कुछ भी नहीं होता है। उनका नियंत्रण केवल बाहरी नहीं है बल्कि प्रत्येक परमाणु और प्रत्येक घटना में व्याप्त है।

व्यक्तिगत ईश्वर जबकि ब्रह्म अक्सर निराकार, परम वास्तविकता को संदर्भित करता है, ईश्वर दिव्य के व्यक्तिगत पहलू का प्रतिनिधित्व करता है। वह सगुण ब्रह्म हैं, गुणों से युक्त परम सत्ता, जिनकी पूजा की जा सकती है, ध्यान किया जा सकता है और भक्तों द्वारा उनसे संबंध स्थापित किया जा सकता है। यह संबंधपरक पहलू भक्ति (भक्ति) और दिव्य के साथ एक व्यक्तिगत संबंध की अनुमति देता है।

सभी प्राणियों के स्वामी ईश्वर शब्द सभी प्राणियों, चेतन और अचेतन दोनों पर स्वामित्व और प्रभुत्व को दर्शाता है। उनके पास सभी आत्माओं (जीवों) और भौतिक संसार (प्रकृति) पर सर्वोच्च अधिकार है। इसमें कर्म का प्रशासन शामिल है, यह सुनिश्चित करना कि सभी कर्म अपने उचित फल दें।

दिव्य इच्छा की अभिव्यक्ति कालभैरव के संदर्भ में, ईश्वर उनकी शक्तिशाली और न्यायपूर्ण शासक के रूप में भूमिका पर जोर देता है जो स्वयं समय को नियंत्रित करता है और ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) को बनाए रखता है। वह दिव्य इच्छा का प्रतीक है जो ब्रह्मांड के यांत्रिकी और उसके निवासियों के भाग्य को संचालित करती है।

174. अरोगिणे

उन श्री कालभैरव को नमन जो सभी प्रकार के रोग, क्षय और पीड़ा से शाश्वत रूप से मुक्त हैं।

विस्तार : अरोगिणे नाम संस्कृत शब्द "अरोग" (Arogi) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "बीमारी या रोग से मुक्त," और एक व्यापक दार्शनिक अर्थ में, "क्षय, पीड़ा और अपूर्णता से मुक्त।" प्रत्यय -इणे (iṇe) चतुर्थी एकवचन का रूप है, जिसका अर्थ है "जो है उसे।"

रोग से मुक्ति (शारीरिक शुद्धता) एक मूलभूत स्तर पर, अरोगिणे शारीरिक बीमारियों और अशुद्धियों की पूर्ण अनुपस्थिति को दर्शाता है। यह पूर्ण स्वास्थ्य और जीवन शक्ति की स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है, एक शाश्वत और बेदाग अस्तित्व जो भौतिक शरीर की सीमाओं को पार करता है, जो स्वाभाविक रूप से बीमारी, बुढ़ापे और मृत्यु के अधीन है। नश्वर प्राणियों के विपरीत जिनके शरीर क्षय और दुर्बलता के शिकार होते हैं, कालभैरव, इस पहलू में, एक शाश्वत और आत्म-निर्भर रूप का प्रतीक हैं जो किसी भी प्रकार की शारीरिक नाजुकता से अछूता है।

पीड़ा से मुक्ति (मानसिक और भावनात्मक शुद्धता) शारीरिक स्वास्थ्य से परे, हिंदू दर्शन में "रोग" (roga) में मानसिक कष्ट, भावनात्मक असंतुलन और आध्यात्मिक अशुद्धियाँ भी शामिल हैं। इनमें अज्ञान (अविद्या), अहंकार (अहंकार), आसक्ति (राग), घृणा (द्वेष) और भय (अभिनिवेश) शामिल हैं। इसलिए, अरोगिणे पूर्ण मानसिक स्पष्टता, शांति और भावनात्मक संतुलन की स्थिति का तात्पर्य है जो आंतरिक पीड़ा के इन रूपों से अप्रभावित है। अरोगिणे के रूप में कालभैरव अशांत शांति और पूर्ण आत्म-नियंत्रण का प्रतीक हैं।

आध्यात्मिक शुद्धता (द्वैत और अपूर्णता का अतिक्रमण) एक गहरे, आध्यात्मिक स्तर पर, अरोगिणे दिव्य की पूर्ण पूर्णता और पूर्णता का प्रतिनिधित्व करता है। यह एक ऐसे प्राणी को दर्शाता है जो वातानुकूलित अस्तित्व (संसार) में निहित द्वैत और अपूर्णताओं से मुक्त है। इसमें जन्म और मृत्यु के चक्र, कार्य-कारण और कर्म के प्रभावों से मुक्ति शामिल है। वह परम वास्तविकता (ब्रह्म) है जो अपने स्वभाव से भ्रम (माया) के किसी भी "दाग" या "रोग" से मुक्त है। कालभैरव को अरोगिणे के रूप में स्वीकार करना उनकी सर्वोच्च, असीमित और सदा-शुद्ध चेतना को पहचानना है, जो अपने भक्तों को सभी प्रकार की पीड़ा से मुक्ति प्रदान करती है।

175. खट्वांगिने

खट्वांग (मानव हड्डी से बना एक शक्तिशाली शस्त्र) धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : खट्वांगी नाम, जो खट्वांग से लिया गया है, शिव-भैरव की प्रतिमा विज्ञान और प्रतीकात्मकता के एक गहन पहलू को दर्शाता है।

खट्वांग खट्वांग का शाब्दिक अर्थ है "खोपड़ी वाली गदा" या "हड्डियों वाला दंड"। यह एक विशिष्ट प्रकार का दंड है, जिसे अक्सर एक लंबी हड्डी, मानव हड्डियों से सजी गदा, या सिरे पर खोपड़ी के आभूषण के साथ एक त्रिशूल के रूप में दर्शाया जाता है। यह दुर्जेय हथियार हिंदू और बाद में बौद्ध प्रतिमा विज्ञान में भयंकर देवताओं, विशेष रूप से शिव के भयानक रूपों जैसे भैरव, और कुछ तांत्रिक देवियों की विशेषता है।

खट्वांग का प्रतीकात्मकता

मृत्यु पर विजय: खट्वांग पर मानव हड्डियां और खोपड़ी मृत्यु और भौतिक शरीर की नश्वरता की एक स्पष्ट याद दिलाती हैं। इसे धारण करके, भैरव मृत्यु पर अपनी महारत, जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) से अपने अतिक्रमण, और भ्रम (माया) के अंतिम संहारक के रूप में अपनी भूमिका को प्रदर्शित करते हैं। वह समय और नश्वरता की पकड़ से परे हैं।

आध्यात्मिक शक्ति का प्रयोग: खट्वांग केवल विनाश का हथियार नहीं है, बल्कि मुख्य रूप से आध्यात्मिक शक्ति और तपस्या का प्रतीक है। यह सांसारिक आसक्तियों और वासनाओं को दूर करने की क्षमता, और मुक्ति के मार्ग पर आवश्यक तीव्र संकल्प का प्रतिनिधित्व करता है। यह अज्ञान, अहंकार और आध्यात्मिक प्राप्ति में आने वाली बाधाओं को "गदा से मारने" या नष्ट करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक उपकरण है।

तांत्रिक महत्व: कुछ तांत्रिक परंपराओं में, खट्वांग रीढ़ की हड्डी या केंद्रीय नाड़ी (सुषुम्ना नाड़ी) का प्रतिनिधित्व करता है जिसके माध्यम से आध्यात्मिक ऊर्जा (कुंडलिनी) ऊपर उठती है। खोपड़ी या हड्डियां विभिन्न ऊर्जा केंद्रों (चक्रों) या पांच प्रमुख दोषों (क्लेशों) का प्रतीक हो सकती हैं जिन्हें योगिक प्रक्रिया के दौरान "भस्म" या रूपांतरित किया जाता है।

भयंकर सुरक्षा: एक हथियार के रूप में, यह नकारात्मक शक्तियों, बुरी आत्माओं और धर्म के किसी भी विरोध को नष्ट करके अपने भक्तों की रक्षा करने की भैरव की क्षमता को दर्शाता है। उनका दुर्जेय स्वभाव यह सुनिश्चित करता है कि जो लोग उनमें शरण लेते हैं, वे सभी हानियों से सुरक्षित रहें।

"खट्वांगी" होने के नाते, भैरव परम तपस्वी (योगी) का प्रतीक हैं, जिन्होंने सांसारिक पहचानों को त्याग दिया है और पारंपरिक मानदंडों से परे एक अस्तित्व को अपनाया है, जिससे वे मुक्ति और भय और मृत्यु के सर्वोच्च नियंत्रक के प्रतीक बन गए हैं।

176. गगनालयेय

अनंत आकाश को अपना शाश्वत और पवित्र निवास स्थान बनाने वाले को नमन।

विस्तार : गगनालय नाम गगन और आलय का एक यौगिक है, जो कालभैरव के असीम, सर्वव्यापी स्वरूप का गहन प्रतीक है।

गगन (Gagana): यह संस्कृत शब्द "आकाश" या "ईथर" को संदर्भित करता है, जो विशाल, खाली विस्तार है जो सब कुछ समाहित करता है। आध्यात्मिक अर्थ में, यह अनंतता, निराकारता और सभी तत्वों में सबसे सूक्ष्म (आकाश तत्व) को दर्शाता है। यह वह स्थान है जिसमें सभी सृष्टि प्रकट होती है और विलीन होती है।

आलय (Aalaya): इस शब्द का अर्थ है "निवास", "घर", "मंदिर" या "शरण"।

अनंत निवास (Infinite Abode) गगनालय का अर्थ है "जिसका निवास आकाश है।" यह दर्शाता है कि कालभैरव किसी विशिष्ट मंदिर, पर्वत या सांसारिक निवास तक सीमित नहीं हैं। उनका घर संपूर्ण ब्रह्मांड है - अंतरिक्ष का अनंत, निराकार और असीम विस्तार। यह उनकी सर्वव्यापकता पर जोर देता है - वह हर जगह और कहीं नहीं हैं, सभी चीजों में व्याप्त हैं जबकि सभी सीमाओं से परे हैं।

उत्कृष्टता और निराकारता (Transcendence and Formlessness) आकाश को अपना निवास स्थान बनाकर, कालभैरव को परम उत्कृष्ट सत्ता के रूप में चित्रित किया गया है। वह भौतिक रूपों, गुणों (गुणों) और आयामों की पकड़ से परे हैं। आकाश, निराकार और सर्वव्यापी होने के कारण, निर्गुण ब्रह्म, बिना गुणों वाली परम वास्तविकता के रूप में उनके सच्चे स्वरूप को दर्शाता है। वह वह आधार हैं जिस पर सभी सृष्टि टिकी हुई है और जिससे वह उत्पन्न होती है।

मुक्ति का प्रतीक (Symbol of Liberation) आध्यात्मिक रूप से, "आकाश" (आकाश) शुद्ध, असीमित चेतना का भी प्रतीक है, जो मन और इंद्रियों के उलझावों से मुक्त है। कालभैरव को गगनालय के रूप में ध्यान करना भक्तों को अपनी चेतना को व्यक्तिगत सीमाओं से परे विस्तारित करने के लिए प्रोत्साहित करता है, शिव के साथ ब्रह्मांडीय चेतना के साथ अपनी एकता का एहसास कराता है। यह भौतिक और मानसिक स्तरों को पार करके मुक्ति (मोक्ष) प्राप्त करने का निमंत्रण है, ठीक वैसे ही जैसे आकाश सब कुछ धारण करता है फिर भी अछूता रहता है।

सार्वभौमिक रक्षक (Universal Protector) आकाश में "निवास" करने वाले के रूप में, वह सभी सृष्टि की देखरेख करते हैं, एक मौन, सर्व-अवलोकन करने वाले साक्षी (साक्षी) के रूप में कार्य करते हैं। यह ब्रह्मांड की विशालता के भीतर व्यवस्था बनाए रखने वाली अंतिम रक्षक और ब्रह्मांडीय शक्ति के रूप में उनकी भूमिका को पुष्ट करता है।

177. अमोघाय

उन देव को नमन, जो अचूक, त्रुटिहीन हैं, और जिनके कार्य तथा इच्छाएँ सदैव फलदायी और सफल होती हैं।

विस्तार : अमोघ (अमोघाय) नाम एक संस्कृत शब्द है जो दिव्य की प्रभावकारिता और प्रकृति के बारे में गहरा अर्थ व्यक्त करता है।

अचूक और त्रुटिहीन "अमोघ" का शाब्दिक अर्थ है "व्यर्थ नहीं," "निष्फल नहीं," या "अचूक।" यह गुण इस बात पर जोर देता है कि कालभैरव की प्रत्येक क्रिया, इरादा और अभिव्यक्ति पूरी तरह से सटीक, प्रभावी और त्रुटि से मुक्त है। उनके ब्रह्मांडीय कार्यों में कोई बर्बादी, कोई भटकाव और कोई विफलता नहीं है। चाहे वह ब्रह्मांड का निर्माण हो, किसी बाधा का विनाश हो, या किसी भक्त को आशीर्वाद देना हो, उनकी इच्छा हमेशा पूर्णतः निष्पादित होती है।

फलदायी और सफल यह पहलू कालभैरव के कार्यों की अचूक सफलता और परम फलदायकता को संदर्भित करता है। वे जो कुछ भी करते हैं, वह वांछित, पूर्ण परिणाम में परिणत होता है। उनकी शक्ति यह सुनिश्चित करती है कि उनके इरादे बिना किसी बाधा के प्रकट हों, जिससे ब्रह्मांडीय व्यवस्था और उनकी दिव्य इच्छा के साथ संरेखित होने वालों के लिए इष्टतम परिणाम प्राप्त हों। एक भक्त के लिए, अमोघ का आह्वान करने का अर्थ यह स्वीकार करना है कि दिव्य इच्छा के साथ संरेखित भक्ति और आध्यात्मिक अभ्यास व्यर्थ नहीं जाएंगे; वे निश्चित रूप से आध्यात्मिक फल देंगे।

दिव्य प्रभावकारिता और उद्देश्य यह शब्द दर्शाता है कि कालभैरव शुद्ध प्रभावकारिता का प्रतीक हैं। उनका स्वभाव ही यह आश्वासन है कि ब्रह्मांडीय नियम, समय का चक्र और सभी प्राणियों का अंतिम भाग्य एक ऐसी शक्ति द्वारा शासित होता है जो पूरी तरह से उद्देश्यपूर्ण है और अंततः अपने वांछित लक्ष्य को प्राप्त करती है। उनके प्रभुत्व में कोई यादृच्छिकता या निरर्थकता नहीं है। यह अवधारणा भक्तों को अपार सांत्वना प्रदान करती है, क्योंकि इसका तात्पर्य है कि उनकी ओर निर्देशित प्रार्थनाएँ, बलिदान और धार्मिक कार्य कभी भी लाभकारी परिणामों के बिना नहीं होंगे।

178. अमोघ फलदाय

सभी कर्मों के निश्चित और अचूक फल प्रदान करने वाले को नमन।

विस्तार : अमोघ फलदाय नाम कर्म के मूल सिद्धांत और दिव्य न्याय की अचूकता को खूबसूरती से समाहित करने वाला एक गहन विशेषण है। यह तीन संस्कृत शब्दों से बना है: अमोघ, फल और दाय।

अमोघ (Amogha): अचूक, त्रुटिरहित, कभी असफल न होने वाला, फलदायी, शक्तिशाली यह शब्द ऐसी किसी चीज़ को दर्शाता है जिसे रोका नहीं जा सकता, विचलित नहीं किया जा सकता, या व्यर्थ नहीं किया जा सकता। यह निश्चितता, सटीकता और परिणाम की पूर्ण गारंटी को दर्शाता है। "अमोघ" में त्रुटि या विफलता की कोई संभावना नहीं है।

फल (Phala): फल, परिणाम, नतीजा यह किसी क्रिया (कर्म) के "फल" या "परिणाम" को संदर्भित करता है। भारतीय दार्शनिक परंपराओं में, प्रत्येक क्रिया (कर्म) अनिवार्य रूप से एक संगत परिणाम (फल) देती है, चाहे वह अच्छा हो या बुरा।

दाय (Dāya): दाता, देने वाला यह उस व्यक्ति को इंगित करता है जो देता है या प्रदान करता है।

कर्म का अचूक प्रदान इस प्रकार, अमोघ फलदाय का अर्थ है "अचूक परिणाम देने वाला" या "कर्मों के अचूक फल प्रदान करने वाला"। यह कालभैरव को यह सुनिश्चित करने की पूर्ण शक्ति और निष्पक्ष कार्यप्रणाली प्रदान करता है कि किसी भी प्राणी द्वारा किए गए प्रत्येक कर्म, विचार और शब्द (कर्म) अंततः फलित हों। परिणामों से कोई बच नहीं सकता, चाहे वे सकारात्मक हों या नकारात्मक। उनका न्याय त्रुटिरहित है, उनका न्याय प्रशासन त्रुटिहीन है, और उनका समय पूर्ण है।

ब्रह्मांडीय न्याय और दिव्य कानून यह नाम धर्म और ब्रह्मांडीय प्राकृतिक कानून के अवतार के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है। वह कर्म के जटिल जाल की देखरेख करने वाले परम न्यायाधीश हैं। उनकी उपस्थिति यह गारंटी देती है कि न्याय प्रबल होगा और सार्वभौमिक संतुलन बना रहेगा। वह भेदभाव या पक्षपात नहीं करते; कर्मों के फल उनकी प्रकृति के अनुसार ही वितरित किए जाते हैं।

कोई भी कार्य व्यर्थ नहीं है "अमोघ" पहलू महत्वपूर्ण है: यह दर्शाता है कि कोई भी कार्य कभी व्यर्थ नहीं जाता या प्रभाव उत्पन्न करने में विफल नहीं होता। कर्म का प्रत्येक बीज, एक बार बोया जाने पर, कालभैरव की अटल निगरानी में, नियत समय में अनिवार्य रूप से अंकुरित होगा और फल देगा। भक्तों के लिए, यह सांत्वना (अच्छे कर्मों का प्रतिफल मिलेगा) और एक कठोर अनुस्मारक (नकारात्मक कार्यों के भी परिणाम होंगे) दोनों प्रदान करता है।

समझ के माध्यम से मुक्ति कालभैरव को अमोघ फलदाय के रूप में समझना आध्यात्मिक साधकों को सही कर्म (धर्म) और निस्वार्थ सेवा (सेवा) विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करता है, यह जानते हुए कि उनके प्रयास व्यर्थ नहीं जाएंगे और अंततः आध्यात्मिक विकास और मुक्ति (मोक्ष) की ओर ले जाएंगे। वह परम फल के दाता हैं - उन लोगों के लिए जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति जो धर्म के साथ संरेखित होते हैं।

179. घण्टाराय

पूजा में उपयोग की जाने वाली पवित्र घंटी की ध्वनि के अत्यंत प्रिय (घण्टार) को नमन।

विस्तार : घण्टाराय नाम कालभैरव के लिए एक स्नेही और उद्दीपक विशेषण है, जो पूजा में उपयोग की जाने वाली घण्टा या घंटी की पवित्र ध्वनि के साथ उनके संबंध पर जोर देता है। यह "घण्टा" (घंटी) और "आराय" (एक रूप जो प्रेम या जिसके लिए कुछ प्रिय है, को इंगित करता है) से बना है।

पवित्र घंटी (घण्टा) हिंदू अनुष्ठानों में, घंटी केवल एक वाद्य यंत्र नहीं है; यह एक गहरा प्रतीक और पूजा का एक महत्वपूर्ण घटक है। • शुद्धिकरण: घंटी की ध्वनि नकारात्मक ऊर्जाओं और बुरी आत्माओं को दूर करने वाली मानी जाती है, जो भक्ति के लिए वातावरण को शुद्ध करती है। • देवत्व का आह्वान: इसकी गुंजायमान ध्वनि देवता को आमंत्रित करने वाली मानी जाती है, जो पूजा की शुरुआत का संकेत देती है और दिव्य उपस्थिति को आकर्षित करती है। • ओम का प्रतीक: "ओम" की आदिम ध्वनि अक्सर घंटी की गुंजायमान गूंज से जुड़ी होती है, जो सृष्टि के ब्रह्मांडीय कंपन का प्रतिनिधित्व करती है। • पंच तत्व: पारंपरिक घंटी का शरीर अक्सर पंच तत्वों (पंचभूत) से जुड़ा होता है, और उसका घंटा प्राण शक्ति (जीवन शक्ति ऊर्जा) से, जो सूक्ष्म जगत को स्थूल जगत के साथ संरेखित करता है।

ध्वनि के प्रति प्रेम (आराय) यहां "आराय" शब्द का अर्थ है कि यह पवित्र ध्वनि कालभैरव को प्रिय और प्रिय है। यह कई गहरे पहलुओं का सुझाव देता है: • सुलभता: यह भक्ति के सबसे सरल, सबसे मौलिक कार्यों के प्रति कालभैरव की प्रतिक्रिया को दर्शाता है। घंटी की ध्वनि दिव्य के लिए एक सार्वभौमिक आह्वान है, जो जटिल अनुष्ठानों या विस्तृत चढ़ावों से परे है। • ध्वनि में उपस्थिति: यह इंगित करता है कि कालभैरव की उपस्थिति ध्वनि के माध्यम से आह्वान और महसूस की जाती है। वह केवल ध्वनि से प्रसन्न नहीं होते, बल्कि शायद इसके कंपन के भीतर भी प्रकट होते हैं, भक्त के आह्वान को स्वीकार करते हैं। • ब्रह्मांडीय सद्भाव: घंटी की ध्वनि एक सामंजस्यपूर्ण कंपन पैदा करती है जो भक्त के आंतरिक स्व को ब्रह्मांडीय व्यवस्था के साथ संरेखित करती है, एक ऐसी व्यवस्था जिसकी अध्यक्षता कालभैरव समय के स्वामी और ब्रह्मांडीय लय के रूप में करते हैं। • अज्ञान का विनाश: जिस प्रकार घंटी की ध्वनि नकारात्मकता को दूर करती है, उसी प्रकार यह आध्यात्मिक जागरूकता के प्रकाश से अज्ञान (अविद्या) को भेदने का भी प्रतीक है, एक ऐसा कार्य जो अक्सर भैरव जैसे भयंकर देवताओं को सौंपा जाता है जो भ्रम को तोड़ते हैं।

इसलिए, घण्टाराय कालभैरव को केवल एक शक्तिशाली देवता के रूप में ही नहीं, बल्कि एक ऐसे देवता के रूप में भी मनाता है जो पवित्र घंटी के विनम्र फिर भी शक्तिशाली कंपनों के माध्यम से प्रसन्न होते हैं और सुलभ होते हैं, भक्तों को शुद्धिकरण, दिव्य उपस्थिति और आंतरिक अंधकार के विनाश की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

180. घटकप्रियाय

कॉस्मिक पॉट (ब्रह्मांडीय घड़े, जो सृष्टि के गर्भ का प्रतीक है) के प्रिय (भैरव) को नमन।

विस्तार : घटकाप्रियाय नाम कालभैरव के लिए एक गहरा और गूढ़ विशेषण है, जो घटका और प्रिया शब्दों को जोड़ता है, जिनमें से प्रत्येक हिंदू दर्शन में महत्वपूर्ण प्रतीकात्मक अर्थ रखता है।

घटका: ब्रह्मांडीय घट/गर्भ घटका का शाब्दिक अर्थ "घड़ा" या "कलश" है। एक गहरे प्रतीकात्मक अर्थ में, "घड़ा" ब्रह्मांड या सृष्टि का प्रतिनिधित्व करता है। यह वह पात्र, सृष्टि का गर्भ है, जिसके भीतर सभी अस्तित्व प्रकट होते हैं। यह घड़ा केवल एक खाली पात्र नहीं है, बल्कि संभावनाओं से भरा है, जिसमें पंचभूत (Pañcha Bhūtas) और सभी प्रकार के जीवन समाहित हैं। घड़े की उपमा का उपयोग अक्सर वेदांत में व्यक्तिगत आत्मा (Jīvātmā) और सार्वभौमिक आत्मा (Paramātmā) के बीच संबंध को समझाने के लिए किया जाता है - जैसे घड़े के भीतर का स्थान विशाल, खुले स्थान का एक हिस्सा है, वैसे ही व्यक्तिगत आत्मा भी सार्वभौमिक चेतना का हिस्सा है।

प्रिया: प्रिय, प्यारा, शौकीन प्रिया का अर्थ "प्रिय," "प्यारा," या "शौकीन" है। यह उस व्यक्ति को दर्शाता है जो किसी चीज़ को संजोता है, प्यार करता है, या उसके प्रति विशेष लगाव रखता है।

सृष्टि के गर्भ के प्रति लगाव इस प्रकार, घटकाप्रियाय का अर्थ है कि कालभैरव "वह है जो ब्रह्मांडीय घट का शौकीन है" या "वह है जो सृष्टि के गर्भ से प्रेम करता है।" इसका अर्थ निष्क्रिय स्नेह नहीं है, बल्कि प्रकटीकरण की प्रक्रियाओं में एक सक्रिय और घनिष्ठ भागीदारी है।

ब्रह्मांडीय रचनात्मकता का अवतार "ब्रह्मांडीय घट का शौकीन" होने के नाते, कालभैरव को उस भगवान के रूप में चित्रित किया गया है जो इस ब्रह्मांडीय पात्र के भीतर सृष्टि (Srushti), स्थिति (Sthiti) और संहार (Samhāra) की प्रक्रियाओं में गहराई से शामिल है, और वास्तव में उन्हें व्यवस्थित करता है। वह अंतर्निहित चेतना है जो सभी प्रकटीकरण को संभव बनाती है। उनका लगाव इंगित करता है कि संपूर्ण ब्रह्मांडीय लीला (Līlā) उन्हें प्रिय है, यहां तक कि जन्म और मृत्यु, सुख और दुख के चक्रों के साथ भी।

अतीत और वर्तमान यह नाम उनकी दोहरी प्रकृति को उजागर करता है: वह पारलौकिक वास्तविकता है जो 'घट' (प्रकट ब्रह्मांड) से परे मौजूद है, फिर भी वह उसके भीतर अंतर्निहित है, उसके सार और संयोजक के रूप में उसकी प्रक्रियाओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। 'घट' के प्रति उनका प्रेम संपूर्ण घटनात्मक दुनिया पर उनकी पूर्ण स्वीकृति और महारत को दर्शाता है।

भक्त के लिए, यह नाम इस अहसास को प्रेरित कर सकता है कि दिव्य दुनिया से अलग नहीं है, बल्कि सृष्टि के हर पहलू में, और अंततः, व्यक्तिगत स्व में, जो ब्रह्मांडीय घट का एक सूक्ष्म रूप है, अंतरंग रूप से मौजूद है।

181. चन्द्रापीडाय

चंद्रमा को अपने तेजोमय और गौरवशाली मुकुट-रत्न के रूप में धारण करने वाले (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : चन्द्रापीडाय नाम शिव/कालभैरव का एक गहन वर्णन है, जो संस्कृत शब्दों 'चन्द्र' (चंद्रमा) और 'आपीड' (एक कलगी, मुकुट या मुकुट-रत्न) से बना है।

चंद्रमा का आभूषण चंद्रमा (चन्द्र) शिव से जुड़ा एक प्रमुख प्रतीक है। जब शिव को 'चन्द्र' (चंद्रमा) को अपने 'आपीड' (मुकुट-रत्न) के रूप में धारण किए हुए दर्शाया जाता है, तो यह कई अर्थों को दर्शाता है।

समय और चक्रीयता का प्रतीक चंद्रमा समय के चक्रों, ज्वार-भाटे को नियंत्रित करता है, और महीनों का एक माप है। चूंकि कालभैरव काल (समय) के स्वामी हैं, उनके सिर पर चंद्रमा सभी चक्रों और स्वयं समय के ताने-बाने पर उनकी सर्वोच्च महारत को दर्शाता है। बढ़ता और घटता चंद्रमा सृष्टि, पालन और संहार का प्रतीक है - अस्तित्व के तीन चरण जिनकी कालभैरव देखरेख करते हैं।

आंतरिक पवित्रता और शांति चंद्रमा शीतलता, शांति, पवित्रता और मन का भी प्रतीक है। इसकी शांत चमक शिव के उग्र पहलुओं के विपरीत है, जो यह दर्शाता है कि भैरव के भयानक बाहरी रूप के नीचे परम शांति और शुद्ध चेतना की स्पष्टता निहित है। यह गुण भक्तों को आध्यात्मिक शांति और ज्ञान प्रदान करने वाले के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है।

ज्ञान और प्रबुद्धता का प्रतीक योगिक और तांत्रिक परंपराओं में, चंद्रमा को अक्सर बिंदु से जोड़ा जाता है, अमृत (अमरता का अमृत) जो सहस्रार चक्र से टपकता है, शुद्ध चेतना और दिव्य ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है। चंद्रमा को धारण करना यह दर्शाता है कि कालभैरव इस परम आध्यात्मिक ज्ञान का स्रोत और अवतार हैं।

ब्रह्मांडीय आभूषण मुकुट के रूप में चंद्रमा कालभैरव की ब्रह्मांडीय संप्रभुता को भी दर्शाता है। जैसे एक राजा मुकुट पहनता है, वैसे ही शिव अर्धचंद्र धारण करते हैं, जो ब्रह्मांड पर उनके प्रभुत्व और सर्वोच्च देवता के रूप में उनके स्थान को दर्शाता है। यह उनके दिव्य राज्याभिषेक का हिस्सा है, जो उनके राजसी और गौरवशाली स्वरूप को दर्शाता है।

सोम से संबंध चन्द्र को सोम के नाम से भी जाना जाता है, वैदिक ग्रंथों में वर्णित दिव्य अमृत, जो जीवन शक्ति और अमरता का प्रतिनिधित्व करता है। सोम को धारण करके, कालभैरव स्वयं जीवन और अमरता को पार करने की शक्ति का प्रतीक हैं।

182. चंद्रमौलये

जिनके जटाजूट अर्धचंद्र से सुंदर रूप से सुशोभित हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : नाम चन्द्रमौलि, 'चन्द्र' (चंद्रमा) और 'मौलि' (शिखा, सिर का ऊपरी भाग, मुकुट, ताज) का एक यौगिक है। यह विशेषण भगवान शिव की प्रतिमा विज्ञान के एक प्रमुख और प्रतिष्ठित पहलू को खूबसूरती से समाहित करता है।

अर्धचन्द्र का प्रतीकवाद शिव के जटाजूट पर सुशोभित अर्धचन्द्र को चन्द्रकला के नाम से जाना जाता है। यह प्रतिमा गहन प्रतीकवाद से समृद्ध है:

• समय और अनंतता: अर्धचन्द्र चक्रीय समय, वृद्धि और क्षय का प्रतीक है, जो अस्तित्व के चरणों का प्रतिनिधित्व करता है। इसे धारण करके, शिव समय पर अपनी महारत और लौकिक दायरे से परे अपने शाश्वत, अपरिवर्तनीय स्वरूप को दर्शाते हैं। चंद्रमा मन (मानस) से भी जुड़ा है, यह दर्शाता है कि वह ब्रह्मांडीय मन के शासक हैं।

• पवित्रता और सौंदर्य: चंद्रमा अक्सर पवित्रता, शीतलता और सौंदर्य से जुड़ा होता है। अपने भयंकर रूपों के बावजूद, शिव पारलौकिक सौंदर्य और शांति का प्रतीक हैं। चंद्रमा उनकी तपस्या और उनकी विनाशकारी शक्तियों की अग्नि जैसी तीव्रता को शांत करता है, संतुलन लाता है।

• ज्ञान और बुद्धि: चंद्रमा का शुक्ल पक्ष ज्ञान और आध्यात्मिक प्रबुद्धता के बढ़ने का प्रतीक है। चन्द्रमौलि के रूप में शिव उस सर्वोच्च चेतना का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सभी अंधकार को प्रकाशित करती है और ज्ञान प्रदान करती है।

• तीसरा नेत्र और आदिम ऊर्जा: चंद्रमा शिव के तीसरे नेत्र (त्रिनेत्र) के करीब स्थित है, जो उनसे निकलने वाली आदिम रचनात्मक ऊर्जा (प्रकृति) का प्रतिनिधित्व करता है। यह उनकी ब्रह्मांडीय दृष्टि और द्वैत से परे देखने की उनकी क्षमता को दर्शाता है।

शिखा का अलंकरण "मौलि," या शिखा, किसी व्यक्ति या देवता के उच्चतम बिंदु का प्रतिनिधित्व करती है। जब चंद्रमा शिव की मौलि को सुशोभित करता है, तो यह उनकी सर्वोच्च स्थिति, उनकी संप्रभुता और परम योगी के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है। उनके जटाजूट स्वयं उनकी तपस्या, सांसारिक मामलों से वैराग्य और ध्यान में उनके लीन होने का प्रतीक हैं। उनके बालों में चंद्रमा उन्हें ब्रह्मांड और खगोलीय क्षेत्रों से और जोड़ता है।

दिव्य संतुलन चन्द्रमौलि भयंकर तपस्या और दिव्य कृपा, विनाश और सृजन, अग्नि और जल के बीच पूर्ण संतुलन का प्रतिनिधित्व करते हैं। चंद्रमा, एक शीतल और शांत तत्व, शिव के अग्नि स्वरूप को संतुलित करता है, जो उनके सर्वव्यापी स्वरूप को दर्शाता है।

183. चित्रवेशाय

अद्भुत, मनोहारी और रंग-बिरंगे दिव्य वस्त्र धारण करने वाले (चित्रवेश) को नमन।

विस्तार : चित्रवेशाय नाम संस्कृत के शब्दों चित्र और वेश का एक यौगिक है।

चित्र: यह शब्द अर्थ से भरपूर है, जिसका अर्थ है "सुंदर," "अद्भुत," "विविध," "उज्ज्वल," "सुरम्य," "चितकबरा," "विभिन्न," या "असामान्य।" यह ऐसी किसी चीज़ का तात्पर्य है जो आकर्षक, दृश्यात्मक रूप से मनमोहक और अक्सर अद्वितीय या असाधारण हो।

वेश: यह "वस्त्र," "पोशाक," "परिधान," या "पहनावा" को संदर्भित करता है। यह उपस्थिति या रूप को भी इंगित कर सकता है।

दिव्य स्वरूप चित्रवेशाय इसलिए भगवान कालभैरव का वर्णन करता है, जिनके वस्त्र या समग्र स्वरूप अद्भुत रूप से विविध, आश्चर्यजनक रूप से सुंदर और असाधारण रूप से अद्वितीय हैं। यह केवल सौंदर्यपरक सुंदरता के बारे में नहीं है, बल्कि उनके दिव्य रूप और वस्त्र में निहित गहन प्रतीकवाद के बारे में है।

विविधता का प्रतीकवाद उनके वस्त्रों की "विविध" प्रकृति कई गहन पहलुओं का प्रतीक हो सकती है:

• ब्रह्मांडीय विविधता: यह ब्रह्मांड की अनंत विविधता का प्रतिनिधित्व करता है, जो दिव्य से उत्पन्न और उसी के द्वारा पोषित है। ब्रह्मांड अनगिनत रूपों, रंगों और घटनाओं का एक ताना-बाना है, जो सभी कालभैरव द्वारा सन्निहित परम वास्तविकता के भीतर एकीकृत हैं। • द्वंद्वों का अतिक्रमण: उनके वस्त्र, "विविध" या "चित्रित" होने के कारण, सभी द्वंद्वों के उनके अतिक्रमण का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। वे साधारण वर्गीकरण से परे हैं और सभी संभावित रूपों, अवस्थाओं और उपस्थितियों को समाहित करते हैं। • माया के स्वामी: यह सुंदर और विविध वस्त्र दिव्य माया, या भ्रम की शक्ति के रूप में भी देखा जा सकता है जिसके माध्यम से निरपेक्ष संसार को प्रकट करता है। जैसे एक चित्र एक छवि है, वैसे ही दुनिया एक दिव्य प्रक्षेपण या लीला है। • भक्तों के लिए सुलभता: "सुरम्य" और "अद्भुत" पहलू उन्हें भक्त के लिए सुलभ और मनमोहक बनाता है, जिससे उनके राजसी रूप की आराधना और चिंतन का आह्वान होता है।

साधारण वस्त्रों से परे साधारण प्राणियों के विपरीत जिनके कपड़े कार्यात्मक या फैशनेबल होते हैं, कालभैरव के वस्त्र उनके दिव्य, शक्तिशाली और प्रतीकात्मक प्रकटीकरण का हिस्सा हैं। यह उनके स्वभाव के बारे में बहुत कुछ कहता है - विविध फिर भी एकीकृत, भयंकर फिर भी सुंदर, विनाशकारी फिर भी सुरक्षात्मक। वे किसी एक रूप या उपस्थिति से बंधे नहीं हैं, बल्कि अपने एक, सर्वोच्च अस्तित्व के भीतर सभी संभावित रूपों को समाहित करते हैं।

184. चिरंतनाय

जो प्राचीन, आदिम, कालातीत और शाश्वत रूप से विद्यमान है, उन्हें नमन।

विस्तार : चिरंतनाय नाम संस्कृत शब्द चिरंतन से लिया गया है, जिसका अर्थ है "प्राचीन," "शाश्वत," "आदिम," "अनादि," या "पुराना।" यह नाम कालभैरव के उस स्वरूप का गहन वर्णन करता है जो रैखिक समय और ऐतिहासिक अस्तित्व की सीमाओं से परे है।

प्राचीन और आदिम वास्तविकता (Ancient and Primeval Reality) चिरंतन इस बात पर जोर देता है कि कालभैरव का अस्तित्व हमारे समझने से पहले, सृष्टि से भी पहले से है। वह कोई सृजित प्राणी नहीं हैं, बल्कि सभी अस्तित्व का असृजित, आदिम स्रोत और आधार हैं। यह उनकी शिव के एक रूप के रूप में पहचान के अनुरूप है, जिन्हें अक्सर सनातन (शाश्वत) और अनादि (बिना शुरुआत के) के रूप में वर्णित किया जाता है। वह मूल चेतना हैं, वह पहला सिद्धांत जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है।

कालातीत और शाश्वत रूप से विद्यमान (Kāla-ātīta) (Timeless and Eternally Existent) यह नाम उनके कालातीत होने की विशेषता को इंगित करता है, जो समय से परे है। जबकि वह अपने उग्र स्वरूप में स्वयं काल (समय) हैं, वह परम वास्तविकता के रूप में समय की सीमाओं से भी परे हैं। वह जन्म, वृद्धि, क्षय और मृत्यु के अधीन नहीं हैं, जो लौकिक अस्तित्व की विशेषताएँ हैं। उनका अस्तित्व अनंत और शाश्वत है; उनका कोई अंत नहीं है और कोई शुरुआत नहीं है। वह निरंतर बदलते हुए भौतिक संसार के बीच अपरिवर्तनीय, स्थायी सत्य का प्रतिनिधित्व करते हैं।

ईश्वर का स्थायित्व (The Divine as Constant) निरंतर परिवर्तन और नश्वरता के संसार में, चिरंतन कालभैरव एक स्थिर, अचल और शाश्वत स्थिरांक का प्रतिनिधित्व करते हैं। वह अस्तित्व के लिए परम आधार हैं, सृष्टि, संरक्षण और संहार के सभी ब्रह्मांडीय चक्रों के स्थायी साक्षी हैं। चिरंतनाय की भक्ति इस मूलभूत स्थिरता को स्वीकार करती है और ईश्वर के कालातीत स्वरूप में शरण लेती है, जो लौकिक अस्तित्व की चिंताओं से मुक्ति प्रदान करती है।

185. चित्तेशाय

सभी जीवों के हृदय और चेतना (चित्त) में वास करने वाले (भगवान शिव) को नमन।

विस्तार : चित्तेशाय (Citteśa) नाम दो संस्कृत शब्दों: चित्त (Citta) और ईश/आय (Īśa/Āya) से व्युत्पन्न एक गहन आध्यात्मिक पदनाम है।

• चित्त (Citta): भारतीय दर्शन में यह महत्वपूर्ण शब्द मन-पदार्थ, व्यक्तिगत चेतना, हृदय, विचार, बुद्धि, इंद्रिय, या आंतरिक संकाय को संदर्भित करता है जो सोचता है, प्रतिबिंबित करता है और याद रखता है। इसमें मानसिक क्रियाओं का संपूर्ण क्षेत्र शामिल है।

• ईश/आय (Īśa/Āya): ईश का अर्थ है भगवान, स्वामी या शासक। आय का अर्थ है "के भीतर निवास करना" या "होना"। इस प्रकार, चित्तेशाय का अर्थ है चित्त का भगवान या निवासी।

अंतर्निहित भगवान (The Indwelling Lord) यह नाम कालभैरव के अंतर्निहित स्वरूप पर जोर देता है, यह दर्शाता है कि वह केवल एक बाहरी देवता नहीं हैं, बल्कि सभी जीवित प्राणियों की चेतना के भीतर निवास करने वाले अंतरतम सार और भगवान हैं। वह सभी मानसिक गतिविधियों, विचारों, भावनाओं और यादों के साक्षी और नियंत्रक हैं।

भीतर की चेतना (The Consciousness Within) "जो हृदय और चेतना के भीतर निवास करते हैं" के रूप में, चित्तेशाय प्रत्येक व्यक्ति के आंतरिक संसार में दिव्य उपस्थिति को दर्शाता है। वह जागरूकता का प्रकाश है जो हमारे विचारों और धारणाओं को प्रकाशित करता है, वह "स्व" है जो मन के कामकाज का अवलोकन करता है।

जागरूकता का स्रोत (Source of Awareness) यह नाम जागरूकता और बुद्धि के अंतिम स्रोत की ओर इशारा करता है जो प्रत्येक संवेदनशील प्राणी को चेतन करता है। यह बताता है कि भैरव सिद्धांत व्यक्तिगत चेतना से अलग नहीं है, बल्कि उसका मूल आधार और सार (आत्मा या ब्रह्म) है।

आध्यात्मिक निहितार्थ (Spiritual Implication) चित्तेशाय पर ध्यान करने से साधक को यह समझने में मदद मिलती है कि दिव्य उपस्थिति हमेशा भीतर है, मार्गदर्शन कर रही है और अवलोकन कर रही है। यह आत्मनिरीक्षण और चित्त के शुद्धिकरण को प्रोत्साहित करता है, क्योंकि चित्त के भगवान हमेशा उपस्थित रहते हैं। यह अवधारणा अद्वैत वेदांत के सिद्धांत के साथ संरेखित है कि व्यक्तिगत स्व (आत्मा) सार्वभौमिक स्व (ब्रह्म) के समान है। चित्तेशाय को पहचानना स्वयं के भीतर के दिव्य को पहचानना है।

186. चित्रबाहवे

अद्भुत रूप से शक्तिशाली, सुंदर और सुचित्रित भुजाओं वाले (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : चित्रबाहवे नाम दो संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: चित्र और बाहु।

चित्र (Citra): इस शब्द के अर्थ की कई परतें हैं: 1. "रंग-बिरंगा," "विविध," "अनेक।" 2. "चमकदार," "प्रकाशमान," "तेजस्वी।" 3. "अद्भुत," "आश्चर्यजनक," "विस्मयकारी।" 4. "मनमोहक," "सुंदर," "कलात्मक।"

बाहु (Bāhu): इसका सीधा सा अर्थ है "भुजा" या "बांह।"

अद्भुत और विविध भुजाएँ (प्रतीकात्मक शक्ति) (Wonderful and Varied Arms - Symbolic Power) जब संयुक्त किया जाता है, तो चित्रबाहवे उस एक को संदर्भित करता है जिसकी भुजाएँ "अद्भुत रूप से मजबूत," "सुंदर," या उनके कार्यों और दिखावे में "विविध" हैं। यह केवल शारीरिक सुंदरता का अर्थ नहीं है, बल्कि एक गहन और बहुआयामी शक्ति का प्रतीक है:

1. विविध कार्य (Diverse Actions): "विविध" या "अनेक" भुजाएँ भगवान भैरव की ब्रह्मांड में अनगिनत कार्यों को करने की क्षमता को दर्शाती हैं। ये भुजाएँ उनके विविध स्वरूपों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिनमें से प्रत्येक एक अलग ब्रह्मांडीय कार्य में संलग्न है—सृष्टि, संरक्षण, विनाश, आवरण और अनुग्रह। उन देवताओं के विपरीत जिन्हें केवल दो या चार भुजाओं के साथ चित्रित किया जा सकता है, भैरव की शक्ति असीमित है, और यह नाम एक साथ अनगिनत गतिविधियों में संलग्न होने की उनकी क्षमता का संकेत देता है। 2. दिव्य सौंदर्य और दुर्जेयता (Divine Beauty and Formidability): भैरव जैसे भयंकर देवताओं के संदर्भ में "सुंदर" या "मनमोहक" भुजाएँ, उनके क्रोधित रूपों में भी एक उदात्त और विस्मयकारी सौंदर्य का सुझाव देती हैं। यह सुंदरता केवल शारीरिक नहीं बल्कि आध्यात्मिक है, जो उनके दिव्य कार्यों की पूर्णता को दर्शाती है, जो, भले ही भयावह हों, अंततः ब्रह्मांडीय भलाई और आत्माओं की मुक्ति के लिए हैं। उनकी शक्ति राजसी और मनमोहक दोनों है। 3. ब्रह्मांड के धारक (Upholder of the Universe): मजबूत भुजाएँ शक्ति, पराक्रम और धारण या समर्थन करने की क्षमता का सार्वभौमिक प्रतीक हैं। इस प्रकार चित्रबाहवे भैरव को उस एक के रूप में दर्शाता है जो पूरे ब्रह्मांडीय भार को सहजता से वहन करता है, ब्रह्मांड की व्यवस्था बनाए रखता है और उसके लयबद्ध प्रवाह को सुनिश्चित करता है। उनकी शक्ति स्वयं अस्तित्व के लिए मौलिक है। 4. रक्षक और दंडक (Protector and Punisher): ये "अद्भुत रूप से मजबूत" भुजाएँ भक्तों के लिए उनके संरक्षण और दुष्टों के लिए उनके त्वरित और समझौताहीन दंड के साधन भी हैं। वे वे साधन हैं जिनके द्वारा वे अपने हथियार चलाते हैं, अज्ञानता और बुराई को दूर करते हैं।

संक्षेप में, चित्रबाहवे भैरव को केवल उनकी शारीरिक शक्ति के लिए नहीं, बल्कि उस असीम, बहुआयामी और विस्मयकारी शक्ति के लिए पूजता है जिसे उनकी दिव्य भुजाएँ सभी ब्रह्मांडीय कार्यों में प्रतीक करती हैं।

187. अचलाय

जो अचल, अडिग, दृढ़ और शाश्वत रूप से स्थिर हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : अचल (Achala) नाम भगवान शिव और भैरव का एक गहरा वर्णन है, जो संस्कृत मूल 'चल' (चलना) और नकारात्मक उपसर्ग 'अ' (नहीं) से लिया गया है। इस प्रकार, 'अचल' का शाब्दिक अर्थ है "न हिलने वाला," "अचल," या "दृढ़।"

अचल और अडिग यह दिव्य के पूर्ण और अपरिवर्तनीय स्वरूप को दर्शाता है। एक ब्रह्मांड में जो निरंतर परिवर्तन, सृजन, संरक्षण और विनाश (प्रकृति) की विशेषता है, अचल उस शाश्वत, स्थिर और अपरिवर्तनीय सिद्धांत (पुरुष) का प्रतिनिधित्व करता है जो सभी परिवर्तनों के मूल में है। वह ब्रह्मांडीय स्तंभ, अक्ष मुंडी (axis mundi) है, जिसके चारों ओर सभी घटनाएँ घूमती हैं, फिर भी वह स्वयं उनसे अछूता और अप्रभावित रहता है। यह गुण परम स्थिरता और अविचलित चेतना को समाहित करता है।

दृढ़ और शाश्वत रूप से स्थिर अचल एक अटूट संकल्प और दृढ़ता को व्यक्त करता है। भैरव के रूप में अपनी भूमिका में, इसका अर्थ है कि वह धर्म (धार्मिकता) को बनाए रखने और न्याय प्रदान करने में पूरी तरह से दृढ़ हैं। उनके निर्णय अंतिम हैं, उनकी इच्छा पूर्ण है, और उनकी उपस्थिति

अराजकता और अव्यवस्था की सभी शक्तियों के खिलाफ दृढ़ है। यह दृढ़ता उनके भक्तों तक भी फैली हुई है, उन्हें उनके अटूट संरक्षण और समर्थन का आश्वासन देती है।

दार्शनिक महत्व अचल की अवधारणा गहन दार्शनिक है। यह भैरव के पारलौकिक स्वरूप की ओर इशारा करती है - वह जो सीमित मन की पकड़ से परे है, लौकिक और स्थानिक सीमाओं से परे है। वह घूमती हुई दुनिया में स्थिर बिंदु है, सभी ब्रह्मांडीय नाटकों का मौन साक्षी है। अचल पर ध्यान करने से साधक को अपनी आंतरिक शांति खोजने, एक ऐसा मन विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जो जीवन के द्वंद्वों से अप्रभावित रहता है, और भीतर के अपरिवर्तनीय स्व (आत्मा) से जुड़ता है।

इसलिए अचल नाम न केवल अचल होने के एक भौतिक गुण को समाहित करता है, बल्कि अंतिम वास्तविकता के बारे में एक आध्यात्मिक और आध्यात्मिक सत्य को भी समाहित करता है जो कालातीत, स्थिर और सभी स्थिरता का स्रोत है।

188. छिन्नसंशयाय

जिनके सभी संदेह, भ्रम और अनिश्चितताएँ पूरी तरह से और हमेशा के लिए नष्ट हो गई हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : छिन्नसंशयाय (Chinnasaṁśayāya) नाम एक पूर्णतः प्राप्त आध्यात्मिक अवस्था का एक शक्तिशाली वर्णन है, जो दो संस्कृत शब्दों से बना है: छिन्न और संशय।

• छिन्न (Chinna): इस शब्द का अर्थ है "काट दिया गया," "विच्छेदित," "विभाजित," "नष्ट किया गया," या "हटाया गया।" यह एक पूर्ण और निश्चित उन्मूलन का तात्पर्य है, न कि केवल एक दमन या अस्थायी अनुपस्थिति।

• संशय (Saṁśaya): यह "संदेह," "भ्रम," "अनिश्चितता," "शक," या "अस्थिर आशंका" को संदर्भित करता है। हिंदू दर्शन में, संशय आध्यात्मिक प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण बाधा है, जो आध्यात्मिक सत्यों या वास्तविकता के स्वरूप में दृढ़ विश्वास की कमी का प्रतिनिधित्व करता है। यह बौद्धिक संदेह, भावनात्मक अनिर्णय, या अस्तित्वगत अनिश्चितता के रूप में प्रकट हो सकता है।

सभी संदेहों का उन्मूलन (The Eradication of All Doubt) छिन्नसंशय नाम सभी प्रकार के संदेह, भ्रम और अनिश्चितता से पूरी तरह मुक्त होने की स्थिति को दर्शाता है। यह केवल बौद्धिक स्पष्टता होने के बारे में नहीं है, बल्कि एक गहरा, अनुभवात्मक बोध है जो अस्थिरता के लिए कोई जगह नहीं छोड़ता है। यह अवस्था गहन आध्यात्मिक ज्ञान (ज्ञान) और परम सत्य (ब्रह्म या आत्म-साक्षात्कार) के प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से प्राप्त होती है।

पूर्ण साधक और दिव्य आदर्श (The Perfect Seeker and The Divine Ideal) आध्यात्मिक साधकों के लिए, छिन्नसंशय अंतिम लक्ष्य का प्रतिनिधित्व करता है: एक ऐसा मन जो perplexity से परेशान न हो, जो ईश्वर और अपने स्वयं के वास्तविक स्वरूप की समझ में दृढ़ हो। भगवान कालभैरव के लिए, यह नाम उनकी सर्वोच्च और अटूट बुद्धि की पुष्टि करता है। वे पूर्ण निश्चितता और पूर्ण ज्ञान के प्रतीक हैं, जिनके लिए ब्रह्मांडीय व्यवस्था, समय की प्रकृति, या अस्तित्व के सार के संबंध में कोई अनसुलझे प्रश्न या अस्पष्टता नहीं है।

मानसिक अशांति से मुक्ति (Liberation from Mental Agitation) संदेह मानसिक अशांति का एक स्रोत है और व्यक्ति को निर्णायक रूप से कार्य करने या आंतरिक शांति खोजने से रोकता है। छिन्नसंशय होने के कारण, कालभैरव भक्तों को इस आंतरिक उथल-पुथल से मुक्त करते हैं, उन्हें स्पष्टता और दृढ़ता की समान स्थिति की ओर मार्गदर्शन करते हैं। इस पहलू में उनकी पूजा करने से व्यक्ति को अपने संदेहों को दूर करने और सत्य की स्पष्ट दृष्टि प्राप्त करने में मदद मिलती है।

सत्य का अवतार (The Embodiment of Truth) छिन्नसंशय के रूप में, कालभैरव सत्य (Satya) के साक्षात अवतार हैं, जो अपने स्वयंसिद्ध स्वरूप और अस्पष्टता से मुक्ति की विशेषता रखते हैं। वे सभी अस्तित्वगत प्रश्नों का अंतिम उत्तर हैं, वे जिनमें सभी दार्शनिक और आध्यात्मिक विरोधाभास अपना समाधान पाते हैं।

189. चतुर्वेदाय

चार पवित्र वेदों के साकार स्वरूप और स्वामी को नमन।

विस्तार : चतुर्वेदाय नाम 'चतुर्' (चार) और 'वेद' (पवित्र ज्ञान या शास्त्र) का एक यौगिक है, जो चार वेदों की महारत और उनके स्वरूप को दर्शाता है।

चार वेद चार वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद हैं। ये प्राचीन संस्कृत ग्रंथ हिंदू धर्म के मूलभूत शास्त्र हैं, जिनमें भजन, प्रार्थनाएँ, दार्शनिक ग्रंथ और अनुष्ठान शामिल हैं। इन्हें श्रुति - "जो सुना गया है," प्राचीन ऋषियों द्वारा प्राप्त प्रकट ज्ञान माना जाता है।

दिव्य ज्ञान का स्वरूप चतुर्वेद के रूप में, कालभैरव को इस पवित्र ज्ञान का सार और स्रोत बताया गया है। वे केवल वेदों में महारत हासिल नहीं करते; वे उन शाश्वत सत्यों और ब्रह्मांडीय नियमों के जीवंत स्वरूप हैं जिन्हें वे प्रकट करते हैं। यह दर्शाता है कि सभी ज्ञान, विशेष रूप से आध्यात्मिक और आध्यात्मिक ज्ञान, उन्हीं से उत्पन्न होता है और अंततः उन्हीं में निवास करता है। उनका अस्तित्व वैदिक ज्ञान के अनुरूप है, और वे इन दिव्य रहस्यों के अंतिम व्याख्याकार और संरक्षक हैं।

सभी ज्ञान और धर्म का स्रोत यह नाम धर्म (धार्मिक आचरण, ब्रह्मांडीय व्यवस्था) और सत्य (सत्य) के अंतिम स्रोत के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है। वेदों में ब्रह्मांड को नियंत्रित करने वाले सिद्धांत शामिल हैं, सृष्टि से लेकर प्रलय तक, और कालभैरव, उनके जीवंत रूप के रूप में, इन सिद्धांतों को बनाए रखते हैं और प्रकट करते हैं। उन्हें चतुर्वेद के रूप में पूजना उन्हें सर्वोच्च शिक्षक और मानव आध्यात्मिक विकास और ब्रह्मांडीय सद्भाव के लिए आवश्यक सभी दिव्य ज्ञान के भंडार के रूप में स्वीकार करना है।

190. चतुर्बाहवे

उन भगवान को नमन जिनकी चार शक्तिशाली और दिव्य भुजाएँ हैं।

विस्तार : चतुर्बाहुवे (Caturbāhave) नाम का सीधा अर्थ है "चार भुजाओं वाले को", जो संस्कृत के शब्द 'चतुर्' (चार) और 'बाहु' (भुजा) से बना है। चार भुजाओं का यह गुण हिंदू प्रतिमा विज्ञान में, विशेष रूप से महान शक्ति और ब्रह्मांडीय कार्य वाले देवताओं के लिए, एक समृद्ध और व्यापक प्रतीक है।

चार भुजाओं का प्रतीकवाद हिंदू आध्यात्मिक प्रतीकवाद में, संख्या चार समग्रता, पूर्णता और सार्वभौमिक व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करती है। चतुर्बाहुवे की चार भुजाएँ केवल एक शारीरिक विवरण नहीं हैं; वे उनके दिव्य गुणों और ब्रह्मांड में उनकी बहुआयामी भूमिकाओं का गहरा प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व हैं।

1. ब्रह्मांडीय कार्य: प्रत्येक भुजा अक्सर दिव्य के चार प्रमुख कार्यों में से एक का प्रतीक होती है: सृष्टि (निर्माण), स्थिति (संरक्षण), संहार (विनाश/विघटन), और मोक्ष (मुक्ति) या माया (भ्रम) प्रदान करना। कालभैरव के रूप में, उनके प्राथमिक कार्य सुरक्षा, बुराई का विनाश और अंततः, समय और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति की ओर प्रवृत्त होते हैं।

2. सर्वशक्तिमानता और नियंत्रण: चार भुजाएँ उनकी सर्वोच्च शक्ति और ब्रह्मांड के विभिन्न पहलुओं को बिना किसी प्रयास के एक साथ नियंत्रित करने की उनकी क्षमता को दर्शाती हैं। यह उनकी सर्वव्यापकता और सर्वशक्तिमानता को प्रदर्शित करता है, जो एक साथ कई उपकरणों को धारण

करते हैं और विविध कार्य करते हैं।

3. दिव्य गुणों/हथियारों का धारण: प्रत्येक हाथ में आमतौर पर एक विशिष्ट दिव्य गुण या हथियार होता है, जो देवता के स्वभाव और शक्ति को और परिभाषित करता है। जबकि कालभैरव के विशिष्ट प्रतिष्ठित चित्रण भिन्न हो सकते हैं, शिव या उनके भयानक रूपों द्वारा धारण की जाने वाली सामान्य वस्तुओं में शामिल हैं: • त्रिशूल: तीन गुणों (सत्व, रजस, तमस), समय के तीन पहलुओं (अतीत, वर्तमान, भविष्य), या तीनों लोकों पर उनकी शक्ति का प्रतीक है। • डमरू: ब्रह्मांडीय ध्वनि (नाद), सृष्टि और ब्रह्मांड की लय का प्रतिनिधित्व करता है। • कपाल (खोपड़ी का कटोरा): सांसारिक जीवन से वैराग्य, श्मशान घाटों से उनके जुड़ाव, या समय का उपभोग करने में उनकी भूमिका का प्रतीक है। • पाश (फांसी) या खड्ग (तलवार): भ्रम को बांधने या अज्ञानता को काटने की उनकी शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। • अभयमुद्रा (निर्भयता का भाव) या वरदमुद्रा (वरदान देने का भाव): उनके भयंकर रूप के बावजूद, अपने भक्तों को सुरक्षा और परोपकारिता का संकेत देता है।

अतिक्रमण और पूर्णता चार भुजाएँ कालभैरव की एक पूर्ण और पारलौकिक देवता के रूप में भूमिका को रेखांकित करती हैं, जिसमें सभी दिशाएँ, अस्तित्व के सभी पहलू और सभी दिव्य कार्य शामिल हैं। वह मानवीय रूपों या क्षमताओं से सीमित नहीं हैं, जो ब्रह्म, परम वास्तविकता की असीमित क्षमता और शक्ति का प्रतीक हैं।

191. चतुराय

जो अत्यंत चतुर, कुशल, निपुण और सभी बातों में विशेषज्ञ हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : चतुर (Catūra) नाम, जिसे अक्सर भैरव के लिए एक विशेषण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, अत्यधिक परिष्कृत और उत्कृष्ट गुणों के संग्रह को दर्शाता है।

• चालाक और चतुर (Cunning and Clever) शाब्दिक रूप से, चतुर का अर्थ "चतुर," "तेज," या यहाँ तक कि "चालाक" भी है। दिव्य के संदर्भ में, यह नकारात्मक नहीं है, बल्कि एक ऐसी बुद्धि को इंगित करता है जो अत्यंत तीक्ष्ण है, जो सभी ब्रह्मांडीय शक्तियों और घटनाओं को समझने और उनमें हेरफेर करने में सक्षम है। यह एक अद्वितीय रणनीतिक मन का सुझाव देता है जो कर्म, सृष्टि और विलय के जटिल खेल को समझता है।

• कुशल और निपुण (Skillful and Dexterous) चतुर का अर्थ "कुशल," "निपुण," और "दक्ष" भी है। इसका तात्पर्य सभी कार्यों और प्रक्रियाओं पर महारत से है। इस पहलू में, भैरव ब्रह्मांडीय कारीगर हैं, जो अस्तित्व और गैर-अस्तित्व के जटिल नृत्य को त्रुटिहीन सटीकता के साथ निष्पादित करते हैं। उनका कौशल सभी क्षेत्रों तक फैला हुआ है, सबसे छोटे परमाणु इंटरैक्शन से लेकर सबसे बड़े ब्रह्मांडीय चक्रों तक।

• प्रतिभाशाली और आविष्कारशील (Ingenious and Inventive) यह शब्द "प्रतिभाशाली" और "आविष्कारशील" को समाहित करता है। भैरव, चतुर के रूप में, ब्रह्मांड के भीतर सभी रचनात्मक समाधानों और मौलिक विचारों का स्रोत हैं। वह परम समस्या-समाधानकर्ता हैं, जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखने, अराजकता को दूर करने और आत्माओं को उनके अंतिम गंतव्य की ओर मार्गदर्शन करने के लिए नए और प्रभावी साधन विकसित करने में सक्षम हैं, भले ही चुनौतीपूर्ण मार्गों से ही क्यों न हो।

• विशेषज्ञ और प्रवीण (Expert and Proficient) इसके अलावा, चतुर का अर्थ "विशेषज्ञ" या "सभी मामलों में प्रवीण" है। यह अस्तित्व के सभी क्षेत्रों - आध्यात्मिक, भौतिक, लौकिक और शाश्वत - में एक व्यापक और पूर्ण ज्ञान और महारत को दर्शाता है। वास्तविकता का कोई भी पहलू, कोई कला, कोई विज्ञान, ज्ञान का कोई भी रूप ऐसा नहीं है जिसमें वह सर्वोच्च अधिकारी और एक त्रुटिहीन विशेषज्ञ न हों।

• ब्रह्मांडीय बुद्धि (Cosmic Intelligence) इसलिए, चतुर के रूप में, कालभैरव सर्वोच्च ब्रह्मांडीय बुद्धि और ज्ञान का प्रतीक हैं। यह गुण भक्तों को आश्वस्त करता है कि उनके रक्षक न केवल शक्तिशाली हैं, बल्कि अत्यंत बुद्धिमान और अद्वितीय विशेषज्ञता और अंतर्दृष्टि के साथ सबसे जटिल आध्यात्मिक और सांसारिक चुनौतियों का सामना करने में भी सक्षम हैं। वह परम मार्गदर्शक हैं जो हमेशा सही मार्ग और किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के सबसे प्रभावी साधन को जानते हैं।

192. चतुरप्रियाय

उन चतुर, कुशल और निपुण व्यक्तियों पर कृपालु रहने वाले को नमन।

विस्तार : चतुरप्रियाय नाम संस्कृत के शब्दों चतुर/चतुरा और प्रिय से बना है।

चतुर (Catura): इस शब्द के कई अर्थ हैं: 1. चतुर, कुशल, प्रतिभाशाली: यह बुद्धिमत्ता, मन की तेज़ी और कार्य या विचार में निपुणता को दर्शाता है। 2. दक्ष, सिद्धहस्त: यह उस व्यक्ति को संदर्भित कर सकता है जो किसी विशेष कला, विज्ञान या शिल्प में प्रवीण या विशेषज्ञ हो। 3. अनुकूल, सहमत, सुंदर: कुछ संदर्भों में, यह कुछ सुखद या सुरुचिपूर्ण को भी संदर्भित कर सकता है।

प्रिय (Priya): इस शब्द का अर्थ है "प्रिय," "प्यारा," "पसंद करने वाला," या "मनभावन।"

कौशल और ज्ञान के प्रति प्रेम इन दोनों को मिलाकर, चतुरप्रियाय का अर्थ है "वह जो कुशल लोगों को प्रिय है" या "वह जो चतुर लोगों को पसंद करता है।" यह नाम भैरव की बुद्धिमत्ता, कुशाग्रता और व्यावहारिक ज्ञान के प्रति सराहना को उजागर करता है। यह बताता है कि जो लोग सच्ची भक्ति के साथ, तीक्ष्ण बुद्धि, स्पष्ट समझ और अपने कर्तव्यों (धर्म) के कुशल निष्पादन के साथ उनके पास आते हैं, वे विशेष रूप से उनके प्रिय होते हैं।

केवल बुद्धि से परे जबकि "चतुरता" कभी-कभी धूर्तता का अर्थ दे सकती है, भैरव के आध्यात्मिक संदर्भ में, यह बुद्धिमत्ता के एक उच्च रूप को संदर्भित करता है - वह विवेकी ज्ञान (विवेक) जो वास्तविक को अवास्तविक से, और आध्यात्मिक मार्ग को सांसारिक से अलग करता है। इसमें कर्म योग में बताए अनुसार, फलों के प्रति आसक्ति के बिना कर्म करने की कुशलता भी शामिल है।

धर्म और सरलता का सम्मान भैरव का यह पहलू धर्मी कर्म के साथ संरेखित होने पर मानवीय सरलता और प्रयास के मूल्य को स्वीकार करता है। इसका तात्पर्य है कि जो साधक अस्तित्व के गहरे सत्यों को समझने, मानवता की सेवा करने, या आध्यात्मिक अनुशासनों में महारत हासिल करने के लिए अपनी बुद्धि और कौशल का उपयोग करते हैं, वे उनकी कृपा प्राप्त करते हैं।

उत्कृष्टता के लिए आकांक्षा यह नाम भक्तों को अपनी बौद्धिक और व्यावहारिक क्षमताओं को विकसित करने के लिए प्रेरित करता है, न केवल सांसारिक लाभ के लिए, बल्कि आध्यात्मिक विकास और अपनी जिम्मेदारियों के प्रभावी निर्वहन के लिए भी। यह बताता है कि उत्कृष्टता, जब भक्ति के साथ अर्पित की जाती है, तो वह परमात्मा से जुड़ने का एक मार्ग है।

193. चामुण्डाजनकाय

उग्र देवी चामुण्डा के दिव्य जनक या परम स्त्रोत को नमन।

विस्तार : चामुण्डाजनकाय (Cāmuṇḍājanakaaya) नाम एक शक्तिशाली संस्कृत यौगिक है, जो "चामुण्डा," "जनक," और चतुर्थी विभक्ति प्रत्यय "आय" को जोड़ता है।

चामुण्डा (Cāmuṇḍā): चामुण्डा सप्तमातृकाओं (सात दिव्य माताओं) में से एक हैं और महादेवी, सर्वोच्च देवी का एक दुर्जेय पहलू हैं। उन्हें अविश्वसनीय रूप से भयंकर और डरावनी चित्रित किया गया है, जो अक्सर श्मशान घाटों और काली, विनाशकारी ऊर्जाओं से जुड़ी होती हैं। उनका नाम

पारंपरिक रूप से चण्ड और मुण्ड राक्षसों का वध करने से लिया गया है। वह युद्ध, मृत्यु और भयंकर सुरक्षा की देवी हैं, जिन्हें अक्सर बुराई को पराजित करने और मुक्ति प्रदान करने की उनकी शक्ति के लिए पूजा जाता है।

जनक (Janaka): संस्कृत में, जनक का शाब्दिक अर्थ "पिता," "जन्म देने वाला," "निर्माता," या "उत्पन्न करने वाला" होता है। यह स्रोत, जनक, या वह जिससे कुछ उत्पन्न होता है या प्रकट होता है, को दर्शाता है। आध्यात्मिक संदर्भ में, यह परम कारण या आदिम स्रोत की ओर इशारा करता है।

भयंकर शक्ति का दिव्य उद्गम: जब भैरव को "चामुण्डाजनक" कहा जाता है, तो यह चामुण्डा जैसी दिव्य ऊर्जा के सबसे भयानक और शक्तिशाली अभिव्यक्तियों के भी परम स्रोत या दिव्य पिता के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है। इसका अर्थ मानवीय अर्थों में शाब्दिक पैतृक संबंध नहीं है, बल्कि एक गहरा धार्मिक कथन है:

• ब्रह्मांडीय भयंकरता का स्रोत: इसका तात्पर्य है कि चामुण्डा द्वारा सन्निहित भयंकर, विनाशकारी और सुरक्षात्मक ऊर्जाएं भैरव की अपनी सर्वोच्च शक्ति से उत्पन्न होती हैं और उसके पहलू हैं। भैरव, शिव के एक भयंकर रूप के रूप में, ब्रह्मांडीय ऊर्जा के सभी रूपों को समाहित करते हैं, जिनमें वे भी शामिल हैं जो भयानक सुरक्षात्मक देवियों के रूप में प्रकट होते हैं।

• उत्कृष्ट अधिकार: यह भैरव की उत्कृष्ट स्थिति को परम, मूलभूत वास्तविकता के रूप में स्थापित करता है जिससे चामुण्डा जैसी शक्तिशाली देवियां भी उत्पन्न होती हैं। यह सभी दिव्य अभिव्यक्तियों, चाहे वे भयंकर हों या न हों, पर उनके सर्वोच्च अधिकार को उजागर करता है।

• एकीकृत दिव्य सिद्धांत: यह नाम अद्वैतवादी दर्शन को रेखांकित करता है जहां दिव्य की सभी अभिव्यक्तियाँ, यहां तक कि चामुण्डा जैसी अलग देवियाँ भी, अंततः एक सर्वोच्च सत्ता से उत्पन्न होती हैं, इस संदर्भ में, भैरव से। वह सभी दिव्य शक्तियों (शक्तियाँ) के लिए अस्तित्व का परम आधार हैं।

संक्षेप में, "चामुण्डाजनकाय" भैरव को देवी चामुण्डा द्वारा उदाहरणित भयंकर शक्ति के आदिम स्रोत और परम जनक के रूप में पूजता है, जो उनकी ब्रह्मांडीय सर्वोच्चता और व्यापक प्रकृति पर जोर देता है।

194. चण्डाय

जो उग्र, उत्साही और सभी प्रकार की बुराई के प्रति अत्यंत क्रोधी हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : चण्डाय नाम संस्कृत शब्द चण्ड (Chaṇḍa) से लिया गया है, जिसका अर्थ है भयंकरता, तीव्रता, जुनून और क्रोध। कालभैरव के संदर्भ में, इस गुण का गहरा आध्यात्मिक और दार्शनिक अर्थ है।

बुराई के प्रति भयंकरता चण्ड एक अतिशक्तिशाली और धार्मिक क्रोध को दर्शाता है जो विशेष रूप से बुराई, अज्ञान (अविद्या) और उन सभी नकारात्मक शक्तियों के खिलाफ निर्देशित होता है जो आध्यात्मिक प्रगति और ब्रह्मांडीय व्यवस्था में बाधा डालती हैं। यह अहंकार से उत्पन्न विनाशकारी क्रोध नहीं है, बल्कि एक दिव्य, शुद्ध करने वाला क्रोध है जो नकारात्मकता को भस्म कर देता है। कालभैरव का चण्ड पहलू भ्रम, अहंकार और आसक्ति को निर्ममता से काटने के लिए प्रकट होता है, जो दुख के मूल कारण हैं।

धर्म के लिए तीव्र जुनून केवल क्रोध से परे, चण्ड धर्म, सत्य और धार्मिकता को बनाए रखने के लिए एक अटूट तीव्रता और उत्साही जुनून (तीव्र राग) का भी अर्थ है। यह ब्रह्मांडीय संतुलन और पुण्यात्माओं की सुरक्षा के प्रति एक अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह तीव्रता वह आध्यात्मिक अग्नि है जो व्यक्ति के भीतर और सामूहिक चेतना में दोनों तरह की अशुद्धियों को जला देती है।

आंतरिक राक्षसों पर विजय आध्यात्मिक साधक के लिए, कालभैरव का चण्ड रूप एक आंतरिक शक्ति के रूप में कार्य करता है जो उन्हें अपने स्वयं के आंतरिक राक्षसों - जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य (lust, anger, greed, attachment, pride, and envy) का सामना करने और उन पर विजय प्राप्त करने में सशक्त बनाता है। यह भयंकर ऊर्जा आत्म-शुद्धि और सीमाओं को पार करने के लिए अमूल्य है।

रक्षक और दंडक चण्ड के रूप में, कालभैरव दुराचारियों के परम दंडक और पवित्र स्थानों (क्षेत्रपाल) और ब्रह्मांडीय नियमों के भयंकर संरक्षक हैं। वह पूर्ण निष्पक्षता के साथ दिव्य न्याय करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि धर्म के विरुद्ध किए गए उल्लंघनों के उचित परिणाम हों। उनका क्रोध ब्रह्मांडीय रखरखाव का एक आवश्यक पहलू है, जो बीमारी को दूर करने के लिए एक सर्जन के सटीक, बलपूर्वक कट के समान है।

195. चलाय

जो सदैव गतिमान, शाश्वत रूप से गतिशील और जीवन के साथ निरंतर जीवंत हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : चलाय (चल-आय) नाम संस्कृत मूल "चल्" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "चलना," "हिलाना," "कंपित करना," या "गति में होना।" यह नाम भगवान भैरव की अंतर्निहित गतिशीलता और निरंतर गतिविधि को दर्शाता है, जो ब्रह्मांडीय अस्तित्व के मूलभूत सिद्धांतों को प्रतिबिंबित करता है।

सदैव गतिमान (Ever in Motion) चलाय निरंतर गति की स्थिति को इंगित करता है, जिसका अर्थ है कि भैरव गतिशील ऊर्जा के अवतार हैं, कभी स्थिर नहीं, हमेशा सक्रिय। ब्रह्मांड के संदर्भ में, यह सृष्टि, संरक्षण और संहार के निरंतर चक्र को संदर्भित करता है - एक ऐसा चक्र जो कभी वास्तव में स्थिर नहीं होता बल्कि हमेशा परिवर्तनशील होता है। वह उस बेचैन, जीवंत ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सभी अस्तित्व को चेतन करती है।

निरंतर गतिशील (Perpetually Dynamic) यह पहलू सभी परिवर्तन और रूपांतरण के पीछे की शक्ति के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। ब्रह्मांड में कुछ भी वास्तव में स्थिर नहीं है; सब कुछ विकसित होता है, क्षय होता है और पुनर्जीवित होता है। भैरव, चलाय के रूप में, निरंतर परिवर्तन के इस अपरिवर्तनीय सिद्धांत का प्रतीक हैं। वह सभी चीजों के प्रेरक हैं, वह अदृश्य शक्ति जो ग्रहों को घुमाती है, नदियों को बहाती है और जीवन रूपों को विकसित करती है।

जीवन से लगातार स्पंदित (Constantly Vibrant with Life) यहां की गति केवल यांत्रिक नहीं है बल्कि एक गहन और जीवंत जीवन शक्ति को दर्शाती है। चलाय एक स्पंदित ऊर्जा का अर्थ है, जो जीवन शक्ति और ओज से भरपूर है, जो अपने असंख्य रूपों में जीवन के रूप में प्रकट होती है। वह जीवन की सांस हैं, सभी प्राणियों में स्पंदन हैं, और वह चेतन सिद्धांत हैं जो ब्रह्मांड को जड़ता में गिरने से रोकता है। यह जीवंतता अस्तित्व का सार है, जो चेतना और ऊर्जा को इंगित करती है।

ब्रह्मांडीय नृत्य (Cosmic Dance) दार्शनिक रूप से, चलाय शिव के ब्रह्मांडीय नृत्य (तांडव) से संबंधित है, जो ब्रह्मांड की लयबद्ध सृष्टि और विनाश को दर्शाने वाली एक शाश्वत गति है। भैरव के रूप में, यह गति अस्तित्व की शक्तियों के साथ निरंतर जुड़ाव के माध्यम से ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने में उनकी उग्र और सक्रिय भूमिका को व्यक्त करती है।

196. क्षणसञ्चलाय

एक पल में गति करने वाले, अर्थात अत्यंत त्वरित और तीव्र गति वाले को नमन।

विस्तार : क्षणसञ्चला (Kshanasancalaaya) नाम संस्कृत के शब्दों 'क्षण' और 'सञ्चाल' का एक यौगिक है, जो कालभैरव के स्वरूप के एक गहन पहलू का वर्णन करता है, जो समय, गति और ब्रह्मांडीय शक्ति से संबंधित है।

क्षण (Kṣaṇa): इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है "एक पल," "एक क्षण," "पलक झपकते ही," या "समय का एक परमाणु।" यह समय की सबसे छोटी, अविभाज्य इकाई को संदर्भित करता है, जो तात्कालिकता और संक्षिप्तता पर जोर देता है। व्यापक दार्शनिक अर्थ में, यह ऐसी किसी भी चीज़ को इंगित कर सकता है जो बिना किसी अवधि के, या पलक झपकते ही घटित होती है।

सञ्चाल (Sañcāla): इस शब्द का अर्थ है "गति," "आंदोलन," "हलचल," "कंपन," या "तेज गति।" यह एक गतिशील, न कि स्थिर, अस्तित्व की स्थिति को दर्शाता है।

असंभव रूप से तीव्र और तात्कालिक क्रिया जब संयुक्त किया जाता है, तो क्षणसञ्चला कालभैरव को ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित करता है जिसकी गति, क्रिया और उपस्थिति तात्कालिक होती है। वह समय और स्थान की सामान्य सीमाओं को पार करते हुए, अकल्पनीय गति के साथ प्रकट होने या कार्य करने में सक्षम है। यह बताता है कि उसकी शक्ति अनुक्रमिक समय से बंधी नहीं है; उसके लिए विचार और क्रिया एक साथ होते हैं।

समय पर प्रभुत्व (काल) काल भैरव के एक रूप के रूप में, समय के स्वामी, यह नाम क्षण, समय के परमाणुओं पर उसके पूर्ण प्रभुत्व को रेखांकित करता है। वह समय को संकुचित या विस्तारित कर सकता है, पलक झपकते ही प्रकट या गायब हो सकता है, और ब्रह्मांडीय कार्यों को तुरंत निष्पादित कर सकता है। यह पहलू उसकी सर्वशक्तिमानता को उजागर करता है - जब भी ब्रह्मांडीय व्यवस्था को खतरा होता है या जब किसी भक्त को त्वरित हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है, तो निर्णायक और तुरंत कार्य करने की उसकी क्षमता।

ब्रह्मांडीय गतिशील सिद्धांत क्षणसञ्चला ब्रह्मांड को उत्तेजित और गतिमान करने वाले गतिशील सिद्धांत के रूप में उसकी भूमिका को भी दर्शाता है। क्वांटम स्तर से लेकर आकाशगंगाओं की विशाल गतिविधियों तक, उसकी तात्कालिक उपस्थिति सभी ब्रह्मांडीय प्रक्रियाओं को शक्ति प्रदान करती है। वह परिवर्तन, सृजन और विघटन के पीछे की परम शक्ति है, जो एक पल में गहन परिवर्तन लाने में सक्षम है।

आध्यात्मिक महत्व भक्त के लिए, यह नाम दर्शाता है कि कालभैरव तात्कालिक प्रभाव से मुक्ति प्रदान कर सकते हैं या आशीर्वाद दे सकते हैं। वह बाधाओं को तुरंत दूर कर सकते हैं, नकारात्मक कर्मों को मिटा सकते हैं, और एक साधक को अद्वितीय गति के साथ आध्यात्मिक प्राप्ति की ओर ले जा सकते हैं, जो सच्ची भक्ति के प्रति उसकी तात्कालिक प्रतिक्रिया को दर्शाता है।

197. अचिन्त्यमहिम्ने

जिनकी महिमा, यश और ईश्वरीय भव्यता मानव समझ से परे हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : अचिन्त्यमहिम्ने नाम अचिन्त्य और महिमन से व्युत्पन्न एक गहरा संस्कृत शब्द है।

अचिन्त्य (Acintya): इस शब्द का अर्थ है "अकल्पनीय," "अचिंतनीय," "विचार से परे," या "समझ से परे।" यह उस वास्तविकता को संदर्भित करता है जिसे मानवीय बुद्धि, तर्क या कल्पना द्वारा समझा, विश्लेषण या पूरी तरह से जाना नहीं जा सकता है। यह एक ऐसी वास्तविकता की ओर इशारा करता है जो मन और वाणी की सीमाओं से परे है।

महिमन (Mahiman): इसका अनुवाद "महानता," "महिमा," "भव्यता," "ऐश्वर्य," या "शक्ति" के रूप में होता है। यह एक देवता के अंतर्निहित गौरव, विशालता और सर्वोच्च अधिकार को दर्शाता है।

अगम्य महिमा (Incomprehensible Glory) जब संयुक्त किया जाता है, तो अचिन्त्यमहिम्ने उस एक को संदर्भित करता है जिसकी महानता, महिमा और दिव्य ऐश्वर्य मानवीय विचार की पकड़ से पूरी तरह परे हैं। यह कालभैरव के पारलौकिक स्वरूप पर प्रकाश डालता है, इस बात पर जोर देता है कि उनका वास्तविक सार, शक्ति और सार्वभौमिक दायरा पारंपरिक समझ या नश्वर भाषा की सीमाओं में समाहित नहीं किया जा सकता है। उन्हें बौद्धिक रूप से पूरी तरह से समझने का कोई भी प्रयास अपर्याप्त होगा।

द्वंद्वों से परे (Beyond Dualities) कालभैरव का यह पहलू दर्शाता है कि वे एक ऐसे स्तर पर कार्य करते हैं जो अनुभवजन्य अनुभव और तर्कसंगत वर्गीकरण से परे है। उनके कार्य, उनकी ब्रह्मांडीय लीला, और उनकी परम वास्तविकता मनुष्यों द्वारा समझे गए कारण और प्रभाव के नियमों से सीमित नहीं हैं।

समर्पण का आह्वान (A Call for Surrender) भक्त के लिए, कालभैरव को अचिन्त्यमहिम्ने के रूप में पहचानना विस्मय, श्रद्धा और विनम्रता की भावना को बढ़ावा देता है। यह बौद्धिक अहंकार के समर्पण और प्रत्यक्ष, सहज अनुभव और भक्ति के प्रति खुलने को प्रोत्साहित करता है, बजाय इसके कि दिव्य को विच्छेदित या परिभाषित करने का प्रयास किया जाए। यह स्वीकार करता है कि परम सत्य का अनुभव किया जाना है, न कि केवल तर्क किया जाना है।

198. अचिंत्याय

जो अचिंतनीय, अकल्पनीय और सभी विचारों से परे हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : अचिन्त्य (जिसे अचिनत्य भी लिखा जाता है) नाम हिंदू दर्शन, विशेषकर शैव धर्म में एक गहन विशेषण है, जो दिव्य के उत्कृष्ट और अंततः अबोधगम्य स्वरूप को उजागर करता है। यह संस्कृत मूल "चिन्त्" (सोचना, अवधारणा बनाना) से "अ-" (नहीं) उपसर्ग के साथ व्युत्पन्न हुआ है, इस प्रकार इसका अर्थ है "जिसके बारे में सोचा नहीं जा सकता," "अकल्पनीय," "अचिंतनीय," या "समस्त विचारों से परे।"

मानसिक पकड़ से परे अचिन्त्य यह दर्शाता है कि कालभैरव का वास्तविक स्वरूप, शिव के एक रूप के रूप में, मानवीय बुद्धि, तर्क और धारणा की सीमाओं से परे है। हमारा मन, जो स्थान, समय और कार्य-कारण से बंधा है, केवल उन्हीं घटनाओं को समझ सकता है जो इन ढाँचों के भीतर फिट होती हैं। हालाँकि, अचिन्त्य की परम वास्तविकता निराकार, असीम, अनादि और अनंत है, जिससे इसे सामान्य भाषा या विचार की श्रेणियों का उपयोग करके पूरी तरह से अवधारणाबद्ध या वर्णित करना असंभव हो जाता है।

गुणों और रूपों से परे जबकि कालभैरव विभिन्न रूपों में प्रकट होते हैं और विशिष्ट गुणों (जैसे विनाश, संरक्षण, समय) का प्रतीक हैं, अचिन्त्य उस अंतर्निहित सार की ओर इशारा करता है जो इन अभिव्यक्तियों से पहले भी मौजूद था और उनके विलीन होने के बाद भी रहेगा। यह इंगित करता है कि अंततः, वे अपनी परम वास्तविकता में निर्गुण (गुणों के बिना) और निराकार (रूप के बिना) हैं। बौद्धिक संरचनाओं के माध्यम से उन्हें परिभाषित या सीमित करने का कोई भी प्रयास उनकी अनंत प्रकृति को कम करना होगा।

रहस्यमय और अवर्णनीय यह नाम विस्मय और रहस्य की भावना को जगाता है। ऐसा नहीं है कि दिव्य जटिल है, बल्कि यह उन सिद्धांतों पर काम करता है जो हमारे अनुभवजन्य और तार्किक ढाँचों से पूरी तरह बाहर हैं। एक भक्त के लिए, कालभैरव को अचिन्त्य के रूप में स्वीकार करने का अर्थ

है उन्हें तर्कसंगत रूप से पूरी तरह से समझने की आवश्यकता को त्यागना और इसके बजाय एक प्रत्यक्ष, सहज और अनुभवात्मक बोध (अनुभूति) की तलाश करना।

आध्यात्मिक अभ्यास के लिए निहितार्थ दिव्य की अचिन्त्य प्रकृति को पहचानना आध्यात्मिक खोज में विनम्रता को प्रोत्साहित करता है। यह इस बात पर जोर देता है कि परम मुक्ति (मोक्ष) या मिलन (योग) केवल बौद्धिक क्षमता से प्राप्त नहीं होता है, बल्कि भक्ति (भक्ति), ध्यान (ध्यान) और मन को शुद्ध करने के माध्यम से प्राप्त होता है ताकि उस चीज़ की प्रत्यक्ष धारणा हो सके जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। यह इस विचार को पुष्ट करता है कि दिव्य का अनुभव किया जाना चाहिए, न कि केवल उसके बारे में सोचा जाना चाहिए।

199. चराचरचरित्रगाय

सृष्टि में सभी चर और अचर प्राणियों की कथाओं के दिव्य गायक को नमन।

विस्तार : चराचरचरित्रगाय नाम कई संस्कृत शब्दों से बना एक गहन और काव्यात्मक वर्णन है जो शिव को ब्रह्मांड के परम कथाकार और पर्यवेक्षक के रूप में एक गहरी दार्शनिक समझ प्रकट करता है।

चराचर: संपूर्ण सृष्टि यह एक मानक संस्कृत यौगिक शब्द है जिसका अर्थ है "चलने वाला और न चलने वाला," जो सृष्टि के सभी को समाहित करता है। • चर (चलने वाला): सभी चेतन प्राणियों—मनुष्यों, जानवरों, देवताओं, राक्षसों और खगोलीय संस्थाओं—किसी भी चीज़ को संदर्भित करता है जिसमें गति या चेतना होती है। • अचर (न चलने वाला): सभी निर्जीव वस्तुओं—पहाड़ों, नदियों, पौधों, चट्टानों, ग्रहों, तारों और मौलिक तत्वों—किसी भी चीज़ को संदर्भित करता है जो स्थिर है या जिसमें स्वतंत्र गति का अभाव है। • साथ में, चराचर व्यक्त ब्रह्मांड की समग्रता को दर्शाता है, दोनों जीवित और निर्जीव।

चरित्र: कथाएँ चरित्र का अर्थ है "कर्म," "कार्य," "साहसिक कार्य," "चरित्र," या "कथाएँ।" यह अस्तित्व के पूरे क्रम, इतिहास, अनुभवों और सृष्टि के भीतर प्रत्येक प्राणी और प्रत्येक घटना के सार को दर्शाता है। यह प्रत्येक गतिशील और अचल इकाई की कहानी, विशेषताएँ और अंतर्निहित प्रकृति है।

गाय: गायक/कथावाचक गाय (धातु गा, "गाना" से) का अर्थ है "जो गाता है," "एक गायक," या विस्तार से, "जो वर्णन करता है" या "जो वर्णन करता है।"

ब्रह्मांडीय गाथाओं का दिव्य कथावाचक जब संयुक्त किया जाता है, तो चराचरचरित्रगाय उस दिव्य सत्ता को दर्शाता है जो ब्रह्मांड में सभी गतिशील और अचल की "कथाओं" या "इतिहास" का गायक या कथावाचक है। इसका अर्थ कई स्तरों पर है:

• ब्रह्मांडीय साक्षी: शिव, चराचरचरित्रगाय के रूप में, सृष्टि, संरक्षण और विघटन के पूरे unfolding नाटक के शाश्वत साक्षी हैं। वह हर घटना, हर विचार, हर गति और हर स्थिर अस्तित्व से अवगत हैं।

• नियति का अनावरणकर्ता: वह वह है जो सभी प्राणियों की कर्मिक कथाओं का आयोजन और प्रकट करता है। वह इन कहानियों को इस अर्थ में "गाते" हैं कि वह सभी अनुभवों और नियतियों के अंतिम स्रोत और अंतिम गंतव्य हैं। प्रत्येक जीवन, प्रत्येक घटना, ब्रह्मांड का प्रत्येक पहलू उनके भव्य ब्रह्मांडीय गीत में एक छंद है।

• सभी कहानियों का अवतार: यह नाम यह भी बताता है कि शिव स्वयं इन सभी कथाओं के सार को धारण करते हैं। संपूर्ण चराचर उनकी अपनी अभिव्यक्ति है, और इसका चरित्र (कहानियां) उनके अपने अनंत अस्तित्व के पहलू हैं। वह केवल एक बाहरी पर्यवेक्षक नहीं हैं, बल्कि इन ब्रह्मांडीय कहानियों के स्वयं कैनवास और चित्रकार हैं।

• सत्य का संरक्षक: इन कहानियों को "गाकर," वह सभी अस्तित्व के सत्य और रिकॉर्ड को संरक्षित करते हैं। कुछ भी नहीं खोता है, क्योंकि सब कुछ उनके अस्तित्व और चेतना में आंतरिक रूप से बुना हुआ है।

संक्षेप में, चराचरचरित्रगाय शिव को उस परम चेतना के रूप में चित्रित करता है जो अपने सभी गतिशील और स्थिर वैभव में पूरे ब्रह्मांड को एक निरंतर, unfolding कथा के रूप में समाहित करता है, साक्षी करता है और व्यक्त करता है।

२००. चंद्रसंजीवनाय

चंद्रमा को महान पुनर्जीवित करने वाले और नवजीवन प्रदान करने वाले को नमन।

विस्तार : नाम चन्द्रसंजीवनाय भगवान शिव के लिए एक गहरा और काव्यात्मक विशेषण है, विशेष रूप से उनके भयंकर फिर भी परोपकारी रूप, कालभैरव के लिए। यह "चन्द्र" (चंद्रमा) और "संजीवन" (पुनर्जीवित करने वाला, जीवन देने वाला, नवजीवन प्रदान करने वाला) का एक यौगिक है।

चंद्रमा का प्रतीकवाद हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान और प्रतिमा विज्ञान में, चंद्रमा (चन्द्र) एक शक्तिशाली प्रतीक है। यह प्रतिनिधित्व करता है: • मन और भावनाएँ: चंद्रमा को अक्सर मानव मन, भावनाओं और चेतना से जोड़ा जाता है। • पोषण और शीतलता: सूर्य की गर्मी के विपरीत, इसका कोमल प्रकाश सुखदायक, पौष्टिक और पुनर्योजी माना जाता है। यह जल और पौधों के विकास से जुड़ा है। • चक्रीयता और बढ़ना/घटना: चंद्रमा के चरण जन्म, मृत्यु और कायाकल्प के चक्रों का प्रतीक हैं। इसका आवधिक घटना और बढ़ना अस्तित्व की क्षणभंगुरता और नवीनीकरण की संभावना का प्रतिनिधित्व करता है। • अमृत: माना जाता है कि चंद्रमा में अमृत, अमरता का अमृत होता है।

महान पुनर्जीवनकर्ता "संजीवन" शब्द का अर्थ है जीवन में वापस लाना, पुनर्जीवित करना या कायाकल्प करना। यह चंद्रमा के साथ शिव के संबंध के बारे में कई पौराणिक और दार्शनिक व्याख्याओं से जुड़ता है:

1. चंद्रमा को धारण करने वाले शिव: शिव को अक्सर अपनी जटाओं पर अर्धचंद्र (चंद्रकला) धारण किए हुए दर्शाया जाता है। इस अर्धचंद्र को अक्सर चंद्रमा का वह हिस्सा माना जाता है जो अपने सबसे अंधेरे चरण (अमावस्या) में भी रहता है और जिससे वह नवीनीकरण की अपनी यात्रा शुरू करता है। इसे धारण करके, शिव समय, चक्रों और कायाकल्प के सार पर अपनी महारत का प्रतीक हैं। वे जीवन को बनाए रखने और विलुप्त होने के कगार से भी नई शुरुआत करने की शक्ति रखते हैं।

2. चंद्र देव को ठीक करना: कुछ पौराणिक कथाओं के अनुसार, चंद्र देव (चन्द्र/सोम) एक श्राप (अक्सर दक्ष प्रजापति से) से पीड़ित थे जिसके कारण वे क्षीण होते गए और नष्ट होते गए। उन्होंने शिव से प्रार्थना की, जिन्होंने करुणावश चंद्रमा को अपने सिर पर धारण किया, जिससे श्राप आंशिक रूप से निष्प्रभावी हो गया और यह सुनिश्चित हो गया कि चंद्रमा चक्रीय रूप से बढ़ेगा और घटेगा, कभी पूरी तरह से गायब नहीं होगा। इस प्रकार, शिव चन्द्र के "पुनर्जीवनकर्ता" बन गए, उन्हें स्वास्थ्य प्रदान किया और ब्रह्मांड में उनकी शाश्वत उपस्थिति सुनिश्चित की।

3. मन और भावनाओं पर महारत: दार्शनिक रूप से, यह नाम बताता है कि कालभैरव, शिव के भयंकर रूप के रूप में, मन को पुनर्जीवित और शुद्ध करने की शक्ति रखते हैं। जब मन (चंद्रमा द्वारा प्रतीक) अज्ञानता, नकारात्मकता या सांसारिक पीड़ा से ग्रस्त होता है, तो शिव/कालभैरव पर ध्यान करने से चेतना का पुनरुत्थान हो सकता है, जिससे स्पष्टता, शांति और आध्यात्मिक विकास होता है। वे एक भक्त के भीतर "क्षीण होती" आध्यात्मिक सार को फिर से जीवंत करते हैं।

4. ब्रह्मांडीय चक्र और अमृत: "चंद्रमा के पुनर्जीवनकर्ता" होने के कारण, कालभैरव को जीवन शक्ति और छिपे हुए सार (अमृत) के दाता के रूप में भी देखा जाता है जिसे चंद्रमा समाहित करता है। वे नवीनीकरण और पुनरुत्थान की शक्तियों को नियंत्रित करते हैं जो ब्रह्मांडीय अस्तित्व के लिए मौलिक हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि कथित अंत के बाद भी जीवन जारी रहे।

संक्षेप में, चन्द्रसंजीवनाय कालभैरव को केवल एक भयानक संहारक के रूप में नहीं, बल्कि नवीनीकरण, करुणा और आध्यात्मिक कायाकल्प की अंतिम शक्ति के रूप में चित्रित करता है, जो अपने दिव्य प्रभुत्व में जीवन और चेतना के सार को धारण करता है।

201. चित्राय

अद्‌भुत, विविध, आश्चर्यजनक और एक सुंदर चित्र के समान सुरम्य स्वरूप वाले को नमन।

विस्तार : चित्राय (चित्राया) नाम संस्कृत शब्द चित्र (Citra) से लिया गया है, जिसके सौंदर्य, विविधता और आश्चर्य से संबंधित कई समृद्ध अर्थ हैं।

अद्‌भुत और आश्चर्यजनक मुख्य रूप से, चित्र का अर्थ "अद्‌भुत," "आश्चर्यजनक" या "चमत्कारिक" है। यह कालभैरव के असाधारण स्वरूप, उनकी अलौकिक शक्ति और उनके ब्रह्मांडीय खेल के विस्मयकारी रहस्यों को संदर्भित करता है। यह बताता है कि उनका सार, उनके कार्य और उनका स्वरूप सामान्य समझ से परे हैं, जो भक्त में विस्मय और श्रद्धा की भावना जगाते हैं।

विविध और भिन्न चित्र का अर्थ "विविध," "भिन्न" या "विभिन्न रंगों का" भी है। यह पहलू कालभैरव की अनेक अभिव्यक्तियों और उन विविध तरीकों पर प्रकाश डालता है जिनमें ब्रह्मांड में दिव्य प्रकट होता है। यह स्वीकार करता है कि परम वास्तविकता नीरस नहीं है, बल्कि स्वयं को अनंत प्रकार के रूपों, घटनाओं और अनुभवों में व्यक्त करती है, जो सभी इस अद्वितीय, अद्‌भुत स्रोत से उत्पन्न होते हैं। उनकी लीला (दिव्य खेल) विभिन्न ऊर्जाओं, रूपों और उद्देश्यों से समृद्ध है।

सुरम्य और सुंदर इसके अतिरिक्त, चित्र का अनुवाद "चित्र," "चित्रकला" या "रेखाचित्र" के रूप में होता है। इसका तात्पर्य है कि कालभैरव आध्यात्मिक सौंदर्य और पूर्णता, एक उदात्त सौंदर्यवादी गुण का प्रतीक हैं। यह बताता है कि उनका ब्रह्मांडीय स्वरूप, या उनकी शक्ति का कोई भी प्रकटीकरण, कला की एक उत्कृष्ट कृति के समान ही उत्कृष्ट रूप से विस्तृत और सामंजस्यपूर्ण है। यह इस विचार को उद्‌घाटित करता है कि संपूर्ण सृष्टि, अपने सभी जटिल प्रतिमानों और लुभावने दृश्यों के साथ, एक दिव्य चित्रकला है, जिसमें कालभैरव कलाकार और विषय दोनों हैं।

रहस्यमय दिव्य गहरे अर्थ में, "चित्र" कुछ "अजीब," "असामान्य" या "रहस्यमय" भी व्यक्त कर सकता है। यह दिव्य के रहस्यमय और अक्सर अबोधगम्य स्वरूप की ओर इशारा करता है, विशेष रूप से इसके भयंकर भैरव पहलू में। उनके कार्य और रूप मानव मन को विरोधाभासी लग सकते हैं, फिर भी वे एक बड़े, अद्‌भुत और विविध ब्रह्मांडीय व्यवस्था का हिस्सा हैं।

202. उमाचार्याय

देवी उमा (पार्वती) के पूजनीय और सर्वोच्च आचार्य को नमन।

विस्तार : उमाचार्याय नाम भगवान शिव के लिए एक गहरा विशेषण है, विशेष रूप से उनके परम गुरु और दिव्य ज्ञान के स्रोत के रूप में।

उमा: दिव्य माँ उमा शिव की दिव्य पत्नी हैं, जिन्हें सामान्यतः पार्वती के नाम से जाना जाता है। वह शक्ति, ब्रह्मांड की गतिशील रचनात्मक शक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं, और सौंदर्य, कृपा, भक्ति और आध्यात्मिक ज्ञान का प्रतीक हैं। कई परंपराओं में, उमा केवल एक निष्क्रिय पत्नी नहीं हैं, बल्कि शिव से ज्ञान प्राप्त करने वाली एक सक्रिय भागीदार और साधक हैं।

आचार्य: सर्वोच्च शिक्षक एक आचार्य एक पूजनीय आध्यात्मिक शिक्षक होते हैं, एक गुरु जो न केवल ज्ञान (ज्ञान) रखते हैं बल्कि उसे जीते (आचरण) भी हैं और उदाहरण और व्याख्या के माध्यम से उसे सिखाते हैं। "आचार्य" शब्द गहरी बुद्धि, आध्यात्मिक अधिकार और शिष्यों को मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करने की क्षमता को दर्शाता है।

गुरु के गुरु जब शिव को उमाचार्याय कहा जाता है, तो इसका अर्थ है कि वे स्वयं दिव्य माँ के भी सर्वोच्च शिक्षक हैं। यह कई कारणों से अत्यधिक महत्वपूर्ण है:

• द्वैतवाद का अतिक्रमण: यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि दिव्य शक्ति भी, जो शिव से अविभाज्य है, उनसे ज्ञान प्राप्त करती है। यह उमा की स्थिति को कम नहीं करता है, बल्कि शिव की भूमिका को सभी ज्ञान के परम स्रोत के रूप में बल देता है, जिसमें वह ज्ञान भी शामिल है जो शक्ति की अपनी शक्ति और समझ का निर्माण करता है। यह सूक्ष्म रूप से अद्वैतवादी प्रकृति की ओर इशारा करता है जहाँ शिव और शक्ति अंततः एक हैं, लेकिन प्रकट लीला (लीला) में, वे सत्य के परम उद्घाटक की भूमिका निभाते हैं।

• समस्त ज्ञान का स्रोत: यदि ब्रह्मांड की माता शिव से ज्ञान प्राप्त करती हैं, तो यह आदि-गुरु (आदि-गुरु) के रूप में उनकी स्थिति को रेखांकित करता है, जिनसे सभी आध्यात्मिक शिक्षाएँ उत्पन्न होती हैं। इसमें वेदों, आगमों, तंत्रों और सभी दार्शनिक विद्यालयों का ज्ञान शामिल है।

• भक्ति और सीखने का प्रतीक: भक्तों के लिए, यह नाम एक प्रेरणा के रूप में कार्य करता है - यदि उमा स्वयं शिव से सीखती हैं, तो एक सच्चे गुरु (जो शिव का प्रतिनिधित्व करते हैं) के मार्गदर्शन में सच्ची भक्ति और ज्ञान की खोज आध्यात्मिक प्राप्ति का मार्ग है।

गूढ़ परंपराओं में, शिव को अक्सर उमा (पार्वती या देवी) को योग, तंत्र और आत्म-साक्षात्कार के गहन रहस्य प्रदान करते हुए चित्रित किया जाता है। ये संवाद कई आध्यात्मिक ग्रंथों का आधार बनते हैं, जहाँ उमा प्रश्न पूछती हैं, और शिव उत्तर प्रदान करते हैं, इस प्रकार उन्हें आदर्श छात्रा और उन्हें आदर्श शिक्षक बनाते हैं।

२०३. चतुर्मुखाय

चारों दिव्य मुखों वाले, जो एक साथ सभी दिशाओं में देखने में सक्षम हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : चतुर्मुखाय (या चतूर्मुख) नाम "चतुर" (चार) और "मुख" (मुख) से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है "जिसके चार मुख हों।" यह गुण पारंपरिक रूप से भगवान ब्रह्मा से जुड़ा है, लेकिन जब इसे शिव और विशेष रूप से भैरव पर लागू किया जाता है, तो यह गहरा प्रतीकात्मक और ब्रह्मांडीय महत्व रखता है।

चार दिशाएँ और सर्वव्यापकता सबसे सीधा अर्थ यह है कि चार मुख भैरव को एक साथ चारों मुख्य दिशाओं (उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम) में देखने की अनुमति देते हैं। यह उनकी पूर्ण सर्वव्यापकता और सर्वज्ञ प्रकृति का प्रतीक है। वे हर पल पूरे ब्रह्मांड में होने वाली हर चीज से पूरी तरह अवगत हैं, उनकी चौकस दृष्टि से कुछ भी बाहर नहीं है।

स्थान और समय पर महारत भौतिक दिशाओं से परे, ये चार मुख अस्तित्व के सभी पहलुओं पर उनकी महारत का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे चार वेदों, चार युगों, चेतना की चार अवस्थाओं (जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय), या जीवन के चार चरणों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास) का प्रतीक हो सकते हैं। इस प्रकाश में, चतुर्मुख समय के चक्रों और मानवीय अनुभव और आध्यात्मिक विकास के पूरे स्पेक्ट्रम पर उनके व्यापक प्रभुत्व को दर्शाता है।

ब्रह्मांडीय कार्य कुछ शैव परंपराओं में, शिव के पाँच मुख (पंचमुख) उनके पाँच ब्रह्मांडीय कार्यों (पंचकृत्य) का प्रतिनिधित्व करते हैं: सृष्टि, पालन, संहार, तिरोभाव और अनुग्रह। यदि चतुर्मुख को एक उपसमूह के रूप में लिया जाता है, तो यह उन विशिष्ट प्राथमिक ब्रह्मांडीय कार्यों पर जोर दे सकता है जिन्हें भैरव अपनी भूमिका में समाहित करते हैं, जो अक्सर विनाश, संरक्षण और न्याय प्रदान करने से जुड़े होते हैं।

एकता के भीतर भेद जबकि प्रत्येक मुख एक विशिष्ट दृष्टिकोण या कार्य का प्रतिनिधित्व कर सकता है (जैसे शिव के विभिन्न पहलू जैसे वामदेव, तत्पुरुष, अघोर, सद्योजात, ईशान), सार एक, एकीकृत चेतना का ही रहता है। चार मुख अलग-अलग संस्थाएँ नहीं हैं, बल्कि भैरव की एक सर्वोच्च वास्तविकता के विभिन्न दृष्टिकोण हैं, जो उन्हें मौलिक रूप से अविभाजित रहते हुए विविध सृष्टि के साथ बातचीत करने की अनुमति देते हैं।

२०४. ओजस्तेजोद्युतिधराय

ओज, तेज और दीप्ति को धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : नाम ओजस्तेजोद्युतिधराय एक गहन यौगिक पद है जो दिव्य शक्ति, जीवन शक्ति और चमक के सार को समाहित करता है। यह तीन प्रमुख संस्कृत शब्दों से बना है: ओजस्, तेजस्, द्युति और धर, जिनमें से प्रत्येक का गहरा आध्यात्मिक और दार्शनिक महत्व है।

ओजस्: जीवन शक्ति और शक्ति का सार ओजस् (ओजस्) सूक्ष्म, महत्वपूर्ण ऊर्जा को संदर्भित करता है जो शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्ति का मूल है। आयुर्वेद में, इसे सभी शारीरिक ऊतकों (धातुओं) का सर्वोच्च सार माना जाता है, जो प्रतिरक्षा, लचीलेपन और समग्र कल्याण के लिए जिम्मेदार है। यह "जीवन का रस," आंतरिक शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो अस्तित्व को बनाए रखती है। कालभैरव के लिए, ओजस्-धर होने का अर्थ है कि वे इस जीवन सिद्धांत के मूलभूत स्रोत और पोषक हैं। वे जीवन शक्ति, मजबूत स्वास्थ्य और जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक आंतरिक शक्ति प्रदान करते हैं। वे सभी प्राणियों में स्पंदित होने वाली स्वयं जीवन-शक्ति हैं।

तेजस्: अग्नि ऊर्जा, चमक और आध्यात्मिक दीप्ति तेजस् (तेजस्) अग्नि ऊर्जा, चमक, तीक्ष्णता और आध्यात्मिक वैभव को दर्शाता है। यह परिवर्तन और प्रदीपन का सिद्धांत है। तेजस् किसी की आँखों में चमक, किसी के शब्दों में दृढ़ विश्वास, ज्ञान और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के रूप में प्रकट होता है। यह बाधाओं को दूर करने और अज्ञान को जलाने की शक्ति है। तेजस्-धर के रूप में, कालभैरव दिव्य अग्नि के अवतार हैं, जो केवल विनाशकारी नहीं, बल्कि शुद्ध करने वाले और प्रबुद्ध करने वाले भी हैं। वे सभी प्रकाश, ज्ञान और परिवर्तनकारी शक्ति का स्रोत हैं, जो व्यक्तियों को अपनी सीमाओं को पार करने और आध्यात्मिक जागृति प्राप्त करने में सक्षम बनाते हैं।

द्युति: शानदार चमक और दीप्ति द्युति (द्युति) शानदार चमक, वैभव और चकाचौंध करने वाले प्रकाश को दर्शाती है। यह तेजस् की तुलना में चमक का अधिक बाहरी प्रकटीकरण है, जो आंतरिक हो सकता है। द्युति दिव्य से निकलने वाली मनमोहक महिमा और राजसी आभा का प्रतिनिधित्व करती है। कालभैरव के लिए, द्युति-धर होने का अर्थ है कि वे शानदार, विस्मयकारी चमक से संपन्न हैं जो अंधकार को दूर करती है और परम सत्य को प्रकट करती है। यह चमक केवल सौंदर्यपरक नहीं है बल्कि उनकी शुद्ध, बेदाग चेतना और सर्वोच्च महिमा की एक शक्तिशाली अभिव्यक्ति है। वे वह प्रकाश हैं जो भ्रम और अज्ञान के अंधकार को दूर करता है।

धर: धारण करने वाला और पोषक धर (धर) का अर्थ है "धारण करने वाला," "धारक," या "पोषक।" जब ओजस्, तेजस् और द्युति के साथ जोड़ा जाता है, तो यह इंगित करता है कि कालभैरव वह हैं जो स्वाभाविक रूप से इन दिव्य गुणों को धारण करते हैं, बनाए रखते हैं और प्रदान करते हैं। वे

केवल उनसे जुड़े नहीं हैं; वे स्वयं वे हैं, और वे परम स्रोत हैं जहाँ से वे ब्रह्मांड और व्यक्तिगत प्राणियों में प्रवाहित होते हैं।

दार्शनिक महत्व यह नाम कालभैरव की सर्वोच्च जीवन-दाता, सभी शुद्ध करने वाली और प्रबुद्ध करने वाली ऊर्जा के स्रोत और परम वैभव के अवतार के रूप में भूमिका पर जोर देता है। वे वह हैं जो अपने भक्तों को आंतरिक शक्ति, तीक्ष्ण बुद्धि, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और दिव्य कृपा की आभा से सशक्त करते हैं। उन पर ओजस्तेजोद्युतिधराय के रूप में ध्यान करने से, व्यक्ति जीवंत स्वास्थ्य, आध्यात्मिक ज्ञान और दीप्तिमान उपस्थिति के लिए उनके आशीर्वाद का आह्वान करता है। वे धर्म का पालन करने के लिए आंतरिक अग्नि और स्वयं को जानने के लिए गौरवशाली प्रकाश प्रदान करते हैं।

205. जितकामाय

जिन्होंने सभी प्रकार की इच्छाओं और वासनाओं को पूर्णतः जीत लिया है, उन (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : जितकामाय नाम दो संस्कृत शब्दों से बना एक गहरा विशेषण है: जित (जीता हुआ, पराजित, वश में किया हुआ) और काम (इच्छा, वासना, लालसा, प्रेम)।

काम पर विजय काम मानवीय मूलभूत प्रवृत्तियों में से एक है और इसे अक्सर आध्यात्मिक मार्ग पर एक दुर्जेय बाधा माना जाता है। इसमें केवल यौन इच्छा ही नहीं, बल्कि सभी प्रकार की सांसारिक लालसाएँ शामिल हैं - सुख, संपत्ति, शक्ति और यहाँ तक कि सूक्ष्म आसक्तियाँ भी। जितकामाय इन सभी आवेगों पर पूर्ण महारत की स्थिति को दर्शाता है। यह केवल दमन नहीं है, बल्कि एक मौलिक अतिक्रमण है जहाँ इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं, उनका आत्मा पर कोई अधिकार नहीं रहता।

तपस्वी आदर्श कालभैरव का यह पहलू भगवान शिव के तपस्वी स्वरूप के साथ मेल खाता है, जिन्हें अक्सर श्मशान घाटों में निवास करते हुए, राख से सने हुए और ध्यान में लीन, सांसारिक प्रलोभनों से पूरी तरह विरक्त दर्शाया गया है। यह परम वैराग्य और एक सिद्ध योगी की स्थिति को दर्शाता है जो भौतिक संसार के प्रलोभनों से अप्रभावित रहता है।

मुक्ति का प्रतीक काम पर विजय प्राप्त करके, व्यक्ति लालसा और दुख के चक्र से परे हो जाता है जो इसे उत्पन्न करता है। यह उपलब्धि हिंदू दर्शन में मुक्ति (मोक्ष) के लिए केंद्रीय है। कालभैरव, जितकामाय के रूप में, पूर्ण स्वतंत्रता की इस स्थिति का प्रतीक हैं, यह दर्शाते हुए कि सच्ची शक्ति इच्छाओं को पूरा करने में नहीं, बल्कि उन पर महारत हासिल करने में है। वह आध्यात्मिक साधकों के लिए आदर्श का प्रतिनिधित्व करते हैं जो अपनी आंतरिक प्रवृत्तियों को दूर करने का प्रयास कर रहे हैं जो उन्हें कर्म चक्र से बांधती हैं।

आत्म-नियंत्रण का प्रतीक यह नाम उनके पूर्ण आत्म-नियंत्रण (इंद्रिय-निग्रह) पर भी जोर देता है। वह बाहरी उत्तेजनाओं या आंतरिक आवेगों से विचलित नहीं होते, अपने आवश्यक स्वरूप में अडिग रहते हैं। काम पर यह महारत उनकी दिव्य और सर्वोच्च स्थिति की पहचान है, जो उन्हें शुद्ध चेतना और परम आनंद का प्रतीक बनाती है, जो किसी भी प्रकार की सांसारिक लालसा से अछूती है।

206. जनप्रियाय

सभी लोगों और प्राणियों द्वारा प्रिय को नमन।

विस्तार : जनप्रियाय नाम संस्कृत के दो शब्दों 'जन' और 'प्रिय' का एक यौगिक है।

- जन (Jana): यह शब्द व्यापक रूप से "लोग," "मानवजाति," "सभी प्राणी," या "लोक" को दर्शाता है। इसमें मनुष्य से लेकर पशुओं और सूक्ष्म प्राणियों तक हर जीवित इकाई शामिल है।
- प्रिय (Priya): यह "प्रिय," "प्यारा," "मनभावन," या "आकर्षक" को दर्शाता है। यह स्नेह, लोकप्रियता और प्रतिष्ठित स्थिति का अर्थ है।

सार्वभौमिक रूप से प्रिय (Universally Beloved) संयुक्त रूप से, जनप्रियाय का अर्थ है "वह जो सभी लोगों और प्राणियों द्वारा प्रिय है।" यह नाम कालभैरव के परोपकारी और करुणामय पहलू को उजागर करता है। उनकी भयानक उपस्थिति के बावजूद, जो बुराई और अज्ञानी को भयभीत करती है, वे अपने भक्तों और उन सभी लोगों द्वारा गहराई से प्रेम और पूजे जाते हैं जो एक रक्षक और मुक्तिदाता के रूप में उनके सच्चे स्वरूप को समझते हैं। उनके अस्तित्व को ब्रह्मांड के लिए लाभकारी और मनभावन माना जाता है, क्योंकि वे व्यवस्था बनाए रखते हैं और न्याय सुनिश्चित करते हैं।

आनंद का स्रोत (Source of Delight) यह उपाधि बताती है कि उनके कार्य, भले ही भयंकर हों (जैसे कि बड़े भले के लिए दुष्टों को दंडित करना), अंततः दुनिया के कल्याण और आनंद की ओर ले जाते हैं। भक्त उनकी उपस्थिति में सांत्वना और खुशी पाते हैं, यह जानते हुए कि वे शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों तरह के सभी नुकसानों के खिलाफ एक भयंकर रक्षक हैं।

आध्यात्मिक आकर्षण (Spiritual Charm) उनमें एक अंतर्निहित आकर्षण है जो सच्चे साधकों को आकर्षित करता है। यह आकर्षण सतही नहीं है बल्कि सत्य, न्याय, संरक्षण और परम मुक्ति के उनके दिव्य गुणों से निकलता है। इस प्रकार, वे केवल भयभीत नहीं होते हैं बल्कि उन सभी द्वारा गहराई से प्रशंसित और प्रेम किए जाते हैं जो उनके ब्रह्मांडीय नृत्य को समझते हैं।

207. अजातशत्रवे

जिनके विरुद्ध कभी कोई शत्रु उत्पन्न नहीं हुआ, उन (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : अजातशत्रु (अजातशत्रवे) नाम एक गहन संस्कृत शब्द है जो सीधे तौर पर अस्तित्व की एक परम अवस्था को व्यक्त करता है, विशेषकर आध्यात्मिक संदर्भ में। यह तीन तत्वों का एक यौगिक है:

• अ: एक उपसर्ग जिसका अर्थ है "नहीं," "न," या "गैर।" • जात: जिसका अर्थ है "उत्पन्न," "उदित," या "निर्मित।" • शत्रु: जिसका अर्थ है "शत्रु," "विरोधी," या "दुश्मन।"

इसलिए, अजातशत्रु का शाब्दिक अर्थ है "जिसका कोई शत्रु कभी उत्पन्न नहीं हुआ।"

परम अजेयता और सर्वोच्चता (Absolute Invincibility and Supremacy) यह नाम कालभैरव को पूर्ण और अंतर्निहित अजेयता की स्थिति प्रदान करता है। यह दर्शाता है कि पूरे ब्रह्मांड में, किसी भी समय (अतीत, वर्तमान या भविष्य) कोई ऐसी शक्ति, कोई ऐसा प्राणी, कोई ऐसी शक्ति नहीं है जिसे कभी उनका विरोधी माना जा सके या जो उनके सर्वोच्च अधिकार के लिए खतरा पैदा कर सके। यह केवल युद्ध जीतने के बारे में नहीं है; यह एक मौलिक वास्तविकता के बारे में है जहाँ उनके प्रति विरोध वैचारिक रूप से असंभव है।

परम वास्तविकता का स्वरूप (The Nature of Ultimate Reality) एक आध्यात्मिक और दार्शनिक अर्थ में, यह नाम परम वास्तविकता के स्वरूप की ओर इंगित करता है। यदि केवल एक ही परम सत्य है, एक ही सर्वोच्च चेतना है जिससे सभी चीजें उत्पन्न होती हैं, तो वास्तव में उसे चुनौती देने के लिए कोई बाहरी "अन्य" नहीं हो सकता है। कालभैरव, शिव के एक प्रकटीकरण के रूप में, इस परम, अद्वैत वास्तविकता का प्रतीक हैं। वह सभी के स्रोत, पालक और संहारक हैं, जिससे उनके खिलाफ "शत्रु" की कोई भी धारणा भव्य ब्रह्मांडीय व्यवस्था के भीतर निरर्थक हो जाती है।

द्वंद्वों पर महारत (Mastery Over Dualities) शत्रु द्वंद्वों से उत्पन्न होते हैं - अच्छा और बुरा, स्वयं और अन्य। अजातशत्रु होने के कारण, कालभैरव इन द्वंद्वों से परे हैं। वह विरोध और संघर्ष के दायरे से परे हैं। इसका तात्पर्य पूर्ण समभाव, पूर्ण आत्म-निर्भरता और अस्तित्व के सभी पहलुओं पर पूर्ण संप्रभुता है।

भक्तों के लिए आध्यात्मिक निहितार्थ (Spiritual Implication for Devotees) एक भक्त के लिए, कालभैरव को अजातशत्रु के रूप में ध्यान करने से निर्भयता और दिव्य सुरक्षा की समझ प्रेरित हो सकती है। यदि परम वास्तविकता का कोई शत्रु नहीं है, तो उस वास्तविकता के साथ जुड़कर, व्यक्ति सभी कथित विरोधियों, आंतरिक (जैसे अहंकार, अज्ञान, भय) और बाहरी दोनों पर विजय प्राप्त कर सकता है। यह एक ऐसी शक्ति के प्रति समर्पण पर जोर देता है जो अडिग और शाश्वत रूप से विजयी है।

208. ओजस्विने

जो अपार जीवनशक्ति, ऊर्जा और प्राण शक्ति से परिपूर्ण हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : ओजस्विने (ओजस्विन) नाम, संस्कृत शब्द 'ओजस' से व्युत्पन्न है, जो उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जिसके पास ओजस है या जो ओजस से परिपूर्ण है। यह नाम हिंदू धर्म में एक गहन आध्यात्मिक और शारीरिक अवधारणा को खूबसूरती से समाहित करता है।

ओजस का अर्थ ओजस एक सूक्ष्म और शक्तिशाली जीवन-सार है, जिसे अक्सर सर्वोच्च प्राण ऊर्जा, मूलभूत शक्ति, या आंतरिक शक्ति के रूप में वर्णित किया जाता है जो जीवन को बनाए रखती है। आयुर्वेद में, ओजस को शरीर के सभी ऊतकों (धातुओं) का सबसे शुद्ध और सूक्ष्म आसवन माना जाता है, जो प्रतिरक्षा, शक्ति, चमक, दीप्ति और समग्र जीवन शक्ति के लिए जिम्मेदार है। यह हृदय में संग्रहीत आध्यात्मिक ऊर्जा है, जो चेतना (आत्मन) और भौतिक शरीर के बीच मध्यस्थता करती है।

असीम जीवन शक्ति प्रदान करना भैरव को 'ओजस्विने' कहना यह दर्शाता है कि वे इस सर्वोच्च जीवन-शक्ति का प्रतीक और स्रोत हैं। वे असीम जीवन शक्ति, अटूट ऊर्जा और एक स्फूर्तिदायक जीवन-शक्ति के परम स्वामी हैं जो पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त है। उनका संपूर्ण अस्तित्व इस शक्तिशाली सार से संतृप्त है, जो उन्हें गतिशील, शक्तिशाली और सर्वव्यापी बनाता है। यह गुण उनकी अटूट शक्ति और सभी सृष्टि को चेतन और बनाए रखने की उनकी क्षमता को उजागर करता है।

समस्त ऊर्जा का स्रोत ओजस्विने के रूप में, कालभैरव केवल ओजस से भरे हुए नहीं हैं, बल्कि वे स्वयं वह स्रोत हैं जहाँ से समस्त प्राण ऊर्जा उत्पन्न होती है। वे ब्रह्मांडीय शक्ति हैं जो अस्तित्व को ऊर्जा देती है, हर जीवित वस्तु में जीवन की अंतर्निहित धारा हैं, सबसे छोटे जीव से लेकर सबसे बड़े खगोलीय पिंडों तक। यह गुण उन्हें सृष्टि और पोषण के गतिशील पहलू से जोड़ता है।

दिव्य शक्ति का प्रतीक यह नाम उनकी दिव्य शक्ति और आंतरिक चमक पर जोर देता है जो उनकी सर्वोच्च आध्यात्मिक शक्ति की अभिव्यक्ति है। यह एक अतुलनीय दीप्ति और एक अंतर्निहित शक्ति का सुझाव देता है जो उन्हें अजेय बनाती है। भक्तों के लिए, भैरव को ओजस्विने के रूप में ध्यान करने से उनकी अपनी जीवन-शक्ति, आध्यात्मिक प्रतिरक्षा और समग्र कल्याण का पुनरुत्थान हो सकता है।

209. जितकालय

जिन्होंने स्वयं काल पर विजय प्राप्त की है और उसे जीत लिया है, उन्हें नमन।

विस्तार : जितकाल (Jitakāla) नाम दो संस्कृत शब्दों से बना एक शक्तिशाली यौगिक है: जित (Jita) और काल (Kāla)।

• जित (Jita): इसका अर्थ है "विजित," "पराजित," "पार पाया हुआ," या "विजय प्राप्त किया हुआ।" यह पूर्ण निपुणता और प्रभुत्व को दर्शाता है।

• काल (Kāla): यह एक बहुआयामी शब्द है जो "समय," "विनाशकारी समय," "मृत्यु," और विस्तार से, सृष्टि, संरक्षण और विघटन के चक्रीय स्वरूप को संदर्भित करता है।

काल के विजेता "जितकाल" के रूप में, भगवान भैरव को ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है जिन्होंने समय की सीमाओं को पार कर लिया है। यह उनके शाश्वत स्वरूप को दर्शाता है, जो अतीत, वर्तमान और भविष्य की बाधाओं से परे मौजूद हैं। नश्वर प्राणियों के विपरीत जो काल के अथक मार्च से बंधे हैं, भैरव इसके प्रभुत्व से बाहर खड़े हैं। वे उम्र बढ़ने, क्षय या मृत्यु के अधीन नहीं हैं, जो उनके अमर और अपरिवर्तनीय सार की पुष्टि करता है।

मृत्यु और नियति पर निपुणता चूंकि काल मृत्यु का भी पर्याय है, जितकाल का अर्थ मृत्यु पर पूर्ण विजय है। भक्तों के लिए, इसका मतलब है कि भैरव के इस रूप पर ध्यान या पूजा करके, वे मृत्यु के भय को दूर कर सकते हैं और यहां तक कि इसकी पकड़ को भी पार कर सकते हैं, आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) प्राप्त कर सकते हैं। काल पर उनकी निपुणता नियति और भाग्य तक भी फैली हुई है, क्योंकि ये स्वाभाविक रूप से समय के ताने-बाने में बुने हुए हैं। वे विनाश और मुक्ति दोनों के अंतिम प्रदाता हैं, जो कमतर प्राणियों को बांधने वाले कर्मिक चक्रों से परे कार्य करते हैं।

मुक्ति का प्रतीक दार्शनिक रूप से, जितकाल आध्यात्मिक प्राप्ति की अंतिम स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ एक व्यक्ति लौकिक अस्तित्व के भ्रम को पार करता है और दिव्य के साथ अपने शाश्वत संबंध को महसूस करता है। यह वह अहसास है कि सच्चा आत्म (आत्मा) अनादि, अनंत और भौतिक समय के प्रभावों से परे है। यह पहलू भैरव की भूमिका को केवल एक संहारक के रूप में नहीं, बल्कि एक मुक्तिदाता के रूप में उजागर करता है जो प्राणियों को लौकिक अस्तित्व और पीड़ा के बंधन से मुक्त करता है।

अनंत काल का अवतार जितकाल होने के नाते, भैरव स्वयं अनंत काल का प्रतीक हैं। वे अल्फा और ओमेगा हैं, उत्पत्ति और पराकाष्ठा हैं, सभी क्षणों को समाहित करते हुए उनसे अछूते रहते हैं। उनकी उपस्थिति एक ऐसी वास्तविकता को दर्शाती है जो हमेशा मौजूद है, ब्रह्मांड के प्रवाह के बीच एक अचल केंद्र है।

210. जगद्धिताय

जो सदैव सम्पूर्ण जगत के कल्याण और लाभ के लिए कार्य करते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : जगद्धिताय नाम संस्कृत के शब्दों जगत् और हित का एक यौगिक है, जिसका सीधा अर्थ है "संसार के कल्याण के लिए"।

• जगत् (Jagat): यह शब्द "विश्व", "ब्रह्मांड" या "जो कुछ भी मौजूद है" को संदर्भित करता है। इसमें न केवल भौतिक ब्रह्मांड बल्कि इसके भीतर के सभी सजीव और निर्जीव प्राणी भी शामिल हैं, जो सभी घटनाओं की अंतर्संबंधता को पहचानते हैं।

• हित (Hita): इस शब्द का अर्थ है "कल्याण", "लाभ", "अच्छा", "भलाई" या "अच्छा करना"। यह एक अंतर्निहित परोपकार और बेहतरी के उद्देश्य से की गई कार्रवाई को दर्शाता है।

सार्वभौमिक उपकारक (The Universal Benefactor) जगद्धिताय के रूप में, कालभैरव को परम उपकारक के रूप में मान्यता प्राप्त है, जिसकी प्रत्येक क्रिया, चाहे वह सौम्य लगे या भयानक, अंततः संपूर्ण सृष्टि की भलाई और आध्यात्मिक विकास की ओर निर्देशित होती है। उनकी भूमिका केवल बुराइयों को नष्ट करना नहीं है, बल्कि उस ब्रह्मांडीय व्यवस्था को सुनिश्चित करना है जो जीवन को पोषित करती है और मुक्ति को सुगम बनाती है।

भयानकता में परोपकार (Benevolence in Fierceness) यहां तक कि उनके भयानक भैरव रूप में भी, जो भय उत्पन्न कर सकता है, उनका मूल इरादा (संकल्प) हमेशा सभी के भले के लिए होता है। उनकी भयंकर क्रियाएं शुद्ध करने, बाधाओं को दूर करने, अज्ञानता को भेदने और धर्म

(धार्मिकता) को बनाए रखने का काम करती हैं। ये कार्य, हालांकि कभी-कभी सीमित मानवीय दृष्टिकोण से कठोर प्रतीत होते हैं, अंततः बड़े भले के लिए होते हैं, जैसे एक सर्जन जीवन बचाने के लिए एक दर्दनाक ऑपरेशन करता है।

ब्रह्मांडीय विधान (Cosmic Providence) यह नाम ब्रह्मांडीय विधान के रूप में उनके पहलू पर जोर देता है - वह दिव्य शक्ति जो ब्रह्मांड का लगातार मार्गदर्शन और पोषण करती है, यह सुनिश्चित करती है कि सब कुछ अंततः संतुलन और सद्भाव की स्थिति की ओर बढ़ता है, यहां तक कि सृष्टि, संरक्षण और विघटन के चक्रों के माध्यम से भी। वह वह संरक्षक हैं जो यह सुनिश्चित करते हैं कि ब्रह्मांडीय मशीनरी सभी प्राणियों के सामूहिक विकास और अंतिम कल्याण के लिए संचालित हो।

211. जमदग्नये

महान, तेजस्वी ऋषि जमदग्नि को नमन।

विस्तार : जमदग्नये नाम भगवान कालभैरव को जमदग्नि के रूप में संदर्भित करता है, जो भृगु वंश के एक पूजनीय और शक्तिशाली प्राचीन ऋषि (संत) थे। यह संबंध शिव के उन विशिष्ट गुणों और पहलुओं पर प्रकाश डालता है जो इस ऋषि के माध्यम से प्रकट होते हैं।

ऋषि जमदग्नि जमदग्नि का शाब्दिक अर्थ है "भस्म करने वाली अग्नि" या "उपभोग करने वाली अग्नि", "जमद" (उपभोग करना) और "अग्नि" (अग्नि) से। वे अपनी तीव्र तपस्या (तप), आध्यात्मिक शक्ति, उग्र स्वभाव और धर्म के प्रति अटूट निष्ठा के लिए जाने जाते थे, विशेषकर न्याय और बलिदान के संदर्भ में। वे विष्णु के अवतार परशुराम के पिता थे। उनकी तपस्या और आध्यात्मिक शक्ति अत्यंत प्रबल थी, जो अपार सृजन और विनाश में सक्षम थी।

उग्र तपस्या के अवतार के रूप में कालभैरव जमदग्नि के साथ पहचान किए जाने से, कालभैरव को तीव्र तपस्या और ऐसे अभ्यासों से उत्पन्न तीव्र आध्यात्मिक ऊर्जा के मूर्त रूप के रूप में चित्रित किया गया है। यह उन्हें तप की शक्ति से जोड़ता है, जो अशुद्धियों को जलाकर गहन आध्यात्मिक ज्ञान और शक्तियों (सिद्धियों) की ओर ले जा सकता है।

धर्म के संरक्षक जमदग्नि वैदिक आज्ञाओं और धार्मिकता के प्रति अपने कठोर पालन के लिए भी प्रसिद्ध थे। यह धर्म के संरक्षक के रूप में कालभैरव की भूमिका के अनुरूप है, जो अपने कठोर और कभी-कभी दंडात्मक कार्यों के माध्यम से ब्रह्मांडीय व्यवस्था सुनिश्चित करते हैं। उनका उग्र स्वभाव, जमदग्नि के समान, न्याय बनाए रखने और उल्लंघनों को दंडित करने के लिए नियोजित किया जाता है।

तपस्या और अनुशासन का प्रतीक जमदग्नि के साथ जुड़ाव कालभैरव के परम तपस्वी के पहलू पर जोर देता है, जिसने इंद्रियों और आंतरिक अग्नियों (योगिक अग्नि) पर महारत हासिल कर सर्वोच्च बोध प्राप्त किया है। यह नाम इस प्रकार अनुशासित आध्यात्मिक मार्ग—यहां तक कि एक बहुत कठिन मार्ग—का प्रतिनिधित्व करता है जो मोक्ष की ओर ले जाता है।

परोपकारी विनाश जबकि "उपभोग करने वाली अग्नि" विनाशकारी लग सकती है, आध्यात्मिक संदर्भ में, यह उस अग्नि को दर्शाती है जो अज्ञान, अहंकार और कर्मिक अशुद्धियों को जलाकर मुक्ति की ओर ले जाती है। यह आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि की अग्नि है जो शुद्ध करती है और प्रकाशित करती है।

212. जलनिधये

समस्त जलों के महान निधान, समुद्र स्वरूप को नमन।

विस्तार : जलनिधये नाम दो संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: जल (पानी) और निधि (खजाना, भंडार, महासागर)। अतः, जलनिधि का शाब्दिक अर्थ "जल का खजाना" है, जो महासागर के लिए एक सामान्य विशेषण है।

ब्रह्मांडीय जल और शुद्धता महासागर विशालता, गहराई, शुद्धता और स्वयं जीवन की उत्पत्ति का प्रतीक है। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, जल एक प्राथमिक तत्व है, जो अक्सर आदिम ब्रह्मांडीय महासागर (क्षीर सागर) से जुड़ा होता है जिससे सृष्टि का उद्भव हुआ और जहाँ विष्णु विश्राम करते हैं। कालभैरव, जलनिधि के रूप में, जल के इस आदिम, जीवनदायी और सर्वव्यापी स्वरूप का प्रतीक हैं। वे सभी जलों के स्रोत और अंतिम भंडार हैं, सभ्यताओं का पोषण करने वाली नदियों से लेकर जीवन को बनाए रखने वाली वर्षा तक, और पृथ्वी को ढँकने वाले विशाल महासागरों तक।

अकथनीय गहराई और असीम शक्ति जैसे महासागर अपनी गहराई में अथाह है और अनगिनत रहस्यों को समेटे हुए है, वैसे ही कालभैरव दिव्य के असीम और गहन पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनकी शक्ति महासागर की लहरों जितनी असीम और अदम्य है। वे वह हैं जिनमें अंततः सभी चीजें विलीन हो जाती हैं, जैसे सभी नदियाँ अंततः महासागर में मिल जाती हैं।

पोषक और विलायक महासागर जीवन का पोषक भी है, जिसमें अनगिनत जीव रहते हैं, और एक शक्तिशाली शक्ति भी है जो भंग और नष्ट कर सकती है। यह दोहरा स्वरूप कालभैरव की भूमिका को दर्शाता है, जो एक संरक्षक और अंतिम विलायक दोनों हैं, जो सभी चीजों का अंत करते हैं, ब्रह्मांडीय चक्र को सुनिश्चित करते हैं। जल के भंडार के रूप में, वे अपने भीतर सृजन और विघटन दोनों की क्षमता रखते हैं।

ज्ञान और चेतना के लिए रूपक भौतिक से परे, "जल" चेतना और ज्ञान का भी प्रतीक हो सकता है। जलनिधि के रूप में, कालभैरव सर्वोच्च ज्ञान (ज्ञान) और सार्वभौमिक चेतना का महासागर हैं, वह परम स्रोत जिससे सभी समझ प्रवाहित होती है और जिसमें सभी व्यक्तिगत चेतना अंततः विलीन हो जाती है।

213. जटिलाय

जिनकी जटाएं उलझी हुई हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : जटिलाय नाम भगवान कालभैरव को "जटा" से सुशोभित व्यक्ति के रूप में संदर्भित करता है, जो उलझे हुए, जटाधारी बाल होते हैं। यह विशेषता शैव धर्म में गहराई से प्रतीकात्मक है और इसके अर्थ की कई परतें हैं।

तपस्या और वैराग्य जटाधारी बालों का सबसे तात्कालिक प्रतीक तपस्या और वैराग्य है। जटाएँ आमतौर पर योगियों, तपस्वियों और साधुओं द्वारा धारण की जाती हैं जिन्होंने अपना जीवन आध्यात्मिक अभ्यासों, सांसारिक सुखों से वैराग्य और तपस्या के लिए समर्पित कर दिया है। जटा धारण करके, भगवान कालभैरव परम तपस्वी का प्रतीक हैं, जो भौतिक इच्छाओं से अछूते हैं और आध्यात्मिक सत्य की खोज में पूरी तरह से लीन हैं।

अव्यवस्थित और जंगली प्रकृति सुलझे हुए बालों के विपरीत, जटाएँ जंगली, अनियंत्रित और अक्सर भयंकर मानी जाती हैं। यह कालभैरव की अनियंत्रित, आदिम और दुर्जेय प्रकृति को दर्शाता है। वह सामाजिक मानदंडों और परंपराओं से परे हैं, जो ब्रह्मांड की कच्ची, अनियंत्रित शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह जंगली पहलू उन्हें श्मशान (श्मशान) से भी जोड़ता है, जो अक्सर उनका निवास स्थान होता है, जहाँ वे भौतिक दुनिया की बाधाओं से मुक्त होते हैं।

ब्रह्मांडीय ऊर्जा का संवाहक योगिक परंपराओं में, अव्यवस्थित बालों को ब्रह्मांडीय ऊर्जा का असाधारण रूप से अच्छा संवाहक माना जाता है। अपनी जटाओं के माध्यम से, भगवान कालभैरव को विशाल, शक्तिशाली दिव्य ऊर्जाओं के लिए एक माध्यम के रूप में चित्रित किया गया है, जिसे वे सृजन और विनाश दोनों के लिए उपयोग कर सकते हैं। यह दिव्य शक्ति के स्वामी और ब्रह्मांड में व्याप्त अप्रकट ऊर्जा के अवतार के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है।

समय का प्रतीक (काल) चूंकि कालभैरव काल के स्वामी हैं, उनकी जटाएँ स्वयं समय के अनियंत्रित, जटिल और अक्सर अराजक प्रवाह का भी प्रतीक हो सकती हैं। जटाएँ आपस में गुंथी हुई और अनंत हैं, ठीक उसी तरह जैसे समय की शाश्वत, चक्रीय प्रकृति, जो सभी प्राणियों को अपनी धाराओं में बांधती है।

शिव से संबंध यह गुण कालभैरव को सीधे उनके सर्वोच्च रूप, भगवान शिव से जोड़ता है, जिन्हें जटाधारी (जटाधारी बालों को धारण करने वाले) के रूप में जाना जाता है। यह कालभैरव की शिव के एक भयंकर स्वरूप के रूप में पहचान को पुष्ट करता है, उनके प्रतिष्ठित प्रतीकों को साझा करता है और समान गहन आध्यात्मिक अर्थों को समाहित करता है।

214. जीवितेश्वराय

समस्त जीवन के परम स्वामी और प्रभु को नमन।

विस्तार : जीवितेश्वराय नाम दो संस्कृत शब्दों से बना एक गहरा विशेषण है: जीवित (जीवन) और ईश्वर (भगवान, नियंत्रक, स्वामी)।

जीवन के स्वामी • जीवित (Jīvita) अपने व्यापक अर्थों में "जीवन" को संदर्भित करता है: अस्तित्व, सजीव प्राणी और जीवन शक्ति। इसमें छोटे से छोटे जीव से लेकर सबसे जटिल प्राणी तक सभी जीवित प्राणी शामिल हैं। यह एनीमेशन के सिद्धांत और सभी अस्तित्व को बनाए रखने वाली ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है।

परम नियंत्रक और स्वामी • ईश्वर (Īśvara) एक सर्वोच्च शासक, नियंत्रक या स्वामी को दर्शाता है। इसका अर्थ केवल एक मालिक नहीं है, बल्कि वह है जिसके पास उस पर पूर्ण अधिकार, शक्ति और संप्रभुता है जिस पर वह शासन करता है।

सभी जीवन का स्रोत और पालनकर्ता इसलिए, जीवितेश्वराय (Jīviteśvarāya) कालभैरव को सभी जीवन के परम भगवान और स्वामी के रूप में पहचानता है। वह अंतिम स्रोत हैं जिससे सभी जीवन निकलता है, वह शक्ति जो इसे बनाए रखती है, और वह शक्ति जो अंततः इसे पुनः अवशोषित करती है। इसमें जीवन का जैविक पहलू ही नहीं, बल्कि वह आध्यात्मिक जीवन शक्ति भी शामिल है जो अस्तित्व को चेतन करती है। इस भूमिका में, वह एनीमेशन और जीवन शक्ति के ब्रह्मांडीय सिद्धांत का प्रतीक हैं।

दार्शनिक निहितार्थ यह नाम प्राण (Prāna) के समान, जीवन शक्ति के स्वामी के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है, जो ब्रह्मांड में व्याप्त और उसे चेतन करती है। उन्हें जीवितेश्वर (Jīviteśvara) के रूप में स्वीकार करके, भक्त जन्म, जीवन और मृत्यु के चक्र पर उनके पूर्ण प्रभुत्व को पहचानते हैं, और जीवन की निरंतरता, गुणवत्ता और अंतिम मुक्ति के लिए उनकी कृपा चाहते हैं। वह अस्तित्व का सार हैं, जो कुछ भी जीवित और सांस लेता है उसके पीछे का चेतन सिद्धांत हैं।

215. जननाय

सभी जन्म और सृष्टि के परम स्रोत को नमन।

विस्तार : जनना (Janāna) नाम संस्कृत मूल "जन्" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "जन्म लेना," "उत्पन्न करना," "सृष्टि करना," या "सामने लाना।" इस प्रकार, यह सभी अस्तित्व के परम मूल और जनक को गहराई से दर्शाता है।

सृष्टि का परम स्रोत जनना उस आदिम जननात्मक सिद्धांत को संदर्भित करता है, वह ब्रह्मांडीय शक्ति जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है। जनना के रूप में, कालभैरव को सर्वोच्च जनक, ब्रह्मांड में सभी जन्म, अभिव्यक्ति और उत्पत्ति का अद्वितीय कारण माना जाता है। वह वह आधार है जिससे सभी घटनाएँ उत्पन्न होती हैं, सृष्टि का वह गर्भ जो विविध रूपों और जीवन को जन्म देता है। यह अवधारणा त्रिदेव (ब्रह्मा निर्माता, विष्णु पालक, शिव संहारक) में शिव की संहारक भूमिका के साथ संरेखित होती है, लेकिन भैरव के रूप में अपने परम, सर्व-समावेशी रूप में, वह सृष्टि सहित तीनों पहलुओं को समाहित करते हैं। उनके द्वारा लाई गई तबाही भी नई सृष्टि के लिए जमीन तैयार करती है।

जन्म और पुनर्जन्म का शाश्वत चक्र यह नाम जन्म, जीवन और मृत्यु (संसार) के अंतहीन चक्र की ओर इशारा करता है, जो कालभैरव को इस निरंतर प्रक्रिया के सूत्रधार और मूल बिंदु के रूप में पुष्टि करता है। व्यक्तिगत आत्माओं के लिए, वह वह स्रोत है जो उन्हें उनके कर्मों के अनुसार विभिन्न शरीरों में धकेलता है। ब्रह्मांड के लिए, वह वह अव्यक्त ऊर्जा है जो समय-समय पर प्रकट अस्तित्व में फूट पड़ती है।

दिव्य शक्ति का प्रतीक एक आध्यात्मिक संदर्भ में, कालभैरव को जनना के रूप में स्वीकार करने का अर्थ है उनकी दिव्य शक्ति को उस अव्यक्त क्षमता के रूप में पहचानना जो प्रकट जगत बन जाती है। वह सभी अस्तित्व का बीज है, वह सूक्ष्म सार जिससे सभी स्थूल रूप प्रकट होते हैं। यह संपूर्ण रचनात्मक ब्रह्मांडीय नृत्य को आरंभ करने और बनाए रखने की उनकी अंतर्निहित शक्ति पर जोर देता है।

216. जनजन्माद्ये

सभी प्राणियों और उनके जन्मों के आदि उद्गम को नमन।

विस्तार : जनजन्मादये नाम एक गहन संस्कृत यौगिक है जो कालभैरव की सभी अस्तित्व के परम स्रोत और उद्गम के रूप में भूमिका को प्रकाशित करता है। यह "जन" (लोग, प्राणी), "जन्म" (जन्म, उद्गम), और "आदये" (स्रोत, उद्गम, प्राथमिक कारण) को जोड़ता है।

सभी प्राणियों का आदिम उद्गम "जन" सभी सचेत प्राणियों को संदर्भित करता है, जिसमें मनुष्य, देवता, पशु और ब्रह्मांड भर में जीवन के सभी रूप शामिल हैं। "जन्म" उनके जन्म, सृजन और प्रकट अस्तित्व को दर्शाता है। इन दोनों को मिलाकर, जनजन्मादये कालभैरव को उस शाश्वत, आवश्यक कारण के रूप में इंगित करता है जिससे सभी प्राणी अस्तित्व में आते हैं। वह केवल एक रैखिक अर्थ में निर्माता नहीं हैं, बल्कि अस्तित्व का वह आधार हैं जिससे सभी व्यक्तिगत जीवन उत्पन्न होते हैं।

प्रथम कारण (आदि) "आदये" प्रत्यय उनकी "आदि" – पूर्ण शुरुआत, प्रथम कारण, आदिम उद्गम – के रूप में स्थिति पर जोर देता है। यह उन्हें परब्रह्म की अवधारणा के साथ जोड़ता है, वह सर्वोच्च वास्तविकता जो हर चीज से पहले आती है और उसे जन्म देती है। कालभैरव के संदर्भ में, यह समय (काल) और सृष्टि (जन्म) पर उनकी परम संप्रभुता को रेखांकित करता है, जिससे वह वह स्रोत बन जाते हैं जिससे समय, स्थान और जीवन के सभी रूप उत्पन्न होते हैं।

चक्रीय अभिव्यक्ति यह नाम सृष्टि, संरक्षण और विघटन की चक्रीय प्रकृति का भी सूक्ष्मता से संकेत करता है। जन्म (जन्म) के उद्गम के रूप में, वह वह हैं जो अभिव्यक्ति के चक्रों को आरंभ करते हैं। उनका "आदये" होना यह दर्शाता है कि इन अंतहीन चक्रों के भीतर भी, वह अपरिवर्तनीय, मूलभूत स्रोत बने रहते हैं जिससे जन्मों का प्रत्येक नया चक्र शुरू होता है, और जिसमें वह अंततः विलीन हो जाता है। वह सभी व्यक्तिगत अस्तित्वों के अल्फा और ओमेगा, शुरुआत और अंत हैं।

217. अर्जुनय

जो अर्जुन नायक की तरह शुद्ध, श्वेत और तेजस्वी हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : नाम अर्जुन (अर्जुनय) कालभैरव को शुद्धता, चमक और एक वीर या अनुकरणीय प्रकृति की अवधारणाओं से जोड़ता है, जिसे महाभारत में पांडव राजकुमार अर्जुन ने प्रसिद्ध रूप से मूर्त रूप दिया था।

शुद्धता और श्वेतता (शुद्धि और श्वेतता) अर्जुन का प्राथमिक अर्थ "श्वेत," "चांदी" या "चमकदार" है। यह पूर्ण शुद्धता (शुद्धता) और बेदाग चमक को दर्शाता है। इस संदर्भ में, कालभैरव, यद्यपि भयंकर हैं, स्वाभाविक रूप से शुद्ध हैं और भौतिक संसार के दोषों से अछूते हैं। यह श्वेतता प्रतीक हो सकती है: क) आध्यात्मिक शुद्धता: वे धर्म और धार्मिकता के प्रतीक हैं, अधर्म से अछूते हैं। ख) अतिक्रमण: उनका स्वभाव तीनों गुणों (सत्त्व, रजस, तमस) से परे है; वे विशुद्ध रूप से आध्यात्मिक प्रकाश हैं। ग) शुभता: श्वेत रंग अक्सर शुभता और दिव्यता से जुड़ा होता है।

चमकदार और दीप्तिमान (प्रकाशता) "चमकदार" या "दीप्तिमान" उनकी दीप्तिमान और तेजस्वी प्रकृति को संदर्भित करता है। यह दर्शाता है: क) ब्रह्मांडीय प्रकाश: वे सभी प्रकाश के स्रोत हैं, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों, भक्तों के लिए मार्ग को प्रकाशित करते हैं। ख) ज्ञान (ज्ञान): उनकी चमक अज्ञान (अविद्या) के अंधकार को दूर करती है, जिससे ज्ञान प्राप्त होता है। ग) प्रकट महिमा: उनका दिव्य रूप, अपने भयानक पहलू में भी, एक अंतर्निहित, विस्मयकारी चमक रखता है।

वीर और अनुकरणीय (वीरता और आदर्शता) महाभारत के नायक अर्जुन के साथ जुड़ाव महत्वपूर्ण है। अर्जुन थे: क) कर्तव्य में अडिग (धर्म): कालभैरव ब्रह्मांडीय कानून को अटूट सटीकता के साथ निष्पादित करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे अर्जुन अपने क्षत्रिय धर्म का पालन करते थे। ख) एक सर्वोच्च योद्धा: कालभैरव परम योद्धा हैं, धर्म की रक्षा करते हैं और बुराई का नाश करते हैं। वे दंडपाणि (दंड का डंडा) और अपनी गदा धारण करते हैं, जो दिव्य अधिकार और अदम्य शक्ति का प्रतीक है। ग) दिव्य के प्रति समर्पित: जैसे अर्जुन कृष्ण के भक्त और उपकरण थे, कालभैरव शिव की इच्छा के एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य करते हैं, उनके भयंकर न्याय और सुरक्षात्मक शक्ति को मूर्त रूप देते हैं। यह पहलू उनकी भूमिका को केवल एक संहारक के रूप में नहीं, बल्कि एक अनुशासित संरक्षक और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के समर्थक के रूप में भी उजागर करता है।

इस प्रकार, कालभैरव के लिए "अर्जुन" उनके बेदाग आध्यात्मिक सार, उनकी दीप्तिमान बुद्धि और दिव्य न्याय के उनके वीर, अडिग निष्पादन को दर्शाता है।

218. जन्मविज्ञाप्याय

अनेक जन्मों की भक्ति से जिसे सही अर्थों में जाना जा सके, उन्हें नमन।

विस्तार : जन्मविज्ञाप्याय नाम एक गहरा संस्कृत शब्द है जो हिंदू दर्शन में, विशेष रूप से भक्ति और अस्तित्व के चक्रीय स्वरूप के संदर्भ में, आध्यात्मिक प्राप्ति के एक मुख्य सिद्धांत को समाहित करता है। यह दो प्राथमिक भागों से बना है:

• जन्म (Janma): इसका अर्थ है "जन्म," "अस्तित्व," या "जीवन।" एक व्यापक दार्शनिक संदर्भ में, यह पुनर्जन्म (संसार) के चक्र को संदर्भित करता है जिसे एक आत्मा धारण करती है।

• विज्ञाप्य (Vijñāpya): यह शब्द मूल "ज्ञा" (जानना) और उपसर्ग "वि" (विशिष्टता, पूर्णता, या विशेषज्ञता का संकेत) से व्युत्पन्न है, जिसे प्रत्यय "प्य" (होने का कारण, बनने का, उत्पन्न होने का) के साथ जोड़ा गया है। इस प्रकार, विज्ञाप्य का अर्थ है "जिसे अच्छी तरह से जानना है," "जिसे स्पष्ट रूप से समझना है," "जिसे प्रकट करना है," या "जिसे वास्तव में महसूस किया जा सकता है।"

बहु-अवतार प्राप्ति का मार्ग (The Path of Multi-Incarnation Realization) इसलिए, जन्मविज्ञाप्याय इस गहन समझ को संदर्भित करता है कि भगवान कालभैरव, परम वास्तविकता के रूप में, एक ही जीवनकाल में या केवल सतही बौद्धिक प्रयास से पूरी तरह से समझा या वास्तव में जाना नहीं जा सकता है। उनका सच्चा स्वरूप, उनका ब्रह्मांडीय महत्व, और उनकी गहन कृपा केवल एक निरंतर, सच्ची और गहरी भक्ति के माध्यम से प्रकट होती है जो अक्सर कई जन्मों तक फैली होती है।

संचित भक्ति (Accumulated Devotion) यह नाम आध्यात्मिक प्रगति की संचयी प्रकृति पर जोर देता है। प्रत्येक जन्म आगे आध्यात्मिक विकास, चेतना के परिष्करण, और भक्ति (भक्ति), आध्यात्मिक अभ्यास (साधना), और धार्मिक कर्म (धर्म) के माध्यम से पुण्य (पुण्य) के संचय का अवसर प्रदान करता है। कई जन्मों में, व्यक्तिगत आत्मा धीरे-धीरे खुद को शुद्ध करती है, अज्ञान (अविद्या) को त्यागती है, और दिव्य को वास्तव में समझने के लिए आवश्यक स्पष्टता और ग्रहणशीलता विकसित करती है।

सत्य का क्रमिक अनावरण (The Gradual Unveiling of Truth) यहां "जानना" केवल बौद्धिक ज्ञान (ज्ञान) नहीं है, बल्कि भगवान की उपस्थिति और प्रकृति की प्रत्यक्ष, अनुभवात्मक प्राप्ति (अनुभव) है। यह प्राप्ति क्रमिक है, प्याज की परतों को छीलने के समान है, और प्रत्येक क्रमिक जन्म (जन्म) के समर्पित प्रयास के साथ समझ की गहराई बढ़ती जाती है। कालभैरव, काल के स्वामी के रूप में, लौकिक और आध्यात्मिक विकास की इस प्रक्रिया को नियंत्रित करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि सच्ची भक्ति अंततः जीवन भर परम ज्ञान का फल देती है।

कृपा और प्रयास (Grace and Effort) जबकि यह आवश्यक व्यापक प्रयास को रेखांकित करता है, यह अप्रत्यक्ष रूप से दिव्य की असीम करुणा की भी बात करता है, जो शुद्धि और अंततः मिलन की इस लंबी यात्रा की अनुमति देता है। यह इस विचार को पुष्ट करता है कि आध्यात्मिक यात्रा कोई दौड़ नहीं है बल्कि एक निरंतर विकास है, और परम सत्य ब्रह्मांडीय समय के लंबे विस्तार में दृढ़ भक्त के लिए अनावरण किया जाता है।

219. जन्माधिपाय

सभी जन्मों के सर्वोच्च संप्रभु और स्वामी को नमन।

विस्तार : जन्माधिपाय नाम 'जन्म' (जन्म, अस्तित्व, शुरुआत) और 'अधिप' (स्वामी, संप्रभु, शासक) का एक यौगिक है।

जन्म और सृष्टि के संप्रभु जन्माधिपाय भगवान भैरव को जन्म और पुनर्जन्म के चक्र के परम स्वामी, संप्रभु और नियंत्रक के रूप में संदर्भित करता है। यह केवल व्यक्तिगत जन्मों की अध्यक्षता करने से कहीं आगे है; वह वह मूलभूत सिद्धांत है जो सभी सृष्टि, सभी आरंभों और स्वयं अस्तित्व की उत्पत्ति को नियंत्रित करता है। वह वह है जो ब्रह्मांडीय प्रक्रियाओं को शुरू करता है जो सभी घटनाओं की अभिव्यक्ति की ओर ले जाती हैं।

ब्रह्मांडीय शासक जन्माधिप के रूप में, वह प्रत्येक जन्म की स्थितियों, समय और प्रकृति पर पूर्ण अधिकार रखता है - चाहे वह ब्रह्मांड का हो, एक तारे का हो, एक जीवित प्राणी का हो, या एक विचार का हो। यह ब्रह्मांडीय शासन के एक गहन स्तर का तात्पर्य है, जहाँ उसकी इच्छा अस्तित्व के

सभी रूपों और चरणों की शुरुआत को निर्धारित करती है। वह केवल जन्मों का प्रबंधन नहीं करता है; वह वह स्रोत है जिससे सभी रूप निकलते हैं और वापस लौटते हैं।

दार्शनिक महत्व दार्शनिक रूप से, यह प्रकट वास्तविकता और माया (भ्रामक शक्ति जो नाम और रूप की दुनिया को सामने लाती है) के स्रोत के रूप में उसकी भूमिका को उजागर करता है। सभी अस्तित्व उससे उत्पन्न होते हैं, उसमें रहते हैं, और अंततः उसमें विलीन हो जाते हैं। उसे जन्माधिप के रूप में स्वीकार करना उसे सभी अभिव्यक्ति और विघटन के चक्रों के प्राथमिक कारण और अंतिम सूत्रधार के रूप में पहचानना है। यह इस विचार को पुष्ट करता है कि घटनात्मक दुनिया में कुछ भी उसकी दिव्य स्वीकृति और ऊर्जा के बिना अस्तित्व में नहीं आता है।

220. जटिने

जिनके जटाएँ हैं, जो उनकी तपस्या शक्ति का प्रतीक हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : जटिने नाम उस एक को संदर्भित करता है जिसके "जटा" या उलझे हुए, गुंथे हुए बाल हैं। यह भगवान शिव का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रतिष्ठित गुण है, जो हिंदू दर्शन और तपस्वी परंपराओं में प्रतीकात्मक अर्थों से भरपूर है।

तपस्या और वैराग्य जटाएँ एक तपस्वी (साधु या तपस्वी) की पहचान होती हैं जिसने सांसारिक जीवन का त्याग कर दिया है। यह गहन आध्यात्मिक अभ्यास, तपस्या और भौतिक संपत्ति तथा सुख-सुविधाओं से वैराग्य का प्रतीक है। शिव के लिए, और विस्तार से कालभैरव के लिए, यह परम संन्यासी के रूप में उनकी भूमिका का प्रतीक है, जो बाहरी दिखावे से उदासीन हैं और गहन ध्यान में लीन हैं। यह स्थिति तपस्या के माध्यम से प्राप्त अपार आध्यात्मिक शक्ति का अर्थ है।

अनियंत्रित और जंगली दिव्य शक्ति सुव्यवस्थित बालों के विपरीत, जटाएँ एक जंगली, अनियंत्रित और अदम्य ऊर्जा का सुझाव देती हैं। यह उन आदिम, मौलिक और ब्रह्मांडीय शक्तियों का प्रतिनिधित्व करती है जिन्हें शिव धारण करते हैं—ऐसी शक्तियाँ जो मानवीय नियंत्रण या समझ से परे हैं। यह उनकी अदम्य रचनात्मक और विनाशकारी शक्ति (शक्ति) का प्रतीक है।

ब्रह्मांडीय ऊर्जा का पात्र कुछ परंपराओं में, शिव की जटाओं में पवित्र गंगा नदी का प्रवाह समाहित होता है, जो ज्ञान और मुक्ति के शुद्धिकारी जल का प्रतीक है जो स्वर्ग से पृथ्वी पर उतरता है। यह कल्पना ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं को धारण करने और विनियमित करने की उनकी क्षमता पर और जोर देती है। कालभैरव के लिए, यह समय और ब्रह्मांडीय शक्तियों के परम पात्र और नियामक के रूप में उनकी भूमिका का प्रतीक है।

अहंकार पर विजय जटाओं का भौतिक स्वरूप, जो अक्सर खुरदुरा और अस्त-व्यस्त होता है, सुंदरता और व्यक्तिगत साज-सज्जा के सामाजिक मानदंडों के बिल्कुल विपरीत है। पारंपरिक सौंदर्यशास्त्र की यह अस्वीकृति अहंकार और भौतिक शरीर के साथ पहचान के अतिक्रमण का प्रतीक है, जो एक उच्च्, आध्यात्मिक वास्तविकता की ओर इशारा करती है।

मुक्ति के प्रदाता जटाओं वाले के रूप में, कालभैरव गंभीर तपस्या के माध्यम से प्राप्त ज्ञान और शक्ति का प्रतीक हैं, जो उन्हें उन लोगों के लिए मुक्ति (मोक्ष) का एक शक्तिशाली प्रदाता बनाते हैं जो उनमें शरण लेते हैं और धार्मिकता तथा वैराग्य के मार्ग का अनुसरण करते हैं।

221. जन्मजरामृत्युभयापहाय

जन्म, बुढ़ापे और मृत्यु के भय को दूर करने वाले को नमन।

विस्तार : जन्मजरामृत्युभयापहाय नाम कई महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों से मिलकर बना एक गहन और व्यापक नाम है: जन्म (जन्म), जरा (बुढ़ापा/क्षय), मृत्यु (मृत्यु), भय (भय), और अपह (जो दूर करता है या हटाता है)।

संसार चक्र के भय को दूर करने वाला यह नाम सीधे सभी सचेतन प्राणियों में निहित मौलिक भयों को संबोधित करता है: जन्म लेने का भय (और इस प्रकार दुख के चक्र में प्रवेश करना), बुढ़ापे के साथ आने वाले क्षय और कमजोरी का भय, और मृत्यु द्वारा निहित विनाश का अंतिम भय। भैरव, इस पहलू में, वह हैं जो व्यक्तियों को इन आदिम चिंताओं से मुक्त करते हैं।

मुक्ति की प्रकृति भैरव द्वारा इन भयों को दूर करने का तरीका इन घटनाओं के एक साधारण जादुई गायब होने के माध्यम से नहीं है, बल्कि एक गहरी समझ और अतिक्रमण के माध्यम से है। वह अलग अस्तित्व के भ्रम और क्षणभंगुर भौतिक शरीर से लगाव को दूर करने के लिए ज्ञान और आध्यात्मिक शक्ति प्रदान करते हैं। आत्मा (आत्मा) की शाश्वत प्रकृति और ब्रह्म (परम वास्तविकता) से उसके अभेद को समझकर, भौतिक रूप की अनित्यता - जन्म, बुढ़ापा और मृत्यु - से जुड़ा भय घुल जाता है।

समय और अतिक्रमण के स्वामी शिव के एक उग्र रूप के रूप में और काल (समय) से निकटता से पहचाने जाने वाले, भैरव लौकिक क्षेत्र के परम स्वामी हैं। मानव अस्तित्व के इन तीन अपरिहार्य चरणों के भय को दूर करके, वह भक्त को समय और स्थान की सीमाओं को पार करने में मदद करते हैं, जिससे उन्हें मुक्ति (मोक्ष) की ओर ले जाया जाता है। वह साधक को यह समझने में दीक्षित करते हैं कि आत्मा शरीर और मन की बदलती परिस्थितियों से परे है।

आध्यात्मिक साहस और ज्ञान इस रूप में भैरव की भक्ति गहन आध्यात्मिक साहस प्रदान करती है, जिससे अभ्यासकर्ता जीवन की चुनौतियों, जिसमें उनकी अपनी नश्वरता भी शामिल है, का बिना लगाव या भय के सामना कर पाते हैं। वह उन्हें इस अहसास की ओर मार्गदर्शन करते हैं कि सच्चा स्व अजन्मा, अमर और अपरिवर्तनीय है, जिससे ज्ञान (ज्ञान) और वैराग्य (विरक्ति) के माध्यम से इन भयों के मूल कारण को दूर किया जाता है।

२२२. जीवितांतकराय

सभी प्राणियों के जीवन का अंत करने वाले को नमन।

विस्तार : जीवितान्तकाराय नाम कालभैरव के लिए एक गहन और मार्मिक विशेषण है, जो 'जीवित' (जीवन) और 'अंतक' (समाप्त करने वाला, संहारक) से बना है, साथ ही इसमें प्रत्यय '-राय' भी जुड़ा है, जो अक्सर प्रभुत्व या परम होने का अर्थ दर्शाता है।

जीवन का संहारक यह नाम सीधे तौर पर कालभैरव को जीवन की समाप्ति के लिए जिम्मेदार परम शक्ति के रूप में पहचानता है। भव्य ब्रह्मांडीय योजना में, हर उस चीज़ का अंत होता है जिसका आरंभ होता है। कालभैरव, शिव के एक स्वरूप के रूप में, इस अपरिहार्य सिद्धांत का प्रतीक हैं। वे केवल दुर्भावनापूर्ण अर्थ में विनाशक नहीं हैं, बल्कि विघटन के निष्पक्ष और अचूक अग्रदूत हैं जो सभी अस्तित्व को उसके स्वाभाविक निष्कर्ष पर लाते हैं। यह भूमिका सृष्टि, स्थिति और संहार (सृष्टि, संरक्षण और विनाश) के चक्रीय स्वरूप के लिए मौलिक है।

काल (समय) का पहलू जीवितांतक के रूप में उनकी भूमिका उनकी काल, या स्वयं समय के रूप में पहचान के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। समय सभी चीजों का परम उपभोक्ता है; यह प्रत्येक प्राणी और प्रत्येक ब्रह्मांड की जीवन अवधि को निर्धारित करता है। कालभैरव, काल के स्वामी के रूप में, उस सटीक क्षण को चिह्नित करते हैं जब जीवन का धागा टूट जाता है, जिससे उस विशेष रूप में एक व्यक्ति की यात्रा का अंत होता है। यह लौकिक आयाम पर उनकी पूर्ण संप्रभुता पर जोर देता है।

दयालु संहारक हालांकि "जीवन का अंत" भयावह लग सकता है, हिंदू दर्शन के संदर्भ में, इसका एक गहरा आध्यात्मिक अर्थ है। मृत्यु कोई अंतिम विनाश नहीं है, बल्कि एक संक्रमण है, जन्म और पुनर्जन्म (संसार) के चक्र से मुक्ति है। जीवन का अंत करके, कालभैरव प्राणियों को उनके वर्तमान

स्वरूप के कष्टों और सीमाओं से दयापूर्वक मुक्त करते हैं, जिससे नवीनीकरण और आगे आध्यात्मिक विकास संभव होता है। वे परम चिकित्सक हैं जो व्यक्तिगत स्व (अहंकार) को हटाकर सार्वभौमिक स्व के साथ मिलन को सुगम बनाते हैं।

बंधन से मुक्ति आध्यात्मिक साधक के लिए, कालभैरव को जीवितांतक के रूप में पहचानना अनित्यता और अनासक्ति की गहरी समझ की ओर ले जाता है। अंत की अनिवार्यता को स्वीकार करके, कोई मृत्यु के भय को पार कर सकता है और उच्च आध्यात्मिक सत्यों के अनुरूप जीवन जी सकता है, अंततः क्रमिक जीवन के चक्र से मुक्ति (मोक्ष) की तलाश कर सकता है। वे ही हैं जो अंततः कर्म बंधन की गांठ को काटते हैं।

223. ज्येष्ठाय

सबसे ज्येष्ठ, वरिष्ठ और सभी में श्रेष्ठ को नमन।

विस्तार : ज्येष्ठाय नाम संस्कृत शब्द "ज्येष्ठ" (Jyeshṭha) से लिया गया है, जिसमें वरिष्ठता, पूर्वता और सर्वोच्च उत्कृष्टता से संबंधित अर्थों की समृद्ध परतें हैं।

सबसे बड़े और सर्वप्रथम "ज्येष्ठ" का शाब्दिक अर्थ है "सबसे बड़ा," "सबसे पुराना," या "सबसे वरिष्ठ।" कालभैरव के संदर्भ में, यह उनके आदिम अस्तित्व को दर्शाता है। वे जन्म नहीं लेते बल्कि शाश्वत रूप से प्रकट होते हैं, जो सभी सृष्टि के पहले उत्सर्जन या अंतिम स्रोत का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह उनके अद्वैत स्वरूप की ओर इशारा करता है, जो सभी रूपों और घटनाओं से पहले है। वे प्रथम सिद्धांत या अंतिम कारण हैं, जिनसे अन्य सभी देवता और वास्तविकताएँ उत्पन्न होती हैं।

सबसे उत्कृष्ट और श्रेष्ठ आयु से परे, "ज्येष्ठ" गुणवत्ता, शक्ति और ज्ञान में सर्वोच्चता का भी अर्थ है। वे सबसे उत्कृष्ट, सबसे प्रमुख और अन्य सभी प्राणियों और अभिव्यक्तियों से परे हैं। यह पहलू उनके अद्वितीय दिव्य गुणों – उनकी अनंत शक्ति, अटूट ज्ञान और बेदाग पवित्रता पर जोर देता है जो उन्हें ब्रह्मांडीय पदानुक्रम के शिखर पर स्थापित करते हैं।

व्यवस्था के संरक्षक सबसे बड़े होने के नाते, वे न केवल सृष्टि का आरंभ करते हैं बल्कि उसकी निरंतरता की भी देखरेख करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे एक परिवार में एक बुजुर्ग व्यवस्था सुनिश्चित करता है और अपने सदस्यों की रक्षा करता है। उनकी वरिष्ठता उन्हें ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) और समय (काल) को बनाए रखने का अंतिम अधिकार प्रदान करती है।

दार्शनिक निहितार्थ दार्शनिक अर्थ में, ज्येष्ठाय उस परम वास्तविकता को संदर्भित करता है जो समय और स्थान से परे है, फिर भी सभी लौकिक और स्थानिक घटनाओं का स्रोत और नियंत्रक है। वे अव्यक्त ब्रह्म की पहली अभिव्यक्ति हैं, जो इसके पारलौकिक और अंतर्निहित दोनों पहलुओं को समाहित करते हैं। ज्येष्ठाय की पूजा शिव के इस सर्वोच्च, शाश्वत और सर्वव्यापी पहलू को कालभैरव के रूप में स्वीकार करती है।

224. जगन्नाथाय

संपूर्ण ब्रह्मांड के परम स्वामी को नमन।

विस्तार : जगन्नाथाया नाम संस्कृत के शब्दों जगत् (Jagat) और नाथ (Nātha) से बना एक गहरा यौगिक है।

ब्रह्मांड के स्वामी (जगत्): जगत् का शाब्दिक अर्थ है "जो चलता है" या "गतिशील"। यह संपूर्ण ब्रह्मांड को संदर्भित करता है - वह सब कुछ जो मौजूद है, जो गति में है, सभी घटनाएँ, और सृजित अस्तित्व की समग्रता। इसमें न केवल भौतिक ब्रह्मांड बल्कि सभी प्राणी, लोक और आयाम भी शामिल हैं।

स्वामी और रक्षक (नाथ): नाथ का अर्थ है "स्वामी," "मालिक," "रक्षक," "आश्रय," या "शरण।" यह उस व्यक्ति को दर्शाता है जिसके पास "जगत्" द्वारा वर्णित सभी पर सर्वोच्च अधिकार और प्रावधान है।

जगन्नाथ परम शासक के रूप में: इस प्रकार, जगन्नाथ का अर्थ है "ब्रह्मांड के स्वामी" या "ब्रह्मांड के मालिक।" यह नाम काल भैरव की सर्वशक्तिमत्ता और सर्वज्ञता को रेखांकित करता है। वह केवल किसी विशेष क्षेत्र के देवता नहीं हैं, बल्कि सभी सृष्टि, पालन और संहार के परम संप्रभु हैं। उनका प्रभुत्व प्रत्येक परमाणु, प्रत्येक जीवित प्राणी, प्रत्येक खगोलीय पिंड और प्रत्येक ब्रह्मांडीय नियम पर फैला हुआ है।

एक व्यापक दिव्य भूमिका: यह उपाधि उनकी स्थिति को सर्वोच्च ब्रह्म तक बढ़ाती है, जो परम वास्तविकता है जिससे सब कुछ निकलता है और जिसमें सब कुछ लौटता है। यह ब्रह्मांडीय प्रशासक के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है, वह जो सृष्टि और विनाश के भव्य नृत्य का संचालन करता है, सार्वभौमिक पैमाने पर दिव्य न्याय और करुणा का प्रतीक है। उन्हें जगन्नाथ के रूप में नमन करना उनकी असीम शक्ति और अस्तित्व के ताने-बाने और नियामक के रूप में उनकी मूलभूत स्थिति को स्वीकार करना है।

225. जनेश्वर आय

सभी लोगों के सर्वोच्च शासक और ईश्वर को नमन।

विस्तार : जनेश्वर नाम 'जन' और 'ईश्वर' का एक यौगिक (कंपाउंड) है।

• जन (Jaṇa): यह शब्द मोटे तौर पर "लोग," "मानव जाति," "मनुष्य," या पृथ्वी पर रहने वाले "संवेदनशील प्राणी" को दर्शाता है। यह मानव क्षेत्र और उसके निवासियों पर जोर देता है।

• ईश्वर (Īśvara): इस शब्द का अर्थ "भगवान," "शासक," "स्वामी," या "ईश्वर" है। यह सर्वोच्च अधिकार, शक्ति और संप्रभुता को दर्शाता है।

मानवता का सर्वोच्च शासक (Supreme Ruler of Humanity) जनेश्वर के रूप में, कालभैरव को सभी लोगों पर अंतिम अधिकार और संप्रभु शासक के रूप में स्वीकार किया जाता है। इसका तात्पर्य है कि उनका शासन मानव अस्तित्व के नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक पहलुओं तक फैला हुआ है। वह न्याय के वितरक और मानवता के बीच व्यवस्था बनाए रखने वाले हैं। उनका शासन केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि ब्रह्मांडीय है, जिसमें सभी मनुष्यों के भाग्य और कार्यों को शामिल किया गया है।

दिव्य राज्यपाल और संरक्षक (Divine Governor and Protector) यह विशेषण एक परोपकारी लेकिन दृढ़ राज्यपाल के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है जो धर्मात्माओं की रक्षा करते हैं और मानवता को आध्यात्मिक विकास की ओर मार्गदर्शन करते हैं। हालांकि, ईश्वर होने के नाते, उनका शासन उन लोगों को दंडित करने की उनकी क्षमता को भी दर्शाता है जो धर्म का उल्लंघन करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि मानवीय कार्यों के माध्यम से ब्रह्मांडीय संतुलन बना रहे।

दिव्य संप्रभुता का प्रतीक (Embodiment of Divine Sovereignty) यह नाम मानव क्षेत्र के भीतर कालभैरव की सर्वशक्तिमानता और सर्वव्यापकता को रेखांकित करता है। यह दर्शाता है कि वह दिव्य चेतना हैं जो सभी व्यक्तियों के अनुभवों में व्याप्त और उन्हें व्यवस्थित करती हैं, मानव जाति के भाग्य के लिए अंतिम निर्णय लेने वाले हैं। यह पहचान उनके अनुयायियों के बीच भक्ति और समर्पण की भावना को बढ़ावा देती है, उन्हें उनके जीवन में सर्वोच्च मार्गदर्शक शक्ति के रूप में स्वीकार करती है।

226. त्रिवर्गसाधनाय

मानव जीवन के तीन महान उद्देश्यों (धर्म, अर्थ, काम) को प्राप्त करने का साधन बनने वाले (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : त्रिवर्गसाधना नाम एक गहन और प्राचीन वैदिक अवधारणा है जो त्रिवर्ग और साधना से मिलकर बनी है।

त्रिवर्ग: मानव जीवन के तीन उद्देश्य "त्रिवर्ग" हिंदू दर्शन में वर्णित मानव जीवन के तीन मूलभूत लक्ष्यों या अनुसंधानों (पुरुषार्थों) को संदर्भित करता है: 1. धर्म (धार्मिकता, नैतिक आचरण, कर्तव्य): इसमें नैतिक और सामाजिक कर्तव्य, नैतिक जीवन और आध्यात्मिक नियमों का पालन शामिल है। यह वह नींव है जिस पर अन्य सभी अनुसंधानों को आधारित होना चाहिए। 2. अर्थ (धन, भौतिक समृद्धि, आर्थिक कल्याण): यह आरामदायक जीवन जीने और अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए आवश्यक संसाधनों, शक्ति और साधनों के अधिग्रहण को संदर्भित करता है। इसे आमतौर पर धर्म के दायरे में समझा जाता है। 3. काम (इच्छा, सुख, आनंद): इसमें सौंदर्य संबंधी सुख, इंद्रिय सुख, कलात्मक अभिव्यक्ति और इच्छाओं की पूर्ति शामिल है, जो आदर्श रूप से धर्म के अनुरूप भी होती है।

मोक्ष (मुक्ति, आध्यात्मिक स्वतंत्रता) को अक्सर चौथा और अंतिम पुरुषार्थ माना जाता है, जो त्रिवर्ग से परे है।

साधना: साधन या सिद्धि "साधना" उस साधन, विधि, उपकरण या सिद्धि को संदर्भित करती है जिसके द्वारा एक उद्देश्य प्राप्त किया जाता है। इसका तात्पर्य एक अभ्यास, एक अनुशासन या एक मार्ग से है जो एक विशिष्ट लक्ष्य की ओर ले जाता है।

धर्म, अर्थ और काम के दाता जब कालभैरव को त्रिवर्गसाधना के रूप में संबोधित किया जाता है, तो यह दर्शाता है कि वे जीवन के इन तीन आवश्यक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अंतिम स्रोत और सुविधा प्रदाता हैं। उनकी भक्ति, उनके सिद्धांतों को समझना और उनके द्वारा प्रतिनिधित्व की गई ब्रह्मांडीय व्यवस्था के अनुरूप जीवन जीना धार्मिकता, समृद्धि और इच्छाओं की पूर्ति की सफल प्राप्ति का कारण बन सकता है। वे दिव्य शक्ति हैं जो कर्मों के परिणामों को नियंत्रित करती हैं और इन अनुसंधानों से संबंधित कर्मों के फल को प्रदान करती हैं।

दिव्य शासन और ब्रह्मांडीय व्यवस्था यह नाम ब्रह्मांडीय व्यवस्था के सर्वोच्च शासक के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है। यह सुनिश्चित करके कि धर्म का पालन किया जाता है, वे अर्थ के न्यायपूर्ण अधिग्रहण और काम के उचित आनंद को सक्षम करते हैं। समय और परिणाम के संरक्षक के रूप में उनका भयंकर रूप यह सुनिश्चित करता है कि धार्मिकता के मार्ग का अनुसरण करने वालों को पुरस्कृत किया जाए, जबकि जो लोग विचलित होते हैं उन्हें ऐसे परिणामों का सामना करना पड़ता है जो अंततः उन्हें धर्म की ओर वापस ले जाते हैं। इस प्रकार, वे केवल एक दाता ही नहीं हैं, बल्कि वह तंत्र भी हैं जिसके माध्यम से इन उद्देश्यों को वैध और सामंजस्यपूर्ण रूप से प्राप्त किया जा सकता है।

227. ताक्ष्र्यय

पौराणिक पक्षी गरुड़ के समान, तीव्र और शक्तिशाली को नमन।

विस्तार : ताक्ष्र्यय नाम कालभैरव को ताक्ष्र्य से जोड़ता है, जो गरुड़ का एक प्राचीन नाम है। यह संबंध गहरा और बहुआयामी है, जो विशिष्ट दिव्य गुणों को उजागर करता है।

तार्क्ष्य गरुड़ के रूप में तार्क्ष्य एक आदिम ऋषि हैं और, अधिक सामान्यतः, गरुड़ के लिए एक विशेषण है, जो पौराणिक ईगल जैसा पक्षी है, भगवान विष्णु का वाहन है। गरुड़ अपनी इन विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध हैं: 1. तीव्रता: गरुड़ अविश्वसनीय रूप से तेज हैं, जो क्षणों में विशाल ब्रह्मांडीय दूरियों को तय करने में सक्षम हैं। यह पहलू, जब कालभैरव पर लागू होता है, तो उनकी सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान प्रकृति को दर्शाता है, जो तीव्र कार्रवाई, तत्काल अभिव्यक्ति और तात्कालिक विनाश या सुरक्षा में सक्षम है। वह ब्रह्मांडीय शक्ति है जो बिना किसी देरी के कार्य करती है। 2. शक्ति और बल: गरुड़ असाधारण रूप से शक्तिशाली हैं, जो अमृत (दिव्य अमृत) की अपनी खोज में शक्तिशाली सर्पों और यहां तक कि देवताओं को भी हराने में सक्षम हैं। कालभैरव में यह गुण उनकी अपार शक्ति और एक अदम्य बल पर जोर देता है जो किसी भी बाधा, भय या राक्षसी शक्ति को दूर कर सकता है। 3. विष का विनाश (सर्प): गरुड़ सर्पों (नागों) के शाश्वत शत्रु हैं और अक्सर विष को हटाने या बेअसर करने के लिए उनका आह्वान किया जाता है। जब कालभैरव को तार्क्ष्य के रूप में पहचाना जाता है, तो यह सांसारिक अस्तित्व के जहरों - अज्ञान (अविद्या), अहंकार (अहंकार), नकारात्मक कर्म, और पुनर्जन्म के चक्र (संसार) को नष्ट करने की उनकी शक्ति को दर्शाता है। वह आध्यात्मिक और भौतिक पीड़ा का अंतिम मारक हैं।

कालभैरव के संदर्भ में प्रतीकवाद कालभैरव को तार्क्ष्य के रूप में पहचान कर, हम पहचानते हैं: • तेजी से हस्तक्षेप: अपने भक्तों के जीवन में तेजी से हस्तक्षेप करने की उनकी क्षमता, उनके भय, शत्रुओं और कर्मों के बोझ को तत्परता से मिटाना। • अंधकार का नाश करने वाला: जैसे गरुड़ सर्पों के अंधकार को जीतते हैं, वैसे ही कालभैरव अज्ञान और भ्रम के अंधकार को दूर करते हैं, भक्त को आध्यात्मिक प्रकाश की ओर ले जाते हैं। • अविचलित ऊर्जा: गरुड़ अदम्य महत्वपूर्ण ऊर्जा का प्रतीक हैं। यह कालभैरव के साथ संरेखित होता है जो अदम्य ब्रह्मांडीय ऊर्जा के अवतार के रूप में है जो सृष्टि, संरक्षण और विघटन को संचालित करती है।

इस प्रकार, तार्क्ष्यय कालभैरव को तीव्र, शक्तिशाली और सर्व-विजयी दिव्य शक्ति के रूप में दर्शाता है जो बाधाओं और जहरों को तेजी से हटाता है, भक्तों को मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करता है।

228. तद्गुणाय

'उस' (परम सत्य के) सभी दिव्य गुणों को धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : तद्गुणाय नाम संस्कृत में एक गहन दार्शनिक शब्द है, जो 'तत्' (Tat) और 'गुण' (Guṇa) से व्युत्पन्न है।

तत्: "वह" - परम सत्य अद्वैत वेदांत और अन्य हिंदू दार्शनिक प्रणालियों में, "तत्" (तत्) परम सत्य, ब्रह्म को संदर्भित करता है। यह निरपेक्ष, अवर्णनीय, अप्रकट और सर्वोच्च अद्वैत सत्य को दर्शाता है जो सब कुछ समाहित करता है फिर भी सभी भेदों से परे है। यह सभी अस्तित्व का अकारण आधार है।

गुण: गुण; अंतर्निहित विशेषताएँ गुण (गुण) यहाँ अंतर्निहित गुणों, विशेषताओं या लक्षणों को संदर्भित करता है। दिव्य के संदर्भ में, ये सांसारिक गुण नहीं बल्कि सर्वोच्च, पारलौकिक गुण हैं।

परम दिव्य गुणों का धारक इसलिए, तद्गुणाय का अर्थ है "उस एक को नमस्कार, जो 'उस' के सभी दिव्य गुणों से युक्त है।" यह दर्शाता है कि कालभैरव ब्रह्म, परम वास्तविकता की सभी पूर्णताओं और आवश्यक विशेषताओं को मूर्त रूप देते हैं और प्रकट करते हैं। इन विशेषताओं में शामिल हैं:

• सर्वशक्तिमान (Sarvaśaktimān): सब कुछ करने की शक्ति। • सर्वज्ञ (Sarvajña): सब कुछ का ज्ञान। • सर्वव्यापक (Sarvavyāpaka): हर जगह उपस्थित। • नित्य (Nitya): आदि और अंत रहित। • अविकारी (Avikārī): अपरिवर्तनीय। • पूर्ण (Pūrṇa): पूर्ण और दोषरहित। • आनंद (Ānanda): परम आनंद और परमानंद। • चित् (Cit): शुद्ध चेतना।

अंतर्निहितता और पराकाष्ठा यह नाम इस बात पर जोर देता है कि जबकि निरपेक्ष (तत्) अंततः वर्णन और गुणों से परे है, कालभैरव, शिव के एक प्रकटीकरण के रूप में, इन गुणों को एक ऐसे रूप में पूरी तरह से मूर्त रूप देते हैं और व्यक्त करते हैं जिसे भक्तों द्वारा समझा और पूजा जा सकता है। वह परम पारलौकिक वास्तविकता (तत्) और उसके सभी गौरवशाली गुणों (गुण) के अंतर्निहित धारक दोनों हैं।

अद्वैत और एकता कालभैरव को तद्गुण के रूप में पहचानकर, व्यक्ति प्रकट देवता और अप्रकट निरपेक्ष के बीच अद्वैत को स्वीकार करता है। वह केवल एक प्रतिबिंब नहीं है बल्कि ब्रह्म का सार है, जो अपनी सभी महिमा और पूर्णताओं से संपन्न है। यह नाम उनकी सर्वोच्च दिव्यता और उच्चतम दार्शनिक सत्य के साथ उनके गहरे संबंध को रेखांकित करता है।

229. तन्तुवर्धनय

ब्रह्मांड के जटिल धागे को बुनने और विस्तृत करने वाले को नमन।

विस्तार : "तन्तुवर्धनाय" नाम ब्रह्मांडीय ताने-बाने में कालभैरव की भूमिका का एक गहन और जटिल वर्णन है, जो संस्कृत मूल "तन्तु" (धागा, श्रृंखला, वंश, ताना) और "वर्धन" (बढ़ाना, बढ़ाना, विस्तार करना, पोषण करना, या समृद्ध करना) से बना है।

ब्रह्मांडीय बुनकर इस संदर्भ में "तन्तु" सृष्टि के जटिल धागे को संदर्भित करता है जो ब्रह्मांड के भीतर सभी घटनाओं, प्राणियों और समय-रेखाओं को एक साथ बुनता है। यह अस्तित्व के निरंतर और परस्पर जुड़े अनुक्रम का प्रतिनिधित्व करता है, वह ताना-बाना जिस पर वास्तविकता का निर्माण होता है। यह सृष्टि के वंश, कारण और प्रभाव के अंतर्संबंध, या ब्रह्मांडीय नियमों के नाजुक फिर भी लचीले नेटवर्क का प्रतीक हो सकता है।

अस्तित्व का विस्तारक "वर्धन" वृद्धि, विस्तार और पोषण की ऊर्जावान, गतिशील शक्ति को दर्शाता है। कालभैरव, तन्तुवर्धन के रूप में, इसलिए वह दिव्य शक्ति हैं जो न केवल इस ब्रह्मांडीय धागे को शुरू करती हैं बल्कि इसे लगातार विस्तारित करती हैं, नए पैटर्न बुनती हैं, मौजूदा ताने-बाने के भीतर विकास को बढ़ावा देती हैं, और अभिव्यक्ति की चल रही प्रक्रिया को बनाए रखती हैं। वह वह हैं जो ब्रह्मांड को उसकी अनंत जटिलता में गुणा, विकसित और प्रकट करते हैं।

समय और स्थान के दिव्य वास्तुकार कालभैरव के काल (समय) से जुड़ाव को देखते हुए, यह नाम लौकिक आयाम पर उनकी गहरी महारत को इंगित करता है। वह केवल एक स्थिर निर्माता नहीं हैं, बल्कि एक सक्रिय भागीदार हैं जो अतीत, वर्तमान और भविष्य के धागों को एक विलक्षण, सुसंगत कथा में लगातार खींचते हैं, समय के चक्रों के भीतर अनुभव के दायरे और गहराई का विस्तार करते हैं। वह क्रमिक युगों (युगों) के माध्यम से ब्रह्मांड का विस्तार करते हैं, आध्यात्मिक और भौतिक विकास की निरंतरता सुनिश्चित करते हैं।

दार्शनिक महत्व यह नाम अप्रत्यक्ष रूप से माया की अवधारणा को दिव्य बुनकर के रूप में संदर्भित करता है, जो एक एकल एकीकृत वास्तविकता से विविध रूपों का भ्रम पैदा करता है। कालभैरव, तन्तुवर्धन के रूप में, इस ब्रह्मांडीय नाटक के अंतिम नियंत्रक और प्रवर्तक हैं, जो दिव्य इच्छा के अनुसार ब्रह्मांड के निरंतर प्रकटीकरण और विकास को सुनिश्चित करते हैं। यह सृष्टि, पालन और अंततः विघटन के पीछे गतिशील शक्ति के रूप में उनकी भूमिका को उजागर करता है - वह जो अस्तित्व के भव्य, जटिल नृत्य की देखरेख करते हैं।

230. तपस्विने

सभी तपस्वियों में महान और कठोर तपस्या में लीन रहने वाले (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : तपस्वी नाम उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जो तप करता है, या तपस्या करता है।

तप: अभ्यास (Tapas: The Practice) तप शब्द "तप" धातु से बना है, जिसका अर्थ है "गर्म करना," "जलाना," या "चमकना।" आध्यात्मिक संदर्भ में, यह गहन तपस्या, आत्म-अनुशासन, प्रायश्चित, ध्यान और केंद्रित आध्यात्मिक प्रयास को दर्शाता है जिसका उद्देश्य आंतरिक ऊष्मा (तेज) उत्पन्न करना है ताकि आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त की जा सके, स्वयं को शुद्ध किया जा सके, या विशिष्ट शक्तियाँ (सिद्धियाँ) प्राप्त की जा सकें। इसमें स्वेच्छा से शारीरिक कठिनाई सहना, इंद्रियों को नियंत्रित करना और मन को केंद्रित करना शामिल है।

सर्वोच्च तपस्वी (The Supreme Ascetic) भगवान शिव, और उनके उग्र स्वरूप भैरव, सभी योगियों और तपस्वियों में महानतम के रूप में प्रसिद्ध हैं। उन्हें अक्सर हिमालय में युगों तक ध्यान करते हुए, दुनिया से बेखबर, गहन तप में लीन दिखाया जाता है। यह गुण उनकी इंद्रियों, मन और बाहरी दुनिया पर उनके पूर्ण नियंत्रण पर जोर देता है। उनका तप सामान्य अर्थों में आत्म-लाभ के लिए नहीं है, बल्कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था के रखरखाव, बुराई के विनाश या सार्वभौमिक भलाई के लिए है।

भैरव में तप का प्रतीकवाद (Symbolism of Tapas in Bhairava) भैरव के लिए, तपस्वी होने का अर्थ है: • आंतरिक अनुशासन (Inner Discipline): उनका भयानक रूप, जबकि बाहरी रूप से उग्र है, परम आत्म-नियंत्रण और आंतरिक संकल्प में निहित है। उनकी शक्ति उनके सिद्ध तप से आती है। • शुद्धि (Purification): अपनी गहन तपस्या के माध्यम से, वे परम शोधक का प्रतीक हैं, जो ब्रह्मांडीय और व्यक्तिगत दोनों तरह की अशुद्धियों को जलाते हैं। • शक्ति का स्रोत (Source of Power): भैरव की अपार शक्ति, जिसमें भय को नष्ट करने और वरदान देने की उनकी क्षमता शामिल है, उनके अनंत तप से उत्पन्न होती है। • वैराग्य (Detachment): उनका तपस्वी स्वभाव सांसारिक सुखों और आसक्तियों से वैराग्य सिखाता है, जो साधकों को मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करता है।

यह नाम कालभैरव को केवल एक भयानक देवता के रूप में ही नहीं, बल्कि गहन आध्यात्मिक अनुशासन, आत्म-नियंत्रण और अथक तपस्या से प्राप्त आध्यात्मिक शक्ति के परम स्रोत के अवतार के रूप में पूजता है।

231. तारकाय

उस महान उद्धारक को नमन, जो अस्तित्व के महासागर के पार आत्माओं को ले जाने वाले नाविक हैं।

विस्तार : तारकाय नाम संस्कृत मूल "तृ" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "पार करना," "बचाना," या "मुक्त करना।" इस मूल से, "तारक" का अर्थ है "उद्धारकर्ता," "मुक्तिदाता," या "जो पार करने में मदद करता है।"

महान उद्धारकर्ता हिंदू दर्शन के संदर्भ में, विशेष रूप से मोक्ष (मुक्ति) के मार्ग में, सबसे महत्वपूर्ण "पार करना" जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) से मुक्ति तक पहुंचना है। इस प्रकार तारक स्वाभाविक रूप से मोक्ष और परम स्वतंत्रता से जुड़ा हुआ है। भगवान शिव, कालभैरव के रूप में अपने भयंकर फिर भी करुणामय रूप में, परम उद्धारकर्ता के रूप में कार्य करते हैं, जो आत्माओं को भौतिक अस्तित्व (भवसागर) के विशाल और अशांत सागर के पार मार्गदर्शन करते हैं।

अस्तित्व का मांझी "अस्तित्व के सागर" का यह रूपक केंद्रीय है। एक कुशल मांझी की तरह, कालभैरव भौतिक संसार के खतरों और भ्रमों को पार करते हैं, अपने भक्तों के लिए सुरक्षित मार्ग सुनिश्चित करते हैं। वह उन्हें अहंकार, कर्म और सांसारिक आसक्तियों की सीमाओं को पार करने में मदद करते हैं जो किसी को पुनर्जन्म के चक्र से बांधते हैं। यह बचाने वाली क्रिया केवल शारीरिक नुकसान को रोकने के बारे में नहीं है, बल्कि मुख्य रूप से आत्मा के आध्यात्मिक कल्याण और परम मुक्ति से संबंधित है।

मुक्ति के प्रदाता तारक "तारक मंत्र" की अवधारणा से भी जुड़ता है, एक पवित्र ध्वनि या वाक्यांश जिसके बारे में माना जाता है कि यह मुक्ति प्रदान करता है। ऐसे मंत्रों का ध्यान या जप करके, भक्त उस दिव्य शक्ति से जुड़ने की कोशिश करते हैं जो उन्हें संसार के बंधन से मुक्त कर सकती है। कालभैरव, तारक के रूप में, स्वयं इस मुक्तिदायक शक्ति का प्रतीक हैं, जिससे उनकी भक्ति मोक्ष का सीधा मार्ग बन जाती है।

भय से परे चूंकि कालभैरव भय को भी नष्ट करते हैं (जैसा कि भैरव नाम में देखा गया है), तारक के रूप में उनकी भूमिका का अर्थ है कि वह प्राणियों को परम भय से बचाते हैं: मृत्यु और पुनर्जन्म का अंतहीन चक्र। वह वह हैं जो सांत्वना और आश्वासन प्रदान करते हैं, अपने भक्तों को निर्भयता और शाश्वत शांति की स्थिति की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

232. ताराय

जो चमकता हुआ तारा है, प्रकाश और मार्गदर्शन का स्रोत है, उन्हें नमन।

विस्तार : ताराय नाम संस्कृत शब्द 'तारा' से लिया गया है, जिसका विशेष रूप से दिव्य अभिव्यक्तियों के संदर्भ में समृद्ध प्रतीकात्मक अर्थ है।

चमकता हुआ तारा शाब्दिक रूप से, तारा का अर्थ "तारा" है। इस अर्थ में, कालभैरव को एक खगोलीय पिंड के रूप में, ब्रह्मांड के विशाल अंधकार में प्रकाश के एक चमकदार बिंदु के रूप में आह्वान किया जाता है। तारे हमेशा दृढ़ता, दूरस्थ सुंदरता और दिव्य व्यवस्था के प्रतीक रहे हैं। एक तारे के रूप में, कालभैरव एक निश्चित बिंदु, अस्तित्व के निरंतर बदलते प्रवाह में एक अचल केंद्र के रूप में कार्य करते हैं।

प्रकाश का एक प्रतीक तारे प्राकृतिक नाविक भी होते हैं। अज्ञानता, पीड़ा और भ्रम के अंधकार में भटकने वाले आध्यात्मिक साधकों के लिए, कालभैरव, तारा के रूप में, एक मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में कार्य करते हैं। वह मार्ग को प्रकाशित करते हैं, संदेह और भ्रम के लाक्षणिक अंधकार को दूर करते हैं, और अपने भक्तों को सत्य और मुक्ति की ओर ले जाते हैं। यह प्रकाश केवल बौद्धिक समझ नहीं है, बल्कि गहन आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि है जो आंतरिक परिदृश्य को बदल देती है।

मार्गदर्शन और सुरक्षा प्रतिकूल समय में, जब कोई खोया हुआ या अभिभूत महसूस करता है, तो तारा हमेशा मौजूद दिव्य मार्गदर्शन का प्रतिनिधित्व करता है। यह पहलू कालभैरव की एक संरक्षक के रूप में भूमिका पर जोर देता है जो अपने भक्तों को जीवन के खतरों से बचाता है, स्पष्टता प्रदान करता है और सही दिशा का खुलासा करता है, ठीक वैसे ही जैसे ध्रुव तारा समुद्र में एक नाविक का मार्गदर्शन करता है।

दिव्य दृष्टि और अंतर्दृष्टि "चमकता हुआ" पहलू दिव्य दृष्टि और ज्ञान का भी अर्थ है। कालभैरव, तारा के रूप में, विवेकी ज्ञान (विवेक) और पारलौकिक ज्ञान (प्रज्ञा) का प्रकाश प्रदान करते हैं, जिससे व्यक्ति अपनी सतही दिखावट से परे वास्तविकता को समझने में सक्षम होता है।

233. तीव्राय

जो अत्यंत तीव्र, प्रचंड और तीक्ष्ण हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : तीव्र (Tīvra) नाम संस्कृत से लिया गया है और यह भगवान कालभैरव के एक विशिष्ट और शक्तिशाली गुण का वर्णन करता है।

तीव्र और शक्तिशाली तीव्र का शाब्दिक अर्थ है "तीव्र", "तेज", "प्रखर", "हिंसक", "कठोर" या "प्रबल"। जब इसे कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह उनकी परम और अत्यधिक शक्ति को दर्शाता है। यह तीव्रता केवल शारीरिक नहीं है बल्कि उनकी आध्यात्मिक और ब्रह्मांडीय शक्ति तक

फैली हुई है। वह एक ऐसी शक्ति के रूप में प्रकट होते हैं जो अडिग, तत्काल और गहरा प्रभावशाली है। वह प्रचंड दृढ़ संकल्प और एक अदम्य इच्छाशक्ति के प्रतीक हैं।

प्रचंड और तीव्र तीव्र का "प्रचंड" पहलू उनके अनियंत्रित और दुर्जेय स्वभाव को इंगित करता है। यह एक मापी हुई या क्रमिक शक्ति नहीं है, बल्कि ऐसी शक्ति है जो नकारात्मकता को शांत करने, बाधाओं को नष्ट करने या त्वरित न्याय प्रदान करने के लिए अत्यधिक तेज़ी और निर्णायकता के साथ कार्य कर सकती है। यह तीव्रता उन लोगों के लिए भयावह बनाती है जो धर्म का विरोध करते हैं या हानिकारक कार्यों में संलग्न होते हैं।

तीक्ष्ण बुद्धि और विवेक "तीक्ष्ण" उनकी बुद्धि की भेदी स्पष्टता और उनके अचूक विवेक की शक्ति को भी संदर्भित करता है। वह शुद्ध चेतना की तीक्ष्णता से माया (Māyā) के भ्रम को काट सकते हैं, जिससे परम सत्य प्रकट होता है। भक्तों के लिए, इसका अर्थ है कि वह मानसिक धुंध, अज्ञान और आध्यात्मिक भ्रम को तेज़ी से दूर कर सकते हैं, जिससे गहन अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है।

परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक तीव्र के रूप में, कालभैरव तीव्र और अक्सर गहन परिवर्तन के लिए एक शक्तिशाली उत्प्रेरक के रूप में कार्य करते हैं। उनकी ऊर्जा भारी हो सकती है, जो एक आध्यात्मिक साधक को आंतरिक शुद्धता और मुक्ति प्राप्त करने के लिए immense चुनौतियों से गुजारती है। यह तीव्रता सुनिश्चित करती है कि आध्यात्मिक प्रक्रियाएं, जब उनके द्वारा निर्देशित होती हैं, तो शक्तिशाली और प्रभावी होती हैं, जिससे त्वरित परिणाम मिलते हैं, हालांकि उनमें महत्वपूर्ण आंतरिक संकल्प की आवश्यकता हो सकती है।

234. स्वात्मानिसंस्थिताय

जो अपने वास्तविक स्वरूप में दृढ़ता से और शाश्वत रूप से स्थापित हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : स्वात्मनि संस्थितय नाम कालभैरव का एक गहन वर्णन है, जो सर्वोच्च अद्वैतवादी दार्शनिक अवधारणाओं में निहित है, जिसका अर्थ है "वह जो आत्मा में दृढ़ता से स्थापित है," जो उनके अपने आवश्यक स्वरूप को संदर्भित करता है।

स्वात्मन (स्व + आत्मन): • स्व: इस संस्कृत उपसर्ग का अर्थ है "अपना," "स्वयं," या "जन्मजात।" • आत्मन: यह शब्द व्यक्तिगत आत्मा, सच्चा स्वरूप, या परम आत्मा को दर्शाता है। दिव्य संदर्भ में, यह परम, अपरिवर्तनीय और शाश्वत चेतना को संदर्भित करता है। इस प्रकार, स्वात्मन सर्वोच्च सत्ता के अपने अंतर्निहित, असीमित और पूर्ण स्वरूप को दर्शाता है।

संस्थित (सम् + स्थित): • सम्: यह उपसर्ग "एक साथ," "पूरी तरह से," या "दृढ़ता से" इंगित करता है। • स्थित: इसका अर्थ है "स्थित," "स्थापित," "खड़ा हुआ," या "निश्चित।" इसलिए, संस्थित का अर्थ दृढ़ता से, पूरी तरह से और अचल रूप से स्थापित होना है।

आत्म-साक्षात्कार और आत्मनिर्भरता की स्थिति जब संयुक्त किया जाता है, तो स्वात्मनि संस्थितय पूर्ण आत्म-अभिमान की स्थिति का वर्णन करता है। यह दर्शाता है कि कालभैरव अपनी शुद्ध, असीमित चेतना में पूर्ण और शाश्वत रूप से निहित हैं। वे अपने अस्तित्व, शक्ति या पहचान के लिए किसी बाहरी इकाई या परिस्थिति पर निर्भर नहीं हैं। उनकी वास्तविकता आंतरिक और स्वयंप्रकाशित है।

दार्शनिक महत्व यह नाम वेदांत में ब्रह्म की अवधारणा के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है, जो स्वयंभू (स्व-अस्तित्व) और स्वप्रकाश (स्व-प्रकाशित) है। कालभैरव के लिए, इसका अर्थ है: • आंतरिक पूर्णता: वे परम पूर्णता को मूर्त रूप देते हैं, जो केवल उनके अपने स्वभाव से प्राप्त होती है, बिना किसी बाहरी वृद्धि या समर्थन के। • अचल प्रेरक: वे अस्तित्व का अंतिम आधार हैं, सभी परिवर्तनों के बीच अपरिवर्तनीय वास्तविकता हैं। जबकि वे सृष्टि, संरक्षण और विनाश का संचालन करते हैं, वे

स्वयं अछूते रहते हैं और अपने अस्तित्व में दृढ़ता से स्थापित रहते हैं। • सभी का स्रोत: चूंकि वे अपने दिव्य स्वरूप में पूरी तरह से स्थापित हैं, वे सभी प्रकट अस्तित्व के लिए स्वयं स्रोत और आधार बन जाते हैं, फिर भी अलग और पारलौकिक रहते हैं।

भक्त के लिए, कालभैरव को स्वात्मनि संस्थितय के रूप में पहचानना आध्यात्मिक अभ्यास के अंतिम लक्ष्य पर एक गहन ध्यान के रूप में कार्य करता है: अपने स्वयं के सच्चे स्वरूप (आत्मन) को परम स्वरूप (ब्रह्म) के समान महसूस करना, जिससे पूर्ण आंतरिक शांति और मुक्ति की स्थिति प्राप्त होती है। यह साधक को परम सत्य के लिए भीतर देखने के लिए प्रेरित करता है, क्योंकि कालभैरव स्वयं उस सर्वोच्च अस्तित्व की स्थिति का उदाहरण देते हैं।

235. तपनाय

जो अपनी ऊष्मा से प्रज्वलित होते हैं, जिससे सभी वस्तुएँ गर्म हो जाती हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : तपनाय नाम संस्कृत मूल "तप" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "गर्म करना," "जलाना," "चमकना," या "तपस्या या प्रायश्चित करना।" यह कालभैरव की शक्ति के एक गहन पहलू को दर्शाता है, जो एक विनाशकारी शक्ति और एक शुद्धिकर्ता दोनों के रूप में उनकी दोहरी प्रकृति को दर्शाता है।

प्रज्वलित ताप "जो ताप से प्रज्वलित होते हैं" के रूप में, कालभैरव ब्रह्मांडीय अग्नि के रूप में प्रकट होते हैं, एक तीव्र ऊष्मा जो पूरे अस्तित्व में व्याप्त है। यह ताप केवल एक शारीरिक अनुभूति नहीं है, बल्कि एक आध्यात्मिक और परिवर्तनकारी ऊर्जा है।

• ब्रह्मांडीय अग्नि: यह विनाश की अग्नि (प्रलय अग्नि) को संदर्भित करता है जो एक ब्रह्मांडीय चक्र के अंत में सभी सृष्टि को भस्म कर देती है। जैसे अग्नि सब कुछ राख में बदल देती है, वैसे ही भैरव, तप के रूप में, सभी रूपों को उनके आदिम सार में वापस घोल देते हैं। यह पहलू ब्रह्मांड के चक्रीय नवीनीकरण को सुनिश्चित करता है। • अस्तित्व की तीव्रता: ताप उस तीव्र ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है जो सभी जीवन और घटनाओं को बनाए रखती है और चलाती है। यह ब्रह्मांड की गतिशीलता ही है, सृष्टि, संरक्षण और विघटन का निरंतर प्रवाह।

शुद्धिकर्ता और तपस्या "तप" शब्द से "तपस" भी उत्पन्न होता है, जिसका अर्थ आध्यात्मिक तपस्या या प्रायश्चित है। इस संदर्भ में, तपनाय भैरव की भूमिका को इंगित करता है:

• शुद्धिकरण: प्रज्वलित ताप एक शुद्धिकर्ता कारक है जो शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों अशुद्धियों को जला देता है। भक्त के लिए, उनकी प्रचंड ऊर्जा नकारात्मक कर्म, अज्ञान (अविद्या), अहंकार (अहंकार), और मुक्ति के सभी बाधाओं को भस्म कर सकती है। • तपस्या और अनुशासन: वे आध्यात्मिक उन्नति के लिए आवश्यक कठोर अनुशासन और दृढ़ एकाग्रता का प्रतीक हैं। तपनाय की पूजा आंतरिक अस्तित्व को "गर्म" करने वाली आध्यात्मिक प्रथाओं को करने और सहन करने की शक्ति और दृढ़ संकल्प का आह्वान करती है, जिससे आत्म-साक्षात्कार होता है।

जीवन और प्रकाश के जनक विरोधाभासी रूप से, ताप जीवन और प्रकाश के लिए भी आवश्यक है। जैसे सूर्य का ताप पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखता है, वैसे ही भैरव की अग्नि ऊर्जा सभी जीवन शक्ति और प्रकाश का मूलभूत स्रोत है। वे परम दीप्ति हैं जो बाहरी और आंतरिक दोनों अंधेरे को दूर करती हैं। उनका "गर्म" स्वभाव केवल विनाश का ही नहीं, बल्कि उस जीवंत, जीवनदायी ऊर्जा का भी प्रतीक है जो ब्रह्मांड में लगातार प्रकट होती है।

236. तापनाय

सभी अशुद्धियों और पापों को भस्म करने वाले को नमन।

विस्तार : 'तापनाय' नाम संस्कृत मूल 'तप' से लिया गया है, जिसका अर्थ है गर्म करना, जलाना या झुलसाना। आध्यात्मिक और दार्शनिक संदर्भ में, यह 'जलाना' केवल विनाशकारी नहीं है, बल्कि गहन रूप से परिवर्तनकारी और शुद्ध करने वाला है, जो तपस्या (तपस्वी गर्मी) के समान है जो अभ्यासकर्ता को शुद्ध करती है।

सभी अशुद्धियों और पापों को भस्म करना कालभैरव का यह पहलू नकारात्मकता के सभी रूपों, आंतरिक और बाहरी दोनों, को भस्म करने की उनकी प्रचंड शक्ति को दर्शाता है। इन अशुद्धियों (मल) में वे तीन मुख्य बंधन (पाश) शामिल हैं जो व्यक्तिगत आत्मा (पशु) को पुनर्जन्म के चक्र से बांधते हैं: • अविद्या (अज्ञान): आध्यात्मिक ज्ञान का मूलभूत अभाव। • कर्म: संचित कर्म और उनके परिणाम। • माया: वह भ्रम जो वास्तविकता के वास्तविक स्वरूप को ढकता है। इनको 'भस्म' करके, कालभैरव चेतना को शुद्ध करने में मदद करते हैं, भक्त को इन सीमाओं से मुक्त करते हैं।

ज्ञान की अग्नि (ज्ञानाग्नि) तापन एक आध्यात्मिक अग्नि—ज्ञान की अग्नि (ज्ञानाग्नि) से भी संबंधित है। जैसे अग्नि सब कुछ राख कर देती है, वैसे ही दिव्य ज्ञान की अग्नि अज्ञान, अहंकार और सभी संचित नकारात्मक कर्मों को भस्म कर देती है। यह "जलाना" गहन आध्यात्मिक अभ्यास और अंतर्दृष्टि के लिए एक रूपक है जो केवल स्वयं के शुद्ध सार को पीछे छोड़ देता है।

परिवर्तनकारी शक्ति उनका तापन पहलू केवल विनाश के बारे में नहीं है; यह मौलिक परिवर्तन के बारे में है। यह वह तीव्र गर्मी है जो मैल को पिघला देती है, शुद्ध धातु को पीछे छोड़ देती है। भक्त के लिए, इसका अर्थ है एक गहन आध्यात्मिक शुद्धि, जिससे व्यक्ति को नवीनीकृत होकर अपने दिव्य स्वरूप से जुड़ने का अवसर मिलता है। वह सुनिश्चित करते हैं कि जो कुछ भी अशुभ है उसे हटा दिया जाए, जिससे आध्यात्मिक उन्नति और मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो।

237. तुष्टाय

जो निरंतर संतुष्ट, प्रसन्न और आनंदित रहते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : तुष्टाय (तुष्ट) नाम संस्कृत धातु 'तुष्' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "प्रसन्न होना," "संतुष्ट होना," "तृप्त होना," या "शांत होना।"

शाश्वत संतुष्टि और तृप्ति यह नाम कालभैरव को पूर्ण और शुद्ध संतुष्टि के अवतार के रूप में दर्शाता है। यह कोई क्षणिक सुख या बाहरी परिस्थितियों पर निर्भर आनंद नहीं है, बल्कि अस्तित्व की एक आंतरिक, शाश्वत अवस्था है। वे स्वाभाविक रूप से पूर्ण, आत्म-संतुष्ट और किसी भी इच्छा या आवश्यकता से मुक्त हैं जो इस आंतरिक शांति को भंग कर सकती है। यह सुख और दुख के सांसारिक उतार-चढ़ाव से परे की स्थिति, आनंद (परमानंद) की स्थिति का सुझाव देता है।

इच्छाओं से परे उनकी लौकिक शक्ति और भूमिका वाले देवता के लिए, "तुष्ट" होने का अर्थ है कि वे परम आध्यात्मिक पूर्णता की स्थिति में मौजूद हैं, जहाँ सभी इच्छाओं को पूरी तरह से पार कर लिया गया है। उन्हें किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वे हर चीज़ के स्रोत और पराकाष्ठा हैं। यह संतुष्टि उनकी पूर्ण संप्रभुता और आत्मनिर्भरता का प्रतिबिंब है।

परोपकारी स्वभाव जबकि भैरव अक्सर भयंकर दिखाई देते हैं, तुष्ट नाम एक गहन परोपकारी पहलू को प्रकट करता है। जब प्रसन्न या संतुष्ट होते हैं, तो उनकी दुर्जेय शक्ति को भक्तों की सुरक्षा, आशीर्वाद और बाधाओं को दूर करने के लिए उपयोग किया जा सकता है। एक संतुष्ट देवता अपने उपासकों की सद्गुणी आकांक्षाओं को अनुग्रह प्रदान करने और पूरा करने की अधिक संभावना रखते हैं।

अराजकता के बीच शांति कालभैरव की समय और विनाश के स्वामी की भूमिका के संदर्भ में, उनकी संतुष्टि सबसे विनाशकारी लौकिक घटनाओं के बीच भी एक अटूट शांति को दर्शाती है। वे अपने विनाशकारी कार्य को क्रोध या द्वेष से नहीं, बल्कि सर्वोच्च संतुलन और पूर्णता के स्थान से करते हैं, नवीनीकरण के लिए विनाश की आवश्यकता को समझते हुए। यह सिखाता है कि दुर्जेय कार्यों में लगे होने पर भी सच्ची शांति बनाए रखी जा सकती है।

238. श्वानयोनये

श्वान (कुत्ते) की उत्पत्ति करने वाले, अथवा जिनके सेवक श्वान हैं, उनको नमन।

विस्तार : नाम श्वानयोनि, श्वान (कुत्ता) और योनि (उत्पत्ति, स्रोत, या गर्भ; कभी-कभी अनुयायी या भक्त का अर्थ भी) का एक यौगिक है। कालभैरव का यह विशेषण गहन प्रतीकात्मक है और हिंदू तथा तांत्रिक परंपराओं के भीतर अर्थ की कई परतें रखता है।

कुत्ते का मूल एक शाब्दिक अर्थ में, श्वानयोनि का अर्थ "कुत्ते का मूल" हो सकता है। यह कालभैरव के आदिम स्वरूप से संबंधित है, जो सभी सृष्टि का स्रोत है, जिसमें पशु जगत भी शामिल है। यह उन्हें सभी प्रकार के जीवन के परम जनक के रूप में प्रस्तुत करता है। हालाँकि, यह व्याख्या प्रतीकात्मक व्याख्या की तुलना में कम सामान्य है।

कुत्तों द्वारा सेवित (स्वर्ग का शिकारी कुत्ता) श्वानयोनि की सबसे प्रमुख समझ यह है कि कालभैरव कुत्तों के साथ होते हैं या उनकी सेवा कुत्तों द्वारा की जाती है। इस संदर्भ में कुत्ते केवल पालतू जानवर नहीं हैं, बल्कि शक्तिशाली प्रतीकात्मक प्राणी हैं।

भैरव के साथ कुत्तों का प्रतीकवाद: • भयंकरता और सतर्कता: कुत्ते अपने सुरक्षात्मक स्वभाव, वफादारी और भयंकर रखवाली की प्रवृत्ति के लिए जाने जाते हैं। उन्हें अक्सर काले कुत्तों के रूप में चित्रित किया जाता है, जो भैरव के भयंकर, गहरे और रहस्यमय पहलुओं को दर्शाते हैं। ये शिकारी कुत्ते पवित्र स्थानों की रक्षा करते हैं और नकारात्मक शक्तियों के खिलाफ प्रहरी होते हैं, जो भैरव की एक संरक्षक (क्षेत्रपाल) के रूप में भूमिका को प्रतिध्वनित करते हैं जो पवित्र स्थानों और भक्तों से बुराइयों को दूर करते हैं। • बिना शर्त वफादारी और भक्ति: कुत्ते बिना शर्त वफादारी और भक्ति का प्रतीक हैं। भैरव के साथ उनकी उपस्थिति आदर्श भक्त को इंगित कर सकती है जो भगवान की सेवा अटूट समर्पण के साथ करता है, भले ही उनके भयंकर और अपरंपरागत रूपों में भी। • पाताल लोक/सीमांत स्थानों से संबंध: विभिन्न पौराणिक कथाओं में कुत्तों को अक्सर सीमांत स्थानों, जंगल, और कभी-कभी मृत्यु और पाताल लोक से जोड़ा जाता है। भैरव का श्मशान (श्मशान) से संबंध और आत्माओं के स्वामी (भूतनाथ) के रूप में उनकी भूमिका को देखते हुए, कुत्ते उनके अनदेखे और पारलौकिक क्षेत्र पर उनके प्रभुत्व के इस पहलू को सुदृढ़ करते हैं। • पवित्रता और अपवित्रता (व्यवहारिक बनाम पारमार्थिक): पारंपरिक हिंदू समाज में, कुत्तों को अक्सर अपवित्र माना जाता है। हालाँकि, भैरव के साथ उनका जुड़ाव इन सामाजिक संरचनाओं को पार करता है, जो तांत्रिक लोकाचार के साथ संरेखित होता है जहाँ पवित्रता और अपवित्रता की पारंपरिक धारणाओं को अक्सर एक उच्च सत्य को प्राप्त करने के लिए उलट या पार किया जाता है। यह भैरव के द्वंद्वों और सामाजिक कंडीशनिंग से परे होने के स्वभाव को उजागर करता है। कुत्ता, यहाँ, एक गहरी आध्यात्मिक समझ तक पहुँचने के लिए बाहरी रूप से "अपवित्र" को गले लगाने की इच्छा का प्रतीक है। • गति और भयंकरता: कुत्ते तेज और भयंकर होते हैं, जो भैरव की अपने भक्तों की रक्षा करने और अपराधियों को दंडित करने के लिए जल्दी और शक्तिशाली रूप से कार्य करने की क्षमता को दर्शाते हैं।

इस प्रकार, श्वानयोनि कालभैरव के वास्तविकता के उन पहलुओं पर प्रभुत्व को दर्शाती है जो भयंकर और सुरक्षात्मक दोनों हैं, उनके अपरंपरागत को गले लगाने को, और परम संरक्षक और दंडक के रूप में उनकी भूमिका को, वफादार और शक्तिशाली साथियों द्वारा उपस्थित होकर जो इन्हीं गुणों को मूर्त रूप देते हैं।

239. अतन्द्रिताय

सदा सतर्क, अथक और शाश्वत रूप से सावधान रहने वाले को नमन।

विस्तार : अतन्द्रिताय नाम संस्कृत शब्द अतन्द्रित से लिया गया है, जो नकारात्मक उपसर्ग "अ-" से बना है जिसका अर्थ है "नहीं," और "तन्द्रित" का अर्थ है "थका हुआ," "क्लांत," "सुस्त," या "लापरवाह।" इसलिए, अतन्द्रित का अर्थ है "थका हुआ नहीं," "सदा सतर्क," "अथक," "परिश्रमी," या "शाश्वत रूप से चौकस।"

• सदा सतर्क और निरंतर गतिविधि (Ever-Vigilant and Unceasing Activity) यह विशेषण कालभैरव की जागृति और गतिविधि की शाश्वत स्थिति का वर्णन करता है। वह अपने ब्रह्मांडीय कर्तव्यों में कभी असावधान, सुस्त या लापरवाह नहीं होते। यह ब्रह्मांडीय नियम के निरंतर संचालन और सृष्टि, संरक्षण और विनाश की निरंतर प्रक्रिया का प्रतीक है जो ब्रह्मांड में हमेशा सक्रिय रहती है। ऐसा कोई क्षण नहीं होता जब ब्रह्मांडीय व्यवस्था को असुरक्षित छोड़ दिया जाए या जब समय की प्रक्रियाएं अपनी अथक चाल बंद कर दें।

• धर्म के अथक संरक्षक (Tireless Guardian of Dharma) एक संरक्षक देवता के रूप में, विशेष रूप से क्षेत्रपाल (पवित्र स्थान के संरक्षक) के रूप में, अतन्द्रित धर्म (धार्मिकता) और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के उनके अटूट संरक्षण को दर्शाता है। वह सभी कार्यों का सावधानीपूर्वक अवलोकन करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि न्याय किया जाए और नैतिकता और आध्यात्मिक कानून की सीमाओं को बनाए रखा जाए। उनकी अथकता यह सुनिश्चित करती है कि कोई भी उल्लंघन अनसुना न हो और कोई भी साधक बिना मार्गदर्शन या सुरक्षा के न रहे।

• शाश्वत चेतना (Eternal Consciousness) दार्शनिक रूप से, अतन्द्रित कालभैरव के पूर्ण ज्ञान (Pūrṇa Jñāna) और अनादि अनंत चेतना (Anādi Ananta Chetana) के रूप में उनकी प्रकृति को भी इंगित करता है। वह मानवीय थकान या मानसिक जड़ता की सीमाओं के अधीन नहीं हैं। उनकी चेतना हमेशा उपस्थित, सर्वव्यापी और शाश्वत रूप से सक्रिय है, बिना रुके अस्तित्व के सभी पहलुओं को प्रकाशित करती है। इसका तात्पर्य यह है कि ब्रह्मांड को नियंत्रित करने वाली दिव्य बुद्धि लगातार संलग्न है, वास्तविकता के किसी भी पहलू को अनुपस्थित नहीं छोड़ती है।

• आध्यात्मिक सतर्कता का प्रतीक (Symbol of Spiritual Alertness) आध्यात्मिक साधक के लिए, कालभैरव को अतन्द्रित के रूप में आह्वान करना निरंतर आध्यात्मिक सतर्कता विकसित करने के लिए एक अनुस्मारक और प्रेरणा के रूप में कार्य करता है। यह शिष्यों को अपनी आंतरिक स्थिति के प्रति सतर्क रहने, अपनी आध्यात्मिक प्रथाओं में मेहनती होने और आत्म-साक्षात्कार की अपनी खोज में लापरवाही से बचने के लिए प्रोत्साहित करता है, ठीक वैसे ही जैसे कालभैरव स्वयं शाश्वत रूप से चौकस हैं।

240. उत्तरांगाय

जिनके अंग और रूप अत्यंत श्रेष्ठ और सर्वोच्च हैं, उनको नमन।

विस्तार : उत्तमाङ्गाय नाम उत्तम और अंग का एक यौगिक है, जिसका सीधा अर्थ है "जिसके सबसे उत्कृष्ट अंग हैं", जो एक सर्वोच्च स्वरूप या शरीर को संदर्भित करता है।

• उत्तम (Uttama): इस शब्द का अर्थ है "उच्चतम", "सर्वश्रेष्ठ", "सर्वोच्च", "उत्कृष्ट" या "अग्रणी"। • अंग (Aṅga): इसका अर्थ है "अंग", "शरीर", "भाग" या "स्वरूप"।

सर्वोच्च स्वरूप (The Supreme Form) यह नाम कालभैरव को ऐसे शरीर या स्वरूप वाले के रूप में वर्णित करता है जो अपनी उत्कृष्टता और पूर्णता में सभी तुलनाओं से परे है। इसका अर्थ केवल मानवीय अर्थों में शारीरिक सुंदरता नहीं है, बल्कि एक ऐसा स्वरूप है जो उनके दिव्य गुणों को पूरी तरह से समाहित करता है। यह "उत्कृष्टता" ब्रह्मांडीय व्यवस्था की समग्रता का प्रतिनिधित्व करने की उनकी क्षमता, उनकी असीम शक्ति और उनकी बेदाग पवित्रता को संदर्भित करती है। उनका स्वरूप पूर्ण है क्योंकि यह अपने भयानक और सुरक्षात्मक दिव्य कार्य को पूरी तरह से पूरा करता है।

आध्यात्मिक पूर्णता (Metaphysical Perfection) गहरे दार्शनिक अर्थ में, "अंग" देवता के विभिन्न अभिव्यक्तियों, शक्तियों या गुणों को भी संदर्भित कर सकता है। इसलिए, उत्तमाङ्गाय का अर्थ यह भी हो सकता है कि शिव के अस्तित्व का हर पहलू (हर "अंग"), उनकी हर शक्ति, उनकी चेतना का हर पहलू सर्वोच्च, अद्वितीय और त्रुटिहीन है। उनका क्रोध, उनकी करुणा, उनकी विनाशकारी ऊर्जा, उनकी रचनात्मक क्षमता—सभी उच्चतम कोटि के हैं।

दिव्य अखंडता का प्रतीक (Symbol of Divine Integrity) यह नाम कालभैरव के दिव्य स्वरूप की पूर्णता और अखंडता पर जोर देता है। वह केवल शक्तिशाली नहीं हैं; वह शक्तिशाली रूप से पूर्ण हैं। वह एक पूर्ण, पूरी तरह से एकीकृत और अत्यंत सक्षम दिव्य उपस्थिति के आदर्श का प्रतीक हैं, जिसमें कोई कमी या अपूर्णता नहीं है। यह पूर्णता समय के स्वामी, संरक्षक और मुक्तिदाता के रूप में उनकी भूमिका में उनके पूर्ण अधिकार और प्रभावशीलता को सुनिश्चित करती है।

241. तिमिरघ्ने

सभी अंधकार और अज्ञान का नाश करने वाले को नमन।

विस्तार : तिमिराघ्ने नाम भगवान कालभैरव की अस्पष्टता के गहरे रूपों को दूर करने में उनकी भूमिका का एक गहन वर्णन है। यह दो संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: तिमिर और घ्न।

तिमिर: इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है "अंधेरा," "अंधकार," या "अस्पष्टता।" आध्यात्मिक और दार्शनिक संदर्भ में, तिमिर भौतिक अंधकार से परे जाकर निम्नलिखित का प्रतिनिधित्व करता है: • अज्ञान (अविद्या): सच्चे ज्ञान, विशेषकर आत्म-ज्ञान का अभाव, जिसे हिंदू दर्शन में दुख का मूल कारण माना जाता है। • मोह (भ्रम): मानसिक भ्रम, माया, और क्षणभंगुर संसार से आसक्ति। • अज्ञानता: विशेष रूप से आध्यात्मिक मामलों में, अनभिज्ञ या अशिक्षित होने की स्थिति। • पाप/ बुराइयाँ: वे अंधेरी प्रवृत्तियाँ और कार्य जो आत्मा को दूषित करते हैं।

घ्न: इस प्रत्यय का अर्थ है "संहार करने वाला," "नाश करने वाला," "पराजित करने वाला," या "दूर करने वाला।"

अज्ञान का संहारक तिमिराघ्ने के रूप में, कालभैरव आध्यात्मिक अंधकार के परम नाशक हैं। वह वह प्रकाश हैं जो अज्ञान (अविद्या) के पर्दे को भेदता है जो प्राणियों को जन्म और मृत्यु (संसार) के चक्र में बांधे रखता है। यह उस गहन समझ और बोध को संदर्भित करता है जो एक भक्त पर तब होता है जब कालभैरव की कृपा मौजूद होती है। वह केवल अंधकार को कम नहीं करते; वह उसे पूरी तरह से नष्ट कर देते हैं।

भ्रम और बाधाओं को दूर करने वाले वह उन भ्रमों और आसक्तियों को मिटाते हैं जो आध्यात्मिक प्रगति को रोकते हैं। उनका भयंकर रूप केवल भय उत्पन्न करने के लिए नहीं है, बल्कि साधक के लिए वास्तविकता के सच्चे स्वरूप को ढँकने वाली आंतरिक और बाहरी बाधाओं का सामना करने

और उन्हें ध्वस्त करने के लिए है। वह वह हैं जो मानसिक कोहरे और भ्रम को दूर करते हैं।

ज्ञान का स्रोत तिमिर को नष्ट करके, वह ज्ञान (ज्ञान) और बुद्धि का प्रकाश लाते हैं। यह ज्ञान मुक्ति (मोक्ष) की ओर ले जाता है, व्यक्तिगत आत्मा को माया (भ्रम) के बंधनों से मुक्त करता है। तिमिराघ्ने की भक्ति स्पष्टता, अंतर्दृष्टि और किसी की आध्यात्मिक दृष्टि को बाधित करने वाली सभी चीजों को दूर करने की प्रार्थना है।

संक्षेप में, तिमिराघ्ने कालभैरव की परोपकारी फिर भी भयंकर शक्ति को उजागर करता है जो मानसिक और आध्यात्मिक अंधकार के सभी रूपों को पूरी तरह से नष्ट करके परम सत्य को प्रकट करती है।

242. व्रतिने

जो अपनी पवित्र प्रतिज्ञाओं और अनुष्ठानों के प्रति पूर्णतः समर्पित हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : व्रतिने (Vrātine) नाम संस्कृत शब्द 'व्रत' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "प्रतिज्ञा," "पवित्र अनुष्ठान," "धार्मिक संस्कार," या "अनुशासित अभ्यास।" जब यह कालाभैरव पर लागू होता है, तो यह विशिष्ट दिव्य अनुष्ठानों और ब्रह्मांडीय कर्तव्यों के प्रति उनकी पूर्ण और अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

ब्रह्मांडीय नियम के प्रति अटूट समर्पण यह नाम विशेष रूप से ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) के कठोर संरक्षक के रूप में कालाभैरव की भूमिका पर प्रकाश डालता है। उनके "व्रत" केवल मानवीय वादे नहीं हैं, बल्कि सृष्टि, पालन और संहार को नियंत्रित करने वाले अचूक नियम हैं। वे इन नियमों के परम प्रवर्तक हैं, यह सुनिश्चित करते हैं कि ब्रह्मांड में सब कुछ अपने निर्धारित मार्ग का पालन करे और अपने नियत चक्र का अनुभव करे।

अनुशासन और तपस्या का प्रतीक व्रतिने के रूप में, कालाभैरव सर्वोच्च तपस्वी अनुशासन और दृढ़ता का प्रतीक हैं। उनका अस्तित्व ही परम व्रत – ब्रह्मांडीय लय को बनाए रखने – का एक गहरा अनुष्ठान है। यह पहलू भक्तों को अपनी मुक्ति के लिए आत्म-अनुशासन, तपस्या और अपनी आध्यात्मिक प्रतिबद्धताओं (व्रतों) का पालन करने के लिए प्रेरित करता है।

समय (काल) का संहारक परम व्रत के रूप में उनके प्राथमिक "व्रतों" में से एक काल (समय) और सभी भ्रमों के संहारक के रूप में उनकी भूमिका है। वे सभी चीजों को उनके अंतिम अंत तक लाने, उन्हें आदिम अवस्था में विलीन करने के "व्रत" में शाश्वत रूप से लगे हुए हैं। यह दुर्भावना से नहीं, बल्कि नवीनीकरण और अतिक्रमण की ब्रह्मांडीय आवश्यकता से होता है।

पवित्र अनुष्ठान और संरक्षण व्रतिने होने के नाते, कालाभैरव उन लोगों के संरक्षण से भी परोक्ष रूप से जुड़े हुए हैं जो पवित्र व्रत करते हैं। वे सुनिश्चित करते हैं कि जो लोग ईमानदारी से अपनी आध्यात्मिक साधनाओं का पालन करते हैं, उनकी रक्षा और मार्गदर्शन किया जाए। वे आध्यात्मिक अभ्यास में ईमानदारी और कठोरता की मांग करते हैं, जो उनकी अपनी अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

243. वेदाय

जो पवित्र वेदों और समस्त दिव्य ज्ञान के साक्षात स्वरूप हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : नाम वेदाय भगवान शिव को वेदों के अवतार के रूप में संदर्भित करता है, जो हिंदू धर्म की नींव बनाने वाले पवित्र ग्रंथ हैं। यह नाम शिव के दिव्य ज्ञान, बुद्धि और परम सत्य के साथ गहरे संबंध को उजागर करता है।

ज्ञान का स्वरूप वेद शब्द का शाब्दिक अर्थ "ज्ञान" या "बुद्धि" है। जब शिव को वेदाय कहा जाता है, तो यह दर्शाता है कि वे केवल वेदों के रचयिता या व्याख्याता नहीं हैं, बल्कि उनका सार, उनका जीवित स्वरूप हैं। वे परम स्रोत हैं जहाँ से सभी शास्त्रीय ज्ञान उत्पन्न होता है और परम लक्ष्य हैं

जिसकी ओर सभी वैदिक अध्ययन अभिलाषा करते हैं। वे अपने शुद्धतम और सबसे पूर्ण रूप में स्वयं ज्ञान हैं।

धर्म का स्रोत वेदों में धर्म (धार्मिक आचरण), ब्रह्मांड विज्ञान, अनुष्ठान और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के शाश्वत नियम शामिल हैं। वेदों को धारण करके, शिव ब्रह्मांडीय व्यवस्था और धार्मिकता का आधार बन जाते हैं। वे उन शाश्वत सिद्धांतों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो ब्रह्मांड को नियंत्रित करते हैं और आध्यात्मिक मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

परात्परता और अंतर्व्यापकता यह नाम शिव के परात्पर (transcendent) और अंतर्व्यापक (immanent) दोनों स्वरूपों को भी रेखांकित करता है। वे परात्पर सत्य हैं जिसे वेद भजनों और दार्शनिक सूक्तियों के माध्यम से वर्णित करने का प्रयास करते हैं, फिर भी वे अंतर्व्यापक भी हैं, जो प्रत्येक अक्षर और वैदिक परंपराओं से व्युत्पन्न प्रत्येक आध्यात्मिक अभ्यास के भीतर मौजूद हैं। शिव को वेदाय के रूप में पूजना इस बात की स्वीकृति है कि आध्यात्मिक समझ और परम प्राप्ति सीधे उन्हीं के द्वारा प्रदान किए गए उपहार हैं।

रहस्यमय संबंध गहरे रहस्यमय अर्थ में, शिव आदिम ध्वनि (ॐ) हैं जिससे वेदों का उद्भव माना जाता है। इसलिए, इस नाम के माध्यम से, भगवान शिव को परम गुरु, सभी दिव्य ज्ञान के प्रधान शिक्षक, और वैदिक ग्रंथों द्वारा सूचित सभी आध्यात्मिक खोजों के अंतिम गंतव्य के रूप में मान्यता दी जाती है।

244. तनूनपाते

जो 'स्वयं के पुत्र' हैं, स्वयं उत्पन्न और स्वयं निर्मित हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : तनूनपाते नाम ऋग्वेद से उत्पन्न एक गहन और प्राचीन वैदिक शब्द है, जो मुख्य रूप से अग्नि, अग्नि देवता से जुड़ा है, और बाद में शिव जैसे अन्य सर्वोच्च देवताओं तक विस्तारित हुआ।

व्युत्पत्ति और प्राथमिक अर्थ "तनूनपाते" तनू (शरीर, स्वयं, सार) और नपात (पुत्र, वंशज, संतान, पोता, या जो गिरता नहीं) से व्युत्पन्न है। शाब्दिक रूप से, इसका अर्थ है "स्वयं का पुत्र" या "जो अपने शरीर/सार से नहीं गिरता"।

स्वयंभू और स्वयं-निर्मित इस नाम का प्राथमिक महत्व यह है कि यह उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जो स्वयंभू, स्वयं-निर्मित और अपनी उत्पत्ति में पूरी तरह से स्वतंत्र है। अन्य प्राणियों के विपरीत जो माता-पिता से पैदा होते हैं, तनूनपाते का कोई जनक नहीं है; वह अपने स्वयं के सार से उत्पन्न होता है और स्वयं अपना कारण है। यह पूर्ण स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता और परम अधिकार को दर्शाता है। कालभैरव जैसे सर्वोच्च देवता के संदर्भ में, यह इस बात पर जोर देता है कि वह निर्मित नहीं है बल्कि शाश्वत रूप से विद्यमान है, वह आदिम स्रोत जिससे समस्त सृष्टि उत्पन्न होती है।

अविनाशिता और अपरिवर्तनीय प्रकृति 'नपात' (जो गिरता नहीं) पहलू उनकी शाश्वत और अपरिवर्तनीय प्रकृति पर और जोर देता है। वह क्षय, विनाश, या समय और स्थान की सीमाओं के अधीन नहीं है जो निर्मित प्राणियों को प्रभावित करते हैं। उनका सार अक्षुण्ण, शुद्ध और अप्रदूषित रहता है, जो उन्हें अविनाशी और सदा-उपस्थित बनाता है।

ब्रह्मांडीय अग्नि और दीप्ति अग्नि के साथ अपने जुड़ाव में, तनूनपाते उज्ज्वल, शुद्ध और जोरदार लौ को संदर्भित करता है जो कभी बुझती नहीं है, अग्नि का सार जो लगातार स्वयं-नवीनीकरण करता है, दिव्य चेतना की एक चिंगारी। जब कालभैरव पर लागू होता है, तो यह उन्हें प्रज्वलित, स्वयंप्रकाशित वास्तविकता, परम चेतना के रूप में वर्णित करता है जो सभी अस्तित्व को प्रकाशित करता है और, अग्नि की तरह, सभी अशुद्धियों का उपभोग करता है।

दार्शनिक निहितार्थ यह नाम कालभैरव की पारलौकिक प्रकृति को रेखांकित करता है, उन्हें जन्म और मृत्यु (संसार) के चक्र से परे रखता है। वह अस्तित्व का अप्रकट आधार है, अकारण कारण जो पूरे ब्रह्मांड को उत्पन्न करता है। यह उन्हें परम सर्वोच्च सत्ता के रूप में चित्रित करता है जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है, फिर भी वह स्वयं में विशिष्ट, आत्मनिर्भर और पूर्ण रहते हैं।

245. अन्तर्हिताय

जो गुप्त, छिपे हुए और सभी प्राणियों के भीतर निवास करते हैं, उनको नमन।

विस्तार : अन्तर्हित (अन्तर्हिताय) नाम दिव्य के गहन और अक्सर अगोचर अंतर्निहित स्वरूप को दर्शाता है। यह शब्द "अन्तर" (भीतर, आंतरिक, छिपा हुआ) और "हित" (रखा हुआ, स्थिर, गया हुआ) का एक यौगिक है।

छिपा हुआ और गुप्त अन्तर्हित का शाब्दिक अर्थ "छिपा हुआ," "गुप्त," या "भीतर निवास करने वाला" है। यह इस सिद्धांत को संदर्भित करता है कि यद्यपि दिव्य सर्वव्यापी है, यह हमेशा स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं होता है। शिव, अन्तर्हित के रूप में, उस तरीके से प्रकट नहीं होते हैं जो इंद्रियों या सतही समझ के लिए तुरंत स्पष्ट हो। यह निरपेक्ष की पारलौकिक प्रकृति को दर्शाता है - यह सीमित मानव मन या अनुभवजन्य अवलोकन द्वारा प्रत्यक्ष बोध से परे है। इसकी उपस्थिति को आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि, चिंतन और आंतरिक शुद्धि के माध्यम से महसूस करने की आवश्यकता है। यह अवधारणा उपनिषदों में खूबसूरती से प्रतिध्वनित होती है, जो ब्रह्म को सूक्ष्मतम से भी सूक्ष्म, हृदय की गुफा में निवास करने वाला बताती हैं।

सभी प्राणियों के भीतर निवास करता है अन्तर्हित का गहरा अर्थ प्रत्येक रचना और प्रत्येक प्राणी के भीतर दिव्य सार के अंतर्निहित होने की ओर इशारा करता है। इसका तात्पर्य है कि शिव केवल एक बाहरी देवता नहीं हैं, बल्कि प्रत्येक जीवित इकाई के हृदय में निवास करने वाली मूल चेतना, आत्मा हैं। वह आंतरिक साक्षी, मार्गदर्शक प्रकाश और सभी अस्तित्व की मूलभूत वास्तविकता हैं, यद्यपि अक्सर अज्ञान (अविद्या) या माया के खेल से ढके रहते हैं। अन्तर्हित को पहचानना इस बात को समझना है कि दिव्य चिंगारी स्वयं का और दूसरों का एक आंतरिक हिस्सा है, जो सब कुछ एक भव्य ब्रह्मांडीय एकता में जोड़ती है।

अप्रकट और अंतर्निहित यह नाम दिव्य के अप्रकट (निर्गुण) और अंतर्निहित (सगुण) दोनों पहलुओं पर प्रकाश डालता है। अन्तर्हित के रूप में, भगवान शिव निराकार, निर्गुण वास्तविकता हैं जो सभी रूपों को रेखांकित करती है, वह मौन चेतना जो सब कुछ व्याप्त करती है बिना उससे प्रभावित हुए। फिर भी, वह प्रकट दुनिया के ताने-बाने के भीतर भी मौजूद हैं। भक्त का कार्य इस छिपे हुए सत्य को उजागर करना है, बाहरी रूप से परे देखना और भीतर दिव्य उपस्थिति को समझना है।

246. तमिस्राय

अंधकार के मूर्त स्वरूप, प्रकाश के विनाशक (दुष्टों के लिए) को नमन।

विस्तार : तमिस्राय नाम, संस्कृत शब्द "तमिस्र" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "अंधकार," "अंधेरा," या "अस्पष्टता," यह कालभैरव के एक गहन और बहुआयामी पहलू को समाहित करता है।

ब्रह्मांडीय अंधकार का मूर्त रूप एक ब्रह्मांडीय अर्थ में, तमिस्र उस आदिम अंधकार को संदर्भित करता है जो सृष्टि से पहले मौजूद था और जिसमें सभी चीजें वापस लौटती हैं। कालभैरव, तमिस्राय के रूप में, इस परम, अव्यक्त अवस्था - उस शून्य को मूर्त रूप देते हैं जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है और जिसमें सब कुछ विलीन हो जाता है। यह केवल प्रकाश की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि एक मौलिक, शक्तिशाली सिद्धांत है। यह अज्ञात, अगम्य और मानवीय समझ से परे की सीमा के रहस्य का प्रतिनिधित्व करता है।

भ्रम और अज्ञान के संहारक आध्यात्मिक रूप से, अंधकार अक्सर अज्ञान (अविद्या), भ्रम (माया), और उन आवरणों का प्रतीक है जो प्राणियों को परम सत्य को समझने से रोकते हैं। तमिस्राय के रूप में, कालभैरव इस आध्यात्मिक अंधकार के संहारक हैं। वह उन भ्रमों को दूर करते हैं जो व्यक्तिगत आत्मा को बांधते हैं, उसे ज्ञान की ओर ले जाते हैं। आध्यात्मिक प्रकाश का यह विनाश (अज्ञान से चिपके रहने वालों के लिए) आत्म-साक्षात्कार के सच्चे प्रकाश की ओर एक आवश्यक कदम है।

दुष्टों के दंडदाता "प्रकाश के संहारक (दुष्टों के लिए)" वाक्यांश एक दुर्जेय दंडदाता के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। बुराई, अज्ञान और अधर्म में डूबे लोगों के लिए, कालभैरव की अभिव्यक्ति वह है जो उनकी शक्ति की झूठी भावना, उनकी भ्रामक समझ और उनके भ्रष्ट "प्रकाश" को बुझा देती है। वह उन्हें कर्मिक अंधकार की स्थिति में डुबो देते हैं, न्याय सुनिश्चित करते हैं और ब्रह्मांडीय कानून को बनाए रखते हैं। यह मनमाना क्रूरता नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक व्यवस्था का आवश्यक प्रवर्तन है, जहाँ बुरे कर्म अनिवार्य रूप से दिव्य कृपा या "प्रकाश" से रहित होने की स्थिति की ओर ले जाते हैं।

छिपाने वाले और प्रकट करने वाले विरोधाभासी रूप से, जबकि वह अंधकार को मूर्त रूप देते हैं, वह वह भी हैं जो इसी अंधकार के माध्यम से नए प्रकाश के लिए जमीन तैयार करते हैं। जैसे भौतिक अंधकार तारों को चमकने देता है, वैसे ही तमिस्राय का गहरा अंधकार भी एक बार जब झूठे प्रकाश बुझ जाते हैं तो सत्य के अंतिम रहस्योद्घाटन की अनुमति देता है। वह आध्यात्मिक शुद्धि और परिवर्तन के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ बनाते हैं।

247. तेजसे

सभी चमक, प्रकाश और तेजस्वी ऊर्जा के सार स्वरूप को नमन।

विस्तार : तेज (तेजसे चतुर्थी विभक्ति में "तेज को" के लिए) नाम प्रकाश, चमक, वैभव और ऊर्जावान दीप्ति के सार को दर्शाता है। आध्यात्मिक संदर्भ में, यह उस दिव्य दीप्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो पूरे ब्रह्मांड को प्रकाशित और जीवंत करती है।

दिव्य दीप्ति और प्रकाश • तेज दिव्य से निकलने वाली अंतर्निहित चमक और अग्नि ऊर्जा को संदर्भित करता है। यह केवल भौतिक प्रकाश नहीं है, बल्कि वह आध्यात्मिक और बौद्धिक चमक है जो अज्ञान को दूर करती है और आत्मा को शुद्ध करती है। तेज के अवतार के रूप में, कालभैरव सभी प्रकाश के स्रोत हैं, भौतिक (जैसे सूर्य और तारे) और आध्यात्मिक (जैसे ज्ञान और चेतना) दोनों। यह पहलू उन्हें सर्वोच्च चेतना की अवधारणा से जोड़ता है जो सभी अस्तित्व को प्रकाशित करती है।

अग्नि ऊर्जा और शक्ति • प्रकाश के अलावा, तेज शक्ति, सामर्थ्य और अग्नि ऊर्जा को भी दर्शाता है। यह दिव्य की गतिशील और परिवर्तनकारी शक्ति को संदर्भित करता है। कालभैरव, अपने उग्र रूप में, इस जलती हुई ऊर्जा का प्रतीक हैं, जो नकारात्मकता, बाधाओं और भक्त की अशुद्धियों को भस्म कर सकती है। यह वह ऊर्जा है जो सृष्टि को चलाती है, जीवन को बनाए रखती है, और विनाश को सुगम बनाती है, जिससे वे ब्रह्मांडीय शक्ति के अंतिम भंडार बन जाते हैं।

सभी महिमा का सार • तेज महिमा, वैभव और भव्यता का भी अर्थ है। तेज के रूप में, कालभैरव ब्रह्मांड में सभी भव्य और विस्मयकारी चीजों का अवतार हैं। इसमें उनका राजसी रूप, समय और स्थान पर उनका सर्वोच्च अधिकार, और उनकी अंतर्निहित आध्यात्मिक महानता शामिल है। उन्हें तेज के रूप में स्वीकार करना सभी महिमा और वैभव के अंतिम स्रोत को नमन करना है।

शुद्धता और ज्ञान का प्रतीक • चूंकि प्रकाश अंधकार को दूर करता है, तेज शुद्धता और ज्ञान से आंतरिक रूप से जुड़ा हुआ है। कालभैरव, तेज के सार के रूप में, मन और बुद्धि को शुद्ध करते हैं, भक्त को आध्यात्मिक ज्ञान और मुक्ति की ओर ले जाते हैं। उनकी दीप्ति सत्य का प्रकाश है जो वास्तविकता के वास्तविक स्वरूप को प्रकट करती है।

248. तेजोमयाय

जो पूर्णतया दीप्तिमान प्रकाश और शक्ति से व्याप्त हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : तेजोमय (तेजोमयाय) नाम कालभैरव का एक गहन वर्णन है, जो संस्कृत शब्दों 'तेजस' और 'मय' से मिलकर बना है।

तेजस (Tejas): इस शब्द के कई अर्थ हैं: 1. दीप्ति, चमक, कांति, प्रकाश। 2. आध्यात्मिक और ऊर्जावान शक्ति, आंतरिक महिमा, प्रताप, प्राण शक्ति। 3. सार, अग्नि तत्व (पंचभूतों में से एक, अग्नि)।

मय (Maya): इस संदर्भ में, यह एक प्रत्यय के रूप में कार्य करता है जो "से बना हुआ," "से परिपूर्ण," या "से व्याप्त" को इंगित करता है।

अतः, तेजोमय सामूहिक रूप से "प्रकाश से परिपूर्ण," "तेज से युक्त," या "दिव्य ऊर्जा से व्याप्त" का अर्थ है।

दिव्य प्रकाश और दीप्ति का मूर्त रूप (The Embodiment of Divine Light and Radiance) तेजोमय के रूप में, कालभैरव केवल प्रकाश से प्रकाशित नहीं होते; वे सभी भौतिक और आध्यात्मिक प्रकाश का सार और स्रोत हैं। यह उस आंतरिक दीप्ति को संदर्भित करता है जो अंधकार—अज्ञान, भ्रम और नकारात्मकता के अंधकार—को दूर करती है। वे चेतना के दीप्तिमान सूर्य हैं जो स्वयं माया के अंधकार को दूर करते हैं। उनके स्वरूप को एक तीव्र, अदम्य चमक के रूप में वर्णित किया गया है, जो इतनी शक्तिशाली है कि यह विस्मयकारी और अभिभूत करने वाली दोनों हो सकती है।

परम शक्ति और जीवन शक्ति (Supreme Power and Vitality) केवल प्रकाश से परे, तेजस शक्ति, ओज और जीवन ऊर्जा को भी दर्शाता है। तेजोमय के रूप में, कालभैरव अनंत शक्ति का प्रतीक हैं, वह ब्रह्मांडीय ऊर्जा जो ब्रह्मांड को बनाए रखती है और नष्ट करती है। वे परम शक्ति हैं, अदम्य आध्यात्मिक शक्ति से जीवंत हैं, जो किसी भी दिव्य इच्छा को पूरा करने में सक्षम हैं। यह शक्ति क्रूर बल नहीं है, बल्कि एक परिष्कृत, आध्यात्मिक क्षमता है जो सृष्टि, संरक्षण और संहार को बढ़ावा देती है।

अग्नि तत्व और परिवर्तनकारी ऊर्जा (The Fiery Principle and Transforming Energy) तेजस अग्नि, अग्नि तत्व से भी जुड़ा है। इस अर्थ में, तेजोमय कालभैरव अग्नि की परिवर्तनकारी शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं—यज्ञ की पवित्र अग्नि, सभी प्राणियों के भीतर की पाचक अग्नि (जठराग्नि), और ज्ञान की अग्नि (ज्ञान अग्नि) जो कर्म और अज्ञान को जला देती है। वे शुद्ध करने वाली लौ हैं जो अशुद्धियों को जलाकर आध्यात्मिक मुक्ति की ओर ले जाती हैं।

आंतरिक सूर्य (The Inner Sun) एक भक्त के लिए, कालभैरव को तेजोमय के रूप में ध्यान करना चेतना के आंतरिक सूर्य का आह्वान करना है। यह भीतर की सुप्त आध्यात्मिक अग्नि को जगाने, सत्य के प्रकाश से निर्देशित होने और बाधाओं को दूर करने तथा आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए दिव्य ऊर्जा से सशक्त होने की प्रार्थना है।

249. स्तन्ये

जो माता के दूध के समान पोषण देने वाले और आवश्यक हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : 'स्तन्य' (Stanya) संस्कृत शब्द से व्युत्पन्न नाम स्तन्ये का शाब्दिक अर्थ "माँ का दूध" है। जब यह नाम कालभैरव को दिया जाता है, तो यह इस भयंकर देवता पर एक गहरा और बल्कि अप्रत्याशित दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो उनके अस्तित्व के एक शायद ही कभी जोर दिए गए पहलू को प्रकट करता है।

पोषण और जीविका माँ का दूध सार्वभौमिक रूप से पोषण का सबसे शुद्ध और सबसे आवश्यक रूप माना जाता है, जो नए जीवन के लिए पूर्ण पोषण प्रदान करता है। जब कालभैरव को स्तन्ये के रूप में आह्वान किया जाता है, तो इसका तात्पर्य है कि वे आध्यात्मिक पोषण के अंतिम स्रोत हैं, जो न केवल भौतिक शरीर बल्कि आत्मा और मन को भी बनाए रखते हैं। वे आध्यात्मिक विकास और कल्याण के लिए आवश्यक सार प्रदान करते हैं।

जीवन-प्रदायक और रक्षक जैसे माँ का दूध महत्वपूर्ण एंटीबॉडी के साथ एक बच्चे की रक्षा करता है और उसकी प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करता है, वैसे ही कालभैरव, इस पहलू में, दिव्य रक्षक बन जाते हैं, जो भक्त को आध्यात्मिक बीमारियों, नकारात्मकता और भौतिक दुनिया की चुनौतियों से बचाते हैं। वे भक्त को साहस, ज्ञान और आंतरिक शांति से पोषित करते हैं।

बिना शर्त प्रेम और करुणा माँ का दूध पिलाने का कार्य बिना शर्त प्रेम, निस्वार्थता और गहरी करुणा का प्रतीक है। जबकि भैरव आमतौर पर भयंकर पहलुओं से जुड़े होते हैं, यह नाम उनकी अंतर्निहित परोपकारिता और असीम करुणा को उजागर करता है, विशेष रूप से उनके सच्चे भक्तों के प्रति। यह सुझाव देता है कि अपने दुर्जेय रूप में भी, वे अपनी रचना का पालन-पोषण और देखभाल उसी कोमल स्नेह से करते हैं जैसे एक माँ अपने बच्चे के लिए करती है।

आदिम ऊर्जा और अनिवार्यता स्तन्य उस मौलिक, आदिम ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है जो जीवन का समर्थन करती है। कालभैरव को स्तन्ये कहकर, हम उन्हें उस आदिम, आवश्यक शक्ति के रूप में स्वीकार करते हैं जो सभी अस्तित्व को रेखांकित करती है, जो सृष्टि, संरक्षण और विनाश के लिए बहुत आधार प्रदान करती है। वे स्वयं ब्रह्मांड का जीवन रक्त हैं।

यह नाम, इसलिए, कालभैरव की भयानक छवि को एक पोषण करने वाले, बनाए रखने वाले और गहरे करुणामय दिव्य माता-पिता की छवि में बदल देता है, जो मुक्ति और ज्ञान के लिए आवश्यक अंतिम आध्यात्मिक पोषण प्रदान करते हैं।

250. तरुणाय

जो शाश्वत युवा और जीवंत, युवा ऊर्जा से भरे हुए हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : नाम तरुणाय (Taruṇāya) तरुण (Taruṇa) को संदर्भित करता है, जो कालभैरव की एक शाश्वत विशेषता को उजागर करने वाला एक महत्वपूर्ण गुण है।

शाश्वत रूप से युवा तरुण (Taruṇa) का प्राथमिक अर्थ "युवा," "नवयुवक" या "ताजा" है। कालभैरव जैसे दिव्य प्राणी के संदर्भ में, यह केवल शारीरिक उम्र का संदर्भ नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक और आध्यात्मिक कथन है। यह दर्शाता है कि वे हमेशा नए, हमेशा ताजे हैं, और कभी भी क्षय, बुढ़ापे या समय की सीमाओं के अधीन नहीं होते हैं जो नश्वर प्राणियों को प्रभावित करते हैं। उनकी ऊर्जा लगातार जीवंत, गतिशील और थकान या अप्रचलन से अछूती रहती है।

गतिशील और रचनात्मक ऊर्जा युवावस्था अक्सर असीमित ऊर्जा, रचनात्मकता, उत्साह और कार्य करने की अटूट क्षमता से जुड़ी होती है। तरुण (Taruṇa) के रूप में, कालभैरव इस अक्षय शक्ति का प्रतीक हैं। इसका तात्पर्य है कि सृजन, संरक्षण और विघटन के उनके ब्रह्मांडीय कार्य एक अटूट

और शुद्ध शक्ति के साथ किए जाते हैं, हमेशा ऐसे जैसे कि पहली बार, आदिम ऊर्जा से भरपूर।

समय के चक्रों से परे जबकि कालभैरव काल (Kāla) के स्वामी हैं, तरुण (Taruṇa) के रूप में उनका पहलू यह दर्शाता है कि वे समय की उम्र बढ़ने की प्रक्रिया के चक्रीय स्वरूप से बाहर खड़े हैं। वे समय को नियंत्रित करते हैं, लेकिन समय द्वारा नियंत्रित नहीं होते हैं। वे सभी घटनाओं के जन्म, विकास, क्षय और मृत्यु को देखते हैं, फिर भी अछूते और शाश्वत रूप से युवा रहते हैं, सभी परिवर्तनों के केंद्र में एक कालातीत, अपरिवर्तनीय वास्तविकता।

शुद्धता और शक्ति का प्रतीक युवा पहलू शुद्धता और अक्षुण्ण शक्ति का भी प्रतीक है। उनकी ऊर्जा कमजोर या कम नहीं होती है। यह हमेशा अपने चरम पर होती है, दिव्य इच्छा को प्रकट करने, अज्ञान को नष्ट करने, भक्तों की रक्षा करने और अटूट शक्ति के साथ ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखने के लिए तैयार रहती है।

251. अर्धकाराय

ब्रह्मांडीय रूप के आधे हिस्से का निर्माण और धारण करने वाले (अर्धनारीश्वर के रूप में) को नमन।

विस्तार : अर्धकाराय (अर्धकाराय) नाम अर्ध (आधा) और कार (निर्माता, रचयिता या धारण करने वाला) से लिया गया है। यह शक्तिशाली नाम भगवान शिव के प्रतिष्ठित अर्धनारीश्वर स्वरूप को संदर्भित करता है, जहाँ उन्हें आधा पुरुष और आधा स्त्री के रूप में दर्शाया गया है।

अर्धनारीश्वर स्वरूप अर्धनारीश्वर शिव और पार्वती (उनकी पत्नी) का संयुक्त उभयलिंगी रूप है। यह रूप पुरुष और स्त्री सिद्धांतों, ब्रह्मांड के स्थिर (पुरुष) और गतिशील (प्रकृति) पहलुओं की अविभाज्यता का प्रतीक है। इस संदर्भ में, "वह जो ब्रह्मांडीय रूप के आधे हिस्से का निर्माण और धारण करता है" शिव को इस एकीकृत ब्रह्मांडीय वास्तविकता के परम प्रवर्तक के रूप में दर्शाता है।

विपरीत का मिलन यह नाम इस बात पर जोर देता है कि शिव, भैरव के रूप में, सभी द्वंद्वों का पूर्ण मिलन और संतुलन embody करते हैं: सृजन और विनाश, पुरुष और स्त्री, प्रकाश और अंधकार, चेतना और ऊर्जा। वह इन विरोधी शक्तियों के स्वामी हैं, उन्हें एक सामंजस्यपूर्ण संतुलन में एक साथ रखते हैं। वह इस एकीकृत अवस्था के 'कार' या निर्माता हैं, इसे केवल धारण नहीं करते बल्कि इसे मौलिक वास्तविकता के रूप में सक्रिय रूप से प्रकट करते हैं।

ब्रह्मांडीय समग्रता अर्धनारीश्वर के रूप में प्रकट होकर, भैरव यह प्रदर्शित करते हैं कि संपूर्ण ब्रह्मांड, अपनी सभी अंतर्निहित द्वंद्वों के साथ, एक ही, परम दिव्य सत्ता से उत्पन्न होता है और उसी के द्वारा पोषित होता है। वह पुरुष (चेतना का सिद्धांत) और प्रकृति (भौतिक ऊर्जा का सिद्धांत) दोनों का स्रोत हैं, जो अस्तित्व के सभी पहलुओं पर अपनी सर्वोच्च संप्रभुता का दावा करते हैं। "धारक" के रूप में उनकी भूमिका का अर्थ है कि वह इस एकीकृत अवस्था को वास्तविकता के ताने-बाने के रूप में बनाए रखते हैं।

252. तीग्माय

तीक्ष्ण, उग्र और अत्यंत शक्तिशाली को नमन।

विस्तार : 'तिग्म' नाम संस्कृत मूल "तिज्" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "तेज, तीक्ष्ण या नुकीला होना।"

तीव्रता और तीक्ष्णता (तिग्म) तिग्म तीक्ष्णता, भयंकरता और भेदन शक्ति की चरम डिग्री को दर्शाता है। इसे कई संदर्भों में समझा जा सकता है:

• बुद्धि की तीक्ष्णता: भैरव का ज्ञान तीक्ष्ण है, जो भ्रम और अज्ञान को पूर्ण स्पष्टता से काटता है। वे संदेह और भ्रम के परम नाशक हैं। • संकल्प की भयंकरता: ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने और बुराई का नाश करने का उनका दृढ़ संकल्प अटूट और पूर्ण है। यह गुण उन्हें किसी भी बाधा को दूर

करने की शक्ति प्रदान करता है। • भेदन दृष्टि: उनकी आँखें अक्सर अग्निमय या भेदन करने वाली बताई जाती हैं, जो सभी प्रकार के धोखे और भ्रम को भेदने में सक्षम हैं।

शक्तिशाली और भेदनकारी (तिग्म की शक्ति) "तिग्म" गुण उनकी दुर्जेय और अदम्य शक्ति को संदर्भित करता है। यह एक ऐसी ऊर्जा का सुझाव देता है जो न केवल मजबूत है बल्कि सटीक और प्रभावी भी है, जो नकारात्मकता और अज्ञान की गहरी परतों में प्रवेश करने में सक्षम है। यह शक्ति केवल विनाशकारी नहीं बल्कि परिवर्तनकारी भी है, जो आध्यात्मिक प्रगति में आने वाली बाधाओं को दूर करती है।

लाक्षणिक और शाब्दिक व्याख्या • लाक्षणिक रूप से, यह बुराई के खिलाफ उनकी विनाशकारी शक्ति और कर्म बंधनों को तोड़ने की उनकी क्षमता को संदर्भित करता है। • शाब्दिक रूप से, यह उनके तीक्ष्ण हथियारों, जैसे त्रिशूल या तलवार को संदर्भित करता है, जो गलत काम करने वालों के खिलाफ उनकी सशक्त कार्रवाई का प्रतीक हैं।

इसलिए, 'तिग्म' नाम भगवान कालभैरव को एक अत्यंत सक्रिय और शक्तिशाली शक्ति के रूप में महिमामंडित करता है, जिनकी तीक्ष्णता और शक्ति धर्म पर अधर्म की, और ज्ञान पर अज्ञान की त्वरित और अंतिम विजय सुनिश्चित करती है।

253. तत्त्वाय

परम सिद्धांत, मूलभूत वास्तविकता और पूर्ण सत्य स्वरूप को नमन।

विस्तार : तत्त्वाय नाम कालभैरव के गहन दार्शनिक सार को दर्शाता है। "तत्त्व" भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से योग, सांख्य और तंत्र में, अत्यधिक महत्व का एक संस्कृत शब्द है।

परम सिद्धांत "तत्त्व" शब्द का शाब्दिक अर्थ "वहपन" (तत्-त्व) या "सच्ची अवस्था" है, जो किसी वस्तु के परम सत्य या वास्तविकता को संदर्भित करता है। एक आध्यात्मिक अर्थ में, यह उन मूलभूत सिद्धांतों या श्रेणियों को दर्शाता है जो ब्रह्मांड का निर्माण करते हैं। उदाहरण के लिए, सांख्य में, 25 तत्त्व हैं जो चेतना और पदार्थ के विकास का वर्णन करते हैं। कालभैरव को यह नाम देकर, हम उन्हें सर्वोच्च, सर्व-समावेशी "तत्त्व" के रूप में स्वीकार करते हैं जिससे अन्य सभी सिद्धांत उत्पन्न होते हैं और जिसमें वे अंततः विलीन हो जाते हैं। वह प्रथम कारण, अस्तित्व का अंतर्निहित सिद्धांत है।

मूलभूत वास्तविकता "मूलभूत वास्तविकता" के रूप में, कालभैरव को अस्तित्व के अटूट, अपरिवर्तनीय आधार के रूप में चित्रित किया गया है। वह केवल वास्तविकता का एक पहलू नहीं हैं, बल्कि वह मूल आधार हैं जिस पर सभी वास्तविकताएँ निर्मित हैं। वह परिवर्तनशील के बीच अपरिवर्तनीय, क्षणभंगुर के बीच शाश्वत का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसका तात्पर्य है कि एक आध्यात्मिक साधक के लिए, कालभैरव को समझना अस्तित्व के मूलभूत सत्य को समझना है।

पूर्ण सत्य तत्त्व का "पूर्ण सत्य" पहलू ब्रह्म, परम, बिना शर्त वास्तविकता के रूप में उनके स्वरूप को इंगित करता है। सभी सापेक्ष सत्य, घटनाएँ और अनुभव इस पूर्ण सत्य से अपना अस्तित्व और अर्थ प्राप्त करते हैं। कालभैरव, तत्त्व के रूप में, द्वंद्वों से परे, अवधारणा से परे और समय और स्थान की सीमाओं से परे हैं। वह उस अद्वितीय, अद्वैत सत्य का प्रतीक हैं जो सभी ज्ञान और अस्तित्व को समाहित करता है।

अंतर्निहितता और अतिक्रमण यह नाम सूक्ष्म रूप से उनकी अंतर्निहितता (सभी तत्त्वों या सिद्धांतों के भीतर उपस्थित होना) और उनके अतिक्रमण (सभी तत्त्वों और उनकी सीमाओं से परे होना) दोनों को व्यक्त करता है। वह हर परमाणु के भीतर का सार और ब्रह्मांड से परे का विशाल, असीम शून्य हैं। उन्हें तत्त्व के रूप में पूजना उन्हें अस्तित्व के ही ताने-बाने के रूप में स्वीकार करना है, जो प्रकट और अप्रकट, बोधगम्य और अबोधगम्य दोनों है।

254. तत्त्वगृहेचराय

परम सत्य और वास्तविकता के घर में विचरण करने वाले (भगवान कालभैरव) को नमन।

विस्तार : तत्त्वगृहचराय नाम "तत्त्व," "गृह," और "चर" से बना एक गहन यौगिक है, जो एक साथ कालभैरव के परम सत्य से गहरे संबंध का एक सजीव चित्र प्रस्तुत करता है।

तत्त्वः परम सत्य और वास्तविकता संस्कृत शब्द "तत्त्व" दार्शनिक रूप से अत्यंत समृद्ध है। इसका अर्थ है "वहपन," "सच्चा स्वभाव," "सिद्धांत," या "वास्तविकता।" हिंदू दर्शन के विभिन्न विद्यालयों में, तत्त्व उन मौलिक श्रेणियों या सिद्धांतों को संदर्भित करते हैं जो ब्रह्मांड का निर्माण करते हैं। उदाहरण के लिए, सांख्य में 25 तत्त्व हैं, और शैव धर्म में 36 या उससे भी अधिक हो सकते हैं। ये तत्त्व अस्तित्व के ताने-बाने का प्रतिनिधित्व करते हैं, स्थूल भौतिक तत्वों से लेकर सूक्ष्म आध्यात्मिक सिद्धांतों और स्वयं चेतना तक। तत्त्व से जुड़ा होना इन मौलिक वास्तविकताओं को मूर्त रूप देना, समझना और उनसे परे जाना है।

गृहः घर, निवास, या आवास "गृह" का शाब्दिक अर्थ "घर" या "आवास" है। लाक्षणिक अर्थ में, यह उस क्षेत्र, दायरे या डोमेन को दर्शाता है जहाँ कुछ रहता है या समाहित होता है। जब तत्त्व के साथ जोड़ा जाता है, तो "तत्त्व-गृह" का अर्थ "सत्य का घर" या "परम वास्तविकता का निवास" होता है - सिद्धांतों की पूरी ब्रह्मांडीय संरचना जो अस्तित्व को परिभाषित करती है।

चरः विचरण करने वाला, निवासी, या गति करने वाला "चर" का अर्थ है जो चलता है, विचरण करता है, या रहता है। यह उस स्थान या अवधारणा के साथ सक्रिय जुड़ाव को उजागर करता है जिससे यह जुड़ा हुआ है।

सत्य के घर में विचरण करने वाला इस प्रकार, तत्त्वगृहचर कालभैरव को "परम सत्य और वास्तविकता के घर में विचरण करने वाले" के रूप में वर्णित करता है। यह कई गहन पहलुओं को दर्शाता है:

1. ब्रह्मांडीय सिद्धांतों का अवतार: वह केवल तत्त्वों से अवगत नहीं हैं; वह उनके भीतर विचरण करते हैं, उन्हें पूरी तरह से समझते हैं, और उनसे परे जाते हैं। वह स्वयं चेतना हैं जो ब्रह्मांड के सभी मौलिक सिद्धांतों में व्याप्त है और उन्हें व्यवस्थित करती है।

2. वास्तविकता के स्वामी: उनका "विचरण" उद्देश्यहीन नहीं है, बल्कि अस्तित्व के हर पहलू, निम्नतम भौतिक तत्त्व से लेकर उच्चतम आध्यात्मिक तत्त्व तक, के उनके पूर्ण स्वामित्व और गहन ज्ञान की अभिव्यक्ति है। वह सभी वास्तविकताओं, बड़ी और छोटी, सूक्ष्म और स्थूल के ज्ञाता हैं।

3. अतिक्रमण: जबकि वह सत्य के भीतर "निवास" करते हैं, वह उससे परे भी हैं। वह वह आधार हैं जिस पर सभी तत्त्व उत्पन्न होते हैं और विलीन होते हैं। "तत्त्व के घर" में उनका निवास यह दर्शाता है कि वह वास्तविकता के सभी सिद्धांतों के परम स्रोत और अंतिम गंतव्य हैं।

4. सत्य के मार्गदर्शक: भक्तों के लिए, यह नाम इंगित करता है कि कालभैरव उन्हें वास्तविकता के जटिल मार्गों के माध्यम से मार्गदर्शन कर सकते हैं, उन्हें भ्रम से परम सत्य को समझने में मदद कर सकते हैं। उन पर ध्यान करके, व्यक्ति अस्तित्व के सच्चे स्वरूप में अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकता है।

255. तेजोराशये

जो तेजस्वी प्रकाश और ऊर्जा का विशाल, अपरिमित पुंज या राशि हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : तेजोराशये नाम तेजस (Tejas) और राशि (Rāśi) का एक यौगिक है।

तेजस (तेजस्): इस संस्कृत शब्द के अर्थों का एक समृद्ध स्पेक्ट्रम है जिसमें प्रकाश, चमक, वैभव, दीप्ति, अग्नि, ऊर्जा, आध्यात्मिक शक्ति, कांति और दिव्य महिमा शामिल हैं। यह न केवल भौतिक प्रकाश बल्कि आध्यात्मिक चमक और सृष्टि एवं विनाश के ऊर्जावान सिद्धांत को भी दर्शाता है।

राशि (राशि): इस शब्द का अर्थ है ढेर, पुंज, समूह, संग्रह, संचय, या किसी चीज़ की प्रचुरता। ज्योतिषीय संदर्भ में, यह एक राशि चक्र को संदर्भित करता है।

दिव्य कांति का संचय जब संयुक्त किया जाता है, तो तेजोराशि प्रकाश, ऊर्जा और दिव्य वैभव के एक विशाल, अथाह संचय को दर्शाता है। कालभैरव, तेजोराशि के रूप में, केवल प्रकाश धारण नहीं करते हैं, बल्कि अपने सबसे केंद्रित, अभिभूत करने वाले और अनंत रूप में स्वयं प्रकाश 'हैं'। यह प्रकाश केवल प्रदीप्ति नहीं है, बल्कि एक सक्रिय, रचनात्मक और परिवर्तनकारी ऊर्जा है जो ब्रह्मांड में व्याप्त है।

समस्त ऊर्जा का स्रोत यह नाम कालभैरव को समस्त ब्रह्मांडीय ऊर्जा के परम स्रोत और अवतार के रूप में प्रस्तुत करता है। ब्रह्मांड में प्रकाश, ऊष्मा, शक्ति और चेतना का प्रत्येक रूप इस सर्वोच्च तेजोराशि से निकलता है। इसका तात्पर्य है कि वे शक्ति और चमक के सभी अभिव्यक्तियों का सार हैं।

समझ से परे "ढेर" या "पुंज" की अवधारणा एक ऐसी मात्रा का सुझाव देती है जो इतनी विशाल है कि इसे व्यक्तिगत रूप से गिना या मापा नहीं जा सकता, जो दिव्य शक्ति की अनंत और अबोधगम्य प्रकृति का प्रतीक है। यह प्रकाश मानवीय धारणा और बौद्धिक समझ से परे है, जो अप्रकट परम वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करता है।

शुद्ध चेतना का प्रतीक एक दार्शनिक अर्थ में, इस दीप्तिमान प्रकाश को शुद्ध चेतना (प्रकाश) के रूप में भी समझा जा सकता है, जो असृजित और शाश्वत जागरूकता है जो सृष्टि को प्रकाशित करती है। तेजोराशि के रूप में, कालभैरव इस सर्वोच्च, स्वयंप्रकाशित चेतना का प्रतिनिधित्व करते हैं जो समस्त अस्तित्व का आधार है। उनका रूप केवल दीप्तिमान नहीं है, बल्कि वे स्वयं दीप्ति 'हैं'।

256. शत्रुबाणाय

शत्रुओं के लिए घातक बाण के समान को नमन।

विस्तार : शत्रुबाणाय नाम शत्रु (दुश्मन) और बाण (तीर) से बना एक शक्तिशाली यौगिक है।

शत्रुओं का संहारक यह नाम सीधे तौर पर कालभैरव की सभी शत्रुओं के परम विजेता के रूप में भूमिका को दर्शाता है। यहाँ "बाण" शब्द एक तीव्र, सटीक और अपरिहार्य विनाश का तात्पर्य है। इसका अर्थ केवल शत्रु को हराना नहीं है, बल्कि उन्हें पूरी तरह से नष्ट करना है, उनके पुनरुत्थान की कोई संभावना या निशान नहीं छोड़ना है। एक दिव्य सत्ता के संदर्भ में, "शत्रुओं" की व्याख्या कई स्तरों पर की जा सकती है।

धर्म के शत्रु कालभैरव धर्म (धार्मिकता) के रक्षक हैं। इसलिए, उनके शत्रु वे हैं जो ब्रह्मांडीय नियमों का उल्लंघन करते हैं, बुराई करते हैं और निर्दोषों को कष्ट पहुँचाते हैं। वह दिव्य शक्ति हैं जो शीघ्रता से न्याय लाती हैं और गलत काम करने वालों को दंडित करती हैं।

आंतरिक शत्रु (आध्यात्मिक बाधाएँ) एक आध्यात्मिक साधक के लिए, सबसे दुर्जेय शत्रु बाहरी व्यक्ति नहीं बल्कि आंतरिक विरोधी हैं: अज्ञान (अविद्या), अहंकार (अहंकार), वासना (काम), क्रोध (क्रोध), लालच (लोभ), आसक्ति (मोह), और ईर्ष्या (मात्सर्य)। कालभैरव, शत्रुबाण के रूप में, इन आंतरिक बाधाओं को भेदने के लिए आह्वान किए जाते हैं, जिससे भक्त को उनके बंधनकारी प्रभाव से मुक्ति मिलती है और आध्यात्मिक प्रगति संभव होती है।

बाधाओं को दूर करने वाले जैसे एक तीर अपने लक्ष्य को सटीक रूप से भेदता है, वैसे ही कालभैरव अपने भक्तों के आध्यात्मिक मार्ग और भौतिक कल्याण में बाधा डालने वाली बाधाओं को लक्षित करते हैं और हटाते हैं। चाहे ये बाधाएँ बीमारी, गरीबी, दुर्भावनापूर्ण शक्तियों या आंतरिक संदेह के रूप में प्रकट हों, वह वह शक्ति हैं जो उन्हें काटती हैं।

पूर्ण और अपरिवर्तनीय विजय तीर की कल्पना एक निर्णायक और अपरिवर्तनीय क्रिया के विचार को भी व्यक्त करती है। एक बार चलाए जाने के बाद, तीर को वापस नहीं बुलाया जा सकता। इसी तरह, शत्रुओं, बाहरी और आंतरिक दोनों के खिलाफ कालभैरव की कार्रवाई अंतिम है, जो धार्मिकों के लिए पूर्ण विजय और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के अबाध प्रवाह को सुनिश्चित करती है।

257. अतिथये

जो बिना किसी निश्चित निवास के हर जगह उपस्थित रहता है, ऐसे अप्रत्याशित अतिथि को नमन।

विस्तार : अतिथि नाम का शाब्दिक अर्थ है "जो बिना किसी निश्चित तिथि या विशिष्ट निमंत्रण के आता है," इसलिए, एक "अप्रत्याशित अतिथि।" कालभैरव के संदर्भ में, इस शब्द के गहरे दार्शनिक और आध्यात्मिक अर्थ हैं।

अप्रत्याशित उपस्थिति कालभैरव, अतिथि के रूप में, यह दर्शाता है कि उनकी उपस्थिति किसी विशेष स्थान, अनुष्ठान या समय तक सीमित नहीं है। वे कहीं भी, कभी भी, बिना किसी पूर्व सूचना के प्रकट हो सकते हैं। यह उनकी सर्वव्यापकता और उनकी पूर्ण संप्रभुता को दर्शाता है, जो मानवीय परंपराओं या अपेक्षाओं से बंधे नहीं हैं। वे ऐसे अतिथि हैं जो अपनी इच्छा से आते और जाते हैं, जो हमारी सीमित समझ और नियंत्रण से परे उनकी पारलौकिक प्रकृति को रेखांकित करता है।

निश्चित निवास से परे "अप्रत्याशित अतिथि" की अवधारणा स्वाभाविक रूप से एक स्थायी निवास की कमी का अर्थ है। कालभैरव, परम वास्तविकता के रूप में, किसी विशिष्ट मंदिर, स्वर्ग या आयाम में निवास नहीं करते हैं। वे निराकार ब्रह्म हैं, जो पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त हैं, फिर भी उससे सीमित नहीं हैं। यह उनकी सर्व-समावेशी प्रकृति पर जोर देता है, जो हर परमाणु और हर शून्य में मौजूद हैं, फिर भी स्थान या रूप से बंधे नहीं हैं। वे परम तीर्थयात्री हैं, जो हमेशा चलते रहते हैं, हमेशा उपस्थित रहते हैं।

ब्रह्मांडीय घुमंतू यह शिव के तपस्वी स्वभाव से भी जुड़ा है, जिन्हें अक्सर एक भटकते हुए योगी के रूप में चित्रित किया जाता है, जो भौतिक संपत्ति या निश्चित घरों से अनासक्त होते हैं। कालभैरव इस पहलू को सर्वोच्च संन्यासी के रूप में दर्शाते हैं, जिनके लिए पूरा ब्रह्मांड उनका निवास है, फिर भी वे इन सबसे अनासक्त हैं। उनकी अप्रत्याशित उपस्थिति को एक दिव्य हस्तक्षेप, सत्य का अचानक रहस्योद्घाटन, या वास्तविकता की हमारी पूर्वकल्पित धारणाओं के लिए एक चुनौती के रूप में देखा जा सकता है।

अनित्यता का प्रतीक अतिथि सांसारिक अस्तित्व की अनित्य प्रकृति का भी प्रतीक है। जैसे एक अतिथि का प्रवास अस्थायी होता है, वैसे ही हमारा भौतिक जीवन भी। कालभैरव का अप्रत्याशित आगमन सभी चीजों की क्षणभंगुर प्रकृति की याद दिला सकता है, जो हमें अनासक्ति और आध्यात्मिक मुक्ति की ओर धकेलता है। उनका अचानक प्रकट होना एक महत्वपूर्ण मोड़, एक दीक्षा, या एक भक्त की आध्यात्मिक यात्रा में एक गहन अनुभूति को चिह्नित कर सकता है।

258. अतिथिप्रियाय

अपने अतिथियों और भक्तों से अत्यंत प्रेम करने वाले को नमन।

विस्तार : अतिथिप्रियाय नाम संस्कृत के दो शब्दों, अतिथि और प्रिय, का एक यौगिक है।

• अतिथि (Atithi): इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है "जिसकी कोई निश्चित तिथि (दिनांक या समय) न हो", लेकिन यह मुख्य रूप से एक मेहमान को संदर्भित करता है, विशेषकर वह जो अप्रत्याशित रूप से आता है, या एक सम्मानित मेहमान। व्यापक आध्यात्मिक अर्थ में, यह उन भक्तों को भी संदर्भित कर सकता है जो बिना किसी निश्चित योजना के, लेकिन सच्ची भक्ति के साथ, ईश्वर के पास आते हैं।

• प्रिय (Priya): इस शब्द का अर्थ है "प्रिय", "प्यारा", "का शौकीन", "पसंदीदा", या "मनभावन"।

मेहमानों और भक्तों के प्रति स्नेह (Fondness for Guests and Devotees) जब इन दोनों को मिलाया जाता है, तो अतिथिप्रिय (या अभिवादन के लिए चतुर्थी विभक्ति में अतिथिप्रियाय) भगवान को "जो मेहमानों को प्रिय है" या, अधिक सटीक रूप से, "जो मेहमानों को प्रिय मानता है" या "जो अपने मेहमानों का शौकीन है" के रूप में वर्णित करता है। यह गुण कालभैरव के परोपकारी और पोषणकारी पहलू को उजागर करता है, जो उनके भयानक रूप के विपरीत है। समय और दंड के दुर्जेय भगवान होने के बावजूद, उन्हें उन लोगों के प्रति गहरा स्नेही और स्वागत करने वाला भी दर्शाया गया है जो उनकी शरण लेते हैं। यह विशेष रूप से प्रासंगिक है क्योंकि भैरव अक्सर श्मशान घाटों या सुनसान जगहों पर रहते हैं, जहाँ आतिथ्य की पारंपरिक रूप से अपेक्षा नहीं की जा सकती है।

करुणा और सुलभता (Compassion and Accessibility) यह नाम उनकी सुलभता और करुणा पर जोर देता है। यह बताता है कि कालभैरव, अपनी सभी भयंकर महिमा के बावजूद, पहुँच योग्य हैं और अपने अनुयायियों की सच्ची भक्ति में बहुत आनंद लेते हैं। यह उन लोगों को प्राप्त करने और आशीर्वाद देने की तत्परता का तात्पर्य है जो उनके पास आध्यात्मिक मेहमानों के रूप में आते हैं, चाहे उनकी पृष्ठभूमि या वर्तमान स्थिति कुछ भी हो। वह उन लोगों को अपनी कृपा और सुरक्षा प्रदान करते हैं जो विश्वास के साथ उनकी ओर मुड़ते हैं।

आध्यात्मिक आतिथ्य (Spiritual Hospitality) दार्शनिक अर्थ में, यह भगवान के "आध्यात्मिक आतिथ्य" को संदर्भित करता है। जैसे एक अच्छा मेज़बान अपने मेहमानों की देखभाल करता है, वैसे ही कालभैरव अपने भक्तों की देखभाल करते हैं, उन्हें आराम, सुरक्षा और आध्यात्मिक पोषण प्रदान करते हैं। यह इस विचार को पुष्ट करता है कि सबसे दुर्जेय देवताओं में भी एक गहरा करुणामय और प्रेमपूर्ण आयाम होता है, विशेष रूप से सच्चे साधक के प्रति।

259. आत्मयोगशाय

जो अपने स्वयं के साथ मिलन की गहन अवस्था में विश्राम करते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : आत्मयोगाशय (आत्मयोगाशया) नाम एक गहरा और अत्यधिक गूढ़ नाम है, जो आत्मन, योग और आशय शब्दों के संयोजन से बना है, जो आत्म-साक्षात्कार और दिव्य मिलन की गहरी अवस्था को इंगित करता है।

आत्मन: स्वयं (The Self) इस संदर्भ में, यह परम स्व, परम चेतना, अस्तित्व के सार को संदर्भित करता है। यह व्यक्तिगत आत्मा है जो अपनी उच्चतम अनुभूति पर, सार्वभौमिक आत्मा (ब्रह्म) से भिन्न नहीं है।

योग: मिलन और अवशोषण (Union and Absorption) यहां योग का अर्थ केवल एक अभ्यास नहीं है, बल्कि स्वयं के साथ पूर्ण मिलन, अवशोषण और तादात्म्य की अवस्था है। यह गहन ध्यान, समाधि की अवस्था को दर्शाता है, जहाँ द्वैत घुल जाता है और केवल एकात्मता होती है। यह मुक्ति (मोक्ष) की ओर ले जाने वाला सर्वोच्च आध्यात्मिक अनुशासन है।

आशय: विश्राम स्थल, आधार, या इरादा (Resting Place, Foundation, or Intention) आशय का पारंपरिक अर्थ "विश्राम स्थल," "निवास," "पात्र," या "आधार" होता है। इसका अर्थ "इरादा," "मन," या "हृदय" भी हो सकता है। इस संयोजन में, यह एक गहरी आंतरिक अवस्था का सुझाव देता है।

योग के माध्यम से स्वयं में विश्राम (Resting in the Self through Yoga) जब संयुक्त किया जाता है, तो आत्मयोगाशय का अर्थ है वह "जो अपने स्वयं के साथ मिलन में विश्राम करता है, या दृढ़ता से स्थापित है।" इसका अर्थ है कि कालभैरव अपनी दिव्य सार के साथ पूर्ण और अटूट संवाद की स्थिति

में शाश्वत रूप से हैं। वह परम योगी हैं, जो अपनी सर्वोच्च प्रकृति के चिंतन और बोध में लगातार लीन रहते हैं। उनका अस्तित्व आत्म-ज्ञान और अद्वैत अनुभव की उच्चतम अवस्था का प्रमाण है।

आत्म-साक्षात्कार का अवतार (The Embodiment of Self-Realization) यह नाम कालभैरव को मुक्ति (मोक्ष) के अवतार के रूप में उजागर करता है। वह केवल योग का अभ्यास नहीं करते; वह पूर्ण योग की अवस्था हैं। उनका अस्तित्व एक शाश्वत समाधि है, अपने स्वयं के दिव्य स्व की अनंत सीमाओं के भीतर एक सचेत निवास है। भक्त के लिए, आत्मयोगाशय का सम्मान करने का अर्थ है आंतरिक मिलन और आत्म-जागरूकता की इसी अवस्था की आकांक्षा करना, आत्मन के भीतर अंतिम विश्राम स्थल खोजना।

260. व्यानाय

उस प्राण वायु को नमन जो संपूर्ण शरीर में व्याप्त होकर संचारित होती है।

विस्तार : व्यानाय नाम, आयुर्वेदिक और योगिक दर्शनों के अनुसार, मानव शरीर में पाँच प्राथमिक प्राणों (प्राणवायु) में से एक, व्यान को संदर्भित करता है। यह नाम भगवान भैरव की जीवन की चेतन शक्ति के रूप में भूमिका को इंगित करता है।

व्यान प्राण • स्थान और कार्य: व्यान वायु पूरे शरीर में व्याप्त मानी जाती है, जो सभी नाड़ियों (ऊर्जा चैनलों) के माध्यम से संचारित होती है। इसका प्राथमिक कार्य परिसंचरण है – रक्त, पोषक तत्वों, तंत्रिका आवेगों और अन्य महत्वपूर्ण तरल पदार्थों का। यह पूरे तंत्र में ऊर्जा के वितरण के लिए जिम्मेदार है, जो सभी शारीरिक गतिविधियों, क्रियाओं और कार्यों के समन्वय को सुनिश्चित करता है। यह वह शक्ति है जो अंगों को गति देती है, आँखों को खोलती और बंद करती है, और संवेदी धारणा को सुगम बनाती है। • ब्रह्मांडीय समतुल्यता: जिस प्रकार व्यान व्यक्तिगत शरीर में संचारित और व्याप्त होता है, उसी प्रकार भगवान भैरव, व्यान के रूप में, उस ब्रह्मांडीय शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं जो पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त और चेतन है। वह सर्वव्यापी, संचारित ऊर्जा है जो सभी सृष्टि को एक साथ बांधती है और उसके गतिशील अस्तित्व को बनाए रखती है।

व्यापक जीवन शक्ति के रूप में दिव्य • सर्वव्यापकता: यह नाम भैरव के सर्वव्यापी स्वरूप पर जोर देता है। वह एक स्थान या रूप तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वह सूक्ष्म ऊर्जा हैं जो प्रत्येक जीवित प्राणी और ब्रह्मांड के प्रत्येक परमाणु के माध्यम से प्रवाहित होती है और उसे जीवंत करती है। • जीवन का पोषक: व्यान का प्रतीक बनकर, भैरव को जीवन प्रक्रियाओं के परम पोषक के रूप में पहचाना जाता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि महत्वपूर्ण ऊर्जाएं सही ढंग से वितरित हों और सभी शारीरिक और ब्रह्मांडीय कार्य सामंजस्यपूर्ण रूप से एकीकृत हों। व्यान के बिना, शरीर की प्रणालियाँ संवाद और समन्वय करने में विफल हो जाएंगी, जिससे क्षय होगा। इस प्रकार, व्यान के रूप में, भैरव जीवन की निरंतरता और जीवन शक्ति सुनिश्चित करते हैं। • आंतरिक और बाहरी परिसंचरण: यह पहलू भैरव को ऊर्जा के सूक्ष्म (व्यक्तिगत प्राणियों के भीतर) और स्थूल (ब्रह्मांड के भीतर) दोनों परिसंचरण के पीछे की शक्ति के रूप में उजागर करता है, जो अस्तित्व के सभी स्तरों पर संतुलन और गतिविधि बनाए रखता है।

261. तीर्थदेवमयाय

सभी पवित्र जल और पवित्र देवताओं के मूर्त रूप को नमन।

विस्तार : तीर्थदेवामय (Tīrthadevāmaya) नाम हिंदू धर्म में दो प्रमुख अवधारणाओं का एक गहरा संश्लेषण है: तीर्थ (पवित्र स्थान/जल) और देव (देवता), जिसमें प्रत्यय -मय "से भरा हुआ," "से बना हुआ," या "का अवतार" इंगित करता है।

सभी पवित्र जल का अवतार (तीर्थामय) तीर्थ (Tīrtha) का शाब्दिक अर्थ "घाट" या "पार करने का स्थान" है, जो तीर्थयात्रा के स्थानों को संदर्भित करता है, विशेष रूप से नदियों के संगम पर स्थित, स्वयं पवित्र नदियाँ, पवित्र सरोवर, या अन्य पूजनीय स्थल। इन स्थानों को ऐसे मार्ग माना जाता है जहाँ कोई आसानी से सांसारिक से आध्यात्मिक, या अज्ञान से ज्ञान की ओर "पार" कर सकता है। तीर्थामय (Tīrthāmaya) होने से, कालभैरव केवल इन स्थानों से जुड़े नहीं हैं; वे उनकी पवित्रता, शुद्धता और आध्यात्मिक शक्ति का सार हैं। तीर्थ में स्नान करने से पापों का नाश होता है और आध्यात्मिक पुण्य प्राप्त होता है, एक ऐसी शक्ति जो सीधे दिव्य उपस्थिति से निकलती है, जो इस मामले में स्वयं भैरव हैं। वे परम तीर्थ हैं, जो सभी पवित्र जल को अपने अस्तित्व का विस्तार बनाते हैं।

सभी देवताओं का अवतार (देवामय) इसी तरह, देव (Deva) दिव्य प्राणियों या देवताओं को संदर्भित करता है। इस संदर्भ में, "देवामय" का अर्थ है कि कालभैरव अन्य सभी देवी-देवताओं के सार, शक्ति और उपस्थिति का प्रतीक हैं। यह हिंदू पंथ में, विशेष रूप से शैव धर्म में, उनकी सर्वोच्च और सर्व-समावेशी प्रकृति पर जोर देता है। वे केवल कई देवताओं में से एक नहीं हैं, बल्कि परम दिव्य सिद्धांत हैं जिससे अन्य सभी दिव्य अभिव्यक्तियाँ अपनी शक्ति और रूप प्राप्त करती हैं। इसलिए, उनकी पूजा करना सभी देवताओं की पूजा करने के बराबर है।

परम पवित्रता यह नाम भैरव की पवित्रता और दिव्यता के सर्वोच्च स्रोत के रूप में उनकी भूमिका पर गहराई से जोर देता है। सभी पवित्र स्थान अपनी पवित्रता उनसे प्राप्त करते हैं, और सभी दिव्य प्राणी उनकी परम वास्तविकता की अभिव्यक्तियाँ या पहलू हैं। यह अवधारणा अद्वैतवादी (Advaitic) दृष्टिकोण को दर्शाती है जहाँ देवताओं और पवित्र स्थलों की बहुलता अंततः एक परम सत्ता की अभिव्यक्तियाँ हैं। तीर्थदेवामय को नमन करना कालभैरव को परम तीर्थ, पापों का परम नाशक, और सभी अस्तित्व में परम दिव्य उपस्थिति के रूप में स्वीकार करना है।

262. शिवाय

जो परम शुभ, परोपकारी और सभी सौभाग्य के स्रोत हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : नाम शिव (शिवाय) शायद भगवान का सबसे मौलिक और सार्वभौमिक रूप से पूजनीय विशेषण है, जो उनके सार को समाहित करता है।

शुभकारी संस्कृत मूल "शि" (Śi) का अर्थ है "शुभ", "परोपकारी" या "कृपालु"। इसलिए, शिव का शाब्दिक अर्थ है "शुभकारी"। यह दर्शाता है कि उनका स्वभाव ही शुद्ध अच्छाई, परोपकार और समृद्धि है। वह ब्रह्मांड में सभी शुद्ध, उदात्त और लाभकारी चीजों का अंतिम स्रोत हैं। यह शुभता केवल निष्क्रिय नहीं है; यह सक्रिय रूप से नकारात्मकता को दूर करती है और सकारात्मक परिवर्तन लाती है।

परोपकार और पापों का नाश करने वाले शिव न केवल वरदान देने में परोपकारी हैं, बल्कि शुद्ध करने और मुक्त करने में भी हैं। उन्हें परम शोधक के रूप में देखा जाता है, जो उन लोगों के लिए पापों, अज्ञानता और पीड़ा को दूर करते हैं जो ईमानदारी से उनकी पूजा करते हैं। उनकी शुभता एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में प्रकट होती है जो प्राणियों को आध्यात्मिक विकास और मुक्ति की ओर ले जाती है।

सभी सौभाग्य का स्रोत शुभता के अवतार के रूप में, शिव स्वाभाविक रूप से सभी सौभाग्य, समृद्धि और आध्यात्मिक विकास के स्रोत हैं। शिव की भक्ति से शांति, ज्ञान, भौतिक कल्याण और अंततः मोक्ष (मुक्ति) प्राप्त होता है।

द्वंद्वों से परे दार्शनिक रूप से, शिव परम वास्तविकता (ब्रह्म) का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सभी द्वंद्वों - सृजन और विनाश, अच्छे और बुरे, साकार और निराकार - से परे है। वह वह आधार हैं जिस पर सभी अस्तित्व आधारित है। उनकी शुभता घटनात्मक दुनिया के भ्रमों को भंग करने की उनकी

क्षमता में निहित है, जिससे शाश्वत सत्य प्रकट होता है।

कालभैरव के संदर्भ में, "शिव" उस सर्वोच्च पहलू को संदर्भित करता है जिससे भैरव का भयंकर रूप भी निकलता है। भैरव की भयानक क्रियाएं अंततः ब्रह्मांडीय व्यवस्था और आत्माओं की मुक्ति के शुभ उद्देश्य को पूरा करती हैं, इस प्रकार उन्हें स्वाभाविक रूप से "शिव" - परोपकारी बनाती हैं।

263. स्थानदाय

अपने भक्तों को स्थिर पद, दृढ़ निवास और उच्च स्थिति प्रदान करने वाले को नमन।

विस्तार : स्थानदाय नाम संस्कृत के शब्दों 'स्थान' और 'दाय' से लिया गया है।

स्थान (Sthāna): इस शब्द के कई गहन अर्थ हैं: 1. "स्थान" या "निवास": एक भौतिक निवास या एक सुरक्षित आध्यात्मिक निवास स्थान। 2. "पद" या "स्थिति": समाज में, आध्यात्मिक पदानुक्रम में, या यहाँ तक कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था के पदानुक्रम में किसी का स्थान। 3. "स्थिरता" या "दृढ़ता": अडिग, सुस्थापित या दृढ़ होने की अवस्था।

दाय (Dāya): का अर्थ है "देने वाला" या "प्रदान करने वाला"।

स्थिरता और निवास प्रदान करने वाला स्थानदाय के रूप में, कालभैरव स्थिरता के दिव्य दाता हैं। यह भौतिक और आध्यात्मिक दोनों स्तरों पर प्रकट हो सकता है। वह अपने भक्तों को जीवन में एक दृढ़ और सुरक्षित स्थान प्रदान करते हैं, उन्हें बेघर होने, अस्थिरता और अस्तित्व संबंधी चिंता से बचाते हैं। यह "निवास" केवल भौतिक आश्रय नहीं है, बल्कि दुनिया और ब्रह्मांड में अपनेपन और जड़ता की भावना भी है।

पद और स्थिति प्रदान करने वाला वह उच्च पद या उच्च स्थिति प्रदान करने वाले भी हैं। यह सांसारिक सफलता को संदर्भित कर सकता है, जैसे एक स्थिर करियर, समाज में सम्मान, या नेतृत्व की भूमिकाएँ। अधिक गहन रूप से, यह एक उच्च आध्यात्मिक अवस्था, मुक्ति (मोक्ष) के मार्ग पर एक दृढ़ आधार, या दिव्य प्राणियों के बीच एक प्रतिष्ठित स्थान प्रदान करने का प्रतीक है। सच्चे साधकों के लिए, वह उनकी आध्यात्मिक साधना को स्थिर करते हैं और उनकी प्रगति सुनिश्चित करते हैं, उनकी आध्यात्मिक स्थिति को ऊपर उठाते हैं।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था का पालनकर्ता ब्रह्मांडीय रूप से, स्थानदाय ब्रह्मांड की "स्थान" या व्यवस्था को बनाए रखने में अपनी भूमिका को भी संदर्भित कर सकता है। वह सुनिश्चित करते हैं कि सभी प्राणी और तत्व अपनी निर्धारित स्थिति और कार्य को बनाए रखें, जिससे ब्रह्मांडीय स्थिरता बनी रहे। इस नाम का आह्वान करके, भक्त स्वयं को इस ब्रह्मांडीय स्थिरीकरण शक्ति के साथ संरेखित करते हैं, जिससे वे भव्य डिज़ाइन के भीतर अपना स्थिर स्थान पाते हैं।

264. तपनाय

जो चमकते और तपते सूर्य हैं, समस्त ऊर्जा के स्रोत हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : "तपन" नाम का संस्कृत और हिंदू दार्शनिक परंपराओं दोनों में गहरा महत्व है, विशेष रूप से सूर्य, गर्मी और तपस्या के साथ इसके जुड़ाव में।

चमकता और ताप देने वाला सूर्य शाब्दिक रूप से, "तपन" का अर्थ है "जो गर्म करता है," "चमकता है," या "पीड़ा/तपस्या का कारण बनता है।" इसका प्राथमिक संबंध सूर्य (सूर्य) से है, जो पृथ्वी के लिए सभी प्रकाश, गर्मी और ऊर्जा का स्रोत है। इस संदर्भ में, भगवान कालभैरव को सूर्य की ब्रह्मांडीय शक्ति के साथ पहचाना जाता है, जो ब्रह्मांड को प्रकाशित करता है, बनाए रखता है और जीवन प्रदान करता है। जैसे सूर्य अंधकार को दूर करता है, वैसे ही कालभैरव अज्ञान और भ्रम को दूर करते हैं।

समस्त ऊर्जा का स्रोत एक सर्वोत्कृष्ट "तापक" के रूप में, तपन सभी ऊर्जा (तेजस) के अंतिम स्रोत को दर्शाता है। यह ऊर्जा केवल भौतिक सौर ऊर्जा नहीं है, बल्कि वह आध्यात्मिक ऊर्जा भी है जो सृष्टि, संरक्षण और संहार को शक्ति प्रदान करती है। यह वह प्राण (Prāṇa) है जो सभी प्राणियों को चेतन करता है और ब्रह्मांड को शक्ति देता है। विस्तार से, इसका अर्थ है कि वे अपनी गतिशील ऊर्जा के माध्यम से जीवन के अंतिम निर्माता और पालक हैं।

तपस्या और प्रायश्चित की शक्ति "तपन" का संबंध तप (Tapas) से भी है, जिसका अर्थ है "तपस्या," "प्रायश्चित," या "आध्यात्मिक गर्मी।" तप का अर्थ है गहन आध्यात्मिक अभ्यास, आत्म-अनुशासन और केंद्रित प्रयास के माध्यम से अशुद्धियों को जलाना। जब कालभैरव को तपन कहा जाता है, तो यह इस परिवर्तनकारी शक्ति के उनके अवतार को दर्शाता है। वे परम तपस्वी हैं, जिनकी भयंकर तपस्या ने ब्रह्मांड को बनाने और शुद्ध करने वाली गर्मी और ऊर्जा उत्पन्न की। इसलिए, उनकी भक्ति एक आध्यात्मिक साधक के भीतर इसी परिवर्तनकारी शक्ति को जगा सकती है, कर्मों के अवशेषों को जला सकती है और मुक्ति की ओर ले जा सकती है।

मल (अशुद्धियों) का नाश करने वाला अपनी "गर्मी" और "चमक" के माध्यम से, कालभैरव उन मलों (अशुद्धियों जैसे अणव, कर्म और माया) को शुद्ध और नष्ट करते हैं जो स्वयं के वास्तविक स्वरूप को ढँकते हैं। जैसे सूर्य की गर्मी जीवाणुओं को नष्ट कर सकती है और शुद्ध कर सकती है, वैसे ही उनका दिव्य प्रकाश और ऊर्जा आध्यात्मिक प्रदूषकों को जला देती है, जिससे भक्त अपने आवश्यक, शुद्ध स्वरूप को महसूस कर पाता है।

265. स्थाणवे

जो ब्रह्मांड के स्थिर, अचल और शाश्वत ध्रुव हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : स्थाणवे (Sthāṇave) नाम संस्कृत मूल 'स्था' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "खड़ा होना" या "दृढ़ होना"।

अविचल स्तंभ स्थाणवे का शाब्दिक अर्थ है "अचल", "दृढ़" या "स्थिर"। यह शिव को उस अविचल, अटल स्तंभ के रूप में संदर्भित करता है जो पूरे ब्रह्मांड को सहारा देता है और बनाए रखता है। इस पहलू में, शिव को ब्रह्मांडीय अक्ष (axismundi) के रूप में परिकल्पित किया गया है, जो केंद्रीय, अटूट स्तंभ है जिसके चारों ओर ब्रह्मांड घूमता है और जिससे वह निकलता है। यह कल्पना सृष्टि के निरंतर परिवर्तन और प्रवाह के बीच स्थिरता और स्थायित्व की भावना को जगाती है।

शाश्वत और अपरिवर्तनीय यह नाम शिव के कालातीतता और अपरिवर्तनीयता के गुण पर जोर देता है। जबकि सभी सृजन जन्म, विकास और विघटन के चक्रों से गुजरते हैं, शिव स्थाणवे के रूप में स्थिर रहते हैं, लौकिक प्रक्रियाओं से अप्रभावित रहते हैं। वह शाश्वत आधार हैं जिस पर सभी अस्तित्व टिका है, जो भौतिक दुनिया से परे उनकी पारलौकिक प्रकृति को दर्शाता है।

तपस्या और ध्यान का प्रतीक ऐतिहासिक रूप से, स्थाणु शिव के लिए एक प्रसिद्ध विशेषण भी है जो गंभीर तपस्या (तपस) और गहन ध्यान से जुड़ा है। भिक्षु और तपस्वी (योगी) अपने सच्चे, अपरिवर्तनीय स्व को प्राप्त करने के लिए आंतरिक शांति और अविचल एकाग्रता की स्थिति प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, ठीक एक स्थाणु की तरह। यह सर्वोच्च योगी के रूप में शिव की भूमिका पर प्रकाश डालता है, जिनकी अटूट एकाग्रता ब्रह्मांड के क्रम को रेखांकित करती है।

लिंगम—प्रतिष्ठित प्रतिनिधित्व स्थाणवे का सबसे शक्तिशाली प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व लिंगम है, जो शिव का एक शैलीबद्ध अनैकोनिक प्रतिनिधित्व है। इसे प्रकाश के एक स्तंभ या एक खंभे के रूप में देखा जाता है, जिसे अक्सर पृथ्वी से निकलते हुए दर्शाया जाता है, जो शाश्वत और ब्रह्मांडीय जनन सिद्धांत का प्रतीक है जो अंतर्निहित और पारलौकिक दोनों है। स्थाणु लिंगम प्रकाश का ब्रह्मांडीय स्तंभ है, अस्तित्व का दिव्य मूल है जो आदि और अंत से परे है।

266. स्थविष्ठाय

विशाल, विराट और सभी रूपों में सबसे स्थूल को नमन।

विस्तार : स्थविष्ठाय नाम संस्कृत शब्द स्थविष्ठ (Sthavistha) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "सबसे बड़ा," "सबसे विशाल," या "सबसे स्थूल।" यह स्थूल (Sthūla) का अतिशयोक्तिपूर्ण रूप है, जिसका अर्थ है "बड़ा," "स्थूल," या "भौतिक।"

सबसे स्थूल रूप कालभैरव के संदर्भ में, स्थविष्ठ उनके सर्वोच्च, सर्व-समावेशी वृहद् ब्रह्मांडीय रूप के रूप में उनके प्रकटीकरण को संदर्भित करता है। यह विश्वरूप (सार्वभौमिक रूप) की अवधारणा को उद्घाटित करता है, जहाँ देवत्व को संपूर्ण ब्रह्मांड के रूप में प्रकट किया जाता है। यह दर्शाता है कि वे सीमित मानवीय इंद्रियों के लिए सबसे ठोस, बोधगम्य और विशाल अभिव्यक्ति हैं - स्वयं भौतिक ब्रह्मांड अपनी सभी भव्यता और विशालता में।

भौतिक ब्रह्मांड यह नाम कालभैरव को सभी स्थूल पदार्थ और अवलोकन योग्य ब्रह्मांड के आधार और अवतार के रूप में स्थापित करता है। वे पर्वत, महासागर, ग्रह, तारे, आकाशगंगाएँ और वह सब कुछ हैं जो भौतिक रूप से प्रकट है। इसका तात्पर्य है कि उनके बाहर कुछ भी मौजूद नहीं है, और वे सभी सृष्टि के परम पात्र और सामग्री हैं।

अस्तित्व का आधार स्थविष्ठ ब्रह्मांड के मौलिक भौतिक कारण (उपादान कारण) के रूप में उनकी भूमिका को भी इंगित करता है। जो कुछ भी स्थूल और मूर्त है, वह उनसे उत्पन्न होता है और उनके द्वारा पोषित होता है। यह उनके आदिम स्वभाव और अस्तित्व के ताने-बाने में उनकी मूलभूत उपस्थिति पर जोर देता है।

सूक्ष्म और कारण रूपों के विपरीत जबकि भैरव सूक्ष्म (Sūkṣma) और कारण (Kārana) रूपों में भी मौजूद हैं, स्थविष्ठ विशेष रूप से सबसे प्रकट और बोधगम्य वास्तविकता के रूप में उनके पहलू पर प्रकाश डालता है। यह दिव्य अभिव्यक्तियों की विविधता को स्वीकार करता है, अप्रकट ब्रह्म से लेकर सबसे प्रकट सार्वभौमिक रूप तक।

267. स्थविराय

जो प्राचीन, पूजनीय और शाश्वत हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : स्थविर नाम, जिसका अर्थ "प्राचीन," "पूजनीय," "दृढ़," या "अचल" है, भगवान शिव के शाश्वत और कालातीत स्वरूप को इंगित करता है।

• प्राचीन और आदिम (Ancient and Primordial) यह नाम शिव को आदिम सत्ता के रूप में बल देता है, जो सृष्टि से पहले विद्यमान थे और इसके विघटन के बाद भी विद्यमान रहेंगे। वे समय के चक्रों से बंधे नहीं हैं; बल्कि, समय उन्हीं से उत्पन्न होता है। पुराणों में, स्थविर को शिव के हजार नामों (सहस्रनामावली) में से एक के रूप में सूचीबद्ध किया गया है, जो उनकी शाश्वत वृद्ध, 'आदि-पुरुष' (प्रथम, प्राचीन पुरुष) के रूप में भूमिका को दर्शाता है।

• पूजनीय और बुद्धिमान (Venerable and Wise) स्थविर पूजनीय ज्ञान के भाव को भी व्यक्त करता है। प्राचीनतम होने के नाते, उन्होंने सृष्टि और विनाश के अनगिनत चक्रों को देखा है, जो सर्वोच्च ज्ञान और अनुभव को समाहित करते हैं। यह पहलू आध्यात्मिक परिपक्वता की एक गहन स्थिति का सुझाव देता है, जो गहरे सम्मान और श्रद्धा के योग्य है। वे सभी ज्ञान के उपदेशक हैं, विशेषकर तंत्रों के गूढ़ ज्ञान के।

• दृढ़ और अचल (Firm and Unmoving) "दृढ़" या "अचल" शब्द क्षणभंगुर ब्रह्मांड के बीच शिव के अडिग और अपरिवर्तनीय स्वरूप को उजागर करता है। वे निरंतर गतिमान ब्रह्मांड में स्थिर बिंदु हैं, वह अपरिवर्तनीय वास्तविकता जो सभी परिवर्तनों का आधार है। यह उनकी पारलौकिक स्थिति

को दर्शाता है, जो समय, स्थान और कार्य-कारण के उतार-चढ़ाव से अछूती है। वे अस्तित्व की परम स्थिरता और नींव का प्रतिनिधित्व करते हैं।

• शाश्वत और कालातीत (Eternal and Timeless) स्थविर के रूप में, कालभैरव को समय की सीमाओं से परे होने की पुष्टि की जाती है। वे 'काल-बाह्य' (समय से बाहर) हैं, और फिर भी, काल के रूप में, वे स्वयं समय के नियंत्रक और भक्षक भी हैं। यह दोहरा पहलू लौकिक अस्तित्व पर उनके सर्वोच्च प्रभुत्व को दर्शाता है, जबकि साथ ही एक शाश्वत, कालातीत अवस्था में विद्यमान हैं।

268. त्रिलोकेशाय

तीनों लोकों के सर्वोच्च शासक और स्वामी को नमन।

विस्तार : त्रिलोकेश (त्रिलोकेशा) नाम "त्रि-लोक" और "ईश" का एक यौगिक है, जिसका अर्थ है "तीनों लोकों का स्वामी"। यह उपाधि हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में समझे जाने वाले संपूर्ण ब्रह्मांड पर शिव की पूर्ण संप्रभुता और प्रभुत्व पर जोर देती है।

तीन लोक (त्रिलोक) हिंदू विचार में, ब्रह्मांड को पारंपरिक रूप से तीन प्राथमिक लोकों में विभाजित किया गया है: • स्वर्ग लोक (स्वर्गीय लोक): आकाशीय क्षेत्र, जिसमें देवता (देव), आकाशीय प्राणी और वे लोग निवास करते हैं जिन्होंने पृथ्वी पर धार्मिक कार्यों के माध्यम से पर्याप्त सकारात्मक कर्म संचित किए हैं। यह आनंद और भोग का क्षेत्र है। • भूमि लोक (पार्थिव लोक): स्थलीय तल जहाँ मनुष्य, पशु और अन्य प्राणी निवास करते हैं। यह कर्म का संसार (कर्म-भूमि) है, जहाँ आत्माएँ अनुभव प्राप्त करती हैं और अपने कर्मों के माध्यम से कर्म बनाती हैं। • पाताल लोक (अधोलोक/निचला लोक): भूमिगत क्षेत्र, जिसे कभी-कभी नरक के क्षेत्रों या नागों (सर्प देवताओं) और असुरों (राक्षसों) के निवास के रूप में चित्रित किया जाता है। ये क्षेत्र गहरे ऊर्जाओं और नकारात्मक कर्मों के परिणामों से जुड़े हैं।

सर्वोच्च शासक (ईश) "ईश" एक स्वामी, मालिक या शासक को दर्शाता है। जब त्रिलोक के साथ जोड़ा जाता है, तो यह इस बात पर जोर देता है कि शिव, अपने कालभैरव रूप में, इन सभी लोकों पर निर्विवाद, सर्वोच्च सत्ता हैं। वे केवल एक निवासी या उनमें से एक शक्तिशाली देवता नहीं हैं, बल्कि उनके अस्तित्व, कार्यप्रणाली और अंततः विघटन के अंतिम संयोजक और नियंत्रक हैं।

ब्रह्मांडीय शासन यह नाम ब्रह्मांडीय व्यवस्था के सर्वोपरि प्रशासक और शासक के रूप में कालभैरव की भूमिका पर प्रकाश डालता है। वे जन्म, जीवन, मृत्यु, कर्म और इन तीनों तलों के भीतर सभी संस्थाओं की गति को नियंत्रित करने वाले कानूनों की देखरेख करते हैं। उनका प्रभुत्व यह दर्शाता है कि इन लोकों में कोई भी प्राणी, कोई भी कार्य और कोई भी परिणाम उनके अधिकार क्षेत्र और अंतिम नियंत्रण से परे नहीं है। वे ब्रह्मांडीय न्याय के अंतिम न्यायाधीश और मध्यस्थ हैं, जो यह सुनिश्चित करते हैं कि सभी लोकों में परिणाम प्रकट हों।

269. त्रिलोकात्मने

तीनों लोकों के अंतरात्मा और सार स्वरूप को नमन।

विस्तार : त्रिलोकात्मने नाम 'त्रि-लोक' और 'आत्मने' शब्दों का संयोजन है।

त्रि-लोक: यह हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में "तीन लोकों" या अस्तित्व के क्षेत्रों को संदर्भित करता है: 1. भूर्लोक (पृथ्वी): स्थलीय तल, जहाँ मनुष्य निवास करते हैं, इंद्रिय बोध और कर्म का क्षेत्र। 2. भुवर्लोक (अंतरिक्ष/वायुमंडल): मध्यवर्ती तल, जो हवाई जीवों, आत्माओं और पृथ्वी तथा स्वर्ग के बीच की सूक्ष्म ऊर्जाओं से जुड़ा है। 3. स्वर्लोक (स्वर्ग): स्वर्गीय तल, देवताओं, प्रबुद्ध प्राणियों और दिव्य सुखों का निवास स्थान, जो उच्च चेतना का प्रतिनिधित्व करता है।

आत्मने: इसका अर्थ है "स्वयं को," "आत्मा को," या "सार को।" यह आंतरिक अस्तित्व, मौलिक मूल, या चेतन सिद्धांत को दर्शाता है।

सभी लोकों की सार्वभौमिक आत्मा इसलिए त्रिलोकात्मने नाम कालभैरव (और विस्तार से शिव) को तीनों लोकों में व्याप्त और उन्हें बनाए रखने वाली आत्मा, आंतरिक आध्यात्मिक सार और चेतन चेतना के रूप में घोषित करता है। वह केवल इन लोकों के शासक नहीं हैं, बल्कि उनका स्वयं का अस्तित्व हैं। जैसे आत्मा एक व्यक्ति के भीतर जीवन-सिद्धांत है, वैसे ही कालभैरव तीनों लोकों की लौकिक संरचना के भीतर सार्वभौमिक आत्मा हैं।

सृष्टि और विनाश से परे इसका तात्पर्य यह है कि कालभैरव सभी अस्तित्व का अंतर्निहित आधार हैं, जो प्रकट ब्रह्मांड की विशेषता वाले निर्माण, संरक्षण और विनाश के अस्थायी चक्रों से परे हैं। वह वास्तविकता के सभी तलों के अपरिवर्तनीय, शाश्वत "स्वयं" हैं, चाहे वे स्थूल (भूर्लोक), सूक्ष्म (भुवर्लोक), या कारण (स्वर्लोक) हों।

व्यापकता और पराकाष्ठा यह नाम दिव्य की व्यापक और पराकाष्ठा दोनों प्रकृति को उजागर करता है। कालभैरव तीनों लोकों में सृष्टि के हर कण के भीतर आत्मा के रूप में व्यापक हैं, और साथ ही उनसे परे परम, अप्रकट स्वयं के रूप में पराकाष्ठा भी हैं। उन्हें त्रिलोकात्मा के रूप में समझना इस बोध की ओर ले जाता है कि दिव्य सार संसार से अलग नहीं है बल्कि उसका मूल ही है।

270. त्रिशूलिने

तीनों गुणों का प्रतिनिधित्व करने वाले शक्तिशाली त्रिशूल धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : त्रिशूलिने नाम सीधे भगवान शिव के प्रतिष्ठित अस्त्र: त्रिशूल या त्रिशूल को संदर्भित करता है। यह अस्त्र केवल एक भौतिक उपकरण नहीं है, बल्कि गहरे दार्शनिक और आध्यात्मिक अर्थों से भरा एक गहन प्रतीक है।

एक अस्त्र के रूप में त्रिशूल त्रिशूल एक तीन-शूल वाला भाला है, जो शिव की शक्ति का एक अनैतिक प्रतिनिधित्व है। यह बुराई के विनाश और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के रखरखाव के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक दुर्जेय अस्त्र है। जब कालभैरव द्वारा धारण किया जाता है, तो यह नकारात्मकता, अज्ञानता और पीड़ा के सभी रूपों पर उनके परम अधिकार को दर्शाता है।

तीन गुणों का प्रतिनिधित्व त्रिशूल के तीन शूलों को आमतौर पर तीन गुणों (प्रकृति के गुण या विशेषताएँ) का प्रतीक माना जाता है: 1. सत्त्व (भलाई, पवित्रता, सद्भाव, संतुलित बुद्धि)। 2. रजस (जुनून, गतिविधि, गतिशीलता, आसक्ति)। 3. तमस (अंधेरा, अज्ञानता, जड़ता, भ्रम)। त्रिशूल धारण करके, कालभैरव इन तीन मूलभूत शक्तियों पर अपनी महारत और अतिक्रमण का संकेत देते हैं जो सभी सृष्टि को नियंत्रित करती हैं। वह वह हैं जो उनके संतुलन और विघटन का समन्वय करते हैं, यह दर्शाते हुए कि ये आदिम ऊर्जाएँ भी उनके सर्वोच्च नियंत्रण में हैं।

तीन शूलों की अन्य व्याख्याएँ गुणों के अलावा, तीन शूल विभिन्न त्रय का भी प्रतीक हैं, जो शिव के व्यापक प्रभाव को उजागर करते हैं: • सृष्टि, पालन और संहार (ब्रह्मांडीय कार्य)। • भूत, वर्तमान और भविष्य (समय पर महारत, कालभैरव की समय के स्वामी के रूप में भूमिका के साथ संरेखित)। • स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल (सभी लोकों पर उनका प्रभुत्व)। • इच्छा (इच्छा), क्रिया (क्रिया), और ज्ञान (ज्ञान) (दिव्य शक्ति के तीन पहलू)। • चेतना की तीन अवस्थाएँ: जागृत, स्वप्न और सुषुप्ति। • तीन प्रकार के दुःख (तापस): आध्यात्मिक (आंतरिक), आधिभौतिक (बाह्य मानवीय), और आधिदैविक (बाह्य प्राकृतिक)। कालभैरव, त्रिशूलिने के रूप में, इस प्रकार परम सत्ता हैं जो अस्तित्व के इन सभी पहलुओं को सामंजस्य स्थापित करते हैं, उनका अतिक्रमण करते हैं और उन्हें नियंत्रित करते हैं। वह वह हैं जो गुणों के बंधनों को काट सकते हैं और भक्तों को भौतिक संसार के द्वंद्वों से परे ले जा सकते हैं, मुक्ति प्रदान कर सकते हैं।

271. त्रिदिशाधिपाय

तीनों दिशाओं के सार्वभौम स्वामी को नमन।

विस्तार : त्रिदिशाधिपाय नाम संस्कृत के दो शब्दों, त्रि-दिशा और अधिप का एक यौगिक है।

त्रि-दिशा: इसका शाब्दिक अर्थ है "तीन दिशाएँ"। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान और आध्यात्मिक प्रतीकवाद में, "तीन दिशाओं" के कई गहन अर्थ हो सकते हैं:

• तीन प्राथमिक स्थानिक दिशाएँ (अक्सर तीन मुख्य दिशाओं के रूप में समझी जाती हैं: पूर्व, पश्चिम और उत्तर, या एक अधिक सामान्यीकृत त्रि-आयामी स्थान)। • तीन लोक या जगत: स्वर्ग (आकाशीय क्षेत्र), मर्त्यलोक (पृथ्वी लोक), और पाताल (अधोलोक या निम्न क्षेत्र)। ये उच्चतम स्वर्ग से लेकर गहरे नरक तक, अस्तित्व की समग्रता का प्रतिनिधित्व करते हैं। • समय के तीन पहलू: भूत, वर्तमान और भविष्य।

अधिप: इसका अर्थ है "स्वामी", "संप्रभु शासक", "मालिक", या "रक्षक"।

सभी लोकों के संप्रभु (Sovereign of All Realms) "तीनों दिशाओं के संप्रभु स्वामी" के रूप में, काल भैरव को अस्तित्व के सभी तलों - स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल - के निर्विवाद शासक के रूप में चित्रित किया गया है। यह उनकी सर्वव्यापकता और सर्वशक्तिमानता को दर्शाता है। कोई भी लोक या आयाम उनके अधिकार क्षेत्र या नियंत्रण से बाहर नहीं है। वे इन त्रिपक्षीय विभाजनों के भीतर की शक्तियों और प्राणियों को नियंत्रित करते हैं, ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) को बनाए रखते हैं। यह पहलू उनके परम अधिकार की भूमिका पर जोर देता है, जिसके अधीन जीवन और अस्तित्व के सभी रूप अंततः आते हैं।

स्थान और समय के स्वामी (Master of Space and Time) यह देखते हुए कि समय को अक्सर प्रगति की "दिशाओं" (भूत, वर्तमान, भविष्य) से जोड़ा जाता है, त्रिशिदा पर उनकी संप्रभुता का अर्थ सभी लौकिक आयामों पर उनकी महारत भी है। वे स्वयं काल, समय का प्रतीक हैं, और इस प्रकार सभी अवधियों में घटनाओं के अनावरण को नियंत्रित करते हैं। वे सृष्टि, संरक्षण और विनाश के ब्रह्मांडीय नृत्य के स्वामी हैं जो सभी स्थानिक और लौकिक सीमाओं पर होता है।

पवित्र स्थानों के संरक्षक (Custodian of Sacred Spaces) अधिक स्थानीय अर्थ में, यह नाम विशिष्ट पवित्र दिशाओं या मंदिर परिसरों के संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका को भी दर्शाता है। भैरव पारंपरिक रूप से क्षेत्रपाल (क्षेत्र/प्रदेश के रक्षक) हैं, और यह नाम उस संरक्षण को पूरे स्थान तक विस्तारित करता है, सृष्टि की पवित्रता और व्यवस्था सुनिश्चित करता है।

272. त्रिलोचनाय

सूर्य, चंद्रमा और अग्नि का प्रतिनिधित्व करने वाली तीन आँखों वाले को नमन।

विस्तार : त्रिलोचना (त्रिलोचनाय) नाम संस्कृत शब्दों "त्रि" (तीन) और "लोचन" (आँखें) का एक यौगिक है, जिसका अर्थ है "तीन आँखों वाला।" यह विशेषण गहन प्रतीकात्मक है और भगवान शिव और, विस्तार से, कालभैरव के सबसे प्रतिष्ठित गुणों में से एक है।

तीन आँखें: सूर्य, चंद्रमा और अग्नि शिव/कालभैरव की तीन आँखें केवल भौतिक अंग नहीं हैं, बल्कि ब्रह्मांडीय शक्तियों और चेतना की अवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं:

1. दाहिनी आँख (सूर्य - सूर्य): यह आँख सूर्य का प्रतीक है, जो सृष्टि, गतिविधि, प्रकाश और जाग्रत अवस्था (जाग्रत अवस्था) का प्रतिनिधित्व करती है। यह बाहरी धारणा और इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त सभी ज्ञान को दर्शाती है। यह अस्तित्व के सक्रिय सिद्धांत से जुड़ी है।

2. बाईं आँख (चंद्रमा - चंद्र): यह आँख चंद्रमा का प्रतीक है, जो संरक्षण, शीतलता, पोषण और स्वप्न अवस्था (स्वप्न अवस्था) का प्रतिनिधित्व करती है। यह आंतरिक धारणा, अंतर्ज्ञान और भावनाओं को दर्शाती है। यह निष्क्रिय सिद्धांत और अवचेतन मन से जुड़ी है।

3. तीसरी आँख (अग्नि - अग्नि): भौंहों के बीच माथे पर स्थित, यह शायद सबसे महत्वपूर्ण है। यह अग्नि (अग्नि) का प्रतीक है और विनाश, परिवर्तन, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और सुषुप्ति अवस्था (सुषुप्ति अवस्था) का प्रतिनिधित्व करती है, जो अंततः तुरीय (अतींद्रिय) अवस्था की ओर ले जाती है। यह ज्ञान की आँख (ज्ञान चक्षुः) है, जो द्वैत और पारंपरिक वास्तविकता से परे देखती है। जब यह आँख खुलती है, तो यह आमतौर पर भयंकर परिवर्तन, अज्ञान (अविद्या), अहंकार (अहंकार) के विनाश और इच्छाओं या नकारात्मक शक्तियों के जलने का संकेत देती है। यह ब्रह्मांडीय बुराई के विनाश या एक चक्र (प्रलय) के अंत में ब्रह्मांड के पुन: अवशोषण का भी संकेत दे सकती है।

द्वैत और समय से परे तीन आँखें चेतना की तीन अवस्थाओं (जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति), तीन गुणों (सत्त्व, रजस, तमस), तीन लोकों (स्वर्ग, पृथ्वी, पाताल) और समय के तीन पहलुओं (भूत, वर्तमान, भविष्य) पर शिव की महारत का प्रतीक हैं। इन तीनों को धारण करके, कालभैरव इन सीमाओं को पार कर जाते हैं, जो सामान्य धारणा और लौकिक अस्तित्व की सीमाओं से परे हैं। उनकी तीसरी आँख, विशेष रूप से, उन्हें भौतिक से परे देखने और परम सत्य को समझने की क्षमता प्रदान करती है।

सर्वज्ञता और सर्वशक्तिमानता का प्रतीक त्रिलोचना का अर्थ सर्वज्ञता (सब कुछ जानने वाला) है क्योंकि वह सभी स्तरों पर एक साथ वास्तविकता को समझता है और अस्तित्व की गहन गहराइयों में अंतर्दृष्टि रखता है जो पारंपरिक दृष्टि से छिपी हुई हैं। यह उसकी सर्वशक्तिमानता (सर्वशक्तिमान) को भी दर्शाता है, क्योंकि उसकी तीसरी आँख का खुलना किसी भी चीज़ को भस्म करने में सक्षम है - कामदेव (इच्छा के देवता) से लेकर पूरे ब्रह्मांड तक।

भक्त के लिए, कालभैरव को त्रिलोचना के रूप में ध्यान करने से उनकी अपनी आंतरिक तीसरी आँख को जगाने में मदद मिलती है, जिससे उच्च चेतना, आध्यात्मिक विवेक और अज्ञान से मुक्ति मिलती है।

273. त्रयीवेद्याय

तीनों वेदों के माध्यम से जाने जाने वाले ज्ञान के परम विषय को नमन।

विस्तार : त्रयीवेद्याय नाम त्रयी और वेद्य शब्दों का एक यौगिक है, और यह वैदिक परंपरा के संबंध में भैरव की सर्वोच्च दिव्य स्थिति को गहराई से समाहित करता है, भले ही वे एक ऐसे देवता हों जो इसके कई बाह्य रूपों से परे हैं।

त्रयी: वेदों की त्रिमूर्ति त्रयी का शाब्दिक अर्थ "त्रिमूर्ति" या "त्रिविध" है। वैदिक साहित्य के संदर्भ में, यह विशेष रूप से तीन प्रमुख वेदों को संदर्भित करता है: • ऋग्वेद: भजन, स्तुति, ज्ञान और मंत्रों का वेद। • यजुर्वेद: यज्ञ सूत्रों और अनुष्ठानों का वेद। • सामवेद: धुनों, मंत्रों और संगीत व्यवस्थाओं का वेद। ये तीनों वेद वैदिक संहिता का मूल बनाते हैं और परम सत्य (ब्रह्म) और मुक्ति (मोक्ष) के मार्ग को प्रकट करने वाले मूलभूत धर्मग्रंथ माने जाते हैं।

वेद्य: ज्ञान का विषय वेद्य का अर्थ है "जो जानने योग्य है," "ज्ञानगम्य," या "ज्ञान का विषय।" यह सभी बौद्धिक, आध्यात्मिक और शास्त्रीय जांच का अंतिम लक्ष्य या उद्देश्य दर्शाता है।

वैदिक ज्ञान का परम विषय इस प्रकार, त्रयीवेद्याय का अर्थ है कि श्री कालभैरव परम विषय, परम सत्य और परम वास्तविकता हैं जिसे तीनों वेदों के अध्ययन, चिंतन और अभ्यास के माध्यम से समझा, ध्यान किया और अनुभव किया जाना है। जबकि भैरव को अक्सर तांत्रिक परंपराओं से जोड़ा जाता है जो कभी-कभी सख्त वैदिक रूढ़िवादिता के बाहर काम करती हैं, यह नाम वैदिक ढांचे के

भीतर भी उनकी सर्वोच्च स्थिति को स्थापित करता है। यह प्रकट करता है कि गूढ़ सत्य, दिव्य का मूलभूत स्वरूप, जिसे वेद व्यक्त करना चाहते हैं, अंततः भैरव जैसे देवता की ओर इशारा करता है, जो भयंकर और निरपेक्ष दोनों को मूर्त रूप देते हैं।

अनुष्ठानों से परे शुद्ध ज्ञान तक यह नाम इस बात पर जोर देता है कि वैदिक ज्ञान का सार - न केवल बाहरी अनुष्ठान या काव्यात्मक छंद - इस सर्वोच्च दिव्य सिद्धांत को जानने की दिशा में निर्देशित है। इस अर्थ में, भैरव केवल एक देवता नहीं हैं, बल्कि उस पारलौकिक वास्तविकता का सार हैं जिसे वेद उजागर करना चाहते हैं। भैरव को जानना पवित्र ग्रंथों में छिपे सत्य को वास्तव में समझना है।

274. त्रिरवचः स्थाय

तीनों पवित्र उच्चारों (भूर, भुवः, स्वः) में प्रतिष्ठित रहने वाले को नमन।

विस्तार : त्रिवर्चः स्थाय नाम कालभैरव का एक गहन वर्णन है, जो उन्हें मौलिक ब्रह्मांडीय ध्वनियों और वास्तविकताओं से जोड़ता है। यह "त्रि" (तीन) और "वर्चः" (उच्चारण/तेज/शक्तियाँ) से व्युत्पन्न है, जिसमें "स्थाय" स्थापना या उसमें निहित होने का संकेत देता है। यहाँ विशिष्ट संदर्भ तीन व्याहृतियों: भूर, भुवः और स्वः से है।

तीन व्याहृतियाँ (भूर, भुवः, स्वः) व्याहृतियाँ रहस्यमय उच्चारण हैं, जिन्हें अक्सर गायत्री मंत्र से पहले जपा जाता है, जो अस्तित्व के तीन प्राथमिक तलों या लोकों का प्रतिनिधित्व करते हैं:

• भूर (भूलोक): पृथ्वी, अस्तित्व का भौतिक तल, जहाँ प्राणी जन्म, मृत्यु और कर्म के प्रभावों का अनुभव करते हैं। यह स्थूल, भौतिक संसार का प्रतिनिधित्व करता है। • भुवः (भुवर्लोक): मध्यवर्ती अंतरिक्ष, ईथर या सूक्ष्म तल, सूक्ष्म शरीर का क्षेत्र, और अर्ध-दिव्य प्राणियों (गंधर्व, अप्सरा) और दिवंगत आत्माओं का निवास स्थान। यह प्राण (vital energy) के सूक्ष्म क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है। • स्वः (स्वर्लोक): स्वर्ग, दिव्य तल, देवताओं और उच्चतर प्राणियों का निवास स्थान, जो प्रकाश और आनंद से चिह्नित है। यह कारण तल (causal realm), प्रकाश और चेतना का स्रोत का प्रतिनिधित्व करता है।

तीन लोकों में स्थापित "तीन पवित्र उच्चारणों में स्थापित" होने से, कालभैरव को अस्तित्व के इन तीन मौलिक तलों के सर्वोच्च स्वामी और नियंत्रक के रूप में पुष्टि की जाती है। वे केवल उनमें निवास नहीं करते; वे ही ये लोक हैं, वे उनमें व्याप्त हैं और उन्हें बनाए रखते हैं, और उनकी शक्ति उन सभी को नियंत्रित करती है जो उनके भीतर घटित होता है। यह वास्तविकता के सभी आयामों में उनकी सर्वव्यापकता और सर्वशक्तिमानता को उजागर करता है।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था और ध्वनि का प्रतीक व्याहृतियाँ केवल भौगोलिक स्थान नहीं हैं, बल्कि चेतना की विभिन्न अवस्थाओं और वास्तविकता की परतों का भी प्रतिनिधित्व करती हैं। कालभैरव, त्रिवर्चः स्थाय के रूप में, स्थूल भौतिक से लेकर सूक्ष्मतम दिव्य लोकों तक, संपूर्ण ब्रह्मांडीय व्यवस्था को मूर्त रूप देते हैं। इन आदिम उच्चारणों में उनकी स्थापना उन्हें ध्वनि (वाक्) की शक्ति से भी जोड़ती है, जो एक रचनात्मक और विनाशकारी शक्ति है, जो परम देवता के रूप में उनकी भूमिका के अनुरूप है। इन उच्चारणों में उनकी उपस्थिति का अर्थ है कि वे अंतर्निहित वास्तविकता और इन तलों से गुजरने वाले सभी प्राणियों का अंतिम गंतव्य हैं।

275. त्रिवर्गदाय

जीवन के तीनों लक्ष्यों (धर्म, अर्थ, काम) को प्रदान करने वाले (भैरव) को नमन।

विस्तार : त्रिवर्गदाय नाम संस्कृत के शब्दों त्रिवर्ग और दाय से लिया गया है।

त्रिवर्ग: यह शास्त्रीय हिंदू दर्शन के अनुसार मानव जीवन के तीन प्रमुख लक्ष्यों या अनुसंधानों के "तीन के समूह" को संदर्भित करता है: 1. धर्म: धार्मिक आचरण, नैतिक कर्तव्य, नैतिक जीवन और ब्रह्मांडीय नियम का पालन। इसमें सत्य, न्याय और आध्यात्मिक योग्यता के सिद्धांत शामिल हैं। 2. अर्थ: भौतिक समृद्धि, आर्थिक कल्याण, संसाधन और आरामदायक तथा सुरक्षित जीवन जीने के साधन, जो नैतिक साधनों से प्राप्त होते हैं। 3. काम: वैध इच्छाएँ, सुख, प्रेम और संवेदी तथा भावनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति।

दाय: दाता, देने वाला, प्रदाता।

तीन लक्ष्यों का दाता त्रिवर्गदाय के रूप में, कालभैरव को एक पूर्ण और संतुलित मानव अस्तित्व के इन तीन मूलभूत स्तंभों के दिव्य स्रोत और अनुदानकर्ता के रूप में पूजा जाता है। इसका अर्थ केवल भौतिक दान नहीं है, बल्कि व्यक्तियों को इन लक्ष्यों को धार्मिक रूप से प्राप्त करने के लिए परिस्थितियाँ, अवसर और आंतरिक क्षमताएँ प्रदान करना है।

आध्यात्मिक और भौतिक कल्याण यह नाम भैरव के परोपकारी पहलू को उजागर करता है, जहाँ वे अपने भक्तों को न केवल उनकी आध्यात्मिक यात्रा में, बल्कि उनके सांसारिक प्रयासों में भी सहायता करते हैं। वे यह सुनिश्चित करते हैं कि जो लोग उनकी कृपा चाहते हैं, वे ऐसा जीवन जी सकें जो धार्मिक (धार्मिक) हो, अर्थ (समृद्धि) की अनुमति देता हो, और काम (इच्छाओं की पूर्ति) को अच्छे के मार्ग से विचलित हुए बिना सक्षम बनाता हो।

ब्रह्मांडीय नियामक व्यक्तिगत आशीर्वाद से परे, यह उनकी ब्रह्मांडीय नियामक के रूप में भूमिका को भी दर्शाता है जो ब्रह्मांड के उचित कामकाज को सुनिश्चित करते हैं, जहाँ धर्म, अर्थ और काम के सिद्धांतों को बनाए रखा जाता है और सुलभ बनाया जाता है। वे परम सत्ता हैं जो व्यक्ति के कार्यों और गुणों के आधार पर इन प्रयासों के फल प्रदान या रोक सकते हैं।

इस प्रकार, त्रिवर्गदाय मानव अनुभव के पूरे स्पेक्ट्रम, सबसे सांसारिक से लेकर सबसे उदात्त तक, की देखरेख और सुविधा प्रदान करने की उनकी व्यापक शक्ति को दर्शाता है।

276. दूराय

जो दूर और परे हैं, इन्द्रियों की पहुँच से परे हैं, उनको नमन।

विस्तार : दूराय नाम दिव्य, विशेषकर शिव के पारलौकिक और अबोध्य स्वरूप को समाहित करता है, जो सामान्य मानवीय धारणा और अनुभव की पहुँच से परे है।

पारलौकिकता और अगम्यता दूर का शाब्दिक अर्थ है "दूर", "विद्यमान" या "रिमोट"। कालभैरव का यह पहलू दर्शाता है कि वे मौलिक रूप से सांसारिक दुनिया और उसकी सीमाओं से भिन्न हैं। वे स्थान, समय या कार्य-कारण से बंधे नहीं हैं, जो सभी प्रपंचमय ब्रह्मांड की रचनाएँ हैं। उनका वास्तविक स्वरूप पाँच इंद्रियों (दृष्टि, श्रवण, गंध, स्वाद, स्पर्श) और यहाँ तक कि अनुभवजन्य मन की पहुँच से भी परे है। वे परम सत्य हैं जिसे केवल बौद्धिक तर्क या संवेदी इनपुट के माध्यम से पूरी तरह से समझा नहीं जा सकता है।

मानवीय समझ से परे यह दूरी दर्शाती है कि कालभैरव, अपने निरपेक्ष रूप में, असीमित चेतना हैं, सभी अभिव्यक्तियों से पहले। वे स्रोत हैं, फिर भी स्वयं अप्रकट हैं, जो उन्हें अपनी ही रचनाओं से स्वाभाविक रूप से "दूर" बनाता है। यह परिप्रेक्ष्य आध्यात्मिक दर्शन में अपोफैटिक परंपरा पर जोर देता है, जो दिव्य का वर्णन इस बात से करता है कि वह क्या नहीं है, बजाय इसके कि वह क्या है, इसकी परम अनिर्वचनीयता को स्वीकार करते हुए।

अंतर्निहितता और पारलौकिकता का विरोधाभास जबकि दूराय उनकी पारलौकिकता पर जोर देता है, यह शिव के स्वरूप के विरोधाभास की ओर भी सूक्ष्मता से इंगित करता है: वे एक साथ सबसे दूर और सबसे अंतरंग हैं। वे अपने निरपेक्ष, अप्रकट रूप में दूर हैं, लेकिन प्रत्येक प्राणी में अंतर्निहित आत्मा (आत्मन) के रूप में भी अत्यंत निकट हैं। "दूरी" माया (भ्रम) की आवरण शक्ति को संदर्भित करती है जो सामान्य चेतना को उनकी सर्वव्यापकता के सत्य को समझने से रोकती है। दूराय को समझना इन आवरणों को पार करना और उस एकता को समझना है जो सभी अस्तित्व के मूल में है।

277. वादस्थानघ्नाय

सभी विवादों और तर्कों के स्थानों को नष्ट करने वाले को नमन।

विस्तार : "वादखस्थानघ्न" नाम तीन संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: "वाद," "खस्थान," और "घ्न।" प्रत्येक घटक कालभैरव के इस विशेषण के गहन अर्थ में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

वाद (Vāda): यह शब्द मुख्य रूप से "विवाद," "तर्क," "बहस," "विवाद" या "चर्चा" को संदर्भित करता है। एक व्यापक दार्शनिक अर्थ में, इसमें किसी के अपने विचारों या हठधर्मिता से लगाव भी शामिल हो सकता है, जो अक्सर समझ के बजाय संघर्ष को जन्म देता है।

खस्थान (Khasthāna): इस शब्द को आगे तोड़ा जा सकता है। "ख" का अर्थ "अंतरिक्ष," "शून्य," "आकाश" या "गगन" है। "स्थान" का अर्थ "जगह," "निवास," "स्थिति" या "अवस्था" है। इस प्रकार, "खस्थान" का सीधा अर्थ "आकाश में एक जगह" या "अंतरिक्ष में एक स्थिति" हो सकता है। हालांकि, इस नाम के लिए एक लाक्षणिक और अधिक प्रासंगिक संदर्भ में, यह उस "अखाड़े" या "क्षेत्र" को संदर्भित करता है जिसमें ये विवाद और तर्क होते हैं, चाहे शाब्दिक रूप से या लाक्षणिक रूप से। यह उस वैचारिक स्थान का सुझाव देता है जहाँ असहमति को बढ़ावा दिया जाता है।

घ्न (Ghna): इस प्रत्यय का अर्थ "नाश करने वाला," "वध करने वाला," "हत्यारा" या "जो हटाता है।"

बहसों और विवादों का नाश करने वाला (आंतरिक और बाहरी) (Destroyer of Debates and Disputes - Inner and Outer) वादखस्थानघ्न के रूप में, कालभैरव को विवाद और तर्क-वितर्क के "स्थानों" या "अखाड़ों" को नष्ट करने वाले के रूप में आह्वान किया जाता है। यह विनाश केवल भौतिक नहीं बल्कि गहरा आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक है।

1. वैचारिक स्थान का सामंजस्य स्थापित करने वाला (Harmonizer of Conceptual Space): वह उन स्थितियों और वैचारिक ढाँचों को समाप्त करते हैं जो संघर्षों, बहसों और विभाजनकारी तर्कों को जन्म देते हैं। इसमें बौद्धिक अभिमान, कठोर हठधर्मिता और किसी के अपने सीमित दृष्टिकोणों से लगाव को दूर करना शामिल है जो सत्य की सामंजस्यपूर्ण समझ को रोकते हैं।

2. संघर्ष का अंत करने वाला (Ender of Conflict): यह पहलू कलह को समाप्त करने में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है, चाहे वह दार्शनिक प्रवचन में एक बौद्धिक संघर्ष हो, अंतर-व्यक्तिगत असहमति हो, या आंतरिक मानसिक युद्ध हो जहाँ कोई लगातार खुद से बहस कर रहा हो या परस्पर विरोधी विचारों से चिपका हुआ हो।

3. एकता का प्रणेता (Promoter of Unity): "विवाद के स्थानों" को नष्ट करके, वह एकता, स्पष्टता और उच्च आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि का मार्ग प्रशस्त करते हैं जो द्वैतवादी सोच और निरंतर तर्क-वितर्क की आवश्यकता से परे है। वह अपने भक्तों को संतुलन और शांति की स्थिति में ले जाते हैं, जहाँ सत्य को अंतहीन परस्पर विरोधी विचारों के लेंस के बजाय सीधे अनुभव किया जाता है।

4. भ्रम से परे (Transcending Illusion): एक गहरे योगिक अर्थ में, वाद मानसिक बकवास और विचलित करने वाली विचार प्रक्रियाओं को भी संदर्भित कर सकता है जो एक भ्रामक वास्तविकता का निर्माण करती हैं। "वाद के स्थान" को नष्ट करके, कालभैरव भक्तों को मन को शांत करने, भ्रम

से परे जाने और परम, अद्वैत वास्तविकता का अनुभव करने में मदद करते हैं जहाँ कोई विवाद मौजूद नहीं हो सकता है।

संक्षेप में, यह नाम कालभैरव को सभी प्रकार के विवादों के परम नाशक के रूप में चित्रित करता है, जो अपने भक्तों को गहरी शांति, बौद्धिक स्पष्टता और आध्यात्मिक सद्भाव की स्थिति की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

278. दुर्दशाय

दुष्टों के लिए कठिन या विपत्तिजनक परिस्थितियाँ उत्पन्न करने वाले को नमन।

विस्तार : दुर्दर्शाय नाम संस्कृत शब्द दुर्दर्श (दुर्दश) से लिया गया है जिसका अर्थ है "बुरी स्थिति," "विपत्ति," "दुर्भाग्य," या "दुःख।" जब इसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रत्यय -आय (उस एक को) जोड़ा जाता है, तो यह ऐसी स्थितियों के कर्ता या प्रदाता को इंगित करता है।

दुष्टों के लिए प्रतिकूलता लाने वाला काल भैरव, इस पहलू में, सर्वोच्च न्यायाधीश और ब्रह्मांडीय नियम (धर्म) के प्रवर्तक के रूप में कार्य करते हैं। वह उन लोगों को "कठिन परिस्थितियाँ" या "विपत्तियाँ" (दुर्दर्श) प्रदान करते हैं जो अधर्मी कार्यों, दुष्ट कर्मों, या धर्म के विरुद्ध अपराधों में संलग्न होते हैं। यह दुर्भावना से नहीं, बल्कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखने और सुधारात्मक कर्म प्रदान करने के लिए एक आवश्यक अनुशासनात्मक उपाय के रूप में होता है।

प्रतिशोध का सिद्धांत यह नाम कर्म के सिद्धांत में भैरव की भूमिका को उजागर करता है - कि प्रत्येक क्रिया की एक समान और विपरीत प्रतिक्रिया होती है। जो लोग धर्म के मार्ग से विचलित होते हैं, उनके लिए वह यह सुनिश्चित करते हैं कि परिणाम गंभीर और चुनौतीपूर्ण जीवन स्थितियों के रूप में प्रकट हों, अंततः उन्हें शुद्धि या अंतिम विलय की ओर ले जाएँ।

कठिनाई के माध्यम से अज्ञानता का निवारण हालांकि यह दंडात्मक प्रतीत होता है, ये "कठिन परिस्थितियाँ" एक उच्च आध्यात्मिक उद्देश्य की भी पूर्ति करती हैं। वे परिवर्तन के उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती हैं, व्यक्ति को अपने नकारात्मक कर्मों का सामना करने, आत्मनिरीक्षण करने और अंततः सांत्वना और शुद्धि के लिए दिव्य की ओर मुड़ने के लिए मजबूर करती हैं। इस अर्थ में, वह एक दयालु अनुशासक हैं जो दुष्टों के अज्ञान और अहंकार को दूर करने के लिए कठिनाई का उपयोग करते हैं, उन्हें एक दर्दनाक प्रक्रिया के माध्यम से भी, अंततः आध्यात्मिक विकास की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

दिव्य न्याय का प्रतीक दुर्दर्शाय काल भैरव द्वारा व्यक्त दिव्य न्याय की अटूट और निष्पक्ष प्रकृति का प्रतिनिधित्व करता है, यह सुनिश्चित करता है कि अस्तित्व के विशाल ताने-बाने में कोई भी अधर्मी कार्य अनसुलझा न रहे।

279. दुस्सहोदयाय

जिनके शत्रु उनके उदय या प्रकट होने को सहन नहीं कर सकते, उन्हें नमन।

विस्तार : दुस्सह्योदय नाम दो संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: दुस्सह और उदय।

• दुस्सह (Dussaha): इसका अर्थ है "असहनीय," "असह्य," "सहन करना या झेलना कठिन," या "अभिभूत करने वाला।" यह ऐसी किसी चीज़ को दर्शाता है जो उन लोगों के लिए अत्यधिक असुविधा, भय या विनाश का कारण बनती है जो इसका सामना करते हैं। युद्ध या शत्रुतापूर्ण संदर्भ में, यह एक जबरदस्त शक्ति को संदर्भित करता है।

• उदय (Udaya): इसका अर्थ है "प्रकट होना," "उदय होना," "उद्भव," "भोर," या "समृद्धि।" जब किसी दिव्य सत्ता पर लागू होता है, तो यह उनके प्रकट होने या उनकी शक्ति या उपस्थिति के उदय का प्रतीक है।

शत्रुओं के लिए अभिभूत करने वाला प्रकटीकरण (Overpowering Manifestation for Enemies) जब संयुक्त किया जाता है, तो दुस्सह्योदय उस एक का वर्णन करता है जिसका "प्रकट होना असहनीय है" या जिसकी "उदय (शक्ति/प्रकटीकरण) उसके विरोधियों के लिए असह्य है।" यह कालभैरव को धर्म, ब्रह्मांडीय व्यवस्था, या अपने भक्तों के विरोध में खड़े लोगों के खिलाफ एक जबरदस्त और विनाशकारी शक्ति के रूप में स्पष्ट रूप से चित्रित करता है। उनके शत्रुओं के लिए, उनका प्रकटीकरण न केवल भयावह है बल्कि पूरी तरह से लकवाग्रस्त और विनाशकारी है। इसका तात्पर्य है कि प्रतिरोध व्यर्थ है; उनकी मात्र उपस्थिति उनके अपरिहार्य पतन का संकेत देती है।

दुष्टों के लिए आतंक (Terror to the Wicked) यह नाम कालभैरव की एक भयंकर रक्षक के रूप में भूमिका पर प्रकाश डालता है जो दुष्टों, राक्षसों और सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जाओं में पूर्ण आतंक पैदा करता है। उनका "उदय" उन दुर्भावनापूर्ण शक्तियों को शांत करने के लिए उनके द्वारा की गई त्वरित और निर्णायक कार्रवाई का प्रतीक है, जिससे उनके लिए उनकी उपस्थिति में बने रहना असंभव हो जाता है। यह उनकी सर्वोच्च शक्ति का एक प्रमाण है, जिसे कोई भी विरोधी शक्ति सहन नहीं कर सकती।

परम सत्ता (Ultimate Authority) "असहनीय" पहलू एक ऐसी सत्ता का भी सुझाव देता है जो इतनी पूर्ण है कि उसे चुनौती नहीं दी जा सकती। उन लोगों के लिए जो ब्रह्मांडीय कानून का उल्लंघन करते हैं, उनका न्याय और शक्ति का प्रकटीकरण केवल एक दंड नहीं है, बल्कि उनकी कार्य करने की क्षमता का विनाश है। यह समय और विनाश के सर्वोच्च अधिपति के रूप में उनकी स्थिति को पुष्ट करता है, जिनकी इच्छा अप्रतिरोध्य है।

280. पराय

जो परम, श्रेष्ठ और सबसे परे हैं, उन (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : नाम पर (परा) भगवान शिव की परम श्रेष्ठता और परात्परता को दर्शाता है, विशेष रूप से उनके उग्र रूप कालभैरव में।

परम और परात्पर (The Supreme and Transcendent) "पर" का शाब्दिक अर्थ है "उच्चतम," "सर्वोच्च," "अंतिम," "परे," या "अन्य।" दार्शनिक और आध्यात्मिक संदर्भों में, यह उस सत्ता को संदर्भित करता है जो सभी गुणों, वर्णनों और द्वंद्वों से परे है। यह उस परम वास्तविकता (परब्रह्म) का प्रतिनिधित्व करता है जो अव्यक्त, निराकार और बुद्धि या इंद्रियों की पकड़ से परे है। कालभैरव, पर के रूप में, इस परम, असीमित अवस्था का प्रतीक हैं, जो उस संपूर्ण ब्रह्मांड से स्वतंत्र और परे हैं जिस पर वे शासन करते हैं।

सभी सीमाओं से परे (Beyond All Limitations) यह नाम इस बात पर जोर देता है कि कालभैरव केवल एक देवमंडल के भीतर एक शक्तिशाली देवता नहीं हैं, बल्कि वे आदिम प्रेरक और चेतना हैं जो सभी सृष्टि से पहले मौजूद हैं और उसमें व्याप्त हैं। वे स्थान से परे, समय से परे, कारण और प्रभाव से परे, और यहां तक कि अच्छे और बुरे की अवधारणाओं से भी परे हैं। वे वह आधार हैं जिस पर समस्त अस्तित्व टिका है, फिर भी वे इससे अछूते और अप्रभावित रहते हैं।

परम लक्ष्य (The Ultimate Goal) आध्यात्मिक साधकों के लिए, "पर" मुक्ति (मोक्ष) के परम लक्ष्य को भी दर्शाता है, जो इस परात्पर वास्तविकता के साथ एक होने या उसे प्राप्त करने की अवस्था है। कालभैरव को पर के रूप में पहचानना उन्हें परम स्रोत और गंतव्य के रूप में स्वीकार करना है, वे जो सभी सापेक्ष अस्तित्व को निरपेक्ष में विलीन करके जन्म और मृत्यु के चक्रों से मुक्ति प्रदान करते हैं।

संक्षेप में, पर कालभैरव के असीमित, आदिम सार की ओर इंगित करता है जो सभी अभिव्यक्तियों का आधार है, जिससे वे परम सत्य और सर्वोच्च चेतना बन जाते हैं।

281. देवाय

जो दिव्य, प्रकाशमान और स्वर्गीय सत्ता हैं, उनको नमन।

विस्तार : देवा (Deva) नाम संस्कृत और हिंदू दर्शन में एक मूलभूत शब्द है, जिसका अर्थ है "दिव्य," "तेजस्वी," या "स्वर्गीय प्राणी।" यह "दिव" धातु से लिया गया है, जिसका अर्थ है "चमकना," "प्रकाशमान होना," या "उज्ज्वल होना।"

तेजस्वी अपने सबसे शाब्दिक अर्थ में, देव उन प्राणियों को संदर्भित करता है जो उज्ज्वल, प्रकाशमान और शानदार हैं। यह चमक केवल भौतिक प्रकाश नहीं है, बल्कि आंतरिक चमक, आध्यात्मिक ज्ञान, ज्ञान और पवित्रता को भी संदर्भित करती है। इस प्रकार, कालभैरव, देव के रूप में, सबसे तीव्र आध्यात्मिक प्रकाश का प्रतीक हैं जो अज्ञान और भ्रम के अंधकार को दूर करता है।

दिव्य सत्ता देव एक दिव्य या ईश्वर-तुल्य अस्तित्व को दर्शाता है, जो कालभैरव की ईश्वरत्व के एक पहलू के रूप में सर्वोच्च स्थिति को उजागर करता है। इसका तात्पर्य है कि वह स्वाभाविक रूप से पवित्र, पारलौकिक और सामान्य भौतिक क्षेत्र से परे हैं। उनके पास दिव्य गुण, शक्तियाँ और ज्ञान हैं जो मानवीय क्षमताओं से कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं। वह देवत्व के साक्षात अवतार हैं।

स्वर्गीय सत्ता देवों को आमतौर पर स्वर्गीय प्राणी, स्वर्ग (स्वर्गीय लोकों) के निवासी, या उच्चतर अस्तित्व के स्तरों पर कार्य करने वाले के रूप में समझा जाता है। जब भैरव को देव के रूप में संदर्भित किया जाता है, तो यह उनकी ब्रह्मांडीय स्थिति पर जोर देता है - वह केवल एक स्थानीय देवता नहीं हैं, बल्कि एक सार्वभौमिक, स्वर्गीय शक्ति हैं जो ब्रह्मांड को नियंत्रित करती हैं।

उपहारों के दाता देव शब्द में दाता होने का अर्थ भी निहित है, वह जो आशीर्वाद, वरदान और समृद्धि प्रदान करता है। एक देव के रूप में, कालभैरव को अपने भक्तों को आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष), सुरक्षा और सांसारिक कल्याण प्रदान करने वाले दिव्य दाता के रूप में देखा जाता है। उनकी दिव्य प्रकृति उन्हें इन परम लाभों को प्रदान करने की अनुमति देती है।

282. देवदेवाय

सभी देवताओं के देव, सर्वोच्च देवता को नमन।

विस्तार : देवदेवाय (देवदेव) नाम संस्कृत में निहित एक सम्मानजनक यौगिक है, जो कालभैरव की परम सर्वोच्चता को दर्शाता है।

देवताओं के देव देव का मुख्य अर्थ "देवता," "दिव्य प्राणी," या "स्वर्गीय" है। जब यह "देवदेव" यौगिक में जुड़ता है, तो इसका शाब्दिक अर्थ "देवताओं के देव" या "प्रभुओं के प्रभु" होता है। यह उपाधि स्पष्ट रूप से कालभैरव को ब्रह्मांडीय पदानुक्रम के शिखर पर रखती है, अन्य सभी देवताओं से ऊपर, जिसमें स्वर्गीय प्राणी (देव) भी शामिल हैं जो ब्रह्मांड के विभिन्न पहलुओं को नियंत्रित करते हैं।

सर्वोच्च देवता यह उपाधि सभी अन्य देवताओं और उनकी शक्तियों के स्रोत और पालक के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करती है। इसका तात्पर्य यह है कि जबकि अन्य देवता विशिष्ट कार्यों या क्षेत्रों की अध्यक्षता कर सकते हैं, देवदेव उन सभी को समाहित और अतिक्रमित करते हैं। उनका अधिकार पूर्ण है, और उनकी शक्ति परम है।

ब्रह्मांडीय नियंत्रक देवदेव की अवधारणा शैव धर्म में प्रमुख है, जहाँ शिव (और विस्तार से कालभैरव उनके उग्र स्वरूप के रूप में) को महादेव, महान देव के रूप में पूजा जाता है, जो ब्रह्मा, विष्णु और अन्य सभी छोटे देवताओं से श्रेष्ठ हैं। यह नाम ब्रह्मांड के सर्वोच्च नियंत्रक के रूप में उनकी स्थिति पर जोर देता है, जिनसे सभी अन्य दिव्य ऊर्जाएँ निकलती हैं और अंततः उन्हीं में लौट आती हैं।

दार्शनिक महत्व दार्शनिक रूप से, "देवताओं के देव" होने का अर्थ अद्वैतवादी सत्य की ओर इशारा करता है कि परम वास्तविकता एक है, और अन्य सभी देवता उस एक, सर्वोच्च चेतना के केवल पहलू या अभिव्यक्तियाँ हैं। इस संदर्भ में, कालभैरव केवल कई देवताओं में से एक नहीं हैं, बल्कि स्वयं देवत्व का सार हैं, वह आधार जिस पर अन्य सभी दिव्य रूप मौजूद हैं।

283. दुंदुभये

उन दिव्य ढोल को नमन, जिनकी ध्वनि ब्रह्मांडीय कंपन है।

विस्तार : दुन्दुभये नाम "दुन्दुभि" से लिया गया है, जो सीधे तौर पर एक बड़े ढोल, विशेषकर युद्ध-ढोल या स्वर्गीय ढोल को संदर्भित करता है। कालभैरव के लिए यह नाम अत्यधिक प्रतीकात्मक है, जो ब्रह्मांडीय कंपन और दिव्य आदेश की ध्वनि और सार दोनों का आह्वान करता है।

ब्रह्मांडीय ढोल (The Cosmic Drum) स्वर्गीय ढोल के रूप में, दुन्दुभि उस आदिम ध्वनि (शब्द) का प्रतिनिधित्व करता है जिससे सृष्टि का उद्भव होता है। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, ध्वनि अव्यक्त ब्रह्म की पहली अभिव्यक्ति है। कालभैरव के दुन्दुभि की गूँजती ध्वनि केवल शोर नहीं है, बल्कि एक शक्तिशाली, रचनात्मक और विनाशकारी शक्ति है जो पूरे ब्रह्मांड में प्रतिध्वनित होती है। यह वह लयबद्ध ताल है जो अस्तित्व के चक्रों - सृष्टि, संरक्षण और विघटन - को नियंत्रित करती है।

दिव्य अधिकार की ध्वनि (The Sound of Divine Authority) युद्ध-ढोल (दुन्दुभि) की ध्वनि पारंपरिक रूप से युद्ध की निकटता, विजय की घोषणा, या राजा के आदेश की घोषणा का संकेत देती है। कालभैरव के लिए, यह ब्रह्मांडीय कानून के अंतिम संप्रभु और प्रवर्तक के रूप में उनकी भूमिका को बढ़ाता है। उनकी ध्वनि शिव का आधिकारिक आदेश है, जो उनके भयंकर न्याय के आगमन या अज्ञानता और नकारात्मकता के विनाश का संकेत देती है। यह एक स्पष्ट आह्वान है जो ध्यान आकर्षित करता है और सम्मान और भय दोनों पैदा करता है।

अभिव्यक्ति का कंपन (Vibration of Manifestation) दुन्दुभि की ध्वनि उस निरंतर कंपन (स्पंदन) का प्रतीक है जो सभी घटनाओं का आधार है। ब्रह्मांड में सब कुछ कंपन की स्थिति में है, और कालभैरव, दुन्दुभये के रूप में, इस मौलिक दोलन के स्रोत और स्वामी हैं। यह शिव की गतिशील ऊर्जा, चेतना की जीवंत स्पंदन को संदर्भित करता है जो सब कुछ अस्तित्व में लाती है और अंततः उसे अपने में वापस खींच लेती है। इस दृष्टिकोण से, वह ब्रह्मांड की ही लय हैं।

बाधाओं का विनाशक (Destructor of Obstacles) जिस प्रकार ढोल की गड़गड़ाहट वाली ध्वनि मौन को भंग कर सकती है और बिखेर सकती है, उसी प्रकार दुन्दुभये का ब्रह्मांडीय कंपन सभी बाधाओं, नकारात्मक शक्तियों और अज्ञानता को दूर करने के लिए आह्वान किया जाता है। उनकी ध्वनि एक शक्तिशाली मंत्र (बीजाक्षर) है जो शुद्ध करता है और रक्षा करता है, भ्रम और मोह को काटता है।

284. दुन्दुभिप्रियाय

ढोल की ध्वनि प्रिय लगने वाले (भैरव) को नमन।

विस्तार : दुन्दुभिप्रियाय नाम दो संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है: दुन्दुभि और प्रियाय।

• दुन्दुभि (Dundubhi): यह एक बड़े ढोल, युद्ध के ढोल, या केतली ढोल को संदर्भित करता है, जो अपनी तेज़, गुंजायमान और अक्सर गर्जनापूर्ण ध्वनि के लिए जाना जाता है। प्राचीन भारत में, दुन्दुभि का उपयोग न केवल युद्ध में शत्रुओं में भय उत्पन्न करने और आदेशों का संकेत देने के लिए किया जाता था, बल्कि धार्मिक समारोहों में भी दिव्य उपस्थिति की घोषणा करने, शुभ अवसरों को चिह्नित करने और अनुष्ठानों के साथ बजाया जाता था। इसकी ध्वनि शक्तिशाली होती है और भव्यता तथा तत्काल उपस्थिति की भावना उत्पन्न करती है।

• प्रियाय (Priyāya): इसका अर्थ है "शौकीन", "प्रिय", या "प्यारा"।

दिव्य संगीतकार (The Divine Musician) दुन्दुभिप्रियाय के रूप में, भगवान कालभैरव को ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है जो ढोल की गुंजायमान ध्वनि में आनंद लेते हैं। यह पहलू उन्हें शिव के ब्रह्मांडीय नृत्य (तांडव) से जोड़ता है, जहाँ सृष्टि, संरक्षण और संहार की लय अक्सर शिव के डमरू (ढोल) की आदिम ध्वनि के साथ होती है। दुन्दुभि, एक बड़ा और अधिक गहन वाद्य यंत्र होने के कारण, इस ध्वनि को और अधिक बढ़ाता है, जो एक अधिक व्यापक और सर्व-समावेशी ब्रह्मांडीय लय का सुझाव देता है।

ब्रह्मांडीय लय का प्रतीक (Symbol of Cosmic Rhythm) दुन्दुभि की ध्वनि अक्सर आदिम ध्वनि (नाद) से जुड़ी होती है जिससे ब्रह्मांड उत्पन्न होता है। इसलिए, कालभैरव का इस ध्वनि के प्रति प्रेम अस्तित्व के कंपन सार पर उनके पूर्ण प्रभुत्व का प्रतीक है। यह सृष्टि और विनाश की लयबद्ध धड़कन, ब्रह्मांड की धड़कन का प्रतिनिधित्व करता है।

शुभ उपस्थिति और शक्ति (Auspicious Presence and Power) दुन्दुभि का बजना महत्वपूर्ण घटनाओं का भी संकेत दे सकता है, खासकर युद्ध के संदर्भ में। कालभैरव के लिए, यह उनकी शक्तिशाली और विस्मयकारी उपस्थिति का प्रतीक है, जिसे अक्सर नकारात्मक ऊर्जाओं को दूर करने, बाधाओं को दूर करने और भक्तों की रक्षा के लिए आह्वान किया जाता है। ढोल की गड़गड़ाहट वाली ध्वनि को उनकी शक्ति और बुराई की शक्तियों में भय पैदा करने की उनकी क्षमता के साथ-साथ अपने अनुयायियों में साहस भरने की अभिव्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है।

भक्ति का महत्व (Devotional Significance) भक्तों के लिए, दुन्दुभि की ध्वनि अर्पित करना या कालभैरव के इस पहलू पर ध्यान करना उनकी ऊर्जावान और गतिशील रूप से जुड़ने का एक तरीका हो सकता है। इसका तात्पर्य यह है कि वे भक्ति की अभिव्यक्तियों का जवाब देते हैं और उनसे प्रसन्न होते हैं जो जीवंत, शक्तिशाली और गहरी गुंजायमान होती हैं, ठीक ढोल की ध्वनि की तरह।

285. दृढायुधधारिणे

दृढ़ और प्रबल शस्त्र धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : दृढायुधधारिणे नाम संस्कृत शब्दों से व्युत्पन्न एक यौगिक है और यह कालभैरव की शक्ति और सुरक्षात्मक प्रकृति के एक महत्वपूर्ण पहलू का वर्णन करता है।

दृढ़ (Dridha): इसका अर्थ है "मजबूत," "ठोस," "अडिग," या "अविचल।" हथियारों के संदर्भ में, यह शक्तिशाली हथियारों पर एक अटूट पकड़ का तात्पर्य है, लेकिन इन हथियारों द्वारा दर्शाई गई शक्ति की अंतर्निहित शक्ति और अपरिवर्तनीयता का भी।

आयुध (Āyudha): यह "हथियार," "उपकरण," या "साधन" को संदर्भित करता है। दिव्य संदर्भ में, ये युद्ध के सामान्य उपकरण नहीं हैं, बल्कि ब्रह्मांडीय शक्तियों, दिव्य सिद्धांतों या विशिष्ट शक्तियों के प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व हैं।

धारिणे (Dhārine): यह धृ धातु से बना कर्तावाचक संज्ञा है, जिसका अर्थ है "धारण करना," "ले जाना," या "अधिकार रखना।"

भयंकर हथियारों को धारण करने वाला यह नाम कालभैरव को शक्तिशाली और अटूट हथियारों के पराक्रमी धारक के रूप में दर्शाता है। ये केवल भौतिक हथियार नहीं हैं, बल्कि उनके विभिन्न पहलुओं और ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखने तथा बुराई को नष्ट करने की उनकी क्षमता के शक्तिशाली प्रतीक हैं। उनके हथियार अपने उद्देश्य और प्रभाव में "दृढ़" (मजबूत, अटूट) हैं - वे कभी भी अपने लक्ष्य से नहीं चूकते या अपना उद्देश्य प्राप्त करने में विफल नहीं होते।

हथियारों का प्रतीकवाद हिंदू प्रतिमा विज्ञान में, देवता अक्सर विभिन्न हथियार धारण करते हैं, जिनमें से प्रत्येक का विशिष्ट प्रतीकात्मक अर्थ होता है: • त्रिशूल (Trishūla): तीन गुणों (सत्व, रजस, तमस), भूत, वर्तमान और भविष्य पर नियंत्रण, और अज्ञान तथा भ्रम को नष्ट करने की शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। • डमरू (Damaru): सृष्टि और विनाश की आदिम ध्वनि (नाद), ब्रह्मांडीय समय की लय का प्रतीक है। • खड्ग (Khadga): ज्ञान, अज्ञान को काटने वाली बुद्धि, और कर्म बंधनों को तोड़ने की शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। • कपाल (Kāpāla): मृत्यु पर उनकी महारत, भौतिक शरीर की क्षणभंगुरता, और श्मशान के स्वामी के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है। • मांदल (Noose): बांधने और मुक्त करने, बुराई को फंसाने, और भक्तों को सांसारिक आसक्तियों से विरक्त करने की उनकी शक्ति का प्रतीक है।

अटूट शक्ति और संरक्षण इन शक्तियों को "दृढ़ता से" धारण करके, कालभैरव इन ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं पर अपना पूर्ण नियंत्रण प्रदर्शित करते हैं। वे केवल इन शक्तियों से सुसज्जित नहीं हैं; वे उन्हें अटूट संकल्प और सटीकता के साथ प्रयोग करते हैं। यह गुण एक भयंकर रक्षक के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देता है जो किसी भी राक्षसी इकाई या नकारात्मक शक्ति को वश में कर सकता है, और एक गुरु के रूप में जो आध्यात्मिक बाधाओं के माध्यम से भक्तों को दृढ़ता से मार्गदर्शन कर सकता है। इन हथियारों पर उनकी पकड़ दृढ़ न्याय और अराजकता पर अंतिम विजय की गारंटी है।

286. धनदाय

जो अपार धन और संपत्ति प्रदान करते हैं, उनको नमन।

विस्तार : धनदाय नाम संस्कृत शब्दों 'धन' और 'दाय' से लिया गया है, जिसका अर्थ धन प्रदान करने का कार्य है।

धन का दाता • 'धन' का शाब्दिक अर्थ "संपत्ति," "धन-दौलत," "अधिकार," या "सौभाग्य" है। • 'दाय' का अर्थ "देना," "प्रदान करना," या "अनुदान देना" है। • इसलिए, धनदाय का अर्थ है "वह जो धन प्रदान करता है" या "धन का दाता।"

कुबेर से संबंध हिंदू पौराणिक कथाओं में, 'धन' विशेष रूप से कुबेर, धन के देवता से जुड़ा है, जिन्हें अक्सर भगवान शिव के एक करीबी सहयोगी और कोषाध्यक्ष के रूप में दर्शाया जाता है। जबकि कुबेर धन के प्रत्यक्ष संरक्षक और वितरक हैं, शिव (और विस्तार से, कालभैरव, उनका उग्र स्वरूप) को सभी धन, भौतिक और आध्यात्मिक, का अंतिम स्रोत और नियंत्रक माना जाता है। कुबेर शिव के अधीन सेवा करते हैं। इसलिए, कालभैरव को धनदाय के रूप में आह्वान करना उनकी प्रचुरता और समृद्धि पर सर्वोच्च नियंत्रण को स्वीकार करता है।

भौतिक धन से परे जबकि सबसे स्पष्ट अर्थ भौतिक समृद्धि को संदर्भित करता है, आध्यात्मिक संदर्भ में "धन" की अवधारणा केवल मौद्रिक या सांसारिक संपत्ति से परे है। यह निम्न को भी दर्शा सकता है: 1. आध्यात्मिक धन: ज्ञान (ज्ञान), बुद्धि (प्रज्ञा), आंतरिक शांति, संतोष और भक्ति (भक्ति) का प्रदान करना। 2. कल्याण: अच्छे स्वास्थ्य (आरोग्य) और दीर्घायु (आयुष्य) का प्रदान करना। 3. सभी रूपों में प्रचुरता: एक पूर्ण जीवन के लिए सभी आवश्यकताओं का प्रावधान, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों।

भक्तों के लिए महत्व भक्तों के लिए, कालभैरव को धनदाय के रूप में आह्वान करना भौतिक दुनिया में जीवन जीने के लिए भौतिक निर्वाह और आत्म-साक्षात्कार के मार्ग पर प्रगति के लिए आध्यात्मिक समृद्धि दोनों के लिए एक प्रार्थना है। उन्हें परम प्रदाता के रूप में पूजा जाता है जो अपने भक्तों के अस्तित्व के हर पहलू में कल्याण सुनिश्चित करते हैं, सांसारिक सफलता और आध्यात्मिक मुक्ति

दोनों के लिए बाधाओं को दूर करते हैं। यह नाम उनके भयानक रूप के बावजूद उनके परोपकारी पहलू को उजागर करता है, जो एक रक्षक और उदार परोपकारी के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है।

287. दक्षाय

सभी कार्यों में अत्यंत निपुण, कुशल और सक्षम होने वाले को नमन।

विस्तार : दक्ष (दक्ष) नाम कौशल, क्षमता और सटीकता के एक असाधारण स्तर को दर्शाता है, जो भगवान कालभैरव के दिव्य स्वरूप के कई गहन पहलुओं को दर्शाता है।

अत्यंत कुशल और सक्षम शाब्दिक रूप से अनुवादित, दक्ष का अर्थ है "सक्षम," "कुशल," "निपुण," "चतुर," या "योग्य।" आध्यात्मिक संदर्भ में, यह एक ऐसे अस्तित्व को इंगित करता है जो अपने सभी कार्यों में पूर्ण है, त्रुटियों से मुक्त है, और सृष्टि, संरक्षण और विनाश के ब्रह्मांडीय नृत्य में सहज रूप से कुशल है। कालभैरव, दक्ष के रूप में, अपने कर्तव्यों को परम सटीकता के साथ निभाते हैं, चाहे वह कर्मिक कानून का प्रवर्तन हो, बाधाओं का विनाश हो, या ब्रह्मांडीय व्यवस्था की स्थापना हो। उनके कार्य आकस्मिक नहीं होते बल्कि हमेशा उद्देश्यपूर्ण और ब्रह्मांड की भव्य योजना के भीतर पूरी तरह से निष्पादित होते हैं।

ब्रह्मांडीय नियमों के धारक यह क्षमता धर्म (धार्मिकता) और ब्रह्मांडीय नियमों के प्रवर्तक के रूप में उनकी भूमिका तक फैली हुई है। वे अपने कार्यों को अटूट संकल्प और त्रुटिहीन निर्णय के साथ निष्पादित करते हैं। दक्ष का यह पहलू ब्रह्मांड के जटिल संतुलन को बनाए रखने के लिए उनके अधिकार और क्षमता पर प्रकाश डालता है। कोई भी कार्य बहुत जटिल नहीं है, कोई भी अशुद्धि इतनी सूक्ष्म नहीं है, जिसे वे कुशलता से संभाल और ठीक न कर सकें।

कार्य में त्रुटिहीन तांत्रिक परंपराओं में, दक्ष का अर्थ कार्य में शुद्धता और बेदाग प्रकृति भी है। कालभैरव के कार्य, भले ही वे विनाशकारी या भयानक लगें, अंततः हमेशा परोपकारी होते हैं और उच्चतम भलाई के लिए होते हैं। उनकी कुशलता यह समझने में निहित है कि क्या हटाने, बदलने या संरक्षित करने की आवश्यकता है, और इन प्रक्रियाओं को त्रुटिहीन सटीकता और अचूक ज्ञान के साथ पूरा करना। यह इस बात पर जोर देता है कि देवता द्वारा किए गए सबसे दुर्जेय कार्य भी पूर्ण ज्ञान और इरादे में निहित होते हैं।

288. दुःस्वप्ननाशनाय

सभी बुरे सपनों और दुःस्वप्नों का अंतिम नाश करने वाले को नमन।

विस्तार : नाम दुःस्वप्ननाशनाय संस्कृत शब्दों दुःस्वप्न (या दुःस्वप्न) और नाशन से लिया गया है, जिसका अर्थ है "नाशक"।

दुःस्वप्नः बुरे/अशुभ सपने, दुःस्वप्न दुःस्वप्न का तात्पर्य कष्टदायक, अशुभ या डरावने सपनों और दुःस्वप्नों से है। प्राचीन भारतीय विचार में, सपनों को केवल यादृच्छिक तंत्रिका गतिविधि नहीं माना जाता था, बल्कि अक्सर उन्हें प्रतीकात्मक संदेश, शगुन या आंतरिक भय, चिंताओं और कर्मिक छापों के प्रक्षेपण के रूप में देखा जाता था जो प्रकट होने के लिए तैयार थे। बुरे सपने आंतरिक असंतुलन, अनसुलझे मुद्दों या बाहरी दुर्भावनापूर्ण प्रभावों का संकेत दे सकते हैं।

नाशनः नाशक, हटाने वाला नाशन का अर्थ है जो किसी चीज को मिटाता है, समाप्त करता है या उसे अस्तित्वहीन बनाता है।

भ्रमों का नाशक काल भैरव, दुःस्वप्ननाशनाय के रूप में, इन नकारात्मक रात्रि अनुभवों को दूर करने के लिए आह्वान किए जाते हैं। इस कार्य का शाब्दिक और लाक्षणिक दोनों अर्थ हैं। शाब्दिक रूप से, वे अपने भक्तों को मानसिक रूप से परेशान करने वाले और डरावने सपनों से बचाते हैं, उन्हें

शांतिपूर्ण नींद प्रदान करते हैं। लाक्षणिक रूप से, वे उन गहरे भ्रमों और अवचेतन भयों को नष्ट करते हैं जो दुःस्वप्नों के रूप में प्रकट होते हैं। वे परम वास्तविकता हैं जो माया (ब्रह्मांडीय भ्रम) के पर्दे को भेदते हैं, जिसमें वे भ्रम भी शामिल हैं जो नींद के दौरान मन को परेशान करते हैं।

मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक शुद्धि यहां उनकी भूमिका गहन मानसिक और आध्यात्मिक शुद्धि की है। उनके आशीर्वाद की तलाश करके, भक्त अपने अवचेतन मन को भय, चिंताओं और नकारात्मक मानसिक ऊर्जाओं से शुद्ध करने का लक्ष्य रखते हैं जो बुरे सपनों को जन्म देती हैं। यह दर्शाता है कि उनकी शक्ति मन और अवचेतन के सूक्ष्म क्षेत्र तक फैली हुई है, जो चेतना की सभी अवस्थाओं, जिसमें स्वप्न अवस्था (svapna avasthā) भी शामिल है, पर उनकी महारत को इंगित करती है।

परम रक्षक यह नाम उनके परोपकारी रक्षक के पहलू को उजागर करता है, जो अपने भक्तों की शांति और मानसिक कल्याण की रक्षा करते हैं। यह उन्हें ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित करता है जो न केवल शारीरिक खतरों को, बल्कि उन अमूर्त भयों को भी दूर कर सकते हैं जो मानव मानस को परेशान करते हैं, जिससे विश्राम और आंतरिक शांति की स्थिति सुनिश्चित होती है।

289. दुर्ज्ञेयाय

जिन्हें जानना या निश्चित करना कठिन हो, उन परमेश्वर को नमन।

विस्तार : दुर्ज्ञेय (Durṇeya) नाम संस्कृत उपसर्ग 'दुर्' (दुष्/दुस्) का एक यौगिक है, जो कठिनाई, बुराई या असंभवता को इंगित करता है, और 'ज्ञेय' (Jñeya) का अर्थ है "जिसे जानना है" या "जानने योग्य"।

जानना कठिन यह विशेषण दर्शाता है कि कालभैरव की परम वास्तविकता, शिव के एक रूप के रूप में, सामान्य मानवीय समझ और बौद्धिक पकड़ से परे है। उनके स्वरूप को केवल धारणा, तर्क या अकादमिक अध्ययन के पारंपरिक माध्यमों से पूरी तरह से समझा नहीं जा सकता है। वे एक ऐसे सत्य का प्रतीक हैं जो मन की द्वैतता और सीमाओं से परे है।

उत्कृष्ट प्रकृति उन्हें जानने में कठिनाई उनकी उत्कृष्ट प्रकृति से उत्पन्न होती है। वे रूप, गुणों, स्थान और समय से परे हैं, भले ही वे उनमें प्रकट होते हैं। उन्हें शब्दों या अवधारणाओं से परिभाषित करने का प्रयास असीमित को सीमित करना है। जैसे कोई एक बूंद को पकड़कर पूरे सागर को नहीं समझ सकता, वैसे ही कोई सीमित मानवीय क्षमताओं से भैरव की ब्रह्मांडीय प्रकृति को पूरी तरह से नहीं समझ सकता।

आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि की आवश्यकता दुर्ज्ञेय को "जानने" का अर्थ केवल बौद्धिक ज्ञान नहीं है, बल्कि एक गहन आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि या प्रत्यक्ष रहस्यमय अनुभव है। ऐसा ज्ञान गहन आध्यात्मिक अभ्यास (साधना), ध्यान, भक्ति और मन की शुद्धि के माध्यम से प्राप्त होता है, जो उस अविभाजित वास्तविकता की एक झलक प्रदान करता है जिसका भैरव प्रतिनिधित्व करते हैं। यह एक ऐसा ज्ञान है जो पहचान से आता है, अवलोकन से नहीं।

अगाध संहारक काल-भैरव के रूप में, वे काल और मृत्यु के स्वामी हैं, अंतिम विनाशकारी सिद्धांत जो सभी चीजों का अंत करता है। अंतिम विघटन का गहरा रहस्य—कि कैसे अस्तित्व अंततः गैर-अस्तित्व में विलीन हो जाता है, और कैसे लौकिक शाश्वत से उत्पन्न होता है—कुछ ऐसा है जिसे नश्वर मन के लिए समझना स्वाभाविक रूप से कठिन है। यह उनके सार को ही अगाध बनाता है।

२९०. दुर्गमाय

अगम्य और प्राप्त करने में अत्यंत कठिन (दुर्गम) को नमन।

विस्तार : नाम दुर्गमाय संस्कृत शब्द "दुर्गम" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "पहुँचने या पास जाने में कठिन," "अगम्य," या "अबोध्य।" यह दिव्य के एक गहन पहलू पर प्रकाश डालता है, विशेष रूप से काल भैरव के स्वरूप के लिए प्रासंगिक है।

अगम्य और अप्राप्य यह पहलू दिव्य के परम रहस्य और अतिक्रमण को संदर्भित करता है। जिस प्रकार एक दुर्जेय किला या पहाड़ी दर्रा (दुर्ग, जिससे दुर्गम व्युत्पन्न हुआ है) अत्यधिक प्रयास के बिना पार करना कठिन है, उसी प्रकार काल भैरव का वास्तविक स्वरूप भी है। वह सर्वोच्च आध्यात्मिक सत्य का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसे सामान्य बुद्धि, संवेदी धारणा या पारंपरिक साधनों से नहीं समझा जा सकता है। यह दर्शाता है कि परम मुक्ति और समझ का मार्ग कठिन है, जिसके लिए गहन आध्यात्मिक अनुशासन, अटूट भक्ति और आत्म-बलिदान की आवश्यकता होती है।

पहुँचने या प्राप्त करने में कठिन दुर्गम आगे यह भी बताता है कि काल भैरव के लाभ या कृपा आसानी से प्राप्त नहीं होते हैं। उनकी उपस्थिति को समझने के लिए मन को शुद्ध करना, हृदय को स्वच्छ करना और अहंकारी प्रवृत्तियों (विक्षेप, आवरण) को दूर करना चाहिए। यह कठिनाई द्वेष से नहीं, बल्कि आध्यात्मिक प्रयास की गहनता से उत्पन्न होती है। वह परम लक्ष्य हैं, और किसी भी परम लक्ष्य की तरह, यह केवल उन्हीं को प्राप्त होता है जो वास्तव में प्रतिबद्ध हैं और सबसे चुनौतीपूर्ण आध्यात्मिक मार्ग पर चलने के लिए तैयार हैं।

समझ से परे यह नाम यह भी दर्शाता है कि काल भैरव, अपने निरपेक्ष रूप में, मानवीय समझ और बौद्धिक वर्गीकरण से परे हैं। वह सभी द्वैत, अवधारणाओं और मन की सीमाओं का अतिक्रमण करते हैं। वास्तव में उनके "पास पहुँचना" उन विचारों और धारणाओं के ढाँचों का अतिक्रमण करना है जो हमारे सीमित अस्तित्व को परिभाषित करते हैं। इसके लिए अहंकार-स्वयं को उच्च, सार्वभौमिक स्वयं के प्रति समर्पित करना आवश्यक है।

मुक्ति का चुनौतीपूर्ण मार्ग भक्तों के लिए, काल भैरव को दुर्गम के रूप में पहचानना कठोर आध्यात्मिक यात्रा की स्वीकृति है। यह इस बात पर जोर देता है कि मोक्ष या सच्चा आध्यात्मिक ज्ञान (ज्ञान) सस्ता नहीं है; इसके लिए गहन प्रयास, आत्मनिरीक्षण और शुद्धि की आवश्यकता होती है, लेकिन इसका प्रतिफल जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) से मुक्ति है, जो स्वयं एक दुर्जेय "दुर्गम" है जिसे केवल दिव्य ही पार करने में मदद कर सकते हैं।

२९१. दुर्गाय

जो अभेद्य दुर्ग के समान परम सुरक्षा प्रदान करते हैं, उनको नमन।

विस्तार : कालभैरव के संदर्भ में दुर्गाय नाम 'दुर्गा' के सार के अनुरूप है, जिसका अर्थ है "अगम्य" या "पहुंचने में कठिन" (दुर्, "कठिन," और गा, "जाना" से)।

अभेद्य दुर्ग जब दुर्गाय के रूप में आह्वान किया जाता है, तो कालभैरव को परम रक्षक, एक अभेद्य दुर्ग के रूप में पहचाना जाता है जिसे बुरी शक्तियाँ भेद नहीं सकतीं। जिस प्रकार देवी दुर्गा को राक्षसों का संहार करने और ब्रह्मांड की रक्षा करने की अपनी दुर्जेय शक्ति के लिए पूजा जाता है, उसी प्रकार कालभैरव, इस पहलू में, सर्वोच्च संरक्षक बन जाते हैं। वह सभी खतरों के खिलाफ एक अटूट गढ़ हैं, चाहे वे बाहरी खतरे हों, आध्यात्मिक बाधाएँ हों, नकारात्मक ऊर्जाएँ हों, या संदेह, भय और अज्ञान जैसे आंतरिक शत्रु हों।

पूर्ण सुरक्षा प्रदाता यह नाम अपने भक्तों को पूर्ण और व्यापक सुरक्षा प्रदान करने की उनकी क्षमता को दर्शाता है। यह सुरक्षा केवल शारीरिक नहीं है; यह बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक क्षेत्रों तक फैली हुई है। वह अपने भक्तों को उनके कर्मों के परिणामों, प्रतिकूल ग्रहों के प्रभावों, काले जादू और दुर्भावनापूर्ण संस्थाओं से बचाता है। उनके दुर्गाय रूप में शरण लेकर, व्यक्ति एक अटूट अभयारण्य की तलाश करता है जहाँ कोई नुकसान प्रवेश नहीं कर सकता।

आध्यात्मिक सुदृढीकरण दार्शनिक रूप से, दुर्गाय उस आध्यात्मिक दृढ़ता और लचीलेपन को संदर्भित करता है जो कालभैरव प्रदान करते हैं। वह जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन पर विजय पाने के लिए आंतरिक शक्ति प्रदान करते हैं, जिससे साधक सांसारिक विकर्षणों या प्रतिकूलताओं से विचलित हुए बिना अपने आध्यात्मिक मार्ग पर बने रह सकते हैं। वह भक्त के मन और आत्मा को मजबूत करते हैं, उन्हें नकारात्मकता के प्रति अभेद्य बनाते हैं और अटूट विश्वास और निडरता की स्थिति को बढ़ावा देते हैं।

292. दुरावासाय

जिन्हें धारण करना या जिनके लिए निवास ढूंढना कठिन है, उन्हें नमन।

विस्तार : दुरावास (दुरावासाय) नाम कालभैरव का एक महत्वपूर्ण विशेषण है, जो संस्कृत शब्द "दुर्" और "आवास" से बना है।

असीम और निवास के लिए कठिन "दुर्-" उपसर्ग कठिनाई, परेशानी या असंभवता को दर्शाता है। "आवास" का अर्थ है निवास, धाम या ठिकाना। इस प्रकार, दुरावास का शाब्दिक अर्थ है "धारण करना कठिन," "जिसके लिए निवास खोजना कठिन है," या "जिसके लिए कोई उचित निवास नहीं है।" यह कालभैरव के उत्कृष्ट और असीमित स्वरूप को उजागर करता है।

उत्कृष्ट स्वरूप यह नाम इस बात पर जोर देता है कि कालभैरव को किसी विशिष्ट भौतिक स्थान, मंदिर या यहां तक कि किसी विशेष ब्रह्मांडीय क्षेत्र तक सीमित नहीं किया जा सकता है। वह स्थान और रूप की सभी सीमाओं से परे हैं। उन देवताओं के विपरीत जो विशिष्ट स्वर्गीय धामों में निवास करते हैं (जैसे विष्णु वैकुंठ में या शिव कैलाश में), कालभैरव की उपस्थिति सर्वव्यापी है और किसी एक, निश्चित अर्थ में अलभ्य है। वह परम, सर्वव्यापी वास्तविकता हैं, असीम और अनंत।

मानवीय समझ से परे उनके लिए निवास खोजने में कठिनाई का अर्थ यह भी है कि मानवीय मन की सीमित क्षमताओं से उनके वास्तविक स्वरूप को समझना या ग्रहण करना कठिन है। उन्हें बौद्धिक ढाँचों या रूढ़िवादी परिभाषाओं के भीतर पूरी तरह से समाहित नहीं किया जा सकता है। उनका सार निराकार और अमूर्त है, फिर भी वे भक्तों के लाभ के लिए भयानक और सुरक्षात्मक रूपों में प्रकट होते हैं।

मुक्ति का प्रतीक आध्यात्मिक रूप से, इस नाम की व्याख्या मुक्ति (मोक्ष) के प्रतीक के रूप में की जा सकती है। सच्ची मुक्ति का अर्थ है सभी आसक्तियों, सीमाओं और पहचानों से मुक्त होना, जिसमें भौतिक शरीर का "निवास" और अहंकार की सीमाएं शामिल हैं। कालभैरव, दुरावास के रूप में, इस पूर्ण स्वतंत्रता और वैराग्य का प्रतीक हैं। वह भक्तों को अपनी सीमाओं को त्यागने और अपने असीम स्वरूप को जानने के लिए भी प्रोत्साहित करते हैं।

293. दुरासदाय

उन अविजेय को नमन जिन पर कोई शत्रु कभी आक्रमण नहीं कर सकता।

विस्तार : दुरासादा नाम संस्कृत मूल से व्युत्पन्न, कालभैरव के अजेय स्वरूप का एक शक्तिशाली वर्णन है। यह एक यौगिक शब्द है:

दुर (DUR): एक उपसर्ग जो कठिनाई, बुराई या कष्ट का अर्थ देता है। आसादा (ĀSĀDA): असद (Asad) धातु से, जिसका अर्थ है "समीप आना," "पहुंचना," या "आक्रमण करना।"

इसलिए, दुरासादा का अर्थ है "पहुंचना कठिन," "पराजित करना कठिन," "अजेय," या "अगम्य।"

• युद्ध में अजेयता (Invincibility in Battle) यह पहलू कालभैरव को एक अदम्य शक्ति के रूप में उजागर करता है। कोई भी शत्रु, चाहे वह सांसारिक हो या राक्षसी, उन्हें कभी पराजित नहीं कर सकता। वह परम रक्षक और संरक्षक हैं, जिनकी शक्ति पूर्ण और अद्वितीय है। यह उन भक्तों के लिए एक महत्वपूर्ण आश्वासन के रूप में कार्य करता है जो विरोधियों, बुरी शक्तियों और अपने आध्यात्मिक मार्ग पर आने वाली बाधाओं से सुरक्षा चाहते हैं।

• उनके वास्तविक स्वरूप की अगम्यता (Inaccessibility of His True Nature) भौतिक या युद्ध संबंधी अर्थ से परे, दुरासादा कालभैरव के गहन आध्यात्मिक स्वरूप को भी संदर्भित करता है। उनका वास्तविक, परम स्वरूप सामान्य मानवीय समझ या बुद्धि की पकड़ से परे है। उन्हें सीमित समझ या अहंकार की अशुद्धियों (जैसे अभिमान, आसक्ति या अज्ञान) द्वारा "पहुंचा" या "आक्रमण" नहीं किया जा सकता है। केवल सच्ची भक्ति, गहन आध्यात्मिक अभ्यास और मन की शुद्धि के माध्यम से ही कोई उनके सार के करीब आने की आशा कर सकता है।

• आंतरिक शत्रुओं पर विजय (Overcoming Inner Foes) साधक (आध्यात्मिक साधक) के लिए, "शत्रु" जो कालभैरव पर आक्रमण नहीं कर सकते, वे आंतरिक शत्रुओं—मन के क्लेशों (kleshas) जैसे इच्छा, लालच, क्रोध और भ्रम—का भी प्रतीक हैं। उन्हें दुरासादा के रूप में ध्यान करना उस शक्ति का आह्वान करना है जो इन आंतरिक बाधाओं को नष्ट कर देती है, उन्हें भक्त की शुद्ध चेतना के विरुद्ध शक्तिहीन बना देती है।

• परम सुरक्षा का प्रतीक (Symbol of Ultimate Security) दुरासादा के रूप में, वह परम सुरक्षा और अभेद्यता का प्रतीक हैं। वह वह किला हैं जिसे भेदा नहीं जा सकता, सभी प्रकार के नुकसान, चाहे वह दृश्यमान हो या अदृश्य, के खिलाफ अभेद्य ढाल हैं। यह गुण भय को दूर करने वाले और परम मुक्ति (मोक्ष) प्रदान करने वाले के रूप में उनकी भूमिका को पुष्ट करता है, क्योंकि मुक्ति का अर्थ सभी सीमाओं और कमजोरियों से स्वतंत्रता है।

294. दमाय

आत्म-नियंत्रण और संयम के अवतार को नमन।

विस्तार : दामाय नाम संस्कृत मूल "दम" से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है "वश में करना," "संयम करना," "नियंत्रित करना," या "वश में रखना।" यह सीधे दम (Dama) की अवधारणा से संबंधित है, जो हिंदू दर्शन में, विशेष रूप से आध्यात्मिक और नैतिक ढाँचों में एक प्रमुख गुण है।

आत्म-नियंत्रण का अवतार दम के रूप में, भैरव आत्म-नियंत्रण और संयम के सर्वोच्च सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह केवल भोग की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि अपनी इंद्रियों (Indriyas), मन (Manas) और कर्मों पर एक सक्रिय, सचेत नियंत्रण है। वे मानसिक अनुशासन की आदर्श स्थिति का प्रतीक हैं जहाँ इच्छाओं, वासनाओं और आवेगों को नियंत्रण में रखा जाता है, और मन को बाहरी उत्तेजनाओं या आंतरिक उथल-पुथल से विचलित होने के बजाय उच्च आध्यात्मिक pursuits की ओर निर्देशित किया जाता है।

दिव्य संयम यह दिव्य आत्म-नियंत्रण कई तरीकों से प्रकट होता है: 1. ब्रह्मांडीय शक्तियों पर नियंत्रण: भैरव, शिव के एक manifestation के रूप में, ब्रह्मांड की विशाल, गतिशील और अक्सर अराजक शक्तियों के अंतिम नियंत्रक हैं। उनका आत्म-नियंत्रण सृष्टि, संरक्षण और विघटन के व्यवस्थित कामकाज को सुनिश्चित करता है। ब्रह्मांडीय स्तर पर इस मूलभूत आत्म-नियंत्रण के बिना,

अस्तित्व स्वयं अराजकता में बदल जाएगा। 2. रुद्र की उग्रता पर नियंत्रण: जबकि भैरव एक उग्र manifestation हैं, अंतर्निहित दम यह दर्शाता है कि उनके भयानक पहलू भी एक सचेत, नियंत्रित इच्छा से उत्पन्न होते हैं, न कि अनियंत्रित क्रोध से। उनका विनाश उद्देश्यपूर्ण और अनुशासित है, जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था की सेवा करता है। 3. साधकों के लिए एक आदर्श: आध्यात्मिक साधकों (sadhakas) के लिए, दम एक मूलभूत गुण है, जिसे अक्सर "दैव संपत" या दिव्य गुणों में सूचीबद्ध किया जाता है। दामाय को नमस्कार करके, भक्त अपने भीतर इस गुण को जगाने की कोशिश करते हैं, अपनी निम्न प्रकृति पर नियंत्रण प्राप्त करने और एक आंतरिक शांति विकसित करने का प्रयास करते हैं जो गहरी ध्यान और आध्यात्मिक प्रगति को सक्षम बनाती है।

आंतरिक अनुशासन की शक्ति वे अपने व्यवहार, वाणी और विचारों को विनियमित करने की आंतरिक शक्ति के अवतार हैं, जिससे आंतरिक शुद्धता और स्थिरता की स्थिति प्राप्त होती है। इस प्रकार, दामाय केवल नियंत्रण की एक निष्क्रिय स्थिति का ही नहीं, बल्कि एक सक्रिय, शक्तिशाली और दिव्य अनुशासन का भी प्रतीक है जो ब्रह्मांडीय सद्भाव और व्यक्तिगत आध्यात्मिक मुक्ति दोनों को सुनिश्चित करता है।

295. दमयित्रे

सभी प्राणियों को वश में करने वाले और नियंत्रित करने वाले महान प्रभु को नमन।

विस्तार : दमयित्रे (दमयितृ) नाम संस्कृत धातु "दम्" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "वश में करना," "दबाना," "नियंत्रित करना," या "काबू करना।" अतः, दमयित्रे का अर्थ है "वश में करने वाला," "दबाने वाला," या "नियंत्रक।"

महान नियंत्रक यह नाम कालभैरव के अस्तित्व के सभी पहलुओं पर सर्वोच्च अधिकार और शक्ति को उजागर करता है। वह परम शक्ति हैं जो ब्रह्मांड की अराजक ऊर्जाओं में अनुशासन, व्यवस्था और नियंत्रण लाते हैं। यह "वश में करना" केवल शारीरिक अधीनता के बारे में नहीं है, बल्कि गहन आध्यात्मिक और ब्रह्मांडीय शासन के बारे में है।

वासनाओं और आवेगों पर नियंत्रण आध्यात्मिक स्तर पर, दमयित्रे व्यक्तियों के भीतर की जंगली, अनियंत्रित वासनाओं और आवेगों को वश में करने की उनकी क्षमता को संदर्भित करता है। एक आध्यात्मिक साधक के लिए, ये आंतरिक शत्रु (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य - वासना, क्रोध, लालच, मोह, अभिमान, ईर्ष्या) हैं जो मुक्ति में बाधा डालते हैं। कालभैरव, दमयित्रे के रूप में, इन प्रवृत्तियों को नियंत्रित करने में मदद करते हैं, भक्त को आत्म-नियंत्रण और आंतरिक शांति की ओर ले जाते हैं।

नकारात्मक शक्तियों का दमनकर्ता ब्रह्मांड में, वह दुर्भावनापूर्ण शक्तियों, राक्षसों और नकारात्मक आध्यात्मिक संस्थाओं को वश में करते हैं जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बाधित करते हैं। उनका भयंकर रूप धर्म के विरुद्ध किसी भी विद्रोह को शांत करने, सृष्टि के संतुलन की रक्षा करने के लिए पर्याप्त है।

अनुशासन के प्रदाता वह अनुशासक भी हैं, जो प्राणियों को ब्रह्मांडीय नियम (धर्म) के अनुरूप लाते हैं। इसमें कभी-कभी कठोर उपाय शामिल हो सकते हैं, जो अंततः बड़े भले के लिए होते हैं, व्यक्तियों को उनके उच्च उद्देश्य की ओर ले जाते हैं। न्याय के प्रदाता और एक दुर्जेय देवता के रूप में उनकी भूमिका, जो सीमाएँ निर्धारित करते हैं, महान दमनकर्ता के रूप में उनके स्वभाव को रेखांकित करती है।

296. दान्ताय

जो पूर्णतः आत्मसंयमी, शांत और विनीत हैं, उनको नमन।

विस्तार : दान्ताय नाम संस्कृत मूल "दम्" (dam) से लिया गया है, जिसका अर्थ है वश में करना, अधीन करना या नियंत्रित करना। इस प्रकार, दान्त (Dānta) शब्द ऐसे व्यक्ति को दर्शाता है जो पूर्णतः आत्म-नियंत्रित, शांत, संयमित, प्रशांत और अनुशासित है।

इंद्रियों और मन पर निपुणता यह विशेषण भगवान कालभैरव की अपनी इंद्रियों (Indriyas) और मन (Manas) पर पूर्ण निपुणता को उजागर करता है। जबकि उनका उग्र रूप अनियंत्रित शक्ति का सुझाव दे सकता है, दान्ताय एक गहरे सत्य की ओर इशारा करता है: उनकी तीव्रता उत्तेजना या अनियंत्रित जुनून से उत्पन्न नहीं होती है, बल्कि पूर्ण, जानबूझकर किए गए नियंत्रण से होती है। यह दर्शाता है कि अपने सबसे भयानक अभिव्यक्तियों में भी, वे पूरी तरह से शांत और स्थिर हैं, सर्वोच्च आंतरिक संतुलन के स्थान से कार्य कर रहे हैं। इस प्रकार उनके भयानक कार्य अराजक नहीं, बल्कि उद्देश्यपूर्ण और व्यवस्थित हैं।

आध्यात्मिक अनुशासन का प्रतीक आध्यात्मिक साधक के लिए, दान्त आध्यात्मिक अभ्यास के अंतिम लक्ष्य का प्रतिनिधित्व करता है - अपनी निम्न प्रकृति, इच्छाओं और मानसिक उतार-चढ़ावों को नियंत्रित करने की क्षमता। भैरव, दान्त के रूप में, आत्म-निपुणता, वैराग्य (vairagya) और मन की शांति (śama) के लिए प्रयासरत लोगों के लिए एक आदर्श और मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं। वे उस सिद्ध अवस्था का प्रतीक हैं जहाँ अहंकार, लालसा और घृणा के आंतरिक तूफान पूरी तरह से शांत हो गए हैं।

तूफान के भीतर की शांति यह अवधारणा कालभैरव के संदर्भ में विशेष रूप से गहरी है, जो समय और विनाश को नियंत्रित करते हैं। विघटन और सभी चीजों के अंत से उनके जुड़ाव के बावजूद, उनकी अंतर्निहित प्रकृति पूर्ण शांति और स्थिरता की है। वे ब्रह्मांडीय परिवर्तन के तूफान के भीतर शांत आँख हैं, सृष्टि और विनाश के अंतहीन चक्रों के अविचल साक्षी हैं। यह आत्म-संयम उनकी अपार शक्ति का स्रोत है, क्योंकि सच्ची शक्ति अनियंत्रित बल से नहीं, बल्कि पूर्ण आत्म-नियमन से उत्पन्न होती है।

297. दात्रे

जो सबसे उदार दाता और दानी हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : दात्रे नाम संस्कृत मूल 'दा' (dA) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "देना" या "प्रदान करना"। इसलिए, दात्रे का सीधा अर्थ है "दाता", "दानकर्ता", या "सबसे उदार"। कालभैरव का यह पहलू उनके परोपकारी और उदार स्वभाव को उजागर करता है, जो अक्सर उनके भयंकर, भयानक रूप से ढका रहता है।

सर्वोच्च परोपकारी कालभैरव को दात्रे के रूप में सभी इच्छाओं, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों के परम दाता के रूप में समझा जाता है। वह अपने भक्तों को सुरक्षा, समृद्धि, स्वास्थ्य और ज्ञान प्रदान करते हैं। यह देना केवल सांसारिक आशीर्वाद तक ही सीमित नहीं है; वह मुक्ति (मोक्ष) और ज्ञान (ज्ञान) के भी दाता हैं। वह ज्ञान, धन, सभी सिद्धियाँ प्रदान करते हैं।

न्याय और कर्म के वितरक उदार होने के साथ-साथ, उनका देना ब्रह्मांडीय व्यवस्था और न्याय से आंतरिक रूप से जुड़ा हुआ है। वह प्रत्येक प्राणी को उनके कर्मों के आधार पर जो देय है, वह देते हैं, परिणामों और पुरस्कारों के दिव्य वितरक के रूप में कार्य करते हैं। इसका तात्पर्य है कि उनकी उदारता अंधाधुंध नहीं है बल्कि धर्म (धार्मिकता) के अनुरूप है।

प्रचुरता का प्रतीक दात्रे के रूप में, कालभैरव ब्रह्मांडीय प्रचुरता और दिव्य कृपा के निस्वार्थ प्रवाह का प्रतीक हैं। वह उस अक्षय स्रोत का प्रतिनिधित्व करते हैं जिससे सभी सृष्टि उत्पन्न होती है और पोषित होती है। उनकी उदारता जीवन की निरंतरता, ब्रह्मांड के रखरखाव और सभी अस्तित्व के अंतिम कल्याण को सुनिश्चित करती है।

भौतिक दान से परे भौतिक क्षेत्र से परे, वह आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, आत्म-साक्षात्कार के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करते हैं, और अंततः सर्वोच्च आध्यात्मिक उपहार प्रदान करते हैं: भय, आसक्ति और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति। यह उनकी उदारता का गहरा पहलू है, जो उन्हें आध्यात्मिक अर्थों में परम परोपकारी बनाता है।

२९८. दानाय

दान और निस्वार्थ भाव से देने के साक्षात स्वरूप को नमन।

विस्तार : 'दानाय' नाम संस्कृत मूल "दा" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "देना", और इसका शाब्दिक अर्थ है "दाता को" या "जो दान है"।

दान का स्वरूप इस पहलू में, कालभैरव को परम दाता, निस्वार्थ भाव से देने के साक्षात स्वरूप के रूप में पूजा जाता है। यह अवधारणा केवल भौतिक दान से परे है; इसमें ज्ञान दान (ज्ञान दान), अभय दान (अभय दान), और आध्यात्मिक मुक्ति का परम उपहार (मोक्ष दान) शामिल है। वह वह स्रोत हैं जिससे सभी आशीर्वाद, पोषण और आध्यात्मिक वरदान प्रवाहित होते हैं।

निर्भयता के दाता उनके "देने" के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक अभय दान है, जो निर्भयता का उपहार है। भैरव के रूप में, वह अक्सर दिखने में भयानक होते हैं, लेकिन यह रूप बुराई में भय पैदा करने और अपने भक्तों को भय से मुक्ति प्रदान करने का काम करता है। उनके प्रति समर्पण करके, व्यक्ति सभी सांसारिक और आध्यात्मिक खतरों से परम सुरक्षा प्राप्त करता है, और नश्वरता और पीड़ा के व्यापक भय से मुक्त हो जाता है।

पोषण और पूर्ति के प्रदाता सर्वोच्च दाता के रूप में, वह सभी प्राणियों के अस्तित्व और कल्याण के लिए आवश्यक सब कुछ प्रदान करते हैं। इसमें न केवल भौतिक आवश्यकताएं शामिल हैं, बल्कि विकास के लिए आवश्यक आध्यात्मिक पोषण भी शामिल है। वह अपने भक्तों की इच्छाओं को पूरा करते हैं और उन्हें उनके कर्म और भक्ति के अनुसार समृद्धि, स्वास्थ्य और ज्ञान प्रदान करते हैं।

बिना अपेक्षा के दाता योग के उच्चतम रूप का प्रतीक है, जहाँ देना स्वयं एक आध्यात्मिक कार्य है, जो दाता को परिष्कृत करता है और उन्हें दिव्य स्रोत से जोड़ता है। इस प्रकार, दानाय कालभैरव की दिव्य परोपकारिता और बिना शर्त उदारता को दर्शाता है।

२९९. दयाकराय

उन दयालु को नमन जो सभी करुणा और दया के स्रोत हैं।

विस्तार : दयाकराय नाम संस्कृत शब्दों दया और कर से लिया गया है।

करुणा का स्रोत (दया) दया का अर्थ है करुणा, दयालुता, या सहानुभूति। यह दूसरों के कष्टों के प्रति गहरी सहानुभूति की भावना है, जिसके साथ उस कष्ट को कम करने की तीव्र इच्छा भी जुड़ी होती है। यह एक दिव्य गुण है जो सभी प्राणियों के प्रति असीम प्रेम और परोपकारिता को दर्शाता है।

कर्ता या प्रवर्तक (कर) कर का अर्थ है "कर्ता," "निर्माता," "सृष्टिकर्ता," या "प्रवर्तक।" जब इसे दया के साथ जोड़ा जाता है, तो यह उस एक को दर्शाता है जो करुणा को मूर्त रूप देता है, उसे क्रियान्वित करता है, और स्वयं करुणा का स्रोत है। यह केवल करुणा रखने से बढ़कर उसे सक्रिय रूप से विकीर्ण और प्रकट करने तक फैला हुआ है।

भैरव का परोपकारी स्वभाव जबकि भैरव को अक्सर एक भयंकर देवता के रूप में देखा जाता है, दयाकराय जैसे नाम उनके परम परोपकारी स्वभाव को प्रकट करते हैं। उनकी भयंकरता दुर्भावनापूर्ण नहीं बल्कि सुधारात्मक है, जो एक सर्जन के दर्दनाक लेकिन जीवन रक्षक चीरे के समान है। उनकी करुणा उनके संरक्षक, भय को दूर करने वाले, और एक मार्गदर्शक के रूप में उनकी भूमिका में प्रकट होती है जो भक्तों को मुक्ति की ओर ले जाते हैं और अज्ञानता को दूर करते हैं, जो सभी कष्टों का मूल है। वह वह हैं जो दयापूर्वक बाधाओं को दूर करते हैं और ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बहाल करने के लिए बुराई को दंडित करते हैं, अंततः सभी प्राणियों के कल्याण के लिए।

भयंकरता और दया का विरोधाभास यह नाम भगवान शिव के अभिव्यक्तियों, विशेष रूप से भैरव के भीतर के विरोधाभास को खूबसूरती से उजागर करता है। भयानक रूप सख्ती से दंडित करता है, फिर भी यह क्रिया स्वयं धर्म को बनाए रखने और आत्मा को शुद्ध करने के लिए करुणा के गहरे स्रोत से उत्पन्न होती है। उनका भयंकर पहलू अशुद्धियों को साफ करता है, और उनका करुणामय पहलू मुक्ति और सांत्वना प्रदान करता है। इस प्रकार, उनके "भयानक" कार्य एक "दयालु" उद्देश्य की पूर्ति करते हैं।

३००. दुर्वाससे

दुर्वासा ऋषि को नमन, जो अपने तीव्र क्रोध के लिए विख्यात हैं।

विस्तार : दुर्वाससे नाम भगवान कालभैरव को सीधे महान ऋषि दुर्वासा से जोड़ता है, जो हिंदू परंपराओं में एक प्राचीन ऋषि हैं, जो अपनी गहन तपस्या, आध्यात्मिक शक्ति और पौराणिक अल्प-क्रोध के लिए प्रसिद्ध हैं।

दिव्य क्रोध की अभिव्यक्ति दुर्वासा को भगवान शिव का अंश (आंशिक अवतार) माना जाता है। उनका चरित्र दिव्य के उग्र और समझौता न करने वाले पहलू का प्रतीक है, जो शिव की विनाशकारी शक्ति और न्याय तथा परिणामों के वितरक के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है। जिस प्रकार शिव परम उपकारी हो सकते हैं, उसी प्रकार वे परम दंड देने वाले भी हो सकते हैं, और दुर्वासा पृथ्वी लोक पर इस गुण का प्रतिनिधित्व करते हैं।

उग्र स्वभाव और उसका उद्देश्य ऋषि का प्रसिद्ध "उग्र स्वभाव" केवल एक मानवीय दोष नहीं है; एक दिव्य संदर्भ में, यह उल्लंघनों के प्रति तत्काल और शक्तिशाली कर्म प्रतिक्रिया का प्रतीक है। दुर्वासा के शाप, हालांकि अक्सर गंभीर होते थे, मनमाने नहीं थे, बल्कि कर्म से संरेखित थे, जो धर्म को सही करने, नैतिक सिद्धांतों को बनाए रखने या एक उच्च दिव्य उद्देश्य की पूर्ति के लिए थे। जिस प्रकार कालभैरव गलत करने वालों को दंडित करते हैं और ब्रह्मांडीय नियमों को लागू करते हैं, उसी प्रकार दुर्वासा का क्रोध एक त्वरित और अपरिहार्य परिणाम के रूप में कार्य करता है।

तपस्या की शक्ति और तप का प्रतीक दुर्वासा की शाप देने (और आशीर्वाद देने) की शक्ति उनकी अपार तपस्या से उत्पन्न हुई थी। उन्होंने अत्यधिक तपस्या की, आध्यात्मिक ऊर्जा जमा की जिसे वे निर्देशित कर सकते थे। यह कालभैरव के सभी ऊर्जाओं पर नियंत्रण के साथ मेल खाता है, जिसमें तपस्या की तीव्र गर्मी भी शामिल है। कालभैरव की दुर्वासा के रूप में पूजा करना आध्यात्मिक अनुशासन से प्राप्त शक्ति और ऐसी शक्ति को प्रसारित करने वाले परम अधिकार की स्वीकृति है।

धर्म के शिक्षक और अहंकार के संहारक हालांकि भयभीत, दुर्वासा की बातचीत अक्सर उन लोगों के लिए विनम्रता, धैर्य और धर्म के पालन में गहन सबक के रूप में कार्य करती थी जिनसे वे मिलते थे। इसी तरह, कालभैरव, अपने भयानक पहलू के माध्यम से, अहंकार का सामना करते हैं और नैतिक उल्लंघन का भय पैदा करते हैं, अंततः भक्तों को धार्मिकता और मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

कालभैरव को दुर्वासा के रूप में आह्वान करना कठोर सुधार की आवश्यकता और आध्यात्मिक मार्ग पर बाधाओं (अपने स्वयं के आंतरिक दोषों सहित) को उग्र रूप से हटाने की आवश्यकता को स्वीकार करना है।

301. द्विजाय

आध्यात्मिक पुनर्जन्म और दीक्षा का प्रतिनिधित्व करने वाले 'द्विज' को नमन।

विस्तार : द्विज (द्विजाय) शब्द आध्यात्मिक और दार्शनिक महत्व से भरपूर है, जो हिंदू परंपरा में पुनर्जन्म और दीक्षा की अवधारणा से निकटता से जुड़ा है।

"द्विज" की अवधारणा शाब्दिक रूप से, द्विज का अर्थ है "दो बार जन्मा"। यह एक आध्यात्मिक पुनर्जन्म को संदर्भित करता है जो शारीरिक जन्म के बाद होता है। वैदिक सामाजिक संरचनाओं में, यह पारंपरिक रूप से तीन उच्च वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) को संदर्भित करता था, जिन्होंने उपनयन संस्कार किया था, जो उन्हें वैदिक अध्ययन और आध्यात्मिक प्रथाओं में दीक्षित करता था। इस दीक्षा को दूसरा जन्म माना जाता था - आध्यात्मिक ज्ञान और जिम्मेदारी में जन्म।

आध्यात्मिक पुनर्जन्म और दीक्षा (शिव द्वारा गोद लेना) जब भगवान शिव पर, और विस्तार से, कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो द्विज एक गहरा, पारलौकिक अर्थ लेता है। यह एक ऐसे देवता को दर्शाता है जो हमेशा नया, शाश्वत रूप से ताजा और अस्तित्व के गहरे रहस्यों में पूरी तरह से दीक्षित है। इसका यह भी अर्थ हो सकता है कि कालभैरव, अपने भयंकर और परिवर्तनकारी पहलू में, अपने भक्तों के आध्यात्मिक पुनर्जन्म को सुगम बनाते हैं। एक भक्त के लिए, कालभैरव द्वारा "द्विज" होने का अर्थ है: • अज्ञान का विनाश: पहला जन्म भ्रम (माया) और अज्ञान (अविद्या) की दुनिया में होता है। कालभैरव, भ्रम को काटकर, एक भक्त को इस अवस्था से ऊपर उठने में सक्षम बनाते हैं। • ज्ञान में जन्म: दूसरा जन्म सच्चे ज्ञान (विद्या), आध्यात्मिक जागरूकता और मुक्ति (मोक्ष) में होता है। उनकी कृपा भक्त को आत्म-साक्षात्कार के मार्ग पर दीक्षित करती है, जन्म और मृत्यु के चक्रों से परे परम सत्य को प्रकट करती है।

आदि दीक्षित परम योगी और आदि गुरु के रूप में, शिव पूर्ण द्विज का प्रतीक हैं, जिन्होंने ब्रह्मांडीय चेतना में परम आध्यात्मिक दीक्षा प्राप्त की है। कालभैरव, शिव के एक भयंकर प्रकटीकरण के रूप में, शाश्वत रूप से दीक्षित और आध्यात्मिक शक्ति और ज्ञान में हमेशा ताजा रहने की इस सर्वोच्च स्थिति का प्रतिनिधित्व करते हैं। वह सभी प्रकार के ज्ञान, लौकिक और पारलौकिक दोनों के स्वामी हैं, जो उन्हें परम "द्विज" बनाते हैं जो स्वाभाविक रूप से अनंत ज्ञान और इसे प्रदान करने की शक्ति रखते हैं।

302. देवकायाय

सभी देवताओं के सार से बनी देह वाले प्रभु को नमन।

विस्तार : देवकायाय नाम एक गहन विशेषण है, जो देव (देवता, ईश्वर) और काया (शरीर, रूप, सभा, सार) का एक यौगिक है।

दिव्य शरीर और सार प्राथमिक अर्थ है "जिनका शरीर सभी देवताओं के सार से बना है।" यह दर्शाता है कि कालभैरव केवल देवताओं में से एक देवता नहीं हैं, बल्कि सभी दिव्य ऊर्जाओं और रूपों के अवतार, स्वयं पदार्थ और समुच्चय हैं। वे परम, आदिम स्रोत हैं जिससे अन्य सभी देवता उत्पन्न होते हैं और जिनमें वे अंततः निवास करते हैं। उनका रूप (काया) एक ब्रह्मांडीय संश्लेषण है, जो व्यक्तिगत दिव्य पहचानों से परे है।

सभी देवों का स्रोत यह पहलू उनकी सर्वोच्चता को स्थापित करता है। यदि उनका शरीर सभी देवों का सार है, तो इसका तात्पर्य है कि ये देव अपनी शक्ति, रूप और यहां तक कि अस्तित्व भी उनसे प्राप्त करते हैं। वे आधार हैं, वह मूलभूत सत्ता हैं जिससे संपूर्ण देवमंडल प्रकट होता है। वे केवल देवताओं की तरह शक्तिशाली नहीं हैं; वे सभी देवताओं की सामूहिक शक्ति हैं।

ब्रह्मांडीय रूप (विश्वरूप) यह अवधारणा "विश्वरूप" या ब्रह्मांडीय रूप के विचार से मेल खाती है, जहाँ संपूर्ण ब्रह्मांड और उसके सभी प्राणी (सभी देवताओं सहित) को परम सत्ता के शरीर के भीतर देखा जाता है। कालभैरव के लिए, इसका अर्थ है कि उनकी "काया" स्वयं स्थूल जगत है, जिसमें सभी दिव्य सिद्धांत शामिल हैं।

दिव्य शक्ति की एकता यह सभी दिव्य अभिव्यक्तियों की अंतर्निहित एकता पर जोर देता है। यद्यपि भक्त विभिन्न देवी-देवताओं की पूजा कर सकते हैं, देवकायाय यह सुझाव देता है कि ये सभी विविध रूप अंततः एक सर्वोच्च वास्तविकता की अभिव्यक्तियाँ हैं, जो स्वयं कालभैरव हैं। वे अपने अस्तित्व के भीतर सभी दिव्य गुणों और कार्यों को समाहित और एकीकृत करते हैं।

303. दुर्नीक्ताय

जिनकी आलोचना या दोष निकालना कठिन हो, उन्हें नमन।

विस्तार : दुर्णिक्त (Durṇiktāya) नाम दुर्- उपसर्ग और निक्षेप (जमा करना, रखना, दोष लगाना) धातु का एक यौगिक है।

आलोचना और अपूर्णता से परे दुर्- का अर्थ आमतौर पर "कठिन," "बुरा," "अशुभ," "कठोर," या "असंभव" होता है। दिव्य गुणों के संदर्भ में, दुर्णिक्त का अर्थ है "जिस पर दोष लगाना कठिन है," "जिसकी आलोचना नहीं की जा सकती," या "जो निंदा और दोष से परे है।" यह भगवान कालभैरव की दिव्य पूर्णता और अकाट्य प्रकृति को उजागर करता है।

निर्दोष न्यायाधीश चूंकि कालभैरव ब्रह्मांडीय न्याय के परम प्रवर्तक और दंड (दंड की छड़ी) के धारक हैं, उनके कार्य स्वाभाविक रूप से न्यायपूर्ण हैं और मानवीय निर्णय या नैतिक मानकों से परे हैं। उन पर दोष लगाना या गलती खोजना ब्रह्मांड के मौलिक नियमों पर सवाल उठाने जैसा है। उनके निर्णय पूर्ण, सटीक और त्रुटि या पूर्वाग्रह रहित होते हैं, जिससे उन पर वास्तविक रूप से दोष लगाना असंभव हो जाता है।

उत्कृष्ट प्रकृति यह नाम उनकी उत्कृष्ट प्रकृति पर जोर देता है, जहाँ वे अच्छे और बुरे, सही और गलत की द्वैतता से कहीं परे एक ऐसे तल पर कार्य करते हैं, जैसा कि सीमित मानवीय बुद्धि द्वारा समझा जाता है। जो सांसारिक दृष्टिकोण से कठोर लग सकता है, वह ब्रह्मांडीय दृष्टिकोण से, दिव्य इच्छा का एक आवश्यक और पूर्ण प्रकटीकरण है।

अजेय और अकाट्य इसके अलावा, यह शब्द इंगित करता है कि वे न केवल शारीरिक रूप से, बल्कि प्रकृति और चरित्र में भी अजेय और अकाट्य हैं। उनके अस्तित्व या उनकी ब्रह्मांडीय भूमिका में कोई दाग, कोई कमजोरी और कोई अपूर्णता नहीं है। वे पवित्रता और पूर्णता के परम मानक हैं।

304. दुर्भागोदयाय

जिनके उदय से दुर्भाग्य आता है, उन दुष्टों को नमन।

विस्तार : दुर्भगोदयाय (Durbhagōdayāya) नाम दुर्भग (Durbhaga) और उदय (Udaya) का एक यौगिक है।

दुर्भग (Durbhaga): इस शब्द का अर्थ है "दुर्भाग्य," "बुरा भाग्य," या "बुरा नियति।" यह अक्सर किसी प्रतिकूल या अशुभ चीज़ का तात्पर्य होता है। यह किसी ऐसे व्यक्ति को भी संदर्भित कर सकता है जो दुखी, बुरा या बुरे इरादे वाला हो।

उदय (Udaya): इसका अर्थ है "उदय," "आरोहण," "भोर," या "शुरुआत।"

दुष्टों के लिए दुर्भाग्य का आरोहण (Ascendance of Misfortune for the Wicked) जब इन शब्दों को मिलाया जाता है, तो दुर्भगोदय (Durbhagōdaya) का अर्थ होता है "दुर्भाग्य का उदय" या "बुरे भाग्य की भोर।" कालभैरव के संदर्भ में, यह गुण गलत काम करने वालों, दुष्ट संस्थाओं और अन्याय करने वालों के पतन और पीड़ा को लाने की उनकी अटल और भयानक शक्ति को दर्शाता है। उनका स्वयं का प्रकटीकरण या अभिव्यक्ति, उनका 'उदय', दुर्भावनापूर्ण लोगों के लिए प्रतिकूलता की अवधि का सूत्रपात करता है। यह इंगित करता है कि जब भैरव का न्याय प्रकट होना शुरू होता है, तो यह दुष्टों के लिए गंभीर परिणाम लाता है।

ब्रह्मांडीय न्याय और प्रतिशोध (Cosmic Justice and Retribution) यह पहलू कालभैरव की ब्रह्मांडीय नियम (धर्म) के प्रवर्तक के रूप में भूमिका को उजागर करता है। उन लोगों के लिए जो सार्वभौमिक व्यवस्था को बाधित करते हैं, निर्दोषों का शोषण करते हैं, या अधर्मी कृत्यों में संलग्न होते हैं, कालभैरव आसन्न और अपरिहार्य कर्मिक परिणाम का प्रतीक हैं। उनकी उपस्थिति या प्रभाव यह दर्शाता है कि उनके निर्बाध गलत कामों की अवधि समाप्त हो गई है, और उनके लिए हिसाब-किताब का एक चरण (दुर्भाग्य) शुरू हो गया है। वह एक दिव्य शक्ति हैं जो धर्म के मार्ग से विचलित होने वालों को दंडित करके संतुलन बहाल करती हैं।

अपरिहार्य पतन का प्रतीक (Symbol of Inevitable Downfall) इसलिए, दुर्भगोदयाय (Durbhagōdayāya) भैरव की उस सर्वोच्च शक्ति को संदर्भित करता है जो अन्यायियों और दुष्टों के लिए अपरिहार्य पतन और पीड़ा सुनिश्चित करती है। वह दिव्य प्रतिशोध के अवतार हैं, जिनकी उपस्थिति ही दुर्भावनापूर्ण लोगों के लिए दुर्भाग्य का कारण बनती है, जिससे ब्रह्मांडीय व्यवस्था और सदाचारियों की रक्षा होती है।

305. देहिने

जो एक भौतिक शरीर धारण करते हैं और सभी प्राणियों के भीतर निवास करते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : देही (देही) नाम देह (देह) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "शरीर"। यह उस एक को दर्शाता है जो एक शरीर धारण करता है या उसमें निवास करता है, जो भगवान कालभैरव के बहुआयामी स्वरूप की ओर इशारा करता है।

शरीर का धारक (प्रकट पहलू) एक स्तर पर, देही भैरव के एक विशिष्ट, बोधगम्य रूप या शरीर होने को संदर्भित करता है। यद्यपि अक्सर उन्हें भयंकर, पारलौकिक शब्दों में वर्णित किया जाता है, यह नाम उनकी मूर्त, भौतिक रूप में प्रकट होने की क्षमता को स्वीकार करता है। यह उनके प्रतिष्ठित चित्रणों, विशिष्ट देवताओं में उनकी उपस्थिति, या वास्तव में, संपूर्ण ब्रह्मांडीय शरीर को संदर्भित कर सकता है जिसमें वे निवास करते हैं और व्याप्त हैं। यह अवधारणा इस विचार को रेखांकित करती है कि दिव्य केवल एक अप्रकट, अमूर्त सिद्धांत नहीं है, बल्कि सृष्टि और भक्तों के लाभ के लिए रूप धारण कर सकता है और करता है।

सभी प्राणियों के भीतर निवास करने वाला (आंतरिक पहलू) अधिक गहराई से, देही उस परम आत्मा (आत्मा) को संदर्भित करता है जो प्रत्येक व्यक्तिगत शरीर (देह) के भीतर निवास करती है। इस अर्थ में, कालभैरव, देही के रूप में, वह चेतन सिद्धांत, जीवन-दाता और चेतना हैं जो सभी जीवित प्राणियों में व्याप्त हैं। वे आंतरिक साक्षी, अंतरतम सार और स्वयं आत्मा (आत्मा) हैं जो सभी जीवों (व्यक्तिगत आत्माओं) के भीतर निवास करती हैं। यह अद्वैतवादी समझ के अनुरूप है कि व्यक्तिगत आत्मा (जीवात्मा) अंततः सार्वभौमिक आत्मा (परमात्मा) के समान है।

ब्रह्मांडीय शरीर इसके अलावा, संपूर्ण ब्रह्मांड, अपने सभी विविध रूपों और अभिव्यक्तियों के साथ, ब्रह्मांडीय पुरुष, जो शिव/भैरव हैं, के "शरीर" के रूप में देखा जा सकता है। इस समझ में, वे केवल एक व्यक्तिगत निवासी के रूप में देही नहीं हैं, बल्कि वे हैं जो सभी अस्तित्व को मूर्त रूप देते हैं और उसका गठन करते हैं। इस प्रकार, उनकी दिव्य उपस्थिति प्रत्येक परमाणु और प्रत्येक प्राणी को चेतन और बनाए रखती है।

उनकी अंतर्निहित उपस्थिति को स्वीकार करना संक्षेप में, यह नाम कालभैरव को अंतर्निहित दिव्य के रूप में स्वीकार करता है, न केवल एक दूरस्थ ब्रह्मांडीय शक्ति के रूप में, बल्कि स्वयं के भीतर और सभी सृष्टि के भीतर निवास करने वाले सार के रूप में। यह उनके सर्वव्यापी स्वरूप और अस्तित्व के हर पहलू के साथ उनके घनिष्ठ संबंध की एक गहन पहचान है।

306. दाहाय

उन महान अग्नि स्वरूप को नमन जो सभी चीजों को जलाते और भस्म करते हैं।

विस्तार : दाहाय नाम संस्कृत मूल "दह्" से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है "जलाना," "भस्म करना," या "राख में बदलना।" कालभैरव का यह नाम दिव्य अग्नि के शक्तिशाली और परिवर्तनकारी पहलू को दर्शाता है।

ब्रह्मांडीय प्रलय अग्नि (Cosmic Conflagration - Pralaya Agni) दाह उस महान ब्रह्मांडीय अग्नि (प्रलयाग्नि या कालाग्नि) को संदर्भित करता है जो प्रत्येक ब्रह्मांडीय चक्र (प्रलय) के अंत में पूरे ब्रह्मांड को भस्म करने के लिए नियत है। कालभैरव, दाहाय के रूप में, इस परम विनाशकारी शक्ति का प्रतीक हैं। वह एक अदम्य शक्ति हैं जो सभी निर्मित रूपों, सभी भौतिक अस्तित्व और यहां तक कि सूक्ष्म तत्वों को उनके मूल सार में बदल देती हैं, एक नई सृष्टि के लिए आधार तैयार करती हैं। यह दहन कोई यादृच्छिक हिंसा नहीं है, बल्कि ब्रह्मांडीय कायाकल्प के लिए एक आवश्यक, व्यवस्थित प्रक्रिया है।

शुद्धि और परिवर्तन (Purification and Transformation) भौतिक विनाश से परे, दाहाय शुद्धि की अग्नि का भी प्रतीक है। जिस प्रकार अग्नि पदार्थों को परिवर्तित करती है, उसी प्रकार कालभैरव की अग्नि ऊर्जा अशुद्धियों, अज्ञान (अविद्या), नकारात्मक कर्म और आत्मा को बांधने वाली हर चीज को जला देती है। यह एक परिवर्तनकारी अग्नि है जो अहंकार और आसक्ति के अवशेषों को भस्म करके मुक्ति (मोक्ष) की ओर ले जाती है। आध्यात्मिक साधक के लिए, दाहाय पर ध्यान afflictions के आंतरिक दहन और आध्यात्मिक ज्ञान (ज्ञान अग्नि) के प्रज्वलन का प्रतिनिधित्व कर सकता है।

ज्ञान और जागरूकता की अग्नि (The Fire of Knowledge and Awareness) गहरे दार्शनिक अर्थ में, दाहाय चेतना की अग्नि (चिदग्नि) को संदर्भित कर सकता है। यह जागरूकता की आंतरिक अग्नि है जो वास्तविकता को प्रकाशित करती है और भ्रम को भस्म करती है। जब कालभैरव दाहाय के रूप में प्रकट होते हैं, तो वह वह प्रकाश होते हैं जो अंधकार को दूर करता है, वह दीप्तिमान ज्ञान जो स्वयं के वास्तविक स्वरूप को ढंकने वाले अज्ञान को भस्म करता है।

सभी चीजों का अंत (The End of All Things) अंततः, दाहाय सभी चीजों की अंतिम परिणति का प्रतीक है। वह उस अपरिहार्य विघटन का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सभी रूपों की प्रतीक्षा करता है, भौतिक दुनिया की क्षणभंगुरता और समय और विनाश के भगवान के रूप में शिव की परम सर्वोच्चता की एक स्पष्ट याद दिलाता है।

307. दानवारये

दानवों के परम शत्रु को नमन।

विस्तार : दानवारये नाम दानव और अरये (या अरि) का एक यौगिक है।

• दानव: राक्षस, विशेष रूप से हिंदू पौराणिक कथाओं में शक्तिशाली, अक्सर दुर्भावनापूर्ण प्राणियों का एक वर्ग, जो दनु से उत्पन्न हुए हैं। वे अराजकता, अज्ञानता और अधर्म (अन्याय) की शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

• अरये (अरि): शत्रु, दुश्मन, विरोधी।

राक्षसी शक्तियों का परम संहारक यह नाम नकारात्मक, विनाशकारी और अधर्मी शक्तियों के परम विजेता के रूप में कालभैरव की भूमिका पर प्रकाश डालता है। दानव केवल भौतिक प्राणी नहीं हैं, बल्कि मनुष्यों के भीतर के आंतरिक राक्षसों—जैसे लालच, वासना, क्रोध, अहंकार और अज्ञानता—के साथ-साथ आध्यात्मिक प्रगति के बाहरी बाधाओं का भी प्रतीक हैं। उनके प्रति कालभैरव का विरोध ब्रह्मांडीय व्यवस्था (ऋत) और आध्यात्मिक विकास में बाधा डालने वाली किसी भी चीज़ को नष्ट करने की उनकी शक्ति को दर्शाता है।

धर्म के संरक्षक "दानवों के शत्रु" होने के नाते, कालभैरव सक्रिय रूप से धर्म और पुण्यात्माओं की रक्षा करते हैं। वे सुनिश्चित करते हैं कि अच्छाई की शक्तियाँ अंततः बुराई की शक्तियों पर विजय प्राप्त करें, जिससे ब्रह्मांड में संतुलन बना रहे। यह उन्हें ब्रह्मांडीय कानून और व्यवस्था का एक भयंकर संरक्षक बनाता है।

बुराई से मुक्ति के प्रदाता भक्तों के लिए, दानवारये का आह्वान भौतिक और ऊर्जावान दोनों तरह के दुर्भावनापूर्ण प्रभावों से सुरक्षा चाहता है। उन्हें बाधाओं को नष्ट करने के लिए बुलाया जाता है, विशेष रूप से राक्षसी या कर्म संबंधी प्रकृति की बाधाओं को, जो मुक्ति और आध्यात्मिक स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त करती हैं। इस भूमिका में उनकी तीव्रता दिव्य प्रेम की अभिव्यक्ति है, क्योंकि यह नकारात्मक शक्तियों के कारण होने वाले कष्टों को मिटाना चाहती है।

३०८. देवेन्द्राय

इन्द्र जैसे सभी दिव्य देवताओं के राजा को नमन।

विस्तार : देवेन्द्राय नाम देव और इंद्र का एक यौगिक है, जिसका अर्थ है "देवों के स्वामी" या "दिव्य इंद्र।" कालभैरव के लिए यह विशेषण स्वर्गीय पदानुक्रम पर उनके सर्वोच्च अधिकार को दर्शाता है।

देवों के स्वामी जबकि इंद्र को पारंपरिक रूप से देवों (स्वर्गीय देवताओं) के राजा के रूप में जाना जाता है, कालभैरव पर "देवेन्द्र" का प्रयोग उनकी स्थिति को वैदिक इंद्र से कहीं अधिक ऊपर उठाता है। इसका अर्थ है कि कालभैरव स्वयं इंद्र और स्वर्ग में निवास करने वाले अन्य सभी देवताओं पर भी परम संप्रभु हैं। इंद्र, यद्यपि अपने क्षेत्र में शक्तिशाली हैं, फिर भी शिव द्वारा सन्निहित उच्च लौकिक नियमों और शक्तियों के अधीन हैं, और विस्तार से, कालभैरव के भी अधीन हैं।

ब्रह्मांडीय शासन यह नाम ब्रह्मांड के पूर्ण शासन में कालभैरव की भूमिका पर जोर देता है। इसका तात्पर्य है कि स्वर्ग का व्यवस्थित कार्य, देवों के कार्य, और स्वर्गीय क्षेत्रों के भीतर धर्म (ब्रह्मांडीय व्यवस्था) का रखरखाव सभी उनके प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण और नियंत्रण में हैं। वह परम शासक हैं जिनकी इच्छा ब्रह्मांड के विभिन्न पहलुओं पर शासन करने वाले देवताओं के कार्य को भी निर्धारित करती है।

सर्वोच्च अधिकार और अतिक्रमण देवेन्द्र कहलाने से, कालभैरव अन्य सभी दिव्य प्राणियों पर अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित करते हैं। वह केवल शिव का एक उग्र पहलू नहीं हैं, बल्कि सर्वोच्च दिव्य अधिकार का सार हैं, जो सबसे शक्तिशाली स्वर्गीय संस्थाओं को भी आज्ञा देने और नियंत्रित करने में सक्षम हैं। यह ब्रह्मांडीय योजना में उनकी स्थिति को अंतिम, अजेय शक्ति के रूप में स्थापित करता है, जहाँ "देवताओं के राजा" भी उनके सामने नतमस्तक होते हैं।

309. अरिमर्दनाय

सभी शत्रुओं का निर्दयी रूप से कुचलने वाले और नष्ट करने वाले को नमन।

विस्तार : अरिमर्दनाय नाम दो संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: 'अरि' (Ari) और 'मर्दन' (Mardana)। यह नाम कालभैरव के कार्य और प्रकृति के एक महत्वपूर्ण पहलू को सशक्त रूप से समाहित करता है।

शत्रु (अरि) (The Enemy (Ari)) इस संदर्भ में, 'अरि' केवल बाहरी विरोधियों को ही नहीं, बल्कि अधिक गहराई से आंतरिक शत्रुओं को संदर्भित करता है। इनमें वे मनोवैज्ञानिक कष्ट और आध्यात्मिक बाधाएँ शामिल हैं जो एक साधक की प्रगति में बाधा डालती हैं और एक व्यक्ति को दुख के चक्र से बांधती हैं। ये 'षड्रिपु' हैं, मन के छह शत्रु: काम (lust), क्रोध (anger), लोभ (greed), मोह (delusion), मद (arrogance), और मत्सर (envy)। इसमें अज्ञान (अविद्या) और अहंकार (अहंकार) की शक्तियाँ भी शामिल हैं जो वास्तविकता के वास्तविक स्वरूप को ढँक देती हैं। ब्रह्मांडीय पैमाने पर, 'अरि' उन सभी शक्तियों का प्रतीक है जो धर्म और ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बाधित करती हैं।

कुचलने वाला/नाश करने वाला (मर्दन) (The Crusher/Destroyer (Mardana))• 'मर्दन' का अर्थ है कुचलना, पीसना, नष्ट करना या दबाना। यह एक निर्णायक और पूर्ण विजय को दर्शाता है। कालभैरव, 'अरिमर्दन' के रूप में, केवल शत्रुओं को पराजित नहीं करते; वे उन्हें पूरी तरह से नष्ट कर देते हैं, उनके पुनरुत्थान की कोई संभावना या अवशेष नहीं छोड़ते। यह विनाश क्रोध या प्रतिशोध से उत्पन्न नहीं होता, बल्कि संतुलन बहाल करने और भक्त को मुक्त करने की गहरी आवश्यकता से उत्पन्न होता है।

आध्यात्मिक मुक्ति और संरक्षण (Spiritual Liberation and Protection) अरिमर्दन के रूप में, कालभैरव इन आंतरिक शत्रुओं को निर्दयतापूर्वक कुचलते हैं, दुख और भ्रम के मूल कारणों का उन्मूलन करते हैं। वे साधक को आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त करने में सक्षम बनाते हैं। जो भक्त हैं, उनके लिए वे एक भयंकर रक्षक के रूप में कार्य करते हैं, बाहरी खतरों—शारीरिक, मानसिक, या आध्यात्मिक—को नष्ट करते हैं जो उनके मार्ग में बाधा डालते हैं या उन्हें नुकसान पहुँचाते हैं। उनकी 'निर्दय' प्रकृति बाधाओं को दूर करने के लिए एक पूर्णता और अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाती है, जिससे उनके भक्तों के लिए पूर्ण सुरक्षा और पवित्रता सुनिश्चित होती है। यह पहलू धर्म के एक दुर्जेय संरक्षक और व्यक्तियों की आध्यात्मिक यात्राओं में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है।

310. देवासुरगुरवे

देवताओं और असुरों दोनों के आध्यात्मिक गुरु (मार्गदर्शक) को नमन।

विस्तार : देवासुरगुरवे नाम में तीन संस्कृत शब्द हैं: देव, असुर और गुरु।

• देव (Deva): दिव्य प्राणी, देवता, स्वर्गीय सत्ताएँ। ये प्राणी आमतौर पर ब्रह्मांड में व्यवस्था, धार्मिकता और संरक्षण की शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

• असुर (Asura): अक्सर राक्षस, दानव, या शक्तिशाली प्राणी के रूप में अनुवादित किया जाता है जो अक्सर देवताओं का विरोध करते हैं। वे अराजकता, अहंकार और विनाश की शक्तियों का प्रतीक हैं, हालांकि हमेशा स्वाभाविक रूप से बुरे नहीं होते हैं।

• गुरु (Guru): एक आध्यात्मिक शिक्षक, उपदेशक, मार्गदर्शक या स्वामी जो अंधकार को दूर करता है (गु - अंधकार, रु - दूर करने वाला)।

सार्वभौमिक आध्यात्मिक गुरु (Universal Spiritual Preceptor) यह नाम कालभैरव की सर्वोच्च निष्पक्षता और सर्वव्यापी ज्ञान को दर्शाता है। देवों और असुरों दोनों का गुरु होने का अर्थ है कि वह अच्छे और बुरे, प्रकाश और अंधकार, सृजन और विनाश के द्वंद्वों से परे हैं, जो प्रकट ब्रह्मांड की विशेषता है। वह सभी प्राणियों के लिए ज्ञान और आध्यात्मिक मार्गदर्शन का अंतिम स्रोत हैं, चाहे उनकी प्रकृति या निष्ठा कुछ भी हो। उनकी शिक्षाएँ मौलिक हैं, और वह सभी ज्ञान (परा विद्या - सर्वोच्च ज्ञान, और अपरा विद्या - निम्न ज्ञान) के स्रोत हैं।

सभी ज्ञान का स्रोत (The Source of All Knowledge) दोनों के गुरु के रूप में, वह उस संपूर्ण ज्ञान का प्रतीक हैं जो ब्रह्मांडीय अस्तित्व को रेखांकित करता है। देव उनसे ब्रह्मांडीय व्यवस्था, धर्म और संरक्षण के सिद्धांत सीख सकते हैं, जबकि असुर शक्ति, विघटन और अपने स्वयं के लक्ष्यों की प्राप्ति के बारे में सीख सकते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि वह उनके नकारात्मक कार्यों का समर्थन करते हैं, बल्कि यह कि सभी प्रकार के ज्ञान उनसे उत्पन्न होते हैं। वह सभी शिक्षाओं का अंतिम स्रोत हैं, चाहे वह भौतिक शक्ति (असुरों द्वारा प्राप्त) या आध्यात्मिक ज्ञान (देवों और साधुओं द्वारा खोजा गया) से संबंधित हो।

द्वैत से परे (अद्वैत) (Beyond Duality - Advaita) यह पहलू दिव्य के अंतिम अद्वैत (गैर-द्वैत) स्वरूप की ओर इशारा करता है। कालभैरव, शिव के एक प्रकटीकरण के रूप में, सभी भेदों से परे हैं। वह घटनात्मक दुनिया के नैतिक ढाँचों से बंधे नहीं हैं, बल्कि उन मौलिक सिद्धांतों पर शासन करते हैं जो सभी अस्तित्व को नियंत्रित करते हैं, ब्रह्मांडीय लीला के हिस्से के रूप में रचनात्मक और विनाशकारी दोनों शक्तियों को गले लगाते हैं। वह साक्षी और अंतिम वास्तविकता हैं जिससे सभी दृष्टिकोण, यहां तक कि विरोधी भी, उत्पन्न होते हैं।

311. देवाय

जो दिव्य और तेजस्वी स्वर्गीय प्राणी हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : देवा नाम संस्कृत मूल "दिव्" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "चमकना," "विकिरण करना," "चमकना," या "खेलना।"

• तेजस्वी और चमकदार (Radiant and Luminous) अपने सबसे मौलिक स्तर पर, देव एक चमकते, शानदार प्राणी को संदर्भित करता है। यह भगवान कालभैरव की अंतर्निहित चमक और दीप्ति को दर्शाता है। वह प्रकाश, शुद्ध चेतना और सभी प्रकार के प्रकाश का स्रोत है, चाहे वह बाहरी हो (जैसे सूर्य) या आंतरिक (जैसे ज्ञान और विद्या)। यह चमक उनके दिव्य स्वरूप का प्रतीक है, जो स्वाभाविक रूप से शुद्ध, अंधकार से परे और अज्ञान को दूर करने में सक्षम है।

• दिव्य और स्वर्गीय (Divine and Celestial) देवों को दिव्य प्राणी, देवता या स्वर्गीय प्राणी भी समझा जाता है जो उच्च लोकों में निवास करते हैं। यह पहलू कालभैरव के पारलौकिक स्वरूप पर जोर देता है, उन्हें सर्वोच्च देवताओं में स्थान देता है। वह केवल एक सांसारिक शक्ति नहीं है, बल्कि एक ब्रह्मांडीय शक्ति है, उच्चतम आध्यात्मिक लोकों का निवासी है, और दिव्य वरदानों का दाता है। उनकी उपस्थिति व्यवस्था, ब्रह्मांडीय नियम और आध्यात्मिक कृपा का प्रतीक है।

• चंचल और रचनात्मक (Playful and Creative) "दिव्" मूल का अर्थ "खेलना" या "क्रीड़ा करना" भी है। यह सूक्ष्म अर्थ परम सत्ता की दिव्य लीला (खेल) को दर्शाता है। उनके भयानक रूप के बावजूद, कालभैरव के कार्य, जिनमें सृष्टि, पालन और संहार शामिल हैं, को दिव्य के भव्य ब्रह्मांडीय खेल के रूप में समझा जा सकता है। यह पहलू उनके दिव्य कार्यों में एक अंतर्निहित सहजता और स्वतंत्रता का सुझाव देता है।

• सार्वभौमिक उपस्थिति (Universal Presence) एक देव के रूप में, वह एक सार्वभौमिक सिद्धांत है, परम वास्तविकता का एक पहलू है जो सभी अस्तित्व को नियंत्रित और व्याप्त करता है। वह दिव्य ऊर्जा है जो ब्रह्मांड को चेतन करती है, समय के चक्रों और सभी प्राणियों के भाग्य की देखरेख करती है। उन्हें देव के रूप में पूजना उनकी अद्वितीय, सर्वव्यापी दिव्य स्थिति की स्वीकृति है।

312. देवासुरनमस्कृताय

उन प्रभु को नमन, जिनकी पूजा देव और असुर दोनों एक समान करते हैं।

विस्तार : देवासुरनमस्कृताय नाम तीन संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: देव (देवता), असुर (राक्षस), और नमस्कृत (पूजित, नमन किया गया, अभिवादन किया गया)।

सर्वोच्च अधिकार और निष्पक्षता यह नाम पारंपरिक समझ के अनुसार अच्छे और बुरे के द्वंद्वों से परे, पूरे ब्रह्मांड पर कालभैरव के पूर्ण और निष्पक्ष अधिकार को गहराई से दर्शाता है। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, देव (देवता) प्रकाश, व्यवस्था और धर्म की शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि असुर (राक्षस) अक्सर अराजकता, अंधकार और अधर्म का प्रतीक होते हैं। यह तथ्य कि ये दोनों विरोधी शक्तियाँ कालभैरव को नमन करती हैं, उनकी सर्वोच्च और अंतिम शक्ति को रेखांकित करता है।

सभी प्राणियों द्वारा स्वीकृत इसका तात्पर्य है कि जो लोग स्वाभाविक रूप से एक-दूसरे के प्रति शत्रुतापूर्ण हैं, वे भी उनकी अथाह शक्ति और समय और भाग्य के अंतिम नियंत्रक के रूप में उनकी भूमिका को पहचानते हैं और उसके अधीन होते हैं। वह ब्रह्मांडीय नियम हैं जिससे कोई भी, यहाँ तक कि सबसे शक्तिशाली देवता या सबसे दुर्जेय राक्षस भी नहीं बच सकते।

द्वंद्वों से परे यह गुण कालभैरव को घटनात्मक दुनिया के सापेक्ष नैतिक निर्णयों से परे रखता है। उनका अस्तित्व और कार्य उन नैतिक ढाँचों से बंधे नहीं हैं जो देवताओं और राक्षसों को नियंत्रित करते हैं। वह एक उच्च, अंतर्निहित सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करते हैं जो दोनों को समाहित और बनाए रखता है। दोनों गुटों द्वारा उनका सम्मान उनकी अंतिम मध्यस्थ, न्याय और परिणाम देने वाले, बिना किसी पूर्वाग्रह के, की भूमिका को रेखांकित करता है।

सार्वभौमिक प्रशंसा यह नमन केवल भय से नहीं, बल्कि उनकी सार्वभौमिक संप्रभुता और उनकी ब्रह्मांडीय व्यवस्था की अनिवार्यता की गहरी पहचान से भी है। यह दर्शाता है कि सभी प्राणी, अपनी प्रकृति या निष्ठा की परवाह किए बिना, अंततः उस शक्ति को स्वीकार करते हैं जो उनके अस्तित्व और उनके अंतिम समापन को नियंत्रित करती है।

313. देवासुरेश्वराय

देवताओं और असुरों दोनों के सर्वोच्च स्वामी को नमन।

विस्तार : देवासुरेश्वराय नाम तीन संस्कृत शब्दों: देव, असुर और ईश्वर का एक यौगिक है, जिसमें संबंधवाचक प्रत्यय -आय जोड़ा गया है।

देव (Deva): यह स्वर्गवासियों, देवताओं या सकारात्मक दिव्य सत्ताओं को संदर्भित करता है जो प्रकाश, धार्मिकता और ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) का प्रतीक हैं। वे आमतौर पर स्वर्ग में निवास करते हैं और सृष्टि तथा संरक्षण की शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

असुर (Asura): ये देव-विरोधी या राक्षस हैं, जो अक्सर शक्तिशाली, मुखर और कभी-कभी अराजक शक्तियों से जुड़े होते हैं। जबकि पुराणों में उन्हें अक्सर नकारात्मक रूप से चित्रित किया जाता है, प्रारंभिक वैदिक साहित्य में, देव और असुर प्रतिद्वंद्वी कुलों के समान थे, दोनों शक्तिशाली और कभी-कभी धर्मी भी। वे चुनौतियों, बाधाओं और स्थापित व्यवस्था को तोड़ने का प्रतीक हैं।

ईश्वर (Īśvara): यह शब्द "स्वामी," "मालिक," "शासक," या "परम सत्ता" को दर्शाता है। यह उस व्यक्ति को इंगित करता है जिसके पास अंतिम नियंत्रण और संप्रभुता है।

देवताओं और राक्षसों के सर्वोच्च शासक इसलिए, देवासुरेश्वराय स्पष्ट रूप से बताता है कि कालभैरव (और विस्तार से भगवान शिव) देवों और असुरों दोनों के सर्वोच्च स्वामी और अंतिम संप्रभु हैं। यह एक सार्वभौमिक अधिकार को दर्शाता है जो मनुष्यों द्वारा अनुभव किए गए अच्छे और बुरे की द्वैतता से परे है। वह एक पक्ष के साथ दूसरे के विरुद्ध नहीं हैं, बल्कि दोनों के अंतिम मध्यस्थ और नियंत्रक हैं।

ब्रह्मांडीय संतुलन और अद्वैत यह नाम दिव्य के अद्वैत स्वरूप को उजागर करता है। भव्य ब्रह्मांडीय लीला में, देवों और असुरों दोनों की अपनी भूमिकाएँ हैं। देव व्यवस्था बनाए रखते हैं, जबकि असुर आवश्यक संघर्ष और चुनौती प्रदान करते हैं जो विकास, परिवर्तन और दिव्य शक्ति की अभिव्यक्ति की ओर ले जाते हैं। दोनों के स्वामी होने के नाते, कालभैरव ब्रह्मांडीय संतुलन (ऋत) और सार्वभौमिक धर्म के प्रकटीकरण को सुनिश्चित करते हैं। वह इन सापेक्ष भेदों से परे हैं, दोनों को अपनी दिव्य इच्छा के उपकरण के रूप में देखते हैं।

परम अधिकार यह उपाधि कालभैरव की स्थिति को परम सत्य (ब्रह्म) के रूप में पुष्ट करती है जिससे सभी अभिव्यक्तियाँ, चाहे वे दिव्य या राक्षसी के रूप में मानी जाती हों, उत्पन्न होती हैं और अंततः उसी में लौट आती हैं। दोनों समूहों पर उनका शासन एक अंतिम निष्पक्षता और ब्रह्मांड की सभी शक्तियों पर पूर्ण महारत का तात्पर्य है, जिससे वह सभी प्राणियों के लिए, उनके संरेखण की परवाह किए बिना, सर्वोच्च रक्षक और दंडक बन जाते हैं।

314. दिव्याय

जो दिव्य, स्वर्गीय, आकाशीय और अद्भुत हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : "दिव" संस्कृत मूल से व्युत्पन्न नाम दिव्याय, अर्थों की एक गहन श्रृंखला वहन करता है जो कालभैरव को सर्वोच्च आध्यात्मिक ऊंचाइयों तक ले जाता है।

दिव्य और स्वर्गीय दिव्य का प्राथमिक अर्थ "दिव्य," "स्वर्गीय," "आकाशीय," या "अलौकिक" है। यह दर्शाता है कि कालभैरव केवल एक शक्तिशाली सत्ता नहीं हैं, बल्कि स्वाभाविक रूप से पवित्र हैं, जो उच्चतम आध्यात्मिक लोकों से उत्पन्न हुए हैं। वे सांसारिक अस्तित्व से परे हैं, सांसारिक सीमाओं और अपूर्णताओं से अछूते हैं। उनका रूप, कार्य और उनका सार दिव्य है।

चमकदार और दीप्तिमान "दिव" का संबंध "चमकने" या "प्रकाश विकीर्ण करने" से भी है। इस प्रकार, दिव्याय उस एक को संदर्भित करता है जो दीप्तिमान, शानदार और चमकदार है। यह प्रकाश लाक्षणिक है, जो ज्ञान, विद्या और आध्यात्मिक प्रकाश का प्रतिनिधित्व करता है जो अज्ञान और अंधकार को दूर करता है। वे आध्यात्मिक दीप्ति के स्रोत हैं जो भक्तों को उनके मार्ग पर मार्गदर्शन करते हैं।

अद्भुत और असाधारण यह शब्द आगे "अद्भुत," "असाधारण," या "चमत्कारिक" अर्थों तक विस्तृत होता है। यह कालभैरव की शक्ति, उपस्थिति और अभिव्यक्तियों के विस्मयकारी और अबोधगम्य स्वरूप को उजागर करता है। उनके कार्य असाधारण हैं, उनका रूप शानदार है, और उनका स्वभाव सामान्य समझ से परे है, जो आश्चर्य और श्रद्धा को प्रेरित करता है।

मानव समझ से परे उन्हें दिव्याय कहकर, भक्त स्वीकार करते हैं कि कालभैरव का सच्चा स्वरूप मौलिक रूप से मानव या सांसारिक घटनाओं से भिन्न और श्रेष्ठ है। वे पारलौकिक, शुद्ध और परम पवित्रता के प्रतीक हैं, एक ऐसी वास्तविकता का प्रतीक हैं जो अकेले मानव धारणा और बुद्धि के दायरे से परे है - जिसे केवल आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और भक्ति के माध्यम से ही समझा जा सकता है।

315. देवासुर महेश्वराय

देवताओं और असुरों दोनों के महान और सर्वोच्च स्वामी को नमन।

विस्तार : देवासुरमहेश्वराय नाम तीन संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: देव, असुर और महेश्वर।

देव (Deva): यह स्वर्गदूतों, देवताओं और दिव्य प्राणियों को संदर्भित करता है जो उच्च लोकों में निवास करते हैं। वे ब्रह्मांड में व्यवस्था, प्रकाश और धार्मिक कार्य की शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

असुर (Asura): परंपरागत रूप से, ये दिव्य प्राणी हैं जिन्हें अक्सर देवताओं के विरोधी के रूप में देखा जाता है। जबकि कभी-कभी राक्षसी के रूप में चित्रित किया जाता है, व्यापक अर्थ में, वे शक्तिशाली, अक्सर भौतिकवादी शक्तियों या उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो दिव्य व्यवस्था को चुनौती देते हैं।

महेश्वर (Maheśvara): यह शिव के लिए एक शक्तिशाली विशेषण है, जिसका अर्थ है "महान भगवान" या "सर्वोच्च शासक।" यह "महा" (महान, सर्वोच्च) और "ईश्वर" (भगवान, शासक) को जोड़ता है।

सभी दिव्य प्राणियों के सर्वोच्च स्वामी यह नाम ब्रह्मांड में दिव्य और अ-दिव्य शक्तियों के पूरे स्पेक्ट्रम पर कालभैरव की पूर्ण और बिना शर्त संप्रभुता की पुष्टि करता है। वह केवल एक गुट के स्वामी नहीं हैं, बल्कि देवताओं और असुरों दोनों से परे हैं और उन पर शासन करते हैं। यह उनके परम अधिकार को दर्शाता है, जहाँ द्वंद्व (अच्छा/बुरा, प्रकाश/अंधेरा) सामंजस्यपूर्ण होते हैं और उनकी सर्वोच्च इच्छा के अधीन होते हैं।

द्वंद्व से परे "देव" और "असुर" का संयोजन इस बात पर जोर देता है कि कालभैरव ऐसी वर्गीकरणों से परे हैं। देवता और राक्षस दोनों, अपनी-अपनी शक्तियों और गुणों के साथ, उनसे अपना अस्तित्व और शक्ति प्राप्त करते हैं और अंततः उनके ब्रह्मांडीय उद्देश्य की पूर्ति करते हैं, चाहे वे इसे महसूस करें या न करें। वह अस्तित्व का अंतिम आधार हैं जिससे सभी घटनात्मक अभिव्यक्तियाँ, इन विरोधी शक्तियों सहित, उत्पन्न होती हैं और जिसमें वे विलीन हो जाती हैं।

ब्रह्मांडीय नियम का अवतार दोनों के महेश्वर के रूप में, वह मौलिक ब्रह्मांडीय नियम (धर्म) का प्रतीक हैं जो सभी सृष्टि, संरक्षण और विघटन को नियंत्रित करता है। उनका शासन ब्रह्मांड के संतुलन और प्रगति को सुनिश्चित करता है, यहाँ तक कि देवताओं और असुरों के बीच संघर्षों के माध्यम से भी। यह उनकी निष्पक्षता और सभी कार्यों के अंतिम न्यायाधीश के रूप में उनकी भूमिका को भी रेखांकित करता है, चाहे उन्हें कोई भी करे।

316. सर्वदेवमयाय

जो सभी देवताओं के मूर्त रूप हैं और अपने भीतर सभी देवी-देवताओं को समाहित करते हैं, उनको नमन।

विस्तार : नाम सर्वदेवमयाय भैरव की सर्वोच्च ब्रह्मांडीय स्थिति की एक गहन घोषणा है, जिसमें 'सर्व' (सभी), 'देव' (देवता), और 'मय' (से बना हुआ, से भरा हुआ, या द्वारा मूर्त) शब्दों का संयोजन है, जिसमें दत्तीय अंत -आय 'को' इंगित करता है। यह दर्शाता है कि शिव, अपने भैरव रूप में, केवल कई देवताओं में से एक नहीं हैं, बल्कि सभी दिव्य अभिव्यक्तियों का सार, मूर्त रूप और स्रोत हैं।

सभी देवताओं का मूर्त रूप यह नाम इस बात पर जोर देता है कि कालभैरव अपने भीतर सभी देवताओं, वैदिक और पौराणिक दोनों की समग्रता को समाहित करते हैं। वे केवल शक्तिशाली नहीं हैं; वे वह मूलभूत सिद्धांत हैं जिससे अन्य सभी दिव्य रूप और कार्य उत्पन्न होते हैं। चाहे वह ब्रह्मा

की रचनात्मक शक्ति हो, विष्णु की संरक्षक शक्ति हो, इंद्र का ब्रह्मांडीय विनियमन हो, या सरस्वती का ज्ञान हो, ये सभी दिव्य गुण और रूप अंततः भैरव की अद्वितीय, परम वास्तविकता के पहलू या उत्सर्जन हैं।

परम वास्तविकता दार्शनिक रूप से, यह ब्रह्म की अद्वैतवादी समझ की ओर इशारा करता है, जहाँ सभी विविध देवता एक ही सर्वोच्च सत्य की ओर ले जाने वाले विभिन्न अभिव्यक्तियाँ या मार्ग मात्र हैं। भैरव, सर्वदेवमयाय के रूप में, इस अवधारणा को मूर्त रूप देते हैं, यह दर्शाते हैं कि किसी भी देवता के प्रति निर्देशित पूजा अंततः इस अद्वितीय, सर्व-समावेशी दिव्य सत्ता तक पहुँचती है। वे सभी दिव्य अनुभव और अभिव्यक्ति के आधार हैं।

ब्रह्मांडीय समावेशिता और सर्वोच्चता यह गुण भैरव की परम सर्वोच्चता और ब्रह्मांडीय समावेशिता पर जोर देता है। उनके बाहर कोई दिव्य शक्ति या उपस्थिति नहीं है। वे देवताओं की सार्वभौमिक आत्मा (आत्मन) हैं, वह मूलभूत ऊर्जा जो प्रत्येक दिव्य सत्ता को चेतन और सशक्त करती है। सभी देवताओं को समाहित करके, वे दिव्य देवमंडल के भीतर सभी भेदों और पदानुक्रमों को पार करते हैं, स्वयं को परम, सर्वव्यापी दिव्य रूप के रूप में स्थापित करते हैं।

भक्तों के लिए निहितार्थ भैरव को सर्वदेवमयाय के रूप में समझना भक्त के लिए गहन भक्ति और एकता की भावना को बढ़ावा देता है। इसका तात्पर्य यह है कि भैरव की पूजा करके, व्यक्ति एक साथ सभी देवताओं को श्रद्धांजलि दे रहा है, जिससे किसी की आध्यात्मिक साधना सरल और केंद्रीकृत हो जाती है। यह इस विचार को भी पुष्ट करता है कि दिव्य सार में अद्वितीय है, जो विभिन्न साधकों के लाभ और समझ के लिए विविध तरीकों से प्रकट होता है।

317. दण्डाय

सभी दुष्कर्मों के लिए परम दण्ड देने वाले को नमन।

विस्तार : दण्डाय (दण्डा) नाम, जिसका अर्थ "छड़ी" या "दंड" है, भगवान कालभैरव की न्याय और परिणामों के सर्वोच्च प्रदाता के रूप में भूमिका को संदर्भित करता है।

न्याय और अधिकार का प्रतीक "दण्ड" परम अधिकार, अनुशासन और ब्रह्मांडीय कानून के सटीक प्रशासन का प्रतीक है। यह व्यक्तियों या ब्रह्मांडीय शक्तियों द्वारा जानबूझकर या अनजाने में किए गए गलत कामों के लिए धर्मी दंड का साधन है। यह छड़ी केवल एक दंडात्मक उपकरण नहीं है, बल्कि धर्म (धार्मिकता) के अटूट सिद्धांत का प्रतीक है।

कर्म की अनिवार्यता दण्डा के रूप में, भैरव कर्म के नियम के अपरिहार्य संचालन को सुनिश्चित करते हैं। प्रत्येक क्रिया, अच्छी या बुरी, अनिवार्य रूप से एक संबंधित प्रतिक्रिया की ओर ले जाती है। वह ब्रह्मांडीय तंत्र है जो इन प्रतिक्रियाओं को उत्पन्न करता है, यह सुनिश्चित करता है कि कोई भी अपने कर्मों के परिणामों से बच न सके। यह मानवीय उल्लंघनों से परे ब्रह्मांड के मौलिक संतुलन और व्यवस्था तक फैला हुआ है।

परम दंडक और शोधक इस संदर्भ में उन्हें अक्सर दण्डपाणि (छड़ी धारण करने वाले) कहा जाता है। जबकि "दंड" शब्द भयावह लग सकता है, इसका अर्थ शुद्धिकरण की प्रक्रिया भी है। दण्ड सुधार करने, व्यक्ति को धार्मिकता के मार्ग पर वापस लाने और नकारात्मक कार्यों की संचित अशुद्धियों को शुद्ध करने का कार्य करता है। भक्तों के लिए, यह "दंड" सुधारात्मक जीवन अनुभवों के रूप में प्रकट हो सकता है जो उन्हें आध्यात्मिक विकास और मुक्ति की ओर ले जाते हैं।

धर्म के संरक्षक दण्ड धारण करके, भैरव ब्रह्मांडीय व्यवस्था (ऋत) और नैतिक कानून (धर्म) के शाश्वत संरक्षक के रूप में अपनी भूमिका को रेखांकित करते हैं। वह अस्तित्व की सीमाओं को बनाए रखते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि अराजकता प्रबल न हो। उनका दण्ड पूर्ण नैतिक शुद्धता और

सभी लोकों पर नियंत्रण का प्रतीक है।

318. नक्षत्राय

जो स्वयं तारे और नक्षत्र हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : नक्षत्राय का अर्थ है आकाशीय तारामंडल और नक्षत्र। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान और ज्योतिष में, नक्षत्र क्रांतिवृत्त (ecliptic) के महत्वपूर्ण विभाजन हैं, जो चंद्र राशियों का प्रतिनिधित्व करते हैं, प्रत्येक नक्षत्र विशिष्ट देवताओं द्वारा शासित होता है और इसका विशिष्ट प्रभाव होता है।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था का दिव्य अवतार कालभैरव को नक्षत्राय के रूप में संबोधित करने का तात्पर्य है कि वे केवल तारों के नियंत्रक या निर्माता नहीं हैं, बल्कि स्वयं तारे और नक्षत्र हैं। यह ब्रह्मांडीय वास्तुकला के साथ उनकी पूर्ण और निरपेक्ष पहचान को दर्शाता है। वे आकाशीय घटनाओं का मूल ताना-बाना हैं जो समय, भाग्य और सभी प्राणियों की गति को नियंत्रित करती हैं। यह उन्हें सार्वभौमिक लयबद्ध व्यवस्था का परम स्रोत और पालक बनाता है।

समय और नियति के स्वामी नक्षत्र समय (काल) और नियति (धर्म) से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। वे शुभ और अशुभ क्षणों को निर्धारित करते हैं, व्यक्तिगत कुंडली को प्रभावित करते हैं, और सृष्टि और प्रलय के चक्रों को चिह्नित करते हैं। नक्षत्राय होने के नाते, कालभैरव सर्वोच्च काल हैं, वह पारलौकिक समय जो तारों की सटीक, अपरिवर्तनीय गति के रूप में प्रकट होता है। वे ब्रह्मांडीय घड़ी का प्रतीक हैं जो युगों-युगों तक चलती रहती है, सभी अस्तित्व का मार्गदर्शन करती है।

प्रकाश और मार्गदर्शन का स्रोत तारे अंतरिक्ष के अंधकार में प्रकाश के स्रोत हैं, जो यात्रियों का मार्गदर्शन करते हैं और दूरस्थ, दीप्तिमान ज्ञान का प्रतीक हैं। नक्षत्राय के रूप में, कालभैरव आध्यात्मिक प्रकाश और मार्गदर्शन का अंतिम स्रोत हैं। वे साधकों के लिए मार्ग प्रकाशित करते हैं, अज्ञानता को दूर करते हैं और उन्हें मुक्ति की ओर ले जाते हैं। जिस प्रकार तारे ब्रह्मांड की विशालता में निश्चित बिंदु प्रदान करते हैं, उसी प्रकार वे जीवन की यात्रा में निश्चितता और दिशा प्रदान करते हैं।

ब्रह्मांडीय प्रभाव से परे जबकि नक्षत्र सांसारिक जीवन को प्रभावित करते हैं, कालभैरव, नक्षत्राय के रूप में, इन प्रभावों के अवतार होने के साथ-साथ उनसे परे भी हैं। वे अंतर्निहित सिद्धांत हैं जो तारों को उनकी शक्ति प्रदान करते हैं, फिर भी वे उनके सापेक्ष प्रभावों से अछूते रहते हैं। यह विरोधाभास उनकी सर्वोच्च प्रकृति को उजागर करता है, जो सृष्टि में अंतर्निहित होने के साथ-साथ उससे परे भी हैं।

319. अक्षराय

जो अविनाशी, अक्षम और शाश्वत अक्षर (ओउम्) हैं, उनको नमन।

विस्तार : अक्षर शब्द से व्युत्पन्न नाम अक्षराय, अपने दार्शनिक और आध्यात्मिक निहितार्थों में गहरा है, जो दिव्य के शाश्वत, अपरिवर्तनीय और मूलभूत स्वरूप को दर्शाता है।

अविनाशी और अक्षय अक्षर की सबसे सामान्य व्याख्या "अविनाशी," "अक्षय," या "अपरिवर्तनीय" है। उपसर्ग 'अ-' निषेध को दर्शाता है, और 'क्षर' का अर्थ "नश्वर" या "विनाशकारी" है। इस प्रकार, अक्षर वह है जो नष्ट, क्षय या विनाश नहीं हो सकता। यह वास्तविकता के शाश्वत सार, परम सत्य को संदर्भित करता है जो सृष्टि, पालन और संहार के चक्रों से परे है। कालभैरव, अक्षर के रूप में, शिव के इस शाश्वत, अव्यक्त पहलू का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो सभी ब्रह्मांडीय गतिविधियों के कालातीत साक्षी के रूप में खड़े हैं। वह वह आधार हैं जिस पर सभी क्षणभंगुर घटनाएँ उत्पन्न होती हैं और विलीन हो जाती हैं।

शाश्वत अक्षर (ॐ/ओम्) अक्षर विशेष रूप से पवित्र अक्षर ॐ (ओम्) को भी संदर्भित करता है, जिसे आदिम ध्वनि और ब्रह्म, परम वास्तविकता का ध्वन्यात्मक प्रतिनिधित्व माना जाता है। वेद और उपनिषद ॐ को सभी मंत्रों, ध्वनियों और ज्ञान का सार बताते हैं। कालभैरव को अक्षर के रूप में आह्वान करके, व्यक्ति उन्हें उस कंपन के रूप में स्वीकार करता है जो अस्तित्व को रेखांकित करता है, वह मूलभूत ध्वनि जिससे सभी सृष्टि उत्पन्न होती है और जिसमें वह अंततः लौटती है। इसका तात्पर्य है कि वह सभी भाषा, विचार और अभिव्यक्ति का स्रोत हैं।

क्षणिकता से परे यह नाम कालभैरव को सभी क्षणभंगुर, परिवर्तनशील रूपों से अलग करता है। यद्यपि वे भयंकर रूपों में प्रकट होते हैं, ये अभी भी समय और कर्म के दायरे में हैं। अक्षर उनकी अंतिम पहचान को अचल, अपरिवर्तनीय सत्य के रूप में इंगित करता है, वही चेतना जो सभी लौकिक अनुभवों को उत्पन्न होने देती है। यह उन्हें केवल रूप या कर्म से परे सर्वोच्च सत्ता की स्थिति तक उठाता है, जो माया (भ्रम) या कर्म की सीमाओं से अछूता है।

३२०. नक्षत्रमालिकाकेशाय

जिनके केश नक्षत्रों की माला से सुशोभित हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : नक्षत्रमालिकाकेशाय नाम एक सुंदर और काव्यात्मक यौगिक है जो भगवान कालभैरव की एक अनूठी विशेषता का सजीव वर्णन करता है। यह तीन संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है: नक्षत्र, मालिका और केश।

• नक्षत्र (Nakṣatra): तारा, नक्षत्र। वैदिक ज्योतिष में, नक्षत्र चंद्र भवन (lunar mansions) होते हैं, आकाशीय चिह्न जो क्रांतिवृत्त (ecliptic) को विभाजित करते हैं, और इनका गहरा महत्व होता है। • मालिका (Mālikā): एक माला, फूलों या मोतियों की एक लड़ी। • केश (Keśa): बाल, विशेष रूप से लंबे, लहराते बाल।

आकाशीय आभूषण (Celestial Adornment) शाब्दिक रूप से, इस नाम का अर्थ है "उन एक को नमस्कार जिनके केश तारों की माला से सुशोभित हैं।" यह छवि तुरंत एक ब्रह्मांडीय, पारलौकिक सत्ता का आह्वान करती है। भगवान कालभैरव को शानदार, अक्सर जंगली और लहराते बालों के साथ चित्रित किया जाता है, और यह कहना कि यह "तारों की माला से सुशोभित" है, उनके आकाशीय क्षेत्र और ब्रह्मांड के मूल ताने-बाने से उनके सीधे संबंध को दर्शाता है।

समय और नियति के स्वामी (Master of Time and Destiny) तारे और नक्षत्र हिंदू ज्योतिष और ब्रह्मांड विज्ञान में समय, नियति और ब्रह्मांडीय घटनाओं के अनावरण से आंतरिक रूप से जुड़े हुए हैं। उन्हें अपने बालों में माला के रूप में धारण करके, कालभैरव को सभी आकाशीय गतियों, तारकीय प्रभावों और इन ब्रह्मांडीय प्रतिमानों द्वारा बुनी गई नियति के परम स्वामी के रूप में दिखाया गया है। वे केवल तारों से प्रभावित नहीं होते हैं; वे उन पर शासन करते हैं और उन्हें एक आभूषण के रूप में पहनते हैं, जो समय और भाग्य पर उनकी पूर्ण संप्रभुता को इंगित करता है।

ब्रह्मांडीय भव्यता (Cosmic Grandeur) यह छवि उनकी अपार भव्यता और चमक को भी दर्शाती है। जैसे तारे रात के आकाश को रोशन करते हैं, वैसे ही कालभैरव, इस रूप में, ब्रह्मांडीय प्रकाश और जागरूकता का स्रोत हैं, अज्ञानता के अंधकार को दूर करते हैं। उनकी उपस्थिति उतनी ही विशाल और विस्मयकारी है जितनी कि तारों से भरा आकाश स्वयं।

सर्वज्ञता का प्रतीक (Symbol of Omniscience) नक्षत्रों को अक्सर ब्रह्मांड का अवलोकन करने वाली दिव्य आँखें माना जाता है। उन्हें अपने बालों में धारण करके, जो आमतौर पर सिर (ज्ञान का आसन) को सुशोभित करते हैं, यह उनकी सर्वज्ञता और सभी घटनाओं, अतीत, वर्तमान और भविष्य को समझने की उनकी क्षमता का सुझाव देता है, जैसा कि तारकीय शक्तियों द्वारा निर्धारित किया जाता है। वे संपूर्ण आकाशीय मानचित्र का प्रतीक हैं।

321. नागहाराय

उन्हें प्रणाम जो सुंदर हार के रूप में सर्प धारण करते हैं।

विस्तार : नाम नागाहाराय दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों: नाग और हार का एक यौगिक है।

नाग (Nāga): यह सर्पों को संदर्भित करता है, विशेषकर दिव्य या पौराणिक सर्प प्राणियों को। हिंदू प्रतिमा विज्ञान और पौराणिक कथाओं में, नाग शक्तिशाली, अक्सर विषैले होते हैं, और जल, उर्वरता और रहस्यमय ज्ञान से जुड़े होते हैं। वे परोपकारी संरक्षक या दुर्जेय विरोधी हो सकते हैं।

हार (Hāra): इसका सीधा अर्थ "हार" या "माला" है। इसका तात्पर्य कुछ ऐसा है जिसे आभूषण के रूप में पहना जाता है, जो अक्सर सुंदर और महत्वपूर्ण होता है।

सर्प हार का प्रतीकवाद (Symbolism of the Serpent Necklace) शिव (और विस्तार से भैरव, उनके उग्र रूप) की सर्पों से सुशोभित छवि शैव धर्म में सबसे प्रतिष्ठित और गहन प्रतीकों में से एक है।

विष और मृत्यु पर महारत (Mastery Over Poison and Death) अपने गले में सर्पों (जो स्वाभाविक रूप से विषैले होते हैं और इस प्रकार मृत्यु और खतरे से जुड़े होते हैं) को धारण करके, भैरव मृत्यु, भय और नकारात्मक ऊर्जाओं पर अपनी पूर्ण महारत प्रदर्शित करते हैं। जैसे शिव ने हलाहल विष पिया था, भैरव, अपने उग्र रूप में, सहजता से उसे वश में करते हैं और उससे स्वयं को सुशोभित करते हैं जो दूसरों के लिए खतरनाक है। यह उनकी नश्वरता से परे होने और जीवन को समाप्त करने वाली शक्तियों को नियंत्रित करने की उनकी शक्ति को दर्शाता है।

ब्रह्मांडीय ऊर्जा और समय (Cosmic Energy and Time) सर्प अक्सर कुंडलिनी शक्ति से जुड़े होते हैं, जो रीढ़ के आधार पर स्थित कुंडलित ब्रह्मांडीय ऊर्जा है। उनकी त्वचा का चक्रीय रूप से उतरना उन्हें नवीनीकरण, पुनर्जन्म और समय के शाश्वत चक्रों से भी जोड़ता है। उन्हें धारण करके, भैरव ब्रह्मांडीय ऊर्जा और सृष्टि, संरक्षण और विनाश के अंतहीन निरंतरता पर अपने नियंत्रण का प्रतीक हैं - वह काल, स्वयं समय हैं, और इस प्रकार इसके सभी चक्रों के स्वामी हैं।

निर्भयता का सौंदर्य (Aesthetic of Fearlessness) जबकि कुछ के लिए यह एक भयावह छवि है, भक्त के लिए, सर्प हार भैरव की निर्भयता और भयावह को सुंदर और शक्ति के प्रतीक में बदलने की उनकी क्षमता का प्रतिनिधित्व करता है। यह दर्शाता है कि अस्तित्व के सबसे भयानक पहलू भी अंततः उनके नियंत्रण में हैं और उनके आभूषण के रूप में कार्य करते हैं।

दिव्य सुरक्षा (Divine Protection) नागों को खजाने और पवित्र स्थानों के संरक्षक भी माना जाता है। उग्र रक्षक के रूप में, भैरव का नागों को धारण करना यह दर्शाता है कि वह परम संरक्षक हैं, जो बुराई को दूर करते हैं और अपने भक्तों को सभी खतरों, दृश्य और अदृश्य दोनों से बचाते हैं।

322. पिनाकधृते

पिनाक नामक धनुष धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : पिनाकधृते नाम एक संयुक्त संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है "वह जो पिनाक (धनुष) धारण करता है"।

पिनाक: दिव्य धनुष पिनाक शिव का दिव्य धनुष है, जो अत्यधिक शक्ति का एक असाधारण हथियार है, जिसे अक्सर विश्वकर्मा, दिव्य वास्तुकार द्वारा कल्पवृक्ष (इच्छा-पूर्ति वृक्ष) के एक खंड से गढ़ा गया बताया जाता है। यह केवल एक हथियार नहीं है बल्कि ब्रह्मांडीय शक्ति और सृष्टि, संरक्षण और विनाश की अंतिम शक्ति का प्रतीक है।

ब्रह्मांडीय शक्ति और विनाश पिनाक शिव के दुर्जेय और विनाशकारी पहलू का प्रतिनिधित्व करता है। जबकि शिव को अक्सर त्रिशूल के साथ चित्रित किया जाता है, पिनाक विशेष रूप से त्रिपुरांतक के रूप में उनकी भूमिका से जुड़ा है, जो असुरों के तीन शहरों (त्रिपुरा) का विनाशक है। यह घटना शिव की सर्वोच्च और विस्मयकारी शक्ति को दर्शाती है, जहाँ पिनाक से एक ही बाण तीनों दुर्जेय शहरों को भस्म करने के लिए पर्याप्त था। इस प्रकार, पिनाक धारण करना उनकी बुराई पर विजय पाने और यदि आवश्यक हो तो पूर्ण विनाश के माध्यम से ब्रह्मांडीय व्यवस्था को फिर से स्थापित करने की क्षमता को दर्शाता है।

धर्म और न्याय का प्रतीक पिनाक के धारक के रूप में, कालभैरव ब्रह्मांडीय न्याय के सिद्धांत का प्रतीक हैं। धनुष धर्म का प्रतीक है, जिसका उपयोग दुष्टों को दंडित करने और धर्मात्माओं की रक्षा करने के लिए किया जाता है। यह अपने भक्तों के लिए अज्ञानता, अहंकार और आध्यात्मिक मार्ग पर आने वाली सभी बाधाओं को मिटाने की उनकी तत्परता को दर्शाता है।

सभी हथियारों और कलाओं के स्वामी पिनाक धारण करके, कालभैरव को सभी हथियारों के स्वामी और परम योद्धा के रूप में पुष्टि की जाती है। यह उन्हें सभी मार्शल आर्ट (धनुर्वेद) का स्रोत होने तक भी विस्तारित करता है, जो सभी प्रकार की शक्ति और कौशल पर उनके पूर्ण नियंत्रण का प्रतीक है। इस प्रकार पिनाक ब्रह्मांड में उनकी पूर्ण संप्रभुता और शक्ति को दर्शाता है।

323. व्ययनिर्वाहणाय

समस्त लौकिक व्यय का प्रबंधन और निरीक्षण करने वाले को नमन।

विस्तार : व्ययनिर्वाहण (Vyayanirvāhaṇa) नाम कालभैरव के लिए एक गहरा और अनूठा विशेषण है, जो व्यय (Vyaya) और निर्वाहण (Nirvāhaṇa) शब्दों का संयोजन है।

व्यय (Vyaya): ब्रह्मांडीय व्यय और विघटन व्यय का शाब्दिक अर्थ है "खर्च," "व्यय," "हानि," "अपव्यय," "वितरण," या "अदृश्य होना।" ब्रह्मांडीय संदर्भ में, यह ब्रह्मांड में होने वाली ऊर्जा, पदार्थ और समय के विशाल और निरंतर "व्यय" को संदर्भित करता है। इसमें शामिल हैं:

1. विघटन और क्षय: सभी निर्मित रूपों के क्षय, विनाश और अंततः विघटन की प्राकृतिक प्रक्रिया। जो कुछ भी अस्तित्व में आता है, वह नश्वरता के अधीन है। 2. उपभोग: ब्रह्मांडीय चक्र के भीतर ऊर्जाओं और संसाधनों का निरंतर अवशोषण और उपभोग। 3. चक्रों का अंत: एक युग (कल्प) या जीवनकाल का "व्यय," जो उसके समापन की ओर ले जाता है।

निर्वाहण (Nirvāhaṇa): प्रबंधन, निरीक्षण और निष्पादन निर्वाहण का अर्थ है "प्रबंधन," "निष्पादन," "कार्य करना," "प्रदर्शन," "समर्थन," या "पूर्णता।" जब इसे व्यय के साथ जोड़ा जाता है, तो यह दर्शाता है:

1. व्यवस्थित विघटन: कालभैरव केवल विनाश की शक्ति नहीं हैं, बल्कि वे प्रशासक हैं जो इस अंतिम व्यय का "प्रबंधन" करते हैं। इसका तात्पर्य एक व्यवस्थित और क्रमबद्ध विघटन से है, न कि अराजक विनाश से। 2. ब्रह्मांडीय नियम का रखरखाव: विनाश भी एक दिव्य नियम का पालन करता है। कालभैरव यह सुनिश्चित करते हैं कि सभी घटनाओं के उचित "व्यय" के माध्यम से ब्रह्मांडीय संतुलन बना रहे, यह सुनिश्चित करते हुए कि कुछ भी बर्बाद न हो और सब कुछ सृष्टि, संरक्षण और विघटन के चक्र में अपने उद्देश्य की पूर्ति करे। 3. निष्पक्ष निरीक्षण: वह समय में सभी चीजों की अपरिहार्य "लागत" या "हानि" का निरीक्षण करते हैं, निष्पक्ष रूप से उस अंत को लाते हैं जो नई शुरुआत के लिए आवश्यक है। वह सुनिश्चित करते हैं कि सभी ब्रह्मांडीय संसाधन, जिसमें समय और स्थान शामिल हैं, दिव्य इच्छा के अनुसार सटीक रूप से "खर्च" किए जाएं।

ब्रह्मांडीय अंतिम परिणाम के प्रबंधक इसलिए, व्ययनिर्वाहण कालभैरव को ब्रह्मांडीय अंतिम परिणाम के परम लेखाकार या प्रबंधक के रूप में वर्णित करता है। वह विघटन, क्षय और सभी प्रकट रूपों के उनके अप्रकट अवस्था में अंतिम वापसी की प्रक्रियाओं का सावधानीपूर्वक निरीक्षण और निष्पादन करते हैं। यह भूमिका सृष्टि और विनाश के निरंतर नृत्य के लिए महत्वपूर्ण है, यह सुनिश्चित करती है कि ब्रह्मांड अपनी अंतर्निहित लय और चक्रों के अनुसार संचालित हो। वह वह हैं जो ब्रह्मांड के "बहिर्गमन" का सटीक प्रबंधन करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि सब कुछ ठीक उसी समय समाप्त हो जब उसे होना चाहिए, पूर्ण ब्रह्मांडीय व्यवस्था में।

324. न्यायिने

न्याय और तार्किक तर्क के साक्षात् स्वरूप को नमन।

विस्तार : न्यायिने नाम संस्कृत शब्द न्याय से लिया गया है।

न्याय का स्वरूप (धर्म और प्रतिशोध) न्याय का मूल अर्थ है "न्याय," "धर्मपरायणता," "समानता," और "कानून।" न्यायिने के रूप में, काल भैरव पूर्ण न्याय का प्रतीक हैं। उनकी भूमिका केवल प्रशासन करना नहीं है, बल्कि ब्रह्मांडीय कानून और व्यवस्था के सिद्धांत 'होना' है। इसमें न केवल धर्म (धार्मिक आचरण) का पालन करना शामिल है, बल्कि कार्यों के लिए, चाहे वे अच्छे हों या बुरे, परिणामों का सटीक और अचूक वितरण भी शामिल है। वह परम न्यायाधीश हैं, जो यह सुनिश्चित करते हैं कि कर्म सावधानीपूर्वक संतुलित हों। यह पहलू विशेष रूप से यम, मृत्यु और धर्म के देवता के साथ उनके जुड़ाव में प्रमुख है, जिसका अर्थ है कि वह सभी प्राणियों के लिए अंतिम निर्णय की देखरेख करते हैं।

तार्किक तर्क और सही आचरण न्याय हिंदू दर्शन के एक स्कूल को भी संदर्भित करता है जो तर्क और ज्ञानमीमांसा (ज्ञान का सिद्धांत) पर केंद्रित है। इस संदर्भ में, न्यायिने सही समझ और विवेक के अंतिम स्रोत का प्रतीक है। वह तर्क के सही अनुप्रयोग का प्रतिनिधित्व करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि निर्णय सत्य और सटीक, अकाट्य तर्क पर आधारित हों। यह बताता है कि उनका न्याय मनमाना नहीं है, बल्कि तथ्यों, इरादों और परिणामों की त्रुटिहीन समझ पर आधारित है। भक्त विचार की स्पष्टता, निर्णय में ज्ञान और सही कार्य में अंतर्दृष्टि के लिए इस पहलू का आह्वान कर सकते हैं।

व्यवस्था के संरक्षक जो न्याय है, उसके रूप में, काल भैरव यह सुनिश्चित करते हैं कि ब्रह्मांड अपने अंतर्निहित कानूनों और सिद्धांतों के अनुसार संचालित हो। वह ब्रह्मांडीय मध्यस्थ हैं, जो शक्तियों के बीच संतुलन बनाए रखते हैं, उल्लंघनों को दंडित करते हैं, और पुण्य को पुरस्कृत करते हैं, यह सब निष्पक्षता और सटीकता के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के साथ करते हैं।

325. नभसे

जो विशाल, सूक्ष्म आकाश और अंतरिक्ष के स्वरूप हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : नभसे नाम संस्कृत शब्द 'नभस' से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'आकाश', 'वायुमंडल', 'गगन' या 'अंतरिक्ष'। यह नाम कालभैरव की सर्वव्यापकता, असीमता और परम निराकारता को समाहित करता है, जो स्वयं अंतरिक्ष की विशाल और सर्व-समावेशी प्रकृति के साथ समानताएं दर्शाता है।

असीमता का प्रतीक (Symbol of Boundlessness) जिस प्रकार आकाश का कोई स्पष्ट आदि या अंत नहीं होता, उसी प्रकार नभसे कालभैरव के अनंत और शाश्वत स्वरूप का प्रतीक है। वे सीमाओं से परे हैं, धारणा से परे हैं, और अपनी विशालता में सब कुछ समाहित करते हैं। यह पहलू सृष्टि, पालन और संहार के सभी कार्यों के लिए परम आधार के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है।

सूक्ष्म तत्व (आकाश) (The Ethereal Element (Akasha)) नभस को अक्सर आकाश से जोड़ा जाता है, जो पंचभूतों (Pancha Bhootas) में से पांचवां और सबसे सूक्ष्म तत्व है। आकाश वह स्थान है जहाँ सब कुछ मौजूद है, ध्वनि (शब्द) का माध्यम है, और शुद्ध, अविभाजित क्षमता है जिससे अन्य सभी तत्व उत्पन्न होते हैं। नभसे होने के नाते, कालभैरव को इस सर्वव्यापी, सूक्ष्म और मौलिक तत्व के साथ पहचाना जाता है, जो अस्तित्व के प्रत्येक परमाणु में उनकी मूलभूत उपस्थिति को इंगित करता है।

साक्षी चेतना (Witness Consciousness) आकाश की तरह, जो सभी घटनाओं, परिघटनाओं और परिवर्तनों को उनसे प्रभावित हुए बिना देखता है, नभसे कालभैरव को शुद्ध, अनासक्त और अविचल साक्षी चेतना (Sakshi Chaitanya) के रूप में दर्शाता है। वे पूर्ण तटस्थता और अतिक्रमण की स्थिति से सृष्टि और विनाश के ब्रह्मांडीय नाटक का अवलोकन करते हैं।

अव्यक्त और व्यक्त (The Unmanifested and Manifested) प्रकटीकरण से पहले, सभी अस्तित्व अव्यक्त क्षमता है, जैसे अंतरिक्ष की खाली विशालता। इस प्रकार नभसे कालभैरव को अव्यक्त (avyakta) और व्यक्त (vyakta) ब्रह्मांड दोनों के स्रोत के रूप में इंगित करता है। वे वह शून्य हैं जिससे सभी रूप उत्पन्न होते हैं और जिसमें वे अंततः लौट आते हैं।

ब्रह्मांडीय भव्यता (Cosmic Grandeur) यह नाम ब्रह्मांडीय भव्यता और दिव्य के विस्मयकारी पैमाने की भावना को जगाता है। यह हमें याद दिलाता है कि कालभैरव किसी विशिष्ट रूप या स्थान तक सीमित नहीं हैं, बल्कि अस्तित्व का ताना-बाना ही हैं, जिसमें आकाशगंगाएँ, तारे और मानवीय समझ से परे अनंत विस्तार शामिल है।

326. न्यायाय

न्याय, विधि और धर्म के परम सिद्धांत स्वरूप को नमन।

विस्तार : न्यायाय नाम न्याय की गहन अवधारणा को संदर्भित करता है, जो हिंदू दर्शन और न्यायशास्त्र में न्याय, धार्मिकता, तर्क, सत्य और परम नैतिक व्यवस्था को दर्शाता है।

न्याय का परम सिद्धांत (धर्म) न्याय के रूप में, भगवान कालभैरव दिव्य न्याय के पूर्ण और अटूट सिद्धांत का प्रतीक हैं। वह ब्रह्मांडीय न्यायाधीश हैं जो यह सुनिश्चित करते हैं कि सभी कार्यों, चाहे वे अच्छे हों या बुरे, के उचित परिणाम मिलें। यह अवधारणा केवल मानवीय कानूनी प्रणालियों से परे है; यह ब्रह्मांड को नियंत्रित करने वाला अंतर्निहित नैतिक कानून (धर्म) है। उनका न्याय निष्पक्ष, सटीक और अपरिहार्य है, जो कर्म के नियम को दर्शाता है जहाँ प्रत्येक क्रिया एक संगत प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है।

धार्मिकता का अवतार न्याय धार्मिकता का भी प्रतीक है। इस पहलू में कालभैरव नैतिक आचरण और नैतिक जीवन के सर्वोच्च मानक का प्रतिनिधित्व करते हैं। वह ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखते हैं और धर्म के मार्ग से विचलित होने वालों को दंडित करते हैं, इस प्रकार गुणी लोगों की रक्षा करते हैं और ब्रह्मांड में अच्छे और बुरे के संतुलन को सुनिश्चित करते हैं। उनका स्वरूप भयानक हो सकता है, लेकिन यह भय अधार्मिकता और अन्याय के प्रति निर्देशित है।

तर्क और सत्य भारतीय दर्शन में, न्याय हिंदू दर्शन के छह रूढ़िवादी विद्यालयों में से एक का नाम भी है, जो मुख्य रूप से तर्क, ज्ञानमीमांसा और वैध ज्ञान (प्रमाण) के साधनों से संबंधित है। इस प्रकार, कालभैरव को न्याय के रूप में परम सत्य और सभी अस्तित्व के अंतर्निहित तार्किक सिद्धांत के अवतार के रूप में भी समझा जा सकता है। वह वास्तविकता का तार्किक आधार हैं, स्वयं सत्य का स्वरूप हैं।

परिणामों के प्रदाता यह नाम कालभैरव की दंडपाणि के रूप में भूमिका को पुष्ट करता है, जो दंड के डंडे को धारण करने वाले हैं। वह परिणामों के परम प्रदाता हैं, यह सुनिश्चित करते हैं कि ब्रह्मांडीय ऋणों का निपटारा हो और प्रत्येक आत्मा अपने कार्यों के परिणाम का अनुभव करे। उनका न्याय प्रतिशोध के बारे में नहीं है, बल्कि संतुलन बहाल करने और कर्म के उचित अनुभव के माध्यम से आध्यात्मिक विकास को सुविधाजनक बनाने के बारे में है।

327. निरंजनाय

जो पूर्णतः निष्कलंक, शुद्ध और दोष रहित हैं, उनको नमन।

विस्तार : निरंजन नाम एक गहन विशेषण है, जो संस्कृत उपसर्ग "निर-" (जिसका अर्थ है "बिना," "से मुक्त," या "रहित") और "अंजन" (जिसका अर्थ है "दाग," "धब्बा," "लेप," "अंधेरा," या "काजल") से मिलकर बना है।

निष्कलंक और शुद्ध अपने सबसे मौलिक स्तर पर, निरंजन पूर्ण शुद्धता और निष्कलंकता को दर्शाता है। यह किसी भी अपूर्णता, अशुद्धता या कलंक से पूरी तरह मुक्त होने की स्थिति को इंगित करता है। इसमें भौतिक संदूषण, कर्मिक छाप (संस्कार) और तीन गुणों (सत्व, रजस, तम) से मुक्ति शामिल है जो व्यक्तिगत आत्मा को जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) से बांधते हैं।

माया से परे "अंजन" शब्द लाक्षणिक रूप से अज्ञानता (अविद्या) के अंधकार या माया की आवरण शक्ति को भी संदर्भित कर सकता है। इसलिए, निरंजन माया के प्रभाव से परे की स्थिति को इंगित करता है, जहाँ ईश्वर की सच्ची, अविभेदित चेतना निष्कलंक स्पष्टता के साथ चमकती है। भगवान कालभैरव, निरंजन के रूप में, निर्मित दुनिया की द्वैतता और सीमाओं के अधीन नहीं हैं; वे पारलौकिक वास्तविकता हैं जो सभी से अलग हैं और फिर भी सभी में व्याप्त हैं।

अपरिवर्तनीय और शाश्वत चूंकि कालभैरव परम वास्तविकता का प्रतीक हैं, वे स्वाभाविक रूप से निरंजन हैं। वे परिवर्तन, क्षय, या उस पीड़ा से अछूते हैं जो सांसारिक अस्तित्व की विशेषता है। उनका स्वरूप शाश्वत, प्राचीन और स्वयंप्रकाशित है, जो शिव के अकृत, अव्यक्त पहलू को दर्शाता है।

दार्शनिक महत्व अद्वैत वेदांत में, निरंजन की अवधारणा ब्रह्म के साथ संरेखित होती है, जो परम वास्तविकता है जो गुणों (निर्गुण) से मुक्त है और सभी वैचारिक सीमाओं से परे है। उन्हें निरंजन के रूप में पूजना उनकी सर्वोच्च श्रेष्ठता और उनके अंतर्निहित पूर्ण स्वरूप की स्वीकृति है, जिसे भक्त अपने भीतर साकार करने की आकांक्षा रखते हैं।

328. नीरावनाय

जो एक घने, रक्षात्मक वन के समान हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : "नीरवनय" नाम, संस्कृत के शब्दों "नीर" और "वन" से व्युत्पन्न है, जो कालभैरव के एक शक्तिशाली और सुरक्षात्मक पहलू का आह्वान करता है, उन्हें एक घने, गहन वन के समान बताता है।

• नीर (Nīra): यह शब्द आमतौर पर जल को संदर्भित करता है, एक महत्वपूर्ण तत्व जो जीवन, पवित्रता और गहन गहराई का प्रतीक है। हालांकि, 'वन' के साथ संयोजन में, यह घनत्व या आंतरिक प्रकृति का भी अर्थ हो सकता है।

• वन (Vana): इस शब्द का अर्थ "वन" है, एक ऐसा स्थान जो घनत्व, वन्य जीवन, प्राकृतिक लचीलेपन और अक्सर एक पवित्र, सुरक्षात्मक गुणवत्ता की विशेषता रखता है।

सुरक्षात्मक अभयारण्य (Protective Sanctuary) जब संयुक्त किया जाता है, तो नीरवन एक "घने वन" या "जल-भरे वन" (जैसे दलदल या दलदली भूमि, जो अपनी अगम्यता और सुरक्षात्मक प्रकृति के लिए जानी जाती है) का सुझाव देता है। भैरव, नीरवनय के रूप में, इस प्रकार एक घने, अभेद्य अभयारण्य के रूप में देखे जाते हैं जो अपने भक्तों को परम सुरक्षा प्रदान करता है। जैसे एक घना जंगल अपने निवासियों को बाहरी खतरों, प्राकृतिक आपदाओं और बाहरी दुनिया की कठोरता से बचाता है, वैसे ही भैरव जीवन के भौतिक और आध्यात्मिक दोनों खतरों से एक अलंघनीय आश्रय प्रदान करते हैं।

गहराई और रहस्य (Depth and Mystery) एक जंगल अज्ञात, गहन और पवित्र का भी प्रतीक है। यह एक ऐसा स्थान है जहाँ प्रकृति के नियम अबाध रूप से संचालित होते हैं, और जहाँ गहन आध्यात्मिक अभ्यास होते हैं। यह पहलू भैरव के रहस्यमय और सर्वव्यापी स्वरूप को उजागर करता है, जो ब्रह्मांडीय अस्तित्व की गहन गहराइयों का प्रतिनिधित्व करता है जो सामान्य मानवीय समझ से परे हैं। वह छिपा हुआ सत्य है, अस्तित्व की बहुलता के भीतर छिपा हुआ आवश्यक यथार्थ है।

लचीलापन और पोषण (Resilience and Sustenance) एक घना जंगल जीवन, पोषण और लचीलेपन का भी स्रोत है। इसमें अपार जैव विविधता होती है और इसमें स्वयं को पुनर्जीवित करने की शक्ति होती है। इस अर्थ में, नीरवनय कालभैरव को जीवन के पोषक के रूप में संदर्भित करता है, जो विकास और पुनर्जन्म के लिए आवश्यक आध्यात्मिक पोषण प्रदान करते हैं, और जो एक अटूट, लचीली शक्ति का प्रतीक हैं जो सभी बाधाओं को दूर कर सकती है।

दार्शनिक महत्व (Philosophical Significance) कालभैरव को नीरवनय के रूप में ध्यान करना उनकी शक्तिशाली ऊर्जा को एक रक्षक और एक ऐसी शक्ति के रूप में आह्वान करता है जो अपने दुर्जेय और रहस्यमय अस्तित्व के भीतर सभी अस्तित्व को समाहित करती है, उन लोगों की रक्षा करती है जो उनमें शरण लेते हैं, जबकि ब्रह्मांड की अनियंत्रित, आदिम शक्ति का भी प्रतिनिधित्व करती है।

329. अतिविज्ञानाय

जो सर्वोच्च और उत्कृष्ट ज्ञान के स्वामी हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : अतिविज्ञानाय नाम संस्कृत के 'अति' और 'विज्ञान' शब्दों का एक यौगिक है।

अति: यह उपसर्ग "उत्कृष्ट," "सर्वोच्च," "परे," "अत्यधिक," या "असाधारण" को दर्शाता है। यह एक ऐसे गुण या अवस्था को इंगित करता है जो सामान्य समझ या माप से परे है।

विज्ञान: इस शब्द की गहन दार्शनिक गहराई है। इसे अक्सर "चेतना," "समझ," "विवेक," "अंतर्दृष्टि," "विशिष्ट ज्ञान," या "सर्वोच्च ज्ञान" के रूप में अनुवादित किया जाता है। केवल "ज्ञान" (तथ्यों का ज्ञान या परिचय) के विपरीत, "विज्ञान" एक गहरी, अधिक विश्लेषणात्मक और अनुभवात्मक समझ का तात्पर्य है। यह एक ऐसे ज्ञान को संदर्भित करता है जो एकीकृत, व्यापक और पूरी तरह से स्पष्ट है।

परम और उत्कृष्ट ज्ञान एक साथ, अतिविज्ञान ज्ञान के एक ऐसे स्तर को संदर्भित करता है जो केवल विशाल या व्यापक नहीं है, बल्कि पूरी तरह से उत्कृष्ट और स्वयंप्रकाशित है। यह वह ज्ञान है जो संवेदी धारणा और बौद्धिक तर्क की सीमाओं से परे है। भगवान कालभैरव, अतिविज्ञान के रूप में, उस पूर्ण, असीमित जागरूकता का प्रतीक हैं जो सभी सृष्टि, संरक्षण और संहार को समाहित करती है। वे वास्तविकता के सच्चे स्वरूप में पूर्ण अंतर्दृष्टि रखते हैं, और यह ज्ञान उनके अस्तित्व का आंतरिक हिस्सा है।

ज्ञान शिव के एक पहलू के रूप में शैव धर्म में, शिव को अक्सर चेतना (चित) के अवतार के रूप में वर्णित किया जाता है, जिसमें ज्ञान उस चेतना का एक आंतरिक पहलू है। अतिविज्ञान इस बात पर जोर देता है कि कालभैरव का ज्ञान अर्जित नहीं है बल्कि उनका शाश्वत और अंतर्निहित स्वभाव है। वे भूत, वर्तमान और भविष्य की हर चीज को एक साथ और बिना किसी प्रयास के जानते हैं। इसमें ब्रह्मांड के गहरे रहस्य, कर्म की कार्यप्रणाली, आध्यात्मिक मार्गों की सूक्ष्मताएं और मुक्ति का अंतिम सत्य शामिल है।

अज्ञान का नाश करने वाला ऐसे परम ज्ञान के स्वामी होने के कारण, कालभैरव स्वाभाविक रूप से अपने भक्तों में अज्ञान (अविद्या) का नाश करते हैं। उनका उत्कृष्ट ज्ञान वह प्रकाश है जो भ्रम के अंधकार को दूर करता है, सच्चे साधकों को आत्म-साक्षात्कार और अंतिम स्वतंत्रता की ओर ले जाता है। वे उस परम ज्ञान का प्रतिनिधित्व करते हैं जो द्वैत से परे है और निरपेक्ष के साथ मिलन की ओर ले जाता है।

330. नरसिंहनिपातनाय

नरसिंह के भीषण मानव-सिंह अवतार को पतन की ओर ले जाने वाले (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : नरसिंहनिपातनाय नाम का अर्थ है वह जिसने भयंकर नर-सिंह अवतार, नरसिंह के पतन का कारण बना। यह दिलचस्प नाम हिंदू पौराणिक कथाओं में एक विशेष प्रसंग को उजागर करता है, जो अन्य देवताओं के शक्तिशाली अवतारों पर भी भैरव की सर्वोच्च शक्ति पर जोर देता है।

नरसिंह का महत्व नरसिंह, "नर-सिंह," भगवान विष्णु के सबसे शक्तिशाली और भयंकर अवतारों में से एक हैं। उन्होंने अपने भक्त प्रह्लाद की रक्षा करने और राक्षस हिरण्यकशिपु का वध करने के लिए अवतार लिया था, जिसने एक वरदान प्राप्त किया था कि उसे न तो मनुष्य मार सकता है और न ही जानवर, न दिन में और न रात में, न घर के अंदर और न बाहर। नरसिंह, न तो पूरी तरह से मनुष्य थे और न ही पूरी तरह से जानवर, गोधूलि बेला में प्रकट हुए, और उसे एक दहलीज पर मार डाला, इस वरदान को विफल कर दिया। वह अपनी अपार क्रूरता के लिए जाने जाते हैं, जो दिव्य न्याय और धर्म की रक्षा का प्रतीक है।

शर्वेश्वर/शरभ-भैरव का प्रसंग कुछ पौराणिक परंपराओं के अनुसार, विशेष रूप से शिव पुराण और कुछ शैव आगमों में, हिरण्यकशिपु का वध करने के बाद, नरसिंह की क्रूरता अनियंत्रित हो गई। वह क्रोधित होते रहे, ब्रह्मांड की स्थिरता को खतरे में डाल रहे थे। इस अत्यधिक क्रोध को शांत करने या वश में करने के लिए, भगवान शिव ने शरभ का रूप धारण किया, एक भयानक प्राणी, जो आंशिक रूप से पक्षी और आंशिक रूप से जानवर था, जिसे एक शेर से भी अधिक शक्तिशाली बताया गया है। शिव के इस रूप को शर्वेश्वर या शरभ-भैरव के नाम से जाना जाता है।

इस संदर्भ में, नरसिंहनिपातनाय भैरव (अपने शरभ रूप में) को नरसिंह के अनियंत्रित क्रोध को वश में करने या "पतन का कारण बनने" (निपातना) का उल्लेख करता है। इस कार्य ने शिव के सर्वोच्च अधिकार और उनकी ब्रह्मांडीय संतुलन को बहाल करने की क्षमता को प्रदर्शित किया, तब भी जब अन्य दिव्य शक्तियां अत्यधिक हो गईं।

प्रतीकात्मक व्याख्या इस कथा की अक्सर कई स्तरों पर व्याख्या की जाती है: • शिव की सर्वोच्चता: यह शैव परंपरा के भीतर शिव की परम सर्वोच्चता (परतत्त्व) को दर्शाता है, यह दर्शाता है कि अन्य देवताओं के सबसे भयंकर रूप भी अंततः उनके आदेश के अधीन आते हैं या उनकी अपनी शक्ति के प्रकटीकरण हैं। • क्रोध पर नियंत्रण: प्रतीकात्मक रूप से, यह सिखाता है कि यदि अनियंत्रित छोड़ दिया जाए तो दिव्य क्रोध भी विनाशकारी हो सकता है। भैरव, शरभ के रूप में, सही लेकिन

नियंत्रित शक्ति के सिद्धांत का प्रतीक हैं, जो सबसे दुर्जेय शक्तियों को भी नियंत्रित करने में सक्षम हैं।
• ब्रह्मांडीय संतुलन: भैरव की कार्रवाई ब्रह्मांडीय व्यवस्था और संतुलन के रखरखाव को सुनिश्चित करती है, अनियंत्रित अराजकता को रोकती है।

331. नन्दिने

जो आनंद और प्रसन्नता से परिपूर्ण हैं, और जो पवित्र बैल नंदी के स्वरूप हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : नन्दिने नाम नंदी से लिया गया है, जिसके शैव धर्म में गहरे अर्थों की कई परतें हैं। यह न केवल भगवान शिव के पूजनीय बैल वाहन को दर्शाता है, बल्कि आनंद, प्रसन्नता और शाश्वत सतर्कता के गुणों को भी समाहित करता है।

पवित्र बैल नंदी नंदी भगवान शिव का सबसे महत्वपूर्ण वाहन है, जो धर्म, सत्य और पवित्रता का प्रतीक है। शिव के निवास, कैलाश के प्राथमिक द्वारपाल के रूप में, नंदी अटूट भक्ति, पूर्ण समर्पण और पूर्ण अनुशासन का प्रतिनिधित्व करते हैं। शिव के मंदिरों के प्रवेश द्वार पर उनकी निरंतर उपस्थिति उन गुणों के महत्व को दर्शाती है जो किसी भी भक्त के लिए दिव्य के करीब आने के लिए आवश्यक हैं। नन्दिने नाम, जब भगवान कालभैरव के संदर्भ में उपयोग किया जाता है, तो शिव के बैल से जुड़ी दृढ़ता, शक्ति और सुरक्षात्मक प्रकृति को दर्शाता है।

आनंद और प्रसन्नता का स्रोत "नंद" मूल का अर्थ है "आनंदित होना," "प्रसन्न होना," या "खुश होना।" इस प्रकार, नन्दिने का अर्थ है "जो आनंद से परिपूर्ण है" या "जो प्रसन्नता का कारण बनता है।" यह पहलू कालभैरव के उग्र रूप के बावजूद उनकी आनंदमय प्रकृति को उजागर करता है। वह अपने भक्तों के लिए पारलौकिक खुशी और आध्यात्मिक परमानंद का अंतिम स्रोत हैं। उनके द्वारा लाया गया विनाश अंततः मुक्ति और आध्यात्मिक स्वतंत्रता के आनंद का मार्ग है। वह उन बाधाओं को दूर करते हैं जो सच्ची खुशी को रोकती हैं, जैसे अज्ञान, अहंकार और भय।

आंतरिक शांति और शुभता का प्रतीक नन्दिने से जुड़ा आनंद क्षणभंगुर सांसारिक सुख नहीं है, बल्कि एक गहरी, स्थायी आंतरिक शांति और शुभता है जो अपने सच्चे स्वरूप और दिव्य के साथ संबंध को महसूस करने से आती है। जब कालभैरव को नन्दिने के रूप में आह्वान किया जाता है, तो यह अपने जीवन में शुभता, समृद्धि और दिव्य उपस्थिति के आनंदमय अनुभव की अभिव्यक्ति के लिए एक प्रार्थना है। वह उन आशीर्वादों को प्रदान करते हैं जो आंतरिक संतोष और बाहरी कल्याण की स्थिति की ओर ले जाते हैं।

332. नन्दीश्वराय

नंदी के सर्वोच्च स्वामी और प्रभु को नमन।

विस्तार : नन्दीश्वराय नाम नंदी और ईश्वर का एक यौगिक है।

नंदी: हिंदू पौराणिक कथाओं में, नंदी भगवान शिव का बैल-वाहन (वाहन) है, और उनका प्रमुख परिचर (गण) और शिव के निवास, कैलाश का द्वारपाल भी है। नंदी पवित्रता, न्याय, शक्ति, विश्वास और शुभता का प्रतीक है। उन्हें एक बैल के रूप में दर्शाया गया है, जो धर्म (धार्मिक आचरण) और शिव पर केंद्रित मन की स्थिरता का प्रतिनिधित्व करता है। शिव को अक्सर सामान्य अर्थों में "नन्दीश्वर" कहा जाता है, जिसका अर्थ है "नंदी के स्वामी।"

ईश्वर: इस शब्द का अर्थ है "भगवान," "स्वामी," "शासक," या "सार्वभौम।" यह सर्वोच्च अधिकार, शक्ति और पराक्रम को दर्शाता है। आध्यात्मिक संदर्भ में, ईश्वर सर्वोच्च सत्ता, ब्रह्मांडीय शासक और ब्रह्मांड का अंतिम नियंत्रक है।

धर्म और विश्वास के स्वामी "नंदी के स्वामी" के रूप में, कालभैरव उन सभी के परम स्वामी हैं जिनका नंदी प्रतिनिधित्व करते हैं—धर्म, अटूट विश्वास, शक्ति और मुक्ति की ओर ले जाने वाली दृढ़ भक्ति। जिस प्रकार नंदी शिव के प्रति सदैव समर्पित रहते हैं, उसी प्रकार भैरव नन्दीश्वर के रूप में ऐसी भक्ति के अंतिम लक्ष्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे ही हैं जो ऐसी भक्ति को प्रेरित और निर्देशित करते हैं।

परिचरों के स्वामी नंदी की शिव के क्षेत्र के प्रमुख परिचर और द्वारपाल के रूप में भूमिका को देखते हुए, नन्दीश्वर भैरव के शिव के अन्य सभी गणों (परिचरों या मेजबानों) पर सर्वोच्च अधिकार का भी अर्थ है। वे इन दिव्य प्राणियों के सेनापति हैं, जो दिव्य लोकों की व्यवस्था और सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं।

नियंत्रण और मार्गदर्शन का प्रतीक नंदी आध्यात्मिक प्रगति के लिए आवश्यक नियंत्रित इंद्रियों और अनुशासित मन का भी प्रतीक है। "नंदी के स्वामी" होने के नाते, भैरव इन संकायों पर अपने पूर्ण नियंत्रण और अनुशासन और भक्ति के माध्यम से आत्म-साक्षात्कार की ओर व्यक्तिगत आत्माओं का मार्गदर्शन करने में अपनी भूमिका को दर्शाते हैं। वे ही हैं जो भक्त को आध्यात्मिक उत्थान के लिए अपनी शारीरिक और मानसिक ऊर्जा का उपयोग करने में सक्षम बनाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे एक सारथी अपने घोड़ों को नियंत्रित करता है।

333. नग्नाय

जो सभी सांसारिक माया और आवरणों से रहित, नग्न हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : नग्न (नग्नाय) नाम का शाब्दिक अर्थ "नग्न" या "वस्त्रहीन" है। भगवान शिव और विशेष रूप से भैरव के संदर्भ में, यह नग्नता केवल एक शारीरिक अवस्था नहीं है, बल्कि कई आध्यात्मिक सत्यों का एक गहरा प्रतीक है।

माया और भ्रम से रहित नग्न का प्राथमिक प्रतीकात्मक अर्थ माया (ब्रह्मांडीय भ्रम), अज्ञान और भौतिक आसक्तियों के आवरणों से पूरी तरह से मुक्त होने के अर्थ में वस्त्रहीन होना है। भैरव, अपने नग्न रूप में, उस परम वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सभी नामों, रूपों, परंपराओं और सामाजिक संरचनाओं से परे है। वह अच्छे और बुरे, पवित्रता और अपवित्रता, सुख और दुख के द्वंद्वों से परे हैं, जो सभी सापेक्ष अस्तित्व के उत्पाद हैं।

सांसारिक कंडीशनिंग से परे यहाँ नग्नता सांसारिक संपत्ति, इच्छाओं, शर्म और उन सभी कृत्रिम परतों से पूर्ण स्वतंत्रता का प्रतीक है जिन्हें मनुष्य बनाता और स्वयं को उनसे सजाता है। यह शुद्ध, अनियंत्रित चेतना की स्थिति, बिना शर्त आत्मन (Ātman) को इंगित करता है जो शाश्वत रूप से मुक्त है और ब्रह्मांड की क्षणभंगुर घटनाओं से अछूता है।

दिगंबर पहलू "नग्नता" का यह पहलू जैन धर्म के दिगंबर संप्रदाय में भी देखा जाता है, जहाँ तपस्वी दिगंबर रहते हैं, जो भौतिक दुनिया से उनके पूर्ण त्याग और वैराग्य का प्रतीक है। इसी तरह, शिव के लिए भैरव के रूप में, नग्न उनकी पारलौकिक प्रकृति, उनके पूर्ण वैराग्य (vairagya), और शाश्वत, अप्रकट ब्रह्म में उनके पूर्ण आत्मसात्करण का प्रतिनिधित्व करता है।

निर्भयता और अधिकार एक ऐसे समाज में नग्न होना जो कपड़ों और शालीनता को महत्व देता है, एक साहसिक, यहाँ तक कि चौंकाने वाला कार्य माना जाता है। भैरव के लिए, यह नग्नता उनकी पूर्ण निर्भयता और सर्वोच्च अधिकार को व्यक्त करती है। वह सामाजिक मानदंडों और कानूनों से परे हैं, स्वयं सभी कानूनों के स्रोत हैं। यह उनकी अनियंत्रित, जंगली और आदिम शक्ति का प्रतीक है।

संसार का बुनकर विरोधाभासी रूप से, नग्न होने के बावजूद, शिव भैरव के रूप में वह भी हैं जिनसे पूरा ब्रह्मांड निकलता है और जिसमें वह अंततः विलीन हो जाता है। उनकी नग्नता वह कैनवास है जिस पर ब्रह्मांड चित्रित होता है और फिर मिटा दिया जाता है, फिर भी वह अपनी प्राचीन, अलंकृत अवस्था में रहते हैं।

334. नग्नव्रतधाराय

जिन्होंने पूर्ण वैराग्य का प्रतीक नग्नता का पवित्र व्रत धारण किया है, उन्हें नमन।

विस्तार : नग्नाव्रतधाराय नाम भगवान शिव का एक गहरा वर्णन है, विशेष रूप से उनके तपस्वी और उग्र रूपों जैसे भैरव में। यह संस्कृत शब्दों "नग्न" (नग्न), "व्रत" (शपथ, धार्मिक अनुष्ठान, पवित्र अभ्यास), और "धार" (धारण करने वाला या करने वाला) का संयोजन है।

पूर्ण वैराग्य (वैराग्य) का प्रतीक "नग्नता का पवित्र व्रत" (नग्न-व्रत) भौतिक दुनिया, सांसारिक संपत्ति और सामाजिक रीति-रिवाजों से पूर्ण वैराग्य (वैराग्य) का एक शक्तिशाली प्रतीक है। योगियों और तपस्वियों के लिए, नग्नता माया (भ्रम) और भौतिक शरीर के साथ पहचान का पूर्ण त्याग दर्शाती है, जो क्षणभंगुर और नश्वर है। यह शर्म और गर्व, धन और गरीबी, और अंततः, जीवन और मृत्यु की द्वैतता को पार करने का प्रतिनिधित्व करता है।

सामाजिक मानदंडों और भ्रम से परे ऐसे व्रत को धारण करके, शिव, कालभैरव के रूप में, सभी सामाजिक नियमों, अपेक्षाओं और घटनात्मक दुनिया द्वारा लगाई गई सीमाओं से अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित करते हैं। वे रूप से परे, नामों से परे, और नैतिकता या सौंदर्यशास्त्र की सभी मानवीय अवधारणाओं से परे हैं। यह नग्नता अश्लीलता की नहीं, बल्कि शुद्ध पवित्रता और पूर्ण स्वतंत्रता की है। यह दर्शाता है कि वे अज्ञान, अहंकार और इच्छा के आवरणों से रहित हैं। वे शुद्ध चेतना हैं, सभी आवरणों से मुक्त हैं।

परम और अव्यक्त एक गहरे दार्शनिक अर्थ में, नग्नता दिव्य के अव्यक्त (निर्गुण) पहलू का प्रतिनिधित्व कर सकती है। सृष्टि से पहले और सभी रूपों से परे, परम सत्ता निराकार, अलंकृत और अबाध है। कालभैरव की नग्नता इस प्रकार उनकी आदिम अवस्था को परम वास्तविकता के रूप में इंगित करती है जो सभी नामों और रूपों से परे मौजूद है, ब्रह्मांडीय नाटक से अछूती है, फिर भी यह सब का स्रोत है।

तपस्या और तप यह व्रत उनकी सर्वोच्च तपस्या (तप) को भी उजागर करता है। यह आत्म-त्याग और अनुशासन का एक कठोर अभ्यास है जिसका उद्देश्य परम आध्यात्मिक प्राप्ति है। इस संदर्भ में नग्नता, तपस्या का एक चरम रूप है, जो इंद्रियों और मन पर उनके प्रभुत्व, और परम आत्म में उनके पूर्ण अवशोषण को दर्शाता है।

335. नराय

आदिम, ब्रह्मांडीय पुरुष या शाश्वत आत्मा के स्वरूप को नमन।

विस्तार : नाराय (Nārāya) नाम पुरुष, आदिम ब्रह्मांडीय पुरुष, या शाश्वत आत्मा को संदर्भित करता है जिससे समस्त सृष्टि का उद्भव होता है। कालभैरव के नाम के रूप में, यह अस्तित्व के परम स्रोत और ब्रह्मांडीय आधार के रूप में उनकी पहचान को रेखांकित करता है।

आदिम सत्ता और ब्रह्मांडीय पुरुष (पुरुष) वैदिक और पौराणिक परंपराओं में, नारायण को अक्सर विष्णु के साथ पहचाना जाता है, लेकिन शिव और विशेष रूप से कालभैरव के संदर्भ में, नाराय परम अव्यक्त, आदिम पुरुष की ओर इंगित करता है। कालभैरव, स्वयं काल के रूप में, इस पुरुष के समान हैं, वह ब्रह्मांडीय पुरुष जिसका कुछ मिथकों में विखंडन ब्रह्मांड के निर्माण का प्रतीक है। वह मूल चेतना है जो सभी सृष्टि से पहले मौजूद थी, अस्तित्व का मूल ताना-बाना।

शाश्वत आत्मा (आत्मन) नाराय शाश्वत आत्मा या सार्वभौमिक स्व (आत्मन) को भी दर्शाता है जो सभी प्राणियों में व्याप्त और निवास करता है। यह कालभैरव को अद्वैत वेदांत के उच्चतम दार्शनिक सिद्धांतों के साथ संरेखित करता है, जहाँ व्यक्तिगत आत्मा (जीवात्मा) अंततः सर्वोच्च आत्मा (परमात्मा) के साथ एक है। कालभैरव, नाराय के रूप में, अस्तित्व का अविनाशी, अपरिवर्तनीय सार है, वह आत्मा जो सभी लौकिक और स्थानिक सीमाओं को पार करती है।

समस्त सृष्टि का स्रोत नाराय को मूर्त रूप देकर, कालभैरव को एकमात्र मूल निर्माता के रूप में चित्रित किया गया है जिससे ब्रह्मांड के सभी पहलू, चेतन और अचेतन, भौतिक और आध्यात्मिक, उत्पन्न होते हैं। वह अस्तित्व का परम आधार है, मौन साक्षी और सक्रिय निर्माता, पालक और लोप करने वाला, सभी उसके अनंत रूप में समाहित हैं। यह पहलू काल और सृष्टि (Kāla) के स्वामी के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देता है, जिसका अर्थ है कि संपूर्ण ब्रह्मांडीय लीला उनके भीतर और उनके माध्यम से, आदिम आत्मा के रूप में प्रकट होती है।

336. निर्ममाय

उन भगवान् को नमन जो 'मेरा' के भाव और सभी स्वामित्व से पूर्णतः मुक्त हैं।

विस्तार : निर्ममाय नाम संस्कृत शब्द "निर्मम" से लिया गया है, जो "निर्" (के बिना, अनुपस्थिति) और "मम" (मेरा, मेरा) का एक संयोजन है।

'मेरा' का अभाव (स्वामित्व) "मम" का अर्थ "मेरेपन" या स्वामित्व की भावना से है, जो सांसारिक अस्तित्व में अहंकार, आसक्ति और इच्छा का मूल है। निर्मम, इसलिए, 'मेरे' की इस भावना से पूरी तरह मुक्त होने की स्थिति को दर्शाता है। इसका तात्पर्य सभी संपत्तियों, संबंधों, उपलब्धियों और यहां तक कि अपने शरीर और मन से भी पूर्ण वैराग्य है। यह अहंकार-प्रेरित पहचान का विपरीत है।

अहंकार और आसक्ति से परे कालभैरव के लिए, निर्मम होने का अर्थ है कि वे व्यक्तिगत अहंकार और आसक्ति द्वारा लगाई गई द्वैतताओं और सीमाओं से परे कार्य करते हैं। वे ब्रह्मांड में किसी भी चीज़ पर व्यक्तिगत इच्छाओं, पूर्वाग्रहों या स्वामित्व के दावों से प्रेरित नहीं होते हैं। यह वैराग्य उन्हें समय और न्याय के निष्पक्ष और अडिग ब्रह्मांडीय प्रशासक होने का अधिकार देता है।

सार्वभौमिक चेतना यह गुण मुक्त चेतना की स्थिति को दर्शाता है जहाँ "स्वयं" और "अन्य" या "मेरा" और "मेरा नहीं" के बीच कोई अंतर नहीं है। वे अस्तित्व के एकीकृत क्षेत्र का प्रतीक हैं जहाँ सभी व्यक्तिगत स्वामित्व के दावे सार्वभौमिक में विलीन हो जाते हैं। वे अपने कार्यों - चाहे वह सुरक्षा हो, विनाश हो, या वरदान देना हो - बिना किसी व्यक्तिगत एजेंडे के, विशुद्ध रूप से ब्रह्मांडीय कानून और धर्म की अभिव्यक्ति के रूप में करते हैं।

संन्यास का प्रतीक निर्ममाय परम संन्यास का एक गहरा प्रतीक भी है। यह सिखाता है कि सच्ची स्वतंत्रता और आध्यात्मिक शक्ति सभी दावों और आसक्तियों को छोड़ने से आती है। भक्तों के लिए, कालभैरव के इस पहलू पर ध्यान करने से उन्हें वैराग्य विकसित करने और अपनी स्वामित्व की प्रवृत्तियों को पार करने के लिए प्रेरित किया जाता है, जिससे दुख से मुक्ति मिलती है।

337. निरहंकाराय

अहंकार और 'मैं' की भावना से पूर्णतः रहित (भगवान कालभैरव) को नमन।

विस्तार : निरहंकाराय नाम संस्कृत शब्द "निरहंकार" से लिया गया है, जो "निर" (बिना, रहित) और "अहंकार" (अहं, 'मैं' की भावना, आत्म-पहचान चेतना) का संयोजन है।

अहंकार से मुक्ति अहंकार भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से सांख्य और योग में, एक प्रमुख अवधारणा है। इसे मन, शरीर और इंद्रियों के साथ स्वयं की पहचान माना जाता है, जिससे व्यक्तिगत पहचान और कर्मों के स्वामित्व की झूठी भावना उत्पन्न होती है। "निरहंकार" इस अहंकारी चेतना से

पूर्ण स्वतंत्रता को दर्शाता है। भगवान शिव, अपनी परम पारलौकिक अवस्था में, कभी भी व्यक्तिगत, सीमित अहंकार की सीमाओं से बंधे नहीं होते हैं। वह अहंकार वाले प्राणी नहीं हैं; बल्कि, वह शुद्ध, असीमित चेतना का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सभी व्यक्तिगत अहंकारों से पहले आती है और उन्हें समाहित करती है।

परम चेतना यह गुण परम सत्ता के शुद्ध, असीमित स्वरूप को दर्शाता है। निरहंकार के रूप में भगवान शिव वह ब्रह्मांडीय चेतना हैं जो किसी भी व्यक्तिगत 'मैं' या 'मेरा' से सीमित नहीं हैं। वह अहंकारी धारणा से उत्पन्न होने वाले सभी घटनात्मक भेदों और द्वंद्वों से परे हैं। इस अवस्था में, कर्मों के परिणामों से कोई लगाव नहीं होता, कर्तापन की कोई भावना नहीं होती, और वह जिन अस्थायी भूमिकाओं या रूपों को धारण कर सकते हैं, उनसे कोई पहचान नहीं होती।

स्वयं की प्राप्ति आध्यात्मिक साधकों के लिए, निरहंकार की अवस्था अंतिम लक्ष्य है। 'अहंकार से रहित' होना व्यक्तिवाद के भ्रम को पार करना और सार्वभौमिक आत्मा (ब्रह्म या परमात्मा) के साथ अपनी सच्ची प्रकृति को जानना है। कालभैरव को निरहंकार के रूप में संबोधित करके, व्यक्ति उनकी सर्वोच्च श्रेष्ठता और अहंकार-विघटन के शिक्षक और अवतार के रूप में उनकी भूमिका को स्वीकार करता है, जो मुक्ति के लिए एक आवश्यक कदम है। यह नाम भक्तों को आश्वस्त करता है कि उनके प्रति समर्पण करके, वे भी अपने अहंकार और उससे जुड़े कष्टों को दूर कर सकते हैं।

338. निर्मोहाय

जो सभी मोह और आसक्ति से पूर्णतः मुक्त हैं, उनको नमन।

विस्तार : निर्मोहाय नाम संस्कृत शब्द निर्मोह से लिया गया है, जो एक गहन आध्यात्मिक अवस्था को दर्शाता है, जो "निर्" (बिना, से मुक्त) और "मोह" (भ्रम, आसक्ति, लगाव, भ्रमित होना) से बना है।

भ्रम से मुक्ति (मोह अज्ञान के रूप में) आध्यात्मिक संदर्भ में, मोह उस अज्ञान (अविद्या) को संदर्भित करता है जो स्वयं को गैर-स्वयं, जैसे शरीर, मन और भौतिक संसार के साथ गलत पहचान की ओर ले जाता है। यह दुख का मूल कारण है, क्योंकि यह वास्तविकता के सच्चे स्वरूप को अस्पष्ट करता है। निर्मोह, इसलिए, इस मौलिक भ्रम से पूर्ण स्वतंत्रता का प्रतीक है। कालभैरव, निर्मोहाय के रूप में, शुद्ध चेतना और आत्म-ज्ञान के प्रतीक हैं, जो माया (ब्रह्मांडीय भ्रम) के आवरणों से पूरी तरह अछूते हैं। वह परम सत्य (सत्य) का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सभी वातानुकूलित धारणाओं से परे है।

आसक्ति से मुक्ति (मोह आसक्ति के रूप में) मोह सांसारिक वस्तुओं, रिश्तों और अनुभवों के प्रति तीव्र भावनात्मक आसक्ति या आसक्ति को भी दर्शाता है। यह आसक्ति व्यक्तियों को जन्म और मृत्यु (संसार) के चक्र से बांधती है। निर्मोह पूर्ण अनासक्ति की स्थिति को इंगित करता है, जो उदासीनता से उत्पन्न नहीं होती है, बल्कि अनित्यता और सभी भौतिक घटनाओं की क्षणभंगुर प्रकृति की गहरी समझ से उत्पन्न होती है। भगवान कालभैरव, इस पहलू में, ऐसी आसक्तियों से उत्पन्न होने वाली इच्छाओं और घृणा से मुक्ति सिखाते हैं, जिससे आंतरिक शांति और समता प्राप्त होती है।

मुक्त अवस्था यह नाम शिव को ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित करता है जो पूर्ण मुक्ति (मोक्ष) की स्थिति में लगातार रहता है, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक बंधनों से मुक्त है जो साधारण प्राणियों को बांधते हैं। वह एक जीवनमुक्त का आदर्श है, जो जीवित रहते हुए मुक्त है, यह दर्शाता है कि सच्ची स्वतंत्रता मन की द्वैत और भ्रम को पार करने से आती है। निर्मोहाय के रूप में उनकी पूजा भक्तों को उनके अपने भ्रम और आसक्तियों को दूर करने में मदद करती है, उन्हें आत्म-साक्षात्कार और मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करती है।

339. निरुपद्रवाय

जो सभी परेशानियों, कष्टों और आपदाओं से मुक्त हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : निरुपद्रव नाम एक शक्तिशाली संस्कृत शब्द है जो दिव्य के एक मूलभूत पहलू का स्पष्ट रूप से वर्णन करता है, विशेष रूप से कालभैरव के सर्वोच्च रक्षक और परम वास्तविकता के रूप में प्रकृति के लिए प्रासंगिक है। यह "निर्" और "उपद्रव" से बना एक यौगिक शब्द है।

व्युत्पत्ति और अर्थ

• निर् (Nir): संस्कृत में यह उपसर्ग "बिना," "से मुक्त," "रहित," या "समाप्ति" को दर्शाता है। • उपद्रव (Upadrava): इस शब्द का अर्थ है "परेशानी," "आपदा," "कष्ट," "पीड़ा," "हानि," "खतरा," या "दुर्भाग्य।" यह किसी भी प्रकार के सांसारिक दुख, बाहरी या आंतरिक, को संदर्भित करता है जो शांति और कल्याण को बाधित करता है।

इसलिए, निरुपद्रव का शाब्दिक अर्थ है "जो सभी परेशानियों, कष्टों और आपदाओं से मुक्त है।"

परम सत्ता का गुण

यह नाम परम चेतना के एक आवश्यक गुण पर प्रकाश डालता है। किसी भी सत्ता को वास्तव में सर्वोच्च और पूजा के योग्य माने जाने के लिए, उसे उन सीमाओं, पीड़ाओं और अपूर्णताओं से परे होना चाहिए जो भौतिक संसार को त्रस्त करती हैं। कालभैरव, निरुपद्रव के रूप में, इस अतिक्रमण का प्रतीक हैं।

ब्रह्मांडीय कष्टों से मुक्ति

ब्रह्मांडीय अर्थ में, कालभैरव, काल के स्वामी और परम वास्तविकता के रूप में, सृष्टि, संरक्षण और संहार के चक्रों से अछूते हैं। जबकि वे इन चक्रों का संचालन करते हैं, वे उनमें उत्पन्न होने वाली "परेशानियों" से दूर रहते हैं, जैसे कि प्राकृतिक आपदाएँ, बीमारी और प्राणियों का दुख। वे अचल प्रेरक हैं, वह अपरिवर्तनीय आधार हैं जिस पर सभी परिवर्तनशील घटनाएँ घटित होती हैं।

आंतरिक शांति का प्रतीक

आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, निरुपद्रव परम आंतरिक शांति और मुक्ति (मोक्ष) की स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है। एक सच्चा योगी या ज्ञानी, अनुशासित आध्यात्मिक अभ्यास के माध्यम से, निरुपद्रव की स्थिति प्राप्त करने का प्रयास करता है - मानसिक और भावनात्मक कष्टों (क्लेशों) से मुक्त होना जो व्यक्ति को पुनर्जन्म के चक्र से बांधते हैं। कालभैरव को निरुपद्रव के रूप में ध्यान करके, भक्त भयहीनता और अस्तित्व संबंधी चिंताओं से मुक्ति की ऐसी ही स्थिति प्राप्त करने की आकांक्षा रखते हैं।

परेशानियों से मुक्ति प्रदान करने वाला

भक्त के लिए, कालभैरव को निरुपद्रव के रूप में संबोधित करना केवल उनके आंतरिक स्वभाव की स्वीकृति नहीं है, बल्कि सुरक्षा के लिए एक प्रार्थना भी है। भक्त अपनी परेशानियों से मुक्त होने के लिए उनकी कृपा चाहते हैं, चाहे वे शारीरिक बीमारियाँ हों, वित्तीय कठिनाइयाँ हों, मानसिक तनाव हो, या आध्यात्मिक बाधाएँ हों। वे पीड़ितों के लिए शरण हैं, और उनके प्रति समर्पण करने से सभी प्रकार के खतरों और दुखों से मुक्त स्थिति प्राप्त होती है।

संक्षेप में, निरुपद्रव कालभैरव परम आश्रय हैं, अटूट शांति और सुरक्षा का स्रोत हैं, और अस्तित्व की वह आदर्श स्थिति है जो किसी भी सांसारिक या ब्रह्मांडीय अशांति की पहुँच से परे है।

340. निष्कण्टकाय

जो कांटों या बाधाओं से रहित हैं उनको नमन।

विस्तार : निष्कण्टकाय नाम, संस्कृत शब्दों "निष" (बिना) और "कण्टक" (कांटा, बाधा, शत्रु) से व्युत्पन्न है, जो पूर्ण शुद्धता, अजेयता और अबाधित अधिकार की स्थिति का वर्णन करता है।

कांटों का अभाव (शुद्धता और पूर्णता) शाब्दिक रूप से, "कांटों के बिना" ऐसी स्थिति को दर्शाता है जो सभी अपूर्णताओं, अशुद्धियों या किसी भी ऐसी चीज़ से पूरी तरह रहित है जो नुकसान या बाधा उत्पन्न कर सकती है। आध्यात्मिक और दार्शनिक अर्थ में, यह भगवान कालभैरव के बेदाग, पारलौकिक स्वरूप की ओर इशारा करता है। वे भौतिक संसार की द्वैतताओं और सीमाओं से परे हैं, कर्म, इच्छाओं और सांसारिक आसक्तियों के कांटों और पीड़ाओं से मुक्त हैं। यह पहलू उनके पूर्ण, अक्षुण्ण दिव्य सार को उजागर करता है।

बाधाओं का अभाव (अबाधित शक्ति और प्रभाव) आध्यात्मिक रूप से, "कण्टक" बाधाओं, शत्रुओं या रुकावटों को भी संदर्भित करता है। निष्कण्टक के रूप में, कालभैरव एक ऐसी शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं जो पूरी तरह से अप्रतिबंधित है और जिसकी इच्छा को बाधित नहीं किया जा सकता है। कोई भी शक्ति, चाहे वह भौतिक हो या आध्यात्मिक, उनके मार्ग में खड़ी नहीं हो सकती या उनकी सर्वोच्चता को चुनौती नहीं दे सकती। वे सभी मार्गों को साफ करते हैं, अपने भक्तों के लिए सभी बाधाओं को दूर करते हैं, और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के अबाधित प्रवाह को सुनिश्चित करते हैं। भक्त के लिए, इस पहलू पर ध्यान करने से उनकी कृपा प्राप्त हो सकती है ताकि उनके आध्यात्मिक मार्ग पर सभी आंतरिक (जैसे अज्ञानता, अहंकार) और बाहरी (जैसे सांसारिक समस्याएं) बाधाओं को दूर किया जा सके।

पूर्ण संप्रभुता यह नाम कालभैरव की समय, स्थान और सभी कर्मिक शक्तियों पर पूर्ण संप्रभुता और नियंत्रण को रेखांकित करता है। वे परम सत्ता हैं, जिनके अधीन सभी प्राणी और ऊर्जाएं मौजूद हैं, और कोई भी उनके दिव्य उद्देश्य या शक्ति को बाधित नहीं कर सकता है। वे एक ऐसा वातावरण स्थापित करते हैं जहाँ उनका दिव्य नियम सर्वोच्च रूप से राज करता है, किसी भी विरोध से अछूता रहता है।

341. कृतानंदाय

दिव्य आनंद का सृजन करने वाले और उसका अनुभव करने वाले को नमन।

विस्तार : कृतानन्दाय नाम दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों: कृत (Kṛta) और आनंद (Ānanda) का एक यौगिक है।

• कृत (Kṛta): इस शब्द के कई अर्थ हैं, जिनमें "बनाया गया," "किया गया," "संपन्न किया गया," "सृजित किया गया," या "प्रभावित किया गया" शामिल हैं। आध्यात्मिक संदर्भ में, यह अक्सर उस चीज़ को संदर्भित करता है जिसे अस्तित्व में लाया गया है या अनुभव किया गया है। यह पूर्णता या समापन की स्थिति का भी अर्थ हो सकता है।

• आनंद (Ānanda): यह शब्द "परमानंद," "खुशी," "प्रसन्नता," "परम आनंद," या "उत्साह" को दर्शाता है। यह हिंदू दर्शन में एक मूलभूत अवधारणा है, जो आध्यात्मिक प्राप्ति की अंतिम स्थिति का प्रतिनिधित्व करती है - शुद्ध, मिलावट रहित चेतना और आनंद की स्थिति जो परम वास्तविकता (ब्रह्म) में निहित है।

आनंद का सृजनकर्ता (बाह्य पहलू) (The Creator of Bliss - External Aspect) एक व्याख्या में, कृतानन्दाय भगवान भैरव को "आनंद का सृजन करने वाले" के रूप में संदर्भित करता है। इसका अर्थ है कि वे दिव्य आनंद के स्रोत और दाता हैं। उनकी दिव्य लीला (Lila) और उनका अस्तित्व ही

ब्रह्मांड में उन लोगों के लिए खुशी और प्रसन्नता का कारण है जो उनसे जुड़े हुए हैं। वे अपने भक्तों को यह परम आनंद प्रदान कर सकते हैं, उन्हें सांसारिक दुखों और पीड़ाओं से ऊपर उठा सकते हैं।

आनंद का मूर्त रूप (आंतरिक पहलू) (The Embodiment of Bliss - Internal Aspect) अधिक गहन रूप से, कृतानन्दाय का अर्थ है कि भगवान भैरव स्वयं "आनंद द्वारा कृत हैं" या "अपने भीतर आनंद को पूर्ण कर चुके हैं।" वे केवल आनंद के प्रदाता नहीं हैं; वे स्वयं परम आनंद का मूर्त रूप और अनुभव हैं। उनका अंतर्निहित स्वभाव आनंद है। यह वेदांतिक समझ के अनुरूप है कि ब्रह्म सत्-चित्-आनंद (अस्तित्व-चेतना-आनंद) है। शिव के एक उग्र स्वरूप के रूप में, भैरव इस परम आनंदमय वास्तविकता के गतिशील पहलू का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनका भयानक रूप उनकी आंतरिक पूर्ण आनंद की स्थिति को नकारता नहीं है; बल्कि, यह अक्सर दूसरों के लिए उस आनंद के अनुभव में आने वाली बाधाओं को शुद्ध करने और नष्ट करने का काम करता है।

आनंद का अनुभवकर्ता (Experiencer of Bliss) इस नाम को "वह जो आनंद का अनुभव करता है" के रूप में भी समझा जा सकता है। यह उनके स्व-अस्तित्ववान, आत्मनिर्भर स्वभाव को संदर्भित करता है, जहाँ उनका अपना अस्तित्व शाश्वत आनंद से ओत-प्रोत है। वे दिव्य उत्साह की शाश्वत स्थिति में हैं, जो किसी भी बाहरी परिस्थितियों या कार्यों से अछूते हैं।

इस प्रकार, कृतानन्दाय भगवान भैरव को परम आनंद के परोपकारी दाता और ब्रह्मांड के शाश्वत, आनंदमय सार दोनों के रूप में पूजता है।

342. निर्ध्यायाय

उन परम सत्ता को नमन जो सभी ध्यान से परे हैं, फिर भी ध्यान का अंतिम लक्ष्य हैं।

विस्तार : निर्ध्यातव्याय नाम संस्कृत मूल "ध्या" (ध्यान करना) और उपसर्ग "निर्" (परे, बिना) से लिया गया है।

सभी ध्यान से परे (अध्येय) निर्ध्यातव्या का अर्थ है "जिस पर ध्यान नहीं किया जा सकता," या "जो ध्यान से परे है।" इसका तात्पर्य है कि परम सत्य, अपने निरपेक्ष, अव्यक्त रूप में, सभी वैचारिक ढाँचों, मानसिक संरचनाओं और किसी भी प्रकार की संरचित ध्यान पद्धति से परे है। जैसे कोई एक कप में समुद्र की विशालता को नहीं समेट सकता, वैसे ही कालभैरव की अनंत प्रकृति को सीमित मन के ध्यान करने के प्रयासों से पूरी तरह से धारण या सीमित नहीं किया जा सकता। यह उनके 'निर्गुण' (बिना गुणों के) पहलू की बात करता है, जो अंततः अवर्णनीय और सामान्य माध्यमों से अगम्य है। ऐसे रूप पर ध्यान करने का कोई भी प्रयास उसकी असीमता को सीमित कर देगा।

ध्यान का लक्ष्य (ध्येय) विरोधाभासी रूप से, जबकि वे ध्यान की 'प्रक्रिया' से परे हैं, वे एक साथ सभी ध्यान के 'परम उद्देश्य' और 'लक्ष्य' भी हैं। भक्त ध्यान के माध्यम से ब्रह्मांडीय चेतना, आध्यात्मिक मुक्ति और दिव्य के साथ मिलन प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। कालभैरव, जो परम सत्य और अस्तित्व के सार का प्रतिनिधित्व करते हैं, वह अवशोषण और बोध की वही अवस्था हैं। ध्यान मार्ग है, लेकिन वे गंतव्य हैं - वह परम सत्य जो, जब प्राप्त हो जाता है, तो आगे ध्यान की आवश्यकता को समाप्त कर देता है।

विरोधाभास को एकीकृत करना यह नाम आध्यात्मिक दर्शन में एक मौलिक विरोधाभास को समाहित करता है: परम वास्तविकता एक साथ अंतर्निहित (हर चीज के भीतर, ध्यान के माध्यम से सुलभ) और पारलौकिक (सभी श्रेणियों से परे, जिसमें ध्यान का कार्य भी शामिल है) है। इस प्रकार निर्ध्यातव्याय प्रत्यक्ष, सहज बोध की स्थिति का सुझाव देता है, जहाँ ध्यानी और ध्यान का विषय विलीन हो जाते हैं - गैर-द्वैत चेतना की एक अवस्था जहाँ ध्यानी और दिव्य के बीच का अंतर घुल जाता है। कोई पारंपरिक अर्थों में उन पर 'ध्यान' नहीं करता, बल्कि 'उन जैसा बनने' या उनके साथ अपनी अंतर्निहित एकता को महसूस करने का प्रयास करता है।

343. जनार्दनाय

जो सभी लोगों के मुक्तिदाता और उनकी आराधना के पात्र हैं, उनको नमन।

विस्तार : जनार्दन (Janārdanā) नाम एक गहरा और प्राचीन विशेषण है, जो पारंपरिक रूप से भगवान विष्णु से जुड़ा है, लेकिन इस संदर्भ में, इसे कालभैरव पर लागू किया गया है, जो उनके सर्व-समावेशी दिव्य कार्यों पर जोर देता है। यह दो संस्कृत शब्दों: जन और अर्द का एक यौगिक है।

जन (Jana): इस शब्द का अर्थ है "लोग," "मानवजाति," "प्राणी," या "जीव।" यह सामूहिक जीवित संस्थाओं, विशेषकर मनुष्यों को संदर्भित करता है।

अर्द (Arda): इस मूल के कई अर्थ हैं, जिनमें "पीड़ा देना," "नष्ट करना," या, अधिक प्रासंगिक रूप से, "प्रार्थना करना," "विनती करना," या "प्रेरित करना" शामिल हैं।

लोगों के मुक्तिदाता (Liberator of People) जब अर्द का अर्थ "पीड़ा देना" या "नष्ट करना" लिया जाता है, तो जनार्दन का अर्थ होता है "वह जो दुष्ट लोगों को पीड़ा देता है" या "वह जो राक्षसों और बुरी शक्तियों को नष्ट करता है जो मानवजाति को परेशान करती हैं।" यह कालभैरव के भयंकर स्वरूप के अनुरूप है, जहाँ वे अधर्मी को दंडित करने वाले और बाधाओं को नष्ट करने वाले के रूप में कार्य करते हैं, जिससे अच्छे लोगों की मुक्ति होती है। उनका भयानक रूप नकारात्मकता को दूर करता है, अपने भक्तों को बाहरी दुर्भावनापूर्ण शक्तियों या आंतरिक बुराइयों से उत्पन्न पीड़ा से मुक्त करता है।

आराधना और प्रार्थना का विषय (Object of Adoration and Prayer) एक गहरी और अधिक परोपकारी व्याख्या "अर्द" का अर्थ "विनती करना" या "प्रार्थना करना" लेती है। इस अर्थ में, जनार्दन का अर्थ है "वह जिसकी सभी लोग पूजा करते हैं" या "वह जिसे लोग अपनी प्रार्थनाएँ अर्पित करते हैं और मोक्ष के लिए उस पर निर्भर रहते हैं।" यह कालभैरव की सर्वोच्च देवता के रूप में भूमिका को उजागर करता है, जिनकी ओर सभी प्राणी आवश्यकता के समय मुड़ते हैं, शरण, सुरक्षा और अंतिम मुक्ति (मोक्ष) की तलाश करते हैं। वे आध्यात्मिक शांति और सांसारिक तथा आध्यात्मिक आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए अंतिम आश्रय हैं।

मोक्ष के दाता (Bestower of Salvation) आराधना का विषय होने में मोक्ष या मुक्ति प्रदान करने का कार्य निहित है। बुराई को नष्ट करके और भक्ति के प्राप्तकर्ता के रूप में, कालभैरव, जनार्दन के रूप में, परम मुक्तिदाता हैं। वे प्राणियों को जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) से और अज्ञानता तथा कर्म के बंधन से मुक्त करते हैं, उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान की ओर मार्गदर्शन करते हैं। यह उनके करुणामय स्वरूप पर जोर देता है, जहाँ उनका भयंकर रूप अपने भक्तों के लिए मुक्ति के परोपकारी लक्ष्य को प्राप्त करने का एक साधन है।

344. अनघाय

जो पूर्णतः निष्पाप, निर्दोष और शुद्ध हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : अनघ (अनघाय) नाम संस्कृत शब्द 'अघ' से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'पाप', 'दोष', 'अशुद्धता' या 'बुराई'। उपसर्ग 'अन-' निषेध या अनुपस्थिति को दर्शाता है। इस प्रकार, अनघ का अर्थ है "जो पाप रहित है," "निर्दोष," "पवित्र," या "निष्कलंक।"

पूर्ण पवित्रता यह नाम भगवान कालभैरव के पारलौकिक स्वरूप को उजागर करता है। वे अच्छे और बुरे, पुण्य और पाप के द्वंद्व से परे हैं, जो भौतिक संसार और उसके सदेह प्राणियों की विशेषताएँ हैं। उनका सार स्वाभाविक रूप से शुद्ध और किसी भी प्रकार की लौकिक या व्यक्तिगत अशुद्धता से अछूता है। यह पूर्ण, निष्कलंक आध्यात्मिक पूर्णता की स्थिति को संदर्भित करता है।

कर्म और संसार से परे अनघ के रूप में, कालभैरव कर्म से अछूते हैं, जो कारण और प्रभाव का नियम है, जो सभी जीवित संस्थाओं को जन्म और मृत्यु (संसार) के चक्र में बांधता है। चूंकि वे परम सत्य और सभी अस्तित्व के स्रोत हैं, वे कर्मों के परिणामों के अधीन नहीं हैं, न ही उनमें कोई अंतर्निहित अपूर्णताएँ हैं जो ऐसे परिणामों को जन्म दे सकती हैं। वे अस्तित्व का परम आधार हैं, जो स्वयं शुद्ध चेतना और आनंद है।

भक्तों के लिए आदर्श भक्तों के लिए, कालभैरव को अनघ के रूप में चिंतन करना आध्यात्मिक अभ्यास के लक्ष्य की याद दिलाता है: 'अघ' या अशुद्धता को पार करना, और आध्यात्मिक स्पष्टता, पवित्रता और मुक्ति की स्थिति प्राप्त करना। उनके निर्दोष स्वरूप पर ध्यान करके, एक भक्त अपने मन, शरीर और चेतना को शुद्ध करने की आकांक्षा करता है। वे अपने भक्तों को उनके संचित पापों और दोषों से शुद्ध करते हैं, उन्हें आंतरिक पवित्रता की समान स्थिति की ओर ले जाते हैं।

आध्यात्मिक महत्व गहरे अर्थ में, अनघ यह इंगित करता है कि दिव्य वास्तविकता स्वाभाविक रूप से परिपूर्ण है। कोई भी स्पष्ट दोष या अपूर्णता केवल माया (भ्रम) के दायरे में या हमारी सीमित धारणा के परिणामस्वरूप मौजूद है। परम सत्य, जैसा कि कालभैरव द्वारा सन्निहित है, त्रुटिहीन, पूर्ण और शाश्वत रूप से शुद्ध है।

345. निष्कलाय

जो अविभाज्य, पूर्ण और बिना किसी भाग के हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : निष्कला (Nishkala) नाम शैव धर्म के भीतर गहरा दार्शनिक महत्व रखता है, विशेष रूप से शिव के परम स्वरूप को समझने में। यह संस्कृत मूल "निः" (बिना) और "कला" (भाग, विभाजन, गुण या उत्सर्जन) से लिया गया है।

अविभाज्य परम सत्ता (The Indivisible Absolute) निष्कला सर्वोच्च सत्ता का वर्णन करती है जो किसी भी भाग, विभाजन या भेद से पूरी तरह रहित है। इसका अर्थ है कि शिव, अपने निष्कला स्वरूप में, निराकार, अविभेदित और पारलौकिक परम सत्ता हैं। वे घटक तत्वों से नहीं बने हैं; बल्कि, वे एक अद्वितीय, अविभेदित एकता हैं। यह अवधारणा वेदांत के निर्गुण ब्रह्म (गुणों के बिना ब्रह्म) के साथ संरेखित है, यह दर्शाता है कि परम वास्तविकता सभी अनुभवजन्य श्रेणियों, गुणों और रूपों से परे है।

गुणों और विशेषताओं से परे (Beyond Attributes and Qualities) "कला" गुणों, विशेषताओं या प्रकट पहलुओं को भी संदर्भित कर सकती है। इस प्रकार, निष्कला इंगित करता है कि शिव, अपने परम सार में, सभी गुणों (गुणों) और विशेषताओं से परे हैं। वे न तो सात्विक, न राजसिक और न ही तामसिक हैं; ये प्रकट जगत की श्रेणियाँ हैं। वे शुद्ध चेतना, अस्तित्व और आनंद हैं, जो घटनात्मक जगत की सीमाओं से पूरी तरह मुक्त हैं।

अप्रकट अवस्था (The Unmanifested State) शिव का यह पहलू उनकी अप्रकट, आदिम अवस्था को दर्शाता है - सृष्टि से पहले की अवस्था, भेदों से पहले की, और किसी भी रूप या नाम के अस्तित्व में आने से पहले की अवस्था। यह सभी अस्तित्व का अकारण आधार है, वह स्रोत जिससे सभी प्रकट रूप (सकला) सृष्टि के दौरान उत्पन्न होते हैं और जिसमें वे प्रलय के दौरान विलीन हो जाते हैं।

पूर्णता और समग्रता (Wholeness and Completeness) चूंकि उनके कोई भाग नहीं हैं, वे स्वाभाविक रूप से पूर्ण, सिद्ध और स्वयं में समग्र हैं। उनके बाहर ऐसा कुछ भी नहीं है जो उनके अस्तित्व में कुछ जोड़ सके या उसे कम कर सके। यह पूर्णता अनंत विस्तार और शाश्वत उपस्थिति का अर्थ है, बिना आदि या अंत के, और बिना स्थानिक या लौकिक सीमाओं के।

शैव परंपरा में, विशेष रूप से कुछ आगमों और कश्मीर शैव धर्म में, शिव को उनके निष्कला (निराकार, पारलौकिक) और सकला (प्रकट, अंतर्निहित) दोनों पहलुओं में समझने पर बहुत जोर दिया जाता है। निष्कला परम सत्य है, शुद्ध चेतना है, जबकि सकला गतिशील, सक्रिय और प्रकट शक्ति (शक्ति) है जिसके माध्यम से वे ब्रह्मांड का निर्माण, पालन और संहार करते हैं। निष्कला को नमन करना इस सर्वोच्च, पारलौकिक और अविभाज्य वास्तविकता की पहचान है।

346. निष्ठाय

दृढ़ भक्ति और परम अस्तित्व के स्वरूप को नमन।

विस्तार : "निष्ठाय" नाम संस्कृत शब्द "निष्ठा" से लिया गया है, जिसमें दृढ़ता, परम अवस्था और भक्ति से संबंधित गहन आध्यात्मिक और दार्शनिक अनेक अर्थ समाहित हैं।

परम अवस्था और निष्कर्ष निष्ठा का मूल अर्थ "अंतिम अंत," "निष्कर्ष," या "परम अवस्था" है। जब इसे कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह दर्शाता है कि वे सर्वोच्च वास्तविकता, आध्यात्मिक अन्वेषण के सभी मार्गों की अंतिम परिणति और सभी अस्तित्व का अंतिम गंतव्य हैं। वे आदि और अंत हैं, शुरुआत और समाप्ति हैं। कालभैरव को निष्ठा के रूप में पहचानना उनकी सर्वशक्तिमानता को सभी घटनाओं के स्रोत और विलायक के रूप में स्वीकार करना है।

दृढ़ भक्ति और स्थिरता निष्ठा का एक और महत्वपूर्ण अर्थ "दृढ़ भक्ति," "स्थिरता," "अटूट संकल्प," या "निष्ठा" है। इस संदर्भ में, कालभैरव अटूट विश्वास और दृढ़ विश्वास के सिद्धांत का प्रतीक हैं। वे आध्यात्मिक साधना (sādhanā) में निश्चित इरादे और प्रतिबद्धता का आदर्श हैं। आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले भक्तों को अटूट एकाग्रता और समर्पण के इस गुण को विकसित करना चाहिए, और कालभैरव, निष्ठा के रूप में, ऐसी भक्ति के व्यक्तिीकरण और उसके प्राप्तकर्ता दोनों हैं।

स्थापित अभ्यास निष्ठा "स्थापित अभ्यास," "नियम," या "विधि" को भी दर्शाती है। यह अनुशासित और सुसंगत आध्यात्मिक अभ्यासों को संदर्भित करता है जो व्यक्ति को परमात्मा तक ले जाते हैं। कालभैरव, निष्ठा के रूप में, ऐसी स्थापित परंपराओं और आध्यात्मिक अनुशासनों की प्रभावकारिता और पवित्रता का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे इस सिद्धांत के दिव्य अवतार हैं कि अनुशासित अभ्यास परम बोध की ओर ले जाता है।

सच्चे धर्म का प्रतीक इस प्रकार, निष्ठाय कालभैरव को परम सत्य, सभी आध्यात्मिक प्रयासों का अंतिम लक्ष्य, और अटूट विश्वास और सैद्धांतिक जीवन का सार स्वीकार करता है। वे वह अटल वास्तविकता हैं जिस पर सभी क्षणभंगुर घटनाएँ उठती और गिरती हैं, वह ठोस नींव जिस पर एक साधक अपनी आध्यात्मिक यात्रा का निर्माण कर सकता है।

347. नीलकायाय

जिनके शरीर का रंग सुंदर, गहरा नीला है, उन्हें नमन।

विस्तार : नाम नीलकायाय (Nīlakāyāya) नील (Nīla) और काया (Kāyā) का एक यौगिक है, जो भगवान भैरव के एक गहन और प्रतीकात्मक पहलू को दर्शाता है।

नील (नील) - नीला/गहरा नीला रंग "नील" नीले रंग को संदर्भित करता है, विशेष रूप से नीले रंग की एक गहरी या तीव्र छाया को। हिंदू प्रतिमा विज्ञान और दर्शन में, नीला रंग प्रतीकात्मक अर्थों से समृद्ध है। यह अक्सर दर्शाता है:

• अनंत और सार्वभौमिक: आकाश की विशालता और महासागर की अथाह गहराई आमतौर पर नीली होती है, जो असीमता, अनंतता और दिव्य के सर्वव्यापी स्वरूप का प्रतीक है। • उत्कृष्टता और ब्रह्मांडीय पराक्रम: विष्णु (कृष्ण के रूप में) और शिव जैसे कई शक्तिशाली देवताओं को नीली त्वचा

के साथ चित्रित किया जाता है, जो उनके उत्कृष्ट स्वरूप, ब्रह्मांडीय शक्ति और जहर या नकारात्मकता को अवशोषित और बेअसर करने की क्षमता को इंगित करता है। • स्थिरता और शांति (विरोधाभासी रूप से): जबकि भैरव भयंकर हैं, नीला रंग आध्यात्मिक शांति और अविचलित जागरूकता की एक गहरी स्थिति का भी प्रतीक हो सकता है जो ब्रह्मांडीय गतिविधि की सतह के नीचे स्थित है।

काया (काया) - शरीर/रूप "काया" भौतिक शरीर या रूप को दर्शाती है। इसलिए, नीलकाया का शाब्दिक अर्थ है "जिसका शरीर नीला है" या "नीले रूप वाला"।

भैरव के नीले शरीर का प्रतीकवाद • ब्रह्मांडीय उपस्थिति: भैरव का नीला शरीर उनकी सर्वव्यापकता और ब्रह्मांडीय सिद्धांत के रूप में उनकी पहचान को दर्शाता है, जो सभी स्थान और समय में व्याप्त है। वह किसी विशिष्ट स्थान तक सीमित नहीं हैं, बल्कि पूरे ब्रह्मांड का आधार हैं। • अज्ञान और नकारात्मकता का विनाश: भैरव के संदर्भ में, गहरा नीला रंग सभी जहरों, नकारात्मकताओं और अशुद्धियों - ब्रह्मांडीय और व्यक्तिगत दोनों को अवशोषित और बेअसर करने की उनकी क्षमता के रूप में व्याख्या किया जा सकता है। जैसे शिव ने हलाहल विष का सेवन किया था, भैरव अराजक और विनाशकारी शक्तियों को बेअसर करने की इस शक्ति का प्रतीक हैं। यह आध्यात्मिक ज्ञान की ओर ले जाने वाले अज्ञान (अविद्या) के विनाश तक भी फैला हुआ है। • भयंकर फिर भी सुरक्षात्मक: जबकि नीला अक्सर कृपा और दिव्यता को दर्शाता है, भैरव के भयंकर रूप में, गहरा नीला उनके भयानक पहलू में भी योगदान देता है, जो बुरी शक्तियों में भय पैदा करने और अपने भक्तों को नुकसान से बचाने के लिए आवश्यक है। यह उनकी अदम्य और दुर्जेय शक्ति को दर्शाता है। • ध्यान और चेतना की गहराई: नीला रंग गले (विशुद्ध) चक्र से भी जुड़ा हो सकता है, जो शुद्धता, अभिव्यक्ति और नकारात्मकता के सेवन से संबंधित है। शिव को स्वयं कभी-कभी नीलकंठ (नीले गले वाले) कहा जाता है क्योंकि उन्होंने जहर धारण किया था। भैरव का नीला शरीर इस प्रकार उनकी ध्यान की स्थिति की गहराई और अस्तित्व की द्वंद्वों को पार करते हुए अंतिम सत्य की उनकी प्राप्ति का अर्थ हो सकता है।

348. निरामयाय

सभी रोगों और व्याधियों से पूर्णतः मुक्त रहने वाले को नमन।

विस्तार : निरामयाय नाम संस्कृत के शब्दों "निर्" (बिना) और "आमय" (रोग, बीमारी, कष्ट) से मिलकर बना है।

रोग और पीड़ा से मुक्ति अपने सबसे तात्कालिक स्तर पर, निरामयाय उस एक को दर्शाता है जो किसी भी प्रकार की बीमारी, शारीरिक कष्ट या संकट से पूरी तरह अछूता है। यह शारीरिक और मानसिक दोनों तरह से पूर्ण स्वास्थ्य और कल्याण की एक परम स्थिति को दर्शाता है। भगवान शिव, इस पहलू में, पवित्रता और दोषहीनता की अंतिम स्थिति का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सभी सांसारिक कष्टों से परे है।

पवित्रता और पूर्णता का प्रतीक गहरे आध्यात्मिक अर्थ में, "आमय" मन और आत्मा के कष्टों को भी संदर्भित कर सकता है, जैसे अज्ञान (अविद्या), अहंकार (अहंकार), आसक्ति (राग), घृणा (द्वेष), और भय। निरामय होने से, कालभैरव इन आध्यात्मिक रोगों से मुक्त हैं। वह एक ऐसे प्राणी के प्रतीक हैं जिसने सभी द्वंद्वों और सीमाओं को पार कर लिया है, जो हमेशा बेदाग पवित्रता और पूर्णता की स्थिति में रहते हैं।

समग्र स्वास्थ्य के प्रदाता भक्तों के लिए, कालभैरव को निरामय के रूप में आह्वान करना सभी प्रकार के कष्टों को दूर करने के लिए एक प्रार्थना है - न केवल शारीरिक बीमारी, बल्कि मानसिक पीड़ा, आध्यात्मिक अशुद्धियाँ और अस्तित्वगत संकट भी। वह वह हैं जो समग्र स्वास्थ्य प्रदान कर सकते हैं,

जिससे दुख के चक्र (संसार) से मुक्ति मिलती है। यह पहलू उनके परोपकारी स्वभाव को उजागर करता है, क्योंकि वह न केवल भौतिक कल्याण प्रदान करते हैं बल्कि आध्यात्मिक सांत्वना और सभी बीमारियों के मूल कारणों से मुक्ति भी प्रदान करते हैं।

349. अनिरुद्धाय

जो अबाधित हैं, अजेय हैं, और जिसे कभी सीमित नहीं किया जा सकता, उन (भगवान) को नमन।

विस्तार : अनिरुद्ध (अनिरुद्धाय) नाम एक संस्कृत शब्द है जो "अ" (अर्थात् "नहीं" या "के बिना") और "निरुद्ध" (अर्थात् "बाधित," "बंधित," या "नियंत्रित") से मिलकर बना है। इस प्रकार, अनिरुद्ध का अर्थ है "जो अबाधित है," "जो अनियंत्रित है," या "जो असीमित है।"

अबाधित और असीमित यह विशेषण भगवान कालभैरव की पूर्ण स्वतंत्रता, अनंत शक्ति और अदम्य अधिकार पर जोर देता है। वे बिना किसी बाधा या सीमा के कार्य करते हैं। ब्रह्मांडीय अर्थ में, इसका मतलब है कि कोई भी शक्ति, कोई भी प्राणी, कोई भी तत्व और कोई भी नियम उनकी इच्छा या कार्य को बाधित नहीं कर सकता है। वे समय, स्थान या कार्य-कारण के बंधनों से मुक्त हैं।

अजेय शक्ति शिव के एक स्वरूप के रूप में, कालभैरव सार्वभौमिक विघटन और परिवर्तन की अदम्य शक्ति का प्रतीक हैं। उनकी सृष्टि, पालन और संहार की प्रक्रियाएँ निरंतर हैं और किसी भी बाहरी कारक द्वारा रोकी नहीं जा सकतीं। यह पहलू विशेष रूप से तब प्रमुख होता है जब उनके "काल" (समय) के रूप में उनकी भूमिका पर विचार किया जाता है; समय एक अटूट प्रवाह है, और इसके स्वामी के रूप में, वे भी अजेय हैं।

सीमाओं से परे "असीमित" उनकी सर्वव्यापकता और पराकाष्ठा को दर्शाता है। उन्हें किसी विशिष्ट स्थान, रूप या विचार तक सीमित नहीं किया जा सकता है। जबकि वे विशिष्ट रूपों में प्रकट होते हैं, उनका वास्तविक स्वरूप सभी गुणों और रूपों से परे है, जो सभी अस्तित्व में व्याप्त है फिर भी उससे भिन्न रहता है। वे न तो नश्वर प्राणियों को नियंत्रित करने वाले जन्म और मृत्यु के चक्रों से बंधे हैं, न ही भौतिक ब्रह्मांड की सीमाओं से।

दार्शनिक महत्व एक आध्यात्मिक संदर्भ में, अनिरुद्ध भक्तों को अपनी आंतरिक और बाहरी सीमाओं – अज्ञानता, अहंकार और आसक्ति की जंजीरों – से मुक्त होने के लिए प्रेरित करते हैं। यह मुक्ति (मोक्ष) की अंतिम प्राप्ति का प्रतीक है, एक ऐसी स्थिति जहाँ व्यक्तिगत आत्मा सांसारिक आसक्तियों या कर्म बंधनों से अब सीमित नहीं रहती है, जो दिव्य के असीमित स्वरूप को दर्शाती है।

350. अनाद्यंताय

जिनका न कोई आदि, न कोई अंत है, उन (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : अनाद्यंताय नाम भगवान कालभैरव का एक गहन वर्णन है, जो दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों से बना है: अनादि और अनंत।

अनादि (बिना शुरुआत के) अनादि शब्द 'अ' (नकारात्मक) और 'आदि' (शुरुआत या उत्पत्ति) का एक यौगिक है। इसका अर्थ है कि कालभैरव की कोई उत्पत्ति नहीं है, कोई ऐसा समय बिंदु नहीं है जब उन्हें बनाया गया हो या वे अस्तित्व में आए हों। वे शाश्वत रूप से विद्यमान हैं, सृष्टि और विलय के चक्रों से परे हैं। यह अवधारणा उन्हें आदिम वास्तविकता, अकारण कारण के रूप में स्थापित करती है, जो सभी प्रकट ब्रह्मांडों से पहले मौजूद है। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, हर चीज की शुरुआत और अंत होता है, लेकिन अनादि इन लौकिक सीमाओं से परे एक उत्कृष्ट अवस्था को दर्शाता है। वे पहले हैं, फिर भी उनका कोई पहला नहीं है।

अनंत (बिना अंत के) इसी तरह, अनंत 'अन्' (नकारात्मक) और 'अंत' (समाप्ति, सीमा या हद) से व्युत्पन्न है। इसका अर्थ है कि कालभैरव का कोई अंत नहीं है, कि वे कभी अस्तित्वहीन नहीं होंगे। वे अनंत, असीम और शाश्वत हैं। उनका अस्तित्व सभी लौकिक और स्थानिक सीमाओं से परे है। अनंत असीम शक्ति, ज्ञान और सर्वव्यापकता का भी अर्थ है। अंतहीन ब्रह्मांडीय नृत्य की तरह, उनका स्वभाव शाश्वत और बिना किसी रुकावट के है।

आदिम और शाश्वत वास्तविकता एक साथ, अनाद्यंत कालभैरव को परम, शाश्वत और उत्कृष्ट वास्तविकता के रूप में वर्णित करता है जो समय (काल) और स्थान की बाधाओं से अछूता है। वे सभी अस्तित्व का अंतिम आधार हैं, अपरिवर्तनीय आधार जो सभी क्षणभंगुर घटनाओं के नीचे स्थित है। यह नाम उन्हें परब्रह्म, सर्वोच्च निरपेक्ष के रूप में पहचानता है, जो सभी द्वंद्वों से परे है, जिसमें लौकिक द्वंद्व भी शामिल है। वे एक साथ सभी चीजों के स्रोत और विलय हैं, फिर भी हमेशा उपस्थित और अप्रभावित रहते हैं। यह गुण समय पर उनके सर्वोच्च प्रभुत्व को रेखांकित करता है, जैसे काल भैरव, काल के स्वामी, जो उस लौकिक प्रवाह से परे मौजूद हैं जिस पर वे शासन करते हैं।

351. नैकात्मने

जो एक आत्मा नहीं, बल्कि असंख्य आत्माओं के रूप में प्रकट होते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : नैकात्मा नाम एक गहन दार्शनिक कथन है, जो संस्कृत शब्दों 'न' (नहीं), 'एक' (एक, अकेला), और 'आत्मा' (स्वयं, आत्मा) से व्युत्पन्न है। इस प्रकार, नैकात्मा का अर्थ है "जो एक आत्मा नहीं है" या "जिसकी एक आत्मा नहीं है," जिसका अर्थ है कि वह अनिवार्य रूप से एक होते हुए भी अनेक अभिव्यक्तियों में प्रकट होता है।

एकता में बहुलता का विरोधाभास (The Paradox of Multiplicity in Unity) यह नाम अद्वैत वेदांत और हिंदू धर्म के अन्य अद्वैतवादी दर्शनों के एक केंद्रीय सिद्धांत को समाहित करता है: सर्वोच्च सत्ता (ब्रह्म, जिसे यहां कालभैरव द्वारा दर्शाया गया है) अंततः एक, अद्वितीय और अविभाज्य है, फिर भी यह घटनात्मक दुनिया में असंख्य व्यक्तिगत आत्माओं और रूपों के माध्यम से प्रकट होती है। कालभैरव, नैकात्मा के रूप में, इस ब्रह्मांडीय विरोधाभास को प्रदर्शित करते हैं—वह एक पारलौकिक वास्तविकता हैं जो प्रत्येक व्यक्तिगत आत्मा (जीवात्मा) को रेखांकित और चेतन करती है।

अंतर्व्याप्ति और परात्परता (Immanence and Transcendence) नैकात्मा दिव्य के अंतर्व्याप्ति और परात्पर दोनों पहलुओं को दर्शाता है। • अंतर्व्याप्ति (Immanence): वह प्रत्येक जीवित प्राणी में मौजूद है, प्रत्येक के भीतर चेतना और जीवन शक्ति के रूप में प्रकट होता है। प्रत्येक व्यक्तिगत आत्मा, सार रूप में, इस सार्वभौमिक दिव्य चेतना की एक चिंगारी है। • परात्परता (Transcendence): असंख्य रूपों में प्रकट होने के बावजूद, वह इन व्यक्तिगत आत्माओं की सीमाओं, अनुभवों और कष्टों से अछूता और अप्रभावित रहता है, अपनी सर्वोच्च, अद्वितीय और पूर्ण प्रकृति को बनाए रखता है।

सार्वभौमिक आत्मा (The Universal Soul) यह नाम सीधे महाभूत (महान सत्ता) या परमात्मा (सर्वोच्च आत्मा) की अवधारणा को संबोधित करता है, व्यक्तिगत जीवात्मा (व्यक्तिगत स्वयं या आत्मा) के विपरीत। कालभैरव वह सार्वभौमिक आध्यात्मिक सिद्धांत हैं जिससे सभी व्यक्तिगत चेतनाएं उत्पन्न होती हैं और जिसमें वे अंततः लौट आती हैं। वह कई में से 'एक' व्यक्तिगत आत्मा नहीं हैं, बल्कि सभी आत्माओं का मूल आधार हैं।

दार्शनिक निहितार्थ (Philosophical Implication) कालभैरव को नैकात्मा के रूप में नमन करके, कोई यह स्वीकार करता है कि व्यक्तिगत प्राणियों के बीच सभी स्पष्ट भेद वास्तविकता के उच्चतम स्तर पर अंततः मायावी (माया) हैं। जीवन के सभी रूपों को जोड़ने वाला अंतर्निहित सार एक

अप्रकट सर्वोच्च वास्तविकता है, जो प्रत्येक व्यक्तिगत चेतना को उस अद्वितीय दिव्य आत्मा की एक अस्थायी, स्थानीयकृत अभिव्यक्ति बनाता है।

352. नैकाकर्मकृते

असंख्य और विविध कर्मों के कर्ता को नमन।

विस्तार : नैककर्मकृते नाम "नैक," "कर्म," और "कृते" का एक यौगिक है, जो कालभैरव की ब्रह्मांडीय गतिविधि के गहन और बहुआयामी स्वरूप को व्यक्त करता है।

• नैक (Naika): इस शब्द का अर्थ है "एक नहीं," जिसका अर्थ है "अनेक," "अनगिनत," या "विविध।" यह दायरे और विविधता में असीमता को दर्शाता है। • कर्म (Karma): यहाँ, "कर्म" का तात्पर्य कार्यों, कृत्यों या गतिविधियों से है, विशेष रूप से ब्रह्मांडीय अर्थ में - सृष्टि, संरक्षण, विनाश की प्रक्रियाएँ, और ब्रह्मांड के सभी मध्यवर्ती कार्य। • कृते (Kṛite): यह "कृ" धातु से लिया गया है, जिसका अर्थ है "करना" या "निष्पादित करना।" "कृते" विशेष रूप से "कर्ता" या "निष्पादक" को संदर्भित करता है।

असंख्य कर्मों के कर्ता नैककर्मकृते के रूप में, कालभैरव ब्रह्मांड के असंख्य कार्यों और परिचालनों के पीछे परम कर्ता हैं। यह सृष्टि और विलय के मैक्रोकोस्मिक पैमाने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि प्रत्येक घटना, प्रत्येक गति, प्रत्येक परिवर्तन और अस्तित्व में होने वाली प्रत्येक बातचीत तक फैला हुआ है। वह आदि प्रेरक और परम संयोजक हैं।

दिव्य इच्छा और ब्रह्मांडीय लीला यह नाम इस अवधारणा को रेखांकित करता है कि सभी कार्य, चाहे वे सामान्य प्रतीत हों या अत्यंत महत्वपूर्ण, कालभैरव की दिव्य इच्छा से उत्पन्न होते हैं और अंततः उसी के द्वारा शासित होते हैं। उनके "कार्य" मानवीय कार्यों की तरह इच्छा या परिणाम से प्रेरित नहीं होते हैं; बल्कि, वे परम सत्ता की सहज, सहज और परिपूर्ण लीला हैं।

कर्म और अकर्म की द्वैतता से परे एक उच्च दार्शनिक अर्थ में, जबकि वह असंख्य कर्मों के कर्ता हैं, वह उनसे हमेशा अनासक्त और निर्लिप्त रहते हैं, ठीक वैसे ही जैसे आकाश उससे गुजरने वाले बादलों से अछूता रहता है। यह अद्वैतवादी दृष्टिकोण को दर्शाता है कि परम सत्य एक साथ सभी घटनाओं के पीछे सक्रिय सिद्धांत है और उनसे पूरी तरह से परे है। उनकी गतिविधि असीम है, फिर भी उनका सार स्थिर और अपरिवर्तनीय है।

सभी अभिव्यक्तियों का स्रोत प्रत्येक अभिव्यक्ति, प्रत्येक घटना, जीवन और मृत्यु का प्रत्येक चक्र, प्रत्येक ब्रह्मांडीय नृत्य - ये सभी नैककर्मकृते के "कार्य" हैं। यह उपाधि उनकी सर्वव्यापकता और उस गतिशील शक्ति के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देती है जो पूरे ब्रह्मांड को चलाती है, उसके निरंतर प्रकटीकरण और अंततः पुन: अवशोषण को सुनिश्चित करती है।

353. नागरेतसे

जिनके बीज पर्वत हैं, या जो काशी नगरी में निवास करते हैं, उनको नमन।

विस्तार : नागरेतेश (Nāgareteśa) नाम नागर और ईश का एक यौगिक है, जो एक दोहरा और गहरा अर्थ प्रस्तुत करता है जो भगवान भैरव को पहाड़ों के भौतिक परिदृश्य और काशी के पूजनीय आध्यात्मिक शहर दोनों से जोड़ता है।

पर्वतों के स्वामी (नागर के रूप में "पर्वत-जन्मा" या "पर्वत निवासी") जबकि "नागर" मुख्य रूप से एक शहर या शहरी निवासी को दर्शाता है, कुछ गूढ़ संदर्भों में और कुछ पारंपरिक व्याख्याओं के साथ, यह सूक्ष्म रूप से पहाड़ों से संबंधित हो सकता है। यह संबंध अक्सर शिव के पर्वतीय निवासों, विशेष रूप से कैलाश पर्वत के साथ उनके प्राचीन जुड़ाव से उत्पन्न होता है। इस व्याख्या में, नागरेतेश उस भगवान (ईश) को संदर्भित करता है जिसका "बीज" या उद्गम पर्वत हैं, या जो पर्वतीय

क्षेत्रों के संप्रभु हैं। हिंदू परंपरा में, पहाड़ों को शक्ति, पवित्रता और गहन ध्यान के स्थान के रूप में देखा जाता है, जो स्थिरता, स्थायी शक्ति और आध्यात्मिक उत्थान का प्रतीक हैं। इन दुर्जेय प्राकृतिक संरचनाओं के भगवान के रूप में, कालभैरव को परम, अटल शक्ति के रूप में चित्रित किया गया है, जो पहाड़ों द्वारा प्रतीक सृजन और संरक्षण की आदिम शक्तियों में गहराई से निहित हैं।

काशी के स्वामी (नागर के रूप में "शहर" या "शहरी निवासी") यहां "नागर" की अधिक प्रत्यक्ष और व्यापक रूप से स्वीकृत व्याख्या "शहर" या "एक शहर से संबंधित" है। ईश का अर्थ है भगवान। इस प्रकार, नागरेतेश का अर्थ है "शहर के भगवान"। यह तुरंत और दृढ़ता से कालभैरव को वाराणसी, जिसे काशी भी कहा जाता है, से जोड़ता है। काशी केवल एक शहर नहीं है; इसे शिव की आध्यात्मिक राजधानी, ब्रह्मांड का एक सूक्ष्म जगत माना जाता है, जहां इसके परिसर में मृत्यु को मुक्ति (मोक्ष) प्रदान करने वाला माना जाता है। कालभैरव प्रसिद्ध रूप से काशी के "कोतवाल" या नगर रक्षक हैं। वह काल का दंड (दंडपाणि) धारण करते हैं और काशी से गुजरने वाली सभी आत्माओं का न्याय करते हैं, जिसमें स्वयं शिव भी शामिल हैं, उन्हें मुक्ति प्रदान करने से पहले। वह परम अधिकारी हैं, जो इस पवित्र निवास के भीतर आध्यात्मिक अनुशासन और ब्रह्मांडीय व्यवस्था सुनिश्चित करते हैं। काशी में उनका निवास एक लौकिक शक्ति के रूप में उनकी सर्वव्यापकता और मानव आध्यात्मिक प्रयासों के संरक्षक के रूप में उनकी स्थानीयकृत, मूर्त उपस्थिति को रेखांकित करता है।

दोहरा महत्व इस नाम की गहनता इसके दोहरे संबंध में निहित है: पहला, पहाड़ों द्वारा प्रतीकित सार्वभौमिक, आदिम शक्ति से, और दूसरा, काशी के पवित्र शहर पर विशिष्ट, अत्यधिक स्थानीयकृत आध्यात्मिक अधिकार और संरक्षकता से। यह एक लौकिक शक्ति के रूप में कालभैरव की सर्वव्यापकता और मानव आध्यात्मिक प्रयासों के संरक्षक के रूप में उनकी स्थानीयकृत, मूर्त उपस्थिति को रेखांकित करता है।

354. नखिने

तीखे पंजों अथवा नखों से युक्त (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : नखिने (Nakhiṇe) नाम संस्कृत शब्द 'नख' से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'नाखून' या 'पंजा', और प्रत्यय 'इने' स्वामित्व या 'से युक्त' को इंगित करता है। इस प्रकार, नखिने का शाब्दिक अर्थ है "वह जिसके पास (तेज) नाखून या पंजे हैं"।

पंजों/नाखूनों का प्रतीकवाद देवताओं और विशेष रूप से भैरव जैसे दुर्जेय रूपों के संदर्भ में, नाखून और पंजे केवल शारीरिक गुण नहीं हैं, बल्कि शक्ति, क्रूरता और विनाशकारी क्षमता के शक्तिशाली प्रतीक हैं।

विनाशकारी शक्ति: तेज पंजे भैरव की बुराई, बाधाओं और अपने भक्तों के अहंकार को चीरने और नष्ट करने की क्षमता का प्रतीक हैं। वे एक आदिम, अनियंत्रित शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं जो किसी भी प्रकार के भ्रम या नकारात्मकता को भेद सकती है और उसे नष्ट कर सकती है। यह एक ऐसी विशेषता है जो अक्सर उग्र देवताओं से जुड़ी होती है, जहाँ उनके शारीरिक गुण सीधे उनके ब्रह्मांडीय कार्यों को दर्शाते हैं।

भयंकर सुरक्षा: पंजे सुरक्षा का भी संकेत देते हैं। जैसे एक जानवर अपने और अपने बच्चों की रक्षा के लिए अपने पंजों का उपयोग करता है, वैसे ही भैरव अपने तेज गुणों का उपयोग अपने भक्तों को आंतरिक (जैसे अज्ञानता, इच्छा और क्रोध) और बाहरी (राक्षसी संस्थाएँ, नकारात्मक ऊर्जाएँ) दोनों तरह की दुर्भावनापूर्ण शक्तियों से बचाने के लिए करते हैं। उनकी शक्ति ब्रह्मांड में और व्यक्ति के भीतर अराजकता और अधर्म की शक्तियों से निपटने में निर्णायक और अटूट है।

अतींद्रिय प्रकृति: इस भयंकर कल्पना का उद्देश्य भक्तों को दिव्य की अतींद्रिय प्रकृति के प्रति जागृत करना है, जो सुंदरता या कोमलता की पारंपरिक मानवीय समझ से परे तरीकों से प्रकट हो सकती है। तेज पंजे हमें याद दिलाते हैं कि दिव्य शक्ति ब्रह्मांड में और व्यक्ति के भीतर अराजकता और अधर्म की शक्तियों से निपटने में दुर्जेय और समझौताहीन हो सकती है।

रुद्र के साथ संबंध: यह गुण भैरव को प्राचीन वैदिक देवता रुद्र से जोड़ता है, जिन्हें अक्सर जंगली, भयंकर और दुर्जेय हथियारों या विनाश के प्राकृतिक साधनों से युक्त चित्रित किया जाता है। पंजों की कल्पना शिव के एक आदिम, अनियंत्रित पहलू के रूप में भैरव की भूमिका पर और जोर देती है।

355. नन्दीने

जो आनंद लाते हैं और पवित्र बैल नंदी हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : नंदी नाम भगवान शिव से संबंधित दो महत्वपूर्ण पहलुओं को संदर्भित करता है: आनंद या प्रसन्नता का गुण, और पवित्र बैल जो शिव के प्राथमिक वाहन (माउंट) और मुख्य परिचर के रूप में कार्य करता है।

आनंद और प्रसन्नता का प्रतीक संस्कृत मूल "नंद" आनंद, खुशी और समृद्धि को दर्शाता है। इस अर्थ में, नंदी उस एक को संदर्भित करता है जो परम आनंद (आनंद) का स्रोत और प्रतीक है। भैरव के एक रूप के रूप में, जो स्वयं शिव हैं, वह उस परम आध्यात्मिक आनंद का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सांसारिक सुखों से परे है। नंदी भैरव की कृपा प्राप्त करने से यह दिव्य आनंद प्राप्त होता है, जो भक्त को शांति और संतोष प्रदान करता है। यह पहलू इस विचार को रेखांकित करता है कि भैरव, अपने भयंकर बाहरी रूप के बावजूद, अंततः एक परोपकारी देवता हैं जिनकी उपस्थिति आध्यात्मिक पूर्ति लाती है।

नंदी, पवित्र बैल अधिक सामान्यतः, नंदी पवित्र बैल को संदर्भित करता है, जो भगवान शिव का दिव्य द्वारपाल और सदा समर्पित परिचर है। नंदी की कथा प्रतीकवाद से भरपूर है:

• भक्ति और निष्ठा: नंदी अटूट भक्ति और निष्ठा का प्रतीक है। वह लगातार शिव के सामने रहता है, सेवा करने के लिए हमेशा तैयार रहता है, जो दिव्य पर एक आदर्श भक्त के अटूट ध्यान का प्रतीक है। • धर्म और शक्ति: एक बैल के रूप में, नंदी शक्ति, पौरुष और धर्म (धार्मिकता) के प्रतीक का प्रतिनिधित्व करता है। उसकी दृढ़ स्थिति स्थिरता और दिव्य कानून के पालन का प्रतीक है। • ज्ञान और विद्या: नंदी को एक महान योगी और विद्वान भी माना जाता है, जिन्होंने सीधे शिव से आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया है। उन्हें अक्सर शिव मंदिरों के बाहर बैठे हुए दर्शाया जाता है, जिसका अर्थ है कि दिव्य तक पहुंचने के लिए व्यक्ति में भक्ति, आंतरिक शक्ति और ज्ञान के गुण होने चाहिए।

इस प्रकार, कालभैरव को नंदी के रूप में संबोधित करना उनके दोहरे स्वरूप को दर्शाता है: गहन आध्यात्मिक आनंद के दाता और शक्तिशाली, समर्पित संरक्षक जो धार्मिकता और सर्वोच्च के प्रति अटूट निष्ठा का प्रतीक हैं।

356. आनंदवनवर्धनाय

आनंदवन (काशी) के आनंद को बढ़ाने वाले (भगवान कालभैरव) को नमन।

विस्तार : आनन्दवनवर्धनय कालभैरव के लिए एक गहरा विशेषण है, जो उन्हें पवित्र शहर काशी (वाराणसी) और मुक्ति तथा आनंद की अवधारणा से जटिल रूप से जोड़ता है। इस नाम को तीन मुख्य घटकों में तोड़ा जा सकता है: आनंद, वन और वर्धन।

आनंद (परमानंद/हर्ष) आनंद पूर्ण परमानंद, हर्ष और आध्यात्मिक सुख को दर्शाता है। हिंदू दर्शन के संदर्भ में, यह परम शांति और संतोष की स्थिति को संदर्भित करता है जो सांसारिक सुखों और दुखों से परे है। इसे अक्सर दिव्य और सच्ची आध्यात्मिक मुक्ति की प्राप्ति के साथ जोड़ा जाता है।

वन (जंगल/उपवन) जबकि "वन" का शाब्दिक अर्थ "जंगल" या "उपवन" है, इस विशिष्ट संदर्भ में, यह प्रतीकात्मक रूप से काशी, पवित्र शहर को संदर्भित करता है। काशी को पारंपरिक रूप से आनंद वन (आनंद का जंगल) या आनंद कानन (आनंद का उपवन) के रूप में जाना जाता है। वाराणसी के लिए यह प्राचीन नाम मुक्ति के जंगल के रूप में इसके आध्यात्मिक महत्व को रेखांकित करता है, एक ऐसा स्थान जहाँ व्यक्ति गहन आध्यात्मिक आनंद और जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। यह आध्यात्मिक साधकों के लिए एक अभयारण्य का प्रतीक है, जो ज्ञान, भक्ति और दिव्य उपस्थिति से भरा है।

वर्धन (बढ़ाने वाला/संवर्धक) वर्धन का अर्थ है "वह जो बढ़ाता है," "बढ़ावा देता है," "पोषण करता है," या "संवर्धन करता है।" यह किसी चीज को बढ़ाने या बढ़ावा देने में एक गतिशील और सक्रिय भूमिका का तात्पर्य है।

काशी में आनंद का संवर्धक जब इन घटकों को एक साथ लाया जाता है, तो आनन्दवनवर्धनय कालभैरव को उस रूप में वर्णित करता है जो पवित्र "आनंद के जंगल," जो कि काशी है, के भीतर आनंद को बढ़ाता, संवर्धित करता और बढ़ावा देता है। यह विशेषण कालभैरव की भूमिका के कई प्रमुख पहलुओं पर प्रकाश डालता है:

• काशी के अधिष्ठाता देवता और संरक्षक: कालभैरव काशी के कोतवाल (मुख्य पुलिस अधिकारी या संरक्षक) हैं। उन्हें शहर और उसकी आध्यात्मिक पवित्रता की रक्षा करने वाला माना जाता है। संरक्षक के रूप में, वह यह सुनिश्चित करते हैं कि आध्यात्मिक वातावरण, जो आनंद प्राप्त करने के लिए अनुकूल है, बना रहे और यहां तक कि बढ़ाया भी जाए।

• मुक्ति के दाता: काशी को एक ऐसे स्थान के रूप में पूजा जाता है जहाँ मृत्यु सीधे मोक्ष (मुक्ति) की ओर ले जाती है। "मुक्ति के जंगल के आनंद" को बढ़ाकर, कालभैरव काशी में रहने वाले या मरने वाले लोगों की आध्यात्मिक प्रगति और अंतिम मुक्ति को सीधे सुगम बनाते हैं। वह आध्यात्मिक स्पंदनों और स्थितियों को तीव्र करते हैं जो इस परम आनंद की ओर ले जाती हैं।

• कर्म का शुद्धिकर्ता: काल भैरव के रूप में, काल और मृत्यु के स्वामी, वह कर्म के बंधनों को काटने के लिए जिम्मेदार हैं। काशी में, यह भूमिका विशेष रूप से शक्तिशाली है। भक्तों के कर्मों के बोझ को शुद्ध करके, वह उन्हें आध्यात्मिक स्वतंत्रता के सच्चे आनंद का अनुभव करने में सक्षम बनाते हैं, जिससे शहर के आध्यात्मिक वातावरण में निहित "आनंद को बढ़ाते हैं।"

• आध्यात्मिक पोषक: "वर्धन" शब्द एक पोषण करने वाले गुण का भी सुझाव देता है। कालभैरव काशी में भक्तों की आध्यात्मिक आकांक्षाओं और अनुभवों का पोषण करते हैं, जिससे उन्हें दिव्य आनंद की अपनी समझ और प्राप्ति में बढ़ने में मदद मिलती है।

इस प्रकार, आनन्दवनवर्धनय कालभैरव को केवल एक भयंकर रक्षक के रूप में नहीं, बल्कि एक परोपकारी शक्ति के रूप में चित्रित करता है जो पवित्र शहर काशी द्वारा प्रदान किए गए आध्यात्मिक आनंद और अंतिम मुक्ति को सक्रिय रूप से विकसित और मजबूत करता है।

357. योगाय

दिव्य मिलन और आध्यात्मिक अनुशासन के साक्षात् स्वरूप को नमन।

विस्तार : योग (योगाय) नाम गहन आध्यात्मिक अनुशासन, दार्शनिक प्रणाली और मिलन की अंतिम अवस्था को संदर्भित करता है जो हिंदू विचार और शिव के स्वभाव के केंद्र में है।

दिव्य मिलन का प्रतीक अपने उच्चतम दार्शनिक स्तर पर, योग का अर्थ है "जुड़ना" या "एक होना"। यहाँ, यह व्यक्तिगत आत्मा (जीवात्मा) का सार्वभौमिक आत्मा (परमात्मा) या दिव्य के साथ मिलन दर्शाता है। शिव स्वयं परम योगी हैं, सभी योगियों के स्वामी (योगेश्वर) हैं, और वे हैं जो अद्वैत और एकात्मता की इस पूर्ण अवस्था का प्रतीक हैं। वे योग का अंतिम लक्ष्य हैं, उस अवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं जहाँ सभी द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं और शुद्ध चेतना प्रबल होती है।

आध्यात्मिक अनुशासन और अभ्यास योग विभिन्न अभ्यासों और अनुशासनों को भी संदर्भित करता है जिन्हें इस मिलन को प्राप्त करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इनमें ध्यान (ध्यान), एकाग्रता (धारणा), श्वास नियंत्रण (प्राणायाम), नैतिक संयम (यम), नियम (नियम), और शारीरिक आसन (आसन) शामिल हैं। "योग" के रूप में, कालभैरव इन सभी आध्यात्मिक अभ्यासों के स्रोत और परम शिक्षक हैं। वे आध्यात्मिक उन्नति और मुक्ति के लिए आवश्यक ज्ञान और अनुशासन प्रदान करते हैं।

धर्म और मोक्ष का आधार योग का मार्ग मोक्ष (मुक्ति) और धर्म (धार्मिक जीवन) की ओर ले जाता है। कालभैरव, योग के रूप में, वह अंतर्निहित सिद्धांत हैं जो सभी प्राणियों के आध्यात्मिक प्रयास को नियंत्रित करता है। वे आंतरिक शक्ति हैं जो व्यक्ति को आत्म-साक्षात्कार और शाश्वत सत्य की ओर मार्गदर्शन करती हैं।

इंद्रियों का दमनकर्ता योग में मूल रूप से इंद्रियों और मन को नियंत्रित करना शामिल है। भैरव, योग के अपने रूप में, अशांत मन और इंद्रियों को वश में करने की शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिससे आंतरिक शांति और अटूट एकाग्रता प्राप्त होती है। इसलिए, उन्हें योग के रूप में पूजना अनुशासन, नियंत्रण और इन अभ्यासों के माध्यम से प्राप्त अंतिम आध्यात्मिक स्वतंत्रता का आह्वान है।

358. विरागीने

जो पूर्णतः वैरागी और समस्त आसक्तियों से मुक्त हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : विरागिने (विरागी) नाम संस्कृत शब्द "विराग" से लिया गया है, जिसका अर्थ है वैराग्य, अनासक्ति, इच्छा का अभाव और सांसारिक आसक्तियों से मुक्ति।

इच्छा का अतिक्रमण "राग" का अर्थ है आसक्ति, इच्छा या रंग। "वि" एक उपसर्ग है जो अभाव या विपरीत को दर्शाता है। इसलिए, "विराग" का शाब्दिक अर्थ है आसक्ति या इच्छा का अभाव। विरागिने के रूप में, भगवान भैरव पूर्ण वैराग्य की अंतिम स्थिति का प्रतीक हैं, जो भौतिक संसार की द्वंद्वों और उलझनों से अछूते रहते हैं। यह स्थिति उदासीनता या उपेक्षा की नहीं है, बल्कि सभी घटनाओं की क्षणभंगुर प्रकृति की गहरी समझ है, जो एक आंतरिक स्वतंत्रता की ओर ले जाती है जो सभी लालसा और घृणा से परे है।

आसक्ति से मुक्ति वह परम योगी का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनकी चेतना लगातार स्वयं में केंद्रित रहती है, कर्म, सुख, दुख, लाभ और हानि के बंधनकारी बलों से पूरी तरह से मुक्त है। यह अनासक्ति उनकी अपार शक्ति और ब्रह्मांडीय सृष्टि, संरक्षण और संहार के बीच उनकी अडिग शांति का स्रोत है। उनके कार्य व्यक्तिगत इच्छा से नहीं, बल्कि ब्रह्मांडीय नियम और दिव्य इच्छा से प्रेरित होते हैं।

मुक्ति का मार्ग भक्तों के लिए, भैरव को विरागिने के रूप में ध्यान करना "वैराग्य" (अनासक्ति) को एक आध्यात्मिक अनुशासन के रूप में विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह एक अनुस्मारक है कि सच्ची आध्यात्मिक प्रगति के लिए अक्सर सांसारिक सुखों के भ्रम को छोड़ना और सभी भौतिक संपत्ति और संबंधों की क्षणभंगुरता को पहचानना आवश्यक होता है। इस गुण को अपनाकर, एक साधक संसार के चक्र से आगे बढ़ सकता है और मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

पवित्रता और गैर-प्रतिक्रिया यह गुण पूर्ण पवित्रता की स्थिति का भी अर्थ है, जहाँ मन बाहरी परिस्थितियों से दूषित या प्रभावित नहीं होता है। उनका वैराग्य उन्हें सर्वोच्च दंड देने वाले और धर्म के संरक्षक के रूप में अविचलित और पूरी तरह से न्यायपूर्ण रहने की अनुमति देता है, जो व्यक्तिगत पूर्वाग्रह या भावनात्मक उलझाव के बिना कार्य करते हैं।

359. वैरागिने

परम वैरागी, गहन वैराग्य से परिपूर्ण (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : वैरागिणे (वैरागी) नाम उस व्यक्ति को दर्शाता है जो वैराग्य, यानी गहन और तीव्र अनासक्ति, विरक्ति और त्याग को धारण करता है। यह नाम भगवान शिव के संदर्भ में विशेष रूप से शक्तिशाली है, जो आदि तपस्वी (योगी) और परम त्यागी हैं।

वैराग्य का सार वैराग्य केवल उदासीनता नहीं है, बल्कि सांसारिक वस्तुओं, रिश्तों और उपलब्धियों की क्षणभंगुर और अंततः असंतोषजनक प्रकृति की गहरी समझ है। यह इच्छा की वस्तुओं (राग) से आसक्ति से मुक्त होने की अवस्था है, जो आंतरिक मुक्ति और शांति की ओर ले जाती है। इसमें भौतिक pursuits से आध्यात्मिक प्राप्ति की ओर सचेत रूप से मुड़ना शामिल है।

भगवान शिव परम तपस्वी के रूप में हिंदू धर्मग्रंथों में भगवान शिव को लगातार महायोगी और प्रमुख वैरागी के रूप में चित्रित किया गया है। वे श्मशान घाट (श्मशान) में रहते हैं, राख से सने हुए, न्यूनतम वस्त्र (अक्सर केवल बाघ की खाल) पहने हुए, और गहन ध्यान में लीन रहते हैं। ये प्रतिष्ठित चित्रण गरीबी के बारे में नहीं हैं, बल्कि सभी सांसारिक परंपराओं, सुख-सुविधाओं और सामाजिक मानदंडों से उनकी पूर्ण अनासक्ति के बारे में हैं।

इच्छा और भौतिकता से मुक्ति वैरागी के रूप में, शिव यह दर्शाते हैं कि सच्ची शक्ति और आनंद भौतिक चीजों के संचय या उपभोग में नहीं है, बल्कि स्वयं को उनके खिंचाव से मुक्त करने में है। वे गहरे ध्यान में बैठते हैं, इच्छाओं, विलासिता, या यहां तक कि मृत्यु के भय की उपस्थिति से अप्रभावित रहते हैं, जो सभी उनकी अनासक्त जागरूकता से परे हैं।

मुक्ति का मार्ग भक्तों के लिए, शिव को वैरागी के रूप में देखना आध्यात्मिक अनुशासन के लिए एक प्रेरणा का काम करता है। यह दुनिया के क्षणभंगुर सुखों और दुखों से अनासक्ति विकसित करने को प्रोत्साहित करता है, आत्म-साक्षात्कार और अंतिम मुक्ति (मोक्ष) के लिए अनुकूल मानसिकता को बढ़ावा देता है। उनका त्याग निराशा में दुनिया को छोड़ने के बारे में नहीं है, बल्कि स्वयं के असीम आनंद का अनुभव करने के लिए इसकी सीमाओं को पार करने के बारे में है।

360. त्यागिने

उन परम त्यागी को नमन, जिन्होंने सब कुछ त्याग दिया है।

विस्तार : त्यागी (त्यागिने, चतुर्थी विभक्ति में) नाम संस्कृत धातु 'त्यज्' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "त्यागना, छोड़ना, परित्याग करना।" भगवान शिव के एक स्वरूप, काल भैरव पर लागू होने पर, यह त्याग की परम अवस्था को दर्शाता है।

परम त्यागी यह गुण शिव के प्रतिष्ठित तपस्वी पहलू को उजागर करता है। त्यागी होने का अर्थ है जिसने सभी सांसारिक संपत्ति, इच्छाओं, आसक्तियों और यहां तक कि कर्मों के फलों का भी पूरी तरह से त्याग कर दिया है। यह भौतिक संसार और उसके क्षणभंगुर सुखों और दुखों से पूर्ण वैराग्य की स्थिति को दर्शाता है। भैरव के लिए, यह केवल एक अभ्यास नहीं बल्कि उनका अंतर्निहित स्वभाव है। वे अस्तित्व की सभी द्वैतताओं और सीमाओं से परे हैं।

अपरिग्रह के स्वामी काल भैरव, एक परम त्यागी के रूप में, कुछ भी नहीं रखते। वे स्वामित्व या पहचान की आवश्यकता के बोझ से मुक्त होकर स्वतंत्र रूप से विचरण करते हैं। यह अवस्था पूर्ण स्वतंत्रता का प्रतीक है - "मेरा" के भ्रम से मुक्ति, इच्छा से प्रेरित कर्म के चक्र से मुक्ति, और शरीर तथा मन के साथ पहचान से मुक्ति। यह वैराग्य उन्हें विनाश करने वाला बनने में सशक्त बनाता है, क्योंकि उन्हें उस चीज़ से कोई लगाव नहीं है जिसे वे नष्ट करते हैं, इसे ब्रह्मांडीय लीला का एक हिस्सा मानते हुए।

मोक्ष का मार्ग भक्तों के लिए, काल भैरव को त्यागी के रूप में contemplat करना वैराग्य (विरक्ति) का अभ्यास करने और अहंकार तथा कर्मों के फलों का त्याग करने के लिए प्रोत्साहित करता है, जिससे मोक्ष (मुक्ति) प्राप्त होती है। उनका त्याग एक प्रेरणा है कि सच्ची शक्ति और शांति संचय से नहीं बल्कि त्याग से आती है। यह दर्शाता है कि अंतिम मुक्ति केवल व्यक्तिगत स्व (जीव) के सार्वभौमिक स्व (ब्रह्म) में परम त्याग के माध्यम से ही प्राप्त होती है।

361. गौरीवरंगणाय

उन शिव को नमन जिनकी प्रिय पत्नी सुंदर गौरी (पार्वती) हैं।

विस्तार : गौरीवराङ्गनाय नाम गौरी, वर और अङ्गना से बना एक यौगिक पद है, और यह भगवान शिव के प्रतिष्ठित और दार्शनिक महत्व के एक महत्वपूर्ण पहलू पर प्रकाश डालता है, क्योंकि यह उनकी दिव्य पत्नी, पार्वती से संबंधित है।

गौरी: गौरी देवी पार्वती के कई नामों में से एक है, जो भगवान शिव की दिव्य पत्नी हैं। गौरी नाम का शाब्दिक अर्थ "गोरा," "तेजस्वी," या "सुनहरे रंग का" है। यह पवित्रता, चमक और ज्ञान का भी प्रतीक हो सकता है। व्यापक अर्थ में, गौरी प्रकृति का प्रतिनिधित्व करती है, जो आदिम रचनात्मक ऊर्जा, पदार्थ और प्रकट ब्रह्मांड है, जबकि शिव पुरुष का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो ब्रह्मांडीय चेतना, आत्मा और अप्रकट सिद्धांत हैं।

वर: वर के कई अर्थ हैं, जिनमें "सर्वश्रेष्ठ," "उत्कृष्ट," "वरदान," "आशीर्वाद," या "सबसे पसंदीदा" शामिल हैं। इस संदर्भ में, यह पत्नी की सर्वोच्च स्थिति और सुंदरता पर जोर देने वाले विशेषण के रूप में कार्य करता है।

अङ्गना: अङ्गना का अर्थ "स्त्री," "पत्नी," या "प्रिय पत्नी" है। यह एक मजबूत संबंध को दर्शाता है, अक्सर प्रेम और साझेदारी का।

शुभता और सौंदर्य की पत्नी जब संयुक्त किया जाता है, तो गौरीवराङ्गना का अर्थ है "जिसकी सबसे पसंदीदा, सुंदर पत्नी गौरी है।" यह नाम भगवान शिव की पहचान को गौरी के पति के रूप में जोर देता है, जो पवित्रता, सौंदर्य और शुभता का अवतार है। यह दिव्य मिलन की पूर्ण-कुंभ (पूर्ण घड़ा) अवधारणा को रेखांकित करता है, जहाँ पुरुष और स्त्री सिद्धांत पूरी तरह से आपस में जुड़े और एक-दूसरे पर निर्भर हैं। भगवान शिव, हालांकि अक्सर एक तपस्वी (योगी) के रूप में चित्रित किए जाते हैं, पार्वती के साथ संयुक्त होने पर आदर्श गृहस्थ भी होते हैं।

दिव्य मिलन और सृजन का प्रतीक यह विशेषण दिव्य के गतिशील पहलू को दर्शाता है। शिव अकेले पारलौकिक और स्थिर चेतना (पुरुष) हैं, लेकिन गौरी (प्रकृति) के साथ, वह निर्माता, संरक्षक और संहारक बन जाते हैं। गौरी उनकी शक्ति, उनकी दिव्य शक्ति और ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करती है, जिसके बिना वह प्रकट या कार्य नहीं कर सकते। उनका मिलन सृजन और विघटन के ब्रह्मांडीय नृत्य, चेतना और ऊर्जा के परस्पर क्रिया, और मर्दाना और स्त्री सिद्धांतों के पूर्ण संतुलन का प्रतीक है।

परोपकारी पहलू जबकि भैरव अक्सर भयंकर होते हैं, गौरी के साथ उनका जुड़ाव उनके परोपकारी और दयालु पक्ष को उजागर करता है। गौरी की उपस्थिति उनके भयानक पहलुओं को नरम करती है और समृद्धि, अनुग्रह और सद्भाव के दाता के रूप में उनकी भूमिका को सामने लाती है। यह इंगित करता है कि रुद्र का सबसे भयंकर प्रकटीकरण भी अंततः अपनी प्रिय पत्नी के माध्यम से सभी शुभता और सौंदर्य के स्रोत से जुड़ा हुआ है।

362. कम्बुकण्ठाय

शंख के आकार की सुंदर गर्दन वाले को नमन, जिसमें तीन रेखाएँ हैं।

विस्तार : कम्बुकण्ठाय नाम संस्कृत शब्दों 'कम्बु' और 'कण्ठ' से लिया गया है।

कम्बु: इस शब्द का शाब्दिक अर्थ "शंख" या "सीप" है। प्रतिमा विज्ञान और काव्यात्मक वर्णनों में, यह सुंदरता और शुभता के विशिष्ट अर्थ रखता है। शंख के समान गर्दन, विशेष रूप से तीन रेखाओं वाली, महान सुंदरता और दिव्य पूर्णता का प्रतीक मानी जाती है।

कण्ठ: इसका सीधा सा अर्थ "गर्दन" या "गला" है।

तीन रेखाओं वाली शुभ गर्दन (त्रिवली) शास्त्रीय भारतीय सौंदर्यशास्त्र और प्रतिमा विज्ञान में, विशेष रूप से दिव्य प्राणियों और सिद्ध पुरुषों (जैसे बुद्ध और चक्रवर्ती) के वर्णनों में, तीन विशिष्ट परतों या रेखाओं (जिसे त्रिवली के नाम से जाना जाता है) वाली गर्दन को सर्वोच्च सुंदरता, शुभता और आध्यात्मिक उपलब्धि का एक प्रमुख शारीरिक चिह्न (लक्षण) माना जाता है। इन तीन रेखाओं को अक्सर तीन गुणों (सत्व, रजस, तमस) या तीन कालों (भूत, वर्तमान, भविष्य) से जोड़ा जाता है, जो अस्तित्व के इन पहलुओं पर दिव्य प्रभुत्व का प्रतीक है।

शंख का प्रतीकवाद शंख स्वयं हिंदू धर्म में गहरा प्रतीकात्मक महत्व रखता है: • सृष्टि की ध्वनि: शंखनाद सृष्टि और आदिम ध्वनि (ॐ) से जुड़ा है। • पवित्रता और शुभता: यह पवित्रता, समृद्धि और विजय का प्रतीक है, जिसे अक्सर देवता धारण करते हैं। • अनुनाद: शंख का सर्पिल रूप ब्रह्मांडीय अनुनाद और दिव्य व्यवस्था से जुड़ा है।

दिव्य वाणी शक्ति ऐसी गर्दन का होना न केवल शारीरिक पूर्णता को दर्शाता है, बल्कि सर्वोच्च वाणी शक्ति और पवित्र ध्वनियों, मंत्रों और शिक्षाओं को व्यक्त करने की क्षमता को भी दर्शाता है जो ब्रह्मांडीय सत्य के साथ प्रतिध्वनित होती हैं। इसका तात्पर्य है कि कालभैरव के उच्चारण गहन, अनुनादी हैं, और उनमें सृष्टि, पालन या संहार करने की शक्ति है।

शिव के प्रतिमा विज्ञान से संबंध यह वर्णन भगवान शिव के लिए भी सामान्य है, जिनका गला हलाहल विष का सेवन करने के बाद नीला हो गया था जब उन्होंने ब्रह्मांड को बचाने के लिए समुद्र मंथन के दौरान विष पिया था। जबकि कम्बुकण्ठ सीधे नीलकण्ठ (नीले गले) का उल्लेख नहीं करता है, यह शिव के शारीरिक स्वरूप के एक समान रूप से गहन पहलू को इंगित करता है, जो दिव्य कृपा और पूर्णता को दर्शाता है। कालभैरव के लिए, जो शिव का एक अवतार हैं, यह विशेषता उनके दिव्य विरासत और परम शुभता को रेखांकित करती है, भले ही वे अपने भयंकर रूप में हों।

363. गृहस्थाय

जो संसार में रहते हुए भी अनासक्त हैं, ऐसे आदर्श गृहस्थ को नमन।

विस्तार : गृहस्थाय नाम भगवान को एक आदर्श गृहस्थ के रूप में संदर्भित करता है, यह शब्द संस्कृत के "गृह" (घर, निवास) और "स्थ" (स्थित, रहने वाला) से निकला है।

गृहस्थ आश्रम पारंपरिक वैदिक प्रणाली में, गृहस्थ जीवन के चार आश्रमों (चरणों) में से दूसरा है, जो ब्रह्मचर्य (छात्र जीवन) के बाद आता है और वानप्रस्थ (वनवासी) और संन्यास (त्याग) से पहले आता है। एक गृहस्थ एक विवाहित व्यक्ति होता है जो पारिवारिक जीवन जीता है, बच्चों का पालन-पोषण

करता है, अपने घर का रखरखाव करता है, और परिवार तथा समुदाय के दायरे में सामाजिक और आध्यात्मिक कर्तव्यों को पूरा करता है।

आदर्श गृहस्थ के रूप में शिव भगवान शिव, गृहस्थ के रूप में, आदर्श गृहस्थ का प्रतीक हैं। यद्यपि उन्हें अक्सर भस्म लगाए हुए और श्मशान घाटों में रहने वाले एक तपस्वी के रूप में चित्रित किया जाता है, वे पार्वती के पति और कार्तिकेय तथा गणेश के पिता के रूप में भी जीवंत रूप से उपस्थित हैं। यह द्वंद्व उनके आदर्श गृहस्थ के रूप में प्रकट होने का केंद्र बिंदु है:

• संलग्न फिर भी अनासक्त: वे पारिवारिक जीवन की जिम्मेदारियों और खुशियों में पूरी तरह से संलग्न रहते हैं, स्नेह, सुरक्षा और पोषण का प्रदर्शन करते हैं। फिर भी, वे एक आंतरिक अनासक्ति बनाए रखते हैं, जो संसार में रहते हुए भी उससे अलग रहने की स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है। उनका तपस्वी स्वभाव त्यागा नहीं जाता बल्कि उनके गृहस्थ अस्तित्व में एकीकृत होता है, यह दर्शाता है कि मोक्ष (मुक्ति) सांसारिक कर्तव्यों के बीच भी प्राप्त किया जा सकता है।

• धर्म और कर्तव्य: गृहस्थ के रूप में शिव धर्म (धार्मिक कर्तव्य) के पालन का उदाहरण देते हैं। वे अपने व्यक्तिगत जीवन में भी ब्रह्मांडीय व्यवस्था (ऋत) को बनाए रखते हैं, यह सिखाते हैं कि कोई भी सभी सांसारिक कर्तव्यों - आजीविका कमाना, परिवार का पालन-पोषण करना, समाज में योगदान करना - को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से और कर्मों के फल से अनासक्ति के साथ कर सकता है।

• विरोधों का संतुलन: शिव का यह पहलू विरोधाभासी गुणों को एकीकृत करने की उनकी क्षमता को उजागर करता है: तपस्या और गृहस्थ जीवन, अनासक्ति और प्रेम, विनाश और सृजन। वे सिखाते हैं कि एक संतुलित जीवन में आध्यात्मिक मार्ग और सांसारिक अस्तित्व की जिम्मेदारियों दोनों को अपनाना शामिल है।

• सुरक्षा और पोषण: गृहस्थ के रूप में, वे अपने परिवार के रक्षक और पोषक हैं, प्रतीकात्मक रूप से पूरे ब्रह्मांड की सुरक्षा और पोषण तक विस्तारित होते हैं, जिसे उनका विशाल घर माना जा सकता है।

इस प्रकार, गृहस्थाय भैरव को पारिवारिक और सामाजिक ताने-बाने के भीतर एक उद्देश्यपूर्ण, कर्तव्य-बद्ध, फिर भी आध्यात्मिक रूप से मुक्त जीवन जीने के लिए दिव्य आदर्श के रूप में पूजता है।

364. उग्राय

शत्रुओं के लिए भयंकर, क्रूर और भयानक स्वरूप वाले को नमन।

विस्तार : उग्र (उग्रः) नाम दिव्य के एक दुर्जेय और भयंकर पहलू को दर्शाता है, जो न्याय, सुरक्षा और नकारात्मकता के विनाश की एक शक्तिशाली एजेंसी का प्रतीक है।

भयंकर और क्रूर (Fearsome and Ferocious) उग्र का शाब्दिक अर्थ है "भयंकर," "भयानक," "दुर्जेय," "शक्तिशाली," या "हिंसक।" यह गुण शिव की ब्रह्मांडीय शक्ति को एक ऐसी शक्ति के रूप में उजागर करता है जो धर्मी प्रतिशोध के माध्यम से व्यवस्था बनाए रखती है। यह उन लोगों के प्रति दिव्य क्रोध की अभिव्यक्ति है जो धर्म (धार्मिकता) को खतरा पहुँचाते हैं या निर्दोषों को नुकसान पहुँचाते हैं। यह भयंकरता केवल द्वेष नहीं है, बल्कि ब्रह्मांडीय संतुलन का एक आवश्यक पहलू है, जो बुराई के उन्मूलन और सद्भाव की बहाली सुनिश्चित करता है।

शत्रुओं के लिए भयानक (Terrible to Enemies) यह पहलू उन्हें "शत्रुओं के लिए भयानक" बनाता है, जो न केवल राक्षसी शक्तियों को संदर्भित करता है, बल्कि एक आध्यात्मिक साधक के आंतरिक शत्रुओं को भी संदर्भित करता है: अज्ञान (अविद्या), अहंकार (अहंकार), आसक्ति (राग), घृणा

(द्वेष), और सांसारिक वस्तुओं की इच्छा (अभिनिवेश)। उनकी उग्र रूप इन बाधाओं को दूर करने के लिए आह्वान किया जाता है, जो आध्यात्मिक विकास और मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है।

एक रक्षक (A Protector) भयानक अर्थ के बावजूद, उग्र एक भयंकर रक्षक भी हैं। वह दुष्टों में भय पैदा करते हैं, जिससे सदाचारियों की रक्षा होती है। यह रक्षात्मक पहलू कई शैव परंपराओं में महत्वपूर्ण है, जहाँ कालभैरव को मंदिरों, पवित्र स्थानों और स्वयं भक्तों के संरक्षक के रूप में देखा जाता है। उनका भयंकर स्वभाव भक्तों के लिए एक ढाल है।

द्वैत से परे (Transcending Duality) दार्शनिक रूप से, उग्र रूप द्वैत को पार करने में मदद करता है। "भयानक" "परोपकारी" से अलग नहीं है। दोनों शिव के पहलू हैं, यह दर्शाता है कि सभी अनुभव—सुखद और अप्रिय—अंततः दिव्य की अभिव्यक्तियाँ हैं। उग्र पहलू को गले लगाने से आध्यात्मिक परिपक्वता आ सकती है, जहाँ व्यक्ति अस्तित्व और स्वयं के गहरे पहलुओं का सामना करता है और उन्हें एकीकृत करता है, उन्हें एक बड़े दिव्य नाटक के हिस्से के रूप में देखता है।

365. चण्डाय

जो उग्र, उत्साही और दुष्टता के प्रति क्रोधी हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : चण्डाय नाम संस्कृत मूल 'चण्ड' से लिया गया है, जो तीव्रता और शक्ति से संबंधित कई, आपस में जुड़े अर्थों को व्यक्त करता है।

भयंकर और क्रोधी (बुराई के प्रति) चण्ड की प्राथमिक व्याख्या "भयंकर," "हिंसक," "क्रोधी," या "भयानक" है। कालभैरव के संदर्भ में, यह भयंकरता अंधाधुंध या दुर्भावनापूर्ण नहीं है; बल्कि, यह बुराई, अशुद्धता और उन सभी बाधाओं के प्रति एक केंद्रित और धार्मिक आक्रोश है जो आध्यात्मिक प्रगति या ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बाधित करती हैं। वह उस दिव्य क्रोध का प्रतीक है जो नकारात्मकता, अहंकार, अज्ञानता और राक्षसी शक्तियों को नष्ट करता है। यह क्रोध धर्म और सत्य के प्रति उनकी पूर्ण प्रतिबद्धता की अभिव्यक्ति है।

तीव्र और उत्साही चण्ड का अर्थ "तीव्र," "प्रबल," या "उत्साही" भी है। यह एक अटूट और शक्तिशाली आध्यात्मिक ऊर्जा को इंगित करता है जो उनके कार्यों को संचालित करती है। यह एक दिव्य उत्साह का सुझाव देता है जो धर्मी लोगों की रक्षा करने और दुष्टों को दंडित करने के अपने उद्देश्य में अडिग है। यह जुनून एक ज्वलंत, शुद्ध करने वाली धारा है जो भ्रम को जला देती है और स्पष्टता की ओर ले जाती है। इस प्रकार, वह शक्तिशाली, सक्रिय दिव्य ऊर्जा का प्रतीक है।

अभिभूत करने वाला और अजेय यह शब्द आगे ऐसी चीज़ का वर्णन करता है जो "अत्यधिक गर्म," "हिंसक," या "अभिभूत करने वाली" है। यह कालभैरव की अजेय शक्ति और किसी भी बाधा या विरोधी को दूर करने की उनकी क्षमता को दर्शाता है। उनकी शक्ति निरपेक्ष है और इसे विफल नहीं किया जा सकता है, जो दिव्य न्याय की अदम्य शक्ति और बुराई पर अच्छाई की अंतिम विजय का प्रतीक है।

आध्यात्मिक मुक्ति के लिए द्वैत से परे आध्यात्मिक साधक के लिए, चण्डाय के प्रति समर्पण का अर्थ है आंतरिक राक्षसों और आसक्तियों का विनाश। उनका भयंकर पहलू आमूल-चूल परिवर्तन के लिए एक उत्प्रेरक है, जो सभी झूठी चीज़ों को जला देता है और मुक्ति की ओर ले जाता है। यह भय के बारे में नहीं है, बल्कि उन सभी चीज़ों को आवश्यक रूप से काटने के बारे में है जो आत्मा को बांधती हैं।

366. अखण्डभृते

सम्पूर्ण, अखंड ब्रह्मांड को धारण करने वाले (ईश्वर) को नमन।

विस्तार : अखण्डभृते नाम एक गहन और व्यापक विशेषण है, जो संस्कृत शब्दों अखण्ड और भृत (मूल भृ, "धारण करना," "बनाए रखना," "रखरखाव करना" से) को जोड़ता है।

अखण्ड (Akhaṇḍa): अखंड, अविभाज्य, संपूर्ण, पूर्ण। यह ऐसी किसी चीज़ को दर्शाता है जो पूर्ण, परिपूर्ण और बिना किसी विखंडन या असंतुलन के है। ब्रह्मांडीय अर्थ में, यह सृष्टि की संपूर्णता, असीम ब्रह्मांड और समय व अस्तित्व के अबाधित प्रवाह को संदर्भित करता है।

भृते (Bhṛte): धारण करना, वहन करना, बनाए रखना, सहारा देना। यह संरक्षण और पोषण के मूलभूत कार्य को दर्शाता है। भैरव, इस शब्द से जुड़े हुए, वह आदिम शक्ति हैं जो सभी विद्यमान चीज़ों का भार वहन करते हैं और उनकी निरंतरता सुनिश्चित करते हैं।

अखंड ब्रह्मांड (The Unbroken Cosmos) अखण्डभृते भगवान भैरव को संपूर्ण ब्रह्मांड के परम पालक के रूप में इंगित करता है, जिसे एक अखंड, निरंतर इकाई के रूप में देखा जाता है। यह एक सर्वव्यापी दिव्य उपस्थिति का तात्पर्य है जो ब्रह्मांड की व्यवस्था (ऋत) और संतुलन को लगातार बनाए रखती है। वह यह सुनिश्चित करते हैं कि सृष्टि, संरक्षण और संहार के चक्र बिना किसी बाधा या विचलन के सुचारू रूप से चलें। उनका समर्थन आंशिक नहीं है, बल्कि हर परमाणु और हर आकाशगंगा तक फैला हुआ है, जो सभी घटनाओं को एक अविभाज्य पूर्णता में बांधता है।

अविभाज्य सार (The Indivisible Essence) दार्शनिक रूप से, यह नाम वास्तविकता के अद्वैत स्वरूप की ओर भी संकेत करता है। "अखंड ब्रह्मांड" केवल अलग-अलग हिस्सों का संग्रह नहीं है, बल्कि एक ही, अविभाज्य चेतना की अभिव्यक्ति है। भैरव, अखण्डभृते के रूप में, इस मूलभूत एकता का प्रतीक हैं, जो इस भव्य भ्रम (माया) को एक साथ रखने वाला सार हैं, जिससे यह एक सुसंगत, अखंड वास्तविकता के रूप में प्रकट होता है।

ब्रह्मांडीय स्थिरता और व्यवस्था (Cosmic Stability and Order) संपूर्ण, अखंड ब्रह्मांड को धारण करने वाले के रूप में, भैरव ब्रह्मांडीय स्थिरता का प्रतीक हैं। वह वह आधारशिला हैं जिस पर समस्त अस्तित्व टिका हुआ है, जो इसके अराजकता में विघटन को रोकता है। यह उनकी शक्ति का एक पहलू है जो सुनिश्चित करता है कि प्रकृति के नियम, धर्म और कर्म निरंतर बनाए रखे जाते हैं।

367. अन्तकाय

मृत्यु और सभी वस्तुओं के अंत के परम वाहक को नमन।

विस्तार : अन्तकाय नाम संस्कृत शब्द अन्तका (अन्तक) से लिया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "अंत करने वाला," "समाप्त करने वाला," या "वह जो अंत लाता है।" यह नाम सीधे कालभैरव को मृत्यु, विनाश और सभी अस्तित्व के अंतिम निष्कर्ष से जोड़ता है।

मृत्यु का वाहक अन्तक यम, मृत्यु के देवता, के लिए एक प्राथमिक विशेषण है, और विस्तार से, यह उस सर्वोच्च शक्ति को दर्शाता है जो ब्रह्मांडीय विघटन को नियंत्रित और निष्पादित करती है। कालभैरव, अन्तक के रूप में, इस परम शक्ति के अवतार हैं। वह वह शक्ति है जो प्रत्येक चक्र को उसके अपरिहार्य निष्कर्ष तक ले जाती है, चाहे वह जीवन का अंत हो, एक युग (युग) का अंत हो, या ब्रह्मांड का अंतिम विघटन (प्रलय) हो।

सभी चीजों का अंत करने वाला यह नाम सभी प्रकट रूपों के पूर्ण संहारक के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। जो कुछ भी जन्म लेता है, उसे अंततः मरना ही पड़ता है, और इस प्राकृतिक और आवश्यक चक्र को सुनिश्चित करना कालभैरव के अधिकार क्षेत्र में है। वह समय के अपरिवर्तनीय प्रवाह का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सभी चीजों को उनके चरमोत्कर्ष तक ले जाता है।

अन्तक के रूप में उनका स्वरूप इसलिए केवल शारीरिक मृत्यु के बारे में नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वालों के लिए भ्रम (माया) की समाप्ति और अज्ञान (अविद्या) के विनाश के बारे में भी है।

अहंकार का परम संहारक आध्यात्मिक साधक के लिए, अन्तकाय व्यक्तिगत अहंकार (अहंकार) और उन सभी आसक्तियों के विनाश का प्रतीक है जो किसी को पुनर्जन्म के चक्र से बांधती हैं। झूठे स्व को "समाप्त" करके, कालभैरव सच्चे, अमर स्व की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

भयंकर फिर भी मुक्तिदायक यद्यपि अंतिम परिणाम के निहितार्थों में भयावह, कालभैरव का यह पहलू विरोधाभासी रूप से मुक्तिदायक है। परम अंत का सामना करके, व्यक्ति सभी सांसारिक चीजों की क्षणभंगुरता को समझता है और मृत्यु के भय को पार करने की बुद्धि प्राप्त करता है, जिससे मोक्ष (मोक्ष) प्राप्त होता है। वह कष्टों के कारणों को समाप्त करके कष्टों का अंत करते हैं।

368. ताण्डवाडम्बररुचये

सृष्टि और विनाश के ब्रह्मांडीय नृत्य (तांडव) में आनंद लेने वाले को नमन।

विस्तार : ताण्डवाडम्बररुचये नाम एक गहन दार्शनिक अवधारणा को एक जीवंत सौंदर्य के साथ जोड़ता है। इसमें तीन मूल शब्द शामिल हैं: ताण्डव, आडम्बर और रुचये।

ताण्डव: ब्रह्मांडीय नृत्य ताण्डव भगवान शिव द्वारा किए जाने वाले जोरदार, गतिशील और अक्सर भयंकर ब्रह्मांडीय नृत्य को संदर्भित करता है। यह केवल एक नृत्य नहीं है, बल्कि दिव्य की पाँच प्रमुख गतिविधियों (पंचकृत्य) का एक प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व है: सृष्टि (निर्माण), स्थिति (संरक्षण), संहार (विनाश), तिरोभाव (छिपाना/भ्रम), और अनुग्रह (कृपा/मुक्ति)। विशेष रूप से रुद्र ताण्डव, ब्रह्मांड के विनाश का प्रतीक है, और आनंद ताण्डव, सृष्टि और संरक्षण के आनंदमय खेल का प्रतिनिधित्व करता है। यह नृत्य ब्रह्मांड की निरंतर, लयबद्ध धड़कन है।

आडम्बर: भव्यता और आनंद आडम्बर भव्यता, धूमधाम, शानदार प्रदर्शन या आनंदमय उत्सव की भावना व्यक्त करता है। यह एक असीमित, विस्तृत और आनंदमय जुड़ाव का तात्पर्य है। जब ताण्डव के साथ जोड़ा जाता है, तो यह इस ब्रह्मांडीय खेल में शिव द्वारा अनुभव की जाने वाली सरासर भव्यता और गहन आनंद को दर्शाता है।

रुचये: आनंद लेना रुचये मूल शब्द रुच से आया है, जिसका अर्थ है "चमकना," "प्रसन्न होना," या "आनंद लेना।" यह सीधे इंगित करता है कि भगवान शिव इस ब्रह्मांडीय नृत्य को करने में अत्यधिक प्रसन्नता, आनंद और संतुष्टि पाते हैं।

अर्थ इसलिए, ताण्डवाडम्बररुचये का अर्थ है "वह जो ताण्डव नृत्य के शानदार या भव्य प्रदर्शन में आनंद लेता है।" यह सृष्टि, संरक्षण और विघटन के निरंतर चक्र में शिव की आंतरिक और आनंदमय भागीदारी पर जोर देता है। यह नाम बताता है कि शिव के प्रतीत होने वाले विनाशकारी पहलू एक दिव्य, आनंदमय खेल का हिस्सा हैं, न कि एक दुखद या दर्दनाक प्रक्रिया का। यह दर्शाता है कि ब्रह्मांड, अपने सभी परिवर्तनों और रूपांतरणों के साथ, एक भव्य नृत्य है जिसमें दिव्य गहन आनंद लेता है। यह वास्तविकता की गतिशील,Sda-परिवर्तनशील प्रकृति को दिव्य आनंद के स्रोत और सर्वोच्च चेतना की अभिव्यक्ति के रूप में समाहित करता है।

369. रुरुमण्डलमण्डिताय

भयंकर रुरु राक्षसों के घेरे या मृगचर्म से सुशोभित होने वाले (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : नाम रुरुमण्डलमण्डिताय एक यौगिक शब्द है, जो प्रतीकात्मक रूप से समृद्ध है, जो कालभैरव की दुर्जेय शक्ति और सृष्टि तथा संहार पर उनके प्रभुत्व दोनों को दर्शाता है। इसमें निम्नलिखित तत्व शामिल हैं:

रुरु (Ruru): इस शब्द का दोहरा और शक्तिशाली अर्थ है। 1. एक विशिष्ट प्रकार का हिरण, जिसे अक्सर लाल-भूरा वर्णित किया जाता है। हिंदू प्रतिमा विज्ञान में, मृगचर्म (कृष्णजिन) अक्सर तपस्वियों और शिव जैसे देवताओं से जुड़ा होता है, जो वैराग्य, विनम्रता और प्रकृति पर प्रभुत्व का प्रतीक है। 2. भयंकर राक्षसों या क्रूर प्राणियों का एक वर्ग। कुछ परंपराओं में, विशेष रूप से तंत्र और भैरव पंथ से जुड़ी परंपराओं में, "रुरु" शक्तिशाली, कभी-कभी विनाशकारी, संस्थाओं को संदर्भित करता है जिन्हें भैरव या तो आदेश देते हैं या जिन्हें उन्होंने पराजित किया है।

मण्डल (Mandala): 1. एक वृत्त या एक चक्र। 2. एक पवित्र ज्यामितीय डिज़ाइन, जिसका उपयोग अक्सर अनुष्ठान में किया जाता है, जो ब्रह्मांड या एक दिव्य निवास स्थान का प्रतिनिधित्व करता है। 3. एक दल या एक सभा।

मण्डित (Mandita): सुशोभित, अलंकृत, सुंदर बनाया गया।

मृगचर्म से सुशोभित (तपस्वी प्रभुत्व) (Adorned with Deerskins - Ascetic Mastery) यदि "रुरु" की व्याख्या हिरण के रूप में की जाती है, तो यह नाम कालभैरव को मृगचर्म के "मंडल" या घेरे से सुशोभित बताता है। यह कल्पना उन्हें उन तपस्वियों से जोड़ती है जो अपने वैराग्य और आदिम प्रवृत्तियों पर प्रभुत्व के प्रतीक के रूप में मृगचर्म पहनते हैं। शिव के लिए, और विस्तार से कालभैरव के लिए, मृगचर्म अस्तित्व के जंगली और अनियंत्रित पहलुओं पर उनकी महारत को दर्शाता है, उन्हें उस तपस्वी आदर्श के साथ संरेखित करता है जो सांसारिक आसक्तियों से परे है। यह एक साधारण, आदिम अलंकरण का सुझाव देता है, जो भौतिक वैभव से उनके वैराग्य का सूचक है।

रुरु राक्षसों के दल से सुशोभित (सर्वोच्च अधिकार) (Adorned with a Retinue of Ruru Demons - Supreme Authority) अधिक शक्तिशाली रूप से, और विशेष रूप से भैरव के क्रूर पहलू के लिए उपयुक्त, "रुरु" शक्तिशाली, कभी-कभी भयानक, प्राणियों या राक्षसों के एक वर्ग को संदर्भित कर सकता है। इस व्याख्या में, रुरुमण्डलमण्डिताय का अर्थ है कि कालभैरव इन दुर्जेय रुरु संस्थाओं के "मंडल" या घेरे से सुशोभित या घिरे हुए हैं। यह उनकी पूर्ण सर्वोच्चता को इंगित करता है: वे उन्हें हराने के लिए केवल पर्याप्त शक्तिशाली नहीं हैं, बल्कि वे उन्हें आदेश देते हैं। वे उनका दल, उनका दरबार, या यहाँ तक कि उनका युद्ध मानक भी बनाते हैं, जो सभी शक्तियों पर उनके परम अधिकार को प्रदर्शित करता है, जिसमें वे भी शामिल हैं जो भयानक या राक्षसी हैं। यह सबसे अराजक ऊर्जाओं को भी वश में करने और एकीकृत करने की उनकी क्षमता का प्रतीक है, उन्हें अपनी दिव्य इच्छा के अनुसार मोड़ना। उनकी उपस्थिति ही इन क्रूर प्राणियों को वश में करती है और पवित्र करती है, उनकी भयानक प्रकृति को एक दिव्य अलंकरण में बदल देती है।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था और अतिक्रमण का प्रतीक (Symbol of Cosmic Order and Transcendence) "मंडल" पहलू, चाहे मृगचर्म का हो या राक्षसों का, एक पूर्ण और व्यापक उपस्थिति का सुझाव देता है। यह कालभैरव को केंद्रीय आकृति के रूप में प्रस्तुत करता है जिसके चारों ओर ये सभी शक्तियाँ—आदिम, तपस्वी, जंगली, या अराजक—घूमती हैं। वह परम सूत्रधार हैं, जो अराजकता में व्यवस्था लाते हैं और जो क्रूरता और वैराग्य के विरोधाभास को मूर्त रूप देते हैं। यह नाम सर्वोच्च कमांडर के रूप में उनकी भूमिका और ब्रह्मांड के ताने-बाने को रेखांकित करता है, जिसमें सबसे भयानक पहलू भी उनके राजसी अलंकरण के रूप में कार्य करते हैं।

370. परमेश्वराय

परम, सर्वोच्च और श्रेष्ठ भगवान को नमन।

विस्तार : परमेश्वर नाम भगवान शिव की परम श्रेष्ठता का एक गहन वर्णन है, जो दो संस्कृत शब्दों को जोड़ता है: परम (Parama) और ईश्वर (Īśvara)।

• परम (Parama): इस उपसर्ग का अर्थ है "उच्चतम," "सर्वोच्च," "परम," "उत्कृष्ट," या "परे।" यह परम श्रेष्ठता की भावना व्यक्त करता है और उस चीज़ का प्रतिनिधित्व करता है जो सभी सीमाओं, तुलनाओं और द्वंद्वों से परे है।

• ईश्वर (Īśvara): यह शब्द "भगवान," "नियंत्रक," "शासक," या "सार्वभौम" को दर्शाता है। यह एक शक्तिशाली और बुद्धिमान सत्ता को संदर्भित करता है जिसका ब्रह्मांड पर नियंत्रण है।

सर्वोच्च और उत्कृष्ट भगवान (The Supreme and Transcendent Lord) परमेश्वर शिव को "सर्वोच्च भगवान" के रूप में पहचानता है, जो अन्य सभी देवताओं, शासकों और ब्रह्मांडीय शक्तियों से ऊपर हैं। वह केवल अन्य शक्तिशाली देवताओं में से एक नहीं हैं, बल्कि परम सत्ता, आदि प्रेरक (primum mobile), और अंतिम सिद्धांत हैं जिससे सभी सृष्टि, पालन और संहार उत्पन्न होते हैं। यह एक उत्कृष्ट स्थिति का तात्पर्य है, जिसका अर्थ है कि वह भौतिक ब्रह्मांड से परे हैं, उससे स्वतंत्र रूप से अस्तित्व में हैं, फिर भी साथ ही उसमें व्याप्त हैं।

परम नियंत्रक (The Ultimate Controller) परमेश्वर के रूप में, शिव हर चीज़ के परम नियंत्रक हैं—समय (काल), स्थान (देश), पदार्थ (प्रकृति), और चेतना (पुरुष)। ऐसी कोई शक्ति या सत्ता नहीं है जो उन्हें नियंत्रित कर सके; बल्कि, सभी चीजें उनकी इच्छा और नियम के अधीन हैं। यह उनकी संप्रभुता और सर्वशक्तिमानता को उजागर करता है।

देवताओं के देव (The God of Gods) यह नाम यह भी दर्शाता है कि वह "ईश्वरों के ईश्वर" हैं, अर्थात अन्य देवताओं या स्वामियों के भी स्वामी हैं। शैव परंपरा में, यह इस विश्वास को रेखांकित करता है कि शिव परब्रह्म हैं, परम वास्तविकता हैं, और अन्य सभी देवता उनके दिव्य स्वरूप के प्रकटीकरण या पहलू हैं।

दार्शनिक महत्व (Philosophical Significance) दार्शनिक रूप से, परमेश्वर उस परम वास्तविकता की ओर इशारा करता है जो अकारण, अहेतुकी और शाश्वत है। यह सभी अभिव्यक्तियों का अप्रकट स्रोत है, सभी ब्रह्मांडीय लीलाओं का मौन साक्षी है, और सभी आध्यात्मिक प्रयासों का लक्ष्य है। कालभैरव को परमेश्वर के रूप में संबोधित करना समय और ब्रह्मांड के चक्रों पर उनके सर्वोच्च और अद्वितीय अधिकार को स्वीकार करना है।

371. पशुपतये

सभी जीवों (पशुओं) के दिव्य स्वामी और प्रभु को नमन।

विस्तार : पशुपति (पशुपतये) नाम शैव धर्म में अत्यधिक महत्वपूर्ण है और शिव के बहुआयामी स्वरूप का एक आधारशिला है। यह दो संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: "पशु" (Pashu) और "पति" (Pati)।

पशु (Pashu): यह शब्द, जिसे अक्सर "जानवर" या "पशु" के रूप में अनुवादित किया जाता है, शैव सिद्धांत और अन्य शैव परंपराओं के संदर्भ में एक बहुत गहरा दार्शनिक अर्थ रखता है। "पशु" सभी जीवित प्राणियों, विशेष रूप से मानव आत्माओं को संदर्भित करता है, जो "पाश" (Pasha) से बंधे हुए हैं। पाश वे बंधन या बेड़ियाँ हैं जो एक आत्मा को जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) से बाँधती हैं। इन बंधनों में शामिल हैं: • अणव मल (Anava Mala): अहंकार या सीमित ज्ञान की अशुद्धि, जो व्यक्तित्व और ईश्वर से अलगाव की भावना पैदा करती है। • कर्म मल (Karma Mala): कर्मों (actions) और उनके संचित छापों से उत्पन्न होने वाली अशुद्धि। • माया मल (Maya Mala): भौतिक संसार और उसके भ्रम से जुड़ी अशुद्धि, जो भौतिक शरीर और ब्रह्मांड को जन्म देती है। सभी आत्माएँ, जब अपनी देहधारी अवस्था में होती हैं, तो इन अशुद्धियों और सीमाओं में फँसी हुई पशु मानी जाती हैं।

पति (Pati): इस शब्द का अर्थ है "भगवान," "स्वामी," "रक्षक," या "शासक।"

बद्ध आत्माओं के स्वामी (The Lord of Bound Souls): इस प्रकार, पशुपति का अर्थ "सभी बद्ध आत्माओं के भगवान" या "सभी जीवित प्राणियों के स्वामी" है। यह नाम सभी रचना और इसमें निवास करने वाली सभी व्यक्तिगत आत्माओं पर शिव के सर्वोच्च अधिकार पर प्रकाश डालता है। वह केवल एक शासक नहीं हैं, बल्कि वे परोपकारी भी हैं जो पशुओं (बद्ध आत्माओं) की दुर्दशा को समझते हैं।

मुक्तिदाता (The Liberator): पशुपति के रूप में, शिव की भूमिका केवल इन बद्ध आत्माओं पर शासन करना नहीं है, बल्कि, इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्हें पाशों से मुक्ति (मोक्ष) की ओर मार्गदर्शन करना है। वह परम गुरु हैं जो करुणावश आत्म-साक्षात्कार और दुख के चक्रों से मुक्ति का मार्ग प्रकट करते हैं। पशुपति का सम्मान शिव को उस रूप में स्वीकार करता है जो कर्म, अहंकार और भ्रम की गांठों को खोल सकते हैं जो व्यक्तिगत आत्मा को बांधते हैं।

जानवरों और प्रकृति के रक्षक (The Protector of Animals and Nature): अधिक शाब्दिक स्तर पर, पशुपति शिव के सभी जानवरों और प्राकृतिक दुनिया पर प्रभुत्व और संरक्षण को भी दर्शाता है। यह पहलू अक्सर उनकी मूर्तियों में परिलक्षित होता है, जहाँ वे विभिन्न जानवरों, विशेष रूप से बैल नंदी से घिरे होते हैं या उनसे जुड़े होते हैं। यह सभी प्राणियों के प्रति उनके घनिष्ठ संबंध और देखभाल पर जोर देता है, जो ब्रह्मांडीय एकता और सभी जीवन के प्रति श्रद्धा के विचार को पुष्ट करता है।

संक्षेप में, पशुपति एक ऐसा नाम है जो शिव की ब्रह्मांडीय शासक और करुणामय मुक्तिदाता के रूप में दोहरी भूमिका को समाहित करता है, जो सभी प्राणियों को उलझाव से परम आध्यात्मिक स्वतंत्रता की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

372. पिनाकिने

महान दिव्य धनुष पिनाक धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : पिनाकिने नाम भगवान शिव को पिनाक, एक दिव्य और अत्यधिक शक्तिशाली धनुष धारण करने वाले के रूप में संदर्भित करता है। यह विशेषण हिंदू परंपराओं में, विशेष रूप से ब्रह्मांडीय घटनाओं में शिव की भूमिका और उनकी दुर्जेय शक्ति के संबंध में गहरा प्रतीकात्मक और पौराणिक महत्व रखता है।

दिव्य धनुष (पिनाक) पिनाक कोई साधारण हथियार नहीं है, बल्कि एक दिव्य धनुष है, जिसे अक्सर विश्वकर्मा, दिव्य वास्तुकार द्वारा निर्मित बताया जाता है। यह हिंदू धर्मग्रंथों में वर्णित तीन प्राथमिक दिव्य धनुषों में से एक है, अन्य दो विष्णु का शारंग और अर्जुन का गांडीव हैं। पिनाक शिव की विनाशकारी शक्ति, सभी बाधाओं को दूर करने की उनकी क्षमता और ब्रह्मांड पर उनके अंतिम नियंत्रण का प्रतीक है। इसे एक ऐसे हथियार के रूप में पूजा जाता है जो भगवान द्वारा धारण किए जाने पर ब्रह्मांडीय ऊर्जा और अत्यधिक विनाश उत्पन्न करने में सक्षम है।

ब्रह्मांडीय शक्ति का प्रतीक पिनाकिने के रूप में, शिव उस सर्वोच्च शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सृष्टि और विनाश दोनों कर सकती है, संतुलन बनाए रख सकती है, और उन लोगों को दंडित कर सकती है जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बाधित करते हैं। शिव द्वारा पिनाक धारण करने का कार्य धर्म की रक्षा के लिए या दिव्य और राक्षसी शक्तियों पर अपनी सर्वोच्चता स्थापित करने के लिए ब्रह्मांडीय युद्धों में संलग्न होने की उनकी तत्परता को दर्शाता है। सबसे प्रसिद्ध उदाहरणों में से एक जहां शिव ने इस धनुष का प्रयोग किया था, वह असुरों द्वारा निर्मित त्रिपुरों (तीन शहरों) के विनाश के दौरान था, जब कहा जाता है कि उन्होंने पिनाक से एक ही तीर से उन्हें नष्ट कर दिया था, जिससे उन्हें त्रिपुरान्तक (तीन शहरों का विनाशक) की उपाधि मिली।

बाधाओं का निवारण करने वाला और रक्षक भक्तों के लिए, शिव को पिनाकिने के रूप में आह्वान करने का अर्थ है सभी भौतिक और आध्यात्मिक खतरों और बाधाओं से उनकी सुरक्षा प्राप्त करना। वह वही हैं जो अज्ञान, अहंकार और आसक्ति के "तीन शहरों" को नष्ट कर सकते हैं जो आत्मा को बांधते हैं। पिनाक द्वारा प्रतीक उनकी शक्ति के माध्यम से, वह आध्यात्मिक प्रगति के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं और मुक्ति प्रदान करते हैं। धनुष धारण करने वाले शिव का यह पहलू एक शक्तिशाली संरक्षक और एक परोपकारी फिर भी दुर्जेय देवता के रूप में उनकी छवि को पुष्ट करता है।

373. पुरशासनाय

तीनों लोकों (त्रिपुर) के महान शासक और दण्डनायक को नमन।

विस्तार : पुरशासनाय नाम गहरा प्रतीकात्मक है, विशेष रूप से भगवान शिव के उग्र स्वरूपों के संदर्भ में, जो सीधे त्रिपुरांतक, तीन नगरों (त्रिपुरा) के विनाशक के शक्तिशाली मिथक से जुड़ा है।

व्युत्पत्ति और पौराणिक महत्व यह शब्द निम्न का एक यौगिक है: • पुरा: नगर, किला, या गढ़। • शासन: शासक, राज्यपाल, दण्डदाता, या वह जो आज्ञा देता और दंडित करता है। सामूहिक रूप से, पुरशासनाय का अर्थ है "नगरों का शासक और दण्डदाता।" इसका सबसे प्रसिद्ध उदाहरण शिव द्वारा त्रिपुरा का विनाश है।

त्रिपुरा का मिथक त्रिपुरा के नाम से जाने जाने वाले तीन नगर असुरों के लिए दानव वास्तुकारों माया और त्वष्ट्री द्वारा निर्मित शक्तिशाली गढ़ थे, विशेष रूप से तारकासुर के पुत्रों (तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली) के लिए। ये नगर तकनीकी रूप से उन्नत और सुदृढ़ थे, अंतरिक्ष में घूमते थे, और सोने, चांदी और लोहे से बने थे, जो चेतना की तीन अवस्थाओं (जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति) या तीन गुणों (सत्व, रजस, तमस) का प्रतिनिधित्व करते थे जो व्यक्तिगत आत्मा को भौतिक संसार से बांधते हैं। दानवों ने अपनी अपार शक्ति और वरदानों से इन नगरों से देवताओं और समस्त सृष्टि को सताया।

जब देवता उन्हें हरा नहीं सके, तो उन्होंने भगवान शिव से प्रार्थना की। शिव ने अपने उग्र स्वरूप में त्रिपुरांतक (त्रिपुरा के विनाशक) के रूप में एक दिव्य रथ पर (पृथ्वी को रथ के रूप में, सूर्य और चंद्रमा को पहियों के रूप में, ब्रह्मा को सारथी के रूप में, विष्णु को बाण के रूप में, और वेदों को घोड़ों के रूप में) सवार होकर, एक ही बाण से (जो अक्सर शुद्ध चेतना की शक्ति या काल, स्वयं समय का प्रतिनिधित्व करता है) तीनों नगरों को एक साथ नष्ट कर दिया।

प्रतीकात्मक व्याख्याएँ

अज्ञान और अहंकार पर विजय (आध्यात्मिक महत्व): तीन नगरों को अक्सर लाक्षणिक रूप से तीन शरीरों (स्थूल, सूक्ष्म, कारण), चेतना की तीन अवस्थाओं (जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति), या तीन गुणों (सत्व, रजस, तमस) के रूप में व्याख्या किया जाता है जो व्यक्तिगत आत्मा (जीव) को आवागमन (संसार) के चक्र से बांधे रखते हैं। त्रिपुरा का विनाश करके, शिव इन बंधनों से प्राणियों को मुक्त करते हैं। वह वास्तव में वही हैं जो अज्ञान, अहंकार और आसक्ति का अंत करते हैं, जो मन के अभेद्य किलों के समान हैं।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था और न्याय (संरक्षक पहलू): पुरशासनाय के रूप में उनका कार्य ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) के परम संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है। जब बुराई अत्यधिक हो जाती है और सार्वभौमिक संतुलन को खतरा होता है, तो शिव निर्णायक और विनाशकारी शक्ति के साथ हस्तक्षेप करते हैं। वह दिव्य न्यायाधीश और दण्डदाता हैं जो यह सुनिश्चित करते हैं कि धार्मिकता बनी रहे।

काल और विनाश के अधिपति (भैरव पहलू): कालभैरव के संदर्भ में, त्रिपुरा के विनाशक के रूप में उनकी भूमिका समय (काल) पर उनकी महारत और विघटन की उनकी परम शक्ति पर जोर देती है। जिस प्रकार उन्होंने दुर्जेय नगरों का अंत किया, उसी प्रकार वे सभी बाधाओं का अंत कर सकते हैं, चाहे वे भौतिक, मानसिक या आध्यात्मिक हों। वह अथक शक्ति हैं जो भ्रम को दूर करती हैं और विनाश के माध्यम से परिवर्तन लाती हैं।

इस प्रकार, पुरशासनाय को नमस्कार शिव को दिव्य शासक के रूप में स्वीकार करता है, जो अपनी सर्वोच्च शक्ति के माध्यम से, अस्तित्वगत बंधन और विनाशकारी शक्तियों के सभी रूपों, बाहरी और आंतरिक दोनों को दंडित और भंग करते हैं, अंततः मुक्ति और ब्रह्मांडीय सद्भाव की पुनः स्थापना की ओर ले जाते हैं।

374. पुरास्तुताय

पुराणों में प्रशंसित और सम्मानित किए गए (भगवान कालभैरव) को नमन।

विस्तार : पुरात्सूताय नाम "पुरात्" (पुराण से) और "सूत" (स्तुति किया गया, महिमामंडित किया गया, वर्णित किया गया) को जोड़ता है।

पौराणिक विरासत (The Puranic Heritage) पुराण भारतीय साहित्य की एक विशाल शैली है, जिसमें मिथकों, किंवदंतियों, दार्शनिक ग्रंथों, देवताओं और ऋषियों की वंशावलियों, और ब्रह्मांड विज्ञान, धर्म और अनुष्ठान के विवरणों का एक समृद्ध संग्रह शामिल है। वे हिंदू परंपराओं को समझने के लिए मौलिक ग्रंथ हैं, विशेष रूप से विभिन्न देवताओं से संबंधित। 18 महा-पुराण (महान पुराण) और कई उप-पुराण (लघु पुराण) हैं, जो लोकप्रिय धार्मिक पाठ्यपुस्तकों के रूप में कार्य करते हैं।

प्राचीन ग्रंथों में महिमामंडित (Celebrated in Ancient Texts) पुराणों में "सूत" होना का अर्थ है कि भैरव कोई हालिया या छोटा देवता नहीं हैं, बल्कि एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनकी महिमा, पराक्रम और महत्व को सहस्राब्दियों से प्रलेखित, सराहा और लगातार वर्णित किया गया है। वे कई आख्यानों के केंद्र में हैं जो उनकी प्रचंड शक्ति, एक संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका, और वरदान और मोक्ष (मुक्ति) प्रदान करने की उनकी क्षमता को दर्शाते हैं। इन ग्रंथों के भीतर की कहानियाँ शिव के एक महत्वपूर्ण पहलू के रूप में उनकी स्थिति को मजबूत करती हैं।

ज्ञान और भक्ति का स्रोत (Source of Knowledge and Devotion) भक्तों के लिए, पुराण केवल ऐतिहासिक वृत्तांत नहीं हैं, बल्कि जीवित शास्त्र हैं जो दिव्य ज्ञान का संचार करते हैं। पुराणों में भैरव की कहानियों को पढ़ना या सुनना स्वयं पूजा का एक रूप है और उनके वास्तविक स्वरूप को समझने का एक साधन है। यह नाम पुष्टि करता है कि उनकी पूजा और समझ शास्त्रीय परंपरा में गहराई से निहित है।

375. देवकीराय

सभी देवताओं के दिव्य निर्माता को नमन।

विस्तार : देवकीर नाम उस दिव्य सार और शक्ति को संदर्भित करता है जो हिंदू देवमंडल के भीतर सभी देवों या देवताओं का मूल और निर्माता है।

देव (Deva): दिव्य प्राणी/देवता यह शब्द आकाशीय, दिव्य प्राणियों को संदर्भित करता है जो ब्रह्मांड के विभिन्न पहलुओं को नियंत्रित करते हैं और मानवता तथा परम वास्तविकता के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं। उन्हें अक्सर असाधारण शक्तियों के साथ चित्रित किया जाता है और वे स्वर्गीय लोकों में निवास करते हैं।

कीर (Kīra): निर्माता/उत्पत्ति जबकि "कीर" इस संदर्भ में "निर्माता" के लिए एक सामान्य संस्कृत मूल नहीं है (अधिक सामान्यतः "कर्तृ" या "जनक"), कुछ तांत्रिक और गूढ़ परंपराओं में, विशेष रूप से शिव और उनके उग्र अभिव्यक्तियों जैसे भैरव से जुड़ी परंपराओं में, "कीर" की ध्वनि और कंपन उस आदिम ऊर्जा या मूलभूत शक्ति को दर्शा सकती है जिससे चीजें उत्पन्न होती हैं। इसे "प्रकाश" या "तेज" (एक समान मूल से) का एक सूक्ष्म संदर्भ भी माना जा सकता है जिससे देवता स्वयं अपनी चमक और शक्ति प्राप्त करते हैं। इस विशिष्ट धार्मिक संदर्भ में, यह मूलभूत स्रोत की ओर इशारा करता है।

प्रथम कारण (The First Cause) देवकीर के रूप में, कालभैरव को सभी दिव्य शक्तियों और संस्थाओं के आदिम स्रोत के रूप में पहचाना जाता है। यह उन्हें केवल कई देवताओं में से एक होने से ऊपर उठाता है; वह परम सिद्धांत हैं जिससे ब्रह्मा, विष्णु और अन्य देवों जैसे उच्चतम देवता भी उत्पन्न होते हैं और अपना अस्तित्व प्राप्त करते हैं। यह स्थिति उनकी परम सर्वोच्चता और मूलभूत ब्रह्मांडीय जनरेटर के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाती है।

दिव्य अधिकार का स्रोत (The Source of Divine Authority) यह उपाधि इस बात पर जोर देती है कि सभी दिव्य अधिकार, ब्रह्मांडीय शासन, और स्वयं देवत्व का स्वरूप अंततः उनसे उत्पन्न होता है। वह देवताओं के भी स्वामी हैं, जो अपने अस्तित्व और कार्यों के लिए उनकी आदिम रचनात्मक ऊर्जा पर निर्भर करते हैं। यह शैव मत की शिव (और उनके विभिन्न रूपों) को महादेव, "महान ईश्वर," दूसरों से श्रेष्ठ के रूप में समझने के साथ मेल खाता है।

376. परमेष्ठिने

जो सर्वोच्च और परम पद पर प्रतिष्ठित हैं, उनको नमन।

विस्तार : परमेष्ठी (Parameṣṭhī) नाम एक गहन संस्कृत शब्द है जो सर्वोच्च, परम और अंतिम स्थान या पद को दर्शाता है। यह "परम" (सर्वोच्च, परम) और "स्था" (खड़ा होना, स्थापित होना) से व्युत्पन्न है।

परम धाम (The Supreme Abode) शाब्दिक रूप से, परमेष्ठी का अर्थ है "जो सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित है।" यह एक ऐसी स्थिति को संदर्भित करता है जो सभी द्वैत से परे है, भौतिक ब्रह्मांड से परे है, और यहां तक कि उच्चतम स्वर्गों से भी परे है। यह पारलौकिक अवस्था है, परम वास्तविकता है, जो सभी सीमाओं और अपूर्णताओं से मुक्त है। भगवान शिव के लिए, विशेष रूप से उनके भयंकर भैरव रूप में, यह उनकी पूर्ण संप्रभुता और उस परम सत्य के रूप में उनकी स्थिति को दर्शाता है जिससे अन्य सभी वास्तविकताएं उत्पन्न होती हैं।

परम सत्ता (The Ultimate Authority) परमेष्ठी के रूप में, शिव भैरव परम सत्ता हैं, सभी ब्रह्मांडीय नियमों के स्रोत हैं, और न्याय के अंतिम प्रदाता हैं। उनकी स्थिति का अर्थ है कि वे किसी उच्च शक्ति या बाहरी बल के अधीन नहीं हैं; बल्कि, सभी शक्तियां और बल उनके अधीन हैं। यह धर्म के रक्षक और बुराई के दंडक के रूप में उनकी भूमिका के अनुरूप है, जिसमें उनके निर्णय अंतिम और पूर्ण होते हैं।

उत्कृष्टता और अंतर्व्यापकता (Transcendence and Immanence) जबकि परमेष्ठी उनकी पारलौकिक प्रकृति को दर्शाता है - निर्मित ब्रह्मांड से परे विद्यमान - यह उनकी अंतर्व्यापकता को भी दर्शाता है, क्योंकि उच्चतम सत्य सभी अस्तित्व में व्याप्त और उसे बनाए रखता है। वे अस्तित्व का अंतिम आधार हैं, सृष्टि के हर कण में उपस्थित हैं, फिर भी एक साथ उससे परे हैं। यह दोहरा पहलू शिव के विरोधाभास को दर्शाता है, जो विनाशक और चेतना की परम वास्तविकता दोनों हैं।

सर्वोच्च सिद्धांत (The Highest Principle) दार्शनिक शब्दों में, परमेष्ठी सर्वोच्च सिद्धांत, आदिम कारण और दिव्यता की सर्वोच्च अभिव्यक्ति को संदर्भित करता है। यह पूर्ण पूर्णता की स्थिति है, अपरिवर्तनीय और शाश्वत। भैरव को परमेष्ठी के रूप में नमन करके, कोई भी उनकी सर्वोच्च स्थिति को अप्रकट निर्माता, हमेशा बदलते ब्रह्मांड के बीच अपरिवर्तनीय वास्तविकता, और सभी प्राणियों के लिए अंतिम आश्रय के रूप में स्वीकार करता है।

377. परायणाय

सभी आत्माओं के लिए परम और अंतिम आश्रय को नमन।

विस्तार : परायण (परायणाय) नाम एक गहरा संस्कृत शब्द है जो अंतिम गंतव्य, सर्वोच्च लक्ष्य और अंतिम आश्रय को दर्शाता है। यह 'पर' (सर्वोच्च, परम) और 'अयन' (जाना, विश्राम स्थल, सहारा, मार्ग) से व्युत्पन्न एक यौगिक शब्द है।

परम लक्ष्य और गंतव्य "परम लक्ष्य" के रूप में, परायण का अर्थ है कि कालभैरव वह सर्वोच्च अंत हैं जिसकी ओर सभी आध्यात्मिक प्रयास निर्देशित होते हैं। वह केवल एक साधन नहीं हैं, बल्कि अस्तित्व और आध्यात्मिक अभ्यास का ही उद्देश्य हैं। उन तक पहुंचना जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) की समाप्ति और मुक्ति (मोक्ष) की प्राप्ति का प्रतीक है।

अंतिम आश्रय और शरण यह शब्द "अंतिम आश्रय" या "सर्वोच्च शरण" को भी दर्शाता है। सांसारिक अस्तित्व की कठिनाइयों में फंसे, दुख, भय और अनिश्चितता का सामना करने वालों के लिए, कालभैरव पूर्ण और अटूट सुरक्षा प्रदान करते हैं। वह वह आश्रय हैं जहाँ आत्माएं सच्ची शांति, सांत्वना और सुरक्षा पाती हैं, भौतिक उतार-चढ़ाव और द्वंद्वों की पहुंच से परे एक स्वर्ग। इसका तात्पर्य उनकी इच्छा और कृपा के प्रति पूर्ण समर्पण है, यह जानते हुए कि वह अपने भक्तों का मार्गदर्शन और रक्षा करेंगे।

समर्थन और आधार परायण को परम समर्थन या आधार के रूप में भी समझा जा सकता है जिस पर सभी अस्तित्व टिके हुए हैं। वह वास्तविकता की आधारशिला हैं, परिवर्तन के बीच अपरिवर्तनीय सिद्धांत हैं, जो ब्रह्मांड को स्थिरता और अर्थ प्रदान करते हैं। एक आध्यात्मिक साधक के लिए, वह वह दृढ़ आधार हैं जो उनके विश्वास और अभ्यास को बनाए रखता है।

दार्शनिक महत्व दार्शनिक अर्थ में, कालभैरव को परायण के रूप में स्वीकार करना उन्हें सर्वोच्च ब्रह्म के रूप में पहचानना है, वह परम वास्तविकता जो सभी सृष्टि में अंतर्निहित और उससे परे है। वह आदि, मध्य और अंत हैं - सभी अस्तित्व के अल्फा और ओमेगा, और वह परम धाम जहाँ सभी प्राणी अंततः लौटते हैं।

378. पञ्चविंशतितत्त्वस्थाय

सृष्टि के पच्चीस मौलिक सिद्धांतों (तत्त्वों) में निवास करने वाले को नमन।

विस्तार : पञ्चविंशतितत्त्वस्थाय नाम भगवान कालभैरव का एक गहन वर्णन है, जो सांख्य दर्शन के मूलभूत सिद्धांतों में निहित है, जो शैव सिद्धांत को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। यह "सृष्टि के पच्चीस मूलभूत सिद्धांतों (तत्त्वों) में निवास करने वाले" को संदर्भित करता है।

पच्चीस तत्त्व सांख्य दर्शन एक अव्यक्त अवस्था (प्रकृति) से पच्चीस तत्त्वों या अस्तित्व की मूलभूत श्रेणियों की एक श्रृंखला के माध्यम से व्यक्त वास्तविकता में एक ब्रह्मांडीय विकास को प्रस्तुत करता है। ये हैं: • पुरुष (Puruṣa): शुद्ध चेतना, अपरिवर्तनीय, अकारण और शाश्वत आत्मा। यह साक्षी है। • प्रकृति (Prakṛti): आदिम पदार्थ, सभी सृष्टि का अव्यक्त स्रोत, तीन गुणों (सत्त्व, रजस, तमस) से बना है। • महत (बुद्धि) (Mahat (Buddhi)): ब्रह्मांडीय बुद्धि या महान सिद्धांत, प्रकृति से पहला विकास। • अहंकार (Ahaṃkāra): अहम्-भाव, महत से उत्पन्न होने वाला व्यक्तिगत सिद्धांत, जो

"मैं" की भावना की ओर ले जाता है। • पंच तन्मात्राएं (Pañca Tanmātras): पांच सूक्ष्म तत्व (ध्वनि, स्पर्श, रूप, स्वाद, गंध), जो संवेदी अनुभव के सार हैं। • पंच ज्ञानेंद्रियां (Pañca Jñānendriyas): पांच इंद्रियां (कान, त्वचा, आंखें, जीभ, नाक)। • पंच कर्मेंद्रियां (Pañca Karmendriyas): पांच कर्म इंद्रियां (वाणी, हाथ, पैर, जननांग, उत्सर्जन अंग)। • मनस (Manas): मन, जो संवेदी डेटा को संश्लेषित करता है और कर्म इंद्रियों को निर्देशित करता है। • पंच महाभूत (Pañca Mahābhūtas): पांच स्थूल तत्व (आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी) जो भौतिक संसार का निर्माण करते हैं।

तत्त्वों में निवास करने वाले भगवान जब कालभैरव को इन पच्चीस तत्त्वों में निवास करने वाला बताया जाता है, तो यह कई प्रमुख दार्शनिक अवधारणाओं को दर्शाता है:

सर्वोच्च अंतर्निहितता (Supreme Immanence): इसका अर्थ है कि वह सृष्टि से अलग नहीं हैं, बल्कि इसके हर एक पहलू में व्याप्त हैं और उसका निर्माण करते हैं, चेतना के सूक्ष्म सिद्धांत (पुरुष) और आदिम पदार्थ (प्रकृति) से लेकर भौतिक ब्रह्मांड के स्थूलतम तत्वों तक। उनकी उपस्थिति प्रत्येक तत्त्व के भीतर प्रेरक शक्ति है।

सृष्टि के सूत्रधार (Orchestrator of Creation): जबकि सांख्य द्वैतवादी है (पुरुष और प्रकृति), शैव दर्शन इन्हें एक अद्वैतवादी समझ में एकीकृत करता है जहाँ शिव ही परम वास्तविकता हैं, जो पुरुष और प्रकृति की परस्पर क्रिया की देखरेख और उसे सक्षम करते हैं। कालभैरव, शिव के एक उग्र स्वरूप के रूप में, वह दिव्य चेतना हैं जो ब्रह्मांडीय अभिव्यक्ति और विघटन की पूरी प्रक्रिया को ऊर्जा प्रदान करती है और उसे बनाए रखती है। वह वह बुद्धि हैं जो तत्त्वों के विकास और अंतर्वलन का मार्गदर्शन करती हैं।

साक्षी और सार (The Witness and the Essence): वह परम पुरुष हैं, वह चेतना जो प्रकृति और उसके विकास के खेल को देखती है, फिर भी साथ ही, परम ब्रह्म के रूप में, वह स्वयं सभी तत्त्वों का सार, मूलभूत वास्तविकता हैं। वह पारलौकिक भगवान हैं जो प्रकृति के संशोधनों से अछूते रहते हैं, फिर भी हर अभिव्यक्ति में अंतर्निहित हैं।

अस्तित्व पर प्रभुत्व (Mastery over Existence): यह नाम संपूर्ण ब्रह्मांडीय तंत्र पर कालभैरव की पूर्ण संप्रभुता पर जोर देता है। प्रत्येक तत्व, धारणा की प्रत्येक संकाय, प्रत्येक क्रिया, और अस्तित्व का प्रत्येक सूक्ष्म और स्थूल पहलू उनके दिव्य प्रभुत्व के अधीन है। उन्हें "पञ्चविंशतितत्त्वस्थाय" के रूप में स्वीकार करके, भक्त उनकी सर्वव्यापी उपस्थिति और सभी वास्तविकता के अंतिम आधार और पोषक के रूप में उनकी भूमिका को पहचानते हैं।

379. पञ्चजन्तवे

उन पंच महाभूतों को नमन जो सभी प्राणियों की रचना करते हैं।

विस्तार : नाम पञ्चजन्तवे पञ्च और जनाः या जन्तु से बना एक यौगिक शब्द है।

पञ्च: इस संस्कृत शब्द का अर्थ "पाँच" है।

जन्तु या जनाः: यह "जीवित प्राणियों," "जीवों," "लोगों," या सामान्यतः किसी भी सजीव इकाई को संदर्भित करता है। गहरे दार्शनिक अर्थ में, यह "जन्म," "उत्पत्ति," या "सृष्टि" से भी संबंधित हो सकता है।

पाँच तत्व हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, विशेष रूप से सांख्य और वेदांत दर्शन में, संपूर्ण भौतिक ब्रह्मांड, जिसमें सभी जीवित प्राणी शामिल हैं, पाँच मूलभूत तत्वों से बना है, जिन्हें पञ्च महाभूत के नाम से जाना जाता है। ये हैं: • पृथ्वी (पृथ्वी): ठोसता, संरचना और रूप का प्रतिनिधित्व करती है। • आपस्

(जल): तरलता, सामंजस्य और प्रवाह का प्रतिनिधित्व करती है। • तेजस् (अग्नि): ऊर्जा, परिवर्तन और प्रकाश का प्रतिनिधित्व करती है। • वायु (वायु): गति, गैसीयता और सूक्ष्म ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करती है। • आकाश (ईथर/अंतरिक्ष): आयाम, शून्यता और सर्वव्यापकता का प्रतिनिधित्व करती है।

सृजनात्मक सिद्धांत जब कालभैरव को पञ्चजन्तवे के रूप में आह्वान किया जाता है, तो यह दर्शाता है कि वे इन पाँच महान तत्वों का सार और आधार हैं। वे केवल उनके नियंत्रक या निर्माता नहीं हैं, बल्कि वे स्वयं वे ही हैं। वे सभी अस्तित्व का उपादान कारण (भौतिक कारण) और निमित्त कारण (कुशल कारण) हैं। उनकी दिव्य ऊर्जा इन तत्वों के रूप में प्रकट होती है, जो फिर ब्रह्मांड में सभी सजीव और निर्जीव वस्तुओं को बनाने के लिए विभिन्न अनुपातों में संयोजित होते हैं।

सर्वव्यापी प्रकृति यह नाम कालभैरव की सर्वव्यापी प्रकृति पर जोर देता है। वे मूलभूत वास्तविकता हैं जिससे सभी रूप उत्पन्न होते हैं और जिसमें वे अंततः विलीन हो जाते हैं। प्रत्येक जीवित प्राणी, सबसे छोटे सूक्ष्मजीव से लेकर सबसे बड़े ब्रह्मांडीय इकाई तक, अनिवार्य रूप से इन पाँच तत्वों की अभिव्यक्ति है, और इस प्रकार, स्वयं कालभैरव की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है। यह उनकी अंतर्निहितता पर प्रकाश डालता है, जिसका अर्थ है कि वे सृष्टि के हर पहलू में मौजूद हैं और व्याप्त हैं।

यह नाम ब्रह्मांड के मूलभूत निर्माण खंडों के साथ उनकी पहचान की एक गहन पुष्टि है, जो उन्हें सभी ब्रह्मांडीय पदार्थ और जीवन के अंतिम स्रोत और अवतार के रूप में स्थापित करता है।

३८०. प्रभंजनाय

उन प्रभु को नमन जो सभी बाधाओं को नष्ट करने वाले एक महान, भयंकर तूफान हैं।

विस्तार : प्रभञ्जनाय नाम संस्कृत शब्द प्रभञ्जन से लिया गया है, जो "प्र" (एक उपसर्ग जो तीव्रता से, पूरी तरह से या पूर्ण रूप से दर्शाता है) और "भंजन" (तोड़ना, चकनाचूर करना या नष्ट करना) को जटिल रूप से जोड़ता है।

बाधाओं का महान विध्वंसक प्रभञ्जन का शाब्दिक अर्थ है "एक हिंसक तोड़ना या चकनाचूर करना" या "तूफान" (विशेष रूप से एक तूफान या बवंडर)। कालभैरव के संदर्भ में, यह नाम उनकी दुर्जेय शक्ति को दर्शाता है कि वे अपने भक्तों के सामने आने वाली सभी आंतरिक और बाहरी बाधाओं, रुकावटों और अवरोधों को पूरी तरह से ध्वस्त और दूर करते हैं। वह दिव्य शक्ति हैं जो मार्ग को साफ करती हैं, आध्यात्मिक प्रगति और सांसारिक कल्याण के सभी अवरोधों को दूर करती हैं।

ब्रह्मांडीय तूफान जैसे एक तूफानी तूफान पेड़ों को उखाड़ देता है, संरचनाओं को ध्वस्त कर देता है और वातावरण को साफ कर देता है, वैसे ही कालभैरव प्रभञ्जन के रूप में नकारात्मकता, अज्ञानता, अहंकार और सभी प्रकार के आध्यात्मिक और भौतिक बंधनों को दूर कर देते हैं। वह विघटनकारी ऊर्जा हैं जो शत्रुतापूर्ण या स्थिर चीजों को बलपूर्वक हटाकर शुद्ध करती हैं।

भ्रम का नाश करने वाला यह विनाशकारी शक्ति केवल भौतिक नहीं है; यह अज्ञानता (अविद्या) और भ्रम (माया) के उन्मूलन तक फैली हुई है जो मानव मन को भ्रमित करती है। वह उन भ्रमों को तोड़ते हैं जो किसी को अपने सच्चे स्वरूप को जानने से रोकते हैं, जिससे मुक्ति मिलती है।

अदम्य शक्ति का प्रतीक प्रभञ्जन कालभैरव के अदम्य, अथक और निर्णायक पहलू का प्रतिनिधित्व करता है। जब उनका आह्वान किया जाता है, तो वह एक अप्रतिरोध्य शक्ति के रूप में प्रकट होते हैं जो यह सुनिश्चित करती है कि भक्त की यात्रा प्रतिकूल शक्तियों या स्वयं द्वारा बनाई गई सीमाओं से बाधित न हो। वह परम संरक्षक हैं जो मार्ग को साफ करते हैं, यह सुनिश्चित करते हैं कि धार्मिकता बनी रहे और आध्यात्मिक आकांक्षाएं पूरी हों।

381. मस्करिणे

बांस का डंडा धारण करने वाले भटकते हुए संन्यासी को नमन।

विस्तार : मस्करिन नाम उस एक को संदर्भित करता है जो "मस्कर" धारण करता है।

मस्कर: एक तपस्वी का बांस का डंडा "मस्कर" शब्द विशेष रूप से बांस के डंडे को दर्शाता है, जिसे पारंपरिक रूप से भारत में घुमंतू तपस्वी, भिक्षु या संन्यासी धारण करते हैं। यह डंडा उनके त्याग, आध्यात्मिक अनुशासन के जीवन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और सांसारिक संपत्ति से उनके वैराग्य का प्रतीक है। यह लंबी यात्राओं के दौरान सहारे के लिए एक साधारण उपकरण और उनके एकाकी, तपस्वी अस्तित्व का प्रतिनिधित्व है।

भैरव एक मस्करिन के रूप में जब भगवान कालभैरव को मस्करिन के रूप में संदर्भित किया जाता है, तो यह उनके प्रतिमा विज्ञान और दार्शनिक महत्व के एक गहरे पहलू को उजागर करता है।

त्याग और अतिक्रमण का प्रतीक: एक घुमंतू तपस्वी का रूप धारण करके, कालभैरव परम त्याग का प्रतीक हैं। वह सभी सांसारिक आसक्तियों, सामाजिक मानदंडों और भौतिक इच्छाओं से परे हैं। यह रूप पूर्ण वैराग्य और नश्वर शरीर के साथ गैर-पहचान को दर्शाता है, जिससे उन्हें अस्तित्व की द्वैतता से परे कार्य करने की अनुमति मिलती है।

सभी मार्गों से परे भटकने वाला: एक मस्करिन के रूप में, उन्हें वह भी माना जाता है जिसने सभी निर्धारित मार्गों और हठधर्मिता को पार कर लिया है। वह परम स्वतंत्रता है, किसी भी सांसारिक सीमाओं से बंधा नहीं है। उनकी भटकनें उद्देश्यहीन नहीं हैं, बल्कि उनकी सर्वव्यापकता और व्यवस्था बनाए रखने और न्याय करने के लिए सभी लोकों, अपवित्र और पवित्र दोनों में उनके संचलन का प्रतिनिधित्व करती हैं।

तपस्या और आध्यात्मिक शक्ति: तपस्वी का डंडा तपस्या (तपस्या) और गंभीर आत्म-अनुशासन के माध्यम से प्राप्त आध्यात्मिक शक्ति का भी प्रतीक है। यह कालभैरव की अपार आध्यात्मिक शक्ति और उनकी तपस्वी और अनुशासित प्रकृति के माध्यम से मुक्ति प्रदान करने की उनकी क्षमता को दर्शाता है। यह एक अनुस्मारक है कि परम शक्ति आत्म-नियंत्रण और वैराग्य से आती है।

382. परब्रह्मणे

परम, उत्कृष्ट, निरपेक्ष सत्य, परब्रह्म स्वरूप को नमन।

विस्तार : परब्रह्मणे नाम कालभैरव को परब्रह्म के रूप में संदर्भित करता है, जो हिंदू दर्शन, विशेष रूप से वेदांत में परम, सर्वोच्च और परात्पर वास्तविकता है।

• पर (Para): यह उपसर्ग "परे," "सर्वोच्च," "उच्चतम," या "परात्पर" को दर्शाता है। • ब्रह्मन् (Brahman): यह शब्द परम वास्तविकता, सभी अस्तित्व का अंतिम आधार, अद्वितीय को दर्शाता है।

परम वास्तविकता (The Absolute Reality) परब्रह्म अव्यक्त, अनंत और सर्वव्यापी दिव्य सिद्धांत है जो सभी गुणों (निर्गुण) और भेदों से परे है, फिर भी सभी प्रकट अस्तित्व का स्रोत है। यह अनिर्वचनीय, अपरिवर्तनीय और शाश्वत सत्य है। यह शब्द कालभैरव को केवल सगुण (रूप सहित) देवता के रूप में नहीं, बल्कि निराकार अस्तित्व के सार के रूप में उजागर करता है।

परात्पर और अंतर्यामी (Transcendent and Immanent) परब्रह्म के रूप में, कालभैरव परात्पर (ब्रह्मांड से परे) और अंतर्यामी (ब्रह्मांड में सब कुछ के भीतर निवास करने वाले) दोनों हैं। वह सभी ब्रह्मांडीय चक्रों का अंतिम उद्गम, पोषण और विलय हैं। यह उनकी काल (समय) के रूप में भूमिका के अनुरूप है, जो सब कुछ भस्म कर देता है, और सर्वोच्च चेतना के रूप में जो सब कुछ समाहित करता है।

परम चेतना और आनंद (Ultimate Consciousness and Bliss) परब्रह्म को अक्सर सत्-चित्-आनंद (अस्तित्व-चेतना-परम आनंद) के रूप में वर्णित किया जाता है। कालभैरव को परब्रह्म कहने का अर्थ है कि वह अनंत अस्तित्व, शुद्ध चेतना और शुद्ध आनंद के प्रतीक हैं, जो सभी जीवन और ब्रह्मांड के लिए मौलिक हैं।

द्वंद्वों से परे (Beyond Dualities) यह नाम इस बात पर जोर देता है कि कालभैरव, अपने उच्चतम पहलू में, सभी द्वंद्वों से परे हैं - अच्छे और बुरे, सृजन और विनाश, अस्तित्व और गैर-अस्तित्व से परे। वह स्वयं वास्तविकता के अद्वैत (अद्वैत) स्वरूप का प्रतिनिधित्व करते हैं, जहाँ सभी भेद अंततः एक सर्वोच्च सत्ता में विलीन हो जाते हैं। इसलिए, उन्हें परब्रह्म के रूप में नमन करना उन्हें ब्रह्मांड के परम, असीमित सत्य के रूप में पहचानना है।

383. पारिजाताय

पारिजात वृक्ष स्वरूप,Celestial, इच्छा-पूर्ति करने वाले को नमन।

विस्तार : पारिजाताय नाम पारिजात को संदर्भित करता है, जो एक पौराणिक, इच्छा पूर्ण करने वाला दिव्य वृक्ष है, जिसे हिंदू परंपराओं में पूजा जाता है।

दिव्य इच्छा पूर्ण करने वाला वृक्ष हिंदू पौराणिक कथाओं में, पारिजात इंद्र के स्वर्ग के पांच दिव्य वृक्षों में से एक है। यह अपनी मनमोहक सुगंध और किसी भी इच्छा को पूरा करने की शक्ति के लिए प्रसिद्ध है। ऐसा माना जाता है कि इसके फूल कभी मुरझाते नहीं और असाधारण सुंदरता रखते हैं। कालभैरव को पारिजात वृक्ष से जोड़कर, भक्त उन्हें पूर्ति के अंतिम स्रोत के रूप में स्वीकार करते हैं, जो सभी इच्छाओं को पूरा करने में सक्षम हैं, चाहे वे भौतिक हों या आध्यात्मिक।

प्रचुरता और परोपकार का प्रतीक पारिजात वृक्ष दिव्य प्रचुरता, समृद्धि और ईश्वर की असीम कृपा का प्रतीक है। जिस प्रकार वृक्ष निरंतर सुगंधित फूल और फल देता है, उसी प्रकार कालभैरव, इस पहलू में, अपने भक्तों पर निरंतर आशीर्वाद बरसाते हुए देखे जाते हैं। यह उनके भयानक स्वरूप के बावजूद उनकी परोपकारी प्रकृति को दर्शाता है।

भौतिक इच्छाओं का अतिक्रमण जबकि पारिजात इच्छाओं को पूरा करता है, एक गहरे आध्यात्मिक संदर्भ में, "पारिजात" होने का अर्थ है कि कालभैरव अंतिम लक्ष्य हैं, वही पूर्ति जो सभी सांसारिक इच्छाओं से परे है। वह केवल क्षणिक इच्छाओं के ही नहीं, बल्कि मोक्ष (मुक्ति) और आनंद (परमानंद) के भी प्रदाता हैं। सच्चे साधक के लिए, उनके द्वारा दी गई सबसे बड़ी "इच्छा" दिव्य के साथ मिलन, दुख का अंत और आध्यात्मिक प्राप्ति है।

ब्रह्मांड से संबंध एक स्वर्गीय वृक्ष के रूप में, पारिजात कालभैरव को दिव्य लोकों और ब्रह्मांडीय व्यवस्था से भी जोड़ता है। यह उनकी सर्वव्यापकता और सांसारिक तथा स्वर्गीय दोनों क्षेत्रों पर उनकी महारत को दर्शाता है, जिससे वे सभी अच्छी चीजों, दृश्य और अदृश्य के सर्वोच्च दाता बन जाते हैं।

384. परात्पराय

जो पर से भी परे हैं, सर्वोच्च से भी ऊँचे हैं, उन (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : परात्पराय नाम कालभैरव का एक गहन दार्शनिक वर्णन है, जो संस्कृत शब्दों परात् पर से बना है।

पर (Para): इस शब्द के अर्थ की कई परतें हैं। इसका अर्थ है "परे," "सर्वोच्च," "उच्चतम," "परम," "अतीत," या "दूसरा पक्ष।" आध्यात्मिक और दार्शनिक संदर्भों में, यह अक्सर परम वास्तविकता या सर्वोच्च सिद्धांत को संदर्भित करता है।

परात् (Parāt): यह पर का अपादान कारक रूप है, जिसका अर्थ है "परे से" या "परे से भी।"

परात्पर (Parātpara): इस प्रकार, परात्पर का शाब्दिक अर्थ है "उच्चतम से भी उच्चतर," "परे से भी परे," या "जो अतीत को भी पार कर जाता है।"

अतीत वास्तविकता (Transcendent Reality) यह नाम कालभैरव की परम और सर्वोच्च अतीतता पर जोर देता है। यह दर्शाता है कि वह केवल मौजूदा सत्ताओं में उच्चतम नहीं हैं, बल्कि एक ऐसी सत्ता हैं जो "उच्चतम" की अवधारणा को भी पार कर जाती है। वह सभी समझ, श्रेणियों और द्वंद्वों से परे हैं। सभी वैचारिक ढाँचे, जिनमें सर्वोच्च सिद्धांत का वर्णन करने वाले भी शामिल हैं, अंततः उनके वास्तविक स्वरूप को समझने में विफल रहते हैं।

परम स्रोत और गंतव्य (Ultimate Source and Destination) ब्रह्मांडीय अर्थ में, परात्पर का तात्पर्य है कि वह परम स्रोत हैं जहाँ से उच्चतम स्वर्ग और दिव्य लोक भी उत्पन्न होते हैं, और वह परम गंतव्य हैं जिसमें सभी चीजें विलीन हो जाती हैं। वह सभी अस्तित्व का आधार हैं, फिर भी वह इसके उतार-चढ़ाव से अछूते हैं।

द्वंद्वों और सीमाओं से परे (Beyond Dualities and Limitations) यह पदनाम कालभैरव को सभी रूपों, गुणों (निर्गुण), और यहाँ तक कि गुणों के अभाव से भी परे रखता है। वह नाम, रूप, समय, स्थान और कार्य-कारण से परे हैं—परम, अनकंडीशंड (unconditioned) वास्तविकता। यह एक ऐसी चेतना की ओर इशारा करता है जो न केवल सब कुछ व्याप्त करती है बल्कि सब कुछ पार भी करती है, जिससे वह पूरी तरह से अद्वितीय और अतुलनीय बन जाते हैं।

अगम्य दिव्य (The Incomprehensible Divine) कालभैरव को परात्पर के रूप में ध्यान करना भक्त को उन्हें एक अनंत, अगम्य और अंततः अवर्णनीय वास्तविकता के रूप में सोचने के लिए प्रोत्साहित करता है जिसे किसी भी वर्णन या समझ से समाहित नहीं किया जा सकता है, इस प्रकार विनम्रता और एक व्यापक आध्यात्मिक दृष्टिकोण को बढ़ावा मिलता है।

385. प्रतिष्ठिताय

जो दृढ़ता से स्थापित हैं और समस्त अस्तित्व के आधार हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : प्रतिष्ठिताय (Pratiṣṭhitāya) नाम संस्कृत मूल 'स्था' (sthā) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "खड़ा होना," "निवास करना," "दृढ़ होना," या "स्थापित होना।" उपसर्ग 'प्रति-' (prati) इस अर्थ को तीव्र करता है, जो एक मजबूत, मौलिक और अटूट स्थापना का सुझाव देता है।

दृढ़ता से स्थापित यह नाम कालभैरव को उस परम, अटूट वास्तविकता के रूप में दर्शाता है जिस पर संपूर्ण सृष्टि टिकी हुई है। वह केवल उपस्थित नहीं हैं, बल्कि गहराई से स्थापित और अपरिवर्तनीय हैं। यह उनके शाश्वत और अपरिवर्तनीय सिद्धांत के रूप में उनकी प्रकृति की ओर इशारा करता है जो क्षणभंगुर ब्रह्मांड का आधार है। जैसे एक मजबूत नींव एक विशाल संरचना को सहारा देती है, कालभैरव सभी अस्तित्व का मौलिक आधार हैं जिसे हिलाया या बदला नहीं जा सकता।

सभी अस्तित्व का आधार प्रतिष्ठित के रूप में, कालभैरव हर चीज के मूल आधार, उपस्तर और आवश्यक सत्य का प्रतीक हैं। दार्शनिक शब्दों में, वह 'अधिष्ठान' (adhishthana) हैं, सभी घटनाओं का पूर्ण समर्थन। इसमें न केवल भौतिक ब्रह्मांड शामिल है, बल्कि सभी नियम, सिद्धांत और स्वयं चेतना भी शामिल है। उनकी स्थापित उपस्थिति के बिना, कुछ भी अस्तित्व में नहीं आ सकता, खुद को बनाए नहीं रख सकता, या कोई वास्तविकता नहीं रख सकता।

पवित्रीकरण और अभिषेक एक अन्य अर्थ में, 'प्रतिष्ठा' (pratiṣṭhā) "पवित्रीकरण," "अभिषेक," या विशिष्ट अनुष्ठानों के माध्यम से एक मंदिर में देवता की स्थापना के कार्य को भी संदर्भित करता है। इस प्रकार, यह नाम यह भी दर्शाता है कि कालभैरव वह सार हैं जो सभी पवित्र स्थानों और वस्तुओं

में पवित्रता भरते हैं। वह दिव्य ऊर्जा हैं जो एक पवित्र छवि या स्थान को जीवंत और शक्तिशाली बनाती हैं।

अंतर्निहित और पारलौकिक प्रतिष्ठित अंतर्निहितता (हर चीज के भीतर होना) और पारगमन (हर चीज से परे होना) दोनों का अर्थ है। वह अस्तित्व के ताने-बाने में दृढ़ता से स्थापित हैं, फिर भी उनका सार निर्मित दुनिया की सभी सीमाओं और शर्तों से परे भी है। यह दोहरा पहलू उनके सर्वोच्च पद को सभी के आधार और अंतिम वास्तविकता के रूप में पुष्ट करता है।

386. प्रमाणज्ञाय

सभी वैध ज्ञान साधनों (प्रमाणों) के परम ज्ञाता को नमन।

विस्तार : प्रमाणज्ञाय नाम प्रमाण और ज्ञाय का एक यौगिक है।

प्रमाण (Pramāṇa): यह हिंदू दर्शन, विशेष रूप से ज्ञानमीमांसा (ज्ञान के सिद्धांत) में एक मूलभूत अवधारणा है। प्रमाण का अर्थ है "ज्ञान के साधन" या "जानने के वैध तरीके।" इनमें प्रत्यक्ष बोध (प्रत्यक्ष), अनुमान (अनुमान), शाब्दिक गवाही (शब्द), तुलना (उपमान), और अनुपस्थिति/अज्ञान (अनुपलब्धि) शामिल हैं। प्रत्येक विचारधारा इनमें से विशिष्ट साधनों के समूह को सटीक ज्ञान प्राप्त करने के लिए वैध मानती है।

ज्ञाय (Jñāya): यह 'ज्ञा' धातु से आया है, जिसका अर्थ है "जानना," और इसका तात्पर्य "जानने वाला" या "जो ज्ञान रखता है।"

ज्ञान में परम प्राधिकारी (The Ultimate Authority in Knowledge) प्रमाणज्ञ होने का अर्थ है "ज्ञान के सभी वैध साधनों का ज्ञाता।" काल भैरव, प्रमाणज्ञ के रूप में, केवल वह नहीं हैं जो चीजें जानते हैं, बल्कि वह उन तंत्रों और सिद्धांतों को समझते हैं जिनके द्वारा सच्चा ज्ञान प्राप्त किया जाता है। वह सत्य और असत्य के परम निर्णायक हैं, जो सटीक रूप से यह पहचानते हैं कि वैध संज्ञान क्या है और क्या नहीं।

सभी ज्ञानमीमांसा का स्रोत (Source of All Epistemology) यह नाम दर्शाता है कि काल भैरव सभी ज्ञानमीमांसीय सिद्धांतों का स्रोत और अवतार हैं। वह वह हैं जो सही और गलत समझ, स्पष्टता और भ्रम के बीच अंतर करने के नियम स्थापित करते हैं। उनका ज्ञान मानवीय धारणा या अनुमान की सीमाओं या संभावित त्रुटियों के अधीन नहीं है।

परम ज्ञाता (The Supreme Knower) प्रमाणों के ज्ञाता के रूप में, वह पूर्ण, दोषरहित ज्ञान का प्रतीक हैं। उनकी समझ संदेह, गलत धारणा और भ्रम के सभी रूपों से परे है। एक साधक के लिए, इस नाम से उनका आह्वान विवेक, सत्य को समझने में मार्गदर्शन और बौद्धिक अज्ञान को दूर करने के लिए एक अपील है जो आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डालता है।

387. प्रमाणाय

जो परम सत्ता और सभी प्रमाणों का मापदंड है, उन्हें नमन।

विस्तार : प्रमाणाय (Pramānāya) नाम संस्कृत शब्द 'प्रमाण' को संदर्भित करता है, जो भारतीय दर्शन, विशेष रूप से ज्ञानमीमांसा (ज्ञान का अध्ययन) में एक आधारभूत अवधारणा है।

परम सत्ता प्रमाण का शाब्दिक अर्थ है "ज्ञान का साधन," "प्रमाण," या "मानक।" जब इसे कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह दर्शाता है कि वे सर्वोच्च और परम सत्ता हैं, वह स्रोत और मानक हैं जिसके द्वारा सभी सत्य, वैधता और ज्ञान स्थापित होते हैं। दार्शनिक प्रणालियों में, प्रमाण वे वैध साधन हैं जिनके द्वारा मनुष्य सटीक और विश्वसनीय ज्ञान (प्रमा) प्राप्त करते हैं। प्रमाण होने के नाते, कालभैरव आत्म-मौजूद और निर्विवाद सत्य का प्रतीक हैं जिसे किसी बाहरी सत्यापन की आवश्यकता नहीं है। वे सभी वास्तविकता के लिए परम संदर्भ हैं।

सभी प्रमाणों का मानक "सभी प्रमाणों के मानक" के रूप में, कालभैरव इस बात के अंतिम निर्णायक का प्रतिनिधित्व करते हैं कि क्या वास्तविक है और क्या भ्रम है। वैध ज्ञान का कोई भी रूप, चाहे वह प्रत्यक्ष (Pratyakṣa), अनुमान (Anumāna), शाब्दिक गवाही (Śabda), या अन्य माध्यमों से हो, अंततः अपना सत्य और विश्वसनीयता उनसे प्राप्त करता है। वे सर्वोच्च मानदंड हैं जिसके विरुद्ध ज्ञान के सभी दावों को मापा जाता है।

संदेह और भ्रम से परे एक आध्यात्मिक संदर्भ में, कालभैरव को प्रमाण के रूप में स्वीकार करने का अर्थ है यह पहचानना कि उनका अस्तित्व और प्रकृति संदेह, अनुमान या अनुभवजन्य सीमा से परे है। वे केवल सिद्ध होने वाली अवधारणा नहीं हैं, बल्कि स्वयं प्रमाण का सिद्धांत हैं। इसका तात्पर्य यह है कि कालभैरव की प्रत्यक्ष अनुभूति ही परम वैध ज्ञान है, जो व्यक्ति को भौतिक संसार के भ्रमों से परे ले जाती है। वे आत्म-प्रकाशित सत्य हैं जो अज्ञान को दूर करते हैं।

388. परमार्थदाय

परम और अंतिम सत्य प्रदान करने वाले को नमन।

विस्तार : परमार्थदाय नाम एक गहन संयुक्त शब्द है:

परमार्थ (Paramāartha): यह शब्द परम (सर्वोच्च, अंतिम, उच्चतम) और अर्थ (अर्थ, उद्देश्य, सत्य, वास्तविकता) का एक संयोजन है। इस प्रकार, परमार्थ का अर्थ है "सर्वोच्च सत्य," "परम वास्तविकता," या "सर्वोच्च आध्यात्मिक भलाई।" हिंदू दर्शन में, विशेष रूप से अद्वैत वेदांत और शैव सिद्धांत में, परमार्थ उस निरपेक्ष, पारलौकिक वास्तविकता को संदर्भित करता है जो सभी द्वैत से परे है, अवधारणा से परे है, और अक्सर इसे ब्रह्म या शिव के परम स्वरूप के समान माना जाता है। यह अद्वैत का सत्य है जहाँ व्यक्तिगत आत्मा (आत्मन) सार्वभौमिक आत्मा (ब्रह्म) के समान है।

दाय (Dāya): यह "दा" धातु से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है देना, प्रदान करना या प्रदान करना।

परम सत्य का दाता परमार्थदाय के रूप में, भगवान कालभैरव को इस परमार्थ – परम, निरपेक्ष और मुक्तिदायक सत्य के दाता के रूप में मनाया जाता है। यह केवल कोई सत्य नहीं है, बल्कि सर्वोच्च आध्यात्मिक अनुभूति है जो जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) से मोक्ष (मुक्ति) की ओर ले जाती है। वह दिव्य के साथ अपनी पहचान की समझ, इस अहसास को प्रदान करते हैं कि सभी भेद अंततः भ्रामक हैं, और केवल सर्वोच्च, अद्वैत चेतना ही वास्तविक है।

द्वैत के भ्रम को तोड़ना द्वैत और अस्थायी वास्तविकताओं के भ्रम में डूबे साधकों के लिए, कालभैरव, इस पहलू में, दिव्य गुरु के रूप में कार्य करते हैं जो माया (ब्रह्मांडीय भ्रम) के पर्दे को हटाते हैं और अस्तित्व के अद्वैत सार को प्रकट करते हैं। परमार्थ का यह दान अनुग्रह का अंतिम कार्य है, जो आत्म-साक्षात्कार और स्वतंत्रता की ओर ले जाता है।

अस्तित्व का सच्चा उद्देश्य यह नाम यह भी दर्शाता है कि कालभैरव भक्तों को उनके अस्तित्व के सच्चे उद्देश्य (अर्थ) की ओर मार्गदर्शन करते हैं, जो केवल सांसारिक pursuits तक सीमित नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक मुक्ति और दिव्य के साथ मिलन की प्राप्ति को भी शामिल करता है। वह सीमित अहंकार को पार करने और अपने सच्चे, विस्तृत स्वरूप का अनुभव करने में मदद करते हैं।

389. पञ्चब्रह्मणे

पाँच मुख वाले ब्रह्मा के रूप में पाँच ब्रह्मांडीय कार्यों का प्रतिनिधित्व करने वाले को नमन।

विस्तार : पञ्चब्रह्मणे नाम भगवान कालभैरव को पाँच सर्वोच्च ब्रह्मों के अवतार के रूप में दर्शाता है, जो परम सत्य के मूलभूत पंच-आयामी पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

ब्रह्म के पाँच मुख यह शब्द शिव (या ब्रह्म) के पाँच पहलुओं या मुखों को संदर्भित करता है जो सभी लौकिक कार्यों को नियंत्रित करते हैं। ये हैं: • सदाशिव (ईशान): ऊपर की ओर स्थानिक दिशा से जुड़ा मुख, अनुग्रह (कृपा, शुद्ध चेतना में विलीन होना), पाँचवें तत्व (आकाश/आकाश), और शुद्ध ज्ञान की शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। • तत्पुरुष: पूर्व की ओर मुख किए हुए, सृष्टि (उत्पत्ति), वायु तत्व (वायु), और छिपाव (तिरोभाव) का प्रतिनिधित्व करता है। • अघोर: दक्षिण की ओर मुख किए हुए, संरक्षण (स्थिति) और अग्नि तत्व (अग्नि) का प्रतिनिधित्व करता है, जो विनाश (संहार) से संबंधित है। यह मुख भयंकर और परिवर्तनकारी है। • वामदेव: उत्तर की ओर मुख किए हुए, रखरखाव (संहार) और जल तत्व (जल) का प्रतिनिधित्व करता है, जो संरक्षण और अस्पष्टता का प्रतीक है। • सद्योजात: पश्चिम की ओर मुख किए हुए, विघटन (निग्रह) और पृथ्वी तत्व (पृथ्वी) का प्रतिनिधित्व करता है, जो अभिव्यक्ति की शक्ति का प्रतीक है।

लौकिक कार्य और तत्व ये पाँच पहलू केवल मुख नहीं हैं, बल्कि लौकिक सिद्धांत (तत्त्व) हैं जो पूरे ब्रह्मांड को समाहित करते हैं। प्रत्येक मुख एक विशिष्ट दिशा, एक लौकिक कार्य, एक तत्व और एक विशेष प्रकार की ऊर्जा या शक्ति से जुड़ा है। कालभैरव, पञ्चब्रह्मणे के रूप में, सृष्टि से लेकर विघटन और मुक्ति तक इन सभी कार्यों की समग्रता का प्रतीक हैं। वे जीवनदाता, पालक, संहारक, छिपाने वाले और प्रकट करने वाले हैं।

परम सार का सार कालभैरव को पञ्चब्रह्मणे के रूप में पहचान कर, यह पुष्टि की जाती है कि वे केवल अन्य देवताओं में से एक देवता नहीं हैं, बल्कि इन पाँच मूलभूत पहलुओं के माध्यम से प्रकट होने वाली परम, सर्व-समावेशी वास्तविकता (ब्रह्म) हैं। वे सभी अस्तित्व के स्रोत, पालक और अंतिम अंत हैं, जो दिव्य शक्ति और ज्ञान के पूर्ण स्पेक्ट्रम का प्रतीक हैं। यह अवधारणा शैव परंपरा में उनके सर्वोच्च अधिकार और सार्वभौमिकता को रेखांकित करती है।

३९०. सत्पतये

पुण्यात्माओं और सज्जनों के स्वामी और संरक्षक को नमन।

विस्तार : सत्पतये नाम संस्कृत के शब्दों 'सत्' और 'पति' से लिया गया है।

सत् (Sat): यह शब्द हिंदू दर्शन में अर्थों से समृद्ध है, जिसमें सत्य, वास्तविकता, अच्छाई, सद्गुण, जो विद्यमान है, और धार्मिकता शामिल हैं। उच्चतम अर्थ में, सत् परम सत्य, शाश्वत वास्तविकता, स्वयं ब्रह्म को संदर्भित करता है। यह उस चीज़ को दर्शाता है जो शुद्ध, संपूर्ण, सही और वास्तव में विद्यमान है - अच्छाई और सद्गुण का सार।

पति (Pati): का अर्थ है स्वामी, मालिक, रक्षक या पति।

सत्य और अच्छाई के स्वामी जब संयुक्त किया जाता है, तो सत्पति का अर्थ "सत्य के स्वामी," "अच्छाई के स्वामी," या "सद्गुणों के रक्षक" होता है। यह धर्म (धार्मिकता) के दिव्य संरक्षक के रूप में भगवान कालभैरव की भूमिका पर प्रकाश डालता है। वह सर्वोच्च सत्ता हैं जो सत्य और अच्छाई का प्रतीक हैं, और अपने स्वभाव से, वह ब्रह्मांड में सभी शुद्ध और सद्गुणी चीज़ों के साथ संरेखित हैं। उनकी उपस्थिति यह सुनिश्चित करती है कि शाश्वत सत्य बनाए रखे और संरक्षित किए जाएं।

सद्गुणों के रक्षक यह नाम विशेष रूप से उन लोगों के लिए उनके सुरक्षात्मक पहलू पर जोर देता है जो सद्गुण, ईमानदारी और आध्यात्मिक अखंडता के मार्ग पर चलते हैं। जैसे वह दुष्टों और धर्म से विचलित होने वालों के प्रति भयंकर हैं, वैसे ही वह धर्मपरायण जीवन जीने वालों को अपना परोपकारी संरक्षण प्रदान करते हैं। वह एक संरक्षक के रूप में कार्य करते हैं, उन्हें नकारात्मक शक्तियों, बाधाओं और अधर्मी कार्यों के परिणामों से बचाते हैं।

वास्तविकता का अवतार दूसरों की रक्षा करने के अलावा, सत्पति यह भी दर्शाता है कि कालभैरव स्वयं परम वास्तविकता (सत्) हैं। वह केवल वास्तविकता के रक्षक नहीं हैं बल्कि उसके मूल तत्व हैं। यह अद्वैत वेदांत की अवधारणा के अनुरूप है कि वास्तविकता का सच्चा स्वरूप सत्, चित्, आनंद (अस्तित्व, चेतना, परमानंद) है, और कालभैरव, शिव के एक रूप के रूप में, इस परम सत्य का प्रतीक हैं।

391. परमात्मने

जो परम, सार्वभौमिक आत्मा, परमात्मा हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : परमात्मा नाम हिंदू दर्शन में सबसे गहन दार्शनिक शब्दों में से एक है, जिसमें परम (सर्वोच्च, अंतिम, उच्चतम) और आत्मा (स्वयं, आत्मा, चेतना) शामिल हैं।

परम आत्मा परमात्मा सर्वोच्च, सार्वभौमिक स्वयं या आत्मा को दर्शाता है, जो व्यक्तिगत आत्मा (जीवात्मा) से भिन्न है, लेकिन अद्वैत दर्शन में अंततः इसके समान है। यह परम वास्तविकता, पारलौकिक और अंतर्निहित आध्यात्मिक सार को दर्शाता है जो पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त है और उसका संचालन करता है। सीमित और सशर्त व्यक्तिगत स्वयं के विपरीत, परमात्मा अनंत, शाश्वत, असीमित और अपरिवर्तनीय है।

अंतर्निहित और पारलौकिक परमात्मा को मुख्य रूप से दो तरीकों से समझा जाता है:

• पारलौकिक: सभी घटनात्मक अस्तित्व से परे, स्थान, समय और कार्य-कारण की सीमाओं से अछूता। यह अप्रकट स्रोत है जिससे सभी अभिव्यक्तियाँ उत्पन्न होती हैं। • अंतर्निहित: प्रत्येक परमाणु और प्रत्येक जीवित प्राणी के भीतर आंतरिक नियंत्रक और सर्वोच्च साक्षी (अंतर्यामी) के रूप में निवास करता है। यह व्यक्तियों के भीतर विवेक और सभी चेतना का स्रोत है।

सभी चेतना का स्रोत परमात्मा के रूप में, भगवान कालभैरव परम चेतना हैं, सभी अस्तित्व का आधार हैं। वह शुद्ध जागरूकता हैं जो सभी व्यक्तिगत मन और इंद्रियों को प्रकाशित करती हैं, उनके संशोधनों से अप्रभावित रहती हैं। यह नाम उपनिषदों की परम वास्तविकता, ब्रह्म के साथ उनकी पहचान को उजागर करता है।

माया और भ्रम का नाश करने वाला कालभैरव को परमात्मा के रूप में पहचानना यह दर्शाता है कि वह परम सत्य हैं, जो साकार होने पर माया (ब्रह्मांडीय भ्रम) के भ्रम और व्यक्तिगत अस्तित्व की द्वैतता को भंग कर देता है। वह वह ज्ञान है जो सभी चीजों की अंतर्निहित एकता को प्रकट करके व्यक्ति को जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) से मुक्त करता है।

392. परायणाय

जो परम लक्ष्य और अंतिम आश्रय हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : परायण एक गहन शब्द है जो दिव्य के अंतिम बिंदु, परम आश्रय और सभी अस्तित्व की सर्वोच्च खोज के रूप में अंतिम प्रकृति को समाहित करता है।

परम लक्ष्य (अंतिम गंतव्य) परायण का शाब्दिक अर्थ है "सर्वोच्च आश्रय," "अंतिम लक्ष्य," या "परम गंतव्य।" एक आध्यात्मिक साधक के लिए, यह सभी आध्यात्मिक अभ्यासों के अंतिम लक्ष्य को संदर्भित करता है: दिव्य के साथ मिलन। कालभैरव के संदर्भ में, वे केवल एक मार्ग नहीं हैं, बल्कि यात्रा की पराकाष्ठा हैं - मुक्ति (मोक्ष), आत्म-साक्षात्कार, या शाश्वत आनंद की वह अवस्था जिसके लिए भक्त प्रयास करते हैं। वे अंतिम गंतव्य का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसके आगे प्राप्त करने या आकांक्षा करने के लिए कुछ भी नहीं है।

अंतिम आश्रय (परम शरण) "परायण" का अर्थ "अंतिम आश्रय" या "परम सहारा" भी है। जब कोई भक्त कालभैरव की शरण लेता है, तो इसका अर्थ उनकी सुरक्षात्मक शक्ति में पूर्ण समर्पण और विश्वास है। वे सभी कठिनाइयों, भय और दुनिया की क्षणभंगुरता के सामने अटूट नींव और आश्रय बन जाते हैं। यह शरण अस्थायी आश्रयों से परे है, जो सुरक्षा की स्थायी और पूर्ण भावना प्रदान करती है।

परम (सभी से परे) दार्शनिक रूप से, परायण उस ओर इंगित करता है जो सभी सशर्त अस्तित्व, सभी सीमाओं और सभी द्वैत से परे है। यह वह पारलौकिक वास्तविकता है जो हर चीज को आधार बनाती है, फिर भी उससे भिन्न है। कालभैरव, परायण के रूप में, वे हैं जो अन्य सभी देवताओं, ब्रह्मांडीय शक्तियों और यहां तक कि कालचक्र (काल) से भी श्रेष्ठ हैं, क्योंकि वे स्वयं काल से उत्पन्न हुए हैं और उससे परे हैं। वे परम वास्तविकता (पर) हैं जो हर चीज का आधार (अयन) है।

संक्षेप में, परायणाय कालभैरव को सभी प्रश्नों के अंतिम उत्तर, सभी खोजों के अंत और पूरे ब्रह्मांड में सबसे सुरक्षित आश्रय के रूप में श्रद्धा अर्पित करता है।

393. पिनाकपाणये

पिनाक नामक महान धनुष को अपने हाथ में धारण करने वाले (भगवान) को नमन।

विस्तार : पिनाकधृक् (या पिनाकपाणये, "जो अपने हाथ में महान धनुष पिनाक धारण करते हैं") नाम भगवान भैरव के लिए एक गहन विशेषण है, जो उन्हें भगवान शिव की दुर्जेय शक्ति और प्रतीकवाद से आंतरिक रूप से जोड़ता है।

दिव्य धनुष: पिनाक पिनाक भगवान शिव का दिव्य धनुष है, जो अपार शक्ति और ब्रह्मांडीय महत्व का हथियार है। यह केवल एक भौतिक हथियार नहीं है, बल्कि शिव के आदेश पर ब्रह्मांडीय शक्तियों का एक रूपक है। यह धनुष शिव को स्वयं ब्रह्मा द्वारा दिया गया था। इसकी शक्ति अद्वितीय है, जो एक ही प्रहार से पूरे ब्रह्मांड को नष्ट करने में सक्षम है।

धनुष का प्रतीकवाद हिंदू प्रतिमा विज्ञान में, धनुष अर्थ की कई परतों का प्रतिनिधित्व करता है: • अहंकार और अज्ञान का विनाश: जैसे धनुष से छोड़ा गया तीर दुश्मन को सटीक रूप से निशाना बनाकर नष्ट कर सकता है, वैसे ही शिव का पिनाक अहंकार (अहंकार), अज्ञान (अविद्या), और आध्यात्मिक प्रगति को बाधित करने वाली सभी नकारात्मक शक्तियों को नष्ट करने की उनकी क्षमता का प्रतीक है। • ब्रह्मांडीय विघटन: चूंकि शिव हिंदू त्रिदेव में अंतिम संहारक हैं, पिनाक ब्रह्मांडीय विघटन के साधन का प्रतिनिधित्व करता है, जो सृष्टि के चक्रों को समाप्त करने में सक्षम है। भैरव के लिए, यह काल भैरव के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है, जो समय के संहारक और अंतिम विनाश के लाने वाले हैं। • सटीकता और अचूक शक्ति: धनुष से तीर खींचने और छोड़ने का कार्य अचूक संकल्प और सटीकता को दर्शाता है। यह बताता है कि भैरव के कार्य, हालांकि उग्र हैं, हमेशा सटीक, उद्देश्यपूर्ण और परम अधिकार के साथ निष्पादित होते हैं।

ब्रह्मांडीय शक्तियों पर भैरव का नियंत्रण जब भैरव को "पिनाकधृक्" के रूप में वर्णित किया जाता है, तो इसका अर्थ है कि वे इस ब्रह्मांडीय शक्ति का प्रयोग करते हैं। यह दर्शाता है: • पूर्ण संप्रभुता: वे सभी विनाशकारी शक्तियों के सर्वोच्च स्वामी हैं, जिसका अर्थ है कि अस्तित्व का ताना-बाना और उसका अंतिम विघटन उनके सीधे नियंत्रण में है। • संरक्षण और न्याय: जबकि पिनाक विनाश का हथियार है, यह धार्मिक लोगों के लिए संरक्षण का भी प्रतीक है। यह बुराई को खत्म करने और अपने भक्तों की रक्षा करने, अपनी अटूट शक्ति के माध्यम से न्याय प्रदान करने के लिए भैरव की तत्परता का प्रतीक है। • भय-उत्प्रेरक उपस्थिति: ऐसे दुर्जेय हथियार को धारण करना स्वाभाविक रूप से

विस्मय और भय को प्रेरित करता है, जो भैरव, "भयंकर एक" के रूप में उनके पहलू को पुष्ट करता है। हालांकि, उनके भक्तों के लिए, यह आतंक निडर भक्ति में बदल जाता है, क्योंकि वे जानते हैं कि यह शक्ति उनके अंतिम आध्यात्मिक लाभ के लिए प्रयोग की जाती है।

संक्षेप में, पिनाकधृक् भैरव को परम ब्रह्मांडीय शक्ति के धारक, अंधकार के संहारक और अपने सर्वोच्च अधिकार के माध्यम से परम रक्षक के रूप में स्थापित करता है।

394. प्राम्शवे

जो ऊँचे, भव्य और प्रभावशाली कद के हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : प्रांशवे नाम संस्कृत शब्द प्रांशु (प्रंशु) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "ऊँचा," "भव्य," "उच्च," "प्रभावशाली," या "विशाल।" यह नाम कालभैरव की शानदार और विस्मयकारी शारीरिक उपस्थिति के साथ-साथ उनकी उन्नत आध्यात्मिक और ब्रह्मांडीय स्थिति को भी दर्शाता है।

प्रभावशाली कद और दुर्जेयता शाब्दिक अर्थ में, प्रांशु कालभैरव के विशाल और दुर्जेय रूप को संदर्भित करता है। देवता, जब शक्तिशाली या ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं को प्रकट करते हैं, तो अक्सर उनके पारलौकिक स्वरूप को व्यक्त करने के लिए उन्हें विशाल अनुपात में वर्णित किया जाता है। यह ऊँचा, प्रभावशाली कद केवल शारीरिक नहीं है; यह एक अदम्य और अजेय उपस्थिति को दर्शाता है जो अन्य देवताओं और ब्रह्मांडीय शक्तियों सहित सभी प्राणियों से भय और सम्मान प्राप्त करती है। यह उनकी सभी बाधाओं और खतरों को दूर करने की शक्ति को दृश्य रूप से प्रस्तुत करता है।

उच्च आध्यात्मिक उत्थान शारीरिक से परे, "भव्य" उनकी सर्वोच्च आध्यात्मिक ऊंचाई और उन्नत चेतना को भी दर्शाता है। शिव के एक रूप के रूप में, कालभैरव परम सत्य हैं, जो सभी द्वंद्वों और भौतिक सीमाओं से परे हैं। उनकी भव्यता सर्वोच्च चेतना के रूप में उनकी स्थिति को इंगित करती है, जो अस्तित्व की सांसारिक चिंताओं से कहीं ऊपर है, फिर भी विरोधाभासी रूप से, सृष्टि और विनाश के ब्रह्मांडीय नृत्य में गहराई से शामिल है। यह मुक्ति (मोक्ष) के दाता और योगिक शक्तियों (सिद्धियों) के स्वामी के रूप में उनकी उच्च आध्यात्मिक स्थिति को संदर्भित करता है।

ब्रह्मांडीय पैमाना और सार्वभौमिक उपस्थिति "प्रांशु" शब्द एक ब्रह्मांडीय पैमाने को दर्शाता है। उनका रूप पूरे ब्रह्मांड को समाहित करता है, उनका सिर स्वर्ग को छूता है और उनके पैर पाताल लोक में निहित हैं। यह बताता है कि वे सर्वव्यापी और सर्वशक्तिमान हैं, वह मूल आधार जिस पर ब्रह्मांड टिका हुआ है। उनकी विशालता भक्तों को दिव्य के अनंत स्वरूप और मानवीय धारणा की सीमाओं की याद दिलाती है।

अटूट न्याय और अधिकार का प्रतीक एक ऊँची, प्रभावशाली आकृति अक्सर अधिकार और अटूट इच्छाशक्ति का प्रतीक होती है। कालभैरव, इस पहलू में, परम ब्रह्मांडीय न्याय (धर्म) और ब्रह्मांडीय नियमों के अटूट प्रवर्तन का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनकी प्रभावशाली उपस्थिति यह सुनिश्चित करती है कि व्यवस्था बनी रहे और सभी कार्य, अच्छे या बुरे, अनिवार्य रूप से अपने नियत परिणामों को प्राप्त करेंगे।

395. प्रत्ययाय

जो दृढ़ विश्वास, दृढ़ आस्था और भरोसे के प्रतीक हैं, उनको नमन।

विस्तार : प्रत्ययाय नाम संस्कृत शब्द "प्रत्यय" से लिया गया है, जो विशेष रूप से दृढ़ विश्वास, आस्था और समझ के संदर्भ में गहन दार्शनिक और आध्यात्मिक महत्व से युक्त एक बहुआयामी शब्द है।

दृढ़ विश्वास और दृढ़ संकल्प का प्रतीक अपने मूल में, प्रत्यय का अर्थ है "दृढ़ विश्वास," "दृढ़ संकल्प," "भरोसा," या "आस्था।" जब इसे कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह दर्शाता है कि वे केवल आस्था के विषय नहीं हैं, बल्कि उस अटूट दृढ़ संकल्प का सार और प्रतीक हैं। वे उस परम सत्य का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसमें कोई पूर्ण विश्वास रख सकता है। कालभैरव में प्रत्यय होने का अर्थ है उनकी शक्ति, सुरक्षा और उनके दिव्य न्याय की प्रभावकारिता के संबंध में एक अटूट आंतरिक निश्चितता रखना।

सच्ची समझ का स्रोत साधारण विश्वास से परे, प्रत्यय "ज्ञान," "समझ," या "अवधारणा" को भी दर्शाता है। इस संदर्भ में, कालभैरव गहन आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि का स्रोत हैं। वे उस समझ को प्रदान करते हैं जो भ्रम को दूर करती है और सत्य की ओर ले जाती है। वे परम वास्तविकता हैं जिसे केवल बौद्धिक रूप से ही नहीं, बल्कि एक आंतरिक ज्ञान के माध्यम से समझा जाता है जो भक्त के दृष्टिकोण को बदल देता है। उनकी भक्ति चेतना की उच्च अवस्था की ओर ले जाती है, जहाँ अस्तित्व की वास्तविक प्रकृति प्रकट होती है।

आत्मविश्वास और आश्वासन प्रत्यय आगे "आत्मविश्वास" और "आश्वासन" का अर्थ भी देता है। कालभैरव अपने भक्तों में निडर आत्मविश्वास की भावना पैदा करते हैं, यह जानते हुए कि वे सभी सांसारिक और आध्यात्मिक खतरों के खिलाफ सर्वोच्च रक्षक हैं। वे उन लोगों के लिए समय और पीड़ा के चक्रों से मुक्ति का आश्वासन देते हैं जो सच्ची आस्था के साथ उनके प्रति समर्पण करते हैं।

कारण सिद्धांत कुछ दार्शनिक प्रणालियों में, "प्रत्यय" एक "कारण" या एक "साधन" को भी संदर्भित कर सकता है। इस अर्थ में, कालभैरव परम कुशल कारण हैं, सभी सृष्टि, संरक्षण और विघटन के पीछे प्रेरक शक्ति हैं। वे ब्रह्मांडीय व्यवस्था को नियंत्रित करने वाले अंतर्निहित सिद्धांत हैं, और सभी घटनाएँ उनसे उत्पन्न होती हैं और उन पर निर्भर करती हैं।

इसलिए, प्रत्ययाय को नमन करना कालभैरव को मूलभूत सत्य, अनित्यता के सामने अटूट दृढ़ विश्वास, परम ज्ञान के स्रोत और सभी अस्तित्व के परम कारण के रूप में पहचानने का एक कार्य है।

396. परवीरघ्ने

उन वीर शत्रुओं का वध करने वाले को नमन।

विस्तार : नाम परवीरघ्ने (परवीरघ्ने) संस्कृत शब्दों पर, वीर और घ्न का एक यौगिक है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "शत्रु नायकों का संहार करने वाला।" यह नाम कालभैरव के एक अत्यंत युद्धोन्मादी और सुरक्षात्मक पहलू पर जोर देता है।

बाहरी विरोधियों का संहारक (Slayer of External Adversaries) • पर (Para): यह शब्द "अन्य," "विदेशी," या "शत्रु" को संदर्भित करता है। युद्ध के संदर्भ में, यह विशेष रूप से विरोधी या शत्रु को दर्शाता है। • वीर (Vīra): इसका अर्थ है "नायक," "योद्धा," या "चैंपियन।" यह एक दुर्जेय प्रतिद्वंद्वी को इंगित करता है, न कि केवल एक पैदल सैनिक को, बल्कि एक पराक्रमी और शक्तिशाली शत्रु नेता को। • घ्ने (Ghne): मूल "हन् (han)" से व्युत्पन्न, जिसका अर्थ है "मारना," "वध करना," या "नष्ट करना।" जब संयुक्त होता है, तो घ्न "संहार करने वाला" या "विनाशक" को इंगित करता है।

इस प्रकार, परवीरघ्ने कालभैरव की सर्वोच्च शक्ति को दर्शाता है जो सबसे शक्तिशाली और वीर विरोधियों को भी पराजित और नष्ट कर सकते हैं। यह भूमिका ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) को बनाए रखने में महत्वपूर्ण है जब इसे बुराई की दुर्जेय शक्तियों से खतरा होता है। वह परम रक्षक हैं जो उन खतरों का सामना करते हैं और उन्हें समाप्त करते हैं जिन्हें अन्य देवता या नायक भी दूर नहीं कर सकते।

आंतरिक शत्रुओं का विजेता (Vanquisher of Inner Foes) शाब्दिक युद्धक्षेत्र से परे, आध्यात्मिक संदर्भ में, यह नाम एक गहरा, गूढ़ अर्थ लेता है। "शत्रु नायक" (परवीर) को शक्तिशाली आंतरिक बाधाओं और विनाशकारी प्रवृत्तियों के रूप में व्याख्या किया जा सकता है जो आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डालती हैं। इनमें शामिल हैं: • अहंकार (Ahaṅkāra): सबसे दुर्जेय आंतरिक शत्रु, जो अक्सर शक्ति या व्यक्तित्व के रूप में प्रच्छन्न होता है। • अविद्या (Avidyā): सभी दुखों और भ्रम का मूल कारण। • वासनाएँ और दुर्गुण: जैसे काम (kāma), क्रोध (krodha), लोभ (lobha), मोह (moha), और मद (mada), जो शक्तिशाली योद्धाओं की तरह, आत्म-नियंत्रण का fiercely विरोध करते हैं।

परवीरघ्ने के रूप में, कालभैरव वह दिव्य शक्ति हैं जो भक्तों को इन आंतरिक "नायकों" पर वीरतापूर्वक विजय प्राप्त करने में मदद करते हैं जो मुक्ति (mokṣa) और आत्म-साक्षात्कार के मार्ग में खड़े होते हैं। वह साधक को इन आंतरिक राक्षसों को जीतने के लिए सशक्त बनाते हैं, जिससे शुद्धि और आध्यात्मिक विजय प्राप्त होती है।

दिव्य न्याय और संरक्षण का प्रतीकवाद (Symbolism of Divine Justice and Protection) यह नाम धार्मिकों के भयंकर रक्षक और दिव्य न्याय के निष्पादक के रूप में कालभैरव की भूमिका को रेखांकित करता है। वह केवल एक निष्क्रिय पर्यवेक्षक नहीं हैं, बल्कि यह सुनिश्चित करने में एक सक्रिय भागीदार हैं कि बुराई पर अच्छाई की जीत हो, दोनों स्थूल जगत में और व्यक्ति की आत्मा के सूक्ष्म जगत में। शत्रु नायकों का उनका संहार किसी भी शक्ति के खिलाफ उनकी पूर्ण, अटूट शक्ति को प्रदर्शित करता है जो सद्भाव और सत्य को बाधित करती है।

397. प्रभाकराय

सभी प्रकाश का तेजस्वी स्रोत, सूर्य के समान स्वरूप को नमन।

विस्तार : प्रभाकराय नाम संस्कृत शब्द प्रभाकर से लिया गया है, जो दो महत्वपूर्ण शब्दों का एक यौगिक है: प्रभा और कर।

प्रभा: इस शब्द का अर्थ है "प्रकाश," "दीप्ति," "तेज," "चमक," और "रोशनी।" यह केवल भौतिक प्रकाश को ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और बौद्धिक चमक को भी दर्शाता है।

कर: इसका अर्थ है "बनाना," "कारण बनना," या "बनाने वाला" – इस संदर्भ में, "वह जो कारण बनता है या उत्सर्जित करता है।"

प्रकाश का दीप्तिमान स्रोत एक साथ रखने पर, प्रभाकर का शाब्दिक अर्थ है "प्रकाश-निर्माता" या "प्रकाश का स्रोत," और यह सूर्य (सूर्य) के लिए एक सामान्य विशेषण है। कालभैरव को प्रभाकर के रूप में संदर्भित करके, हम उन्हें सभी प्रकाश, भौतिक और लाक्षणिक दोनों का अंतिम स्रोत मानते हैं। वह ब्रह्मांडीय ज्योतिर्मय हैं जो अंधकार, अज्ञान और नकारात्मकता को दूर करते हैं।

अंधकार और अज्ञान का नाश करने वाले जैसे सूर्य की किरणें रात के अंधकार को दूर करती हैं, वैसे ही काल भैरव, प्रभाकर के रूप में, अपने भक्तों के मन से अज्ञान (अविद्या) और भ्रम (माया) के अंधकार को दूर करते हैं। वह ज्ञान (ज्ञान) और आत्म-साक्षात्कार के मार्ग को प्रकाशित करते हैं, सच्चे साधकों को आध्यात्मिक अस्पष्टता से बाहर निकालते हैं।

दिव्य ऊर्जा और जीवन का प्रतीक सूर्य पृथ्वी पर जीवन और ऊर्जा का स्रोत भी है। इसी तरह, कालभैरव, इस पहलू में, ब्रह्मांड की जीवंत, जीवन-दायक ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनकी दीप्ति केवल निष्क्रिय प्रकाश नहीं है, बल्कि एक सक्रिय, गतिशील शक्ति है जो अस्तित्व को बनाए रखती है और सभी जीवित प्राणियों को सशक्त बनाती है। यह सृष्टि के पीछे ऊर्जावान मूल और महत्वपूर्ण सिद्धांत के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है।

परम चेतना दार्शनिक रूप से, "प्रकाश" अक्सर चेतना या शुद्ध, अप्रतिबंधित जागरूकता (चित्त) का प्रतीक होता है जो सभी अस्तित्व में व्याप्त है। उन्हें प्रभाकर के रूप में संबोधित करके, हम कालभैरव को सर्वोच्च, सर्व-प्रकाशमान चेतना के रूप में पहचानते हैं, जागरूकता का सार जो शाश्वत रूप से चमकता है, भौतिक दुनिया की छाया से अछूता रहता है। वह आत्मा का प्रकाश हैं जो सभी प्राणियों के भीतर निवास करता है, उन्हें उनके अंतिम आध्यात्मिक लक्ष्य की ओर मार्गदर्शन करता है।

398. प्रत्यक्षाय

अपने भक्तों को प्रत्यक्ष और दृश्यमान होने वाले (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : प्रत्यक्षाया नाम संस्कृत शब्द प्रत्यक्ष से लिया गया है।

सीधे बोधगम्य प्रत्यक्ष का शाब्दिक अर्थ है "आँखों के सामने" या "इंद्रियों द्वारा बोधगम्य"। हिंदू ज्ञानमीमांसा (एपिस्टेमोलॉजी) में, यह ज्ञान के वैध साधनों (प्रमाण) में से एक है, जो प्रत्यक्ष बोध को दर्शाता है। जब इसे कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो इसका तात्पर्य है कि वे केवल एक अमूर्त अवधारणा या एक दूर के देवता नहीं हैं, बल्कि वे ऐसे हैं जो अपने भक्तों द्वारा सीधे प्रकट और अनुभव किए जा सकते हैं। यह प्रत्यक्ष अनुभव विभिन्न माध्यमों से हो सकता है:

• भौतिक अभिव्यक्ति: यद्यपि दुर्लभ, भैरव बहुत उन्नत और सच्चे भक्तों के लिए एक मूर्त रूप में प्रकट हो सकते हैं। • दिव्य अनुभव: भक्त उनके रूप का दर्शन, सपनों में या गहन ध्यान की स्थिति के माध्यम से अनुभव कर सकते हैं। • आंतरिक बोध: प्रत्यक्ष अपनी चेतना के भीतर उनकी उपस्थिति और शक्ति के प्रत्यक्ष आंतरिक बोध को भी संदर्भित करता है।

भक्तों के लिए दृश्यता यह पहलू भक्ति के प्रति उनकी सुलभता और प्रत्युत्तरशीलता पर जोर देता है। उन देवताओं के विपरीत जिन्हें दूरस्थ माना जा सकता है, कालभैरव स्वयं को उन लोगों द्वारा देखे जाने, सुने जाने या महसूस किए जाने की अनुमति देते हैं जो ईमानदारी से उनकी तलाश करते हैं। यह देवता और भक्त के बीच एक गहन आत्मीयता का तात्पर्य है, जहाँ दिव्य उपस्थिति पर केवल विश्वास नहीं किया जाता है, बल्कि व्यक्तिगत रूप से अनुभव किया जाता है।

संवेदी बोध से परे जबकि शाब्दिक अर्थ संवेदी बोध को संदर्भित करता है, एक आध्यात्मिक संदर्भ में, प्रत्यक्ष सामान्य इंद्रिय अनुभव से परे है। यह वास्तविकता की प्रत्यक्ष, मध्यस्थता रहित समझ, एक ज्ञान (आध्यात्मिक ज्ञान) की ओर इशारा करता है जो बौद्धिक समझ से परे है। जब कोई भक्त कालभैरव को प्रत्यक्ष के रूप में अनुभव करता है, तो इसका अर्थ है कि उसने उनके अस्तित्व और उनके सार की सच्चाई को सीधे अनुभव किया है, जिससे अक्सर गहरा आध्यात्मिक परिवर्तन और संदेहों का निवारण होता है।

दिव्य कृपा का प्रतीक यह नाम कालभैरव की कृपा (अनुग्रह) और उन लोगों के प्रति स्वयं को प्रकट करने की उनकी इच्छा को उजागर करता है जो हृदय से शुद्ध हैं और उनकी पूजा के प्रति समर्पित हैं। यह भक्तों को आश्वस्त करता है कि उनकी प्रार्थनाएँ और भक्ति व्यर्थ नहीं हैं, और यह कि दिव्य वास्तव में उपस्थित, सक्रिय और प्रत्यक्ष बातचीत के लिए उपलब्ध है।

399. प्रणवाय

ब्रह्मांड की पवित्र, आदिम ध्वनि 'ॐ' को नमन।

विस्तार : प्रणवाय नाम प्रणव को संदर्भित करता है, जो पवित्र, आदिम ध्वनि 'अउम्' या 'ॐ' है। यह नाम कालभैरव को सार्वभौमिक कंपन, वाणी और परम वास्तविकता का सार बताता है।

आदिम ध्वनि (ॐ/ओम्) प्रणव केवल एक ध्वनि नहीं है, बल्कि इसे शब्द ब्रह्म (ध्वनि-ईश्वर) या अव्यक्त परम की पहली अभिव्यक्ति माना जाता है। यह वह कंपन है जिससे समस्त सृष्टि उत्पन्न होती है और जिसमें वह अंततः लौट आती है। तीन ध्वनियाँ, अ-उ-म, दर्शाती हैं: • अ (अकार): जाग्रत अवस्था, स्थूल जगत में चेतना, सृष्टि। • उ (उकार): स्वप्न अवस्था, सूक्ष्म जगत में चेतना, संरक्षण। • म (मकार): सुषुप्ति अवस्था, कारण जगत में चेतना, विलय। 'म' के बाद आने वाला अनाहत-नाद (अनहद ध्वनि) तुरीय, शुद्ध चेतना की चौथी अवस्था का प्रतिनिधित्व करता है, जो रूप और गुणों से परे है, मौन साक्षी और मुक्ति की अवस्था है।

ब्रह्मांडीय कंपन और सृष्टि प्रणव होने के नाते, कालभैरव को ध्वनि के माध्यम से ब्रह्मांड का मूल स्रोत और पालक माना जाता है। वह अस्तित्व की अंतर्निहित गुंजन, लयबद्ध स्पंदन हैं जो सभी ब्रह्मांडीय प्रक्रियाओं - सृष्टि, संरक्षण और विलय को संचालित करता है। यह दर्शाता है कि वह परम वास्तविकता हैं जिससे सभी रूप और नाम उत्पन्न होते हैं।

मंत्रों और आध्यात्मिकता का सार प्रणव अन्य सभी मंत्रों और पवित्र उच्चारणों का मूल है। इसे हिंदू धर्म में सबसे मौलिक और शक्तिशाली मंत्र माना जाता है, जिसमें सभी ज्ञान और आध्यात्मिक सत्य समाहित हैं। प्रणव का आह्वान करना दिव्य की समग्रता का आह्वान करना है। इसलिए, कालभैरव, प्रणव के रूप में, सभी आध्यात्मिक अभ्यासों का सार, ध्यान का लक्ष्य और आत्म-साक्षात्कार का मार्ग हैं।

परम वास्तविकता और मुक्ति उन्नत आध्यात्मिक समझ में, प्रणव पर ध्यान करने से व्यक्तिगत आत्मा (आत्मा) और परम ब्रह्म के बीच परम अद्वैत की प्राप्ति होती है। कालभैरव को प्रणव के रूप में पहचानना उन्हें केवल एक भयंकर देवता के रूप में नहीं, बल्कि इस परम, अव्यक्त, और फिर भी सार्वभौमिक रूप से प्रकट, वास्तविकता के अवतार के रूप में समझना है। वह वह ध्वनि हैं जो मुक्त करती है।

400. पुरंजयाय

सभी नगरों और किलों को जीतने वाले महान विजेता को नमन।

विस्तार : पुरंजय (Purañjayāya) नाम 'पुर' और 'जय' का एक यौगिक है।

• पुर (Pura): इस संस्कृत शब्द का शाब्दिक अर्थ है "शहर," "किला," या "गढ़।" प्रतीकात्मक रूप से, यह भौतिक शहरों को संदर्भित कर सकता है, लेकिन मानव शरीर को एक शहर (नौ-द्वारों वाला शहर) के रूप में, या यहां तक कि दृढ़ लौकिक भ्रम (माया) को भी संदर्भित कर सकता है जो प्राणियों को बांधता है। यह असुरों के "तीन शहरों" (त्रिपुरा) को भी दर्शा सकता है, जिन्हें शिव ने नष्ट कर दिया था।

• जय (Jaya): इसका अर्थ है "विजय," "जीत," या "सफलता।"

त्रिपुर का विजेता (Tripura) यह विशेषण सीधे शिव के प्रसिद्ध पराक्रम, त्रिपुरांतक, त्रिपुर के विनाशक को संदर्भित करता है। असुर भाई तारकाक्ष, विद्युन्माली और कमलाक्ष ने घोर तपस्या के माध्यम से ब्रह्मा से वरदान प्राप्त किया था कि वे आकाश, पृथ्वी और पाताल में तीन शक्तिशाली शहर बना सकें, जिन्हें केवल एक ही बाण से नष्ट किया जा सकता था। ये शहर देवताओं और ऋषियों के लिए महान उत्पीड़न का स्रोत बन गए। देवों के अनुरोध पर, भगवान शिव ने त्रिपुरांतक के रूप में प्रकट होकर एक ही बाण से तीनों शहरों को एक साथ नष्ट कर दिया, जो अस्तित्व की तीन अवस्थाओं (जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति) या तीन गुणों (सत्व, रजस, तमस) के विनाश का प्रतीक है जो व्यक्तिगत आत्मा को बांधते हैं। कालभैरव, शिव का एक उग्र स्वरूप होने के नाते, स्वाभाविक रूप से इस शक्ति को धारण करते हैं।

शरीर और भौतिकता का विजेता एक गहरे, दार्शनिक स्तर पर, पुरंजय (Purañjaya) मानव शरीर के "शहर" के विजेता को संदर्भित कर सकता है। शरीर, अपनी इंद्रियों और मन के साथ, अक्सर अहंकार और आसक्तियों के किले के रूप में कार्य करता है, जो व्यक्तिगत आत्मा को भौतिक दुनिया में फंसाता है। कालभैरव, पुरंजय के रूप में, भक्तों को इन शारीरिक और भौतिक सीमाओं को पार करने में मदद करते हैं, जिससे उन्हें आध्यात्मिक मुक्ति मिलती है।

विपत्तियों का विजेता यह नाम देवता को सभी बाधाओं, शत्रुओं और नकारात्मक शक्तियों के परम विजेता के रूप में भी दर्शाता है, चाहे वे बाहरी हों (विरोधी, आपदाएं) या आंतरिक (अज्ञान, भ्रम, अहंकार)। वह सर्वोच्च शक्ति हैं जो सत्य और धार्मिकता के मार्ग में आने वाले किसी भी प्रकार के "किले" पर विजय की गारंटी देते हैं।

401. पवित्रपाणये

जिनके हाथ अत्यंत पवित्र और शुद्ध करने वाले हैं, उनको नमन।

विस्तार : पवित्रपाणये नाम संस्कृत के शब्द "पवित्र" और "पाणि" का एक यौगिक है, जो भगवान कालभैरव के दिव्य स्वरूप के एक महत्वपूर्ण पहलू को दर्शाता है।

पवित्र (Pavitra): इसका अर्थ है "शुद्ध," "पवित्र," "पावन," "संस्कारित," "शुद्ध करने वाला," या "शुद्ध करने में सक्षम।" यह केवल शारीरिक रूप से ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और अनुष्ठानिक रूप से भी पूर्ण स्वच्छता की स्थिति को दर्शाता है।

पाणि (Pāṇi): यह "हाथ" या "हाथों" को संदर्भित करता है। संस्कृत में, हाथ क्रिया, देना, लेना, आशीर्वाद देना और कृपा या दंड प्रदान करने का प्रतीक है।

अत्यंत शुद्ध हाथ (Supremely Pure Hands) पवित्रपाणये का अर्थ है कि कालभैरव के हाथ आंतरिक रूप से और अत्यंत शुद्ध हैं। यह शुद्धता केवल अपवित्रता की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि एक सक्रिय, दीप्तिमान गुण है जो हर उस चीज़ को पवित्र करता है जिसे वह छूता है या प्रदान करता है। शिव के एक उग्र रूप के रूप में, उनकी शुद्धता पारलौकिक है, किसी भी सांसारिक संदूषण या स्वच्छ और अस्वच्छ की द्वैतवादी समझ से परे है।

पवित्र करने वाली और शुद्ध करने वाली क्रिया (Sanctifying and Purifying Action) कालभैरव के हाथ केवल शुद्ध ही नहीं हैं; वे ऐसे उपकरण भी हैं जिनके माध्यम से वे दूसरों को शुद्ध करने वाली क्रियाएं करते हैं। जब वे वरदान देते हैं, बुराई को दंडित करते हैं, या सुरक्षा प्रदान करते हैं, तो उनकी क्रियाएं स्वाभाविक रूप से पवित्र करने वाली होती हैं। वे भक्तों को उनके पापों से शुद्ध करते हैं, उनकी कर्मिक अशुद्धियों को शुद्ध करते हैं, और आध्यात्मिक बाधाओं को दूर करते हैं। उनका स्पर्श, उनका आशीर्वाद, या यहां तक कि भक्ति के माध्यम से उनकी मात्र उपस्थिति, एक शक्तिशाली शुद्धिकर्ता के रूप में कार्य कर सकती है।

अशुद्धियों और पापों का नाश करने वाला (Dispeller of Impurities and Sins) यह नाम सभी प्रकार की अशुद्धियों और पापों (पाप-हारिन) के नाशकर्ता के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। जिस प्रकार वे काल और मृत्यु के स्वामी हैं, जो अंततः विघटन लाकर अस्तित्व को शुद्ध करते हैं, उसी प्रकार उनके हाथ व्यक्तियों को अनुष्ठानिक और आध्यात्मिक रूप से शुद्ध करने की उनकी शक्ति का प्रतीक हैं, जिससे वे आध्यात्मिक शुद्धता की स्थिति के करीब आते हैं।

कृपा और आशीर्वाद प्रदान करने वाला (Bestower of Grace and Blessings) अपने भयानक रूप के बावजूद, उनके हाथ वे भी हैं जो कृपा और आशीर्वाद (वरद हस्त) प्रदान करते हैं। शुद्ध हाथ यह दर्शाते हैं कि वे जो कुछ भी देते हैं—चाहे वह सुरक्षा हो, मुक्ति हो, या भौतिक कल्याण हो—वह परम शुद्धता के स्थान से आता है और स्वयं प्राप्तकर्ता के लिए एक शुद्ध करने वाली शक्ति है।

402. पापाराये

सभी पापों और दुष्कर्मों के परम शत्रु (संहारकर्ता) को नमन।

विस्तार : पापाअराये नाम संस्कृत के शब्दों "पाप" और "अरि" का एक यौगिक है।

"पाप" को परिभाषित करना पाप (Pāpa) का अर्थ है पाप, बुराई, दुष्टता, अवगुण या नैतिक उल्लंघन। हिंदू दर्शन में, पाप उन कार्यों को दर्शाता है जो नकारात्मक कर्मिक परिणामों की ओर ले जाते हैं, जिससे दुख होता है और आध्यात्मिक प्रगति बाधित होती है। इसमें केवल स्पष्ट कार्य ही नहीं, बल्कि गलत विचार और इरादे भी शामिल हैं।

"अरि" को परिभाषित करना अरि (Ari) का अर्थ है "शत्रु," "विरोधी," या "विनाशक।"

पाप का विनाशक इसलिए, पापाअराये "पाप का शत्रु" या "पाप का विनाशक" है। यह विशेषण कालभैरव की भूमिका को दिव्य शक्ति के रूप में दर्शाता है जो सभी प्रकार की अधार्मिकता और नकारात्मकता का उन्मूलन और मुकाबला करती है। उनका भयंकर रूप केवल विनाश के लिए नहीं है, बल्कि विशेष रूप से उन शक्तियों को लक्षित करता है जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था और व्यक्तिगत आध्यात्मिक मुक्ति में बाधा डालती हैं। वह बुराई के संचय को हटाकर ब्रह्मांड को शुद्ध करते हैं।

ब्रह्मांडीय न्याय और प्रतिशोध धर्म के प्रवर्तक के रूप में, कालभैरव ब्रह्मांडीय न्याय का प्रतीक हैं। वह यह सुनिश्चित करते हैं कि पाप बिना दंड के न रहे, उन लोगों को त्वरित और निश्चित प्रतिशोध प्रदान करते हैं जो दुष्ट कर्मों में संलग्न होते हैं। यह विनाशकारी पहलू एक पुनर्स्थापनात्मक उद्देश्य को पूरा करता है, धार्मिकता और नैतिक व्यवस्था के लिए मार्ग प्रशस्त करता है।

आंतरिक शुद्धि आध्यात्मिक स्तर पर, पापाअराये उस शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं जो भक्तों को उनके अपने आंतरिक "पापों" – नकारात्मक प्रवृत्तियों, आसक्ति, अहंकार और अज्ञानता – को दूर करने में मदद करती है। उनका आह्वान करके, साधक अपने मन और कर्मों को शुद्ध करने के लिए उनकी कृपा चाहते हैं, जिससे उनके कर्मों का लेखा-जोखा साफ होता है और वे मुक्ति की ओर बढ़ते हैं। वह अपने भक्तों की चेतना से पाप की जड़ों को ही मिटा देते हैं।

पवित्रता और धार्मिकता का प्रतीक पाप के परम शत्रु होने के नाते, कालभैरव एक साथ पूर्ण पवित्रता और अटूट धार्मिकता का प्रतिनिधित्व करते हैं। वह नैतिक भ्रष्टाचार के सभी रूपों के खिलाफ एक प्रकाशस्तंभ के रूप में खड़े हैं, ब्रह्मांडीय कानून के उच्चतम सिद्धांतों को बनाए रखते हैं।

403. प्रत्यायाचिरशे

श्रद्धा के शिखर और मुकुट स्वरूप को नमन।

विस्तार : प्रत्ययाचिर्षे नाम एक गहन दार्शनिक कथन है, जो विश्वास और आध्यात्मिक दृढ़ विश्वास के क्षेत्र में भैरव के परम अधिकार और सार को दर्शाता है। यह प्रत्यय (Pratyaya) और आचिर्षे (Ācirṣe) से बना है।

प्रत्यय (Pratyaya): इस संस्कृत शब्द के कई अर्थ हैं: • विश्वास, आस्था, भरोसा, दृढ़ विश्वास। • चेतना, समझ, धारणा, विचार। • कारण, हेतु, मकसद। • आत्मविश्वास, आश्वासन।

आचिर्षे (Ācirṣe) (या आचिर्ष): इसका अर्थ है "शीर्ष पर," "प्रमुख," "शिखर," "चोटी," या "मुकुट।"

विश्वास का शिखर (The Pinnacle of Faith) यह नाम भैरव को सभी विश्वासों के पूर्ण शिखर और पराकाष्ठा के रूप में घोषित करता है। वह केवल विश्वास का एक उद्देश्य नहीं हैं, बल्कि वह सार और स्रोत हैं जिससे सभी सच्चा विश्वास उत्पन्न होता है। भक्त के लिए, दिव्य में उनकी दृढ़ता भैरव में अपनी अंतिम वैधता और पूर्ति पाती है। उनका भयानक फिर भी सुरक्षात्मक रूप सभी दुविधाओं को पार करने और हल करने की उनकी शक्ति में अटूट विश्वास को प्रेरित करता है।

चेतना और समझ का प्रमुख (The Head of Consciousness and Understanding) "चेतना के प्रमुख" के रूप में, भैरव समझ और आध्यात्मिक प्राप्ति के उच्चतम रूप का प्रतिनिधित्व करते हैं। वह परम सत्य हैं, जिसे समझने पर पूर्ण ज्ञान (ज्ञान) प्राप्त होता है। सभी व्यक्तिगत धारणाएँ और समझ उनमें अपनी जड़ और सर्वोच्च अभिव्यक्ति पाती हैं। वह सार्वभौमिक चेतना हैं जो सभी व्यक्तिगत जागरूकता को रेखांकित करती हैं।

परम कारण (The Ultimate Cause) "कारण या हेतु" के संदर्भ में, प्रत्ययाचिर्षे का तात्पर्य है कि भैरव परम प्रेरक, सभी अस्तित्व का प्रमुख कारण, और सभी घटनाओं का मूलभूत कारण हैं। वह प्रथम सिद्धांत हैं, अकारण कारण जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है।

आश्वासन और आत्मविश्वास का स्रोत (The Source of Assurance and Confidence) यह नाम यह भी दर्शाता है कि भैरव अपने भक्तों के लिए आश्वासन और आत्मविश्वास का सर्वोच्च स्रोत हैं। अनिश्चितता और भय के सामने, उनमें सच्चा विश्वास गहरी आंतरिक शांति और शक्ति लाता है। वह अटूट नींव हैं जिस पर सभी आध्यात्मिक आत्मविश्वास टिका है।

इसलिए, प्रत्ययाचिर्षे भैरव की भूमिका को एक सर्वोच्च वास्तविकता के रूप में खूबसूरती से समाहित करता है जिसमें सभी विश्वास पराकाष्ठा पर पहुँचते हैं, सभी ज्ञान अपना स्रोत पाते हैं, और सभी अस्तित्व अपना अंतिम कारण और आश्वासन पाते हैं।

404. अपाम निधये

सभी जलों के महान कोषागार और आधार को नमन।

विस्तार : अपां निधये नाम अपां (अप - जल का संबंधकारक बहुवचन) और निधये (निधि - खजाना, भंडार, पात्र का संप्रदान कारक एकवचन) से व्युत्पन्न एक यौगिक है।

ब्रह्मांडीय महासागर (The Cosmic Ocean) एक मूलभूत स्तर पर, यह नाम कालभैरव को ब्रह्मांड में सभी जलों के परम स्रोत, जलाशय और पात्र के रूप में पहचानता है। यह केवल सांसारिक महासागरों, नदियों और झीलों को ही संदर्भित नहीं करता है, बल्कि उन आदिम जलों को भी संदर्भित करता है जो सृष्टि से पहले मौजूद थे (कारण जल), वह ब्रह्मांडीय द्रव जिससे सभी अस्तित्व उत्पन्न हुए। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, जल को अक्सर सृष्टि, शुद्धता और अव्यक्त क्षमता से जोड़ा जाता है।

जीवन और पोषण का स्रोत (Source of Life and Sustenance) जल जीवन के लिए आवश्यक है, और इसकी प्रचुरता समृद्धि और पोषण का प्रतीक है। "जलों के निधि-गृह" होने के नाते, कालभैरव को सभी जीवन-दायक शक्तियों के परम प्रदाता के रूप में चित्रित किया गया है। यह उन्हें एक परोपकारी पोषक का पहलू प्रदान करता है, जो जीवन की निरंतरता सुनिश्चित करता है।

प्रलय और विघटन (Pralaya) (The Deluge and Dissolution) इसके विपरीत, यह नाम जल की विनाशकारी शक्ति का भी संकेत देता है, विशेष रूप से ब्रह्मांडीय प्रलय (महाप्रलय) के संदर्भ में। सृष्टि के प्रत्येक चक्र के बाद, ब्रह्मांड आदिम जलों में विलीन हो जाता है, और यह कालभैरव ही हैं, अपने परम विनाशकारी शक्ति के रूप में, जो इस विघटन की अध्यक्षता करते हैं। वह विशाल महासागर हैं जिसमें सभी व्यक्त रूप अंततः लौट आते हैं। इस प्रकार, वह अपने रचनात्मक और विनाशकारी दोनों पहलुओं में सभी जलों के पात्र हैं।

शुद्धता और शुद्धि का प्रतीक (Symbol of Purity and Cleansing) जल को सार्वभौमिक रूप से एक शुद्ध करने वाले तत्व के रूप में मान्यता प्राप्त है। "सभी जलों के निधि-गृह" के रूप में, कालभैरव भी निहित रूप से सभी शुद्धि, शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों के स्रोत हैं। वह पापों, अशुद्धियों और अज्ञान को शुद्ध करते हैं, जिससे आध्यात्मिक नवीनीकरण संभव होता है।

सर्वव्यापी प्रकृति (All-Encompassing Nature) दार्शनिक रूप से, "सभी जल" अस्तित्व, चेतना और यहां तक कि समय के प्रवाह की समग्रता का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। उनके "निधि-गृह" होने के नाते, कालभैरव व्यक्त और अव्यक्त ब्रह्मांड की संपूर्णता को समाहित करते हैं, अपने भीतर सभी क्षमता और सभी वास्तविक रूपों को धारण करते हैं। वह विशाल, अथाह गहराई हैं जिसके भीतर सृष्टि और विघटन शाश्वत रूप से प्रकट होते हैं।

405. पुलस्त्याय

महान, प्राचीन ऋषि पुलस्त्य के स्वरूप को नमन।

विस्तार : पुलस्त्याय नाम भगवान कालभैरव को पूजनीय ऋषि पुलस्त्य से जोड़ता है, जो सृष्टिकर्ता ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों में से एक हैं। यह प्रतीत होने वाला असामान्य संबंध कालभैरव के बहुआयामी स्वरूप में निहित गहरे आध्यात्मिक और ब्रह्मांडीय संबंधों को उजागर करता है।

ऋषि पुलस्त्य पुलस्त्य हिंदू पौराणिक कथाओं में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं, जो विभिन्न पुराणों और महाकाव्यों में प्रकट होते हैं। वे इसके लिए जाने जाते हैं:

• उनकी वंशावली: वे एक शक्तिशाली वंशावली के जनक हैं, विशेष रूप से विश्रवा के पिता (कभी-कभी कुबेर के पिता के रूप में पहचाने जाते हैं) और लंका के राक्षस राजा रावण के पैतृक दादा। • ज्ञान और तपस्या: उन्हें अपार आध्यात्मिक शक्ति, गहन ज्ञान और तपस्या के अभ्यासी ऋषि के रूप में चित्रित किया गया है। वे अक्सर प्राचीन ज्ञान, विशेष रूप से पुराणों और धर्म से संबंधित, के संरक्षण और प्रसारण से जुड़े होते हैं। • कश्मीर से संबंध: कुछ परंपराएं उन्हें कश्मीर की उत्पत्ति से जोड़ती हैं, जहाँ उन्हें वितस्ता (झेलम) नदी का पानी लाने के लिए पूजा जाता है।

भैरव से प्रतीकात्मक संबंध कालभैरव और पुलस्त्य के बीच के संबंध को कई तरीकों से समझा जा सकता है:

• प्राचीन ज्ञान और आदिमता: पुलस्त्य के साथ जुड़कर, कालभैरव अपने शाश्वत अस्तित्व और सृष्टि की आदिम आध्यात्मिक वंशावली से अपने संबंध की पुष्टि करते हैं। ब्रह्मा के पुत्रों में से एक के रूप में, पुलस्त्य प्राचीन ज्ञान का प्रतीक हैं। कालभैरव, परम वास्तविकता के रूप में, ऐसे सभी ज्ञान का स्रोत और रक्षक हैं। • सृष्टि और वंशावली पर अधिकार: जिस प्रकार पुलस्त्य एक महत्वपूर्ण वंशावली में एक मूलभूत व्यक्ति हैं, उसी प्रकार कालभैरव परम पितृपुरुष हैं, वह स्रोत जिससे सभी वंशावलियाँ, ब्रह्मांडीय नियम और व्यक्ति अंततः उत्पन्न होते हैं। • सभी प्राणियों पर नियंत्रण: पुलस्त्य जैसे शक्तिशाली व्यक्ति, और विस्तार से उनके वंशज (यहां तक कि राक्षसी रावण सहित), अंततः कालभैरव द्वारा व्यक्त ब्रह्मांडीय नियम के अधीन हैं। यह भैरव के सभी लोकों और प्राणियों, चाहे वे दिव्य हों, मानव हों या राक्षसी हों, पर परम अधिकार को दर्शाता है। • निष्पक्ष साक्षी: पुलस्त्य, एक ऋषि के रूप में, अक्सर ब्रह्मांडीय घटनाओं के साक्षी और पवित्र विद्या के संचारक के रूप में चित्रित किए जाते हैं। कालभैरव, अपने काल (समय) के रूप में, अनंत काल तक सभी घटनाओं के सर्वोच्च, निष्पक्ष साक्षी हैं।

इसलिए, "पुलस्त्याय" कालभैरव को केवल एक भयंकर देवता के रूप में नहीं, बल्कि उस मूलभूत चेतना और शाश्वत वास्तविकता के रूप में स्वीकार करता है जो सृष्टि के सबसे प्राचीन और पूजनीय व्यक्तियों को भी अंतर्निहित करती है, समाहित करती है और अंततः उन पर शासन करती है।

406. पुलहाय

जो महर्षि पुलह हैं, जो मानवता के रचनाकारों में से एक हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : पुलहाय नाम भगवान कालभैरव को पूजनीय ऋषि पुलह से जोड़ता है, जो ब्रह्मा के दस मानसपुत्रों में से एक और एक महान प्रजापति (मानवजाति के जनक) हैं। यह संबंध गहरा और बहुआयामी है, जो कालभैरव के सर्वव्यापी स्वरूप को दर्शाता है, यहाँ तक कि सृष्टि के कार्य तक भी फैला हुआ है।

ऋषि पुलह: एक निर्माता और धर्म-प्रवर्तक ऋषि पुलह हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं। सप्तर्षियों (सात महान ऋषियों) में से एक के रूप में, वे एक कुलपति, विभिन्न प्रजातियों के जनक और एक आध्यात्मिक धर्म-प्रवर्तक हैं। उनका अस्तित्व व्यवस्था, संरचना और धर्म की निरंतरता का प्रतीक है। कालभैरव को पुलह से जोड़कर, यह नाम इंगित करता है:

1. सृष्टि में अंतर्निहितता: कालभैरव, यद्यपि मुख्य रूप से संहारक (काल) के रूप में जाने जाते हैं, सृष्टि से अलग नहीं हैं। वे अंतर्निहित शक्ति हैं जो ब्रह्मा की रचनात्मक शक्ति को भी सक्षम बनाती है। सृष्टि की प्रक्रिया और प्राणियों का अस्तित्व उनकी परम शक्ति द्वारा समर्थित है। 2. व्यवस्था और धर्म: जिस प्रकार पुलह प्राणियों के बीच वंश और व्यवस्था स्थापित करते हैं, उसी प्रकार कालभैरव ब्रह्मांडीय व्यवस्था (ऋत) और धर्म के संरक्षक हैं। उनका संहारक पहलू अक्सर इस व्यवस्था को तब पुनः स्थापित करने का कार्य करता है जब यह विचलित हो जाती है। 3. प्रजापतियों पर प्रभुत्व: स्वयं पुलह के रूप में या उनसे गहराई से जुड़े हुए के रूप में स्तुति किए जाने से, कालभैरव को महान रचनात्मक ऋषियों पर भी सर्वोच्च स्वामी के रूप में दिखाया गया है। वे परम स्रोत हैं जिससे निर्माता भी अपनी प्रकट करने की शक्ति प्राप्त करते हैं।

संहार और सृष्टि का संश्लेषण यह नाम, इसलिए, एक परिष्कृत दार्शनिक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है: कालभैरव केवल संहार के एक कारक नहीं हैं, बल्कि अस्तित्व के पूरे चक्र को समाहित करते हैं, सृष्टि (पुलह द्वारा प्रतिनिधित्व) से लेकर पोषण तक, और विघटन तक। उनका संहारक पहलू नई सृष्टि के लिए मार्ग को शुद्ध और साफ करता है, जिससे वे सभी अस्तित्व और बनने का परम आधार बन जाते हैं। यह सुझाव देता है कि पुलह जैसे व्यक्तियों द्वारा सृष्टि के आदिम कार्य भी अंततः उस परम चेतना की अभिव्यक्तियाँ हैं जिसका कालभैरव प्रतिनिधित्व करते हैं।

407. अगस्त्याय

पूजनीय और शक्तिशाली ऋषि अगस्त्य स्वरूप को नमन।

विस्तार : अगस्त्य नाम पूजनीय वैदिक ऋषि को संदर्भित करता है, जो हिंदू पौराणिक कथाओं में एक प्रमुख व्यक्ति हैं, विशेष रूप से ज्ञान, तपस्या और दक्षिण भारत में वैदिक संस्कृति के प्रसार से जुड़े हैं।

ऋषि अगस्त्य अगस्त्य सप्तर्षियों (सात महान ऋषियों) में से एक हैं, जो अपनी कठिन तपस्या, गहन ज्ञान और अपनी तपस्या से प्राप्त असाधारण शक्तियों के लिए अत्यधिक सम्मानित हैं। उन्हें अक्सर एक छोटे लेकिन शक्तिशाली शरीर वाले व्यक्ति के रूप में चित्रित किया जाता है, जो आध्यात्मिक ऊर्जा से भरपूर होते हैं।

शिव के साथ संबंध अगस्त्य भगवान शिव के प्रबल भक्त हैं। कालभैरव को उनका नाम अर्पित किया जाना एक गहरे आध्यात्मिक संबंध को दर्शाता है, जिसका अर्थ है कि कालभैरव ऋषि अगस्त्य द्वारा सन्निहित ज्ञान, पवित्रता और आध्यात्मिक शक्ति में प्रकट होते हैं या उससे निकटता से जुड़े हैं। इसका अर्थ यह हो सकता है: • एक अवतार या अभिव्यक्ति: कि कालभैरव, किसी न किसी रूप में, उस आध्यात्मिक सार या दिव्य ऊर्जा को समाहित करते हैं जिसने अगस्त्य को जीवंत किया। • एक

संरक्षक या मार्गदर्शक: जैसे अगस्त्य कई लोगों के गुरु थे, वैसे ही कालभैरव सर्वोच्च गुरु हैं, और यह नाम उस सर्वोच्च मार्गदर्शन को स्वीकार करता है। • भक्ति को श्रद्धांजलि: यह कालभैरव को ऐसे महान ऋषियों के परम संरक्षक और प्रेरक के रूप में भी एक श्रद्धांजलि हो सकती है।

ज्ञान और तपस्या का प्रतीक कालभैरव को अगस्त्य से जोड़कर, यह नाम ज्ञान (ज्ञान) के सर्वोच्च स्रोत और कठोर तपस्या (तपस्या) के अंतिम फल के रूप में कालभैरव की भूमिका पर प्रकाश डालता है। अगस्त्य का जीवन आध्यात्मिक अनुशासन की शक्ति का एक प्रमाण है, और यह नाम इंगित करता है कि ऐसा अनुशासन अंततः दिव्य की प्राप्ति की ओर ले जाता है, जिसे कालभैरव द्वारा व्यक्त किया गया है।

बाधाओं पर विजय अगस्त्य कई पराक्रमों के लिए प्रसिद्ध हैं, जैसे देवताओं को असुरों (राक्षसों) से लड़ने में मदद करने के लिए पूरे महासागर को पी जाना, और विंध्य पर्वतों को झुकने के लिए मजबूर करना। ये कथाएँ ऋषि की आध्यात्मिक शक्ति के माध्यम से प्रतीत होने वाली दुर्गम बाधाओं को दूर करने की अपार शक्ति का प्रतीक हैं। कालभैरव को अगस्त्य से जोड़ना इस प्रकार यह दर्शाता है कि कालभैरव भी अपने भक्तों के लिए सभी आंतरिक और बाहरी कठिनाइयों को जीतने की इस सर्वोच्च शक्ति का प्रतीक हैं।

408. पुरुषूताय

जिनको अनेकों द्वारा आवाहन और आह्वान किया जाता है, उनको नमन।

विस्तार : पुरुहूताय नाम संस्कृत शब्दों "पुरु" और "हूत" से लिया गया है।

पुरु (Puru): यह शब्द "अनेक," "बहुत," "प्रचुर," या "अक्सर" को दर्शाता है। यह बहुलता और आवृत्ति का भाव व्यक्त करता है।

हूत (Hūta): यह शब्द "ह्वे" (hve) धातु का भूतकालिक कृदंत है, जिसका अर्थ है "बुलाना," "आह्वान करना," या "पुकारना।"

अनेकों द्वारा आह्वान किए जाने वाले इस प्रकार, पुरुहूताय का शाब्दिक अर्थ है "वह जिसका अनेकों द्वारा आह्वान किया जाता है" या "वह जिसे अक्सर पुकारा जाता है।" यह नाम कालभैरव की भूमिका पर जोर देता है कि वे एक सार्वभौमिक रूप से पूजे जाने वाले और अक्सर आह्वान किए जाने वाले देवता हैं, विशेष रूप से संकट के समय, सुरक्षा के लिए, या आध्यात्मिक उन्नति के लिए। यह उनकी सुलभता और असंख्य भक्तों की प्रार्थनाओं और पुकारों के प्रति उनकी प्रतिक्रिया को उजागर करता है। उनका स्वभाव ऐसा है कि वे उन्हें खोजने वालों के लिए सहज रूप से उपलब्ध हैं।

प्रार्थनाओं के सार्वभौमिक प्राप्तकर्ता यह नाम सूक्ष्म रूप से उनकी सर्वशक्तिमत्ता और सर्वव्यापकता का भी सुझाव देता है, क्योंकि वे विभिन्न लोकों में सभी प्राणियों की विविध प्रार्थनाओं और अनुनय-विनय के अंतिम प्राप्तकर्ता हैं। चाहे वह विशिष्ट मंत्र हों, भक्ति भजन हों, या मदद के लिए एक साधारण पुकार हो, कालभैरव, अपने सर्व-समावेशी रूप में, वह हैं जिनकी ओर ये आह्वान निर्देशित होते हैं और जो उनका जवाब देते हैं।

दिव्य कृपा की अभिव्यक्ति भक्तों के लिए, पुरुहूताय एक ऐसी दिव्य कृपा को दर्शाता है जो हमेशा मौजूद और हमेशा प्रतिक्रियाशील होती है। यह उन्हें आश्वस्त करता है कि उनकी पुकार अनसुनी नहीं जाएगी, जिससे विश्वास और भक्ति मजबूत होती है। कालभैरव का यह पहलू सुनिश्चित करता है कि वे हमेशा अपने भक्तों से जुड़े रहते हैं, मार्गदर्शन, सुरक्षा और भय तथा अज्ञान से मुक्ति प्रदान करने के लिए तैयार रहते हैं।

409. पुरुषस्तुताय

अनेक भक्तों द्वारा प्रशंसा और स्तुति किए जाने वाले प्रभु को नमन।

विस्तार : पुरुष्टुताय नाम पुरु (पुरुष) और स्तुत (स्तुत) का एक यौगिक है, जो गहरा अर्थ व्यक्त करता है।

पुरु (Puru): अनेक, प्रचुर, बहुत यह शब्द "अनेक," "प्रचुर," या "बहुत" को दर्शाता है। यह एक विशाल जनसमूह या महत्वपूर्ण मात्रा की ओर इंगित करता है, जो समावेशिता और सार्वभौमिकता का सुझाव देता है।

स्तुत (Stuta): प्रशंसित, स्तुति किया गया, महिमामंडित इस शब्द का अर्थ "प्रशंसित," "स्तुति किया गया," या "महिमामंडित" है। यह श्रद्धा, आराधना और भजन, प्रार्थना और उत्सव के शब्दों को अर्पित करने के कार्य को दर्शाता है।

अनेकों द्वारा प्रशंसित पुरुष्टुत का अर्थ है "वह जिसकी अनेक लोग स्तुति करते हैं।" यह भक्तों के बीच कालभैरव की व्यापक मान्यता और आराधना पर जोर देता है। उनकी पूजा कई परंपराओं और क्षेत्रों में फैली हुई है, जहाँ उन्हें रक्षा करने, बाधाओं को दूर करने और आशीर्वाद प्रदान करने की उनकी क्षमता के लिए पूजा जाता है। यह दर्शाता है कि अनगिनत प्राणी, मानव और दिव्य दोनों, उनकी सर्वोच्च शक्ति और परोपकारिता को स्वीकार करते हैं।

सार्वभौमिक आराधना यह शब्द बताता है कि कालभैरव की प्रशंसा केवल कुछ चुनिंदा लोगों द्वारा नहीं, बल्कि एक विशाल, विविध जनसमूह द्वारा की जाती है। यह सार्वभौमिक आराधना एक मौलिक देवता के रूप में उनके लौकिक महत्व को रेखांकित करती है, जिनका प्रभाव दूरगामी है। यह उनकी सुलभता और विभिन्न आध्यात्मिक मार्गों के साथ प्रतिध्वनित होने की उनकी क्षमता को दर्शाता है।

भक्ति का उद्देश्य यह नाम भक्ति के सर्वोच्च उद्देश्य के रूप में उनकी स्थिति को उजागर करता है। "अनेक" जो उनकी स्तुति करते हैं उनमें न केवल मानव साधक, बल्कि दिव्य प्राणी, ऋषि और अन्य आध्यात्मिक संस्थाएं भी शामिल हैं जो उनकी परम वास्तविकता को पहचानते हैं। उनकी सामूहिक स्तुति हिंदू पंथ में एक शक्तिशाली और पूजनीय देवता के रूप में उनकी स्थिति को मजबूत करती है।

लौकिक श्रद्धा का प्रतीक पुरुष्टुत कालभैरव के प्रति निर्देशित लौकिक श्रद्धा को दर्शाता है। यह बताता है कि सृष्टि के सभी पहलू, अपने-अपने तरीकों से, उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, उन्हें समय के नियंत्रक (काल), भय के विजेता (भैरव), और परम रक्षक के रूप में स्वीकार करते हैं।

410. पद्माकराया

उन को नमन जो सभी कमलों के स्रोत हैं, अथवा जिनके हाथ कमलों के समान हैं।

विस्तार : पद्माकराया नाम, जो संस्कृत के पदों पद्म और आकर से लिया गया है, भगवान कालभैरव से जुड़े आध्यात्मिक और प्रतीकात्मक अर्थों की एक समृद्ध श्रृंखला को दर्शाता है।

कमलों का स्रोत (पद्म-आकर)

उत्पत्ति और सृजन: पद्म का अर्थ है "कमल", जो हिंदू दर्शन में शुद्धता, सौंदर्य, आध्यात्मिक विकास, सृजन और दिव्य जन्म का एक शक्तिशाली प्रतीक है। कीचड़ से बिना किसी दाग के खिलने वाला कमल अनासक्ति और सांसारिक अपूर्णताओं के बीच आध्यात्मिक पूर्णता की प्राप्ति का प्रतीक है। आकर का अर्थ है "खान", "स्रोत", "सृष्टिकर्ता" या "उत्पत्ति"। इस प्रकार, पद्माकर का शाब्दिक अर्थ है "वह जो कमलों का स्रोत या खान है।" यह व्याख्या कालभैरव की भूमिका को सभी शुभता, शुद्धता और आध्यात्मिक जागृति के मूलभूत स्रोत के रूप में उजागर करती है। वह वह आदि प्रेरक हैं

जिनसे सभी पवित्र सौंदर्य और दिव्य चेतना उत्पन्न होती है। इसका तात्पर्य यह है कि वह केवल कमलों की भौतिक अभिव्यक्ति के ही नहीं, बल्कि उन आध्यात्मिक गुणों के भी परम कारण हैं जिनका वे ब्रह्मांड और चेतना के भीतर प्रतिनिधित्व करते हैं।

कमल जैसे हाथ (पद्म-कर भिन्न व्याख्या के साथ)

दिव्य कृपा और कर्म: हालांकि कम सामान्य है, "कर" (जब पद्म से पहले आता है) की एक वैकल्पिक व्याख्या "हाथों" (या किरणों, जैसे करण में) को संदर्भित कर सकती है। इस अर्थ में, पद्माकर का अर्थ "जिसके हाथ कमल के समान हैं" हो सकता है। कमलों के प्रतीकात्मक महत्व को देखते हुए, यह रूपक कालभैरव के कार्यों और हावभाव का वर्णन करता है। उनके हाथ, जिन्हें अक्सर विभिन्न उपकरणों को पकड़े हुए दर्शाया जाता है, केवल भयंकर न्याय के उपकरण नहीं हैं, बल्कि शुद्ध आशीर्वाद, मार्गदर्शन और आध्यात्मिक दान के स्रोत भी हैं, ठीक वैसे ही जैसे कमल का कोमल और सुंदर आलिंगन होता है। यह व्याख्या भैरव के परोपकारी पहलू को रेखांकित करती है, जहाँ उनके कठोर कार्य भी अंततः उनके भक्तों के लिए शुद्धता और मुक्ति की ओर ले जाते हैं।

शुद्धता और अनासक्ति का प्रतीक: "कमलों का स्रोत" होने के नाते, कालभैरव शुद्धता, आध्यात्मिक चेतना और सृजन के उच्चतम रूपों से आंतरिक रूप से जुड़े हुए हैं। वह अनासक्ति के सिद्धांत का ही प्रतीक हैं, भौतिक दुनिया की अशुद्धियों से ऊपर उठते हुए, ठीक वैसे ही जैसे कमल कीचड़ से बिना दाग के ऊपर उठता है। यह नाम उनकी पारलौकिक प्रकृति का सुझाव देता है, जहाँ वे सृजन और विनाश के लौकिक चक्रों से अप्रभावित रहते हैं, भले ही वे उन्हें संचालित करते हों।

411. परस्मैज्योतिषे

परम, श्रेष्ठ, और अंतिम प्रकाश स्वरूप को नमन।

विस्तार : परस्मैज्योतिषे (या परमज्योति) नाम दो संस्कृत शब्दों से बना है: परम और ज्योति।

परम: यह उपसर्ग "उच्चतम," "सर्वोच्च," "पारलौकिक," "निरपेक्ष," या "परम" को दर्शाता है। यह एक ऐसी अवस्था या गुण को इंगित करता है जो सभी सीमाओं, तुलनाओं और सापेक्ष भेदों से परे है। आध्यात्मिक संदर्भ में, यह निरपेक्ष, अप्रतिबंधित वास्तविकता की ओर इशारा करता है।

ज्योति: इस शब्द का अर्थ है "प्रकाश," "तेज," "चमक," या "दीप्ति।" आध्यात्मिक परंपराओं में, "प्रकाश" ज्ञान, चेतना, पवित्रता, सत्य और स्वयं परम दिव्य सार के लिए एक गहरा रूपक है। यह उस चीज़ का प्रतिनिधित्व करता है जो प्रकाशित करता है, अंधकार को दूर करता है और वास्तविकता को प्रकट करता है।

सर्वोच्च पारलौकिक प्रकाश इन दोनों को मिलाकर, परस्मैज्योतिषे का अर्थ है "सर्वोच्च, पारलौकिक प्रकाश" या "परम तेज।" यह शिव (इस संदर्भ में, कालभैरव) को सभी प्रकाश के स्रोत के रूप में संदर्भित करता है, न केवल भौतिक चमक, बल्कि चेतना, ज्ञान और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि का प्रकाश जो पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त और प्रकाशित करता है। यह एक ऐसा प्रकाश है जो किसी बाहरी स्रोत पर निर्भर नहीं है बल्कि स्वयं-प्रकाशित (स्वयंप्रकाश) है।

अंधकार और अज्ञान का नाश करने वाला परम प्रकाश के रूप में, कालभैरव सभी प्रकार के अंधकार को दूर करते हैं। इसमें अज्ञान (अविद्या), भ्रम (माया) और अहंकार की सीमाओं का अंधकार शामिल है। इस पहलू का आह्वान करके, भक्त अपने मन को शुद्ध करना, सच्चा ज्ञान प्राप्त करना और भौतिक दुनिया के भ्रमों को पार करना चाहते हैं। यह प्रकाश परम सत्य का प्रकाश भी है, जो वास्तविकता और स्वयं के वास्तविक स्वरूप को प्रकट करता है।

सभी घटनात्मक अस्तित्व से परे परस्मैज्योतिषे कालभैरव के पारलौकिक स्वरूप पर जोर देता है। वह केवल ब्रह्मांड के भीतर का प्रकाश नहीं है, बल्कि वह प्रकाश है जो ब्रह्मांड से परे और उससे पहले है—अस्तित्व का परम आधार। वह अप्रकट और परम वास्तविकता है जिससे सभी सृष्टि उत्पन्न होती है और जिसमें वह अंततः विलीन हो जाती है। यह प्रकाश ब्रह्म का सार है, परम वास्तविकता, जिसे अक्सर एक चमकदार, शुद्ध चेतना के रूप में वर्णित किया जाता है।

412. परापरफलप्रदाय

उच्च और निम्न दोनों तरह के कर्मों के फल प्रदान करने वाले को नमन।

विस्तार : परापरफलप्रदाय नाम कालभैरव के सर्वशक्तिमान और कर्म के ब्रह्मांडीय नियम पर सर्व-समावेशी नियंत्रण का एक गहन वर्णन है। यह कई महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है:

परा (उच्च) (Parā (Higher))

"परा" उच्च लोकों, श्रेष्ठ कर्मों और उनके उन्नत परिणामों को संदर्भित करता है। इसमें भक्ति के साथ किए गए कर्म शामिल हैं, जो आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष), आत्म-साक्षात्कार, दिव्य मिलन, या स्वर्गीय निवास (स्वर्ग) की प्राप्ति की ओर ले जाते हैं। ये ऐसे फल हैं जो केवल भौतिक लाभों से परे हैं और आत्मा के आध्यात्मिक विकास को छूते हैं। यह उन परम आध्यात्मिक पुरस्कारों को दर्शाता है जो पुण्य और निस्वार्थ कर्मों से मिलते हैं, अक्सर परिणाम से अनासक्ति के साथ किए जाते हैं।

अपरा (निम्न) (Aparā (Lower))

"अपरा" निम्न, अधिक सांसारिक और लौकिक पहलुओं को दर्शाता है। इसमें सांसारिक इच्छाओं, भौतिक pursuits और अहंकार-केंद्रित उद्देश्यों से प्रेरित कर्म शामिल हैं। "निम्न फल" भौतिक दुनिया में अनुभव किए गए मूर्त परिणाम हैं, जैसे धन, प्रसिद्धि, शक्ति, स्वास्थ्य, परिवार और इंद्रिय सुख। ये अस्थायी हैं और जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) से बंधे हैं।

फल (फल/परिणाम) (Phala (Fruits/Results))

"फल" का शाब्दिक अर्थ "फल" है, लेकिन कर्म के संदर्भ में, यह किसी के कर्मों के परिणामों को संदर्भित करता है, चाहे वे अच्छे हों या बुरे, आध्यात्मिक हों या भौतिक।

प्रदाय (प्रदाता/देने वाला) (Pradāya (Bestower/Giver))

"प्रदाय" प्रदाता को दर्शाता है, वह जो प्रदान करता है या देता है।

कर्मिक फलों के प्रदाता के रूप में कालभैरव (Kalabhairava as the Bestower of Karmic Fruits) इन शब्दों के संयोजन से, परापरफलप्रदाय कालभैरव को सभी कर्मिक परिणामों के अंतिम वितरक के रूप में दर्शाता है। वह ब्रह्मांडीय न्यायाधीश हैं जो प्रत्येक क्रिया के परिणामों का सावधानीपूर्वक निरीक्षण करते हैं और न्यायपूर्वक प्रशासित करते हैं, चाहे वह मुक्ति में परिणत होने वाला एक सूक्ष्म आध्यात्मिक प्रयास हो या सांसारिक समृद्धि या पीड़ा की ओर ले जाने वाला एक स्थूल भौतिक कर्म हो।

कर्म का अपरिवर्तनीय नियम (The Immutable Law of Karma) यह नाम कर्म के अपरिवर्तनीय नियम के प्रवर्तक के रूप में कालभैरव की भूमिका पर प्रकाश डालता है। ऐसा नहीं है कि वह मनमाने ढंग से परिणामों का निर्णय लेते हैं, बल्कि, सर्वोच्च चेतना के रूप में, वह उस सिद्धांत को ही मूर्त रूप देते हैं जिसके द्वारा प्रत्येक क्रिया (कर्म) एक संबंधित प्रतिक्रिया (फल) उत्पन्न करती है। वह सुनिश्चित करते हैं कि कोई भी कर्म अनसुना न हो और प्रत्येक जीवित प्राणी उचित परिणामों का अनुभव करे, जिससे ब्रह्मांडीय व्यवस्था और न्याय बना रहे।

ब्रह्मांडीय न्याय से कोई बच नहीं सकता (No Escape from Cosmic Justice) यह गुण इस बात पर जोर देता है कि चाहे कोई आध्यात्मिक प्रगति (परा) या भौतिक आनंद (अपरा) की ओर झुका हो, कालभैरव ही परम सत्ता हैं जो संबंधित फल प्रदान करते हैं या रोकते हैं। उनके दायरे से कोई बच नहीं सकता है, और सभी प्राणी अपनी स्वैच्छिक क्रियाओं के परिणामों के अधीन हैं, अंततः उन्हें अनुभव के चक्र के माध्यम से तब तक ले जाते हैं जब तक वे अपने सच्चे स्वरूप को महसूस नहीं कर लेते।

413. परावरज्ञाय

परम (पर) और व्यक्त (अवर) दोनों को जानने वाले (परमेश्वर) को नमन।

विस्तार : परावरज्ञाय नाम कालभैरव के सर्वज्ञ स्वरूप का एक गहन वर्णन है, जो संस्कृत शब्दों परा, अवर और ज्ञ से मिलकर बना है।

परा: परम, पराभौतिक और अप्रकट हिंदू दर्शन में, परा सर्वोच्च, परम वास्तविकता को संदर्भित करता है, जो सभी गुणों, रूपों और अभिव्यक्तियों से परे है। यह अप्रकट (अव्यक्त), पराभौतिक और निरपेक्ष ब्रह्म है। इसमें सूक्ष्म आध्यात्मिक वास्तविकताएं, कारण जगत और अस्तित्व का परम सार शामिल है जो मानवीय समझ से परे है। यह निरपेक्ष, असीमित और सभी का आदि स्रोत है।

अवर: प्रकट, निम्न और ससीम अवर, इसके विपरीत, उस चीज़ को संदर्भित करता है जो निम्न, प्रकट, ससीम और अंतर्निहित है। इसमें संपूर्ण सृजित ब्रह्मांड शामिल है - सभी भौतिक रूप, नाम, वस्तुएं, क्रियाएं और अनुभव जो स्थान, समय और कार्य-कारण के अधीन हैं। इसमें भौतिक दुनिया, व्यक्तिगत आत्माएं (जीव) और इंद्रियों द्वारा बोधगम्य या बुद्धि द्वारा समझने योग्य सभी घटनाएं शामिल हैं। यह द्वैत और सापेक्ष अस्तित्व का क्षेत्र है।

ज्ञ: ज्ञाता या जानने वाला ज्ञ का अर्थ है "जो जानता है," "ज्ञाता," या "से अवगत।"

सर्वज्ञ ज्ञान जब संयुक्त किया जाता है, तो परावरज्ञाय कालभैरव को उस रूप में वर्णित करता है जो परम, अप्रकट वास्तविकता (परा) और प्रकट, निम्न वास्तविकता (अवर) दोनों का पूर्ण और परिपूर्ण ज्ञान रखता है। वह परम ज्ञाता हैं, जो सूक्ष्मतम आध्यात्मिक सत्यों के साथ-साथ स्थूलतम भौतिक रूपों से भी अवगत हैं। इसका अर्थ है कि उनका ज्ञान एक क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि अस्तित्व की समग्रता को समाहित करता है - उच्चतम दार्शनिक सिद्धांतों और आध्यात्मिक सत्यों से लेकर भौतिक दुनिया की बारीकियों और कर्म के कामकाज तक।

जगत के बीच सेतु यह नाम कालभैरव को उस दिव्य चेतना के रूप में चित्रित करता है जो अप्रकट निरपेक्ष और प्रकट ब्रह्मांड के बीच के अंतर को पाटती है। वह वह जागरूकता है जो वास्तविकता के पराभौतिक और अंतर्निहित दोनों पहलुओं को व्याप्त करती है और समझती है। यह सभी अस्तित्व की अवस्थाओं, सभी आयामों और अस्तित्व के सभी रूपों को नियंत्रित करने वाले, साक्षी बनने वाले और समझने वाले परम ब्रह्मांडीय बुद्धि के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है।

414. परदाय

परम मुक्ति या सर्वोच्च अवस्था प्रदान करने वाले को नमन।

विस्तार : परद (परदाय) नाम संस्कृत उपसर्ग "पर" और मूल "दा" से बना है।

"पर" का अर्थ "पर" संस्कृत में एक बहुआयामी उपसर्ग है, जो सामान्यतः इंगित करता है: • सर्वोच्च, उच्चतम, परम: सबसे ऊपर, अन्य सभी से परे। • उत्कृष्ट: जो सामान्य से परे है, अनुभवजन्य दुनिया से परे है। • अन्य, परे: एक ऐसी अवस्था या क्षेत्र का संकेत देता है जो वर्तमान नहीं है।

"दा" का अर्थ मूल "दा" का अर्थ है "देना," "प्रदान करना," या "बख्शना।"

सर्वोच्च/परम का दाता जब संयुक्त किया जाता है, तो परद का अर्थ है वह जो "पर" या परम प्रदान करता है। आध्यात्मिक संदर्भ में, यह "परम" संदर्भित करता है:

1. पर गति (सर्वोच्च गंतव्य/अवस्था): इसका तात्पर्य जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) से परम मुक्ति (मोक्ष) है। यह पूर्ण स्वतंत्रता, अनंत ज्ञान और शाश्वत आनंद की अवस्था है, जो सभी दुखों और सीमाओं से मुक्त है। 2. पर ज्ञान (सर्वोच्च ज्ञान): उच्चतम ज्ञान, जो आत्म-साक्षात्कार और अपनी सच्ची प्रकृति को दिव्य के समान समझने की ओर ले जाता है। 3. पर ब्रह्म (परम वास्तविकता): वह जो परम वास्तविकता में अंतर्दृष्टि या उसके साथ संबंध प्रदान करता है। 4. पर भक्ति (सर्वोच्च भक्ति): बिना शर्त प्रेम और भक्ति का उच्चतम रूप जो व्यक्ति को दिव्य की ओर ले जाता है।

भगवान कालभैरव, परद के रूप में, मोक्ष के परम दाता के रूप में पूजे जाते हैं। वह वह हैं जो अपनी कृपा और कठोर अनुशासन के माध्यम से अपने भक्तों को समय की सीमाओं और सांसारिक आसक्तियों से परे शिव के साथ अद्वैत की सर्वोच्च अवस्था में ले जाते हैं। उनका भयंकर रूप, हालांकि भयावह है, सभी अशुद्धियों और कर्म बंधनों को शुद्ध करता है, इस प्रकार परम आध्यात्मिक स्वतंत्रता और ब्रह्म के साथ मिलन का मार्ग प्रशस्त करता है।

415. परशत्रवे

सभी विरोधी शक्तियों के लिए दुर्जेय शत्रु को नमन।

विस्तार : परशत्रवे नाम संस्कृत के दो शब्दों, पर (Para) और शत्रु (Shatrav) का एक यौगिक है।

पर (Para): इस शब्द का अर्थ है "सर्वोच्च," "परम," "अतींद्रिय," या "परे।" इस संदर्भ में, यह विरोध की पूर्ण प्रकृति पर जोर देता है। इसका अर्थ "अन्य" या "शत्रु" भी हो सकता है।

शत्रु (Shatrav) (शत्रु से व्युत्पन्न): इसका अर्थ है "शत्रु," "विरोधी," या "विरोधी शक्ति।"

विरोधी शक्तियों के दुर्जेय शत्रु परशत्रवे भगवान कालभैरव को धर्म (धार्मिकता), ब्रह्मांडीय व्यवस्था, आध्यात्मिक प्रगति और प्राणियों के कल्याण का विरोध करने वाली सभी शक्तियों के परम और सबसे दुर्जेय शत्रु के रूप में संदर्भित करता है। ये विरोधी शक्तियाँ केवल बाहरी शत्रुओं तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि इसमें अज्ञान (अविद्या), अहंकार (अहंकार), वासना (काम), क्रोध (क्रोध), लालच (लोभ) और भ्रम (मोह) जैसे आंतरिक शत्रु भी शामिल हैं।

बाधाओं का नाश करने वाले "बाधाओं के परम शत्रु" के रूप में, कालभैरव मुक्ति के मार्ग पर आध्यात्मिक साधकों को बाधित करने वाली किसी भी चीज़ का निर्दयतापूर्वक उन्मूलन करते हैं। वह दिव्य शक्ति हैं जो सत्य और आध्यात्मिक प्रकाश को प्रबल करने के लिए, अक्सर तीव्र और शक्तिशाली माध्यमों से, मार्ग प्रशस्त करती हैं। इस भूमिका में उनकी क्रूरता यह सुनिश्चित करती है कि कोई भी नकारात्मक शक्ति, चाहे वह कितनी भी शक्तिशाली क्यों न हो, उनका सामना नहीं कर सकती।

दिव्य न्याय का प्रतीक यह नाम दिव्य न्याय के अवतार के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है। वह निर्दोषों के रक्षक और दुष्टों के दंडक हैं, जो बुराई के खिलाफ एक सर्वोच्च निवारक के रूप में कार्य करते हैं। विरोधी शक्तियों के प्रति उनका विरोध घृणा से नहीं, बल्कि संतुलन बनाए रखने और यह सुनिश्चित करने की ब्रह्मांडीय आवश्यकता से उत्पन्न होता है कि कर्म के सार्वभौमिक नियम का पालन किया जाए।

नैतिक निहितार्थ भक्त के लिए, कालभैरव को परशत्रवे के रूप में ध्यान करना अपने स्वयं के आंतरिक राक्षसों और बाहरी चुनौतियों का सामना करने और उन पर विजय प्राप्त करने के लिए साहस को प्रेरित करता है, यह जानते हुए कि परम दिव्य शक्ति सत्य और अच्छाई को बाधित करने वाली हर चीज के लिए एक अदम्य शत्रु है।

416. परस्मैपदाय

उस परम वचन, परम अवस्था स्वरूप को नमन।

विस्तार : परस्मैपदाया नाम संस्कृत व्याकरण के शब्द 'परस्मैपद' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "दूसरे के लिए" या "सकर्मक क्रिया रूप," लेकिन दार्शनिक और आध्यात्मिक संदर्भ में, यह पारलौकिक, परम और वह जो व्यक्तिगत एजेंसी से परे मौजूद है, उसे दर्शाता है।

पारलौकिक अवस्था दार्शनिक शब्दों में, 'परस्मैपद' होने की उच्चतम अवस्था को संदर्भित करता है, जो पूरी तरह से स्वतंत्र और आत्मनिर्भर है, अपने आप में और किसी और के लिए नहीं मौजूद है। यह पूर्ण transcendence (पारगमन) का तात्पर्य है, जहाँ शिव कालभैरव के रूप में परम वास्तविकता, अकारण कारण और चिंतन का सर्वोच्च उद्देश्य हैं। वे मोक्ष या मुक्ति की अवस्था स्वयं हैं - एक असीम अस्तित्व जो सभी सीमाओं और द्वंद्वों से परे है।

परम शब्द इसे "परम शब्द" से जोड़ना का अर्थ है कि कालभैरव सभी पवित्र उच्चारणों, मंत्रों और दार्शनिक प्रवचनों का स्रोत और अंतिम अर्थ हैं। वे 'परा वाक्' (परम वाणी या ध्वनि) हैं जिससे सभी अभिव्यक्ति उत्पन्न होती है। यह इस विचार के अनुरूप है कि ब्रह्मांड स्वयं दिव्य ध्वनि का एक उत्सर्जन है। उनका अस्तित्व अभिव्यक्ति पर निर्भर नहीं करता है, बल्कि अभिव्यक्ति उन पर निर्भर करती है।

अंतिम लक्ष्य 'परस्मैपद' को सभी आध्यात्मिक प्रयासों के अंतिम लक्ष्य या गंतव्य के रूप में भी समझा जा सकता है। यह अहंकार (व्यक्तिगत "मैं") के अंतिम विराम का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ व्यक्तिगत चेतना सार्वभौमिक चेतना में विलीन हो जाती है। इस "परम अवस्था" को प्राप्त करने का अर्थ है कालभैरव, परम सत्य के साथ अपनी एकात्मकता का अनुभव करना। यह जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति है, जो शाश्वत शांति और जागरूकता की स्थिति को दर्शाता है जो मुक्त आत्मा के 'लिए' है, लेकिन स्वयं मुक्त आत्मा 'है', स्वतंत्र और पूर्ण होने के नाते।

417. पूर्णाय

जो पूर्ण, संपूर्ण और परिपूर्ण हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : पूर्ण (पूर्णाय) नाम दिव्य की परम पूर्णता, समग्रता और सिद्धता को दर्शाता है। यह संस्कृत मूल 'पृ' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "भरना," "पूरा करना।"

परम समग्रता पूर्ण एक ऐसी परम परिपूर्णता की स्थिति को दर्शाता है, जिसमें किसी चीज़ की कमी नहीं होती और जिसे अपने बाहर से किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं होती। कालभैरव के संदर्भ में, यह उनकी आत्मनिर्भरता, उनके अयोग्य और असीमित अस्तित्व पर जोर देता है। वह अपने भीतर सभी गुणों, सभी शक्तियों और सभी संभावनाओं को समाहित करते हैं, बिना किसी कमी या विभाजन के। उनके परे कुछ भी नहीं है, और सब कुछ उन्हीं से उत्पन्न होता है और उन्हीं में विलीन हो जाता है।

अविभाजित सिद्धता पूर्ण की यह अवधारणा वेदांत दर्शन के लिए केंद्रीय है, विशेष रूप से "पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते, पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते" (वह पूर्ण है, यह पूर्ण है, पूर्ण से पूर्ण उत्पन्न होता है, यदि पूर्ण से पूर्ण को ले लिया जाए, तो पूर्ण ही शेष रहता है) मंत्र में। यह गहन कथन दर्शाता है कि दिव्य (इस संदर्भ में कालभैरव) अनंत और सिद्ध है; भले ही ब्रह्मांड (जो स्वयं भी पूर्ण है, दिव्य को दर्शाता है) उससे उत्पन्न होता है, दिव्य स्वयं अविनाशी और पूर्ण रहता है।

पराकाष्ठा और अंतर्व्याप्ति पूर्ण के रूप में, कालभैरव पराकाष्ठा (सभी श्रेणियों और सीमाओं से परे) और अंतर्व्याप्ति (सृष्टि के सभी पहलुओं में उपस्थित) दोनों हैं। उनकी पूर्णता केवल भागों का योग नहीं है, बल्कि एक असीम, अविभाज्य समग्रता है जिसमें सभी समय, स्थान और चेतना शामिल हैं।

आध्यात्मिक महत्व भक्त के लिए, कालभैरव को पूर्ण के रूप में पहचानना यह समझना है कि परम वास्तविकता पहले से ही समग्र और सिद्ध है। यह आंतरिक पूर्णता और अपूर्णता या कमी की भावना से मुक्ति की खोज को प्रेरित करता है जो ससीम अस्तित्व की विशेषता है। उन्हें पूर्ण के रूप में ध्यान करने से व्यक्ति को अपनी अंतर्निहित पूर्णता और निरपेक्ष के साथ एकता का अनुभव करने में मदद मिलती है।

418. पूरयित्रे

सभी इच्छाओं को पूर्ण करने वाले और सभी कार्यों को संपन्न करने वाले को नमन।

विस्तार : पूरयित्रे (Pūrayitre) नाम संस्कृत मूल 'पूरयति' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "भरना," "पूरा करना," "संतुष्ट करना," या "तृप्त करना।"

इच्छाओं को पूर्ण करने वाले (इच्छा पूरक) पूरयित्रे के रूप में, कालभैरव वह दिव्य सत्ता हैं जो अपने भक्तों की सभी इच्छाओं (सर्व कामान) को पूर्ण करते हैं। यह पूर्ति केवल भौतिक इच्छाओं तक ही सीमित नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक आकांक्षाओं, ज्ञान (ज्ञान) और मुक्ति (मोक्ष) तक भी फैली हुई है। वह सभी आशीर्वादों के परम स्रोत हैं और वह सुनिश्चित करते हैं कि भक्तों की सच्ची प्रार्थनाएँ और इरादे फलीभूत हों।

जो पूर्ण करते हैं (पूर्ण कारक) यह पहलू चीजों को पूर्णता तक पहुँचाने में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। ब्रह्मांडीय अर्थ में, वह सृष्टि और संहार के चक्रों को पूर्ण करते हैं। व्यक्तिगत अर्थ में, वह भक्तों को उनके कार्यों, यात्राओं और आध्यात्मिक साधनाओं (अभ्यासों) को पूरा करने में सहायता करते हैं। वह बाधाओं को दूर करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि प्रयास अपने उचित निष्कर्ष पर पहुँचें, जिससे वह पूर्णता और समग्रता के दाता बन जाते हैं।

समग्रता के दाता (पूर्णता दाता) पूरयित्रे का अर्थ है कि वह व्यक्ति में पूर्णता और समग्रता की भावना लाते हैं। जब किसी की आध्यात्मिक यात्रा खंडित या अधूरी महसूस होती है, तो वह ही हैं जो स्वयं के सभी पहलुओं को एकीकृत कर सकते हैं, आंतरिक संघर्षों को सुलझा सकते हैं, और शिष्य को आंतरिक शांति और पूर्ति की स्थिति, पूर्णता (पूर्णता या पूर्णता) की स्थिति तक ले जा सकते हैं।

प्रचुरता का प्रतीक सभी इच्छाओं को पूर्ण करके और सभी चीजों को पूरा करके, वह असीम प्रचुरता और दिव्य के अक्षय स्वरूप का प्रतीक हैं। वह साधक के भीतर के शून्य को भरते हैं, शून्यता को प्रचुरता में और अपर्याप्तता को अतिप्रवाहित कृपा में बदलते हैं।

419. पुण्याय

पुण्य, नैतिकता और पवित्रता के सगुण स्वरूप को नमन।

विस्तार : पुण्याय (पुण्य) नाम एक गहन आध्यात्मिक सत्य को दर्शाता है, जो योग्यता, सदाचार और पवित्रता के मूर्त रूप को संदर्भित करता है।

पुण्य (योग्यता और सदाचार) का मूर्त रूप पुण्य का शाब्दिक अर्थ है "सद्गुणी," "धार्मिक," "पवित्र," "शुद्ध," "अच्छा कार्य," या "योग्यता।" यह धार्मिक कार्यों, भक्ति, नैतिक आचरण और धर्म के पालन के माध्यम से अर्जित संचित सकारात्मक कर्म या आध्यात्मिक योग्यता को संदर्भित करता है। जब शिव को पुण्या (पुण्य) के रूप में संबोधित किया जाता है, तो इसका तात्पर्य है कि वे सभी योग्य और सदाचारी चीजों का सार हैं। वे केवल योग्यता के जनक या दाता नहीं हैं, बल्कि उसके साक्षात् प्रतिरूप हैं।

पवित्रता और शुभता का स्रोत पुण्य का अर्थ "शुभता" और "पवित्रता" भी है। उन्हें पुण्याय के रूप में आह्वान करके, कोई उन्हें ब्रह्मांड में सभी आशीर्वाद, शुद्धता और पवित्रता के अंतिम स्रोत के रूप में स्वीकार करता है। हर पवित्र वस्तु, हर सदाचारी कार्य, हर शुद्ध विचार अंततः उनसे उत्पन्न होता है

और उन्हीं में लौट आता है। वे अस्तित्व को पवित्र करते हैं।

सौभाग्य और मुक्ति के दाता सकारात्मक परिणामों और आध्यात्मिक उन्नति से जुड़ा, पुण्य वह शक्ति है जो सौभाग्य, खुशी और अंततः, मुक्ति (मोक्ष) की ओर ले जाती है। पुण्य के मूर्त रूप के रूप में, शिव अपने कालभैरव रूप में वह हैं जो सच्चे भक्तों को ये आध्यात्मिक फल प्रदान करते हैं। उनका अस्तित्व ही सच्ची, स्थायी योग्यता को संचित करने का मार्ग है जो सांसारिक लाभों से परे है।

अतींद्रिय शुद्धता गहरे आध्यात्मिक अर्थ में, भैरव पुण्या के रूप में अतींद्रिय शुद्धता की स्थिति का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो किसी भी दोष या अपूर्णता से अछूती है। वे परम सद्गुण हैं, सीमित मानव मन द्वारा अनुभव किए गए अच्छे और बुरे की द्वैतता से परे हैं, फिर भी उन सभी चीजों की नींव के रूप में प्रकट होते हैं जिन्हें अच्छा और शुद्ध माना जाता है।

420. पुण्यश्रवणकीर्तनाय

जिनके यश और कीर्ति को सुनना और जपना पुण्यकारक है, ऐसे प्रभु को नमन।

विस्तार : नाम पुण्यश्रवणकीर्तनाय एक गहन यौगिक शब्द है, जो भगवान कालभैरव के बारे में सुनने और जपने के मात्र कार्य से जुड़ी पवित्र और परिवर्तनकारी शक्ति को प्रकट करता है।

• पुण्य (Puṇya): शुभता और योग्यता "पुण्य" शब्द का शाब्दिक अर्थ है "पुण्य कर्म," "सद्गुण," "अच्छे कर्म," या "पवित्रता।" यह आध्यात्मिक योग्यता के संचय को दर्शाता है, जो सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों तरह के सकारात्मक परिणामों की ओर ले जाता है। पुण्य हिंदू दर्शन में एक मौलिक अवधारणा है, जो ऐसे कार्यों को इंगित करता है जिनसे लाभकारी कर्म प्राप्त होता है।

• श्रवण (Śravaṇa): सुनने का कार्य "श्रवण" सुनने, सुनने या सीखने के कार्य को संदर्भित करता है। आध्यात्मिक संदर्भ में, इसका विशेष अर्थ है पवित्र ग्रंथों, कहानियों, या दिव्य की महिमा को सुनना। यह मनन (चिंतन) और निदिध्यासन (गहन ध्यान) के आध्यात्मिक अनुशासन में पहला कदम है।

• कीर्तन (Kīrtana): जपने और महिमामंडन करने का कार्य "कीर्तन" का अर्थ है दिव्य का जप करना, पाठ करना, गाना या महिमामंडन करना। यह भक्ति का एक कार्य है जहाँ व्यक्ति देवता के गुणों, नामों और कर्मों का मौखिक रूप से बखान करता है। कीर्तन एक शक्तिशाली भक्ति योग अभ्यास है, जो दिव्य उपस्थिति के साथ सीधा संबंध स्थापित करता है।

• दिव्य महिमा के साथ जुड़ने का पुण्य जब ये शब्द संयुक्त होते हैं, तो पुण्यश्रवणकीर्तन इस बात पर प्रकाश डालता है कि कालभैरव की महिमा (कीर्ति) को केवल सुनना या जपना स्वाभाविक रूप से पुण्यकारी और शुद्ध करने वाला है। यह केवल भक्ति का कार्य नहीं है, बल्कि उस भक्ति का विषय —कालभैरव के अंतर्निहित दिव्य गुण (महिमा, शक्ति, न्याय, संरक्षण)—जो इस कार्य को आध्यात्मिक लाभ से भर देता है। इसका तात्पर्य है कि कालभैरव का सार इतना शुद्ध और शक्तिशाली है कि ध्वनि (श्रवण और कीर्तन) के माध्यम से इसका चिंतन भक्त के हृदय और मन को शुद्ध करता है, पापों को धोता है, और आध्यात्मिक पुण्य (पुण्य) प्रदान करता है।

यह नाम इस विश्वास को पुष्ट करता है कि कालभैरव के दिव्य आख्यान में भाग लेना, यहां तक कि निष्क्रिय रूप से सुनकर भी, आध्यात्मिक विकास और मुक्ति का सीधा मार्ग है।

421. पुरंदराय

शत्रुओं के नगरों का नाश करने वाले (इंद्र के समान) को नमन।

विस्तार : पुरंदराय नाम संस्कृत यौगिक "पुरंदर" से आया है।

पुर (Pur): इसका अर्थ है "किला," "गढ़," या "शहर।" आध्यात्मिक या लाक्षणिक अर्थ में, यह मानव शरीर, इच्छाओं के संग्रह, या बांधने वाले भ्रम का भी प्रतिनिधित्व कर सकता है।

दर (Dara): इस मूल का अर्थ है "फाड़ना," "तोड़ना," या "नष्ट करना।"

किलों/शहरों का विनाशक परंपरागत रूप से, पुरंदर इंद्र, देवों के राजा का एक विशेषण है, जिनकी वेदों में असुरों और दस्युओं के गढ़वाले शहरों (पुर) को नष्ट करने और वैदिक व्यवस्था की रक्षा करने के लिए प्रशंसा की जाती है। जब इसे कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह एक गहरा, आध्यात्मिक महत्व लेता है।

आंतरिक बाधाओं का विनाशक जबकि इंद्र बाहरी शत्रुओं को नष्ट करते हैं, कालभैरव, पुरंदर के रूप में, आध्यात्मिक साधक के भीतर अज्ञानता, अहंकार, आसक्तियों और नकारात्मक कर्मों के "शहरों" या "किलों" को नष्ट करते हैं। ये आंतरिक गढ़ ज्ञानोदय को रोकते हैं और दुख के चक्र को बनाए रखते हैं। उन्हें पुरंदर के रूप में आह्वान करके, व्यक्ति इन आंतरिक बाधाओं को दूर करने के लिए उनकी शक्ति चाहता है।

विरोधियों पर विजय अधिक सामान्य अर्थ में, वे बाहरी विरोधियों और बाधाओं को दूर करने के लिए शक्ति और रणनीतिक कौशल प्रदान करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे इंद्र ने देवों की रक्षा की थी। यह गुण एक दुर्जेय रक्षक के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है जो शत्रुओं को पराजित करते हैं और धर्म (धार्मिकता) की विजय सुनिश्चित करते हैं।

सर्वोच्च शक्ति का प्रतीक यह नाम भैरव की सर्वोच्च शक्ति और किसी भी विरोध को ध्वस्त करने की उनकी क्षमता को उजागर करता है, चाहे वह शारीरिक, मानसिक या आध्यात्मिक हो, इस प्रकार प्रगति और मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है। वह परम शक्ति हैं जो किसी भी बाधा को दूर कर सकते हैं, जिससे उनके भक्तों की विजय सुनिश्चित होती है।

422. पुण्यकीर्तये

जिनकी कीर्ति और महिमा परम पावन एवं पवित्र है, उन्हें नमन।

विस्तार : पुण्यकीर्तये नाम पुण्य और कीर्ति का एक यौगिक है, जो कालभैरव के दिव्य स्वरूप के एक गहन पहलू को दर्शाता है।

पुण्य (Puṇya): इस संस्कृत शब्द का अर्थ "पुण्यमय," "सद्गुणी," "पवित्र," "शुद्ध," या "शुभ" है। इसमें वे कार्य, विचार और गुण शामिल हैं जो आध्यात्मिक योग्यता, शुभता और पाप से मुक्ति की ओर ले जाते हैं। गहरे अर्थ में, यह उस चीज़ को संदर्भित करता है जो स्वाभाविक रूप से अच्छी, शुद्ध करने वाली और आध्यात्मिक उन्नति के लिए अनुकूल है।

कीर्ति (Kīrti): यह शब्द "प्रसिद्धि," "महिमा," "ख्याति," "रिपोर्ट," या "प्रशंसा" को दर्शाता है। यह किसी के गुणों, उपलब्धियों या दिव्य गुणों की व्यापक पहचान और आराधना को संदर्भित करता है।

अत्यंत शुद्ध और पवित्र प्रसिद्धि जब संयुक्त किया जाता है, तो पुण्यकीर्ति का अर्थ है "वह जिसकी प्रसिद्धि पवित्र है," "वह जिसकी महिमा शुद्ध है," या "वह जिसकी ख्याति पुण्यमय है।" इसका तात्पर्य है कि कालभैरव का सार, कार्य और अस्तित्व स्वाभाविक रूप से शुद्ध और पवित्र करने वाले हैं। उनकी प्रसिद्धि सांसारिक उपलब्धियों या क्षणभंगुर महिमा से नहीं, बल्कि धर्म, न्याय और आध्यात्मिक शुद्धि के अवतार के रूप में उनके मूलभूत स्वरूप से उत्पन्न होती है। उनकी महिमा उन्हें शुद्ध करती है जो उन्हें याद करते हैं, उनकी प्रशंसा करते हैं या उनकी पूजा करते हैं।

उनकी ख्याति की शुद्ध करने वाली शक्ति यह नाम कालभैरव को स्वीकार करने की परिवर्तनकारी शक्ति पर प्रकाश डालता है। उनकी पुण्यकीर्ति का चिंतन करना उस पवित्रता में भाग लेना है। सांसारिक प्रसिद्धि के विपरीत, जो अस्थिर या दूषित हो सकती है, कालभैरव की ख्याति उनके भक्तों के लिए आध्यात्मिक योग्यता और शुभता का स्रोत है। उनकी पवित्र महिमा को पहचानकर, व्यक्ति की अपनी चेतना उन्नत और शुद्ध होती है।

धर्म का अवतार कालभैरव, धर्मपाल (धर्म के रक्षक) और दंडपाणि (न्याय का दंड धारण करने वाले) के रूप में अपनी भूमिका में, ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखते हैं। उनकी प्रसिद्धि धर्म के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता, बुराई को नष्ट करने की उनकी क्षमता और मुक्ति प्रदान करने की उनकी क्षमता से उत्पन्न होती है। उनकी "महिमा" इस प्रकार शाश्वत धार्मिकता और दिव्य न्याय की अभिव्यक्ति है।

423. प्रमादिने

जो अधर्मियों में मद या मोह उत्पन्न कर सकते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : प्रमादिने (प्रमादी) नाम संस्कृत शब्द 'प्रमाद' से लिया गया है, जिसके कई अर्थ हैं, जिनमें असावधानी, अनजाने में की गई गलती, त्रुटि, लापरवाही, मद, भ्रम और पागलपन शामिल हैं।

भ्रम और लापरवाही का प्रेरक प्रमादी के रूप में, कालभैरव उन लोगों में प्रमाद उत्पन्न करने की शक्ति का प्रतीक हैं जो अधर्मी, अज्ञानी या अधर्म में डूबे हुए हैं। यह कोई दुर्भावनापूर्ण कार्य नहीं है, बल्कि उनके अपने कर्मों का परिणाम और ब्रह्मांडीय न्याय का एक साधन है। ऐसे व्यक्तियों के लिए, वह उनके निर्णय को धूमिल कर देते हैं, उन्हें लापरवाही से कार्य करने का कारण बनते हैं, और उन्हें भ्रम में डाल देते हैं, अंततः उनके पतन का कारण बनते हैं। इसे कर्म के प्रकट होने के रूप में समझा जा सकता है; भैरव के प्रभाव से उनकी अपनी नकारात्मक प्रवृत्तियाँ बढ़ जाती हैं, जिससे आत्म-विनाशकारी व्यवहार होता है।

मद और आध्यात्मिक उदासीनता गहरे अर्थ में, प्रमाद आध्यात्मिक लापरवाही या अपने धर्म और उच्च उद्देश्य के प्रति असावधानी की स्थिति को संदर्भित करता है। कालभैरव, इस पहलू में, अधर्मी को आध्यात्मिक मद की स्थिति में रहने देते हैं, सांसारिक इच्छाओं और भ्रम (माया) से मोहित रहते हैं। यह उन्हें सत्य को समझने, धार्मिकता का पालन करने या आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ने से रोकता है। उन्हें उस शक्ति के रूप में देखा जा सकता है जो उन लोगों के लिए भ्रम के पर्दे को घना रहने देती है जो इसे हटाने के लिए तैयार या योग्य नहीं हैं।

इस शक्ति का उद्देश्य भैरव का यह पहलू ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण कार्य करता है। अधर्मी में भ्रम और मद पैदा करके, वह यह सुनिश्चित करते हैं कि बुराई अनिश्चित काल तक प्रबल न हो। यह दिव्य दंड का एक रूप है और धर्म के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने का एक तंत्र है। हालांकि, धार्मिक लोगों के लिए, यह शक्ति विवेक और स्पष्टता में बदल जाती है, क्योंकि उनकी भक्ति उन्हें ऐसे भ्रम से बचाती है। इस प्रकार, जबकि अधर्मी के लिए भयावह, भैरव के भक्त के लिए, यह हमेशा सतर्क, धार्मिक और भौतिक दुनिया के मादक प्रभावों से मुक्त रहने की याद दिलाता है।

424. पापनाशनाय

सभी पापों के परम नाशक को नमन।

विस्तार : पापनाशनाय नाम संस्कृत के शब्द 'पाप' और 'नाशन' का एक यौगिक है, जो कालभैरव की एक गहन आध्यात्मिक भूमिका को दर्शाता है।

- पाप (Pāpa): इस शब्द का सीधा अर्थ "पाप," "अवगुण," "अपराध," "बुराई," या "दुष्टता" है। हिंदू विचार में, पाप केवल एक नैतिक विफलता नहीं है, बल्कि एक ऐसा कार्य है जो नकारात्मक कर्मिक छाप बनाता है, जिससे वर्तमान या भविष्य के जीवन में दुख होता है। इसमें जानबूझकर और अनजाने में किए गए वे कार्य शामिल हैं जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) का उल्लंघन करते हैं।
- नाशन (Nāśana): इस शब्द का अर्थ "नाश करने वाला," "विनाशक," "हटाने वाला," या "उन्मूलन करने वाला" है।

पाप का नाश करने वाला (The Destroyer of Sin) इसलिए, पापनाशनाय का अर्थ है "पापों का नाश करने वाला।" कालभैरव, इस पहलू में, सभी नकारात्मक कर्मों के परम शोधक हैं। उनका दुर्जेय और उग्र रूप केवल आतंक पैदा करने के लिए नहीं है, बल्कि भक्त के संचित पापों को पूरी तरह से नष्ट करने के लिए है। यह विनाश शुद्धिकरण है; पापी छापों को मिटाकर, वे व्यक्ति को अपराधों के परिणामस्वरूप होने वाले दुख और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त करते हैं।

शोधक और मुक्तिदाता (Purifier and Liberator) यह पहलू शोधक के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देता है। कालभैरव की भक्ति से भक्त के पिछले कुकर्मों और वर्तमान नकारात्मक प्रवृत्तियों को शुद्ध किया जाता है। वे पाप द्वारा उत्पन्न बाधाओं को दूर करते हैं, आध्यात्मिक प्रगति और मुक्ति (मोक्ष) का मार्ग प्रशस्त करते हैं। पाप का "विनाश" केवल क्षमा नहीं, बल्कि कर्मिक और आध्यात्मिक स्तरों पर एक गहरा परिवर्तन है, जहाँ नकारात्मक कार्यों की जड़ें ही मिट जाती हैं।

नैतिक पहलू (Ethical Aspect) यह नाम दिव्य के साथ जुड़ने के नैतिक आयाम को भी रेखांकित करता है। यद्यपि वे दिखने में भयानक हैं, उनका अंतिम उद्देश्य ब्रह्मांडीय व्यवस्था स्थापित करने और प्राणियों को उनके अपराधों के बोझ को हटाकर धार्मिकता की ओर मार्गदर्शन करने के अर्थ में परोपकारी है। यह एक अनुस्मारक है कि सच्ची आध्यात्मिक मुक्ति के लिए पाप के बोझ को त्यागना आवश्यक है, और कालभैरव वह शक्तिशाली शक्ति हैं जो इस गहन शुद्धिकरण को सक्षम करती हैं।

425. परशीलाय

जो सबसे उत्कृष्ट और उत्तम चरित्र रखता है, उनको नमन।

विस्तार : परशीलाय नाम संस्कृत के पदों परम (या पर) और शील का एक यौगिक है।

परम (या पर): यह उपसर्ग "सर्वोच्च," "उच्चतम," "परम," "उत्कृष्ट," "अतींद्रिय," या "परे" को दर्शाता है।

शील: इस शब्द का अर्थ "चरित्र," "आचरण," "प्रकृति," "स्वभाव," "सद्‌गुण," या "नैतिक उत्कृष्टता" है। आध्यात्मिक संदर्भ में, यह अटूट नैतिक अखंडता और एक दिव्य प्रकृति को दर्शाता है।

सर्वोच्च चरित्र इसलिए, परशील का अर्थ है "वह जिसका चरित्र सर्वोच्च है" या "वह जो उच्चतम गुणों से संपन्न है।" यह कालभैरव को सभी दिव्य, नैतिक और आध्यात्मिक उत्कृष्टता के प्रतीक के रूप में दर्शाता है। उनकी प्रकृति स्वाभाविक रूप से शुद्ध, परिपूर्ण और किसी भी दोष या अपूर्णता से परे है। वे धर्म (धार्मिकता) के आदर्श को उसके सबसे पूर्ण रूप में प्रस्तुत करते हैं।

अतींद्रिय नैतिकता यह नाम कालभैरव को सामान्य नैतिक मानकों से ऊपर उठाता है, यह सुझाव देता है कि उनका आचरण और प्रकृति केवल अच्छी नहीं है, बल्कि स्वयं अच्छाई का स्रोत और परिभाषा है। उनके कार्य, यहां तक कि उनके प्रतीत होने वाले भयंकर कार्य भी, हमेशा परम सत्य, न्याय और सृष्टि के कल्याण में निहित होते हैं। वे वह मानक हैं जिसके द्वारा अन्य सभी गुणों को मापा जाता है।

दिव्य गुणों का सार कालभैरव को परशील के रूप में स्वीकार करना उन्हें करुणा, ज्ञान, न्याय, वैराग्य और निर्भयता जैसे गुणों के परम भंडार के रूप में पहचानना है। यद्यपि वे एक भयानक रूप में प्रकट हो सकते हैं, यह विशिष्ट ब्रह्मांडीय उद्देश्यों के लिए एक कार्यात्मक पहलू है; उनका अंतर्निहित चरित्र, उनका 'शील', अत्यंत शुद्ध और परोपकारी बना रहता है। यह नाम भैरव के विरोधाभास को रेखांकित करता है, जो दुर्जेय प्रतीत होते हैं लेकिन जिनका सार अत्यंत परोपकारी और सदाचारी है।

426. परगुणाया

उन भगवान को नमन जो उत्कृष्ट और सर्वोच्च गुणों से संपन्न हैं।

विस्तार : परगुण (परगुणाय) नाम "पर" और "गुण" का एक यौगिक है, जो कालभैरव के सर्वोच्च और उत्कृष्ट स्वरूप को दर्शाता है।

पर (Para): इस संस्कृत उपसर्ग का अर्थ है "सर्वोच्च," "उत्कृष्ट," "परे," "उच्चतर," या "अंतिम।" यह ऐसी किसी चीज़ को दर्शाता है जो केवल उत्कृष्ट ही नहीं है, बल्कि सभी तुलनाओं से ऊपर और परे है, जो अपने आप में एक अलग स्तर पर विद्यमान है।

गुण (Guṇa): यह शब्द आमतौर पर "गुण," "विशेषता," "सद्गुण," या "लक्षण" को संदर्भित करता है। दार्शनिक संदर्भों में, यह सांख्य और वेदांत में भौतिक प्रकृति के तीन गुणों (सत्व, रजस, तमस) को भी संदर्भित कर सकता है।

उत्कृष्ट गुण (Transcendent Qualities) जब परगुण के रूप में संयुक्त किया जाता है, तो इसका अर्थ है "वह जिसके पास सर्वोच्च गुण हैं" या "वह जिसके गुण उत्कृष्ट हैं।" यह इंगित करता है कि कालभैरव की विशेषताएँ केवल महान या प्रशंसनीय नहीं हैं, बल्कि वे गुणों की पारंपरिक समझ से परे हैं। उनके सद्गुण भौतिक संसार की समझ और सीमाओं तथा प्रकृति के गुणों से परे हैं। वे अच्छे और बुरे, शुभ और अशुभ के द्वंद्व से ऊपर हैं, क्योंकि ये सांसारिक, सापेक्ष शब्द हैं।

भौतिक गुणों का अभाव (The Absence of Material Guṇas) गहरे दार्शनिक अर्थ में, विशेष रूप से शैव धर्म के भीतर, "परगुण" होने का अर्थ यह हो सकता है कि वे तीन गुणों (सत्व, रजस, तमस) से अछूते हैं जो सभी बद्ध जीवों को जन्म और मृत्यु के चक्र से बांधते हैं। सर्वोच्च वास्तविकता के रूप में, वे निषगुण हैं - भौतिक गुणों के बिना, शुद्ध चेतना और आनंद - फिर भी वे अपने भक्तों के लाभ के लिए अनंत शुभ पारलौकिक गुणों को प्रकट करते हैं।

दिव्य पूर्णता का प्रतीक (Symbol of Divine Perfection) यह नाम कालभैरव की पूर्ण दिव्य पूर्णता पर प्रकाश डालता है। उनके गुण अर्जित या परिवर्तन के अधीन नहीं हैं; वे अंतर्निहित, शाश्वत और अनंत हैं। यह उनकी असीम शक्ति, ज्ञान, करुणा और अन्य दिव्य गुणों के लिए विस्मय और श्रद्धा की भावना पैदा करता है जो मानवीय कल्पना से कहीं परे हैं।

427. प्रादुरागाय

जो तीव्र भावना और प्रेम के साथ प्रकट होते हैं उन्हें नमन।

विस्तार : प्रादुरागाय नाम संस्कृत के पदों प्रादुर और राग से मिलकर बना है।

प्रादुर (Prādura) इस पद का अर्थ है "प्रकट होना," "दिखाई देना," "उभरना," या "दृश्यमान होना।" यह एक सहज और शक्तिशाली अभिव्यक्ति या अस्तित्व में एक स्पष्ट उद्भव का तात्पर्य है।

राग (Rāga) राग एक जटिल और बहुस्तरीय पद है: 1. रंग, आभा, रंगत: यह जीवंत अभिव्यक्ति और संसार के साथ जुड़ाव का प्रतीक है। 2. जुनून, भावना, आसक्ति: यह तीव्र भावनाओं, गहरे स्नेह, प्रेम और कभी-कभी इच्छा का प्रतिनिधित्व करता है। 3. संगीत की धुन: यह सामंजस्य, गुंजायमान सुंदरता और गहरी भावनाएं जगाने की शक्ति को दर्शाता है।

तीव्र जुनून और प्रेम की अभिव्यक्ति जब प्रादुर-राग के रूप में संयोजित किया जाता है, तो यह नाम एक ऐसे दिव्य प्राणी को दर्शाता है जो तीव्र, जीवंत जुनून और गहरे प्रेम के साथ प्रकट होता है। यह एक निष्क्रिय या उदासीन देवता नहीं है, बल्कि वह है जो शक्तिशाली, भावनात्मक रूप से आवेशित ऊर्जा के साथ सक्रिय रूप से प्रकट होता है।

दिव्य प्रेम और जुड़ाव यह नाम सृष्टि और अपने भक्तों के साथ शिव के गहरे जुड़ाव को उजागर करता है। एक ऐसे प्राणी के लिए जो अक्सर तपस्या और तीव्र वैराग्य से जुड़ा होता है, यह नाम अपार, उमड़ते प्रेम और उत्साह के एक पहलू को प्रकट करता है। यह "राग" एक सांसारिक, बंधनकारी आसक्ति नहीं है, बल्कि एक दिव्य, बिना शर्त प्रेम है जो उनके कार्यों, सुरक्षा और कृपा को प्रेरित करता है।

जीवंत उपस्थिति राग का "रंग" पहलू कालभैरव की प्रकट होने पर उनकी दीप्तिमान और मनमोहक उपस्थिति का सुझाव दे सकता है। वह एक नीरस, निर्जीव इकाई के रूप में प्रकट नहीं होते, बल्कि दिव्य ऊर्जा के पूर्ण स्पेक्ट्रम के साथ, जीवंत और अत्यंत सम्मोहक रूप में प्रकट होते हैं।

आध्यात्मिक प्रतिध्वनि एक आध्यात्मिक संदर्भ में, प्रादुर-राग बताता है कि दिव्य चेतना भक्त की तीव्र आध्यात्मिक लालसा और भक्ति (राग) के माध्यम से प्रकट होती है। इस पहलू में, कालभैरव अपने अनुयायियों के प्रबल प्रेम के प्रति गहराई से संवेदनशील होते हैं, जो उनके लिए ऐसे रूपों में प्रकट होते हैं जो उनकी गहरी भावनाओं और आध्यात्मिक आकांक्षाओं के साथ प्रतिध्वनित होते हैं।

428. पुरन्दराय

दुर्गों को जीतने वाले (देवता) को नमन।

विस्तार : पुरंदराय (पुरंदरा) नाम एक अत्यंत प्राचीन और शक्तिशाली विशेषण है, जो वैदिक संदर्भ में आमतौर पर इंद्र से जुड़ा है, लेकिन शैव परंपरा में, यह शिव और उनके उग्र रूप, भैरव पर उनकी सर्वोच्च शक्ति और अदम्य प्रकृति को दर्शाने के लिए लागू होता है।

व्युत्पत्ति और मूल अर्थ पुरंदर शब्द निम्न का एक यौगिक है: • पुर: जिसका अर्थ है "किला," "गढ़," "शहर," या "घेरा।" • दर: जो मूल dṛ से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है "तोड़ना," "छेदना," "नष्ट करना," या "जीतना।" इस प्रकार, पुरंदर का शाब्दिक अर्थ है "गढ़ों का विनाशक" या "शहरों/किलों का विजेता।"

बाधाओं और शत्रुओं का विजेता जब कालभैरव पर लागू होता है, तो पुरंदराय उनकी सभी बाहरी और आंतरिक बाधाओं, सुरक्षा और चुनौतियों को ध्वस्त करने की सर्वोच्च क्षमता को दर्शाता है। इसमें शामिल हैं: • बाहरी शत्रु: वह राक्षसों, नकारात्मक शक्तियों और उन सभी का परम विजेता है जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था या आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डालते हैं। वह बुराई के सबसे दुर्जेय किलों या रणनीतियों को भी नष्ट कर सकते हैं। • आंतरिक बाधाएँ: आध्यात्मिक रूप से, पुरंदर उस प्रचंड शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो अज्ञानता, अहंकार (अहंकार), भ्रम (माया), आसक्ति (मोह), और अन्य आंतरिक अशुद्धियों के गढ़ों को तोड़ती है जो व्यक्तिगत आत्मा को कैद करते हैं। ये सांसारिक प्रवृत्तियाँ किलों की तरह काम करती हैं, जो जीव (व्यक्तिगत आत्मा) को अपनी सच्ची दिव्य प्रकृति का एहसास करने से रोकती हैं। कालभैरव, पुरंदराय के रूप में, इन आंतरिक दीवारों को तोड़ते हैं।

प्रतीकात्मक व्याख्या "गढ़ों" को कठोर मानसिक संरचनाओं, रूढ़िवादी विश्वासों और पारंपरिक सीमाओं के रूप में भी व्याख्या किया जा सकता है जो मानवीय चेतना को सीमित करते हैं। पुरंदराय होने के नाते, कालभैरव उच्च ज्ञान और मुक्ति के मार्ग खोलते हैं, आध्यात्मिक प्राप्ति के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं। वह वह है जो भ्रम के पर्दे को भेदता है जो प्राणियों को जन्म और मृत्यु (संसार) के चक्रीय अस्तित्व से बांधता है।

दिव्य अधिकार और अजेयता यह नाम कालभैरव के पूर्ण और अदम्य अधिकार को रेखांकित करता है। कोई भी किला, कोई भी सुरक्षा, कोई भी गढ़—भौतिक या आध्यात्मिक—उनकी दिव्य शक्ति का सामना नहीं कर सकता। वह परम शक्ति है जो किसी भी बाधा को भेद सकती है और जीत सकती है, सत्य और धार्मिकता की विजय सुनिश्चित करती है।

429. परार्थव्यक्तये

जिनकी अभिव्यक्ति दूसरों के परम लाभ के लिए है, उन्हें नमन।

विस्तार : परार्थव्यक्तये नाम भगवान कालभैरव के करुणामय स्वभाव की एक गहन अभिव्यक्ति है, उनके भयावह बाहरी रूप के बावजूद। यह तीन संस्कृत शब्दों से बना है: "पर," "अर्थ," और "व्यक्ति।"

दूसरों का परम लाभ (पर-अर्थ)

• पर (Para): इस शब्द का अर्थ है "सर्वोच्च," "उच्चतम," "परम," या "अन्य" (दूसरों का जिक्र करते हुए, स्वयं का नहीं)। • अर्थ (Artha): यह शब्द "उद्देश्य," "अर्थ," "लक्ष्य," "लाभ," या "धन" को दर्शाता है। • एक साथ, परार्थ (Parārtha) का अर्थ है "दूसरों के लिए," "दूसरों का कल्याण," या "दूसरों के लिए परम उद्देश्य/लाभ।" यह कार्यों के पीछे एक निस्वार्थ, परोपकारी उद्देश्य को उजागर करता है।

अभिव्यक्ति (व्यक्ति)

• व्यक्ति (Vyakti): इसका अर्थ है "अभिव्यक्ति," "प्रकट होना," "प्रकाशन," "व्यक्ति," या "स्पष्ट बोध।" • इस प्रकार, परार्थव्यक्ति (Parārthavyakti) का तात्पर्य "दूसरों के सर्वोच्च लाभ के लिए एक अभिव्यक्ति" से है।

परोपकार के लिए भयंकरता का विरोधाभास कालभैरव की अक्सर भयावह और विनाशकारी शक्ति (काल, रुद्र) मनमानी या निरर्थक नहीं है। यह हमेशा ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखने, बुराई को नष्ट करने और अंततः प्राणियों को मुक्ति और कल्याण की ओर ले जाने के लिए निर्देशित होती है। उनका भयंकर रूप भ्रम, अहंकार और आसक्ति को दूर करने के लिए एक आवश्यक उपकरण है, जो हमारी आध्यात्मिक प्रगति में बाधाएँ हैं। उनका "विनाश" शुद्धिकरण का एक रूप है, जो नई, अधिक लाभकारी वृद्धि के लिए बाधाओं को दूर करता है।

ब्रह्मांडीय संरक्षण और आध्यात्मिक मुक्ति यह नाम दर्शाता है कि कालभैरव के प्रत्येक कार्य, प्रत्येक अभिव्यक्ति और उनके अस्तित्व का प्रत्येक पहलू अंततः सभी प्राणियों के सर्वोच्च कल्याण (पर अर्थ) के लिए समर्पित है। वे गलतियों के एक दुर्जेय दंडक (दण्डपाणि) के रूप में, या समय के संहारक (काल) के रूप में प्रकट हो सकते हैं, लेकिन ये भूमिकाएँ आत्माओं को सत्य की ओर मार्गदर्शन करने और उन्हें दुख के चक्र से मुक्त करने के परम परोपकारी इरादे से निभाई जाती हैं। उनका अस्तित्व ही दूसरों के कल्याण और आध्यात्मिक विकास के लिए एक साधन के रूप में कार्य करता है।

430. प्रभवाय

समस्त सृष्टि के गौरवशाली उद्गम और स्रोत स्वरूप को नमन।

विस्तार : प्रभव (प्रभावाय) नाम संस्कृत मूल 'भू' से लिया गया है जिसका अर्थ है 'होना' या 'बनना', जिसमें 'प्र' उपसर्ग लगा है, जो उत्कृष्टता, प्रमुखता या उद्गम को दर्शाता है।

गौरवशाली उद्गम प्रभव का मूल अर्थ "उद्गम," "स्रोत," "जन्म," या "अभिव्यक्ति" है। जब इसे भगवान कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह उन्हें समस्त अस्तित्व के उत्कृष्ट, गौरवशाली और सर्वोच्च उद्गम के रूप में दर्शाता है। वे आदि कारण (कारण) हैं जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है। यह केवल एक कार्यात्मक उद्गम नहीं है, बल्कि एक ऐसा उद्गम है जो अंतर्निहित महिमा, शक्ति और आंतरिक प्रकृति से ओत-प्रोत है।

समस्त सृष्टि का स्रोत प्रभव के रूप में, कालभैरव वह परम स्रोत हैं जिससे संपूर्ण ब्रह्मांड, अपनी सभी विविध घटनाओं, चेतन प्राणियों और निर्जीव वस्तुओं के साथ, उत्पन्न होता है। वे केवल एक सृष्टिकर्ता देवता नहीं हैं; बल्कि, वे अस्तित्व की आदिम अवस्था हैं जिससे सृष्टि का अनावरण होता है। यह एक गहरी दार्शनिक समझ की ओर इशारा करता है जहाँ ब्रह्मांड केवल उनके "द्वारा" नहीं बनाया गया है, बल्कि उनके "से" बनाया गया है और "वही" हैं।

अस्तित्व का चक्र कालभैरव के संदर्भ में, जो अक्सर समय और विनाश से जुड़े होते हैं, प्रभव यह भी दर्शाता है कि वे सृष्टि और विलय के चक्रों के उद्गम हैं। जिस प्रकार वे सभी चीजों को उत्पन्न करते हैं, उसी प्रकार वे परम भी हैं जिनमें सभी चीजें विलीन हो जाती हैं, केवल एक नए चक्र में फिर से प्रकट होने के लिए। यह ब्रह्मांडीय अस्तित्व के अल्फा और ओमेगा के रूप में उनकी सर्व-समावेशी प्रकृति को उजागर करता है।

दिव्य शक्ति की अभिव्यक्ति प्रभव का अर्थ "शक्ति," "बल," या "महिमा" भी है। इस प्रकार, वे सभी शक्ति का स्रोत हैं और राजसी दिव्य ऊर्जा के अवतार हैं जो ब्रह्मांड को शक्ति प्रदान करती है और बनाए रखती है। प्रत्येक बल, प्रत्येक प्रकट शक्ति, अंततः इस गौरवशाली उद्गम, कालभैरव से उत्पन्न होती है।

431. पुरुषाय

आदि ब्रह्मांडीय पुरुष, अंतर्निहित आत्मा को नमन।

विस्तार : पुरुषाय (Puruṣāya) नाम भारतीय दर्शन में एक गहन और प्राचीन अवधारणा का आह्वान करता है, जो ब्रह्मांडीय चेतना या आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है जिससे संपूर्ण ब्रह्मांड उत्पन्न होता है।

ब्रह्मांडीय सत्ता (The Cosmic Being) संस्कृत में, पुरुष (Puruṣa) का शाब्दिक अर्थ "मनुष्य" या "व्यक्ति" है, लेकिन दार्शनिक संदर्भ में, यह आदिम ब्रह्मांडीय सत्ता, सर्वोच्च आत्मा, या सार्वभौमिक चेतना को संदर्भित करता है। यह अव्यक्त, शाश्वत और अपरिवर्तनीय सिद्धांत है जो अस्तित्व के सभी पहलुओं में व्याप्त है और उनका आधार है। ऋग्वेद का पुरुष सूक्त पुरुष को एक विशाल, ब्रह्मांडीय सत्ता के रूप में वर्णित करता है जिसके शरीर से, एक आदिम बलिदान के माध्यम से, ब्रह्मांड, जिसमें सभी प्राणी, सामाजिक वर्ग और प्राकृतिक घटनाएँ शामिल हैं, का निर्माण हुआ था।

अंतर्निहित आत्मा (The Indwelling Spirit) ब्रह्मांडीय अभिव्यक्ति से परे, पुरुष प्रत्येक जीवित प्राणी के भीतर अंतर्निहित आत्मा या आत्मन (Ātman) का भी प्रतिनिधित्व करता है। यह शिव के स्वरूप को केवल एक पारलौकिक निर्माता के रूप में ही नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर निहित सार के रूप में भी उजागर करता है। वह साक्षी चेतना, शुद्ध जागरूकता है, जो प्रकृति (पदार्थ या प्रकृति) से भिन्न है।

चेतना और पदार्थ (प्रकृति-पुरुष) (Consciousness and Matter - Prakriti-Puruṣa) सांख्य और योग दर्शन में, पुरुष दो परम वास्तविकताओं में से एक है, दूसरी प्रकृति है। पुरुष शुद्ध चेतना है, स्थिर और अपरिवर्तनीय है, जबकि प्रकृति गतिशील, विकसित होने वाला पदार्थ है। भगवान शिव, विशेष रूप से अपने काल भैरव (Kāla Bhairava) स्वरूप में, परम पुरुष के रूप में देखे जा सकते हैं जो प्रकृति को सक्रिय करते हैं और उस पर शासन करते हैं, सृष्टि, संरक्षण और संहार के नृत्य का संचालन करते हैं।

पुरुष को नमन करना शिव को परम आध्यात्मिक सिद्धांत, सभी चेतना का स्रोत और सभी प्राणियों के भीतर निवास करने वाले आंतरिक स्व (Self) के रूप में स्वीकार करना है।

432. पुरुजाय

अनेक रूपों में जन्में और बहुआयामी स्वरूप वाले (कलिकाल भैरव) को नमन।

विस्तार : पुरुजाय नाम "पुरु" और "जाय" से बना एक गहरा विशेषण है, जो दिव्य के बहुआयामी और व्यापक स्वरूप को समाहित करता है।

पुरु: यह संस्कृत उपसर्ग "अनेक," "बहुत," "ढेर सारे," "प्रचुर," या "विभिन्न" का अर्थ रखता है। यह बहुलता और अनेकता को दर्शाता है।

जाय: इस शब्द की व्याख्या संदर्भ के आधार पर कई तरीकों से की जा सकती है: 1. "जन्" (जन्म लेना, उत्पन्न होना) धातु से, इसका अर्थ "जन्म लेने वाला" या "उत्पन्न होने वाला" है। 2. इसका अर्थ "विजयी" या "प्रबल" भी हो सकता है। 3. कुछ संदर्भों में, यह "विजय" या "जीत" को भी दर्शा सकता है।

बहुविध प्रकटकर्ता "अनेक रूपों में जन्म लेने वाले" के रूप में, पुरुजाय दिव्य की अनगिनत आकृतियों, नामों और वेशों में प्रकट होने की क्षमता को संदर्भित करता है। यह अवतार (अवतरण) की अवधारणा या भगवान शिव, विशेष रूप से कालभैरव, द्वारा सृष्टि के साथ संवाद करने के लिए धारण किए गए असंख्य रूपों की बात करता है। वह एक ही रूप तक सीमित नहीं हैं, बल्कि अनंत प्रकार के आविर्भावों के माध्यम से अस्तित्व में व्याप्त हैं, जिनमें से प्रत्येक एक विशिष्ट उद्देश्य या भक्त के अनुरूप है। यह उनकी ब्रह्मांडीय सर्वव्यापकता और विभिन्न प्राणियों द्वारा विविध तरीकों से देखे जाने की उनकी क्षमता को उजागर करता है।

बहुस्तरीय विजेता "जाय" की व्याख्या विजय के रूप में करने पर, पुरुजाय का अर्थ "अनेक तरीकों से विजयी होने वाला" या "अनेकों का विजेता" भी हो सकता है। यह पहलू कालभैरव की बुराई के संहारक, अज्ञान के विनाशक और बाधाओं के विजेता के रूप में भूमिका से जुड़ा है। वह घटनात्मक अस्तित्व की अनगिनत चुनौतियों और द्वंद्वों पर विजय प्राप्त करते हैं, अपने सर्वोच्च अधिकार और परोपकारिता को स्थापित करते हैं।

प्रचुर स्रोत इसके अलावा, "प्रचुर उद्गम" के रूप में, पुरुजाय का तात्पर्य है कि वह वह प्रचुर स्रोत हैं जिससे सभी विविध रचनाएँ उत्पन्न होती हैं। वह वह अद्वितीय उद्गम हैं जो स्वयं को ब्रह्मांड के असंख्य रूपों में विभेदित करता है, फिर भी अपने सार में एकीकृत रहता है। यह अद्वैत दर्शन के साथ प्रतिध्वनित होता है कि एक ब्रह्म ही विविध संसार के रूप में प्रकट होता है।

विरोधाभास को अपनाना यह नाम दिव्य के विरोधाभास को खूबसूरती से दर्शाता है - एक परम वास्तविकता जो स्वयं को अनंत विविधता में व्यक्त करती है। कालभैरव पुरुजाय के रूप में वह हैं जो एक साथ रूप से परे (निर्गुण) हैं और सभी रूपों (सगुण) के बहुत स्रोत और सार हैं, जो उनकी सर्व-समावेशी प्रकृति को प्रदर्शित करता है।

433. पित्रै

पूरे ब्रह्मांड के दिव्य पिता को नमन।

विस्तार : पित्रे (पित्रे) नाम का अर्थ है "पिता को" या "दिव्य पिता"। यह कालभैरव की उस आदिम, परम और परोपकारी स्रोत के रूप में भूमिका को दर्शाता है जिससे समस्त सृष्टि उत्पन्न होती है।

दिव्य जनक हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, "पिता" ईश्वर की अवधारणा मूल कारण, निर्माता और ब्रह्मांड के पालक की ओर इंगित करती है। कालभैरव, पित्रे के रूप में, केवल एक जैविक पिता नहीं हैं, बल्कि सभी अस्तित्व का आध्यात्मिक स्रोत हैं - सभी व्यक्त और अव्यक्त का परम जनक। वह सृष्टि के मर्दाना सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करते हैं, वह बीज जिससे ब्रह्मांड खिलता है।

सार्वभौमिक प्रदाता और संरक्षक दिव्य पिता के रूप में, वह अपने सभी बच्चों (यानी, ब्रह्मांड में सभी प्राणियों) के लिए बिना शर्त प्रेम, पोषण और सुरक्षा के गुणों का प्रतीक हैं। वह परोपकारी प्रदाता हैं जो सृष्टि की निरंतरता और व्यवस्था सुनिश्चित करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे एक सांसारिक पिता अपने परिवार की देखभाल करता है। यह पहलू परम आश्रय और समर्थन की भावना को व्यक्त करता है।

धर्म और ब्रह्मांडीय व्यवस्था का स्रोत पिता पारंपरिक रूप से ज्ञान, अनुशासन और नैतिक मूल्यों को प्रदान करते हैं। ब्रह्मांड के पिता के रूप में, कालभैरव धर्म (धार्मिकता, ब्रह्मांडीय नियम) और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के परम स्रोत हैं। उनकी पितृत्व भूमिका ब्रह्मांड के कामकाज को नियंत्रित करने वाले सिद्धांतों का मार्गदर्शन और upholding तक फैली हुई है, जिससे संतुलन और न्याय सुनिश्चित होता है।

अतींद्रिय और अंतर्यामी पिता यह नाम कालभैरव के अतींद्रिय (सृष्टि से परे) पहलू को मूल स्रोत के रूप में और उनके अंतर्यामी (सृष्टि के भीतर) पहलू को ब्रह्मांड के हर परमाणु में मौजूद sustaining शक्ति के रूप में स्वीकार करता है। वह प्रथम कारण हैं, जिनकी उपस्थिति समस्त सृष्टि में व्याप्त है।

434. पिंगलाय

जिनका रंग पीलापन लिए हुए, सुनहरा-भूरा है, उन्हें नमन।

विस्तार : पिंगलाय नाम कालभैरव से जुड़े विशिष्ट रंग या आभा को संदर्भित करता है, विशेष रूप से लाल-भूरा, पीला-भूरा, लाल-पीला या सुनहरा-भूरा रंग। यह दिखने में सरल वर्णनात्मक शब्द हिंदू प्रतिमा विज्ञान और दर्शन में गहरा प्रतीकात्मक और आध्यात्मिक महत्व रखता है।

पीले-भूरे/सुनहरे-भूरे रंग का महत्व

• अग्निमय पहलू (Fiery Aspect): यह रंग अक्सर अग्नि और सूर्य से जुड़ा होता है। अग्नि एक परिवर्तनकारी तत्व है, जो शुद्धिकरण, बाधाओं के विनाश और प्रदीप्ति का प्रतीक है। कालभैरव का पीला-भूरा रंग उनकी अग्निमय, उग्र और परिवर्तनकारी ऊर्जा को दर्शाता है, जो नकारात्मकता को राख में बदलने में सक्षम है। यह ब्रह्मांडीय अग्नि के रूप में उनकी शक्ति का सुझाव देता है जो सभी भ्रम और अज्ञानता का उपभोग करती है।

• भयंकर और शुभ (Terrible and Auspicious): कई तांत्रिक परंपराओं और भयंकर देवताओं के चित्रण में, एक लाल या पीला-भूरा रंग उनके दुर्जेय और विस्मयकारी स्वरूप को बढ़ाता है। यह एक ऐसा रंग है जो दुष्टों में भय पैदा कर सकता है, फिर भी यह उस चमकती, शुभ ऊर्जा का भी प्रतिनिधित्व करता है जो सच्चे भक्त की रक्षा करती है।

• काल से संबंध (Connection to Time (Kala)): काल भैरव के रूप में, काल के स्वामी, उनके रंग को अस्तित्व के क्षणभंगुर, सदा-परिवर्तनशील रंग, या अनंत काल के गहरे, अटूट रंग के रूप में देखा जा सकता है जो अनगिनत युगों के बीतने से दागदार है। यह सृष्टि और विनाश के समृद्ध, मिट्टी के रंगों, चक्र के बाद चक्र का भी संकेत दे सकता है।

• आध्यात्मिक प्रदीप्ति (Spiritual Illumination): सुनहरा या लाल-पीला रंग अक्सर आध्यात्मिक चमक, ज्ञान और दिव्य वैभव से जुड़ा होता है। यह बताता है कि अपने भयंकर रूप में भी, कालभैरव एक दिव्य प्रकाश उत्सर्जित करते हैं जो अंधकार को दूर करता है और साधकों को सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है।

• ब्रह्मांडीय धूल और राख (Cosmic Dust and Ashes): यह रंग राख (भस्म) का भी प्रतीक हो सकता है जिससे शिव स्वयं को लेपते हैं, जो सांसारिक मामलों से वैराग्य और भौतिक शरीर की नश्वर प्रकृति का प्रतिनिधित्व करता है। इस संदर्भ में, पिंगला उस परम वास्तविकता का सुझाव देता है जो सभी भौतिक चीजों के घुल जाने के बाद भी बनी रहती है।

इस प्रकार, पिंगला केवल एक रंग नहीं है; यह कालभैरव के बहुआयामी स्वरूप का एक वर्णन है जो एक भयंकर शुद्धिकर्ता, ज्ञान का एक उज्ज्वल स्रोत और परिवर्तनकारी ब्रह्मांडीय ऊर्जा की साकार शक्ति है।

435. पावनाय

सभी वस्तुओं के परम पावन और पवित्र करने वाले को नमन।

विस्तार : पावन (पावनाय) नाम सर्वोच्च पवित्रता और शुद्ध करने की शक्ति को दर्शाता है।

परम शुद्धिकर्ता संस्कृत में, पावन का शाब्दिक अर्थ है "शुद्ध करने वाला," "पवित्र," या "स्वच्छ करने वाला।" यह कालभैरव की परम शुद्धता (शुद्धि) प्रदान करने वाली भूमिका को दर्शाता है। वे न केवल शारीरिक अशुद्धियों को, बल्कि इससे भी महत्वपूर्ण, आध्यात्मिक और कर्म संबंधी दोषों को शुद्ध करते हैं। वे अपने भक्तों के मन, शरीर और आत्मा को पापों, नकारात्मकता, अज्ञानता और आसक्ति से शुद्ध करते हैं।

सभी चीजों का पवित्रकर्ता पावन के रूप में, कालभैरव उन सभी को पवित्र करते हैं जिन्हें वे स्पर्श करते हैं या जिनमें उन्हें आह्वान किया जाता है। वे सामान्य स्थानों, वस्तुओं और प्राणियों को पवित्र संस्थाओं में बदल देते हैं। उनकी मात्र उपस्थिति या चिंतन पवित्रता प्रदान करता है। यह अस्तित्व के सबसे अपवित्र या प्रदूषित पहलुओं को भी शुद्ध करने तक फैला हुआ है, उन्हें अपनी दिव्य उपस्थिति के माध्यम से पवित्र बनाता है।

दिव्य वायु और अग्नि का प्रतीक पावन शब्द वायु (हवा) और अग्नि (आग) से भी जुड़ा है, ये दोनों ही प्राकृतिक शुद्धिकर्ता हैं। हवा अशुद्धियों को फैलाती है, और आग उपभोग करती है और रूपांतरित करती है, केवल सार को पीछे छोड़ती है। कालभैरव इस परम परिवर्तनकारी शक्ति का प्रतीक हैं, जो सांसारिक अस्तित्व के मैल को जलाकर शुद्ध आध्यात्मिक सार को प्रकट करते हैं।

अशुद्धियों से मुक्तिदाता यह नाम उनके करुणामय पहलू को उजागर करता है, जहाँ वे आत्माओं को अनगिनत जन्मों की संचित अशुद्धियों से मुक्त करते हैं, आध्यात्मिक विकास और परम मुक्ति (मोक्ष) का मार्ग प्रशस्त करते हैं। उनके प्रति समर्पण करके, भक्त अपने आंतरिक राक्षसों और बाहरी नकारात्मक प्रभावों से शुद्ध हो जाते हैं।

436. प्लक्षाय

पवित्र अंजीर के वृक्ष, सृष्टि के स्रोत (कल्पवृक्ष) के स्वरूप को नमन।

विस्तार : प्लक्षाय नाम भगवान शिव को पवित्र अंजीर के वृक्ष के रूप में संदर्भित करता है, जिसे गूलर अंजीर या भारतीय अंजीर (फिकस इन्फेक्टोरिया या फिकस रेसमोसा) के नाम से भी जाना जाता है, जिसका हिंदू परंपराओं में गहरा प्रतीकात्मक और ब्रह्मांडीय महत्व है।

ब्रह्मांड विज्ञान में प्लक्ष वृक्ष प्राचीन हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, विशेष रूप से पुराणों और महाभारत में, प्लक्ष वृक्ष सृष्टि की उत्पत्ति और ब्रह्मांड के पवित्र भूगोल के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है।

• सृष्टि का स्रोत: प्लक्ष वृक्ष को अक्सर दिव्य सरस्वती नदी के स्वर्गीय रूप (प्लक्ष प्रसवना) के स्रोत के रूप में पहचाना जाता है। एक वृक्ष से एक पवित्र नदी का उद्भव इस वृक्ष से जुड़ी जीवनदायिनी, उत्पादक शक्ति का प्रतीक है। जिस प्रकार नदी अपने स्रोत से निकलकर संसार का पोषण करती है, उसी प्रकार शिव, अपने प्लक्ष रूप में, वह परम स्रोत हैं जिससे समस्त सृष्टि उत्पन्न होती है।

• ब्रह्मांडीय धुरी/विश्व वृक्ष: बरगद (न्यग्रोध) और पीपल (अश्वत्थ) जैसे अन्य पवित्र वृक्षों की तरह, प्लक्ष को ब्रह्मांडीय वृक्ष या विश्व वृक्ष के एक पहलू के रूप में देखा जा सकता है। यह वृक्ष ब्रह्मांड की धुरी का प्रतिनिधित्व करता है, जो अस्तित्व के विभिन्न तलों को जोड़ता है - जड़ें पाताल लोक में, तना

पृथ्वी लोक में, और शाखाएँ स्वर्ग की ओर पहुँचती हैं। शिव, प्लक्ष के रूप में, इस सर्वव्यापी ब्रह्मांडीय संरचना का प्रतीक हैं, जो तीनों लोकों का आधार, सहारा और विस्तार हैं।

चक्रों और अनंतता का प्रतीक प्लक्ष वृक्ष, अपनी व्यापक जड़ प्रणाली और पुनर्जीवित होने की क्षमता के साथ, अनंतता, निरंतर सृष्टि और जीवन-मृत्यु के चक्रों का प्रतीक है। शिव इन चक्रों के परम स्वामी हैं - सृष्टि (ब्रह्मा के रूप में, विष्णु की नाभि से उत्पन्न, अक्सर वृक्षों से जुड़ा हुआ), संरक्षण (विष्णु के रूप में), और विनाश (रुद्र-शिव के रूप में)। प्लक्ष के साथ पहचाने जाने से, शिव उस अपरिवर्तनीय और शाश्वत आधार का प्रतिनिधित्व करते हैं जिससे सभी प्रकट वास्तविकता उत्पन्न होती है और जिसमें वह विलीन हो जाती है।

शुभता और पवित्र निवास प्लक्ष को एक अत्यंत शुभ वृक्ष माना जाता है, जो अक्सर पवित्र उपवनों और मंदिरों के पास पाया जाता है। इसकी उपस्थिति दिव्य ऊर्जा और सुरक्षा का प्रतीक है। शिव को प्लक्ष के रूप में आह्वान करके, भक्त उन्हें इस शुभता के अवतार के रूप में स्वीकार करते हैं, वह आध्यात्मिक दाता जो पूरे ब्रह्मांड को आश्रय और पोषण प्रदान करता है। यह इस बात की भी याद दिलाता है कि दिव्य केवल अमूर्त अवधारणाओं में ही नहीं, बल्कि हमारे आसपास की मूर्त, प्राकृतिक दुनिया में भी निवास करता है।

437. अतलाय

अतल लोक रूपी, जो सात पाताल लोकों में से एक हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : 'अतल' नाम का शाब्दिक अर्थ है "अथाह" या "अमाप्य"। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, अतल सात पाताल लोकों में से पहले और सबसे ऊँचे पाताल लोक का नाम भी है, जो पृथ्वी के नीचे स्थित है।

अथाह और अमाप्य जब भगवान कालभैरव पर लागू होता है, तो 'अतालाय' उनकी अबोधगम्यता और अमाप्यता को दर्शाता है। उनका न कोई आदि है न अंत, और उनका मूल स्वरूप मानवीय बुद्धि या इंद्रिय बोध से परे है। यह दिव्य के अनंत और पारलौकिक पहलू की ओर इशारा करता है, जिसे सीमित मन पूरी तरह से समझ या धारण नहीं कर सकते। यह उनकी ब्रह्मांडीय गहराई की ओर संकेत करता है, जो दर्शाता है कि उनकी शक्ति, ज्ञान और स्वयं का अस्तित्व असीम और किसी भी कल्पनीय सीमा से परे है। वह परम सत्य हैं जिसे अथाह सागर की तरह मापा नहीं जा सकता।

पाताल लोकों के स्वामी अतल के रूप में, वे स्वाभाविक रूप से उस पर शासन भी करते हैं। यह न केवल दृश्य स्थलीय लोकों पर बल्कि अस्तित्व के छिपे हुए, भूमिगत और रहस्यमय आयामों पर भी उनके प्रभुत्व को इंगित करता है। जबकि पाताल लोकों को अक्सर अधोलोक माना जाता है, वे आवश्यक रूप से बुराई के क्षेत्र नहीं होते हैं बल्कि महान ऐश्वर्य और आध्यात्मिक शक्ति के स्थान हो सकते हैं, जहाँ नागों और दैत्यों जैसे प्राणी निवास करते हैं। इस प्रकार, कालभैरव का अतल के साथ जुड़ाव का अर्थ है कि वे इन लोकों में भी सर्वोच्च संप्रभु हैं, ब्रह्मांडीय व्यवस्था और न्याय बनाए रखते हैं।

आधार और नींव का प्रतीक विरोधाभासी रूप से, "अथाह" के रूप में, अतल उस परम नींव का भी प्रतीक हो सकता है जिस पर सब कुछ टिका हुआ है। वे अस्तित्व का मूलभूत आधार हैं, वास्तविकता की सभी परतों के नीचे की आधारशिला हैं। भले ही वे अथाह हों, फिर भी वे आधार हैं। इसलिए, वे पूरे ब्रह्मांड के लिए अटूट सहारा हैं, जिसका अर्थ है कि संपूर्ण सृष्टि अंततः उनकी अबोधगम्य शक्ति द्वारा पोषित है।

438. पूषदन्तघ्ने

पूषन देव के दांत निकालने वाले को नमन।

विस्तार : पूषदन्तघ्ने एक ऐसा नाम है जो शैव परंपरा, विशेष रूप से पुराणों में एक महत्वपूर्ण मिथक से उत्पन्न हुआ है, जो भगवान शिव की भयंकर शक्ति और ब्रह्मांडीय न्याय को दर्शाता है। यह पूषन, दंत (यौगिकों में दंत) और घ्न का एक यौगिक है।

दक्ष का यज्ञ यह कहानी दक्ष यज्ञ से उत्पन्न हुई है जहाँ शिव के ससुर दक्ष प्रजापति ने शिव को आमंत्रित न करके या उन्हें यज्ञ की आहुतियों का हिस्सा न देकर उनका अपमान किया था। इस अपमान से क्रोधित होकर, और विशेष रूप से अपनी पत्नी सती (दक्ष की बेटी) के आत्मदाह से, शिव ने दक्ष के यज्ञ को नष्ट करने के लिए एक भयानक अवतार, वीरभद्र का निर्माण किया।

पूषन की भूमिका दक्ष के यज्ञ के विनाश के दौरान, विभिन्न देवताओं जिन्होंने इसमें भाग लिया था या निष्क्रिय रूप से खड़े थे, उन्हें अपने हिस्से का दंड मिला। पूषन (जिसे पूषण भी लिखा जाता है) एक वैदिक सौर देवता हैं, जो यात्राओं, समृद्धि, पोषण, खोई हुई चीजों को खोजने और झुंडों की रखवाली से जुड़े हैं। मिथक के कुछ संस्करणों में, पूषन या तो शिव के अपमान पर हँसे थे या अपने दाँतों से यज्ञ की आहुतियाँ खाई थीं, एक ऐसा कार्य जिसे विशेष रूप से अपवित्र माना जाता है क्योंकि यज्ञ का भोजन आमतौर पर देवताओं द्वारा बिना चबाए निगल लिया जाता है। परिणामस्वरूप, वीरभद्र ने पूषन के दाँत हिंसक रूप से तोड़ दिए, जिससे वह दंतहीन हो गए। उस दिन से, पूषन को नरम, पिसा हुआ भोजन खाने के लिए नियत किया गया था।

प्रतीकवाद और ब्रह्मांडीय न्याय यह कार्य कई स्तरों पर प्रतीकात्मक है: • अहंकार के लिए दंड: यह दिव्य का अनादर करने के परिणामों को रेखांकित करता है, विशेष रूप से शिव का, जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था और तपस्या के प्रतीक हैं। • अहंकार का विनाश: दाँतों का नुकसान पूषन के अभिमान को छीनने और यज्ञ के अहंकार को बिना किसी परिणाम के "उपभोग" करने या उसमें भाग लेने में उसकी अक्षमता का प्रतीक हो सकता है। यह शक्तिशाली देवताओं के भी विनम्र होने का संकेत देता है जब वे ब्रह्मांडीय धर्म का उल्लंघन करते हैं। • निष्पक्ष न्याय: शिव, भैरव के अपने भयंकर रूप में (या वीरभद्र के माध्यम से, उनके क्रोध का एक पहलू), निष्पक्ष न्याय प्रदर्शित करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि कोई भी, यहाँ तक कि अन्य देवता भी, कर्म और ब्रह्मांडीय संतुलन के नियमों से मुक्त नहीं हैं।

इस प्रकार, उस एक को नमस्कार जिसने देवता पूषन के दाँत तोड़ दिए, भैरव के परम अधिकार, न्याय के वितरक के रूप में उनकी भूमिका, और उनकी भयानक शक्ति को स्वीकार करता है जो गंभीर और निर्णायक कार्रवाई के माध्यम से ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखती है।

439. परमार्थगुरवे

परम सत्य के सर्वोच्च आध्यात्मिक गुरु को नमन।

विस्तार : परमार्थगुरवे नाम एक गहन यौगिक पद है, जो सर्वोच्च आध्यात्मिक वास्तविकता के संबंध में, सर्वोच्च आध्यात्मिक सत्ता के रूप में कालभैरव की भूमिका को प्रकट करता है। यह परमार्थ और गुरु से मिलकर बना है।

परमार्थ: परम सत्य "परमार्थ" का अर्थ है "सर्वोच्च सत्य," "परम वास्तविकता," या "सर्वोच्च अर्थ।" हिंदू दर्शन में, विशेष रूप से अद्वैत वेदांत और विभिन्न शैव सिद्धांत परंपराओं में, परमार्थ उस निरपेक्ष, अद्वैत, आध्यात्मिक वास्तविकता को संदर्भित करता है जो सभी द्वैत, अवधारणाओं और अनुभवजन्य अनुभवों से परे है। यह ब्रह्म का अकारण, शाश्वत और अपरिवर्तनीय सत्य है, या शैव

संदर्भ में, शिव की सर्वोच्च चेतना है। यह व्यावहारिक (पारंपरिक, अनुभवजन्य वास्तविकता) और प्रातिभासिक (भ्रामक वास्तविकता) के विपरीत है। जब कालभैरव को परमार्थ कहा जाता है, तो यह दर्शाता है कि वे स्वयं यह परम वास्तविकता हैं, अद्वैत चेतना का सार हैं।

गुरु: अंधकार का नाश करने वाला और प्रकाश देने वाला "गुरु" का पारंपरिक अर्थ है "अंधकार का नाश करने वाला" (गु - अंधकार, रु - नाश करने वाला) और यह एक आध्यात्मिक शिक्षक को दर्शाता है जो अज्ञान को दूर करता है और शिष्य को ज्ञान की ओर ले जाता है। गुरु केवल ज्ञान का शिक्षक नहीं होता, बल्कि आध्यात्मिक शक्ति (शक्ति) और ज्ञान का मूर्त रूप और संचारक होता है।

परम सत्य का सर्वोच्च आध्यात्मिक गुरु इन दोनों को मिलाकर, परमार्थगुरु का अर्थ है कि कालभैरव केवल सत्यों के शिक्षक नहीं हैं, बल्कि परम, अद्वैत सत्य के स्वयं स्रोत और मूर्त रूप हैं। वे वह आचार्य हैं जो सर्वोच्च आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करते हैं, साधक को सीधे अपने सच्चे स्वरूप (आत्मन) को परम वास्तविकता (ब्रह्म/शिव) के समान समझने की ओर ले जाते हैं। उनका मार्गदर्शन केवल बौद्धिक निर्देश नहीं है, बल्कि ज्ञान का सीधा संचार है जो अज्ञान (अविद्या) के अंधकार को मिटाता है और परम सत्य के प्रकाश को प्रकट करता है।

कालभैरव का परमार्थगुरु के रूप में होना यह दर्शाता है कि वे आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) के मार्ग पर परम मार्गदर्शक हैं, वे जो समय (काल) की क्षणभंगुर प्रकृति को प्रकट करते हैं और भक्त को उससे परे कालातीत, सर्वोच्च वास्तविकता की ओर मार्गदर्शन करते हैं। वे परम गुरु हैं जिनसे अन्य सभी आध्यात्मिक वंश और शिक्षाएँ अंततः अपना अधिकार और सार प्राप्त करती हैं। परमार्थगुरवे के प्रति समर्पण करना सर्वोच्च आध्यात्मिक वास्तविकता की सीधी प्राप्ति की तलाश करना है, जो सबसे शक्तिशाली और परम आध्यात्मिक गुरु द्वारा निर्देशित है।

440. प्रीतये

प्रेम, आनंद और स्नेह के अवतार को नमन।

विस्तार : प्रीतये नाम संस्कृत मूल 'प्री' से लिया गया है, जिसका अर्थ प्रसन्न करना, आनंदित करना, प्रसन्न करना या प्रेम करना है। इस प्रकार, प्रीति (प्रीति) प्रेम, स्नेह, आनंद, प्रसन्नता, सुख और लगाव को संदर्भित करती है।

प्रेम और स्नेह का मूर्त रूप जब कालभैरव को प्रीतये के रूप में पुकारा जाता है, तो यह उनके शुद्ध प्रेम, बिना शर्त स्नेह और गहन आनंद के मूर्त रूप के पहलू को उजागर करता है। जबकि कालभैरव, शिव के एक उग्र स्वरूप के रूप में, अक्सर विनाश और आतंक से जुड़े होते हैं, यह नाम उनके अस्तित्व के एक विरोधाभासी लेकिन अभिन्न पहलू को प्रकट करता है: परम आनंद (आनंद) और अपने भक्तों के प्रति परोपकारी स्नेह के रूप में उनका आंतरिक स्वभाव। यह सतही प्रेम नहीं है, बल्कि एक गहरा, सर्वव्यापी प्रेम है जो संपूर्ण सृष्टि को समाहित करता है।

प्रसन्नता और आनंद का स्रोत प्रीति के रूप में, वे अपने भक्तों के लिए प्रसन्नता और आनंद का परम स्रोत हैं। यह प्रसन्नता केवल इंद्रिय सुख नहीं है, बल्कि वह आध्यात्मिक आनंद और संतोष है जो भक्ति और ईश्वर के साथ गहरे संबंध से उत्पन्न होता है। वे ही हैं जो आनंद का कारण बनते हैं, और वे ही हैं जो अपने भीतर पूर्ण आनंद का अनुभव करते हैं, जो परम सत्य के सच्चिदानंद (अस्तित्व, चेतना, आनंद) स्वरूप को दर्शाता है।

भक्ति का लक्ष्य आध्यात्मिक प्राप्ति के लिए प्रयासरत भक्त के लिए, प्रीति उस प्रेमपूर्ण भक्ति (भक्ति) का प्रतिनिधित्व करती है जो भक्त को ईश्वर से बांधती है। उन्हें प्रीतये के रूप में पुकारना यह दर्शाता है कि वे इस प्रेम के परम लक्ष्य हैं, और प्रेमपूर्ण उपस्थिति की वह अवस्था भी है जिसे प्राप्त करने की

कोई इच्छा रखता है। वे प्रेम के दाता और स्वयं प्रेम दोनों हैं। यह नाम हमें याद दिलाता है कि उनके दुर्जेय स्वरूप में भी, उनका अंतर्निहित उद्देश्य अपने भक्तों को गहन प्रेम से बचाना और उनका पोषण करना है, अंततः उन्हें मुक्ति और आनंद की ओर ले जाना है।

441. प्रीतमते

प्रेममय और परोपकारी स्वभाव वाले (भैरव) को नमन।

विस्तार : प्रीतात्मते नाम संस्कृत शब्द 'प्रीत' से बना है, जिसका अर्थ है "प्रसन्न", "संतुष्ट", "आनंदित", "प्रिय" या "प्यारा"। प्रत्यय '-आत्मते' (जो '-आत्मन' से आया है) का अर्थ है "का स्वभाव होना" या "का स्वरूप होना"।

प्रियतम यह नाम कालभैरव के "प्रिय" या "प्यारे" स्वरूप पर जोर देता है। जबकि भैरव को अक्सर भयंकर और विस्मयकारी रूपों से जोड़ा जाता है, प्रीतात्मते अपने भक्तों के प्रति उनके प्रेम और परोपकार के गहरे संबंध को उजागर करता है। वह केवल एक भयानक दंड देने वाले नहीं हैं, बल्कि एक दिव्य सत्ता हैं जो अपने अनुयायियों को गहराई से संजोते और उनकी परवाह करते हैं।

प्रसन्न और कृपालु भगवान "प्रीत" का अर्थ "प्रसन्न" या "संतुष्ट" भी है। जब कोई भक्त सच्ची पूजा करता है, भक्ति अर्पित करता है, या धार्मिक कार्य करता है, तो कालभैरव, प्रीतात्मते के रूप में, प्रसन्न होते हैं। यह प्रसन्नता उनकी कृपा, आशीर्वाद और सुरक्षा में बदल जाती है। यह दर्शाता है कि वह शुद्ध भक्ति और अच्छे आचरण से आसानी से प्रसन्न हो जाते हैं, वरदान प्रदान करते हैं और दुख दूर करते हैं।

परोपकारी स्वभाव यह शब्द एक मौलिक प्रेमपूर्ण और दयालु स्वभाव को दर्शाता है, जो उनके भयंकर कार्यों के पीछे भी निहित है। उनकी कठोरता या दंडात्मक पहलू अंततः बड़े अच्छे के लिए हैं, आत्माओं को धर्म और मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करने के लिए, ठीक वैसे ही जैसे एक प्रेम करने वाला माता-पिता बच्चे को अनुशासित करता है। यह नाम हमें याद दिलाता है कि उनके भयानक रूप की सतह के नीचे परोपकार और सर्वोच्च प्रेम का एक सागर छिपा है।

दिव्य स्नेह का प्रतीक प्रीतात्मते दिव्य के एक ऐसे पहलू को प्रकट करता है जो अपनी रचना को संजोता है और सभी प्राणियों के कल्याण की तलाश करता है। यह एक अनुस्मारक है कि दिव्य की सबसे दुर्जेय अभिव्यक्तियों में भी प्रेम और करुणा का एक आंतरिक मूल होता है, जो उन लोगों को आराम और आश्वासन प्रदान करता है जो भक्ति के साथ उनके पास आते हैं।

442. पुरातनाय

जो सबसे प्राचीन, आदिकालीन, और सबसे पुराने हैं उन (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : पुरातनाय नाम संस्कृत शब्द पुरातन से लिया गया है, जिसका अर्थ है "प्राचीन," "आदिम," "शाश्वत," "सबसे पुराना," या "जो बिल्कुल शुरुआत से अस्तित्व में था।" यह नाम कालभैरव के कालातीत, आदिम और अकृत स्वभाव को सशक्त रूप से प्रतिपादित करता है।

प्रथम कारण पुरातन के रूप में, कालभैरव को केवल पुराना नहीं, बल्कि सभी सृष्टि से पहले का माना जाता है - प्रथम कारण, वह मूल सिद्धांत जिससे सभी अस्तित्व प्रकट होते हैं। वह अल्फा और ओमेगा, शुरुआत और अंत हैं। यह अवधारणा वेदांतिक दर्शन के अनुरूप है, जो एक अद्वितीय, शाश्वत ब्रह्म को मानता है जो संपूर्ण ब्रह्मांड का स्रोत है।

समय और सृष्टि से परे यह गुण इस बात पर जोर देता है कि कालभैरव मौलिक रूप से समय और सृष्टि की सीमाओं से परे हैं। जबकि वह समय के स्वामी (काल) हैं, वह स्वयं इसके अधीन नहीं हैं। वह सृष्टि और विलय के चक्रों के शुरू होने से पहले मौजूद थे और उनके समाप्त होने के बाद भी मौजूद रहेंगे। वह शाश्वत, अपरिवर्तनीय वास्तविकता हैं जो सभी लौकिक अस्तित्व के मूल में है।

प्राचीन ज्ञान पुरातन का अर्थ अनंत अस्तित्व चक्रों के माध्यम से प्राप्त गहन ज्ञान भी है। यह बताता है कि कालभैरव सभी संचित ज्ञान, अनुभव और सत्य का प्रतीक हैं। वह प्राचीन धर्म, आदिम व्यवस्था और ब्रह्मांड को नियंत्रित करने वाले मौलिक नियमों का स्रोत हैं।

निरंतरता का प्रतीक एक आध्यात्मिक संदर्भ में, उन्हें पुरातन के रूप में स्वीकार करने का अर्थ है कि वह सभी युगों में दिव्य उपस्थिति की अटूट निरंतरता का प्रतिनिधित्व करते हैं। वह अपरिवर्तनीय आधार हैं जिस पर क्षणभंगुर ब्रह्मांड टिका हुआ है, जो दुनिया की क्षणभंगुरता से मुक्ति चाहने वालों के लिए एक निरंतर लंगर प्रदान करता है।

443. पराशराय

शत्रुओं का नाश करने वाले और महान ऋषि पराशर को नमन।

विस्तार : पराशराय नाम बहुस्तरीय है, जो एक विशिष्ट ऋषि और शिव के गुणों से जुड़े एक गहन दार्शनिक अर्थ दोनों को संदर्भित करता है।

महान ऋषि पराशर पराशर (Parāśara) एक पूजनीय वैदिक ऋषि थे, जो वशिष्ठ के पोते और व्यास के पिता थे, जिन्हें वेदों के संकलन और महाभारत के लेखन का श्रेय दिया जाता है। वे हिंदू परंपरा में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं, जो अपने विशाल ज्ञान, आध्यात्मिक शक्ति और विष्णु पुराण जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथों और संभवतः ज्योतिष (वैदिक ज्योतिष) पर मूलभूत ग्रंथों के लेखन के लिए जाने जाते हैं। कालभैरव को पराशर से जोड़कर, यह नाम गहन ज्ञान, प्राचीन आध्यात्मिक वंशों और वैदिक ज्ञान के अधिकार से संबंध को दर्शाता है। यह सुझाव देता है कि कालभैरव ऐसे पूजनीय ज्ञान का प्रतीक हैं या उसके स्रोत हैं।

शत्रु का नाश करने वाला (परा-शर) पराशर शब्द को व्युत्पत्ति के अनुसार तोड़ा जा सकता है। एक व्याख्या में, "परा" का अर्थ "शत्रु" या "सर्वोच्च" है, और "शर" का अर्थ "तीर" या "नाश करने वाला" हो सकता है। इस प्रकार, पराशर का अर्थ "वह जो शत्रु का नाश करता है" हो सकता है।

यहां "शत्रु" केवल एक बाहरी शत्रु नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक प्रगति के आंतरिक विरोधी भी हैं: अज्ञान (अविद्या), भ्रम (माया), अहंकार (अहंकार), आसक्ति, भय और पाप। कालभैरव, पराशर के रूप में, परम आध्यात्मिक योद्धा हैं जो इन आंतरिक बाधाओं को मिटाते हैं, अपने भक्तों के लिए मुक्ति और ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करते हैं। वे सभी नकारात्मकताओं के नाशक हैं जो आध्यात्मिक उत्थान में बाधा डालती हैं।

"शत्रु" ब्रह्मांडीय व्यवस्था और धर्म में किसी भी बाधा को भी संदर्भित कर सकता है, जिसे कालभैरव, अपने उग्र रूप में, लगातार बेअसर करते हैं।

सर्वोच्च ज्ञान और संरक्षण का प्रतीक इसलिए, "पराशराय को नमस्कार" कालभैरव को प्राचीन ज्ञान के अवतार, सभी बाधाओं (आंतरिक और बाहरी दोनों) को दूर करने वाले, और आध्यात्मिक साधकों के सर्वोच्च रक्षक के रूप में एक आह्वान है। यह भैरव के उग्र पहलू को एक महान ऋषि के गहन, शांत ज्ञान से जोड़ता है।

444. पद्मगर्भाय

जो स्वयं में सृष्टि-कमल को समाहित किए हुए हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : पद्मगर्भा (Padmagarbha) नाम एक गहन और दृश्यात्मक रूप से समृद्ध विशेषण है, जो पद्म (कमल) और गर्भ (गर्भ, आंतरिक, मूल, या भ्रूण) शब्दों को जोड़ता है।

सृष्टि का ब्रह्मांडीय गर्भ "पद्मगर्भा" का शाब्दिक अर्थ है "जिसका गर्भ कमल है" या "जो अपने भीतर कमल को धारण करता है।" यह कल्पना सीधे ब्रह्मांडीय कमल की हिंदू ब्रह्मांडीय अवधारणा को संदर्भित करती है, जो विष्णु (नारायण) की नाभि से निकलता है और जिससे ब्रह्मा, सृष्टिकर्ता देवता,

सृष्टि शुरू करने के लिए प्रकट होते हैं। कालभैरव को पद्मगर्भा कहकर, यह इंगित करता है कि वह परम स्रोत है जिससे यह ब्रह्मांडीय सृजनात्मक क्रिया भी उत्पन्न होती है। वह सभी सृष्टि का आधार है, जो अपनी सत्ता के भीतर संपूर्ण सृजनात्मक क्षमता को समाहित करता है।

पवित्रता और आध्यात्मिकता का प्रतीक कमल (पद्म) स्वयं हिंदू दर्शन में एक शक्तिशाली प्रतीक है। यह पवित्रता, सौंदर्य, आध्यात्मिक विकास और सृष्टि का प्रतिनिधित्व करता है। कीचड़ में जड़ें होने के बावजूद, यह पानी के ऊपर उठकर बेदाग खिलता है, जो अनासक्ति (निर्लेप) और भौतिक दुनिया से अछूता रहने की क्षमता का प्रतीक है। पद्मगर्भा के रूप में कालभैरव का अर्थ है कि सृष्टि का सार, जो शुद्ध और स्वाभाविक रूप से आध्यात्मिक है, उनके भीतर निवास करता है।

आंतरिक सार और जीवन का स्रोत गर्भ (Garbha) पहलू का अर्थ "भ्रूण" या "सबसे आंतरिक भाग" भी हो सकता है। इस प्रकार, कालभैरव सभी जीवन और अस्तित्व का मूल बीज या उत्पत्ति है, जिसमें ब्रह्मांड का खाका समाहित है। वह छिपा हुआ, आंतरिक स्रोत है - अव्यक्त क्षमता जिससे व्यक्त ब्रह्मांड प्रकट होता है। यह बताता है कि संपूर्ण ब्रह्मांड, अपने सभी विविध रूपों और घटनाओं के साथ, उनसे बाहरी नहीं है, बल्कि उनकी अपनी दिव्य सत्ता से एक उत्सर्जन है।

चक्रीय अस्तित्व के स्वामी कालभैरव, काल के स्वामी के रूप में, पद्मगर्भा के रूप में उनकी भूमिका इस बात पर भी जोर देती है कि वह वही हैं जो सृष्टि, संरक्षण और विघटन के चक्रों को शुरू करते हैं और समाहित करते हैं। वह संपूर्ण ब्रह्मांडीय नाटक को, उसकी शुरुआत (कमल का खिलना) से लेकर उसके अंतिम विघटन तक, अपने सार्वभौमिक स्वरूप के भीतर धारण करते हैं।

445. पराय

सर्वोच्च, परात्पर और परम सत्य को नमन।

विस्तार : परा (पराय) नाम कालभैरव के सर्वोच्च, परम और परात्पर स्वरूप को इंगित करता है। यह सभी सीमाओं और भेदों से परे, परम वास्तविकता के रूप में उनकी स्थिति को समाहित करता है।

परम वास्तविकता परा का शाब्दिक अर्थ है "सर्वोच्च," "उच्चतम," "परम," "परे," या "परात्पर।" दार्शनिक शब्दों में, परा उस चीज़ को संदर्भित करता है जो सभी अभिव्यक्तियों से परे है, सभी द्वंद्वों से परे है, और सामान्य मन द्वारा सभी समझ से परे है। यह परम सत्य को दर्शाता है, वह मूलभूत सार जिससे सभी अस्तित्व उत्पन्न होते हैं और जिसमें वे अंततः विलीन हो जाते हैं। कालभैरव, परा के रूप में, सृष्टि से पहले का अव्यक्त ब्रह्म, आदिम स्रोत हैं।

परात्पर और अनकंडीशन्ड (अप्रतिबंधित) यह उपाधि इस बात पर जोर देती है कि कालभैरव अंतरिक्ष, समय, रूप या गुणों (निर्गुण) से सीमित नहीं हैं। वह अनकंडीशन्ड (निरुपाधि) वास्तविकता हैं जो भौतिक संसार से स्वतंत्र रूप से मौजूद हैं। जबकि वे सृष्टि के साथ बातचीत करने के लिए विभिन्न रूपों में प्रकट होते हैं, परा के रूप में उनका वास्तविक स्वरूप इन अभिव्यक्तियों से अछूता और अप्रभावित रहता है। वह वह आधार हैं जिस पर सभी अस्तित्व टिके हुए हैं, फिर भी वे स्वयं एक प्रतिबंधात्मक अर्थ में उस अस्तित्व का हिस्सा नहीं हैं।

सभी द्वंद्वों से परे परा का अर्थ सभी विपरीत युग्मों – अच्छे और बुरे, सुख और दुख, जन्म और मृत्यु – से परे होना भी है। परम वास्तविकता के रूप में, वह इन सभी द्वंद्वों को अपनी अनंत सत्ता में समाहित और पार करते हैं, बिना उनके द्वारा परिभाषित हुए। यह परिप्रेक्ष्य एकता और सापेक्ष सत्यों से मुक्ति की गहरी भावना प्रदान करता है।

आध्यात्मिक आकांक्षा का लक्ष्य आध्यात्मिक साधकों के लिए, परा परम लक्ष्य का प्रतिनिधित्व करता है – परम बोध की वह अवस्था जहाँ व्यक्तिगत आत्मा (जीवात्मा) परम आत्मा (परमात्मा) में विलीन हो जाती है। कालभैरव को परा के रूप में नमन करना उनकी सभी आध्यात्मिक यात्राओं के अंतिम

गंतव्य, उस अद्वैत सत्य के रूप में स्वीकार करना है जिसे सभी परंपराएँ समझने का प्रयास करती हैं।

446. परपुरंजयाय

अपने शत्रुओं के नगरों के महान विजेता को नमन।

विस्तार : परपुरंजय नाम संस्कृत के शब्दों 'पर', 'पुर' और 'जय' का एक यौगिक है।

नगरों का विजेता (विजयी योद्धा) 'पुर' का शाब्दिक अर्थ 'शहर' या 'किला' है, और 'जय' का अर्थ 'विजय' या 'विजेता' है। इस संदर्भ में 'पर' का अर्थ 'शत्रु' या 'सर्वोच्च/महान' हो सकता है। इसलिए, परपुरंजय का अनुवाद "अपने शत्रुओं के नगरों को जीतने वाला" या "नगरों का महान विजेता" होता है। यह तुरंत शिव की एक दुर्जेय योद्धा के रूप में कल्पना को उद्घाटित करता है, विशेष रूप से उनकी पौराणिक उपलब्धि - त्रिपुर, असुरों (राक्षसों) के तीन ब्रह्मांडीय नगरों का विनाश, जिसे माया ने बनाया था।

त्रिपुर का विनाश हिंदू पौराणिक कथाओं में यह विशिष्ट प्रसंग बताता है कि कैसे शिव ने अपने भयानक रूप में असुरों तारकाक्ष, कमलाक्ष और विद्युन्माली के तीन अभेद्य नगरों को नष्ट कर दिया। ये नगर आकाश में तैरते थे और केवल एक ही बाण से नष्ट किए जा सकते थे। भगवान शिव, अन्य देवताओं के साथ अपने रथ और शस्त्रों के रूप में, त्रिपुरांतक (त्रिपुर का विनाशक) के रूप में प्रकट हुए और एक ही बाण से नगरों को जलाकर राख कर दिया। यह कार्य चेतना की तीन अवस्थाओं (जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति) या आत्मा को बांधने वाली तीन अशुद्धियों (अणव, कर्म, माया) के विनाश का प्रतीक है।

बाधाओं पर विजय शाब्दिक युद्धक्षेत्र से परे, यह नाम शिव की सभी बाधाओं, भ्रमों और नकारात्मकताओं को दूर करने और नष्ट करने की शक्ति को दर्शाता है जो आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डालती हैं। "अपने शत्रुओं के नगरों" को रूपक रूप से व्यक्ति के भीतर अज्ञानता, अहंकार, आसक्तियों और सांसारिक इच्छाओं के किले के रूप में समझा जा सकता है। परपुरंजय के रूप में, वह वह शक्ति हैं जो इन आंतरिक किलों को तोड़ती हैं, जिससे भक्त को मुक्ति मिलती है।

परम अधिकार यह नाम शिव के सर्वोच्च अधिकार और अजेयता पर भी जोर देता है। वह परम शक्ति हैं जो सबसे दुर्जेय विरोधियों, लौकिक और आंतरिक दोनों को जीत सकती हैं, धर्म और आध्यात्मिक सत्य की विजय सुनिश्चित करती हैं।

447. उपप्लवाय

अधर्मी के लिए विपत्ति और आपदाएँ लाने वाले को नमन।

विस्तार : उपप्लव नाम ब्रह्मांडीय व्यवस्था के भीतर एक विशिष्ट उद्देश्य के लिए निर्देशित एक विनाशकारी या विपत्तिजनक शक्ति को संदर्भित करता है।

आपदाओं और विपत्तियों के कारण (विनाशकारी पहलू) उपप्लव शब्द का शाब्दिक अर्थ "आपदा," "विपत्ति," "संकट," या "कष्ट" है। जब इसे कालभैरव से जोड़ा जाता है, तो यह दिव्य एजेंट के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है जो आपदाओं, प्रतिकूलताओं या विनाशकारी घटनाओं को लाते हैं। यह दुर्भावना से नहीं, बल्कि दिव्य न्याय और ब्रह्मांडीय संतुलन के एक पहलू के रूप में होता है।

अधर्मियों के लिए (नैतिक आयाम) महत्वपूर्ण विशेषण, "अधर्मियों के लिए" (अधर्मिणाम), उनकी विनाशकारी शक्ति के नैतिक और धार्मिक संदर्भ को उजागर करता है। उपप्लव एक दंडात्मक कार्रवाई है, जो धर्म (धार्मिकता) के मार्ग से विचलित होने वालों के लिए एक सीधा परिणाम है। कालभैरव, इस पहलू में, एक स्वर्गीय न्यायाधीश और नैतिक कानून के प्रवर्तक के रूप में कार्य

करते हैं। उनकी आपदाएं उन लोगों को सुधारने, दंडित करने या यहां तक कि समाप्त करने के लिए डिज़ाइन की गई हैं जो दुनिया में अराजकता, अन्याय और बुराई को बढ़ावा देते हैं। वह अपने कर्मों के माध्यम से नकारात्मक कर्म जमा करने वालों को उचित कष्ट देते हैं।

ब्रह्मांडीय शोधक इस भूमिका में, कालभैरव एक ब्रह्मांडीय शोधक के रूप में कार्य करते हैं, दुनिया को नकारात्मकता से शुद्ध करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि धर्म का संतुलन बहाल हो। उनकी विपत्तियाँ अधार्मिकता की प्रणालियों को ध्वस्त करने और आत्माओं को उनके अपराधों से सीखने के अवसर प्रदान करने का काम करती हैं, हालांकि कठिन अनुभवों के माध्यम से। यह विनाशकारी क्षमता अंततः एक रचनात्मक शक्ति है, क्योंकि विनाश अक्सर नई रचना या एक नवीनीकृत व्यवस्था से पहले होता है।

आध्यात्मिक चेतावनी भक्त के लिए, यह नाम अधार्मिक कार्यों के परिणामों और नैतिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों का पालन करने के महत्व की एक शक्तिशाली याद दिलाता है। यह इस बात पर जोर देता है कि दिव्य के भयंकर पहलुओं का भी ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने और प्राणियों को धार्मिकता की ओर मार्गदर्शन करने में एक परोपकारी उद्देश्य होता है।

448. उभयाकराय

व्यक्त और अव्यक्त दोनों के सृजनकर्ता को नमन।

विस्तार : उभयाकाराय नाम शिव के परम ब्रह्मांडीय अधिकार का एक गहरा वर्णन है, जो सभी अस्तित्व का स्रोत है, और अभिव्यक्ति की द्वैतता को जोड़ता है। यह संस्कृत शब्द 'उभय' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "दोनों," और 'आकार', जिसका अर्थ है "रूप," "आकृति," "पहलू," या "अभिव्यक्ति।" इस प्रकार, यह उस एक को संदर्भित करता है जो "दोनों रूपों" या "अभिव्यक्तियों का निर्माता" है।

व्यक्त (सकल) (The Manifest (Sakāla)) यह उन सभी को संदर्भित करता है जो बोधगम्य, मूर्त और अंतरिक्ष, समय और कार्य-कारण के नियमों के अधीन हैं। इसमें संपूर्ण घटनात्मक ब्रह्मांड शामिल है—सभी आकाशगंगाएँ, तारे, ग्रह, जीवित प्राणी और भौतिक रूप। यह 'सगुण ब्रह्म' के रूप में शिव हैं, गुणों वाले सर्वोच्च सत्ता, जो सक्रिय रूप से सृष्टि, संरक्षण और संहार में संलग्न हैं। वह ब्रह्मांड का उपादान कारण (भौतिक कारण) और निमित्त कारण (कुशल कारण) हैं। इस व्यक्त वास्तविकता के निर्माता के रूप में, वह ब्रह्मांड का ताना-बाना और संरचना हैं, जो इसमें अंतर्निहित हैं।

अव्यक्त (निष्कल) (The Unmanifest (Nishkala)) यह उस पारलौकिक, निराकार, निर्गुण और निरपेक्ष वास्तविकता को संदर्भित करता है जो सभी व्यक्त अस्तित्व का आधार है। यह इंद्रियों और बुद्धि की पहुँच से परे है, शुद्ध संभाव्यता या शुद्ध अस्तित्व की स्थिति में विद्यमान है। यह 'निर्गुण ब्रह्म' के रूप में शिव हैं, गुणों के बिना सर्वोच्च सत्ता, परम वास्तविकता जो असीमित और अपरिभाषित है। यह वह शून्य है जिससे सृष्टि उत्पन्न होती है और वह अवस्था जिसमें सभी अभिव्यक्ति अंततः विलीन हो जाती है।

द्वैतताओं के बीच सेतु (The Bridge Between Dualities) व्यक्त और अव्यक्त 'दोनों' के निर्माता होने के कारण, उभयाकाराय शिव के अद्वैत स्वरूप पर जोर देता है। वह केवल उस दुनिया के निर्माता नहीं हैं जिसे हम देखते हैं, बल्कि उस मूल आधार के भी स्रोत हैं जिससे यह उत्पन्न होता है और जिसमें यह विलीन हो जाता है। यह नाम अद्वैत दर्शन को खूबसूरती से समाहित करता है, जहाँ सगुण ब्रह्म (व्यक्तिगत ईश्वर) और निर्गुण ब्रह्म (निराकार निरपेक्ष) अलग-अलग नहीं हैं, बल्कि एक ही परम वास्तविकता के दो पहलू हैं। वह 'अंतर्निहित' (सृष्टि के भीतर) और 'पारलौकिक' (सृष्टि से परे) दोनों हैं।

यह नाम दर्शाता है कि शिव सभी अस्तित्व की अवस्थाओं के मूल, पालक और अंतिम संहारक हैं—सूक्ष्मतम क्षमता से लेकर सघनतम भौतिक रूप तक, और वह निराकारता जो सभी रूपों से पहले और बाद में आती है। वह अपनी सभी विरोधाभासी पूर्णता में परम वास्तविकता हैं।

449. परमार्थैकपण्डिताय

जो परम सत्य के एकमात्र और सर्वोच्च विद्वान हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : परमार्थैकपण्डिताय नाम एक गहरा और बहुस्तरीय संस्कृत यौगिक है जो कालभैरव के सर्वोच्च ज्ञान और परम वास्तविकता पर उनकी महारत को प्रकट करता है। यह इस प्रकार विभाजित होता है:

• परम-अर्थ (Paramā-artha): "परम अर्थ" या "परम सत्य" यह उच्चतम सत्य, परम वास्तविकता (ब्रह्म या शिव-तत्त्व) को संदर्भित करता है, जो क्षणभंगुर सांसारिक घटनाओं से परे है। यह एक अकारण, शाश्वत और निरपेक्ष सिद्धांत है जो सभी अस्तित्व का आधार है। परमार्थ दार्शनिक अन्वेषण और रहस्यमय अनुभव का आध्यात्मिक उद्देश्य है।

• एक (Eka): "एकमात्र" या "अद्वितीय" यह विशिष्टता और अद्वितीयता को दर्शाता है। इसका अर्थ है कि इस विशेष क्षेत्र में कालभैरव के समान कोई दूसरा नहीं है, कोई बराबर नहीं है, और कोई दूसरा नहीं है।

• पण्डित (Pandita): "विद्वान," "ज्ञानी," "बुद्धिमान," "स्वामी" एक पंडित पारंपरिक रूप से वह होता है जिसके पास गहरा ज्ञान, विवेक और बौद्धिक महारत होती है, विशेष रूप से आध्यात्मिक और दार्शनिक मामलों में। यह उस व्यक्ति को दर्शाता है जिसके पास केवल अकादमिक समझ नहीं है, बल्कि गहन सत्यों की सहज अनुभूति भी है।

परम वास्तविकता का एकमात्र और सर्वोच्च ज्ञाता जब संयुक्त किया जाता है, तो परमार्थैकपण्डिताय कालभैरव को परम सत्य के अद्वितीय, अतुलनीय स्वामी और विशेषज्ञ के रूप में दर्शाता है। वह केवल वह नहीं है जो निरपेक्ष के बारे में जानता है, बल्कि इस ज्ञान का अवतार और स्रोत है।

वह वह है जो: 1. ब्रह्मांड, चेतना और स्वयं की प्रकृति को पूरी तरह से समझता है। 2. वास्तविक (परमार्थ) और अवास्तविक (माया) के बीच अंतर कर सकता है। 3. जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) से मुक्ति (मोक्ष) की ओर प्राणियों का मार्गदर्शन करने के लिए ज्ञान रखता है।

यह नाम कालभैरव को परम आध्यात्मिक गुरु और सर्वोच्च ज्ञान के सार की स्थिति तक उठाता है, जो उन्हें केवल एक भयानक रक्षक के रूप में ही नहीं, बल्कि पारलौकिक ज्ञान के दाता के रूप में भी उनकी भूमिका पर जोर देता है। उनके उपदेश, उनका अस्तित्व ही, अस्तित्व के उच्चतम अर्थ को समझने का मार्ग है।

450. महेश्वराय

जो महान ईश्वर हैं, सभी के सर्वोच्च प्रभु हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : महेश्वराय (महेश्वर) नाम भगवान शिव के लिए एक गहन और मौलिक उपाधि है, जो हिंदू देवमंडल में उनकी सर्वोच्च स्थिति को दर्शाता है। यह दो संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है:

महा: महान, शक्तिशाली, सर्वोच्च, उत्कृष्ट। ईश्वर: स्वामी, शासक, मालिक, भगवान।

परमेश्वर संयुक्त रूप से, महेश्वर का सीधा अर्थ "महान स्वामी" या "परमेश्वर" है। यह नाम शिव की स्थिति को परम वास्तविकता, सभी सृष्टि, संरक्षण और विघटन पर पूर्ण संप्रभु के रूप में सशक्त रूप से घोषित करता है। वह केवल "एक देवता" नहीं हैं, बल्कि अन्य सभी से ऊपर "महान ईश्वर" हैं। यह उन्हें शैव धर्मशास्त्र में परब्रह्म की स्थिति तक पहुंचाता है, वह पारलौकिक और अंतर्निहित वास्तविकता जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है और जिसमें सब कुछ लौट आता है।

ब्रह्मांड के स्वामी महेश्वर के रूप में, शिव ब्रह्मांडीय निर्देशक हैं, जो पूरे ब्रह्मांड का संचालन करते हैं। वह सभी देवताओं, खगोलीय प्राणियों, मनुष्यों और अस्तित्व के हर दूसरे रूप के स्वामी हैं। उनकी इच्छा सर्वोच्च है, और उनका प्रभुत्व पूर्ण है। यह पहलू प्राकृतिक नियमों, समय के चक्रों और सभी प्राणियों के भाग्य पर उनके नियंत्रण को दर्शाता है। वह ज्ञान, शक्ति और अधिकार का अंतिम स्रोत हैं।

परोपकारी शासक जबकि "ईश्वर" का अर्थ केवल एक शासक हो सकता है, "महा" उपसर्ग इसे शक्ति के साथ-साथ अपार परोपकार और ज्ञान की भावना से भर देता है। महेश्वर के रूप में, शिव अपने सर्वोच्च प्रभुत्व का प्रयोग अत्याचार से नहीं, बल्कि एक ब्रह्मांडीय करुणा (अनुग्रह) से करते हैं जिसका उद्देश्य सभी प्राणियों को मुक्ति (मोक्ष) की ओर ले जाना है। उनकी महानता में उनकी असीम दया, वरदान देने की उनकी क्षमता और आध्यात्मिक सांत्वना चाहने वालों के लिए अंतिम आश्रय के रूप में उनकी भूमिका शामिल है।

दार्शनिक महत्व त्रिक शैववाद और अन्य शैव विद्यालयों में, महेश्वर सर्वोच्च चेतना (चित) का प्रतिनिधित्व करते हैं जो अस्तित्व के सभी में व्याप्त और उससे परे है। वह अस्तित्व का मौलिक आधार हैं, वह अव्यक्त स्रोत जिससे प्रकट ब्रह्मांड (प्रकृति) उत्पन्न होता है। शिव को महेश्वर के रूप में पहचानना वास्तविकता की अद्वैतवादी प्रकृति की स्वीकृति है, जहाँ व्यक्तिगत आत्मा (आत्मन) अंततः महान स्वामी के समान है।

451. महादेवाय

सभी देवताओं में सर्वोच्च, महान देव को नमन।

विस्तार : महादेव नाम महा (महान, शक्तिशाली, सर्वोच्च) और देव (ईश्वर, देवता, दिव्य सत्ता) का एक यौगिक है।

सर्वोच्च ईश्वर महादेव का शाब्दिक अर्थ है "महान ईश्वर" या "सर्वोच्च देवता"। यह उपाधि स्पष्ट रूप से शिव को हिंदू देवमंडल के शिखर पर रखती है, उन्हें परम वास्तविकता, सभी अस्तित्व का स्रोत और अंत, अन्य सभी दिव्य सत्ताओं से श्रेष्ठ मानती है।

परात्पर और अंतर्यामी यह पदनाम शिव के द्वैत स्वरूप को इंगित करता है: वे परात्पर हैं, ब्रह्मांड से परे अव्यक्त ब्रह्म के रूप में विद्यमान हैं, और साथ ही अंतर्यामी भी हैं, सृष्टि के प्रत्येक अणु में व्याप्त हैं। वे परम चेतना हैं जो सभी घटनाओं के मूल में है।

देवों के स्वामी कई परंपराओं में, विशेष रूप से शैव धर्म में, शिव को ब्रह्मा (सृष्टिकर्ता) और विष्णु (पालक) जैसे अन्य प्रमुख देवताओं के भी स्वामी माना जाता है। वे ही हैं जिनसे अन्य सभी देवता अपनी शक्ति और अस्तित्व प्राप्त करते हैं। यह नाम ब्रह्मांडीय पदानुक्रम में उनकी सर्वोच्च स्थिति पर जोर देता है।

शुभता और शक्ति का प्रतीक महादेव में निहित "महानता" उनके गुणों तक भी फैली हुई है। वे सर्वोच्च शक्ति, ज्ञान, वैराग्य और शुभता का प्रतीक हैं। वे ही हैं जो परम मुक्ति प्रदान करते हैं और भक्तों को जन्म और मृत्यु के चक्रों (संसार) से परे ले जाते हैं। यह नाम ब्रह्मांड के पूर्ण शासक और प्राप्त की जाने वाली परम वास्तविकता के रूप में उनकी भूमिका को समाहित करता है।

452. मुद्गलाय

मुद्गर धारण करने वाले या मुदगल ऋषि को नमन।

विस्तार : मुद्गलाय नाम की व्याख्या दो प्राथमिक तरीकों से की जा सकती है, जो भगवान कालभैरव को शक्ति और प्राचीन ज्ञान के प्रतीकों से जोड़ती है, जिसकी जड़ें "मुद्गल" शब्द में हैं।

गदा धारण करने वाले "मुद्गल" का शाब्दिक अर्थ गदा, लाठी या हथौड़ा है। इस संदर्भ में, यह उस दिव्य अधिकार और शक्ति का प्रतीक है जिसे कालभैरव धारण करते हैं। गदा शक्ति, अनुशासन और अज्ञान, बुराई और बाधाओं को नष्ट करने की क्षमता से जुड़ा एक पारंपरिक हथियार है।

• न्याय का प्रतीक: दिव्य न्याय और ब्रह्मांडीय नियमों के प्रशासक के रूप में, कालभैरव इस प्रतीकात्मक गदा का उपयोग दुष्टों को दंडित करने और धर्म (धार्मिकता) को बनाए रखने के लिए करते हैं। • बाधाओं का विनाश: भक्तों के लिए, गदा आध्यात्मिक और भौतिक बाधाओं को तोड़ने, प्रगति और मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करने की उनकी क्षमता का प्रतिनिधित्व करती है। • भ्रम पर विजय: गदा का दुर्जेय प्रहार उन भ्रमों (माया) को तोड़ने के रूप में भी देखा जा सकता है जो व्यक्तियों को दुख के चक्र से बांधते हैं।

ऋषि मुद्गल से संबंध वैकल्पिक रूप से, मुद्गल एक प्राचीन ऋषि (ऋषि) को संदर्भित करता है जिसका उल्लेख ऋग्वेद और महाभारत सहित विभिन्न हिंदू धर्मग्रंथों में मिलता है।

• वैदिक ज्ञान: ऋग्वेद के सूक्त 10.102 में एक ऋषि मुद्गल का उल्लेख है, जो अपनी अद्वितीय पराक्रम और दिव्य कृपा के तहत विजय के लिए जाने जाते हैं। कालभैरव को मुद्गल से जोड़ना यह संकेत दे सकता है कि भगवान ऐसे प्राचीन द्रष्टा के ज्ञान, तपस्या और आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक हैं। • तपस्या का प्रतीक: मुद्गल जैसे ऋषियों को उनकी तपस्या (तपस्या) और आध्यात्मिक उपलब्धियों के लिए पूजा जाता था। "मुद्गल" होने के नाते, कालभैरव स्वयं को ऐसी केंद्रित आध्यात्मिक ऊर्जा और गंभीर तपस्या के फल के अंतिम अवतार के रूप में दर्शाते हैं। • ज्ञान के प्रदाता: जिस तरह एक ऋषि ज्ञान प्रदान करता है, कालभैरव, इस पहलू में, परम आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के दाता और बौद्धिक अंधकार को दूर करने वाले बन जाते हैं।

इस प्रकार, "मुद्गलाय" कालभैरव को एक शक्तिशाली, शुद्ध करने वाले हथियार के भयंकर धारक के रूप में या गहन प्राचीन ज्ञान और कठोर आध्यात्मिक दृढ़ता के अवतार के रूप में पूजता है, दोनों पहलू उनके दुर्जेय दिव्य सार को रेखांकित करते हैं।

453. मधुराय

अत्यंत मधुर, मनोहारी और आनंददायक स्वरूप वाले को नमन।

विस्तार : मधुराया नाम संस्कृत शब्द "मधुर" से लिया गया है, जिसमें केवल भौतिक मिठास से परे अर्थों की एक समृद्ध श्रृंखला शामिल है।

अत्यंत मधुर और अमृत-तुल्य अपने सबसे सीधे अर्थ में, "मधुर" का अर्थ स्वाद में "मीठा" होता है। कालभैरव पर लागू होने पर, यह उनके दिव्य सार को परम आध्यात्मिक मिठास के स्रोत के रूप में दर्शाता है, जैसे अमृत (अमृत)। भक्तों के लिए, उनकी कृपा, उपस्थिति और आशीर्वाद को अत्यधिक मधुर और पौष्टिक अनुभव किया जाता है, जो आध्यात्मिक पोषण और आनंद प्रदान करता है जो किसी भी सांसारिक सुख से बढ़कर है।

आकर्षक और आनंददायक "मधुर" का अर्थ ऐसी चीज़ भी है जो इंद्रियों और मन के लिए आकर्षक, मनमोहक और आनंददायक हो। जबकि भैरव मुख्य रूप से अपने उग्र स्वरूप के लिए जाने जाते हैं, यह नाम उनके दिव्य रूप में एक विरोधाभासी सुंदरता और आकर्षण को प्रकट करता है। उनके कार्य, यद्यपि कभी-कभी कठोर होते हैं, अंततः उनके भक्तों के भले के लिए होते हैं, और इस परोपकारी इरादे को गहरा आनंददायक और आरामदायक माना जाता है। वह वह हैं जो अपने दिव्य आकर्षण से अपने भक्तों के दिलों को मोहित करते हैं।

सुसंगत और मधुर "मधुर" शब्द मधुर ध्वनियों, सुंदर संगीत और सुसंगत गुणों से भी जुड़ा है। यह बताता है कि कालभैरव की ब्रह्मांडीय लीला (दिव्य खेल) और उनका अस्तित्व ब्रह्मांडीय व्यवस्था और सुंदरता की एक सिम्फनी है। उनकी दिव्य ऊर्जाएं एक पूर्ण कंपन सामंजस्य के साथ प्रतिध्वनित होती हैं जो उन लोगों को शांति और सांत्वना देती हैं जो इसके अनुरूप हैं।

उग्रता का परोपकारी पहलू यह नाम कालभैरव के अक्सर अनदेखे परोपकारी और करुणामय पक्ष पर प्रकाश डालता है। जबकि उनका बाहरी रूप अहंकार के लिए और उन लोगों के लिए भयावह हो सकता है जो सांसारिक भ्रमों से चिपके रहते हैं, एक सच्चे साधक के लिए, उनकी कृपा अत्यंत मधुर होती है। वह अज्ञान और भय को नष्ट करते हैं, द्वेष से नहीं, बल्कि अपने भक्तों के लिए एक गहरे, "मधुर" प्रेम से, उन्हें मुक्ति और परम आनंद की ओर ले जाते हैं। वह वह हैं जो, अपने दुर्जेय स्वरूप के बावजूद, आध्यात्मिक मुक्ति के सबसे मधुर फल प्रदान करते हैं।

454. मृडवे

जो कोमल, मृदु और करुणामय हैं, उनको नमन।

विस्तार : मृडवे नाम शिव के एक रूप मृड को संदर्भित करता है, जो कोमलता, मृदुता और करुणा का प्रतीक है। मृड (mṛḍa) शब्द संस्कृत धातु 'मृड्' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "कृपालु होना," "कोमल होना," या "दया दिखाना।"

विरोधाभासी कोमलता जबकि शिव को अक्सर भयंकर और विनाशकारी पहलुओं से जोड़ा जाता है, विशेष रूप से उनके भैरव रूपों में, मृड उनके परोपकारी और शांतिपूर्ण स्वभाव को उजागर करता है। यह नाम दिव्य के विरोधाभासी स्वरूप का उदाहरण है, जहाँ परम वास्तविकता में भयानक (भैरव) और अत्यंत कोमल (मृड) दोनों शामिल हैं। यह शिव के उस पहलू का प्रतिनिधित्व करता है जो सांत्वना, आराम और मुक्ति प्रदान करता है।

सुख के दाता मृड यह विचार भी व्यक्त करता है कि वह सुख, कल्याण और समृद्धि प्रदान करने वाले हैं। वह सभी सुखद और शुभ चीजों का स्रोत हैं। कालभैरव के इस पहलू का आह्वान आशीर्वाद, शांति और दुख के निवारण के लिए किया जाता है, यह दर्शाता है कि काल और विनाश के स्वामी का भी एक गहरा पोषण करने वाला पक्ष है।

भैरव का करुणामय पहलू कालभैरव के संदर्भ में, मृड यह दर्शाता है कि समय के प्रतीत होने वाले कठोर पाठों और विनाश की अपरिहार्य प्रक्रिया के माध्यम से भी, एक अंतर्निहित करुणा है। भैरव द्वारा लाया गया परिवर्तन, यद्यपि तीव्र होता है, अंततः आत्मा की आध्यात्मिक शुद्धि और मुक्ति के लिए होता है। इस प्रकार, भयानक पहलू इस अंतर्निहित कोमलता और कृपा से संतुलित होता है, जो भक्तों को आश्वस्त करता है कि तीव्र कठिनाई या ब्रह्मांडीय विघटन की अवधि के दौरान भी, दिव्य का अंतिम इरादा परोपकारी होता है।

455. मत्ताशयाय

जिनके विचार दिव्य आनंद से मदहोश हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : "मत्ताशयाय" नाम में दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्द शामिल हैं: मत्त और आशय, जो कालभैरव के संदर्भ में एक गहरा रहस्यमय और दार्शनिक अर्थ प्रस्तुत करते हैं।

मत्त: मदमस्त, आनंदित, प्रफुल्लित (Intoxicated, Enraptured, Exhilarated)

"मत्त" का सीधा अर्थ "मदमस्त," "उन्मत्त," या "आनंदित" होता है। हालांकि, एक आध्यात्मिक और दिव्य संदर्भ में, यह मदहोशी भौतिक प्रकृति की नहीं होती, बल्कि यह परम आनंद, दिव्य परमानंद, या परम वास्तविकता के एक अत्यधिक अनुभव की स्थिति को संदर्भित करती है। इसका तात्पर्य

दिव्य सार में पूरी तरह से लीन, डूबे हुए और अभिभूत होने से है। यह अवस्था सामान्य चेतना से परे है, जो एक गहन और तीव्र आध्यात्मिक अनुभव को इंगित करती है जो सांसारिक से परे है।

आशय: विचार, इरादा, निवास, पात्र (Thought, Intention, Dwelling, Receptacle)

"आशय" के कई अर्थ हैं, जो सभी यहाँ प्रासंगिक हैं: 1. विचार/इरादा/मन: यह आंतरिक मानसिक क्रियाओं, विचारों, इरादों और इच्छाओं के भंडार को संदर्भित करता है। 2. निवास/आवास/स्थान: यह उस स्थान को भी संदर्भित कर सकता है जहाँ कुछ रहता है या जहाँ से वह उत्पन्न होता है। 3. हृदय/चेतना: आध्यात्मिक अर्थ में, यह किसी के अस्तित्व के मूल, चेतना को इंगित करता है।

दिव्य आनंद से मदमस्त (Intoxicated with Divine Bliss)

जब संयुक्त किया जाता है, तो "मत्ताशयाय" का अर्थ है "वह जिसके विचार, इरादे या आंतरिक चेतना दिव्य आनंद से मदमस्त है।" यह कालभैरव का एक ऐसा चित्र प्रस्तुत करता है जो आध्यात्मिक परमानंद की उच्चतम अवस्था में निरंतर डूबे रहते हैं।

• शाश्वत आनंद: यह बताता है कि कालभैरव का स्वयं का अस्तित्व, उनके विचार और उनकी चेतना दिव्य आनंद और परम वास्तविकता की एक अंतहीन धारा से संतृप्त हैं। वे केवल आनंद का अनुभव नहीं कर रहे हैं, बल्कि वे स्वयं आनंद के मूर्त रूप हैं। • उत्कृष्टता: यह मदहोशी उन्हें मानवीय समझ और सांसारिक चिंताओं से ऊपर उठाती है। उनके कार्य और अभिव्यक्तियाँ, यहाँ तक कि भयानक भी, पूर्ण आध्यात्मिक संतुष्टि की इस अवस्था से उत्पन्न होती हैं, न कि सामान्य भावनाओं या प्रेरणाओं से। • आनंद का स्रोत: भक्तों के लिए, यह नाम इंगित करता है कि कालभैरव पर ध्यान करने से उन्हें दिव्य मदहोशी का एक समान, यद्यपि कम, रूप प्राप्त हो सकता है, जो उन्हें मुक्ति और आध्यात्मिक आनंद के मार्ग की ओर ले जाता है। इसका तात्पर्य है कि वे सभी आनंद और संतोष का अंतिम स्रोत हैं। उनकी "मदहोशी" नियंत्रण का नुकसान नहीं है, बल्कि सर्वोच्च, आत्म-साक्षात्कार चेतना की एक अवस्था है जहाँ सभी द्वैत समाप्त हो जाते हैं और केवल परम आनंद शेष रहता है।

456. महायोगिने

सभी योगियों में परम और सर्वोच्च योगी को नमन।

विस्तार : महायोगी नाम संस्कृत के दो शब्दों महा और योगी का एक यौगिक है।

महा (Mahā): इस उपसर्ग का अर्थ है "महान," "सर्वोच्च," "उत्कृष्ट," या "विशाल।" यह आगे आने वाली चीज़ की उच्चतम डिग्री या परम प्रकृति को दर्शाता है।

योगी (Yogī): योग का अभ्यास करने वाला, वह जो परमात्मा से जुड़ा हुआ है, या वह जो आध्यात्मिक पूर्णता की ओर ले जाने वाले योग के सिद्धांतों को मूर्त रूप देता है।

योग के सर्वोच्च अभ्यासी महायोगी के रूप में, कालभैरव (और भगवान शिव, जिनके वे एक प्रकटीकरण हैं) केवल योग के अभ्यासी नहीं हैं, बल्कि परम, आदिम योगी हैं। वे योग के उपदेशक हैं, वह स्रोत हैं जिससे सभी योगिक ज्ञान और अभ्यास उत्पन्न होते हैं। उनकी स्थिति पूर्ण अवशोषण, पूर्ण स्थिरता और सर्वोच्च वास्तविकता के साथ पूर्ण एकता की है। योग के सभी रूप, चाहे वह कर्म योग, ज्ञान योग, भक्ति योग, या राज योग हो, अंततः उनसे ही उत्पन्न होते हैं और उन्हीं की ओर लौटते हैं।

सभी योगिक शक्तियों के स्वामी यह नाम यह भी दर्शाता है कि वे अपनी पूर्णता में सभी योगिक शक्तियों (सिद्धियों) के स्वामी हैं। वे अस्तित्व की द्वैतता से परे हैं, अपनी शाश्वत ध्यान अवस्था के माध्यम से मन और पदार्थ की सभी सीमाओं को पार करते हैं। उनका योग एक ब्रह्मांडीय अभ्यास है, जिसमें ब्रह्मांड की संपूर्ण रचना, संरक्षण और विघटन शामिल है।

आध्यात्मिक साधकों के लिए आदर्श आध्यात्मिक साधकों के लिए, महायोगी परम लक्ष्य और आदर्श का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे व्यक्तिगत आत्मा (आत्मन) का ब्रह्मांडीय आत्मा (ब्रह्म) के साथ पूर्ण मिलन को मूर्त रूप देते हैं, जो गहन ध्यान, आत्म-अनुशासन और ज्ञान के माध्यम से प्राप्त मुक्ति (मोक्ष) की स्थिति को दर्शाता है। महायोगी के रूप में उनकी पूजा या उन पर ध्यान करने से साधकों को उनके अपने योगिक मार्ग पर प्रेरणा और मार्गदर्शन मिलता है, जिससे उन्हें बाधाओं को दूर करने और अपने वास्तविक स्वरूप को समझने में मदद मिलती है। वे शाश्वत, मौन साक्षी हैं, जो सदैव आत्म-आनंद में लीन रहते हैं।

457. महाकर्मणे

महान और पराक्रमी ब्रह्मांडीय कार्यों के कर्ता को नमन।

विस्तार : महाकर्मा (महाकर्मणे) नाम महा और कर्म का एक यौगिक है, जिसका अर्थ है "महान कार्य करने वाला"। यह विशेषण ब्रह्मांडीय प्रक्रियाओं के सर्वोच्च सूत्रधार के रूप में कालभैरव की भूमिका का गहनता से वर्णन करता है।

महा: महान, शक्तिशाली, सर्वोच्च कर्म: क्रिया, कार्य, लेकिन कारण और प्रभाव का सार्वभौमिक नियम भी।

महान ब्रह्मांडीय कार्यों का निष्पादक कालभैरव, महाकर्मा के रूप में, ब्रह्मांड में सबसे गहन और व्यापक कार्यों के पीछे दिव्य कारक हैं। ये सामान्य कर्म नहीं हैं बल्कि सृष्टि (sṛṣṭi), स्थिति (sthiti), और संहार (saṃhāra) के मूलभूत संचालन हैं। वह परम शक्ति हैं जो ब्रह्मांडीय नृत्य, ब्रह्मांड के लयबद्ध विस्तार और संकुचन को संचालित करती हैं। एक तारे के जन्म से लेकर एक आकाशगंगा के विनाश तक की हर महत्वपूर्ण घटना, महाकर्मा के रूप में उनके अधिकार क्षेत्र में है।

कर्म के नियम के स्वामी भौतिक कार्यों से परे, महाकर्मा अस्तित्व को नियंत्रित करने वाले आध्यात्मिक नियमों, मुख्य रूप से स्वयं कर्म के नियम पर उनकी महारत को भी संदर्भित करता है। वह केवल कार्यों का निष्पादक नहीं हैं बल्कि वह सिद्धांत हैं जो न्याय और परिणाम सुनिश्चित करते हैं। सभी प्राणी, मानव या दिव्य, कर्म के सिद्धांतों के अधीन हैं, और कालभैरव, इस भूमिका में, इस सार्वभौमिक नियम के प्रवर्तक और पर्यवेक्षक हैं। वह अच्छे और बुरे दोनों कर्मों के फल प्रदान करते हैं, जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था और न्याय के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

कर्म का अतिक्रमण जबकि वह परम कार्य करते हैं, वह कर्म के सांसारिक बंधनों का भी अतिक्रमण करते हैं। अपने कर्मों से बंधे व्यक्तिगत आत्माओं के विपरीत, कालभैरव के कार्य व्यक्तिगत लगाव या इच्छा के बिना किए गए ब्रह्मांडीय कर्तव्य हैं, केवल सार्वभौमिक धर्म के रखरखाव के लिए। यह विरोधाभासी प्रकृति उनकी दिव्यता को रेखांकित करती है - बिना प्रभावित हुए कार्य करना, और अपने लिए कर्म का कोई अवशेष उत्पन्न किए बिना कर्म को आरंभ करना।

458. महाऔषधाय

सभी रोगों को ठीक करने वाली महान, सार्वभौमिक औषधि के स्वरूप को नमन।

विस्तार : महौषधाय नाम संस्कृत के शब्दों महा और औषध से लिया गया है।

महा (Mahā): यह उपसर्ग "महान," "सर्वोच्च," "सार्वभौमिक," या "सर्वव्यापी" को दर्शाता है।

औषध (Auṣadha): यह शब्द "दवा," "उपचार करने वाली जड़ी-बूटी," "उपाय," या "इलाज" को दर्शाता है।

महान सार्वभौमिक औषधि (The Great Universal Medicine) इसलिए, महौषधम का अर्थ "महान औषधि" या "सर्वोच्च उपाय" है। कालभैरव के संदर्भ में, यह केवल शारीरिक बीमारियों के लिए एक भौतिक औषधि नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक और अस्तित्वगत उपाय है जो सभी

प्रकार के कष्टों का निवारण करता है।

सभी बीमारियों का इलाज करने वाला (शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक) (Curer of All Ills - Physical, Mental, Spiritual) यह नाम कालभैरव की परम चिकित्सक के रूप में क्षमता को उजागर करता है। उनकी "औषधि" इतनी शक्तिशाली है कि वह ठीक कर सकती है: 1. शारीरिक बीमारियाँ: वह शारीरिक बीमारियों और रोगों को दूर कर सकते हैं। 2. मानसिक कष्ट: वह मानसिक तनाव, चिंता, भय (जैसा कि उनके नाम से ही पता चलता है), और मनोवैज्ञानिक असंतुलन को दूर करते हैं। 3. आध्यात्मिक अज्ञानता: सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वह सभी बीमारियों में सबसे बड़ी बीमारी, जो कि अविद्या (अपने वास्तविक स्वरूप का अज्ञान) है, को दूर करते हैं, जो जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) का मूल कारण है। इस अज्ञान को दूर करके, वह मुक्ति (मोक्ष) प्रदान करते हैं।

दुःख का नाश करने वाला और प्रतिकूलता से रक्षक (Dispeller of Suffering and Protector from Adversity) वह जिन "बीमारियों" या "रोगों" को ठीक करते हैं, उनमें मानवीय दुखों के सभी रूप शामिल हैं—भौतिक गरीबी, भावनात्मक उथल-पुथल, बौद्धिक भ्रम और आध्यात्मिक बंधन। उनका सार सभी दुखों का antidote (प्रतिविष) और परम कल्याण का मार्ग है। वह एक प्रभावी औषधि की तरह काम करते हैं जो रोगजनकों से लड़ती है, दुर्भाग्य और नकारात्मकताओं को दूर करते हुए एक रक्षक के रूप में कार्य करते हैं।

दिव्य कृपा का प्रतीक (Symbol of Divine Grace) यह नाम कालभैरव के परोपकारी पहलू पर जोर देता है, जहाँ उनकी दुर्जेय शक्ति प्राणियों के कल्याण की ओर निर्देशित होती है, जो पुनर्स्थापनात्मक और परिवर्तनकारी कृपा का एक गहरा स्रोत है। वह दिव्य चिकित्सक हैं जिनकी उपस्थिति ही अस्तित्वगत स्थिति का इलाज है।

459. महर्षये

समस्त दिव्य द्रष्टाओं और ऋषियों में महानतम को नमन।

विस्तार : महर्षि नाम महा (महान, शक्तिशाली, सर्वोच्च) और ऋषि (द्रष्टा, संत, प्रेरित कवि, वैदिक भजन के रचयिता) का एक यौगिक है।

सत्य के सर्वोच्च द्रष्टा महर्षि के रूप में, कालभैरव ज्ञान, अंतर्दृष्टि और आध्यात्मिक बोध के शिखर का प्रतीक हैं। वह परम ऋषि हैं, जिनके पास ब्रह्मांडीय नियमों, ब्रह्मांड के सूक्ष्म कार्यों और अस्तित्व के गहन सत्यों का प्रत्यक्ष और अव्यवहित ज्ञान है। उन मानव ऋषियों के विपरीत जो जीवन भर तपस्या और ध्यान के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करते हैं, कालभैरव स्वाभाविक रूप से वह सर्वोच्च ज्ञान और दृष्टि हैं। वह वह हैं जो सृष्टि, पालन और संहार की संपूर्णता को एक साथ देखते हैं।

वैदिक ज्ञान का स्रोत ऋषियों को पारंपरिक रूप से वेदों के प्रकटकर्ता के रूप में पूजा जाता है, जो हिंदू धर्म के मूलभूत ग्रंथ हैं। महर्षि के रूप में संबोधित किए जाने से, कालभैरव को उस शाश्वत, दिव्य ज्ञान के स्रोत या परम अवतार के रूप में निहित रूप से स्वीकार किया जाता है। वह मूल द्रष्टा हैं जिनसे अन्य सभी ऋषि अपनी प्रेरणा और समझ प्राप्त करते हैं।

मानव जाति के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत यह नाम मानवता के लिए सर्वोच्च मार्गदर्शक के रूप में उनकी भूमिका को भी दर्शाता है। जिस प्रकार ऋषियों ने धर्म और आध्यात्मिक दिशा प्रदान की, उसी प्रकार कालभैरव, महर्षि के रूप में, आध्यात्मिक आकांक्षा के सर्वोच्च आदर्श का प्रतिनिधित्व करते हैं - परम ज्ञान और परम वास्तविकता के साथ एकात्मता की स्थिति। उनका ज्ञान सभी व्यक्तिगत, लौकिक और स्थानिक सीमाओं को पार करता है।

460. कपिलाचार्याय

महान शिक्षक और ऋषि, कपिल के स्वरूप को नमन।

विस्तार : कपिलाचार्याय नाम ऋषि कपिल का एक गहन संदर्भ है, जो हिंदू परंपराओं में, विशेष रूप से सांख्य दर्शन के संस्थापक के रूप में पूजनीय हैं।

कपिल: लाल-भूरे रंग के ऋषि "कपिल" शब्द का शाब्दिक अर्थ "लाल-भूरा" या "पीला" है। यह ऋषि कपिल के रंग को संदर्भित करता है। प्राचीन भारत में, लाल या लाल-भूरा रंग तपस्वियों और ऋषियों से जुड़ा था, क्योंकि वे गेरुए वस्त्र पहनते थे और उन्होंने जो परिवर्तनकारी शक्ति (तपस) प्राप्त की थी।

आचार्य: महान शिक्षक "आचार्य" प्रत्यय एक गहन शिक्षक, एक गुरु, या एक आध्यात्मिक उपदेशक को दर्शाता है जो न केवल पवित्र ग्रंथों को जानता है बल्कि उनका अभ्यास भी करता है और उदाहरण के द्वारा सिखाता है। यह ऐसे व्यक्ति को इंगित करता है जो ज्ञान के एक विशिष्ट क्षेत्र में एक अधिकारी है और दूसरों को आध्यात्मिक मार्ग पर मार्गदर्शन करता है। इस प्रकार, कपिलाचार्य "महान शिक्षक कपिल" हैं।

सांख्य दर्शन के संस्थापक कपिल सांख्य दर्शन के संस्थापक के रूप में प्रसिद्ध हैं, जो हिंदू दर्शन के छह रूढ़िवादी विद्यालयों में से एक है। सांख्य एक द्वैतवादी दर्शन है जो दो परम वास्तविकताओं को मानता है: पुरुष (चेतना/आत्मा) और प्रकृति (आदिम प्रकृति/पदार्थ)। भगवान शिव, अपने विभिन्न अभिव्यक्तियों में, अक्सर आदिम ज्ञान और सभी दार्शनिक प्रणालियों के स्रोत से जुड़े होते हैं। कालभैरव को कपिलाचार्य के रूप में पहचान कर, यह दर्शाता है कि वे इस गहन समझ के सार, उस परम ज्ञान का प्रतीक हैं जो क्षणभंगुर भौतिक संसार और शाश्वत चेतना के बीच अंतर करता है।

ज्ञान और विवेक का मूर्त रूप यह नाम इंगित करता है कि कालभैरव सांख्य द्वारा समर्थित विवेकी ज्ञान (विवेक) का मूर्त रूप हैं - पुरुष को प्रकृति से अलग करने की क्षमता। वे इस ज्ञान के दिव्य स्रोत हैं, जो वास्तविकता की सच्ची प्रकृति को प्रकट करके प्राणियों को आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) की ओर मार्गदर्शन करते हैं। वे केवल समय के संहारक नहीं हैं, बल्कि सर्वोच्च ज्ञान के माध्यम से मुक्ति प्रदान करने वाले भी हैं।

461. मृगधाम्ने

जिनका मृग वासस्थान या प्रतीक है, उन भगवान को नमन।

विस्तार : मृगधाम्ने नाम मृग (हिरण) और धामन (निवास, घर या प्रतीक) का एक यौगिक है।

हिंदू प्रतिमा विज्ञान में हिरण हिरण, विशेष रूप से कृष्ण मृग (काला हिरण) या मृग, हिंदू पौराणिक कथाओं में एक महत्वपूर्ण प्रतीक है और अक्सर शिव से जुड़ा हुआ है। यह फुर्ती, मायावी प्रकृति, मासूमियत और चंचल, बेचैन मन का भी प्रतिनिधित्व करता है।

शिव का हिरण से संबंध शिव को अक्सर अपने ऊपरी बाएँ हाथों में से एक में हिरण पकड़े हुए दर्शाया जाता है। यह प्रतीक पशुपति, सभी प्राणियों के स्वामी के रूप में उनकी छवि का अभिन्न अंग है। हिरण कई गहन पहलुओं को दर्शा सकता है:

• मन पर नियंत्रण: मन की तुलना अक्सर हिरण से की जाती है - बेचैन, आसानी से विचलित होने वाला, और लगातार एक विचार से दूसरे विचार पर कूदने वाला। हिरण को धारण करके, शिव मन और इंद्रियों पर अपने पूर्ण नियंत्रण का प्रतीक हैं। वह चेतना के जंगली, अनियंत्रित पहलुओं को नियंत्रित करते हैं, उन्हें शांति और आंतरिक शांति की ओर ले जाते हैं।

• वन के स्वामी: हिरण जंगलों और पहाड़ों का निवासी है, जो शिव से जुड़े प्राकृतिक क्षेत्र हैं। मृगधामा के रूप में, वह सभी प्राणियों, विशेष रूप से जंगली प्राणियों के स्वामी हैं, और इसलिए प्राकृतिक दुनिया के परम रक्षक हैं।

• बलिदान और मासूमियत का प्रतीक: कुछ परंपराओं में, हिरण बलिदान या एक सौम्य, मासूम प्रकृति की अवधारणा का भी संकेत दे सकता है। शिव, अपने उग्र रूपों में, अक्सर निर्दोषों की रक्षा के लिए इन सौम्य गुणों को अपनाते हैं।

• सूक्ष्मता और मायावीता: हिरण तेज और पकड़ने में मुश्किल होता है, जो परम सत्य की मायावी प्रकृति या आध्यात्मिक वास्तविकता के सूक्ष्म पहलुओं का प्रतिनिधित्व करता है जिन्हें उचित अनुशासन के बिना समझना मुश्किल है। शिव, परम वास्तविकता के रूप में, व्यक्त और अव्यक्त दोनों हैं, और उन्हें समझने के लिए गहन आंतरिक एकाग्रता की आवश्यकता होती है।

• आत्मा का निवास: धामन का अर्थ प्रकाश या महिमा भी हो सकता है। गहरे अर्थ में, इसका अर्थ यह हो सकता है कि शिव का सार सृष्टि के सबसे निर्दोष और सूक्ष्म पहलुओं में भी निवास करता है, जो उनकी सर्वव्यापकता को दर्शाता है।

462. महालय

जो ब्रह्मांड का महान, सर्वोच्च और परम निवास स्थान है, उसे नमन।

विस्तार : महालय नाम महा (महान, सर्वोच्च, परम) और आलय (निवास, धाम, पात्र, घर, शरण का स्थान) से व्युत्पन्न एक गहन यौगिक शब्द है।

परम निवास महालय का अर्थ है कि कालभैरव हर उस चीज़ का सर्वोच्च, परम और सबसे बड़ा निवास स्थान है जो मौजूद है। यह केवल एक भौतिक निवास नहीं है बल्कि एक आध्यात्मिक और आध्यात्मिक अवधारणा है। वह सभी सृजन, रखरखाव और विघटन के लिए आधार, स्रोत और अंतिम विश्राम स्थल है। जैसे सभी नदियाँ अंततः समुद्र में लौट आती हैं, वैसे ही सभी घटनाएँ, सभी प्राणी और यहाँ तक कि सभी ब्रह्मांड अंततः कालभैरव में विलीन हो जाते हैं, जो ब्रह्मांडीय चेतना और परम वास्तविकता है।

सार्वभौमिक शरण परम आलय के रूप में, वह सभी प्राणियों के लिए सर्वोच्च शरण है। संकट के समय, दार्शनिक पूछताछ, या आध्यात्मिक खोज में, वह अटूट आधार है जिस पर सभी अस्तित्व टिका हुआ है। यह एक सुरक्षात्मक पहलू का तात्पर्य है, जहाँ भक्त उसकी अनंत उपस्थिति में सांत्वना और सुरक्षा पाते हैं, यह जानते हुए कि वह ब्रह्मांड की क्षणभंगुर प्रकृति के बीच सुरक्षित और स्थिर नींव है।

ब्रह्मांड का पात्र यह नाम ब्रह्मांड के महान पात्र के रूप में उसकी भूमिका की ओर भी इशारा करता है। सृजन का सब कुछ, अपने असंख्य रूपों, ऊर्जाओं और अभिव्यक्तियों के साथ, उसके भीतर मौजूद है। वह अंतर्निहित (हर चीज के भीतर मौजूद) और पारलौकिक (हर चीज से परे) दोनों है। वह सभी स्थान और समय को समाहित करता है; वास्तव में, स्थान और समय स्वयं उसके भीतर समाहित हैं।

महान संहारक कालभैरव के संदर्भ में, महालय विशेष रूप से समय और विघटन के स्वामी के रूप में उसकी भूमिका के साथ प्रतिध्वनित होता है। प्रत्येक ब्रह्मांडीय चक्र (महाप्रलय) के अंत में, सब कुछ पीछे हट जाता है और उसमें विलीन हो जाता है। इसलिए, वह महान "पात्र" है जिसमें पूरा ब्रह्मांड ढह जाता है, केवल एक नए चक्र में उससे फिर से उभरने के लिए। वह अव्यक्त अवस्था है जिससे सभी अभिव्यक्तियाँ उत्पन्न होती हैं और जिसमें वे अंततः लौट आती हैं।

463. महानिधये

सभी वस्तुओं के महान, अक्षय कोषागार स्वरूप को नमन।

विस्तार : महानिधये (महानिधि) नाम संस्कृत के 'महा' और 'निधि' शब्दों का एक यौगिक है।

महा: का अर्थ है "महान," "विशाल," "सर्वोच्च," या "विस्तृत।" यह विशाल पैमाने और परम महत्व को दर्शाता है।

निधि: शाब्दिक अर्थ है "खजाना," "भंडार," "संग्रह," या "पात्र।" आध्यात्मिक संदर्भ में, यह अमूल्य आध्यात्मिक धन के स्रोत या सभी गुणों और शक्तियों के भंडार को दर्शाता है।

अस्तित्व का महान खजाना-घर महानिधि के रूप में, कालभैरव को सभी सृष्टि के परम भंडार के रूप में चित्रित किया गया है। यह केवल भौतिक धन को ही नहीं, बल्कि सभी ज्ञान, शक्तियों, गुणों, शुभता और यहां तक कि ब्रह्मांड का निर्माण करने वाले मूलभूत तत्वों और सिद्धांतों को भी संदर्भित करता है। वह ब्रह्मांडीय सुरक्षित-घर हैं जहाँ से सब कुछ उत्पन्न होता है और अंततः सब कुछ वापस लौटता है।

सभी आशीर्वादों का स्रोत भक्तों के लिए, यह नाम दर्शाता है कि उनका आह्वान करने से भौतिक और आध्यात्मिक दोनों तरह के अपार आशीर्वाद प्राप्त हो सकते हैं। वह उन सभी के लिए समृद्धि, ज्ञान, सुरक्षा और मुक्ति का अक्षय स्रोत हैं जो उनमें शरण लेते हैं। ऐसा कोई खजाना, कोई ज्ञान और कोई शक्ति नहीं है जो उनमें निवास न करती हो।

अंतर्निहित वास्तविकता दार्शनिक रूप से, महानिधि इस विचार की ओर इशारा करता है कि दिव्य सभी अस्तित्व का आधार और उपस्तर है। जिस प्रकार एक खजाने की पेटी में अनमोल वस्तुएँ होती हैं, उसी प्रकार भैरव अपने भीतर व्यक्त और अव्यक्त ब्रह्मांड की संपूर्णता को धारण करते हैं। वह अस्तित्व का परम आधार हैं, वह शांत और अपरिवर्तनीय वास्तविकता हैं जो सभी क्षणभंगुर घटनाओं को धारण करती है।

परम लक्ष्य "महान खजाना" होने के नाते, भैरव स्वयं आध्यात्मिक खोज का अंतिम लक्ष्य बन जाते हैं। उन्हें प्राप्त करना सभी खजाने—आध्यात्मिक ज्ञान, परम मुक्ति (मोक्ष), और स्थायी शांति—को प्राप्त करना है।

464. महाभूतये

महान अस्तित्व और दिव्य महिमा के साक्षात स्वरूप को नमन।

विस्तार : महाभूताय नाम एक गहन और बहुस्तरीय शब्द है जो महा और भूत से मिलकर बना है।

महा (Mahā): महान, शक्तिशाली, सर्वोच्च, विशाल, भव्य।

भूत (Bhūta): इस शब्द के कई अर्थ हैं जो यहाँ प्रासंगिक हैं: • 1. स्वयं अस्तित्व, होना, अस्तित्व में आने की अवस्था। • 2. पाँच मूलभूत तत्व (पंच महाभूत): पृथ्वी (Pṛthvī), जल (Āpas), अग्नि (Tejas), वायु (Vāyu), और आकाश (Ākāśa)। • 3. जीवित प्राणी, जीव या सत्ताएँ।

महान अस्तित्व का मूर्त स्वरूप (Embodiment of Great Existence) सबसे सीधे अर्थ में, महाभूताय भगवान शिव को "महान अस्तित्व" के मूर्त स्वरूप के रूप में संदर्भित करता है। वे केवल अस्तित्व का एक हिस्सा नहीं हैं, बल्कि अपने सबसे भव्य, सबसे विस्तृत और मौलिक रूप में स्वयं अस्तित्व हैं। वे वह आधार हैं जिस पर समस्त सृष्टि टिकी हुई है, ब्रह्मांड का मूल "होनापन" (is-ness) हैं। यह उनकी सर्वव्यापी प्रकृति (व्यापकत्व) और परम वास्तविकता (परब्रह्म) के रूप में उनकी स्थिति को दर्शाता है।

महान तत्व (The Great Elements) वे महाभूतों के स्रोत और सार हैं, वे पाँच महान तत्व जो संपूर्ण भौतिक ब्रह्मांड का निर्माण करते हैं। महाभूताय के रूप में, वे वह हैं जिनसे ये तत्व उत्पन्न होते हैं, जो उन्हें बनाए रखते हैं, और जिनमें वे विलीन हो जाते हैं। यह भौतिक ब्रह्मांड के निर्माता, संरक्षक और संहारक के रूप में उनकी भूमिका को उजागर करता है, जो वास्तविकता के भौतिक नियमों और अभिव्यक्तियों पर उनके पूर्ण नियंत्रण को प्रदर्शित करता है। वे वह चेतना हैं जो इन तत्वों को आत्मसात करती है।

दिव्य महिमा और भव्यता (Divine Glory and Magnificence) जब महाभूताय के रूप में संयुक्त किया जाता है, तो यह शब्द दिव्य महिमा, वैभव और भव्यता की एक विशाल भावना भी व्यक्त करता है। यह अकल्पनीय शक्ति, विशालता और महिमा वाले एक प्राणी को दर्शाता है - ऐसे गुण जो कालभैरव के भयंकर और विस्मयकारी रूप का पूरी तरह से वर्णन करते हैं। उनकी उपस्थिति ही सर्वोच्च, पूर्ण अस्तित्व की अभिव्यक्ति है।

सभी प्राणियों का आत्म (विस्तृत दृष्टिकोण) (As the Self of All Beings - Expanded View) भूत के अर्थ को "प्राणियों" तक विस्तारित करते हुए, महाभूताय का अर्थ "महान प्राणी" या "सभी प्राणियों में सबसे महान" भी हो सकता है। इस संदर्भ में, वे सर्वोच्च चेतना हैं जो सभी व्यक्तिगत आत्माओं और रूपों के रूप में प्रकट होती है, अपने असीम अस्तित्व के भीतर सभी जीवन को समाहित करती हैं।

465. महानितये

जो सर्वोच्च और परम न्याय के साक्षात् स्वरूप हैं, उनको नमन।

विस्तार : महानीतये नाम भगवान कालभैरव का एक गहन वर्णन है, जो "महा" और "नीति" से मिलकर बना है।

• महा (Mahā): यह संस्कृत उपसर्ग "महान," "सर्वोच्च," "उत्कृष्ट," या "परम" को दर्शाता है। यह बाद के शब्द को उसकी उच्चतम संभव डिग्री तक बढ़ाता है।

• नीति (Nīti): इस शब्द का एक समृद्ध अर्थ क्षेत्र है, जिसमें "न्याय," "धर्मपरायणता," "नैतिकता," "ज्ञान," "विवेक," "आचरण," और "नीति" शामिल हैं। यह प्राकृतिक और नैतिक व्यवस्था, नैतिक व्यवहार और सामाजिक सद्भाव को नियंत्रित करने वाले सिद्धांतों को दर्शाता है।

परम न्याय का मूर्त रूप (The Embodiment of Supreme Justice) महानीति के रूप में, कालभैरव केवल न्याय के संरक्षक नहीं हैं, बल्कि इसके साक्षात मूर्त रूप हैं। वे परम, अपरिवर्तनीय और निरपेक्ष ब्रह्मांडीय नियम का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सृष्टि, पालन और संहार को नियंत्रित करता है। उनका न्याय मानवीय दोषों या पूर्वाग्रहों के अधीन नहीं है; यह पूर्ण, निष्पक्ष और अपरिहार्य है।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था और संतुलन (Cosmic Order and Balance) यह नाम ऋत (Rta), ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने में उनकी भूमिका को दर्शाता है। वे यह सुनिश्चित करते हैं कि धर्म (धार्मिक आचरण) प्रबल हो और इस सार्वभौमिक नियम से किसी भी विचलन को ठीक किया जाए। वे परिणामों के अंतिम वितरक हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि प्रत्येक कार्य, चाहे अच्छा हो या बुरा, उसका उचित प्रतिफल प्राप्त करे। यह दंडपाणि (Dandapāni) के रूप में उनके कार्य के अनुरूप है, जो न्याय के सूक्ष्म अनुप्रयोग को सुनिश्चित करते हुए दंड के डंडे को धारण करते हैं।

सर्वोच्च नैतिक सिद्धांत (The Highest Moral Principle) महानीति उनके ज्ञान और धार्मिक जीवन के सिद्धांत के रूप में उनके स्वरूप को भी दर्शाती है। इस पहलू में उनकी भक्ति भक्तों को सत्य, नैतिकता और सदाचार द्वारा शासित जीवन जीने के लिए प्रेरित करती है, यह समझते हुए कि ब्रह्मांड पूर्ण न्याय की एक प्रणाली पर संचालित होता है, जिसकी देखरेख वे स्वयं करते हैं।

मानवीय कानून से परे (Beyond Human Law) मानवीय कानूनों के विपरीत, जो अपूर्ण या हेरफेर किए जा सकते हैं, कालभैरव की नीति दिव्य और अपरिवर्तनीय है। यह कर्म को नियंत्रित करने वाला अंतर्निहित सत्य है, यह सुनिश्चित करता है कि ब्रह्मांडीय संतुलन हमेशा बहाल हो। वे अंतिम न्यायाधीश हैं, जिनका निर्णय निर्विवाद और अंतिम है।

466. महामतये

महान, विशाल और सर्वोच्च बुद्धि वाले को नमन।

विस्तार : महामतये नाम, महा (महान, विशाल, सर्वोच्च) और मति (बुद्धि, विचार, समझ, ज्ञान) से व्युत्पन्न है, जो कालभैरव को परम ज्ञान और गहन बुद्धि के अवतार के रूप में संदर्भित करता है।

सर्वोच्च बुद्धि और ज्ञान महामतये एक ऐसी बुद्धि को दर्शाता है जो सभी मानवीय समझ से परे है। यह केवल तीक्ष्ण या बुद्धिमान नहीं है, बल्कि विशाल, व्यापक और सर्वोच्च है, जो समय और स्थान में सभी ज्ञान को समाहित करती है। यह उस दिव्य ज्ञान को संदर्भित करता है जो अंतर्निहित है, अर्जित नहीं, और जो सभी सत्यों को एक साथ और सहजता से अनुभव करता है।

समस्त ज्ञान का स्रोत महामतये के रूप में, कालभैरव वह मूल स्रोत हैं जिससे सभी ज्ञान, बुद्धि और समझ उत्पन्न होते हैं। वह परम गुरु, आदिम शिक्षक हैं, जो सभी आध्यात्मिक और भौतिक ज्ञान के कुल योग का प्रतीक हैं। उनकी बुद्धि असीम है, जो ब्रह्मांड के जटिल कार्यों, अस्तित्व के गहरे रहस्यों और धर्म और कर्म की सूक्ष्म बारीकियों को समझने में सक्षम है।

अतींद्रिय समझ यह शब्द एक अतींद्रिय समझ को भी इंगित करता है, वास्तविकता की एक सहज पकड़ जो बौद्धिक विश्लेषण से परे है। यह एकीकृत ज्ञान की एक अवस्था है जहाँ ज्ञान और अनुभव एक होते हैं, जो सार्वभौमिक नियमों और ब्रह्म के स्वरूप की पूर्ण समझ की ओर ले जाते हैं। उनकी बुद्धि शुद्ध चेतना है, जो त्रुटि या भ्रम से मुक्त होकर पूर्ण निर्णय और कार्य को सक्षम बनाती है।

467. महाग्रहाय

सभी ब्रह्मांडीय प्रभावों में सबसे शक्तिशाली, परम ग्राही (धारण करने वाले) को नमन।

विस्तार : महाग्रहाय नाम एक गहन शब्द है जो महा (महान, शक्तिशाली, सर्वोच्च) और ग्रह (पकड़ने वाला, जो पकड़ता है, एक खगोलीय पिंड या प्रभाव) को जोड़ता है। यह नाम सभी ब्रह्मांडीय शक्तियों पर कालभैरव के परम अधिकार को दर्शाता है, विशेष रूप से वे जो भाग्य और मानवीय अनुभव को नियंत्रित करती हैं।

ग्रहीता: ब्रह्मांडीय प्रभावक (The Seizer: Cosmic Influencer) वैदिक ज्योतिष में, ग्रह ऐसे ग्रह पिंड हैं जो अपनी स्थिति और गति के माध्यम से मानव जीवन और भाग्य को "पकड़ते" या "प्रभावित" करते हैं। नौ प्राथमिक ग्रह (नवग्रह) हैं जिनके बारे में माना जाता है कि वे भाग्य, दुर्भाग्य, स्वास्थ्य और विभिन्न जीवन घटनाओं को निर्धारित करते हैं। महाग्रह कहलाने से, कालभैरव को "महान ग्रहीता" या "सर्वोच्च ग्रह" घोषित किया जाता है, यह दर्शाता है कि वे इन सभी ग्रहों के प्रभावों से परे और श्रेष्ठ हैं। वे परम नियंत्रक हैं, वे ही स्रोत हैं जहाँ से ये प्रभाव अपनी शक्ति प्राप्त करते हैं, और वे ही हैं जो उन्हें सशक्त या नियंत्रित कर सकते हैं।

भाग्य के स्वामी (Master of Destiny) इसका तात्पर्य यह है कि जबकि ग्रह घटनाओं को प्रभावित कर सकते हैं, कालभैरव कर्म और भाग्य के परम सूत्रधार हैं। उनके प्रति भक्ति ग्रहों के नकारात्मक प्रभावों को पार कर सकती है या कम कर सकती है, क्योंकि वे इन शक्तियों के स्वामी हैं। वे दुर्भाग्य, बाधाओं और नकारात्मक कर्मिक छापों को "पकड़" कर दूर कर सकते हैं, या किसी व्यक्ति को आध्यात्मिक मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करने के लिए "पकड़" सकते हैं।

सर्वव्यापी पकड़ (The All-Encompassing Grip) "ग्रह" शब्द का अर्थ "पकड़" या "ग्रासप" भी हो सकता है। महाग्रह के रूप में, वे समय (काल) और परम दिव्य इच्छा की सर्वव्यापी, अपरिहार्य पकड़ का प्रतिनिधित्व करते हैं। कोई भी और कुछ भी उनके प्रभाव से बच नहीं सकता। यह समझ भय (उनकी दुर्जेय शक्ति का) और भक्ति (उनकी सुरक्षात्मक पकड़ की तलाश) दोनों को प्रेरित कर सकती है। वे पूरे ब्रह्मांड को, उसकी सभी सूक्ष्म और स्थूल ऊर्जाओं सहित, अपने प्रभुत्व में रखते हैं।

468. महागन्त्रे

महान यात्री, जो पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त है, उसे नमन।

विस्तार : महागन्त्रे नाम संस्कृत के शब्दों महा और गन्त्र से बना एक गहन विशेषण है।

महा (Mahā): यह उपसर्ग "महान," "शक्तिशाली," "सर्वोच्च," या "सर्वव्यापी" को दर्शाता है। यह बाद वाले शब्द को एक पारलौकिक या सार्वभौमिक स्तर तक उठाता है।

गन्त्र (Gantṛ): यह मूल गम (जाना, चलना, यात्रा करना) से व्युत्पन्न है, गन्त्र का अर्थ है "जो जाता है," "एक यात्री," या "जो व्याप्त है।"

महान यात्री (The Great Traveler) शाब्दिक अर्थ में, महागन्त्रे उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जो विशाल दूरियों की यात्रा करता है। हालांकि, कालभैरव के संदर्भ में, यह "यात्रा" केवल शारीरिक गति तक सीमित नहीं है। यह उनकी सर्वव्यापकता और अस्तित्व के सभी आयामों - स्थानिक, लौकिक और आध्यात्मिक - में बिना किसी सीमा के चलने की उनकी क्षमता को दर्शाता है। वे किसी एक स्थान या क्षेत्र से बंधे नहीं हैं।

समस्त अंतरिक्ष और समय में व्याप्त (Pervading All of Space and Time) यह नाम कालभैरव की सर्वव्यापी देवता के रूप में भूमिका पर जोर देता है। वे वह चेतना हैं जो ब्रह्मांड के प्रत्येक परमाणु, अंतरिक्ष के प्रत्येक बिंदु और समय के प्रत्येक क्षण में व्याप्त है। उनकी उपस्थिति सार्वभौमिक और निरपेक्ष है। वे अस्तित्व का अंतर्निहित ताना-बाना हैं जिसके माध्यम से सभी घटनाएँ उत्पन्न होती हैं, विद्यमान रहती हैं और विलीन हो जाती हैं। उनकी "यात्रा" एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा नहीं है, बल्कि एक निरंतर, सर्वव्यापी व्याप्ति है।

ब्रह्मांडीय यात्री (The Cosmic Journeyer) महागन्त्रे सूक्ष्म रूप से ब्रह्मांडीय चक्रों में उनकी भूमिका का भी संकेत देता है। वे युगों (Yugas) के माध्यम से "यात्रा" करते हैं, ब्रह्मांडों के निर्माण, संरक्षण और विघटन का अवलोकन औरorchestration करते हैं। वे परम तीर्थयात्री हैं, जो ब्रह्मांडीय अभिव्यक्तियों के भोर और सांझ में हमेशा उपस्थित रहते हैं। यह पहलू लगातार बदलते ब्रह्मांड के बीच उनके शाश्वत और अपरिवर्तनीय स्वरूप को उजागर करता है।

मुक्ति का प्रतीक (Symbol of Liberation) एक आध्यात्मिक साधक के लिए, कालभैरव को महागन्त्रे के रूप में स्वीकार करने का अर्थ है उन्हें उस व्यक्ति के रूप में पहचानना जो आत्मा की मुक्ति की यात्रा को सुगम बनाता है। वे दिव्य मार्गदर्शक हैं जो व्यक्तिगत चेतना को भौतिक दुनिया की सीमाओं से परे "यात्रा" करने और अपने वास्तविक स्वरूप को समझने में सक्षम बनाते हैं, अंततः सार्वभौमिक आत्मा के साथ विलीन हो जाते हैं।

469. महाभूताय

जो महान तत्व हैं, सभी अस्तित्व का सार है, उनको नमन।

विस्तार : महाभूताय नाम एक गहन संस्कृत यौगिक है जिसका अर्थ है "महान तत्व को"। यह "महा" (महान, सर्वोच्च, विशाल) और "भूत" (तत्व, प्राणी, अस्तित्व) से बना है।

सर्वोच्च तत्व सांख्य दर्शन में, "महाभूत" पाँच मूलभूत तत्वों को संदर्भित करते हैं: पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश (ईथर)। शिव को "महाभूत" कहकर, यह दर्शाता है कि वे केवल इन तत्वों से बने नहीं हैं, बल्कि इन तत्वों के आदिम, परम और समावेशी स्रोत हैं। वे वह आधार हैं जिससे सभी प्रकट वास्तविकता उत्पन्न होती है, और जिसमें वह अंततः विलीन हो जाती है। वे सबसे मौलिक और व्यापक वास्तविकता हैं।

समस्त अस्तित्व का सार यह नाम इस बात पर जोर देता है कि कालभैरव, शिव के एक रूप के रूप में, वह सार, "महानतम प्राणी" या "महानतम अस्तित्व" हैं, जिससे अन्य सभी प्राणी और रूप अपनी वास्तविकता प्राप्त करते हैं। वे अस्तित्व का परम आधार हैं, जो कुछ भी मौजूद है उसका मूलभूत सत्य हैं। सभी घटनाएँ, सजीव या निर्जीव, इस अद्वितीय महाभूत की मात्र अभिव्यक्तियाँ हैं।

माप और समझ से परे "महा" विशालता और अबोधगम्यता को भी दर्शाता है। वे वह तत्व हैं जो सभी वर्गीकरणों और सीमाओं को पार करते हैं, सभी तत्वों के स्रोत और अंत हैं। यह एक लौकिक पैमाने को इंगित करता है, उनकी सर्वशक्तिमत्ता और सर्वव्यापकता को उजागर करता है, जो हर परमाणु में अंतर्निहित रूप से मौजूद हैं और ब्रह्मांड के सुदूरतम छोरों से परे तक फैले हुए हैं।

दार्शनिक महत्व दार्शनिक रूप से, यह अद्वैतवादी समझ की ओर इशारा करता है कि ब्रह्म सभी बहुलता के अंतर्निहित परम, अद्वितीय वास्तविकता है। कालभैरव, महाभूत के रूप में, वह अद्वैत वास्तविकता हैं - वह सर्वव्यापी, स्व-अस्तित्ववान और आत्मनिर्भर सिद्धांत जो पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त है और उसे बनाए रखता है।

470. अमृताय

जो अमरता का दिव्य अमृत हैं, शाश्वत और अविनाशी हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : अमृताय नाम, जो संस्कृत शब्द अमृत से लिया गया है, हिंदू दर्शन में अत्यधिक महत्वपूर्ण है और कई दिव्य गुणों का प्रतीक है।

अमरत्व का अमृत अमृत का शाब्दिक अर्थ है "अमरत्व" या "मृत नहीं" (अ-"नहीं" + मृत-"मृत")। यह उस दिव्य अमृत को संदर्भित करता है जो अमरत्व प्रदान करता है। प्रसिद्ध समुद्र मंथन में, अमृत उन दिव्य खजानों में से एक था जो निकला था, जिसे देवों और असुरों दोनों ने मृत्यु और क्षय के चंगुल से बचने के लिए मांगा था। स्वयं अमृत होने के कारण, कालभैरव शाश्वत जीवन और जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) से मुक्ति के सार का प्रतीक हैं।

शाश्वत और अविनाशी यह नाम कालभैरव के शाश्वत स्वरूप को दर्शाता है। वह स्वयं काल (अकाल) से परे हैं, और इस प्रकार, वह सृष्टि, पालन और संहार से अछूते हैं। वह परम सत्य हैं जो हमेशा मौजूद रहते हैं, बिना आदि या अंत के। उनका अस्तित्व शुद्ध, अपरिवर्तनीय चेतना है, जो बीमारी, क्षय या मृत्यु से मुक्त है।

मुक्ति (मोक्ष) के प्रदाता भक्तों के लिए, कालभैरव को अमृताय के रूप में आह्वान करने का अर्थ केवल शारीरिक दीर्घायु नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अमरत्व—मोक्ष या मुक्ति—की तलाश करना है। वह नश्वरता के भ्रम से स्वतंत्रता के परम प्रदाता हैं, जो साधक को उनके स्वयं के शाश्वत स्वरूप की प्राप्ति की ओर मार्गदर्शन करते हैं, जो दिव्य के साथ एक है। उन्हें अमृत के रूप में पहचान कर, व्यक्ति उन्हें परम आनंद के स्रोत और सभी अस्थायी अभिव्यक्तियों से परे शाश्वत सत्य के रूप में स्वीकार करता है।

दिव्य पोषण का प्रतीक अमृत दिव्य पोषण का भी प्रतीक है, वह आध्यात्मिक पोषण जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था और व्यक्तिगत आध्यात्मिक विकास को बनाए रखता है। कालभैरव, इस अमृत के रूप में, ब्रह्मांड के अस्तित्व और प्राणियों की आध्यात्मिक यात्रा का पोषण करते हैं, उन्हें उनके अंतिम

आध्यात्मिक विकास की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

471. यमाय

मृत्यु के स्वामी और महान नियंत्रक (यम) को नमन।

विस्तार : यमाय नाम यम को संदर्भित करता है, जो मृत्यु, न्याय और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के महान नियंत्रक के पूजनीय देवता हैं।

मृत्यु और पाताल लोक के स्वामी यम पाताल लोक (नरक या यमलोक) के निर्विवाद शासक हैं और मृतकों पर सर्वोच्च अधिकार रखते हैं। वे दिवंगत आत्माओं को प्राप्त करने, उनके सांसारिक जीवन के दौरान उनके कर्मों का आकलन करने और उनकी बाद की यात्रा या पुनर्जन्म का निर्धारण करने के लिए जिम्मेदार हैं। यह भूमिका कालभैरव को, यम के रूप में, जीवन और मृत्यु के चक्र पर शिव के अंतिम नियंत्रण के प्रत्यक्ष अवतार के रूप में स्थापित करती है।

महान नियंत्रक "यम" शब्द स्वयं संस्कृत मूल "यम्" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "रोकना," "नियंत्रित करना," या "शासन करना।" इस प्रकार, यम कर्म के अटल नियमों और समय की अपरिहार्य प्रगति का प्रतीक है जो सभी चीजों को उनके अंत तक ले जाती है। कालभैरव, इस पहलू में, ब्रह्मांडीय धर्म के अंतिम प्रवर्तक हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि कार्यों के परिणाम होते हैं और ब्रह्मांड में संतुलन बना रहता है। वे अस्तित्व को विनियमित करते हैं, सभी प्राणियों पर सीमाएँ और प्रतिबंध लगाते हैं।

अज्ञानता का नाश करने वाले अपनी भयानक भूमिका से परे, यम उस शक्ति का भी प्रतिनिधित्व करते हैं जो नश्वरता के अंतिम सत्य और धार्मिक जीवन के महत्व को प्रकट करके अज्ञानता के अंधकार को दूर करती है। यम का सामना करना अक्सर एक परिवर्तनकारी अनुभव के रूप में चित्रित किया जाता है, जो उनके संदेश को समझने वालों के लिए आध्यात्मिक जागृति की ओर ले जाता है।

नैतिक महत्व वैदिक ग्रंथ यम को पहले नश्वर के रूप में वर्णित करते हैं जिनकी मृत्यु हुई और इस प्रकार वे मानवता के लिए दूसरे लोक के पथप्रदर्शक बने। वे केवल एक क्रूर मृत्युदूत नहीं हैं, बल्कि एक न्यायप्रिय न्यायाधीश हैं, जो नैतिक व्यवस्था और आध्यात्मिक अनुशासन को बनाए रखने से संबंधित हैं। कालभैरव को यम के रूप में आह्वान करके, भक्त उनके सर्वोच्च न्याय को स्वीकार करते हैं और पापों से शुद्धि चाहते हैं।

472. अमृतांशवे

जिनकी किरणें जीवनदायिनी अमृत के समान हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : अमृतांशवे नाम अमृत और अंशु का संयोजन है, जिसका अर्थ है "किरणें" या "प्रकाश की किरणें।"

अमृत (अमरता का अमृत) अमृत हिंदू पौराणिक कथाओं में एक केंद्रीय अवधारणा है, जो अमरता के अमृत का प्रतिनिधित्व करता है। यह वह दिव्य पेय है जो शाश्वत जीवन, कल्याण और क्षय तथा मृत्यु से मुक्ति प्रदान करता है। अमृत केवल एक भौतिक पदार्थ नहीं है बल्कि दिव्य कृपा, आध्यात्मिक जागृति और परम मुक्ति (मोक्ष) के सार का प्रतीक है। यह पोषण, उपचार और जीवनदायिनी ऊर्जा का प्रतीक है।

अंशु (किरणें/प्रकाश की किरणें) अंशु प्रकाश की किरणों को संदर्भित करता है, विशेषकर सूर्य या चंद्रमा की किरणों को। लाक्षणिक अर्थ में, ये किरणें केवल भौतिक प्रकाश नहीं हैं बल्कि दिव्य उत्सर्जन, ऊर्जा, आशीर्वाद, ज्ञान और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि का प्रतिनिधित्व करती हैं जो एक दिव्य स्रोत से निकलती हैं।

जीवनदायिनी चमक जब संयुक्त किया जाता है, तो अमृतांशवे एक ऐसे देवता को दर्शाता है जिनकी दिव्य किरणें या "किरणें" अमृत के समान हैं - जीवनदायिनी, अमरता प्रदान करने वाली और अत्यंत लाभकारी। इसका तात्पर्य यह है कि कालभैरव, इस पहलू में, निम्न के स्रोत हैं:

• आध्यात्मिक पोषण: उनकी कृपा और आशीर्वाद अमृत की एक अंतहीन धारा की तरह प्रवाहित होते हैं, जो उन्हें खोजने वालों की आत्माओं का पोषण करते हैं। ये किरणें आध्यात्मिक अशुद्धियों, अज्ञानता और पीड़ा को दूर करती हैं। • अमरता और मुक्ति: इन "अमृत-सदृश किरणों" से जुड़कर, भक्त जन्म और मृत्यु के चक्र को पार कर सकते हैं, आध्यात्मिक अमरता और परम मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। ये किरणें दिव्य ज्ञान और आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करती हैं, जिससे सच्चे, अमर स्व की प्राप्ति होती है। • उपचार और संरक्षण: जैसे अमृत सभी बीमारियों को ठीक करता है, वैसे ही उनकी किरणें सभी प्रकार के खतरों, बीमारियों और दुर्भाग्य से सुरक्षा प्रदान करती हैं। वे जीवन शक्ति, स्वास्थ्य और स्थायी कल्याण की भावना लाते हैं।

यह विशेष नाम कालभैरव के परोपकारी और कृपा-प्रदान करने वाले पहलू पर प्रकाश डालता है, यह दर्शाता है कि अपने दुर्जेय रूप में भी, वे अंततः गहन आध्यात्मिक लाभ का स्रोत हैं, एक दिव्य सूर्य या चंद्रमा के रूप में कार्य करते हैं जिनकी किरणें सच्चे साधक को शाश्वत जीवन और परम आनंद प्रदान करती हैं।

473. अमृतवपुषे

जिनके शरीर की रचना अमर अमृत से हुई है, उन्हें नमन।

विस्तार : अमृतवपुषे नाम दो संस्कृत शब्दों, अमृत और वपुष का एक गहन यौगिक है।

अमृत: इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है "अमरता" या "जो मरता नहीं है"। यह दिव्य अमृत के रूप में प्रसिद्ध है जो शाश्वत जीवन और क्षय, बीमारी और मृत्यु से मुक्ति प्रदान करता है। यह समुद्र मंथन (ब्रह्मांडीय महासागर के मंथन) के दौरान उत्पन्न होने वाला स्वर्गीय पेय है और दिव्य उपचार और पोषण से जुड़ा है।

वपुष: इस शब्द का अर्थ है "शरीर", "रूप", "आकृति" या "पदार्थ"। यह किसी प्राणी की भौतिक या वास्तविक अभिव्यक्ति को संदर्भित करता है।

अमर रूप जब संयुक्त किया जाता है, तो अमृतवपुषे का अर्थ है "जिसका शरीर अमृत से बना है" या "जिसका रूप अमर है"। यह दर्शाता है कि कालभैरव का सार और अभिव्यक्ति शाश्वत, अविनाशी और दिव्य है। नश्वर प्राणियों के विपरीत जिनके शरीर जन्म, वृद्धि, क्षय और मृत्यु के अधीन हैं, भैरव का रूप समय और क्षणभंगुरता के चक्रों से परे है। वह अमरता के प्रतीक हैं।

दिव्य पोषण और उपचार चूंकि उनका शरीर अमृत है, वह इस दिव्य अमृत के स्रोत और दाता भी हैं। अमृतवपुषे के रूप में उनकी पूजा करने से मृत्यु के भय से मुक्ति, दिव्य दीर्घायु, अच्छा स्वास्थ्य और आध्यात्मिक जीवन शक्ति प्रदान करने की उनकी शक्ति का आह्वान होता है। वह अपने भक्तों को ज्ञान का "अमृत" और सांसारिक दुखों से अंतिम मुक्ति प्रदान करते हैं।

शुद्धता और अतिक्रमण का प्रतीक उनके शरीर की अमृत-जैसी प्रकृति भी पूर्ण शुद्धता का अर्थ है, जो भौतिक संसार की अपूर्णताओं से अछूती है। यह उनकी पारलौकिक प्रकृति का प्रतीक है, जो सभी द्वंद्वों से परे है, और उन लोगों को शुद्ध करने और ऊपर उठाने की उनकी क्षमता का प्रतीक है जो उनके दिव्य रूप से जुड़ते हैं। वह अस्तित्व की अंतिम अवस्था का प्रतीक हैं, जहाँ मृत्यु का कोई प्रभाव नहीं होता है।

474. मरीचये

जो प्रकाश की किरण हैं और महान ऋषि मरीचि को नमन।

विस्तार : मरीचये (मरीचि) नाम प्रकाश, सृष्टि और आध्यात्मिक वंश से संबंधित गहरे प्रतीकों को वहन करता है।

प्रकाश की एक किरण मरीचि का सबसे सीधा अनुवाद "प्रकाश की एक किरण" या "प्रकाश का एक कण" है। एक आध्यात्मिक और गूढ़ संदर्भ में, यह दिव्य ज्ञान, बोध और चेतना को दर्शाता है। भगवान शिव, अपने काल भैरव रूप में, इस तेजस्वी ज्ञान का प्रतीक हैं जो अज्ञानता (अविद्या) के अंधकार को दूर करता है। वे सभी आध्यात्मिक प्रकाश के स्रोत हैं, जो साधकों को मुक्ति के मार्ग पर मार्गदर्शन करते हैं। यह प्रकाश केवल भौतिक नहीं है, बल्कि आंतरिक ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है जो वास्तविकता के वास्तविक स्वरूप को प्रकट करता है।

महान ऋषि मरीचि मरीचि हिंदू पौराणिक कथाओं में दस प्रजापतियों (मानव जाति के पूर्वज) में से एक और सप्तर्षियों (सात महान ऋषियों) में से एक का भी नाम है, जिन्हें अक्सर ब्रह्मा का मानस पुत्र माना जाता है। काल भैरव को मरीचि से जोड़ना उन्हें आदिम रचनात्मक शक्तियों और एक मौलिक ऋषि के वंश से जोड़ता है। यह संबंध इंगित करता है कि काल भैरव न केवल भयंकर संहारक हैं, बल्कि सृष्टि की प्रक्रिया और अपने दिव्य उत्सर्जन और शिक्षाओं के माध्यम से धर्म की स्थापना में भी जटिल रूप से शामिल हैं। प्रजापतियों और ऋषियों को ऐसे माध्यम के रूप में देखा जाता है जिनके माध्यम से ब्रह्मांड में दिव्य ज्ञान और ब्रह्मांडीय व्यवस्था का प्रचार होता है।

सृष्टि और प्रसार का प्रतीक ऋषि मरीचि कश्यप गोत्र के जनक हैं और सृष्टि के मूलभूत स्तंभों में से एक के रूप में अत्यधिक पूजनीय हैं। काल भैरव को मरीचि के रूप में आह्वान करके, व्यक्ति सभी सृष्टि के पीछे की अंतर्निहित शक्ति और ब्रह्मांड के आध्यात्मिक पूर्वज के रूप में उनकी भूमिका को स्वीकार करता है। यह उनके भयंकर पहलू को जनन शक्ति को समाहित करने के लिए विस्तारित करता है, यह सुझाव देता है कि विनाश स्वाभाविक रूप से एक बड़े रचनात्मक चक्र का हिस्सा है, जहाँ नए के लिए रास्ता बनाने के लिए पुराने को नष्ट किया जाता है।

475. मोहजालघ्ने

मोह और आसक्ति के जाल को पूर्ण रूप से नष्ट करने वाले को नमन।

विस्तार : मोहजालघ्ने नाम कालभैरव की अज्ञानता और आसक्ति के बंधनों से मुक्ति दिलाने वाली भूमिका का एक गहन भाव है। यह तीन प्रमुख संस्कृत शब्दों को जोड़ता है: मोह, जाल और घ्ने।

मोह: भ्रम और अज्ञानता (Moha: Delusion and Ignorance) मोह का अर्थ है भ्रम, आसक्ति, भ्रमित होना, मूर्खता और आध्यात्मिक अज्ञानता। यह वह मूलभूत बाधा है जो व्यक्ति को वास्तविकता को वैसे ही समझने से रोकती है जैसी वह वास्तव में है। मोह आसक्ति (राग) और घृणा (द्वेष) की ओर ले जाता है, जो दुख (दुःख) के मूल कारण हैं। यह व्यक्तित्व की एक झूठी भावना और शरीर, मन और सांसारिक संपत्ति जैसे अस्थायी और क्षणभंगुर के साथ एक गलत पहचान बनाता है।

जाल: वेब या नेट (Jāla: Web or Net) जाल का अर्थ है एक जाल, फंदा या पाश, विशेष रूप से एक वेब। जब मोह के साथ जोड़ा जाता है, तो यह भ्रम, आसक्ति, इच्छाओं और कर्मों (कर्म) के जटिल, उलझाने वाले नेटवर्क को दर्शाता है जो व्यक्तिगत आत्मा (जीव) को जन्म और मृत्यु (संसार) के चक्र से बांधते हैं। यह जाल एक भौतिक संरचना नहीं है बल्कि एक मनो-आध्यात्मिक है, जो स्वयं और दुनिया के बारे में गलत धारणाओं से बुना गया है। यह अज्ञानता का जटिल मैट्रिक्स है जो अलगाव और सीमा का भ्रम पैदा करता है।

घ्ने: विनाशक या संहारक (Ghne: Destroyer or Slayer) घ्ने या घ्न एक हत्यारे, विनाशक या हटाने वाले को दर्शाता है। इस संदर्भ में, यह मोह के जटिल जाल को नष्ट करने, मिटाने और पूरी तरह से भंग करने की पूर्ण शक्ति को दर्शाता है।

भ्रम के जाल का विनाशक (Destroyer of the Web of Delusion) मोहजालघ्ने के रूप में, कालभैरव को इस भ्रम और आसक्ति के जाल को काटने और नष्ट करने वाली परम शक्ति के रूप में सराहा जाता है। उनका विनाशकारी पहलू, जो भयावह लग सकता है, इस संदर्भ में गहरा परोपकारी है। यह अज्ञानता का विनाश है, आत्मा का नहीं। वह भौतिक दुनिया के प्रति आकर्षण और आसक्ति के बंधनों को तोड़ते हैं, भ्रम की परतों को हटाते हैं जो स्वयं (आत्मा) और परम वास्तविकता (ब्रह्म) के वास्तविक स्वरूप को अस्पष्ट करती हैं।

मुक्ति का मार्ग (Path to Liberation) यह नाम मुक्ति (मोक्ष) के दाता के रूप में कालभैरव की भूमिका पर प्रकाश डालता है। मोहजाल को नष्ट करके, वह साधक को अहंकार की सीमाओं को पार करने, आसक्ति और दुख के चक्र से मुक्त होने और अपने सच्चे, शाश्वत और अबाधित स्वरूप को महसूस करने में सक्षम बनाते हैं। उनकी प्रचंड ऊर्जा ही वह है जिसकी आवश्यकता है ताकि भ्रम के गहरे बैठे पैटर्न को बलपूर्वक काटा जा सके जो संवेदनशील प्राणियों को बांधते हैं। वह एक आध्यात्मिक सर्जन के रूप में कार्य करते हैं, जो भक्त के हृदय से अज्ञानता के कैंसरग्रस्त विकास को कुशलतापूर्वक और शक्तिशाली रूप से हटाते हैं।

476. महातपसे

वे जो सबसे कठोर और सर्वोच्च तपस्या करते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : महातपसे नाम महा (महान, सर्वोच्च, कठोर) और तपस/तपसे (तपस्या, प्रायश्चित्त, आध्यात्मिक ऊर्जा, तपस्वी अभ्यास) का एक यौगिक है।

सर्वोच्च तपस्या यह नाम कालभैरव और स्वयं शिव को तपस के परम अवतार के रूप में पहचानता है। तपस गहन आध्यात्मिक अनुशासन को दर्शाता है, जिसमें अक्सर कठोर आत्म-त्याग, लंबे समय तक ध्यान और इंद्रियों, मन और शरीर पर नियंत्रण शामिल होता है। यह एक गहन आध्यात्मिक ऊर्जा या "गर्मी" उत्पन्न करता है जो शुद्ध करती है, रूपांतरित करती है और अंततः आध्यात्मिक बोध और अपार शक्ति की ओर ले जाती है।

तपस के दाता जबकि शिव को भैरव के रूप में अक्सर उनके उग्र रूप में चित्रित किया जाता है, उनका अंतर्निहित स्वरूप सबसे गहन तपस्या में निहित है। वह परम योगी हैं, जो हमेशा अपने आप में लीन रहते हैं, तपस के मार्ग पर चलने वालों के लिए एक आदर्श हैं। वह न केवल "महानतम तपस्या" (महा तपस) करते हैं, बल्कि ऐसे कठोर आध्यात्मिक अभ्यासों को करने के लिए आवश्यक आंतरिक शक्ति के स्रोत और दाता भी हैं।

तपस के माध्यम से बाधाओं का नाश करने वाले तपस के माध्यम से उत्पन्न शक्ति का उपयोग अक्सर बाधाओं को दूर करने, आंतरिक राक्षसों को जीतने और अलौकिक क्षमताओं या सिद्धियों को प्राप्त करने के लिए किया जाता है। कालभैरव के लिए, इसका अर्थ है कि उनका भयानक रूप और विनाशकारी शक्ति अंततः उनकी सर्वोच्च तपस्या की अभिव्यक्ति है, जिससे वे ब्रह्मांड को शुद्ध कर सकते हैं, धर्म को बनाए रख सकते हैं और भक्तों को उनके कर्म बंधनों और भय से मुक्त कर सकते हैं। उनकी कठोर तपस्या ब्रह्मांड के परम कल्याण के लिए है, जो नकारात्मकता के विनाश के माध्यम से ब्रह्मांडीय व्यवस्था सुनिश्चित करती है।

477. महाकायाय

विशाल, अथाह और महान शरीर धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : महाकाय नाम दो संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: महा (महान, शक्तिशाली, विशाल, विराट) और काय (शरीर, संग्रह, या अभिव्यक्ति)।

विशाल अभिव्यक्ति यह नाम कालभैरव के ब्रह्मांडीय स्वरूप की विशालता और असीमता को दर्शाता है। यह एक ऐसे शरीर का सुझाव देता है जो पारंपरिक आयामों से सीमित नहीं है, बल्कि अस्तित्व की संपूर्णता को समाहित करता है। यह एक ऐसा शरीर है जो इतना विशाल है कि वह सभी सृष्टि और प्रलय को अपने भीतर समा सकता है। यह विश्वरूप (सार्वभौमिक रूप) की ओर इशारा करता है, एक ऐसी अवधारणा जहाँ दिव्य अपने सच्चे, असीम गौरव में प्रकट होता है, जिसमें सभी ब्रह्मांड, प्राणी और ब्रह्मांडीय घटनाएँ उसके रूप के भीतर समाहित होती हैं।

सर्वव्यापकता का प्रतीक महाकाय दिव्य की सर्वव्यापी प्रकृति का प्रतिनिधित्व करता है। उनका विशाल शरीर यह दर्शाता है कि ऐसा कोई स्थान या समय नहीं है जहाँ वे उपस्थित न हों। वे सभी अस्तित्व का आधार हैं, ब्रह्मांड का मूल ताना-बाना हैं। इस रूप को अक्सर अनगिनत सिर, भुजाओं और पैरों वाला दर्शाया जाता है, जो सूर्य और चंद्रमा से सुशोभित होता है, जो संपूर्ण लौकिक और स्थानिक वास्तविकता पर उनके प्रभुत्व का प्रतीक है।

मानवीय समझ से परे "महान शरीर" का विचार एक ऐसे रूप का भी संकेत देता है जो मानवीय समझ और धारणा से परे है। यह सर्वोच्च सत्ता की अनंत, अगम्य प्रकृति की याद दिलाता है, जिसकी वास्तविक विशालता को सीमित मानव मन द्वारा समझा नहीं जा सकता है। यह रूप भक्त में विस्मय और विनम्रता दोनों की भावना पैदा करता है, क्योंकि वे दिव्य की अकल्पनीय शक्ति और उपस्थिति का सामना करते हैं।

ब्रह्मांडीय संहारक और पालक कालभैरव के संदर्भ में, यह विशाल शरीर वह माध्यम भी है जिसके माध्यम से वे संरक्षण, परिवर्तन और अंततः, विनाश के अपने ब्रह्मांडीय कार्यों को करते हैं। इसी विशाल रूप में वे स्वयं काल का भक्षण करते हैं, परम संहारक बन जाते हैं, फिर भी सभी प्राणियों के लिए परम आश्रय भी हैं।

478. मृगबाणार्पणाय

मृग के लिए रखे बाण को प्राप्त करने वाले को नमन।

विस्तार : मृगबाणार्पणाय नाम शैव पुराणों में पाई जाने वाली एक विशिष्ट, अनूठी घटना को संदर्भित करता है, जिसे मुख्य रूप से पद्म पुराण और स्कंद पुराण में वर्णित किया गया है, जहाँ कालभैरव अपने उग्र रूप में एक हिरण की रक्षा के लिए हस्तक्षेप करते हैं।

कथा (The Narrative) यह नाम सीधे एक कहानी को संदर्भित करता है जहाँ एक शिकारी, एक हिरण पर बाण का निशाना साधते हुए, पाता है कि बाण को शिव (या उनके उग्र पहलुओं में से एक, यहाँ कालभैरव के रूप में निहित) द्वारा ग्रहण या रोका गया है। यह कहानी एक दिव्य हस्तक्षेप को उजागर करती है जहाँ शिकार का एक प्रतीत होता है सांसारिक कार्य गहन आध्यात्मिक महत्व से ओत-प्रोत है। शिकारी, जिसे अक्सर जानवर की पवित्रता या दिव्य उपस्थिति से अनभिज्ञ दर्शाया जाता है, इस घटना से अनुशासित या प्रबुद्ध होता है।

सभी प्राणियों का रक्षक (Protector of All Beings) यह नाम कालभैरव की गहन करुणा और पशु जगत में सबसे कमजोर सहित सभी प्राणियों के रक्षक के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है। जबकि भैरव अपने भयानक रूप और विघटन में अपनी भूमिका के लिए जाने जाते हैं, यह विशेष विशेषण एक परोपकारी पहलू को प्रकट करता है जहाँ वे सक्रिय रूप से प्राणियों को नुकसान

से बचाने के लिए हस्तक्षेप करते हैं, जो उनकी सार्वभौमिक संरक्षकता को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि उनका प्रभुत्व सभी जीवन रूपों तक फैला हुआ है, और जब न्याय या करुणा की मांग होती है तो वे रक्षा के लिए प्रकट हो सकते हैं।

हिरण का प्रतीकवाद (Symbolism of the Deer) हिंदू प्रतिमा विज्ञान और साहित्य में, हिरण अक्सर पवित्रता, मासूमियत, कोमलता, अनुग्रह, और कभी-कभी व्यक्तिगत आत्मा (जीवात्मा) का प्रतीक होता है जो भौतिक दुनिया के जाल द्वारा लगातार पीछा किया जाता है। बाण को रोककर, कालभैरव इस पवित्रता और मासूमियत की रक्षा करते हैं, जो आध्यात्मिक खतरे या सांसारिक पीड़ा के खिलाफ एक गहरी आध्यात्मिक सुरक्षा को दर्शाता है।

दिव्य हस्तक्षेप और धर्म (Divine Intervention and Dharma) यह घटना दिव्य न्याय और धर्म (धार्मिकता) के पालन को दर्शाने वाली एक कथा के रूप में कार्य करती है। यह दर्शाता है कि दिव्य दृष्टि सबसे छोटी घटनाओं का भी अवलोकन करती है और अन्याय या अनावश्यक पीड़ा को रोकने के लिए हस्तक्षेप कर सकती है, जो भगवान द्वारा बनाए गए एक ब्रह्मांडीय व्यवस्था के विचार को पुष्ट करती है। यह जीवन के प्रति श्रद्धा और सभी अस्तित्व के अंतर्संबंध को भी सूक्ष्म रूप से सिखाता है।

479. खलाय

जो दुष्कर्मों से पुण्यात्मा को पृथक करने वाले खलिहान के समान हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : "खलाय" नाम, जो संस्कृत शब्द "खल" से लिया गया है, एक गहरा प्रतीकात्मक अर्थ रखता है जो कालभैरव के ब्रह्मांडीय कार्य के एक महत्वपूर्ण पहलू का वर्णन करता है।

खलिहान (The Threshing Floor) शाब्दिक रूप से, "खल" एक खलिहान को संदर्भित करता है - एक कठोर क्षेत्र जहाँ अनाज को भूसे से अलग किया जाता है। यह कृषि रूपक आध्यात्मिक निहितार्थों से समृद्ध है। जैसे खलिहान मूल्यवान अनाज को बेकार भूसे से अलग करता है, वैसे ही कालभैरव उस दिव्य सिद्धांत के रूप में कार्य करते हैं जो सत्य को असत्य से, धार्मिकता को अधार्मिकता से और आध्यात्मिक सार को भौतिक भ्रम से अलग करता है। वह ब्रह्मांड में अंतिम विवेकी शक्ति हैं।

धार्मिकता को दुष्टता से अलग करना (Separating Righteousness from Wickedness) इस संदर्भ में, कालभैरव अंतिम न्यायाधीश और मध्यस्थ हैं। वह लाक्षणिक रूप से जीवन, कर्मों और कर्मों को "दोषमुक्त" करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि अच्छे कर्मों से उनके उचित फल मिलते हैं जबकि बुरे कर्मों को शुद्ध या दंडित किया जाता है। वह पाखंड या धोखे को बर्दाश्त नहीं करते। यह अलगाव केवल एक निर्णय नहीं है बल्कि आत्माओं की शुद्धि और प्रगति के लिए एक आवश्यक प्रक्रिया है। वह छिपी हुई चीजों को उजागर करते हैं, अशुद्धियों को जलाते हैं, और प्राणियों और स्थितियों के सच्चे स्वरूप को सामने लाते हैं।

शुद्धि और न्याय (Purification and Justice) खलिहान के साथ उनका जुड़ाव दिव्य न्याय और ब्रह्मांडीय व्यवस्था में उनकी भूमिका पर जोर देता है। वह सुनिश्चित करते हैं कि धर्म (धार्मिकता) का पालन किया जाए और अधर्म (अधार्मिकता) का उन्मूलन किया जाए। भक्त के लिए, खल के पास आने का अर्थ है इस शुद्धिकरण प्रक्रिया के प्रति समर्पण करना, कालभैरव को अहंकार, भ्रम और नकारात्मक प्रवृत्तियों को दूर करने देना, केवल शुद्ध आध्यात्मिक अनाज को पीछे छोड़ देना।

480. महाबलाय

अपार, असीम और परम शक्ति से संपन्न भगवान (कालाभैरव) को नमन।

विस्तार : महाबलाय नाम कालभैरव के लिए एक गहरा विशेषण है, जो संस्कृत शब्दों महा और बल से बना है।

महा: यह उपसर्ग "महान," "शक्तिशाली," "असीम," "सर्वोच्च," या "अतिमानवीय" का अर्थ दर्शाता है। यह जिस गुण से पहले आता है, उसे उच्चतम संभव स्तर तक बढ़ा देता है।

बल: इस शब्द का अर्थ "शक्ति," "सामर्थ्य," "पराक्रम," "बल" या "ऊर्जा" है।

सर्वोच्च और असीम शक्ति महाबलाय का अर्थ है "असीम शक्ति वाला" या "सर्वोच्च शक्ति धारण करने वाला।" यह शक्ति केवल शारीरिक पराक्रम नहीं है, बल्कि इसमें ब्रह्मांडीय, आध्यात्मिक और विनाशकारी शक्ति भी शामिल है। यह एक अद्वितीय, सर्वव्यापी शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है जो मानवीय समझ और माप से परे है। इस रूप में कालभैरव, पूर्ण, अटूट शक्ति का मूर्त रूप हैं, जो ब्रह्मांडीय विघटन लाने और किसी भी बाधा को दूर करने में सक्षम हैं।

दिव्य के एक पहलू के रूप में शक्ति शिव और भैरव के संदर्भ में, बल (शक्ति) दिव्य का एक मूलभूत गुण है। यह वह शक्ति है जो ब्रह्मांड को बनाए रखती है, वह ऊर्जा है जो सृष्टि, पालन और संहार को संचालित करती है। जब इसे कालभैरव को समर्पित किया जाता है, तो यह विशेष रूप से दिव्य इच्छा को लागू करने, बुराई का उन्मूलन करने और अदम्य शक्ति के साथ भ्रम को नष्ट करने की उनकी क्षमता पर प्रकाश डालता है।

बाधाओं और भय का नाश करने वाला यह असीम शक्ति उन्हें नकारात्मक शक्तियों का परम रक्षक और संहारक बनने में सक्षम बनाती है। उनके पास कर्म बंधनों को तोड़ने, आध्यात्मिक और भौतिक बाधाओं को दूर करने और उन गहरे भयों को जीतने की शक्ति है जो व्यक्तिगत आत्मा को बांधते हैं। उनकी शक्ति केवल विनाश के लिए नहीं, बल्कि मुक्ति के लिए भी है - यह अज्ञान और अहंकार की बाधाओं को कुचलकर परम बोध का मार्ग प्रशस्त करती है।

ब्रह्मांडीय शक्ति महाबलाय उस ब्रह्मांडीय ऊर्जा को भी संदर्भित करता है जो सभी अस्तित्व और सभी प्रक्रियाओं के मूल में है, सबसे छोटे परमाणु कंपन से लेकर गांगेय गतियों के विशाल पैमाने तक। वह वह शक्ति है जो समय के चक्रों और सभी निर्मित रूपों के अंतिम विघटन को नियंत्रित करती है, जो काल (समय) के स्वामी के रूप में उनकी भूमिका को दोहराती है।

481. महीपाताय

पृथ्वी के महान रक्षक और शासक को नमन।

विस्तार : महीपात नाम मही और पात का एक यौगिक है, और यह कालभैरव के पृथ्वी से गहरे संबंध और उस पर उनके अधिकार को दर्शाता है।

मही (Mahī): यह संस्कृत शब्द पृथ्वी, भूमि या भूमि के एक बड़े भूभाग को संदर्भित करता है। यह अक्सर भौतिक संसार, भौतिक क्षेत्र और इसमें समाहित सभी चीजों का प्रतीक है।

पात (Pāta): "पा" धातु से, जिसका अर्थ है "रक्षा करना," "शासन करना," "रक्षा करना," या "पोषण करना।"

पृथ्वी के महान रक्षक (Great Protector of the Earth) महीपात के रूप में, कालभैरव को पृथ्वी (मही) और उसके सभी निवासियों के सर्वोच्च संरक्षक और रक्षक के रूप में पूजा जाता है। यह पहलू ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने, ग्रह क्षेत्र की स्थिरता और कल्याण सुनिश्चित करने में उनकी भूमिका पर जोर देता है। वह प्राकृतिक पर्यावरण, उसमें रहने वाले जीवों और जिस भूमि पर हम चलते हैं, उसकी रक्षा करते हैं। उनकी सुरक्षा आपदाओं को टालने, मौलिक शक्तियों को संतुलित करने और स्थलीय तल की पवित्रता को बनाए रखने तक फैली हुई है।

शासक और पोषक (Ruler and Sustainer) केवल सुरक्षा से परे, "पात" का अर्थ प्रभुत्व और पोषण भी है। इसलिए, महीपात कालभैरव को पृथ्वी के परम संप्रभु और शासक के रूप में दर्शाता है। वह वह है जो इसके चक्रों को नियंत्रित करता है, इसकी लय को नियंत्रित करता है, और सभी

जीवन रूपों के पोषण के लिए प्रदान करता है। यह भौतिक दुनिया पर उनके सर्वव्यापी नियंत्रण को उजागर करता है, उर्वरता, विकास और संतुलन सुनिश्चित करता है।

ब्रह्मांडीय अधिकार (Cosmic Authority) यह नाम कालभैरव के सार्वभौमिक प्रभुत्व और सृष्टि के विशाल पहलुओं की देखरेख और शासन करने की उनकी क्षमता को रेखांकित करता है। यह उन्हें ब्रह्मांड की भौतिक अभिव्यक्ति से जोड़ता है, समय और भय के विनाशक के रूप में ही नहीं, बल्कि पृथ्वी के अस्तित्व के संरक्षण और निरंतरता के लिए जिम्मेदार एक मौलिक शक्ति के रूप में भी उनकी भूमिका की पुष्टि करता है। वह दिव्य सत्ता है जो यह सुनिश्चित करती है कि पृथ्वी अपने ब्रह्मांडीय उद्देश्य को पूरा करे।

482. महायोगिने

सभी प्रकार के योगों के सर्वोच्च स्वामी को नमन।

विस्तार : महायोगी नाम महा (महान, सर्वोच्च, परम) और योगी (वह जो योग का अभ्यास करता है या उसे मूर्त रूप देता है) का एक यौगिक है। यह विशेषण कालभैरव को, और विस्तार से शिव को, योग के सभी रूपों के परम और सर्वोच्च स्वामी के रूप में वर्णित करता है, जिसमें इसके शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक आयाम शामिल हैं।

परम तपस्वी और अभ्यासी महायोगी तपस्या और आध्यात्मिक अनुशासन के शिखर का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे शाश्वत रूप से गहरी ध्यान (समाधि) में लीन रहते हैं, जो पूर्ण आत्म-नियंत्रण, वैराग्य और गहन आध्यात्मिक बोध का प्रतीक है। उनकी योगिक शक्ति अद्वितीय है, जो मन, इंद्रियों और भौतिक संसार पर परम महारत का प्रतिनिधित्व करती है।

सभी योगिक ज्ञान का स्रोत योग के सभी मार्ग और प्रणालियाँ अंततः शिव से उत्पन्न होती हैं और उन्हीं तक ले जाती हैं। महायोगी के रूप में, वे सभी योगिक ज्ञान, तकनीकों (आसन, प्राणायाम, मुद्राएँ, बंध) और दार्शनिक अंतर्दृष्टि के स्रोत हैं। वे पहले गुरु (आदि-गुरु) हैं जिन्होंने मानवता को योग का ज्ञान प्रदान किया।

मुक्ति का प्रतीक (मोक्ष) महायोगी पहलू योग के अंतिम लक्ष्य को दर्शाता है: जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) से मुक्ति (मोक्ष)। गहन तपस्या और ध्यान के माध्यम से, वे सभी द्वंद्वों और सीमाओं को पार करते हैं, शुद्ध चेतना की मुक्त अवस्था को मूर्त रूप देते हैं। कालभैरव को महायोगी के रूप में भक्ति से भक्तों को उनकी योगिक यात्रा में आने वाली बाधाओं को दूर करने और उच्च आध्यात्मिक अवस्थाओं को प्राप्त करने में मदद मिलती है।

पराकाष्ठा और अंतर्निहितता महायोगी के रूप में, वे एक साथ पारलौकिक—सभी सांसारिक चिंताओं से परे—और अंतर्निहित—हर चीज में व्याप्त—हैं। यह द्वंद्व इस बात पर प्रकाश डालता है कि सच्ची आध्यात्मिक प्राप्ति में स्वयं के भीतर और पूरे ब्रह्मांड में दिव्य का अनुभव करना शामिल है।

483. महामनसे

महान, विशाल और ब्रह्मांडीय मन वाले को नमन।

विस्तार : महामनसे नाम महा (महान, विशाल, ब्रह्मांडीय) और मनस (मन, बुद्धि, चेतना) का एक यौगिक है। यह भगवान कालभैरव को एक अद्वितीय और असीम मन के परम स्वामी के रूप में दर्शाता है।

ब्रह्मांडीय मन (The Cosmic Mind) महामनसे एक ऐसे मन की ओर इशारा करता है जो व्यक्तिगत विचार और धारणा की सभी सीमाओं को पार करता है। यह एक ब्रह्मांडीय चेतना है, जिसमें सभी ज्ञान, सभी समय और सभी स्थान समाहित हैं। सीमित मानव मन के विपरीत, यह द्वंद्वों,

पिछले अनुभवों या भविष्य की प्रत्याशाओं से बंधा नहीं है। यह सभी सृष्टि, संरक्षण और संहार का भंडार है। यह कालभैरव को परम रणनीतिकार, परम ज्ञाता और परम द्रष्टा बनाता है।

सर्वज्ञ (The Omniscient One) यह नाम सीधे कालभैरव को सर्वज्ञता प्रदान करता है। उनका मन केवल क्षमता में विशाल नहीं है, बल्कि वह हर उस चीज़ से स्वाभाविक रूप से अवगत है जो कभी थी, है और होगी। इस ब्रह्मांडीय बुद्धि से कोई रहस्य छिपा नहीं है, और कोई भी घटना उसकी जानकारी के बिना घटित नहीं होती है। यह गहन ज्ञान ब्रह्मांडीय व्यवस्था और सभी अस्तित्व को नियंत्रित करने वाले धर्म का मार्गदर्शन करता है।

मानव बुद्धि से परे (Beyond Human Intellect) मानव मन अक्सर आंदोलन, संदेह और सीमा का स्रोत होता है। महामनसे एक दिव्य मन प्रस्तुत करके इसके विपरीत है जो शांत, उज्ज्वल और पूरी तरह से संतुलित है। यह वह बुद्धि है जो ब्रह्मांड के जटिल नृत्य काorchestration करती है, सबसे छोटे उप-परमाणु कण से लेकर सबसे बड़ी आकाशगंगाओं तक। इस पहलू की पूजा करने से भक्तों को मानसिक सीमाओं को दूर करने, विचारों की स्पष्टता प्राप्त करने और दिव्य ज्ञान तक पहुंचने में मदद मिलती है।

सभी विचारों का स्रोत (The Source of All Thought) महामनस के स्वामी के रूप में, कालभैरव वह परम स्रोत भी हैं जिससे सभी व्यक्तिगत मन और बुद्धियाँ उत्पन्न होती हैं। ब्रह्मांड में हर विचार, हर विचार, रचनात्मकता की हर चिंगारी अंततः इस विशाल, दिव्य चेतना में अपनी उत्पत्ति पाती है।

484. महामायाय

महान, ब्रह्मांडीय माया शक्ति को धारण करने वाले (महामाया) को नमन।

विस्तार : महामायाय नाम शिव की, विशेष रूप से कालभैरव की, माया पर महारत को स्वीकार करने वाला एक गहरा आह्वान है, जो भ्रम की ब्रह्मांडीय शक्ति है। यह "महा" (महान, भव्य) और "माया" (भ्रम, ब्रह्मांडीय रचनात्मक शक्ति, दिव्य छल) से बना है।

माया की प्रकृति हिंदू दर्शन में, माया केवल एक सामान्य भ्रम या चाल नहीं है। यह मूलभूत रचनात्मक सिद्धांत है जो निर्गुण, निराकार निरपेक्ष (ब्रह्म या शिव) को नाम और रूपों के विविध, भिन्न और प्रतीत होने वाले वास्तविक ब्रह्मांड के रूप में प्रकट होने की अनुमति देता है। यह वह शक्ति है जो परम वास्तविकता को आच्छादित करती है और अनुभव की गई वास्तविकता को प्रक्षेपित करती है। यह आवरण शक्ति और विक्षेप शक्ति दोनों है।

माया के संचालक के रूप में कालभैरव महामायाय के रूप में, कालभैरव को इस दुर्जेय ब्रह्मांडीय ऊर्जा के सर्वोच्च संचालक और नियंत्रक के रूप में चित्रित किया गया है। वह माया से बंधे नहीं हैं बल्कि इसका प्रयोग करते हैं। इसका अर्थ है:

1. दिव्य अभिव्यक्ति: वह सूक्ष्म से स्थूल तक संपूर्ण सृष्टि को प्रकट करने के लिए माया का उपयोग करते हैं। ब्रह्मांड, अपनी सभी जटिलताओं और स्पष्ट वास्तविकता में, माया के माध्यम से खेला गया उनका दिव्य खेल (लीला) है। 2. ब्रह्मांडीय छल: माया को अक्सर उस शक्ति के रूप में समझा जाता है जो संवेदनशील प्राणियों को बहुलता और द्वैत को देखने का कारण बनती है जहाँ अंततः केवल एकता है। कालभैरव, महामायाय के रूप में, इस ब्रह्मांडीय "छल" काorchestration करते हैं, जो विरोधाभासी रूप से, सभी अनुभव और अंततः आध्यात्मिक विकास का साधन भी है। 3. समझ के माध्यम से मुक्ति: कालभैरव को महामायाय के रूप में पहचानना यह दर्शाता है कि मुक्ति (मोक्ष) का मार्ग माया द्वारा बनाए गए भ्रमों को समझने और उनसे परे जाने में निहित है। चूंकि वह माया को नियंत्रित करते हैं, इसलिए उनकी भक्ति इस आवरण को हटाने में मदद कर सकती है, जिससे

सच्ची, अप्रकट वास्तविकता प्रकट होती है। 4. सर्वशक्तिमान नियंत्रण: यह नाम सभी घटनात्मक अस्तित्व पर उनकी पूर्ण संप्रभुता पर जोर देता है। प्रकट दुनिया में कुछ भी उनके प्रभुत्व से बाहर नहीं है, क्योंकि सभी उनकी माया के उत्पाद हैं।

संक्षेप में, महामायाय कालभैरव को केवल एक संहारक या रक्षक के रूप में नहीं, बल्कि परम ब्रह्मांडीय जादूगर और वास्तुकार के रूप में चित्रित करता है, जिनकी दिव्य शक्ति माया के कुशल उपयोग के माध्यम से पूरे ब्रह्मांड का निर्माण, पालन और संहार करती है।

485. महाशान्ताय

जो शाश्वत रूप से और सर्वोच्च शांतिपूर्ण तथा प्रशांत हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : महाशान्त नाम कालभैरव का एक गहन वर्णन है, जो दो संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है: महा और शान्त।

• महा (Mahā): अर्थ "महान," "सर्वोच्च," "विशाल," या "सर्वव्यापी।" यह एक परम, असीमित गुण को दर्शाता है। • शान्त (Shānta): अर्थ "शांतिपूर्ण," "शांत," "स्थिर," या "प्रशांत।" यह अशांति और उत्तेजना से मुक्त, गहरी आंतरिक शांति की स्थिति को दर्शाता है।

परम शांति (The Supreme Peace) पहली नज़र में, यह नाम भैरव के उग्र और भयानक पहलू के विपरीत लग सकता है। हालाँकि, यह दिव्य प्रकृति के बारे में एक गहरा, गूढ़ सत्य प्रकट करता है। जबकि कालभैरव समय और अहंकार के भयानक संहारक के रूप में प्रकट होते हैं, यह विनाशकारी शक्ति अंततः परम शांति की स्थिति की ओर ले जाती है। वह सभी भ्रम, भय और आसक्ति को मिटा देते हैं, जो दुख और अशांति के मूल कारण हैं। एक बार जब ये नष्ट हो जाते हैं, तो केवल सर्वोच्च, अटूट शांति ही शेष रहती है।

द्वैत से परे (Beyond Dualities) महाशान्त शिव की पारलौकिक प्रकृति का प्रतिनिधित्व करता है, जो सभी द्वैतों से परे मौजूद है - सृष्टि और विनाश से परे, आतंक और शांति से परे। उनकी उग्रता एक उपकरण है, एक साधन है, उन बाधाओं को दूर करने के लिए जो प्राणियों को सच्ची शांति का अनुभव करने से रोकती हैं। उनकी अंतिम अवस्था पूर्ण स्थिरता की है, ठीक वैसे ही जैसे तूफान की शांत आँख होती है।

विलय की स्थिरता (The Stillness of Dissolution) काल (समय) के संदर्भ में, कालभैरव, महाशान्त के रूप में, ब्रह्मांड के विलय के बाद आने वाली परम शांति को दर्शाते हैं, जिसे महाप्रलय के नाम से जाना जाता है। सब कुछ ब्रह्मांडीय चेतना में समाहित होने के बाद, सर्वोच्च, अविभेदित स्थिरता और शांति की अवधि होती है - महाशान्त की स्थिति। यह परम अ-अस्तित्व की शांति है, जिससे अंततः सृष्टि एक बार फिर से उभरेगी।

आंतरिक शांति (The Inner Peace) भक्त के लिए, कालभैरव को महाशान्त के रूप में ध्यान करने से गहरी आंतरिक शांति प्राप्त करने में मदद मिलती है। उनकी सर्व-उपभोक्ता शक्ति के प्रति समर्पण करके, व्यक्ति अहंकार के संघर्षों को छोड़ देता है और संतुलन और अटूट शांति की स्थिति प्राप्त करता है, यह महसूस करते हुए कि भयावह पहलू केवल दिव्य लीला के पहलू हैं, जो मुक्ति और आंतरिक शांति की ओर ले जाते हैं। वह वही हैं जो अज्ञान और दुख के उन्मूलन से मिलने वाली परम शांति प्रदान करते हैं।

486. मताय

विचार, ज्ञान और बुद्धि के साक्षात् स्वरूप को नमन।

विस्तार : 'मतये' नाम संस्कृत शब्द 'मति' से लिया गया है।

"मति" की व्युत्पत्ति संबंधी जड़ें संस्कृत में 'मति' (मति) का एक समृद्ध अर्थ क्षेत्र है, जो मुख्य रूप से संदर्भित करता है: 1. विचार, समझ, बोध। 2. बुद्धि, ज्ञान, विवेक। 3. मन, आध्यात्मिक बोध की शक्ति। 4. राय, विश्वास, दृढ़ संकल्प। 5. परामर्श, सलाह।

शुद्ध बुद्धि का अवतार कालभैरव को "मतये" कहकर संबोधित करके, हम उन्हें शुद्ध बुद्धि, गहन ज्ञान और अचूक विचार के साक्षात् स्वरूप के रूप में स्वीकार करते हैं। वे केवल इन गुणों के स्वामी नहीं हैं, बल्कि सभी सूचित धारणा और प्रबुद्ध समझ का सार हैं। यह दर्शाता है कि ज्ञान के सभी रूप, चाहे वे सांसारिक हों या आध्यात्मिक, अंततः उन्हीं से उत्पन्न होते हैं।

ज्ञान और विवेक का स्रोत इस संदर्भ में, कालभैरव विवेक (Viveka) और बौद्धिक स्पष्टता के सर्वोच्च स्रोत का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे प्राणियों को सोचने, विश्लेषण करने और समझने की क्षमता प्रदान करते हैं। आध्यात्मिक साधकों के लिए, भैरव के इस पहलू की पूजा करने से उनकी बुद्धि को तेज करने, मानसिक अस्पष्टताओं को दूर करने और उन्हें उच्च सत्यों की ओर मार्गदर्शन करने में मदद मिलती है। वे आंतरिक प्रकाश हैं जो ज्ञान और विवेक के मार्ग को प्रकाशित करते हैं।

मार्गदर्शक सिद्धांत 'मति' का अर्थ दृढ़ संकल्प और दृढ़ विश्वास भी है। मतये के रूप में, भैरव अटूट ब्रह्मांडीय इच्छा और सभी अस्तित्व के पीछे के निश्चित सिद्धांत का प्रतीक हैं। वे परम परामर्श और सभी सही निर्णय का स्रोत हैं, जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था और व्यक्तिगत आत्मा का मार्गदर्शन करते हैं। वे आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता के उच्चतम रूप का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो केवल अकादमिक ज्ञान से परे है और प्रत्यक्ष बोध की ओर ले जाता है।

487. नादाय

आदिम, ब्रह्मांडीय ध्वनि और कंपन स्वरूप को नमन।

विस्तार : नाम नाडाय संस्कृत शब्द "नाद" से लिया गया है, जो ध्वनि, स्वर या कंपन को संदर्भित करता है। एक गहन आध्यात्मिक और दार्शनिक अर्थ में, नाद केवल श्रवण बोध से कहीं अधिक है; यह आदिम, अप्रकट ब्रह्मांडीय ध्वनि है जिससे समस्त सृष्टि उत्पन्न होती है।

सृष्टि का आदिम कंपन हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, नाद को अप्रकट ब्रह्म (परम वास्तविकता) की पहली अभिव्यक्ति के रूप में पूजा जाता है। यह सूक्ष्म, कंपनशील सार है जो ब्रह्मांड में सभी रूपों और घटनाओं को जन्म देता है। बोले गए शब्द से पहले, दृश्यमान ब्रह्मांड से पहले, नाद था—शाश्वत, ब्रह्मांडीय गुंजन जो सभी अस्तित्व का आधार है। यह अवधारणा नाद योग के केंद्र में है, एक आध्यात्मिक मार्ग जो मुक्ति प्राप्त करने के साधन के रूप में आंतरिक ध्वनियों पर केंद्रित है।

शब्द ब्रह्म नाद को अक्सर शब्द ब्रह्म, "ध्वनि निरपेक्ष" या "शब्द ईश्वर" के साथ समान किया जाता है। यह ध्वनि में निहित दिव्य, रचनात्मक शक्ति को संदर्भित करता है। कालभैरव, नाडाय के रूप में, इस रचनात्मक सिद्धांत का प्रतीक हैं। उनका अस्तित्व ही वह कंपन है जो ब्रह्मांड को लगातार बनाता है, बनाए रखता है और अंततः भंग करता है।

श्रवण बोध से परे जबकि "ध्वनि" शाब्दिक अनुवाद है, नाडाय एक ऐसे कंपन को दर्शाता है जो श्रव्य और अश्रव्य दोनों है, स्थूल और सूक्ष्म दोनों है। यह ब्रह्मांड की लयबद्ध धड़कन है, सूक्ष्म अनुनाद जो हर परमाणु में व्याप्त है। कालभैरव को नाडाय के रूप में सम्मानित करना उनके स्वरूप को ब्रह्मांडीय कंपन के सार के रूप में, सभी ऊर्जा और रूप के स्रोत के रूप में स्वीकार करना है।

अनाहत ध्वनि (अनाहत नाद) गहरे आध्यात्मिक संदर्भों में, नाद अनाहत नाद – "अनाहत ध्वनि" या ध्यान के दौरान अनुभव की जाने वाली आदिम आंतरिक ध्वनि को संदर्भित कर सकता है। यह ध्वनि वस्तुओं के टकराने से उत्पन्न नहीं होती है, बल्कि एक सहज, स्व-अस्तित्ववान कंपन है जो योगी को

चेतना की उच्च अवस्थाओं तक ले जाती है। नाडाय के रूप में कालभैरव यह परम, अनाहत ध्वनि हैं, जो अभ्यासकर्ताओं को उनके सच्चे, दिव्य स्वरूप की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

488. महोत्सवाय

जो महान ब्रह्मांडीय उत्सव और अनंत समारोह का स्रोत हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : महोत्सवय नाम महा (महान, भव्य) और उत्सव (पर्व, समारोह, आनंद) का एक यौगिक है। यह नाम शिव के, विशेष रूप से उनके भैरव रूप में, एक गहन दार्शनिक और आध्यात्मिक पहलू को खूबसूरती से समाहित करता है।

महान ब्रह्मांडीय उत्सव (The Great Cosmic Festival) महोत्सव एक भव्य पर्व या समारोह को संदर्भित करता है। आध्यात्मिक संदर्भ में, जब इसे कालभैरव जैसे देवता पर लागू किया जाता है, तो यह उनके अस्तित्व को ब्रह्मांडीय उत्सव के परम स्रोत और अवतार के रूप में दर्शाता है। यह केवल एक लौकिक उत्सव नहीं है, बल्कि सृष्टि, संरक्षण और विघटन का निरंतर, गतिशील परस्पर क्रिया है जो स्वयं ब्रह्मांड का निर्माण करता है। संपूर्ण अस्तित्व, अपने असंख्य रूपों, परिवर्तनों और चक्रों के साथ, उनके दिव्य नृत्य (तांडव) के रूप में देखा जाता है, जो उनकी अपनी शक्ति और अस्तित्व का एक शाश्वत और आनंदमय उत्सव है।

शाश्वत उत्सव का स्रोत (Source of Eternal Celebration) महान उत्सव के रूप में, कालभैरव दिव्य के शाश्वत, अंतहीन आनंद और उत्साह का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह आनंद बाहरी परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करता है, बल्कि अस्तित्व के ताने-बाने में निहित है, जो उनकी इच्छा का एक सहज प्रकटीकरण है। भक्तों के लिए, उन्हें महोत्सव के रूप में पहचानना यह समझना है कि सच्चा, अटूट उत्सव और आनंद (आनंद) इस ब्रह्मांडीय स्रोत से जुड़कर प्राप्त होता है, जो क्षणभंगुर सांसारिक सुखों से परे है।

दिव्य लीला का प्रतीक (Symbol of Divine Play (Līlā)) यह नाम लीला की अवधारणा के साथ भी प्रतिध्वनित होता है, जो सर्वोच्च सत्ता का दिव्य खेल या क्रीड़ा है। ब्रह्मांड को, उसकी संपूर्णता में, अक्सर शिव की लीला के रूप में वर्णित किया जाता है। इसलिए, वह "महान उत्सव" हैं क्योंकि जन्म, जीवन, मृत्यु और पुनर्जन्म का पूरा ब्रह्मांडीय नाटक उनकी आनंदमय, रचनात्मक अभिव्यक्ति है, एक भव्य तमाशा जिसे वह करते हैं।

मुक्तिदायक आनंद (Liberating Joy) आध्यात्मिक साधक के लिए, कालभैरव को महोत्सव के रूप में देखना यह दर्शाता है कि उनके प्रति भक्ति जीवन को एक निरंतर उत्सव में बदल सकती है - व्यक्ति को दुख, भय और पीड़ा से मुक्त कर सकती है, और उन्हें दिव्य के साथ आनंदमय मिलन की आंतरिक स्थिति से बदल सकती है। यह बताता है कि उनसे मिलना, यहां तक कि उनके उग्र रूप में भी, अंततः सर्वोच्च आनंद और आध्यात्मिक मुक्ति की ओर ले जाता है।

489. मात्सर्यविदे

समस्त ईर्ष्या और द्वेष से परे और उन्हें समझने वाले को नमन।

विस्तार : मात्सर्यविदे नाम कालभैरव का एक गहन वर्णन है, जो मात्सर्य और विदे शब्दों का संयोजन है, जो मिलकर ईर्ष्या और द्वेष से उनके परे होने का संकेत देते हैं।

मात्सर्य: ईर्ष्या और द्वेष मात्सर्य का शाब्दिक अर्थ है "दुर्भावनापूर्ण ईर्ष्या," "द्वेष," या "दूसरे की समृद्धि में आनंद न ले पाना।" यह एक मूलभूत मानवीय दुर्गुण है, अपर्याप्तता की भावना या दूसरे के पास जो है उसकी इच्छा से उत्पन्न एक आंतरिक अशांति। यह नकारात्मकता, दुर्भावना और

सांसारिक संपत्ति और स्थिति से लगाव को जन्म देता है। इसे विभिन्न हिंदू आध्यात्मिक परंपराओं में मन के छह मूलभूत शत्रुओं (अरिषड्वर्ग) में से एक माना जाता है, काम (वासना), क्रोध (क्रोध), लोभ (लालच), मोह (भ्रम), और मद (अहंकार) के साथ।

विदे: परे, जानना, समझना विदे "विद" मूल से आता है, जिसका अर्थ है "जानना," "समझना," या "से परे होना।" इस संदर्भ में, यह केवल ईर्ष्या से बचने का नहीं, बल्कि उसकी प्रकृति की पूर्ण पराकाष्ठा और समझ का प्रतीक है।

ईर्ष्या और द्वेष से परे कालभैरव, मात्सर्यविदे के रूप में, वैराग्य और दिव्य निष्पक्षता के साक्षात अवतार हैं। सर्वोच्च ब्रह्म की अभिव्यक्ति होने के कारण, वे स्वाभाविक रूप से किसी भी व्यक्तिगत इच्छा से रहित हैं जो मात्सर्य को जन्म दे सकती है। उनके पास सब कुछ है, वे सब कुछ हैं; इसलिए, कोई कमी या अभाव नहीं है जो उनके भीतर ईर्ष्या को उत्तेजित कर सके।

निर्लिप्तता और निष्पक्षता का प्रतीक यह नाम एक निर्लिप्त पर्यवेक्षक और ब्रह्मांडीय न्याय के वितरक के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। वे बिना किसी व्यक्तिगत एजेंडे, पसंद या किसी भी प्रकार के भावनात्मक लगाव के कार्य करते हैं जो ईर्ष्या जैसी मानवीय कमजोरियों को परिभाषित करता है। उनके कार्य धर्म (धार्मिकता) और ब्रह्मांडीय नियम द्वारा निर्देशित होते हैं, जो भौतिक दुनिया की छोटी-छोटी भावनाओं के आगे झुके बिना व्यवस्था बनाए रखते हैं।

पराकाष्ठा के माध्यम से शिक्षा भक्तों के लिए, कालभैरव को मात्सर्यविदे के रूप में चिंतन करना अपनी ईर्ष्या की प्रवृत्तियों को दूर करने के लिए एक शक्तिशाली अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है। इस रूप में उनका आह्वान करके, व्यक्ति मन को शुद्ध करने, संतोष (संतोष) विकसित करने और एकता की दृष्टि विकसित करने की कृपा चाहता है जहाँ कोई दूसरों की समृद्धि में आनंद ले सके, इसे सार्वभौमिक लीला के हिस्से के रूप में पहचान सके। वे व्यक्ति को पीड़ा से बांधने वाली और आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डालने वाली ईर्ष्या की गांठों को तोड़ने में मदद करते हैं। वे वही हैं जो समझते हैं और इस प्रकार भक्त के भीतर ईर्ष्या की जड़ को शुद्ध करते हैं।

490. महावीर्याय

उन परम अतुलनीय शौर्य और पौरुष के धनी को नमन।

विस्तार : महावीर्याय नाम, महा, वीर्य और दत्तीय अंत -आय का एक यौगिक, अत्यधिक, अद्वितीय शक्ति और सामर्थ्य वाले प्राणी को दर्शाता है।

महा: इस संस्कृत उपसर्ग का अर्थ है "महान," "शक्तिशाली," "सर्वोच्च," या "विशाल।" यह बाद के पद को उसकी उच्चतम संभव डिग्री तक बढ़ाता है।

वीर्य: इस शब्द के अर्थों की एक समृद्ध श्रृंखला है, जिसमें "शौर्य," "ऊर्जा," "सामर्थ्य," "शक्ति," "वीरता," "पराक्रम," "पुरुषत्व," "पौरुष," और "आध्यात्मिक ऊर्जा" या "प्रभावकारिता" शामिल हैं।

सर्वोच्च शौर्य और वीरता महावीर्य के रूप में, भगवान कालभैरव साहस और निर्भीकता के अंतिम रूप का प्रतीक हैं। वह दिव्य नायक हैं जो सभी बाधाओं का सामना करते हैं और उन पर विजय प्राप्त करते हैं, जो अदम्य शक्ति का प्रतीक हैं। यह शौर्य केवल शारीरिक शक्ति नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक और ब्रह्मांडीय वीरता तक फैला हुआ है - ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखने और अराजकता की शक्तियों को पराजित करने की क्षमता। भक्तों के लिए, यह पहलू जीवन की चुनौतियों का सामना करने और आंतरिक राक्षसों पर विजय प्राप्त करने के लिए साहस को प्रेरित करता है।

असीम ऊर्जा और सामर्थ्य यह नाम उनकी अटूट और असीम ऊर्जा को उजागर करता है, जो स्वयं सृष्टि, पालन और संहार का स्रोत है। यह वीर्य वह सक्रिय सिद्धांत है जो सभी ब्रह्मांडीय प्रक्रियाओं को संचालित करता है। यह वह दिव्य सामर्थ्य है जो उन्हें संतुलन को बदलने और बहाल करने की अनुमति देता है। आध्यात्मिक संदर्भ में, यह उस शक्तिशाली आध्यात्मिक ऊर्जा को दर्शाता है जो ज्ञानोदय और बोध को बढ़ावा देती है।

दिव्य पौरुष और रचनात्मक शक्ति कुछ तांत्रिक परंपराओं में, वीर्य पौरुष को भी संदर्भित करता है, जो दिव्य रचनात्मक शक्ति का प्रतीक है। यह जीवन देने वाली शक्ति है, सभी अभिव्यक्तियों का सार है। यह उस सृजनात्मक शक्ति को संदर्भित करता है जो अस्तित्व में लाती है, न कि एक सांसारिक अर्थ में, बल्कि निरपेक्ष की आदिम, स्वयंभू शक्ति के रूप में।

अदम्य एक कुल मिलाकर, महावीर्य कालभैरव को अजेय, सर्वोच्च शक्तिशाली और अदम्य रूप से शक्तिशाली शक्ति के रूप में जोर देता है जो परम रक्षक और संरक्षक के रूप में खड़ा है। वह वह है जिसकी शक्ति और साहस असीमित हैं, जो विस्मय को प्रेरित करते हैं और अपने भक्तों को गहरा संरक्षण प्रदान करते हैं।

491. महाशक्तये

महान्, अनंत और परम शक्ति से युक्त को नमन।

विस्तार : महाशक्ति (महाशक्तये, चतुर्थी विभक्ति में) नाम दिव्य में निहित सर्वोच्च और असीम शक्ति की एक गहन और प्रत्यक्ष स्वीकृति है। यह "महा" और "शक्ति" का एक यौगिक है।

महा: इस संस्कृत उपसर्ग का अर्थ है "महान", "शक्तिशाली", "सर्वोच्च" या "अनंत"। यह परिमाण, सार्वभौमिकता और अतिक्रमण की एक अद्वितीय डिग्री को दर्शाता है।

शक्ति: यह शब्द हिंदू दर्शन और विशेष रूप से शैव धर्म के लिए केंद्रीय है। यह दिव्य ब्रह्मांडीय ऊर्जा, शक्ति, बल या रचनात्मक क्षमता को संदर्भित करता है। यह ब्रह्मांड का गतिशील सिद्धांत है, जिसे अक्सर दिव्य माँ या देवी के रूप में व्यक्त किया जाता है।

सर्वोच्च सार्वभौमिक शक्ति महाशक्ति के रूप में, भगवान शिव (इस संदर्भ में, कालभैरव) को ब्रह्मांड में सभी शक्ति के अंतिम स्रोत और अवतार के रूप में पहचाना जाता है। यह केवल शारीरिक शक्ति नहीं है बल्कि ऊर्जा के हर संभव रूप को समाहित करती है: 1. सृष्टि शक्ति (Sṛṣṭi Śakti): शून्यता से पूरे ब्रह्मांड को प्रकट करने और उत्पन्न करने की शक्ति। 2. स्थिति शक्ति (Sthiti Śakti): सभी सृष्टि को बनाए रखने, पोषण करने और संरक्षित करने की शक्ति। 3. संहार शक्ति (Saṃhāra Śakti): ब्रह्मांड को उसके अव्यक्त अवस्था में वापस घोलने, अवशोषित करने और वापस लेने की शक्ति। यह विशेष रूप से कालभैरव की समय और विघटन के स्वामी के रूप में भूमिका के साथ अच्छी तरह से मेल खाता है। 4. तिरोभाव शक्ति (Tirobhāva Śakti): व्यक्तिगत आत्माओं से वास्तविकता की सच्ची प्रकृति (माया) को छिपाने की शक्ति, जिससे द्वैत और सीमा की अनुभूति होती है। 5. अनुग्रह शक्ति (Anugraha Śakti): कृपा प्रदान करने, अज्ञानता को दूर करने और आत्माओं को मुक्ति या मोक्ष की ओर ले जाने की शक्ति।

शिव और शक्ति का संगम शैव दर्शन में, शिव को अक्सर पारलौकिक, अचल चेतना (पुरुष) के रूप में देखा जाता है, जबकि शक्ति उनकी अंतर्निहित, गतिशील ऊर्जा (प्रकृति) है। वे अग्नि और उसकी गर्मी की तरह अविभाज्य हैं। इसलिए, महाशक्ति का अर्थ है कि कालभैरव स्वयं शक्ति के साक्षी मात्र नहीं हैं, बल्कि इस क्रियाशील, रचनात्मक और परिवर्तनकारी ऊर्जा का सार और स्रोत हैं। वह गतिशील सिद्धांत हैं जो सभी ब्रह्मांडीय प्रक्रियाओं को संचालित करते हैं।

सीमाओं से परे "महा" उपसर्ग इस बात पर जोर देता है कि यह शक्ति स्थान, समय या रूप से सीमित नहीं है। यह अनंत, सर्वव्यापी और निरपेक्ष है। यह वह शक्ति है जो सभी द्वैतों को पार करती है और अस्तित्व में हर घटना को रेखांकित करती है। उन्हें महाशक्ति के रूप में नमन करना यह स्वीकार करना है कि ब्रह्मांड में सभी शक्ति, क्षमता और जीवन शक्ति अंततः इस एक सर्वोच्च दिव्य स्रोत से उत्पन्न होती है।

492. महाद्युतये

उस परम तेजोमय, महान और तेजस्वी प्रकाशमान को नमन।

विस्तार : महाद्युति नाम महा (महान, सर्वोच्च, तीव्र) और द्युति (तेज, वैभव, चमक, प्रकाश, कांति) का एक यौगिक है।

सर्वोच्च तेज इस नाम का सीधा अर्थ है "महान तेज वाला" या "अत्यंत तेजस्वी"। यह कालभैरव को तीव्र, उज्ज्वल प्रकाश के अवतार के रूप में वर्णित करता है, जो किसी भी सांसारिक या स्वर्गीय चमक से कहीं अधिक है। यह तेज केवल भौतिक चमक नहीं है, बल्कि एक आध्यात्मिक, ब्रह्मांडीय चमक है जो उनके अस्तित्व से ही निकलती है।

ज्ञान और विद्या का प्रतीक हिंदू दार्शनिक परंपराओं में, प्रकाश (ज्योति) अक्सर ज्ञान, विद्या और आध्यात्मिक ज्ञान के लिए एक रूपक होता है। इसलिए, महाद्युति कालभैरव को आध्यात्मिक ज्ञान के अंतिम स्रोत के रूप में संदर्भित करता है, जो अपनी सर्वोच्च दीप्ति से अज्ञानता (अविद्या) के अंधकार को दूर करते हैं। वह अपने भक्तों के लिए मार्ग को प्रकाशित करते हैं, उन्हें अज्ञान से सत्य और मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

दिव्य ऊर्जा की अभिव्यक्ति महान तेज उनकी अपार दिव्य शक्ति और ऊर्जा (शक्ति) को भी दर्शाता है। यह वह शक्ति है जो सृष्टि, संरक्षण और संहार को नियंत्रित करती है, हमेशा सक्रिय और जीवंत रहती है। उनका तेज उनकी सर्वव्यापीता और ब्रह्मांड को बनाए रखने वाली जीवंत ऊर्जा का प्रमाण है।

पराकाष्ठा और शुद्धता यह उज्ज्वल प्रकाश उनकी परम शुद्धता (शुद्ध) और पराकाष्ठा का भी प्रतीक है। वह सांसारिक अपूर्णताओं से अछूते हैं, जो परम, शुद्ध चेतना का प्रतिनिधित्व करते हैं। उन्हें महाद्युति के रूप में चिंतन करना उनकी प्राचीन और अपरिवर्तनीय प्रकृति को स्वीकार करना है, एक ऐसा रूप जो सभी द्वैत और आसक्तियों से परे है।

493. उन्मत्तकीर्तिकृते

जिनकी कीर्ति इतनी महान है कि वह उन्मत्त या मदहोश करने वाली प्रतीत होती है, उन्हें नमन।

विस्तार : उन्मत्तकीर्तिकृते नाम उन्मत्त, कीर्ति और कृते से बना एक यौगिक है, जो कालभैरव के एक अद्वितीय और विस्मयकारी गुण का वर्णन करता है।

• उन्मत्त (Unmatta): इस संस्कृत शब्द का अर्थ है "पागल," "उन्मत्त," "उत्साहित," "नशे में धुत," या "जंगली।" आध्यात्मिक संदर्भ में, यह अक्सर सामान्य चेतना से परे की स्थिति, एक दिव्य उन्माद को संदर्भित करता है जो द्वैत और पारंपरिक मानदंडों को पार करता है। जबकि यह सामान्य नियंत्रण के नुकसान का अर्थ हो सकता है, यह अक्सर अस्तित्व या अनुभव की अत्यधिक, जबरदस्त तीव्रता को दर्शाता है।

• कीर्ति (Kīrti): इस शब्द का अर्थ है "ख्याति," "महिमा," "प्रसिद्धि," या "प्रतिष्ठा।" यह किसी की महानता या असाधारण गुणों की व्यापक स्वीकृति और उत्सव को इंगित करता है।

• कृते (Kṛte): यह एक चतुर्थी विभक्ति का अंत है जो "के लिए," "के कारण," या "जिसके लिए" को इंगित करता है।

इस प्रकार, उन्मत्तकीर्तिकृते का अनुवाद "वह जिसकी प्रसिद्धि पागलपन जैसी है" या "वह जो एक ऐसी प्रसिद्धि बनाता है जो उन्मत्त/जंगली है" के रूप में होता है।

उन्मत्त प्रसिद्धि और दिव्य उन्माद (Ecstatic Fame and Divine Madness) यह नाम कालभैरव के उत्कृष्ट और अपरंपरागत स्वभाव की ओर इशारा करता है। उनकी महिमा इतनी विशाल, इतनी शक्तिशाली और मानवीय समझ से इतनी परे है कि यह एक सामान्य दृष्टिकोण से पागलपन या परमानंद के रूप में प्रतीत होती है। यह एक ऐसी प्रसिद्धि है जिसे पारंपरिक समझ या प्रशंसा द्वारा समाहित नहीं किया जा सकता है।

तर्क को तोड़ना (Breaking Rationality) "पागलपन" का अर्थ है कि उनकी महानता तर्क और पारंपरिक विचार की सीमाओं को तोड़ देती है। उनके कार्य और उनका अस्तित्व सांसारिक तर्क को धता बताते हैं, अक्सर उन लोगों को अराजक या चरम प्रतीत होते हैं जो उनके द्वारा सन्निहित गहरे लौकिक क्रम को नहीं समझ सकते हैं। यह उनके भयंकर स्वरूप, श्मशान घाटों से उनके जुड़ाव और जंगली रक्षक के रूप में उनकी भूमिका में देखा जा सकता है।

भक्तों में परमानंद को प्रेरित करना (Inspiring Ecstasy in Devotees) इसके अलावा, उनकी प्रसिद्धि उनके भक्तों में आध्यात्मिक परमानंद या "दिव्य उन्माद" की स्थिति को प्रेरित कर सकती है। उनकी अपार शक्ति और महिमा का सामना करने से व्यक्ति चेतना की एक उच्च स्थिति में पहुंच सकता है जहाँ सामान्य दुनिया फीकी पड़ जाती है, और केवल उनकी जबरदस्त उपस्थिति शेष रहती है, मन और आत्मा को मदहोश करती है।

अपरंपरागत सर्वोच्च (The Unconventional Supreme) यह नाम इस बात पर जोर देता है कि कालभैरव केवल गौरवशाली नहीं हैं बल्कि शानदार ढंग से अपरंपरागत हैं, जो दिव्य के अदम्य, असीमित और पूरी तरह से जबरदस्त पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सभी सीमित समझ से परे हैं। उनकी कीर्ति (प्रसिद्धि) उन्मत्त (उत्साहित/पागल) है क्योंकि वह सभी सामाजिक मानदंडों और सीमाओं से मुक्ति का प्रतीक हैं, एक ऐसा सत्य जो, जब सामना किया जाता है, तो अप्रस्तुत मन को पागलपन जैसा महसूस हो सकता है।

494. मत्ताय

दिव्य आनंद और ब्रह्मांडीय ऊर्जा से मतवाले हुए को नमन।

विस्तार : मत्ताय (Mattaya) नाम संस्कृत शब्द "मत्त" से निकला है, जिसका सामान्य अर्थ "मदमस्त," "उन्मत्त," या "प्रसन्न" होता है। जब इसे दिव्य, विशेष रूप से भगवान कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह गहन आध्यात्मिक और दार्शनिक आयाम ले लेता है।

दिव्य आनंद से मदमस्त एक आध्यात्मिक संदर्भ में, "मदमस्त" का अर्थ किसी सांसारिक पदार्थ से नियंत्रण खोना नहीं है, बल्कि दिव्य आनंद (आनंद) में अत्यधिक लीन होना है। कालभैरव का "मदमस्त" होना उनकी शाश्वत और सर्वोच्च आनंद की स्थिति को दर्शाता है, जो उनकी अपनी असीमित चेतना और ब्रह्मांडीय लीला (lila) से प्राप्त एक गहरा आंतरिक परमानंद है। यह आनंद बाहरी कारकों पर निर्भर नहीं करता है, बल्कि सर्वोच्च वास्तविकता के रूप में उनके अस्तित्व का एक अंतर्निहित गुण है।

उन्मत्त ब्रह्मांडीय ऊर्जा यह शब्द एक जीवंत, गतिशील और अक्षय ब्रह्मांडीय ऊर्जा का भी अर्थ है। कालभैरव, जो समय और संहार के स्वामी हैं, उनका "मदमस्त" होना उस शुद्ध, जंगली, अनियंत्रित शक्ति के रूप में देखा जा सकता है जो सृष्टि, पालन और संहार को नियंत्रित करती है। यह उन्मत्त ऊर्जा सभी ब्रह्मांडीय प्रक्रियाओं के पीछे की प्रेरक शक्ति है, एक दिव्य उन्माद जो सहज शक्ति से आकाशगंगाओं को उत्पन्न और विलीन करता है। यह स्वयं शिव की कच्ची, अनियंत्रित गतिशीलता है।

द्वंद्व से परे "मदमस्त" की यह स्थिति कालभैरव को सभी पारंपरिक द्वंद्वों और सीमाओं से ऊपर उठाती है। वे अपने अनंत स्वरूप में लीन हैं, समय, स्थान और कार्य-कारण की सीमाओं को पार करते हुए। यह स्थिति उन्हें बिना किसी आसक्ति के कार्य करने की अनुमति देती है, अपने ब्रह्मांडीय कर्तव्यों को एक अटूट, आनंदमय एकाग्रता के साथ पूरा करते हुए।

मुक्ति का प्रतीक भक्त के लिए, मत्ताय पर ध्यान करना सांसारिक चिंताओं से मुक्ति और आध्यात्मिक आनंद में डूबने की समान स्थिति को प्रेरित कर सकता है। यह भौतिक बंधन से परम स्वतंत्रता का प्रतीक है, एक ऐसी स्थिति जहाँ व्यक्तिगत आत्मा सार्वभौमिक चेतना के साथ विलीन हो जाती है और अनंत जागरूकता और आनंद के समान दिव्य "मदमस्त" का अनुभव करती है।

495. मघवते

इंद्र (मघवन) की तरह उदार और प्रचुरता प्रदान करने वाले को नमन।

विस्तार : मघवते नाम संस्कृत शब्द 'मघवन' से लिया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "प्रचुर", "उदार" या "दानी"। यह विशेषण सबसे अधिक इंद्र, देवों के राजा से जुड़ा है, जो वरदान, वर्षा और समृद्धि के उदार वितरण के लिए प्रसिद्ध हैं। जब इसे कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह उनके दिव्य स्वभाव के एक गहन पहलू को दर्शाता है जो उनकी भयंकर उपस्थिति को देखते हुए पहली नज़र में विरोधाभासी लग सकता है।

• उदार दाता (The Bountiful Giver) अपनी विस्मयकारी और कभी-कभी भयावह रूप के बावजूद, कालभैरव, मघवन के रूप में, एक सर्वोच्च परोपकारी हैं। वे अपने भक्तों को भौतिक समृद्धि और अच्छे स्वास्थ्य से लेकर आध्यात्मिक विकास और मुक्ति तक कई आशीर्वाद प्रदान करते हैं। यह पहलू इस बात पर प्रकाश डालता है कि उनकी विनाशकारी शक्ति मनमानी नहीं बल्कि उद्देश्यपूर्ण है, जो नई रचना को सुविधाजनक बनाने और शुभता प्रदान करने के लिए बाधाओं को दूर करती है।

• आध्यात्मिक धन के लिए अज्ञान का नाश करने वाले (Destroyer of Ignorance for Spiritual Wealth) एक आध्यात्मिक संदर्भ में, उनकी उदारता केवल सांसारिक उपहारों से परे है। वे उदारतापूर्वक ज्ञान, बुद्धि और अज्ञान के विनाश को प्रदान करते हैं, जो आध्यात्मिक खोज में धन के उच्चतम रूप हैं। आध्यात्मिक बाधाओं और आंतरिक अशुद्धियों को दूर करके, वे भक्तों के लिए आत्म-साक्षात्कार और परम आनंद प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। यहां उनकी "प्रचुरता" आध्यात्मिक स्पष्टता और मुक्ति का उपहार है।

• धन और समृद्धि के स्वामी (Lord of Riches and Prosperity) जिस प्रकार इंद्र वर्षा प्रदान करते हैं जो फसलों का पोषण करती है और प्रचुरता लाती है, उसी प्रकार कालभैरव, मघवते के रूप में, सभी जीविका और समृद्धि के अंतिम स्रोत हैं। वे ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखकर दुनिया के कल्याण को सुनिश्चित करते हैं, जिससे जीवन का विकास होता है। वे भौतिक और आध्यात्मिक दोनों तरह के सभी प्रकार के धन के स्वामी हैं, और उन्हें उन लोगों को प्रदान करते हैं जो भक्ति के साथ उनकी पूजा करते हैं।

यह नाम इस बात पर जोर देता है कि कालभैरव के भयावह मुखौटे के नीचे एक गहन परोपकारिता छिपी है, जो उन्हें वास्तव में एक सर्वव्यापी देवता बनाती है जो अपने भक्तों को चुनौती भी देते हैं और उनका पोषण भी करते हैं।

496. अमिताय

जो अमित, असीम और अनंत हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : अमित (अमित) नाम संस्कृत मूल "मि" (मि) से लिया गया है, जिसका अर्थ है मापना, सीमित या परिबद्ध होना। "अ" (अ) उपसर्ग इसे नकारता है, जिससे "अमित" बनता है, जिसका अर्थ है अप्रमेय, असीम, अनंत, असीमित, अविनाशी, अंतहीन या अथाह। यह नाम भगवान कालभैरव के ब्रह्म के रूप में, परम वास्तविकता के रूप में, उनके आवश्यक स्वरूप का गहन वर्णन करता है।

अप्रमेय और असीम अमित का अर्थ है कि कालभैरव स्थान, समय और रूप की सभी सीमाओं से परे हैं। निर्मित प्राणियों या वस्तुओं के विपरीत जिनका एक आदि और अंत होता है, एक विशिष्ट आकार होता है, या एक परिभाषित स्थान होता है, कालभैरव सार्वभौमिक रूप से व्याप्त हैं और ऐसी किसी भी बाधा से रहित हैं। उनकी शक्ति, ज्ञान और उपस्थिति अनंत हैं, जो मानवीय मन या किसी भी लौकिक माप से परे हैं।

अनंत और असीमित यह पहलू उनके निरपेक्ष स्वरूप पर जोर देता है। उनके बाहर कुछ भी नहीं है, न ही ऐसा कुछ है जो उन्हें समाहित कर सके। कालभैरव, अमित के रूप में, उस अनंत आधार का प्रतिनिधित्व करते हैं जिस पर समस्त सृष्टि, पालन और संहार होता है। वह परम वास्तविकता हैं जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है और जिसमें सब कुछ अंततः विलीन हो जाता है, फिर भी वह स्वयं इन प्रक्रियाओं से अछूते रहते हैं।

मानवीय अवधारणा से परे "अमित" शब्द का अर्थ यह भी है कि वह वैचारिक विचार और भाषा की पकड़ से परे हैं। मानवीय संरचनाओं के माध्यम से उन्हें परिभाषित या सीमित करने का कोई भी प्रयास अनिवार्य रूप से अपर्याप्त होगा। वह अनुपमेय (अतुलनीय) और अदृश्य (अनदेखा) सत्य हैं, जिनकी विशालता सभी सीमित समझ को बौना कर देती है।

कालभैरव के संदर्भ में, "अमित" उनकी सर्वोच्चता को एक अप्रतिबंधित और निरपेक्ष वास्तविकता के रूप में स्थापित करता है, जो सभी मापों का स्रोत और अंत हैं, फिर भी स्वयं अप्रमेय और शाश्वत रूप से असीम रहते हैं। यह उनकी परम transcendence (पराकाष्ठा) और omnipresence (सर्वव्यापकता) की पहचान है।

497. मताय

परम् बुद्धि और मार्गदर्शक विचार स्वरूप को नमन।

विस्तार : 'मताये' नाम संस्कृत शब्द 'मति' (मति) से आया है।

सर्वोच्च बुद्धि (Supreme Intelligence) 'मति' मुख्य रूप से 'बुद्धि', 'समझ', 'विचार', 'मन', 'विवेक', 'निर्णय', 'ज्ञान' और 'सर्वोच्च बुद्धि' को दर्शाता है। जब इसे कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह दर्शाता है कि वे परम संज्ञानात्मक शक्ति के अवतार हैं, सभी ज्ञान का स्रोत हैं, और ब्रह्मांड को व्यवस्थित करने वाली ब्रह्मांडीय बुद्धि का मूल ताना-बाना हैं। वे चेतना के उच्चतम रूप का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो शुद्ध, अखंड और सर्वव्यापी है।

मार्गदर्शक विचार और परामर्श (Guiding Thought and Counsel) केवल बुद्धि से परे, 'मति' का अर्थ 'परामर्श', 'सलाह', 'इरादा' और 'संकल्प' भी है। यह पहलू कालभैरव की दिव्य मार्गदर्शक के रूप में भूमिका पर प्रकाश डालता है। वे सभी अच्छे और मार्गदर्शक विचारों के अंतिम स्रोत हैं, जो व्यक्तियों को सही और गलत, सत्य और भ्रम के बीच अंतर करने में मदद करते हैं। एक भक्त के लिए, उन्हें मताये के रूप में पुकारना उनकी दिव्य मार्गदर्शन, जटिल परिस्थितियों में संकल्प और जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक विचारों की स्पष्टता की तलाश करना है। वे सही निर्णय लेने की बुद्धि और धर्म के मार्ग का अनुसरण करने का संकल्प प्रदान करते हैं।

सभी संज्ञान का आधार (Foundation of All Cognition) "जो सर्वोच्च बुद्धि है" के रूप में, कालभैरव ब्रह्मांड में सभी संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के अंतर्निहित मूलभूत सिद्धांत हैं। प्रत्येक विचार, प्रत्येक विचार, प्रत्येक आविष्कार और प्रत्येक वैज्ञानिक खोज अंततः इस सर्वोच्च बुद्धि से उत्पन्न होती है। वे वह चेतना हैं जो सभी प्राणियों की बुद्धि और मन को प्रकाशित करती है।

संक्षेप में, मताये कालभैरव को केवल एक शक्तिशाली देवता के रूप में ही नहीं, बल्कि ज्ञान के सार और सभी के लिए समझ के मार्ग को रोशन करने वाले करुणामय प्रकाश स्तंभ के रूप में भी मनाता है।

498. महाभोगाय

ब्रह्मांडीय अभिव्यक्ति के महान भोक्ता को नमन।

विस्तार : महाभोगाय नाम कालभैरव का एक गहन वर्णन है, जो दो प्रमुख संस्कृत शब्दों से बना है: "महा" (महान) और "भोग" (आनंद, अनुभव या उपभोग)। यह उस एक को संदर्भित करता है जो बड़े पैमाने पर संपूर्ण ब्रह्मांडीय अभिव्यक्ति का अनुभव और उपभोग करता है।

ब्रह्मांडीय अनुभवकर्ता (Cosmic Experiencer) "भोग" अपने आध्यात्मिक अर्थ में सांसारिक भोग को नहीं दर्शाता है, बल्कि सभी सृष्टि के दिव्य अनुभव और आत्मसात्करण को दर्शाता है। महाभोग के रूप में, कालभैरव ब्रह्मांड के परम पारखी हैं। वह अस्तित्व के हर पहलू - सृजन, संरक्षण और विघटन - को अपनी दिव्य लीला के रूप में देखते हैं, व्याप्त करते हैं और उसका आनंद लेते हैं। ब्रह्मांड में कुछ भी उनके अनुभव या अधिकार क्षेत्र से बाहर नहीं है।

अतींद्रियता और अंतर्व्यापकता (Transcendence and Immanence) यह नाम उनकी अतींद्रिय और अंतर्व्यापक दोनों भूमिकाओं पर प्रकाश डालता है। वह सभी घटनाओं से परे हैं, फिर भी प्रकट दुनिया के हर विवरण में गहराई से शामिल हैं और उसका अनुभव कर रहे हैं। उनका आनंद बाहरी वस्तुओं पर निर्भर नहीं करता है, बल्कि उनकी अंतर्निहित संप्रभुता और चेतना से उत्पन्न होता है। वह परम विषय हैं, जिनके लिए संपूर्ण ब्रह्मांड उनकी दिव्य चेतना और आनंद का विषय है।

संहारक और भोक्ता (The Destroyer and The Enjoyer) विरोधाभासी रूप से, कालभैरव के रूप में, वह महान संहारक (काल) भी हैं। प्रलय (ब्रह्मांडीय विघटन) के दौरान ब्रह्मांड का यह "उपभोग" भी "भोग" का एक रूप है - सब कुछ को स्वयं में उपभोग करने और पुनः अवशोषित करने का अंतिम कार्य, केवल इसे फिर से प्रकट करने के लिए। सृजन और विनाश का यह चक्र ही उनके दिव्य आनंद का स्रोत बन जाता है।

पूर्णता का अवतार (Embodiment of Fulfilment) भक्त के लिए, महाभोगाय पर ध्यान करने का अर्थ है कि सभी सुख और अनुभव अंततः दिव्य से उत्पन्न होते हैं और उसमें समाप्त होते हैं। यह बताता है कि सच्चा आनंद सभी संवेदी और अनुभवात्मक घटनाओं में दिव्य उपस्थिति को पहचानने में निहित है। वह परम पूर्णता और संतुष्टि का प्रतीक हैं, स्वयं में पूर्ण होते हुए भी, संपूर्ण अस्तित्व के साथ संलग्न रहते हैं।

499. अमृताय

जो अमर हैं और अनंत काल के दिव्य अमृत स्वरूप हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : अमृताय नाम कालभैरव को अमृत के रूप में संबोधित करता है, जो हिंदू दर्शन और पौराणिक कथाओं में निहित एक गहरा शब्द है।

अमर (मृत्युहीन) (The Immortal (Deathless)) अमृत (अमृत) का शाब्दिक और सबसे मौलिक अर्थ "अमरता" या "मृत्युहीनता" है (अ- "नहीं" और मृत "मृत" से)। कालभैरव, काल के स्वामी (काल) के रूप में, स्वयं समय से परे हैं, और इस प्रकार, मृत्यु से भी परे हैं। वह परम, आदिम सत्ता

हैं जो भौतिक ब्रह्मांड को नियंत्रित करने वाले जन्म और मृत्यु के चक्रों से परे मौजूद हैं। उनकी अमरता उनके शाश्वत स्वरूप, उनकी अपरिवर्तनीयता और सृष्टि और विघटन से पहले और परे उनके अस्तित्व को दर्शाती है।

दिव्य अमृत (The Divine Nectar) अमृत को प्रसिद्ध रूप से दिव्य अमृत, "अमरता का अमृत" या "देवताओं का पेय" के रूप में जाना जाता है, जो समुद्र मंथन (ब्रह्मांडीय महासागर के मंथन) के दौरान देवों (देवताओं) और असुरों (राक्षसों) द्वारा निकला था। अमृत का सेवन करने से शाश्वत जीवन और क्षय से मुक्ति मिलती है। कालभैरव को अमृत के रूप में संबोधित करने का अर्थ है कि वह इस दिव्य अमृत का सार हैं, वह स्रोत जिससे सच्ची अमरता उत्पन्न होती है। भक्तों के लिए, उनकी कृपा प्राप्त करना इस आध्यात्मिक अमृत का सेवन करने के समान है, जिससे पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति (मोक्ष) मिलती है।

शाश्वत आनंद और मुक्ति का स्रोत (Source of Eternal Bliss and Liberation) शाब्दिक अमरता से परे, अमृत शाश्वत आनंद, दिव्य चेतना और मुक्ति का भी प्रतीक है। कालभैरव, अमृत होने के नाते, इन आध्यात्मिक अवस्थाओं के परम प्रदाता हैं। श्रद्धा और भक्ति के साथ उनके पास जाने से साधकों को दिव्य ऊर्जा के इस अंतहीन भंडार में प्रवेश करने, सांसारिक अस्तित्व से परे जाने और स्वयं की मृत्युहीन, अपरिवर्तनीय वास्तविकता का अनुभव करने की अनुमति मिलती है। वह दिव्य सिद्धांत हैं जो अपने उच्चतम आध्यात्मिक अर्थों में जीवन को बनाए रखते हैं।

500. मन्त्राय

जो पवित्र सूत्र, दिव्य मंत्र के साकार रूप हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : मन्त्राय नाम कालभैरव को सभी पवित्र मंत्रों और दिव्य उच्चारणों के सार और रूप के रूप में दर्शाता है।

पवित्र ध्वनि एक मंत्र एक शक्तिशाली ध्वनि, शब्द या वाक्यांश है, जो अक्सर संस्कृत में होता है, जिसे आध्यात्मिक शक्ति से संपन्न किया जाता है। यह केवल भाषण या प्रार्थना नहीं है, बल्कि एक "मन का उपकरण" (मन - सोचना, त्र - उपकरण) है, जो एकाग्रता और भक्ति के साथ जपने पर, अभ्यासकर्ता और पर्यावरण पर परिवर्तनकारी प्रभाव डाल सकता है।

दिव्य ध्वनि का अवतार जब कालभैरव को मन्त्राय कहा जाता है, तो यह दर्शाता है कि उन्हें केवल मंत्रों के माध्यम से ही नहीं बुलाया जाता है, बल्कि वे स्वयं मंत्र के अवतार, जीवित रूप हैं। वे परम, आदिम ध्वनि (नाद) हैं जिससे अन्य सभी ध्वनियाँ और मंत्र उत्पन्न होते हैं। इसका तात्पर्य है कि उन पर ध्यान करना सभी मंत्रों में सबसे शक्तिशाली का जप करने के बराबर है।

सभी मंत्रों का स्रोत वे सभी पवित्र सूत्रों, भजनों और आध्यात्मिक स्पंदनों के स्रोत और मूल हैं। जिस प्रकार ब्रह्मांड को ब्रह्मांडीय ध्वनि "ॐ" (प्रणव) से उत्पन्न हुआ कहा जाता है, कालभैरव, मन्त्राय के रूप में, इस मौलिक रचनात्मक और स्थायी ब्रह्मांडीय कंपन का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनका रूप इस परम कंपनशील वास्तविकता का एक दृश्य है।

परिवर्तन और मुक्ति दिव्य मंत्र के रूप में, उनके पास शुद्ध करने, रक्षा करने और मुक्त करने की शक्ति है। उनके नाम का जप करना या मन्त्राय के रूप में उन पर ध्यान करना मन की अशुद्धियों को दूर करने, नकारात्मक कर्मों को नष्ट करने और अंततः आध्यात्मिक ज्ञान (मोक्ष) की ओर ले जाने वाला माना जाता है। वे भौतिक दुनिया की सीमाओं को पार करने और दिव्य से जुड़ने के लिए ध्वनि की शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

501. मङ्गलाय

जो सभी शुभ और सौभाग्यशाली के सार हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : मङ्गलाय नाम संस्कृत शब्द 'मङ्गल' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "शुभता," "सौभाग्य," "पवित्रता," और "कल्याण।" यह उन सभी का सार व्यक्त करता है जो स्वाभाविक रूप से सकारात्मक और लाभकारी हैं।

शुभता का प्रतीक मङ्गलाय के रूप में, कालभैरव केवल शुभता से जुड़े नहीं हैं, बल्कि यह उसका साक्षात् स्वरूप हैं। वह मूलभूत स्रोत हैं जहाँ से सभी अच्छी चीजें, समृद्धि, आध्यात्मिक आशीर्वाद और सकारात्मक ब्रह्मांडीय ऊर्जाएँ उत्पन्न होती हैं। ऐसे ब्रह्मांड में जहाँ रचनात्मक और विनाशकारी दोनों शक्तियाँ काम करती हैं, वह दिव्य के उस पहलू का प्रतिनिधित्व करते हैं जो पूरी तरह से कल्याण उत्पन्न करने और प्रदान करने पर केंद्रित है।

अशुभता का नाश करने वाले मङ्गलाय की उपस्थिति स्वचालित रूप से सभी प्रकार की अशुभता (अमंगल) को दूर करती है। इसमें बाधाओं को दूर करना, दुर्भाग्य को टालना, नकारात्मक ऊर्जाओं को समाप्त करना और वातावरण को शुद्ध करना शामिल है। वह भक्तों के लिए शांति, सफलता और आध्यात्मिक विकास का अनुभव करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। उनके उग्र पहलू को, जब भक्ति के साथ आह्वान किया जाता है, तो भक्त को उनके कल्याण में बाधा डालने वाली किसी भी चीज़ से उग्र रूप से बचाने वाला देखा जा सकता है।

सौभाग्य प्रदान करने वाले यह नाम सौभाग्य और समृद्धि प्रदान करने वाले के रूप में उनकी भूमिका को भी दर्शाता है। मङ्गलाय के प्रति भक्ति से ऐसे आशीर्वाद आकर्षित होते हैं जो भौतिक सुख, आध्यात्मिक समृद्धि और समग्र संतुष्टि की ओर ले जाते हैं। वह सुनिश्चित करते हैं कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था सभी प्राणियों के कल्याण में योगदान दे।

पवित्रता और दिव्यता शुभता से जुड़ी पवित्रता है। मङ्गलाय परम पवित्रता का प्रतिनिधित्व करते हैं, दोनों अनुष्ठानिक और आध्यात्मिक रूप से। वह अपने भक्तों के मन और हृदय को शुद्ध करते हैं, उन्हें चेतना और आध्यात्मिक प्राप्ति की उच्च अवस्थाओं के लिए तैयार करते हैं।

502. मङ्गलप्रियाय

सभी शुभ और मंगलकारी वस्तुओं के प्रिय (या सभी मंगल कार्यों से प्रेम करने वाले) को नमन।

विस्तार : मङ्गलप्रियाय नाम संस्कृत के शब्दों मङ्गल (Maṅgala) और प्रिय (Priya) का एक यौगिक है।

मङ्गल (Maṅgala): मङ्गल का अर्थ है "शुभ", "भाग्यशाली", "समृद्ध", "लाभकारी", या "कल्याण"। यह उन सभी सकारात्मक, शुद्ध और अच्छी किस्मत तथा आध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जाने वाली चीजों को दर्शाता है। हिंदू परंपरा में, मङ्गल एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवधारणा है, जो सभी अनुष्ठानों, आरंभों और महत्वपूर्ण घटनाओं में व्याप्त है। यह दिव्य कृपा का वह गुण है जो सकारात्मक परिणाम लाता है और नकारात्मकता को समाप्त करता है।

प्रिय (Priya): प्रिय का अर्थ है "प्यारा", "प्रिय", "का शौकीन", "मनभावन", या "द्वारा प्रिय"। यह स्नेह, पक्षपात और पसंद को दर्शाता है।

शुभता के प्रिय इस प्रकार, मङ्गलप्रियाय का अर्थ है वह जो स्वाभाविक रूप से सभी शुभ चीजों के प्रति आकर्षित होते हैं, उनसे प्रसन्न होते हैं और उनमें आनंद लेते हैं। इसका अर्थ है कि भगवान कालभैरव, इस पहलू में, सत्य, पवित्रता और कल्याण तथा आध्यात्मिक विकास की ओर ले जाने वाले कार्यों की सराहना करते हैं और उन्हें बढ़ावा देते हैं। वे शुभता के स्रोत और साक्षात स्वरूप हैं।

शुभता के प्रदाता यह नाम यह भी दर्शाता है कि उन्हें प्रसन्न करने से शुभता का आह्वान होता है। मङ्गलप्रियाय की भक्ति बाधाओं को दूर करती है, दुर्भाग्य को समाप्त करती है और आशीर्वाद को आकर्षित करती है। वे सुनिश्चित करते हैं कि धार्मिक कार्य फलदायी हों और उनके भक्तों के लिए सद्भाव और समृद्धि बनी रहे। एक ऐसे देवता के लिए जो अक्सर विनाश और आतंक से जुड़े होते हैं, यह नाम उनके परोपकारी और संरक्षक पहलू को प्रकट करता है, यह दर्शाता है कि अपने उग्र रूप में भी, उनका अंतिम उद्देश्य ब्रह्मांड और उसके प्राणियों के कल्याण और शुभता के लिए है।

दिव्य कृपा का प्रतीक मङ्गलप्रियाय कालभैरव की भूमिका को एक दिव्य उपस्थिति के रूप में उजागर करता है जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था का पक्षधर है और उसे बनाए रखता है, यह सुनिश्चित करता है कि धर्म (धार्मिकता) के अनुरूप सभी कार्यों को सफलता और कल्याण प्राप्त हो। वे सृष्टि में सभी अच्छी और लाभकारी चीजों के संरक्षक हैं।

५०३. अमोघदण्डाय

जिनकी दण्ड-नीति अचूक और निर्भ्रान्त है, उन (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : अमोघदण्डाय नाम दिव्य के लिए एक गहरा विशेषण है, जो दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों से बना है: अमोघ और दण्ड।

अमोघ: यह शब्द "अचूक," "अकाट्य," "कभी न चूकने वाला," "प्रभावी," या "फलदायक" को दर्शाता है। यह पूर्ण सटीकता, निश्चितता और ऐसे परिणाम को इंगित करता है जिससे विचलित होना या बचना असंभव है।

दण्ड: शाब्दिक अर्थ "छड़ी" या "लाठी" है, दण्ड प्रतीकात्मक रूप से "दंड," "न्याय," "शासन," या "कानून" का प्रतिनिधित्व करता है। आध्यात्मिक संदर्भ में, यह दिव्य उपकरण या शक्ति को दर्शाता है जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था और नैतिक शुद्धता को लागू करती है।

न्याय का अचूक वितरक अमोघदण्ड के रूप में, कालभैरव पूर्ण ब्रह्मांडीय न्याय के सिद्धांत का प्रतीक हैं। उनका "दण्ड" या "दंड" मनमाना या त्रुटि के अधीन नहीं है; यह सटीक, अपरिहार्य और प्राणियों के कर्मों के अनुपात में पूर्ण है। अमोघदण्ड द्वारा दिए गए कर्मों के परिणामों से कोई बच नहीं सकता। यह पहलू हिंदू दर्शन में कर्म के मूलभूत सिद्धांत को रेखांकित करता है: प्रत्येक क्रिया, अच्छी या बुरी, बिना किसी असफलता के अपना उचित फल देगी।

अकाट्य कानून और व्यवस्था यह नाम धर्म (धार्मिकता और ब्रह्मांडीय कानून) के सर्वोच्च प्रवर्तक के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। जिस प्रकार एक सांसारिक शासक दण्ड से व्यवस्था बनाए रखता है, उसी प्रकार कालभैरव, अमोघदण्ड के रूप में, यह सुनिश्चित करते हैं कि सार्वभौमिक नैतिक और नैतिक ढांचा बिना किसी विचलन के कायम रहे। उनका शासन पूर्ण है, और उनके आदेश अटूट हैं।

आध्यात्मिक शोधक और मार्गदर्शक जबकि "दंड" कठोर लग सकता है, आध्यात्मिक संदर्भ में, इसे दिव्य सुधार के एक रूप के रूप में भी देखा जा सकता है। कर्मों का अचूक परिणाम एक शक्तिशाली शिक्षक के रूप में कार्य करता है, आत्माओं को धार्मिकता और आध्यात्मिक विकास की ओर मार्गदर्शन करता है। यह आवश्यक अनुभवों को लाकर शुद्ध करता है जो ज्ञान और मुक्ति की ओर ले जाते हैं। इस प्रकार, अमोघदण्ड केवल एक दंड देने वाले नहीं हैं, बल्कि एक अंततः परोपकारी शक्ति हैं जो सृष्टि को उसके सही मार्ग पर ले जाती है।

अपरिहार्य का भय यह गुण धर्म के मार्ग से विचलित होने वालों में श्रद्धा और भय (सकारात्मक, विस्मयकारी अर्थ में) की भावना पैदा करता है, उन्हें दिव्य न्याय की अपरिहार्य प्रकृति की याद दिलाता है। धार्मिक लोगों के लिए, यह आश्वासन प्रदान करता है कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनी रहेगी

और अन्याय अनसुलझा नहीं रहेगा।

504. मध्यस्थाय

जो निष्पक्ष, तटस्थ और सभी चीजों के केंद्र में स्थित हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : मध्यस्थ (मध्यस्थाय) नाम संस्कृत के 'मध्य' और 'स्थ' शब्दों से लिया गया है।

मध्य: इस शब्द का अर्थ है "बीच", "केंद्र", "निष्पक्ष", "तटस्थ" या "मध्यवर्ती"। यह संतुलन और साम्य की स्थिति को दर्शाता है।

स्थ: इसका अर्थ है "खड़ा होना", "स्थित होना" या "विद्यमान होना"।

निष्पक्ष न्यायाधीश और साक्षी मध्यस्थ के रूप में, भगवान कालभैरव पूर्ण निष्पक्षता और तटस्थता का प्रतीक हैं। वे सभी ब्रह्मांडीय घटनाओं के केंद्र में खड़े होकर, बिना किसी पूर्वाग्रह, पक्षपात या आसक्ति के अवलोकन करते हैं। यह कर्म के अंतिम न्यायाधीश के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है, जहाँ उनके निर्णय विशुद्ध रूप से धर्म पर आधारित होते हैं, न कि भावनात्मक भागीदारी या व्यक्तिगत पसंद पर। वे ब्रह्मांडीय साक्षी (साक्षी) हैं, जो हमेशा उपस्थित, हमेशा जागरूक, फिर भी हमेशा अनासक्त रहते हैं।

अस्तित्व का केंद्र "सभी चीजों के केंद्र में खड़े होना" न केवल उनकी तटस्थता को संदर्भित करता है, बल्कि ब्रह्मांड के मूल या धुरी के रूप में उनकी मौलिक स्थिति को भी दर्शाता है। वे वह केंद्र बिंदु हैं जिसके चारों ओर समस्त सृष्टि, पालन और संहार घूमते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि वे अस्तित्व का अंतर्निहित सिद्धांत या आधार हैं जो सभी घटनाओं को सहारा देता है और उनमें व्याप्त है। वे केवल बीच में ही नहीं हैं, बल्कि 'स्वयं' मध्य हैं, ब्रह्मांडीय नृत्य का अचल केंद्र हैं।

संतुलनकारी शक्ति कालभैरव के रूप में, मध्यस्थ होने का अर्थ ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने में उनका पूर्ण संतुलन है। वे सृष्टि और विनाश, अच्छे और बुरे, प्रकाश और अंधकार की शक्तियों को संतुलित करते हैं। उनकी केंद्रीय स्थिति सार्वभौमिक लय के सामंजस्यपूर्ण प्रवाह को सुनिश्चित करती है। वे पूर्ण संतुलन की स्थिति का प्रतिनिधित्व करते हैं, न तो एक चरम की ओर झुकते हैं और न ही दूसरे की ओर, इस प्रकार ब्रह्मांड में न्याय और व्यवस्था सुनिश्चित करते हैं।

आध्यात्मिक महत्व आध्यात्मिक साधक के लिए, कालभैरव को मध्यस्थ के रूप में पहचानना आंतरिक निष्पक्षता और द्वंद्वों से अनासक्ति के विकास को प्रोत्साहित करता है। इसका अर्थ है विपरीत युग्मों (द्वंद्व) से परे जाना और अपनी चेतना के शांत केंद्र को खोजना, ठीक वैसे ही जैसे घूमते हुए पहिये का अचल धुरा होता है।

505. महेशाय

महान प्रभु, सर्वोच्च संप्रभु को नमन।

विस्तार : महेशाय (महेश) नाम भगवान शिव के लिए एक गहरा और सामान्य विशेषण है, जो "महान भगवान" या "सर्वोच्च संप्रभु" के रूप में उनकी सर्वोच्च स्थिति को दर्शाता है। यह संस्कृत शब्दों महा (महान) और ईश (भगवान, शासक, स्वामी) से लिया गया है।

महान भगवान महेश स्पष्ट रूप से शिव की स्थिति को ब्रह्मांड में सर्वोपरि देवता, परम शक्ति के रूप में स्थापित करता है। वह केवल एक भगवान नहीं हैं, बल्कि महान भगवान हैं, जो शक्ति, ज्ञान और ब्रह्मांडीय कार्य में अन्य सभी देवताओं और संस्थाओं से परे हैं। यह उपाधि ब्रह्मांड के पूर्ण शासक और नियंत्रक के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देती है।

सर्वोच्च संप्रभु सर्वोच्च संप्रभु के रूप में, महेश सभी सृष्टि, संरक्षण और संहार पर उनके निर्विवाद अधिकार और प्रभुत्व को दर्शाता है। वह समय (काल) के स्वामी, नियति के नियंत्रक और वह स्रोत हैं जिससे अन्य सभी दिव्य अभिव्यक्तियाँ और ब्रह्मांडीय नियम उत्पन्न होते हैं। इसका तात्पर्य एक

ऐसी संप्रभुता से है जो पूर्ण और अंतर्निहित है, न कि प्रत्यायोजित या अधिग्रहित।

अतींद्रियता और अंतर्निहितता महेश की अवधारणा शिव के अतींद्रिय और अंतर्निहित दोनों पहलुओं को खूबसूरती से समाहित करती है। वह अतींद्रिय हैं, भौतिक दुनिया की सीमाओं से परे विद्यमान हैं, इसके उतार-चढ़ाव और द्वंद्वों से अछूते हैं। फिर भी, वह अंतर्निहित भी हैं, अस्तित्व के हर परमाणु में व्याप्त हैं, सभी प्राणियों के भीतर अंतर्निहित चेतना और सूक्ष्म जीवन शक्ति के रूप में कार्य करते हैं।

दार्शनिक महत्व शैव सिद्धांत और शैव धर्म की अन्य शाखाओं में, महेश को अक्सर शिव की उस अभिव्यक्ति से जोड़ा जाता है जो पाँच दिव्य कार्यों (पंचकृत्य) के लिए जिम्मेदार है: सृष्टि (निर्माण), स्थिति (संरक्षण), संहार (विनाश), तिरोभाव (छिपाना/अस्पष्टता), और अनुग्रह (कृपा/मुक्ति)। इस प्रकार यह नाम इन ब्रह्मांडीय कार्यों पर उनके व्यापक प्रभुत्व को स्वीकार करता है। महेश को प्रणाम करना इस परम, सर्व-समावेशी दिव्य अधिकार को पहचानने और उसके प्रति समर्पण करने का एक कार्य है।

506. अमोघविक्रमाय

जिनकी वीरता और पराक्रम अचूक और अदम्य हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : अमोघविक्रम नाम एक संयुक्त संस्कृत शब्द है जो कालभैरव के एक प्रमुख गुण का सुंदर वर्णन करता है।

अमोघ (Amogha): इस उपसर्ग का अर्थ है "अचूक," "अमोघ," "अचूक," या "कभी विफल न होने वाला।" यह पूर्ण निश्चितता, सफलता और प्रभावशीलता को दर्शाता है। जब इसे शक्ति या क्रिया पर लागू किया जाता है, तो यह इंगित करता है कि विफलता या बर्बादी की कोई संभावना नहीं है; प्रत्येक प्रयास अपना इच्छित परिणाम देता है।

विक्रम (Vikrama): इस शब्द का अर्थ है "शौर्य," "पराक्रम," "शक्ति," "साहस," "बल," या "राजसी चाल।" यह वीर ऊर्जा, सैन्य शक्ति और महान कार्यों को जीतने या प्राप्त करने की क्षमता को दर्शाता है।

अचूक शौर्य और शक्ति (Unfailing Valor and Power) जब संयुक्त किया जाता है, तो अमोघविक्रम एक ऐसे प्राणी का वर्णन करता है जिसका शौर्य और पराक्रम पूर्णतः अचूक और अजेय है। इसका अर्थ है कि कालभैरव के कार्य, उनकी शक्ति और उनका साहस कभी व्यर्थ नहीं जाते। उनकी शक्ति का प्रत्येक प्रदर्शन, उनकी इच्छा का प्रत्येक कार्य, पूर्ण निश्चितता के साथ और बिना किसी बाधा के अपना उद्देश्य प्राप्त करता है।

परम विजेता (Ultimate Conqueror) यह गुण सभी शक्तियों पर उनके सर्वोच्च अधिकार को उजागर करता है, जिसमें समय, मृत्यु और सभी नकारात्मक ऊर्जाएं शामिल हैं। परम विजेता के रूप में, वह किसी भी बाधा को दूर कर सकते हैं, किसी भी शत्रु को परास्त कर सकते हैं, और यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनी रहे। उनकी शक्ति केवल शारीरिक नहीं है; यह आध्यात्मिक और आध्यात्मिक है, जो उन्हें ब्रह्मांड में किसी भी शक्ति द्वारा अजेय बनाती है।

दिव्य प्रभावकारिता का प्रतीक (Symbol of Divine Efficacy) भक्तों के लिए, अमोघविक्रम का अर्थ है कि कालभैरव पूर्ण और अटूट सुरक्षा प्रदान करते हैं। जब कोई उनमें शरण लेता है, तो उनकी दिव्य शक्ति बाधाओं को दूर करने, शत्रुओं (बाहरी और आंतरिक दोनों) पर विजय प्राप्त करने और भक्त के कल्याण और आध्यात्मिक प्रगति को सुनिश्चित करने के लिए अचूक रूप से कार्य करती है। यह दिव्य प्रभावकारिता और सत्य और धार्मिकता की अंतिम विजय की याद दिलाता है, जिसका वे प्रतीक हैं।

507. अमेयाय

जो अप्रमेय, अज्ञेय और सभी अनुमान से परे हैं, उनको नमन।

विस्तार : अमेयाय (Ameyaaya) नाम संस्कृत मूल से लिया गया है, जिसका अर्थ है अगाध गहराई और पराकाष्ठा। यह एक ऐसे परम सत्ता की ओर संकेत करता है जो सभी मानवीय समझ, माप और वर्गीकरण को धता बताता है।

अप्रमेय (मात्रा और दायरे से परे) अमेय का शाब्दिक अर्थ है "अप्रमेय," "असीम," या "असीमित।" यह देवता के भौतिक और आध्यात्मिक दोनों आयामों को संदर्भित करता है। ब्रह्मांडीय अर्थ में, कालभैरव की शक्ति, रूप और विस्तार को मानवीय धारणा या उपकरणों द्वारा मापा या सीमित नहीं किया जा सकता है। वह अनंत हैं और बिना किसी बंधन के संपूर्ण सृष्टि में व्याप्त हैं। आध्यात्मिक रूप से, उनकी कृपा, ज्ञान और करुणा भी अप्रमेय हैं।

अज्ञेय (बुद्धि और अवधारणा से परे) अप्रमेय होने का अर्थ है पारंपरिक अर्थ में अज्ञेय होना। मानवीय बुद्धि, अपनी अंतर्निहित सीमाओं के साथ, कालभैरव के वास्तविक स्वरूप को पूरी तरह से समझ नहीं सकती है। वह सभी द्वंद्वों, वर्णनों और वैचारिक ढाँचों से परे हैं। उन्हें परिभाषित करने का कोई भी प्रयास अपर्याप्त है, क्योंकि वह मौखिक अभिव्यक्ति और मानसिक समझ के दायरे से परे हैं। यह अज्ञेयता कोई कमी नहीं है, बल्कि उनकी परम श्रेष्ठता और पराकाष्ठा का प्रतीक है।

सभी अनुमानों से परे (निर्णय और सीमा से परे) अमेय का अर्थ "सभी अनुमानों से परे" या "अमूल्य" भी है। यह दर्शाता है कि उनके मूल्य, शक्ति और अस्तित्व को किसी भी मानवीय मानकों या मूल्यों द्वारा आंका या सीमित नहीं किया जा सकता है। वह वास्तविकता के एक अलग तल पर कार्य करते हैं, जहाँ कारण और प्रभाव, समय और स्थान के सामान्य नियम उनके वास्तविक सार पर लागू नहीं होते हैं। यह पहलू परम वास्तविकता के रूप में उनकी भूमिका को पुष्ट करता है, वह जो सभी का स्रोत है और फिर भी सभी से परे है।

दार्शनिक महत्व अद्वैत वेदांत में, यह गुण ब्रह्म की अवधारणा के साथ प्रतिध्वनित होता है, जो परम वास्तविकता है जो सगुण (गुणों के साथ) और निर्गुण (गुणों के बिना) है। कालभैरव, अमेय के रूप में, इस निर्गुण पहलू का प्रतिनिधित्व करते हैं - निराकार, निर्गुण और अज्ञेय परम सत्य जो सभी अस्तित्व का आधार है। भक्त के लिए, अमेय पर ध्यान करने से यह बोध होता है कि दिव्य किसी भी रूप या नाम से सीमित नहीं है, बल्कि सभी का अंतर्निहित सार है।

508. अरिष्टमथनाय

सभी आपदाओं और दुर्भाग्य के महान संहारक और विनाशक (अरिष्टमथन) को नमन।

विस्तार : अरिष्टमथना (अरिष्ट-मथना) नाम 'अरिष्ट' और 'मथना' से बना एक यौगिक पद है, जो विशेष रूप से प्रतिकूलता पर कालभैरव की गहन शक्ति पर प्रकाश डालता है।

अरिष्ट: यह संस्कृत शब्द सभी प्रकार की आपदा, दुर्भाग्य, संकट, अपशकुन, प्रतिकूलता, पीड़ा और हानि को संदर्भित करता है। यह किसी भी ऐसी चीज़ को दर्शाता है जो शारीरिक, मानसिक या पर्यावरणीय रूप से कल्याण और आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डालती है। व्यापक अर्थ में, यह आसन्न खतरों या बुराई को भी इंगित कर सकता है।

मथना: यह 'मथ' मूल से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है "मंथन करना," "आंदोलित करना," "कुचलना," "नष्ट करना," या "जोर से रगड़ना।" जब किसी नकारात्मक चीज़ को नष्ट करने के संदर्भ में उपयोग किया जाता है, तो इसका तात्पर्य कोमल हटाने के बजाय पूर्ण और ज़ोरदार विनाश से है।

आपदाओं का महान संहारक अरिष्टमथना के रूप में, कालभैरव को सभी बुराइयों और दुर्भाग्य के अथक और पूर्ण संहारक के रूप में चित्रित किया गया है। उनकी शक्ति केवल पीड़ा को कम करना नहीं है, बल्कि आपदा की जड़ों को पूरी तरह से कुचलना और मिटाना है। यह विनाशकारी पहलू उनके भक्तों के दृष्टिकोण से एक परोपकारी है, क्योंकि यह शांति, समृद्धि और आध्यात्मिक विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। वह किसी भी शक्ति का सामना करते हैं और उसे परास्त करते हैं जो उनके भक्तों को नुकसान पहुँचाना चाहती है या ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बाधित करना चाहती है।

मंथन की प्रतीकात्मक क्रिया 'मथना' शब्द मंथन की कल्पना को भी जगाता है, जो समुद्र मंथन (ब्रह्मांडीय महासागर का मंथन) के समान है। इस संदर्भ में, कालभैरव पीड़ा और प्रतिकूलता के सागर को "मंथन" करके या आंदोलित करके राहत और शुद्धि लाते हैं। वह बाधाओं पर ज़ोरदार कार्रवाई करते हैं, उनकी पकड़ तोड़ते हैं और उन्हें शक्तिहीन कर देते हैं।

रक्षक और मुक्तिदाता यह नाम उनकी सर्वोच्च रक्षक की भूमिका को रेखांकित करता है। भक्त खतरों को दूर करने, बाधाओं को दूर करने और कर्म संबंधी बाधाओं को समाप्त करने के लिए अरिष्टमथना से प्रार्थना करते हैं। वह वही हैं जो प्राणियों को दुर्भाग्य की पकड़ से मुक्त करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि धर्म और आध्यात्मिक विकास का मार्ग अबाधित रहे। उनकी उग्रता यहाँ उन सभी चीज़ों के खिलाफ एक ढाल है जो हानिकारक हैं।

509. मुकुंदाय

मोक्ष और परम स्वतंत्रता के प्रदाता (मुक्ति) को नमन।

विस्तार : मुकुंद नाम एक गहरा और प्राचीन विशेषण है, जो विशेष रूप से भगवान विष्णु से जुड़ा है, लेकिन भगवान शिव पर, विशेष रूप से उनके भैरव स्वरूप में, इसका अनुप्रयोग इसके अर्थ को महत्वपूर्ण रूप से गहरा करता है। यह संस्कृत शब्दों "मुक्" (या "मुच्") से लिया गया है, जिसका अर्थ है "मुक्त करना" या "रिहा करना," और "दा," जिसका अर्थ है "देने वाला।"

मुक्ति का दाता (मुक्ति) मुकुंद का प्राथमिक अर्थ "मुक्ति का दाता" या "मोक्ष का प्रदाता" है। हिंदू दर्शन में, मुक्ति, या मोक्ष, परम आध्यात्मिक लक्ष्य है: जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म (संसार) के चक्र से मुक्ति, और पूर्ण स्वतंत्रता और ईश्वर के साथ मिलन की प्राप्ति। कालभैरव को मुकुंद के रूप में संबोधित करके, हम इस परम आध्यात्मिक मुक्ति को प्रदान करने की उनकी सर्वोच्च शक्ति को स्वीकार करते हैं। वह अज्ञान (अविद्या) और आसक्ति (मोह) के विनाश के माध्यम से इसे प्राप्त करते हैं, जो दुख और बंधन के मूल कारण हैं।

द्वैत का विनाशक भैरव के लिए, मुक्ति प्रदान करना अक्सर अहंकार और भौतिक दुनिया के भ्रम के साथ एक भयंकर और सीधा टकराव होता है। वह वह है जो कर्म और द्वैत की गांठों को काटता है, स्वयं के सच्चे, असीमित स्वरूप को प्रकट करता है। उनका भयानक रूप एक तीव्र और निर्णायक शक्ति के रूप में देखा जा सकता है जो हमारी पूर्वकल्पित धारणाओं और आसक्तियों को तोड़ता है, इस प्रकार हमें अपने स्वयं के दिमाग की स्व-निर्मित जेलों से मुक्त करता है।

परम स्वतंत्रता केवल मुक्ति से परे, मुकुंद परम स्वतंत्रता प्रदान करने का प्रतीक है - शाश्वत शांति, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और अद्वैत की स्थिति। यह स्वतंत्रता केवल बाहरी बाधाओं से ही नहीं, बल्कि आंतरिक सीमाओं, भय और व्यक्तिगत पृथक अस्तित्व की अवधारणा से भी है। भैरव को मुकुंद के रूप में आत्मसमर्पण करके, भक्त न केवल सुरक्षा और सांसारिक वरदान चाहते हैं, बल्कि उच्चतम आध्यात्मिक प्राप्ति और सभी प्रकार के दुखों से मुक्ति भी चाहते हैं। वह साधक को सच्ची आत्मज्ञान की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

510. सर्वपापघ्ने

सभी पापों और उनके प्रभावों का नाश करने वाले परमेश्वर को नमन।

विस्तार : सर्वपापघ्ने (सर्व-पाप-घ्ने) नाम कालभैरव के लिए एक गहरा और सांत्वना देने वाला विशेषण है, जो सभी अपराधों और उनके कर्मिक परिणामों के अंतिम विजेता के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देता है।

• सर्व (Sarva): "सभी" या "पूर्ण" यह उनकी शक्ति की समग्रता को दर्शाता है - वह केवल कुछ पापों को नहीं, बल्कि हर प्रकार के पाप को मिटाते हैं।

• पाप (Pāpa): "पाप," "बुराई," "अवगुण," "अपराध," "नैतिक दोष" सनातन धर्म में, पाप उन कार्यों, विचारों और शब्दों को संदर्भित करता है जो धर्म या ब्रह्मांडीय व्यवस्था के विरुद्ध जाते हैं, जिससे कर्ता के लिए नकारात्मक कर्मिक परिणाम होते हैं। ये छोटे-मोटे उल्लंघनों से लेकर गंभीर अपराधों तक हो सकते हैं। पाप व्यक्ति को जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) में फँसाता है और दुख का कारण बनता है।

• घ्ने (Ghné): "संहारक," "नाशक," "हटाने वाला" यह 'हन' धातु से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है मारना, वध करना या नष्ट करना। इस संदर्भ में, इसका अर्थ केवल पाप का अंत नहीं, बल्कि उसके कर्मिक प्रभावों (फल) का भी विनाश है।

परम शोधक (The Supreme Purifier) कालभैरव, अपनी प्रचंड कृपा के माध्यम से, भक्त को सभी संचित पापों से पूरी तरह शुद्ध करते हैं। पापों का यह विनाश केवल एक क्षमा नहीं है, बल्कि आत्मा का एक गहरा शुद्धिकरण है, जो उसे पिछले कर्मों के बंधनों से मुक्त करता है। वह उन कर्मिक बंधनों को भंग करते हैं जो प्राणियों को दुख और पुनर्जन्म में उलझाए रखते हैं।

न्याय और दया के प्रदाता (Dispenser of Justice and Mercy) जबकि वह एक सख्त ब्रह्मांडीय प्रवर्तक हैं जो गलत कामों के लिए न्याय प्रदान करते हैं, वह उन लोगों के लिए दया और मोक्ष का अंतिम स्रोत भी हैं जो वास्तव में उनके प्रति समर्पण करते हैं। पापों का उनका विनाश पापों द्वारा उत्पन्न बाधाओं को दूर करके मुक्ति (मोक्ष) प्रदान करने की उनकी शक्ति को दर्शाता है। यह शुद्धिकरण आध्यात्मिक प्रगति और दिव्य के साथ गहरे संबंध की अनुमति देता है।

प्रतीकात्मक विनाश (Symbolic Annihilation) "पापों का विनाश" केवल क्षमा नहीं है, बल्कि चेतना का परिवर्तन है। कालभैरव का आह्वान करके, भक्त उन प्रवृत्तियों को पार करने की कोशिश करते हैं जो पाप की ओर ले जाती हैं, जिससे शुद्धता और दिव्य इच्छा के साथ संरेखण की स्थिति प्राप्त होती है। वह व्यक्ति के भीतर अधर्म की जड़ों को ही समाप्त कर देते हैं।

511. मातामहाया

ब्रह्मांड के महान नाना के स्वरूप को नमन।

विस्तार : मातामहाया नाम कालभैरव के लिए एक गहरा और अद्वितीय विशेषण है, जो ब्रह्मांडीय वंश में उनकी आदिम और अति-पूर्वज भूमिका पर जोर देता है। यह संस्कृत शब्द "मातामह" (मातृह) से लिया गया है, जिसका पारंपरिक अर्थ "नाना" (Maternal grandfather) होता है। हालांकि, कालभैरव के संदर्भ में, इसका अर्थ "ब्रह्मांड का महान नाना" के रूप में उनकी परम उत्पत्ति और मूलभूत उपस्थिति को दर्शाने के लिए काफी विस्तृत हो जाता है।

ब्रह्मांडीय वंश और प्रधानता कई भारतीय परंपराओं में, विशेष रूप से तंत्र और पुराणों में, ब्रह्मांड को अक्सर एक माँ (प्रकृति, देवी) और एक पिता (पुरुष, शिव) के रूप में परिकल्पित किया जाता है। कालभैरव को "मातामह" कहकर, यह नाम इंगित करता है कि वह इन प्राथमिक रचनाकारों या

संरक्षकों से भी पहले के हैं। वह ब्रह्मांडीय माँ के पूर्वज हैं, वह स्रोत जिससे जननात्मक स्त्री सिद्धांत भी उत्पन्न होता है। यह उन्हें एक अत्यंत प्राचीन, आदिम सत्ता के रूप में स्थापित करता है, जो पूर्वजों से भी परे के पूर्वज हैं।

समस्त अस्तित्व का स्रोत यह दर्शाता है कि कालभैरव परम स्रोत हैं, प्रथम कारण हैं। वह केवल एक निर्माता नहीं हैं, बल्कि वह हैं जिनसे स्वयं सृष्टि अपनी क्षमता प्राप्त करती है। वह सभी अस्तित्व के "महान, महान पूर्वज" हैं, जिसमें दिव्य देवगण, मौलिक शक्तियाँ और सभी जीवित प्राणी शामिल हैं। यह अव्यक्त, शाश्वत स्रोत के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देता है जिससे सभी व्यक्त वास्तविकता प्रकट होती है।

अतिक्रमण और अंतर्व्याप्ति "मातामह" के रूप में, वह पारलौकिक हैं, जो रूप, समय और स्थान की सीमाओं से परे विद्यमान हैं—ब्रह्मांडीय संरचना की प्रारंभिक अवधारणाओं से भी पहले के हैं। फिर भी, परम स्रोत के रूप में, वह अंतर्व्यापी भी हैं, जो सभी अस्तित्व में व्याप्त और अंतर्निहित हैं, वास्तविकता का मूलभूत आधार हैं।

परम अधिकार का प्रतीक यह नाम कालभैरव को एक अद्वितीय अधिकार और veneration प्रदान करता है। "नाना" होने का अर्थ केवल शक्ति का नहीं, बल्कि गहरे पोषण, ज्ञान और ब्रह्मांड के ताने-बाने से आदिम संबंध का एक अनूठा संबंध है, जो यह सुझाव देता है कि ब्रह्मांडीय मातृ सिद्धांत भी अपना सार उन्हीं से प्राप्त करता है।

512. मातरिश्वने

जो ब्रह्मांडीय श्वास हैं, पवन देव मातरिश्वन की तरह आकाशीय अंतरिक्ष में विचरण करने वाले को नमन।

विस्तार : मातरिश्वने नाम मातरिश्वन से लिया गया है, जो एक प्राचीन वैदिक देवता है, विशेष रूप से वायुदेव का एक नाम है। यह कालभैरव के संबंध में गहन दार्शनिक और ब्रह्मांडीय अवधारणाओं को समाहित करता है।

ब्रह्मांडीय श्वास और जीवन शक्ति मातरिश्वन का शाब्दिक अर्थ है "वह जो माता में फलता-फूलता है" या "वह जो वायुमंडल/अंतरिक्ष में विचरण करता है।" यह उसे ब्रह्मांड की ब्रह्मांडीय श्वास के रूप में पहचानता है। हिंदू विचार में, श्वास (प्राण) स्वयं जीवन का पर्याय है। मातरिश्वन के रूप में, कालभैरव वह जीवन शक्ति है जो समस्त सृष्टि में व्याप्त है, प्रत्येक प्राणी और अस्तित्व के प्रत्येक कण को चेतन करती है। इस ब्रह्मांडीय श्वास के बिना, कुछ भी अस्तित्व में नहीं रह सकता या चल नहीं सकता।

अंतरिक्ष और गति के स्वामी यह नाम कालभैरव को गति (वायु) और अंतरिक्ष के विशाल विस्तार (आकाश) से भी जोड़ता है। वायु बिना किसी बाधा के स्वतंत्र रूप से और हर जगह चलती है, ठीक वैसे ही जैसे कालभैरव की दिव्य ऊर्जा सभी आयामों और लोकों में व्याप्त है। वह गतिशील सिद्धांत है जो ब्रह्मांड के भीतर सभी गति, वृद्धि और परिवर्तन का कारण बनता है। यह पहलू उसकी सर्वव्यापकता और सर्वशक्तिमत्ता को उजागर करता है।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था के धारक वैदिक परंपरा में, मातरिश्वन को अक्सर अग्नि को धारण करने और मनुष्यों के बीच स्थापित करने के रूप में वर्णित किया गया है। यह दुनिया में दिव्य ज्ञान, ऊर्जा और गर्मी के संचार का प्रतीक है। इसलिए, मातरिश्वन के रूप में, कालभैरव न केवल गति को आरंभ करते हैं बल्कि ब्रह्मांडीय लय और प्राकृतिक नियमों को बनाए रखते हैं और व्यवस्थित करते हैं, सार्वभौमिक व्यवस्था को बनाए रखने में एक आवश्यक भूमिका निभाते हैं।

विनाशकारी और रचनात्मक शक्ति जिस प्रकार वायु एक हल्की हवा या एक विनाशकारी तूफान हो सकती है, उसी प्रकार मातरिश्वन प्रकृति के कोमल, जीवन देने वाले प्रवाह और भयंकर, विनाशकारी शक्ति दोनों का प्रतिनिधित्व करता है। यह कालभैरव के द्वैतवादी स्वभाव के साथ पूरी तरह से मेल

खाता है, जो अज्ञानता और बुराई के भयानक संहारक और मुक्ति प्रदान करने वाले परोपकारी रक्षक दोनों हैं। वह वह शक्ति है जो नए के लिए रास्ता बनाने के लिए पुराने को उड़ा देती है।

513. मणिपूराय

मणिपूर चक्र में निवास करने वाले (मणिपूर) को नमन।

विस्तार : मणिपूराय नाम मणिपुर चक्र के भीतर दिव्य उपस्थिति को संदर्भित करता है। यह नाम कालभैरव को मानव सूक्ष्म शरीर में एक विशिष्ट गूढ़ ऊर्जा केंद्र से जोड़ता है, जो योगिक और तांत्रिक प्रथाओं में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है।

मणिपुर चक्र मणिपुर, जिसका अर्थ है "रत्नों का शहर" (मणि = रत्न, पुरा = शहर), तांत्रिक दर्शन के अनुसार तीसरा प्राथमिक चक्र है। यह नाभि या सौर जालिका के क्षेत्र में स्थित है। इस चक्र को व्यक्तिगत शक्ति, इच्छाशक्ति, जीवन शक्ति, पाचन, चयापचय और परिवर्तन का आसन माना जाता है। इसका संबंधित तत्व अग्नि है, और इसकी संबंधित इंद्रिय दृष्टि है।

आंतरिक अग्नि के रूप में दिव्य मणिपुर चक्र में निवास करके, कालभैरव को इस महत्वपूर्ण केंद्र के दिव्य ऊर्जादाता के रूप में आह्वान किया जाता है। वह आंतरिक अग्नि (अग्नि) का प्रतिनिधित्व करते हैं जो अशुद्धियों को जलाती है, भोजन को ऊर्जा में बदलती है, और महत्वाकांक्षा और दृढ़ संकल्प को बढ़ावा देती है। यह परिवर्तनकारी शक्ति आध्यात्मिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

इच्छाशक्ति और शक्ति का नियंत्रक यहां निवास करने वाले के रूप में, कालभैरव व्यक्तिगत इच्छाशक्ति और संकल्प के अंतिम नियंत्रक और पोषक हैं। वह भक्त को जड़ता को दूर करने, व्यक्तिगत इच्छाओं में महारत हासिल करने और दुनिया में अपने इरादों को प्रकट करने के लिए सशक्त बनाते हैं। वह जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक शक्ति और स्पष्टता प्रदान करते हैं।

भीतर "रत्नों का शहर" मणिपुर के "रत्न" न केवल वहां केंद्रित जीवंत ऊर्जा और जीवन शक्ति को संदर्भित करते हैं, बल्कि इसके सक्रियण के माध्यम से प्राप्त अंतर्दृष्टि और ज्ञान को भी संदर्भित करते हैं। कालभैरव, अंतर्निहित देवता के रूप में, व्यवसायी को इस केंद्र को शुद्ध करने में मदद करते हैं, जिससे आत्मविश्वास, निडरता और उद्देश्य की स्पष्ट भावना पैदा होती है। यह मणिपुर की शक्तिशाली, अग्नि जैसी ऊर्जा को स्वीकार करता है, जो विनाश करने में सक्षम होने के साथ-साथ सृजन और परिवर्तन के लिए भी आवश्यक है।

514. महाशयाय

महान, उदात्त और उदार मन वाले (महाशय) को नमन।

विस्तार : महाशयाय नाम संस्कृत के शब्दों 'महा' और 'आशय' से लिया गया है, जो दिव्य मन के गहन गुणों को व्यक्त करता है।

- महा (Mahā): इस शब्द का अर्थ है "महान," "विशाल," "कुलीन," या "व्यापक।"
- आशय (Āśaya): यह शब्द कई अर्थों से समृद्ध है, जिसमें "मन," "हृदय," "इरादा," "स्वभाव," "निवास," "पात्र," या "अंतरतम विचार" शामिल हैं।

महान मन/हृदय (The Great Mind/Heart) जब संयुक्त किया जाता है, तो महाशय एक ऐसे प्राणी की ओर इशारा करता है जिसमें अपार बुद्धि, गहन करुणा और अटूट संकल्प होता है। यह एक ऐसे मन को दर्शाता है जो छोटी-मोटी चिंताओं, अहंकार या अज्ञानता से सीमित नहीं है, बल्कि विशाल, सर्वव्यापी और परोपकारी है। यह समझ की एक अद्वितीय गहराई और एक उदारता का तात्पर्य है जो सामान्य मानवीय समझ से परे है।

कुलीन इरादा और स्वभाव (Noble Intent and Disposition) यह एक कुलीन और शुद्ध इरादे को संदर्भित करता है। कालभैरव, अपने भयंकर बाहरी रूप के बावजूद, एक महान उद्देश्य से कार्य करते हैं - ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखने, धर्मियों की रक्षा करने और आत्माओं को मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करने के लिए। उनके कार्य, भले ही कठोर या भयावह प्रतीत हों, हमेशा एक सर्वोच्च, लाभकारी आशय से समर्थित होते हैं। वे द्वेष से नहीं, बल्कि सुधार और शुद्ध करने के एक कुलीन स्वभाव से दंडित करते हैं।

ज्ञान और करुणा का विशाल पात्र (Vast Receptacle of Knowledge and Compassion) महाशय के अवतार के रूप में, वे सभी ज्ञान, बुद्धि और करुणा के अंतिम भंडार हैं। उनका मन एक विशाल सागर है, जिसमें ब्रह्मांड के रहस्य समाहित हैं, और उनका हृदय भी उतना ही विशाल है, जो सभी प्राणियों को एक अटूट, भले ही भयंकर, प्रेम से गले लगाता है। यह एक दिव्य चेतना का तात्पर्य है जो सभी सृष्टि की आवश्यकताओं को समझने और उनका जवाब देने में असीम रूप से सक्षम है।

महाशयाय नाम कालभैरव के गहन आंतरिक गुणों पर जोर देता है, उन्हें सर्वोच्च बुद्धि, कुलीन उद्देश्य और व्यापक परोपकार के अवतार के रूप में चित्रित करता है, जिनके दुर्जेय कार्य अंततः एक अच्छे और उदार इरादे से उत्पन्न होते हैं।

515. मदघ्ने

समस्त अहंकार, अभिमान और मद का नाश करने वाले को नमन।

विस्तार : मदाघ्ने (Madaghne, मदाघ्ने) नाम दो संस्कृत मूलों से लिया गया है: "मद" (Mada) और "घ्नम्" (Ghnam)।

"मद" (Mada): इस शब्द का अर्थ है नशा, अहंकार, अभिमान, भ्रम, उन्माद या आसक्ति। इसमें केवल शारीरिक नशा (जैसे शराब से) ही नहीं, बल्कि अधिक गहराई से, भ्रम और अहंकार-प्रेरित अभिमान की मानसिक और आध्यात्मिक अवस्थाएँ भी शामिल हैं। यह "मद" धन, शक्ति, वंश, ज्ञान, सौंदर्य या यहाँ तक कि आध्यात्मिक उपलब्धियों से भी उत्पन्न हो सकता है। यह आध्यात्मिक अंधता और स्वयं की एक बढ़ी हुई भावना की ओर ले जाता है।

"घ्नम्" (Ghnam): यह "हन्" (han) धातु से व्युत्पन्न एक कर्तृवाचक प्रत्यय है, जिसका अर्थ है "मारना," "वध करना," या "नष्ट करना।" इसलिए, "घ्नम्" का अर्थ है "का नाश करने वाला।"

नशे और भ्रम का नाश करने वाला इस प्रकार, मदाघ्ने का शाब्दिक अर्थ है "मद का नाश करने वाला।" आध्यात्मिक संदर्भ में, भगवान कालभैरव, मदाघ्ने के रूप में, वह हैं जो एक भक्त के भीतर सभी प्रकार के आध्यात्मिक नशे और अहंकार को मिटा देते हैं। वह अहंकार और आत्म-भ्रम की दीवारों को तोड़ते हैं जो एक व्यक्ति को अपने वास्तविक स्वरूप को जानने और ईश्वर से जुड़ने से रोकते हैं।

अहंकार और आसक्ति पर विजय यह नाम आध्यात्मिक मार्ग पर आने वाली बाधाओं (विघ्नहर्ता) को दूर करने वाले के रूप में कालभैरव की भूमिका को उजागर करता है, विशेष रूप से वे जो स्वयं की बढ़ी हुई भावना या क्षणभंगुर सांसारिक गुणों से आसक्ति से उत्पन्न होती हैं। वह द्वैत और भ्रम के नशे को दूर करके मन को शुद्ध करते हैं, जिससे भक्त स्पष्टता, विनम्रता और परम मुक्ति की ओर अग्रसर होता है।

दिव्य अनुशासन का एक रूप मदाघ्ने के रूप में उनका कार्य केवल विनाशकारी नहीं है; यह दिव्य कृपा और अनुशासन का एक गहरा कार्य है। आत्म-महत्व और झूठे अभिमान को नष्ट करके, वह वास्तविक समझ और समर्पण का मार्ग प्रशस्त करते हैं, जो आध्यात्मिक प्रगति के लिए आवश्यक

गुण हैं। वह सिखाते हैं कि सच्ची शक्ति बाहरी उपलब्धियों या बढ़े हुए अहंकार में नहीं, बल्कि विनम्रता और आत्म-जागरूकता में निहित है।

516. महागर्भाय

जिन्होंने अपने भीतर ब्रह्मांड के महान ब्रह्मांडीय गर्भ को धारण किया है, उन्हें नमन।

विस्तार : महागर्भ नाम एक गहन विशेषण है, जो महा (महान, सर्वोच्च) और गर्भ (गर्भ, भ्रूण, आंतरिक, मूल) का एक यौगिक है। यह नाम कालभैरव की सभी अस्तित्व के अंतिम धारक और स्रोत के रूप में भूमिका को दर्शाता है।

ब्रह्मांडीय गर्भ (The Cosmic Womb) ब्रह्मांडीय संदर्भ में, गर्भ वेदों में वर्णित आदिम "स्वर्ण गर्भ" या हिरण्यगर्भ को संदर्भित करता है। यह हिरण्यगर्भ वह स्रोत है जिससे संपूर्ण ब्रह्मांड, अपने सभी विविध रूपों और घटनाओं के साथ, उत्पन्न होता है। जब कालभैरव को महागर्भ कहा जाता है, तो इसका अर्थ है कि वह केवल एक छोटे से हिस्से के धारक नहीं हैं, बल्कि वह सार हैं जो विशाल, विस्तृत ब्रह्मांड की संपूर्णता को अपने भीतर समाहित करते हैं। वह अस्तित्व का अंतिम आधार हैं जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है और जिसमें सब कुछ अंततः विलीन हो जाता है।

भ्रूण संबंधी क्षमता और अव्यक्त ऊर्जा (Embryonic Potential and Latent Energy) गर्भ की अवधारणा एक भ्रूण अवस्था का भी अर्थ है - सभी अप्रकट क्षमता और अव्यक्त ऊर्जा का एक भंडार। इसलिए, महागर्भ कालभैरव को उस आधार के रूप में इंगित करता है जिसमें सभी संभावित रूप और अभिव्यक्तियाँ उनके प्रकट होने से पहले समाहित होती हैं। यह पूर्ण संभाव्यता की स्थिति का सुझाव देता है, जिससे ब्रह्मांड प्रकट होता है और जिसमें यह ब्रह्मांडीय चक्रों के दौरान वापस चला जाता है।

आंतरिक मूल और सार (The Inner Core and Essence) यह "आंतरिक" या "सबसे आंतरिक मूल" को भी संदर्भित करता है। महागर्भ के रूप में, कालभैरव हर चीज का मौलिक, छिपा हुआ सार हैं। वह केवल एक बाहरी निर्माता नहीं हैं, बल्कि ब्रह्मांड का हृदय और आत्मा हैं, जो प्रत्येक परमाणु और प्रत्येक प्राणी के भीतर निवास करते हैं, सभी स्थान और समय में व्याप्त हैं।

सर्व-समावेशी वास्तविकता (The All-Encompassing Reality) यह नाम कालभैरव के सर्व-समावेशी स्वरूप पर जोर देता है। वह अल्फा और ओमेगा हैं, आदि और अंत हैं, स्रोत और गंतव्य हैं। वह परम वास्तविकता हैं जो अपने भीतर सृष्टि, संरक्षण और विघटन की पूरी टेपेस्ट्री को धारण करती हैं, जो ब्रह्मांडीय अस्तित्व के पूर्ण चक्र को मूर्त रूप देती हैं।

517. महाकल्पाय

जो महान ब्रह्मांडीय कल्प हैं, जो ब्रह्मांडीय समय के मापक हैं, उनको नमन।

विस्तार : महाकल्पाय नाम कालभैरव के लिए एक गहन विशेषण है, जो महा और कल्प शब्दों से बना है।

कल्प: समय का एक ब्रह्मांडीय माप हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, एक कल्प (जिसे अक्सर "युग" या "महान युग" के रूप में अनुवादित किया जाता है) समय की एक अकल्पनीय रूप से विशाल इकाई है। यह ब्रह्मा के एक पूर्ण दिन का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें एक हजार महायुग (महान युग) शामिल हैं, और यह वह अवधि है जिसके दौरान ब्रह्मांड का निर्माण, पोषण और फिर विघटन (प्रलय) होता है। यह अभिव्यक्ति और गैर-अभिव्यक्ति की एक चक्रीय प्रक्रिया है।

महा: महान, सर्वोच्च, विशाल महा उपसर्ग महानता, विशालता, सर्वोच्चता और गहनता को दर्शाता है। जब इसे कल्प के साथ जोड़ा जाता है, तो यह एक अथाह या सर्वोच्च ब्रह्मांडीय युग पर जोर देता है।

ब्रह्मांडीय समय के सर्वोच्च स्वामी महाकल्प के रूप में, कालभैरव को केवल समय के नियंत्रक के रूप में ही नहीं, बल्कि इस परम, चक्रीय और असीम ब्रह्मांडीय समय के साक्षात अवतार के रूप में पहचाना जाता है। वह अनगिनत कल्पों का आदि, मध्य और अंत हैं, जो सृष्टि से लेकर प्रलय तक के पूरे ब्रह्मांडीय नाटक की देखरेख करते हैं। यह नाम काल (समय) के रूप में उनकी भूमिका को, उसके सबसे भव्य, सबसे व्यापक पैमाने पर रेखांकित करता है।

चक्रों से परे जबकि एक कल्प ब्रह्मांड के भीतर एक चक्र का प्रतिनिधित्व करता है, महाकल्प के रूप में कालभैरव इन विशाल चक्रों से भी परे हैं। वह सभी कल्पों के साक्षी और संयोजक हैं, उनके आदि और अंत से परे विद्यमान हैं। इसका अर्थ है कि वह शाश्वत सिद्धांत हैं जो ब्रह्मांड के अस्तित्व और गैर-अस्तित्व को नियंत्रित करते हैं, जो उस परम, अप्रकट वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करते हैं जिससे सभी चक्र उत्पन्न होते हैं और जिसमें वे लौटते हैं।

अमाप्य और अविभाज्य यह नाम उनकी अमाप्य प्रकृति की ओर भी इशारा करता है। जिस प्रकार ब्रह्मांडीय कल्प अपनी अवधि में मानवीय समझ से परे है, उसी प्रकार कालभैरव भी सीमित मन की पकड़ से परे हैं। वह अविभाज्य, शाश्वत चेतना हैं जो सभी लौकिक अस्तित्व के मूल में है।

518. महाधनुषे

महान और शक्तिशाली स्वर्गीय धनुष धारण करने वाले (महाधनुष) को नमन।

विस्तार : महाधनुषे नाम दो संस्कृत शब्दों से बना है: महा, जिसका अर्थ है "महान," "शक्तिशाली," या "सर्वोच्च," और धनुष, जिसका अर्थ है "धनुष।" इस प्रकार, यह उस दिव्य सत्ता को संदर्भित करता है जो एक महान और राजसी धनुष धारण करती है।

धनुष का प्रतीकवाद हिंदू प्रतिमा विज्ञान और पौराणिक कथाओं में, धनुष केवल एक हथियार नहीं है; यह कई अर्थों वाली एक गहन प्रतीक है:

• ब्रह्मांडीय शक्ति और नियंत्रण: धनुष, जब खींचा जाता है, तो आरक्षित रूप से रखी गई अपार शक्ति को दर्शाता है, जो मुक्त होने के लिए तैयार है। कालभैरव के लिए, यह "महान धनुष" ब्रह्मांडीय शक्तियों पर उनके सर्वोच्च नियंत्रण को दर्शाता है, जिसमें समय, सृष्टि, संरक्षण और विघटन शामिल हैं। यह उनकी इच्छा से किसी भी शक्ति को प्रकट करने या वापस लेने की क्षमता को दर्शाता है।

• बाधाओं का विनाश: धनुष का उपयोग मुख्य रूप से दूर से दुश्मनों या बाधाओं को लक्षित करने और नष्ट करने के लिए किया जाता है। महाधनुषे कालभैरव की भूमिका का प्रतीक है, जो अपने भक्तों की आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डालने वाली बाधाओं को नष्ट करते हैं और ब्रह्मांडीय व्यवस्था को खतरे में डालने वाली बुरी शक्तियों का विनाश करते हैं। उनके तीर अचूक होते हैं और कार्रवाई में सटीकता और अपरिहार्य परिणाम का प्रतिनिधित्व करते हैं।

• पराकाष्ठा: कभी-कभी, धनुष की डोरी को आदिम ध्वनि ओम (प्रणव) से जोड़ा जाता है, और तीर को व्यक्तिगत आत्मा (जीवात्मा) से, जो लक्ष्य, यानी परम आत्मा (परमात्मा) की ओर निशाना साधती है। इस गूढ़ अर्थ में, उनका महान धनुष व्यक्तिगत चेतना की परम मुक्ति की ओर यात्रा को सुगम बनाता है।

• प्रतिष्ठित प्रतिनिधित्व: जबकि भगवान शिव को पिनाक धनुष से, और विष्णु को शारंग धनुष से अधिक प्रसिद्ध रूप से जोड़ा जाता है, कालभैरव, शिव के एक उग्र रूप के रूप में, सर्वोच्च मार्शल कौशल के इस प्रतीकवाद को विरासत में प्राप्त करते हैं। "महान धनुष" उनकी अजेय प्रकृति और धर्म की रक्षा करने और अधर्म को दंडित करने की उनकी तत्परता को दर्शाता है।

• समय पर आज्ञा (काल): चूंकि कालभैरव काल के स्वामी हैं, उनका महान धनुष स्वयं समय के प्रक्षेपवक्र का प्रतिनिधित्व कर सकता है - नियति का तीर जो अस्तित्व के विस्तार के माध्यम से चलाया जाता है, सभी प्राणियों को अनिवार्य रूप से उनके अंतिम अंत और विघटन की ओर ले जाता है, जो उनकी सर्वोच्च इच्छा द्वारा निर्देशित होता है।

इस प्रकार, महाधनुषे कालभैरव की स्तुति एक परम योद्धा और नियंत्रक के रूप में करता है, जिनकी शक्ति असीम है, जिनका लक्ष्य अचूक है, और जिनके कार्य ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखते हैं।

519. मनसे

ब्रह्मांडीय मन और सभी विचारों के स्रोत को नमन।

विस्तार : मनसे (Māṇaśe) नाम संस्कृत शब्द 'मनस्' से लिया गया है, जो मुख्य रूप से मन, बुद्धि, विचार, चेतना और बोध की शक्ति को दर्शाता है।

ब्रह्मांडीय मन (सार्वभौमिक चेतना) (The Cosmic Mind - Universal Consciousness) कालभैरव के संदर्भ में, मनसे उस परम, सार्वभौमिक चेतना को संदर्भित करता है जो सभी व्यक्तिगत मनों से पहले और उनमें व्याप्त है। भैरव, मनसे के रूप में, केवल मन के धारक नहीं हैं, बल्कि स्वयं शुद्ध मन हैं—वह मूलभूत आधार जिससे सभी सचेत विचार, बोध और व्यक्तिपरक अनुभव उत्पन्न होते हैं। वह ब्रह्मांडीय बुद्धि हैं जो ब्रह्मांड का संचालन करती है, सभी सृष्टि के पीछे की भव्य योजना हैं।

सभी विचार और बोध का स्रोत (Source of All Thought and Perception) वह अपनी शुद्ध, असीमित अवस्था में सोचने, समझने और बोध करने की शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। सभी व्यक्तिगत मन (जीव-मनस्) इस सर्वोच्च, अनंत मन के केवल प्रतिबिंब या सीमित अभिव्यक्तियाँ हैं। इसलिए, मनसे को नमन करना अपनी मानसिक क्षमताओं के दिव्य मूल को स्वीकार करना और उस साझा, सार्वभौमिक स्रोत को पहचानना है जिससे सभी संज्ञान प्रवाहित होते हैं।

व्यक्तिगत मन से परे (Beyond Individual Mind) जबकि मन को कभी-कभी व्यक्तिगत प्राणियों में इच्छा और अस्थिर विचारों से जोड़ा जा सकता है (जो बंधन की ओर ले जाता है), मनसे के रूप में, भैरव व्यक्तिगत अहंकार-मन से परे की स्थिति का प्रतिनिधित्व करते हैं। वह मन के स्वामी हैं, वह जो इसकी सीमाओं, इच्छाओं और द्वंद्वों को पार करते हैं। वह शांत, गहन और सर्वज्ञ बुद्धि का प्रतीक हैं जो घटनात्मक दुनिया की अशांति से अछूती है।

अभिव्यक्ति और वापसी (Manifestation and Withdrawal) ब्रह्मांडीय मन (महत्-तत्व या बुद्धि) सांख्य दर्शन में एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है, जो सृष्टि के विकास का वर्णन करता है। मनसे के रूप में, भैरव को इस ब्रह्मांडीय मन और इसकी बाद की अभिव्यक्तियों का अंतिम कारण, और वह अंतिम वास्तविकता भी माना जा सकता है जिसमें सभी मानसिक गतिविधि अंततः विलीन हो जाती है। वह पूरे ब्रह्मांड में सभी मानसिक प्रक्रियाओं के साक्षी और नियंत्रक हैं।

520. मनोमायाय

शुद्ध चेतना से निर्मित और मन के स्वरूप वाले (भगवान भैरव) को नमन।

विस्तार : मनोमयाय नाम, संस्कृत शब्द मनोमय से व्युत्पन्न, कालभैरव के स्वरूप के एक गहन पहलू को दर्शाता है, जो मन और शुद्ध चेतना के साथ उनके अभिन्न संबंध की ओर इशारा करता है।

मन/चेतना से निर्मित मनोमय "मनस्" (मन) और "मय" (से निर्मित, से युक्त, का स्वरूप रखने वाला) का एक यौगिक है। इस प्रकार, मनोमय का सीधा अर्थ है "मन से निर्मित," या "जिसका स्वरूप मन का है।" यह केवल व्यक्तिगत, अनुभवजन्य मन नहीं है, बल्कि ब्रह्मांडीय, सार्वभौमिक

मन या चेतना है। यह बताता है कि कालभैरव पारंपरिक अर्थों में एक भौतिक प्राणी नहीं हैं, बल्कि विचार, इरादे और शुद्ध जागरूकता का एक अवतार हैं।

मानसिक संकायों का स्रोत वह मूलभूत आधार हैं जिससे सभी मानसिक संकाय प्रकट होते हैं - बुद्धि (बुद्धि), अहंकार (अहंकार), और स्वयं निम्न मन (मनस्)। सभी विचार, भावनाएँ, धारणाएँ और संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ अंततः इस सर्वोच्च मनोमय सिद्धांत से उत्पन्न होती हैं और उसमें विलीन हो जाती हैं।

द्वंद्वों से परे मनोमय होने का अर्थ है कि वह स्थूल भौतिक रूपों की सीमाओं को पार करते हैं। उनका स्वरूप सूक्ष्म, दीप्तिमान और ध्यान की अवस्थाओं के माध्यम से सीधे सुलभ है। यह पहलू उनकी प्रकृति को शुद्ध चित् (चित् - पूर्ण चेतना) के रूप में उजागर करता है - वह सर्वव्यापी जागरूकता जो अस्तित्व को प्रकाशित करती है।

ध्यान का विषय साधकों के लिए, कालभैरव का मनोमय के रूप में ध्यान करने का अर्थ है उनकी आंतरिक, गैर-भौतिक वास्तविकता पर ध्यान केंद्रित करना। यह साधक को बाहरी अनुष्ठानों से परे जाने और आत्मनिरीक्षण, मन की शुद्धि और आंतरिक जागरूकता के विकास के माध्यम से देवता से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। वह मानसिक अतिक्रमण का अंतिम लक्ष्य हैं, जो भक्त को अस्थिर मन से परे शुद्ध शिव-चेतना की स्थिति में ले जाते हैं।

521. मानिने

जो सम्मानित, पूजनीय और सभी श्रद्धा के योग्य हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : मानिने नाम, संस्कृत मूल "मान" से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ सम्मान, आदर और श्रद्धा है।

सम्मान और आदर के योग्य मानिने का अर्थ है कि भगवान कालभैरव अत्यंत सम्माननीय, आदरणीय और गहरी श्रद्धा के योग्य हैं। यह सम्मान केवल पारंपरिक आदर नहीं है, बल्कि उनके पूर्ण अधिकार, दुर्जेय शक्ति और परम दिव्यता की गहरी स्वीकृति है। वह ऐसे हैं जो सभी प्राणियों, जिनमें देवता, ऋषि और सामान्य मनुष्य शामिल हैं, से विस्मय और भक्ति प्राप्त करते हैं।

गरिमा का प्रतीक यह नाम कालभैरव की अंतर्निहित गरिमा और महिमा को दर्शाता है। वह ब्रह्मांडीय व्यवस्था और न्याय के प्रतीक हैं, और उनके कार्य हमेशा धर्मसंगत होते हैं, भले ही वे भयावह लगें। इसलिए, उन्हें दिया गया सम्मान उनकी त्रुटिहीन प्रकृति और ब्रह्मांड के धर्म को बनाए रखने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका की पहचान है।

काल के संहारक के प्रति श्रद्धा काल (समय) और भय (भैरव) के परम संहारक के रूप में, उनकी प्रकृति भय और गहन भक्ति दोनों को प्रेरित करती है। मानिने द्वारा निहित श्रद्धा समय और मृत्यु सहित सभी सीमाओं को भंग करने और अपने भक्तों को मुक्ति प्रदान करने की उनकी शक्ति को स्वीकार करती है। यह गहरा सम्मान उनकी पारलौकिक प्रकृति और सर्वोच्च आध्यात्मिक वरदान प्रदान करने की उनकी क्षमता की समझ से उत्पन्न होता है।

आंतरिक मन और ज्ञान "मान" मन (मानस) और आंतरिक धारणा को भी संदर्भित करता है। इस संदर्भ में, मानिने का अर्थ यह भी हो सकता है कि जिसे मन और हृदय की सबसे गहरी गहराइयों में सम्मानित किया जाता है, जो केवल बाहरी अनुष्ठानिक नहीं, बल्कि एक आंतरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक श्रद्धा को दर्शाता है। यह उस ज्ञान और आत्मज्ञान की बात करता है जो उनकी दिव्य लीला को समझने और उसका सम्मान करने से आता है।

522. मेरुपद्याय

जिनके दिव्य चरण पवित्र मेरु पर्वत हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : मेरुपादाय नाम कालभैरव के लिए एक गहरा और उदाहरणात्मक विशेषण है, जो "मेरु" और "पाद" को जोड़ता है।

मेरु: ब्रह्मांडीय पर्वत मेरु पर्वत हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में एक पौराणिक पवित्र पर्वत है, जिसे सभी भौतिक, आध्यात्मिक और आध्यात्मिक ब्रह्मांडों का केंद्र माना जाता है। इसे एक स्वर्ण पर्वत, देवताओं का निवास स्थान और एक महत्वपूर्ण धुरी के रूप में वर्णित किया गया है जिसके चारों ओर सभी ग्रह और तारे घूमते हैं। प्रतीकात्मक रूप से, मेरु स्थिरता, अपार शक्ति, सर्वोच्च आध्यात्मिक आकांक्षा और सृष्टि के केंद्रीय स्तंभ का प्रतिनिधित्व करता है।

पाद: चरण / आधार "पाद" पारंपरिक रूप से चरणों को संदर्भित करता है, जो हिंदू विचार में अक्सर समर्थन, नींव, दिव्य पहुंच और पूजा के लिए दीक्षा बिंदु का प्रतीक होते हैं। किसी देवता के चरणों को छूना या उनके चरणों में प्रार्थना करना परम समर्पण और भक्ति का कार्य है, जो विनम्रता और शरण मांगने का प्रतीक है।

ब्रह्मांडीय आधार जब कालभैरव के "चरण मेरु हैं," तो यह एक विशाल ब्रह्मांडीय उपस्थिति और एक अलंघनीय नींव को दर्शाता है। इसका तात्पर्य है कि उनका समर्थन और स्थिरता ब्रह्मांड के केंद्रीय स्तंभ के बराबर है। जिस प्रकार मेरु ब्रह्मांड को स्थिर करता है, उसी प्रकार भैरव की दिव्य उपस्थिति सभी अस्तित्व के लिए परम आधार के रूप में कार्य करती है, जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था और स्थिरता सुनिश्चित करती है।

अडिग अधिकार और दृढ़ता यह नाम कालभैरव के अडिग अधिकार और दृढ़ता पर जोर देता है। उनका अस्तित्व ही ब्रह्मांड की मूलभूत सहायक संरचना है। ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो उन्हें अस्थिर कर सके, क्योंकि वे स्वयं सृष्टि के परम स्तंभ हैं। यह यह भी बताता है कि उनका ज्ञान और शक्ति सर्वोच्च हैं, जो मेरु के उच्चतम शिखर के समान है।

शरण और समर्थन भक्तों के लिए, यह प्रतीकवाद परम शरण का है। मेरु के चरणों में झुकने का अर्थ है ब्रह्मांड के सबसे स्थिर और पवित्र पहलू में शरण पाना। इसका तात्पर्य है कि उनके प्रति समर्पण करके, व्यक्ति उस मूलभूत समर्थन और सुरक्षा तक पहुंच प्राप्त करता है जो ब्रह्मांड को एक साथ रखता है, परिवर्तनशील दुनिया में अटूट आध्यात्मिक स्थिरता का अनुभव करता है।

523. मृडाय

अपने भक्तों के प्रति कृपालु, दयालु और करुणामय रहने वाले को नमन।

विस्तार : मृड (मृड) नाम संस्कृत धातु "मृड" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "कृपालु होना," "दयालु होना," "करुणामय होना," या "समृद्धि प्रदान करना।" इसका सीधा अर्थ है "दयालु" या "करुणामय।"

• परोपकारी पहलू यह नाम भगवान शिव के अत्यंत परोपकारी और करुणामय पहलू पर प्रकाश डालता है, विशेष रूप से उनके भैरव रूप में, जिसे विरोधाभासी रूप से अक्सर भयानक माना जाता है। यह इस बात पर जोर देता है कि उनकी भयंकर शक्ति और ब्रह्मांडीय विनाश में उनकी भूमिका के बावजूद, उनके भक्तों के प्रति उनका अंतिम स्वभाव गहरी दया और कृपा का है।

• सुख और समृद्धि के दाता मृड शिव की खुशी (सुख), समृद्धि (संपत्ति) और कल्याण के दाता के रूप में भूमिका को दर्शाता है। वह वह है जो भक्ति के साथ उनकी पूजा करने वालों पर आशीर्वाद बरसाता है। यह पहलू उनकी विनाशकारी शक्ति को संतुलित करता है, यह दर्शाता है कि उनके

कार्य, यहां तक कि विनाश के भी, अंततः नवीनीकरण और सृष्टि के परम कल्याण के उद्देश्य की पूर्ति करते हैं।

• दुःख निवारक मृड के रूप में, शिव अपने भक्तों के दुखों और कष्टों को दूर करते हैं। वह संकट में पड़े लोगों के लिए अंतिम आश्रय हैं, जो सांसारिक दुखों से सांत्वना और मुक्ति प्रदान करते हैं। यह परोपकार न केवल भौतिक सुख बल्कि आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) तक भी फैला हुआ है।

भैरव के संदर्भ में, उग्रता का उद्देश्य आसक्ति, अहंकार और अज्ञान को नष्ट करना है, जो पीड़ा के मूल कारण हैं। मृड की कृपा तब खिलती है, जो भक्त को ज्ञान और अंतिम आध्यात्मिक स्वतंत्रता की ओर ले जाती है। यह एक अनुस्मारक है कि सबसे दुर्जेय देवताओं में भी एक अंतर्निहित करुणा होती है।

524. मानवे

आदि पुरुष मनु को नमन।

विस्तार : मानवे नाम मनु को संदर्भित करता है, जो आदिम पुरुष हैं, और अक्सर हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में मानव जाति के पूर्वज हैं। कालभैरव के लिए यह नाम, इस प्रकार, उन्हें मानवता के संबंध में एक अद्वितीय और गहन भूमिका में स्थापित करता है।

आदिम पुरुष (मनु) मनु हिंदू परंपराओं में एक मूलभूत व्यक्ति हैं, जो मानवता के मूलरूप का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रत्येक ब्रह्मांडीय चक्र (मन्वंतर) एक विशिष्ट मनु द्वारा शासित होता है, जो उस युग के लिए धर्म (धार्मिक कानून और ब्रह्मांडीय व्यवस्था) स्थापित करने के लिए जिम्मेदार होता है। एक कल्प (ब्रह्मा के एक दिन) में ऐसे चौदह मनु होते हैं। वर्तमान मनु वैवस्वत मनु हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे एक महान प्रलय से बचे और पृथ्वी को फिर से बसाया।

जनक और विधि-निर्माता मानवता के पिता के रूप में, मनु केवल एक जैविक पूर्वज नहीं हैं, बल्कि एक आध्यात्मिक और कानूनी जनक भी हैं। "मनुस्मृति" या "मनु के नियम" एक प्रसिद्ध प्राचीन कानूनी और सामाजिक ग्रंथ है जो उन्हें समर्पित है, जिसमें आचार संहिता, कर्तव्य और सामाजिक संगठन की रूपरेखा दी गई है। इसलिए, "मानवे" कालभैरव को मानव समाज और सभ्यता की उत्पत्ति और विनियमन से जोड़ता है।

कालभैरव का मनु से संबंध जब कालभैरव को "मानवे" के रूप में संबोधित किया जाता है, तो यह मानव जीवन और उसके धर्म के निर्माण, पोषण और विनियमन में उनके परम अधिकार और आवश्यक उपस्थिति को दर्शाता है। वह मनु के अस्तित्व के पीछे की दिव्य शक्ति हैं, वह स्रोत जिससे आदिम पुरुष अपनी शक्ति और जनादेश प्राप्त करता है। इसका तात्पर्य है:

1. धर्म का स्रोत: कालभैरव ब्रह्मांडीय कानूनों और सिद्धांतों का अंतिम स्रोत हैं जिन्हें मनु मूर्त रूप देते हैं और व्यक्त करते हैं। वह दिव्य इच्छा हैं जो मानव नियति और सामाजिक व्यवस्था को आकार देती है। 2. मानवता के संरक्षक: मनु से जुड़े होने के नाते, वह मानवता के दिव्य संरक्षक और मार्गदर्शक हैं। वह यह सुनिश्चित करते हैं कि मनु की वंशावली जारी रहे और धर्म का पालन हो। 3. ब्रह्मांडीय पुरुष: व्यापक अर्थों में, "मानवे" "ब्रह्मांडीय पुरुष" या पुरुष को भी संदर्भित कर सकता है, वह आदिम प्राणी जिससे ब्रह्मांड और उसके सभी निवासी उत्पन्न होते हैं। इस संदर्भ में, कालभैरव, शिव के उग्र रूप के रूप में, इस ब्रह्मांडीय सिद्धांत से पहचाने जाते हैं, जिसका अर्थ है कि वह मानव अस्तित्व और सार्वभौमिक सत्ता का सार हैं।

इस प्रकार, "मानवे" कालभैरव की भूमिका को केवल एक भयानक देवता के रूप में ही नहीं, बल्कि मानव अस्तित्व, उसके कानूनों और उसकी आध्यात्मिक यात्रा को रेखांकित करने वाले मूलभूत सिद्धांत के रूप में भी उजागर करता है। वह दिव्य खाका हैं जिससे मानवता का निर्माण और

मार्गदर्शन होता है।

525. महाशोभाय

महान, परम और तेजस्वी सौंदर्य से युक्त (महाशोभ) को नमन।

विस्तार : महाशोभा नाम महा और शोभा का एक यौगिक है, जो गहन और उत्कृष्ट सुंदरता को दर्शाता है।

• महा (Mahā): इस उपसर्ग का अर्थ है "महान," "सर्वोच्च," "उत्कृष्ट," "शक्तिशाली," या "चकाचौंध कर देने वाला।" यह अद्वितीय परिमाण और तीव्रता के गुण को दर्शाता है।

• शोभा (Shobhā): इस शब्द का अर्थ है "चमक," "वैभव," "दीप्ति," "सुंदरता," "भव्यता," या "तेज।"

सर्वोच्च दीप्ति और वैभव (Supreme Radiance and Splendor) महाशोभा कालभैरव को ऐसी सुंदरता से युक्त बताता है जो केवल सौंदर्यपरक नहीं है, बल्कि उनके सर्वोच्च आध्यात्मिक और ब्रह्मांडीय गौरव की अभिव्यक्ति है। यह सुंदरता शारीरिक आकर्षण की पारंपरिक समझ में नहीं है, बल्कि एक विस्मयकारी, दिव्य वैभव है जो उनके अस्तित्व से ही विकीर्ण होता है। यह एक ऐसी दीप्ति है जो मनमोहक और विस्मयकारी दोनों है, जो परम वास्तविकता के रूप में उनकी स्थिति को दर्शाती है।

चकाचौंध कर देने वाली फिर भी भयावह सुंदरता (Dazzling yet Terrifying Beauty) जबकि भैरव का रूप भयावह हो सकता है, उनकी महाशोभा एक भयावह सुंदरता को दर्शाती है - ब्रह्मांडीय शक्ति, सार्वभौमिक व्यवस्था और परम सत्य की सुंदरता। यह एक तूफान, एक ज्वालामुखी, या अनंत ब्रह्मांड की सुंदरता है - विशाल, शक्तिशाली, और अपने विनाशकारी क्षमता में भी मंत्रमुग्ध कर देने वाली भव्य। उनका रूप, हालांकि भयंकर है, पूरी तरह से आनुपातिक और दिव्य रूप से संरचित है, जो एक गहन आध्यात्मिक भव्यता का प्रतीक है।

दिव्य गुणों की अभिव्यक्ति (Manifestation of Divine Attributes) यह गहन सुंदरता उनके आवश्यक गुणों का प्रतिबिंब है: उनका पूर्ण ज्ञान (ज्ञान), सर्वोच्च शक्ति (शक्ति), और व्यापक उपस्थिति (व्याप्ति)। महाशोभा की दीप्ति उनकी दिव्य चेतना से निकलती है, जो संपूर्ण अस्तित्व को प्रकाशित करती है। यह बताता है कि समय और भय के संहारक के रूप में अपनी भूमिका में भी, वे एक अंतर्निहित, राजसी सुंदरता बनाए रखते हैं, जो दिव्य अस्तित्व की पूर्णता का प्रतिनिधित्व करती है।

उत्कृष्ट आकर्षण (Transcendent Charm) अंततः, महाशोभा एक ऐसी सुंदरता की ओर इशारा करता है जो सामान्य धारणा से परे है, एक आध्यात्मिक चुंबकत्व जो भक्तों को परम सत्य और मुक्ति की ओर आकर्षित करता है। यह दिव्य आत्मा की सुंदरता है, जो अपने अंतर्निहित गौरव में तेजस्वी है और सभी दोषों से मुक्त है।

526. महाज्ञानिने

महान, गहन और परम ज्ञान के स्वामी को नमन।

विस्तार : महाज्ञानी नाम संस्कृत के दो शब्दों महा और ज्ञानी का एक यौगिक है।

• महा (Mahā): का अर्थ है "महान," "भव्य," "उत्कृष्ट," "विशाल," या "सर्वोच्च।" यह एक असाधारण और सर्वव्यापी गुण को दर्शाता है।

• ज्ञानी (Jñānin) (ज्ञान से व्युत्पन्न): का अर्थ है "ज्ञान रखने वाला," "बुद्धिमान," या "जानने वाला।" ज्ञान केवल बौद्धिक जानकारी नहीं है, बल्कि गहरा, सहज और आध्यात्मिक ज्ञान है।

सर्वोच्च और गहन ज्ञान महाज्ञानी इस प्रकार शिव को सर्वोच्च, सर्वव्यापी ज्ञान के धारक के रूप में दर्शाता है। यह अध्ययन या अनुभव से प्राप्त सामान्य ज्ञान नहीं है, बल्कि वास्तविकता, ब्रह्मांड और स्वयं के मूलभूत स्वरूप में पारलौकिक अंतर्दृष्टि है। कालभैरव, शिव के एक पहलू के रूप में, इस परम समझ का प्रतीक हैं।

सभी चीजों के ज्ञाता यह नाम इंगित करता है कि शिव, कालभैरव के रूप में, हर चीज का प्रत्यक्ष और पूर्ण ज्ञान रखते हैं - अतीत, वर्तमान और भविष्य; भौतिक और आध्यात्मिक क्षेत्र; व्यक्त और अव्यक्त। वे सभी ज्ञान का स्रोत हैं और सत्य की किसी भी खोज के लिए अंतिम गंतव्य हैं।

मुक्तिदायक ज्ञान आध्यात्मिक संदर्भ में, ज्ञान वह ज्ञान है जो मुक्ति (मोक्ष) की ओर ले जाता है। महाज्ञानी के रूप में, कालभैरव अपने भक्तों को यह गहन ज्ञान प्रदान करते हैं, उन्हें अज्ञान (अविद्या) से दूर और आत्म-साक्षात्कार तथा परम स्वतंत्रता की ओर मार्गदर्शन करते हैं। यह ज्ञान वास्तविक (सत्) और अवास्तविक (असत्) के बीच अंतर करने में मदद करता है, जिससे व्यक्ति को भौतिक दुनिया की क्षणभंगुर प्रकृति और दिव्य की शाश्वत प्रकृति को समझने में मदद मिलती है।

चेतना का अवतार यह नाम शिव को शुद्ध चेतना के रूप में भी दर्शाता है - सभी ज्ञान का अंतिम विषय। वे ज्ञाता, ज्ञात और जानने की क्रिया हैं, जो सभी उनके अस्तित्व में एकीकृत हैं। उनका ज्ञान अंतर्निहित, असीमित और बाहरी कारकों से अप्रभावित है।

527. महाकालाय

जो महाकाल हैं, सभी वस्तुओं का विनाश करने वाले हैं, उनको नमन।

विस्तार : महाकालाय नाम भगवान शिव के लिए एक गहरा और केंद्रीय विशेषण है, विशेष रूप से उनके उग्र भैरव रूप में, जो संस्कृत के घटकों महा (महान) और काल (समय, मृत्यु, नियति) से व्युत्पन्न है।

महान काल (महाकाल के रूप में ब्रह्मांडीय समय) महाकाल उस परम, अटल और शाश्वत ब्रह्मांडीय समय को दर्शाता है जो सभी सृष्टि को नियंत्रित करता है और निगल जाता है। रैखिक मानवीय समय के विपरीत, महाकाल कालातीत, सर्वव्यापी निरंतरता का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें सब कुछ उत्पन्न होता है और अंततः विलीन हो जाता है। वह सभी अस्तित्व का आदि, मध्य और अंत है, जो सभी लौकिक सीमाओं से परे है। यह पहलू युगों, मन्वंतरों और सृष्टि तथा प्रलय के चक्रों पर उनके सर्वोच्च प्रभुत्व पर जोर देता है।

सभी चीजों का संहारक (मृत्यु और विनाश के रूप में महाकाल) काल का अर्थ "मृत्यु" या "मृत्यु का लाने वाला" भी है। महाकाल के रूप में, वह परम और पूर्ण संहारक हैं। अस्तित्व में जन्मी हर चीज - हर प्राणी, हर ग्रह, हर तारा, यहां तक कि स्वयं देवता भी - अंततः काल के अधीन हैं और उनके द्वारा निगल लिए जाएंगे। यह क्षय, विघटन और अंतिम विनाश की अपरिहार्य प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करता है जो सभी प्रकट रूपों में निहित है। वह सभी भ्रमों का अंत करने वाले हैं, वह जो जीवन के सभी नाटकों पर अंतिम पर्दा डालते हैं।

परोपकारी संहारक (विरोधाभास) "महान संहारक" होने के भयानक पहलू के बावजूद, यह विनाश दुर्भावनापूर्ण नहीं है। यह ब्रह्मांडीय चक्र में एक आवश्यक कार्य है, जो नए के लिए रास्ता बनाने के लिए पुराने को साफ करता है, और अंततः व्यक्तिगत आत्माओं के लिए मुक्ति (मोक्ष) की ओर ले जाता है। वह अज्ञान, अहंकार और पृथक अस्तित्व के भ्रम को नष्ट करते हैं, इस प्रकार आध्यात्मिक प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। भक्त के लिए, महाकाल का सम्मान करना जीवन की क्षणभंगुर प्रकृति की स्वीकृति और मृत्यु के भय से परे परम सत्य को गले लगाना है।

प्रतीकवाद और प्रतिमा विज्ञान महाकाल को अक्सर गहरे रंग के साथ चित्रित किया जाता है, कभी-कभी काला (उस शून्य का प्रतीक जिससे सृष्टि उत्पन्न होती है और जिसमें वह लौटती है, और रंग और रूप से परे उनकी सर्वव्यापी प्रकृति), कई भुजाएँ, भयानक दाँत और खोपड़ियों की माला, जो समय और मृत्यु के स्वामी के रूप में उनकी भूमिका पर और जोर देती है। वह दिव्य की भयानक फिर भी अंततः मुक्तिदायक शक्ति का प्रतीक हैं।

528. कलिप्रियाय

कलियुग, अथवा झगड़ों के प्रिय को नमन।

विस्तार : कालिप्रियाय नाम 'कालि' और 'प्रिय' का एक यौगिक है, जो भगवान शिव से, विशेष रूप से उनके भयंकर भैरव रूप में, जुड़े होने पर एक गहरा और बहुस्तरीय महत्व प्रकट करता है।

कलियुग से प्रेम करने वाले कालिप्रियाय का अर्थ "वह जो कलियुग से प्रेम करता है" हो सकता है। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, कलियुग चार युगों में से वर्तमान और अंतिम है, जिसकी विशेषता आध्यात्मिक पतन, संघर्ष, पाखंड और धर्म में कमी है। भैरव ऐसे युग से "प्रेम" क्यों करेंगे? • धर्म का पतन और भैरव की भूमिका: कलियुग के दौरान, मनुष्य अपनी आध्यात्मिक प्रकृति के प्रति कम जागरूक हो जाते हैं, और भौतिकवाद, संघर्ष और अज्ञानता प्रबल होती है। भैरव, धर्म के एक भयंकर संरक्षक के रूप में, अक्सर तब अधिक बलपूर्वक प्रकट होते हैं जब धर्म अपने निम्नतम स्तर पर होता है। वह अधर्म (अन्याय) के परम दंडदाता हैं और इस प्रकार कलियुग का प्रबंधन या उसे समाप्त करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। उनका "प्रेम" पीड़ा में आनंद का नहीं है, बल्कि चीजों को उनके निष्कर्ष पर लाने की आवश्यकता की एक गहरी ब्रह्मांडीय जागरूकता है। • नवीनीकरण के लिए विनाश: कलियुग तीव्र विनाश का काल है, न केवल भौतिक, बल्कि आध्यात्मिक भी। भैरव ब्रह्मांडीय विनाश का प्रतीक हैं, जो हमेशा पुनर्निर्माण का अग्रदूत होता है। वह इस युग से "प्रेम" करते हैं क्योंकि यह दिव्य के विनाशकारी पहलू को शुद्ध करने और सृजन के एक नए चक्र (सत्ययुग) के लिए जमीन तैयार करने का अंतिम अवसर प्रदान करता है। वह उस विघटन की देखरेख करते हैं जो अनिवार्य रूप से नवीनीकरण की ओर ले जाता है।

कलह और संघर्ष से प्रेम करने वाले 'कालि' की एक और व्याख्या "कलह" या "संघर्ष" है। इस अर्थ में, कालिप्रियाय का अर्थ "वह जो कलह से प्रेम करता है" है, या अधिक सटीक रूप से, "वह जो संघर्षों की अध्यक्षता करता है और उन्हें नियंत्रित करता है।" • कलह के स्वामी: शिव के भयंकर रूप के रूप में, भैरव कलह या अराजकता से विचलित नहीं होते हैं; बल्कि, वह परम स्वामी हैं जो इसे नेविगेट, नियंत्रित और वश में कर सकते हैं। वह सभी प्रकार के संघर्षों में मौजूद हैं - चाहे वह आंतरिक कलह हो, अंतर-व्यक्तिगत झगड़े हों, या ब्रह्मांडीय युद्ध हों - अंततः संतुलन या समाधान लाने के लिए। • संघर्षों का नाश करने वाले: विरोधाभासी रूप से, "संघर्षों के स्वामी" होने का अर्थ यह भी है कि वह अपने भक्तों के लिए संघर्षों के परम नाश करने वाले हैं। भैरव का आह्वान करके, व्यक्ति आंतरिक और बाहरी विवादों को सुलझाने, विरोधियों पर काबू पाने और अराजकता से व्यवस्था लाने के लिए उनकी शक्ति चाहता है। वह वह हैं जो सभी विवादों को सुलझा सकते हैं, अक्सर निर्णायक और बलपूर्वक कार्रवाई के माध्यम से।

देवी काली से संबंध भयंकर देवी काली (भैरव की स्त्री समकक्ष, जिन्हें कभी-कभी भैरवी भी कहा जाता है) से संबंध पर विचार करना भी आवश्यक है। प्रिय का अर्थ "प्रिय" भी होता है। इस संदर्भ में, कालिप्रियाय का अर्थ "काली के प्रिय" हो सकता है। यह महाकाली की अंधेरी, भयंकर और परिवर्तनकारी ऊर्जाओं के साथ उनके जुड़ाव को उजागर करता है। भैरव और काली दोनों ही परम

विनाशकारी शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं जो आत्मा को जन्म और मृत्यु के चक्रों से मुक्त करती है, भ्रम और अहंकार को दूर करती है। उनका जुड़ाव परम समय और विनाश के अवतार के रूप में उनकी साझा प्रकृति पर जोर देता है।

529. महावटवे

महान वटवृक्ष स्वरूप, ब्रह्मांड के अक्ष को नमन।

विस्तार : महा (महान) और वट (वटवृक्ष) से व्युत्पन्न नाम महावटवे, ब्रह्मांडीय वटवृक्ष को संदर्भित करता है, जो हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान और आध्यात्मिकता में एक गहरा प्रतीक है। यह भगवान शिव को सार्वभौमिक अक्ष, समस्त अस्तित्व के पालक और परम आश्रय के रूप में दर्शाता है।

ब्रह्मांडीय वटवृक्ष (वट वृक्ष) वटवृक्ष (फिकस बेंगालेंसिस) भारत में अपने विशाल आकार, दीर्घायु, फैली हुई शाखाओं और हवाई जड़ों के लिए पूजनीय है जो नीचे उतरकर नए तने बन जाती हैं, जिससे एक ही पेड़ से पूरा जंगल बन जाता है। यह विकास पैटर्न इसे ब्रह्मांड की अनंत, विस्तृत और आत्मनिर्भर प्रकृति के लिए एक शक्तिशाली रूपक बनाता है। इस संदर्भ में, महावटवे का अर्थ है कि भगवान शिव केवल ब्रह्मांड का एक हिस्सा नहीं हैं, बल्कि स्वयं ब्रह्मांड हैं - इसकी जड़, तना, शाखाएँ और पत्तियाँ। वह शाश्वत वृक्ष हैं जिसकी छाया में संपूर्ण सृष्टि आश्रय पाती है।

ब्रह्मांड का अक्ष (अक्ष) वटवृक्ष का केंद्रीय, अचल तना ब्रह्मांडीय अक्ष (अक्ष या मेरु) का प्रतीक है, जिसके चारों ओर सभी खगोलीय पिंड और क्षेत्र घूमते हैं। शिव, महावटवे के रूप में, अविचल केंद्र हैं, ब्रह्मांड के भीतर सभी गति और स्थिरता के धुरी हैं। वह सृष्टि, संरक्षण और संहार के निरंतर चक्रों के बीच स्थिर बिंदु हैं।

समस्त अस्तित्व के पालक जैसे वटवृक्ष अनगिनत जीवों को आश्रय, भोजन और जीवन प्रदान करता है, वैसे ही शिव महावटवे के रूप में सभी प्राणियों के परम पालक और रक्षक हैं। उनकी विशालता अस्तित्व के हर पहलू को समाहित करती है, सूक्ष्म तत्वों से लेकर विशाल आकाशगंगाओं तक। महान वटवृक्ष के रूप में उनका स्वरूप यह दर्शाता है कि सभी जीवन अपना सार और पोषण उनसे प्राप्त करते हैं।

परम आश्रय और ज्ञान का स्रोत दार्शनिक रूप से, महान वटवृक्ष परम ज्ञान (ज्ञान) के स्रोत का भी प्रतीक है। ऋषि और संत अक्सर वटवृक्ष के नीचे ध्यान करते हैं, ज्ञान की तलाश में। शिव को महावटवे के रूप में पहचान कर, यह समझा जाता है कि वह सभी ज्ञान के आदिम स्रोत हैं और आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) चाहने वालों के लिए परम आश्रय हैं। वह संसार (जन्म और मृत्यु का चक्र) के झुलसा देने वाले सूर्य में शांति और सत्य की छाया प्रदान करते हैं।

530. महात्यागिने

सभी संन्यासियों में महानतम त्याग करने वाले को नमन।

विस्तार : महात्यागी नाम संस्कृत के पदों 'महा' और 'त्यागी' का एक यौगिक है, जिसका अर्थ है "महान संन्यासी" या "सर्वोच्च त्यागी"।

महा: यह उपसर्ग "महान", "सर्वोच्च", "उत्कृष्ट" या "विस्तृत" का अर्थ दर्शाता है।

त्यागी: यह शब्द 'त्याग' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "संन्यास", "परित्याग" या "बलिदान"। एक त्यागी वह होता है जो त्याग का अभ्यास करता है, एक संन्यासी।

सर्वोच्च संन्यासी यह विशेषण कालाभैरव के सभी सांसारिक संपत्ति, इच्छाओं और यहां तक कि अपनी दिव्य शक्तियों से भी परम वैराग्य को उजागर करता है, जब बात ब्रह्मांडीय भलाई की आती है। इसका अर्थ शक्ति का अभाव नहीं है, बल्कि उससे पूर्ण अनासक्ति है। कालाभैरव के रूप में, वे

सार्वभौमिक व्यवस्था और मुक्ति के लिए सभी रूपों और गुणों को त्यागने की पूर्ण इच्छा का प्रतीक हैं।

अनासक्ति का प्रतीक महान संन्यासी के रूप में, वे आध्यात्मिक साधकों के लिए एक सर्वोच्च उदाहरण के रूप में खड़े हैं। वे तपस्या और वैराग्य के उच्चतम रूप का प्रतीक हैं। उनका पूरा अस्तित्व, जिसे अक्सर न्यूनतम वस्त्रों या राख से लिपटा हुआ दर्शाया जाता है, अनित्यता और क्षणभंगुर भौतिक संसार से गहन अनासक्ति को दर्शाता है। यह संन्यास कमजोरी से नहीं, बल्कि सर्वोच्च शक्ति और ज्ञान से उत्पन्न होता है, यह समझते हुए कि सच्ची स्वतंत्रता अनासक्ति से आती है।

अहंकार का त्याग अधिक गहन रूप से, महात्यागी अहंकार (अहंकार) के परम त्याग को संदर्भित करता है - एक ऐसी अवस्था जहाँ व्यक्तिगत आत्मा सार्वभौमिक आत्मा में विलीन हो जाती है। यह अद्वैत वेदांत दर्शन का आधारशिला है, जहाँ 'अहं ब्रह्मास्मि' (मैं ब्रह्म हूँ) की प्राप्ति ही परम त्याग है - एक अलग स्वयं के भ्रम का परित्याग। कालाभैरव, शिव के एक पहलू के रूप में, ब्रह्मांडीय सत्य के प्रति इस पूर्ण और परम समर्पण का प्रतीक हैं, जो सभी द्वंद्वों और सीमाओं को पार करते हैं।

धर्म के लिए बलिदान कुछ संदर्भों में, त्याग का अर्थ बलिदान भी हो सकता है। महात्यागी के रूप में, उन्हें धर्म (धार्मिकता) की स्थापना और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के रखरखाव के लिए अंतिम बलिदान करने वाले के रूप में भी देखा जा सकता है, भले ही इसका अर्थ एक भयंकर और विस्मयकारी रूप धारण करना हो।

531. महाकोषाय

उस महान कोष को, जो वास्तविकता को आच्छादित करने वाला आवरण है, नमन।

विस्तार : महाकोषाय नाम एक गहन दार्शनिक शब्द है, जो महा (महान) और कोष (आवरण, खजाना, या आंतरिक परत) से बना है। यह शब्द उपनिषद के पाँच कोषों, या आवरणों की अवधारणा में गहराई से उतरता है, जो स्वयं (आत्मा) को ढँकते हैं।

वेदांत में पाँच कोष वेदांत दर्शन में, मानव व्यक्तित्व को पाँच संकेंद्रित परतों या "आवरणों" से बना बताया गया है जो सच्चे स्वयं (आत्मा) को अस्पष्ट करते हैं। ये हैं: 1. अन्नमय कोष: भौतिक आवरण (भोजन से बना शरीर)। 2. प्राणमय कोष: प्राण ऊर्जा का आवरण (जीवन शक्ति, श्वास)। 3. मनोमय कोष: मानसिक आवरण (मन, इंद्रियाँ, भावनाएँ)। 4. विज्ञानमय कोष: बौद्धिक आवरण (बुद्धि, विवेक, ज्ञान)। 5. आनंदमय कोष: आनंद का आवरण (कारण शरीर, स्वयं के सबसे करीब)।

वास्तविकता को समाहित करना कालभैरव को "महाकोष" कहने का अर्थ है कि वे इन परतों में से किसी एक तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि वे "महान कोष" हैं जो इन सभी को समाहित करते हैं। वे परम वास्तविकता हैं जो इन आवरणों से पहले भी हैं और इनमें व्याप्त भी हैं, इनके भीतर और परे का सार हैं। वे परम खजाना हैं जिसे तब खोजा जाता है जब इन सभी परतों को पार कर आत्मा को महसूस किया जाता है।

महान खजाना वैकल्पिक रूप से, कोष का अर्थ "खजाने की पेटी" या "भंडार" भी हो सकता है। इस अर्थ में, कालभैरव वह "महान खजाना" हैं जिससे सभी अस्तित्व उत्पन्न होते हैं और जिसमें अंततः वापस लौटते हैं। यह खजाना भौतिक धन नहीं है बल्कि असीम आध्यात्मिक ज्ञान, शक्ति और आनंद है जो परम वास्तविकता को परिभाषित करता है। वे ब्रह्मांड का परम स्रोत और छिपा हुआ धन हैं।

आंतरिक गर्भगृह रूपक रूप से, वे सबसे आंतरिक या सबसे बड़ा "आवरण" हैं जो अंततः स्वयं की सच्ची प्रकृति को प्रकट करता है, एक बार जब सभी अनुभवजन्य परतें हटा दी जाती हैं। वे आधार हैं, मौलिक आवरण जो अस्तित्व के ताने-बाने को धारण और परिभाषित करता है, सबसे स्थूल भौतिक

रूपों से लेकर चेतना की सबसे सूक्ष्म अवस्थाओं तक।

532. महागतये

जो अस्तित्व का सर्वोच्च और परम लक्ष्य हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : महागतये नाम कालभैरव का एक गहन वर्णन है, जो "महा" (महान, सर्वोच्च, परम) को "गति" (लक्ष्य, गंतव्य, मार्ग, अवस्था, आश्रय) के साथ जोड़ता है।

अस्तित्व का परम लक्ष्य महागति का शाब्दिक अर्थ है "महान या परम लक्ष्य, गंतव्य या आश्रय।" आध्यात्मिक दर्शन के संदर्भ में, विशेष रूप से अद्वैत वेदांत और शैव धर्म में, यह मुक्ति की उच्चतम अवस्था, मोक्ष या कैवल्य को संदर्भित करता है। कालभैरव, महागति के रूप में, केवल एक देवता नहीं हैं जो इस लक्ष्य की ओर ले जाते हैं, बल्कि वे स्वयं लक्ष्य हैं। वे अंतिम सत्य, अस्तित्व की परम अवस्था का प्रतीक हैं, जहाँ सभी द्वैत समाप्त हो जाते हैं और व्यक्तिगत आत्मा (जीवात्मा) सर्वोच्च आत्मा (परमात्मा) के साथ अपनी पहचान का अनुभव करती है।

सर्वोच्च मार्ग गति का अर्थ मार्ग या तरीका भी हो सकता है। इस अर्थ में, कालभैरव वह सर्वोच्च मार्ग हैं जिसके माध्यम से आध्यात्मिक साधक मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। वे वास्तविकता के सच्चे स्वरूप को प्रकट करते हैं और अपने भक्तों को सांसारिक अस्तित्व के चक्रव्यूह से आध्यात्मिक मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करते हैं। यह मार्ग अक्सर चुनौतीपूर्ण होता है, जिसमें कठोर अनुशासन, आत्म-अन्वेषण और समर्पण की विशेषता होती है, क्योंकि वे अज्ञान और भ्रम को निर्ममता से काटते हैं।

महान गंतव्य और आश्रय महागति के रूप में, वे परम आश्रय हैं जहाँ सभी दुख, भय और पुनर्जन्म का चक्र (संसार) समाप्त हो जाते हैं। उन लोगों के लिए जो सांसारिक दुनिया से सांत्वना और मुक्ति चाहते हैं, वे एक अंतिम, अटूट अभयारण्य प्रदान करते हैं। यह गंतव्य कोई भौतिक स्थान नहीं है, बल्कि चेतना की एक अवस्था है - शुद्ध जागरूकता, आनंद और अद्वैत की अवस्था। वे इस परम धाम तक पहुँच प्रदान करते हैं, अन्य सभी छोटे लक्ष्यों या अस्थायी स्वर्गों को पार करते हुए।

लक्ष्य के मार्ग में आने वाली बाधाओं का नाश करने वाले परम लक्ष्य के रूप में उनकी भूमिका में निहित है बाधाओं (विघ्नेश) को दूर करने वाले के रूप में उनका कार्य जो प्राणियों को इस लक्ष्य तक पहुँचने से रोकते हैं। वे उग्र पहलू हैं जो अज्ञान, कर्म और आत्म-साक्षात्कार के सभी अवरोधों को नष्ट करते हैं, इस प्रकार महागति की यात्रा को सुगम बनाते हैं।

533. शिखण्डिने

मोर पंख को अपने मुकुट में धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : शिखंडी या शिखंडिने नाम शिव को संदर्भित करता है, विशेष रूप से उनके भयंकर भैरव स्वरूप में, "वह जो अपनी शिखा (शिखा) में मोर पंख धारण करता है।" जबकि अक्सर भगवान कृष्ण से जुड़ा होता है, यह कल्पना कुछ परंपराओं में शिव के लिए भी महत्वपूर्ण प्रतीकात्मकता रखती है।

मोर पंख का प्रतीकवाद (Symbolism of the Peacock Feather)

मोर (The Peacock): हिंदू पौराणिक कथाओं में, मोर एक बहुस्तरीय प्रतीक है।

• सौंदर्य और अनुग्रह (Beauty and Grace): यह सौंदर्य, अनुग्रह, प्रेम और राजसीता का प्रतिनिधित्व करता है। • अमरता और नवीनीकरण (Immortality and Renewal): मोर का वार्षिक पंख झड़ना और उसके शानदार पंखों का फिर से उगना नवीनीकरण, पुनरुत्थान और अमरता के चक्रों का प्रतीक है। • विषों का विनाश (Destruction of Poisons): मोर सांपों को खाने के लिए जाने जाते हैं, जो विषों को बेअसर करने और जहरीली नकारात्मकताओं को दूर करने की उनकी क्षमता का प्रतीक है। यह पहलू बुराई के संहारक और ब्रह्मांड को बचाने के लिए हलाहल

विष पीने वाले के रूप में शिव की भूमिका के साथ दृढ़ता से जुड़ा हुआ है। • मानसिक क्षमताएं (Psychic Abilities): मोर के पंख पर बनी "आंखें" अक्सर आध्यात्मिक दृष्टि, उच्च चेतना और सर्वज्ञता से जुड़ी होती हैं।

शिव का मुकुट (शिखा) (Shiva's Crest (Shikha))

"शिखा" या मुकुट सिर पर पहने जाने वाले केश या सजावटी तत्व को संदर्भित करता है। भैरव के रूप में शिव के लिए, अपने मुकुट में मोर पंख धारण करना दर्शाता है:

• अज्ञान और अहंकार पर विजय (Victory Over Ignorance and Ego): मोर पंख धारण करके, शिव न केवल प्राकृतिक विषों और नकारात्मक शक्तियों पर, बल्कि अज्ञान (अविद्या) और अहंकार (अहंकार) के विष पर भी अपनी पूर्ण महारत का प्रतीक हैं। जैसे मोर सांपों का उपभोग करता है, वैसे ही शिव भौतिक दुनिया के भ्रमों का उपभोग करते हैं और उनसे परे जाते हैं। • संरक्षण और परोपकार (Protection and Benevolence): यद्यपि भैरव भयंकर हैं, उनका मोर पंख उनके सुरक्षात्मक स्वभाव को इंगित करता है। वह अपने भक्तों को सभी बुराइयों, आंतरिक और बाहरी, से बचाता है, उनके नकारात्मक कर्मों को बेअसर करता है और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। • ब्रह्मांडीय लालित्य और संप्रभुता (Cosmic Elegance and Sovereignty): अपने भयानक रूपों में भी, शिव दिव्य महिमा और ब्रह्मांडीय लालित्य का एक तत्व बनाए रखते हैं। मोर पंख उनकी उपस्थिति को बढ़ाता है, ब्रह्मांड पर उनकी निर्विवाद संप्रभुता का प्रतीक है। • कार्तिकेय के साथ संबंध (Association with Kartikeya): मोर भगवान कार्तिकेय (मुरुगा), शिव के पुत्र का वाहन है। मोर पंख धारण करके, शिव सूक्ष्म रूप से अपनी दिव्य वंशावली और शिव परिवार की अंतर्संबंधता को भी स्वीकार करते हैं।

534. कवचिने

उन को नमन जो सदैव दिव्य कवच से सुरक्षित रहते हैं।

विस्तार : 'कवचिने' नाम संस्कृत शब्द 'कवच' से लिया गया है, जिसका अर्थ है कवच, ढाल या सुरक्षात्मक आवरण, और प्रत्यय 'इने' का अर्थ है धारण करना या संपन्न होना। इस प्रकार, कवचिने का अर्थ है "वह जो कवच धारण करता है" या "वह जो कवचधारी है।"

दिव्य कवच (Divine Armor) कालभैरव के संदर्भ में, यह कोई सांसारिक भौतिक कवच नहीं है, बल्कि एक दिव्य, गूढ़ और प्रतीकात्मक कवच है। यह कवच हानि, नकारात्मकता और विनाश से पूरी तरह से अप्रभावित रहने की स्थिति को दर्शाता है। यह उनकी अंतर्निहित, अजेय शक्ति और आत्म-सुरक्षा का प्रतिनिधित्व करता है। मनुष्यों के विपरीत जो सुरक्षा के लिए कवच पहनते हैं, कालभैरव का कवच उनके अस्तित्व का एक आंतरिक हिस्सा है, जो उनकी सर्वोच्च अजेयता को प्रदर्शित करता है।

सभी बुराइयों से सुरक्षा (Protection Against All Evils) यह कवच ब्रह्मांड के भीतर सभी प्रकार की बुराई, अधर्म और विनाशकारी शक्तियों के विरुद्ध एक अभेद्य ढाल का प्रतीक है। यह धर्म और ब्रह्मांड के परम रक्षक के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है। उनके भक्तों के लिए, उन्हें कवचिने के रूप में आह्वान करने का अर्थ है उनकी दिव्य सुरक्षा की तलाश करना, एक आध्यात्मिक कवच जो उन्हें बाहरी खतरों और आंतरिक कमजोरियों दोनों से बचाता है।

अभेद्यता का प्रतीक (Symbol of Invulnerability) कवचिने कालभैरव की पूर्ण अभेद्यता और राक्षसी शक्तियों तथा बाधाओं के विरुद्ध दुर्जेय संरक्षक के रूप में उनकी स्थिति को रेखांकित करता है। जिस प्रकार एक योद्धा का कवच उन्हें युद्ध में निडर बनाता है, उसी प्रकार कालभैरव का दिव्य

कवच उनकी निडरता और किसी भी विरोध को सहजता से दूर करने की उनकी क्षमता को दर्शाता है। इसका तात्पर्य यह भी है कि वे उन लोगों को आध्यात्मिक सुरक्षा का यही गुण प्रदान करते हैं जो उनके प्रति समर्पण करते हैं।

रूपकात्मक सुरक्षा (Metaphorical Protection) रूपकात्मक रूप से, यह कवच उनके पूर्ण और संपूर्ण ज्ञान (ज्ञान कवच) का भी प्रतिनिधित्व कर सकता है जो उन्हें माया के भ्रम और सीमाओं से बचाता है, और उनकी पूर्ण अनासक्ति जो उन्हें सांसारिक द्वंद्वों के प्रभाव से बचाती है।

535. शूलिने

शक्तिशाली त्रिशूल (शूल) धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : शूलिने (शूलिनी) नाम उस एक को संदर्भित करता है जो शाश्वत रूप से "शूल" या त्रिशूल धारण करता है, जो भगवान शिव और उनके भयंकर रूपों, जिसमें भैरव भी शामिल हैं, से जुड़ा एक शक्तिशाली और प्रतिष्ठित प्रतीक है।

त्रिशूल (शूल): शक्ति और प्रभुत्व का प्रतीक शूल केवल एक हथियार नहीं है; यह ब्रह्मांडीय अस्तित्व और आध्यात्मिक शक्ति के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करने वाला एक गहरा प्रतीक है।

त्रिगुणों पर प्रभुत्व शूल के तीन शूल शास्त्रीय रूप से प्रकृति के तीन गुणों (सत्त्व, रजस और तमस) का प्रतीक हैं: सत्त्व (शुद्धता, अच्छाई, ज्ञान), रजस (गतिविधि, जुनून, सृजन), और तमस (अज्ञान, अंधकार, विनाश)। शूल धारण करके, शिव (और उनके प्रकट रूप में भैरव) इन मूलभूत शक्तियों पर अपना पूर्ण प्रभुत्व प्रदर्शित करते हैं जो भौतिक संसार को नियंत्रित करती हैं। वह उन्हें पार करते हैं और नियंत्रित करते हैं, जो उनकी सर्वोच्च अनासक्ति और सभी सृजन, संरक्षण और विघटन पर उनकी सर्वशक्तिमत्ता को इंगित करता है।

समय पर नियंत्रण (त्रिकाल) तीन शूल समय के तीन पहलुओं (त्रिकाल) का भी प्रतिनिधित्व कर सकते हैं: भूत, वर्तमान और भविष्य। शूलिन के रूप में, भैरव समय के स्वामी हैं, इसकी बाधाओं से परे मौजूद हैं, फिर भी इसके प्रवाह और सभी प्राणियों पर इसके प्रभाव को नियंत्रित करते हैं।

अज्ञान और बुराई का विनाश शूल अज्ञान, भ्रम और सभी प्रकार की बुराई को नष्ट करने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक दुर्जेय हथियार है। यह माया के पर्दे को भेदता है और नकारात्मक ऊर्जाओं का उन्मूलन करता है, उन लोगों को मुक्ति प्रदान करता है जो उसमें शरण लेते हैं। भैरव के लिए, शूल का भेदन कर्म बंधनों और आसक्तियों को तोड़ने का एक प्रतीकात्मक कार्य है जो प्राणियों को आवागमन के चक्र में फंसाए रखते हैं।

तपस्या और शक्ति का प्रतीक त्रिशूल तपस्वियों (संन्यासियों) का एक पारंपरिक उपकरण भी है, जो सांसारिक बंधनों के उनके त्याग और आध्यात्मिक प्राप्ति की उनकी केंद्रित खोज का प्रतीक है। शूलिनी इस बात का भी प्रतीक है कि भैरव का तपस्वी और शक्तिशाली स्वभाव है।

इसलिए, शूलिने नाम भैरव को ब्रह्मांडीय शक्ति के परम धारक के रूप में पूजता है, जो सभी मूलभूत शक्तियों को पार करते हैं और नियंत्रित करते हैं, सभी बुराई और अज्ञान को पराजित करते हैं, और प्राणियों को मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करते हैं। यह उनकी दुर्जेय शक्ति और अस्तित्व पर उनके दिव्य अधिकार का प्रतिनिधित्व करता है।

536. जटिने

जिनके जटाएँ हैं, जो उनकी तपस्वी शक्ति का प्रतीक है, उन्हें नमन।

विस्तार : जटिने (Jaṭine) नाम उस एक को संदर्भित करता है जिसके पास "जटा" या उलझे हुए बालों की लटें हैं। यह दिखने में साधारण शारीरिक विशेषता हिंदू परंपराओं में, विशेष रूप से तपस्वियों और शिव जैसे देवताओं के लिए, गहराई से प्रतीकात्मक है।

तपस्या और वैराग्य का प्रतीक जटाएँ एक तपस्वी (साधु या योगी) का एक शास्त्रीय प्रतीक हैं जिसने सांसारिक जीवन का त्याग कर दिया है। वे कठोर तपस्या (तपस्या), भौतिक सुखों के प्रति उदासीनता और आध्यात्मिक प्रयास के लिए समर्पित जीवन का संकेत हैं। काल भैरव के लिए, यह अत्यधिक तप और वैराग्य से प्राप्त उनकी परम आध्यात्मिक शक्ति को दर्शाता है।

ब्रह्मांडीय शक्तियों का भंडार शिव की प्रतिमा विज्ञान में, उनकी जटाएँ केवल उलझे हुए बाल नहीं हैं; उन्हें ब्रह्मांडीय शक्तियों का निवास स्थान माना जाता है। सबसे प्रसिद्ध रूप से, गंगा नदी स्वर्ग से बहती है और पृथ्वी पर उतरने से पहले शिव की जटा में समा जाती है, जिससे उसकी विनाशकारी शक्ति रुक जाती है। यह इंगित करता है कि भैरव, शिव के एक रूप के रूप में, विशाल ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं को समाहित और नियंत्रित करते हैं।

बिना कटे और पवित्र बाल कई आध्यात्मिक परंपराओं में बिना कटे बाल पवित्रता, शक्ति और दिव्य या आदिम ऊर्जा से अटूट संबंध का प्रतिनिधित्व करते हैं। जटाओं की उलझी हुई प्रकृति आगे सांसारिक व्यर्थता से परे होने की स्थिति को दर्शाती है, एक कच्ची और अनियंत्रित आध्यात्मिक शक्ति जो पारंपरिक मानदंडों से परे है।

भयंकर और अनियंत्रित प्रकृति जबकि कभी-कभी शांत तपस्या का प्रतीक होता है, भैरव पर, जटाएँ उनके भयंकर और अनियंत्रित स्वरूप में भी योगदान करती हैं। वे उनकी आदिम शक्ति, सामाजिक सम्मेलनों से उनकी स्वतंत्रता और सर्वोच्च योगी और भयानक संहारक दोनों होने की उनकी क्षमता को रेखांकित करते हैं। यह गुण आध्यात्मिक अनुशासन और कच्ची, ब्रह्मांडीय शक्ति दोनों के अंतिम अवतार के रूप में उनकी पहचान को पुष्ट करता है।

537. मुंडिने

मुंडित सिर वाले, जो पूर्ण वैराग्य का प्रतीक हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : मुण्डिने (Muṇḍine) नाम उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जिसका सिर मुंडा हुआ (मुण्ड) है। यह दिखने में सरल गुण शैव धर्म की परंपराओं और विशेष रूप से भैरव के संदर्भ में गहरा आध्यात्मिक और प्रतीकात्मक महत्व रखता है।

वैराग्य और तपस्या सिर मुंडवाने का कार्य कई तपस्वी परंपराओं, विशेषकर भारत में, पूर्ण वैराग्य (संन्यास) का एक प्राचीन और शक्तिशाली प्रतीक है। यह सांसारिक आसक्तियों, अहंकार, घमंड और सामाजिक पहचान को त्यागने का प्रतीक है। मुंडा हुआ सिर अपनाकर, एक संन्यासी भौतिक संसार से अपनी विरक्ति और आध्यात्मिक मार्ग के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की घोषणा करता है। कालभैरव के लिए, यह उनके परम वैराग्य का प्रतीक है, भले ही वे ब्रह्मांडीय लीला का संचालन करते हों। वे सांसारिक चिंताओं से परे हैं, जो पूर्ण वैराग्य को दर्शाता है।

मृत्यु और पुनर्जन्म कुछ परंपराओं में, सिर मुंडवाना किसी के पिछले जीवन और पहचान के लिए एक अनुष्ठानिक मृत्यु का भी प्रतीक हो सकता है, जिसके बाद एक नए आध्यात्मिक अस्तित्व में पुनर्जन्म होता है। कालभैरव, काल और मृत्यु के स्वामी के रूप में, विनाश और पुनर्जनन की इस चक्रीय प्रक्रिया का प्रतीक हैं। उनका मुंडा हुआ सिर जन्म और मृत्यु के चक्र से परे होने की स्थिति का प्रतिनिधित्व कर सकता है, फिर भी वह वह कारक भी है जिसके माध्यम से यह चक्र अन्य सभी प्राणियों के लिए संचालित होता है।

शुद्धता और सादगी मुंडा हुआ सिर अत्यधिक शुद्धता और सादगी का भी प्रतीक है। यह अलंकरण और किसी भी बाहरी विकर्षण को हटा देता है, पूरी तरह से आंतरिक आध्यात्मिक स्थिति पर ध्यान केंद्रित करता है। यह भैरव की भूमिका के अनुरूप है जो भ्रम को दूर करते हैं और भक्तों को शुद्ध सत्य की ओर ले जाते हैं।

योगिक परंपरा के साथ पहचान कई योगी और सिद्ध (सिद्ध पुरुष) भी तपस्यापूर्ण अभ्यासों और परम सत्य की खोज के प्रति अपनी भक्ति के प्रतीक के रूप में मुंडा हुआ सिर रखते थे। "मुण्डिने" होने के नाते, कालभैरव को सर्वोच्च तपस्वी और योगी, आदर्श संन्यासी के रूप में चित्रित किया गया है जो आध्यात्मिक अनुशासन के उच्चतम सिद्धांतों का प्रतीक हैं।

"कापालिक" पहलू कुछ तांत्रिक परंपराओं में, विशेष रूप से भैरव से जुड़े कापालिक संप्रदाय में, अनुयायी कभी-कभी भैरव के स्वरूप के पहलुओं की नकल करते थे, जिसमें अन्य तपस्यापूर्ण अभ्यासों और विशिष्ट अनुष्ठानिक वस्तुओं को पहनने के साथ सिर मुंडवाना (या जटाएँ रखना) शामिल हो सकता था। जबकि भैरव परम देवता हैं, यह गुण उन्हें भक्ति और आध्यात्मिक अभ्यास के चरम और अपरंपरागत रूपों से जोड़ता है।

संक्षेप में, कालभैरव के लिए मुण्डिने होना उनकी परम संन्यासी के रूप में भूमिका पर जोर देता है, जो विरक्त फिर भी सर्वशक्तिमान हैं, जो शुद्धता, तपस्या और अहंकार तथा सांसारिक चिंताओं पर विजय का प्रतीक हैं।

538. कुण्डलिने

कुंडल पहनने वाले अथवा कुण्डलिनी शक्ति के स्वरूप को नमन।

विस्तार : कुण्डलिने नाम प्रतीकात्मक अर्थों से समृद्ध है, जो मुख्य रूप से भगवान भैरव को दो शक्तिशाली अवधारणाओं से जोड़ता है: कान के आभूषण पहनना और कुण्डलिनी नामक गूढ़ आध्यात्मिक ऊर्जा।

कुंडल धारण करने वाले (कुंडल-धारण) कुण्डलिने की सबसे सीधी व्याख्या है "जो कुंडल धारण करते हैं," जो कान के आभूषण या कुंडल हैं। प्रतीकवाद: हिंदू प्रतिमा विज्ञान में, कुंडल केवल सजावटी नहीं होते बल्कि गहरे प्रतीकात्मक होते हैं। पुरुष देवताओं और तपस्वियों के लिए, कुंडल अक्सर दर्शाते हैं: • संतुलन और सामंजस्य: दो कुंडल विभिन्न द्वंद्वों के बीच संतुलन का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं, जैसे शिव और शक्ति, पुरुष और प्रकृति, या सूर्य और चंद्रमा की ऊर्जाएँ। • ब्रह्मांडीय ज्ञान: वे कानों के माध्यम से दिव्य ज्ञान (श्रुति) के ग्रहण और अवतार का प्रतीक हो सकते हैं। • योगिक उपलब्धि: एक योगी के लिए, कुंडल, विशेष रूप से बड़े वाले, कानों के भेदन का भी संकेत दे सकते हैं, जो गंभीर तपस्या और उच्च स्तर की आध्यात्मिक प्राप्ति का प्रतीक है। भैरव के संदर्भ में, कुंडल धारण करना उनकी सर्वोच्च योगिक स्थिति और सभी विरोधी युग्मों पर उनकी महारत को दर्शाता है।

कुंडली सर्प शक्ति (कुण्डलिनी) कुण्डलिने की एक गहरी, अधिक गूढ़ व्याख्या कुण्डलिनी शक्ति को संदर्भित करती है, जो प्रत्येक व्यक्ति में रीढ़ के आधार पर कुंडलित अवस्था में स्थित आदिम ब्रह्मांडीय ऊर्जा है। व्युत्पत्ति: कुण्डलिनी शब्द का शाब्दिक अर्थ है "कुंडलित" या "वह जो कुंडलित है," जो कुंडल (कुंडली) से व्युत्पन्न है। भैरव कुण्डलिनी के स्वामी के रूप में: तांत्रिक परंपराओं में, भैरव इस शक्तिशाली आंतरिक आध्यात्मिक शक्ति के जागरण और नियंत्रण से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। वह केवल एक देवता नहीं हैं, बल्कि स्वयं चेतना (शिव) हैं जो कुण्डलिनी (शक्ति) को विभिन्न चक्रों से ऊपर उठने की अनुमति देते हैं, जिससे आध्यात्मिक जागरण और अंततः मुक्ति (मोक्ष) प्राप्त होती है। "वह जो कुण्डलिनी है": यह व्याख्या बताती है कि भैरव केवल कुण्डलिनी के स्वामी नहीं हैं, बल्कि एक अर्थ में, स्वयं कुण्डलिनी ऊर्जा हैं, या इसके जागरण के पीछे का प्रेरक सिद्धांत हैं। वह उस शक्तिशाली, परिवर्तनकारी शक्ति का प्रतीक हैं जिसे साधक के भीतर जागृत किया जा सकता है, जिससे एक गहरा आध्यात्मिक अनुभव और किसी के सच्चे दिव्य स्वरूप की प्राप्ति होती है। शिव और शक्ति का मिलन: कुण्डलिनी का जागरण सहस्रार चक्र में शिव के साथ शक्ति के मिलन की

यात्रा है। जब भैरव को कुण्डलिने के रूप में संबोधित किया जाता है, तो यह इस मिलन पर उनके परम नियंत्रण और अवतार का प्रतीक है, जो चेतना की अद्वैत अवस्था का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ व्यक्तिगत स्व सार्वभौमिक स्व के साथ विलीन हो जाता है।

संक्षेप में, भैरव को "कुण्डलिने" कहना उनके एक सिद्ध योगी के रूप में, ब्रह्मांडीय संतुलन के प्रतीक के रूप में, और आंतरिक आध्यात्मिक शक्ति के अंतिम स्रोत और स्वामी के रूप में उनकी स्तुति करता है जो ज्ञान की ओर ले जाती है।

539. मेघमालिने

बादलों की माला धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : मेघमालिनी नाम को दो घटकों में तोड़ा जा सकता है: मेघ और मालिनी।

• मेघ (Megha): यह "बादल" या "मेघ" को संदर्भित करता है। हिंदू प्रतिमा विज्ञान और काव्य में, बादल बहु-स्तरीय प्रतीक होते हैं। वे ब्रह्मांडीय जल, उर्वरता, पोषण और माया (भ्रम) की आवरण शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। गहरे, तूफानी बादल अक्सर परम शक्ति, सृष्टि या विनाश की आसन्न बाढ़ और देवत्व के दुर्जेय स्वरूप का प्रतीक होते हैं।

• मालिनी (Mālinī): "माला" से व्युत्पन्न, जिसका अर्थ है "माला" या "पुष्पहार"। इस प्रकार, मालिनी का अर्थ है "जो माला धारण करता है"।

ब्रह्मांडीय शक्ति से आच्छादित (Clothed in Cosmic Power) दृष्टिगत रूप से, यह नाम कालभैरव को बादलों से सुशोभित चित्रित करता है। यह ब्रह्मांडीय तत्वों और प्राकृतिक घटनाओं पर उनके प्रभुत्व का एक गहरा प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व है। वे केवल बादलों से ढके नहीं हैं; वे उन्हें एक आभूषण के रूप में धारण करते हैं, जो प्रकृति की शक्तियों पर उनकी पूर्ण महारत को दर्शाता है, विशेष रूप से आकाश, मौसम और वर्षा के चक्र से जुड़ी उन शक्तियों पर जो जीवन को बनाए रखती हैं।

वास्तविकता का आवरण (माया) (Veiler of Reality - Māyā) बादल माया की आवरण शक्ति का भी प्रतीक हैं, वह ब्रह्मांडीय भ्रम जो परम वास्तविकता को अस्पष्ट करता है। बादलों की माला धारण करके, कालभैरव को माया के स्वामी के रूप में चित्रित किया गया है - वह जो इसे न केवल बनाता और नियंत्रित करता है बल्कि इसे पार भी करता है। वह अपनी इच्छा से सत्य को प्रकट या छिपा सकते हैं, जो उपस्थिति और वास्तविकता पर उनकी पूर्ण संप्रभुता को इंगित करता है।

प्रलय और पोषण के प्रदाता (The Bringer of Deluge and Sustenance) गहरे बादल अक्सर तूफानों और बारिश के अग्रदूत होते हैं, जो विनाशकारी (प्रलय) और जीवनदायी (पोषण) दोनों हो सकते हैं। यह द्वैत कालभैरव के स्वरूप को दर्शाता है, जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था के भयंकर संहारक और परोपकारी पालक दोनों हैं। बादलों की उनकी माला सृष्टि, संरक्षण और विघटन के चक्रीय नृत्य में उनकी एजेंसी को दर्शाती है। वे ही हैं जो ब्रह्मांडीय विघटन (प्रलय) को आरंभ करते हैं और वे ही हैं जो नई सृष्टि के लिए जीवनदायी जल लाते हैं।

540. चक्रखड्गिने

चक्र और खड्ग (तलवार) से सुसज्जित (कलभैरव) को नमन।

विस्तार : चक्रखड्गिने नाम कालभैरव का एक शक्तिशाली वर्णन है, जो उनकी युद्ध-कौशल और बुराई के संरक्षक तथा संहारक के रूप में उनकी भूमिका को उजागर करता है। यह "चक्र" (डिस्कस), "खड्ग" (तलवार), और "-इन" प्रत्यय से बना एक यौगिक शब्द है जिसका अर्थ है 'धारण करने वाला' या 'से सुसज्जित'।

चक्र (डिस्कस) चक्र, विशेष रूप से सुदर्शन चक्र, मुख्य रूप से भगवान विष्णु से जुड़ा एक प्रतिष्ठित हथियार है, जो मन और ब्रह्मांडीय व्यवस्था का प्रतीक है। हालांकि, कालभैरव के साथ इसकी उपस्थिति दर्शाती है: • ब्रह्मांडीय अधिकार: चक्र काल के पहिये (कालचक्र) और सृष्टि, संरक्षण और विनाश के चक्र का प्रतिनिधित्व करता है। कालभैरव, काल के स्वामी के रूप में, लौकिक अस्तित्व पर इस ब्रह्मांडीय शक्ति का प्रयोग करते हैं। • सटीकता और गति: चक्र अपनी तेज़ी और अचूक लक्ष्य के लिए जाना जाता है, जो उस सटीकता का प्रतीक है जिसके साथ कालभैरव न्याय करते हैं और अपने भक्तों के लिए बाधाओं को दूर करते हैं। • दिव्य सुरक्षा: यह एक रक्षात्मक हथियार है जो बुराई को दूर करता है और धर्मपरायणों की रक्षा करता है, जो कालभैरव की एक संरक्षक के रूप में भूमिका का प्रतीक है। • प्रकाश और प्रदीप्ति: 'सुदर्शन' का अर्थ है 'शुभ दृष्टि' या 'प्रकाश की दृष्टि'। चक्र ज्ञान और अज्ञान के उन्मूलन का भी प्रतीक हो सकता है।

खड्ग (तलवार) खड्ग (तलवार) शक्ति, अधिकार और भ्रम तथा बाधाओं को काटने की क्षमता का एक सार्वभौमिक प्रतीक है। कालभैरव के संदर्भ में: • अज्ञान का विनाश: तलवार की तीक्ष्णता अज्ञान (अविद्या), भ्रम (माया), अहंकार और सभी आध्यात्मिक बाधाओं को काटने का प्रतीक है जो व्यक्ति को बांधती हैं। • न्याय का वितरण: यह दिव्य न्याय और दुष्टों को दंडित करने तथा धर्म को बनाए रखने के लिए आवश्यक निर्णायक कार्रवाई का प्रतिनिधित्व करता है। • अटूट संकल्प: तलवार अपने भक्तों की रक्षा करने और नकारात्मकता को खत्म करने में कालभैरव के दृढ़ और अटूट संकल्प को दर्शाती है। • विवेक: सत्य को असत्य से, अच्छे को बुरे से अलग करने की तलवार की क्षमता विवेक और ज्ञान का प्रतिनिधित्व करती है, जिससे भक्त आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकता है।

संयुक्त प्रतीकात्मकता एक साथ, चक्र और खड्ग काल और स्थान पर कालभैरव के परम अधिकार, बुराई के खिलाफ उनकी तीव्र और सटीक कार्रवाई, और मौलिक सत्य को प्रकट करने के लिए भ्रम को काटने की उनकी क्षमता पर जोर देते हैं। उन्हें पूरी तरह से सशस्त्र दर्शाया गया है, जो बाहरी और आंतरिक दोनों तरह की नकारात्मकता के सभी रूपों से लड़ने के लिए तैयार हैं, जिससे वे आध्यात्मिक मार्ग पर एक परम संरक्षक और मार्गदर्शक बन जाते हैं।

541. मालिने

दिव्य माला धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : मालिनि (Māline) नाम का अर्थ मालिनी (Mālinī) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "माला धारण करने वाला," "फूलों से सुसज्जित," या "जो माला पहनता है।" यह प्रतीत होने वाला सरल गुण, जब कालभैरव पर लागू होता है, तो इसका गहरा प्रतीकात्मक और दार्शनिक महत्व होता है।

दिव्य माला (माला) हिंदू प्रतीकवाद में माला (mālā) केवल सजावटी नहीं होती; यह एक पवित्र वस्तु है। • विजय और सम्मान का प्रतीक: माला पहनना विजय, सम्मान और संप्रभुता को दर्शाता है। कालभैरव के लिए, यह समय, मृत्यु और सभी नकारात्मक शक्तियों पर उनकी परम विजय का प्रतीक है। • ब्रह्मांडीय सृजन और विघटन का प्रतीक: माला एक अटूट वृत्त है, जो अस्तित्व के चक्रीय स्वभाव – सृजन, संरक्षण और विघटन – का प्रतिनिधित्व करती है। माला में प्रत्येक मनका या फूल एक सृजन, एक ब्रह्मांडीय युग (युग), या यहां तक कि व्यक्तिगत आत्माओं का प्रतिनिधित्व कर सकता है। कालभैरव, समय के स्वामी के रूप में, अपनी दिव्य शक्ति के माध्यम से इन्हें शाश्वत रूप से चक्रित करते हैं। • तांत्रिक ज्ञान का प्रतिनिधित्व (अक्षमाला): कुछ संदर्भों में, माला विशेष रूप से अक्षमाला (Akṣamālā) को संदर्भित करती है, जो मंत्रों का जाप करने के लिए उपयोग की जाने वाली मनकों की एक माला होती है। ये मनके अक्सर संस्कृत वर्णमाला (अक्षर) के प्रतीकात्मक होते हैं, जिन्हें सृजन और दिव्य ज्ञान के बीज ध्वनि (बीज मंत्र) माना जाता है। इसलिए, मालिनि यह सुझाव

देता है कि कालभैरव सभी दिव्य ध्वनियों, मंत्रों और उनके द्वारा प्रतिनिधित्व किए जाने वाले रहस्यमय ज्ञान (मंत्र शक्ति) के अवतार हैं। वह सभी तांत्रिक विद्याओं के स्रोत और स्वामी हैं। • खोपड़ी की माला से संबंध (मुंडमाला): यद्यपि स्पष्ट रूप से खोपड़ी की माला (मुंडमाला) के रूप में नहीं कहा गया है, यह व्याख्या भैरव जैसे उग्र देवताओं के लिए अत्यधिक प्रासंगिक है। खोपड़ी की माला मृत्यु पर उनके अतिक्रमण और महान संहारक (महाकाल) के रूप में उनकी भूमिका का प्रतीक है। प्रत्येक खोपड़ी एक पराजित अहंकार या अस्तित्व के एक चक्र का प्रतिनिधित्व करती है जो समाप्त हो गया है, जो जन्म और मृत्यु (संसार) के चक्र से मुक्ति (मोक्ष) प्रदान करने की उनकी शक्ति को याद दिलाता है।

सौंदर्य और भयावहता का मिश्रण यह नाम भैरव के विरोधाभासी स्वभाव को उजागर करता है, जो आध्यात्मिक अर्थों में भयावह और अत्यंत सुंदर/सजावटी दोनों हो सकते हैं। माला, जबकि सुंदर है, खोपड़ियों की माला भी हो सकती है, जो उनके उग्र पहलू और मृत्यु पर उनकी महारत पर जोर देती है।

आध्यात्मिक महत्व मालिनि होना यह दर्शाता है कि कालभैरव अस्तित्व, ज्ञान और ब्रह्मांडीय शक्ति के सार से सुसज्जित हैं। वह वही हैं जो समय और नियति के धागों को धारण करते हैं, जो प्रतीकात्मक रूप से उनके शानदार रूप के चारों ओर एक दिव्य माला में बुने हुए हैं।

542. मायाय

माया और ब्रह्मांडीय रचनात्मक शक्ति के स्वामी को नमन।

विस्तार : मायाय (Māyāyā) नाम भैरव को माया के परम स्वामी के रूप में संदर्भित करता है।

माया की अवधारणा माया (Māyā) हिंदू दर्शन में सबसे गहन और जटिल अवधारणाओं में से एक है। इसे अक्सर "भ्रम" के रूप में अनुवादित किया जाता है, लेकिन यह एक बहुत ही सीमित समझ है। अधिक सटीक रूप से, माया ब्रह्मांडीय रचनात्मक शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है जो घटनात्मक दुनिया को प्रकट करती है, जिससे सापेक्ष वास्तविक प्रतीत होता है। यह आवरण शक्ति है जो परम सत्य (ब्रह्म) को अस्पष्ट करती है और प्रक्षेपण शक्ति है जो ब्रह्मांड की विविधता और बहुलता का निर्माण करती है। अद्वैत वेदांत के संदर्भ में, माया अनिर्वचनीय (अनिर्वचनीय) है, न तो पूरी तरह से वास्तविक और न ही पूरी तरह से अवास्तविक।

माया के स्वामी के रूप में भैरव मायाय के रूप में संदर्भित होने से, भैरव को इस ब्रह्मांडीय रचनात्मक और भ्रामक शक्ति के स्रोत और नियंत्रक के रूप में पहचाना जाता है। 1. माया का प्रयोग करने वाला (मायावी): वह माया के अधीन नहीं है; बल्कि, वह ब्रह्मांड को प्रकट करने के लिए सक्रिय रूप से इसका उपयोग करता है। यह उसकी सर्वोच्च शक्ति को दर्शाता है, क्योंकि वह अपनी इच्छा से सभी रूपों और दिखावे को उत्पन्न और भंग कर सकता है। 2. ब्रह्मांड का निर्माता: माया वह ऊर्जावान सिद्धांत है जिसके माध्यम से अव्यक्त (निर्गुण ब्रह्म) व्यक्त (सगुण ब्रह्म) हो जाता है। माया के स्वामी के रूप में, भैरव ब्रह्मांड के परम निर्माता, पालक और संहारक हैं। 3. भ्रम का निवारण करने वाला: विरोधाभासी रूप से, जबकि वह माया का स्रोत है, वह वही है जो अपने भक्तों के लिए इसके आवरण को हटा सकता है। भैरव के वास्तविक स्वरूप को परम वास्तविकता के रूप में समझकर, व्यक्ति माया द्वारा बनाए गए भ्रमों को पार कर सकता है और अंतर्निहित सत्य को समझ सकता है। उसकी कृपा से, जीव (व्यक्तिगत आत्मा) जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) से मुक्त हो सकता है, जिसे माया द्वारा बनाए रखा जाता है।

यह नाम भैरव के पारलौकिक पहलू को रेखांकित करता है, यह दर्शाता है कि ब्रह्मांड की विशालता और जटिलता भी, अलगाव और द्वैत के अपने सभी अंतर्निहित भ्रमों के साथ, केवल उसके द्वारा रचित एक नाटक है। वह सूत्रधार है, और माया उसका दिव्य कठपुतली शो है।

543. महामनये

जो अस्तित्व का महान और अनमोल रत्न है, ऐसे भगवान कालभैरव को नमन।

विस्तार : महामणये (महामणि) नाम एक गहरा और काव्यात्मक विशेषण है, जो "महा" (महान, भव्य, उत्कृष्ट) और "मणि" (रत्न, नगीना, मोती, या जादुई गुणों वाला एक कीमती पत्थर) के संयोजन से बना है।

अस्तित्व का महान रत्न यह नाम कालभैरव को समस्त अस्तित्व का सर्वोच्च, सबसे कीमती और अमूल्य खजाना दर्शाता है। जिस प्रकार एक दुर्लभ और दोषरहित रत्न को उसकी सुंदरता, दुर्लभता और आंतरिक मूल्य के लिए संजोया जाता है, उसी प्रकार भैरव को ब्रह्मांड में मूल्यवान, सत्य और वास्तविक हर चीज का अंतिम स्रोत और सार माना जाता है। उनका अस्तित्व सबसे कीमती चीज है, जो मूल्य के अन्य सभी रूपों का आधार है।

शुद्धता और ज्ञान का प्रतीक रत्न, विशेष रूप से चमकदार रत्न, अक्सर शुद्धता, स्पष्टता और ज्ञान के प्रतीक होते हैं। महामणि के रूप में, कालभैरव वास्तविकता के शुद्ध, बेदाग सत्य का प्रतिनिधित्व करते हैं, अज्ञानता और भ्रम के अंधकार को दूर करते हैं। वह वह चमकदार प्रकाशस्तंभ हैं जो भक्तों को आध्यात्मिक जागृति और उनके सच्चे स्वरूप की प्राप्ति की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

वरदान देने वाले विभिन्न आध्यात्मिक परंपराओं में, एक "मणि" में अक्सर चमत्कारी शक्तियां होती हैं, जो इच्छाओं को पूरा करने में सक्षम होती हैं (जैसे चिंतामणि या कल्पवृक्ष)। कालभैरव को 'महामणि' कहकर, भक्त उनकी सभी आध्यात्मिक और भौतिक वरदानों को प्रदान करने, इच्छाओं को पूरा करने और मोक्ष (मुक्ति) प्रदान करने की शक्ति को स्वीकार करते हैं। वह उन लोगों के लिए अंतिम इच्छा पूरी करने वाले रत्न हैं जो उनमें शरण लेते हैं।

समस्त खजाने का सार भौतिक धन से परे, भैरव महामणि के रूप में आध्यात्मिक ज्ञान, अटूट भक्ति, आंतरिक शांति और परमात्मा के साथ मिलन के परम आनंद के धन का प्रतीक हैं। वह स्वयं के भीतर का खजाना हैं, जिसे खोजा जाना बाकी है, अपने स्वयं के अस्तित्व का अनमोल सार।

544. महेश्वसाय

महान धनुषधारी श्रेष्ठ धनुर्धर को नमन।

विस्तार : महेश्वसाय (Māheśvāsāya) नाम संस्कृत के शब्दों महा (महान) और इष्वास (धनुर्धर या धनुष) से बना है, जो ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जिसके पास एक शक्तिशाली धनुष है, और इस प्रकार वह एक महान धनुर्धर है। यह नाम कालभैरव की शक्ति और कार्य के एक महत्वपूर्ण पहलू को प्रकट करता है, जो शिव के विशेषणों और ब्रह्मांडीय भूमिकाओं के साथ समानताएं दर्शाता है।

शक्तिशाली धनुष (इष्वास) "शक्तिशाली धनुष" केवल पारंपरिक अर्थ में एक हथियार नहीं है, बल्कि अपार, अथाह शक्ति और ब्रह्मांडीय नियंत्रण का प्रतीक है। हिंदू प्रतिमा विज्ञान में, धनुष, विशेष रूप से शिव का पिनाक, विनाश की शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो पूरे ब्रह्मांडों को नष्ट कर सकता है। यह उस शक्ति का भी प्रतीक है जो सार्वभौमिक ऊर्जा को नियंत्रित और निर्देशित कर सकती है। कालभैरव के लिए, यह धनुष सृष्टि, संरक्षण और विघटन पर उनके पूर्ण नियंत्रण को दर्शाता है। उनका तीर, जब छोड़ा जाता है, तो अजेय होता है, जो उस दिव्य आदेश का प्रतिनिधित्व करता है जिसे चुनौती नहीं दी जा सकती।

महान धनुर्धर (महा इष्वास) "महान धनुर्धर" के रूप में, कालभैरव लक्ष्य निर्धारण और सटीकता के स्वामी हैं। इसका तात्पर्य अज्ञान (अविद्या), आसक्ति (राग) और अन्य नकारात्मक शक्तियों को नष्ट करने की उनकी क्षमता से है जो व्यक्तिगत आत्मा (जीव) को बांधती हैं। वे अपने न्याय (दंड) में

सटीक हैं और ब्रह्मांडीय कानून के अनुसार मुक्ति या दंड देने में त्वरित हैं। धनुर्धर का कौशल अटूट ध्यान और दिव्य इच्छा के अचूक निष्पादन का सुझाव देता है।

ब्रह्मांडीय शक्ति और नियंत्रण का प्रतीक यह नाम ब्रह्मांड में एक सक्रिय शक्ति के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है, न कि केवल एक निष्क्रिय पर्यवेक्षक के रूप में। वे ही हैं जो परम ब्रह्मांडीय हथियार धारण करते हैं, जो उनकी परम संप्रभुता को दर्शाता है। धनुष की प्रत्यंचा खींचने का कार्य उसकी रिहाई से पहले ब्रह्मांडीय ऊर्जा के तनाव का प्रतीक है, जिससे महत्वपूर्ण घटनाएं होती हैं, चाहे वे विनाशकारी हों या परिवर्तनकारी।

बाधाओं और शत्रुओं का नाश करने वाला भक्ति के संदर्भ में, महेश्वसाय (Māheśvāsāya) का अर्थ है कि वे ही हैं जो अपने भक्तों के मार्ग से सभी बाधाओं को कुशलतापूर्वक और शक्तिशाली रूप से दूर करते हैं। वे महान योद्धा हैं जो आंतरिक और बाहरी शत्रुओं से लड़ते हैं जो आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डालते हैं, उन लोगों के लिए विजय सुनिश्चित करते हैं जो उनमें शरण लेते हैं। यह विशेषण उन्हें शिव के युद्ध संबंधी पहलुओं के साथ जोड़ता है, जैसे कि जब उन्होंने त्रिपुरा का विनाश किया था।

545. महानन्दाय

जो परम, अनंत परमानंद के साकार रूप हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : महानंद नाम एक गहरा वर्णन है, जो दो संस्कृत शब्दों के संयोजन से बना है: महा, जिसका अर्थ "महान" या "सर्वोच्च" है, और आनंद, जिसका अर्थ "परमानंद," "खुशी," या "पूर्ण प्रसन्नता" है।

सर्वोच्च आनंद और पराकाष्ठा महानंद सर्वोच्च, असीम और शाश्वत आनंद की स्थिति को दर्शाता है जो सभी सांसारिक सुखों और दुखों से परे है। यह सामान्य खुशी नहीं है, जो क्षणभंगुर और बाहरी परिस्थितियों पर निर्भर करती है, बल्कि एक आंतरिक, अविराम आनंद है जो परम वास्तविकता का ही स्वभाव है। हिंदू दर्शन में, विशेष रूप से वेदांत में, सच्चिदानंद (अस्तित्व-चेतना-आनंद) को ब्रह्म, परम वास्तविकता का मूलभूत स्वभाव माना जाता है। कालभैरव, महानंद के रूप में, परम आध्यात्मिक अनुभव का प्रतिनिधित्व करते हुए, पूर्ण आनंद के इस पहलू को मूर्त रूप देते हैं।

समस्त आनंद का स्रोत वह ब्रह्मांड में समस्त आनंद का स्रोत और प्रतीक हैं। खुशी का हर पल, शांति का हर क्षण, अंततः इस सर्वोच्च, आनंदमय (आनंदपूर्ण) प्रकृति से उत्पन्न होता है। यह नाम बताता है कि सच्ची खुशी क्षणभंगुर दुनिया में नहीं, बल्कि दिव्य से अपने संबंध को महसूस करने से मिलती है, जो स्वाभाविक रूप से आनंदमय है।

मुक्ति और परम अवस्था आध्यात्मिक साधक के लिए, महानंद को प्राप्त करना अंतिम लक्ष्य है - मुक्ति (मोक्ष) की वह अवस्था जहाँ व्यक्तिगत आत्मा सर्वोच्च चेतना में विलीन हो जाती है, अनंत आनंद और स्वतंत्रता का अनुभव करती है। जब कोई कालभैरव को महानंद के रूप में स्वीकार करता है, तो यह परम आध्यात्मिक अनुभव और अस्तित्व की द्वैतता से परे स्थित गहन, शांतिपूर्ण अवस्था की पहचान को दर्शाता है। वह सच्ची और गहरी संतुष्टि चाहने वालों के लिए अंतिम आश्रय हैं।

546. महाचार्याय

श्रेष्ठतम और सबसे उत्तम आचार संहिता का पालन करने वाले (कालाभैरव) को नमन।

विस्तार : महाचाराय नाम कालभैरव का एक गहन वर्णन है, विशेष रूप से धार्मिक आचरण के परम उदाहरण के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है, एक ऐसी अवधारणा जो हिंदू नैतिक और आध्यात्मिक परंपराओं में गहराई से निहित है। यह महा और आचार शब्दों से बना है।

• महा (Mahā): का अर्थ है "महान," "सर्वोच्च," "उत्तम," या "विस्तृत।" यह उच्चतम संभव डिग्री या गुणवत्ता को दर्शाता है।

• आचार (Ācāra): यह शब्द "आचरण," "अभ्यास," "परंपरा," "रीति-रिवाज," "आचार संहिता," धार्मिक अनुष्ठान, या जीवन शैली को संदर्भित करता है। आध्यात्मिक संदर्भ में, यह नैतिक और सैद्धांतिक सिद्धांतों, धर्म और धार्मिक जीवन को दर्शाता है।

आचरण का सर्वोच्च उदाहरण इस प्रकार, महाचाराय का अर्थ है "वह जो सबसे महान/उत्तम आचरण का पालन करता है।" इसका तात्पर्य है कि कालभैरव पूर्ण, निष्कलंक और परम धार्मिकता का प्रतीक हैं। वह केवल एक उत्कृष्ट संहिता का पालन करने वाले नहीं हैं, बल्कि ऐसे आचरण के स्वयं मानक और अवतार हैं। उनकी "संहिता" ब्रह्मांडीय नियम, स्वयं शाश्वत धर्म है।

पारंपरिक नैतिकता से परे यह आचरण नैतिकता की सीमित मानवीय समझ से परे है। इसमें ब्रह्मांडीय न्याय, दिव्य इच्छा का समझौताहीन निष्पादन, और सृष्टि, संरक्षण और विनाश के चक्रीय क्रम को सुनिश्चित करना शामिल है। जबकि उनका उग्र रूप भयावह लग सकता है, यह हमेशा एक बड़े, परम अच्छे की सेवा में होता है, एक "महा-आचार" का पालन करता है जो सार्वभौमिक संतुलन बनाए रखता है।

धर्म की शिक्षाएँ सर्वोच्च आचरण वाले होने के नाते, कालभैरव इस महान आचरण के परम शिक्षक (आचार्य) भी बन जाते हैं। महाचाराय के रूप में उनकी पूजा करना धार्मिक जीवन की ओर प्राणियों का मार्गदर्शन करने और धर्म के सिद्धांतों को बनाए रखने में उनकी भूमिका को स्वीकार करना है। वह दर्शाते हैं कि सबसे शक्तिशाली और परिवर्तनकारी शक्तियाँ भी परम ब्रह्मांडीय अखंडता के एक ढांचे के भीतर काम करती हैं।

महाचाराय नाम कालभैरव की क्रियाओं में निहित पूर्णता और ब्रह्मांडीय तथा आध्यात्मिक नैतिकता पर महान अधिकार के रूप में उनकी भूमिका दोनों को रेखांकित करता है, क्योंकि उनके कार्य, चाहे कितने भी उग्र क्यों न हों, हमेशा सर्वोच्च दिव्य व्यवस्था के साथ पूर्ण सामंजस्य में होते हैं।

547. महाभुजाय

महान और बलशाली भुजाओं वाले (महाभुज) को नमन।

विस्तार : महाभुज (महाभुजाय) नाम संस्कृत के 'महा' और 'भुज' शब्दों का एक यौगिक है।

• महा (Mahā): यह "महान," "शक्तिशाली," "पराक्रमी," या "उत्कृष्ट" को दर्शाता है।

• भुज (Bhuja): यह "भुजा" या "कंधे" को संदर्भित करता है। व्यापक प्रतीकात्मक अर्थ में, यह शक्ति, सामर्थ्य और कार्य करने की क्षमता को दर्शाता है।

शाब्दिक और प्रतीकात्मक शक्ति शाब्दिक रूप से, महाभुज का अर्थ है "महान भुजाओं वाला" या "शक्तिशाली कंधों वाला"। यह शारीरिक विशेषता हिंदू प्रतिमा विज्ञान और साहित्य में शक्तिशाली देवताओं, राजाओं और नायकों का एक सामान्य गुण है। महान भुजाएँ अत्यधिक शारीरिक शक्ति, बाधाओं को आसानी से दूर करने की क्षमता और युद्ध के लिए एक अटूट क्षमता का प्रतीक हैं।

कार्य और संरक्षण की क्षमता प्रतीकात्मक रूप से, एक देवता की "भुजाएँ" संसार में कार्य करने की उनकी शक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं। महान भुजाएँ एक व्यापक पहुँच का अर्थ हैं, जो अपने भक्तों को सभी खतरों से बचाने की उनकी क्षमता और बुराई को परास्त करने तथा ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने में उनके कौशल दोनों के संदर्भ में है। कालभैरव के लिए, यह गुण उनके ब्रह्मांडीय कर्तव्यों को पूरा करने में उनकी असाधारण क्षमता पर जोर देता है - चाहे वह समय को नियंत्रित करना हो, अज्ञानता को नष्ट करना हो, या पवित्र स्थानों की रक्षा करना हो।

दिव्य अधिकार और प्रभुत्व शक्तिशाली भुजाएँ दिव्य अधिकार और प्रभुत्व का भी अर्थ हैं। वे दर्शाते हैं कि कालभैरव के पास अस्तित्व के सभी पहलुओं को समझने, धारण करने, सहारा देने और नियंत्रित करने की परम शक्ति है। उनकी शक्ति सीमित नहीं बल्कि असीम है, जो ब्रह्मांड की

विशालता को समाहित करने और उसमें हेरफेर करने में सक्षम है। यह उनके भक्तों को एक आश्वासन है कि उनका सुरक्षात्मक आलिंगन सर्वव्यापी है।

548. मखकर्त्रे

सभी पवित्र यज्ञों (मख) के परम कर्ता को नमन।

विस्तार : मखकर्त्रे नाम मख और कर्ता (कर्त्रे के रूप में व्युत्पन्न) का एक यौगिक है।

मख (Makha): यह शब्द एक पवित्र अनुष्ठान या यज्ञ को दर्शाता है, विशेष रूप से वैदिक यज्ञों, या आहुतियों का जिक्र करता है जो देवताओं को प्रसन्न करने और ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखने के लिए भक्ति के साथ किए जाते हैं। ये केवल बाहरी कार्य नहीं हैं बल्कि गहरे आध्यात्मिक महत्व से ओत-प्रोत हैं, जिनका उद्देश्य आंतरिक स्वयं को शुद्ध करना और दिव्य इच्छा के साथ संरेखित करना है।

कर्त्रे (Kartre): यह कर्ता का चतुर्थी विभक्ति रूप है, जिसका अर्थ है "करने वाला," "निष्पादक," या "निर्माता।" यह उस व्यक्ति को इंगित करता है जो किसी कार्य को करता या निष्पादित करता है, इस संदर्भ में, मख का प्रदर्शन।

यज्ञ के परम कर्ता जब भगवान कालभैरव पर लागू होता है, तो मखकर्त्रे सभी पवित्र अनुष्ठानों के संबंध में उनकी सर्वोच्च और अद्वितीय भूमिका को दर्शाता है। वह केवल यज्ञ की वस्तु नहीं हैं, बल्कि परम कर्ता हैं, जो सभी वैदिक यज्ञों के सार को व्यवस्थित करते हैं, सुगम बनाते हैं और अंततः मूर्त रूप देते हैं।

मानवीय प्रदर्शन से परे यह उपाधि बताती है कि जबकि मनुष्य भौतिक प्रसाद और मंत्रों का उपयोग करके यज्ञ करते हैं, इन अनुष्ठानों का सच्चा, प्रभावी प्रदर्शन कालभैरव की दिव्य शक्ति से प्रवाहित होता है। वह अंतर्निहित शक्ति हैं जो यज्ञ की अग्नि को सशक्त बनाती हैं, आहुतियों को स्वीकार करती हैं, और अनुष्ठान के फल प्रदान करती हैं। यह उनकी स्थिति को केवल एक देवता से ऊपर उठाता है जो प्रसाद प्राप्त करता है; वह स्वयं यज्ञ का सिद्धांत हैं।

ब्रह्मांडीय यज्ञ एक व्यापक, अधिक गहन अर्थ में, संपूर्ण ब्रह्मांडीय प्रक्रिया को एक भव्य यज्ञ (महा-यज्ञ) के रूप में समझा जा सकता है। सृष्टि, पालन और संहार इस निरंतर दिव्य "मख" के सभी भाग हैं। काल (समय) के स्वामी और परम संहारक के रूप में, कालभैरव अस्तित्व के चक्रीय यज्ञ में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, नए सृजन का मार्ग प्रशस्त करने के लिए समय के अंत में सभी का उपभोग करते हैं। इस आलोक में, वह इस ब्रह्मांडीय यज्ञ के कर्ता हैं।

धर्म का अवतार "सभी पवित्र यज्ञों के कर्ता" होने के नाते, कालभैरव को धर्म (धार्मिकता और ब्रह्मांडीय व्यवस्था) के परम संरक्षक के रूप में चित्रित किया गया है, क्योंकि यज्ञ पारंपरिक रूप से इस व्यवस्था को बनाए रखने और बहाल करने के लिए किए जाते हैं। वह सुनिश्चित करते हैं कि सभी यज्ञीय कार्य, चाहे वे सांसारिक हों या ब्रह्मांडीय, दिव्य इच्छा के अनुसार किए जाएं और अंततः इच्छित आध्यात्मिक लाभ या ब्रह्मांडीय संतुलन की ओर ले जाएं।

549. मखध्वंसिने

यज्ञों का अहंकार से अनुपालन करने पर उनका विनाश करने वाले को नमन।

विस्तार : मखध्वंसिने नाम मख और ध्वंसिने का एक यौगिक है।

मख: यह शब्द आमतौर पर यज्ञ को संदर्भित करता है, विशेष रूप से वैदिक अनुष्ठानिक यज्ञों को। हालांकि, इस संदर्भ में, यह विशेष रूप से दक्ष प्रजापति द्वारा किए गए यज्ञ को संदर्भित करता है। दक्ष का मख एक विस्तृत अनुष्ठान था जहाँ उसने जानबूझकर भगवान शिव को अपने अभिमान और तिरस्कार के कारण बाहर रखा था, जबकि शिव सर्वोच्च देवता थे।

ध्वंसिने: इसका अर्थ है "नाश करने वाला," "संहार करने वाला," या "नष्ट करने वाला।"

दक्ष के यज्ञ का विनाश दक्ष के यज्ञ (दक्ष-यज्ञ) की कहानी शैव धर्म में महत्वपूर्ण है। दक्ष, अहंकार से भरे हुए और खुद को श्रेष्ठ मानते हुए, एक भव्य अनुष्ठान का आयोजन किया जहाँ उसने सभी देवताओं और प्रतिष्ठित प्राणियों को आमंत्रित किया लेकिन जानबूझकर शिव और सती (दक्ष की अपनी बेटी और शिव की पत्नी) को छोड़ दिया। यह कार्य शिव का घोर अपमान और धर्म का घोर उल्लंघन था। सती, अपमान सहन न कर पाने के कारण, स्वयं को अग्नि में समर्पित कर दिया। ब्रह्मांडीय क्रोध और दुख के आवेश में, शिव ने अपनी जटाओं से भयंकर वीरभद्र को उत्पन्न किया। इस भयंकर अवतार ने, भद्रकाली के साथ मिलकर, दक्ष के यज्ञ को बाधित और पूरी तरह से नष्ट कर दिया, दक्ष का सिर काट दिया। शिव ने बाद में दक्ष को बकरे के सिर के साथ पुनर्जीवित किया।

अहंकारी अनुष्ठानों का संहारक इसलिए, मखध्वंसिने भगवान शिव को, उनके भयंकर रूप में (विशेष रूप से वीरभद्र या कालभैरव के रूप में, जो अधर्म के खिलाफ समान विनाशकारी शक्ति का प्रतीक हैं), दक्ष के अहंकारी यज्ञ को नष्ट करने वाले के रूप में संदर्भित करता है। यह दर्शाता है कि अभिमान, अहंकार और दिव्य या उचित व्यवस्था के प्रति अनादर के साथ किए गए अनुष्ठान व्यर्थ हैं और उन्हें दिव्य प्रतिशोध का सामना करना पड़ेगा। यह इस सिद्धांत पर जोर देता है कि किसी भी आध्यात्मिक भेंट में इरादे की शुद्धता और श्रद्धा सर्वोपरि है; सही दृष्टिकोण के बिना केवल बाहरी प्रदर्शन दिव्य को अस्वीकार्य है।

धर्म के संरक्षक यह नाम धर्म के सर्वोच्च संरक्षक के रूप में शिव की भूमिका पर भी प्रकाश डालता है। जब अहंकार और अन्याय से ब्रह्मांडीय व्यवस्था बाधित होती है, तो वे संतुलन बहाल करने के लिए शक्तिशाली रूप से हस्तक्षेप करते हैं। दक्ष के यज्ञ का उनका विनाश मनमाना विनाश नहीं था, बल्कि सच्ची आध्यात्मिक साधना की पवित्रता और दिव्य की गरिमा की रक्षा के लिए एक सुधारात्मक उपाय था।

550. मधुराय

जो आनंददायक रूप से मधुर और आकर्षक हैं, उनको नमन।

विस्तार : मधुर नाम संस्कृत मूल 'मध' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "शहद" या "मीठा।" यह एक मनमोहक, आकर्षक और लुभावने गुण का वर्णन करता है।

दिव्य गुण के रूप में मधुरता एक आध्यात्मिक संदर्भ में, "मधुरता" का तात्पर्य कृपा, करुणा, कोमलता, आनंदमय अनुभव और गहन प्रेम जैसे गुणों से है। जबकि भैरव को अक्सर भयंकर और विस्मयकारी पहलुओं से जोड़ा जाता है, मधुरायाय उनके परोपकारी और मनमोहक स्वरूप को प्रकट करता है। यह मधुरता केवल एक सतही विशेषता नहीं है, बल्कि दिव्य चेतना का एक आंतरिक गुण है जो भक्तों को उनकी ओर आकर्षित करता है।

आकर्षक और मनमोहक "आकर्षक" के रूप में, वे अपने भक्तों के हृदयों को मोहित करते हैं, उन्हें आध्यात्मिक सत्य और मुक्ति की ओर खींचते हैं। यह आकर्षण अप्रतिरोध्य है, जो दिव्य के साथ एक गहरे, प्रेमपूर्ण जुड़ाव की ओर ले जाता है। "मनमोहक" पहलू उन लोगों द्वारा अनुभव किए गए आनंद और शांति को दर्शाता है जो उनसे जुड़ते हैं, जो गहन आध्यात्मिक संतुष्टि की स्थिति का सुझाव देता है।

दिव्य प्रेम का अनुभव एक भक्त के लिए, भगवान भैरव को मधुरायाय के रूप में आह्वान करने का अर्थ है उन्हें परम आनंद और आध्यात्मिक शहद के स्रोत के रूप में अनुभव करना। इसका अर्थ यह पहचानना है कि उनके दुर्जेय पहलुओं में भी, एक अंतर्निहित दिव्य प्रेम और करुणा है जो पोषण और रक्षा करती है। यह नाम इस बात पर जोर देता है कि एक भयानक देवता के रूप में उनकी बाहरी उपस्थिति के बावजूद, उनका सार पूरी तरह से परोपकारी और गहन प्रेमपूर्ण है।

विरोधाभासों का सामंजस्य यह नाम दिव्य के विरोधाभासी स्वरूप को भी उजागर करता है, जहाँ भयानक (भैरव) और मधुर (मधुरायाय) एक ही परम वास्तविकता के दो पहलू हैं। यह सुझाव देता है कि सच्ची आध्यात्मिक समझ में दिव्य की विस्मयकारी शक्ति और मधुर, पोषण करने वाला प्रेम दोनों शामिल हैं।

551. मघवतप्रियाय

उदार और समृद्ध इंद्र (मघवन्) को प्रिय होने वाले को नमन।

विस्तार : नाम मघवत्प्रियाय 'मघवत्' और 'प्रिय' का एक यौगिक है।

मघवत् (Maghavat): यह मुख्य रूप से देवों के राजा इंद्र से जुड़ा एक विशेषण है। "मघवन" (अपने नाममात्र रूप में मघवत्) शब्द का शाब्दिक अर्थ "विपुल," "उदार," या "धनी" है। यह वर्षा, समृद्धि और विजय के दाता के रूप में इंद्र की भूमिका को संदर्भित करता है, जिसे अक्सर उनकी उदारता और शक्ति के लिए आह्वान किया जाता है। इंद्र, मघवन के रूप में, एक शक्तिशाली देवता हैं जो भौतिक और स्वर्गीय प्रभुत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं, अक्सर वज्र और बाधाओं के विनाश से जुड़े होते हैं।

प्रिय (Priya): इस संस्कृत शब्द का अर्थ "प्रिय," "प्यारा," "मनभावन," या "पसंदीदा" है।

इंद्र के प्रिय (The Beloved of Indra) इस प्रकार, मघवत्प्रियाय का अर्थ है "वह जो मघवन (इंद्र) को प्रिय है।" यह शिव (अपने भैरव रूप में) और इंद्र के बीच एक विशेष कृपा, श्रद्धा या निकटता के संबंध को दर्शाता है।

प्रतीकात्मक व्याख्याएँ (Symbolic Interpretations):

• स्वर्गीय शक्तियों की अधीनता (Subservience of Celestial Powers): यह नाम देवताओं के राजा से भी ऊपर भैरव की सर्वोच्च स्थिति को रेखांकित करता है। जबकि इंद्र एक शक्तिशाली वैदिक देवता हैं, शिव/भैरव के प्रति उनकी श्रद्धा शिव के परम ब्रह्मांडीय अधिकार को उजागर करती है। इसका तात्पर्य है कि स्वर्गीय शासक भी, जो वरदान देते हैं और ब्रह्मांडीय शक्तियों को नियंत्रित करते हैं, भैरव को अत्यधिक सम्मान देते हैं और उनकी श्रेष्ठ शक्ति को स्वीकार करते हैं। यह एक पदानुक्रम स्थापित करता है जहाँ शिव परम संप्रभु हैं, और इंद्र, एक शक्तिशाली स्वर्गीय इकाई के रूप में, इस परम शक्ति के प्रति स्नेही हैं या उसका सम्मान करते हैं।

• ब्रह्मांडीय व्यवस्था और सहयोग (Cosmic Order and Cooperation): कुछ पौराणिक आख्यानों में, इंद्र और शिव का एक जटिल संबंध है, जिसमें कभी-कभी संघर्ष शामिल होता है लेकिन अक्सर सुलह और इंद्र द्वारा शिव की सर्वोच्चता की स्वीकृति के साथ समाप्त होता है। यह नाम उनके संबंध के एक सामंजस्यपूर्ण पहलू का सुझाव देता है, जहाँ इंद्र, मघवन के रूप में, भैरव को स्नेह में रखते हैं। यह परम सत्ता की व्यापक इच्छा के तहत विभिन्न दिव्य शक्तियों के सहयोग का प्रतीक हो सकता है।

• भैरव का सर्व-समावेशी स्वरूप (Bhairava's All-Encompassing Nature): भैरव, शिव के एक पहलू के रूप में, अस्तित्व की समग्रता को समाहित करते हैं, जिसमें भयंकर और परोपकारी, सांसारिक और पारलौकिक दोनों शामिल हैं। इंद्र (मघवन) को प्रिय होने के कारण, जो ब्रह्मांड की समृद्धि, वर्षा और भौतिक कल्याण का प्रतिनिधित्व करते हैं, भैरव अप्रत्यक्ष रूप से अपने भक्तों को ये वरदान भी सुनिश्चित करते हैं। जबकि भैरव अक्सर गहरे, अधिक पाताल लोक के पहलुओं से जुड़े होते हैं, धन और वर्षा के दाता के "प्रिय" होने से उनकी रचना के सभी पहलुओं पर उनका प्रभाव इंगित होता है, जिसमें अन्य देवताओं द्वारा नियंत्रित पहलू भी शामिल हैं।

552. ब्रह्मसृष्टये

ब्रह्मा की सृजनात्मक शक्ति के स्वरूप को नमन।

विस्तार : ब्रह्मसृष्टये नाम, ब्रह्मा (सृष्टि के देवता) और सृष्टि (रचना) से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है "सृष्टि के लिए" या "सृष्टि हेतु", यह भगवान कालभैरव के ब्रह्मांडीय सृजन के कार्य से गहरे और सीधे संबंध को दर्शाता है, विशेष रूप से जैसा कि यह ब्रह्मा के माध्यम से प्रकट होता है।

ब्रह्मा की रचनात्मक शक्ति जबकि ब्रह्मा को पारंपरिक रूप से हिंदू त्रिमूर्ति में निर्माता के रूप में पूजा जाता है, कालभैरव, शिव के एक भयंकर रूप के रूप में, यहाँ उस अंतर्निहित शक्ति या सिद्धांत के रूप में चित्रित किए गए हैं जो ब्रह्मा को अपना कार्य करने के लिए सशक्त करता है। इसका तात्पर्य यह है कि ब्रह्मा की रचनात्मक शक्ति केवल उनकी अपनी नहीं है, बल्कि शिव की सर्वोच्च चेतना (जो कालभैरव में सन्निहित है) से प्राप्त (या उसका एक उत्सर्जन) है।

समस्त अस्तित्व का बीज यह नाम कालभैरव को उस बीज या क्षमता के रूप में स्थापित करता है जिससे समस्त सृष्टि उत्पन्न होती है। वह केवल एक संहारक नहीं हैं, बल्कि वह मूलभूत आधार भी हैं जिस पर संपूर्ण ब्रह्मांड की रचना, निर्माण और अभिव्यक्ति होती है। उनकी स्वीकृति और ऊर्जा के बिना, ब्रह्मा का सृजन कार्य असंभव होगा। वह ब्रह्मांडीय खाके का अंतिम स्रोत हैं।

सृजन और विनाश की द्वैतता से परे यह पहलू शिव को मुख्य रूप से एक संहारक के रूप में समझने की पारंपरिक धारणा को सूक्ष्मता से पार करता है। इसके बजाय, यह दिव्य के अद्वैत स्वरूप को दर्शाता है, जहाँ सृजन और विनाश की शक्तियाँ एक ही परम वास्तविकता के दो पहलू हैं। कालभैरव आदि और अंत दोनों को, उस आदिम ऊर्जा को जो अस्तित्व को जन्म देती है और उस लौकिक शक्ति को जो उसे समाप्त करती है, दोनों को समाहित करते हैं। वह ब्रह्मांड के अल्फा और ओमेगा हैं, जन्म और विलय दोनों के अंतिम स्रोत हैं।

553. ब्रह्मवीर्याय

ब्रह्म की दिव्य शक्ति और वीरता धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : ब्रह्मवीर्य नाम संस्कृत के शब्द ब्रह्म और वीर्य का एक यौगिक है।

ब्रह्म (दिव्य शक्ति): इस संदर्भ में, "ब्रह्म" का अर्थ देवता ब्रह्मा (सृष्टिकर्ता देव) से नहीं है, बल्कि यह ब्रह्मांडीय, सर्वोच्च और परम वास्तविकता को संदर्भित करता है जिसे अक्सर हिंदू दर्शन में ब्रह्म कहा जाता है। यह परम सत्ता में निहित दिव्य, असीमित और सार्वभौमिक शक्ति, ज्ञान और रचनात्मक ऊर्जा को दर्शाता है। यह उस मूलभूत, अव्यक्त सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करता है जिससे सभी अस्तित्व उत्पन्न होते हैं।

वीर्य (शक्ति और पराक्रम): वीर्य के कई अर्थ हैं, जो सभी यहां लागू होते हैं: 1. शक्ति, सामर्थ्य, ऊर्जा: यह अंतर्निहित शक्ति, ओज और कार्य करने की क्षमता को दर्शाता है। 2. पराक्रम, साहस: यह एक वीर और अदम्य भावना, बिना किसी भय के किसी भी चुनौती का सामना करने की क्षमता को दर्शाता है। 3. शक्ति, बीज, मूल: यह मौलिक शक्ति, वह सार भी हो सकता है जिससे सृष्टि उत्पन्न होती है।

ब्रह्म की दिव्य शक्ति: जब संयुक्त किया जाता है, तो ब्रह्मवीर्य उस एक को दर्शाता है जो परम, सर्वोच्च शक्ति और पराक्रम को धारण करता है जो निराकार, परम वास्तविकता (ब्रह्म) की विशेषता है। यह दिव्य ऊर्जा केवल शारीरिक शक्ति नहीं है, बल्कि इसमें आध्यात्मिक शक्ति, ब्रह्मांडीय अधिकार और ब्रह्मांड की मूलभूत जीवन शक्ति भी शामिल है। कालभैरव, ब्रह्मवीर्य के रूप में, परम रचनात्मक और विनाशकारी शक्ति रखते हैं जो सभी अस्तित्व का आधार है।

अजेय पराक्रम और अधिकार: यह नाम कालभैरव के अजेय साहस और सृष्टि और विनाश के सभी पहलुओं पर उनके सर्वोच्च अधिकार पर जोर देता है। उनकी शक्ति व्युत्पन्न नहीं है बल्कि अंतर्निहित है, जो स्वयं ब्रह्म की अनंत और शाश्वत ऊर्जा की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है। वह ब्रह्मांडीय गतिशीलता का सार हैं, वह अटल शक्ति जो धर्म को बनाए रखती है और अधर्म को दंडित करती है।

आध्यात्मिक महत्व: भक्त के लिए, कालभैरव को ब्रह्मवीर्य के रूप में पहचानना असीमित आध्यात्मिक शक्ति के स्रोत को स्वीकार करना है जिसे आंतरिक सीमाओं, भय और नकारात्मक शक्तियों को दूर करने के लिए आह्वान किया जा सकता है। यह उस दिव्य शक्ति को दर्शाता है जो साधक को उनके आध्यात्मिक मार्ग पर शुद्ध और सशक्त कर सकती है, उन्हें जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए अपने स्वयं के समान दिव्य संकल्प के साथ शक्ति और पराक्रम प्रदान करती है।

554. बाणहस्ताय

अपने हाथों में शक्तिशाली धनुष धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : नाम बाणहस्ताय (Bāṇahastāya) बाण (तीर) और हस्त (हाथ) का एक यौगिक है, जिसका अर्थ है "वह जिसके हाथ में बाण हैं" या "वह जिसके हाथ में तीर हैं।" यह विशेषण शिव और भैरव के युद्ध संबंधी और विनाशकारी पहलुओं के भीतर एक विशिष्ट प्रतिमा विज्ञान और प्रतीकात्मक अर्थ को इंगित करता है।

दिव्य धनुर्धर बाण धारण करना तुरंत एक दिव्य धनुर्धर की छवि को उद्घाटित करता है, जो विभिन्न हिंदू देवताओं में पाया जाने वाला एक शक्तिशाली प्रतीक है। जबकि भगवान राम अपने धनुष और बाण के लिए प्रसिद्ध हैं, और शिव को त्रिपुरांतक (तीन नगरों का विनाशक) के रूप में जाना जाता है जिन्होंने एक दिव्य बाण का उपयोग किया था, भैरव के संदर्भ में, बाण सटीक और अप्रतिरोध्य शक्ति के उपकरणों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

विनाश के शक्तिशाली उपकरण ये बाण साधारण हथियार नहीं हैं; वे उन शक्तिशाली, प्रत्यक्ष और तीव्र साधनों का प्रतीक हैं जिनके द्वारा भैरव अपने ब्रह्मांडीय कार्यों को पूरा करते हैं। वे परम विनाश के उपकरण हैं, जो किसी भी बाधा, चाहे वह भौतिक हो या आध्यात्मिक, को भेदने में सक्षम हैं। इस पहलू में, बाण निम्नलिखित के प्रतीक हैं: • अप्रतिरोध्य शक्ति: उनके निर्णय और कार्य सटीक, तीव्र होते हैं और उन्हें विचलित नहीं किया जा सकता है। एक बार जब कोई "बाण" छोड़ा जाता है, तो उसका लक्ष्य अपरिहार्य होता है। • अज्ञान का विनाश: बाण अज्ञान (अविद्या), आसक्ति और उन सभी का विनाशकारी बल का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं जो जीव (व्यक्तिगत आत्मा) को दुख के चक्र से बांधते हैं। वे भ्रम के पर्दे को भेदते हैं। • धर्म का प्रवर्तन: एक भयंकर दंडक और ब्रह्मांडीय कानून के प्रवर्तक के रूप में, बाण उन साधनों का प्रतीक हैं जिनके द्वारा वे न्याय करते हैं और बुराई का उन्मूलन करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि धर्म प्रबल हो।

केंद्रण और भेदन का प्रतीक एक बाण, अपनी प्रकृति से, केंद्रण, दिशा और भेदन का प्रतीक है। भैरव, बाण धारण करते हुए, उनके अटूट संकल्प और किसी भी समस्या, बाधा या शत्रु के मूल में प्रवेश करने की उनकी क्षमता को दर्शाता है। यह दर्शाता है कि उनकी शक्ति पूर्ण सटीकता के साथ निर्देशित होती है, असंतुलन और नकारात्मकता के मूल कारण पर प्रहार करती है।

भैरव के हाथों में, ये बाण उन्हें एक मात्र योद्धा से एक ब्रह्मांडीय शक्ति तक ऊपर उठाते हैं जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था और सच्चे भक्तों की आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डालने वाली किसी भी चीज़ का लक्षित और पूर्ण विनाश करने में सक्षम है।

555. अचलाय

जो अटल, दृढ़ और शाश्वत रूप से स्थिर हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : अचलाय नाम संस्कृत शब्द 'अचल' से लिया गया है, जो एक गहरा शब्द है जिसका अर्थ है 'अविचल', 'अचल', 'दृढ़', 'स्थिर' या 'शाश्वत'। यह कालभैरव और भगवान शिव के दिव्य स्वरूप के एक मूलभूत पहलू को इंगित करता है।

अविचल और अचल अपने मूल में, अचल सर्वोच्च सत्ता की पूर्ण स्थिरता और अटूट उपस्थिति को दर्शाता है। निरंतर परिवर्तन, प्रवाह और अनित्यता (प्रकृति) की दुनिया में, कालभैरव अचल के रूप में अपरिवर्तनीय, शाश्वत पुरुष का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो ब्रह्मांडीय साक्षी है जो सृष्टि, पालन और संहार के चक्रों से अप्रभावित रहता है। वह ब्रह्मांडीय पर्वत हैं, दृढ़ और अडिग, जो सभी अस्तित्व के परम आधार का प्रतीक हैं।

दृढ़ और स्थिर यह गुण एक अटूट संकल्प और एक अपरिवर्तनीय प्रकृति का तात्पर्य है। कालभैरव की दृढ़ता कठोरता की नहीं, बल्कि अपने आंतरिक सत्य में पूर्ण रूप से स्थापित होने की है। वह परम आधार हैं, जिस पर सब कुछ टिका है, फिर भी उन्हें स्वयं किसी बाहरी सहारे की आवश्यकता नहीं है। उनकी स्थिरता ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) की आधारशिला है।

शाश्वत रूप से स्थिर अचल कालभैरव के पारलौकिक स्वरूप पर प्रकाश डालता है, उन्हें समय (काल) और स्थान की सीमाओं से परे रखता है। वह शाश्वत स्थिरता का प्रतीक हैं, कभी विचलित नहीं होते, कभी कम नहीं होते और कभी परिवर्तित नहीं होते। यह गुण अपने भक्तों को उनकी शाश्वत उपस्थिति और अटूट समर्थन का आश्वासन देता है। एक आध्यात्मिक साधक के लिए, कालभैरव को अचल के रूप में स्वीकार करना आंतरिक शांति की भावना को प्रेरित कर सकता है, भौतिक दुनिया की क्षणभंगुर प्रकृति को पार करने और अपने स्वयं के अस्तित्व के शाश्वत, स्थिर मूल से जुड़ने में मदद कर सकता है।

556. बलिने

अत्यधिक शक्तिशाली, पराक्रमी और बलवान को नमन।

विस्तार : बलिने (बली) नाम संस्कृत शब्द 'बल' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "शक्ति," "सामर्थ्य," "पराक्रम," या "बल।"

परम शक्ति और सामर्थ्य यह नाम कालभैरव की असीम और पूर्ण शक्ति पर जोर देता है। यह उनकी दुर्जेय शारीरिक, ब्रह्मांडीय और आध्यात्मिक शक्ति को उजागर करता है। दिव्य संदर्भ में, "शक्ति" का अर्थ केवल क्रूर बल नहीं है, बल्कि एक अंतर्निहित, अजेय सामर्थ्य है जो सभी सृष्टि, संरक्षण और विनाश का आधार है। वह उस परम शक्ति के प्रतीक हैं जो ब्रह्मांड को नियंत्रित करती है।

बाधाओं और शत्रुओं पर विजय बलिने के रूप में, कालभैरव को उनकी अद्वितीय शक्ति के लिए आह्वान किया जाता है ताकि वे सभी बाधाओं, विरोधियों और नकारात्मक शक्तियों, बाहरी और आंतरिक दोनों पर विजय प्राप्त कर सकें। यह शक्ति अज्ञान, अहंकार और सभी प्रकार की आध्यात्मिक कमजोरियों को नष्ट करती है, जिससे उनके भक्तों के लिए मुक्ति और आत्मज्ञान का मार्ग प्रशस्त होता है।

ब्रह्मांडीय शक्ति उनकी शक्ति व्यक्तिगत कार्यों तक सीमित नहीं है; यह वह मूलभूत ऊर्जा (शक्ति) है जो पूरे ब्रह्मांड को संचालित करती है। वह सभी गतिशील गतिविधियों का स्रोत हैं, वह अटूट शक्ति जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखती है और आवश्यक परिवर्तन लाती है। इसमें ब्रह्मांडों को प्रकट करने, बनाए रखने और विलीन करने की शक्ति शामिल है।

लचीलेपन का प्रतीक यह नाम लचीलेपन और अदम्य इच्छाशक्ति का भी प्रतीक है। भैरव, बलिने के रूप में, दिव्य के उस अदम्य और अजेय पहलू का प्रतिनिधित्व करते हैं जो शाश्वत और भौतिक संसार की क्षणभंगुर प्रकृति से अप्रभावित रहता है।

557. कीररूपाय

तोते का रूप धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : कीररूपाय नाम भगवान शिव के विशिष्ट दिव्य प्रकटीकरण को संदर्भित करता है, विशेष रूप से उनके भयंकर भैरव पहलू में, जो एक अद्वितीय उद्देश्य को पूरा करने के लिए तोते (कीर) का रूप धारण करते हैं।

तोता (कीर) एक प्रतीक के रूप में तोता, या कीर, हिंदू परंपराओं में एक बहुआयामी प्रतीक है। यह अक्सर इससे जुड़ा होता है: • भाषण और वाक्पटुता: तोते मानव भाषण की नकल करने की अपनी क्षमता के लिए जाने जाते हैं, जो दिव्य शब्द (वाक्) और ज्ञान का प्रतीक है। • प्रेम और इच्छा (काम): कुछ परंपराओं में, तोता कामदेव, प्रेम के देवता से जुड़ा है, जिसे अक्सर उनके ध्वज पर या उनके वाहन के रूप में दर्शाया जाता है। यह संबंध उस आकर्षण या मनमोहक शक्ति का संकेत देता है जिसे दिव्य धारण कर सकता है। • छिपी हुई दिव्यता: तोते का साधारण सा दिखने वाला रूप देवता की असाधारण शक्ति को छुपाता है।

कथात्मक संदर्भ (मोहिनी प्रसंग) यह विशेष रूप भगवान शिव के दिव्य क्रीड़ाओं या लीलाओं में से एक के संदर्भ में गहरा महत्वपूर्ण है। जब भगवान विष्णु ने समुद्र मंथन के दौरान मोहिनी का मनमोहक रूप धारण किया था ताकि अमृत (अमरता का अमृत) विशेष रूप से देवताओं को वितरित किया जा सके, तो शिव उनकी दिव्य सुंदरता से इतने मोहित हो गए थे कि उन्होंने उस रूप को फिर से देखने की इच्छा की।

जब मोहिनी फिर से प्रकट हुईं, तो शिव, उनके आकर्षण से अभिभूत होकर, उनके साथ संभोग किया। इसी मिलन से शास्ता (जिन्हें अय्यप्पन, हरिहरपुत्र के नाम से भी जाना जाता है) का जन्म हुआ। इस तीव्र और मनमोहक मुठभेड़ के दौरान, शिव को एक तोते के रूप में प्रकट होने या भेस बदलने के लिए कहा जाता है।

तोते के रूप का उद्देश्य इस संदर्भ में तोते के रूप को धारण करने के कई उद्देश्य हैं: • छिपाना: यह शिव को अपनी सर्वोच्च पहचान प्रकट किए बिना दिव्य लीला को देखने और उसमें भाग लेने की अनुमति देता है, जिससे रहस्य का एक स्तर जुड़ जाता है। • दिव्य लीला: यह शिव की दिव्य नाटक में संलग्न होने और सृष्टि, संरक्षण और विनाश के ब्रह्मांडीय नृत्य के लिए आवश्यक किसी भी रूप को धारण करने की इच्छा को प्रदर्शित करता है। • आसक्ति के लिए रूपक: जबकि परम तपस्वी (शिव) के लिए विरोधाभासी, यह घटना माया की मनमोहक प्रकृति और ब्रह्मांडीय व्यवस्था और दिव्य संतान के लिए अपनी सर्वोच्च अनासक्ति को भी पार करने की दिव्य क्षमता को उजागर करती है।

इस प्रकार, कीररूपाय भैरव की सर्वशक्तिमानता और चंचल प्रकृति को दर्शाता है, जो दिव्य उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए किसी भी रूप को धारण कर सकते हैं, यहां तक कि एक विनम्र पक्षी का भी, जो अक्सर ब्रह्मांडीय शक्तियों के एक शक्तिशाली और गहरे मिलन से जुड़ा होता है।

558. चलाय

निरंतर गतिशील और ऊर्जावान रहने वाले को नमन।

विस्तार : नाम चल (चल-आय) का अर्थ है "गतिमान," "हिलता हुआ," "काँपता हुआ," "अस्थिर," "बदलता हुआ," या "उत्तेजित।" आध्यात्मिक और ब्रह्मांडीय संदर्भ में, यह दिव्य की गतिशील और सदैव उपस्थित गतिविधि को संदर्भित करता है।

ब्रह्मांडीय गतिशीलता और चाल (Cosmic Dynamics and Motion) यह नाम भगवान कालभैरव की भूमिका पर जोर देता है, जो ब्रह्मांड में सभी गति, परिवर्तन और गतिविधि के पीछे की मूलभूत शक्ति हैं। प्रकट संसार में कुछ भी स्थिर नहीं है; सब कुछ निरंतर प्रवाह, जन्म, विकास, क्षय और परिवर्तन की स्थिति में है। चल इस अंतर्निहित गतिशीलता का प्रतीक है। वह सबसे छोटे परमाणु कणों से लेकर सृष्टि और विलय के भव्य ब्रह्मांडीय चक्रों तक, सभी चीजों के प्रेरक हैं।

क्षणिकता और अनित्यता (Transience and Impermanence) "गतिमान" या "बदलते हुए" की अवधारणा अस्तित्व की क्षणभंगुर प्रकृति पर भी प्रकाश डालती है। जो कुछ भी अस्तित्व में आता है वह परिवर्तन के अधीन है और अंततः समाप्त हो जाता है। कालभैरव, काल और विनाश के स्वामी के रूप में, अनित्यता के इस सिद्धांत का प्रतीक हैं, हमें याद दिलाते हैं कि भौतिक संसार में किसी भी स्थिर या निश्चित चीज़ से चिपके रहना अंततः व्यर्थ है।

दिव्य उत्तेजना और ऊर्जा (Divine Agitation and Energy) "उत्तेजित" या "काँपता हुआ" को दिव्य की असीम, अनियंत्रित ऊर्जा के रूप में समझा जा सकता है। यह कोई अनियंत्रित या अराजक उत्तेजना नहीं है, बल्कि वह असीमित शक्ति है जो पूरे ब्रह्मांड को शक्ति प्रदान करती है। यह जीवंत, स्पंदित जीवन शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो लगातार नए रूपों को जन्म देती है और पुराने को भंग करती है। इस अर्थ में, चल अपनी गतिशील अभिव्यक्ति में दिव्य ऊर्जा (शक्ति) है।

निश्चित रूपों से परे (Beyond Fixed Forms) "सदैव गतिशील" होने के कारण, कालभैरव निश्चित रूपों और रूढ़िवादी सीमाओं को पार करते हैं। उन्हें स्थिर बौद्धिक संरचनाओं द्वारा समाहित या पूरी तरह से समझा नहीं जा सकता है, क्योंकि वे स्वयं अस्तित्व का प्रवाह हैं। यह कठोर रूप से पालन करने के बजाय एक तरल और अनुकूलनीय आध्यात्मिक समझ को प्रोत्साहित करता है।

559. उन्मादिने

उन्मत्त और आनंदमय पागलपन की स्थिति में दिव्य रूप से मदहोश रहने वाले को नमन।

विस्तार : उन्मादि (Unmādi) शब्द संस्कृत मूल "मद्" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "उत्साहित होना, आनंदित होना, मदमस्त होना या पागल होना।" "उन्" उपसर्ग इस अवस्था को तीव्र करता है।

दिव्य परमानंद और उन्माद उन्मादि उस अवस्था को संदर्भित करता है जहाँ व्यक्ति दिव्य परमानंद से पूरी तरह अभिभूत होता है, जहाँ पारंपरिक नियम और सामाजिक मानदंड कोई मायने नहीं रखते। इसका तात्पर्य एक "दिव्य उन्माद" या "परमानंदमय मदहोशी" से है जो सामान्य धारणा और व्यवहार से परे है। यह कोई मानवीय मानसिक विकार नहीं है, बल्कि दिव्य में पूर्ण अवशोषण की एक पारलौकिक अवस्था है। शिव के लिए, यह "उन्माद" भौतिक दुनिया से उनकी विरक्ति और ब्रह्मांडीय नृत्य (तांडव) तथा दिव्य लीला से उनके गहन संबंध का प्रतीक है।

परंपरा से मुक्ति इस अवस्था में, भगवान शिव, विशेष रूप से अपने भैरव रूप में, सभी सशर्त अस्तित्व से मुक्त हो जाते हैं। वह जंगली, अपरंपरागत और सामान्य मन की समझ से परे दिखाई देते हैं। यह पहलू देवत्व की सांसारिक समझ को चुनौती देता है, एक ऐसे देवता को प्रस्तुत करता है जो अनियंत्रित, सहज और पूरी तरह से मुक्त है। यह द्वैत से उनके अतिक्रमण और परम स्वतंत्रता (मोक्ष) के उनके अवतार का प्रतीक है।

ब्रह्मांडीय मदहोशी इस "मदहोशी" को शुद्ध चेतना (आनंद) के आनंद में पूरी तरह से डूबे होने के रूप में भी व्याख्या किया जा सकता है। वह सत्य, वास्तविकता और अपने स्वयं के दिव्य स्वभाव के सार से मदमस्त हैं। यह अवस्था उन्हें अपने ब्रह्मांडीय कार्यों - सृजन, संरक्षण और विनाश - को सहज और अनासक्त कृपा के साथ, फिर भी अपार शक्ति के साथ करने की अनुमति देती है।

मुक्ति का प्रतीक भक्तों के लिए, शिव को उन्मादि के रूप में देखना उन्हें अपनी मानसिक कंडीशनिंग, भय और आसक्तियों से मुक्त होने के लिए प्रेरित करता है। यह सुझाव देता है कि सच्ची आध्यात्मिक मुक्ति में अक्सर कठोर मानसिक संरचनाओं को छोड़ना और दिव्य के साथ अधिक तरल, परमानंदमय और अनियंत्रित संबंध को अपनाना शामिल होता है, जो शिव की अपनी ब्रह्मांडीय उग्रता को दर्शाता है। वह परम गुरु हैं जो हमें अद्वैत की उन्मादी मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

560. ब्रह्मन्याय

जो आध्यात्मिक ज्ञान और ब्राह्मणों के प्रति समर्पित हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : ब्रह्मण्याय (Brahmaṇyāya) नाम ब्रह्मा (सृष्टिकर्ता देवता), ब्रह्म (परम वास्तविकता), ब्राह्मण (पुरोहित वर्ग), और पवित्र ज्ञान (ब्रह्म-विद्या) की खोज की अवधारणाओं में गहराई से निहित है।

ब्राह्मणों के संरक्षक अपनी सबसे सामान्य व्याख्या में, ब्रह्मण्याय का अर्थ है वह जो ब्राह्मणों (पुरोहित वर्ग) के लिए शुभ, सहायक और समर्पित है। यह वैदिक परंपराओं, अनुष्ठानों और ब्राह्मणों द्वारा संरक्षित तथा प्रसारित आध्यात्मिक ज्ञान के संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है। यह धर्म और पवित्र अनुष्ठानों के संरक्षकों के प्रति उनके गहरे सम्मान को इंगित करता है।

ब्रह्म (परम वास्तविकता) का अवतार दार्शनिक दृष्टिकोण से, ब्रह्मण्याय का अर्थ "ब्रह्म से संबंधित" भी हो सकता है। यहाँ, ब्रह्म का अर्थ निरपेक्ष, अव्यक्त, सर्वव्यापी और परम वास्तविकता है। इस प्रकार, कालभैरव, ब्रह्मण्याय के रूप में, केवल ब्रह्म से संबंधित नहीं हैं, बल्कि स्वयं ब्रह्म हैं—वह मूलभूत चेतना जिससे समस्त सृष्टि उत्पन्न होती है और जिसमें अंततः विलीन हो जाती है। यह सर्वोच्च सत्य के अवतार के रूप में उनकी सर्वोच्च ब्रह्मांडीय स्थिति को इंगित करता है।

पवित्र ज्ञान (ब्रह्म-विद्या) के प्रति समर्पण अर्थ की एक और परत है "पवित्र ज्ञान के प्रति समर्पित" या "वह जो ब्रह्म-विद्या (ब्रह्म के ज्ञान) को आगे बढ़ाता है।" इस पहलू में, कालभैरव आध्यात्मिक अन्वेषण के अंतिम लक्ष्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। वह आचार्य हैं जो वास्तविकता की प्रकृति में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, सच्चे साधकों को ब्रह्म के समान अपने सच्चे आत्म (आत्मा) की प्राप्ति की ओर मार्गदर्शन करते हैं। यह अज्ञान के नाशक और ज्ञान के दाता के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है।

संक्षेप में, ब्रह्मण्याय कालभैरव को आध्यात्मिक व्यवस्था और ज्ञान के सर्वोच्च संरक्षक के रूप में स्थापित करता है, जो सर्वोच्च आध्यात्मिक सिद्धांत (ब्रह्म) से गहराई से जुड़े हैं, और उन लोगों के प्रति परोपकारी हैं जो इसके अध्ययन और अभ्यास के लिए स्वयं को समर्पित करते हैं।

561. ब्रह्मवर्चसाय

ब्रह्म के दिव्य तेज और आध्यात्मिक कांति से युक्त (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : ब्रह्मवर्चसाय नाम कालभैरव की परम आध्यात्मिक चमक और शक्ति को व्यक्त करने वाला एक गहरा विशेषण है। यह "ब्रह्म" और "वर्चस" से बना है।

ब्रह्म (Brahma): यह हिंदू दर्शन में परम वास्तविकता, ब्रह्मांड के अंतिम, कालातीत और निराकार सिद्धांत को संदर्भित करता है। यह सर्वोच्च आध्यात्मिक सत्य, सभी अस्तित्व, चेतना और आनंद का स्रोत है। इसका अर्थ वेदों, पवित्र ज्ञान और ब्रह्मांडीय रचनात्मक सिद्धांत से भी है।

वर्चस (Varcasa): यह शब्द दिव्य महिमा, दीप्तिमान प्रकाश, आध्यात्मिक तेज, गौरव, चमक और सहज शक्ति या ऊर्जा को दर्शाता है। यह एक गहन आध्यात्मिक आभा और एक अंतर्निहित चमक को दर्शाता है जो एक अत्यधिक सिद्ध प्राणी से निकलती है।

परम की दिव्य महिमा (Divine Splendor of the Absolute) जब संयुक्त किया जाता है, तो ब्रह्मवर्चस का अर्थ "ब्रह्म की महिमा" या "परम आध्यात्मिक ज्ञान की चमक" है। इसका तात्पर्य यह है कि कालभैरव केवल सांसारिक अर्थों में शक्तिशाली या दीप्तिमान नहीं हैं, बल्कि उनका अस्तित्व ही परम की सर्वोच्च, अवर्णनीय महिमा से ओत-प्रोत है और उससे निकलता है। यह एक ऐसा प्रकाश है जो भौतिक अभिव्यक्ति से परे है; यह शुद्ध चेतना और परम सत्य का तेज है।

आध्यात्मिक शक्ति और ज्ञान का अवतार (Embodiment of Spiritual Power and Knowledge) यह नाम कालभैरव को सर्वोच्च आध्यात्मिक अधिकार और पारलौकिक ज्ञान के अवतार के रूप में पहचानता है। उनकी उपस्थिति को उस गहन और शुद्ध करने वाली आभा के रूप में वर्णित किया गया है जो दिव्य की पूर्ण प्राप्ति से आती है। यह महिमा केवल दृश्य नहीं है; यह एक ऊर्जावान और बौद्धिक चमक है जो परम वास्तविकता के मार्ग को रोशन करती है और अज्ञान (अविद्या) के अंधकार को दूर करती है।

वैदिक ज्ञान का सार (The Essence of Vedic Wisdom) यह देखते हुए कि ब्रह्म वेदों को भी संदर्भित करता है, ब्रह्मवर्चस का अर्थ "वैदिक ज्ञान की महिमा" भी हो सकता है। यह बताता है कि कालभैरव पवित्र ज्ञान की संपूर्णता और उसकी अंतर्निहित शक्ति को समाहित करते हैं। वे इस गहन ज्ञान के संरक्षक और दाता हैं, जो शास्त्रों में निहित सत्यों को प्रकट करके भक्तों को आध्यात्मिक मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

परम पवित्रता और शुभता (Ultimate Purity and Auspiciousness) ब्रह्मवर्चस का दिव्य तेज परम पवित्रता (शुद्ध) और शुभता (मंगल) को भी दर्शाता है, जो किसी भी भक्त के मन, शरीर और आत्मा को शुद्ध करने में सक्षम है जो श्रद्धा के साथ उनके पास आता है। ब्रह्मवर्चसाय को नमन करना कालभैरव को सर्वोच्च आध्यात्मिक प्रकाश, सभी दिव्य महिमा और ज्ञान के स्रोत और आध्यात्मिक प्राप्ति की चमक प्रदान करने वाले के रूप में स्वीकार करना है।

562. बहुरूपाया

अनेक, विविध रूपों में प्रकट होने वाले (भैरव) को नमन।

विस्तार : बहुरूप (बहुरूपाय) नाम दो संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है: बहु, जिसका अर्थ है "अनेक," "बहुत," या "प्रचुर," और रूप, जिसका अर्थ है "रूप," "आकार," "प्रकट होना," या "अभिव्यक्ति।"

अनेक रूपों वाला दिव्य बहुरूप दिव्य क्षमता को दर्शाता है जो अनगिनत रूपों, आकारों और अभिव्यक्तियों को धारण कर सकती है। यह अवधारणा हिंदू धर्मशास्त्र के लिए केंद्रीय है, जो यह मानता है कि परम वास्तविकता, यद्यपि एक है, सृष्टि के साथ बातचीत करने, विशिष्ट कार्यों को पूरा करने, या समझने की विभिन्न क्षमताओं वाले प्राणियों द्वारा बोधगम्य होने के लिए विविध तरीकों से प्रकट हो सकती है। भगवान शिव के लिए, और विशेष रूप से कालभैरव के लिए, इसका अर्थ है:

• परमार्थ और अंतर्निहितता (Transcendence and Immanence) यह उनकी एक साथ परमार्थ और अंतर्निहितता पर प्रकाश डालता है। जबकि वे सभी रूपों से परे हैं (निर्गुण), वे ब्रह्मांड के साथ जुड़ने के लिए असीमित संख्या में रूपों (सगुण) में भी प्रकट हो सकते हैं। ये रूप स्थूल हो सकते हैं, जैसे कि पूरा ब्रह्मांड, या सूक्ष्म हो सकते हैं, जैसे कि प्रत्येक प्राणी के भीतर की सूक्ष्म ऊर्जाएँ।

• ब्रह्मांडीय व्यापकता (Cosmic Pervasiveness) यह नाम इस बात पर जोर देता है कि वे किसी एक रूप या व्यक्तित्व तक सीमित नहीं हैं। वे सृष्टि के हर पहलू में मौजूद हैं, भयंकर भैरव से लेकर शांत शंकर तक, निराकार शून्य से लेकर सबसे जटिल जैविक संरचनाओं तक। प्रत्येक प्राणी, प्रत्येक वस्तु, प्रत्येक घटना एक रूप है, एक रूप है, एक दिव्य सार का।

• भक्ति के प्रति अनुकूलनशीलता (Adaptability to Devotion) "अनेक रूप" धारण करने की क्षमता उनके उपासकों की भक्ति के प्रति उनकी प्रतिक्रियाशीलता को भी दर्शाती है। भक्त अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, या व्यक्तिगत आवश्यकताओं और समझ के अनुसार उन्हें देख और पूज सकते हैं, और वे तदनुसार प्रकट होते हैं।

• भैरव का सर्वव्यापी स्वरूप (The All-Encompassing Nature of Bhairava) कालभैरव के रूप में, बहुरूप पहलू समय और स्थान के स्वामी के रूप में उनकी भूमिका को पुष्ट करता है, जहाँ सभी रूप उत्पन्न होते हैं, एक अवधि तक बने रहते हैं, और उनमें विलीन हो जाते हैं। वे वह कैनवास हैं जिस पर सभी रूप चित्रित होते हैं, चित्रकार, और स्वयं चित्र भी। वे किसी एक रूप से बंधे नहीं हैं, बल्कि सभी रूपों को समाहित करते हैं और वे ही सभी रूप हैं।

563. बहुमायाय

जो अनेकता से व्याप्त हैं और अनेक रूपों में प्रकट हुए हैं, उन प्रभु को नमन।

विस्तार : बहु (अनेक, बहुत, असंख्य) और माया (भ्रम, ब्रह्मांडीय शक्ति, रचनात्मक शक्ति) से बना नाम बहुमाया, दिव्य के एक गहन पहलू को दर्शाता है, विशेष रूप से शिव को कालभैरव के रूप में।

ब्रह्मांडीय अनेकता और अभिव्यक्ति • बहु ब्रह्मांड की अपार विविधता और अनेकता को संदर्भित करता है - असंख्य रूप, प्राणी, घटनाएँ और आयाम जो मौजूद हैं। माया, इस संदर्भ में, केवल भ्रम नहीं है बल्कि अभिव्यक्ति की दिव्य शक्ति है, सर्वोच्च सत्ता की अंतर्निहित रचनात्मक ऊर्जा जो संपूर्ण घटनात्मक दुनिया को अस्तित्व में लाती है। इस प्रकार, बहुमाया का तात्पर्य है कि दिव्य, अपनी स्वयं की अंतर्निहित सृजन शक्ति (माया) के माध्यम से, असंख्य रूप धारण कर चुका है और इस विशाल अनेकता में व्याप्त है। वह वह है जो, जबकि एकवचन और पारलौकिक है, अंतर्निहित दुनिया में "अनेक बन गया है"।

सभी रूपों के स्रोत के रूप में दिव्य • यह नाम इस अवधारणा को रेखांकित करता है कि ब्रह्मांड में सभी विविध रूप और अनुभव एक एकल, परम वास्तविकता से उत्पन्न होते हैं और उसके अभिव्यक्तियाँ हैं। कालभैरव, बहुमाया के रूप में, वह अंतर्निहित सार है जो इस संपूर्ण अनेकता को चेतन करता है और उसका निर्माण करता है। वह सृष्टि से अलग नहीं है बल्कि उसका ताना-बाना है, जो अनगिनत तरीकों से प्रकट होता है।

द्वंद्वों से परे • यह गुण एक दार्शनिक समझ की ओर भी इशारा करता है जहाँ एक और अनेक, पारलौकिक और अंतर्निहित के बीच के भेद अंततः दूर हो जाते हैं। "अनेकत्व" उसकी विलक्षणता से विचलन नहीं है बल्कि उसका विस्तार है, उसकी असीम प्रकृति की एक बाहरी अभिव्यक्ति है। वह वह है जो अनेक के रूप में प्रकट होता है, अपनी विलक्षण पहचान खोए बिना अस्तित्व के सभी पहलुओं में व्याप्त है।

564. ब्रह्मविष्णुशिवात्मकाय

ब्रह्मा, विष्णु और शिव- इन दिव्य त्रिमूर्तियों के एकात्म स्वरूप को नमन।

विस्तार : ब्रह्माविष्णुशिवात्मकाय नाम एक गहरा दार्शनिक कथन है, जो हिंदू धर्म के तीन प्राथमिक देवताओं—ब्रह्मा, विष्णु और शिव—की एक ही, सर्वोपरि परम सत्ता के भीतर परम एकता को दर्शाता है। यह इन तीनों देवताओं के नामों को 'आत्मका' के साथ जोड़ता है, जिसका अर्थ है "जिसका स्वभाव है," या "जो स्वयं की आत्मा है।"

दिव्य त्रिमूर्ति (Trimurti) हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, ब्रह्मा, विष्णु और शिव तीन मूलभूत लौकिक कार्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं: • ब्रह्मा: निर्माता, ब्रह्मांड को प्रकट करने के लिए जिम्मेदार। • विष्णु: पालक, जो सृष्टि के भीतर धर्म और व्यवस्था बनाए रखते हैं। • शिव: संहारक/परिवर्तक, जो नए सृजन की अनुमति देने के लिए ब्रह्मांड को भंग करते हैं।

लौकिक कार्यों की एकता ब्रह्माविष्णुशिवात्मकाय यह दर्शाता है कि ये तीन अलग-अलग कार्य अलग-अलग सत्ताएँ नहीं हैं, बल्कि एक ही, परम वास्तविकता के विविध पहलू या अभिव्यक्तियाँ हैं। इस पहलू में, कालभैरव केवल तीनों में से एक नहीं हैं, बल्कि स्वयं सार, अंतर्निहित चेतना और एकीकृत आत्मा हैं जिससे ये तीनों पहलू उत्पन्न होते हैं और जिसमें वे अंततः विलीन हो जाते हैं। वे अस्तित्व के सभी आधार हैं, सृजन, संरक्षण और विनाश की व्यक्तिगत भूमिकाओं से परे हैं।

परम आत्मा (Paramatman) 'आत्मका' शब्द इस बात पर जोर देता है कि वे इस दिव्य त्रिमूर्ति के "आत्मा" या "स्वयं" हैं। यह कालभैरव को परमात्मा—परम आत्मा या सार्वभौमिक स्व—की स्थिति तक पहुँचाता है, जो उच्चतम देवताओं सहित सभी अस्तित्व का स्रोत और सार है। वे परम वास्तविकता (ब्रह्म) हैं जो इन तीन गतिशील सिद्धांतों के रूप में प्रकट होती है।

द्वैत से परे (Transcending Duality) यह नाम अद्वैत सत्य की ओर इशारा करता है कि जबकि वातानुकूलित मन विशिष्ट देवताओं और कार्यों को मानता है, परम वास्तविकता अविभेदित और एकीकृत है। कालभैरव, ब्रह्माविष्णुशिवात्मकाय के रूप में, इस परम सत्य का प्रतीक हैं, जो स्वयं के भीतर दिव्य के सभी पहलुओं को समाहित करते हैं। वे ही हैं जो इन तीन प्राथमिक ऊर्जाओं के माध्यम से सृजन, पोषण और विलय के पूरे लौकिक नाटक का संचालन करते हैं।

565. ब्रह्मगर्भाय

जिन्होंने ब्रह्मा, अर्थात सृष्टिकर्ता को अपने गर्भ में धारण किया है, उन्हें नमन।

विस्तार : ब्रह्मगर्भाय नाम भगवान कालभैरव के लिए एक गहन विशेषण है, जो "ब्रह्मा" और "गर्भ" से बना है, जो धारण और परम कारणता के संबंध को दर्शाता है।

सृष्टि का गर्भ "गर्भ" का शाब्दिक अर्थ "गर्भ", "भ्रूण" या "अंदर" होता है। आध्यात्मिक और ब्रह्मांडीय अर्थ में, यह उस स्रोत, आधार या उद्गम का प्रतिनिधित्व करता है जिससे कुछ निकलता है या जिसमें कुछ समाहित होता है। जब इसे परम सत्ता पर लागू किया जाता है, तो यह परम धारक या ब्रह्मांडीय मैट्रिक्स को दर्शाता है।

ब्रह्मा, सृष्टिकर्ता ब्रह्मा को पारंपरिक रूप से हिंदू त्रिमूर्ति में सृष्टिकर्ता देवता के रूप में जाना जाता है, जो ब्रह्मांड को प्रकट करने के लिए जिम्मेदार हैं। हालांकि, कालभैरव के संदर्भ में, ब्रह्मा की भूमिका अधीनस्थ या समाहित है।

परम स्रोत और धारण इसलिए "ब्रह्मगर्भाय" का अर्थ है "वह जिसके गर्भ में ब्रह्मा हैं" या "वह जिसका गर्भ ब्रह्मा है"। यह इंगित करता है कि कालभैरव सृष्टिकर्ता देवता ब्रह्मा के भी परम स्रोत और धारक हैं। यह एक दार्शनिक पदानुक्रम का तात्पर्य है जहाँ कालभैरव का अस्तित्व ब्रह्मा से पहले और उन्हें समाहित करता है।

यह नाम कालभैरव को पारंपरिक सृष्टिकर्ता, पालक और संहारक भूमिकाओं से परे एक स्थिति तक पहुँचाता है। वह आदिम ऊर्जा हैं, परम वास्तविकता हैं जिससे रचनात्मक आवेग (ब्रह्मा द्वारा प्रतिनिधित्व) भी उत्पन्न होता है। वह अप्रकट स्रोत हैं जिससे सृष्टि भी उत्पन्न होती है, ब्रह्मांडीय गर्भ जो सभी अस्तित्व की क्षमता को धारण करता है। यह उनकी सर्वोच्च और शाश्वत प्रकृति को दर्शाता है, जो सृष्टि और संहार के चक्रों से परे है।

566. अक्षराय

जो शाश्वत, अविनाशी और नित्य हैं, उन (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : अक्षराय (अक्षर) नाम हिंदू दर्शन और संस्कृत में अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो "क्षर" (नष्ट होना, क्षय होना) मूल और "अ-" (नहीं) उपसर्ग से व्युत्पन्न है। इस प्रकार, अक्षर का शाब्दिक अर्थ है "जो नष्ट न हो," "अविनाशी," या "अक्षय।" यह दिव्य के शाश्वत और अपरिवर्तनीय सार को संदर्भित करता है।

अविनाशी वास्तविकता यह नाम सीधे भगवान कालभैरव के उत्कृष्ट और अमर स्वरूप की ओर इंगित करता है। सभी भौतिक रूपों के विपरीत, जो जन्म, वृद्धि, परिवर्तन, क्षय और मृत्यु के अधीन हैं, अक्षर इन परिवर्तनों से परे है। यह उस परम, अव्यक्त वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करता है जो सभी सृष्टि का आधार है। वेदांतिक विचार में, ब्रह्म, परम वास्तविकता, को अक्सर अक्षर के रूप में वर्णित किया जाता है। चूंकि कालभैरव इस परम वास्तविकता का प्रतीक हैं, वे आंतरिक रूप से अक्षर हैं।

शाश्वत शब्द (ध्वनि) भाषा और पवित्र ध्वनि के संदर्भ में, अक्षर "अक्षर" या "वर्ण" को भी संदर्भित करता है, विशेष रूप से आदिम ध्वनि "ॐ" को। बोले गए शब्दों के विपरीत, जो क्षणभंगुर होते हैं, मौलिक ध्वनियाँ (अक्षर) शाश्वत और ब्रह्मांडीय कंपन के मूल निर्माण खंड मानी जाती हैं। अक्षर होने के नाते, कालभैरव को शाश्वत शब्द (ध्वनि सिद्धांत) से पहचाना जाता है जिससे सभी सृष्टि उत्पन्न होती है और जिसमें वह अंततः लौटती है। वे सभी मंत्रों का सार और ब्रह्मांड की परम प्रतिध्वनि हैं।

काल और स्थान से परे चूंकि अक्षर अविनाशी है, यह काल (समय) और स्थान की सीमाओं से भी परे है। कालभैरव, काल के स्वामी के रूप में, विरोधाभासी रूप से अपने परम स्वरूप में समय से परे हैं, शाश्वत वर्तमान का प्रतीक हैं। वे वह स्थिर आधार हैं जिस पर संपूर्ण ब्रह्मांडीय नाटक चलता है, फिर भी वे इसके परिवर्तनों से अछूते रहते हैं।

आध्यात्मिक महत्व भक्त के लिए, कालभैरव को अक्षर के रूप में ध्यान करना जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) से मुक्ति प्राप्त करने का प्रतीक है, जो स्वाभाविक रूप से नश्वर है। यह एक स्वीकृति है कि सच्चा आश्रय शाश्वत, अपरिवर्तनीय दिव्य में निहित है, जो उन लोगों को अमरता प्रदान करता है जो अपने सच्चे स्व को इस अक्षर सिद्धांत के साथ एक मानते हैं।

567. दम्भाय

जो अपने भक्तों की परीक्षा लेने या दुष्टों को दंडित करने के लिए अभिमानी या कपटी हो सकते हैं, उन प्रभु को नमन।

विस्तार : दम्भाय (Dambhāya) नाम संस्कृत शब्द 'दम्भ' (Dambha) से लिया गया है, जिसका अर्थ गर्व, पाखंड, कपट या आडंबर हो सकता है। जब इसे कालभैरव से जोड़ा जाता है, तो इसका अर्थ सामान्य मानवीय घमंड से परे होकर एक गहन धार्मिक और दार्शनिक महत्व प्राप्त कर लेता है।

दिव्य गर्व और ब्रह्मांडीय उद्देश्य दिव्य संदर्भ में, "गर्व" कोई दोष नहीं है, बल्कि उनकी परम संप्रभुता और अदम्य शक्ति का एक पहलू है। यह उनकी सर्वोच्च आत्मनिर्भरता और उनके परम, अजेय सत्य होने का प्रतीक है। वे गर्वित हैं क्योंकि उनके समान या उनसे बढ़कर कोई नहीं है। यह दिव्य गर्व उनकी अंतर्निहित पूर्णता (pūrṇatā) की अभिव्यक्ति है।

भक्तों की परीक्षा कालभैरव, दम्भ के रूप में, अपने भक्तों की श्रद्धा और विश्वास की गहराई का परीक्षण करने के लिए कपटी या गर्वित व्यवहार कर सकते हैं। ये दिव्य "परीक्षण" धोखा देने या अन्यायपूर्ण दंड देने के लिए नहीं होते, बल्कि भक्ति को मजबूत करने, इरादों को शुद्ध करने और भक्त को अपने भ्रम और अहंकार पर विजय प्राप्त करने में मदद करने के लिए होते हैं। ये परीक्षण

अंततः भक्त के आध्यात्मिक विकास और आत्मज्ञान के लिए होते हैं। उनका स्पष्ट "कपट" चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों या भ्रामक दिखावे के रूप में प्रकट हो सकता है, जो भक्त को सतहीपन से परे देखने के लिए प्रेरित करता है।

दुष्टों को दंडित करना धर्म के संरक्षक और शिव के उग्र पहलू के रूप में, कालभैरव दुष्टों और उन लोगों को दंडित करने के लिए "दम्भ" का उपयोग करते हैं जो वास्तव में कपटी, पाखंडी या अहंकारी हैं। वे उनके अपने नकारात्मक गुणों को उन पर वापस प्रतिबिंबित करते हैं, उनके गर्व या कपट का उपयोग उनके खिलाफ करते हैं, जिससे उनका पतन होता है। यह ब्रह्मांडीय न्याय का एक कार्य है, जहाँ दुष्ट अपनी ही कमजोरियों से उलझ जाते हैं, जो दिव्य इच्छा द्वारा नियोजित होता है। वे झूठे दिखावों और अधर्म को उजागर करते हैं और नष्ट करते हैं।

भ्रम का नाश करने वाले अंततः, दम्भ कालभैरव को मनुष्यों में "दम्भ" – गर्व, पाखंड और भ्रम जो आध्यात्मिक प्रगति को रोकते हैं – के विनाशक के रूप में भी संदर्भित कर सकता है। इन गुणों को स्वयं में धारण करके या धारण करते हुए प्रतीत होकर, वे भक्तों को उन्हें अपने भीतर पहचानने और उनसे परे जाने में मदद करते हैं। वे माया (maya) के जटिल जाल को सुलझाने वाले और परम सत्य को प्रकट करने वाले हैं।

568. ब्रह्मज्योतिषे

जो परम ब्रह्म की दिव्य, तेजोमयी ज्योति स्वरूप हैं, उनको नमन।

विस्तार : नाम ब्रह्मज्योतिषे दो गहन संस्कृत शब्दों का संयोजन है: ब्रह्मा और ज्योतिष।

ब्रह्म: परम वास्तविकता हिंदू दर्शन में, विशेष रूप से उपनिषदों में, ब्रह्म परम वास्तविकता, परम सत्य, सर्वोच्च आत्मा और सभी अस्तित्व का स्रोत है। यह सभी गुणों से परे, निराकार, कालातीत, अनंत और सर्वव्यापी है। यह अजन्मा निर्माता, ब्रह्मांड का अपरिवर्तनीय आधार है। किसी चीज़ को "ब्रह्म" कहना उसे उच्चतम संभव आध्यात्मिक महत्व और एक पारलौकिक गुण प्रदान करना है।

ज्योतिष: दिव्य प्रकाश और तेज ज्योतिष का शाब्दिक अर्थ है "प्रकाश," "चमक," "तेज," या "दीप्ति।" आध्यात्मिक संदर्भ में, यह दिव्य ज्ञान, आध्यात्मिक ज्ञान, बुद्धि का प्रकाश और अज्ञान के अंधकार को दूर करने वाला आंतरिक मार्गदर्शन दर्शाता है। यह केवल भौतिक प्रकाश नहीं है बल्कि अलौकिक, सचेत, सर्वज्ञ प्रकाश है।

ब्रह्म का तेजस्वी प्रकाश इस प्रकार, ब्रह्मज्योतिषे भगवान कालभैरव का वर्णन इस परम वास्तविकता —ब्रह्म—के अत्यंत तेजस्वी प्रकाश के रूप में करता है। इसका अर्थ कई गहन अवधारणाएँ हैं:

1. सभी ज्ञान का स्रोत: वह सभी ज्ञान, बुद्धि और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि का स्रोत हैं। वह जिस प्रकाश का प्रतिनिधित्व करते हैं, वह कोई निर्मित घटना नहीं है, बल्कि स्वयं परम सत्ता का शाश्वत, स्वयंभू सार है। 2. अज्ञान का नाश करने वाला: "ब्रह्म के प्रकाश" के रूप में, वह माया (भ्रम) और अविद्या (अज्ञान) के अंधकार को दूर करते हैं जो व्यक्तिगत आत्माओं से वास्तविकता के वास्तविक स्वरूप को छिपाता है। उनकी भक्ति आध्यात्मिक ज्ञान और आत्म-साक्षात्कार की ओर ले जाती है। 3. अंतर्निहितता और पराकाष्ठा: जबकि ब्रह्म को अक्सर पारलौकिक (ब्रह्मांड से परे) के रूप में वर्णित किया जाता है, कालभैरव ब्रह्मज्योतिषे के रूप में इस सर्वोच्च चेतना के अंतर्निहित पहलू (ब्रह्मांड के भीतर) का प्रतीक हैं, जो सभी प्राणियों के लिए मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में प्रकट होते हैं। 4. दिव्य चेतना: यह नाम सर्वोच्च चेतना के साथ उनकी पहचान पर जोर देता है। वह केवल ब्रह्म का एक उत्सर्जन नहीं हैं बल्कि उसका सार हैं, जो दिव्य शक्ति और ज्ञान की एक गतिशील, चमकदार अभिव्यक्ति के रूप में प्रकट होते हैं। 5. सर्वोच्च पवित्रता और शुभता: प्रकाश को सार्वभौमिक रूप से पवित्रता, सत्य और शुभता से जोड़ा जाता है। "ब्रह्म के प्रकाश" के रूप में, वह इन गुणों के शिखर का प्रतिनिधित्व करते हैं, ऐसी पवित्रता का विकिरण करते हैं जो सभी दोषों को शुद्ध करती है।

569. बृहस्पतये

प्रार्थना के महान स्वामी, देवताओं के आचार्य (बृहस्पति) को नमन।

विस्तार : बृहस्पति नाम देवों (देवताओं) के दिव्य गुरु को संदर्भित करता है और गहन ज्ञान, विद्या और आध्यात्मिक मार्गदर्शन का प्रतीक है। भगवान शिव को, अपने कालभैरव रूप में, बृहस्पति के रूप में नमन किया जाता है, जो सभी ज्ञान पर उनकी परम निपुणता और सर्वोच्च मार्गदर्शक के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है।

प्रार्थना और शुभता के स्वामी बृहस्पति का शाब्दिक अर्थ है "प्रार्थना या भक्ति के स्वामी" (बृह - प्रार्थना, वाणी; पति - स्वामी)। वह पवित्र वाणी, मंत्रों और यज्ञीय अनुष्ठानों के अधिष्ठाता देवता हैं। इस प्रकार, कालभैरव, बृहस्पति के साथ पहचाने जाने पर, सभी आध्यात्मिक invocations (आह्वान) की प्रभावकारिता और शक्ति की देखरेख करते हैं। वह बृहस्पति ग्रह (गुरु) से भी जुड़े हैं, जो विस्तार, समृद्धि, ज्ञान और शुभता का प्रतीक है।

देवताओं के गुरु हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, बृहस्पति देवों के गुरु (शिक्षक) हैं, जो असुरों के खिलाफ उनकी लड़ाइयों में उनका मार्गदर्शन करते हैं और दिव्य ज्ञान और रणनीतियाँ प्रदान करते हैं। कालभैरव को बृहस्पति के साथ पहचान कर, यह नाम इस बात पर जोर देता है कि कालभैरव सभी दिव्य ज्ञान का अंतिम स्रोत और सर्वोच्च शिक्षक हैं, यहाँ तक कि स्वयं देवताओं के भी। वह अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, अज्ञानता को दूर करते हैं, और प्राणियों को आध्यात्मिक मुक्ति की ओर ले जाते हैं।

सर्वोच्च बुद्धि और धर्म बृहस्पति गहन बुद्धि, धार्मिक आचरण (धर्म) और ज्ञान के माध्यम से ब्रह्मांडीय व्यवस्था के संरक्षण का प्रतिनिधित्व करते हैं। कालभैरव को बृहस्पति के रूप में पहचानना उनकी भूमिका को न केवल बुराई के एक दुर्जेय संहारक के रूप में उजागर करता है, बल्कि प्रबुद्ध समझ के माध्यम से धर्म के अंतिम संरक्षक के रूप में भी। वह आध्यात्मिक बुद्धि के उच्चतम रूप और दिव्य मार्गदर्शन की शक्ति का प्रतीक हैं।

570. बीजबुद्धये

जिनकी बुद्धि ही समस्त सृष्टि का बीज है, उन्हें नमन।

विस्तार : बीजबुद्धये नाम एक गहरा संस्कृत यौगिक है जो बीज (seed) और बुद्धि (intelligence, intellect, or wisdom) को जोड़ता है। यह नाम कालभैरव को समस्त प्रकट अस्तित्व के परम स्रोत के रूप में संदर्भित करता है, जहाँ सृष्टि उनकी परम चेतना से उत्पन्न होती है।

सृष्टि के बीज के रूप में दिव्य बुद्धि अपने मूल में, बीजबुद्धये यह दर्शाता है कि संपूर्ण ब्रह्मांड, अपनी जटिल प्रणालियों, नियमों और विविध रूपों के साथ, भैरव की दिव्य बुद्धि से उत्पन्न होता है। जिस प्रकार एक छोटा बीज (bīja) एक विशाल वृक्ष की पूरी क्षमता और खाका रखता है, उसी प्रकार उनकी चेतना सृष्टि के सभी डिज़ाइन और अंतर्निहित कंपनकारी शक्तियों को धारण करती है जो सभी सृष्टियों में खिलती हैं। यह एक पूर्व-मौजूद, अप्रकट बुद्धि का तात्पर्य है जो ब्रह्मांड का संचालन करती है।

आदि कारण (Kāraṇa) यह नाम कालभैरव के 'कारण' या आदि कारण के दार्शनिक अवधारणा के साथ संरेखित है। किसी भी भौतिक अभिव्यक्ति से पहले, एक सूक्ष्म, बुद्धिमान मैट्रिक्स होता है। बीज इस सूक्ष्म क्षमता का प्रतिनिधित्व करता है, और बुद्धि इस क्षमता के बुद्धिमान और सचेत पहलू को दर्शाती है। यह कोई अंध शक्ति नहीं है, बल्कि एक स्वाभाविक रूप से बुद्धिमान और सर्वज्ञ चेतना है जो ब्रह्मांड की विकासवादी प्रक्रिया को आरंभ और निर्देशित करती है।

समस्त ज्ञान और विवेक का स्रोत चूंकि उनकी बुद्धि समस्त सृष्टि का बीज है, इसलिए यह स्पष्ट है कि ब्रह्मांड के भीतर मौजूद ज्ञान, विवेक और समझ के सभी रूप अंततः उनसे ही उत्पन्न होते हैं। वे वह स्रोत हैं जिससे सभी विज्ञान, कलाएँ, दर्शन और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्रवाहित होती हैं। एक भक्त के लिए, इस नाम का चिंतन इस समझ की ओर ले जा सकता है कि सच्चा ज्ञान इस दिव्य, आदिम बुद्धि का प्रतिबिंब है।

अतींद्रिय और अंतर्निहित यह नाम कालभैरव की भूमिका को अतींद्रिय (प्रकट सृष्टि से परे विद्यमान) और अंतर्निहित (सृष्टि के प्रत्येक कण में निवास करने वाले) दोनों के रूप में समाहित करता है। उनकी बुद्धि वह बीज है जिससे सब कुछ बढ़ता है, और साथ ही, यह वह मूलभूत बुद्धि है जो उस वृद्धि के हर पहलू को नियंत्रित और बनाए रखती है।

571. ब्रह्मचारिणे

ब्रह्म के मार्ग पर चलने वाले, पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले को नमन।

विस्तार : ब्रह्मचारिणे नाम संस्कृत शब्द ब्रह्मचारिन् (Brahmacārin) से लिया गया है, जो दो महत्वपूर्ण शब्दों: ब्रह्म (Brahman) और चारिन् (Cārin) का एक यौगिक है।

ब्रह्म का मार्ग (आध्यात्मिक आचरण) चारिन् (Cārin) का अर्थ है "जो चलता है, चलता है, या प्रदर्शन करता है।" एक आध्यात्मिक संदर्भ में, इसका अर्थ है "जो एक मार्ग का अनुसरण करता है या कुछ सिद्धांतों के अनुसार अपना आचरण करता है।" इसलिए, ब्रह्मचारिन् मुख्य रूप से "जो ब्रह्म के मार्ग पर चलता है" को दर्शाता है, जिसका अर्थ है कि जो परम सत्य, आध्यात्मिक ज्ञान और दिव्य की प्राप्ति में लगा हुआ है। यह केवल बौद्धिक समझ का मार्ग नहीं है, बल्कि गहन आध्यात्मिक अभ्यास और परिवर्तन का मार्ग है। कालभैरव, इस पहलू में, इस आध्यात्मिक यात्रा के परम अवतार का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो उच्चतम वास्तविकता में पूरी तरह से लीन हैं।

पूर्ण ब्रह्मचर्य और आत्म-नियंत्रण जबकि प्राथमिक अर्थ ब्रह्म की खोज से संबंधित है, ब्रह्मचारिन् "ब्रह्मचर्य" या "संयम" का भी दृढ़ता से अर्थ देता है। यह कई हिंदू परंपराओं में आध्यात्मिक अनुशासन का एक महत्वपूर्ण पहलू है, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो एक तपस्वी मार्ग पर हैं। यह संवेदी इच्छाओं पर कठोर नियंत्रण और आध्यात्मिक शुद्धि और ज्ञान की ओर महत्वपूर्ण ऊर्जा (ओजस) के पुनर्निर्देशन की बात करता है। भगवान शिव, और विस्तार से कालभैरव, को अक्सर सर्वोच्च तपस्वी और योगी (योगीश्वर) के रूप में चित्रित किया जाता है, जिनका अपनी इंद्रियों और इच्छाओं पर पूर्ण नियंत्रण होता है। यह ब्रह्मचर्य केवल परहेज़ नहीं है, बल्कि पूर्ण आत्म-नियंत्रण की स्थिति है, जहाँ सभी ऊर्जाएँ आध्यात्मिक प्राप्ति की ओर ऊपर की ओर प्रवाहित होती हैं।

भक्तों के लिए महत्व भक्तों के लिए, कालभैरव को ब्रह्मचारिणे के रूप में आह्वान करना उन्हें आत्म-नियंत्रण, अनुशासन और अपने आध्यात्मिक लक्ष्यों पर अटूट ध्यान विकसित करने के लिए प्रेरित और सशक्त करता है। यह उनकी शुद्ध और बेदाग प्रकृति को दर्शाता है, जो सांसारिक आसक्तियों और विकर्षणों से मुक्त है, जिससे आध्यात्मिक साधकों के लिए एक आदर्श और मार्गदर्शक के रूप में उनकी भूमिका मजबूत होती है। वह शुद्ध, मिलावट रहित चेतना का प्रतीक हैं जो सभी आध्यात्मिक अभ्यास का लक्ष्य है।

572. ब्राह्मणाय

ब्राह्मणीय वर्ग, ब्राह्मण के अवतार को नमन।

विस्तार : ब्राह्मणाय (ब्राह्मण) नाम प्राचीन हिंदू समाज में चार सामाजिक वर्गों (वर्णों) में से सर्वोच्च को संदर्भित करता है, जो पारंपरिक रूप से पुजारियों, शिक्षकों और बुद्धिजीवियों से जुड़ा है। जब इसे भगवान शिव पर, और विशेष रूप से कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह सामाजिक-आर्थिक

अर्थ से परे होकर एक गहन आध्यात्मिक और ब्रह्मांडीय महत्व को दर्शाता है।

पवित्र का अवतार ब्राह्मण के रूप में, कालभैरव पवित्र ज्ञान, अनुष्ठानिक शुद्धता और वेदों के सार का प्रतीक हैं, जो हिंदू धर्म के मूलभूत ग्रंथ हैं। वे धर्म (धार्मिक आचरण) पर परम अधिकार हैं और सभी आध्यात्मिक ज्ञान और शिक्षा के स्रोत हैं। यह केवल एक पुरोहित कार्य नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक नियमों और सार्वभौमिक व्यवस्था पर उनकी पूर्ण संप्रभुता का एक कथन है।

शुद्ध चेतना का स्वरूप "ब्राह्मण" शब्द "ब्रह्म" से लिया गया है, जो हिंदू दर्शन में परम वास्तविकता, निरपेक्ष और सर्वोच्च चेतना है। इसलिए, ब्राह्मणाय का अर्थ है कि कालभैरव इस परम वास्तविकता—शुद्ध, निर्मल और शाश्वत चेतना—के अवतार हैं। वे केवल ब्रह्म के अनुयायी या शिक्षक नहीं हैं, बल्कि स्वयं ब्रह्म हैं। यह उनके उग्र पहलू के साथ मेल खाता है, क्योंकि ब्रह्म भी सभी द्वैत से परे अगम्य, विस्मयकारी सत्य है।

आध्यात्मिक ज्ञान के दाता आदिम ब्राह्मण के रूप में, वे उन शक्तियों को नियंत्रित करते हैं जो ज्ञानोदय और आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) की ओर ले जाती हैं। वे सर्वोच्च आध्यात्मिक आदर्श का प्रतिनिधित्व करते हैं, न केवल अनुष्ठानों के प्रदर्शन का प्रतीक हैं, बल्कि दिव्य सत्य की गहन समझ और प्राप्ति का भी। वे अपने भक्तों को मन, बुद्धि और आत्मा की शुद्धता प्रदान करते हैं और उन्हें आत्म-साक्षात्कार की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

अज्ञान के संहारक अपने उग्र रूप में, कालभैरव, ब्राह्मण के रूप में, अज्ञान (अविद्या) और भ्रम (माया) को नष्ट करने में अपनी भूमिका को भी दर्शाते हैं। जैसे एक पुजारी पवित्र अग्नि के माध्यम से नकारात्मकता को दूर करता है, वैसे ही वे अपनी चेतना की अग्नि के माध्यम से उन बाधाओं को जला देते हैं जो प्राणियों को उनके वास्तविक स्वरूप को जानने से रोकती हैं, जो स्वाभाविक रूप से दिव्य है।

573. ब्राह्मणप्रियाय

उन (भैरव) को नमन, जो ज्ञानी और विद्वान ब्राह्मणों के अत्यंत प्रिय हैं।

विस्तार : ब्राह्मणप्रियाय नाम ब्राह्मण और प्रिय शब्दों का एक यौगिक है, और यह कालाभैरव के उन लोगों के साथ गहरे संबंध को दर्शाता है जो आध्यात्मिक शिक्षा, ज्ञान और अनुष्ठानिक शुद्धता में गहराई से संलग्न हैं।

• ब्राह्मण (Brāhmaṇa): यह शब्द पारंपरिक हिंदू प्रणाली में ब्राह्मण वर्ण (सामाजिक वर्ग) से संबंधित लोगों को संदर्भित करता है, जिनके कर्तव्यों में पारंपरिक रूप से वेदों का अध्ययन और अध्यापन, अनुष्ठान करना और धर्म का पालन करना शामिल था। अधिक व्यापक और दार्शनिक रूप से, "ब्राह्मण" उस व्यक्ति को दर्शाता है जो ब्रह्म - परम वास्तविकता, निरपेक्ष - के प्रति समर्पित है। इसलिए, यह उन लोगों को इंगित करता है जिनके पास आध्यात्मिक ज्ञान, बुद्धि और सदाचारी आचरण है, न कि केवल जन्मसिद्ध अधिकार। वे दिव्य ज्ञान के साधक और संरक्षक हैं।

• प्रिय (Priya): इस शब्द का अर्थ है "प्रिय," "प्यारा," "का शौकीन," या "को भाने वाला।"

बुद्धिमान और विद्वान के प्रति स्नेह (Fondness for the Wise and Learned) यह नाम दर्शाता है कि कालाभैरव उन लोगों के प्रति विशेष स्नेह रखते हैं जो एक सच्चे ब्राह्मण के गुणों को धारण करते हैं: गहरा ज्ञान (विशेषकर वेदों और पवित्र ग्रंथों का), धर्म का पालन, आध्यात्मिक शुद्धता, और परम सत्य (ब्रह्म) की खोज। इसका तात्पर्य है कि ऐसे व्यक्ति उनके द्वारा विशेष रूप से पसंद किए जाते हैं, और उनके आध्यात्मिक प्रयासों को आशीर्वाद मिलता है। यह "स्नेह" मनमाना नहीं है बल्कि परम वास्तविकता के रूप में उनके अपने स्वभाव का प्रतिबिंब है; वे उन लोगों की सराहना करते हैं और उन्हें संजोते हैं जो उस वास्तविकता को समझने और उसे साकार करने का प्रयास करते हैं।

धर्म और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के संरक्षक (Upholder of Dharma and Cosmic Order) "ब्राह्मणों के प्रति स्नेह" रखकर, कालाभैरव धर्म के संरक्षक के रूप में अपनी भूमिका को रेखांकित करते हैं, क्योंकि ब्राह्मण पारंपरिक रूप से धार्मिक जीवन और वैदिक ज्ञान को बनाए रखते थे और उनका प्रचार करते थे। उनके प्रति उनका पक्षपात आध्यात्मिक ज्ञान, धार्मिक कार्य और ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने में पवित्र परंपराओं के संरक्षण के महत्व की पुष्टि के रूप में देखा जा सकता है।

ज्ञान और संरक्षण के प्रदाता (Bestower of Knowledge and Protection) आध्यात्मिक साधकों के लिए, यह नाम बताता है कि कालाभैरव के प्रति भक्ति बौद्धिक तीक्ष्णता, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और ज्ञान के मार्ग पर चलने वालों के लिए सुरक्षा प्रदान कर सकती है। वे उन बाधाओं को दूर करते हैं जो आध्यात्मिक समझ में बाधा डालती हैं और ज्ञान की खोज के लिए अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देते हैं। इसका तात्पर्य है कि स्वयं को ज्ञान और धार्मिक आचरण के साथ संरेखित करना इस भयंकर फिर भी परोपकारी देवता को प्रिय बनाता है।

574. युगादिकृते

सभी ब्रह्मांडीय युगों (युगों) के आदि के निर्माता को नमन।

विस्तार : युगादिकृते नाम संस्कृत शब्दों युग, आदि और कृत का एक यौगिक है।

• युग (Yuga): यह एक लौकिक युग या काल को संदर्भित करता है, हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में समय की एक विशाल अवधि, जैसे सत्य युग, त्रेता युग, द्वापर युग और कलि युग। ये चक्र पृथ्वी पर धर्म, सत्य और आध्यात्मिक चेतना के विभिन्न चरणों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

• आदि (Ādi): इसका अर्थ है "शुरुआत," "पहला," "उत्पत्ति," या "स्रोत।"

• कृत (Kṛit): यह "निर्माता," "बनाने वाला," या "करने वाला" को दर्शाता है।

लौकिक चक्रों के निर्माता (Creator of Cosmic Cycles) इन शब्दों के संयोजन से, युगादिकृते का अर्थ है "सभी लौकिक युगों के आरंभ के निर्माता।" यह कालभैरव की भूमिका को स्वयं समय के सर्वोच्च संयोजक के रूप में रेखांकित करता है, न केवल इसके निरंतर प्रवाह का, बल्कि इसकी बहुत शुरुआत और संरचना का भी। वह दिव्य शक्ति हैं जो सृष्टि, संरक्षण और विनाश की विशाल, चक्रीय प्रकृति को गति प्रदान करती हैं जो लौकिक समय की हिंदू समझ को परिभाषित करती है।

लौकिक समय के स्वामी (Master of Cosmic Time) परम काल-स्वामी (काल) के रूप में, भैरव केवल वर्तमान क्षण को नियंत्रित नहीं करते हैं, बल्कि वे स्वयं स्रोत हैं जिससे सभी लौकिक विभाजन और युग उत्पन्न होते हैं। उनकी रचनात्मक शक्ति प्रत्येक युग की विशेषता वाले मौलिक लय और गुणों को स्थापित करने तक फैली हुई है, जो उन अवधियों के भीतर अस्तित्व की प्रकृति को निर्धारित करती है।

समय से परे (Beyond Time) यह नाम सूक्ष्म रूप से उनके पारलौकिक स्वरूप की ओर भी इशारा करता है। जबकि वे समय का निर्माण और शासन करते हैं, वे एक साथ समय से परे (महाकाल) भी हैं। वे शाश्वत रूप से विद्यमान हैं, पहले युग से पहले और अंतिम के बाद भी बने रहते हैं। उनके "शुरुआत के निर्माण" का कार्य एक अकृत, शाश्वत अवस्था को दर्शाता है जिससे सभी लौकिक अभिव्यक्तियाँ होती हैं। वे सभी लौकिक अस्तित्व का परम आधार हैं।

575. युगावर्ताय

जो अपनी गति में ब्रह्मांडीय युगों (युगों) को घूमते रहने का कारण बनते हैं उन्हें नमन।

विस्तार : युगावर्ताय नाम कालभैरव की ब्रह्मांडीय प्रक्रियाओं में भूमिका का एक गहरा वर्णन है, जो संस्कृत शब्दों 'युग' और 'आवर्त' से लिया गया है।

युग (Yuga): यह शब्द हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में ब्रह्मांडीय युगों या कालों को संदर्भित करता है, विशेष रूप से चार युगों - सत्य युग, त्रेता युग, द्वापर युग और कलियुग को। ये युग केवल समय की अवधि नहीं हैं, बल्कि मानवता के आध्यात्मिक और नैतिक विकास की एक चक्रीय प्रगति का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनमें से प्रत्येक विशिष्ट विशेषताओं, अवधियों और धर्म के स्तरों द्वारा चिह्नित है।

आवर्त (Āvarta): इस शब्द का अर्थ है "घूमना," "मोड़ना," "वापसी," या "चक्र।" यह घूर्णन, पुनरावृत्ति और पहियों के निरंतर घूमने की गतिशील प्रक्रिया को दर्शाता है।

ब्रह्मांडीय चक्रों के बुनकर (The Weaver of Cosmic Cycles) युगावर्ताय के रूप में, कालभैरव वह दिव्य शक्ति हैं जो इन ब्रह्मांडीय युगों की चक्रीय प्रकृति का संचालन, आरंभ और पोषण करती हैं। वह केवल समय के खुलने के साक्षी नहीं हैं, बल्कि सक्रिय कर्ता हैं जो इन विशाल अवधियों को एक के बाद एक, एक निरंतर और अपरिहार्य क्रम में घुमाते हैं। यह पहलू समय पर उनके पूर्ण प्रभुत्व को उजागर करता है, जो अस्तित्व के भव्य चक्रों के रूप में प्रकट होता है।

विकास और विघटन के लिए प्रेरणा (The Impetus for Evolution and Dissolution) प्रत्येक युग ब्रह्मांड की एक विशिष्ट स्थिति लाता है, जो सृजन, संरक्षण और अंततः विघटन या परिवर्तन की विशेषता है। इस भूमिका में कालभैरव वह अंतर्निहित ऊर्जा हैं जो इन परिवर्तनों को चलाती हैं, यह सुनिश्चित करती हैं कि ब्रह्मांडीय धर्म नियति के अनुसार प्रकट हो। वह वह हैं जो सार्वभौमिक घड़ी को गति में स्थापित करते हैं और उसके हर टिक को विनियमित करते हैं, सबसे बड़े ब्रह्मांडीय युग से लेकर सबसे छोटे क्षण तक।

समय के भ्रम से परे (Beyond the Illusion of Time) यह नाम दर्शाता है कि कालभैरव काल (समय) के अंतिम नियंत्रक हैं। युगों को घुमाकर, वह सभी सांसारिक घटनाओं की क्षणभंगुरता को रेखांकित करते हैं और हमें याद दिलाते हैं कि सभी निर्मित चीजें, विशाल युगों सहित, उनके शाश्वत, चक्रीय खेल के अधीन हैं। उन्हें युगावर्ताय के रूप में पहचानना यह स्वीकार करना है कि वह वह पारलौकिक वास्तविकता हैं जो समय के प्रवाह के भीतर और उससे परे दोनों हैं, जो अपने अनंत चक्रों के माध्यम से सृजन, रखरखाव और विघटन का मार्गदर्शन करती हैं।

576. युगाध्यक्षाय

सभी ब्रह्मांडीय युगों के सर्वोच्च अधिष्ठाता देवता को नमन।

विस्तार : युगाध्यक्ष नाम संस्कृत के शब्द युग और अध्यक्ष का एक यौगिक है, जो एक गहन ब्रह्मांडीय अधिकार और लौकिक प्रभुत्व को दर्शाता है।

• युग (Yuga): यह शब्द हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में एक ब्रह्मांडीय युग या काल को संदर्भित करता है, जो सृष्टि, संरक्षण और विघटन के चक्र में एक विशाल समयावधि है। इन्हें आमतौर पर सत्य, त्रेता, द्वापर और कलियुग के रूप में समझा जाता है, जो मिलकर एक महायुग का निर्माण करते हैं, और ऐसे अनगिनत चक्र एक कल्प (ब्रह्मा का एक दिन) का गठन करते हैं।

• अध्यक्ष (Adhyakṣa): इसका अर्थ है "अधीक्षक," "अधिष्ठाता देवता," "स्वामी," या "पर्यवेक्षक।" यह उस व्यक्ति को दर्शाता है जिसके पास किसी चीज पर अंतिम अधिकार और नियंत्रण होता है।

समय के अधिष्ठाता देवता (The Presiding Deity of Time) युगाध्यक्ष के रूप में, भगवान कालभैरव सभी ब्रह्मांडीय युगों के सर्वोच्च नियंत्रक और अधीक्षक हैं। वे केवल एक दर्शक नहीं हैं, बल्कि सक्रिय शक्ति हैं जो प्रत्येक युग की प्रगति और पराकाष्ठा को नियंत्रित करते हैं। उनका अधिकार सुनिश्चित करता है कि ब्रह्मांडीय समयरेखा दिव्य इच्छा के अनुसार प्रकट हो, प्रत्येक युग के

भीतर की विशेषताओं, अवधि और घटनाओं को निर्धारित करता है। इसमें सभ्यताओं का उत्थान और पतन, धर्म में परिवर्तन, और उन अवधियों के भीतर प्राणियों का आध्यात्मिक विकास या पतन शामिल है।

ब्रह्मांडीय चक्र के स्वामी (Lord of Cosmic Cycle) युगों के अध्यक्ष के रूप में उनकी भूमिका उन्हें भव्य ब्रह्मांडीय नाटक में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति बनाती है। वे विभिन्न युगों के बीच के संक्रमणों की देखरेख करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि आवश्यक परिवर्तन - सत्य युग के स्वर्ण युग से कलियुग के पतनशील युग तक - ठीक उसी तरह होते हैं जैसा कि निर्धारित है। यह समय पर उनके पूर्ण प्रभुत्व को दर्शाता है, क्योंकि वे ही हैं जो इन विशाल लौकिक चक्रों को आरंभ, बनाए रखते और समाप्त करते हैं।

अस्थिरता और ब्रह्मांडीय व्यवस्था का प्रतीक (Symbol of Impermanence and Cosmic Order) यह नाम युगों के ढांचे के भीतर सभी अस्तित्व की क्षणभंगुर प्रकृति को भी रेखांकित करता है। इन चक्रों की अध्यक्षता करके, कालभैरव इस सत्य को मूर्त रूप देते हैं कि प्रकट ब्रह्मांड में सब कुछ परिवर्तन, क्षय और अंततः विघटन के अधीन है। फिर भी, अध्यक्ष के रूप में, वे अडिग ब्रह्मांडीय व्यवस्था का भी प्रतिनिधित्व करते हैं जो सृष्टि के चक्रीय पुनरावृत्ति को सुनिश्चित करती है, समय के विशाल विस्तार में आध्यात्मिक विकास के लिए एक ढांचा प्रदान करती है। वे समय के अंतिम कानून निर्माता हैं, जो ब्रह्मांडीय संतुलन बनाए रखते हैं।

577. युगापघ्ने

युगों का विनाश और विघटन करने वाले को नमन।

विस्तार : युगापघ्ने नाम "युग" (ब्रह्मांडीय युग या काल) और "अपघ्ने" (नाशक, हटाने वाला, या विलायक) से बना एक यौगिक है। यह नाम भगवान शिव की परम विघटनकारी शक्ति और ब्रह्मांडीय पुनर्संयोजन की भूमिका को सशक्त रूप से व्यक्त करता है।

युगों की अवधारणा हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, समय चक्रीय है और इसे युगों (सत्य युग, त्रेता युग, द्वापर युग, और कलि युग) नामक विशाल कालों में विभाजित किया गया है, जो सामूहिक रूप से एक महायुग या "महान युग" का निर्माण करते हैं। कई महायुग मिलकर एक कल्प बनाते हैं, जो ब्रह्मा का एक दिन होता है। युग केवल कालानुक्रमिक विभाजन नहीं हैं, बल्कि धर्म, सद्गुण और मानव जीवनकाल में उत्तरोत्तर गिरावट का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो कलि युग के अंत में पूर्ण नैतिक और ब्रह्मांडीय क्षय में परिणत होता है।

ब्रह्मांडीय युगों के संहारक युगापघ्ने के रूप में, कालभैरव वह सर्वोच्च शक्ति हैं जो इन ब्रह्मांडीय युगों का अंत करती हैं। उनका कार्य केवल व्यक्तिगत जीवन या प्रजातियों के विनाश तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे युगों के पूर्ण विघटन तक फैला हुआ है जब वे अपना मार्ग पूरा कर लेते हैं। यह विघटन एक नई सृष्टि के लिए एक आवश्यक प्रस्तावना है, जो सृष्टि, संरक्षण और विनाश के शाश्वत चक्र (ब्रह्मा, विष्णु, शिव की त्रिमूर्ति) का प्रतीक है।

शुद्धि और नवीनीकरण यह विनाश नकारात्मक नहीं है; बल्कि, यह एक शुद्धि और एक पुनर्संयोजन है। जब एक युग अधर्म और असंतुलन से पूरी तरह भर जाता है, तो युगापघ्ने पुरानी व्यवस्था को मिटा देते हैं, जिससे एक नए चक्र के शुरू होने का मार्ग प्रशस्त होता है। वह शुद्धि की परम शक्ति हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था संतुलन में रहे, जो अब व्यवहार्य नहीं है उसे समाप्त करके। वह स्वयं समय के अवतार हैं, जो प्रत्येक प्रकट रूप को निर्दयता से निगल जाते हैं, जिससे एक कल्प के अंत में परम प्रलय (ब्रह्मांडीय विघटन) होता है।

समय का अतिक्रमण अंततः, इस भूमिका में, कालभैरव स्वयं समय के अतिक्रमण का प्रतिनिधित्व करते हैं। जबकि वह "युगों के संहारक" हैं, वह इन ब्रह्मांडीय चक्रों की सीमाओं से परे भी मौजूद हैं, उस शाश्वत और अपरिवर्तनीय वास्तविकता के रूप में जिससे सभी चक्र उत्पन्न होते हैं और जिसमें सभी चक्र विलीन हो जाते हैं।

578. यज्ञाय

जो पवित्र यज्ञ स्वरूप हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : यज्ञाय नाम इस गहन अवधारणा को दर्शाता है कि भगवान कालभैरव केवल यज्ञों के दर्शक या प्राप्तकर्ता नहीं हैं, बल्कि वे स्वयं पवित्र यज्ञ के साक्षात् स्वरूप और सार हैं।

यज्ञ का सार यज्ञ हिंदू धर्म में एक मुख्य अवधारणा है, जो पवित्र अग्नि के सामने किए जाने वाले किसी भी अनुष्ठान को संदर्भित करता है, जिसमें मंत्रों का जाप किया जाता है, जिसका उद्देश्य देवताओं (देवताओं) का आह्वान और उन्हें प्रसन्न करना या एक विशिष्ट आध्यात्मिक उद्देश्य को पूरा करना होता है। ये अनुष्ठान ब्रह्मांडीय व्यवस्था (ऋत) को बनाए रखने के लिए केंद्रीय हैं और मानव क्षेत्र को दिव्य से जोड़ने का एक साधन माने जाते हैं। स्वयं यज्ञ होने के नाते, कालभैरव सभी बलि के कृत्यों में निहित परम उद्देश्य और शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। वह सभी ऐसे आध्यात्मिक प्रयासों के अंतिम प्राप्तकर्ता, प्रक्रिया और फल हैं।

ब्रह्मांडीय यज्ञ एक व्यापक ब्रह्मांडीय अर्थ में, यज्ञ सृष्टि, संरक्षण और विघटन के निरंतर चक्र का भी प्रतिनिधित्व करता है। ब्रह्मांड के प्रत्येक पहलू को एक सतत यज्ञ के रूप में देखा जा सकता है। सूर्य प्रकाश और गर्मी देकर यज्ञ करता है, नदियाँ बहकर, पेड़ फल देकर। कालभैरव, शिव के उग्र पहलू के रूप में, इस ब्रह्मांडीय यज्ञ का प्रतीक हैं, विशेष रूप से शुद्धि और नवीनीकरण का पहलू जो अक्सर विनाश और तप (तपस्या) के माध्यम से आता है। वह ब्रह्मांडीय प्रदूषकों को शुद्ध करते हैं और अपनी उग्र शक्ति के माध्यम से सार्वभौमिक व्यवस्था का नवीनीकरण करते हैं।

सर्वोच्च अर्पण यह नाम यह भी दर्शाता है कि कालभैरव वह परम अर्पण हैं जो कोई कर सकता है; स्वयं को, अपने अहंकार को, और अपने सभी कर्मों, विचारों और शब्दों को दिव्य को समर्पित करना। वह निस्वार्थ कर्म और भक्ति के माध्यम से मुक्ति (मोक्ष) का मार्ग हैं, जहाँ भक्त यज्ञ के साथ और इस प्रकार दिव्य के साथ एक हो जाता है। जब कोई कालभैरव को सब कुछ अर्पित करता है, तो वे उसे उस सिद्धांत को अर्पित कर रहे होते हैं जो ब्रह्मांड को बनाए रखता है और नियंत्रित करता है।

धर्म का प्रतीक यज्ञ के अवतार के रूप में, कालभैरव धर्म का भी प्रतिनिधित्व करते हैं, वह प्राकृतिक नियम और धार्मिकता जो इन पवित्र कृत्यों द्वारा बनाए रखी जाती है। वह ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि बलिदान और आध्यात्मिक प्रयास के सिद्धांतों का सम्मान किया जाए और उन्हें उनका उचित फल मिले।

579. यज्ञपतये

सभी यज्ञों के दिव्य स्वामी और रक्षक को नमन।

विस्तार : यज्ञपतये (यज्ञपति) नाम दो मुख्य संस्कृत शब्दों में विभाजित है: यज्ञ और पति।

यज्ञों के स्वामी (यज्ञ)

यज्ञ किसी भी अनुष्ठानिक बलिदान, भेंट या भक्ति को संदर्भित करता है। वैदिक और तांत्रिक परंपराओं में, यज्ञ केवल देवताओं को दी जाने वाली भौतिक भेंट नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक अनुशासन, धर्म के कार्यों और ब्रह्मांडीय प्रक्रियाओं के विभिन्न रूपों का एक प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व

भी है। इनमें भव्य अग्नि अनुष्ठान (होम) से लेकर दैनिक आहुतियाँ (तर्पण) तक, और ध्यान में अहंकार और इच्छाओं का आंतरिक "बलिदान" भी शामिल हो सकता है।

संरक्षक और पालक (पति)

पति का अर्थ है "स्वामी," "मालिक," "शासक," या "संरक्षक।"

यज्ञ का ब्रह्मांडीय महत्व

यज्ञपति के रूप में, भगवान कालभैरव सभी बलि अनुष्ठानों के परम अधिकार और सार का प्रतीक हैं। इसके कई गहरे निहितार्थ हैं:

1. अनुष्ठानों के दिव्य प्रशासक: वह वह हैं जो सभी यज्ञों की अध्यक्षता करते हैं, उनके उचित निष्पादन को सुनिश्चित करते हैं, उनके आध्यात्मिक गुणों को प्राप्त करते हैं, और उनके फलों का वितरण करते हैं। कोई भी यज्ञ वास्तव में पूर्ण या प्रभावी नहीं होता जब तक कि उसे अंततः सर्वोच्च भगवान को अर्पित या उनके द्वारा मान्यता प्राप्त न हो।

2. यज्ञों का लक्ष्य: अंततः, सभी यज्ञ, चाहे वे बाहरी अग्नि अनुष्ठान हों या आंतरिक आध्यात्मिक अभ्यास, दिव्य से जुड़ने के लिए किए जाते हैं। कालभैरव, यज्ञपति के रूप में, यह दर्शाते हैं कि वह ऐसे सभी भक्तिपूर्ण कार्यों के अंतिम प्राप्तकर्ता और लक्ष्य हैं। उन्हें अर्पित करना सर्वोच्च सिद्धांत को अर्पित करना है।

3. रूपकात्मक बलिदान: भौतिक अनुष्ठानों से परे, यज्ञ आत्म-बलिदान, अनुशासन या समर्पण के किसी भी कार्य का भी प्रतिनिधित्व करता है जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था या आध्यात्मिक विकास में योगदान देता है। इसमें ज्ञान के लिए अज्ञानता का "बलिदान," मुक्ति के लिए आसक्ति का, या निस्वार्थ सेवा के लिए अहंकार का "बलिदान" शामिल है। कालभैरव, इन गहरे बलिदानों के स्वामी के रूप में, ऐसे परिवर्तनों का मार्गदर्शन और सशक्तिकरण करते हैं।

4. धर्म का अवतार: चूंकि यज्ञ धर्म (धार्मिक आचरण और ब्रह्मांडीय नियम) से जटिल रूप से जुड़ा हुआ है, यज्ञपति का अर्थ भैरव की ब्रह्मांडीय व्यवस्था के संरक्षक और प्रवर्तक के रूप में भूमिका भी है, जो यज्ञों के चक्र के माध्यम से स्थापित और बनाए रखी जाती है।

यज्ञपति को नमन करके, भक्त कालभैरव को सभी पवित्र कार्यों के सर्वोच्च संयोजक और सार के रूप में स्वीकार करते हैं, जिनके माध्यम से सभी भेंटों को पूर्ण किया जाता है और उनके दिव्य उद्देश्य की ओर निर्देशित किया जाता है।

580. यज्वने

यज्ञ करने वाले, पवित्र अनुष्ठान संपन्न करने वाले को नमन।

विस्तार : यज्वने नाम का अर्थ है "वह जो यज्ञ करता है" या "यज्ञ का कर्ता।"

यज्ञ का कर्ता यज्ञ वैदिक और हिंदू परंपराओं में एक केंद्रीय अवधारणा है, जो अग्नि के साथ अक्सर किए जाने वाले अर्पण, बलिदान या भक्ति के अनुष्ठान को दर्शाती है। यह केवल एक शारीरिक क्रिया नहीं है, बल्कि दिव्य से जुड़ने, ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखने और आशीर्वाद प्राप्त करने के उद्देश्य से एक गहरा आध्यात्मिक प्रयास है। "यज्वन" कहलाने से, भगवान भैरव को परम यजमान या बलिदानी कार्य का सार माना जाता है।

ब्रह्मांडीय बलिदान एक गहरे, दार्शनिक अर्थ में, यह नाम ब्रह्मांडीय बलिदान (पुरुष सूक्त) का संकेत देता है जहाँ आदिम सत्ता (पुरुष) ब्रह्मांड की रचना के लिए स्वयं का बलिदान करती है। भैरव, शिव के एक रूप के रूप में, इस ब्रह्मांडीय सिद्धांत का प्रतीक हैं - वे यजमान और बलि दोनों हैं, वे हैं जो एक निरंतर, चल रहे ब्रह्मांडीय "यज्ञ" के माध्यम से सृष्टि और संहार के चक्रों को आरंभ और बनाए रखते हैं।

प्राप्तकर्ता और स्वयं बलिदान इसके अलावा, यह शब्द यह भी संकेत दे सकता है कि वे केवल बलिदान के कर्ता नहीं हैं, बल्कि सभी बलिदानों के अंतिम प्राप्तकर्ता भी हैं। प्रत्येक अर्पण, भक्ति का प्रत्येक कार्य, अंततः उन तक पहुँचता है। उच्चतम अद्वैत (अद्वैतिक) समझ में, वे स्वयं बलिदान का कार्य, बलिदान की वस्तु और बलिदान का फल भी हैं - एक पूर्ण और सर्वव्यापी वास्तविकता।

भक्तों के लिए महत्व भक्तों के लिए, यह नाम भैरव की सभी अनुष्ठानिक पूजा और आध्यात्मिक प्रयासों के संरक्षक के रूप में भूमिका की पुष्टि करता है। उन्हें यज्वने के रूप में पूजने से सभी आध्यात्मिक कार्यों की सफल पूर्णता और ब्रह्मांडीय धर्म के साथ संरेखण का लाभ मिलता है। वे सुनिश्चित करते हैं कि भक्ति और sincere (सच्चे) अर्पणों को ब्रह्मांडीय व्यवस्था में पहचाना और एकीकृत किया जाए।

581. यज्ञांगाय

जिनके अंग स्वयं यज्ञ के घटक हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : यज्ञाङ्गाय (YAJNAANGGAAYA) नाम का अर्थ है "वह जिसके अंग ही यज्ञ के घटक हैं।" यह गहन नाम भगवान कालभैरव के वैदिक sacrificial ritual (यज्ञ) से आंतरिक संबंध को स्पष्ट करता है और सृष्टि, पोषण और विलय की प्रकृति के बारे में एक गहरे दार्शनिक सत्य को समाहित करता है।

ब्रह्मांडीय पुरुष और यज्ञ (The Cosmic Puruṣa and Yajna) यह अवधारणा ऋग्वेद के पुरुष सूक्त से बहुत अधिक ली गई है, जहाँ ब्रह्मांड की रचना देवताओं द्वारा किए गए एक आदिम यज्ञ के माध्यम से ब्रह्मांडीय पुरुष (आदिम सत्ता) के विखंडित शरीर से होती है। पुरुष के शरीर का प्रत्येक भाग ब्रह्मांड का एक घटक बन जाता है। इसी तरह, कालभैरव, शिव के एक उग्र रूप के रूप में, इस ब्रह्मांडीय पुरुष के रूप में पहचाने जाते हैं, जहाँ उनका स्वरूप ही यज्ञ का प्रतीक है।

यज्ञ के घटकों के रूप में अंग (Limbs as Components of Sacrifice): • प्रकृति और पुरुष (Prakriti and Purusha): ब्रह्मांड और उसकी सभी अभिव्यक्तियों को एक भव्य ब्रह्मांडीय यज्ञ के रूप में देखा जाता है जिसमें शिव (परम पुरुष के रूप में) लगातार लगे रहते हैं। उनके "अंग" (Aṅgas) केवल भौतिक शरीर के अंग नहीं हैं, बल्कि मौलिक तत्वों, देवताओं, पवित्र अग्नियों, मंत्रों और कार्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो किसी भी यज्ञ का गठन करते हैं। • भेंट और अर्पित (The Offering and the Offered): इस व्याख्या में, कालभैरव वह हैं जो यज्ञ करते हैं (यजमान), स्वयं भेंट (हवि), अग्नि (अग्नि), और भेंट के प्राप्तकर्ता (देवता) भी हैं। यह उनकी सर्व-समावेशी प्रकृति को दर्शाता है, जहाँ उनके बाहर कुछ भी मौजूद नहीं है, और सब कुछ उनकी सत्ता में एक उत्सर्जन और पुन: अवशोषण है। • अस्तित्व की चक्रीय प्रकृति (Cyclical Nature of Existence): जिस तरह ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने के लिए यज्ञ किया जाता है, उसी तरह कालभैरव, यज्ञ के अवतार के रूप में, सृष्टि, संरक्षण और विलय के निरंतर चक्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। अस्तित्व का प्रत्येक पहलू इस शाश्वत दिव्य भेंट का एक हिस्सा है। • प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व (Symbolic Representation): उदाहरण के लिए, शिव का सिर भेंट का पात्र हो सकता है, उनकी आँखें पवित्र अग्नि, उनकी साँसें मंत्र, उनके हाथ उपकरण, और उनका शरीर स्वयं यज्ञ वेदी हो सकता है। कालभैरव का भयानक पहलू - उनकी खोपड़ी की माला, त्रिशूल और काला रूप - को तांत्रिक यज्ञ की भयानक फिर भी शुद्ध करने वाली अग्नि के तत्वों के रूप में भी देखा जा सकता है, जहाँ अहंकार और अशुद्धियों का बलिदान किया जाता है।

संक्षेप में, यज्ञाङ्गाय यह घोषणा करता है कि कालभैरव केवल यज्ञ में उपस्थित नहीं हैं, बल्कि वे स्वयं यज्ञ हैं - इसका सार, पदार्थ और उद्देश्य। यह सभी अनुष्ठानों, ब्रह्मांडीय प्रक्रियाओं और स्वयं वास्तविकता के ताने-बाने पर उनके सर्वोच्च प्रभुत्व को रेखांकित करता है।

582. यज्ञवाहनाय

जिनका दिव्य वाहन यज्ञ है, ऐसे (महादेव) को नमन।

विस्तार : यज्ञवाहनाय (जिसे यज्ञवाहन भी कहा जाता है) नाम यज्ञ (बलिदान) और वाहन (वाहन या वाहक) का एक यौगिक है।

दिव्य वाहन के रूप में यज्ञ यह नाम कालभैरव को यज्ञ या बलि अनुष्ठान की प्राचीन वैदिक अवधारणा से जोड़ता है। इस संदर्भ में, यज्ञ केवल एक अनुष्ठानिक कार्य नहीं है, बल्कि एक गहन ब्रह्मांडीय प्रक्रिया है जो ब्रह्मांड को बनाए रखती है। पवित्र अग्नि (अग्नि) में आहुति देने से देवताओं का पोषण होता है, पर्यावरण शुद्ध होता है और ब्रह्मांडीय व्यवस्था (ऋत) बनी रहती है।

आहुतियों का प्राप्तकर्ता "यज्ञवाहन" होने से, कालभैरव यह दर्शाते हैं कि वह सभी यज्ञों के अंतिम प्राप्तकर्ता और वाहक हैं। इसका तात्पर्य है कि प्रत्येक अर्पित की गई आहुति, प्रत्येक किया गया पवित्र अनुष्ठान, अंततः उन तक पहुँचता है और उनके द्वारा वहन किया जाता है। जिस प्रकार एक वाहन अपनी सामग्री का परिवहन करता है, उसी प्रकार कालभैरव, यज्ञवाहन के रूप में, यज्ञ के सार और फलों को उनके दिव्य गंतव्यों तक पहुँचाते हैं, जिससे देने और लेने का ब्रह्मांडीय चक्र पूरा होता है।

ब्रह्मांडीय नियम का अवतार यह नाम धर्म और ऋत के अवतार के रूप में उनकी भूमिका को भी रेखांकित करता है। इन ब्रह्मांडीय नियमों को बनाए रखने के लिए यज्ञ का उचित प्रदर्शन महत्वपूर्ण है। यज्ञ को अपना वाहन बनाने वाले के रूप में, वह ब्रह्मांडीय सद्भाव, न्याय और सांसारिक और दिव्य अस्तित्व की संरचना के रखरखाव से आंतरिक रूप से जुड़े हुए हैं।

अस्तित्व का आधार यज्ञ के साथ पहचान करके, कालभैरव को उस नींव के रूप में चित्रित किया गया है जिस पर व्यवस्थित ब्रह्मांड टिका हुआ है। वैदिक परंपरा ब्रह्मांड को एक सतत, आदिम यज्ञ के रूप में देखती है। इसलिए, यज्ञ को अपना वाहन बनाने का अर्थ है कि वह इस सतत ब्रह्मांडीय सृजन, संरक्षण और विघटन की प्रेरक शक्ति और सार हैं। वह सभी धार्मिक अनुष्ठानों के पीछे की शक्ति हैं, अनुष्ठान के माध्यम से प्रकट भक्ति का सार हैं, और वह हैं जो यह सुनिश्चित करते हैं कि आध्यात्मिक प्रयासों से उनके इच्छित परिणाम प्राप्त हों।

583. योगाचार्याय

योग के सर्वोच्च गुरु और स्वामी को नमन।

विस्तार : योगाचार्य नाम योग और आचार्य का एक यौगिक है।

योग के सर्वोच्च गुरु आचार्य का शाब्दिक अर्थ "शिक्षक," "गुरु," या "स्वामी" है, विशेष रूप से वह जो अपने उपदेशों का पालन करता है। जब योग के साथ जोड़ा जाता है, तो योगाचार्य सर्वोच्च गुरु, परम प्रशिक्षक और योग विज्ञान और अभ्यास के साक्षात स्वरूप को दर्शाता है। शिव को, उनके विभिन्न रूपों में, पारंपरिक रूप से सभी योगिक अनुशासनों के आदि गुरु, प्रथम शिक्षक के रूप में पूजा जाता है।

योगिक अनुशासनों का सार योग स्वयं एक विशाल परंपरा है जिसमें विभिन्न मार्ग शामिल हैं (जैसे हठ योग, राज योग, ज्ञान योग, कर्म योग, भक्ति योग) जिनका उद्देश्य दिव्य या परम वास्तविकता के साथ मिलन (युज) है। कालभैरव के संदर्भ में, योगाचार्य होने का अर्थ है कि वह केवल एक शिक्षक नहीं हैं, बल्कि इन सभी योगिक मार्गों के स्रोत और पूर्ण अभ्यासी हैं। वह केवल निर्देश से परे हैं; वह योगिक बोध, आत्म-अनुशासन और परम मुक्ति के साक्षात स्वरूप हैं।

काल (समय) पर प्रभुत्व योग पर उनका प्रभुत्व केवल शारीरिक आसन या श्वास नियंत्रण के बारे में नहीं है; यह समय (काल) सहित ब्रह्मांड की मूलभूत ऊर्जाओं पर पूर्ण नियंत्रण के बारे में है। योगिक उपलब्धि के माध्यम से, अभ्यासी लौकिक दुनिया की सीमाओं को पार करने का प्रयास करते हैं, और कालभैरव, योगाचार्य के रूप में, इस प्रयास में अंतिम सफलता का प्रतिनिधित्व करते हैं। वह वह हैं जिन्होंने अपने योग के माध्यम से काल (समय) में महारत हासिल की है, इस प्रकार दूसरों को भी ऐसा करने का मार्ग प्रदान करते हैं।

मुक्ति का मार्ग उन्हें योगाचार्य के रूप में स्वीकार करके, भक्त अपने मन, शरीर और आत्मा पर महारत हासिल करने के लिए उनके मार्गदर्शन और आशीर्वाद की तलाश करते हैं, जिससे आध्यात्मिक मुक्ति और दिव्य के साथ मिलन होता है। वह एक योगी के उच्चतम आदर्श का प्रतिनिधित्व करते हैं - एक जो पूरी तरह से आत्म-साक्षात्कारित है और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के साथ पूर्ण सामंजस्य में है।

584. योगिगम्याय

उन (कालभैरव) को नमन जो केवल सच्चे योगियों द्वारा ही प्राप्त किए जा सकते हैं।

विस्तार : योगिगम्य (Yogīgamya) नाम एक गहरा कथन है जो शिव की दिव्य उपस्थिति को, विशेष रूप से उनके भयंकर भैरव स्वरूप में, प्राप्त करने के अनन्य मार्ग को इंगित करता है। यह दो संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: योगी और गम्य।

योगी (Yogī): एक योगी केवल वह नहीं है जो शारीरिक आसन करता है। प्राचीन भारतीय आध्यात्मिक परंपराओं के संदर्भ में, एक योगी अपने पूर्ण दार्शनिक और व्यावहारिक अर्थों में योग का अभ्यास करने वाला होता है। इसमें शामिल हैं: • मन पर महारत: जिसने अपने मन को नियंत्रित कर लिया है, विचारों, भावनाओं और संवेदी धारणाओं के उतार-चढ़ाव (वृत्तियों) को पार कर लिया है। • नैतिक अनुशासन: जो यम (अहिंसा, सत्य जैसे नैतिक संयम) और नियम (शुद्धि, स्वाध्याय जैसे अनुष्ठान) का पालन करता है। • ध्यान और चिंतन: जो समाधि (मिलन) की ओर ले जाने वाले निरंतर ध्यान (ध्यान) और एकाग्रता (धारणा) में गहराई से संलग्न है। • आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि: जो परम सत्य का प्रत्यक्ष सहज ज्ञान (प्रज्ञा) चाहता है और प्राप्त करता है।

गम्य (Gamya): इस शब्द का अर्थ है "प्राप्त करने योग्य," "पहुंचने योग्य," "समीपस्थ," या "समझने योग्य।" जब इसे योगी के साथ जोड़ा जाता है, तो यह दर्शाता है कि इस देवता तक पहुंच, और उनके द्वारा दर्शाए गए गहरे सत्य, विशेष रूप से उन लोगों के लिए उपलब्ध हैं जो योग के मार्ग पर चलते हैं।

योग के माध्यम से अनन्य प्राप्ति (Exclusive Attainment through Yoga): योगिगम्य नाम इस बात पर जोर देता है कि भैरव का सच्चा स्वरूप, परम वास्तविकता (परब्रह्म) के रूप में, सामान्य संवेदी धारणा, बौद्धिक तर्क, या यहां तक कि केवल अनुष्ठानिक पूजा के माध्यम से भी नहीं देखा जा सकता है। उनका सार सूक्ष्म, गहरा और पारलौकिक है, जिसके लिए एक शुद्ध मन और उच्च चेतना की आवश्यकता होती है, जो निरंतर योग अभ्यास के फल हैं।

माया के आवरण से परे (Beyond the Veil of Illusion): सांसारिक इच्छाओं और भ्रम (माया) में उलझे लोगों के लिए, भैरव भयानक लग सकते हैं या छिपे रह सकते हैं। लेकिन योगी के लिए, जिसने अनुशासित आध्यात्मिक अभ्यास के माध्यम से अज्ञान (अविद्या) के आवरण को भेद दिया है, भैरव स्वयं को मुक्ति, ज्ञान और निर्भयता के परम स्रोत के रूप में प्रकट करते हैं।

आंतरिक शांति और बोध का प्रतीक (Symbol of Inner Stillness and Realization): यह नाम आध्यात्मिक साधकों के लिए एक प्रेरणा और एक निर्देश के रूप में कार्य करता है। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि दिव्य का अनुभव करने का सबसे सीधा और शक्तिशाली तरीका बाहरी साधनों

से नहीं, बल्कि आत्म-परिवर्तन और मिलन की आंतरिक यात्रा के माध्यम से है, जो योग का सार है। योगिगम्य होना उन लोगों के लिए सुलभ होना है जिन्होंने गहरी ध्यानमग्नता और आध्यात्मिक बोध की स्थिति प्राप्त कर ली है।

585. योगिने

योग के सिद्ध और सर्वोच्च स्वामी को नमन।

विस्तार : इस संदर्भ में योगी नाम योग के परम स्वामी और अभ्यासी को संदर्भित करता है।

योगी का अर्थ योगी (योगिन्) शब्द "योग" से लिया गया है, जो स्वयं संस्कृत मूल "युज्" से आया है, जिसका अर्थ है "जोड़ना," "मिलना," "एकजुट करना," या "जोड़ना।" इसलिए, एक योगी वह है जो योग के अभ्यास में लगा हुआ है, दिव्य के साथ मिलन के लिए प्रयास कर रहा है, या जिसने ऐसा मिलन प्राप्त कर लिया है।

योग के सर्वोच्च स्वामी योगिने के रूप में, भैरव केवल एक अभ्यासी नहीं हैं, बल्कि एक योगी के सर्वोच्च आदर्श हैं। वह सभी योगिक मार्गों—हठ, राज, कर्म, भक्ति, ज्ञान—की पूर्णता का प्रतीक हैं। इसका तात्पर्य है कि वह मन, इंद्रियों और तत्वों पर पूर्ण नियंत्रण रखते हैं, उन्होंने पूर्ण स्थिरता (समाधि) और मुक्ति (मोक्ष) प्राप्त कर ली है। उनका अस्तित्व ही शाश्वत योग की स्थिति है।

तपस्या और वैराग्य का प्रतीक भगवान शिव, और विस्तार से भैरव, को अक्सर महायोगी (महान योगी) के रूप में चित्रित किया जाता है, जो हिमालय में ध्यान करते हैं, राख से सने हुए हैं, न्यूनतम वस्त्र पहने हुए हैं, और गहन चिंतन में लीन हैं। यह चित्रण सांसारिक इच्छाओं से वैराग्य, तीव्र तपस्या (तपस), और परम वास्तविकता पर अटूट ध्यान को दर्शाता है। इस प्रकार योगिने उनकी अत्यधिक तपस्या और आध्यात्मिक अनुशासन के प्रति समर्पण का प्रतीक है।

पथप्रदर्शक और गुरु एक पूर्ण योगी के रूप में, वह योगिक ज्ञान और प्रथाओं के स्रोत और प्रकटीकरणकर्ता भी हैं। वह उन सभी के लिए परम गुरु (शिक्षक) हैं जो योग के माध्यम से आध्यात्मिक मिलन और मुक्ति चाहते हैं। उनकी उपस्थिति साधकों को उनकी यात्रा में मार्गदर्शन करती है, आत्म-साक्षात्कार के मार्ग को प्रकाशित करती है। योगिने को नमन करके, भक्त उन्हें अनुसरण करने योग्य आदर्श और उस शक्ति के रूप में स्वीकार करते हैं जो उनके स्वयं के योगिक प्रयासों को सुगम बनाती है, आंतरिक शांति, इंद्रियों पर नियंत्रण और अंततः, परम आत्मा के साथ मिलन प्रदान करती है।

586. योग्याय

सभी पूजा और मिलन के योग्य, उपयुक्त और अधिकारी को नमन।

विस्तार : "योग्याय" नाम संस्कृत मूल "युज्" (जोड़ने, जुतने, एकजुट करने) से लिया गया है, जिससे हमें "योग" शब्द भी मिलता है। "योग्य" का अर्थ है "पात्र," "उपयुक्त," "लायक," या "उचित।"

सभी पूजा के योग्य इस संदर्भ में "योग्य" शिव कालभैरव के अंतर्निहित और सर्वोच्च स्वरूप को इंगित करता है, जो पूजा का परम उद्देश्य है। वे सभी शुभ गुणों (शुभ गुण) से संपन्न हैं और सभी अस्तित्व, चेतना और आनंद (सत्-चित्-आनंद) के स्रोत हैं। इसलिए, वे स्वाभाविक रूप से सभी चढ़ावों, प्रार्थनाओं और भक्ति के पात्र हैं। यह कर्मों से अर्जित योग्यता नहीं है, बल्कि उनकी दिव्यता का एक आंतरिक गुण है।

मिलन (योग) के लिए उपयुक्त "योग्य" का गहरा आध्यात्मिक अर्थ योग से संबंधित है। कालभैरव सभी योगिक अभ्यासों का अंतिम लक्ष्य और परिणति हैं। वे "मिलन" के लिए "उपयुक्त" हैं; जिसका अर्थ है कि दिव्य के साथ मिलन की एक योगी की आकांक्षा कालभैरव में अपना पूर्ण उद्देश्य पाती है।

वे सर्वोच्च आध्यात्मिक बोध की स्थिति का प्रतिनिधित्व करते हैं, जहाँ व्यक्तिगत आत्मा (जीवात्मा) सार्वभौमिक आत्मा (परमात्मा) में विलीन हो जाती है। वे योग के मार्ग पर चलने वालों के लिए आदर्श हैं, जिनके साथ सच्चा और मुक्तिदायक मिलन संभव है।

सभी गुणों का अवतार जो "उपयुक्त" या "उचित" हैं, वे सभी दिव्य गुणों का सही संतुलन embody करते हैं - भय और परोपकार, विनाश और सृजन, स्थिरता और गतिशीलता। वे ब्रह्मांड के लिए आदर्श हैं, वह मानदंड जिसके विरुद्ध सभी चीजों को मापा जाता है, जिससे वे ब्रह्मांडीय व्यवस्था को नियंत्रित करने के लिए पूरी तरह से उपयुक्त हो जाते हैं। उनकी योग्यता न्याय और कृपा के अंतिम प्रदाता के रूप में उनकी भूमिका तक फैली हुई है, जो हमेशा ब्रह्मांडीय धर्म के अनुसार कार्य करते हैं।

587. योगविदे

योग विज्ञान के परम ज्ञाता (भैरव) को नमन।

विस्तार : योगविदे (योगविद) नाम एक संस्कृत यौगिक है जो योग के क्षेत्र में परम अधिकार और ज्ञान को दर्शाता है।

योग (Yoga): यह शब्द बहुआयामी है। यह संदर्भित करता है: • संघ (ईश्वर के साथ) • अनुशासन (शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक अभ्यास) • तकनीकें (जैसे आसन, प्राणायाम, ध्यान) • प्राप्ति (समाधि या मुक्ति की अवस्था)

विदे (विद) (Vide (Vid)): इस मूल का अर्थ है "जानना," "समझना," या "कुशल होना।" यह परम ज्ञान और महारत को दर्शाता है।

योग के परम ज्ञाता (Ultimate Knower of Yoga) योगविदे के रूप में, कालभैरव योग के सभी रूपों के सर्वोच्च स्वामी और पूर्ण ज्ञाता हैं। इसमें न केवल शारीरिक आसन या श्वास तकनीकें (प्राणायाम) शामिल हैं, बल्कि योग का संपूर्ण दर्शन, कार्यप्रणाली और अंतिम लक्ष्य भी शामिल है। वे ईश्वर के साथ मिलन कैसे प्राप्त करें, मन और शरीर की सीमाओं को कैसे पार करें, और मुक्ति (मोक्ष) कैसे प्राप्त करें, इस गहन ज्ञान का प्रतीक हैं।

योगिक ज्ञान का स्रोत (Source of Yogic Knowledge) वे केवल योग का अभ्यास करने वाले नहीं हैं, बल्कि सभी योगिक ज्ञान के स्रोत और उद्गम हैं। योग के सभी विद्यालय और परंपराएं अंततः अपने सिद्धांतों और अंतर्दृष्टि को उन मूलभूत सत्यों से प्राप्त करते हैं जिनका वे प्रतिनिधित्व करते हैं। वे सभी योगियों के लिए आदि-गुरु हैं।

योगिक अनुशासन का प्रतीक (Embodiment of Yogic Discipline) यह नाम यह भी दर्शाता है कि कालभैरव उच्चतम अनुशासन और अतिक्रमण का प्रतीक हैं जिसे योग प्राप्त करना चाहता है। उनका उग्र रूप, जो पारंपरिक मानदंडों से बाहर प्रतीत होता है, द्वंद्वों से परे जाने और अस्तित्व के सभी पहलुओं को गले लगाने की योगिक क्षमता का एक आदर्श प्रकटीकरण है। समय और मृत्यु पर उनका नियंत्रण परम योगिक सिद्धि (अलौकिक शक्ति) है - जन्म और मृत्यु के चक्रों (संसार) से मुक्ति।

योग का लक्ष्य (The Goal of Yoga) अंततः, योगविदे को जानना स्वयं योग के लक्ष्य को जानना है। वे पूर्ण स्थिरता, इंद्रियों और मन पर पूर्ण नियंत्रण, और सच्चे आत्म की परम प्राप्ति की स्थिति का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो सभी योगिक अभ्यासों का लक्ष्य है। योगविदे के प्रति भक्ति अभ्यासकर्ताओं को योग की अपनी समझ और अभ्यास को गहरा करने में मदद करती है, उन्हें आध्यात्मिक मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करती है।

588. योगांगाय

जिनके शरीर में योग के अंग समाहित हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : योगाङ्गाय नाम कालभैरव का एक गहन वर्णन है, जो "योग" (आध्यात्मिक अनुशासन) और "अङ्ग" (अंग या भाग) को जोड़ता है, जिसका अर्थ है कि उनका स्वरूप ही योग के सिद्धांतों और अभ्यासों का प्रतीक है। यह नाम एक देवता के रूप में उनकी भूमिका को ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक मुक्ति के मार्ग के अवतार के रूप में भी रेखांकित करता है।

योग का शरीर संस्कृत में, "अङ्ग" घटक भागों या अंगों को संदर्भित करता है। इस संदर्भ में, यह विशेष रूप से पतंजलि के योग सूत्रों के आठ अंगों (अष्टांग) को संदर्भित करता है: यम (नैतिक संयम), नियम (अनुपालन), आसन (शारीरिक मुद्राएं), प्राणायाम (श्वास नियंत्रण), प्रत्याहार (इंद्रिय निग्रह), धारणा (एकाग्रता), ध्यान (ध्यान), और समाधि (लीनता)। कालभैरव को "योग जिनके अंग हैं" के रूप में वर्णित करने का अर्थ है कि उनके अस्तित्व का प्रत्येक पहलू, उनका संपूर्ण ब्रह्मांडीय शरीर, इन आध्यात्मिक सिद्धांतों से बना है। वह केवल योग के स्वामी नहीं हैं, बल्कि योग स्वयं उनका स्वरूप है।

आध्यात्मिक अभ्यास का अवतार यह नाम बताता है कि कालभैरव का चिंतन करके, व्यक्ति योग के अनुशासित मार्ग का चिंतन कर रहा है। उनका स्वरूप साधक को यह एहसास कराता है कि दिव्य आध्यात्मिक यात्रा से अलग नहीं है; बल्कि, यात्रा स्वयं दिव्य है। वह व्यक्तिगत आत्मा का सार्वभौमिक चेतना के साथ पूर्ण मिलन (योग) का प्रतीक हैं। उनके प्रत्येक दिव्य गुण या कार्य को अष्टांगों में से एक की अभिव्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, उनका उग्र स्वभाव नकारात्मकता को समाप्त करके अहिंसा (अहिंसा) के यम का प्रतिनिधित्व कर सकता है, या उनका ध्यानात्मक पहलू धारणा और ध्यान का प्रतिनिधित्व कर सकता है।

परम योगी और मार्गदर्शक योग के अवतार के रूप में, कालभैरव परम योगी हैं, पूर्ण अभ्यासी और योगिक अनुशासन के फल का जीवंत उदाहरण हैं। वह साधकों को भौतिक शरीर और मन की सीमाओं को पार करने के लिए मार्गदर्शन करते हैं, उन्हें परम स्वतंत्रता (मोक्ष) और दिव्य के साथ विलय की ओर ले जाते हैं। उनका स्वरूप, इसलिए, योग के मार्ग पर चलने वाले सभी लोगों के लिए एक शक्तिशाली प्रतीक और प्रेरणा के रूप में कार्य करता है, यह दर्शाता है कि लक्ष्य और मार्ग आंतरिक रूप से एक हैं।

589. योगहाराङ्गाय

योग के सार से सुशोभित होने वाले को नमन।

विस्तार : योगाहाराङ्गाय नाम योग, हार और अंग का एक यौगिक है, जो योग के सिद्धांतों और अभ्यास से गहरे संबंध को दर्शाता है।

योग (Yoga): योग (संस्कृत मूल 'युज' से, जिसका अर्थ है "जोड़ना" या "एक करना") उस आध्यात्मिक अनुशासन को संदर्भित करता है जिसका उद्देश्य व्यक्तिगत चेतना (जीवन्मुक्ति) का सार्वभौमिक चेतना (परमात्मा) के साथ एकीकरण और मिलन है। इसमें कर्म योग (कर्म का मार्ग), ज्ञान योग (ज्ञान का मार्ग), भक्ति योग (भक्ति का मार्ग), और राज योग (ध्यान और आत्म-नियंत्रण का मार्ग) सहित विभिन्न मार्ग शामिल हैं।

हार (Hāra): हार का प्राथमिक अर्थ "माला" या "गहना" है, जिसका तात्पर्य ऐसी वस्तु से है जो सुशोभित करती है या सुंदर बनाती है। लाक्षणिक अर्थ में, यह "दूर ले जाने" या "मोहित करने" को भी संदर्भित कर सकता है। इस संदर्भ में, यह बताता है कि योग केवल एक बाहरी अभ्यास नहीं है, बल्कि एक आंतरिक आभूषण है, एक गहरा सार है जो दिव्य को परिभाषित और सुंदर बनाता है।

अंग (Aṅga): अंग का सामान्य अर्थ "अंग" या "शरीर का हिस्सा" है। व्यापक अर्थ में, यह "सार," "घटक," या "विशिष्ट विशेषता" को दर्शाता है। इसका तात्पर्य है कि योग उसकी दिव्य प्रकृति का एक अंतर्निहित हिस्सा है, न कि एक अलग गुण।

एक आभूषण के रूप में योग का सार: जब इन शब्दों को जोड़ा जाता है, तो योगाहाराङ्गाय यह बताता है कि भगवान कालभैरव योग के सार से सुशोभित हैं। इसका अर्थ है कि योग के सिद्धांत, अभ्यास और अंतिम लक्ष्य उनके अस्तित्व में आंतरिक रूप से बुने हुए हैं। वह निम्नलिखित को मूर्त रूप देते हैं:

1. परम के साथ मिलन: वह परम वास्तविकता के साथ मिलन (योग) की अंतिम स्थिति का प्रतिनिधित्व करते हैं, वह लक्ष्य जिसके लिए सभी योगी प्रयास करते हैं। उनका दिव्य रूप स्वाभाविक रूप से इस पूर्ण एकीकरण को प्रदर्शित करता है।

2. आध्यात्मिक अनुशासनों में निपुणता: उनका दिव्य रूप मन, इंद्रियों और तत्वों पर पूर्ण नियंत्रण की अभिव्यक्ति है, जो योगिक साधना के केंद्र में हैं। वह उन्नत योगिक अभ्यासों के माध्यम से प्राप्त सिद्धियों (आध्यात्मिक शक्तियों) को मूर्त रूप देते हैं।

3. परम योगी: जैसा कि स्वयं शिव को अक्सर आदियोगी (पहले योगी) के रूप में चित्रित किया जाता है, कालभैरव, शिव का एक उग्र रूप होने के नाते, स्वाभाविक रूप से इस योगिक सार को मूर्त रूप देते हैं। उनकी उग्रता के बीच शांति, सांसारिक चिंताओं से उनकी अनासक्ति, और उनकी गहन ध्यानपूर्ण अवस्था एक सिद्ध योगी के सभी विशिष्ट लक्षण हैं।

4. योगिक उपलब्धियों के दाता: उनकी पूजा करके, भक्तों को शक्ति, अनुशासन और अंततः, दिव्य के साथ मिलन प्राप्त करने की क्षमता प्राप्त होती है, इस प्रकार वे स्वयं योग के सार से "सुशोभित" होते हैं।

इसलिए, योगाहाराङ्गाय कालभैरव को उस रूप में पूजता है जिसका अस्तित्व योग के गहन सार से सुंदर और परिभाषित है, जिससे वे आध्यात्मिक मिलन के मार्ग के अंतिम मार्गदर्शक और अवतार बन जाते हैं।

590. यक्षाय

दिव्य प्रकृति की आत्मा (यक्ष) और खजाने के संरक्षक को नमन।

विस्तार : यक्षाय नाम भगवान कालभैरव को एक यक्ष के रूप में संदर्भित करता है, जो हिंदू, बौद्ध और जैन पौराणिक कथाओं में प्रमुख दिव्य प्राणियों का एक वर्ग है।

यक्षों की प्रकृति यक्षों को अक्सर प्रकृति आत्माओं, पृथ्वी के खजानों (जैसे रत्न, सोना और अन्य कीमती खनिज) के संरक्षक और विशिष्ट स्थानों या पवित्र स्थलों के रक्षक के रूप में वर्णित किया जाता है। वे आम तौर पर परोपकारी होते हैं लेकिन कभी-कभी शरारती या शक्तिशाली व्यक्ति भी हो सकते हैं। वे उर्वरता, धन और प्राकृतिक दुनिया के छिपे हुए पहलुओं से जुड़े हैं। कुबेर, धन के स्वामी, यक्षों के राजा हैं।

कालभैरव प्रमुख यक्ष के रूप में जब कालभैरव को यक्ष के रूप में संदर्भित किया जाता है, तो यह उनके बहुआयामी स्वरूप के विशिष्ट पहलुओं को उजागर करता है:

• खजानों के संरक्षक: इस रूप में कालभैरव को सभी खजानों का सर्वोच्च संरक्षक माना जाता है, न केवल भौतिक धन बल्कि आध्यात्मिक ज्ञान, ब्रह्मांडीय नियम और ब्रह्मांड की छिपी हुई ऊर्जाएँ भी। वे अपने भक्तों के "आध्यात्मिक धन" और धर्म की रक्षा करते हैं।

• छिपे हुए ज्ञान और ऊर्जाओं के स्वामी: जिस प्रकार यक्ष छिपे हुए सांसारिक संसाधनों पर शासन करते हैं, उसी प्रकार कालभैरव ब्रह्मांड की छिपी हुई, सूक्ष्म ऊर्जाओं और गूढ़ ज्ञान पर शासन करते हैं। वे सिद्धियों (योगिक शक्तियों) के स्वामी और गुप्त विज्ञान के संरक्षक हैं, जो योग्य साधकों के लिए इन अंतर्दृष्टि तक पहुँच प्रदान करते हैं।

• पवित्र स्थानों के संरक्षक: कई परंपराओं में, भैरव क्षेत्रपाल हैं, जो मंदिरों, पवित्र स्थलों और यहाँ तक कि व्यक्तिगत घरों के भी संरक्षक हैं। यह भूमिका यक्षों के सुरक्षात्मक कार्य के साथ पूरी तरह से मेल खाती है, जो अक्सर विशिष्ट स्थानों या उपवनों की रक्षा करते हैं।

• समृद्धि के दाता: कालभैरव को यक्ष के रूप में पूजने से, भक्त भौतिक और आध्यात्मिक दोनों समृद्धि के लिए उनका आशीर्वाद चाहते हैं। उन्हें कल्याण का अंतिम दाता माना जाता है, जो सफलता और प्रचुरता में आने वाली बाधाओं को दूर करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे यक्षों के परोपकारी पहलू होते हैं।

• आदिम पृथ्वी ऊर्जाओं से संबंध: यक्ष पाताल लोक की शक्तियों और पृथ्वी की उर्वरता से गहराई से जुड़े हुए हैं। इस पहलू में कालभैरव अस्तित्व की कच्ची, आदिम ऊर्जा का प्रतीक हैं, जो आध्यात्मिक को मूर्त में स्थापित करते हैं और भौतिक दुनिया में दिव्य शक्ति को प्रकट करते हैं।

इस प्रकार, "यक्षाय" कालभैरव को केवल समय के एक भयानक संहारक के रूप में ही नहीं, बल्कि धन और छिपे हुए ज्ञान के एक शक्तिशाली, परोपकारी संरक्षक और दाता के रूप में भी स्वीकार करता है, जो एक सर्वोच्च प्रकृति आत्मा के सार को मूर्त रूप देता है।

591. युक्तिमयाय

जो सभी तर्क, हेतु और कुशल योजना के मूर्त स्वरूप हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : युक्तिमय (Yuktimayā) नाम संस्कृत शब्द 'युक्ति' से लिया गया है, जिसमें विभिन्न अर्थ समाहित हैं: कारण, तर्क, उचित साधन, उचित विधि, कुशल योजना, चतुराई और संबंध। प्रत्यय '-मय' इंगित करता है कि वह पूरी तरह से इन गुणों से निर्मित या व्याप्त है।

तर्क और युक्ति का मूर्त रूप युक्तिमय के रूप में, कालभैरव तर्कसंगतता और तार्किक सुसंगति का सार हैं। उनके कार्य और आदेश मनमाने नहीं हैं, बल्कि ब्रह्मांडीय नियम और पूर्ण तर्क पर आधारित हैं। यह ब्रह्मांड की व्यवस्थित प्रकृति को दर्शाता है, जहाँ हर घटना, कारण और प्रभाव एक अंतर्निहित तार्किक संरचना के अनुसार संचालित होता है। वह परम ब्रह्मांडीय बुद्धि का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सभी सृजन, संरक्षण और विनाश को नियंत्रित करती है।

कुशल योजना और साधनों के स्वामी यह पहलू दिव्य रणनीतियों के वास्तुकार के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखने, न्याय प्रदान करने या आध्यात्मिक विकास का मार्गदर्शन करने के लिए उनका दृष्टिकोण हमेशा सटीकता, प्रभावशीलता और सबसे उपयुक्त साधनों की विशेषता है। आध्यात्मिक प्रगति के संदर्भ में, वह मुक्ति प्राप्त करने के लिए "सही साधन" (युक्ति) का उदाहरण देते हैं, चाहे वह उचित अनुष्ठान, ध्यान तकनीकों या नैतिक आचरण के माध्यम से हो। वह सिखाते हैं कि वास्तविक प्रगति विचारशील अनुप्रयोग और सूक्ष्म समझ से आती है, न कि केवल अंध-अनुसरण से।

संबंध और व्यवस्था की कला युक्ति का अर्थ संबंध या मिलन भी है। कालभैरव, युक्तिमय के रूप में, इस सिद्धांत का प्रतीक हैं कि ब्रह्मांड में सब कुछ आपस में जुड़ा हुआ है और एक सामंजस्यपूर्ण, तार्किक योजना में व्यवस्थित है। वह अंतर्निहित संरचना हैं जो सभी भिन्न तत्वों को एक एकीकृत पूर्ण में बांधती है। यह संबंध सतही नहीं है, बल्कि अस्तित्व के तार्किक प्रवाह में गहराई से निहित है।

आध्यात्मिक महत्व भक्त के लिए, कालभैरव को युक्तिमय के रूप में ध्यान करना विवेक (viveka), तार्किक सोच और आध्यात्मिक और सांसारिक जीवन में सही मार्ग और तरीकों को चुनने की बुद्धि के विकास को प्रेरित करता है। वह स्पष्ट अंतर्दृष्टि की क्षमता प्रदान करते हैं और भ्रम को दूर करते हैं, जिससे ऐसे कार्य होते हैं जो हमेशा धर्म और परम सत्य के अनुरूप होते हैं।

592. यमाय

महान नियंत्रक और मृत्यु के स्वामी को नमन।

विस्तार : यमाय नाम कालभैरव का एक शक्तिशाली वर्णन है, जो उन्हें सीधे यम, मृत्यु और ब्रह्मांडीय न्याय के पारंपरिक हिंदू देवता से जोड़ता है। यह जीवन, मृत्यु और समय के चक्र पर उनके सर्वोच्च अधिकार पर प्रकाश डालता है।

महान नियंत्रक "यम" शब्द संस्कृत धातु "यम्" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "लगाम कसना," "नियंत्रित करना," "रोकना," या "शासन करना।" इसलिए, यम मूल रूप से "नियंत्रक" हैं। इस संदर्भ में, कालभैरव को यमाय के रूप में संबोधित करना, उनकी परम ब्रह्मांडीय नियंत्रक के रूप में भूमिका को दर्शाता है। वे कारण और प्रभाव (कर्म) के सार्वभौमिक नियमों को नियंत्रित करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि सभी प्राणी अपने कर्मों के परिणामों का अनुभव करें। यह नियंत्रण अस्तित्व के हर पहलू तक फैला हुआ है, खगोलीय पिंडों की गति से लेकर व्यक्तिगत आत्माओं के भाग्य तक, उन्हें समय के बंधनों में बांधता है।

मृत्यु के स्वामी "मृत्यु के स्वामी" के रूप में, कालभैरव समाप्ति की अंतिम और अपरिहार्य प्रकृति का प्रतीक हैं। जबकि यम को आमतौर पर मृतकों के क्षेत्र की देखरेख करने वाले विशिष्ट देवता के रूप में चित्रित किया जाता है, कालभैरव यमाय के रूप में मृत्यु के मूलभूत, अमूर्त सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करते हैं - सभी प्रकट रूपों का अपरिहार्य अंत। वे ही हैं जो भौतिक शरीर के विघटन और आत्मा के संक्रमण की शुरुआत करते हैं। यह पहलू केवल शारीरिक मृत्यु के बारे में नहीं है, बल्कि अहंकार, अज्ञानता और आसक्तियों की मृत्यु के बारे में भी है, जो आध्यात्मिक मुक्ति के लिए महत्वपूर्ण है।

निष्पक्ष न्याय यम अपनी अटूट निष्पक्षता और न्याय के लिए प्रसिद्ध हैं। यम के साथ पहचाने जाने से, कालभैरव परम दिव्य न्याय के वितरक के रूप में अपनी भूमिका को सुदृढ़ करते हैं। वे ही हैं जो यह सुनिश्चित करते हैं कि धर्म (धार्मिकता) को बनाए रखा जाए, भले ही सबसे कठोर साधनों से। उनके निर्णय पूर्ण और अपील से परे हैं, जो आत्माओं को उनके संचित कर्मों के आधार पर उनके उचित भाग्य की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

भय से परे जबकि "यम" अक्सर मृत्यु के अग्रदूत के रूप में भय को उत्पन्न करता है, आध्यात्मिक साधक के लिए, कालभैरव को यमाय के रूप में पहचानना इस भय से मुक्ति दिला सकता है। समय और मृत्यु के परम नियंत्रक के प्रति समर्पण करके, व्यक्ति भौतिक की क्षणभंगुरता को स्वीकार करता है और दिव्य स्व के शाश्वत, अपरिवर्तनीय स्वरूप में शरण लेता है, इस प्रकार सबसे बड़े भय - मृत्यु के भय पर विजय प्राप्त करता है।

593. रौद्राय

प्रचंड, क्रोधी और भयानक रूप धारी को नमन।

विस्तार : रौद्र (रौद्राय) नाम रुद्र से उत्पन्न हुआ है, जो शिव के सबसे शुरुआती वैदिक नामों में से एक है, जिसका अर्थ स्वयं "गर्जना करने वाला," "भयानक," या "चीखने वाला" है।

भयंकर पहलू (The Fierce Aspect) रौद्र विशेष रूप से दिव्य के भयंकर, क्रोधी और भयानक पहलू पर जोर देता है। यह दुर्भावनापूर्ण या बुराई वाली भयंकरता नहीं है, बल्कि एक शक्तिशाली और विस्मयकारी शक्ति है जो विनाश, शुद्धि और त्वरित न्याय के रूप में प्रकट हो सकती है। यह

ब्रह्मांड की कच्ची, अनियंत्रित शक्ति है जो सभी चीजों के अंतिम विघटन को सुनिश्चित करती है, नए सृजन का मार्ग प्रशस्त करती है। यह रूप अक्सर अज्ञानता, भ्रम और आध्यात्मिक मुक्ति के सभी बाधाओं को नष्ट करने के लिए आह्वान किया जाता है।

क्रोध का प्रतीकवाद (Symbolism of Wrath) रौद्र का क्रोध एक दिव्य उपकरण है। यह तीव्र आध्यात्मिक अग्नि का प्रतीक है जो व्यक्ति के भीतर और ब्रह्मांड में दोनों अशुद्धियों को जला देती है। यह क्रोध अधर्म (अन्याय), अज्ञानता और अहंकार के खिलाफ निर्देशित है, जिसका उद्देश्य ब्रह्मांडीय संतुलन (धर्म) को फिर से स्थापित करना है। यह एक परिवर्तनकारी क्रोध है जो केवल नष्ट करने के बजाय शुद्ध और उत्थान करना चाहता है।

ब्रह्मांडीय संहारक और अनुशासक (Cosmic Destroyer and Disciplinarian) रौद्र के रूप में, शिव ब्रह्मांडीय चक्र के भीतर परम विनाशकारी सिद्धांत (संहार-मूर्ति) का प्रतीक हैं। वह अनुशासक हैं जो भय के माध्यम से व्यवस्था स्थापित करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि सभी प्राणी ब्रह्मांडीय नियमों का पालन करें। उनका भयंकर रूप भौतिक अस्तित्व की क्षणभंगुरता और परिवर्तन और मृत्यु की अनिवार्यता की याद दिलाता है, जो आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक हैं।

भैरव से संबंध (Connection to Bhairava) भैरव स्वयं शिव के रौद्र पहलू की एक अभिव्यक्ति हैं, जिन्हें अक्सर नुकीले दांतों, खोपड़ियों की माला और त्रिशूल या गदा धारण किए हुए एक भयानक रूप में चित्रित किया जाता है। यह इस विचार को पुष्ट करता है कि रौद्र परम, अटल शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो सभी पारंपरिक द्वंद्वों से परे है।

594. रौद्रऋषये

जो उग्र और शक्तिशाली दिव्य ऋषि हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : रौद्रर्षये नाम संस्कृत के पदों रौद्र और ऋषि (या अर्षि, ऋषि का एक प्रकार) का संयोजन है।

रौद्र: भयंकर, भयानक और शक्तिशाली रौद्र शब्द रुद्र से व्युत्पन्न है, जो शिव के सबसे प्रारंभिक और भयंकर वैदिक नामों में से एक है। रौद्र रुद्र के गुण को दर्शाता है - जो जंगली, भयावह, भयंकर और शक्तिशाली है। यह दिव्य की विनाशकारी और परिवर्तनकारी शक्ति को इंगित करता है। इस पहलू में प्रकृति की अनियंत्रित शक्तियाँ शामिल हैं, जो विनाशकारी और शुद्ध करने वाली दोनों हो सकती हैं, जैसे तूफान, हवाएँ और आग। दार्शनिक संदर्भ में, रौद्र तीव्र आध्यात्मिक शक्ति का प्रतीक है जो अज्ञान और भ्रम को जला सकती है, जिससे गहरा परिवर्तन होता है।

ऋषि (अर्षि): द्रष्टा, संत और तपस्वी एक ऋषि एक पूजनीय संत, सत्य का द्रष्टा होता है, जो अक्सर आध्यात्मिक ज्ञान, तपस्या और गहन ध्यान और तप (तपस्वी अभ्यास) के माध्यम से प्राप्त गहन अंतर्दृष्टि से जुड़ा होता है। ऋषि पारलौकिक ज्ञान के प्राप्तकर्ता होते हैं, जिन्हें अक्सर मंत्र-द्रष्टा, "मंत्रों के द्रष्टा" कहा जाता है। उन्हें ऐसे माध्यम माना जाता है जिनके माध्यम से दिव्य ज्ञान मानवता तक पहुँचता है।

भयंकर दिव्य ऋषि जब संयुक्त किया जाता है, तो रौद्रर्षये एक ऐसे प्राणी को संदर्भित करता है जिसके पास एक ऋषि का गहरा ज्ञान और अंतर्दृष्टि होती है, लेकिन जिसका स्वभाव भी अत्यंत भयंकर, शक्तिशाली और संभावित रूप से भयावह होता है। इसका तात्पर्य एक ऐसे ऋषि से है जो कोमल या सौम्य नहीं है, बल्कि एक ऐसा ऋषि है जिसका ज्ञान एक दुर्जेय और अटूट शक्ति के माध्यम से व्यक्त होता है।

शिव की परंपरा में प्रतीकवाद कालभैरव के संदर्भ में, "रौद्र ऋषि" होने का अर्थ है: • सत्य के संरक्षक: वह धर्म (धार्मिकता) और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के एक भयंकर संरक्षक हैं, जो एक ऐसे ऋषि के समान हैं जो अटूट शक्ति के साथ सत्य को बनाए रखते हैं। • अज्ञान के विनाशक: उनकी भयंकरता दुर्भावनापूर्ण नहीं है, बल्कि भ्रम और अज्ञान (अविद्या) को हिंसक रूप से काटने का काम करती है, जिससे आध्यात्मिक ज्ञान का मार्ग प्रशस्त होता है। वह परम गुरु हैं जो तीव्र करुणा के साथ, आसक्ति और अहंकार के बंधनों को तोड़ते हैं। • तपस्वी शक्ति: यह नाम उनकी गहन तपस्वी शक्ति (तपस) को उजागर करता है, जो एक विस्मयकारी, दुर्जेय ऊर्जा के साथ विकीर्ण होती है। वह गहन आध्यात्मिक ज्ञान और शक्तिशाली, परिवर्तनकारी शक्ति के पूर्ण मिलन का प्रतीक हैं।

595. राहवे

राहु रूपी खगोलीय सत्ता को नमन, जो ग्रहण का कारण बनते हैं।

विस्तार : राहवे नाम राहु को संदर्भित करता है, जो वैदिक ज्योतिष में एक छाया ग्रह (ग्रह) और हिंदू पौराणिक कथाओं में एक शक्तिशाली खगोलीय इकाई है, जो ग्रहणों से अविभाज्य रूप से जुड़ा हुआ है।

पौराणिक राहु राहु एक भौतिक खगोलीय पिंड नहीं है, बल्कि एक छाया ग्रह है, जो दो चंद्र नोड्स (दूसरा केतु है) में से एक है। पौराणिक कथाओं में, राहु को स्वर्भानु नामक एक असुर (राक्षस) के कटे हुए सिर के रूप में दर्शाया गया है। अमृत (अमरता का अमृत) के लिए समुद्र मंथन के दौरान, स्वर्भानु ने एक देव (देवता) का वेश धारण किया और अमृत का सेवन किया। भगवान विष्णु ने अपने मोहिनी अवतार में इस धोखे का पता लगाया और अमृत गले से नीचे उतरने से पहले अपने सुदर्शन चक्र से स्वर्भानु का सिर काट दिया। चूंकि उसने अमृत का सेवन कर लिया था, उसका सिर राहु के रूप में अमर हो गया, और उसका शरीर केतु बन गया।

ग्रहण का कारण सूर्य (सूर्य) और चंद्रमा (चंद्र) के प्रति अपने धोखे को उजागर करने के लिए एक शाश्वत द्वेष से प्रेरित होकर, राहु समय-समय पर उन्हें निगल लेता है, जिससे सूर्य और चंद्र ग्रहण होते हैं। यह कार्य अस्थायी होता है, क्योंकि उसके पास उन्हें रोकने के लिए कोई शरीर नहीं होता है, और वे जल्द ही उसके कटे हुए गले से बाहर निकल आते हैं। इस खगोलीय घटना को इस प्रकार राहु से जुड़े एक ब्रह्मांडीय नाटक के रूप में व्यक्त किया गया है।

शिव पूजा में प्रतीकात्मक महत्व जबकि राहु मुख्य रूप से ज्योतिष में जाना जाता है, राहु के नाम पर कालभैरव का आह्वान कई गहरे संबंधों को दर्शाता है: • अशुभ शक्तियों पर नियंत्रण: राहु अक्सर महत्वाकांक्षा, जुनून, इच्छा और कर्म के प्रतिशोध से जुड़ा होता है। शिव को राहु के रूप में नमस्कार करके, यह सभी ग्रहों के प्रभावों, जिनमें सबसे अशुभ भी शामिल हैं, पर कालभैरव के सर्वोच्च प्रभुत्व को स्वीकार करता है। कालभैरव, काल और नियति के स्वामी के रूप में, राहु के प्रतिकूल प्रभावों को कम या नियंत्रित कर सकते हैं। • समय की चक्रीय प्रकृति: ग्रहण ब्रह्मांडीय व्यवधान और परिवर्तन के क्षणों का प्रतिनिधित्व करते हैं, प्रकाश का एक अस्थायी अवरोध। यह कालभैरव की काल (समय) के स्वामी के रूप में भूमिका के साथ संरेखित होता है, जो सृजन, संरक्षण और विघटन के चक्रों पर शासन करते हैं, जिसमें चमक का क्षणिक अवरोध भी शामिल है। • पराकाष्ठा: शिव को राहु के साथ पहचान कर, यह दर्शाता है कि शिव राहु द्वारा सन्निहित शक्तिशाली, अराजक और कर्मिक ऊर्जाओं से भी परे हैं। इसका तात्पर्य है कि कालभैरव सभी ब्रह्मांडीय शक्तियों, दृश्य और अदृश्य, शुभ और प्रतीत होने वाली अशुभ, के अंतिम नियंत्रक और पराकाष्ठा हैं।

इस प्रकार, "राहवे" अंततः ब्रह्मांडीय अभिव्यक्ति के सभी पहलुओं पर कालभैरव की महारत को इंगित करता है, जिसमें राहु द्वारा व्यक्त की गई रहस्यमय और शक्तिशाली शक्तियां शामिल हैं, और अंधकार और अनिश्चितता की अवधि के माध्यम से भक्तों का मार्गदर्शन करने की उनकी क्षमता भी

शामिल है।

596. रति रत्नाय

सभी सुखों और आनंदों के सबसे अनमोल रत्न को नमन।

विस्तार : "रतिरतनाय" नाम "रति" और "रत्न" से बना एक यौगिक शब्द है, जिसके बाद "आय" लगा है जो नमस्कार या श्रद्धा को दर्शाता है। इसका अर्थ हिंदू दर्शन के भीतर गहराई से प्रतिध्वनित होता है, विशेष रूप से आनंद, आध्यात्मिक संतुष्टि और सभी खुशी के अंतिम स्रोत की प्रकृति के संबंध में।

रति (आनंद, सुख, प्रेम) "रति" एक संस्कृत शब्द है जो व्यापक रूप से आनंद, खुशी, सुख, प्रेम, वासना और विशेष रूप से कामुक इच्छा को दर्शाता है। इसे कामदेव, प्रेम के देवता की पत्नी के रूप में व्यक्त किया गया है। गहरे दार्शनिक अर्थ में, रति उस अंतर्निहित आकर्षण और इच्छा का प्रतिनिधित्व करती है जो प्राणियों को अनुभव और दुनिया के साथ जुड़ाव की ओर प्रेरित करती है। सभी प्रकार के सुख, चाहे वे संवेदी हों या सौंदर्य संबंधी, "रति" के अंतर्गत आते हैं।

रत्न (आभूषण, मणि, खजाना) "रत्न" का अर्थ आभूषण, मणि या खजाना है। यह अत्यधिक मूल्य, दुर्लभता और चमक वाली किसी वस्तु को दर्शाता है। जब किसी वस्तु को "रत्न" कहा जाता है, तो उसे अपने क्षेत्र में सबसे अच्छी, सबसे सुंदर और सबसे कीमती श्रेणी का माना जाता है।

सभी सुखों का सबसे अनमोल रत्न जब संयुक्त किया जाता है, तो "रतिरतनाय" इस प्रकार भैरव को सभी सुखों, आनंदों और प्रेम के अंतिम और सर्वोच्च स्रोत के रूप में नामित करता है। वह केवल सुख देने वाले नहीं हैं, बल्कि सभी आनंददायक अनुभवों का सार, केंद्रित और सबसे मूल्यवान रूप हैं।

अतींद्रिय सुख यह नाम सुख की आध्यात्मिक समझ की ओर इशारा करता है। जबकि मनुष्य अक्सर क्षणिक भौतिक अनुभवों (संवेदी सुख, संबंध, संपत्ति) में सुख की तलाश करते हैं, ये अंततः क्षणभंगुर होते हैं और दुख का कारण बन सकते हैं। "रतिरतनाय" का तात्पर्य है कि भैरव 'सच्चे' और 'शाश्वत' सुख का अतींद्रिय स्रोत हैं, वह आनंद जो आध्यात्मिक बोध, परमात्मा के साथ मिलन और जन्म और मृत्यु के चक्र (मोक्ष) से मुक्ति से आता है। वह "रति" के सभी सांसारिक रूपों को समाहित करते हैं और उनसे परे हैं।

परमानंद का अवतार तांत्रिक और शैव परंपराओं में, शिव (जिनके भैरव एक उग्र अभिव्यक्ति हैं) को अक्सर आनंद (परमानंद) से जोड़ा जाता है। यह नाम स्पष्ट रूप से भैरव को इस सर्वोच्च परमानंद के साक्षात अवतार के रूप में स्थापित करता है, जो रति के सभी रूपों में "रत्न" हैं। इस प्रकार उनकी भक्ति को आनंद के सबसे गहन और संतोषजनक रूपों का अनुभव करने का मार्ग माना जाता है, जो भक्तों को क्षणभंगुर खुशियों की ओर नहीं बल्कि अंतिम आध्यात्मिक परमानंद की ओर ले जाता है।

597. रणप्रियाय

युद्ध प्रेमी और अच्छी लड़ाई पसंद करने वाले को नमन।

विस्तार : रणप्रियाय नाम रण और प्रिया का एक यौगिक है।

रण: शाब्दिक अर्थ है "युद्ध," "संघर्ष," "लड़ाई," या "झगड़ा।" यह युद्ध की ध्वनि, शोर और कोलाहल को भी संदर्भित कर सकता है।

प्रिया: का अर्थ है "प्रिय," "प्यारा," "शौकीन," या "जो प्यार करता है।"

दिव्य युद्ध के प्रति प्रेम जब भगवान शिव पर, और विशेष रूप से कालभैरव पर लागू होता है, तो यह शब्द केवल शारीरिक हिंसा के प्रति प्रेम से परे है। इसके बजाय, यहां "रण" माया (भ्रम), अहंकार (अहंकार), और अविद्या (अज्ञान) के खिलाफ ब्रह्मांडीय संघर्ष को दर्शाता है। कालभैरव का "युद्ध के

प्रति प्रेम" एक गहरा आध्यात्मिक सिद्धांत है, जो आध्यात्मिक मुक्ति के मार्ग को अस्पष्ट करने वाली नकारात्मकताओं के विनाश में उनकी अथक और उत्साही भागीदारी को इंगित करता है।

अज्ञान का संहारक कालभैरव शिव का वह उग्र पहलू हैं जो आध्यात्मिक अंधकार की शक्तियों का सक्रिय रूप से सामना करते हैं और उनका संहार करते हैं। उनका "युद्ध" क्रोध या प्रतिशोध से उत्पन्न नहीं होता है, बल्कि शुद्ध करने और पवित्र करने की दिव्य इच्छा से होता है। वह इस लड़ाई के 'शौकीन' हैं क्योंकि यह अंततः ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) की स्थापना और आत्माओं को बंधन से मुक्ति की ओर ले जाती है। वह असत्य के विनाश में आनंद लेते हैं।

बाधाओं का विनाशक यह नाम सभी आंतरिक और बाहरी बाधाओं के एक दुर्जेय विजेता के रूप में उनकी भूमिका को उजागर करता है जो आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डालती हैं। वह जिस "लड़ाई" को पसंद करते हैं, वह सृष्टि और विनाश का निरंतर ब्रह्मांडीय नृत्य है, जहां विनाश नई सृष्टि और शुद्धि का अग्रदूत है।

प्रतीकात्मक व्याख्या युद्ध के प्रति इस प्रेम को उनके गतिशील और शक्तिशाली स्वभाव के प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व के रूप में भी देखा जा सकता है। वह एक निष्क्रिय देवता नहीं हैं, बल्कि एक सक्रिय, उग्र रूप से सुरक्षात्मक और परिवर्तनकारी शक्ति हैं जो ब्रह्मांडीय कानून को बनाए रखने और अपने भक्तों को संकट और भ्रम से मुक्त करने में हमेशा लगे रहते हैं।

598. लोकबन्धवे

जो समस्त संसार के मित्र और सम्बन्धी हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : लोकबांधव नाम दो संस्कृत शब्दों: लोक और बांधव से बना एक गहरा विशेषण है।

• लोक (Loka): यह शब्द "संसार," "ब्रह्मांड," "लोग," या "सभी प्राणी" को संदर्भित करता है। इसमें संपूर्ण सृष्टि शामिल है, दृश्य और अदृश्य दोनों, जिसमें अस्तित्व के सभी क्षेत्र और उनके निवासी शामिल हैं।

• बांधव (Bandhava): इस शब्द का अर्थ "मित्र," "संबंधी," "रिश्तेदार," या "रक्षक" है। यह एक गहरे, घनिष्ठ और परोपकारी संबंध को दर्शाता है, जिसका अर्थ है कि वह व्यक्ति जो निकट है, सहायक है और शुभचिंतक है।

समस्त सृष्टि के मित्र और संबंधी जब एक साथ जोड़ा जाता है, तो लोकबांधव का अर्थ "संसार का मित्र" या "सभी प्राणियों का संबंधी" होता है। यह नाम कालभैरव के करुणामय और पोषण करने वाले पहलू पर जोर देता है, जो उनके भयानक स्वरूप के बिल्कुल विपरीत है। यह दर्शाता है कि उनकी दुर्जेय शक्ति और विघटन की जिम्मेदारी के बावजूद, वे मूल रूप से सभी सृष्टि के प्रति परोपकारी हैं। वे केवल एक दूरस्थ शासक या एक उदासीन ब्रह्मांडीय शक्ति नहीं हैं, बल्कि हर जीवित प्राणी के लिए एक घनिष्ठ रूप से शामिल शुभचिंतक हैं।

एक आश्रय और रक्षक "संबंधी" के रूप में, वे पूरे संसार और उनके निवासियों को रिश्तेदारी और सुरक्षा का बंधन प्रदान करते हैं। यह उन्हें एक आश्रय, एक परोपकारी उपस्थिति के रूप में स्थापित करता है जो हमेशा समर्थन और मार्गदर्शन करने के लिए मौजूद रहते हैं, जैसे एक परिवार में एक बुद्धिमान और प्यार करने वाला बुजुर्ग। उनकी मित्रता सीमाओं को पार करती है, बिना किसी भेदभाव के सभी प्राणियों तक फैली हुई है, यहां तक कि उन लोगों तक भी जिन्हें विरोधी या नगण्य माना जा सकता है।

ब्रह्मांडीय सद्भाव और समर्थन यह नाम ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है, न केवल भय और अनुशासन के माध्यम से, बल्कि उस ब्रह्मांड के लिए एक मौलिक अंतर्निहित प्रेम और समर्थन के माध्यम से भी जिसका वे शासन करते हैं। यह बताता है कि

वे जिन विनाश के चक्रों की देखरेख करते हैं, वे भी अंततः संसार के कल्याण और शुद्धिकरण के लिए हैं, जो एक गहरे, परोपकारी उद्देश्य से निर्देशित होते हैं, ठीक वैसे ही जैसे एक सख्त लेकिन प्यार करने वाला माता-पिता।

599. लोकनाथाय

सभी लोकों के सर्वोच्च स्वामी और रक्षक को नमन।

विस्तार : लोकनाथ नाम दो संस्कृत शब्दों से बना है: लोक और नाथ।

• लोक (Loka): यह शब्द "दुनियाओं," "क्षेत्रों," "ब्रह्मांडों," या "अस्तित्व के तलों" को संदर्भित करता है। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, कई लोक (जैसे भूर-लोक, भुवर-लोक, स्वर-लोक, महर-लोक, जन-लोक, तपो-लोक, सत्य-लोक) हैं, जो चेतना और भौतिक अस्तित्व की विभिन्न अवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, स्थूलतम से सूक्ष्मतम तक। इसका व्यापक अर्थ इन दुनियाओं में रहने वाले "लोग" या "सभी प्राणी" भी हो सकता है।

• नाथ (Nātha): इसका अर्थ है "स्वामी," "मालिक," "रक्षक," "नियंत्रक," या "संरक्षक।"

सभी लोकों के सर्वोच्च स्वामी (Supreme Lord of All Worlds) लोकनाथ के रूप में, कालभैरव को सभी कल्पनीय ब्रह्मांडों और उनके निवासियों के सर्वोच्च शासक और संप्रभु के रूप में चित्रित किया गया है। यह उनकी सर्वव्यापकता और सर्वशक्तिमत्ता को दर्शाता है; ऐसा कोई क्षेत्र या आयाम नहीं है जहाँ उनका अधिकार न हो। वे इन असंख्य दुनियाओं में सभी ब्रह्मांडीय घटनाओं के परम सूत्रधार हैं।

रक्षक और पालक (Protector and Sustainer) केवल शासन से परे, नाथ का अर्थ सुरक्षा भी है। कालभैरव, इस पहलू में, दिव्य संरक्षक हैं जो इन सभी लोकों के भीतर और उनके बीच व्यवस्था और संतुलन सुनिश्चित करते हैं। वे इन दुनियाओं के भीतर सभी जीवित प्राणियों को शारीरिक खतरों, ब्रह्मांडीय असंतुलन और आध्यात्मिक क्षय से बचाते हैं। वे प्रत्येक दुनिया में धर्म (धार्मिक व्यवस्था) को सक्रिय रूप से बनाए रखते हैं।

ब्रह्मांडीय राज्यपाल (The Cosmic Governor) यह नाम ब्रह्मांडीय राज्यपाल के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है, जो अनगिनत लोकों में सृष्टि, संरक्षण और संहार को नियंत्रित करने वाले कानूनों का प्रशासन करते हैं और न्याय बनाए रखते हैं। वे सभी लोकों में सभी प्राणियों के कर्मों की निगरानी करते हैं और उचित परिणाम देते हैं।

एकता का प्रतीक (Symbol of Unity) लोकनाथ सभी विविध लोकों और प्राणियों की एक ही, सर्वोच्च चेतना के तहत अंतर्निहित एकता का भी प्रतीक है। उनके मतभेदों के बावजूद, सभी लोक अंततः भैरव की अद्वितीय शक्ति से व्याप्त और शासित हैं।

600. लक्षयज्ञाय

जो एक लाख यज्ञों के लक्ष्य और उद्देश्य हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : लक्षयज्ञाय नाम 'लक्ष' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "एक लाख," और 'यज्ञ', जो एक अनुष्ठानिक बलिदान, भेंट या पूजा को दर्शाता है। इस प्रकार, इसका अनुवाद "वह जो एक लाख यज्ञों का लक्ष्य या उद्देश्य है" के रूप में होता है।

अनुष्ठानों का अंतिम लक्ष्य यह विशेषण दर्शाता है कि कालभैरव, शिव के एक स्वरूप के रूप में, सभी प्रकार की पूजा, भेंट और अनुष्ठानिक कृत्यों का सर्वोच्च समापन और अंतिम प्राप्तकर्ता हैं। वैदिक और तांत्रिक परंपराओं में, यज्ञ विभिन्न उद्देश्यों के लिए किए जाते हैं - देवताओं को प्रसन्न करने, वरदान प्राप्त करने, स्वयं को शुद्ध करने या आध्यात्मिक योग्यता प्राप्त करने के लिए। यह

नाम इस बात पर जोर देता है कि चाहे ये यज्ञ जानबूझकर या अनजाने में, सचेत रूप से या अवचेतन रूप से किए गए हों, उनका सच्चा उद्देश्य और अंतिम गंतव्य दिव्य है, जिसे यहाँ कालभैरव द्वारा व्यक्त किया गया है। वे ऐसे सभी प्रयासों का सार और लक्ष्य हैं।

अनुष्ठानों का अतिक्रमण जबकि बड़ी संख्या में यज्ञों (लक्ष यज्ञ) का प्रदर्शन अत्यधिक प्रयास और भक्ति को दर्शाता है, गहरा दार्शनिक निहितार्थ यह है कि अनगिनत बाहरी अनुष्ठान भी अंततः एक सर्वोच्च सत्ता को साकार करने की दिशा में निर्देशित होते हैं। कालभैरव, इस सर्वोच्च सत्ता के अवतार के रूप में, स्वयं अनुष्ठानों का अतिक्रमण करते हैं। वे केवल उनसे प्रसन्न नहीं होते हैं; बल्कि, अनुष्ठान एक साधन के रूप में कार्य करते हैं, जिसका अंत उनके साथ मिलन है।

भक्ति के सभी रूपों का प्रतीक "एक लाख यज्ञ" एक विशाल और पूर्ण समर्पण का भी प्रतीक है, जिसमें विभिन्न प्रकार की पूजा शामिल है - साधारण भेंट से लेकर विस्तृत अग्नि समारोहों तक, मानसिक आराधना से लेकर गहन तपस्या तक। कालभैरव इन सभी विविध भक्ति रूपों के माध्यम से परम "भोग्य" (आनंद/अनुभव की वस्तु) और "प्राप्य" (जिसे प्राप्त किया जाना है) हैं। वे सभी आध्यात्मिक प्रयासों के आदि और अंत हैं।

601. लक्षणाय

सभी शुभ चिह्नों और विशेषताओं के मूर्त स्वरूप को नमन।

विस्तार : लक्षणाय नाम संस्कृत शब्द "लक्षण" (Lakṣaṇa) से आया है, जिसका अर्थ है "चिह्न," "संकेत," "विशेषता," "गुण," या "शुभ संकेत।"

शुभ चिह्नों का मूर्त रूप हिंदू प्रतिमा विज्ञान और दर्शन में, "लक्षण" उन शुभ शारीरिक चिह्नों, संकेतों और आध्यात्मिक विशेषताओं को संदर्भित करते हैं जो दिव्य प्राणियों या वास्तव में महान व्यक्तित्वों (महापुरुषों) को विशिष्ट बनाते हैं। ये चिह्न केवल सतही नहीं होते हैं, बल्कि आंतरिक पूर्णता, गहन आध्यात्मिक उपलब्धि और दिव्य प्रकृति की बाहरी अभिव्यक्तियाँ होते हैं। उदाहरण के लिए, बुद्ध और विभिन्न देवताओं का वर्णन विशिष्ट लक्षणों के साथ किया गया है।

उत्तम गुण "लक्षणाय" के रूप में, भगवान कालभैरव को सभी उत्तम और शुभ गुणों के मूर्त रूप के रूप में चित्रित किया गया है। इसका तात्पर्य है कि वे अपने सर्वोच्च रूप में सभी दिव्य गुणों को धारण करते हैं - जैसे सर्वशक्तिमानता, सर्वव्यापकता, सर्वज्ञता, करुणा, परम न्याय और पवित्रता। वे पूर्णता के आदर्श हैं, जो सर्वोच्च सत्ता को चिह्नित करने वाली हर चीज को प्रदर्शित करते हैं।

परम सत्ता का संकेत शारीरिक चिह्नों से परे, लक्षण परम वास्तविकता (ब्रह्म) के पहचान चिह्नों या विशेषताओं को भी संदर्भित करता है। भगवान कालभैरव, शिव के एक उग्र स्वरूप होने के नाते, स्वयं परम वास्तविकता हैं। इस प्रकार, वे स्वयं वह चिह्न या विशेषता हैं जिसके द्वारा अव्यक्त परम सत्ता को उसके व्यक्त रूप में समझा या पहचाना जा सकता है। वे दिव्य उपस्थिति और शक्ति के निश्चित संकेतक हैं।

दिव्य व्यवस्था का प्रतीक उनके उत्तम गुण उस निर्दोष ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) को भी दर्शाते हैं जिसे वे बनाए रखते हैं। कालभैरव का प्रत्येक कार्य, प्रत्येक पहलू दिव्य कानून और ब्रह्मांडीय सद्भाव के साथ पूर्ण सामंजस्य में है। उन्हें लक्षणाय के रूप में नमन करना उनके उत्तम स्वरूप को दिव्य अस्तित्व और परम सत्य के लिए एक खाका के रूप में स्वीकार करना है।

602. लोलमायाय

जिनकी माया शक्ति चंचल और क्रीड़ाशील है, उन्हें नमन।

विस्तार : लोलामाय नाम उनकी माया (भ्रम की दिव्य शक्ति) के चंचल, चंचल और गतिशील स्वरूप को संदर्भित करता है। यह लोल और माया का एक यौगिक है।

• लोल (Lōla): इस संस्कृत शब्द का अर्थ है "काँपना," "फड़फड़ाना," "डगमगाना," "अस्थिर," "बेचैन," "चंचल," या "क्रीड़ाशील।" यह ऐसी किसी चीज़ का सुझाव देता है जो स्थिर नहीं है बल्कि लगातार गति में है, बदल रही है, या विभिन्न रूपों में प्रकट हो रही है।

• माया (Māyā): भ्रम की दिव्य शक्ति; रचनात्मक और अक्सर भ्रमित करने वाली शक्ति (शक्ति) जो ब्रह्मांड की कथित वास्तविकता को सामने लाती है। माया वह शक्ति भी है जिसके द्वारा अव्यक्त (ब्रह्म) व्यक्त संसार के रूप में प्रकट होता है, एकता से विविधता का निर्माण करता है।

भ्रम का चंचल स्वरूप (The Playful Nature of Illusion) लोलामाय शब्द इस बात पर जोर देता है कि सृष्टि, संरक्षण और संहार का ब्रह्मांडीय नृत्य - माया की सभी अभिव्यक्तियाँ - कठोर या निश्चित नहीं हैं बल्कि गतिशील, अप्रत्याशित और स्वाभाविक रूप से चंचल हैं। जैसे एक बच्चा विभिन्न खिलौनों से खेलता है, वैसे ही दिव्य चेतना इस चंचल शक्ति के माध्यम से अनंत ब्रह्मांडों को प्रक्षेपित और वापस लेती है। यह "चंचलता" उस स्पष्ट सहजता को संदर्भित करती है जिसके साथ ब्रह्मांड प्रकट और विलीन होता है, सर्वोच्च चेतना को बांधे बिना।

चंचल और अस्थिर वास्तविकता (Flickering and Unsteady Reality) "चंचल" भौतिक संसार की क्षणभंगुर और अनित्य प्रकृति का सुझाव देता है। जिसे हम ठोस वास्तविकता के रूप में देखते हैं, वह सार रूप में, माया का एक निरंतर बदलता हुआ प्रक्षेपण है, जो एक टिमटिमाती लौ या मृगतृष्णा के समान है। यह अद्वैतवादी समझ पर प्रकाश डालता है कि घटनात्मक संसार, यद्यपि वास्तविक प्रतीत होता है, अंततः ब्रह्म के परम परिप्रेक्ष्य से एक भ्रम है।

दिव्य लीला की शक्ति (The Power of Divine Leela) यह नाम लीला (दिव्य खेल) की अवधारणा की बात करता है। अज्ञानी के लिए, माया भ्रमित करने वाली और उलझाने वाली हो सकती है, जिससे मोह होता है। लेकिन ज्ञानी के लिए, इसे दिव्य के आनंदमय और सहज "खेल" के रूप में समझा जाता है। भगवान कालभैरव, लोलामाय के रूप में, इस दिव्य खेल के स्वामी हैं, जो अपनी सक्रिय और निरंतर बदलती भ्रम की शक्ति के माध्यम से भव्य ब्रह्मांडीय नाटक का संचालन करते हैं। वह इस ब्रह्मांडीय तमाशे के निर्देशक और कलाकार दोनों हैं।

603. लोककर्त्रे

सभी लोकों के सृष्टिकर्ता और निर्माता को नमन।

विस्तार : लोककर्त्रे (Lokakartṛ) नाम संस्कृत के दो शब्दों, लोक और कर्तृ, का एक यौगिक है।

• लोक (Lōka): यह शब्द "लोक" या "क्षेत्रों" को संदर्भित करता है। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, लोकों की कई परतें हैं, न केवल भौतिक दुनिया बल्कि सूक्ष्म और कारण तल, स्वर्गीय निवास और पाताल लोक भी। इसमें अपने सभी विभिन्न आयामों और अस्तित्व की अवस्थाओं में संपूर्ण प्रकट ब्रह्मांड शामिल है।

• कर्तृ (Kartṛ): इसका अर्थ है "निर्माता," "रचयिता," "करने वाला," या "लेखक।" यह किसी चीज को अस्तित्व में लाने के लिए जिम्मेदार सक्रिय सिद्धांत को दर्शाता है।

सृष्टि के दिव्य वास्तुकार लोककर्त्रे के रूप में, कालभैरव को इन सभी विविध लोकों के सर्वोच्च वास्तुकार और निर्माता के रूप में पहचाना जाता है। यह गुण उन्हें सीधे ब्रह्मा, त्रिमूर्ति में सृष्टिकर्ता देवता की भूमिका में रखता है, लेकिन अधिक परम और सर्व-समावेशी अर्थ में। वह केवल एक द्वितीयक निर्माता नहीं हैं, बल्कि वह मूलभूत स्रोत हैं जिससे सभी ब्रह्मांड उत्पन्न होते हैं।

सभी अस्तित्व का मूल यह नाम उनकी ब्रह्मांडीय सर्वोच्चता पर जोर देता है, यह दर्शाता है कि सभी लोक, सभी प्राणी और सभी घटनाएँ उनसे उत्पन्न होती हैं। वह संपूर्ण ब्रह्मांडीय अभिव्यक्ति के प्रमुख प्रेरक और प्रथम कारण हैं। यह शैव मत की उस समझ के अनुरूप है जिसमें शिव (और भैरव जैसे

उनके उग्र रूप) को परम वास्तविकता (परब्रह्म) माना जाता है जिससे सृष्टि, पालन और संहार सभी आगे बढ़ते हैं।

कालिक सृष्टि से परे जबकि "निर्माता" समय में एक क्रिया का सुझाव दे सकता है, कालभैरव के संदर्भ में, उनकी सृष्टि को अक्सर एक कालातीत प्रक्षेपण या उत्सर्जन के रूप में समझा जाता है। वह शाश्वत रूप से स्रोत हैं, और लोक उनके अनंत अस्तित्व के भीतर लगातार उत्पन्न होते हैं, प्रकट होते हैं और विलीन होते हैं।

सार्वभौमिक प्रभुत्व की स्वीकृति कालभैरव को लोककर्त्रे के रूप में आह्वान करना पूरे ब्रह्मांड पर उनके पूर्ण और मूलभूत प्रभुत्व को स्वीकार करना है। यह ब्रह्मांडीय व्यवस्था के आयोजक और सभी अस्तित्व के मूल आधार के रूप में उनकी भूमिका की प्रशंसा करता है, भक्त को याद दिलाता है कि उनकी दिव्य इच्छा और शक्ति के बाहर कुछ भी मौजूद नहीं है।

604. लोक्याय

जो समस्त लोकों में विख्यात हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : लोक्याय (लोक्याय) नाम संस्कृत शब्द लोक (Loka) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "विश्व," "क्षेत्र," या "ब्रह्मांड," और प्रत्यय -य, जो "से संबंधित," "में ज्ञात," या "में फैला हुआ" का सुझाव देता है।

समस्त लोकों में विख्यात यह नाम कालभैरव की सर्वव्यापी उपस्थिति और अस्तित्व के सभी लोकों – स्थलीय, स्वर्गीय और पाताल – में उनकी व्यापक प्रसिद्धि को दर्शाता है। यह इस बात पर जोर देता है कि उनकी शक्ति, प्रभाव और प्रसिद्धि किसी एक तल तक सीमित नहीं है, बल्कि सार्वभौमिक रूप से फैली हुई है, जिसमें सभी दृश्य और अदृश्य लोक शामिल हैं। मानव लोक से लेकर दिव्य लोकों तक, हर लोक में भक्त उनके दुर्जेय स्वरूप को स्वीकार करते हैं और उनकी पूजा करते हैं।

सभी लोकों के स्वामी सभी लोकों में मान्यता प्राप्त भगवान के रूप में, कालभैरव पूरे ब्रह्मांड पर अपना प्रभुत्व स्थापित करते हैं। वह केवल एक स्थानीय देवता नहीं हैं, बल्कि एक ब्रह्मांडीय शक्ति हैं जिनकी सत्ता और उपस्थिति ब्रह्मांड के हर कोने में व्याप्त है। यह पहलू ब्रह्मांडीय व्यवस्था के परम नियंत्रक और पालक के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है, जिनकी प्रसिद्धि उनकी सर्वोच्च शक्ति का प्रमाण है।

अतींद्रिय उपस्थिति सभी लोकों में मान्यता उनकी अतींद्रिय प्रकृति को भी दर्शाती है। विभिन्न लोकों में अंतर्निहित होते हुए भी, वे उनसे परे हैं, जिसका अर्थ है कि उनका प्रभाव और अस्तित्व किसी एक लोक की सीमाओं से परे है। यह व्यापक स्वीकृति देवताओं के ब्रह्मांडीय पदानुक्रम में उनकी मौलिक और अकाट्य स्थिति को इंगित करती है।

605. लोलाय

चंचल, सदैव इच्छुक और चपल रहने वाले (भगवान) को नमन।

विस्तार : "लुल" संस्कृत मूल से व्युत्पन्न नाम लोलाय, आमतौर पर गति, इच्छा और चंचलता से जुड़े अर्थों को वहन करता है, जो कालभैरव पर लागू होने पर दिव्य का एक जटिल और कुछ हद तक विरोधाभासी पहलू प्रस्तुत करता है।

बेचैन और गतिशील (गतिशील पहलू) (Restless and Moving - Dynamic Aspect) • लोला का अर्थ है "चलना," "हिलाना," या "चंचल।" इस संदर्भ में, यह कालभैरव के गतिशील और सदैव सक्रिय स्वभाव को दर्शाता है। वह स्थिर या निष्क्रिय नहीं है, बल्कि सृष्टि, संरक्षण और संहार के

ब्रह्मांडीय नृत्य में लगातार संलग्न है। यह बेचैनी समय के निरंतर प्रवाह और ब्रह्मांड के निरंतर परिवर्तन का प्रतीक है, जो उसके प्रभुत्व में है। वह सभी परिवर्तन और रूपांतरण के पीछे सक्रिय शक्ति है।

सदैव इच्छुक (आंतरिक ऊर्जा) (Ever-Desirous - Intrinsic Energy) • लोला का अर्थ "इच्छुक" या "लालची" भी है। जब किसी देवता पर लागू होता है, तो इसका अर्थ सांसारिक लालसा नहीं होता है, बल्कि एक गहरी, आंतरिक ऊर्जा और इच्छा होती है जो ब्रह्मांडीय प्रक्रियाओं को संचालित करती है। यह दिव्य इच्छा (इच्छा शक्ति) को संदर्भित कर सकता है जो अभिव्यक्ति की इच्छा रखती है या तीव्र ऊर्जा (कामात्मक) जो पूरे अस्तित्व में व्याप्त है। यह "इच्छा" व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं है, बल्कि ब्रह्मांड के अस्तित्व में आने, विकसित होने और अपने स्रोत पर लौटने का मूलभूत आवेग है। यह दिव्य चेतना की स्वयं को अनेक रूपों में अनुभव करने की अदम्य प्यास है।

चंचल (लीला पहलू) (Playful - Līlā Aspect) • इसके अलावा, लोला "चंचल" या "क्रीड़ापूर्ण" का सुझाव दे सकता है। यह लीला की अवधारणा के साथ संरेखित है, दिव्य खेल या क्रीड़ा जिसके माध्यम से ब्रह्मांड का निर्माण, रखरखाव और विघटन होता है। लोकों का निर्माण और विनाश दिव्य की चंचल गतिविधियों के रूप में देखा जाता है। कालभैरव, अपने चंचल पहलू में, एक अनुस्मारक है कि अस्तित्व की सबसे भयानक शक्तियां भी एक भव्य ब्रह्मांडीय नाटक के भीतर संचालित होती हैं, एक दिव्य खेल जिसके अंततः असीमित आत्मा के लिए कोई गंभीर परिणाम नहीं होते हैं। यह चंचलता उसके अप्रत्याशित स्वभाव और पारंपरिक नैतिक सीमाओं को पार करने की उसकी क्षमता में भी देखी जा सकती है।

उत्कृष्ट प्रकृति (Transcendent Nature) • जबकि "बेचैन" और "इच्छुक" मानवीय गुण लग सकते हैं, जब कालभैरव को जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो वे सीमित मानवीय अनुभव से परे उनकी उत्कृष्टता की ओर इशारा करते हैं। उनकी "इच्छाएं" ब्रह्मांडीय अनिवार्यताएं हैं, और उनकी "बेचैनी" स्वयं वास्तविकता की मूलभूत गतिशीलता है। वह चंचल है क्योंकि वह सभी का स्वामी है, परिणामों से अप्रभावित है, पूरे लौकिक अस्तित्व को अपने दिव्य खेल के रूप में देखता है।

606. ललिताय

प्रिय, दुलारे और स्नेहपूर्वक व्यवहार किए जाने वाले को नमन।

विस्तार : ललित (Lālita) नाम का अर्थ है "प्रिय," "दुलारा," "क्रीड़ाशील," "सुंदर," या "मनोहर।" जब इसे कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह इस भयानक देवता के एक गहरे और अक्सर अनदेखे पहलू को उजागर करता है, जो एक आश्चर्यजनक कोमलता और अपने भक्तों के साथ एक प्रेमपूर्ण संबंध को दर्शाता है।

प्रिय और दुलारा (भक्ति पहलू) (Beloved and Cherished - The Devotional Aspect) जबकि कालभैरव अपनी भयानक आकृति के लिए प्रसिद्ध हैं, यह नाम इस बात पर प्रकाश डालता है कि अपने सच्चे भक्तों के लिए, वह एक दूरस्थ, भयावह न्यायाधीश नहीं हैं, बल्कि एक गहरे प्रिय और दुलारे रक्षक हैं। यह एक पारस्परिक संबंध को दर्शाता है: जैसे भक्त उनकी पूजा करते हैं, वैसे ही वह भी उन्हें बहुत स्नेह करते हैं। वह परोपकारी संरक्षक हैं जो अपने भक्तों की सच्ची प्रार्थनाओं, चढ़ावों और भक्ति में प्रसन्न होते हैं, और कृपा और करुणा के साथ प्रतिक्रिया करते हैं। "ललित" शब्द ही एक चंचल, कोमल और मनमोहक गुण का सुझाव देता है जो उनके अन्यथा उग्र गुणों को संतुलित करता है।

इच्छाओं की पूर्ति और आराम प्रदान करना (Fulfilling Desires and Providing Comfort) "ललित" का अर्थ "लाड़-प्यार करना," "दुलारना," या "खुश करना" भी हो सकता है। दिव्य संदर्भ में, इसका अर्थ है कि कालभैरव अपने भक्तों की धार्मिक इच्छाओं को पूरा करने में प्रसन्न होते हैं और

उन्हें आराम और सांत्वना प्रदान करते हैं। वह उनके साथ एक माता-पिता की तरह व्यवहार करते हैं जो अपने प्रिय बच्चे के प्रति कोमलता दिखाते हैं, उन्हें नुकसान से बचाते हैं और कोमल दृढ़ता के साथ उनका मार्गदर्शन करते हैं।

सुंदर और क्रीड़ाशील (आनंद पहलू) (The Graceful and Sportive - Ananda Aspect) इस शब्द में "सुंदर," "क्रीड़ाशील," या "चंचल" के अर्थ भी निहित हैं। यह दिव्य लीला (Lila) को संदर्भित करता है जिसके माध्यम से ब्रह्मांड का निर्माण, पालन और विलय होता है। यहां तक कि उनके विनाश के ब्रह्मांडीय नृत्य में भी, एक लयबद्ध सुंदरता, उनके द्वारा रचित एक दिव्य लीला है। यह उस अंतर्निहित आनंद (Ananda) और सहजता को इंगित करता है जिसके साथ दिव्य शक्ति संचालित होती है, भले ही वह दुर्जेय कालभैरव के रूप में प्रकट हो। वह अपनी रचनात्मक और विनाशकारी शक्तियों के स्वामी हैं, जो उनमें अंतर्निहित आनंद और लालित्य के साथ संलग्न होते हैं।

607. शरभाय

जो शरभ का रूप धारण करते हैं, (जो एक पौराणिक प्राणी है जो एक शेर से अधिक शक्तिशाली है) उन्हें नमन।

विस्तार : शरभाय नाम भगवान शिव के शक्तिशाली और अद्वितीय शरभ अवतार को संदर्भित करता है, जो एक पौराणिक, बहु-अंगों वाला प्राणी है जिसे सिंह या हाथी से भी अधिक दुर्जेय बताया गया है।

शरभ अवतार शिव का शरभ अवतार मुख्य रूप से उस पौराणिक कथा से जुड़ा है जहाँ विष्णु, हिरण्यकशिपु राक्षस का वध करने के बाद, अपने नृसिंह (मनुष्य-सिंह) रूप में अत्यधिक भयंकर और विनाशकारी हो गए थे। न तो देवता और न ही कोई अन्य प्राणी नृसिंह को शांत कर सका, जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था को नष्ट करने की धमकी दे रहे थे। इस भयंकर अवतार को वश में करने के लिए, भगवान शिव ने शरभ का रूप धारण किया।

शरभ के गुण शरभ को आमतौर पर एक संकर प्राणी के रूप में चित्रित किया जाता है, जिसमें अक्सर सिंह का सिर, गरुड़ जैसे पंख, आठ पैर और कभी-कभी मानव जैसा धड़ होता है। इसकी अपार शक्ति नृसिंह की अत्यधिक शक्ति को सहजता से पराजित करने की इसकी क्षमता से व्यक्त होती है। इस रूप में, शिव न केवल एक सर्वोच्च योद्धा हैं, बल्कि ब्रह्मांडीय संतुलन के पुनर्स्थापक भी हैं।

प्रतीकवाद और महत्व शरभ अवतार कई गहन दार्शनिक और धार्मिक अवधारणाओं का प्रतीक है:

• द्वंद्वों का अतिक्रमण: यह शिव की अन्य देवताओं के सबसे भयंकर पहलुओं को भी पार करने और नियंत्रित करने की क्षमता को प्रदर्शित करता है, जो ब्रह्मांडीय पदानुक्रम में उनकी सर्वोच्च स्थिति को उजागर करता है। यह दर्शाता है कि शक्ति और भयंकरता भी, जब अनियंत्रित हो जाती है, तो उसे संतुलन में लाना चाहिए।

• अहंकार का विनाश: शरभ द्वारा नृसिंह को वश में करना अतिरंजित अहंकार या अनियंत्रित आक्रामकता के विघटन के रूप में व्याख्या किया जा सकता है, भले ही वह धार्मिक कार्य से उत्पन्न हुआ हो।

• परम शक्ति और संरक्षक: यह रूप शिव की परम विनाशकारी और सुरक्षात्मक शक्ति को रेखांकित करता है, इस बात पर जोर देता है कि वे अतुलनीय हैं और ब्रह्मांडीय सद्भाव को खतरे में डालने वाली दिव्य शक्ति की सबसे चरम अभिव्यक्तियों को भी हल करने में सक्षम हैं।

• धर्म और संतुलन: शरभ का हस्तक्षेप धर्म (धार्मिक ब्रह्मांडीय व्यवस्था) को फिर से स्थापित करता है, जो शिव को ब्रह्मांड में संतुलन और सद्भाव के परम प्रवर्तक के रूप में दर्शाता है।

608. वरदाय

सभी वरदानों और आशीषों को प्रदान करने वाले परम दाता को नमन।

विस्तार : वरदाय नाम संस्कृत मूल "वर" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "वरदान," "आशीष," या "इच्छा।" इसलिए, वरद (दत्त कारक में वरदाय) का अर्थ है "वरदान देने वाला" या "आशीषों का दाता।"

सर्वोच्च दाता यह विशेषण भगवान शिव के एक रूप, कालभैरव की अपार क्षमता और इच्छा को उजागर करता है कि वे अपने भक्तों को इच्छाएँ प्रदान करें और दिव्य कृपा प्रदान करें। यह दर्शाता है कि वे सभी परोपकारी परिणामों के अंतिम स्रोत हैं, चाहे वे भौतिक, आध्यात्मिक या सांसारिक हों। उनके वरदान दायरे या प्रकृति से सीमित नहीं हैं; वे सांसारिक समृद्धि और सुरक्षा से लेकर परम आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) तक कुछ भी प्रदान कर सकते हैं।

भौतिक आशीषों से परे जबकि "वरदान" को अक्सर भौतिक संपत्ति या सांसारिक सफलता के रूप में व्याख्या किया जा सकता है, एक गहरे आध्यात्मिक संदर्भ में, वरद का अर्थ आंतरिक शांति, ज्ञान, भय से मुक्ति, बाधाओं को दूर करना और दुख की समाप्ति भी है। वे व्यक्ति के वास्तविक स्वरूप को समझने और भीतर के दिव्य को साकार करने का वरदान प्रदान करते हैं।

कृपा और परोपकार यह नाम कालभैरव के करुणामय और परोपकारी पहलू पर जोर देता है, उनके अक्सर भयावह स्वरूप के बावजूद। यह इस बात पर बल देता है कि उनका उग्र रूप अंततः उनके सच्चे अनुयायियों के कल्याण और सुरक्षा के लिए है, और उनका क्रोध मुख्य रूप से अज्ञानता, अहंकार और नकारात्मक कर्मिक शक्तियों की ओर निर्देशित है। वरदानों का प्रदान करना उन लोगों की ओर उनकी दिव्य कृपा का स्वतंत्र रूप से प्रवाहित होना दर्शाता है जो उनकी शरण लेते हैं।

इच्छाओं की पूर्ति कालभैरव को वरद के रूप में आह्वान करना उनकी शक्ति से अपनी गहरी इच्छाओं और आकांक्षाओं को प्रकट करने की अपील करना है। यह नियति को बदलने और जरूरतमंदों को सहायता प्रदान करने के उनके ब्रह्मांडीय अधिकार को स्वीकार करता है, जिससे वे दिव्य हस्तक्षेप और पूर्ति चाहने वालों के लिए एक अत्यधिक पूजनीय देवता बन जाते हैं।

609. वन्याय

सभी पूजा, आराधना और श्रद्धा के योग्य को नमन।

विस्तार : वन्याय नाम संस्कृत धातु 'वंद' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "स्तुति करना," "आराधना करना," "पूजा करना," या "आदरपूर्वक नमस्कार करना।"

पूजनीय (वंद्य) वंद्य का शाब्दिक अर्थ है "पूजा के योग्य," "प्रशंसनीय," या "आदरणीय।" यह नाम कालभैरव को ब्रह्मांड के सभी प्राणियों से सभी प्रकार की आराधना, श्रद्धा और भक्ति के सर्वोच्च रूप से योग्य होने का गुण प्रदान करता है। यह आध्यात्मिक veneration के अंतिम उद्देश्य के रूप में उनकी स्थिति को समाहित करता है।

परम सत्ता उन्हें वंद्य कहकर, उनके भक्त आध्यात्मिक पदानुक्रम में उनकी सर्वोपरि स्थिति को स्वीकार करते हैं। वह केवल एक देवता नहीं हैं जिनका सम्मान किया जाना चाहिए, बल्कि दिव्य का ही मूर्त रूप हैं जिनके अस्तित्व और गुणों को उच्चतम प्रकार की पूजा की आवश्यकता है। यह पूजा भय से नहीं, बल्कि उनके ब्रह्मांडीय महत्व और पूर्ण पवित्रता की गहरी समझ से की जाती है।

सार्वभौमिक श्रद्धा यह उपाधि इंगित करती है कि उनकी महिमा और शक्ति इतनी विशाल है कि सभी प्राणी, देवों (देवताओं) से लेकर मनुष्यों और यहां तक कि अन्य आध्यात्मिक संस्थाएं भी स्वाभाविक रूप से उनके सामने झुकते हैं। समय पर उनका पूर्ण नियंत्रण और अंतिम दंडदाता और

रक्षक के रूप में उनकी भूमिका उन्हें इस सार्वभौमिक श्रद्धा के आंतरिक रूप से योग्य बनाती है।

भक्ति की अभिव्यक्ति भक्त के लिए, कालभैरव को वंद्य के रूप में संबोधित करना गहरी आस्था, समर्पण और प्रेम की अभिव्यक्ति है। यह अज्ञानता के नाशक, वरदानों के दाता और अंतिम मुक्तिदाता के रूप में कालभैरव की भूमिका की भक्त की पहचान को दर्शाता है, ये सभी उन्हें सभी प्रार्थनाओं और स्तुतियों का सबसे उपयुक्त प्राप्तकर्ता बनाते हैं।

610. विदुषे

जो अत्यंत बुद्धिमान, ज्ञानी और महान विद्वान हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : "विदुषे" नाम, संस्कृत मूल "विद्" (जानना) से व्युत्पन्न है, जो ज्ञान, विद्या और विद्वत्ता के सर्वोच्च स्वरूप को दर्शाता है।

सर्वज्ञ सत्ता "विदुषे" का सीधा अर्थ है "ज्ञानी को," "विद्वान को," या "पंडित को।" यह उपाधि कालभैरव को एक सर्वज्ञ सत्ता के रूप में स्थापित करती है, जिनके पास सभी चीजों—अतीत, वर्तमान और भविष्य—का पूर्ण और परिपूर्ण ज्ञान है। उनका ज्ञान केवल बौद्धिक समझ से परे है; यह एक गहन, सहज और परम ज्ञान है।

समस्त ज्ञान का स्रोत सर्वोच्च ज्ञानी के रूप में, वे सभी प्रकार के ज्ञान के उद्गम और स्रोत हैं, जिसमें पवित्र ग्रंथ (वेद, आगम, तंत्र), दार्शनिक प्रणालियाँ, कलाएँ, विज्ञान और सांसारिक ज्ञान शामिल हैं। अपनी पढ़ाई या आध्यात्मिक खोज में समझ, अंतर्दृष्टि और स्पष्टता चाहने वाले भक्त अक्सर उनका आह्वान करते हैं।

ज्ञान के माध्यम से मुक्तिदाता आध्यात्मिक संदर्भ में, सच्चा ज्ञान (ज्ञान) मुक्ति (मोक्ष) का मार्ग माना जाता है। कालभैरव, विदुषे के रूप में, विवेकपूर्ण ज्ञान प्रदान करते हैं जो संवेदनशील प्राणियों को वास्तविक (सत्) और अवास्तविक (असत्) के बीच अंतर करने में मदद करता है, उन्हें अज्ञान (अविद्या) से दूर और आध्यात्मिक ज्ञान की ओर ले जाता है। उनका ज्ञान केवल सैद्धांतिक नहीं बल्कि परिवर्तनकारी है।

ब्रह्मांडीय नियम का अवतार उनका गहन ज्ञान ब्रह्मांड के जटिल कार्यों, धर्म, कर्म और समय के नियमों तक भी फैला हुआ है। वे प्राकृतिक व्यवस्था को पूर्ण सटीकता के साथ समझते हैं, जिससे वे ब्रह्मांडीय संतुलन के पूर्ण प्रवर्तक और संरक्षक बन जाते हैं।

611. विश्वास्मै

जो संपूर्ण ब्रह्मांड, स्वयं ब्रह्मांड है, उसे नमन।

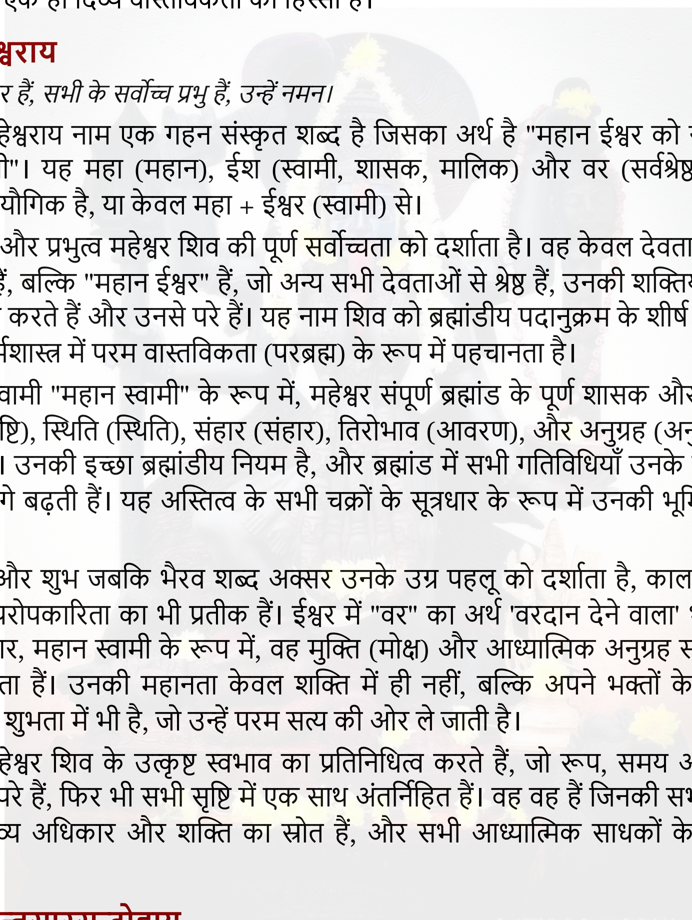
विस्तार : विश्वस्मै नाम संस्कृत शब्द 'विश्व' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "सभी," "संपूर्ण," या "ब्रह्मांड" (cosmos)। इसका सीधा अर्थ है "ब्रह्मांड को" या "उस एक को जो ब्रह्मांड है।"

ब्रह्मांडीय अंतर्व्यापकता (Cosmic Immanence) यह नाम कालभैरव की भूमिका पर जोर देता है, न केवल एक देवता के रूप में जो एक स्वर्गीय क्षेत्र में निवास करते हैं, बल्कि ब्रह्मांड के मूल ताने-बाने और सार के रूप में भी। वह केवल ब्रह्मांड के बाहर नहीं हैं, बल्कि वह स्वयं ब्रह्मांड हैं। यह अद्वैत वेदांत के सिद्धांत के अनुरूप है कि ब्रह्म सृष्टि के भीतर (अंतर्व्यापी) और उससे परे (अतीत) दोनों है।

सर्वव्यापी वास्तविकता (The All-Encompassing Reality) उन्हें विश्वस्मै के रूप में संबोधित करके, भक्त उन्हें सर्वव्यापी वास्तविकता, अस्तित्व की समग्रता के रूप में स्वीकार करते हैं, जिसमें सभी सजीव और निर्जीव वस्तुएं, सभी घटनाएं, और सभी समय और स्थान शामिल हैं। वह अपनी संपूर्णता में स्थूल ब्रह्मांड (macrocosm) हैं। यह अद्वैत की गहरी भावना को व्यक्त करता है, जहाँ दिव्य सृष्टि से अलग नहीं है बल्कि उसका अंतरंग अस्तित्व है।

स्रोत और पालक (Source and Sustainer) ब्रह्मांड के रूप में, वह परम स्रोत हैं जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है, वह पदार्थ हैं जिसके द्वारा सब कुछ पोषित होता है, और वह अंतिम गंतव्य हैं जिसमें सब कुछ अंततः विलीन हो जाएगा। यह उनकी सर्वशक्तिमत्ता और सर्वव्यापकता को उजागर करता है, क्योंकि वह हर परमाणु और हर ब्रह्मांडीय घटना में मौजूद हैं।

दार्शनिक महत्व (Philosophical Significance) यह नाम कालभैरव को एक विशिष्ट भयंकर रूप से परे, परम सत्ता (परब्रह्म) तक उठाता है, जो संपूर्ण ब्रह्मांड के रूप में प्रकट होता है। यह एक ऐसे दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है जहाँ उपासक और उपास्य के बीच कोई अलगाव नहीं है, क्योंकि दोनों अंततः एक ही दिव्य वास्तविकता का हिस्सा हैं।



612. महेश्वराय

जो महान ईश्वर हैं, सभी के सर्वोच्च प्रभु हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : महेश्वराय नाम एक गहन संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है "महान ईश्वर को नमस्कार" या "परम स्वामी"। यह महा (महान), ईश (स्वामी, शासक, मालिक) और वर (सर्वश्रेष्ठ, उत्कृष्ट) से व्युत्पन्न एक यौगिक है, या केवल महा + ईश्वर (स्वामी) से।

परम देवत्व और प्रभुत्व महेश्वर शिव की पूर्ण सर्वोच्चता को दर्शाता है। वह केवल देवताओं में से एक देवता नहीं हैं, बल्कि "महान ईश्वर" हैं, जो अन्य सभी देवताओं से श्रेष्ठ हैं, उनकी शक्तियों और कार्यों को समाहित करते हैं और उनसे परे हैं। यह नाम शिव को ब्रह्मांडीय पदानुक्रम के शीर्ष पर रखता है, उन्हें शैव धर्मशास्त्र में परम वास्तविकता (परब्रह्म) के रूप में पहचानता है।

ब्रह्मांड के स्वामी "महान स्वामी" के रूप में, महेश्वर संपूर्ण ब्रह्मांड के पूर्ण शासक और नियंत्रक हैं। वह सृष्टि (सृष्टि), स्थिति (स्थिति), संहार (संहार), तिरोभाव (आवरण), और अनुग्रह (अनुग्रह) के लिए जिम्मेदार हैं। उनकी इच्छा ब्रह्मांडीय नियम है, और ब्रह्मांड में सभी गतिविधियाँ उनके संप्रभु आदेश के तहत आगे बढ़ती हैं। यह अस्तित्व के सभी चक्रों के सूत्रधार के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देता है।

परोपकारी और शुभ जबकि भैरव शब्द अक्सर उनके उग्र पहलू को दर्शाता है, कालाभैरव महेश्वर के रूप में परोपकारिता का भी प्रतीक हैं। ईश्वर में "वर" का अर्थ 'वरदान देने वाला' भी हो सकता है। इस प्रकार, महान स्वामी के रूप में, वह मुक्ति (मोक्ष) और आध्यात्मिक अनुग्रह सहित वरदानों के परम दाता हैं। उनकी महानता केवल शक्ति में ही नहीं, बल्कि अपने भक्तों के प्रति उनकी करुणा और शुभता में भी है, जो उन्हें परम सत्य की ओर ले जाती है।

उत्कृष्टता महेश्वर शिव के उत्कृष्ट स्वभाव का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो रूप, समय और स्थान की सीमाओं से परे हैं, फिर भी सभी सृष्टि में एक साथ अंतर्निहित हैं। वह वह हैं जिनकी सभी पूजा करते हैं, सभी दिव्य अधिकार और शक्ति का स्रोत हैं, और सभी आध्यात्मिक साधकों के लिए अंतिम गंतव्य हैं।

613. वेदान्तसारसन्दोहाय

जो वेदान्त के ज्ञान का सार और मूर्त रूप हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : वेदान्तसारसंदोहाय नाम एक गहन और अत्यधिक दार्शनिक उपाधि है, जो वेदान्त, सार और संदोह को जोड़ती है।

• वेदान्त (Vedānta): इस शब्द का अर्थ है "वेदों का समापन या सार" (वेद + अंत)। यह उपनिषदों और उनसे व्युत्पन्न दार्शनिक प्रणालियों, विशेष रूप से अद्वैत वेदान्त को संदर्भित करता है, जो व्यक्तिगत आत्मा (आत्मन) की परम वास्तविकता (ब्रह्म) के साथ अंतिम एकता को प्रतिपादित करता

है। वेदान्त हिंदू धर्म में आध्यात्मिक ज्ञान का शिखर है, जो वास्तविकता, चेतना और मुक्ति (मोक्ष) की प्रकृति की पड़ताल करता है।

• सार (Sāra): यह "सार," "मूल," "तत्त्व," या "सबसे उत्कृष्ट भाग" को दर्शाता है। यह किसी चीज़ के मूलभूत सत्य या उसके निचोड़े हुए ज्ञान को इंगित करता है।

• संदोह (Sandoha): शाब्दिक अर्थ "दुहना" या "संग्रह" है, लेकिन एक दार्शनिक संदर्भ में, इसका अर्थ "संकलन," "संचय," या "साक्षात् स्वरूप" है। यह सार के पूर्ण और परिपूर्ण संग्रह या प्राप्ति का तात्पर्य है।

वेदान्तिक ज्ञान का साक्षात् स्वरूप इस प्रकार, वेदान्तसारसंदोहाय का अर्थ है "वह जो वेदान्त के सार का संग्रह या साक्षात् स्वरूप है।" भगवान कालभैरव, इस नाम से, उपनिषदों द्वारा प्रकट किए गए परम सत्यों के जीवंत, श्वास लेने वाले स्वरूप के रूप में पहचाने जाते हैं। वे केवल वेदान्त के समर्थक नहीं हैं; वे वही सत्य हैं जिसे वेदान्त स्पष्ट करना चाहता है—वह अद्वैत वास्तविकता जहाँ व्यक्तिगत आत्मा ब्रह्म के समान है।

पराकाष्ठा और अंतर्निहितता (Transcendence and Immanence) यह नाम भैरव की भूमिका को स्वयं परम ब्रह्म के रूप में इंगित करता है। वे सभी गुणों (निर्गुण) और रूपों से परे हैं, फिर भी वे विभिन्न रूपों (सगुण) के माध्यम से प्रकट होते हैं ताकि प्राणियों को इस परम सत्य तक पहुँचाया जा सके। उनका भयंकर रूप, जिसे अक्सर भयानक देखा जाता है, अद्वैत के अटल सत्य के रूप में समझा जा सकता है जो सभी भ्रमों और झूठी पहचानों को तोड़ देता है, जिससे व्यक्ति अपने सच्चे स्वरूप की प्राप्ति की ओर अग्रसर होता है।

आध्यात्मिक अन्वेषण का लक्ष्य कालभैरव को वेदान्तसारसंदोहाय के रूप में नमन करना यह स्वीकार करना है कि वे सभी आध्यात्मिक अन्वेषण का अंतिम लक्ष्य हैं, आत्म-ज्ञान और मुक्ति की खोज का अंतिम उत्तर हैं। वे अद्वैत (गैर-द्वैत) के प्रत्यक्ष अनुभव का प्रतिनिधित्व करते हैं, वह अवस्था जहाँ सभी भेद घुल जाते हैं, और केवल एक ही शेष रहता है। भैरव का यह रूप हमें याद दिलाता है कि वेदान्त की गहन दार्शनिक अंतर्दृष्टि अमूर्त सिद्धांत नहीं हैं बल्कि दिव्य द्वारा सन्निहित जीवित वास्तविकताएँ हैं।

614. वितताङ्गाय

जिनके अंग विस्तृत हैं, और जो संपूर्ण ब्रह्मांड में व्याप्त हैं, उनको नमन।

विस्तार : वितताङ्गाय नाम वितत और अंग का एक यौगिक है, जो गहन ब्रह्मांडीय आयामों को व्यक्त करता है।

• वितत (Vitata): इस शब्द का अर्थ है "विस्तारित," "व्याप्त," "विशाल," या "फैला हुआ।" यह एक विशाल फैलाव और सर्वव्यापकता को दर्शाता है।

• अंग (Aṅga): यह "अंगों," "भागों," "शरीर," या "घटकों" को संदर्भित करता है। एक लाक्षणिक और ब्रह्मांडीय अर्थ में, इसका अर्थ एक बड़े समग्र के विभिन्न घटक या अभिव्यक्तियाँ हो सकता है।

ब्रह्मांडीय व्याप्ति (Cosmic Pervasion) जब संयुक्त किया जाता है, तो वितताङ्गाय उस भगवान का वर्णन करता है जिनके "अंग विशाल हैं" या "जिनका शरीर सब कुछ व्याप्त करने के लिए विस्तृत हो गया है।" यह सीधे भगवान शिव के विश्वरूप, उनके सार्वभौमिक रूप की ओर इशारा करता है, जहाँ उनका शरीर पूरे ब्रह्मांड को समाहित करता है। प्रत्येक ग्रह, तारा, आकाशगंगा, और सभी सजीव और निर्जीव संस्थाएँ उनके अनंत रूप का एक हिस्सा या एक अंग मानी जाती हैं।

सर्वव्यापी अस्तित्व (Omnipresent Existence) यह नाम भैरव के सर्वव्यापी स्वरूप को दर्शाता है, यह पुष्टि करता है कि कोई स्थान नहीं है, कोई समय नहीं है, और कोई आयाम नहीं है जहाँ उनकी उपस्थिति महसूस नहीं की जाती है या जहाँ उनके अस्तित्व का एक हिस्सा मौजूद नहीं है। वह रूप या स्थान की किसी भी सीमा से बंधे नहीं हैं। यह अवधारणा वेदांतिक विचार के लिए केंद्रीय है, जहाँ दिव्य सभी सृष्टि में अंतर्निहित है।

सृष्टि के लिए रूपक (Metaphor for Creation) दार्शनिक रूप से, यह यह भी दर्शाता है कि सारी सृष्टि उनसे उत्पन्न होती है और उनके भीतर बनी रहती है। जैसे शरीर के अंग पूरे से जुड़े होते हैं, वैसे ही सभी ब्रह्मांडीय घटनाएँ वितताङ्गाय से स्वाभाविक रूप से जुड़ी हुई हैं और उनके विस्तार हैं। उनका शरीर स्वयं ब्रह्मांड है।

अतिक्रमण और अंतर्निहितता (Transcendence and Immanence) यह नाम भैरव के अतिक्रमण (समझ से परे अंतिम वास्तविकता के रूप में) और उनकी अंतर्निहितता (सृष्टि के बहुत ही ताने-बाने और सार के रूप में) दोनों को खूबसूरती से दर्शाता है, यह सब उनके सार्वभौमिक रूप के शक्तिशाली प्रतीकवाद के भीतर है।

615. विशारदाय

सभी कलाओं और विज्ञानों में अत्यंत निपुण, कुशल और प्रवीण रहने वाले को नमन।

विस्तार : विशारदाय (विश्ारदाय) नाम संस्कृत शब्द विशारद (विशारद) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "विशेषज्ञ," "कुशल," "प्रवीण," "निपुण," "बुद्धिमान," या "ज्ञानी।" जब यह कालभैरव पर लागू होता है, तो यह अस्तित्व और ज्ञान के सभी क्षेत्रों में उनकी पूर्ण और सर्वोच्च महारत को दर्शाता है।

सर्वोच्च महारत यह विशेषण कालभैरव को एक अद्वितीय अधिकारी और ज्ञान, बुद्धि और कौशल का अंतिम स्रोत घोषित करता है। ऐसा कोई कला, विज्ञान, शिल्प या अनुशासन नहीं है जिसमें वे सर्वोच्च रूप से निपुण न हों। इसमें सबसे अमूर्त दार्शनिक अवधारणाओं से लेकर सबसे मूर्त भौतिक कौशल तक, ब्रह्मांड के निर्माण से लेकर सबसे जटिल नृत्य रूपों तक के सभी क्षेत्र शामिल हैं।

सभी विद्याओं और कलाओं के स्वामी विशारदाय सभी विद्याओं (विज्ञान, ज्ञान प्रणालियों, आध्यात्मिक अनुशासनों) और कलाओं (कला, कौशल, शिल्प) पर उनके प्रभुत्व को इंगित करता है। वे वह स्रोत हैं जिससे मानव और दिव्य विशेषज्ञता के सभी रूप उत्पन्न होते हैं। इसमें वैदिक विज्ञान, तांत्रिक अभ्यास, युद्ध कला, संगीत, नृत्य, वास्तुकला, ध्यान और आध्यात्मिक मुक्ति शामिल हैं।

पूर्ण ज्ञान का अवतार विशारदाय के रूप में, कालभैरव पूर्ण, निर्दोष ज्ञान का प्रतीक हैं। उनका ज्ञान लौकिक अर्थ में अध्ययन या अनुभव से प्राप्त नहीं होता है, बल्कि अंतिम वास्तविकता के रूप में उनके अस्तित्व में निहित है। वे सभी ब्रह्मांडीय स्मृति और समझ के भंडार हैं, हर अतीत, वर्तमान और भविष्य की घटना और उन्हें नियंत्रित करने वाले अंतर्निहित सिद्धांतों से अवगत हैं।

ज्ञान और कौशल के प्रदाता भक्तों के लिए, उन्हें विशारदाय के रूप में आह्वान करने का अर्थ है कि वे प्रवीणता और ज्ञान प्रदान कर सकते हैं। जो लोग ईमानदारी से उनकी पूजा करते हैं, वे विचार की स्पष्टता, अपने चुने हुए क्षेत्रों पर महारत और सत्य को भ्रम से अलग करने की क्षमता प्राप्त कर सकते हैं। वे सच्चे साधकों को बौद्धिक बाधाओं को दूर करने और समझ की उच्च अवस्थाओं को प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शन करते हैं।

द्वंद्वों से परे उनकी विशेषज्ञता अच्छे और बुरे, सृजन और विनाश के द्वंद्वों से परे है। वे बिना किसी पूर्वाग्रह के हर स्तर पर ब्रह्मांड के जटिल कामकाज को समझते हैं, परोपकारी निर्माण और आवश्यक विघटन दोनों के ज्ञान को धारण करते हैं।

616. विश्वमूर्तये

जिनकी मूर्ति संपूर्ण ब्रह्मांड है, उन्हें नमन।

विस्तार : विश्वमूर्ति (Viśvamūrti) नाम एक गहरा दार्शनिक विचार है, जो विश्व (ब्रह्मांड) और मूर्ति (रूप, अवतार, प्रतिमा) का मिश्रण है।

ब्रह्मांड उनका स्वरूप है यह नाम घोषणा करता है कि कालभैरव, अपने अनंत और सर्वव्यापी स्वरूप में, केवल ब्रह्मांड के शासक नहीं हैं, बल्कि स्वयं ब्रह्मांड हैं। उनका शरीर, उनकी 'मूर्ति', संपूर्ण सृष्टि है - अपनी सभी प्रकट महिमा में ब्रह्मांड। यह विराट पुरुष की अवधारणा को प्रतिध्वनित करता है, जहाँ ब्रह्मांड को दिव्य के ब्रह्मांडीय शरीर के रूप में देखा जाता है। पर्वत उनकी हड्डियाँ हैं, नदियाँ उनकी नसें, महासागर उनका रक्त, आकाश उनका सिर, सूर्य और चंद्रमा उनकी आँखें, और हवा उनकी साँस है।

अंतर्निहितता और परात्परता (Immanence and Transcendence) विश्वमूर्ति दिव्य के अंतर्निहित और परात्पर दोनों पहलुओं को उजागर करता है। वह अंतर्निहित हैं क्योंकि वह ब्रह्मांड के भीतर सब कुछ में व्याप्त और उसका गठन करते हैं। फिर भी, वह परात्पर भी हैं, क्योंकि उनकी चेतना और शक्ति इस भौतिक अभिव्यक्ति की सीमित सीमाओं से परे फैली हुई है। यह परिप्रेक्ष्य निर्माता और निर्मित के बीच किसी भी भेद को समाप्त करता है, उनकी परम एकता पर जोर देता है।

सर्वव्यापी उपस्थिति ब्रह्मांड को उनके स्वरूप के रूप में कल्पना करने का अर्थ है कि हर घटना, हर प्राणी, अस्तित्व का हर कण उनका एक हिस्सा है। उनके बाहर कुछ भी नहीं है, और वह हर चीज में मौजूद हैं। यह विश्वदृष्टि सभी सृष्टि के प्रति श्रद्धा की भावना को बढ़ावा देती है, क्योंकि इसे दिव्य की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है।

सृष्टि का ब्रह्मांडीय नृत्य यह नाम शिव की ब्रह्मांडीय नर्तक (नटराज) के रूप में भूमिका से भी परोक्ष रूप से जुड़ा है, जिनका नृत्य न केवल ब्रह्मांड का निर्माण करता है बल्कि जिनका शरीर ही वह निरंतर सृष्टि है। कालभैरव के रूप में, इसका अर्थ है कि उनका "स्वरूप" निरंतर परिवर्तन की स्थिति में है, जो समय, सृष्टि, संरक्षण और विघटन की अथक प्रक्रिया को मूर्त रूप देता है जो ब्रह्मांड को परिभाषित करता है।

617. वेदवेद्याय

वेद के ज्ञान से ही जानने योग्य और समझने योग्य व्यक्ति को नमन।

विस्तार : वेदवेद्य (वेदवेद्याय) नाम परम वास्तविकता की प्रकृति और उसे समझने के साधनों के बारे में एक गहरा कथन है। यह वेद और वेद्य का एक यौगिक है।

• वेद (Veda): यह हिंदू धर्म के पवित्र ग्रंथों, विशेष रूप से चार वेदों (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद) को संदर्भित करता है, जिन्हें अपौरुषेय (मानव उत्पत्ति का नहीं) और श्रुति (प्रकट ज्ञान) माना जाता है।

• वेद्य (Vedya): यह उपसर्ग "जो जानने योग्य है" या "जो जाना जा सकता है" या "बोधगम्य" को दर्शाता है।

प्रकटीकरण के माध्यम से ज्ञात इस प्रकार, वेदवेद्य का अर्थ है "वह जिसे केवल वेदों के माध्यम से ही जाना जा सकता है" या "वह जो केवल वेदों के माध्यम से ही बोधगम्य है।" इसका तात्पर्य यह है कि परम वास्तविकता, भगवान शिव और भैरव का सार, केवल इंद्रिय बोध, सांसारिक बुद्धि, अकादमिक तर्क या अकेले अनुभवजन्य विज्ञान के माध्यम से पूरी तरह से समझा नहीं जा सकता है। दिव्य, उनके स्वरूप, गुणों और ब्रह्मांड तथा व्यक्तिगत आत्माओं के साथ उनके संबंध के बारे में गहनतम सत्य वेदों के प्रकट ज्ञान में निहित हैं।

दिव्य का अथाह स्वरूप यह नाम परम सत्ता के पारलौकिक और अथाह स्वरूप को रेखांकित करता है। वह सामान्य मानवीय क्षमताओं की पहुँच से परे हैं। वेद एक दिव्य रूप से निर्देशित मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं, आध्यात्मिक अज्ञान के अंधकार में एक टॉर्च के रूप में, जो भगवान को समझने का मार्ग प्रकाशित करते हैं। वे वैचारिक ढाँचा, मंत्र, दार्शनिक अंतर्दृष्टि (विशेष रूप से उपनिषद, जो वेदों का दार्शनिक मूल हैं), और अनुष्ठानिक मार्ग प्रदान करते हैं जो एक साधक को दिव्य की प्राप्ति की ओर ले जा सकते हैं।

अनुभवजन्य ज्ञान से परे यह बताता है कि जबकि भौतिक दुनिया की अनुभवजन्य साधनों से जाँच की जा सकती है, परम आध्यात्मिक सत्य, विशेष रूप से ब्रह्म (इस संदर्भ में सगुण ब्रह्म, जैसे भगवान शिव-भैरव), को एक अलग ज्ञानमीमांसीय दृष्टिकोण की आवश्यकता है - जो शास्त्रोक्त अधिकार और उन शास्त्रों द्वारा निर्देशित आध्यात्मिक अभ्यास में निहित है। उन्हें वास्तव में जानना वैदिक ग्रंथों में निहित कालातीत ज्ञान के साथ जुड़ना है, न केवल बौद्धिक रूप से, बल्कि आध्यात्मिक और अनुभवात्मक रूप से भी।

618. वामदेवाय

उन वामदेव को नमन जो सुंदर, मनभावन और श्रेष्ठ देव हैं।

विस्तार : वामदेव नाम शिव के लिए एक गहरा और बहुस्तरीय विशेषण है, विशेष रूप से शिव के पांच मूलभूत पहलुओं (पंच मुखों) के संदर्भ में, जहाँ वामदेव उत्तरी मुख का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह वाम और देव का एक यौगिक है।

वामः इस शब्द के कई महत्वपूर्ण अर्थ हैं। 1. मनभावन, सुंदर, सहमत, श्रेष्ठ: इस अर्थ में, वामदेव शिव के सुंदर और परोपकारी पहलू को संदर्भित करते हैं, जो कृपालु हैं और आनंद लाते हैं। यह पहलू अक्सर दुनिया के रखरखाव और संरक्षण से संबंधित होता है, जो अधिक उग्र रूपों के विपरीत है। यह वाम रूप स्त्री सिद्धांत (वामा एक सुंदर स्त्री को संदर्भित करता है) से भी जुड़ा है, जो शिव के मर्दाना और स्त्री दोनों ऊर्जाओं के अवतार को दर्शाता है, जैसा कि अर्धनारीश्वर में देखा जाता है। 2. वाम, उलटा, विपरीत: यह अर्थ तांत्रिक परंपराओं में महत्वपूर्ण है। तंत्र में "वाम-हस्त मार्ग" (वाममार्ग) में ऐसी प्रथाएं शामिल हैं जो कभी-कभी आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त करने के लिए पारंपरिक सामाजिक मानदंडों के खिलाफ जाती हैं। वामदेव के रूप में, शिव इन "वाम" या अपरंपरागत आध्यात्मिक और लौकिक व्यवस्था के दृष्टिकोणों पर शासन करने वाले और उन्हें मूर्त रूप देने वाले देवता हैं। यह सामान्य द्वंद्वों से उनके अतिक्रमण और सभी मार्गों को अपनाने का प्रतीक है, यहां तक कि उन मार्गों को भी जिन्हें मुख्यधारा समाज द्वारा उल्लंघनकारी माना जाता है, अंततः मोक्ष की ओर ले जाते हैं। 3. कुटिल, कपटी (एक दिव्य अर्थ में): कुछ रहस्यमय संदर्भों में, "वाम" एक दिव्य चालबाज या ऐसा व्यक्ति हो सकता है जो अपनी माया (ब्रह्मांडीय भ्रम) या अपरंपरागत कार्यों के माध्यम से बुद्धि को भ्रमित करता है, प्राणियों को अप्रत्याशित तरीकों से सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है।

देवः ईश्वर, दिव्य सत्ता।

शिव का उत्तरी मुख शिव के पंच ब्रह्म रूपों में, वामदेव उत्तरी मुख के अधिष्ठाता देवता हैं, जो जल तत्व और काले रंग से जुड़े हैं, हालांकि कभी-कभी अन्य रंगों में भी चित्रित किए जाते हैं। यह मुख सृष्टि और संरक्षण से जुड़ा है, और रजस (जुनून, गतिविधि) के गुण को सत्व (शुद्धता, सद्भाव) के साथ मिश्रित करता है। वे शांति और समृद्धि के दाता हैं।

विरोधाभास का अवतार वामदेव शिव के विरोधाभासी स्वभाव को खूबसूरती से समाहित करते हैं: एक साथ मनभावन और भयानक, पारंपरिक और अपरंपरागत, शांत और गतिशील। वे परोपकारी रक्षक हैं जो ज्ञानोदय के छिपे हुए और कभी-कभी कठिन मार्गों पर भी शासन करते हैं। उनका

"वामपंथी" पहलू बुराई नहीं है, बल्कि एक पारलौकिक शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो दिव्य उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सामान्य मानदंडों के बाहर काम कर सकती है।

कृपालु दाता "मनभावन देवता" के रूप में, वामदेव शिव के उस पहलू को दर्शाते हैं जो उन लोगों को कृपा, समृद्धि और आध्यात्मिक पूर्ति प्रदान करते हैं जो उनके प्रति समर्पित हैं, चाहे उनका चुना हुआ मार्ग कुछ भी हो।

619. विमोचकाय

सभी बंधनों से परम मुक्ति प्रदान करने वाले महान उद्धारकर्ता को नमन।

विस्तार : विमोचकाय नाम संस्कृत मूल "मुच्" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "छोड़ना," "मुक्त करना," या "स्वतंत्र करना।" उपसर्ग "वि-" इस अर्थ को तीव्र करता है, जो पूर्ण, परम और निश्चित मुक्ति का सुझाव देता है।

बंधनों का विनाशक अतः विमोचक का अर्थ है "मुक्तिदाता" या "वह जो मुक्त करता है।" कालभैरव के संदर्भ में, यह संसार (जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म का चक्र), कर्म, अज्ञान (अविद्या), और सभी प्रकार के भौतिक और आध्यात्मिक बंधनों से सभी प्राणियों को मुक्त करने की उनकी परम शक्ति को दर्शाता है। वह आसक्ति, अहंकार और भ्रम की गांठों को काटते हैं जो व्यक्तिगत आत्मा को बांधते हैं।

मोक्ष प्रदान करना यह मुक्ति केवल एक अस्थायी राहत नहीं है, बल्कि मोक्ष की प्राप्ति है - परम आध्यात्मिक स्वतंत्रता, परमात्मा के साथ विलय, और सांसारिक अस्तित्व में निहित पीड़ा से मुक्ति। कालभैरव, विमोचकाय के रूप में, इस परम मुक्ति के अंतिम प्रदाता हैं।

भय से मुक्ति दार्शनिक मुक्ति से परे, विमोचकाय सभी प्रकार के भय से मुक्ति को भी दर्शाता है, विशेष रूप से मृत्यु के भय से, क्योंकि वे स्वयं काल (समय/मृत्यु) हैं और उससे परे हैं। उनके प्रति समर्पण करके, भक्त चिंताओं और सांसारिक आसक्तियों से मुक्त हो जाते हैं।

सच्चे ज्ञान का प्रदाता उनका भयंकर रूप, जबकि अहंकार के लिए भयावह है, सच्चे स्व के लिए मुक्तिदायक है। वे अज्ञान को दूर करके और वास्तविकता के सच्चे स्वरूप को प्रकट करके मुक्त करते हैं, साधक को आत्म-साक्षात्कार और ब्रह्म के साथ मिलन की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

620. विश्व रूपाय

जिनका रूप ब्रह्मांडीय है, उस सर्वव्यापी स्वरूप वाले को नमन।

विस्तार : विश्वरूपा नाम एक गहरा दार्शनिक विचार है, जो वैदिक और पौराणिक परंपराओं में गहराई से निहित है, विशेष रूप से वैष्णव धर्म (भगवद गीता का कृष्ण का विश्वरूप दर्शन) और शैव धर्म में महत्वपूर्ण है। यह विश्व (सार्वभौमिक, सर्वव्यापी, संपूर्ण ब्रह्मांड) और रूप (आकार, आकृति, अभिव्यक्ति) का एक यौगिक है।

ब्रह्मांडीय रूप यह नाम कालभैरव को उस रूप में दर्शाता है जिसका एक सार्वभौमिक, सर्वव्यापी और अनंत रूप है। इसका तात्पर्य है कि उनका रूप किसी एक भौतिक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि संपूर्ण ब्रह्मांड को अपने भीतर समाहित करता है। समस्त सृष्टि - सभी प्राणी, सभी लोक, सभी तत्व, सभी घटनाएँ, सभी समय और सभी स्थान - उनके असीम रूप के ही पहलू हैं। वह स्थूल ब्रह्मांड हैं, और उसके भीतर सब कुछ उनके सार से व्याप्त है।

अन्तर्व्यापकता और परात्परता विश्वरूप दिव्य की अन्तर्व्यापकता और परात्परता दोनों का एक शक्तिशाली चित्रण है। वह अन्तर्व्यापक हैं क्योंकि उनका रूप हर उस चीज़ से बना है जो मौजूद है; कुछ भी उनसे बाहर नहीं है। वह परात्पर हैं क्योंकि यद्यपि ब्रह्मांड उनसे उत्पन्न होता है और उनके

भीतर रहता है, वह सभी अनुभवजन्य रूपों और वर्गीकरणों से परे हैं। वह वह आधार हैं जिस पर समस्त अस्तित्व टिका है, फिर भी वह उससे परे भी हैं।

सर्वव्यापकता और सर्वशक्तिमत्ता का प्रतीक यह नाम कालभैरव की सर्वव्यापकता (हर जगह एक साथ होना) और सर्वशक्तिमत्ता (सर्वशक्तिमान) पर जोर देता है। उन्हें विश्वरूपाय के रूप में स्वीकार करके, भक्त यह पहचानते हैं कि वह समस्त सृष्टि के उद्गम, पालक और संहारक हैं, और वास्तविकता का कोई भी पहलू उनके दिव्य सार से अलग नहीं है। यह अद्वैत सत्य की ओर इशारा करता है कि परम वास्तविकता एक है, और सभी विविधता केवल उस विलक्षण वास्तविकता की अभिव्यक्ति है। एक भक्त के लिए, इस रूप का चिंतन विस्मय, श्रद्धा और सभी चीजों के अंतर्संबंध की गहरी समझ को जगा सकता है।

621. विरूपाक्षाय

असामान्य या विषम संख्या में नेत्रों (तीन नेत्रों) वाले को नमन।

विस्तार : विरूपाक्षाय नाम संस्कृत मूल 'विरूप' और 'अक्ष' से बना है।

विरूप: यह शब्द "असामान्य," "भिन्न," "विविध," या "असाधारण" को दर्शाता है। यह अक्सर ऐसी किसी चीज़ से जुड़ा होता है जो सामान्य या साधारण रूप की नहीं होती।

अक्ष: यह "आँख" को संदर्भित करता है।

शिव का तीसरा नेत्र विरूपाक्ष की सबसे प्रमुख व्याख्या "असामान्य या असाधारण नेत्र वाला" है, विशेष रूप से शिव के तीसरे नेत्र (त्रिनेत्र) का जिक्र करते हुए। यह नेत्र, उनके माथे पर स्थित, एक भौतिक अंग नहीं बल्कि एक सूक्ष्म, आध्यात्मिक नेत्र है जो गहन ज्ञान, सर्वज्ञता और विनाशकारी शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

• ज्ञान और सर्वज्ञता: तीसरा नेत्र शिव की द्वंद्वों को पार करने और भौतिक इंद्रियों की सीमाओं से परे परम सत्य को समझने की क्षमता का प्रतीक है। यह उन्हें सार्वभौमिक धारणा प्रदान करता है, जिससे वे अतीत, वर्तमान और भविष्य को एक साथ देख पाते हैं।

• विनाशकारी शक्ति: जब तीसरा नेत्र खुलता है, तो यह एक भयंकर अग्नि उत्सर्जित करता है जो बुराई, अज्ञानता और यहाँ तक कि पूरे ब्रह्मांडों को भी नष्ट कर सकती है। यह उस घटना में प्रसिद्ध रूप से चित्रित है जहाँ कामदेव (इच्छा के देवता) को शिव के तीसरे नेत्र द्वारा भस्म कर दिया गया था। यह भ्रम (माया) को जलाने और ब्रह्मांडीय विघटन लाने की शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

• द्वंद्व का अतिक्रमण: "विषम" या "असामान्य" संख्या में नेत्र होना भौतिक दुनिया की सामान्य धारणा से परे उनके अतिक्रमण पर जोर देता है। दो भौतिक नेत्र विषय और वस्तु की द्वैतवादी दुनिया को देखते हैं, जबकि तीसरा नेत्र अद्वैतवादी, परम वास्तविकता को देखता है।

साधारण रूप से परे यह नाम उन असामान्य या भयावह रूपों की ओर भी सूक्ष्मता से संकेत करता है जिन्हें भैरव कभी-कभी धारण करते हैं। यह बताता है कि उनकी उपस्थिति पारंपरिक सुंदरता या मानवीय समझ से बंधी नहीं है, बल्कि सर्वोच्च, अनियंत्रित शक्ति और ब्रह्मांडीय व्यवस्था की अभिव्यक्ति है जो विस्मयकारी और भयावह दोनों हो सकती है। यह विभिन्न रूपों में प्रकट होने की उनकी क्षमता को दर्शाता है, प्रत्येक का एक विशिष्ट उद्देश्य होता है।

622. वाणीशाय

वाणी और वाक्पटुता के सर्वोच्च स्वामी को नमन।

विस्तार : वाणीशाय नाम वाणी और ईश शब्दों से बना एक गहरा विशेषण है, जो दिव्य के एक महत्वपूर्ण पहलू को सभी संचार, ज्ञान और रचनात्मक अभिव्यक्ति के स्रोत और स्वामी के रूप में उजागर करता है।

वाणी और वाक्पटुता के स्वामी (वाणी) वाणी का शाब्दिक अर्थ "भाषण," "भाषा," "आवाज" है, और यह देवी सरस्वती को भी दर्शाता है, जो ज्ञान, कला, संगीत और बुद्धि की देवी हैं। शिव को वाणीश के रूप में पूजकर, हम उन्हें सभी प्रकार की अभिव्यक्ति के परम मूल और नियंत्रक के रूप में स्वीकार करते हैं। यह केवल बोले गए शब्दों से परे आंतरिक विचारों, अंतर्दृष्टि, कविता, शास्त्रों, वैज्ञानिक समझ और वास्तव में, ज्ञान और रचनात्मक प्रयास के सभी क्षेत्रों तक फैला हुआ है। वह स्पष्ट अभिव्यक्ति, बौद्धिक कौशल और ध्वनि और अर्थ का निर्माण करने वाले सूक्ष्म कंपन के स्वामी हैं।

सर्वोच्च नियंत्रक (ईश) ईश का अर्थ "भगवान," "स्वामी," "शासक," या "नियंत्रक" है। जब वाणी के साथ जोड़ा जाता है, तो यह शिव को भाषण और ज्ञान के क्षेत्र पर सर्वोच्च अधिकार के रूप में स्थापित करता है। वह केवल एक संरक्षक नहीं हैं, बल्कि वह सार और स्रोत हैं जिससे सभी भाषाई क्षमता और बौद्धिक क्षमता उत्पन्न होती है। यह बताता है कि परम ज्ञान और सत्य को व्यक्त करने की शक्ति उनसे उत्पन्न होती है।

ज्ञान और सृजन से संबंध यह नाम अप्रत्यक्ष रूप से भगवान शिव को देवी सरस्वती से जोड़ता है, जिन्हें अक्सर उनकी पत्नी या उनकी रचनात्मक ऊर्जा (शक्ति) का एक प्रकटीकरण माना जाता है। इस संदर्भ में, वह सभी प्रेरणा के पीछे मार्गदर्शक शक्ति हैं और विवेकपूर्ण भाषण, रचनात्मक अंतर्दृष्टि और गहन छात्रवृत्ति के अंतिम दाता हैं। साधकों के लिए, वाणीश पर ध्यान करने से विचार की स्पष्टता, अभिव्यक्ति में वाक्पटुता और सीखने और समझने में आने वाली बाधाओं को दूर किया जा सकता है। यह दर्शाता है कि सच्चा ज्ञान और संचार की शक्ति दिव्य उपहार हैं, जो अंततः सर्वोच्च चेतना से उत्पन्न होते हैं।

623. हव्यवाहनाय

देवताओं को अर्पित की जाने वाली आहुतियों को धारण करने वाले पवित्र अग्नि (अग्नि देव) को नमन।

विस्तार : हव्यवाहन (हव्याहवन) नाम एक गहरा और प्राचीन वैदिक विशेषण है जो सीधे अग्नि, पवित्र अग्नि देवता को संदर्भित करता है, और विस्तार से, शिव की मूलभूत भूमिकाओं में से एक के रूप में सभी बलि चढ़ावों के अंतिम प्राप्तकर्ता और उन्हें मूल स्रोत तक पहुँचाने वाले के रूप में।

हव्यवाहनः हवियों का वाहक "हव्य" का अर्थ है "आहुतियाँ," "पवित्र चढ़ावे," या "बलि का भोजन" जो वैदिक अनुष्ठानों के दौरान अग्नि में डाला जाता है। "वाहन" का अर्थ है "वाहक," "धारक," या "जो ले जाता है।" इसलिए, हव्यवाहन का शाब्दिक अर्थ है "हवियों का वाहक।"

अग्नि, दिव्य दूत वैदिक हिंदू धर्म में, अग्नि दिव्य दूत (दूत) हैं जो अनुष्ठानिक अग्नि में मनुष्यों द्वारा की गई आहुतियों को प्राप्त करते हैं और उन्हें स्वर्गीय लोकों में संबंधित देवताओं (देवों) तक ले जाते हैं। वे मानवीय और दिव्य क्षेत्रों के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं। यह संबंध महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह स्थलीय और स्वर्गीय लोकों के बीच संचार और पोषण के लिए एक सीधा मार्ग स्थापित करता है। अग्नि का मुख आहुतियों का उपभोग करता है, और उनके माध्यम से, देवता पोषित और प्रसन्न होते हैं, और बदले में, वे यज्ञकर्ता को आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

शिव परम अग्नि के रूप में जब यह विशेषण कालभैरव पर लागू होता है, तो यह इसके अर्थ को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाता है। यह दर्शाता है कि कालभैरव, शिव के एक उग्र स्वरूप के रूप में, केवल अग्नि देवता अग्नि नहीं हैं, बल्कि सभी चढ़ावों के अंतर्निहित सिद्धांत और अंतिम प्राप्तकर्ता हैं। • वे ब्रह्मांडीय अग्नि हैं—परिवर्तन और शुद्धि का सार—जो सभी कर्मों, इच्छाओं और यहाँ तक कि भौतिक अस्तित्व का भी उपभोग करती है। • परम देवता के रूप में, वे सभी प्रार्थनाओं, अनुष्ठानों और बलिदानों का गंतव्य हैं। किसी भी पवित्र अग्नि में, किसी भी परंपरा द्वारा जो कुछ भी अर्पित किया जाता है, वह अंततः उन तक पहुँचता है। • यह नाम पवित्र अग्नि सिद्धांत के अवतार के रूप में

उनकी भूमिका को रेखांकित करता है जो शुद्ध करता है, परिवर्तित करता है, और व्यक्तिगत आत्मा (जीव) और सर्वोच्च ब्रह्म के बीच एक संबंध स्थापित करता है। वे ज्ञान की अग्नि (ज्ञानाग्नि) हैं जो अज्ञान और अहंकार को जलाकर मुक्ति की ओर ले जाती हैं।

इसलिए, हव्यवाहन को नमन करना कालभैरव को सभी चढ़ावों के सर्वोच्च प्राप्तकर्ता, पवित्र अग्नि के अवतार, और दिव्य दूत के रूप में स्वीकार करना है जो चेतना के आध्यात्मिक उत्थान और शुद्धि की सुविधा प्रदान करते हैं।

624. वृषांगाय

जिनके अंग वृषभ के समान शक्तिशाली और बलवान हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : वृषाङ्गाय नाम वृष (जिसका अर्थ बैल है) और अंग (जिसका अर्थ अंग या शरीर के हिस्से हैं) का एक यौगिक है।

बैल (वृष) का प्रतीकवाद हिंदू पौराणिक कथाओं और परंपरा में, बैल (वृष) का महत्वपूर्ण प्रतीकात्मक मूल्य है: • शक्ति और पौरुष: एक बैल अपनी अपार शारीरिक शक्ति, सामर्थ्य और पौरुष के लिए प्रसिद्ध है। यह अदम्य शक्ति और भारी बोझ उठाने की क्षमता का प्रतीक है। • धर्म: बैल, विशेष रूप से नंदी, शिव का वाहन है और अक्सर धर्म (धार्मिकता, ब्रह्मांडीय व्यवस्था) से जुड़ा होता है। नंदी न्याय, सत्य और दृढ़ता का प्रतीक है। • लचीलापन: बैल सहनशक्ति और दृढ़ रहने की क्षमता का प्रतिनिधित्व करता है।

ब्रह्मांडीय शक्ति के अंग (अंग) जब कालभैरव को बैल जैसे अंगों वाला बताया जाता है, तो यह अर्थ की कई परतों को दर्शाता है: • अद्वितीय शक्ति: उनका भौतिक स्वरूप अविश्वसनीय, अजेय शक्ति रखता है। यह केवल शारीरिक पराक्रम नहीं है, बल्कि एक ब्रह्मांडीय, दिव्य शक्ति है जो बुराई को नष्ट करने और सार्वभौमिक कानून को बनाए रखने के लिए प्रकट हो सकती है। • ओज और अदम्यता: उनका अस्तित्व दिव्य ऊर्जा और ओज से भरा है, जो उन्हें एक अजेय शक्ति बनाता है। वह ब्रह्मांड में निहित कच्ची, आदिम शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। • धर्म का अवतार: यह नाम कालभैरव के भौतिक पहलू को धर्म के सार से जोड़ता है। उनके कार्य, हालांकि कभी-कभी उग्र होते हैं, हमेशा ब्रह्मांडीय व्यवस्था और धार्मिकता को बनाए रखने के अनुरूप होते हैं। • उनके कार्यों के लिए रूपक: जिस तरह एक बैल अपने शुद्ध बल से बाधाओं को दूर कर सकता है, उसी तरह कालभैरव, अपनी अपार शक्ति से, अपने भक्तों के लिए बाधाओं को दूर करते हैं और अज्ञानता और नकारात्मकता का उन्मूलन करते हैं।

संक्षेप में इस प्रकार, वृषाङ्गाय कालभैरव को अपार दिव्य शक्ति, लचीलेपन और ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने की शक्ति के अवतार के रूप में दर्शाता है। उनका स्वरूप एक बैल की दुर्जेय शक्ति के समान, एक भयावह फिर भी सुरक्षात्मक शक्ति का विकिरण करता है।

625. विशालाक्षाय

विशाल, सुंदर और दूरदृष्टि वाली आँखों वाले (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : विशालाक्षाय नाम विशाल और अक्ष से बना है।

विशाल: यह शब्द "बड़ा," "चौड़ा," "विस्तृत," "विशालकाय," "विशाल" और विस्तार से, "महान," "भव्य," या "शानदार" को संदर्भित करता है।

अक्ष: यह "आँख" या "दृष्टि" को संदर्भित करता है।

इस प्रकार, विशालाक्ष का सामूहिक अर्थ है "बड़ी आँखों वाला" या "जिसकी दृष्टि विशाल और व्यापक है।"

सर्वज्ञ दृष्टि कालभैरव की बड़ी आँखें सर्वव्यापकता और सर्वज्ञता का प्रतीक हैं। उनकी दृष्टि स्थान या समय से सीमित नहीं है; वे सब कुछ देखते हैं, सब कुछ जानते हैं, और पूरे ब्रह्मांडीय खेल को समझते हैं, भूत, वर्तमान और भविष्य। यह व्यापक दृष्टि अस्तित्व के सभी आयामों को समाहित करती है, सूक्ष्म आध्यात्मिक लोकों से लेकर घनी भौतिक अभिव्यक्तियों तक।

सर्व-समावेशी जागरूकता "बड़ी आँखें" उनकी असीमित जागरूकता का प्रतीक हैं, जो द्वैतवादी धारणा तक सीमित नहीं है, बल्कि सभी सृष्टि के अंतर्निहित एकता को सीधे देखती है। यह उनकी परम चेतना का प्रतिनिधित्व करता है जो बिना किसी बाधा या सीमा के अस्तित्व की समग्रता को समझती है।

करुणापूर्ण और भेदक दृष्टि जबकि भैरव दुर्जेय हैं, उनकी बड़ी आँखें गहरी करुणा (करुणा) भी व्यक्त करती हैं। यह व्यापक दृष्टि उन्हें सभी प्राणियों के दुख को समझने और दिव्य कृपा के साथ प्रतिक्रिया करने की अनुमति देती है। साथ ही, उनकी भेदक दृष्टि अज्ञान और अहंकार को जला सकती है, जिससे भक्तों को आध्यात्मिक मुक्ति मिलती है।

ज्ञान का प्रतीक हिंदू प्रतिमा विज्ञान में, बड़ी आँखें अक्सर गहन ज्ञान (प्रज्ञा) और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि का प्रतीक होती हैं। कालभैरव का विशालाक्ष हमें याद दिलाता है कि सच्चा ज्ञान सतही दिखावे से परे, व्यापक सत्य को समझना है। यह चीजों को वैसे ही देखने की क्षमता को दर्शाता है जैसे वे वास्तव में हैं, बिना किसी बाधा के आध्यात्मिक स्पष्टता के साथ।

626. विश्वदर्शिने

पूरे ब्रह्मांड के परम साक्षी और दर्शक को नमन।

विस्तार : विश्वादर्शिने नाम विश्व और दर्शिन् का एक यौगिक है, जो ब्रह्मांड के एक व्यापक द्रष्टा या साक्षी को दर्शाता है।

• विश्व (Vishva): इस शब्द का अर्थ है "संपूर्ण ब्रह्मांड," "पूरी दुनिया," "सभी," या "सब कुछ।" इसमें अस्तित्व के व्यक्त और अव्यक्त दोनों पहलू, संपूर्ण स्थूल ब्रह्मांड शामिल है।

• दर्शिन् (Dārshin): दृश् (देखना) धातु से व्युत्पन्न, दर्शिन् का अर्थ है "जो देखता है," "जो अनुभव करता है," या "जिसके पास दृष्टि है।" इसका अर्थ केवल शारीरिक दृष्टि नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि, प्रत्यक्ष बोध और गहन ज्ञान भी है।

परम साक्षी (The Ultimate Witness) विश्वादर्शिन् के रूप में, कालभैरव परम, सर्वव्यापी साक्षी हैं। वे सृष्टि के हर घटना, हर विचार, हर क्रिया और हर सूक्ष्म कंपन को, सभी समय और स्थान में देखते हैं। यह साक्षी होना निष्क्रिय नहीं है; यह एक सक्रिय, सर्वज्ञ बोध है जो अस्तित्व की सभी परतों में व्याप्त है। वे शाश्वत द्रष्टा हैं, जो भौतिक संसार से अछूते हैं फिर भी उसके हर विवरण से भली-भांति परिचित हैं।

ब्रह्मांडीय सत्य के द्रष्टा (The Seer of Cosmic Truth) यह नाम ब्रह्मांड के अंतर्निहित सत्य और व्यवस्था (धर्म), कार्य-कारण के जटिल जाल (कर्म), और भ्रम (माया) से परे परम वास्तविकता को "देखने" वाले के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। उनकी दृष्टि सभी बाधाओं को भेदती है और चीजों की मूलभूत प्रकृति को प्रकट करती है। वे ब्रह्मांडीय लीला के "द्रष्टा" हैं, जो उसके आदि, मध्य और अंत को समझते हैं।

समय और स्थान से परे (Beyond Time and Space) शिव के एक रूप के रूप में, जो स्वयं काल (समय) हैं, उनका साक्षी होना लौकिक और स्थानिक सीमाओं से परे है। वे अतीत, वर्तमान और भविष्य को एक साथ देखते हैं, ब्रह्मांड के unfolding को एक निरंतर, एकीकृत पूर्णता के रूप में

समझते हैं। यह सर्वज्ञ दृष्टि ब्रह्मांडीय प्रक्रिया पर उनके पूर्ण प्रभुत्व और नियंत्रण को रेखांकित करती है।

दार्शनिक महत्व (Philosophical Significance) दार्शनिक रूप से, विश्वादर्शिन् अद्वैत वेदांत में साक्षी (साक्षी-चेतना) की अवधारणा का प्रतीक हैं। वे शुद्ध चेतना हैं जो पूरे ब्रह्मांड को प्रभावित हुए या उससे पहचाने बिना देखती है। यह परम अनासक्ति और पूर्ण जागरूकता की स्थिति को दर्शाता है, जिससे वे सभी घटनाओं के स्रोत और परम ज्ञाता दोनों बन जाते हैं।

627. विलोचनाय

जिनकी आँखें विशेष रूप से सुंदर या विशिष्ट हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : विलोचनाय नाम संस्कृत शब्द "विलोचन" से लिया गया है, जिसका अर्थ "आँख" है, लेकिन जब इसे दिव्य पर लागू किया जाता है, तो यह केवल दृष्टि से परे एक गहरा अर्थ रखता है। "वि" एक उपसर्ग है जो किसी चीज़ को तीव्र या विशेष बनाता है, जबकि "लोचन" आँख को संदर्भित करता है।

विशेष और असाधारण आँखें जब कालभैरव जैसी दिव्य सत्ता के लिए उपयोग किया जाता है, तो "विलोचन" का अर्थ केवल आँखें होना नहीं है, बल्कि ऐसी आँखें होना है जो अपने कार्य और धारणा में विशेष रूप से सुंदर, अद्वितीय या असाधारण हों। ये भौतिक सीमाओं से बंधी सामान्य आँखें नहीं हैं।

सर्व-दृष्टि और सर्व-ज्ञान दृष्टि कालभैरव की आँखें उनकी सर्वज्ञता का प्रतिनिधित्व करती हैं। वह सब कुछ देखते हैं - भूत, वर्तमान और भविष्य - और भौतिक भ्रम के पर्दे से परे देखते हैं। उनकी दृष्टि गहरे रहस्यों और अंतरतम विचारों में प्रवेश करती है। यह सर्व-समावेशी दृष्टि उनकी सर्वोच्च चेतना का एक पहलू है।

ज्ञान और विद्या का प्रतीक कालभैरव की आँखें गहन ज्ञान (ज्ञान) और दिव्य अंतर्दृष्टि का भी प्रतीक हैं। वे ऐसे उपकरण हैं जिनके माध्यम से वे ज्ञान प्रदान करते हैं, सत्य और असत्य के बीच भेद करते हैं, और भक्तों को आध्यात्मिक प्राप्ति की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

ब्रह्मांडीय परिप्रेक्ष्य उनकी आँखों की "विशेष" प्रकृति उनके ब्रह्मांडीय पैमाने को भी इंगित कर सकती है। उन्हें पूरे ब्रह्मांड को निहारते हुए देखा जा सकता है, जिसमें आकाशगंगाएँ, तारे और ग्रह शामिल हैं, जिससे उनकी असीमित दृष्टि और ब्रह्मांड पर नियंत्रण का प्रतिनिधित्व होता है। उनकी आँखें संपूर्ण सृष्टि और विनाश को प्रकट करती हैं।

सौंदर्यशास्त्र और दिव्य सौंदर्य भयंकर होने के बावजूद, कालभैरव एक भयावह सुंदरता का प्रतीक हैं। उनकी आँखें, अपनी तीव्रता में भी, एक निश्चित दिव्य सौंदर्य रखती हैं जो उन लोगों को मोहित और मंत्रमुग्ध कर देता है जो उनके वास्तविक रूप को समझने में सक्षम हैं। उनकी दिव्य शक्ति के कारण उन्हें मनमोहक और सम्मोहक देखा जा सकता है।

628. विशाखाय

विशाखा नक्षत्र के देवता रूप कार्तिकेय को नमन।

विस्तार : विशाखाय नाम कालभैरव को खगोलीय क्षेत्र से जोड़ता है, विशेष रूप से विशाखा नक्षत्र (चंद्रमा का घर) से, और इसके अधिष्ठाता देवता, कार्तिकेय (जिन्हें स्कंद या मुरुगन भी कहा जाता है) से।

विशाखा नक्षत्र विशाखा वैदिक ज्योतिष में सोलहवाँ नक्षत्र है, जो तुला और वृश्चिक राशि के कुछ हिस्सों में फैला हुआ है। इसके प्रतीकों में एक विजय मेहराब या एक कुम्हार का चाक शामिल है, जो विजय, उद्देश्य और सृष्टि की चक्रीय प्रकृति को दर्शाता है। इसके प्राथमिक देवता इंद्राग्नि (इंद्र और

अग्नि का संयुक्त रूप) हैं, जो शक्ति, साहस और परिवर्तनकारी ऊर्जा का प्रतीक हैं। हालाँकि, कार्तिकेय भी इस नक्षत्र से एक द्वितीयक या प्रमुख देवता के रूप में गहराई से जुड़े हुए हैं, विशेष रूप से दक्षिण भारतीय परंपराओं में।

कार्तिकेय का संबंध कार्तिकेय, शिव के योद्धा पुत्र, अपार शक्ति, साहस, रणनीतिक सोच और राक्षसों (विशेषकर तारकासुर) के संहारक देवता हैं। वे दिव्य ऊर्जा, एकाग्रता और भ्रम तथा अज्ञान को दूर करने की क्षमता का प्रतीक हैं। विशाखा नक्षत्र से उनका संबंध गहन एकाग्रता, महत्वाकांक्षा और परिवर्तन तथा आध्यात्मिक विजय के लिए आवश्यक शक्तिशाली ऊर्जा के विषयों पर प्रकाश डालता है।

कालभैरव विशाख के रूप में जब कालभैरव को विशाखाय के रूप में पुकारा जाता है, तो यह कई आयामों को दर्शाता है:

1. ब्रह्मांडीय नियंत्रण: यह कालभैरव के समय (काल) और स्थान पर प्रभुत्व को रेखांकित करता है, जो खगोलीय पिंडों और उनके प्रभावों को प्रभावित करता है। एक नक्षत्र के देवता होने के कारण, उन्हें ज्योतिषीय शक्तियों को प्रभावित करने वाले और उनसे परे दोनों के रूप में दिखाया गया है। 2. योद्धा पहलू: यह संबंध कालभैरव के भयंकर, सुरक्षात्मक और योद्धा जैसे पहलू पर जोर देता है, जो कार्तिकेय के समान है। जिस प्रकार कार्तिकेय राक्षसी शक्तियों के विरुद्ध दिव्य सेनाओं का नेतृत्व करते हैं, उसी प्रकार कालभैरव, इस रूप में, परम रक्षक हैं जो आंतरिक और बाहरी बाधाओं को दूर करते हैं, भक्तों को अज्ञान और पीड़ा पर विजय की ओर मार्गदर्शन करते हैं। 3. परिवर्तनकारी ऊर्जा: विशाखा की ऊर्जा, अपने उद्देश्य और उपलब्धि पर ध्यान केंद्रित करने के साथ, कालभैरव की भूमिका के साथ संरेखित होती है जो आत्माओं को बाधाओं (लौकिक और आध्यात्मिक) को दूर करके उनके अंतिम आध्यात्मिक लक्ष्य की ओर ले जाती है। 4. सूक्ष्म संबंध: यह सनातन धर्म के विशाल ताने-बाने के भीतर विभिन्न देवताओं के बीच गहरे और अक्सर सूक्ष्म ऊर्जावान संबंधों की ओर इशारा करता है, जहाँ दिव्य के विभिन्न रूपों को एक सर्वोच्च चेतना की अभिव्यक्तियों के रूप में समझा जाता है। इस संदर्भ में, यह कालभैरव को कार्तिकेय और विशाखा चंद्र नक्षत्र से जुड़ी विशिष्ट शक्तिशाली ऊर्जाओं के अवतार के रूप में पहचानता है।

629. विश्वस्रिजे

संपूर्ण ब्रह्मांड के निर्माता और रचयिता को नमन।

विस्तार : विश्वसृजे नाम दिव्य के लिए एक गहन विशेषण है, जो संस्कृत शब्दों 'विश्व' और 'सृज' से लिया गया है।

ब्रह्मांड ('विश्व') 'विश्व' का अर्थ है "संपूर्ण संसार," "ब्रह्मांड," "जो कुछ भी मौजूद है," या "सृष्टि की समग्रता।" इसमें सब कुछ शामिल है - दृश्य और अदृश्य, सजीव और निर्जीव, व्यक्त और अव्यक्त क्षमता, भूत, वर्तमान और भविष्य। यह अपने सभी विविध रूपों, घटनाओं और नियमों के साथ ब्रह्मांड को उसकी संपूर्णता में दर्शाता है।

निर्माता ('सृज') मूल 'सृज' का अर्थ है "सृजन करना," "उत्सर्जित करना," "मुक्त करना," "उड़ेलना," या "गढ़ना।" यह किसी चीज को अस्तित्व में लाने के कार्य को संदर्भित करता है, न कि केवल मौजूदा घटकों को व्यवस्थित करने को, बल्कि वास्तविकता के मूल पदार्थ और रूप को उत्पन्न करने को।

दिव्य वास्तुकार "विश्वसृजे" के रूप में, भैरव को संपूर्ण ब्रह्मांड के परम स्रोत और वास्तुकार के रूप में पहचाना जाता है। यह नाम उन्हें आदिम निर्माता के रूप में स्थापित करता है, वह जिससे सभी अस्तित्व उत्पन्न होते हैं। वह केवल एक नियामक या पालक नहीं हैं, बल्कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था और

अभिव्यक्ति के मूल हैं। यह पहलू उन्हें ब्रह्मा से जुड़ी रचनात्मक ऊर्जाओं से निकटता से जोड़ता है, लेकिन शिव/भैरव के संदर्भ में, यह एक अधिक पूर्ण, मौलिक और यहां तक कि गूढ़ रचना को दर्शाता है जो सीधे सर्वोच्च चेतना से उत्पन्न होती है।

सभी रूपों से परे, फिर भी सभी रूपों का स्रोत यह नाम उनकी असीम शक्ति और उस पारलौकिक सत्ता के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है, जो अपनी शिविक इच्छा और दिव्य लीला के माध्यम से ब्रह्मांड के असंख्य रूपों और संरचनाओं को प्रक्षेपित करते हैं। वह ब्रह्मांड के उपादान कारण (material cause) और निमित्त कारण (efficient cause) दोनों हैं, जिसका अर्थ है कि वह वह पदार्थ भी हैं जिससे ब्रह्मांड बना है और वह शक्ति भी हैं जो इसे बनाती है।

दार्शनिक महत्व दार्शनिक रूप से, विश्वसृजे इस अद्वैतवादी सत्य की ओर इशारा करता है कि निर्माता सृष्टि से अलग नहीं है। ब्रह्मांड स्वयं दिव्य का एक उत्सर्जन या अभिव्यक्ति है, और इस प्रकार, ब्रह्मांड के हर कण के भीतर, निर्माता (भैरव) का सार निवास करता है। यह सभी अस्तित्व के भीतर दिव्य की अंतर्निहितता की एक गहन पहचान है।

630. विश्वस्मै

जो ब्रह्मांड, संपूर्ण विश्व स्वयं हैं, उनको नमन।

विस्तार : विश्वाय (विश्व) नाम अस्तित्व की समग्रता, ब्रह्मांड, या संपूर्ण ब्रह्मांड को संदर्भित करता है। यह भगवान कालभैरव को केवल ब्रह्मांड के निवासी या निर्माता के रूप में नहीं, बल्कि स्वयं ब्रह्मांड के रूप में दर्शाता है।

सर्व-समावेशी वास्तविकता विश्व का अर्थ है "सभी", "संपूर्ण", "ब्रह्मांड", या "संसार"। जब इसे दिव्य पर लागू किया जाता है, तो यह दर्शाता है कि देवता सभी मौजूदा चीजों के साथ सह-विस्तृत हैं। विश्व के बाहर कुछ भी नहीं है। यह अवधारणा सर्वेश्वरवादी या सर्वान्तर्यामी विचारों के लिए केंद्रीय है जहाँ ईश्वर या तो ब्रह्मांड के समान है या उसे समाहित करता है।

ब्रह्मांड उनका शरीर है कई परंपराओं में, ब्रह्मांड को दिव्य का ब्रह्मांडीय शरीर माना जाता है। इस प्रकार, कालभैरव, विश्व के रूप में, सब कुछ समाहित करते हैं - सभी रूप, सभी ऊर्जाएं, सभी स्थान और सभी समय। प्रत्येक परमाणु, प्रत्येक तारा, प्रत्येक प्राणी, प्रत्येक घटना उनका एक हिस्सा है, या उनकी अभिव्यक्ति है।

बृहत् ब्रह्मांड और सूक्ष्म ब्रह्मांड विश्व की अवधारणा का तात्पर्य है कि संपूर्ण ब्रह्मांडीय व्यवस्था, अपनी विशालता और जटिलता के साथ, सीधे दिव्य सार से जुड़ी हुई है। जिस प्रकार सूक्ष्म ब्रह्मांड (व्यक्तिगत स्व) बृहत् ब्रह्मांड (ब्रह्मांड) को दर्शाता है, उसी प्रकार भैरव विश्व के रूप में परम बृहत् ब्रह्मांड हैं, जो अपने भीतर सभी संभाव्यता और वास्तविकता को समाहित करते हैं।

द्वैत से परे ब्रह्मांड के रूप में, वे सभी द्वैत से परे हैं। वे व्यक्त और अव्यक्त, सजीव और निर्जीव, अच्छे और बुरे, रूप और निराकार दोनों हैं। दिव्य की यह अद्वैत समझ उच्च वेदांतिक और तांत्रिक दर्शन की एक पहचान है। विश्व को नमन करना सर्वोच्च सत्ता के अनंत और सर्व-समावेशी स्वरूप को स्वीकार करना है।

631. विजितात्मने

जिन्होंने अपने मन और स्वयं को पूर्ण रूप से जीत लिया है, उन्हें नमन।

विस्तार : "विजितात्मा" नाम संस्कृत के "विजित" और "आत्मन्" से बना एक यौगिक शब्द है, जो आत्म-नियंत्रण की गहरी अवस्था को दर्शाता है।

विजित: इस शब्द का अर्थ है "जीत लिया गया," "वश में किया गया," "नियंत्रित किया गया," या "विजयी।" यह किसी चीज़ पर पूर्ण और निरपेक्ष विजय का तात्पर्य है।

आत्मन्: इस संदर्भ में, आत्मन् का अर्थ है "स्वयं," "मन," "व्यक्तिगत आत्मा," या यहां तक कि किसी का अंतर्निहित स्वभाव। यह शरीर या आंतरिक इंद्रियों के समूह को भी संदर्भित कर सकता है।

स्वयं पर विजय प्राप्त करने वाला विजितात्मा का प्राथमिक अर्थ है "वह जिसने अपने स्वयं पर विजय प्राप्त कर ली है।" यह किसी बाहरी सत्ता पर विजय नहीं है, बल्कि निचले स्व—अहंकार (अहंकार), इच्छाओं (काम), आसक्तियों (मोह), घृणा (द्वेष), और मन को विचलित करने वाले सभी मानसिक संशोधनों (वृत्तियों) पर एक आंतरिक विजय है। यह पूर्ण आत्म-नियंत्रण और अनुशासन को दर्शाता है।

मन और इंद्रियों पर महारत यह अवस्था दर्शाती है कि भगवान कालभैरव, विजितात्मा के अपने स्वरूप में, अपने मन, इंद्रियों (इंद्रियों) और शारीरिक कार्यों पर पूर्ण नियंत्रण रखते हैं। उनके कार्य आवेग या आसक्ति से प्रेरित नहीं होते हैं, बल्कि दिव्य इच्छा और पूर्ण जागरूकता से प्रेरित होते हैं। वे सुख और दुख, सम्मान और अपमान के द्वंद्वों के प्रभाव से परे हैं।

आदर्श योगी विजितात्मा एक योगी या आध्यात्मिक साधक की अंतिम अवस्था का प्रतिनिधित्व करता है जिसने अपने आंतरिक परिदृश्य पर पूर्ण महारत हासिल कर ली है। यह तपस्या और आत्म-साक्षात्कार का शिखर है, जहाँ व्यक्तिगत आत्मा सार्वभौमिक आत्मा के साथ संरेखित होती है, सभी सीमाओं और अपूर्णताओं से मुक्त होती है।

दार्शनिक महत्व दार्शनिक रूप से, विजितात्मा दिव्य के पारलौकिक स्वरूप की ओर इशारा करता है। स्वयं पर विजय प्राप्त करके, कालभैरव यह प्रदर्शित करते हैं कि सच्ची शक्ति बाहरी प्रभुत्व में नहीं, बल्कि आंतरिक मुक्ति में निहित है। यह अवस्था एक ऐसे देवता के लिए आवश्यक है जो समय और विनाश का अवतार है, क्योंकि यह सुनिश्चित करता है कि उनके कार्य हमेशा पूरी तरह से संतुलित, न्यायपूर्ण और ब्रह्मांडीय कानून के अनुरूप हों, किसी भी व्यक्तिगत अपूर्णता से अछूते हों।

632. अव्ययाय

जो अविनाशी, अपरिवर्तनशील और शाश्वत रूप से स्थिर है, उन्हें नमन।

विस्तार : अव्यय (Avyāya) नाम संस्कृत मूल 'व्यय' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "क्षय," "खर्च," "हानि," "परिवर्तन," या "व्यय," और इसमें 'अ' उपसर्ग लगा है, जो निषेध को दर्शाता है। इस प्रकार, अव्यय का शाब्दिक अर्थ है "जो क्षय नहीं होता," "जो खर्च नहीं होता," "अपरिवर्तनशील," "अविनाशी," या "अविनाश्य।"

अविनाशिता (अ-व्यय) यह नाम कालभैरव के शाश्वत और कालातीत स्वरूप को उजागर करता है। काल (समय) से जुड़े शिव के प्रकटीकरण के रूप में, वे विरोधाभासी रूप से समय के विनाशकारी प्रभाव से परे हैं। भौतिक संसार में सब कुछ जन्म, वृद्धि, क्षय और मृत्यु के अधीन है, जो 'व्यय' का प्रतिनिधित्व करता है। कालभैरव, अव्यय के रूप में, वह परम सिद्धांत हैं जो इस चक्र से परे हैं। उनका जन्म नहीं होता, वे बूढ़े नहीं होते, और वे नष्ट नहीं होते। वे अस्तित्व की अटूट निरंतरता का प्रतिनिधित्व करते हैं, वह आधार जिस पर सभी क्षणभंगुर घटनाएँ उत्पन्न होती हैं और विलीन हो जाती हैं।

अपरिवर्तनशील और स्थिर अव्यय एक अपरिवर्तनशील, दृढ़ और स्थिर वास्तविकता का भी अर्थ है। एक ऐसे ब्रह्मांड में जो निरंतर परिवर्तन और रूपांतरण की विशेषता है, कालभैरव, अव्यय के रूप में, अटल सत्य का प्रतीक हैं। वे सभी चरों के बीच स्थिर कारक हैं, गतिशील ब्रह्मांड के नीचे स्थिर नींव हैं। यह गुण उनके अटूट न्याय, ब्रह्मांडीय कानून के उनके सुसंगत प्रवर्तन, और उनकी शाश्वत उपस्थिति को दर्शाता है, जो सृष्टि और विनाश के उतार-चढ़ाव से अप्रभावित है।

परम सत्ता दार्शनिक रूप से, अव्यय एक ऐसा शब्द है जिसका उपयोग अक्सर ब्रह्म, परम वास्तविकता का वर्णन करने के लिए किया जाता है, जो सभी गुणों और संशोधनों से परे है। कालभैरव को अव्यय के रूप में पहचान कर, यह स्तोत्र उन्हें इस सर्वोच्च, अप्रकट और शाश्वत चेतना के रूप में प्रस्तुत करता है जो सभी अस्तित्व का स्रोत और अंतिम अंत है। उनकी अविनाशी प्रकृति यह सुनिश्चित करती है कि सभी चीजों के विघटन के बाद भी, वे अगले सृजन चक्र की प्रतीक्षा करते हुए बने रहते हैं।

633. पुम्से

उस परम, आदिम पुरुष, ब्रह्मांडीय व्यक्ति को नमन।

विस्तार : पुंसे (Puṁse) नाम संस्कृत शब्द पुरुषा (Puruṣa) से लिया गया है, जो विशेष रूप से वैदिक, सांख्य और वेदांतिक परंपराओं में गहन दार्शनिक और आध्यात्मिक महत्व रखता है।

आदिम पुरुष सिद्धांत (Primordial Male Principle) पुरुष का शाब्दिक अर्थ "पुरुष," "नर," "व्यक्ति," या "आत्मा" है। ब्रह्मांडीय अर्थ में, यह परम, आदिम पुरुष सिद्धांत - ब्रह्मांडीय व्यक्ति को संदर्भित करता है। इसे लैंगिक, मानवरूपी तरीके से नहीं समझा जाना चाहिए, बल्कि एक मूलभूत मर्दाना ऊर्जा के रूप में समझा जाना चाहिए जो सृष्टि का सचेत आधार है। यह सक्रिय, सचेत और शुद्ध चेतना का पहलू है, जिसे अक्सर प्रकृति (आदिम स्त्री, भौतिक सिद्धांत) के विपरीत देखा जाता है।

ब्रह्मांडीय व्यक्ति (The Cosmic Person) ऋग्वेद (विशेष रूप से पुरुष सूक्त) में, पुरुष को एक ब्रह्मांडीय प्राणी के रूप में चित्रित किया गया है जिसके बलिदान से ब्रह्मांड का निर्माण होता है। यह "ब्रह्मांडीय पुरुष" विशाल है, जिसमें वह सब कुछ शामिल है जो रहा है और जो होगा। उसके शरीर से, ब्रह्मांड के विभिन्न भाग, सामाजिक व्यवस्थाएं और वेद उत्पन्न हुए माने जाते हैं। इसलिए, पुंसे संपूर्ण प्रकट सृष्टि के स्रोत और अवतार का प्रतीक है।

अंतर्निहित आत्मा (Indwelling Spirit) दार्शनिक रूप से, पुरुष शुद्ध चेतना या आत्मा (Ātman) का प्रतिनिधित्व करता है जो प्रत्येक जीवित प्राणी के भीतर निवास करती है। यह अपरिवर्तनीय, शाश्वत और निष्क्रिय साक्षी है जो लगातार बदलते भौतिक संसार (Prakṛti) का साक्षी है। पुंसे के रूप में, कालभैरव को इस परम, अप्रतिबंधित चेतना, शुद्ध आत्मा के रूप में पहचाना जाता है जो सभी अस्तित्व में व्याप्त है लेकिन इसके संशोधनों से अछूती रहती है।

परम सत्ता (Supreme Being) यह नाम भैरव की पहचान को परम सत्ता, परम वास्तविकता (ब्रह्म) के रूप में जोर देता है जो सभी घटनाओं के पीछे सचेत सिद्धांत है। वह मूल चेतना है जिससे सभी व्यक्तिगत चेतनाएं उत्पन्न होती हैं, महान ब्रह्मांडीय पुरुष जो एक साथ सृष्टि में अंतर्निहित और उससे परे है।

634. व्याघ्रचर्मधृतये

बाघ की खाल धारण करने वाले (जो सभी जंगली स्वभाव पर प्रभुत्व का प्रतीक है) को नमन।

विस्तार : व्याघ्रचर्मधृते (व्याघ्रचर्मधृतये) नाम भगवान शिव और विस्तार से, कालभैरव का एक शक्तिशाली प्रतिष्ठित प्रतिनिधित्व है, जो संस्कृत शब्दों से बना है:

• व्याघ्र: बाघ • चर्मन: खाल, चमड़ा • धृत: धारण करना, पहनना, पकड़े रहना (मूल धातु धृ - धारण करना, पहनना से)

बाघ की खाल का प्रतीकवाद बाघ की खाल (व्याघ्रचर्मन) शिव और उनके भैरव जैसे उग्र रूपों से जुड़ा सबसे शक्तिशाली और बार-बार आने वाला प्रतीक है। यह केवल एक आभूषण नहीं है बल्कि उनकी सर्वोच्च शक्ति और अतिक्रमण का एक गहरा कथन है।

प्रकृति और प्रवृत्तियों पर महारत बाघ एक भयंकर, शिकारी और अनियंत्रित जानवर है, जो आदिम प्रवृत्तियों, अनियंत्रित शक्ति और प्रकृति के जंगली, अनियंत्रित पहलुओं का प्रतीक है। इसकी खाल पहनकर, शिव (और भैरव) इन शक्तियों पर अपनी पूर्ण विजय का प्रतीक हैं। उन्होंने केवल बाघ को हराया नहीं है बल्कि उसके सार को धारण किया है, जो इस पर पूर्ण महारत का प्रतीक है: 1. जंगली प्रकृति: वे भौतिक प्रकृति (प्रकृति) और उसके जंगली, अनियंत्रित पहलुओं की पकड़ से परे हैं। 2. पशु प्रवृत्तियाँ: उन्होंने निम्न इच्छाओं, आक्रामकता और पशुवादी प्रवृत्तियों को पार कर लिया है जो सामान्य प्राणियों को बांधती हैं। 3. अहंकार और राक्षसी शक्तियाँ: पौराणिक आख्यानों में, बाघ को अक्सर अहंकार (अहंकार) या राक्षसी शक्तियों से जोड़ा जाता है, जिन्हें शिव वश में करते हैं और फिर एक ट्रॉफी के रूप में पहनते हैं, जो उनके पूर्ण आत्मसात्करण और अधीनता का प्रतीक है।

तपस्या और वैराग्य पशुओं की खाल (विशेषकर हिरण या बाघ) में ध्यान करने की प्रथा प्राचीन तपस्वी परंपराओं से चली आ रही है, जो सांसारिक सुखों का त्याग, वैराग्य और एक तपस्वी, अक्सर जंगली अस्तित्व को अपनाने का प्रतीक है। शिव के लिए, जो परम योगी हैं, बाघ की खाल एक सर्वोच्च संन्यासी के रूप में उनकी स्थिति को पुष्ट करती है, जो भौतिक संपत्ति और सांसारिक मोह से विरक्त हैं।

निर्भयता और संप्रभुता बाघ जंगल का राजा है, जिससे सभी डरते हैं। इसकी खाल पहनकर, कालभैरव अपने सर्वोच्च अधिकार, अजेयता और निर्भयता की घोषणा करते हैं। वे ऐसे हैं जो भय से ग्रस्त लोगों में विस्मय और आतंक पैदा करते हैं, लेकिन अपने भक्तों को साहस प्रदान करते हैं। यह कल्पना सभी प्राणियों और शक्तियों, दृश्य और अदृश्य, पर उनके प्रभुत्व को पुष्ट करती है।

द्वंद्व से परे बाघ की खाल द्वंद्व से परे की स्थिति का भी प्रतिनिधित्व करती है। बाघ सृजन (जंगल के भीतर जीवन) और विनाश (शिकार) दोनों का प्रतीक है। इसे पहनकर, कालभैरव जीवन के दाता और लेने वाले दोनों के रूप में अपनी भूमिका का प्रतीक हैं, जो अस्तित्व की चक्रीय प्रकृति और ऐसी द्वंद्वों पर उनके अतिक्रमण का प्रतीक है।

635. व्यापिने

ब्रह्मांड के प्रत्येक कण में व्याप्त, सर्वव्यापी (भगवान) को नमन।

विस्तार : व्यापिने नाम संस्कृत मूल "व्याप" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "व्याप्त होना," "प्रवेश करना," या "घेरना।" यह एक ऐसी सत्ता का वर्णन करता है जो सर्वव्यापी है और पूरे अस्तित्व में अनंत रूप से फैली हुई है।

सर्वव्यापकता और समावेशिता (Omnipresence and Inclusivity) व्यापिने सर्वव्यापकता के गुण को दर्शाता है। यह इस बात पर जोर देता है कि भैरव किसी विशेष स्थान, रूप या आयाम तक सीमित नहीं हैं। वह हर जगह मौजूद हैं - हर परमाणु में, हर कण में, हर स्थान में और हर क्षण में। इस सर्वव्यापकता का अर्थ है कि उनके बाहर कुछ भी मौजूद नहीं है। वह वह आधार हैं जिस पर सारी सृष्टि टिकी हुई है और व्याप्त है।

ब्रह्मांडीय चेतना (Cosmic Consciousness) भैरव का यह पहलू उस अंतर्निहित ब्रह्मांडीय चेतना और ऊर्जा की बात करता है जो पूरे ब्रह्मांड को चेतन और बनाए रखती है। यह बताता है कि कालभैरव का दिव्य सार स्वयं वास्तविकता का ताना-बाना है। चाहे ब्रह्मांड की विशालता में हो या धूल के सबसे छोटे कण में, उनकी उपस्थिति निर्विवाद और पूर्ण है।

पराकाष्ठा और अंतर्निहितता (Transcendence and Immanence) व्यापिने की अवधारणा दिव्य की पराकाष्ठा और अंतर्निहितता दोनों को खूबसूरती से दर्शाती है। जबकि वह सभी रूपों और सीमाओं को पार करते हैं, अप्रतिबंधित और द्वैत से परे रहते हैं, वह साथ ही अंतर्निहित भी हैं,

भौतिक और आध्यात्मिक दुनिया के हर पहलू के भीतर निवास करते हैं और उनका निर्माण करते हैं। वह पात्र और समाहित दोनों हैं, द्रष्टा और दृष्ट दोनों हैं।

दार्शनिक महत्व (Philosophical Significance) अद्वैत वेदांत में, यह अवधारणा ब्रह्म के सर्वव्यापी वास्तविकता के विचार से मेल खाती है। भक्त के लिए, भैरव को व्यापिने के रूप में ध्यान करना ब्रह्मांड और सभी प्राणियों के साथ एकता की गहरी भावना को प्रेरित कर सकता है, अलगाव के भ्रम को भंग कर सकता है और सार्वभौमिक करुणा को बढ़ावा दे सकता है। यह इस समझ को पुष्ट करता है कि दिव्य केवल एक बाहरी देवता नहीं है, बल्कि आंतरिक, सर्व-समावेशी वास्तविकता है जो स्वयं के और अपने आसपास की हर चीज में व्याप्त है।

636. वांग्मयीकनिधये

सभी वाणी और साहित्य के एकमात्र और परम निधि स्वरूप को नमन।

विस्तार : वाङ्मयैकनिधये नाम एक गहन संस्कृत यौगिक शब्द है जो भगवान काल भैरव के ज्ञान, वाणी और साहित्यिक कलाओं के साथ गहरे संबंध को उजागर करता है। यह तीन अलग-अलग तत्वों को जोड़ता है: वाङ्मय, एक और निधि।

वाङ्मय (Vāṅmaya): इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है "वाणी से युक्त," "मौखिक," या "साहित्यिक।" इसमें व्यक्त ध्वनि के सभी रूप, भाषा, साहित्य, कविता, शास्त्र और शब्दों के माध्यम से व्यक्त सभी पवित्र और धर्मनिरपेक्ष ज्ञान शामिल हैं। वाङ्मय केवल बाहरी अभिव्यक्ति का ही नहीं, बल्कि उस आंतरिक संकाय (वाक्) का भी प्रतिनिधित्व करता है जिससे वाणी उत्पन्न होती है। यह मौखिक ज्ञान और रचनात्मकता का सार है।

एक (Eka): अर्थ "एक," "अकेला," "अद्वितीय," या "अतुलनीय।" यह वाङ्मय के भंडार के रूप में काल भैरव की विलक्षणता और सर्वोच्च प्रकृति पर जोर देता है। वह केवल "एक" निधि नहीं हैं, बल्कि "एकमात्र" निधि हैं, जो यह दर्शाता है कि अन्य सभी स्रोत अंततः उनसे उत्पन्न होते हैं या उनमें समाहित हैं।

निधि (Nidhi): अर्थ "खजाना," "भंडार," "पात्र," या "निवास।" एक निधि एक मूल्यवान और विशाल संग्रह है, immense मूल्य का एक भंडार।

वाणी का एकमात्र निधि: जब इन शब्दों को जोड़ा जाता है, तो वाङ्मयैकनिधये का अर्थ है "समस्त वाणी, साहित्य और ज्ञान का एकमात्र और परम निधि।" यह दर्शाता है कि काल भैरव मौखिक अभिव्यक्ति, ज्ञान और समझ के सभी रूपों का स्रोत, पोषक और अंतिम भंडार हैं।

प्रतीकात्मकता और दार्शनिक महत्व:

• दिव्य रहस्योद्घाटन का स्रोत: "एकमात्र निधि" के रूप में, वह सभी पवित्र ग्रंथों, मंत्रों और दिव्य रहस्योद्घाटन का मूल हैं। आध्यात्मिक ज्ञान, दार्शनिक ग्रंथ और धार्मिक शास्त्रों के सभी रूप उनके अस्तित्व से निकलते हैं।

• ज्ञान के स्वामी: वह ज्ञान के पूर्ण स्पेक्ट्रम—लौकिक और पारलौकिक दोनों—को मूर्त रूप देते हैं। इसमें वेद, आगम, तंत्र और भाषा के माध्यम से व्यक्त सीखने और कला की सभी शाखाएं शामिल हैं।

• अभिव्यक्ति की शक्ति: वाणी के माध्यम से विचारों, भावनाओं और जटिल विचारों को समझने और व्यक्त करने की क्षमता अंततः उनकी दिव्य शक्ति (शक्ति) है। वह सभी प्राणियों में वाक् (वाणी) के संकाय को नियंत्रित करते हैं।

• वाक्पटुता के दाता: जो भक्त इस पहलू में उनकी पूजा करते हैं, वे वाक्पटुता, विचारों की स्पष्टता, भाषा पर महारत और विद्वत्तापूर्ण pursuits में सफलता के लिए उनका आशीर्वाद चाहते हैं। वह वाणी को प्रभावी, सत्य और आध्यात्मिक रूप से शक्तिशाली बनने के लिए सशक्त बनाते हैं।

• शब्द के रूप में परम वास्तविकता: कुछ दार्शनिक परंपराओं में, ब्रह्मांड को स्वयं आदिम शब्द (शब्द ब्रह्म) की अभिव्यक्ति के रूप में समझा जाता है। इस संदर्भ में, वाङ्मयैकनिधये यह सुझाव देता है कि काल भैरव वही परम वास्तविकता हैं, अघोषित ध्वनि सिद्धांत जिससे सभी सृष्टि और सभी व्यक्त ज्ञान उत्पन्न होते हैं।

संक्षेप में, यह नाम काल भैरव की सभी मौखिक ज्ञान के सर्वोच्च स्रोत, सभी भाषा के स्वामी, और ज्ञान के सभी रूपों के अस्तित्व और समझ के लिए जिम्मेदार परम देवता के रूप में प्रशंसा करता है।

637. विभवे

सर्वोच्च, सर्वशक्तिमान और तेजस्वी प्रभु को नमन।

विस्तार : विभाव (Vibhave) नाम संस्कृत मूल "विभू" से आया है, जिसका अर्थ है प्रकट होना, उपस्थित होना, या एक महान या शक्तिशाली तरीके से उपस्थित होना। संज्ञा विभाव के कई गहरे अर्थ हैं जो दिव्य के स्वरूप का वर्णन करते हैं।

सर्वव्यापी शक्ति और भव्यता "विभाव" सर्वोच्च शक्ति, पराक्रम और भव्यता को दर्शाता है। यह ब्रह्मांड में शिव की सर्वव्यापी उपस्थिति और अप्रतिरोध्य प्रभाव को इंगित करता है। विभाव के रूप में, वे सभी वैभव, महिमा और शानदार गुणों के स्रोत और अभिव्यक्ति हैं। वे केवल शक्तिशाली नहीं हैं बल्कि स्वयं शक्ति का सार हैं, जो हर चीज में व्याप्त है।

भगवान की अभिव्यक्ति यह एक देवता की विशिष्ट अभिव्यक्ति या उद्भव को भी संदर्भित करता है। इस संदर्भ में, भैरव विभाव के रूप में शिव की एक प्रत्यक्ष और शक्तिशाली अभिव्यक्ति हैं, जो सभी आयामों में अपनी दिव्य उपस्थिति को ज्ञात और महसूस कराते हैं। यह ब्रह्मांड में एक मूर्त और सक्रिय शक्ति के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देता है, न कि एक अमूर्त अवधारणा के रूप में।

समृद्धि और साधन-संपन्नता "विभाव" का एक और अर्थ समृद्धि, धन और कुछ हासिल करने के साधन या संसाधन हैं। इसका तात्पर्य है कि भगवान भैरव, विभाव के रूप में, सभी प्रचुरता के अंतिम स्रोत हैं और वे हैं जो ब्रह्मांड के भरण-पोषण और संचालन के लिए, साथ ही अपने भक्तों के कल्याण और आध्यात्मिक प्रगति के लिए सभी आवश्यक साधन प्रदान करते हैं।

कारण और मूल दार्शनिक रूप से, "विभाव" किसी चीज के कारण या मूल को भी संदर्भित कर सकता है। इस प्रकार, भगवान भैरव सभी अस्तित्व का अंतिम कारण और आधार हैं, वह आदि प्रेरक जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है और जिसमें सब कुछ अंततः विलीन हो जाता है। यह उन्हें सभी घटनाओं के अंतर्निहित मौलिक वास्तविकता के रूप में स्थापित करता है।

संक्षेप में, विभाव को नमन करना भगवान भैरव की शानदार और सर्वव्यापी शक्ति, उनकी गौरवशाली अभिव्यक्तियों, सभी समृद्धि के स्रोत के रूप में उनकी भूमिका और सभी अस्तित्व के मूल के रूप में उनकी अंतिम स्थिति की स्वीकृति है।

638. वर्णाश्रमगुरवे

वर्णाश्रम नामक सामाजिक और आध्यात्मिक व्यवस्था के दिव्य गुरु को नमन।

विस्तार : वर्णाश्रमगुरु एक संयुक्त शब्द है जो वर्ण, आश्रम और गुरु से मिलकर बना है। यह नाम सामाजिक-धार्मिक संरचना की सर्वोच्च सत्ता और गुरु के रूप में कालभैरव की भूमिका को इंगित करता है।

वर्णाश्रम व्यवस्था वर्णाश्रम धर्म में दो मुख्य अवधारणाएँ शामिल हैं: • वर्ण: यह चार सामाजिक वर्गों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) को संदर्भित करता है जो प्राकृतिक योग्यता (गुण) और कार्य (कर्म) पर आधारित हैं, जिसे पारंपरिक रूप से कठोर जन्म-आधारित पदानुक्रम के बजाय सामाजिक संगठन और श्रम विभाजन की एक प्रणाली के रूप में समझा जाता है। • आश्रम: ये जीवन के चार चरण हैं (ब्रह्मचर्य - छात्र, गृहस्थ - गृहस्थ, वानप्रस्थ - वनवासी/सेवानिवृत्त, संन्यास - त्यागी तपस्वी)। प्रत्येक चरण के विशिष्ट कर्तव्य (धर्म) और लक्ष्य होते हैं।

दिव्य गुरु (Guru) गुरु एक शिक्षक, मार्गदर्शक या उपदेशक को दर्शाता है जो अंधकार को दूर करता है (गु - अंधकार, रु - दूर करने वाला)। वर्णाश्रमगुरु के रूप में, कालभैरव इन सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन चरणों को नियंत्रित करने वाले सिद्धांतों के अंतिम स्रोत और समर्थक हैं। वह केवल एक पर्यवेक्षक नहीं हैं, बल्कि इन प्रणालियों के दिव्य निर्माता और प्रवर्तक हैं।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) के संरक्षक वर्णाश्रम के गुरु होने के नाते, कालभैरव धर्म के सिद्धांत का प्रतीक हैं। वह यह सुनिश्चित करते हैं कि व्यक्ति और समाज अपनी स्थिति और जीवन के चरण के लिए प्रासंगिक निर्धारित नैतिक, नैतिक और आध्यात्मिक संहिताओं का पालन करें। उनकी भूमिका मानवता को आध्यात्मिक विकास की ओर मार्गदर्शन करना और इन धार्मिक कर्तव्यों के उचित निष्पादन के माध्यम से ब्रह्मांडीय सद्भाव बनाए रखना है। वह इस ढांचे के भीतर न्याय और व्यवस्था सुनिश्चित करते हैं, उल्लंघन करने वालों को दंडित करते हैं और इसका पालन करने वालों का मार्गदर्शन करते हैं। यह उन्हें हिंदू परंपरा के भीतर सही आचरण और धर्मी जीवन पर अंतिम अधिकार बनाता है।

639. वर्णाय

समस्त वर्णों, अक्षरों और रंगों के साकार स्वरूप को नमन।

विस्तार : 'वर्णाय' नाम अर्थ से समृद्ध है, जो संस्कृत मूल "वर्ण" से निकला है, जो हिंदू दर्शन और परंपरा में कई गहन अवधारणाओं को दर्शाता है।

सामाजिक वर्गों का मूर्त रूप (वर्ण धर्म) सामाजिक-धार्मिक संदर्भ में, "वर्ण" चार प्रमुख सामाजिक वर्गों या व्यवस्थाओं (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) को संदर्भित करता है। वर्ण के रूप में, कालभैरव संपूर्ण सामाजिक संरचना के सार और सिद्धांतों का प्रतीक हैं। वे उस दिव्य व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं जो मानव समाज को आधार प्रदान करती है, जहाँ प्रत्येक वर्ग का अपना विशिष्ट धर्म (धार्मिक कर्तव्य) होता है और वह संपूर्ण के सामंजस्यपूर्ण कार्य में योगदान देता है। इसका अर्थ कठोर जातिगत पदानुक्रमों का समर्थन करना नहीं है, बल्कि उन विभिन्न कार्यात्मक भूमिकाओं को स्वीकार करना है जो किसी भी समाज में मौजूद हैं, और ये सभी अंततः दिव्य द्वारा देखे और बनाए रखे जाते हैं।

अक्षरों और ध्वनि का मूर्त रूप (अक्षर वर्ण) "वर्ण" वर्णमाला के अक्षरों (अक्षर वर्ण) को भी दर्शाता है। संस्कृत में, प्रत्येक अक्षर को एक पवित्र ध्वनि, एक आदिम कंपन, या "मंत्र" माना जाता है। वर्ण के रूप में, कालभैरव सभी ध्वनियों, वाणी और लिखित भाषा का सार हैं। वे सभी स्पष्ट अभिव्यक्ति के दिव्य स्रोत और ब्रह्मांड का निर्माण करने वाली मूलभूत ध्वनिक ऊर्जाएँ हैं। यह उन्हें वाक् (वाणी की देवी) और ध्वनि की रचनात्मक शक्ति (नाद ब्रह्म) से जोड़ता है। इस अर्थ में उन्हें वर्ण के रूप में ध्यान करना वाणी पर महारत, पवित्र ग्रंथों की समझ और अस्तित्व की कंपन सत्य की प्राप्ति की तलाश करना है।

रंगों का मूर्त रूप सामाजिक वर्गों और अक्षरों से परे, "वर्ण" का अर्थ "रंग" भी है। यह व्याख्या दर्शाती है कि कालभैरव सभी रंगों का प्रतीक हैं, जो ब्रह्मांडीय अभिव्यक्ति के पूरे स्पेक्ट्रम का प्रतिनिधित्व करते हैं। जिस प्रकार प्रकाश कई रंगों से बना होता है, उसी प्रकार ब्रह्मांड एक विलक्षण दिव्य स्रोत

से विविध रूपों में निकलता है। उनका रूप सभी रंगों को समाहित करता है, जो सृष्टि की बहुआयामी प्रकृति और ब्रह्मांड में मौजूद विभिन्न ऊर्जाओं और गुणों को दर्शाता है। यह उनकी प्रतिमा विज्ञान से भी संबंधित है, जहाँ उन्हें कभी-कभी गरजते हुए बादल के समान गहरे रंग के या हजारों सूर्यों के समान चमकीले रंग के रूप में चित्रित किया जाता है, जो सभी ध्रुवीयताओं और अभिव्यक्तियों को समाहित करता है।

इस प्रकार, वर्ण के रूप में, कालभैरव वह सर्वव्यापी दिव्य सिद्धांत हैं जो सामाजिक व्यवस्था, मुखर अभिव्यक्ति और प्रकट ब्रह्मांड की जीवंत विविधता को आधार प्रदान करते हैं।

640. वरदाय

सभी आशीर्वादों और वरदानों के उदार प्रदाता को नमन।

विस्तार : वरदाय नाम संस्कृत मूल 'वर' (वरदान, आशीर्वाद, इच्छा, चुनाव) और 'दा' (देने वाला, प्रदान करने वाला) से लिया गया है। इसलिए, वरद का शाब्दिक अर्थ है "वरदान देने वाला" या "आशीर्वाद प्रदान करने वाला"।

वरदानों और इच्छाओं का दाता यह नाम स्पष्ट रूप से कालभैरव की एक परोपकारी देवता के रूप में भूमिका को उजागर करता है जो अपने भक्तों की इच्छाओं को पूरा करते हैं। अपने भयानक स्वरूप या उग्र पहलुओं के बावजूद, वह अंततः इच्छाओं के एक दयालु दाता हैं, चाहे वे भौतिक हों या आध्यात्मिक। वह वह दिव्य सत्ता हैं जिससे कोई सांसारिक समृद्धि, स्वास्थ्य, सफलता और सुरक्षा के साथ-साथ ज्ञान, मुक्ति और भय से मुक्ति जैसी उच्च आध्यात्मिक आकांक्षाओं के लिए भी प्रार्थना कर सकता है।

दिव्य उदारता का प्रतीक वरदाय दिव्य की असीम उदारता का प्रतीक है। भगवान शिव, और विस्तार से कालभैरव, भक्तों की प्रार्थनाओं को शीघ्र संतुष्ट करने और उन लोगों को असाधारण वरदान भी देने की अपनी इच्छा के लिए प्रसिद्ध हैं जो ईमानदारी से भक्ति, तपस्या या समर्पण के साथ उनके पास आते हैं। यह विशेषता देवता के विरोधाभास को रेखांकित करती है: एक साथ विनाशकारी और सुरक्षात्मक, भयानक और परोपकारी।

आकांक्षाओं को पूरा करने वाला दार्शनिक अर्थ में, वरदाय उस दिव्य शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो इरादों को साकार करती है और अव्यक्त से अभिव्यक्तियों को सामने लाती है। आध्यात्मिक साधकों के लिए, "वरदान" को बाधाओं (काल - समय, मृत्यु) को दूर करने के रूप में समझा जा सकता है, जो आत्म-साक्षात्कार और मुक्ति की ओर ले जाता है। वह लौकिक सीमाओं और मृत्यु के भय को दूर करने के लिए ज्ञान का आशीर्वाद देते हैं, जो आध्यात्मिक प्रगति के लिए अंतिम वरदान है।

641. वायुवाहनाय

वायु को अपने दिव्य वाहन के रूप में धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : वायुवाहनाय नाम उस एक को संदर्भित करता है जिसका "वाहन" (वाहन) "वायु" (हवा या पवन) है। हिंदू पौराणिक कथाओं में वाहन की अवधारणा महत्वपूर्ण है; यह केवल परिवहन का एक साधन नहीं है बल्कि देवता की शक्ति, प्रकृति और क्षेत्र का एक प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व है।

ब्रह्मांडीय श्वास के स्वामी वायु पंच महाभूतों (पांच महान तत्वों) में से एक है और गतिशीलता, जीवन-श्वास (प्राण), और ध्वनि तथा गंध के वाहक का सार है। वायु को अपना वाहन बनाकर, कालभैरव गति, जीवन और ब्रह्मांड में व्याप्त सूक्ष्म ऊर्जाओं पर अपनी पूर्ण महारत प्रदर्शित करते हैं। जैसे वायु सर्वव्यापी, अदृश्य और सर्वग्राही है, वैसे ही कालभैरव की उपस्थिति और प्रभाव भी है।

तीव्रता और सर्वव्यापकता वायु अपनी अविश्वसनीय गति और हर जगह एक साथ होने की क्षमता से विशेषता रखती है, फिर भी अगम्य बनी रहती है। यह कालभैरव की क्षमता का प्रतीक है कि वे जहां भी आह्वान किए जाते हैं, तुरंत प्रकट होते हैं, और उनकी सर्वव्यापी प्रकृति सभी भौतिक बाधाओं को पार करती है। वे वायु की गति और सर्वव्यापकता के साथ सभी लोकों—स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल—में यात्रा करते हैं।

सूक्ष्मता और अदृश्य शक्ति वायु एक अदृश्य शक्ति है, फिर भी इसके प्रभाव गहराई से महसूस किए जाते हैं। यह पहलू कालभैरव की सूक्ष्म फिर भी अप्रतिरोध्य शक्ति को उजागर करता है। वे मूर्त से परे कार्य करते हैं, भाग्य और समय की अदृश्य धाराओं को प्रभावित करते हैं। जैसे वायु एक हल्की हवा या एक विनाशकारी तूफान हो सकती है, वैसे ही वे कृपा प्रदान कर सकते हैं या भयंकर न्याय कर सकते हैं, हमेशा अथाह शक्ति और गति के साथ।

फैलाव और शुद्धिकरण वायु में फैलाने और शुद्ध करने की भी शक्ति होती है। अपने वाहन के रूप में, वायु कालभैरव की अज्ञानता, नकारात्मक ऊर्जाओं और व्यक्तिगत आत्मा को बांधने वाले बंधनों को फैलाने में भूमिका को इंगित करती है। वे आध्यात्मिक वातावरण को शुद्ध करते हैं, स्पष्टता और ज्ञान के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं।

642. विश्वकर्मणे

संपूर्ण ब्रह्मांड के दिव्य वास्तुकार और निर्माता को नमन।

विस्तार : विश्वकर्मणे नाम संस्कृत के शब्द "विश्व" और "कर्म" से लिया गया है।

• विश्व (Viśva): यह शब्द "सभी," "संपूर्ण," "ब्रह्मांड," या "सृष्टि" को दर्शाता है। इसमें वह सब कुछ शामिल है जो मौजूद है, सृष्टि की समग्रता।

• कर्म (Karma): यह "कार्य," "काम," "बनाना," या "शिल्प" को संदर्भित करता है। इस संदर्भ में, यह सृष्टि, डिजाइन और निर्माण के कार्य से संबंधित है।

दिव्य वास्तुकार और निर्माता एक साथ, विश्वकर्मणे का अर्थ है "वह जो सब कुछ बनाता है" या "ब्रह्मांड का वास्तुकार।" यह नाम कालभैरव को विश्वकर्मा से जोड़ता है, जो हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में आदिम दिव्य वास्तुकार और इंजीनियर हैं। विश्वकर्मा को पारंपरिक रूप से उस देवता के रूप में सराहा जाता है जिन्होंने ब्रह्मांड का डिजाइन और निर्माण किया, देवताओं के हथियार गढ़े और स्वर्गीय शहरों का निर्माण किया। विश्वकर्मणे के रूप में पहचाने जाने से, कालभैरव को सभी अस्तित्व के अंतिम स्रोत और योजनाकार के रूप में मान्यता प्राप्त है।

आदिम रचनात्मक शक्ति कालभैरव का यह पहलू ब्रह्मांड के पीछे मौलिक रचनात्मक बुद्धि के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है। वह केवल समय के संहारक नहीं हैं, बल्कि वह शक्ति भी हैं जो समय, स्थान और उनमें सभी रूपों की कल्पना और उन्हें प्रकट करती है। यह उनकी व्यापक प्रकृति को दर्शाता है, जिसमें सृष्टि और विलय दोनों शामिल हैं।

सभी रूपों का आधार यह नाम दर्शाता है कि प्रत्येक रूप, प्रत्येक संरचना, प्रकृति का प्रत्येक नियम और ब्रह्मांड का प्रत्येक जटिल विवरण उनके दिव्य डिजाइन की अभिव्यक्ति है। वह मास्टर बिल्डर हैं जिनके ब्लूप्रिंट ही वास्तविकता का ताना-बाना हैं। यह दर्शाता है कि सभी सृष्टि का एक अंतिम क्रम और उद्देश्य है, जिसे उनके द्वारा व्यवस्थित किया गया है।

643. विनीतात्मने

विनम्र, सुशील और अनुशासित आत्मा वाले (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : विनीतात्मने नाम विनीत और आत्मन का एक यौगिक है।

• विनीत: इस संस्कृत शब्द का अर्थ है "सुव्यवस्थित," "अनुशासित," "विनम्र," "शिष्ट," "प्रशिक्षित," या "संस्कृत।" यह अभिमान, अहंकार और अनियंत्रित वासनाओं से मुक्त होने की स्थिति को दर्शाता है। यह आंतरिक शांति, आत्म-संयम और एक परिष्कृत स्वभाव का प्रतीक है।

• आत्मन: यह "स्वयं," "आत्मा," या "सार" को संदर्भित करता है। दिव्य के संदर्भ में, यह परम स्व या अस्तित्व की मूलभूत वास्तविकता को संदर्भित करता है।

विनम्रता और अनुशासन का अवतार यह नाम भगवान शिव के एक गहन पहलू को दर्शाता है, विशेष रूप से उनके भैरव रूप में, जो अक्सर भयानक प्रतीत होता है। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि भयंकर बाहरी रूप के नीचे, एक परम आंतरिक अनुशासन, विनम्रता और आत्म-नियंत्रण है। यह सुझाव देता है कि दिव्य, अपनी अपार शक्ति और ब्रह्मांडीय अधिकार के बावजूद, पूरी तरह से स्थिर, आत्म-नियमित और अहंकार से मुक्त है। यह एक महत्वपूर्ण विरोधाभास है: सबसे भयंकर देवता भी सबसे विनम्र और पूरी तरह से अनुशासित हैं।

परम सुव्यवस्थित स्व परम स्व (परमात्मा) के रूप में, वे स्वाभाविक रूप से विनीत हैं। उनके कार्य और अभिव्यक्तियाँ हमेशा ब्रह्मांडीय धर्म और परम भलाई के पूर्ण अनुरूप होते हैं, कभी भी मनमानी या अनियंत्रित भावना से प्रेरित नहीं होते। यह "सुव्यवस्थित आत्मा" शक्ति की कमी के बारे में नहीं है, बल्कि ज्ञान और सार्वभौमिक कानून द्वारा निर्देशित शक्ति का सही अनुप्रयोग है।

साधक के लिए आकांक्षाएँ भैरव को विनीतात्मने के रूप में पूजना भक्त के लिए एक शक्तिशाली अनुस्मारक और आध्यात्मिक आकांक्षा के लिए एक लक्ष्य के रूप में कार्य करता है। यह दिव्य प्रकृति के साथ संरेखित होने के लिए अपनी आत्मा (आत्मन) के भीतर विनम्रता, अनुशासन और आत्म-नियंत्रण के विकास को प्रोत्साहित करता है। यह सिखाता है कि सच्ची आध्यात्मिक शक्ति आक्रामकता या अनियंत्रित जुनून से नहीं, बल्कि आंतरिक निपुणता और एक विनम्र, शुद्ध हृदय से आती है।

644. वेदशास्त्रार्थतत्वविदे

वेदों और सभी शास्त्रों के सच्चे सार और अर्थ को जानने वाले को नमन।

विस्तार : वेदशास्त्रार्थतत्त्वविदे नाम एक गहरा यौगिक है, जो आध्यात्मिक ज्ञान में कालभैरव के परम अधिकार और बुद्धिमत्ता को प्रकट करता है। यह कई संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है:

• वेदशास्त्र (Vedashāstra): यह वेदों (हिंदू धर्म के आदिम, प्रकट ग्रंथ) और शास्त्रों (धर्मशास्त्र, पुराण, आगम, तंत्र आदि सहित पवित्र ग्रंथों की एक व्यापक श्रेणी - ज्ञान या धार्मिक परंपरा का कोई भी व्यवस्थित निकाय) दोनों को संदर्भित करता है। इस प्रकार, "वेदशास्त्र" का अर्थ सभी पवित्र ग्रंथ और ज्ञान परंपराएँ हैं।

• अर्थ (Artha): इस शब्द का अर्थ "अर्थ," "उद्देश्य," "महत्व," या "सार" है।

• तत्त्व (Tattva): इस शब्द का अर्थ "सत्य," "वास्तविकता," "सिद्धांत," या "सार" है। यह किसी चीज की मौलिक और परम प्रकृति को संदर्भित करता है।

• विद् (Vid): इस मूल का अर्थ "जानना," "समझना," या "परिचित होना" है। प्रत्यय "-विदे" का अर्थ "जानने वाले को" है।

इसलिए, वेदशास्त्रार्थतत्त्वविदे का अर्थ है "वह जो वेदों और सभी शास्त्रों के सच्चे सार और अर्थ को जानता है।"

दिव्य सत्य के परम ज्ञाता (Ultimate Knower of Divine Truth) यह नाम कालभैरव की परम ज्ञान के पूर्ण स्रोत और अंतिम व्याख्याकार के रूप में उनकी श्रेष्ठता को स्थापित करता है। वे केवल ग्रंथों को नहीं जानते; वे उनके गहरे सत्य को साकार करते हैं। वे उन छिपे हुए, गूढ़ अर्थों को समझते

हैं जो शाब्दिक शब्दों से परे हैं। वेदों और शास्त्रों को दिव्य श्वास माना जाता है, और कालभैरव, शिव के एक रूप के रूप में, वह चेतना हैं जिससे ये पवित्र ग्रंथ उत्पन्न होते हैं। वे धर्म (धार्मिकता), कर्म (कर्म और उसके परिणाम), और मोक्ष (मुक्ति) पर परम अधिकारी हैं।

शाब्दिक व्याख्या से परे (Beyond Literal Interpretation) यह गुण इस बात पर प्रकाश डालता है कि सच्चा आध्यात्मिक ज्ञान केवल अकादमिक अध्ययन या शास्त्रों को याद करने से कहीं अधिक है। कालभैरव ब्रह्मांडीय नियमों, ब्रह्म के स्वरूप, आत्मा (आत्मन) और सभी पवित्र परंपराओं में वर्णित आध्यात्मिक मुक्ति के मार्ग का अभिन्न, अखंडित ज्ञान रखते हैं। भक्त के लिए, इसका अर्थ है कि उनके प्रति समर्पण करके, कोई इन गहन सत्यों की सच्ची समझ प्राप्त कर सकता है, बौद्धिक प्रवचन से परे जा सकता है।

समस्त ज्ञान का अवतार (The Embodiment of All Knowledge) जिस प्रकार शिव को अक्सर आदि-गुरु (प्रथम शिक्षक) के रूप में पूजा जाता है, उसी प्रकार कालभैरव, इस पहलू में, सभी पवित्र ज्ञान के अवतार हैं। इस नाम का आह्वान दिव्य मार्गदर्शन और अस्तित्व के गहरे आध्यात्मिक रहस्यों में अंतर्दृष्टि के लिए एक अपील है, जो केवल जानकारी नहीं, बल्कि परिवर्तनकारी ज्ञान की तलाश है।

645. वासवे

धन के साकार स्वरूप और आकाशीय वसुओं में से एक को नमन।

विस्तार : 'वासवे' (वासव) नाम वैदिक और पौराणिक परंपराओं में गहराई से निहित है, जो मुख्य रूप से धन, चमक और देवताओं के एक विशिष्ट वर्ग से जुड़ा है।

दिव्य वसु 'वसु' शब्द का शाब्दिक अर्थ 'निवासी' या 'निवास' है। ऋग्वेद में, वसु अक्सर इंद्र के आठ सहायक देवताओं के एक वर्ग को संदर्भित करता है, जिन्हें अक्सर अष्ट-वसु (आठ वसु) के रूप में एक साथ समूहित किया जाता है। वे प्राकृतिक घटनाओं और ब्रह्मांडीय सिद्धांतों के मानवीकरण हैं, जैसे प्रकाश, अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी, चंद्रमा, तारे और स्वयं ब्रह्मांड। ये वसु अपनी चमक, धन और समृद्धि प्रदान करने की अपनी क्षमता और पृथ्वी तथा उसके खजानों से अपने जुड़ाव के लिए जाने जाते हैं।

धन और समृद्धि का अवतार व्यापक अर्थ में, 'वसु' धन, संपत्ति, सोना और कीमती पत्थरों को भी दर्शाता है। इसलिए, 'वासवे' उस एक को संदर्भित करता है जो सभी प्रकार के भौतिक और आध्यात्मिक धन का सार और अवतार है। इसका तात्पर्य यह है कि कालभैरव, इस रूप में, सभी समृद्धि के अंतिम दाता और नियंत्रक हैं। इस पहलू के प्रति भक्ति वित्तीय बाधाओं को दूर करने और प्रचुरता प्राप्त करने में मदद कर सकती है।

शिव के रूप में वसु भगवान शिव को अक्सर विभिन्न पुराणों में वसुओं से जोड़ा जाता है। उन्हें कभी-कभी उनके नेता के रूप में या उनके सामूहिक सार के विस्तार के रूप में पहचाना जाता है। कुछ परंपराओं में, विशिष्ट रुद्रों (शिव का एक और उग्र रूप) को वसुओं के समान माना जाता है, या शिव को स्वयं परम वसु के रूप में पूजा जाता है, वह स्रोत जिससे सभी चमकदार और धन-प्रदायक सिद्धांत उत्पन्न होते हैं।

सांसारिक धन का संरक्षण वसुओं के पृथ्वी और उसके संसाधनों से संबंध को देखते हुए, यह नाम सांसारिक खजानों और प्राकृतिक प्रचुरता के स्रोत के संरक्षक के रूप में कालभैरव की भूमिका को भी रेखांकित करता है। 'वासवे' के रूप में, वह न केवल धन प्रदान करते हैं बल्कि इसकी रक्षा भी करते हैं, ब्रह्मांड में इसके उचित प्रवाह और उपयोग को सुनिश्चित करते हैं।

646. वसुमनसे

जिनका मन अच्छाई और धन से परिपूर्ण है, उन्हें नमन।

विस्तार : वसुमनसे (Vasumanasā) नाम भैरव की शुभ और परोपकारी बुद्धि को दर्शाता है, जो संस्कृत शब्दों 'वसु' और 'मनस' से लिया गया एक यौगिक है।

वसु (Vasu): इस शब्द के अर्थ की कई परतें हैं। शाब्दिक रूप से, इसका अर्थ है "धन," "संपत्ति," "उत्कृष्टता," "भलाई," "जायदाद," या "कुछ भी जो शुभ है या समृद्धि लाता है।" व्यापक अर्थ में, यह वसुओं को संदर्भित कर सकता है, जो प्रचुरता और प्राकृतिक घटनाओं से जुड़े वैदिक देवता हैं। जब इसे दिव्य पर लागू किया जाता है, तो यह अंतर्निहित उत्कृष्टता और सभी अच्छाई का स्रोत दर्शाता है।

मनस (Manas): यह शब्द "मन," "बुद्धि," "हृदय," "स्वभाव," या "चेतना" को संदर्भित करता है। यह धारणा, विचार और भावना की शक्ति है।

शुद्ध अच्छाई और परोपकार का मन जब संयुक्त किया जाता है, तो वसुमनस एक ऐसे प्राणी का वर्णन करता है जिसका मन स्वाभाविक रूप से शुद्ध, सदाचारी और शुभता से भरा हुआ है। भैरव, अपनी भयंकर बाहरी उपस्थिति के बावजूद, एक आंतरिक स्वभाव रखते हैं जो पूर्ण अच्छाई से चिह्नित है। उनके कार्य, भले ही वे विनाशकारी लगें, अंततः ब्रह्मांडीय व्यवस्था और आत्माओं की मुक्ति के लिए एक परोपकारी उद्देश्य में निहित हैं। वह एक ऐसे मन का प्रतीक हैं जो द्वेष, अहंकार और अज्ञान से मुक्त है।

आध्यात्मिक धन और समृद्धि का स्रोत 'वसु' का "धन" पहलू आध्यात्मिक समृद्धि तक भी फैला हुआ है। भैरव को वसुमनसे के रूप में यह सुझाव देता है कि उनका मन सभी सच्चे आध्यात्मिक धन—ज्ञान, बुद्धि, वैराग्य, करुणा और मुक्ति का स्रोत है। जो भक्त अपने मन को इस दिव्य चेतना के साथ संरेखित करते हैं, वे इस आध्यात्मिक प्रचुरता में भाग ले सकते हैं। वह उन लोगों को ऐसे दिव्य "धन" के दाता हैं जो उन्हें भक्ति के साथ खोजते हैं।

एक बुद्धिमान और शुभ इच्छा यह नाम इस बात पर प्रकाश डालता है कि भैरव की इच्छा और बुद्धि हमेशा धर्म (धार्मिकता) को बनाए रखने और ब्रह्मांड के कल्याण को सुनिश्चित करने की दिशा में निर्देशित होती है। उनके निर्णय, भले ही उनका निष्पादन भयावह लगे, एक शुभ इरादे से उत्पन्न होते हैं, जिससे वह दिव्य न्याय के अंतिम प्रदाता बन जाते हैं जो सृष्टि को उसके अंतिम अच्छे की ओर मार्गदर्शन करता है।

647. पालाय

सभी प्राणियों के परम रक्षक और संरक्षक को नमन।

विस्तार : पालाय (पाला) नाम संस्कृत मूल "पाल" से लिया गया है, जिसका अर्थ है रक्षा करना, पहरा देना, संरक्षित करना या संजोना। यह नाम कालभैरव की ब्रह्मांड और उसमें रहने वाले सभी जीवों के सर्वोच्च रक्षक और पालनकर्ता के रूप में भूमिका पर जोर देता है।

ब्रह्मांडीय संरक्षक (The Cosmic Guardian) पाला के रूप में, कालभैरव सार्वभौमिक व्यवस्था (धर्म) की रक्षा के दिव्य कार्य का प्रतीक हैं। वे अराजकता और विघटन के विरुद्ध परम संरक्षक हैं, जो सृष्टि और अस्तित्व के चक्रों की निरंतरता सुनिश्चित करते हैं। यह सुरक्षा केवल शारीरिक सुरक्षा से परे है; इसमें आध्यात्मिक मूल्यों, ब्रह्मांडीय नियमों और ब्रह्मांड की अखंडता का संरक्षण शामिल है।

भक्तों के रक्षक (Protector of Devotees) अपने भक्तों के लिए, पाला एक शक्तिशाली और परोपकारी रक्षक का प्रतीक है जो उन्हें नुकसान, नकारात्मकता और आध्यात्मिक बाधाओं से बचाता है। वे ऐसे हैं जो भय को दूर करते हैं, शत्रुओं (बाहरी और आंतरिक दोनों) को पराजित करते हैं, और

साधकों को मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करते हैं। उनकी सुरक्षात्मक दृष्टि निरंतर बनी रहती है, जो उन लोगों के कल्याण और आध्यात्मिक प्रगति को सुनिश्चित करती है जो उनके प्रति समर्पण करते हैं।

जीवन के पालनकर्ता (Sustainer of Life) 'पालन' (संरक्षण/पालन) का कार्य जीवन के संरक्षण और पोषण से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। कालभैरव, पाला के रूप में, जीवन प्रक्रियाओं की निरंतरता सुनिश्चित करते हैं, समय और कर्म के प्रवाह को विनियमित करते हैं जो सभी अस्तित्व को नियंत्रित करता है। इस अर्थ में, वे केवल बाहरी खतरों से रक्षक नहीं हैं, बल्कि जीवन को बनाए रखने वाली मूलभूत शक्ति भी हैं।

परोपकारी पहलू (Benevolent Aspect) जबकि भैरव को अक्सर भय से जोड़ा जाता है, पाला नाम उनके दयालु और परोपकारी पहलू को उजागर करता है। यह दर्शाता है कि भैरव का उग्र रूप अंततः संरक्षण और कल्याण की सेवा में है, ठीक वैसे ही जैसे एक सख्त माता-पिता अपने बच्चे की सुरक्षा के लिए एक दुर्जेय व्यवहार अपनाते हैं। उनका भयानक पहलू एक साधन है—बुराई और अज्ञानता को दूर भगाने का, जिससे शुद्ध और अच्छे की रक्षा होती है।

648. विरामाय

जो परम विश्राम हैं, समस्त सृष्टि का अंतिम विश्राम स्थल हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : विरामाय नाम संस्कृत शब्द विराम (Virāma) से लिया गया है, जिसका अर्थ है समाप्ति, विश्राम, ठहराव या पूर्णविराम। कालभैरव के संदर्भ में, यह गहन आध्यात्मिक और ब्रह्मांडीय अर्थों को समाहित करता है।

परम विराम कालभैरव, विराम के रूप में, सभी अभिव्यक्तियों के अंतिम बिंदु का प्रतिनिधित्व करते हैं। सृष्टि, पालन और संहार (प्रकृति और पुरुष) के निरंतर चक्र में, वे सभी अस्तित्व का अंतिम संहार, परम "पूर्णविराम" हैं। यह केवल एक अंत नहीं है, बल्कि एक अविभेदित अवस्था में, उस आदिम शांति में पुनः समाहित होना है जो सृष्टि से पहले और संहार के बाद आती है।

विश्राम और शांति की अवस्था विराम का अर्थ विश्राम या शांति भी है। इस अर्थ में, कालभैरव एक गहन आध्यात्मिक विश्राम प्रदान करते हैं - जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) की समाप्ति, मानसिक उतार-चढ़ाव (चित्त वृत्ति निरोध) की समाप्ति से मिलने वाली शांति, और परम मुक्ति (मोक्ष)। जो लोग उनके प्रति समर्पण करते हैं, उनके लिए वे परम आश्रय प्रदान करते हैं, एक ऐसी अवस्था जो भौतिक संसार की उथल-पुथल और पीड़ा से मुक्त है।

भ्रमों का अंत दार्शनिक दृष्टिकोण से, कालभैरव विराम के रूप में अज्ञान (अविद्या) और भ्रम (माया) की समाप्ति का प्रतीक हैं। वे कथित द्वैत और अहंकार की सीमाओं का अंत करते हैं, जिससे अद्वैत सत्य की प्राप्ति होती है। उनका भयानक रूप, इस प्रकाश में, उस शक्ति का एक लाक्षणिक प्रतिनिधित्व है जो सभी भ्रमों को तोड़ देती है, शुद्ध, अप्रतिबंधित वास्तविकता को प्रकट करती है।

समय के अंत का प्रतीक कालभैरव के एक रूप के रूप में, जो काल (समय) से गहराई से जुड़ा हुआ है, विराम सभी लौकिक प्रक्रियाओं के अंतिम अंत को दर्शाता है। यह वह बिंदु है जहाँ समय स्वयं अपने रैखिक, अनुभवी रूप में अस्तित्व में नहीं रहता है, शाश्वत, कालातीत वर्तमान में वापस विलीन हो जाता है। वे समय के स्वामी हैं, और इस प्रकार वे इसकी समाप्ति का निर्धारण करते हैं।

649. विद्रुमच्छवये

जिनके शरीर का कांति मूंगे के समान दीप्तिमान और सुंदर है, उन्हें नमन।

विस्तार : विद्रुमच्छवये नाम कालभैरव के लिए एक सुंदर वर्णनात्मक विशेषण है, जो उनके दिव्य स्वरूप के एक विशिष्ट पहलू पर प्रकाश डालता है। यह "विद्रुम" और "छवि" का एक यौगिक है।

• विद्रुम (Vidruma): इस संस्कृत शब्द का अर्थ है "मूंगा"। मूंगा, विशेष रूप से लाल मूंगा, अपने आकर्षक और जीवंत रंग के लिए अत्यधिक मूल्यवान है। हिंदू प्रतिमा विज्ञान और प्रतीकवाद में, लाल रंग शक्ति, ऊर्जा, जुनून, उग्रता और शुभता से जुड़ा है।

• छवि (Chhavi): इस शब्द का अर्थ है "चमक," "दीप्ति," "सौंदर्य," "रंग," या "तेज।"

मूंगे की चमक इस प्रकार, विद्रुमच्छवये का अर्थ है "वह जिसका रंग या चमक मूंगे जैसी हो।" यह एक ऐसे दिव्य स्वरूप को दर्शाता है जो अत्यंत जीवंत, चमकता हुआ और मनमोहक है। जबकि भैरव को अक्सर उनके उग्र और पारलौकिक स्वरूप का प्रतीक गहरे या धुएँ के रंग के रूप में चित्रित किया जाता है, यह नाम एक अलग पहलू पर जोर देता है - गतिशील ऊर्जा और दुर्जेय सौंदर्य का।

लाल रंग का प्रतीकवाद मूंगे का लाल रंग, जब किसी देवता को दिया जाता है, तो अक्सर एक शक्तिशाली और सक्रिय शक्ति का प्रतीक होता है। यह उनके कार्यों में एक भावुक तीव्रता का सुझाव देता है - चाहे वह उनके भक्तों की उग्र सुरक्षा हो, बुराई का अथक विनाश हो, या उनके ब्रह्मांडीय नृत्य (तांडव) की जीवंत ऊर्जा हो। यह लालिमा रक्त-लाल रंग का भी प्रतीक हो सकती है, जो उन्हें तांत्रिक पूजा के बलि संबंधी पहलुओं और जीवन के अंतिम विघटन से जोड़ती है।

उग्रता में सौंदर्य यह नाम दिव्य के विरोधाभासी स्वरूप की ओर भी इशारा करता है, जहाँ विस्मयकारी उग्रता एक गहन, भयानक सौंदर्य के साथ गुंथी हुई है। उनकी मूंगे जैसी चमक केवल सौंदर्यपरक नहीं है; यह उनकी अंतर्निहित शक्ति और दिव्य ऊर्जा का एक उत्सर्जन है जो भक्त को भयभीत करने और लुभाने दोनों में सक्षम है। यह एक ऐसे स्वरूप का सुझाव देता है जो, संभावित रूप से विनाशकारी होते हुए भी, आंतरिक रूप से परिपूर्ण और तेजस्वी है।

650. विमोकाय

सभी प्रकार के बंधनों से मुक्ति प्रदान करने वाले महान मुक्तिदाता को नमन।

विस्तार : विमोचकाय नाम संस्कृत मूल "मुच्" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "मुक्त करना, छोड़ना या बंधन से मुक्त करना।" उपसर्ग "वि" इस अर्थ को तीव्र करता है, एक पूर्ण और गहन मुक्ति पर जोर देता है। इसलिए, विमोचक का अर्थ है "वह जो पूरी तरह से मुक्त करता है" या "महान मुक्तिदाता।"

बंधन की अवधारणा (बंध) हिंदू दर्शन में, विशेष रूप से शैव परंपराओं में, सभी जीवित प्राणी विभिन्न प्रकार के "बंधन" (बंध) के अधीन हैं। ये बंधन केवल भौतिक बाधाएँ नहीं हैं बल्कि गहरी आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक सीमाओं को भी समाहित करते हैं:

• कर्म बंध: कर्मों और उनके परिणामों की श्रृंखला, जो व्यक्ति को जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) से बांधती है। • मल बंध: आत्मा की अशुद्धियाँ या दोष, जिसमें आणव (व्यक्तित्व/अहंकार), कर्म (क्रिया), और माया (भ्रम/भौतिकता) शामिल हैं। ये आवरण आत्म-साक्षात्कार को रोकते हैं। • माया बंध: भौतिक संसार और उसके क्षणिक सुखों का भ्रम, जो चेतना को संवेदी अनुभवों से बांधता है और उसे अपने सच्चे दिव्य स्वरूप को पहचानने से रोकता है। • पशु बंध: 'पशु' या इन बंधनों में उलझी हुई व्यक्तिगत आत्मा की स्थिति, 'पति' (भगवान) के विपरीत जो मुक्त है।

महान मुक्तिदाता विमोचक के रूप में, कालभैरव को इन बंधनों के परम नाशक के रूप में पूजा जाता है। वह दिव्य शक्ति हैं जो कर्म की रस्सियों को काटती हैं, मल की अशुद्धियों को घोलती हैं, और माया के भ्रमों को तोड़ती हैं। उनकी मुक्ति केवल दर्द से बचना नहीं है बल्कि आध्यात्मिक स्वतंत्रता (मोक्ष) की ओर ले जाने वाला एक मौलिक परिवर्तन है।

अपनी तीव्र कृपा (कृपा) के माध्यम से, वह भक्तों को निम्न में सक्षम बनाते हैं:

• संसार के चक्र से मुक्त होना। • अपने अहंकार और शरीर तथा मन के साथ झूठी पहचान पर विजय प्राप्त करना। • आत्म-ज्ञान प्राप्त करना और दिव्य के साथ अपनी आंतरिक एकात्मता का अनुभव करना। • भय, आसक्ति और पीड़ा से मुक्ति पाना।

शिव का यह रूप विशेष रूप से भ्रम और अज्ञान की उन संरचनाओं को नष्ट करके आत्माओं को मुक्त करता है जो विभिन्न स्तरों पर अस्तित्व का निर्माण करती हैं। वह आत्मा के लिए परम चिकित्सक हैं, जो बांधने वाली हर चीज के विघटन का विधान करते हैं।

651. विजयाय

विजय और पराक्रम के परम् स्वरूप को नमन।

विस्तार : विजयाय नाम संस्कृत शब्द 'विजय' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "जीत," "सफलता," या "विजय प्राप्त करना।" यह परम सफलता और सभी बाधाओं पर विजय प्राप्त करने की स्थिति को दर्शाता है।

विजयी (The Victorious One) विजय के रूप में, कालभैरव उन सभी शक्तियों पर पूर्ण और अजेय विजय का प्रतीक हैं जो आध्यात्मिक प्रगति और ब्रह्मांडीय व्यवस्था में बाधा डालती हैं। यह केवल एक क्षणिक जीत नहीं, बल्कि दिव्य के लिए अस्तित्व की एक शाश्वत और अंतर्निहित स्थिति है। वह वह है जो अज्ञान, भ्रम, नकारात्मकता और लौकिक सीमाओं पर लगातार विजय प्राप्त करता है।

काल और मृत्यु पर विजय प्राप्त करने वाला (Conqueror of Time and Death) कालभैरव के संदर्भ में, विजय विशेष रूप से काल (समय) और मृत्यु पर उनकी विजय को संदर्भित करता है। वह समय के स्वामी हैं, उसकी बाधाओं के अधीन नहीं हैं, और इस प्रकार, वह अपनी विनाशकारी शक्ति पर लगातार विजयी होते हैं। वह अपने भक्तों को मृत्यु के भय और पुनर्जन्म के चक्र पर विजय प्रदान करते हैं।

विजय प्रदान करने वाला (Bestower of Victory) अपने भक्तों के लिए, कालभैरव की विजय के रूप में पूजा करने से उन्हें अपनी बाधाओं को दूर करने की शक्ति मिलती है - चाहे वह अहंकार और क्रोध जैसे आंतरिक संघर्ष हों, या बाहरी चुनौतियाँ और शत्रु हों। वह प्रयासों में सफलता, भय के सामने साहस, और मुक्ति की आध्यात्मिक खोज में अंतिम विजय प्रदान करते हैं।

दिव्य शक्ति का प्रतीक (Symbol of Divine Power) यह नाम उनके अदम्य दिव्य अधिकार और शक्ति को उजागर करता है, जो यह सुनिश्चित करता है कि अंततः धर्म अधर्म पर विजय प्राप्त करता है। वह परम शक्ति है जो सभी प्रकार की अराजकता और अधर्म को पराजित करके संतुलन और व्यवस्था को बहाल करती है।

652. विशिष्ठाय

उन परब्रह्म को नमन जो सभी में सबसे विशिष्ट, उत्कृष्ट और विशेष हैं।

विस्तार : विशिष्टाय नाम संस्कृत शब्द "विशिष्ट" से लिया गया है, जिसका अर्थ है प्रतिष्ठित, उत्कृष्ट, विशेष, श्रेष्ठ, या अद्वितीय गुणों से युक्त होना।

विशिष्ट और उत्कृष्ट (Distinguished and Excellent) यह विशेषण भगवान कालभैरव की सर्वोच्च श्रेष्ठता और अद्वितीय प्रकृति पर जोर देता है। विशाल हिंदू देवमंडल में और सृष्टि के सभी पहलुओं में, वे अद्वितीय रूप से शक्तिशाली, बुद्धिमान और महत्वपूर्ण के रूप में खड़े हैं। उनकी विशिष्टता समय के परम नियंत्रक, भयंकर रक्षक और मुक्ति प्रदान करने वाले के रूप में उनकी भूमिका से उत्पन्न होती है। वे केवल कई में से उत्कृष्ट नहीं हैं, बल्कि एक अद्वितीय सत्ता हैं जिनके गुण तुलना से परे हैं।

विशेष और अद्वितीय (Special and Unique) यह शब्द यह भी दर्शाता है कि कालभैरव ऐसे गुणों और एक ब्रह्मांडीय कार्य के स्वामी हैं जो सामान्य नहीं हैं। उनका अद्वितीय स्वरूप, भय (काल) और उस पर विजय (भैरव) का प्रतीक, उन्हें अलग करता है। वे न केवल अपनी विनाशकारी क्षमता में विशेष हैं, बल्कि वरदान देने वाले, पापों को धोने वाले और आध्यात्मिक साधकों के लिए मार्गदर्शक के रूप में अपने परोपकारी पहलू में भी विशेष हैं। यह विशिष्टता परब्रह्म, परम वास्तविकता के साथ उनके प्रत्यक्ष तादात्म्य से भी उत्पन्न होती है, जो उन्हें दिव्य का सबसे विशिष्ट प्रकटीकरण बनाती है।

श्रेष्ठ और सर्वोच्च (Pre-eminent and Supreme) विशिष्ट आगे श्रेष्ठता को दर्शाता है। कालभैरव अपने क्षेत्र में सर्वोच्च माने जाते हैं - समय पर महारत, पवित्र स्थानों (विशेषकर शक्तिपीठों से संबंधित मंदिरों) की सुरक्षा, और न्याय प्रदान करने तथा नकारात्मक शक्तियों को समाप्त करने की उनकी क्षमता। वे इन क्षेत्रों में परम सत्ता हैं, और उनकी शक्ति अद्वितीय है, जो उन्हें उन सभी से ऊपर रखती है जो समान कार्य कर सकते हैं।

दार्शनिक महत्व (Philosophical Significance) दार्शनिक रूप से, विशिष्ट एक अद्वैतवादी समझ की ओर इशारा करता है जहाँ परम सत्ता (इस संदर्भ में कालभैरव) सबसे विशेष और मौलिक वास्तविकता है, जिससे अन्य सभी वास्तविकताएँ उत्पन्न होती हैं, और जिसमें वे अंततः लौट आती हैं। वे आवश्यक विलक्षणता हैं जो अपनी सभी अभिव्यक्तियों से अपनी प्रकृति में भिन्न हैं, जबकि साथ ही उनमें व्याप्त भी हैं।

653. वृषवाहनाय

नंदी नामक दिव्य बैल को अपने पवित्र वाहन के रूप में धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : वृषवाहनाय नाम वृषभ (बैल) और वाहन (सवारी) से लिया गया है। यह नाम कालभैरव को, भगवान शिव के एक पहलू के रूप में, उनके शाश्वत और प्रतिष्ठित वाहन, दिव्य बैल नंदी के साथ पहचानता है।

पवित्र वाहन: नंदी नंदी केवल परिवहन का एक साधन नहीं है, बल्कि शैव धर्म में एक गहरा प्रतीक है। वह शिव के प्रमुख गण (परिचर), भूतगणों के प्रमुख और एक सर्वोच्च भक्त हैं। उनकी उपस्थिति हमेशा शिव से पहले होती है, जो उनके महत्व पर जोर देती है।

नंदी का प्रतीकवाद: • धर्म: नंदी धर्म (धार्मिकता, ब्रह्मांडीय व्यवस्था, कर्तव्य) का प्रतीक हैं। उनके चार पैर धर्म के चार स्तंभों का प्रतीक हैं: तपस (तपस्या), शौच (पवित्रता), दया (करुणा), और सत्य (सत्य)। जब शिव नंदी की सवारी करते हैं, तो यह दर्शाता है कि शिव धर्म के संरक्षक और स्वामी हैं, जो न्याय और धार्मिकता के साथ ब्रह्मांड का मार्गदर्शन करते हैं। • शक्ति और दृढ़ता: बैल अपार शारीरिक और आध्यात्मिक शक्ति, पौरुष और अटूट एकाग्रता का प्रतीक है। नंदी आध्यात्मिक प्राप्ति के लिए आवश्यक अटूट एकाग्रता और शक्तिशाली दृढ़ता का प्रतिनिधित्व करते हैं। • पवित्रता और भक्ति: नंदी को भक्ति और बेदाग पवित्रता के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है। उनकी उपस्थिति यह दर्शाती है कि कालभैरव, शिव की तरह, शुद्ध भक्ति और धार्मिक आचरण के माध्यम से सुलभ हैं। • वासना पर नियंत्रण: एक सफेद बैल वासना को वश में करने और उच्च चेतना प्राप्त करने का भी प्रतीक है। शिव का नंदी पर सवार होना सभी सांसारिक इच्छाओं पर उनकी महारत और उनकी पूर्ण समता को दर्शाता है।

ब्रह्मांडीय महत्व कालभैरव के लिए, जो समय को नियंत्रित करते हैं और उल्लंघनों को दंडित करते हैं, नंदी की सवारी करना ब्रह्मांडीय कानून के अंतिम मध्यस्थ और धर्म के संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है। इसका तात्पर्य यह है कि उनके उग्र स्वरूप में भी, उनके कार्य

धार्मिक सिद्धांतों में निहित हैं और ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने के उद्देश्य से हैं। यह यह भी बताता है कि समय और भय की सीमाओं को पार करने का मार्ग, जिसे कालभैरव मूर्त रूप देते हैं, धर्म के पालन और अटूट भक्ति के माध्यम से है।

654. विश्वेशाय

जो संपूर्ण ब्रह्मांड के सर्वोच्च और निर्विवाद स्वामी हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : विश्वेशाय नाम संस्कृत के शब्दों विश्व (ब्रह्मांड, सब, संपूर्ण, पूरा) और ईश (स्वामी, मालिक, शासक) का एक यौगिक है।

ब्रह्मांड के सर्वोच्च स्वामी विश्वेशाय स्पष्ट रूप से शिव को संपूर्ण ब्रह्मांड का सर्वोच्च और निर्विवाद स्वामी, शासक और मालिक घोषित करता है। यह केवल एक शक्तिशाली देवता होने से कहीं अधिक है; यह सभी सृष्टि, संरक्षण और संहार पर उनकी परम संप्रभुता और नियंत्रण को दर्शाता है। वह ब्रह्मांडीय संयोजक, आदि प्रेरक और ब्रह्मांड के भीतर सभी घटनाओं, प्राणियों और लोकों पर पूर्ण अधिकार रखते हैं।

सर्वव्यापी प्रभुत्व विश्व शब्द उनके प्रभुत्व की समग्रता और पूर्णता पर जोर देता है। इसमें केवल तारों, ग्रहों और आकाशगंगाओं का भौतिक ब्रह्मांड ही नहीं, बल्कि सूक्ष्म लोक, दिव्य प्राणी, प्रकृति के नियम, समय और स्वयं चेतना भी शामिल है। उनके अधिकार क्षेत्र से बाहर या उनकी शक्ति से स्वतंत्र कुछ भी नहीं है।

विशेषताओं से परे अन्य देवताओं के विपरीत, जिनका विशिष्ट पहलुओं पर प्रभुत्व हो सकता है (जैसे इंद्र का स्वर्ग पर, या वरुण का महासागरों पर), विश्वेशाय एक सर्वव्यापी, अद्वितीय प्रभुत्व को इंगित करता है जो नियंत्रण और शक्ति के अन्य सभी रूपों को समाहित करता है। वह देवताओं के स्वामी, परम संप्रभु हैं।

दार्शनिक महत्व दार्शनिक रूप से, यह नाम इस अद्वैत सत्य की ओर इशारा करता है कि संपूर्ण ब्रह्मांड दिव्य चेतना की अभिव्यक्ति है, जिसमें शिव ही वह परम चेतना हैं। वह अंतर्यामी (ब्रह्मांड के भीतर निवास करने वाले) और पारलौकिक (उससे परे) दोनों हैं। विश्वेशाय को नमन करना उस अद्वितीय, सर्वव्यापी और परम वास्तविकता को स्वीकार करना है जो सभी अस्तित्व को नियंत्रित करती है।

655. विविधाय

विविध, अनेक और विभिन्न रूपों में प्रकट होने वाले को नमन।

विस्तार : विविधाया नाम संस्कृत शब्द विविध से लिया गया है, जिसका अर्थ है "अनेक", "विविध", "विभिन्न" या "कई प्रकार के"। यह दिव्य के बहुआयामी स्वरूप को खूबसूरती से दर्शाता है, विशेष रूप से भगवान शिव और कालाभैरव के रूप में उनकी ब्रह्मांडीय अभिव्यक्तियों के संबंध में।

अनंत रूपों के स्वामी यह नाम दर्शाता है कि दिव्य, अपने पूर्ण सार में, किसी एक रूप या अवधारणा तक सीमित नहीं हो सकता है। यह रूपों की एक अनंत श्रृंखला में प्रकट होता है, प्रत्येक परिपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण होता है। कालाभैरव के लिए, यह केवल उनके कई भैरव रूपों (जैसे अष्ट भैरव या 64 भैरव) को ही संदर्भित नहीं करता है, बल्कि उन अनगिनत तरीकों को भी संदर्भित करता है जिनसे वे भक्तों के सामने प्रकट होते हैं, ब्रह्मांड में वे विभिन्न भूमिकाएँ निभाते हैं, और वे विविध ऊर्जाएँ जो वे धारण करते हैं। वे स्थान, समय या परिभाषा से सीमित नहीं हैं।

उत्कृष्टता और अंतर्निहितता (Transcendence and Immanence) विविधाया दिव्य के उत्कृष्ट और अंतर्निहित दोनों पहलुओं को इंगित करता है। जबकि वे अंततः सभी रूपों से परे हैं (उत्कृष्ट), वे प्रत्येक रूप के भीतर भी मौजूद हैं (अंतर्निहित)। यह विविधता विखंडन का संकेत नहीं है बल्कि

समग्रता और पूर्णता का है। प्रत्येक रूप, चाहे वह सौम्य हो या उग्र, उनकी अद्वितीय, सर्व-समावेशी वास्तविकता का एक अनूठा पहलू प्रस्तुत करता है।

ब्रह्मांडीय लीला (Cosmic Play) विभिन्न रूप दिव्य की ब्रह्मांडीय लीला का हिस्सा हैं। इन विविध अभिव्यक्तियों के माध्यम से, कालाभैरव सृष्टि के साथ जुड़ते हैं, उसे बनाए रखते हैं, और अंततः उसे भंग करते हैं, पूरे ब्रह्मांडीय नाटक पर अपने अंतिम नियंत्रण और रचनाकारत्व का प्रदर्शन करते हैं। प्रत्येक रूप एक विशिष्ट कार्य करता है, ब्रह्मांड की भव्य योजना के भीतर एक विशेष आवश्यकता को पूरा करता है या एक विशिष्ट सबक सिखाता है।

आध्यात्मिक महत्व भक्त के लिए, कालाभैरव को विविधाया के रूप में पहचानना इस गहरी समझ को बढ़ावा देता है कि दिव्य को किसी भी रूप में अनुभव और पूजा जा सकता है जो किसी के आध्यात्मिक मार्ग के साथ प्रतिध्वनित होता है। यह एक समावेशी दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है, विभिन्न आध्यात्मिक परंपराओं और अंतिम वास्तविकता के लिए दृष्टिकोणों की वैधता को स्वीकार करता है। यह साधक को सतही मतभेदों से परे देखने और दिव्य की अंतर्निहित एकता को उसके सभी विविध अभिव्यक्तियों में समझने के लिए प्रोत्साहित करता है।

656. वादिन

सर्वोच्च प्रस्तावक, परम वक्ता और सत्य के समर्थक को नमन।

विस्तार : वादिन् (Vādin) नाम संस्कृत मूल "वद्" (vad) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "बोलना," "कहना," "घोषित करना," या "तर्क करना।"

परम वक्ता वादिन् के रूप में, भगवान कालभैरव परम वक्ता हैं। इसका अर्थ है कि उनके कथन परम सत्य हैं, जो विवाद या पुनर्व्याख्या से परे हैं। जब वे बोलते हैं, तो वह ब्रह्मांडीय नियम की आवाज़ होती है, वह अपरिवर्तनीय सिद्धांत जो अस्तित्व को नियंत्रित करता है। यह पहलू उनके सर्वोच्च न्यायकर्ता की भूमिका से जुड़ता है, जहाँ उनका निर्णय अंतिम और अचूक होता है।

सत्य के प्रतिपादक वे धर्म (धर्मपरायणता) और सत्य (सत्य) के अधिवक्ता, व्याख्याता और रक्षक होने के अर्थ में "प्रतिपादक" (वादिन्) हैं। किसी भी ब्रह्मांडीय बहस या संघर्ष में, वे परम सत्ता के रूप में खड़े होते हैं, जो सही और सत्य है उसे व्यक्त और स्थापित करते हैं। उनका भाषण केवल ध्वनि नहीं है; यह परम वास्तविकता के सार से ओत-प्रोत है, जो गहन आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और सिद्धांतों को प्रकट करता है।

तर्क-वितर्क में विशेषज्ञ अधिक सूक्ष्म अर्थ में, एक "वादिन्" दार्शनिक बहस या तर्क-वितर्क में विशेषज्ञ को भी संदर्भित कर सकता है। इस संदर्भ में, कालभैरव पूर्ण तर्क और अकाट्य ज्ञान का प्रतीक हैं जिससे सभी संदेह और अज्ञानता दूर हो जाती है। वे गलत विचारों को पराजित करते हैं और सर्वोच्च ज्ञान स्थापित करते हैं। उनकी चुप्पी भी एक प्रकार का भाषण हो सकती है – परम शांति और अतिक्रमण की ध्वनि जो सभी बौद्धिक दुविधाओं को हल करती है।

भक्तों के लिए महत्व भक्तों के लिए, कालभैरव को वादिन् के रूप में आह्वान करने का अर्थ है स्पष्टता, सत्य और असत्य के निष्कासन की तलाश करना। इसका तात्पर्य जटिल सत्यों को समझने और न्याय की तलाश में मार्गदर्शन की इच्छा से है, यह जानते हुए कि वे धर्मपरायणता के साथ जुड़े लोगों के लिए परम अधिवक्ता हैं।

657. वेदांगाय

जिनके अंग वेदों के सहायक अनुशासन हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : वेदाङ्गाय नाम एक गहन वर्णन है जो कालभैरव को वेदों की संरचना और समझ से जोड़ता है, जो हिंदू धर्म के मूलभूत ग्रंथ हैं। यह वेद (ज्ञान, पवित्र ग्रंथ) और अंग (अंग, भाग, सहायक अनुशासन) का एक यौगिक है।

वेदों के अंग वेदांग छह सहायक अनुशासन हैं जो पारंपरिक रूप से वेदों से जुड़े हैं, जो उनके उचित उच्चारण, छंद, व्याकरण, व्युत्पत्ति, अनुष्ठानों के लिए खगोलीय गणना और दार्शनिक समझ के लिए आवश्यक हैं। ये हैं: • शिक्षा (ध्वनिविज्ञान): उचित उच्चारण और स्वर विज्ञान। • कल्प (अनुष्ठान): वैदिक अनुष्ठानों और यज्ञों के नियम और प्रक्रियाएं। • व्याकरण (व्याकरण): वैदिक भाषा की संरचना को नियंत्रित करने वाले नियमों की प्रणाली। • निरुक्त (व्युत्पत्ति): कठिन वैदिक शब्दों की व्याख्या। • छंद (छंदशास्त्र): वैदिक छंदों और काव्य रूपों का अध्ययन। • ज्योतिष (खगोल विज्ञान/ज्योतिष): खगोलीय पिंडों का विज्ञान, अनुष्ठानों के लिए शुभ समय की गणना के लिए आवश्यक।

वैदिक ज्ञान का मूर्त रूप "जिनके अंग वेदांग हैं" के रूप में वर्णित होने से, कालभैरव को केवल वेदों के स्वामी या संरक्षक के रूप में नहीं, बल्कि उनके साक्षात मूर्त रूप के रूप में चित्रित किया गया है। वे इन पवित्र ग्रंथों और उनके सहायक विज्ञानों में निहित ज्ञान और बुद्धि का जीवंत रूप हैं। जैसे शरीर के कार्य के लिए अंग अभिन्न होते हैं, वैसे ही वैदिक ज्ञान की समझ और अनुप्रयोग के लिए वेदांग अनिवार्य हैं।

ज्ञान का स्रोत यह नाम दर्शाता है कि कालभैरव सभी ज्ञान के परम स्रोत और धारक हैं, विशेष रूप से वेदों में समाहित गहन आध्यात्मिक ज्ञान के। इन प्राचीन अनुशासनों के साथ उनका जुड़ाव उन्हें अपार विद्या, व्यवस्था और ब्रह्मांडीय बुद्धिमत्ता की आभा प्रदान करता है। उन्हें वेदाङ्गाय के रूप में पूजना आध्यात्मिक प्रगति के लिए आवश्यक सच्चे ज्ञान और अंतर्दृष्टि के प्रदाता के रूप में उनकी भूमिका की स्वीकृति है।

658. वेदविदे

sacred वेदों के परम ज्ञाता और स्वामी को नमन।

विस्तार : वेदविद नाम वेद और विद से बना एक संयुक्त संस्कृत शब्द है।

• वेद (Veda): यह हिंदू धर्म के पवित्र ग्रंथों को संदर्भित करता है, जिन्हें शाश्वत, स्वयंभू (अपौरुषेय) और दिव्य रहस्योद्घाटन माना जाता है। वे सभी ज्ञान (विद्या) के स्रोत हैं।

• विद (Vid): इस मूल का अर्थ है "जानना," "समझना," या "परिचित होना।" जब "विद" के रूप में उपयोग किया जाता है, तो यह "ज्ञाता" या "स्वामी" को दर्शाता है।

वेदों के परम ज्ञाता "वेदविद" के रूप में, कालभैरव को वेदों के परम स्वामी और ज्ञाता के रूप में मान्यता प्राप्त है। इसका तात्पर्य यह है कि वे केवल शास्त्रों से परिचित नहीं हैं, बल्कि उनके सार को ही आत्मसात करते हैं और उनके गहन, छिपे हुए अर्थों को समझते हैं। वे वह स्रोत हैं जहाँ से वैदिक ज्ञान निकलता है और वे ही हैं जो इसके ब्रह्मांडीय महत्व को पूरी तरह से समझते हैं।

वैदिक ज्ञान का मूर्त रूप यह नाम दर्शाता है कि कालभैरव समस्त वैदिक ज्ञान के साक्षात् स्वरूप हैं। वेदों में ब्रह्मांड, धर्म (धार्मिक आचरण), कर्म (क्रिया), मोक्ष (मुक्ति), और दिव्य के स्वरूप के बारे में ज्ञान समाहित है। वेदों के ज्ञाता होने के कारण, भैरव इन मूलभूत सत्यों को आत्मसात करते हैं।

आध्यात्मिक ज्ञान के मार्गदर्शक भक्तों के लिए, कालभैरव का यह पहलू एक अनुस्मारक है कि वे उन्हें उच्चतम आध्यात्मिक ज्ञान की ओर ले जा सकते हैं, जो अंततः आत्मा (आत्मन) और ब्रह्म का ज्ञान है। इस पहलू पर ध्यान करके, व्यक्ति अज्ञानता को दूर करने और वेदों में प्रतिपादित

वास्तविकता के स्वरूप में सच्ची अंतर्दृष्टि प्राप्त करने का प्रयास करता है।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था और धर्म वेद ब्रह्मांडीय व्यवस्था (ऋत) और धर्म को भी बनाए रखते हैं। चूंकि कालभैरव समय और ब्रह्मांडीय नियम के संरक्षक हैं, इसलिए वेदविद के रूप में उनकी पहचान इस दिव्य व्यवस्था के संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका को पुष्ट करती है, जो वैदिक भजनों के माध्यम से स्थापित और प्रकट होती है।

659. मायाय

ब्रह्मांडीय भ्रम और जादुई रचनात्मक शक्ति के स्वामी को नमन।

विस्तार : माया नाम भ्रम की ब्रह्मांडीय शक्ति को संदर्भित करता है, जो हिंदू दर्शन में एक मौलिक अवधारणा है।

ब्रह्मांडीय भ्रम (The Cosmic Illusion) माया दिव्य की एक आंतरिक शक्ति है, विशेष रूप से शिव की (और अन्य परंपराओं में विष्णु की भी), जिसके माध्यम से ब्रह्मांड प्रकट होता है। यह गैर-मौजूद होने के अर्थ में अवास्तविक नहीं है, बल्कि यह उस चीज़ को संदर्भित करती है जो क्षणभंगुर, सदा-परिवर्तनशील और परम, अपरिवर्तनीय सत्य (ब्रह्म या परमशिव) की तुलना में वास्तविकता के निचले क्रम की है। यह वह आवरण है जो घटनात्मक दुनिया को निरपेक्ष से भिन्न और अलग दिखाता है। यह संपूर्ण ब्रह्मांड, अपने अनंत रूपों, नामों और गतिविधियों के साथ, माया का एक खेल है।

रचनात्मक शक्ति (Creative Power) माया निरपेक्ष की जादुई, रचनात्मक शक्ति भी है। यह वह शक्ति (दिव्य ऊर्जा) है जिसके माध्यम से अव्यक्त व्यक्त होता है। यह रचनात्मक क्षमता आश्चर्यजनक और असीमित है, जो मन, इंद्रियों, तत्वों और दुनिया की सभी विविध वस्तुओं और अनुभवों को जन्म देती है। इसलिए, माया को नमस्कार करना भैरव को इस ब्रह्मांडीय रचनात्मकता के परम स्रोत और सूत्रधार के रूप में स्वीकार करना है।

भ्रम का स्वामी (Master of Illusion) "माया के स्वामी" के रूप में, भैरव इस भ्रम से भ्रमित नहीं होते हैं; बल्कि, वे इसे सीधे नियंत्रित करते हैं। वे माया को अपनी सृष्टि, संरक्षण और संहार के साधन के रूप में उपयोग करते हैं। साधारण प्राणियों के लिए, माया उन्हें जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) से बांधती है, जिससे व्यक्तित्व की भावना और क्षणभंगुर दुनिया से लगाव पैदा होता है। हालांकि, दिव्य के लिए, माया एक लीला (दिव्य खेल) है, शक्ति की एक सचेत अभिव्यक्ति है।

माया से मुक्तिदाता (Liberator from Maya) भैरव को माया के रूप में नमस्कार करके, भक्त ज्ञान और भ्रम की बंधनकारी शक्ति से मुक्ति चाहते हैं। वे ही हैं जो माया का पर्दा उठा सकते हैं, वास्तविकता के सच्चे स्वरूप और व्यक्तिगत आत्मा के सार्वभौमिक आत्मा के साथ एकात्मता को प्रकट कर सकते हैं।

660. विश्वेश्वराय

संपूर्ण ब्रह्मांड के सर्वोच्च स्वामी और नियंत्रक को नमन।

विस्तार : विश्वेश्वर (कभी-कभी विश्वेश्वरा भी लिखा जाता है) नाम एक गहरा विशेषण है, जो दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों: विश्व और ईश्वर का एक यौगिक है।

विश्व (Viśva): इस शब्द का अर्थ है "सब," "ब्रह्मांड," "समष्टि," या "अस्तित्व की समग्रता।" इसमें वह सब कुछ शामिल है जो है, सभी रचनाएँ, सभी प्राणी और सभी घटनाएँ, चाहे वे व्यक्त हों या अव्यक्त।

ईश्वर (Īśvara): इस शब्द का अर्थ है "स्वामी," "नियंत्रक," "शक्तिशाली," "सार्वभौम," या "परम सत्ता।" यह एक दिव्य इकाई को दर्शाता है जिसके पास किसी चीज़ पर शक्ति, अधिकार और प्रभुत्व है।

ब्रह्मांड के सर्वोच्च स्वामी (कॉस्मिक नियंत्रक) (Supreme Lord of the Universe - Cosmic Controller) विश्वेश्वर के रूप में, शिव (कालभैरव के रूप में) को पूरे ब्रह्मांड के एकमात्र, निरपेक्ष और सर्वोच्च स्वामी के रूप में मान्यता प्राप्त है। इसका अर्थ है कि वह केवल अन्य देवताओं में से एक नहीं हैं, बल्कि सभी ब्रह्मांडीय प्रक्रियाओं - सृष्टि, पालन और संहार - के परम संयोजक और स्वामी हैं। वह प्रकृति के नियमों, समय के चक्रों और सभी प्राणियों के भाग्य को नियंत्रित करते हैं। यह उपाधि अस्तित्व की विशालता पर उनकी असीम शक्ति और प्रभुत्व पर जोर देती है, जिससे वह ब्रह्मांडीय संप्रभु बन जाते हैं।

सर्वव्यापी दिव्य (The All-Encompassing Divine) यह नाम उनकी सर्वव्यापकता और अंतर्निहितता का भी अर्थ है। वह ब्रह्मांड से अलग नहीं हैं बल्कि उसमें व्याप्त हैं, जो कुछ भी मौजूद है उसका सार और आधार हैं। सभी के स्वामी के रूप में, वह ब्रह्मांड में प्रत्येक कण और प्रत्येक चेतना के पीछे की प्रेरक शक्ति हैं। विश्वेश्वर की भक्ति उनकी परम वास्तविकता की स्थिति को स्वीकार करती है, वह जिससे सभी चीजें उत्पन्न होती हैं और जिसमें अंततः सभी चीजें लौट आती हैं। यह नाम विशेष रूप से काशी (वाराणसी) में शिव से जुड़ा है, जहाँ उन्हें प्रसिद्ध रूप से काशी विश्वनाथ, ब्रह्मांड के स्वामी (या विश्वनाथ के स्वामी, एक प्रमुख ज्योतिर्लिंग) के रूप में पूजा जाता है।

661. वीरभद्राय

भयंकर और वीर योद्धा, वीरभद्र को नमन।

विस्तार : वीरभद्र भगवान शिव का एक शक्तिशाली और दुर्जेय स्वरूप है, जो विशेष रूप से दक्ष यज्ञ के दौरान उनके क्रोध से उत्पन्न हुआ था। यह नाम स्वयं वीर (नायक, योद्धा, पराक्रमी) और भद्र (शुभ, परोपकारी, गौरवशाली) के संयोजन से बना है, जो एक विरोधाभासी फिर भी गहरा अर्थपूर्ण विशेषण बनाता है।

भयंकर योद्धा स्वरूप (The Fierce Warrior Form) वीरभद्र परम युद्ध कौशल और अदम्य शक्ति का प्रतीक है। उन्हें हजार भुजाओं, तीन आँखों और एक भयानक रूप वाला बताया गया है, जो अक्सर खोपड़ियों की माला से सुशोभित होते हैं। यह स्वरूप शिव की विनाशकारी शक्ति का प्रतीक है जो विशेष इरादे से प्रकट हुई है - धर्म को बनाए रखने और उन लोगों को पराजित करने के लिए जो दिव्य व्यवस्था का उल्लंघन करते हैं। उनकी भयंकरता यादृच्छिक नहीं बल्कि उद्देश्यपूर्ण है, जो ब्रह्मांडीय संतुलन की ओर निर्देशित है। इस पहलू में, वह असंतुलन को ठीक करने के लिए दिव्य की तात्कालिक और अत्यधिक शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

क्रोध का शुभ पहलू (The Auspicious Aspect of Fury) भले ही वह भयानक हों, उनके नाम का "भद्र" पहलू महत्वपूर्ण है। उनकी भयंकरता अंततः परोपकारी उद्देश्यों के लिए है। वीरभद्र के कार्य, यद्यपि हिंसक और विनाशकारी होते हैं, शुभ होते हैं क्योंकि वे शुद्ध करते हैं और व्यवस्था को पुनः स्थापित करते हैं। वह अहंकार, अनादर और अधर्म को नष्ट करते हैं, नवीनीकरण और पवित्र परंपरा की पुनः स्थापना का मार्ग प्रशस्त करते हैं। वह ब्रह्मांड को उन लोगों से बचाते हैं जो आध्यात्मिक सिद्धांतों को कमजोर करेंगे।

दिव्य न्याय का प्रतीक (Symbol of Divine Justice) वीरभद्र दिव्य न्याय का प्रतीक हैं। दक्ष के यज्ञ के विनाश के दौरान शिव के क्रोध से उनका उद्भव यह दर्शाता है कि भक्ति भी विनम्रता और श्रद्धा के साथ अर्पित की जानी चाहिए, और दिव्य के प्रति अनादर के गंभीर परिणाम होते हैं। वह भक्तों के रक्षक और उन लोगों के दुर्जेय विरोधी हैं जो ब्रह्मांडीय कानून का उल्लंघन करते हैं।

आध्यात्मिक महत्व (Spiritual Significance) भक्त के लिए, वीरभद्र पर ध्यान करने से साहस, बाधाओं को दूर करने की क्षमता और अपने आंतरिक राक्षसों का सामना करने की शक्ति प्राप्त हो सकती है। वह एक भयंकर संरक्षक हैं जो आध्यात्मिक साधकों को उनके मार्ग पर सुरक्षित रखते हैं,

उन्हें नकारात्मक शक्तियों - बाहरी और आंतरिक दोनों - को नष्ट करने में मदद करते हैं जो उनकी प्रगति में बाधा डालती हैं।

662. वीरासीनाय

उस एक को नमस्कार जो वीर आसन (योद्धा की मुद्रा) में विराजमान है और जो वीरता में प्रतिष्ठित है।

व्याख्या/विस्तार : यह नाम भगवान भैरव की स्थिति और मानसिक अवस्था दोनों को दर्शाता है। यह दो शब्दों से बना है: 'वीर' (नायक, योद्धा, साहसी) और 'आसीन' (बैठा हुआ या स्थापित)। यह भैरव के उस स्वरूप को नमन है जहाँ वे असीम शक्ति और संयम के साथ एक विशिष्ट योगिक मुद्रा में स्थित हैं।

वीर-मुद्रा का प्रतीक (Symbol of the Heroic Posture) शारीरिक रूप से, 'वीरासन' योग और तंत्र में एक विशिष्ट आसन है, जिसे योद्धाओं या तपस्वियों की बैठने की मुद्रा कहा जाता है। भगवान भैरव को अक्सर इस मुद्रा में दर्शाया जाता है, जो यह सूचित करता है कि यद्यपि वे बैठे हुए हैं, वे शिथिल या निष्क्रिय नहीं हैं। उनका यह आसन पूर्ण एकाग्रता, संतुलन और किसी भी क्षण कार्रवाई करने की तत्परता को दर्शाता है। यह एक राजा और एक योगी दोनों के बैठने की शैली का मिश्रण है—राजसी और अनुशासित।

स्थिरता में भी गतिशीलता (Dynamism in Stillness) 'वीरासीनाय' विरोधाभास का एक सुंदर उदाहरण है। आमतौर पर एक 'वीर' (योद्धा) को गति या युद्ध के मैदान में देखा जाता है, लेकिन यहाँ उन्हें 'आसीन' (बैठे हुए) दिखाया गया है। यह दर्शाता है कि सच्ची शक्ति के लिए हमेशा आक्रामक गति की आवश्यकता नहीं होती। भगवान भैरव अपनी स्थिरता में भी इतने शक्तिशाली हैं कि केवल उनकी उपस्थिति ही नकारात्मक शक्तियों को भयभीत करने के लिए पर्याप्त है। यह एक संचित शक्ति (potential energy) है जो नियंत्रण में है लेकिन विस्फोटक क्षमता रखती है।

तान्त्रिक 'वीर' अवस्था (The Tantric 'Vira' State) तंत्र साधना में, साधकों की तीन श्रेणियों (पशु, वीर, और दिव्य) में से 'वीर' वह साधक होता है जिसने अपने भय और द्वैत को जीत लिया है। 'वीरासीनाय' के रूप में, भगवान भैरव उस सर्वोच्च 'वीर' चेतना में पूर्णतः स्थित हैं। वह न केवल बाहरी शत्रुओं के विजेता हैं, बल्कि उन्होंने इंद्रियों और मन के आंतरिक शत्रुओं पर भी विजय प्राप्त कर ली है। वह वीरता और आत्म-विजय के आसन पर विराजमान हैं।

आध्यात्मिक महत्व (Spiritual Significance) भक्त के लिए, भैरव का यह स्वरूप जीवन के तूफानों के बीच स्थिर रहने की प्रेरणा देता है। 'वीरासीनाय' पर ध्यान करने से साधक को अपने संकल्प में दृढ़ता और मन की चंचलता को रोकने की शक्ति मिलती है। यह हमें सिखाता है कि सच्चा साहस केवल बाहरी लड़ाई लड़ना नहीं है, बल्कि अराजकता (chaos) के बीच शांत, सतर्क और निडर होकर 'आसीन' (स्थित) रहना है। यह आसन आध्यात्मिक आत्मविश्वास और भयहीनता का संचार करता है।

663. विधये

उस एक को नमस्कार जो स्वयं विधान, पवित्र विधि, नियति और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के मूर्त रूप हैं।

व्याख्या/विस्तार : 'विधये' शब्द संस्कृत के 'विधि' (Vidhi) शब्द का चतुर्थी विभक्ति रूप है। 'विधि' का अर्थ व्यापक है—इसमें नियम, कानून, भाग्य, आज्ञा, व्यवस्था और पवित्र अनुष्ठान करने की पद्धति शामिल है। भगवान भैरव को 'विधये' कहकर पुकारना यह स्वीकार करना है कि वे ही इस चराचर जगत को चलाने वाले परम नियम और संचालक शक्ति हैं।

परम विधाता और नियति के स्वामी (Supreme Ordainer and Lord of Destiny) आमतौर पर ब्रह्मा को विधाता कहा जाता है, लेकिन भैरव (जो काल या समय के भी स्वामी हैं) 'विधि' के भी अधिपति हैं। यहाँ यह नाम दर्शाता है कि भगवान भैरव स्वयं वह शक्ति हैं जो प्राणियों का भाग्य निर्धारित करते हैं। संसार की कोई भी घटना उनकी इच्छा और उनके द्वारा निर्धारित 'विधान' (कानून) के बिना घटित नहीं हो सकती। वह कर्मों के फलों का आवंटन करने वाले हैं; वह तय करते हैं कि किस कार्य का क्या परिणाम (विधि) होगा।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था के नियामक (Regulator of Cosmic Order) ब्रह्मांड अराजकता में नहीं चल रहा है; यह एक निश्चित 'विधि' या प्रणाली के तहत संचालित होता है। सूर्य का उगना, ऋतुओं का बदलना और जीवन-मृत्यु का चक्र—यह सब एक अटल नियम (Law) है। भगवान भैरव इस व्यवस्था के केंद्र में हैं। 'विधये' के रूप में, वे वह शक्ति हैं जो यह सुनिश्चित करती हैं कि ब्रह्मांड के कानून—गुरुत्वाकर्षण से लेकर कर्म के सिद्धांत तक—सुचारू रूप से कार्य करें। वे अव्यवस्था (Chaos) को व्यवस्था (Order) में परिवर्तित करने वाले सूत्रधार हैं।

शास्त्र और पवित्र अनुष्ठान (Scripture and Sacred Ritual) धार्मिक संदर्भ में, 'विधि' का अर्थ शास्त्रों द्वारा निर्धारित पूजा और अनुष्ठान के नियम भी हैं। भैरव को तंत्र और आगम शास्त्रों का स्रोत माना जाता है। अत: वह स्वयं 'पवित्र विधि' हैं। यह नाम इंगित करता है कि सही ज्ञान, सही कार्य (क्रिया), और मोक्ष प्राप्त करने का सही तरीका (methodology) उन्हीं से उत्पन्न होता है। वह साधक को सही मार्ग दिखाने वाले मार्गदर्शक हैं।

आध्यात्मिक महत्व (Spiritual Significance) भक्त के लिए, 'विधये' को नमन करना अपने अहंकार को ईश्वरीय इच्छा के प्रति समर्पित करना है। यह स्वीकार करना है कि जीवन हमारी क्षुद्र योजनाओं से नहीं, बल्कि एक उच्चतर दैवीय योजना (Divine Plan) से संचालित होता है। इस नाम का जप साधक को अनुशासित होने की प्रेरणा देता है और यह विश्वास दिलाता है कि उसके जीवन की नियति एक सर्वोच्च, न्यायपूर्ण और सर्वशक्तिमान सत्ता (भैरव) के हाथों में सुरक्षित है।

664. विराजे

उस एक को नमस्कार जो अत्यंत तेजस्वी रूप से चमकते हैं और परम संप्रभु के रूप में शासन करते हैं।

व्याख्या/विस्तार : 'विराजे' शब्द संस्कृत की मूल धातु 'विराज' (Virāj) से व्युत्पन्न है, जिसके दो गहरे और परस्पर जुड़े अर्थ हैं: 'अत्यधिक चमकना' (Radiance/Brilliance) और 'शासन करना' (To Rule/Sovereignty)। भगवान भैरव के लिए यह नाम उनकी दीप्तिमान महिमा और उनके निर्विवाद अधिकार दोनों का उत्सव मनाता है।

परम दीप्ति और तेज (Supreme Brilliance and Radiance) यद्यपि भगवान भैरव अक्सर अंधकार या 'काल' (कालापन) से जुड़े होते हैं, वे स्वयं शुद्ध चेतना का प्रकाश (प्रकाश-विमर्श) हैं। 'विराजे' के रूप में, वे स्वयं-प्रकाशित (self-luminous) हैं। वे केवल किसी बाहरी स्रोत से नहीं चमकते, बल्कि वे वह आदिम अग्नि और तेज हैं जो सूर्य, चंद्रमा और सितारों को चमकने की शक्ति देते हैं। उनका यह तेज अज्ञान के अंधेरे को चीरने वाली आध्यात्मिक ज्ञान की ज्योति है। वह अपनी भव्यता में देदीप्यमान होकर 'विराजमान' हैं।

सार्वभौमिक संप्रभुता (Universal Sovereignty) संस्कृत में 'राज्' धातु का अर्थ राजा होना या शासन करना है, और 'वि' उपसर्ग विशिष्टता या तीव्रता को जोड़ता है। अतः, 'विराजे' का अर्थ है 'विशिष्ट शासक' या 'सम्राट'। भैरव केवल एक देवता नहीं हैं, वे ब्रह्मांड के संप्रभु शासक हैं। यह नाम पुष्टि करता है कि सम्पूर्ण सृष्टि उनके शासन (Regal authority) के अधीन है। वह अपनी शक्ति में स्वतंत्र हैं और किसी के अधीन नहीं हैं। वह सृष्टि के केंद्र में एक राजा की भांति स्थित हैं, जो पूर्ण नियंत्रण और गरिमा के साथ संसार को चलाते हैं।

गौरवशाली उपस्थिति (The Glorious Presence) हम अक्सर कहते हैं कि देवता 'विराजमान' हैं। इसका अर्थ है कि वह केवल मौजूद नहीं हैं, बल्कि महिमा और वैभव के साथ उपस्थित हैं। भगवान भैरव सृष्टि के कण-कण में, और विशेष रूप से काशी जैसे पवित्र स्थानों में या भक्त के हृदय कमल में, अपनी पूरी दिव्यता और ऐश्वर्य के साथ सुशोभित हैं। उनका यह रूप साधारण नहीं, बल्कि भव्य और उत्कृष्ट है।

आध्यात्मिक महत्व (Spiritual Significance) साधक के लिए, 'विराजे' नाम का जप एक प्रार्थना है कि भगवान भैरव हमारे भीतर की चेतना में 'विराजमान' हों। यह उनसे अज्ञानता के अंधकार को अपने ज्ञान के तेज से नष्ट करने की विनती है, ताकि हमारी आत्मा अपने वास्तविक, चमकदार स्वरूप को पुनः प्राप्त कर सके और हम अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर एक शासक (स्वामी) की तरह जी सकें, न कि एक गुलाम की तरह।

665. व्यवसायाय

उस एक को नमस्कार जो दृढ़ संकल्प, अथक प्रयास और निश्चित कर्म के मूर्त रूप हैं।

व्याख्या/विस्तार : 'व्यवसाय' (Vyavasaya) शब्द आधुनिक हिंदी में अक्सर 'व्यापार' या 'धंधे' के लिए प्रयोग किया जाता है, लेकिन संस्कृत और आध्यात्मिक संदर्भ में इसका अर्थ बहुत गहरा और भिन्न है। इसका अर्थ है- निश्चयात्मक बुद्धि, दृढ़ संकल्प, उत्साह, उद्योग और परिश्रम। भगवान भैरव को 'व्यवसायाय' कहना उन्हें इच्छाशक्ति और क्रियाशक्ति के परम स्रोत के रूप में पहचानना है।

अडिग संकल्प और निश्चय (Unshakeable Resolve and Determination) भगवान भैरव 'व्यवसायात्मक बुद्धि' (एकल-चित्त निश्चय) के प्रतीक हैं। जिस प्रकार गीता में भगवान कृष्ण "व्यवसायात्मिका बुद्धि" (निश्चयात्मक बुद्धि) की बात करते हैं, भैरव उसी अटूट फोकस का अवतार हैं। जब वह किसी कार्य का संकल्प लेते हैं, तो वह 'अमोघ' होता है—यानी उसे कोई बदल नहीं सकता। यह नाम उनके उस पहलू को दर्शाता है जो अनिश्चितता (doubt) और विकल्प (विकल्प) से मुक्त है। वह पूर्ण स्पष्टता और दृढ़ता हैं।

सृजनात्मक क्रियाशीलता (The Force of Creative Activity) यह नाम भगवान भैरव की 'क्रिया शक्ति' को दर्शाता है। वह निष्क्रिय साक्षी मात्र नहीं हैं; वह ब्रह्मांड के निरंतर चलने वाले कार्यकलापों के पीछे की प्रेरणा शक्ति हैं। 'व्यवसाय' का अर्थ यहाँ 'उद्योग' या 'प्रयास' है। सृष्टि का चक्र चलाने, उसका संहार करने और पुन: सृजन करने के लिए जिस निरंतर ऊर्जा और 'काम' की आवश्यकता होती है, वह भैरव ही हैं। वह अथक परिश्रमी हैं जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था को गतिशील रखते हैं।

आलस्य के विनाशक (Destroyer of Lethargy) नकारात्मक अर्थों में, मन की सुस्ती, संशय और आलस्य मनुष्य के सबसे बड़े शत्रु हैं। 'व्यवसायाय' के रूप में, भैरव जड़ता (tamas) के विरोधी हैं। वह अग्नि के समान हैं जो अकर्मण्यता को जला देती है। वह वह आवेग हैं जो रुके हुए को गति देते हैं और सोए हुए को जगाते हैं। जहाँ भैरव हैं, वहाँ गतिरोध नहीं हो सकता; वहाँ केवल प्रगति और परिणाम होता है।

आध्यात्मिक महत्व (Spiritual Significance) एक साधक के लिए, 'व्यवसायाय' का ध्यान अत्यंत शक्तिशाली है। आध्यात्मिक मार्ग पर सबसे बड़ी बाधा मन का भटकाव और संकल्प की कमी है। इस नाम का जप भक्त के भीतर दृढ़ इच्छाशक्ति (Iron Will) जगाता है। यह साधक को अपनी साधना में अनुशासित रहने, विलंब (procrastination) को त्यागने और मोक्ष प्राप्ति के लक्ष्य की ओर 'व्यवसायात्मिका' (एकाग्र) मन से बढ़ने की शक्ति प्रदान करता है। यह जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए मानसिक दृढ़ता का वरदान देता है।

666. व्यवस्थानाय

उस एक को नमस्कार जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था, स्थिरता और संरचना के परम आधार हैं।

व्याख्या/विस्तार : संस्कृत शब्द 'व्यवस्था' (Vyavasthā) और 'व्यवस्थान' (Vyavasthāna) का अर्थ है—किसी वस्तु को उचित स्थान पर रखना, नियम, स्थिरता, दृढ़ता, और एक व्यवस्थित संरचना। यद्यपि भैरव को अक्सर प्रलय और विघटन से जोड़ा जाता है, यह नाम प्रकट करता है कि वे ही इस ब्रह्मांड को एक संगठित इकाई (Cosmos) के रूप में धारण करने वाली शक्ति हैं।

ब्रह्मांडीय क्रम के वास्तुकार (Architect of Cosmic Order) अव्यवस्था (Chaos) और व्यवस्था (Order) एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। भगवान भैरव 'व्यवस्थानाय' के रूप में अराजकता को रोकते हैं और ब्रह्मांड के हर तत्व को उसके उचित स्थान पर स्थापित करते हैं। वह यह सुनिश्चित करते हैं कि ग्रह अपनी कक्षाओं में रहें, पंचतत्व अपने गुणों का पालन करें, और सृष्टि के नियम टूटे नहीं। यह वह शक्ति है जो परमाणुओं को एक साथ रखती है और आकाशगंगाओं को उनकी स्थिति में बनाए रखती है। वह संरचना (structure) का आधार हैं जिसके बिना ब्रह्मांड बिखर जाएगा।

सीमाओं और मर्यादा के संस्थापक (Establisher of Boundaries) 'स्थान' का अर्थ है जगह। 'व्यवस्थान' का अर्थ है चीजों को उनकी सीमाओं और मर्यादों में अलग-अलग स्थापित करना। भैरव ही तय करते हैं कि जीव, देवता, दानव और प्रकृति की सीमाएँ क्या हैं। वह सुनिश्चित करते हैं कि जीवन और मृत्यु के बीच का चक्र संतुलित रहे। क्षेत्रपाल (क्षेत्र के रक्षक) के रूप में, वे भौतिक और आध्यात्मिक दोनों लोकों में हर शक्ति और प्राणी के लिए सीमा रेखाएँ (boundaries) तय करते हैं, ताकि अतिक्रमण न हो।

स्थिरता और दृढ़ता (Stability and Steadfastness) यह नाम दृढ़ता (Steadfastness) का भी प्रतीक है। परिवर्तनशील जगत में, भैरव वह अचल धुरी (Axis) हैं जिसके चारों ओर संसार घूमता है। वे परम स्थिर हैं। प्रलय के समय भी, जब सब कुछ नष्ट हो रहा होता है, तब भी उनकी 'व्यवस्था' (ईश्वरीय योजना) ही शासन करती है। वह अस्तित्व का वह आधार हैं जो कभी डगमगाता नहीं है।

आध्यात्मिक महत्व (Spiritual Significance) एक साधक के लिए, 'व्यवस्थानाय' का अर्थ आंतरिक अराजकता को शांत करना है। हमारा मन अक्सर विचारों और भावनाओं की उथल-पुथल से भरा होता है। भगवान भैरव की इस रूप में आराधना करने से साधक के जीवन में मानसिक संतुलन, अनुशासन और भावनात्मक स्थिरता आती है। यह हमें जीवन में 'व्यवस्थित' होने की, सही दिनचर्या और यम-नियमों का पालन करने की, और अपनी आत्मा की वास्तविक 'स्थिति' को पहचानने की प्रेरणा और शक्ति प्रदान करता है।

667. वीरचूडामणये

उस एक को नमस्कार जो सभी वीरों और योद्धाओं के मस्तक पर सुशोभित मुकुट-मणि (शिरोमणि) हैं।

व्याख्या/विस्तार : 'चूडामणि' वह रत्न होता है जिसे शिखा या सिर के सबसे ऊपरी भाग पर पहना जाता है। यह सर्वोच्चता, श्रेष्ठता और सबसे कीमती होने का प्रतीक है। भगवान भैरव को 'वीरचूडामणये' कहना यह उद्घोषणा करना है कि सृष्टि के समस्त पराक्रमी और साहसी सत्ताओं में उनका स्थान सबसे ऊँचा है।

वीरों के सम्राट (The Crown Jewel of Heroes) ब्रह्मांड में अनेक वीर हैं—चाहे वे देवता हों, गंधर्व हों, या महान योद्धा हों। लेकिन भगवान भैरव उन सब में सर्वश्रेष्ठ हैं। जैसे शरीर में सिर का स्थान सबसे ऊपर होता है और सिर पर रत्न सुशोभित होता है, वैसे ही वीरों की किसी भी सभा में भैरव का स्थान सर्वोच्च है। उनकी वीरता अन्य सभी के लिए एक मानक (benchmark) है। उनकी बहादुरी के सामने अन्य सभी वीरों का तेज फीका पड़ जाता है। वे साहस की पराकाष्ठा हैं।

भय पर विजय का प्रतीक (Symbol of Conquering Fear) सच्चा 'वीर' वह नहीं है जो केवल युद्ध लड़ता है, बल्कि वह है जो भय को जीतता है। भगवान भैरव काल (समय) और मृत्यु के भय से परे हैं। चूँकि उन्होंने सबसे महान शत्रु 'मृत्यु' को जीत लिया है (कालभैरव के रूप में), इसलिए वे निर्विवाद रूप से वीरों के शिरोमणि हैं। वह उन राक्षसों और भयावह स्थितियों का सामना करते हैं जिनसे अन्य देवता भी कतराते हैं, जिससे उनका स्थान सर्वोपरि सिद्ध होता है।

तंत्र के 'वीर' साधकों के स्वामी (Master of Tantric Adepts) तंत्र साधना के संदर्भ में, 'वीर' एक उच्च कोटि का साधक होता है जो श्मशान साधना करता है और भयावह का सामना निडरता से करता है। 'वीरचूडामणये' के रूप में, भगवान भैरव ऐसे सभी सिद्धों और तांत्रिक वीरों के आराध्य और मार्गदर्शक हैं। वह 'वीर साधना' के शिखर हैं। तंत्र के मार्ग पर चलने वाला हर वीर अंततः उन्हीं के स्वरूप को प्राप्त करने की आकांक्षा रखता है।

आध्यात्मिक महत्व (Spiritual Significance) भक्त के लिए, यह नाम प्रेरणा का स्रोत है। इसका अर्थ है कि हमें अपने भीतर की वीरता को जगाकर उसे 'चूडामणि' की तरह शुद्ध और उच्च रखना चाहिए। भगवान भैरव की इस रूप में आराधना करने से भक्त के भीतर हीन भावना समाप्त होती है और आत्म-गौरव का संचार होता है। वह साधक को संसार के संघर्षों में एक रत्न की भाँति चमकने और सर्वोच्च साहस के साथ जीवन जीने की शक्ति प्रदान करते हैं।

668. विराजे

उस परम सत्ता को नमस्कार जो सर्वोच्च, तेजस्वी और संप्रभु शासक के रूप में स्थित हैं।

व्याख्या/विस्तार : शब्द 'विराज' का एक अर्थ होता है— 'वह जिसका कोई राजा नहीं है' (विगतः राजा यस्य सः) अर्थात जो स्वयं सर्वोच्च है और जिसके ऊपर कोई अन्य सत्ता नहीं है। साथ ही, इसका अर्थ ब्रह्मांडीय 'विराट' स्वरूप से भी है। भगवान भैरव को 'विराजे' पुकारना उनकी अद्वितीय स्थिति और अनन्य शक्ति का सम्मान है।

निरंकुश और सर्वोच्च संप्रभुता (Absolute and Supreme Sovereignty) पिछले संदर्भ में हमने उनकी चमक (दीप्ति) पर ध्यान दिया था, लेकिन यहाँ 'विराजे' का अर्थ उनके अधिकार (Authority) से है। ब्रह्मांड में कई देवता, ग्रह और शक्तियाँ हैं जो 'शासन' करती हैं, लेकिन वे सभी किसी न किसी नियम या उच्च शक्ति के अधीन हैं। केवल भैरव ही 'स्वराट' (स्वयं के शासक) हैं। वह किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं हैं; वे स्वयं कानून हैं। उनकी इच्छा ही सृष्टि का संविधान है। उनका शासन अखंड और चुनौती-विहीन है।

ब्रह्मांडीय विराट स्वरूप (The Cosmic Form/Virat Swarupa) यह नाम 'विराट' (Virat) शब्द से गहराई से जुड़ा है, जो व्यक्त ब्रह्मांड (manifested universe) का प्रतीक है। 'विराजे' के रूप में, भगवान भैरव केवल एक मानवरूपी देवता नहीं हैं, बल्कि यह विशाल ब्रह्मांड—अरबों आकाशगंगाएँ, तारे और ग्रह—उनका ही शरीर है। वे इस विराट रचना के रूप में चमक रहे हैं। हम जो कुछ भी देखते हैं, वह उनका ही 'विराजमान' रूप है। वह दृश्यमान जगत की भव्यता हैं।

विशिष्ट महिमा और आकर्षण (Distinct Glory and Charm) संस्कृत में 'राजते' (Rajate) का अर्थ 'शोभायमान होना' या 'आकर्षक होना' भी है। भगवान भैरव अपनी शक्ति में भयानक हो सकते हैं, लेकिन अपनी भव्यता में वे अत्यंत सुंदर और आकर्षक हैं। यह एक राजसी सौंदर्य (Regal splendor) है। उनकी उपस्थिति किसी कोने में छिपी हुई नहीं है, बल्कि वह सिंहासन पर बैठे राजा की तरह स्पष्ट, प्रभावशाली और महिमामयी है, जो सभी को अपनी ओर खींचती है।

आध्यात्मिक महत्व (Spiritual Significance) साधक के लिए, 'विराजे' का जप यह स्मरण कराता है कि हमारी अंतरात्मा ही हमारे शरीर और मन की सच्ची शासक है। हम अक्सर अपनी इंद्रियों या बाहरी परिस्थितियों के गुलाम बन जाते हैं। भैरव का यह नाम हमें प्रेरणा देता है कि हम अपनी 'स्व-

सत्ता' (Self-sovereignty) को पहचानें। यह हमें सिखाता है कि हमें अपने जीवन के सिंहासन पर खुद 'विराजमान' होना चाहिए, न कि अपनी आदतों या भयों का दास बनकर रहना चाहिए। यह पूर्ण आत्म-स्वामित्व (Self-mastery) का मंत्र है।

669. वालखिल्याय

उन परमेश्वर को नमस्कार जो दिव्य 'वालखिल्य' ऋषियों के स्वरूप में हैं—वे जो आकार में सूक्ष्म होते हुए भी आध्यात्मिक शक्ति में अत्यंत विशाल हैं।

व्याख्या/विस्तार : पौराणिक संदर्भ में, वालखिल्य 60,000 ऋषियों का एक समूह है, जिनका आकार मात्र एक अंगूठे (thumb) के बराबर बताया गया है। वे प्रजापति क्रतु की संतान माने जाते हैं और भगवान सूर्य के रथ के चारों ओर रहते हैं। भगवान भैरव को 'वालखिल्य' कहना यह दर्शाता है कि समस्त ऋषियों का तप और उनकी पवित्रता भैरव का ही स्वरूप है।

सूक्ष्मता में असीम शक्ति का विरोधाभास (The Paradox of Power in Smallness) यह नाम भगवान की 'अणिमा' सिद्धि (अणु के समान सूक्ष्म होने की क्षमता) का प्रतीक है। वालखिल्य ऋषि शारीरिक रूप से अत्यंत छोटे हैं, लेकिन उनकी तपस्या और तेज इतना प्रबल है कि देवता भी उनका सम्मान करते हैं। भैरव इस रूप में यह सिद्ध करते हैं कि महानता भौतिक आकार में नहीं, बल्कि आंतरिक 'तपस्' (आध्यात्मिक अग्नि) में निहित है। वे उतने ही सूक्ष्म हैं जितने कि वे विराट हैं; वे विशाल ब्रह्मांड भी हैं और एक परमाणु भी।

सूर्य के तेज के रक्षक (Guardians of Solar Radiance) शास्त्रों के अनुसार, वालखिल्य ऋषि सूर्य देव के रथ के साथ चलते हैं और अपनी स्तुतियों द्वारा सूर्य की तीव्रता को बनाए रखते हैं। 'वालखिल्याय' के रूप में, भगवान भैरव वह शक्ति हैं जो सूर्य को उसका तेज और जगत को प्रकाशित करने की ऊर्जा प्रदान करते हैं। वे ब्रह्मांडीय ज्ञान और प्रकाश (सूर्य) के निरंतर उपासक और रक्षक हैं। यह नाम शुद्धतम सात्विक ऊर्जा और ब्रह्मचर्य का प्रतिनिधित्व करता है।

अंगुष्ठ-मात्र पुरुष (The Thumb-sized Being) उपनिषदों (जैसे कठोपनिषद) में आत्मा को "अंगुष्ठ-मात्र पुरुष" (अंगूठे के आकार का पुरुष) कहा गया है जो हृदय की गुफा में निवास करता है। भगवान भैरव को 'वालखिल्य' कहना इस सत्य को रेखांकित करता है कि वह बाह्य ब्रह्मांड के ईश्वर होने के साथ-साथ हर जीव के हृदय में बैठी अंतरात्मा भी हैं। वह जीवन की वह सूक्ष्म चिंगारी हैं जो शरीर को चेतन रखती है।

आध्यात्मिक महत्व (Spiritual Significance) साधक के लिए, वालखिल्य रूप में भैरव का ध्यान विनम्रता का पाठ है। यह हमें सिखाता है कि बाहरी दिखावे या भौतिक कद-काठी से किसी की शक्ति को नहीं आँकना चाहिए। आध्यात्मिक मार्ग पर, छोटे-छोटे निरंतर प्रयास (वालखिल्य जैसे सूक्ष्म) अंततः अज्ञानता के महान पहाड़ों को हिलाने की क्षमता रखते हैं। यह नाम हमें अपने भीतर के सूक्ष्म, पवित्र और शक्तिशाली आत्म-तत्व से जुड़ने की प्रेरणा देता है।

670. विश्वदेहाय

जिनका शरीर संपूर्ण ब्रह्मांड है, उन (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : विश्वदेहाय नाम एक गहन विशेषण है, जो विश्व (ब्रह्मांड/जगत) और देह (शरीर) का एक यौगिक है। यह नाम कालभैरव को संपूर्ण ब्रह्मांड के अवतार के रूप में वर्णित करता है, जिसका अर्थ है कि ब्रह्मांड स्वयं उनका भौतिक स्वरूप है।

ब्रह्मांडीय शरीर (विश्वरूप) यह अवधारणा विश्वरूप, ईश्वर के ब्रह्मांडीय रूप की याद दिलाती है, जहाँ संपूर्ण सृष्टि, अपने सभी असंख्य रूपों, ऊर्जाओं और प्राणियों के साथ, देवता के शरीर के भीतर समाहित और निर्मित होती है। कालभैरव के लिए, इसका अर्थ है कि अंतरिक्ष, समय, तारे, ग्रह,

पहाड़, नदियाँ, जीवित प्राणी—जो कुछ भी मौजूद है और जिसे देखा या समझा जा सकता है—वह उनके विशाल और अपरिमित शरीर का एक हिस्सा है। उनके बाहर कुछ भी नहीं है; वह अस्तित्व की अंतर्निहित वास्तविकता हैं।

सर्वव्यापकता और अंतर्निहितता विश्वदेहाय कालभैरव की सर्वव्यापकता को रेखांकित करता है। उपनिषदों के ब्रह्म की तरह, वह सृष्टि से अलग नहीं हैं बल्कि पूरी तरह से व्याप्त हैं। प्रत्येक परमाणु और प्रत्येक आकाशगंगा उनके अस्तित्व का एक जटिल हिस्सा है। इसका तात्पर्य यह है कि ब्रह्मांड के किसी भी पहलू की पूजा करना, सार रूप में, स्वयं कालभैरव के एक हिस्से की पूजा करना है। यह उनके अंतर्निहित गुण पर जोर देता है, जिसका अर्थ है कि वह ब्रह्मांड में निहित हैं, न कि केवल उससे परे हैं।

अनंत और सर्व-समावेशी यहाँ "शरीर" को सीमित, भौतिक अर्थ में नहीं समझना चाहिए, बल्कि वास्तविकता के एक अनंत, असीम और सर्व-समावेशी आधार के रूप में समझना चाहिए। यह उनके असीम स्वरूप की ओर इशारा करता है, जहाँ सभी द्वैत और भेद उनके ब्रह्मांडीय रूप में विलीन हो जाते हैं। वह एक साथ धारक और धारित, सृजित और सृष्टिकर्ता हैं।

दार्शनिक महत्व दार्शनिक रूप से, विश्वदेहाय अद्वैतवाद (Advaita) और गैर-द्वैतवाद का एक शक्तिशाली प्रतिपादन है। यह घोषणा करता है कि दिव्य और प्रकट दुनिया के बीच कोई अंतिम अलगाव नहीं है। कालभैरव विश्वदेहाय के रूप में भक्त को याद दिलाते हैं कि ब्रह्मांड की स्पष्ट विविधता केवल एक दिव्य लीला है जो भगवान की एकल, एकीकृत चेतना के भीतर है।

671. विरामाय

जो परम विश्राम स्थल है, ब्रह्मांडीय लय में अंतिम ठहराव है, उन्हें नमन।

विस्तार : विराम (विरामाय) नाम संस्कृत शब्द विराम से लिया गया है, जिसमें गहन दार्शनिक और आध्यात्मिक अर्थ निहित हैं, विशेष रूप से परम दिव्य के संदर्भ में।

परम विश्राम स्थल शाब्दिक रूप से, विराम का अर्थ है "समाप्ति," "विराम," "विश्राम," "स्थिरता," या "अंत।" ब्रह्मांडीय अर्थ में, यह सभी सृष्टि के परम अंत या विघटन—प्रलय—को दर्शाता है। शिव, काल भैरव के रूप में, इस अंतिम समाप्ति का प्रतीक हैं, वह बिंदु जिसके आगे कोई गति या गतिविधि नहीं होती है, जो अस्तित्व के केंद्र में पूर्ण स्थिरता का प्रतिनिधित्व करता है। वह ब्रह्मांडीय श्वास हैं जो सभी चीजों को उनके स्रोत पर वापस ले जाती हैं।

ब्रह्मांडीय लय में अंतिम विराम ब्रह्मांड निर्माण, संरक्षण और विघटन के चक्रों में संचालित होता है। विराम इन चक्रों के बीच के "विराम" को संदर्भित करता है, गैर-प्रकटीकरण की वह स्थिति जहाँ सभी रूप अप्रकट में वापस समाहित हो जाते हैं। यह विराम एक खाली शून्य नहीं है, बल्कि सर्वोच्च, शक्तिशाली स्थिरता की स्थिति है जिससे अंततः नई सृष्टि उभरेगी। काल भैरव, विराम के रूप में, इस आवश्यक शांति के ही प्रतीक हैं जो एक चक्र के अंत को चिह्नित करती है और अगले की क्षमता रखती है।

सभी गतिविधि और भ्रम के विजेता "परम विश्राम स्थल" होने के नाते, वह सभी सांसारिक गतिविधियों, इच्छाओं और माया के भ्रम की समाप्ति का प्रतीक हैं। आध्यात्मिक साधक के लिए, विराम तक पहुँचना गहरी ध्यान (समाधि) की स्थिति तक पहुँचने का अर्थ है जहाँ मन की निरंतर गतिविधि समाप्त हो जाती है, जिससे गहन आंतरिक शांति और अपने वास्तविक स्वरूप की प्राप्ति होती है। वह वह हैं जो जन्म और मृत्यु (संसार) के अंतहीन चक्र से प्राणियों को मुक्त करके दुख का अंत करते हैं।

महान मुक्तिदाता "परम विराम" प्रदान करने वाले के रूप में, वह मुक्तिदाता (मोक्षदाता) भी हैं। वह कर्म के अथक परिश्रम और क्षणभंगुर रूपों से लगाव से मुक्ति प्रदान करते हैं, आत्माओं को परम वास्तविकता में उनके शाश्वत विश्राम के लिए मार्गदर्शन करते हैं। यह विश्राम विनाश नहीं है, बल्कि शुद्ध चेतना की असीमित, कालातीत स्थिति में वापसी है।

672. वसुदाय

सभी धन और निधि को उदारतापूर्वक प्रदान करने वाले को नमन।

विस्तार : वसुदाय नाम वसु (धन, संपदा, ऐश्वर्य, प्रचुरता) और दाया (देने वाला, प्रदान करने वाला, जो प्रदान करता है) का एक यौगिक है।

धन और प्रचुरता के दाता यह नाम कालभैरव के उस पहलू को इंगित करता है जो भौतिक समृद्धि, आध्यात्मिक धन और सभी प्रकार की प्रचुरता का एक परोपकारी प्रदाता है। हिंदू धर्म में, "धन" केवल मौद्रिक लाभ तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें स्वास्थ्य, ज्ञान, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि, संतान और अन्य सभी सकारात्मक गुण भी शामिल हैं जो एक पूर्ण जीवन में योगदान करते हैं।

कुबेर से संबंध भैरव धन और उसके संरक्षण से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। उन्हें देवताओं का कोषाध्यक्ष और कुबेर के धन का संरक्षक माना जाता है। कुबेर, धन के देवता, को अक्सर शिव के एक कट्टर भक्त के रूप में दर्शाया जाता है। यह संबंध कालभैरव की समृद्धि के दाता के रूप में भूमिका स्थापित करता है, यह दर्शाता है कि सभी भौतिक आशीर्वाद अंततः उनकी दिव्य इच्छा और कृपा से प्रवाहित होते हैं।

उनके स्वरूप और शस्त्रों का प्रतीकवाद जबकि भैरव को आमतौर पर भयंकर विशेषताओं के साथ चित्रित किया जाता है, विभिन्न धन, जैसे कि कीमती रत्न, अक्सर उनके स्वरूप को सुशोभित करते हैं या उनकी प्रतिमा विज्ञान में मौजूद होते हैं। यह सभी संसाधनों पर उनके नियंत्रण और अपने भक्तों को उन्हें प्रदान करने की उनकी क्षमता का प्रतीक है।

आध्यात्मिक और भौतिक धन वसुदाय केवल सांसारिक धन को संदर्भित नहीं करता है। गहरे अर्थों में, यह आध्यात्मिक धन के दान का तात्पर्य है: ज्ञान, वैराग्य, मन की शांति, और अंततः, जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति। भैरव वसुदाय के रूप में सांसारिक कल्याण दोनों को सुगम बनाते हैं जो आध्यात्मिक अभ्यास का समर्थन करता है और स्वयं अंतिम आध्यात्मिक खजाने को भी। यह दोहरा पहलू बाधाओं को दूर करने वाले और सभी आकांक्षाओं - भौतिक और आध्यात्मिक - के दाता के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है।

673. वासवे

जो अच्छाई, धन और आठ स्वर्गीय वसुओं में से एक हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : वासव (वासाव) नाम आमतौर पर देवों के राजा इंद्र को संदर्भित करता है, लेकिन कालभैरव के संदर्भ में, इसका गहरा, अधिक प्रतीकात्मक अर्थ है। यह "वस" मूल से लिया गया है, जिसका अर्थ है निवास करना, वस्त्र धारण करना या विकिरण करना।

अच्छाई का निवास अपने नैतिक अर्थ में, वासव उस व्यक्ति को दर्शाता है जो अच्छाई (वसु) का अवतार या निवास स्थान है। कालभैरव, अपने दुर्जेय स्वरूप के बावजूद, अंततः धर्म और धार्मिकता के रक्षक हैं। उनके कार्य, यहाँ तक कि उनके भयानक कार्य भी, मौलिक रूप से ब्रह्मांडीय भलाई के अनुरूप हैं, बुराई का उन्मूलन करते हैं और संतुलन बहाल करते हैं। वह परम सद्गुण हैं जो ब्रह्मांड को शुद्ध और बनाए रखते हैं।

धन और समृद्धि के दाता "वसु" का अर्थ धन, खजाना या समृद्धि भी है। वासव के रूप में, कालभैरव सभी प्रकार के धन—भौतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक—के दाता हैं। अपने भक्तों के लिए, वह उन बाधाओं को दूर करते हैं जो कल्याण में बाधा डालती हैं और प्रचुरता प्रदान करते हैं। यह धन केवल सांसारिक धन नहीं है, बल्कि इसमें ज्ञान, मुक्ति और आंतरिक शांति के आध्यात्मिक खजाने भी शामिल हैं। वह अपनी सुरक्षा में रहने वालों के लिए भौतिक जीविका सुनिश्चित करते हैं, जिससे उन्हें उच्च आध्यात्मिक लक्ष्यों का पीछा करने की अनुमति मिलती है।

आठ वसुओं (दिव्य प्राणियों) में से एक वसु आठ सहायक देवताओं का एक समूह है, जो अक्सर प्राकृतिक घटनाओं और धन से जुड़े होते हैं, जो इंद्र और अग्नि की सेवा करते हैं। कालभैरव को वासव के रूप में पहचान कर, यह इन शक्तिशाली दिव्य प्राणियों पर भी उनकी सर्वोच्चता का तात्पर्य है। यह सभी ब्रह्मांडीय शक्तियों और आशीर्वादों के परम स्रोत और नियंत्रक के रूप में उनकी स्थिति पर जोर देता है जिनका वसु प्रतिनिधित्व करते हैं। उनका सार इन देवताओं के कार्यों में व्याप्त है और उन्हें व्यवस्थित करता है, जिससे वे उनसे श्रेष्ठ हो जाते हैं।

तेजस्वी और सर्वव्यापी "विकिरण करना" के अर्थ से व्युत्पन्न, वासव का अर्थ यह भी हो सकता है कि वह जो शानदार ढंग से तेजस्वी है या जिसकी उपस्थिति सर्वव्यापी है। कालभैरव की दिव्य ऊर्जा सभी अस्तित्व में व्याप्त है, और उनका प्रकाश अज्ञान और अंधकार को दूर करता है। वह प्रबुद्ध चेतना हैं जो सभी चीजों के भीतर निवास करती हैं, अपने भक्तों के लिए मार्ग को रोशन करती हैं।

674. विषेचनाय

पवित्र जल से अभिषेक करने वाले या पवित्र करने वाले को नमन।

विस्तार : नाम विसेचनाय "छिड़काव" या "पवित्र जल से अभिषेक" के कार्य को संदर्भित करता है, जो हिंदू अनुष्ठानों और आध्यात्मिक शुद्धि में गहराई से निहित एक प्रथा है।

छिड़काव का कार्य (विसेचन) विसेचन (विसेचन) का शाब्दिक अर्थ है "छिड़काव", अक्सर अभिषेक या शुद्धि के संदर्भ में। यह सिच् (सिच्) मूल से लिया गया है, जिसका अर्थ है "छिड़कना, डालना, या वर्षा करना"। आध्यात्मिक संदर्भ में, यह कार्य केवल एक भौतिक कार्य नहीं है, बल्कि इसका गहरा प्रतीकात्मक और ऊर्जावान महत्व है। जल, विशेष रूप से पवित्र जल (तीर्थ), को दिव्य ऊर्जा और पवित्रता का वाहक माना जाता है।

प्रतीकात्मक शुद्धि विसेचन के अवतार के रूप में, भगवान कालभैरव परम शुद्धिकारी शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह छिड़काव किसी वस्तु, स्थान या व्यक्ति से भौतिक और सूक्ष्म दोनों प्रकार की अशुद्धियों को दूर करने का प्रतीक है। एक भक्त में, इसका अर्थ है मन (मनस), बुद्धि (बुद्धि) और अहंकार (अहंकार) को नकारात्मक प्रभावों, आसक्तियों और कर्मिक अवशेषों से शुद्ध करना। वह ज्ञान और वैराग्य के पवित्र जल का छिड़काव करते हैं, अज्ञान (अविद्या) और भ्रम (माया) को धो डालते हैं।

अभिषेक और सशक्तिकरण छिड़काव का अनुष्ठान अभिषेक (प्रतिष्ठा) का एक महत्वपूर्ण घटक है, जो एक साधारण वस्तु या स्थान को पवित्र में बदल देता है। विसेचन होने के नाते, कालभैरव वह दिव्य शक्ति हैं जो सभी यज्ञीय अनुष्ठानों, कर्मकांडों और पवित्र स्थानों में पवित्रता और आध्यात्मिक प्रभावकारिता भरते हैं। वह भक्त और चढ़ावे को सशक्त करते हैं, उन्हें दिव्य मिलन के लिए उपयुक्त बनाते हैं।

कृपा के दिव्य प्रदाता रूपक रूप से, विसेचन के रूप में कालभैरव वह हैं जो अपने भक्तों पर अपनी दिव्य कृपा (अनुग्रह) का "छिड़काव" करते हैं। यह कृपा पवित्र जल की तरह बहती है, उनके आध्यात्मिक विकास का पोषण करती है, सुरक्षा प्रदान करती है और बाधाओं को दूर करती है। यह

जीवन देने वाला सार है जो आत्मा को पुनर्जीवित करता है और आंतरिक जागरण की ओर ले जाता है।

ब्रह्मांडीय शुद्धि ब्रह्मांडीय पैमाने पर, वह उस शक्ति का प्रतीक हैं जो समय-समय पर ब्रह्मांड में व्यवस्था को शुद्ध और पुनः स्थापित करती है। जिस प्रकार जल शुद्ध करता है, उसी प्रकार उनका ब्रह्मांडीय प्रभाव नकारात्मक ऊर्जाओं को शुद्ध करता है और संतुलन बहाल करता है, जिससे सृष्टि, संरक्षण और विघटन का निरंतर चक्र सुनिश्चित होता है।

675. वेदवेद्याय

वेदों द्वारा जानने योग्य परम ज्ञान के विषय स्वरूप को नमन।

विस्तार : वेदवेद्य (वेदवेद्याय) नाम एक गहरा धर्मशास्त्रीय कथन है, जो दो संस्कृत शब्दों से बना है: वेद और वेद्य।

वेद: यह हिंदू धर्म के प्राचीन, पवित्र धर्मग्रंथों को संदर्भित करता है, जिन्हें शाश्वत दिव्य रहस्योद्घाटन (श्रुति) माना जाता है। वेद मूलभूत ग्रंथ हैं जो वास्तविकता की प्रकृति, दिव्य और मुक्ति के मार्ग से संबंधित उच्चतम आध्यात्मिक सत्यों को समाहित करते हैं। वे आध्यात्मिक ज्ञान, अनुष्ठानों और दार्शनिक अंतर्दृष्टि के भंडार हैं।

वेद्य: इसका अर्थ है "जानने योग्य," "ज्ञातव्य," या "ज्ञान का विषय।"

वैदिक ज्ञान का परम लक्ष्य इस प्रकार, वेदवेद्य उस एक को इंगित करता है जो वेदों के अध्ययन और बोध के माध्यम से समझने योग्य परम लक्ष्य, सर्वोच्च सत्य और प्राथमिक विषय वस्तु है। यह इस विचार की ओर इशारा करता है कि सभी वैदिक भजन, अनुष्ठान, दार्शनिक चर्चाएँ (उपनिषद), और आध्यात्मिक अभ्यास अंततः इस सर्वोच्च सत्ता—कालभैरव, शिव के एक प्रकटीकरण के रूप में—को जानने और अनुभव करने पर केंद्रित होते हैं।

अतींद्रिय और अंतर्निहित सत्य जबकि वेद विभिन्न देवताओं, ब्रह्मांडीय सिद्धांतों और आध्यात्मिक प्राप्ति के मार्गों का वर्णन करते हैं, वेदवेद्य भैरव को उस परम, अंतर्निहित वास्तविकता के रूप में स्थापित करता है जिसे वेद प्रकट करना चाहते हैं। उनका केवल वेदों में उल्लेख नहीं है, बल्कि वे उनके अस्तित्व का सार और उद्देश्य हैं। इसका तात्पर्य है कि उन्हें समझना इन पवित्र ग्रंथों के मूल संदेश को समझना है।

केवल विद्वत्ता से परे यह नाम सूक्ष्म रूप से यह भी बताता है कि केवल वेदों का पाठ करना या बौद्धिक रूप से समझना अपर्याप्त है। सच्चा "वेद्य" (जानना) दिव्य का प्रत्यक्ष बोध और आध्यात्मिक अनुभव शामिल करता है, जो अंततः भैरव हैं। वे वह हैं जिनकी प्रकृति, गुण और शक्ति तब प्रकट होती है जब वैदिक मंत्रों और दार्शनिक अंतर्दृष्टि के गहरे अर्थों पर चिंतन और आत्मसात किया जाता है।

संक्षेप में, वेदवेद्य कालभैरव को उस सर्वोच्च, सर्वव्यापी वास्तविकता के रूप में घोषित करता है जिसे वेद प्रकाशित करते हैं, वैदिक मार्ग का अनुसरण करने वाले साधक द्वारा प्राप्त किया जाने वाला परम सत्य।

676. वेदाय

उन परमेश्वर को नमन जो पवित्र वेदों के साक्षात स्वरूप हैं।

विस्तार : नाम वेदाय भगवान शिव को वेदों के अवतार, स्रोत और परम सत्य के रूप में संदर्भित करता है। यह नाम हिंदू धर्म के सबसे पवित्र ग्रंथों के साथ उनके गहरे संबंध और परम ज्ञान के प्रकटीकरणकर्ता के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है।

वेदों का मानवीकरण "वेद" शब्द का शाब्दिक अर्थ "ज्ञान" या "बुद्धि" है। वेदों को अपौरुषेय माना जाता है, जिसका अर्थ है "मानव उत्पत्ति का नहीं," बल्कि दिव्य रहस्योद्घाटन (श्रुति)। वेदों के मानवीकरण के रूप में, भगवान शिव को इस आदिम, शाश्वत और अचूक ज्ञान के साथ सीधे पहचाना जाता है। वह केवल वैदिक भजनों का विषय नहीं हैं, बल्कि उनमें निहित सार, अर्थ और शक्ति हैं।

वैदिक ज्ञान का स्रोत भगवान शिव को अक्सर आदिम गुरु के रूप में चित्रित किया जाता है जिन्होंने वैदिक ज्ञान प्रदान किया। पौराणिक कथाएँ ब्रह्मा को वेदों का निर्माण करते हुए दर्शाती हैं, लेकिन शिव को परम स्रोत के रूप में देखा जाता है जिससे ब्रह्मा ने भी यह ज्ञान प्राप्त किया। इसका तात्पर्य है कि वेदों के गहरे सत्य—सृष्टि, संरक्षण, विनाश और मुक्ति के बारे में—शिव के स्वरूप को समझे बिना अगम्य हैं। वेदों में निर्धारित प्रत्येक मंत्र, भजन और अनुष्ठान अंततः परम वास्तविकता की ओर इशारा करता है, जो स्वयं शिव हैं।

वैदिक अध्ययन का लक्ष्य एक साधक के लिए, वेदों का अध्ययन ब्रह्म, परम वास्तविकता को साकार करने का लक्ष्य रखता है। शैव धर्म में, शिव ही यह परम ब्रह्म हैं। इसलिए, वेदाय यह दर्शाता है कि शिव को समझना सभी वैदिक अध्ययन और आध्यात्मिक अभ्यास की परिणति और सच्चा उद्देश्य है। वह ज्ञान हैं, ज्ञाता हैं और ज्ञान के विषय हैं।

वैदिक परंपरा के संरक्षक वेदों के अवतार के रूप में, शिव इन पवित्र ग्रंथों की शाश्वत प्रकृति और संरक्षण का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। उनकी दिव्य उपस्थिति यह सुनिश्चित करती है कि वेदों में निहित ज्ञान मानवता के आध्यात्मिक उत्थान के लिए युगों तक सुलभ और शक्तिशाली बना रहे।

677. वाचस्पतये

जो वाणी के सर्वोच्च स्वामी हैं, सभी भाषाओं के प्रभु को नमन।

विस्तार : वाचस्पति (वाचस्पतये चतुर्थी विभक्ति है) एक गहन और प्राचीन वैदिक विशेषण है, जिसका अर्थ है "वाणी का स्वामी" या "भाषा का अधिपति"। यह मुख्य रूप से देवों के गुरु बृहस्पति से जुड़ा है, लेकिन कालभैरव के संदर्भ में, यह सर्वोच्च चेतना के एक गुण के रूप में एक गहरा, सार्वभौमिक महत्व रखता है।

वाणी और ज्ञान के स्वामी 'वाक्' (वाणी) शब्द में न केवल बोले गए शब्द शामिल हैं, बल्कि संचार के सभी रूप, स्पष्ट अभिव्यक्ति, पवित्र उच्चारण (मंत्र), और वास्तव में, समस्त ज्ञान भी शामिल है। वाचस्पति के रूप में, कालभैरव इन सभी के परम स्रोत और नियंत्रक हैं। वे अभिव्यक्ति की शक्ति, विचार की स्पष्टता और भाषा के माध्यम से व्यक्त गहन ज्ञान के पीछे की दिव्य शक्ति हैं। यह मातृका शक्ति पर उनकी महारत को दर्शाता है, जो ध्वनि और वाणी की शक्ति है जिससे संपूर्ण सृष्टि का उद्भव माना जाता है।

पवित्र ध्वनि (शब्द ब्रह्म) का अवतार हिंदू दर्शन में, विशेष रूप से कश्मीर शैववाद और वेदांत की कुछ शाखाओं में, ब्रह्मांड को शब्द ब्रह्म - ध्वनि या शब्द के रूप में परम वास्तविकता - से उत्पन्न माना जाता है। वाचस्पति, ध्वनि और वाणी के स्वामी के रूप में, इस शब्द ब्रह्म का प्रतीक हैं। वे अव्यक्त (परा वाक्) ध्वनि, सूक्ष्म (पश्यंती वाक्), मानसिक (मध्यमा वाक्), और स्थूल (वैखरी वाक्) वाणी के रूप हैं। यह इंगित करता है कि अभिव्यक्ति की सभी परतें, सूक्ष्मतम विचार से लेकर सबसे ठोस अभिव्यक्ति तक, उनके प्रभुत्व में हैं।

वाक्पटुता और ज्ञान के दाता भक्त वाक्पटुता, ज्ञान और गहन समझ के उपहार के लिए वाचस्पति का आह्वान करते हैं। कालभैरव को वाचस्पति के रूप में स्वीकार करके, व्यक्ति उन्हें स्पष्ट अभिव्यक्ति, बौद्धिक क्षमता और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के परम प्रदाता के रूप में पहचानता है। वे ही हैं जो हमें

सत्य को समझने, उन्हें प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने और सार्थक दार्शनिक चर्चा में संलग्न होने में सक्षम बनाते हैं।

आंतरिक वाक् और ब्रह्मांडीय व्यवस्था बाहरी वाणी से परे, वाचस्पति अंतरात्मा और अंतर्ज्ञान की आंतरिक आवाज को भी संदर्भित करते हैं। वे मौन मार्गदर्शक सिद्धांत हैं जो हमारी समझ को सूचित करते हैं और हमें सत्य की ओर ले जाते हैं। विस्तार से, सभी भाषाओं के स्वामी होने का तात्पर्य ब्रह्मांड के कोड पर उनकी आज्ञा से है, अंतर्निहित सिद्धांत जो अस्तित्व को नियंत्रित करते हैं, दिव्य उच्चारण के माध्यम से ब्रह्मांडीय व्यवस्था के रूप में प्रकट होते हैं।

678. वशिन

जो अपनी इंद्रियों और पूरे ब्रह्मांड पर पूर्ण नियंत्रण रखते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : वशी (Vashī) नाम संस्कृत मूल 'वश' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "वश में करना," "नियंत्रित करना," "दबाना।" यह उस व्यक्ति को दर्शाता है जो स्वामी, संप्रभु या पूर्णतः नियंत्रित है।

इंद्रियों के स्वामी (संवेदी नियंत्रण) जब किसी आध्यात्मिक सत्ता या उन्नत योगी पर लागू होता है, तो वशी उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जिसने अपनी इंद्रियों (इंद्रियों) और अपने मन (मानस) पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर लिया है। इसका तात्पर्य ऐसे व्यक्ति से है जो बाहरी उत्तेजनाओं, इच्छाओं या घृणाओं से विचलित नहीं होता, बल्कि पूर्ण आंतरिक संतुलन और ज्ञान की स्थिति से कार्य करता है। भगवान शिव और भैरव के लिए, यह नियंत्रण स्वाभाविक और सहज है, जो योगिक उपलब्धि के शिखर का प्रतिनिधित्व करता है। वे सुख और दुख, सम्मान और अपमान के द्वंद्वों से अछूते हैं।

ब्रह्मांड के संप्रभु (ब्रह्मांडीय नियंत्रण) व्यक्तिगत नियंत्रण से परे, वशी संप्रभुता और पूरे ब्रह्मांड पर पूर्ण अधिकार को भी दर्शाता है। भैरव, वशी के रूप में, ब्रह्मांडीय प्रक्रियाओं – सृष्टि, पालन और संहार – के परम नियंत्रक और निर्देशक हैं। वे सभी घटनाओं का समन्वय करते हैं, सभी प्राणियों पर शासन करते हैं, और ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) सुनिश्चित करते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि उनकी इच्छा या ज्ञान के बिना कुछ भी नहीं होता है। वे सर्वोच्च शासक हैं, और अस्तित्व में सब कुछ उनके आदेश के अधीन है।

आत्म-नियंत्रण का प्रतीक यह नाम भैरव के उस पहलू को रेखांकित करता है जो परम संन्यासी और योगी हैं, जिनकी शक्ति उनके पूर्ण आत्म-नियंत्रण से आती है। ब्रह्मांड पर उनका नियंत्रण स्वयं पर उनके नियंत्रण से उत्पन्न होता है। वे अटूट चेतना और सर्वोच्च शक्ति की स्थिति से कार्य करते हैं, जो आध्यात्मिक मुक्ति और सर्वशक्तिमानता की आदर्श स्थिति का उदाहरण है।

679. विद्वत्तमाय

सभी विद्वानों में सबसे ज्ञानी और प्रवीण को नमन।

विस्तार : विद्वत्तमाय (Vidvattamāyā) नाम संस्कृत शब्द 'विद्वत्' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "शिक्षित" या "बुद्धिमान", और प्रत्यय '-तम' से, जो अतिशयोक्तिपूर्ण डिग्री को दर्शाता है, जिसका अनुवाद "सबसे अधिक ज्ञानी" या "सबसे बुद्धिमान" होता है।

सभी ज्ञान के सर्वोच्च ज्ञाता यह गुण कालभैरव को सभी ज्ञान, चाहे वह पवित्र हो या लौकिक, के परम भंडार और स्रोत के रूप में घोषित करता है। वह सभी विज्ञानों (विद्या) और कलाओं (कला) के आचार्य हैं, जो मानवीय बुद्धिमत्ता की सीमाओं से परे हैं। उनकी समझ में केवल बौद्धिक शिक्षा ही नहीं, बल्कि सहज आध्यात्मिक ज्ञान (प्रज्ञा) और सत्य की प्रत्यक्ष अनुभूति भी शामिल है।

सभी शास्त्रों और अनुशासनों के स्वामी यहां "ज्ञानी" शब्द का अर्थ वेदों, आगमों, तंत्रों, दर्शनों (दार्शनिक प्रणालियों) और ज्ञान की अन्य सभी शाखाओं सहित सभी प्रकार के ज्ञान पर महारत से है। वह वह हैं जो सभी प्रकार के ज्ञान और प्रबुद्धता प्रदान करते हैं। विद्वान, ऋषि और देवता सभी

इस सर्वोच्च स्रोत से अपनी बुद्धि प्राप्त करते हैं।

शुद्ध चेतना का मूर्त रूप गहरे दार्शनिक अर्थ में, यह ज्ञान केवल संचित जानकारी नहीं है, बल्कि शुद्ध, अविभेदित चेतना (चित्त) की मूलभूत स्थिति है जो शिव का सार है। विद्वत्तमाय के रूप में, वह उस असीमित जागरूकता का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सभी अस्तित्व को प्रकाशित करती है और जिससे सभी संज्ञानात्मक प्रक्रियाएं और जानने के रूप उत्पन्न होते हैं।

अज्ञान के नाशक "सबसे ज्ञानी" होने के नाते, वह परोक्ष रूप से अज्ञान (अविद्या) के सबसे बड़े नाशक भी हैं। विद्वत्तमाय की भक्ति से मन की स्पष्टता, गहन समझ और परम ज्ञान प्राप्त होता है जो जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति (मोक्ष) की ओर ले जाता है। वह अज्ञान के अंधकार को मिटाते हैं, सत्य के प्रकाश को प्रकट करते हैं।

680. वित्तमयाय

सभी धन और समृद्धि के साक्षात स्वरूप वाले को नमन।

विस्तार : वित्तमयाय नाम संस्कृत शब्द वित्त (Vitta) और प्रत्यय -मय (-maya) से बना है, जिसका अर्थ है "से भरा हुआ," "से मिलकर बना हुआ," या "का स्वरूप।"

वित्त (Vitta): यह शब्द मुख्य रूप से "धन," "संपत्ति," "अधिकार," और "पैसा" को संदर्भित करता है। हालांकि, व्यापक दार्शनिक अर्थ में, इसमें ज्ञान, आध्यात्मिक योग्यता और अपने पूर्ण अर्थों में समृद्धि सहित कोई भी मूल्यवान वस्तु शामिल हो सकती है।

धन का स्वरूप जब भगवान कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो वित्तमयाय का अर्थ है कि वह केवल धन के दाता नहीं हैं, बल्कि सभी प्रकार की समृद्धि - भौतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक - का सार, परम स्रोत और स्वरूप हैं। वह वह दिव्य सिद्धांत हैं जिससे सभी धन उत्पन्न होते हैं और अंततः उसी से संबंधित हैं। यह परिप्रेक्ष्य धन की सांसारिक समझ को केवल पैसे या संपत्ति तक सीमित नहीं रखता, बल्कि इसे जीवन, स्वास्थ्य, ज्ञान और आध्यात्मिक समृद्धि की प्रचुरता तक विस्तारित करता है।

प्रचुरता के दाता धन के स्वरूप के रूप में, कालभैरव को समृद्धि और प्रचुरता चाहने वाले भक्त invoc करते हैं। उनकी पूजा से वित्तीय स्थिरता और आध्यात्मिक विकास में आने वाली बाधाओं को दूर करने में मदद मिलती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि उनके भक्त न केवल भौतिक रूप से सुरक्षित हैं बल्कि आध्यात्मिक रूप से भी समृद्ध हैं। यह पहलू उनके परोपकारी स्वभाव को उजागर करता है, जहाँ वे अपने उपासकों के कल्याण के लिए प्रदान करते हैं।

भौतिक संपदा से परे शैव धर्म के संदर्भ में, सच्चा धन अक्सर स्वयं की गहरी समझ, सांसारिक इच्छाओं से वैराग्य और मोक्ष (mokṣa) को शामिल करता है। इस प्रकार, वित्तमयाय का अर्थ यह भी हो सकता है कि वह सर्वोच्च प्रकार का धन - आध्यात्मिक ज्ञान और दुख के चक्रों से मुक्ति प्रदान करते हैं। वह परम खजाना और परम सिद्धि का मार्ग हैं।

681. विश्रुतये

अपनी महान महिमा के लिए विस्तृत रूप से प्रतिष्ठित और विख्यात को नमन।

विस्तार : विश्रुता या विश्रुत नाम कालभैरव के उस पहलू को संदर्भित करता है जो व्यापक रूप से प्रसिद्ध और विख्यात है।

व्यापक रूप से श्रुत और प्रशंसित "विश्रुत" (Vishruta) शब्द संस्कृत मूल "श्रु" (śru) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "सुनना," और उपसर्ग "वि" (vi) का अर्थ है "व्यापक रूप से," "हर जगह," या "विशेष रूप से।" इस प्रकार, विश्रुत का शाब्दिक अर्थ है "व्यापक रूप से सुना गया," "प्रसिद्ध,"

"विख्यात," या "प्रशंसित।" यह दर्शाता है कि कालभैरव की महिमा, कर्म और शक्ति किसी छोटे समूह या क्षेत्र तक सीमित नहीं हैं, बल्कि पूरे ब्रह्मांड में सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य और गाए जाते हैं।

महान महिमा और प्रतिष्ठा यह नाम कालभैरव की अपार महिमा (Mahimā) और उनकी त्रुटिहीन प्रतिष्ठा पर जोर देता है। उनके पराक्रम, जैसे कि ब्रह्मांडीय धर्म को बनाए रखने के लिए ब्रह्मा के पांचवें सिर को काटना, या काशी (वाराणसी) के संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका, पौराणिक हैं और उनकी व्यापक ख्याति का आधार बनते हैं। सभी क्षेत्रों और परंपराओं के भक्त उनके सर्वोच्च अधिकार और शक्ति को पहचानते हैं।

प्रेरणा और विस्मय का स्रोत विश्रुत के रूप में, वे विस्मय और प्रेरणा का एक प्रतीक हैं। उनकी प्रसिद्धि केवल भय पर आधारित नहीं है, बल्कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता और अपने भक्तों को मुक्ति और सुरक्षा प्रदान करने की उनकी क्षमता के प्रति श्रद्धा पर आधारित है। उनका प्रशंसित स्वभाव यह दर्शाता है कि वे देवताओं, राक्षसों, मनुष्यों और अन्य प्राणियों के लिए समान रूप से पूजा और भक्ति का पात्र हैं, सभी उनकी सर्वोच्च स्थिति को स्वीकार करते हैं।

इसलिए, विश्रुत नाम कालभैरव की सार्वभौमिक मान्यता को एक दुर्जेय और परोपकारी देवता के रूप में समाहित करता है, जिनकी महानता तीनों लोकों में प्रशंसित है।

682. विमलोदयाय

जिनकी उपस्थिति पूर्णतः शुद्ध, निर्मल और शुभ है, उन्हें नमन।

विस्तार : विमलोदय नाम दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों का मेल है: विमल और उदय।

विमल: यह शब्द 'मल' (अशुद्धि, दोष, दाग) से बना है, जिसके पहले नकारात्मक उपसर्ग 'वि' लगा है, जिसका अर्थ है "बिना," "से मुक्त," या "से रहित।" इस प्रकार, विमल का अर्थ है "शुद्ध," "निर्मल," "बेदाग," "निष्कलंक," "स्वच्छ," और "शुभ।" आध्यात्मिक संदर्भ में, यह अहंकार, कर्म और सांसारिक आसक्तियों (माया) के दागों से मुक्त पूर्ण शुद्धता की स्थिति को दर्शाता है।

उदय: इस शब्द का अर्थ है "उदय," "प्रकट होना," "अभिव्यक्ति," "भोर," या "समृद्धि।" यह किसी चीज़ के उद्भव या प्रकटीकरण को दर्शाता है।

निर्मल अभिव्यक्ति इसलिए, विमलोदय का अर्थ है "जिसका स्वरूप शुद्ध है," "जिसकी अभिव्यक्ति निर्मल है," या "शुद्ध भोर/उदय।" यह नाम कालभैरव को एक ऐसे रूप में प्रस्तुत करता है जो पूरी तरह से प्राचीन, किसी भी सांसारिक या ब्रह्मांडीय अशुद्धि से अदूषित है। उनका प्रकटीकरण ही पूर्ण शुद्धता और शुभता का प्रतीक है।

द्वैत और अशुद्धि से परे शिव और भैरव के संदर्भ में, जिन्हें अक्सर तीव्र और कभी-कभी भयावह रूपों में चित्रित किया जाता है, "विमलोदय" एक आवश्यक सत्य को उजागर करता है: बाहरी दिखावे या उनके द्वारा निभाई जाने वाली भयंकर भूमिकाओं (जैसे विनाश) के बावजूद, उनका मूल स्वभाव शाश्वत रूप से शुद्ध और बेदाग रहता है। वे अच्छे और बुरे, शुद्धता और अशुद्धि के द्वैत से परे कार्य करते हैं, जो सृजित दुनिया की अवधारणाएं हैं। उनका भस्म (पवित्र राख) का लेप भी सांसारिक अशुद्धि के इस अतिक्रमण का प्रतीक है, क्योंकि राख वह परम शुद्ध अवस्था है जो सभी भौतिक रूपों के भस्म होने के बाद बचती है।

शुभ उपस्थिति ऐसी शुद्धता का "उदय" या "प्रकटीकरण" स्वाभाविक रूप से शुभ होता है। उनका प्रकटीकरण आध्यात्मिक स्पष्टता लाता है, अज्ञानता को दूर करता है, और वातावरण तथा भक्तों के हृदयों को शुद्ध करता है। यह सच्चे ज्ञान और मुक्ति की भोर का प्रतीक है, जो भ्रम के दागों से मुक्त हैं।

683. वैवस्वताय

वर्तमान मनु, मानव जाति के पूर्वज को नमन।

विस्तार : वैवस्वताय नाम भगवान कालभैरव को वैवस्वत मनु से जोड़ता है, जो हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं, जो सृष्टि, समय और ब्रह्मांडीय व्यवस्था में गहन भूमिकाओं का प्रतीक हैं।

वर्तमान मनु: मानवता के जनक वैवस्वत मनु वर्तमान मनु हैं, जो वर्तमान कल्प (ब्रह्मा का ब्रह्मांडीय दिन) में सातवें मन्वंतर (मनु का युग) के अध्यक्ष हैं। उन्हें मानव जाति का जनक, मानवता का पिता और धर्म-प्रवर्तक के रूप में पूजा जाता है, जिन्होंने वर्तमान युग के लिए सामाजिक-धार्मिक संहिता (धर्म) की स्थापना की। उनकी बाढ़ की कथा अन्य प्राचीन बाढ़ मिथकों के समान है, जहाँ उन्हें भगवान विष्णु (अपने मत्स्य अवतार में) द्वारा बचाया गया था, इस प्रकार जीवन और धर्म की निरंतरता सुनिश्चित हुई। "वैवस्वताय" होने से, कालभैरव परोक्ष रूप से मानव अस्तित्व के इस मूलभूत पहलू और उसकी निरंतरता से जुड़े हुए हैं।

विवस्वान (सूर्य देव) के पुत्र वैवस्वत नाम का शाब्दिक अर्थ है "विवस्वान का पुत्र," जो सूर्य देव, सूर्य हैं। यह वंशावली वैवस्वत मनु को सौर ऊर्जा, प्रकाश और जीवनदायी उष्णता के सिद्धांत से भर देती है। कालभैरव को वैवस्वत से जोड़ना यह सुझाव देता है कि भैरव इस जीवन-निर्वाहक शक्ति के सार और स्रोत का प्रतीक हैं, या इसकी ब्रह्मांडीय यात्रा की निगरानी करते हैं।

ब्रह्मांडीय नियामक और धर्म-प्रवर्तक मनु अपने मन्वंतर के लिए धर्म (धार्मिक आचरण, नैतिक कानून) का ढाँचा प्रदान करते हैं। इस प्रकार, वैवस्वताय दिव्य अधिकार और ब्रह्मांडीय कानून का भी प्रतीक है जो मानव जगत को नियंत्रित करता है। कालभैरव का वैवस्वत मनु के साथ जुड़ाव ब्रह्मांडीय व्यवस्था (ऋत) और कर्मिक न्याय के सर्वोच्च नियामक और समर्थक के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है। वह उन कानूनों के अंतिम प्रवर्तक हैं जिन्हें मनु प्रचारित करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि ब्रह्मांडीय संतुलन बना रहे और प्राणी अपने निर्धारित धर्म का पालन करें।

समय और चक्रीय सृष्टि का प्रतीक मन्वंतर स्वयं एक विशाल लौकिक इकाई है, जो सृष्टि और विलय के चक्रों का प्रतीक है। "जो वर्तमान मनु हैं" होने से, कालभैरव को काल के स्वामी (काल) के रूप में पुष्टि की जाती है जो इन विशाल ब्रह्मांडीय चक्रों की देखरेख करते हैं, जिसमें मानवता का वर्तमान युग और उसका अंततः विघटन और पुनर्सृष्टि शामिल है। यह कालभैरव, परम काल, के रूप में उनकी पहचान को और बढ़ाता है, जो वैवस्वत मनु द्वारा निर्देशित मानवता सहित सभी अभिव्यक्तियों के भाग्य को नियंत्रित करते हैं।

684. वसिष्ठाय

सभी में सर्वश्रेष्ठ, और महर्षि वसिष्ठ के स्वरूप को नमन।

विस्तार : वसिष्ठाय नाम अर्थ से समृद्ध है, जो कालभैरव के उत्कृष्ट गुणों और पूजनीय वैदिक ऋषि वसिष्ठ के साथ उनके संबंध दोनों को इंगित करता है।

सर्वश्रेष्ठ (सर्वोच्च गुण) (The Most Excellent - Paramount Quality) "वसिष्ठ" का शाब्दिक अर्थ है "सबसे उत्कृष्ट," "सर्वोत्तम," "सबसे धनी," या "सबसे प्रतिष्ठित।" जब इसे कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह उनकी सर्वोच्च स्थिति और अद्वितीय गुणों को दर्शाता है। वे सभी उग्र रूपों में प्रमुख देवता हैं, सबसे शक्तिशाली रक्षक, नकारात्मकता के सबसे प्रबल संहारक, और ब्रह्मांडीय न्याय के अंतिम प्रदाता हैं। यह उनके क्षेत्र में सर्वोच्च सत्ता के रूप में उनकी स्थिति को उजागर करता है, जो पूर्णता और बेजोड़ क्षमता का प्रतीक है।

महान ऋषि वसिष्ठ (प्रतीकात्मक संबंध) (The Great Sage Vasiṣṭha - Symbolic Association) यह नाम सीधे वैदिक ऋषि वसिष्ठ की ओर भी संकेत करता है, जो सप्तर्षियों (सात महान ऋषियों) में से एक, ब्रह्मा के मानस पुत्र, और इक्ष्वाकु वंश (जिसमें भगवान राम भी शामिल हैं) के कुलगुरु थे। यह संबंध कालभैरव को पारंपरिक रूप से ऋषि से जुड़े गुणों से भर देता है:

• ज्ञान और प्रज्ञा (ज्ञान) (Knowledge and Wisdom - Jnana): ऋषि वसिष्ठ अपने गहन आध्यात्मिक ज्ञान, प्रज्ञा और वेदों में महारत के लिए प्रसिद्ध हैं। कालभैरव को वसिष्ठ के रूप में आह्वान करना यह दर्शाता है कि वे आध्यात्मिक ज्ञान के परम स्रोत हैं, जो भक्तों को आत्मज्ञान और अस्तित्व के गहनतम सत्यों को समझने की दिशा में मार्गदर्शन करते हैं। • आध्यात्मिक अधिकार और मार्गदर्शन (Spiritual Authority and Guidance): वसिष्ठ राजाओं और ऋषियों के आध्यात्मिक गुरु और मार्गदर्शक थे। इसी तरह, कालभैरव आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वालों के लिए एक सर्वोच्च मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं, उनकी आंतरिक यात्रा में सुरक्षा प्रदान करते हैं और बाधाओं को दूर करते हैं। • तपस्या और प्रायश्चित (तपस्या) (Austerity and Penance - Tapasya): ऋषि वसिष्ठ ने कठोर तपस्या की थी। कालभैरव भी शिव के तपस्वी और अनुशासित पहलू का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक कठोरता और केंद्रित तपस्या से प्राप्त शक्ति का प्रतीक है।

धर्म के संरक्षक (Guardian of Dharma) जिस प्रकार ऋषि वसिष्ठ धर्म (धार्मिकता) और सामाजिक व्यवस्था के संरक्षक थे, उसी प्रकार कालभैरव ब्रह्मांडीय व्यवस्था और न्याय के सिद्धांत का प्रतीक हैं। वे उन लोगों को दंडित करते हैं जो धार्मिकता के मार्ग से विचलित होते हैं और उन लोगों की रक्षा करते हैं जो इसका पालन करते हैं।

संक्षेप में, वसिष्ठाय कालभैरव को परम सर्वोच्च, परम उत्कृष्टता के प्रतीक, और पूजनीय प्राचीन ऋषि वसिष्ठ के समान पवित्र ज्ञान और आध्यात्मिक अधिकार के स्रोत के रूप में पूजता है।

685. विगतज्वराय

सभी ज्वर, चिंता और संकट से पूर्णतः मुक्त रहने वाले को नमन।

विस्तार : विगतज्वराय नाम विगत और ज्वर का एक यौगिक है।

विगत: इस संस्कृत शब्द का अर्थ है "गया हुआ," "हटाया गया," "चला गया," "समाप्त," या "से मुक्त।"

ज्वर: शाब्दिक अर्थ है "बुखार" या "गर्मी।" लाक्षणिक रूप से, यह किसी भी प्रकार के संकट, चिंता, दुख, मानसिक पीड़ा, शारीरिक कष्ट, या ऐसी पीड़ा को संदर्भित करता है जो आंतरिक "जलन" या बेचैनी का कारण बनती है। प्राचीन भारतीय चिकित्सा विज्ञान (आयुर्वेद) में, ज्वर सभी प्रकार के बुखारों - शारीरिक और मानसिक दोनों - को संदर्भित करता है।

शारीरिक और मानसिक पीड़ा से मुक्ति विगतज्वर के रूप में, कालभैरव वह हैं जो सभी प्रकार के बुखार, शारीरिक बीमारियों और मानसिक पीड़ाओं से पूरी तरह मुक्त हैं। वे उत्तम स्वास्थ्य, गहन शांति और अशांत अस्तित्व के प्रतीक हैं। यह दर्शाता है कि उनमें कोई आंतरिक उथल-पुथल, दुख या संकट नहीं है। उनका अस्तित्व शुद्ध, अबाधित शांति है।

संकट से मुक्ति प्रदान करने वाले भक्त के लिए, उन्हें विगतज्वराय के रूप में संबोधित करना उनकी शक्ति का आह्वान है कि वे हमारे सभी ज्वरों - हमारी शारीरिक बीमारियों, हमारी मानसिक चिंताओं, हमारी भावनात्मक उथल-पुथल और हमारी आध्यात्मिक पीड़ा - को दूर करें। इस रूप में उनकी पूजा करने से व्यक्ति को शांति और आंतरिक शांति की स्थिति प्राप्त करने में मदद मिलती है,

सांसारिक अस्तित्व के 'बुखार' से मुक्ति मिलती है। यह पहलू कालभैरव की एक परोपकारी देवता के रूप में भूमिका को उजागर करता है जो जीवन के अंतर्निहित कष्टों से सांत्वना और मुक्ति प्रदान कर सकते हैं।

परम शांति का प्रतीक यह नाम उनकी सर्वोच्च प्रकृति को दर्शाता है कि वे सभी द्वंद्वों और आसक्तियों से परे हैं जो दुख का कारण बनती हैं। वे परम संतुलन और आत्म-निहित आनंद की स्थिति में मौजूद हैं, जो ब्रह्मांडीय विलय के बाद और नई सृष्टि से पहले व्याप्त शांति का प्रतीक है।

686. विश्वहर्त्रे

ब्रह्मांड के परम संहारक और विनाशक (भगवान भैरव) को नमन।

विस्तार : विश्वहर्त्रे (विश्वहर्ता) नाम दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: विश्व और हर्ता।

• विश्व (Viśva): यह शब्द "ब्रह्मांड," "समग्रता," "सभी," "संसार," या "संपूर्णता" को दर्शाता है। इसमें वह सब कुछ शामिल है जो अस्तित्व में है—सभी रचना, सभी स्थान और सभी समय।

• हर्ता (Hartā): इसका शाब्दिक अर्थ है "हार्वेस्टर," "दूर ले जाने वाला," "हटाने वाला," "विनाशक," या "वापस लेने वाला।" यह किसी चीज को दूर ले जाने, उसे आत्मसात करने या उसे समाप्त करने की क्रिया को दर्शाता है।

ब्रह्मांड का संहारक (The Destroyer of the Universe) विश्वहर्ता के रूप में, कालभैरव विघटन के परम कारक हैं। वे ब्रह्मांडीय चक्र के अंतिम चरण का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसे प्रलय के नाम से जाना जाता है, जहाँ संपूर्ण ब्रह्मांड को वापस ले लिया जाता है, भंग कर दिया जाता है, या उसकी आदिम अवस्था में पुनः समाहित कर लिया जाता है। यह नकारात्मक अर्थ में विनाशकारी कार्य नहीं है, बल्कि ब्रह्मांडीय शुद्धि और नवीनीकरण की एक आवश्यक प्रक्रिया है, जो सृजन के एक नए चक्र की तैयारी करती है। वे ही हैं जो निर्मित सभी चीजों को "निगलते" या "अन-क्रिएट" करते हैं।

सृष्टि का अतिक्रमण (Transcendence of Creation) यह नाम कालभैरव की सभी अस्तित्व पर पूर्ण संप्रभुता पर जोर देता है। वे केवल एक निर्माता या संरक्षक नहीं हैं, बल्कि वे भी हैं जो सभी प्रकट रूपों का अतिक्रमण करते हैं और अंततः उन्हें भंग करते हैं। यह पहलू भौतिक संसार की क्षणभंगुरता और शिव की परम वास्तविकता को सभी द्वैत और अभिव्यक्तियों से परे उजागर करता है।

अविनाशी सत्य (The Enduring Truth) दार्शनिक दृष्टिकोण से, विश्वहर्ता के रूप में कालभैरव भक्तों को याद दिलाते हैं कि सभी घटनाएँ अस्थायी हैं। वे इस सत्य का प्रतीक हैं कि ब्रह्मांड में सब कुछ समय, क्षय और अंततः विघटन के अधीन है। इस रूप में उन्हें स्वीकार करके, व्यक्ति अस्तित्व की क्षणभंगुर प्रकृति को पहचानता है और उस शाश्वत, अपरिवर्तनीय वास्तविकता में शरण लेता है जिसका वे प्रतिनिधित्व करते हैं।

687. विश्वमोदिने

संपूर्ण ब्रह्मांड में आनंद और प्रसन्नता पाने वाले को नमन।

विस्तार : विश्वमोदिने नाम दो संस्कृत शब्दों से बना है: विश्व और मोदिन्।

• विश्व (Viśva): यह शब्द "संपूर्ण ब्रह्मांड," "ब्रह्मांड," "सर्वव्यापी," या "सब कुछ" को संदर्भित करता है। यह सृष्टि की समग्रता को दर्शाता है, चाहे वह व्यक्त हो या अव्यक्त।

• मोदिन् (Modin) (मुद् से): इस मूल का अर्थ है "आनंदित होना," "प्रसन्न होना," "में प्रसन्नता पाना," या "खुशी महसूस करना।"

सृष्टि में दिव्य आनंद (The Divine Delight in Creation) विश्वमोदिने कालभैरव—और विस्तार से, शिव—को ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित करता है जो संपूर्ण ब्रह्मांडीय लीला में गहरा आनंद और प्रसन्नता पाते हैं। यह एक विरक्त या उदासीन प्रशंसा नहीं है, बल्कि सृष्टि, संरक्षण और संहार के निरंतर नृत्य में एक सक्रिय, आनंदमय भागीदारी है। उनका अस्तित्व ही उस ब्रह्मांड का उत्सव है जिसे वे धारण करते हैं और जिसमें वे व्याप्त हैं।

अतींद्रिय चंचलता (लीला) (Transcendent Playfulness - Lila) यह नाम लीला की अवधारणा को संदर्भित करता है, जो सर्वोच्च सत्ता का दिव्य खेल या क्रीड़ा है। ब्रह्मांड, अपनी सभी जटिलताओं, सुंदरता और यहां तक कि अपनी स्पष्ट कठिनाइयों में भी, इस दिव्य खेल की अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाता है। कालभैरव, विश्वमोदिने के रूप में, इस लीला में आनंद लेते हैं, अपनी सृष्टि के हर पहलू में आंतरिक खुशी पाते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि ब्रह्मांड दिव्य के लिए कोई बोझ या दायित्व नहीं है, बल्कि शाश्वत आनंद का स्रोत है।

अंतर्व्यापकता और व्यापकता (Immanence and Pervasiveness) संपूर्ण ब्रह्मांड "में" आनंद पाकर, यह हर कण और घटना में उनकी अंतर्व्यापक उपस्थिति पर जोर देता है। वे केवल एक बाहरी निर्माता नहीं हैं, बल्कि अस्तित्व के ताने-बाने में गहराई से बुने हुए हैं, भीतर से जीवन का उत्सव मनाते हैं। उनका आनंद सभी सृष्टि में व्याप्त है, जो एक मौलिक आनंद का सुझाव देता है जो ब्रह्मांड के मूल में है।

द्वैत से परे (Beyond Dualities) यह गहरा आनंद उनके अद्वैत स्वरूप से उत्पन्न होता है। चूंकि उनसे कुछ भी अलग नहीं है, इसलिए उनकी आंतरिक खुशी को परेशान करने वाली कोई बाहरी वस्तु नहीं है। ब्रह्मांड उनकी अपनी आत्म-अभिव्यक्ति है, और इस प्रकार, इसमें उनका आनंद आत्म-आनंद है। यह शुद्ध, बिना शर्त आनंद (आनंद) की स्थिति को दर्शाता है जो दिव्य का सार है।

688. विश्वामित्राय

संपूर्ण विश्व के मित्र, महान ऋषि विश्वामित्र को नमन।

विस्तार : विश्वामित्राय नाम दो संस्कृत शब्दों के यौगिक से बना है: • विश्व (Vishva): जिसका अर्थ है "सभी," "ब्रह्मांड," "पूरा संसार।" • मित्र (Mitra): जिसका अर्थ है "मित्र," "साथी," "सहयोगी।"

समस्त ब्रह्मांड का मित्र इसलिए, विश्वामित्र का शाब्दिक अर्थ है "पूरे संसार का मित्र" या "ब्रह्मांड का मित्र।" जब यह नाम कालभैरव पर लागू होता है, तो यह उनकी गहन परोपकारिता और सर्व-समावेशी करुणा को दर्शाता है। जबकि भैरव को अक्सर भयावह माना जाता है, उनके नाम का यह पहलू सभी सृष्टि के परम शुभचिंतक और उपकारक के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। वह ऐसे हैं जो प्रत्येक प्राणी, प्रत्येक तत्व और ब्रह्मांड के प्रत्येक कोने के प्रति मैत्रीपूर्ण और सहायक स्वभाव रखते हैं।

महान ऋषि विश्वामित्र यह नाम सीधे पूज्य वैदिक ऋषि विश्वामित्र का भी संकेत करता है। ऋषि विश्वामित्र मूल रूप से कौशिक नामक एक राजा थे, जिन्होंने गहन तपस्या और आध्यात्मिक अभ्यास के माध्यम से ऋषि (द्रष्टा) और अंततः ब्रह्मर्षि का दर्जा प्राप्त किया, जो पहले एक क्षत्रिय के लिए असंभव माना जाता था। उनका जीवन वृत्तांत प्रयास, तपस्या और अपनी जन्मजात सीमाओं को पार करने की क्षमता की शक्ति का प्रमाण है। उन्हें उनके गहन ज्ञान, आध्यात्मिक शक्ति और मानवता को गायत्री मंत्र सहित महत्वपूर्ण ज्ञान प्रदान करने में उनकी भूमिका के लिए सराहा जाता है।

कालभैरव के लिए प्रतीकवाद जब कालभैरव को विश्वामित्राय के रूप में पुकारा जाता है, तो इसके कई अर्थ निकलते हैं:

• ब्रह्मांडीय मित्र और रक्षक: जिस प्रकार एक मित्र सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करता है, उसी प्रकार कालभैरव, इस पहलू में, दिव्य मित्र हैं जो समय और अस्तित्व के चक्रों के माध्यम से सभी प्राणियों की रक्षा और मार्गदर्शन करते हैं। उनकी "मित्रता" सामान्य नहीं है; यह एक शक्तिशाली, अटूट परोपकारिता है जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था सुनिश्चित करती है और धर्म को बनाए रखती है।

• ज्ञान और मोक्ष के दाता: ऋषि विश्वामित्र के साथ जुड़कर, यह नाम बताता है कि कालभैरव आध्यात्मिक ज्ञान का अंतिम स्रोत और मुक्ति (मोक्ष) के दाता हैं। वह, ऋषि की तरह, भक्तों को उनकी सीमाओं को पार करने और चेतना की उच्च अवस्थाओं को प्राप्त करने में मदद करते हैं।

• परिवर्तनकारी शक्ति: राजा से ब्रह्मर्षि तक विश्वामित्र का परिवर्तन दिव्य में निहित परिवर्तनकारी शक्ति का प्रतीक है। कालभैरव, विश्वामित्राय के रूप में, इस शक्ति का प्रतीक हैं, जो भक्तों को अपने निम्न स्वभाव को बदलने और आध्यात्मिक उत्थान प्राप्त करने में सक्षम बनाते हैं।

• भैरव का विरोधाभास: यह नाम भैरव के भयावह स्वरूप को उनके गहरे परोपकारी और मैत्रीपूर्ण स्वभाव के साथ खूबसूरती से जोड़ता है, हमें याद दिलाता है कि दिव्य कठोरता अक्सर परम भलाई और आध्यात्मिक विकास के उच्च उद्देश्य की पूर्ति करती है।

689. द्विजेश्वराय

सभी द्विज (जिन्हें दूसरा जन्म प्राप्त हुआ है) के सर्वोच्च स्वामी को नमन।

विस्तार : द्विजेश्वराय नाम द्विजेश्वर का एक यौगिक है, जो द्विज और ईश्वर में टूट जाता है।

• द्विज (Dvija): इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है "दो बार जन्मा" (द्वि = दो, ज = जन्मा)। यह पारंपरिक रूप से उन लोगों को संदर्भित करता है जिन्होंने वैदिक संस्कृति में आध्यात्मिक पुनर्जन्म या दीक्षा (उपनयन संस्कार) ली है। इसमें मुख्य रूप से ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य शामिल हैं। हालांकि, व्यापक आध्यात्मिक अर्थ में, "द्विज" किसी ऐसे व्यक्ति को दर्शाता है जो आध्यात्मिक रूप से जागृत हो गया है, जिसने अज्ञानता में अपने प्रारंभिक जन्म को पार कर लिया है, और उच्च ज्ञान और आत्म-साक्षात्कार के मार्ग पर चल पड़ा है। ये वे हैं जो दीक्षित हैं, विद्वान हैं, सत्य के साधक हैं, और जो धर्म का पालन करते हैं।

• ईश्वर (Īśvara): स्वामी, मालिक, नियंत्रक, शासक, या भगवान।

आध्यात्मिक रूप से जागृत लोगों के भगवान "द्विज के भगवान" के रूप में, कालभैरव आध्यात्मिक अनुशासन, ज्ञान और धार्मिक जीवन के प्रति समर्पित लोगों द्वारा पूजे जाने वाले सर्वोच्च देवता हैं। वे उन लोगों के लिए परम मार्गदर्शक, रक्षक और ज्ञान के दाता हैं जिन्होंने आध्यात्मिक दीक्षा ली है और उच्च चेतना के लिए प्रयास कर रहे हैं। इसका तात्पर्य है कि वे एक गंभीर आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वालों को विशेष कृपा और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

धर्म और ज्ञान के संरक्षक "द्विज" पर उनका प्रभुत्व वैदिक ज्ञान, धर्म (धार्मिक आचरण) और आध्यात्मिक वंशों के संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है। वे पवित्र शिक्षाओं के संरक्षण और उचित प्रसारण को सुनिश्चित करते हैं। जो लोग इन सिद्धांतों का पालन करते हैं, उनके लिए वे परम संरक्षक और अधिकारी हैं।

योग्य लोगों को मुक्ति प्रदान करने वाले जबकि भैरव को आमतौर पर भयंकर पहलुओं से जोड़ा जाता है, इस संदर्भ में, वे एक परोपकारी स्वामी के रूप में प्रकट होते हैं जो ईमानदार आध्यात्मिक प्रयासों को पुरस्कृत करते हैं। वे वही हैं जो आध्यात्मिक अनुशासन का अंतिम फल - मुक्ति (मोक्ष) - उन लोगों को प्रदान करते हैं जो चेतना और आचरण में वास्तव में "द्विज" हैं। वे आत्म-साक्षात्कार की अपनी यात्रा पर भौतिक और आध्यात्मिक दोनों बाधाओं को पार करने में उनका मार्गदर्शन करते हैं।

690. वीरोत्पत्तये

सभी वीरों के परम स्रोत और मूल को नमन।

विस्तार : वीरोत्पत्तये नाम संस्कृत के शब्दों वीर (नायक) और उत्पत्ति (उद्गम, स्रोत, जन्म, सृष्टि) से लिया गया है। इस प्रकार, इसका अर्थ है "वह जो नायकों का उद्गम या स्रोत है।"

शौर्य का दिव्य स्रोत यह नाम कालभैरव की भूमिका पर न केवल एक भयंकर देवता के रूप में जोर देता है, बल्कि साहस, शक्ति और वीरता के गुणों के परम स्रोत के रूप में भी। वह आदिम ऊर्जा हैं जिससे सभी शौर्य, बहादुरी और दृढ़ संकल्प उत्पन्न होते हैं। वीरता का कोई भी कार्य, चाहे वह शारीरिक, मानसिक या आध्यात्मिक हो, अंततः अपनी शक्ति और प्रेरणा इसी दिव्य स्रोत से प्राप्त करता है।

आध्यात्मिक अर्थ में नायक जबकि "नायक" अक्सर सांसारिक अर्थ में योद्धाओं और बहादुर व्यक्तियों को दर्शाता है, एक आध्यात्मिक संदर्भ में, एक वीर एक आध्यात्मिक नायक भी होता है। इसमें वे लोग शामिल हैं जो आंतरिक राक्षसों (जैसे अहंकार, इच्छा, क्रोध और अज्ञान) का साहसपूर्वक सामना करते हैं, जो आत्म-साक्षात्कार का बहादुरी से पीछा करते हैं, और जो प्रतिकूलता के बावजूद अपने धर्म (धार्मिक कर्तव्य) में दृढ़ रहते हैं। कालभैरव वह ऊर्जा हैं जो इन आध्यात्मिक नायकों को मुक्ति की ओर उनकी यात्रा में सशक्त बनाती है।

महान प्राणियों का निर्माण "उत्पत्ति" शब्द का अर्थ निर्माण और अभिव्यक्ति भी है। इस प्रकार, वीरोत्पत्तये का अर्थ है कि कालभैरव उन सभी प्राणियों के परम जनक हैं जो वीर गुणों को धारण करते हैं। वह शाब्दिक रूप से सभी शक्ति, शौर्य और धार्मिक कर्मों का "जन्मस्थान" या "गर्भ" हैं जो ब्रह्मांड में प्रकट होते हैं। उनकी ऊर्जा व्यक्तियों को भारी चुनौतियों को दूर करने और अच्छे के लिए निर्णायक रूप से कार्य करने की क्षमता प्रदान करती है।

दिव्य शक्ति का प्रतीक संक्षेप में, यह नाम कालभैरव की प्रशंसा दिव्य शक्ति के अवतार के रूप में करता है जो प्राणियों के हृदय में साहस और वीर भावना भरता है, जिससे वे अपने उद्देश्य को पूरा करने, बुराई पर विजय प्राप्त करने और ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने में सक्षम होते हैं।

691. विश्वसाहाय

जो संपूर्ण ब्रह्मांड के अचूक सहायक और आधार हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : विश्वसहाय नाम दो संस्कृत शब्दों, विश्व और सहाय, का एक गहन यौगिक है।

विश्व (Viśva): यह शब्द "सभी," "संपूर्ण," "सार्वभौमिक," या "ब्रह्मांड" को दर्शाता है। इसमें वह सब कुछ शामिल है जो मौजूद है - संपूर्ण ब्रह्मांड, सभी प्राणी और सभी घटनाएँ।

सहाय (Sahāya): इस शब्द का अर्थ है "मदद," "समर्थन," "सहायता," "साथी," या "सहयोगी।"

ब्रह्मांड के अचूक समर्थक इसलिए, विश्वसहाय का सीधा अर्थ है "समस्त ब्रह्मांड का अचूक सहायक और आधार।" यह नाम कालभैरव की भूमिका पर जोर देता है, न केवल एक संहारक या एक उग्र देवता के रूप में, बल्कि उस मूलभूत आधार के रूप में जिस पर ब्रह्मांडीय अस्तित्व टिका हुआ है। वह परम, अटूट स्तंभ हैं जो संपूर्ण सृष्टि को धारण करते हैं।

रक्षक और परोपकारी शक्ति जबकि भैरव को अक्सर उग्र पहलुओं से जोड़ा जाता है, यह नाम उनके गहरे परोपकारी और सहायक स्वभाव को प्रकट करता है। वह वह हैं जो सबसे बड़ी आकाशगंगाओं से लेकर सबसे छोटे कणों तक, सभी प्राणियों को सहायता प्रदान करते हैं, ब्रह्मांड को अराजकता में ढहने से रोकते हैं। यह समर्थन केवल भौतिक नहीं बल्कि आध्यात्मिक भी है, जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था और सभी अस्तित्व को नियंत्रित करने वाले धर्म का मार्गदर्शन करता है।

शक्ति और सांत्वना का स्रोत भक्तों के लिए, कालभैरव को विश्वसहाय के रूप में संबोधित करना उनकी शक्ति को परम आश्रय के रूप में आह्वान करता है। जब जीवन की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, तो वह शक्ति और सांत्वना का अटूट स्रोत हैं, जिस पर सहायता के लिए हमेशा भरोसा किया जा सकता है। उनका समर्थन समय के प्रवाह और सृष्टि, संरक्षण और विघटन चक्रों की निरंतरता सुनिश्चित करता है।

692. विश्वावासाय

उन प्रभु को नमन जो संपूर्ण ब्रह्मांड के पवित्र निवास और धाम हैं।

विस्तार : विश्वावासाय नाम 'विश्व' और 'आवास' का एक यौगिक है।

• विश्व (Viśva): इस संस्कृत शब्द का अर्थ है "सब," "संपूर्ण," "ब्रह्मांड," "समष्टि," या "संसार।" यह अस्तित्व की संपूर्णता का प्रतिनिधित्व करता है - व्यक्त और अव्यक्त, सजीव और निर्जीव।

• आवास (Āvāsa): यह शब्द "निवास," "आश्रय," "घर," या "शरण" को दर्शाता है। इसका तात्पर्य एक ऐसी जगह से है जहाँ कोई रहता है, आराम करता है, या शरण पाता है।

अंतर्निहित उपस्थिति (The Indwelling Presence) जब इन्हें मिलाया जाता है, तो विश्वावासाय का अर्थ होता है "वह जो संपूर्ण ब्रह्मांड का निवास है।" यह गहन नाम कालभैरव को उस आधार, मूलभूत वास्तविकता और व्यापक स्थान के रूप में वर्णित करता है जिसके भीतर संपूर्ण ब्रह्मांड मौजूद है, गति करता है और अपना अस्तित्व रखता है। वह केवल ब्रह्मांड के शासक नहीं हैं, बल्कि इसके अस्तित्व का ताना-बाना और आधार हैं। प्रत्येक आकाशगंगा, तारा, ग्रह और जीवित प्राणी उनके असीम सार के भीतर समाहित है।

ब्रह्मांडीय घर (The Cosmic Home) यह नाम भैरव को पूर्ण ब्रह्म (परम, पूर्ण वास्तविकता) के पद तक उठाता है, यह दर्शाता है कि उनसे बाहर कुछ भी नहीं है। वह समस्त सृष्टि के लिए परम आश्रय और निवास स्थान हैं। जैसे एक घर अपने निवासियों और उनकी संपत्ति को समाहित करता है, वैसे ही कालभैरव अपने भीतर सभी समय, स्थान, कार्य-कारण और घटनाओं को समाहित करते हैं।

एकता और अंतर्व्यापकता का प्रतीक (Symbol of Unity and Immanence) विश्वावासाय दिव्य के अंतर्व्यापक पहलू पर प्रकाश डालता है, इस बात पर जोर देता है कि ईश्वर सृष्टि से अलग नहीं है बल्कि भीतर से उसे व्याप्त और धारण करता है। यह अद्वैतवादी (गैर-द्वैतवादी) समझ को रेखांकित करता है कि ब्रह्मांड परम वास्तविकता से भिन्न नहीं है, बल्कि उसके भीतर एक अभिव्यक्ति या उपस्थिति है। कालभैरव को विश्वावासाय के रूप में पहचानना हर परमाणु और हर ब्रह्मांडीय घटना में दिव्य उपस्थिति को देखना है, उन्हें अद्वितीय, सर्व-समावेशी और शाश्वत निवास के रूप में स्वीकार करना है।

693. वसुश्रवसे

जो अपनी immense धन और यशस्वी श्रवण के लिए प्रसिद्ध हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : वसुश्रवसे नाम दो शब्दों का एक यौगिक है: वसु (धन) और श्रवस (ख्याति, यश, या श्रवण)।

अपार धन के स्वामी (वसु) 'वसु' के संस्कृत में कई अर्थ हैं, जिनमें सबसे प्रमुख "धन," "संपत्ति," "खजाना," या "बहुमूल्य वस्तुएँ" हैं। यह आठ वैदिक देवताओं को भी संदर्भित करता है जिन्हें अष्टवसु के नाम से जाना जाता है, जो प्रकाश और प्राकृतिक घटनाओं से जुड़े अर्धदेवता हैं। कालभैरव के संदर्भ में, वसु सभी प्रकार की भौतिक और आध्यात्मिक प्रचुरता पर उनके पूर्ण स्वामित्व को दर्शाता है। वे समृद्धि के परम दाता हैं, न केवल सांसारिक धन के संदर्भ में, बल्कि ज्ञान, भक्ति और मुक्ति के अमूल्य आध्यात्मिक धन के भी। उनके भक्त मानते हैं कि उनकी पूजा करने से वित्तीय बाधाएं दूर हो सकती हैं और वांछित भौतिक सुख प्राप्त हो सकते हैं।

यशस्वी श्रवण और ख्याति (श्रवस) 'श्रवस' "ख्याति," "महिमा," "यश," और "जो सुना जाता है" को दर्शाता है। नाम का यह पहलू दो प्राथमिक अर्थों को इंगित करता है:

1. सार्वभौमिक ख्याति: कालभैरव की महिमा और शक्ति को पूरे ब्रह्मांड में सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जाता है। उनके भयंकर फिर भी परोपकारी कार्य, धर्म के रक्षक के रूप में उनकी भूमिका, और समय और मृत्यु पर उनका अंतिम अधिकार सभी लोकों में गाया और पूजित होता है। उनकी ख्याति केवल उनकी विनाशकारी शक्ति पर आधारित नहीं है, बल्कि उनकी रक्षा करने, मार्गदर्शन करने और अपने भक्तों को वरदान देने की क्षमता पर भी आधारित है।

2. परोपकारी श्रोता: 'श्रवस' अपने भक्तों की प्रार्थनाओं और याचिकाओं के प्रति उनके तीव्र और करुणामय "श्रवण" का भी संकेत देता है। यह बताता है कि वे उन लोगों की सच्ची पुकारों के प्रति चौकस और उत्तरदायी हैं जो उनकी शरण चाहते हैं। यह उनकी सुलभता और अपने उपासकों की ओर से हस्तक्षेप करने की उनकी इच्छा पर जोर देता है, उनके भय को दूर करता है और उनकी इच्छाओं को पूरा करता है।

संयुक्त महत्व इस प्रकार, वसुश्रवसे कालभैरव को एक अत्यंत धनी देवता के रूप में चित्रित करता है, न केवल भौतिक अर्थों में, बल्कि उनकी दिव्य शक्ति, ज्ञान और करुणा के असीम खजाने में भी। उनकी ख्याति गौरवशाली और दूरगामी है, और वे अपने भक्तों की प्रार्थनाओं के प्रति अपनी चौकसी के लिए प्रसिद्ध हैं, उन्हें भौतिक समृद्धि और आध्यात्मिक शांति दोनों प्रदान करते हैं। वे ऐसे हैं जिनका अपार धन उनकी गौरवशाली प्रतिष्ठा और सभी प्राणियों की प्रार्थनाओं के प्रति उनके तीव्र कान से ही मेल खाता है।

694. वज्रहस्ताय

अपने हाथ में शक्तिशाली वज्र धारण करने वाले (वज्रहस्त) को नमन।

विस्तार : वज्रहस्ताय नाम संस्कृत के दो शब्दों वज्र और हस्त का एक यौगिक है।

वज्र: वज्र वज्र अत्यधिक शक्ति का एक हथियार है, जो अक्सर देवों के राजा इंद्र से जुड़ा होता है, जो अदम्य शक्ति, अजेयता और भ्रम तथा अज्ञान को तोड़ने की क्षमता का प्रतीक है। इसे दो भागों में दर्शाया गया है जो एक केंद्रीय कोर को घेरते हैं, जो वास्तविकता के अविभाज्य और अविनाशी स्वरूप का प्रतिनिधित्व करते हैं। दार्शनिक रूप से, वज्र परम सत्य का प्रतिनिधित्व करता है, जिसे प्राप्त करना कठिन है लेकिन जो असत्य को पूरी तरह से नष्ट कर देता है। यह आध्यात्मिक ज्ञान और जागृत चेतना का भी प्रतीक है।

हस्त: हाथ हस्त का अर्थ हाथ है, जो धारण करने या रखने का संकेत देता है।

अदम्य शक्ति का धारक जब कालभैरव को वज्रहस्ताय के रूप में वर्णित किया जाता है, तो इसका अर्थ है कि वे ऐसी शक्ति धारण करते हैं और उसका उपयोग करते हैं जो पूर्ण, अटल और अजेय है। यह केवल शारीरिक शक्ति नहीं है बल्कि एक आध्यात्मिक और ब्रह्मांडीय शक्ति है जो किसी भी बाधा, आंतरिक या बाहरी, को दूर करने में सक्षम है।

बाधाओं और अज्ञान का नाश करने वाला वज्र धारण करने का अर्थ है माया (भ्रम), अविद्या (अज्ञान), और सांसारिक आसक्तियों की सबसे घनी परतों को भेदने की उनकी क्षमता जो आत्मा को बांधती हैं। जैसे वज्र पहाड़ों को तोड़ देता है, वैसे ही कालभैरव आध्यात्मिक मुक्ति के मार्ग में आने वाली बाधाओं को तोड़ देते हैं।

न्याय और ब्रह्मांडीय व्यवस्था का प्रतीक वज्र दिव्य न्याय का भी प्रतिनिधित्व करता है। कालभैरव, दंडपाणि (जो दंड का डंडा धारण करते हैं) के रूप में, ब्रह्मांडीय नियमों को लागू करने और धर्म का उल्लंघन करने वालों को दंडित करने के लिए वज्र का उपयोग एक उपकरण के रूप में करते हैं,

यह सुनिश्चित करते हुए कि ब्रह्मांड में व्यवस्था बनी रहे। उनका न्याय त्वरित, सटीक और अपरिहार्य है।

रक्षक उनके भक्तों के लिए, उनके हाथ में वज्र सुरक्षा का एक शक्तिशाली प्रतीक है। वे इस अजेय हथियार का उपयोग बुरी शक्तियों, नकारात्मक ऊर्जाओं और भय को दूर करने के लिए करते हैं, उन लोगों की रक्षा करते हैं जो उनके प्रति समर्पण करते हैं।

695. वजररूपाय

जिनका स्वरूप ही वज्र के समान कठोर और अविनाशी है, उन्हें नमन।

विस्तार : वज्ररूपाय नाम कालभैरव का एक गहन वर्णन है, जो "वज्र" (वज्र, हीरा) और "रूप" (स्वरूप, सार) को जोड़ता है।

अविनाशी स्वरूप वज्र हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म में एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रतीक है। यह अविनाशिता, अदम्य शक्ति और सर्वोच्च शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। एक हीरे (इसका भौतिक प्रकटीकरण) के रूप में, यह सबसे कठोर ज्ञात प्राकृतिक पदार्थ है, जो स्वयं अछूता रहते हुए किसी भी अन्य चीज़ को काटने में सक्षम है। एक पौराणिक हथियार के रूप में, इंद्र का वज्र अजेय है, जो दिव्य अधिकार और परम शक्ति का प्रतीक है जिसे पराजित नहीं किया जा सकता है। इसलिए, "वज्ररूप" का अर्थ है कि कालभैरव का स्वरूप शाश्वत, अविनाशी और अभेद्य है। वे परम दृढ़ता और लचीलेपन का प्रतीक हैं।

अडिग शक्ति यह पहलू ब्रह्मांडीय धर्म को बनाए रखने में कालभैरव के अटल स्वभाव और समय तथा विनाश पर उनके पूर्ण अधिकार को उजागर करता है। उनकी शक्ति अदम्य है, जैसे वज्र की शक्ति जो सटीकता और अंतिम रूप से प्रहार करती है। वे ब्रह्मांड के अटल सिद्धांतों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

आध्यात्मिक दृढ़ता आध्यात्मिक स्तर पर, वज्ररूपाय का अर्थ है कि कालभैरव अपने भक्तों को साहस और एक आध्यात्मिक दृढ़ता (वज्र-धर्म) प्रदान करते हैं जो किसी भी प्रतिकूलता, प्रलोभन या आंतरिक और बाहरी हमलों का सामना कर सकती है। वे उन लोगों के संकल्प को मजबूत करते हैं जो उनकी शरण लेते हैं, जिससे उनका आध्यात्मिक मार्ग हीरे के समान मजबूत और अटूट हो जाता है।

शुद्धता और स्पष्टता का प्रतीक हीरे की स्पष्टता और चमक के समान, "वज्ररूपाय" परोक्ष रूप से कालभैरव की दिव्य चेतना के शुद्ध, दीप्तिमान और निर्मल स्वरूप को भी संदर्भित कर सकता है, जो संसारों के निर्माण और विनाश के बीच भी अक्षुण्ण रहता है।

696. विपाकाय

समस्त कर्मों के अंतिम फल और परिणाम स्वरूप (भैरव) को नमन।

विस्तार : विपाकाय नाम संस्कृत शब्द "विपाक" से लिया गया है, जिसके गहरे दार्शनिक निहितार्थ हैं, विशेष रूप से कर्म और नियति के संदर्भ में।

परिणाम और परिपक्वता "विपाक" का शाब्दिक अर्थ है "पकना," "परिपक्वता," या "फल।" कर्म के अर्थ में, यह कर्मों (कर्म) के अपरिहार्य परिणामों या फलों को संदर्भित करता है, चाहे वे अच्छे हों या बुरे। जैसे एक बीज से फल को पकने में समय लगता है, वैसे ही हमारे कर्मों के परिणाम समय के साथ प्रकट होते हैं, चाहे इस जीवन में या भविष्य के जीवन में। इस प्रकार, विपाक किसी के संचित कर्म का अंतिम परिणाम या नियत प्रभाव है।

कर्मफल के स्वामी विपाक के रूप में, कालभैरव कर्म के अटल और निष्पक्ष नियम का प्रतीक हैं। वह दिव्य सिद्धांत हैं जो यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक क्रिया, विचार और शब्द एक संगत प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है। विपाक से कोई बच नहीं सकता; यह ब्रह्मांडीय न्याय का एक मूलभूत पहलू है। वह इस प्रक्रिया के केवल एक पर्यवेक्षक नहीं हैं, बल्कि इसके स्वयं के अवतार और प्रवर्तक हैं। वह कर्मिक परिणामों के अनावरण का समन्वय करते हैं, प्रत्येक प्राणी को उचित परिणाम प्रदान करते हैं।

कर्म से मुक्ति जबकि विपाक कर्मों की बंधनकारी प्रकृति को दर्शाता है, कालभैरव को विपाक के रूप में पहचानना मुक्ति का मार्ग भी प्रदान करता है। इस मूलभूत नियम को समझकर और उसके प्रति समर्पण करके, भक्त नैतिक आचरण और कर्मों के फलों से अनासक्ति (निष्काम कर्म) के महत्व को समझते हैं। उन लोगों के लिए जो आध्यात्मिक अभ्यास के माध्यम से क्रिया और प्रतिक्रिया के चक्र को पार करते हैं, कालभैरव, विपाक के रूप में, कर्मिक बंधनों के विघटन का भी प्रतिनिधित्व करते हैं, जिससे परम स्वतंत्रता (मोक्ष) प्राप्त होती है। जब सभी कर्मिक खाते निपटा दिए जाते हैं तो वह अंतिम फल हैं।

697. विश्वकारकाय

संपूर्ण ब्रह्मांड के प्रमुख कारण और कर्ता को नमन।

विस्तार : विश्वकारकाय नाम विश्व और कारक का एक यौगिक है, जो सार्वभौमिक सृष्टि और कार्य-कारण से संबंधित गहन दार्शनिक अर्थ व्यक्त करता है।

• विश्व (Viśva): यह शब्द व्यापक रूप से "संपूर्ण ब्रह्मांड," "ब्रह्मांड," "जो कुछ भी मौजूद है," या "पूरा संसार" को दर्शाता है। यह सभी प्रकट अस्तित्व, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष की समग्रता को इंगित करता है।

• कारक (Kāraka): इस शब्द का अर्थ है "करने वाला," "बनाने वाला," "कर्ता," "कारण," या "साधन।" व्याकरणिक अर्थ में, यह एक संज्ञा के क्रिया के साथ संबंध को संदर्भित करता है, जो क्रिया में उसकी भूमिका को इंगित करता है। दार्शनिक संदर्भ में, यह मूलभूत प्रवर्तक या आदिम प्रेरक की ओर इशारा करता है।

ब्रह्मांड का आदिम प्रेरक (The Prime Mover of the Universe) एक साथ, विश्वकारकाय काल भैरव को समस्त ब्रह्मांड की अभिव्यक्ति, पोषण और विघटन के पीछे अंतिम और एकमात्र कारण, बुद्धिमान डिजाइनर और सक्रिय कर्ता के रूप में पहचानता है। वह केवल सृष्टि में एक भागीदार नहीं हैं, बल्कि वह स्वयं स्रोत हैं जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है। यह अवधारणा ब्रह्म के वेदांतिक समझ के साथ संरेखित है, जिससे ब्रह्मांड का उत्सर्जन होता है।

कुशल और भौतिक कारण (The Efficient and Material Cause) हिंदू दार्शनिक विद्यालयों, विशेष रूप से न्याय और वैशेषिक में, कारणों को अक्सर वर्गीकृत किया जाता है। विश्वकारकाय का अर्थ है कि भैरव कुशल कारण (बुद्धिमान कर्ता जो बनाता है) और भौतिक कारण (वह पदार्थ जिससे ब्रह्मांड बना है, या सभी अस्तित्व का अंतर्निहित आधार) दोनों हैं। यह उनकी अद्वैत प्रकृति को दर्शाता है जहां निर्माता और सृष्टि अंततः एक ही सर्वोच्च वास्तविकता के अविभाज्य पहलू हैं।

निर्माता और निर्मित के द्वंद्व से परे (Beyond Dualities of Creator and Created) यह नाम इस बात पर जोर देता है कि उनके बाहर कोई शक्ति या सत्ता नहीं है जिसने सृष्टि की शुरुआत की। वह स्वयंभू हैं, एक अद्वितीय हैं, जिनसे संपूर्ण घटनात्मक संसार उत्पन्न होता है, जो उनके दिव्य सार से ओत-प्रोत है। उन्हें विश्वकारकाय के रूप में स्वीकार करना उनकी सर्वोच्च संप्रभुता और सभी की मूलभूत वास्तविकता के रूप में उनकी भूमिका की पुष्टि है।

698. बृहदश्वाय

महान, शक्तिशाली और शानदार घोड़ों वाले को नमन।

विस्तार : बृहदश्वाय नाम बृहत् (बृहत्) और अश्व (अश्व) का एक यौगिक है, जिसमें घोड़ों की शाब्दिक व्याख्या से परे प्रतीकात्मक अर्थ निहित है।

बृहत् (बृहत्): इस संस्कृत शब्द का अर्थ है "महान," "बड़ा," "विशाल," "शक्ति," "शानदार," या "उत्कृष्ट।" यह विशालता, शक्ति और गहन महत्व को दर्शाता है।

अश्व (अश्व): इस शब्द का शाब्दिक अर्थ "घोड़ा" है। हालांकि, वैदिक और पौराणिक संदर्भों में, घोड़े अक्सर गति, शक्ति, जीवन शक्ति, बुद्धि, इंद्रियों और यहां तक कि सूर्य की किरणों या दिव्य शक्ति का प्रतिनिधित्व करने वाले शक्तिशाली प्रतीक होते हैं।

घोड़ों का प्रतीकात्मक महत्व दिव्य संदर्भ में, विशेष रूप से कालभैरव जैसे देवता के लिए, "घोड़े" (अश्व) केवल भौतिक वाहन नहीं हैं। वे प्रतीक हैं:

• दिव्य शक्तियां और ऊर्जाएं: "महान घोड़े" उन विशाल और अकल्पनीय शक्तियों, ऊर्जाओं और बलों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्हें कालभैरव नियंत्रित करते हैं। ये वे उपकरण हैं जिनके माध्यम से वे अपने ब्रह्मांडीय कार्यों को निष्पादित करते हैं, जैसे कि सृष्टि, संरक्षण, विनाश, छिपाना और कृपा।

• इंद्रियों पर नियंत्रण (इंद्रियां): कुछ दार्शनिक परंपराओं में, घोड़े इंद्रियों के लिए रूपक हैं, जो यदि अनियंत्रित हों, तो व्यक्ति को भटका सकते हैं। इसके विपरीत, जब एक दिव्य सारथी द्वारा नियंत्रित होते हैं, तो वे प्रगति के लिए शक्तिशाली वाहन के रूप में कार्य करते हैं। कालभैरव, "महान घोड़ों" के स्वामी होने का अर्थ है कि वे स्वयं के भीतर और पूरे ब्रह्मांड में सभी संवेदी और मानसिक faculties पर सर्वोच्च महारत रखते हैं।

• ब्रह्मांडीय गति और समय: घोड़े गति और चाल से जुड़े हैं। काल भैरव के रूप में, समय के स्वामी, उनके "महान घोड़े" स्वयं समय के अप्रतिरोध्य, तीव्र और शक्तिशाली प्रवाह का प्रतीक हो सकते हैं, जो सभी प्राणियों को अपनी धारा के साथ ले जाता है। इन "घोड़ों" पर उनकी महारत समय के बीतने और प्रभावों पर उनके पूर्ण नियंत्रण को दर्शाती है।

• शानदार दिव्य वाहन: जैसे सूर्य का रथ सात घोड़ों द्वारा खींचा जाता है, ये महान घोड़े शानदार दिव्य वाहनों या खगोलीय वाहकों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो कालभैरव को सभी लोकों में विचरण करने और ब्रह्मांड की विशालता में अपनी इच्छा को प्रकट करने की अनुमति देते हैं।

इस प्रकार, बृहदश्वाय कालभैरव को उस शानदार स्वामी के रूप में सम्मानित करता है जो विशाल, शक्तिशाली और उत्कृष्ट दिव्य ऊर्जाओं का उपयोग और नियंत्रण करते हैं, जो उनकी परम शक्ति, ब्रह्मांडीय पहुंच और समय और इंद्रियों सहित सभी शक्तियों पर उनकी महारत का प्रतीक है।

699. व्यालकल्पाय

सर्पों से सुशोभित होने वाले (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : व्यालकल्पाय नाम संस्कृत के पदों 'व्याल' और 'कल्प' से लिया गया है, जो भगवान शिव की प्रतिमा विज्ञान और प्रतीकात्मक अर्थ के एक विशिष्ट पहलू में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

सर्पों से सुशोभित (व्याल): 'व्याल' का शाब्दिक अर्थ एक साँप है, विशेष रूप से एक बड़ा, दुर्जेय, या सर्प जैसा प्राणी। हिंदू प्रतिमा विज्ञान में, सर्प (नाग) अत्यधिक प्रतीकात्मक होते हैं। वे प्रतिनिधित्व करते हैं:

• समय और अनंतता: अपनी त्वचा उतारने वाले सर्प मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्रों, समय और अस्तित्व की शाश्वत, अंतहीन प्रकृति का प्रतीक हैं। सर्पों से स्वयं को सुशोभित करके, कालभैरव, समय के स्वामी के रूप में, सृष्टि, संरक्षण और विघटन के अंतहीन चक्रों पर अपनी महारत का

संकेत देते हैं। वे समय की पकड़ से परे हैं, फिर भी इसे मूर्त रूप देते हैं। • कुंडलिनी ऊर्जा: योग दर्शन में, कुंडलित सर्प (कुंडलिनी) रीढ़ के आधार पर स्थित सुप्त आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है। जब जागृत होती है, तो यह ऊर्जा ऊपर उठती है, जिससे आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त होता है। शिव का सर्पों से जुड़ाव इस प्रकार आध्यात्मिक ऊर्जा पर उनकी सर्वोच्च महारत और परम योगी (योगेश्वर) के रूप में उनकी भूमिका का प्रतीक है जो मुक्ति प्रदान करते हैं। • संरक्षण और शक्ति: सर्प अक्सर खजानों और पवित्र स्थानों के संरक्षक होते हैं। आभूषणों के रूप में, वे ब्रह्मांड और अपने भक्तों को बुराई से बचाने की शिव की शक्ति को दर्शाते हैं। विषैले जीवों पर उनका नियंत्रण जहर (चुनौतियों, नकारात्मकता, अज्ञानता) को आध्यात्मिक शक्ति या अमृत में बदलने की उनकी क्षमता का प्रतीक है। • तपस्या और वैराग्य: सर्पों जैसे संभावित खतरनाक जीवों से स्वयं को सुशोभित करना शिव के तपस्वी स्वभाव को भी उजागर करता है। वे सांसारिक आकर्षणों और भयों से परे हैं, यहां तक कि भयानक को भी अपने दिव्य अस्तित्व के हिस्से के रूप में स्वीकार करते हैं। यह सांसारिक सुखों से उनके वैराग्य और संन्यास (वैराग्य) की उनकी सर्वोच्च स्थिति का प्रतीक है।

उनके दिव्य आभूषणों के रूप में (कल्प): यहां 'कल्प' प्रत्यय "आभूषण," "सजावट," या "गढ़ने" को संदर्भित करता है। इस प्रकार, 'व्यालकल्पाय' उन्हें ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित करता है जिनके "सर्प उनके आभूषण हैं" या जो "सर्पों से गढ़े गए हैं।" यह केवल एक सजावटी विवरण नहीं है; यह दर्शाता है कि ये शक्तिशाली और प्रतीकात्मक जीव उनके दिव्य रूप और शक्ति का एक आंतरिक हिस्सा हैं। वे उन्हें केवल पहनते नहीं हैं; वे ही वे हैं, और उनके माध्यम से, वे अपने दिव्य गुणों को प्रकट करते हैं।

संक्षेप में, व्यालकल्पाय कालभैरव को उस भगवान के रूप में मनाता है जो सर्पों की गूढ़ शक्ति का कुशलता से उपयोग और मूर्त रूप धारण करते हैं, जो समय, आध्यात्मिक ऊर्जा, संरक्षण और उनके सर्वोच्च तपस्वी स्वभाव पर उनके प्रभुत्व का प्रतिनिधित्व करता है। यह उन्हें सभी शक्तियों के संप्रभु के रूप में चित्रित करता है, यहां तक कि उन शक्तियों पर भी जो सामान्य प्राणियों में भय और विस्मय पैदा करती हैं।

700. विशल्याय

सभी दर्द, कांटों और कठिनाइयों से मुक्त रहने वाले (भगवान भैरव) को नमन।

विस्तार : विशाल्याय नाम संस्कृत शब्द 'विशल्य' से लिया गया है, जो 'वि' (से मुक्त) और 'शल्य' (काँटा, बाण, भाला, दर्द, पीड़ा, या कोई भी भेदन करने वाली कठिनाई) का एक यौगिक है।

दर्द और पीड़ा से मुक्ति अपने सबसे सीधे अर्थ में, विशाल्याय उस एक को संदर्भित करता है जो सभी प्रकार के दर्द, पीड़ा, कष्ट और कठिनाई से पूरी तरह मुक्त है। 'शल्य' किसी भी ऐसी चीज का प्रतीक है जो चुभती है, घाव करती है, या शारीरिक, मानसिक या आध्यात्मिक रूप से असुविधा और संकट का कारण बनती है। इस प्रकार, कालभैरव, विशाल्याय के रूप में, सुख और दर्द, खुशी और दुख, और सभी प्रकार की सांसारिक पीड़ाओं के द्वंद्वों से परे हैं। वे परम शांति और समता के प्रतीक हैं।

आध्यात्मिक घावों के उपचारक भक्तों के लिए, इस नाम का गहरा महत्व है। इसका तात्पर्य यह है कि कालभैरव, स्वयं 'शल्य' से मुक्त होने के कारण, अपने सच्चे भक्तों के 'शल्य' को दूर करने की शक्ति रखते हैं। वे अपने उपासकों को अज्ञानता, अहंकार, कर्म के बोझ और सांसारिक आसक्तियों के कारण होने वाले कष्टों के "काँटों" से मुक्त करते हैं। वे उन गहरे आध्यात्मिक घावों को भरते हैं जो वास्तविक मुक्ति में बाधा डालते हैं।

परम आश्रय चुनौतियों और पीड़ाओं से भरी दुनिया में, विशाल्याय परम आश्रय का प्रतीक है। जो लोग उनके प्रति समर्पण करते हैं, वे न केवल सुरक्षा चाहते हैं, बल्कि सभी प्रकार के आंतरिक और बाहरी 'शल्य' की समाप्ति भी चाहते हैं। उनका शांत और अविचलित स्वभाव भक्तों को वैराग्य और निर्भयता की आंतरिक स्थिति के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है, यह जानते हुए कि वे ही हैं जो उनके बोझ को कम कर सकते हैं।

उत्कृष्टता और पवित्रता यह नाम कालभैरव के उत्कृष्ट स्वरूप को भी इंगित करता है। वे शुद्ध, बेदाग और किसी भी अपूर्णता या नकारात्मकता से अछूते हैं। 'शल्य' से उनकी मुक्ति उनकी सर्वोच्च पवित्रता और अदूषित, परम वास्तविकता के रूप में उनकी स्थिति को दर्शाती है।

701. लोकशल्यकृते

संसार के दर्दनाक काँटों और दुखों को दूर करने वाले (भैरव) को नमन।

विस्तार : नाम लोकशल्यकृते तीन संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: लोक, शल्य और कृत्।

लोक (Loka): यह "संसार," "ब्रह्मांड," "लोग," या "क्षेत्र" को संदर्भित करता है। इसमें भौतिक प्रकट संसार और उसमें रहने वाले प्राणी दोनों शामिल हैं, जो इसके सुखों और दुखों का अनुभव करते हैं।

शल्य (Shalya): "शल्य" शब्द का शाब्दिक अर्थ "काँटा," "तीर," "भाला," या "बाण" है। लाक्षणिक रूप से, इसका अर्थ "पीड़ा," "कष्ट," "दुख," "संकट," "पीड़ा," या कुछ भी जो गहरे आंतरिक या बाहरी घाव और असुविधा का कारण बनता है। यह उन बाधाओं और दुखों के स्रोतों का प्रतिनिधित्व करता है जो अस्तित्व को परेशान करते हैं।

कृत् (Kṛt): यह "कृ" धातु से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है "करना," "बनाना," या "निष्पादित करना।" इस संदर्भ में, इसका अर्थ है "जो दूर करता है," "जो अंत करता है," या "जो कम करता है।"

सांसारिक दुखों को दूर करने वाला जब संयुक्त किया जाता है, तो लोकशल्यकृते का अर्थ है "वह जो संसार के कष्टदायक काँटों और दुखों को दूर करता है।" यह नाम भगवान कालभैरव की भयानक उपस्थिति के बावजूद उनकी करुणामय और मुक्तिदायक भूमिका को उजागर करता है। वह केवल एक संहारक नहीं हैं, बल्कि ब्रह्मांडीय और व्यक्तिगत दुखों के एक शोधक और उपचारक हैं।

आध्यात्मिक प्रगति में बाधाओं को दूर करना "काँटे" (शल्य) को कई स्तरों पर व्याख्या किया जा सकता है: • भौतिक दुख: शारीरिक बीमारियाँ, गरीबी, हानि, और अन्य सांसारिक कठिनाइयाँ जो संकट का कारण बनती हैं। • मानसिक और भावनात्मक पीड़ाएँ: चिंता, भय, दुख, क्रोध, और अन्य मनोवैज्ञानिक बोझ। • आध्यात्मिक बाधाएँ: अज्ञान (अविद्या), अहंकार (अहंकार), आसक्ति (मोह), और अन्य अशुद्धियाँ जो आध्यात्मिक मुक्ति को रोकती हैं और पुनर्जन्म के चक्र का कारण बनती हैं।

इस भूमिका में, कालभैरव अपने भक्तों के लिए इन दुखों को कम करने के लिए सक्रिय रूप से हस्तक्षेप करते हैं। इन "काँटों" का सामना करके और उन्हें हटाकर, वह व्यक्तियों के लिए शांति, मुक्ति और आध्यात्मिक विकास का अनुभव करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इस संदर्भ में, उनका उग्र स्वभाव एक सक्रिय शक्ति है जो पीड़ा के फोड़ों को चीरती है, न केवल दर्द पैदा करने के लिए, बल्कि शुद्ध करने और ठीक करने के लिए। वह परम चिकित्सक हैं जो लोक (संसार और उसके निवासियों) से पीड़ा के गहरे बैठे कारणों को शल्य चिकित्सा द्वारा हटाते हैं।

702. विरूपाय

अनेक रूप वाले, अपरंपरागत अथवा भयानक स्वरूप धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : विरूपा नाम संस्कृत उपसर्ग "वि-" से लिया गया है जिसका अर्थ है "विविध," "भिन्न," "अपरंपरागत," या "विशेष," और "रूप" का अर्थ है "आकार," "रूप," या "सौंदर्य।" इसलिए, विरूपा का अर्थ है वह जिसके विविध, असामान्य या यहाँ तक कि भयावह रूप हों।

बहु-रूप प्रकृति यह नाम शिव के विशाल और अबोधगम्य स्वरूप को उजागर करता है, क्योंकि वे किसी एक रूप से बंधे नहीं हैं। वे अनगिनत तरीकों से प्रकट होते हैं, सौम्य और सुंदर (जैसे सुंदरेश्वर के रूप में शिव) से लेकर भयंकर और भयावह (जैसे भैरव) तक। रूपों की यह विविधता उनकी सर्वव्यापी उपस्थिति और ब्रह्मांड के साथ अनगिनत तरीकों से बातचीत करने की उनकी क्षमता को दर्शाती है, जो विशिष्ट ब्रह्मांडीय कार्यों या अपने भक्तों की आध्यात्मिक समझ के अनुसार अपने स्वरूप को अनुकूलित करते हैं।

अपरंपरागत स्वरूप भैरव के संदर्भ में, "विरूपा" अक्सर एक अपरंपरागत या अनियमित स्वरूप को संदर्भित करता है जो सौंदर्य की सामान्य धारणाओं से विचलित होता है। इसमें शामिल हो सकते हैं: • कई सिर या भुजाएँ। • भयंकर मुखाकृति, बड़े दाँत, या जलती हुई आँखें। • काला या राख से सना हुआ शरीर। • खोपड़ियों या साँपों की मालाएँ। • श्मशान घाट में निवास।

यह पहलू सौंदर्यशास्त्र की मानव-निर्मित श्रेणियों से परे सच्ची दिव्यता की चुनौती देता है और हमें याद दिलाता है कि सच्ची दिव्यता मानव-निर्मित सौंदर्यशास्त्र की श्रेणियों से परे है। उनका "अपरंपरागत" रूप कोई दोष नहीं है बल्कि उनकी सांसारिक सीमाओं से परे होने का प्रतीक है।

भयावह पहलू जब "वि-" शास्त्रीय अर्थ में "बुरा" या "कुरूप" का अर्थ देता है, तो विरूपा एक "भयावह" या "भयानक" रूप को दर्शा सकता है। यह विशेष रूप से कालभैरव के लिए प्रासंगिक है, जिनका स्वरूप ही भयावह है। यह भयावह स्वरूप कई उद्देश्यों की पूर्ति करता है: • बुरी शक्तियों और अहंकार में भय पैदा करना। • समय की विनाशकारी शक्ति और ब्रह्मांडीय विघटन का प्रतिनिधित्व करना। • भक्त को आत्मसंतुष्टि और मायावी दुनिया से लगाव से बाहर निकालना।

दार्शनिक महत्व दार्शनिक रूप से, विरूपा परम वास्तविकता (निर्गुण ब्रह्म) के निराकार स्वरूप की ओर इशारा करता है जो सृष्टि, संरक्षण और विघटन के उद्देश्य से कोई भी रूप (सगुण ब्रह्म) धारण कर सकता है। यह यह भी दर्शाता है कि दिव्य हमारी संकीर्ण मानवीय धारणाओं से सीमित नहीं है कि क्या "सुंदर" या "स्वीकार्य" है। शिव, विरूपा के रूप में, अस्तित्व की संपूर्णता को समाहित करते हैं, जिसमें ऐसे पहलू भी शामिल हैं जिन्हें भयावह या असामान्य माना जा सकता है, जिससे उनके अस्तित्व के भीतर सभी द्वंद्वों को समाहित किया जा सके।

703. विकृताय

जो संशोधित, परिवर्तित, या असामान्य रूपों में प्रकट होते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : विकृत (Vikṛta) नाम संस्कृत धातु 'कृ' (करना, बनाना) से आया है, जिसमें उपसर्ग 'वि' (भिन्न, विपरीत, रहित) लगा है। इस प्रकार, विकृत का अर्थ है "बदला हुआ," "संशोधित," "असामान्य," या "विकृत।"

विविध अभिव्यक्तियाँ और रूप यह नाम उन अकल्पनीय और विविध रूपों को स्वीकार करता है जिन्हें दिव्य सत्ता धारण कर सकती है। भगवान शिव, और विशेष रूप से भैरव, अनगिनत तरीकों से प्रकट होने के लिए जाने जाते हैं, अक्सर पारंपरिक, सौंदर्यपूर्ण रूपों से हटकर। ये असामान्य रूप आकस्मिक नहीं होते बल्कि उद्देश्यपूर्ण होते हैं, अक्सर विशिष्ट शक्तियों को समाहित करते हैं, विशेष कर्मिक भूमिकाओं को पूरा करते हैं, या सौंदर्य और कुरूपता के बारे में मानवीय धारणाओं को चुनौती देते हैं। भैरव, अपने भयंकर स्वरूप के साथ, अक्सर इस श्रेणी में आते हैं, क्योंकि उनके रूप को मानवीय दृष्टिकोण से असामान्य या यहाँ तक कि भयानक भी माना जा सकता है, फिर भी यह अत्यंत पवित्र है।

द्वंद्वों से परे विकृत दिव्य सत्ता की पारलौकिक प्रकृति की ओर भी इशारा करता है, जो सभी द्वंद्वों और वर्गीकरणों से परे है। जबकि मनुष्य वर्गीकृत और परिभाषित करते हैं, दिव्य सत्ता ऐसी सीमाओं से अप्रतिबंधित रहती है। उन्हें "संशोधित" या "परिवर्तित" के रूप में वर्णित करना एक गतिशील

उपस्थिति का अर्थ है, जो ब्रह्मांडीय आवश्यकता के अनुसार लगातार विकसित और प्रकट होती रहती है।

परिवर्तन का प्रतीक 'परिवर्तन' या 'संशोधन' की अवधारणा शिव के ब्रह्मांडीय लीला (Līlā) के केंद्र में है। वह परिवर्तन के स्वामी हैं—जन्म, जीवन और मृत्यु सभी निरंतर परिवर्तन के पहलू हैं। विकृत के रूप में उनका स्वरूप इस अथक प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ परिवर्तन के अलावा कुछ भी स्थिर नहीं रहता। यह परिस्थितियों, नियतियों और यहाँ तक कि वास्तविकता के ताने-बाने को संशोधित करने की उनकी क्षमता को दर्शाता है।

पारंपरिक सौंदर्य से अनासक्ति विकृत होकर, भैरव सिखाते हैं कि सच्ची दिव्यता सौंदर्य या पारंपरिक प्रतिमानों की सतही धारणाओं का पालन नहीं करती है। उनका "असामान्य" रूप मानवीय अपेक्षाओं से मुक्त होता है, भक्तों को सतह से परे देखने और किसी भी अभिव्यक्ति में निहित परम सत्य और शक्ति को समझने के लिए आमंत्रित करता है। यह एक गहरी, अधिक आध्यात्मिक समझ को प्रोत्साहित करता है कि दिव्य सत्ता को पूर्ण और अपूर्ण, सुंदर और विकृत दोनों में पाया जा सकता है।

704. वेगिने

अद्भुत, अकल्पनीय गति वाले (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : वेगिने (Vegīne) नाम उस एक को संदर्भित करता है जो "वेग" – एक असाधारण, अकल्पनीय गति, वेग या आवेग रखता है। यह गुण कालभैरव के स्वरूप और कार्य के कई गहन पहलुओं को दर्शाता है।

अद्वितीय गति और तीव्रता "वेग" का शाब्दिक अर्थ गति, वेग, आवेग या बल है। "वेगिने" के रूप में, भगवान कालभैरव को कार्य में अत्यधिक तीव्र और द्रुतगामी दर्शाया गया है। इसे कई तरह से समझा जा सकता है: • ब्रह्मांडीय गतिविधि: वह ब्रह्मांड के प्रेरक हैं, वह शक्ति जो समय और सृष्टि को अकल्पनीय गति से आगे बढ़ाती है। • आध्यात्मिक प्रगति: भक्तों के लिए, वह उनकी आध्यात्मिक यात्रा को तेज कर सकते हैं, बाधाओं को दूर कर सकते हैं और दिव्य गति से प्रगति प्रदान कर सकते हैं। • बाधाओं का निवारण: उनकी तीव्रता का अर्थ है कि वह अपने भक्तों को पीड़ित करने वाली कठिनाइयों या खतरों को दूर करने के लिए तुरंत हस्तक्षेप कर सकते हैं।

क्षणिकता और समय का प्रतीक गति की अवधारणा आंतरिक रूप से समय से जुड़ी है। कालभैरव, समय के स्वामी (काल) के रूप में, समय के अथक और निरंतर प्रवाह का प्रतीक हैं। उनका "वेग" समय की अदम्य गति का प्रतिनिधित्व करता है, जो सब कुछ अपने साथ ले जाता है, जिससे परिवर्तन, क्षय और अंततः विघटन होता है। इस अर्थ में, उनकी गति सभी भौतिक अस्तित्व की क्षणिक प्रकृति की याद दिलाती है।

सर्वव्यापी और सर्वज्ञ अकल्पनीय गति उनकी सर्वव्यापकता की ओर भी इशारा करती है। ऐसी तीव्रता में सक्षम प्राणी कहीं भी और हर जगह तुरंत हो सकता है, जिससे सृष्टि के सभी कोनों में उनकी उपस्थिति सुनिश्चित होती है। यह उनकी सर्वज्ञता के साथ भी संरेखित होता है, क्योंकि उनकी तीव्र चेतना सभी घटनाओं को एक साथ समझती है।

दिव्य का गतिशील पहलू यह नाम कालभैरव के गतिशील, सक्रिय और शक्तिशाली पहलू को रेखांकित करता है। वह एक स्थिर देवता नहीं हैं बल्कि निरंतर गति में एक शक्ति हैं, जो ब्रह्मांड की जीवन शक्ति और हमेशा बदलते स्वरूप का प्रतीक हैं, जबकि इसके अचल केंद्र बने हुए हैं। वह दिव्य आवेग हैं जो ब्रह्मांडीय नृत्य को संचालित करते हैं।

705. विरिञ्चये

ब्रह्मा, सभी देवताओं में सृष्टिकर्ता भगवान, को नमन।

विस्तार : विरिञ्चये नाम विरिञ्चि को संदर्भित करता है, जो हिंदू सृष्टिकर्ता देवता ब्रह्मा का एक विशेषण है। कालभैरव को दिया गया यह नाम सृष्टि, संरक्षण और संहार के सभी पहलुओं पर उनके सर्वोच्च अधिकार को दर्शाता है, जिसमें अन्य देवताओं की भूमिकाएँ भी शामिल हैं।

ब्रह्मा के साथ पहचान: सृष्टिकर्ता पहलू विरिञ्चये कहलाने से, कालभैरव को ब्रह्मा, ब्रह्मांडीय सृष्टिकर्ता, निरपेक्ष से पहले उत्सर्जन के रूप में पहचाना जाता है, जो ब्रह्मांड को उत्पन्न करने के लिए जिम्मेदार हैं। इसका तात्पर्य यह है कि ब्रह्मा द्वारा सन्निहित रचनात्मक शक्ति अंततः कालभैरव से उत्पन्न होती है या उनका एक पहलू है। यह सुझाव देता है कि ब्रह्मांड के जनक ब्रह्मा भी कालभैरव की व्यापक इच्छा और शक्ति के तहत कार्य करते हैं। कुछ तांत्रिक और शैव परंपराओं में, शिव (और विस्तार से भैरव) को अक्सर सर्वोच्च वास्तविकता के रूप में चित्रित किया जाता है जिससे त्रिदेव – ब्रह्मा, विष्णु और शिव (संरक्षक और संहारक के रूप में) – भी उत्पन्न होते हैं।

चक्रों का अतिक्रमण यह उपाधि कालभैरव को केवल एक संहारक या दंड देने वाले से ऊपर उठाती है; यह उन्हें उस परम स्रोत के रूप में मजबूती से स्थापित करती है जिससे स्वयं सृष्टि उत्पन्न होती है। यह ब्रह्मांडीय चक्र के स्वामी के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है, न कि केवल उसके अंत पर। जिस प्रकार पुराने के विघटन के लिए भैरव का भयानक पहलू आवश्यक है, उसी प्रकार विरिञ्चि के रूप में उनका रचनात्मक पहलू नए की अभिव्यक्ति की अनुमति देता है।

एकीकृत दिव्यता कालभैरव के लिए "विरिञ्चये" का उपयोग शैव धर्म में अद्वैतवादी या गैर-द्वैतवादी समझ को रेखांकित करता है, जहाँ सभी दिव्य कार्य और रूप अंततः एक सर्वोच्च वास्तविकता, जो शिव है, में विलीन हो जाते हैं। यह एक गहरा उद्घोषणा है कि कालभैरव सृष्टिकर्ता देवता ब्रह्मा के सार और कार्य को समाहित करते हैं, जिससे वे पूर्ण और संपूर्ण दिव्यता बन जाते हैं।

706. विष्टरश्रवसे

जिनकी कीर्ति दूर-दूर तक फैली हुई है, या जिनके कान लंबे और चौकस हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : विस्तरश्रवसे (Viṣṭaraśravase) नाम एक समृद्ध संस्कृत यौगिक है, जो मुख्य रूप से व्यापक प्रसिद्धि और, विस्तार से, एक तीव्र धारणा या सुनने की क्षमता का सुझाव देता है। आइए इसके घटकों और निहितार्थों को तोड़कर समझते हैं।

व्युत्पत्तिगत विश्लेषण

यह नाम दो मुख्य भागों से बना है:

1. विस्तर (Viṣṭara): इस शब्द के कई अर्थ हैं, जिनमें "विस्तार," "फैलाव," "विवरण," "स्थान," या "विस्तारशीलता" शामिल हैं। इस संदर्भ में, यह मुख्य रूप से "दूर-दूर तक" या "महान सीमा तक" को दर्शाता है। 2. श्रवस् (Śravas): इस मूल का अर्थ है "ख्याति," "महिमा," "प्रसिद्धि," "रिपोर्ट," या "सुनना।" यह क्रिया मूल 'श्रु' (सुनना) से संबंधित है।

इन दोनों को मिलाकर, विस्तरश्रवसे का अर्थ है "वह जिसकी ख्याति दूर-दूर तक फैली हुई है" या "वह जिसके पास व्यापक श्रवण शक्ति है।" चतुर्थी विभक्ति का अंत (-ए) उस सत्ता के "लिए" या "को" दर्शाता है।

व्यापक ख्याति और महिमा (Widespread Fame and Glory)

यह व्याख्या कालाभैरव की सर्वोच्च मान्यता और अस्तित्व के सभी क्षेत्रों में पूजनीय स्थिति पर जोर देती है। शिव के एक भयंकर स्वरूप के रूप में, उनकी शक्ति, अधिकार और सुरक्षात्मक प्रकृति किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि देवताओं, राक्षसों, मनुष्यों और आत्माओं द्वारा समान रूप

से सार्वभौमिक रूप से स्वीकार की जाती है।

• ब्रह्मांडीय अधिकार (Cosmic Authority): उनकी ख्याति समय (काल), मृत्यु और ब्रह्मांड के विघटन पर उनके ब्रह्मांडीय प्रभुत्व को दर्शाती है। सभी प्राणी, चेतन और अचेतन, उनकी इच्छा के अधीन हैं और उनकी परम शक्ति को पहचानते हैं। • भयंकर फिर भी परोपकारी प्रतिष्ठा (Terrifying Yet Benevolent Reputation): कालाभैरव अपनी दोहरी प्रकृति के लिए प्रसिद्ध हैं—दुष्टों और क्षणभंगुर अस्तित्व से जुड़े लोगों के लिए भयंकर, फिर भी अपने भक्तों के प्रति परोपकारी और अत्यंत सुरक्षात्मक। उनकी "ख्याति" इन दोनों पहलुओं को समाहित करती है, यह दर्शाती है कि उन्हें दुर्जेय दंड देने वाले और बाधाओं को दूर करने वाले दयालु दोनों के रूप में जाना जाता है। • धर्म के संरक्षक (Upholder of Dharma): उनकी व्यापक ख्याति ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) के संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका से भी उत्पन्न होती है। वे न्याय सुनिश्चित करने और सार्वभौमिक कानूनों का उल्लंघन करने वालों को दंडित करने के लिए प्रसिद्ध हैं।

व्यापक, चौकस कान (Extensive, Attentive Ears)

वैकल्पिक व्याख्या, "वह जिसके कान लंबे और चौकस हैं," उनके चरित्र में एक और गहरा आयाम जोड़ती है:

• सर्वज्ञता और सर्वव्यापकता (Omniscience and Omnipresence): "लंबे कान" प्रतीकात्मक रूप से सुनने की एक असाधारण क्षमता का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो सर्वज्ञता का अर्थ है। यह बताता है कि कालाभैरव सृष्टि में कहीं भी होने वाली हर चीज को समझते हैं और उससे अवगत हैं, सबसे धीमी फुसफुसाहट से लेकर सबसे तेज ब्रह्मांडीय गर्जना तक। कुछ भी उनकी नज़र से नहीं बचता। • भक्ति के प्रति प्रतिक्रियाशीलता (Responsiveness to Devotion): यह गुण उनके भक्तों की प्रार्थनाओं, याचनाओं और इरादों के प्रति उनकी चौकसता को उजागर करता है। वे उनकी हार्दिक पुकारों और पीड़ा को "सुनते हैं," जो उनकी दयालु प्रकृति और प्रतिक्रिया देने और हस्तक्षेप करने की उनकी तत्परता को दर्शाता है। • ब्रह्मांडीय रिकॉर्डर (Cosmic Recorder): इसे ब्रह्मांडीय रिकॉर्डर या साक्षी के रूप में उनके कार्य के रूप में भी व्याख्या किया जा सकता है। वे सभी कार्यों, गुणों और दोषों से भली-भांति अवगत हैं, जो न्याय के वितरक और समय के भगवान के रूप में उनकी भूमिका के अनुरूप है, जिनके तहत सभी कर्मों का हिसाब रखा जाता है।

इस प्रकार, विस्तरश्रवसे कालाभैरव को एक सर्वव्यापी, सर्वज्ञ देवता के रूप में चित्रित करता है जिसका प्रभाव और प्रतिष्ठा सार्वभौमिक रूप से स्वीकार की जाती है, और जो अस्तित्व की जटिलताओं से गहराई से अवगत हैं।

707. अव्यक्तलक्षणाय

जिनके लक्षण अव्यक्त, सूक्ष्म और अगोचर हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : अव्यक्तलक्षणा नाम एक गहन संस्कृत यौगिक है जिसमें अव्यक्त और लक्षण शामिल हैं।

अव्यक्त (Avyakta): इस शब्द का अर्थ है "अप्रकट," "अप्रत्यक्ष," "अघोषित," "अगोचर," "सूक्ष्म," या "सुप्त।" दार्शनिक संदर्भ में, यह अक्सर प्रकृति (Prakriti) की आदिम, अप्रकट अवस्था को संदर्भित करता है, इससे पहले कि वह प्रकट ब्रह्मांड में विभेदित हो। यह उस चीज़ को भी दर्शाता है जो संवेदी धारणा और बौद्धिक समझ की पकड़ से परे है।

लक्षण (Lakshaṇa): इसका अर्थ है "चिह्न," "संकेत," "विशेषता," "गुण," या "परिभाषित विशेषता।"

अप्रकट विशेषताएँ (Unmanifest Characteristics) एक साथ, अव्यक्तलक्षणा उस सर्वोच्च वास्तविकता का वर्णन करता है जिसके गुण सामान्य साधनों से पहचानने योग्य नहीं हैं। इस पहलू में भगवान कालभैरव उस परम, उत्कृष्ट सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सभी प्रकट अस्तित्व से

पहले और उसके नीचे है। उनका सच्चा स्वरूप और विशेषताएँ रूप, नाम या संवेदी धारणा की सीमाओं के अधीन नहीं हैं। उन्हें मन से पूरी तरह से समझा नहीं जा सकता है या भाषा द्वारा वर्णित नहीं किया जा सकता है क्योंकि कोई भी अवधारणा उनके अनंत स्वरूप को प्रतिबंधित कर देगी।

रूप और नाम से परे (Beyond Form and Name) यह नाम इस बात पर जोर देता है कि कालभैरव, अपने उच्चतम सिद्धांत पर, सभी द्वैत और सभी परिभाषाओं से परे हैं। जबकि वह भक्तों के लाभ के लिए और ब्रह्मांडीय लीला (lila) के लिए विभिन्न रूपों (जैसे भयंकर भैरव) में प्रकट होते हैं, उनकी आवश्यक वास्तविकता निराकार और निर्गुण (attributeless) रहती है। उनके "लक्षण" सूक्ष्म और गूढ़ हैं, जो केवल गहरी आध्यात्मिक साधना, आंतरिक बोध और पारलौकिक अनुभव के माध्यम से प्रकट होते हैं, न कि बाहरी अवलोकन या सांसारिक समझ के माध्यम से।

सूक्ष्म सार (The Subtle Essence) अव्यक्तलक्षणा ब्रह्मांड के सूक्ष्म सार (आत्मा) के रूप में उनकी भूमिका को इंगित करता है, वह असीमित चेतना जिससे सभी अभिव्यक्तियाँ उत्पन्न होती हैं और जिसमें सभी विलीन हो जाती हैं। वह छिपी हुई क्षमता है, वह अलिखित लिपि जिससे सृष्टि का पूरा नाटक सामने आता है। उन्हें अव्यक्तलक्षणा के रूप में नमन करना परम रहस्य, दिव्य के अकथनीय और अबोधगम्य स्वरूप की स्वीकृति है, जो सभी बोधगम्य गुणों से पहले और परे रहता है।

708. अव्यक्ताय

जो अव्यक्त, अदृश्य और सभी का अकारण कारण है, उन्हें नमन।

विस्तार : अव्यक्त (अव्यक्ताय) नाम हिंदू विचार में एक गहन दार्शनिक अवधारणा को संदर्भित करता है, विशेष रूप से शिव और भैरव परंपराओं में इस पर जोर दिया गया है। यह परम वास्तविकता को संवेदी धारणा और बौद्धिक समझ से परे बताता है।

अव्यक्त और अदृश्य (The Unmanifest and Invisible) अव्यक्त का शाब्दिक अर्थ है "अप्रकट," "अनावरणित," "अदृश्य," या "अगोचर।" यह अस्तित्व की उस अवस्था की ओर इशारा करता है जो अभी तक नाम और रूपों (नाम-रूप) में विभेदित नहीं हुई है। ब्रह्मांड के प्रकट होने से पहले, एक आदिम अवस्था थी जो पूरी तरह से अपरिवर्तित, निराकार और सभी अनुभवजन्य श्रेणियों से परे थी। कालभैरव, इस पहलू में, परम सत्ता की इस पूर्व-ब्रह्मांडीय अवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं। वह केवल "अदृश्य" नहीं हैं जिसका अर्थ है अनदेखा होना, बल्कि अदृश्य हैं क्योंकि वह दृश्यता और रूप की सभी श्रेणियों से परे हैं।

अकारण कारण (परब्रह्म) (The Uncaused Cause (Para Brahman)) वेदांतिक और तांत्रिक दर्शन में, अव्यक्त को अक्सर मूल-प्रकृति, आदिम अप्रकट प्रकृति, या स्वयं परब्रह्म के साथ भी जोड़ा जाता है - वह सर्वोच्च वास्तविकता जो सभी अस्तित्व का स्रोत है लेकिन स्वयं अकारण और सभी गुणों (निर्गुण) से परे है। वह वह क्षमता है जिससे सभी सृष्टि उत्पन्न होती है, फिर भी वह उस सृष्टि से अछूता और अपरिवर्तित रहता है। सभी घटनाएँ उससे उत्पन्न होती हैं, उसमें बनी रहती हैं, और अंततः उसमें विलीन हो जाती हैं, लेकिन वह स्वयं बिना आदि या अंत के, बिना रूप या सीमा के रहता है।

द्वैत और समझ से परे (Beyond Duality and Comprehension) कालभैरव का यह पहलू सभी द्वैतों - विषय और वस्तु, ज्ञाता और ज्ञेय - के अतिक्रमण को दर्शाता है। उन्हें बुद्धि द्वारा समझा नहीं जा सकता है या इंद्रियों द्वारा अनुभव नहीं किया जा सकता है क्योंकि वह अस्तित्व और चेतना का मूल आधार हैं जिससे बुद्धि और इंद्रियां दोनों उत्पन्न होती हैं। अव्यक्त पर ध्यान करना एक उन्नत आध्यात्मिक अभ्यास है जिसका उद्देश्य निर्गुण निरपेक्ष, ब्रह्मांड के अंतिम आधार को महसूस करना है। यह साधकों को क्षणभंगुर और प्रकट रूपों से परे देखने के लिए प्रोत्साहित करता है ताकि शाश्वत, निराकार सत्य को समझा जा सके।

709. व्यक्ताय

जो व्यक्त है, दृश्यमान है, और संपूर्ण प्रत्यक्ष ब्रह्मांड बन गया है, उस परमेश्वर को नमन।

विस्तार : नाम व्यक्त (व्यक्ताय) दिव्य के प्रकट, बोधगम्य या दृश्यमान पहलू को संदर्भित करता है। यह अप्रकट (अव्यक्त) के विपरीत है और उस रूप को दर्शाता है जिसे परम सत्ता ने संपूर्ण ब्रह्मांड के रूप में धारण किया है।

प्रकट ब्रह्मांड व्यक्त का अर्थ है "प्रकट", "विशिष्ट", "दृश्यमान" या "स्पष्ट"। कालभैरव के संदर्भ में, यह उन्हें उस परम वास्तविकता के रूप में पहचानता है जो संपूर्ण बोधगम्य ब्रह्मांड बन गई है। अस्तित्व में प्रत्येक रूप, प्रत्येक घटना, प्रत्येक प्राणी और प्रत्येक घटना उनके दिव्य सार की अभिव्यक्ति है। वे ब्रह्मांडीय रूप (विश्वरूप) हैं जो उन सभी को दिखाई देते हैं जो इसे देख सकते हैं।

अप्रकट से प्रकट तक दार्शनिक रूप से, व्यक्त शुद्ध चेतना (ब्रह्म/शिव अव्यक्त के रूप में) की अप्रकट, आदिम अवस्था से मूर्त, विविध और जानने योग्य ब्रह्मांड में संक्रमण का प्रतिनिधित्व करता है। इसका तात्पर्य यह है कि परम सत्ता केवल एक अमूर्त अवधारणा नहीं है, बल्कि वही वास्तविकता है जिसे हम अपनी इंद्रियों और मन से अनुभव करते हैं। भैरव, व्यक्त के रूप में, वह सार्वभौमिक चेतना है जिसने स्वयं को उन असंख्य रूपों और नामों में प्रक्षेपित किया है जो सृष्टि का निर्माण करते हैं।

अंतरस्थ दिव्य यह नाम कालभैरव की अंतरस्थता—उनकी उपस्थिति के भीतर, और सभी सृष्टि के रूप में—को रेखांकित करता है। वे दुनिया से अलग नहीं हैं बल्कि हर परमाणु और हर प्राणी में गहराई से एकीकृत हैं। व्यक्त को नमन करना भौतिक दुनिया के हर पहलू में दिव्य उपस्थिति को स्वीकार करना और ब्रह्मांड को उनकी असीम ऊर्जा और चेतना की सीधी अभिव्यक्ति के रूप में देखना है। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि दिव्य केवल पारलौकिक नहीं है बल्कि प्रकट दुनिया में भी पूरी तरह से अंतर्निहित है।

710. वैश्याय

वैश्य वर्ग (व्यापारी और कृषक) के साकार स्वरूप को नमन।

विस्तार : वैश्याय नाम, कालभैरव का एक विशेषण, देवता का सामाजिक संरचना और मानव सभ्यता की मूलभूत गतिविधियों से एक आकर्षक और गहन संबंध दर्शाता है। यह संस्कृत शब्द वैश्य से लिया गया है।

वैश्य वर्ण वैदिक समाज के प्राचीन सामाजिक और आर्थिक संगठन में, वैश्य चार मुख्य वर्णों (वर्गों) में से तीसरे का गठन करते हैं। उनके प्राथमिक कार्य और जिम्मेदारियों में शामिल हैं:

• कृषि (कृषि): भूमि की खेती, कृषि और खाद्य उत्पादन, जो जीवन को बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं। • गो-रक्षा (गोरक्षा): पशुपालन, विशेष रूप से गायों का पालन-पोषण और संरक्षण, जो दूध, डेयरी उत्पादों और हल चलाने वाले जानवरों के रूप में अर्थव्यवस्था के लिए केंद्रीय थीं। गायों को पवित्र और धन और पोषण का प्रतीक माना जाता था। • व्यापार और वाणिज्य (वाणिज्य): वस्तुओं की खरीद, बिक्री और विनिमय, बाजार स्थापित करना, और समुदायों के भीतर और उनके बीच आर्थिक प्रवाह को सुविधाजनक बनाना।

पोषण और समृद्धि का प्रतीक वैश्याय के रूप में संबोधित किए जाने से, कालभैरव को इन महत्वपूर्ण गतिविधियों के मूर्त रूप और अधिष्ठाता देवता के रूप में स्वीकार किया जाता है। इसका अर्थ है:

• पोषण प्रदाता: वह कृषि प्रचुरता के दिव्य स्रोत का प्रतिनिधित्व करते हैं, फसलें और भोजन की उपलब्धता सुनिश्चित करते हैं। वह ब्रह्मांडीय शक्ति हैं जो पृथ्वी को अपने फल देने में सक्षम बनाती हैं। • धन और संसाधनों के संरक्षक: वह व्यापार और पशुधन के माध्यम से उत्पन्न धन के संचय और

परिसंचरण पर शासन करते हैं। वह लाभार्थी हैं जो ईमानदार श्रम और वाणिज्यिक विनिमय के माध्यम से समृद्धि सुनिश्चित करते हैं। • समाज के रखवाले: वैश्य वर्ग समाज की भौतिक भलाई के लिए महत्वपूर्ण है। इस वर्ग का प्रतीक बनकर, कालभैरव ब्रह्मांड और मानव सभ्यता के मूलभूत आर्थिक और भौतिक ताने-बाने को बनाए रखने में अपनी भूमिका को दर्शाते हैं। उनका आशीर्वाद इन महत्वपूर्ण जीवन-निर्वाह गतिविधियों के सुचारू कामकाज को सुनिश्चित करता है।

विकास और विनिमय का ब्रह्मांडीय सिद्धांत दार्शनिक रूप से, यह नाम कृषि और वाणिज्य की गतिविधियों को एक ब्रह्मांडीय स्तर तक बढ़ाता है। कालभैरव, वैश्याय के रूप में, केवल विनाश या भय के देवता नहीं हैं, बल्कि वह दिव्य सिद्धांत भी हैं जो विकास, पोषण और सार्वभौमिक जीवन के लिए आवश्यक संसाधनों के व्यवस्थित विनिमय को बढ़ावा देते हैं। वह उत्पादन और उपभोग के चक्रों के पीछे की दिव्य शक्ति हैं, जो उन्हें भौतिक दुनिया के अस्तित्व के लिए केंद्रीय बनाती हैं।

711. विशांपतये

सभी लोगों और जनजातियों के स्वामी और रक्षक को नमन।

विस्तार : विशांपतये नाम विशां और पतये का एक यौगिक है।

विशां: यह "विश्" का संबंधकारक बहुवचन है, जो "लोगों," "समुदाय," "जनजाति," या "बस्ती" को संदर्भित करता है। प्राचीन वैदिक समाज में, एक "विश्" एक मूलभूत सामाजिक इकाई थी, अक्सर एक कबीला या लोगों की एक बस्ती। यह सामूहिक मानवता को दर्शाता है।

पतये: यह "पति" का संप्रदान कारक एकवचन है, जिसका अर्थ है "स्वामी," "मालिक," "शासक," या "रक्षक।"

सभी लोगों के स्वामी विशांपति के रूप में, शिव (अपने कालभैरव रूप में) को संपूर्ण मानवता के परम शासक और रक्षक के रूप में पूजा जाता है। यह जनजातीय या भौगोलिक विभाजनों से परे है, जिसमें ब्रह्मांड के सभी समुदाय और समाज शामिल हैं। उनका प्रभुत्व प्रत्येक व्यक्ति और प्राणियों के प्रत्येक सामूहिक समूह पर फैला हुआ है, जो उनके कल्याण को सुनिश्चित करता है और उनके भाग्य का मार्गदर्शन करता है।

बस्तियों और कल्याण के रक्षक "विश्" का "बस्ती" या "समुदाय" के रूप में अर्थ स्थापित व्यवस्था और समाजों के कल्याण के दिव्य संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका पर और जोर देता है। वह वह है जो मानवीय संपर्क और सामुदायिक जीवन को नियंत्रित करने वाले ब्रह्मांडीय कानूनों को बनाए रखता है, समृद्धि और न्याय सुनिश्चित करता है। यह पहलू उनके भयानक स्वरूप के बावजूद उनके परोपकारी स्वभाव को उजागर करता है; वह अपने लोगों की रक्षा एक परोपकारी राजा की तरह करता है जो अपनी प्रजा की रक्षा करता है।

ब्रह्मांडीय शासन यह नाम कालभैरव को ब्रह्मांडीय व्यवस्था के एक प्रशासक के रूप में स्थापित करता है, विशेष रूप से मानव सभ्यता के संबंध में। वह परम सत्ता है जो मानव समाजों के विकास और कामकाज पर नज़र रखता है, न्याय प्रदान करता है, धर्मी की रक्षा करता है, और दुष्टों को दंडित करता है, जिससे लोगों की दुनिया में संतुलन बना रहता है।

712. विबुधाग्रेसराय

उन परम पूज्य आदि अग्रणी देवताओं में भी अग्रणी को नमन।

विस्तार : विबुधाग्रेसराय नाम तीन संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: विबुध, अग्र और सर, साथ ही चतुर्थी विभक्ति का प्रत्यय। प्रत्येक घटक आध्यात्मिक और पदानुक्रमित महत्व से समृद्ध है, जो कालभैरव को दिव्य प्राणियों के बीच एक सर्वोच्च स्थान प्रदान करता है।

विबुध (बुद्धिमान और प्रबुद्ध) विबुध (विबुध) शब्द का शाब्दिक अर्थ है "जो अज्ञान से रहित है" 'वि' (रहित) + 'बुध' (अज्ञानी)। इसलिए, यह उन लोगों को संदर्भित करता है जो बुद्धिमान, मेधावी और प्रबुद्ध हैं। हिंदू पौराणिक साहित्य में, "विबुध" का प्रयोग अक्सर देवों या देवताओं के लिए एक विशेषण के रूप में किया जाता है, जिसका अर्थ है उनकी अंतर्निहित बुद्धि, दिव्य ज्ञान और मानवीय अज्ञान की सीमाओं से मुक्ति। उनके पास दिव्य समझ होती है और वे अक्सर ब्रह्मांडीय व्यवस्था के संरक्षक के रूप में कार्य करते हैं।

अग्र (सर्वोच्च, प्रमुख, नेता) अग्र (अग्र) शब्द का अर्थ है "सर्वोच्च," "प्रमुख," "अग्रणी," "पहला," या "अग्रणी।" जब संयुक्त किया जाता है, तो यह सर्वोच्च अधिकार और अद्वितीय स्थिति को दर्शाता है। यह केवल पद के अनुसार ही नहीं, बल्कि अंतर्निहित श्रेष्ठता, ज्ञान और शक्ति के अनुसार नेतृत्व का तात्पर्य है।

सर (आगे बढ़ना, चलना, होना) हालांकि कुछ यौगिकों में हमेशा एक अलग शब्द के रूप में स्पष्ट रूप से विश्लेषण नहीं किया जाता है, यहां "अग्रेसर" (अग्रेसर) के संदर्भ में "सर" (सर) का अर्थ है "जो आगे बढ़ता है," "जो नेतृत्व करता है," या "जो सबसे आगे है।" जब "अग्र" के साथ जोड़ा जाता है, तो "अग्रेसर" एक स्पष्ट और शक्तिशाली पदनाम बनाता है जिसका अर्थ है "जो सबसे आगे है" या "मुख्य नेता।"

बुद्धिमान देवताओं के सर्वोच्च नेता इस प्रकार, विबुधाग्रेसराय का अर्थ है "उनको नमस्कार जो सभी बुद्धिमान और प्रबुद्ध देवताओं के प्रमुख नेता और मुखिया हैं।" यह नाम कालभैरव को देवों के पूरे पंथ से ऊपर उठाता है, उन्हें उनके परम सेनापति, मार्गदर्शक और दिव्य ज्ञान और ब्रह्मांडीय शक्ति के प्रतीक के रूप में स्थापित करता है। इसका तात्पर्य यह है कि देवता भी, अपनी सारी बुद्धि और शक्ति के साथ, कालभैरव के सर्वोच्च अधिकार और श्रेष्ठता को पहचानते हैं।

यह पदनाम उनकी भूमिका को केवल बुराई के एक भयानक संहारक के रूप में ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक ज्ञान और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के एक सर्वोच्च स्रोत के रूप में भी रेखांकित करता है, जो समय और अस्तित्व के चक्रों के माध्यम से देवताओं का भी मार्गदर्शन करते हैं। यह उनकी शिविक पहचान को महादेव, "महान ईश्वर" के रूप में पुष्ट करता है, जिन्हें अन्य सभी देवता अंततः श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

713. वेदाय

जो वेदों के परम और पवित्र ज्ञान स्वरूप हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : वेदाय नाम वेदों के परम स्रोत और अवतार को संदर्भित करता है, जो हिंदू धर्म के सबसे प्राचीन और पवित्र ग्रंथ हैं।

पवित्र ज्ञान का अवतार वेद (धातु "विद्" से, जिसका अर्थ है "जानना") ज्ञान, बुद्धि और विशेष रूप से चार वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) में निहित प्रकट सत्यों को दर्शाता है। शिव (या कालभैरव) को "वेदाय" कहकर, हम उन्हें इन पवित्र धर्मग्रंथों का सार, मूल और अंतिम भंडार मानते हैं। वे केवल वेदों के प्राप्तकर्ता या व्याख्याकार नहीं हैं, बल्कि उनका शाश्वत और स्वयंभू रूप हैं।

समस्त ज्ञान का स्रोत वेदों को अपौरुषेय (मानव उत्पत्ति का नहीं) माना जाता है, जिसका अर्थ है कि वे शाश्वत सत्य हैं जिनकी खोज प्राचीन ऋषियों ने की थी, न कि उन्होंने बनाए थे। वेदाय के रूप में, कालभैरव वह दिव्य स्रोत हैं जहाँ से ये शाश्वत सत्य निकलते हैं। वे परम ज्ञान हैं, वह अव्यक्त ध्वनि (परा वाक्) जिससे वेदों के श्रव्य मंत्र और भजन निकलते हैं।

मार्गदर्शन और मुक्ति वेद धर्म (धार्मिक आचरण), अर्थ (भौतिक समृद्धि), काम (इच्छाओं की पूर्ति) और मोक्ष (मुक्ति) का मार्ग प्रदान करते हैं। वेदों का अवतार होने के नाते, कालभैरव इस प्रकार दिव्य मार्गदर्शक का प्रतिनिधित्व करते हैं जो आध्यात्मिक मुक्ति और परम वास्तविकता का मार्ग दिखाते हैं। इस पहलू में उनकी भक्ति, सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त करने और जन्म और मृत्यु के चक्रों से मुक्त होने का एक साधन है।

714. विश्वगर्भाय

समस्त ब्रह्मांड को अपने गर्भ में धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : विश्वगर्भाय नाम संस्कृत के शब्दों विश्व (ब्रह्मांड/सर्वव्यापी) और गर्भ (गर्भ/आंतरिक/सार/भ्रूण) से आया है।

ब्रह्मांडीय गर्भ विश्वगर्भाय दिव्य को "ब्रह्मांडीय गर्भ" के रूप में दर्शाता है, वह पात्र और स्रोत जिससे संपूर्ण ब्रह्मांड उत्पन्न होता है और जिसके भीतर वह टिका रहता है। यह अवधारणा हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में गहन है, जहाँ ब्रह्मांड को उसके निर्माता से अलग एक बाहरी रचना के रूप में नहीं देखा जाता है, बल्कि दिव्य स्व से एक उत्सर्जन के रूप में और उसके भीतर समाहित के रूप में देखा जाता है। भगवान शिव, अपने भयंकर कालभैरव रूप में, सृजन और विलय के इस परम सिद्धांत का प्रतीक हैं।

धारक और समाहित करने वाला जो अपने गर्भ में संपूर्ण ब्रह्मांड को समाहित किए हुए है, उस रूप में कालभैरव को न केवल निर्माता के रूप में बल्कि परम धारक के रूप में भी चित्रित किया गया है। सभी आकाशगंगाएँ, तारे, ग्रह और जीव उनके ब्रह्मांडीय शरीर के भीतर मौजूद हैं। यह एक सर्वेश्वरवादी (panentheistic) समझ की ओर इशारा करता है जहाँ दिव्य एक साथ सभी रचनाओं में व्याप्त है और उनसे परे भी है।

संभावना और अभिव्यक्ति का प्रतीक "गर्भ" (Garbha) उस आदिम क्षमता (हिरण्यगर्भ - स्वर्णिम गर्भ/अंडा) का भी प्रतीक है जिससे सभी अभिव्यक्तियाँ उत्पन्न होती हैं। यह उस अव्यक्त अवस्था का प्रतिनिधित्व करता है जिससे व्यक्त ब्रह्मांड प्रकट होता है, और जिसमें वह अंततः विलीन हो जाता है। कालभैरव, विश्वगर्भाय के रूप में, इसलिए सभी अस्तित्व का स्रोत और अंत हैं, ब्रह्मांड के अल्फा और ओमेगा।

आंतरिक दिव्यता दार्शनिक रूप से, यह नाम इस विचार की ओर भी इशारा करता है कि ब्रह्मांड की संपूर्णता स्वयं (आत्मा) से बाहरी नहीं है। जिस प्रकार ब्रह्मांड दिव्य के भीतर समाहित है, उसी प्रकार सूक्ष्म जगत (व्यक्तिगत आत्मा) स्थूल जगत (सार्वभौमिक आत्मा) को दर्शाता है। अपने भीतर दिव्य का अनुभव करके, व्यक्ति उस सार्वभौमिक सार से जुड़ता है जिसमें सब कुछ समाहित है।

715. विचक्षणाय

अत्यंत बुद्धिमान, निपुण और विवेकी को नमन।

विस्तार : विचक्षणाय नाम संस्कृत मूल "चक्ष" से लिया गया है जिसका अर्थ है "देखना" या "अनुभव करना," जो उपसर्ग "वि-" के साथ संयुक्त है जो अर्थ को तीव्र करता है, जिसका अर्थ विशिष्टता, अलगाव या पूर्णता है।

अत्यंत बुद्धिमान (सर्वोच्च बुद्धि) • विचक्षण उस व्यक्ति को दर्शाता है जिसके पास असाधारण ज्ञान, अंतर्दृष्टि और व्यापक समझ है। यह केवल बौद्धिक ज्ञान नहीं है बल्कि वास्तविकता की गहरी, प्रत्यक्ष धारणा है। सर्वोच्च सत्ता के रूप में, कालभैरव परम ज्ञान का प्रतीक हैं, जो नश्वर मनुष्यों की सीमित समझ से परे हैं। इस ज्ञान में सृष्टि, पालन और संहार की संपूर्णता शामिल है, जिसमें कर्म और धर्म के जटिल कार्य भी शामिल हैं।

कुशल (निपुण निष्पादन) • यह शब्द कार्य में कुशलता और निपुणता का भी अर्थ है। कालभैरव के लिए, यह ब्रह्मांडीय प्रक्रियाओं पर उनकी महारत को संदर्भित करता है। वह ब्रह्मांड के परम सूत्रधार हैं, जो अपनी दिव्य इच्छा को पूर्ण सटीकता और प्रभावकारिता के साथ निष्पादित करते हैं। उनके कार्य, हालांकि अक्सर भयावह प्रतीत होते हैं, हमेशा उद्देश्यपूर्ण होते हैं, जो आत्माओं के अंतिम संतुलन और मुक्ति की ओर ले जाते हैं। वह अस्तित्व की जटिल बुनावट को संभालने में कुशल हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि ब्रह्मांडीय कानून प्रबल हो।

विवेकी (तीव्र बोध) • विचक्षण आगे उस व्यक्ति को दर्शाता है जो विवेकी है, जिसके पास एक तीव्र और सूक्ष्म बोध है जो भेदभाव और निर्णय की अनुमति देता है। कालभैरव का विवेक पूर्ण है; वह सभी चीजों की सच्ची प्रकृति को समझते हैं, सत्य को भ्रम से, सद्गुण को दुर्गुण से, और शाश्वत को क्षणभंगुर से अलग करते हैं। यह विवेक उनके महान दंडदाता (दण्डपाणि) की भूमिका में महत्वपूर्ण है, यह सुनिश्चित करते हुए कि न्याय उचित रूप से किया जाए और आध्यात्मिक प्रगति को अचूक स्पष्टता के साथ निर्देशित किया जाए।

सर्वव्यापी दृष्टि • संक्षेप में, विचक्षण कालभैरव की सर्वव्यापी दृष्टि और ब्रह्मांड की अनंत जटिलताओं को पूर्ण ज्ञान, कौशल और अंतर्दृष्टि के साथ समझने और प्रबंधित करने की उनकी क्षमता को इंगित करता है। वह सतही से परे देखते हैं, कारण श्रृंखलाओं और अंतिम नियति को अद्वितीय स्पष्टता के साथ समझते हैं।

716. विषमाक्षाय

विषम (तीन) संख्या में नेत्र धारण करने वाले, विषमता और शक्ति के प्रतीक को नमन।

विस्तार : विषमाक्ष (Viṣamākṣa) नाम भगवान शिव का एक गहन वर्णन है, विशेष रूप से उनके भयंकर और सर्व-दृष्टिमान स्वरूपों में, जिसमें कालभैरव भी शामिल हैं।

व्युत्पत्ति और शाब्दिक अर्थ • विषम (Viṣama): इस संस्कृत शब्द का अर्थ है "असमान," "विषम," "अद्वितीय," "कठिन," या "अतुलनीय।" • अक्ष (Akṣa): यह "आँख" को संदर्भित करता है। इस प्रकार, विषमाक्ष का शाब्दिक अर्थ है "विषम (या असमान) संख्या में आँखों वाला।" यह सीधे शिव की प्रतिष्ठित तीन आँखों का संकेत देता है।

तीसरा नेत्र (त्रिनेत्र) शिव को उनके दो सामान्य नेत्रों के अतिरिक्त, उनके माथे पर एक तीसरे नेत्र (त्रिनेत्र या त्र्यंबक) के साथ चित्रित किया जाता है। यह तीसरा नेत्र कोई भौतिक अंग नहीं है, बल्कि एक पारलौकिक नेत्र है, जो प्रतीक है:

1. ज्ञान और सर्वज्ञता (Wisdom and Omni-cognizance): दो भौतिक नेत्र सूर्य और चंद्रमा का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो प्रकट संसार की द्वैतता का प्रतीक हैं - दिन और रात, सृष्टि और विनाश, भौतिक और आध्यात्मिक। तीसरा नेत्र, हालांकि, इन द्वैतताओं से परे है। यह आध्यात्मिक ज्ञान (ज्ञान चक्षु), अंतर्ज्ञान और सर्वोच्च ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है जो दिखावे से परे देखता है। यह शुद्ध चेतना और प्रत्यक्ष अंतर्दृष्टि का नेत्र है। 2. विनाशकारी शक्ति (हालाहल) (Destructive Power - Hālāhala): तीसरा नेत्र विनाश से प्रसिद्ध रूप से जुड़ा हुआ है। जब क्रोध में या ब्रह्मांडीय आवश्यकता के लिए खोला जाता है, तो यह अग्नि ऊर्जा का उत्सर्जन करता है जो किसी भी चीज़ को भस्म करने में सक्षम है - जैसा कि कामदेव, इच्छा के देवता को भस्म करते समय देखा गया था। यह अज्ञान, अहंकार और आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डालने वाली हर चीज़ के विनाश का प्रतीक है। कालभैरव के लिए, यह विनाशकारी शक्ति तीव्र हो जाती है, जो बुराई को नष्ट करके और धर्म को बनाए रखकर ब्रह्मांडीय व्यवस्था सुनिश्चित करती है। 3. द्वैत से परे (Transcendence of Duality): "विषम" संख्या में नेत्र होने से, शिव द्वैतवादी धारणा से अपने परे होने का संकेत देते हैं। वह अतीत,

वर्तमान और भविष्य को एक साथ देखते हैं, और वास्तविकता को उसके एकीकृत, अद्वैत सार में अनुभव करते हैं। यह विषमता सभी देवताओं के बीच उनके अद्वितीय, असाधारण और अतुलनीय स्वभाव को उजागर करती है।

विषमता और शक्ति का प्रतीकवाद उनके नेत्रों की "विषमता" (विषम) लाक्षणिक रूप से उनके पूरे अस्तित्व तक फैली हुई है। यह पारंपरिक मानदंडों और तर्क से परे कार्य करने की उनकी क्षमता को दर्शाता है। उनकी शक्ति उन नियमों से बंधी नहीं है जो ब्रह्मांड को नियंत्रित करते हैं, बल्कि, वह स्वयं उन नियमों के स्रोत और प्रवर्तक हैं, और अपनी इच्छा से उन्हें पार कर सकते हैं। यह उन्हें परम, अद्वितीय शक्ति बनाता है।

कालभैरव के संदर्भ में, विषमाक्ष उनकी भयानक फिर भी शुद्ध करने वाली दृष्टि पर जोर देता है, जो सभी भ्रमों को भेद सकती है और सभी अशुद्धियों को जला सकती है, जिससे समय का अथक प्रवाह और ब्रह्मांडीय विघटन सुनिश्चित होता है जिसे उनके प्राथमिक कार्य के रूप में वर्णित किया गया है।

717. विलोमाक्षाय

जिनकी आँखें अंतर्मुखी हैं, जो आत्मनिरीक्षण का प्रतीक हैं, अथवा जिनकी आँखें भयानक हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : विलोमाक्ष नाम विलोम और अक्ष का एक यौगिक है।

व्युत्पत्ति और मूल अर्थ

• विलोम: इस शब्द का अर्थ आमतौर पर "प्रवाह के विपरीत," "विपरीत," "उल्टा," या "अंदर की ओर" होता है। आध्यात्मिक संदर्भ में, यह अक्सर अंतर्मुखी होने या पारंपरिक बाहरी धारणाओं के विपरीत जाने को संदर्भित करता है। • अक्ष: इसका अर्थ "आँख," "इंद्रिय अंग," या "ज्ञान" है।

अंतर्मुखी आँखें: आत्मनिरीक्षण और योग का प्रतीक

विलोमाक्ष की एक प्राथमिक व्याख्या है "जिसकी आँखें अंदर की ओर मुड़ी हुई हैं।" इसका गहरा आध्यात्मिक महत्व है:

• आंतरिक दृष्टि: यह एक ऐसे प्राणी को दर्शाता है जो आंतरिक बोध, ध्यान और आत्मज्ञान में निरंतर लीन रहता है। उसकी दृष्टि बाहरी, क्षणभंगुर दुनिया की ओर नहीं, बल्कि भीतर के शाश्वत सत्य की ओर निर्देशित है। यह परम योगी के रूप में उसके स्वरूप को दर्शाता है, जो सभी इंद्रियों और चेतना को भीतर की ओर खींचता है। • द्वंद्वों का अतिक्रमण: अपनी दृष्टि को भीतर की ओर मोड़कर, वह बाहरी दुनिया की ध्रुवीयताओं और माया का अतिक्रमण करता है। वह अपने स्वयं के सच्चे स्वरूप में लीन है, जो शुद्ध चेतना (चित) और आनंद (आनंद) है। • आध्यात्मिक साधकों का मार्गदर्शन: यह पहलू आध्यात्मिक अभ्यासकर्ताओं को आत्मनिरीक्षण करने, बाहरी विकर्षणों को शांत करने और अपने भीतर दिव्य को खोजने के लिए प्रेरित करता है। यह योग के अंतिम लक्ष्य का प्रतिनिधित्व करता है - व्यक्तिगत चेतना को सार्वभौमिक चेतना के साथ एकजुट करना।

भयानक आँखें: शक्ति और विनाश का प्रतीक

विलोमाक्ष की एक और वैध व्याख्या है "जिसकी आँखें भयानक हैं" या "जिसकी आँखें सामान्य से विपरीत हैं।" यह भैरव के उग्र और दुर्जेय स्वरूप के अनुरूप है:

• विनाशकारी दृष्टि: काल भैरव के रूप में, उनकी आँखों को भयानक देखा जा सकता है क्योंकि वे समय की अथक प्रगति के उपकरण हैं, जो अंततः सब कुछ भस्म कर देता है। उनकी दृष्टि में विघटन (संहार) की शक्ति है। • सर्वव्यापी दृष्टि: उनकी "विपरीत" या "असामान्य" आँखें एक ऐसी दृष्टि को भी दर्शा सकती हैं जो सांसारिक धारणाओं से सीमित नहीं है। वह सतह से परे देखता है, सभी चीजों के अंतिम सत्य और अंतर्निहित वास्तविकता को समझता है, चाहे वह सत्य अनभिज्ञों के लिए कितना भी परेशान करने वाला क्यों न हो। • परिवर्तन के लिए एक उपकरण के रूप में भय:

उनकी आँखों का भयानक पहलू भक्तों में एक स्वस्थ आध्यात्मिक भय (भैरव भक्ति) पैदा करने का काम करता है, जो उन्हें अपनी आसक्तियों को त्यागने और मुक्ति की ओर बढ़ने के लिए मजबूर करता है।

संश्लेषण

इस प्रकार, विलोमाक्ष भैरव में निहित एक द्वैत को खूबसूरती से दर्शाता है: एक भयानक बाहरी प्रदर्शन जिसमें गहरा आंतरिक आध्यात्मिक ज्ञान होता है। उनकी अंतर्मुखी दृष्टि परम बोध का प्रतीक है, जबकि उनकी संभावित भयानक आँखें भ्रम को भंग करने और ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने की उनकी अपार शक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं। वह परम संन्यासी हैं जो धर्म के परम प्रवर्तक भी हैं।

718. वृषदाय

धर्म, सद्‌गुण और कामनाओं के दाता को नमन।

विस्तार : वृषदाय नाम एक गहन संस्कृत यौगिक है, जो "वृष" (Vṛiṣa) और "दाय" (Dāya) को जोड़ता है। यह नाम एक दिव्य दाता के रूप में कालभैरव की बहुआयामी भूमिका को समाहित करता है।

धर्म और सद्‌गुणों के दाता (धर्म) "वृष" का शाब्दिक अर्थ "बैल" है, जो वैदिक परंपरा में धर्म (धार्मिकता, ब्रह्मांडीय व्यवस्था, सद्‌गुण) का प्रतीक है। बैल शक्ति, पौरुष और नैतिक कानून की दृढ़ता का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रकार, वृष स्वयं धर्म को संदर्भित कर सकता है। "वृषदाय" के रूप में, कालभैरव वह हैं जो धर्म प्रदान करते हैं – नैतिक और नैतिक सिद्धांतों का पालन, जो आध्यात्मिक योग्यता और सही कार्य की ओर ले जाता है। इसका तात्पर्य है कि वह भक्तों को एक सदाचारी मार्ग की ओर मार्गदर्शन करते हैं, उन्हें ब्रह्मांडीय कानून को बनाए रखने और सकारात्मक कर्म फल प्राप्त करने में मदद करते हैं।

इच्छाओं को पूरा करने वाले (काम) "वृष" की एक और व्याख्या इच्छा या कामना से संबंधित है, विशेष रूप से ऐसे संदर्भ में जहाँ वे इच्छाएँ धर्म के अनुरूप हों। "दाय" का अर्थ "देना" या "प्रदान करना" है। इसलिए, वृषदाय धार्मिक इच्छाओं के दाता को दर्शाता है। यह निम्न या गैर-आध्यात्मिक इच्छाओं को पूरा करने के बारे में नहीं है, बल्कि उन आकांक्षाओं के बारे में है जो किसी के आध्यात्मिक विकास और बड़े अच्छे के साथ सामंजस्य में हैं। इस पहलू में, कालभैरव अपने भक्तों के लिए एक परोपकारी प्रदाता बन जाते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि उनकी ज़रूरतें और नेक इरादे वाली इच्छाएँ पूरी हों।

लाभ और आशीर्वाद के वितरक अधिक व्यापक रूप से, "वृषदाय" का अर्थ उस एक से हो सकता है जो लाभ, आशीर्वाद और समृद्धि प्रदान करता है। इसका तात्पर्य उदारता और शुभ ऊर्जाओं की वर्षा से है। कालभैरव, अपने दुर्जेय स्वरूप के बावजूद, अंततः उन लोगों के लिए एक रक्षक और परोपकारी हैं जो उन्हें भक्ति के साथ पूजते हैं। वह आंतरिक शक्ति प्रदान करते हैं, आध्यात्मिक प्रगति में आने वाली बाधाओं को दूर करते हैं, और धर्म के अनुरूप एक पूर्ण जीवन के लिए आवश्यक संसाधन प्रदान करते हैं। यह पहलू उनकी भूमिका को केवल एक दंड देने वाले के रूप में नहीं, बल्कि एक दयालु दाता के रूप में भी उजागर करता है।

719. वृषवर्धनाय

धर्म और सद्‌गुणों को बढ़ाने वाले और फलने-फूलने वाले को नमन।

विस्तार : वृषवर्धन (Vṛṣavarddhana) नाम दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों, वृष और वर्धन का एक यौगिक है।

वृष का अर्थ वृष (Vṛṣa) के अर्थ की कई परतें हैं: 1. बैल: यह शिव की प्रतिमा विज्ञान में सबसे आम संबंध है, जहाँ नंदी बैल शिव का वाहन और धर्म का प्रतीक है। 2. धार्मिकता या धर्म: प्रतीकात्मक और दार्शनिक अर्थ में, वृष ब्रह्मांड में सत्य, सद्गुण और नैतिक व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करता है। 3. पुरुषत्व, शक्ति या पौरुष: यह प्रबल ऊर्जा और शक्ति को दर्शाता है।

वर्धन का अर्थ वर्धन (Varddhana) का अर्थ है "बढ़ाने वाला," "वृद्धि करने वाला," "प्रोत्साहित करने वाला," या "फलने-फूलने वाला।" यह किसी चीज़ के पोषण और विस्तार में सक्रिय भूमिका का तात्पर्य है।

धर्म और सद्गुणों का प्रवर्तक जब संयुक्त किया जाता है, तो वृषवर्धन उस एक को दर्शाता है जो सक्रिय रूप से धार्मिकता (धर्म) और सद्गुणों को दुनिया में और व्यक्तियों के भीतर बढ़ावा देता है, ऊपर उठाता है और उन्हें बढ़ने और फलने-फूलने का कारण बनता है। यह नाम कालभैरव की भूमिका को केवल बुराई के संहारक के रूप में ही नहीं, बल्कि एक सर्वोच्च परोपकारी के रूप में भी उजागर करता है जो अच्छाई को बढ़ावा देता है। वह यह सुनिश्चित करते हैं कि नैतिक व्यवस्था बनी रहे और मजबूत हो, एक ऐसा वातावरण प्रदान करते हैं जहाँ नैतिक आचरण और आध्यात्मिक उत्थान पनप सकें।

प्रबल ऊर्जा का अवतार वृष (शक्ति/पौरुष) को बढ़ाने वाले के रूप में, वह सभी प्रबल ऊर्जा—आध्यात्मिक, शारीरिक और ब्रह्मांडीय—का स्रोत हैं जो ब्रह्मांड को चलाती है और विकास और उत्थान को सक्षम बनाती है। वह प्राणियों को धर्म का पालन करने और उसे मूर्त रूप देने की शक्ति प्रदान करते हैं।

नंदी से संबंध वृष का नंदी, शिव के दिव्य बैल और वाहन से संबंध को देखते हुए, यह नाम सूक्ष्म रूप से कालभैरव को धर्म के प्रतीक से जोड़ता है। नंदी की शांत, अडिग उपस्थिति धार्मिकता के प्रति अटूट पालन का प्रतीक है। इसलिए, वृषवर्धन वह शक्ति है जो धर्म को दृढ़ता से खड़ा करती है और उसे बढ़ाती है।

शुभ और परोपकारी पहलू यह नाम कालभैरव के एक गहन शुभ और परोपकारी पहलू को प्रकट करता है। जबकि वह अपराधों के दंडक और नकारात्मकताओं के संहारक के रूप में अपनी भूमिका में भयंकर हैं, वह अच्छाई, सत्य और आध्यात्मिक विकास के सिद्धांतों को बनाए रखने और उनका विस्तार करने के लिए समान रूप से समर्पित हैं। वह सद्गुणों के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करते हैं और अपने भक्तों के हृदय में इसके विकास को पोषित करते हैं।

720. विविक्तदाय

एकांत, विवेक और साधना के लिए एकांत स्थान प्रदान करने वाले को नमन।

विस्तार : विविक्तदाय नाम आध्यात्मिक अभ्यास, विशेषकर शैव धर्म और वेदांत में एक समृद्ध अवधारणा को उजागर करता है। यह संस्कृत शब्दों विविक्तम् और दाय से लिया गया है।

विविक्तम्: इस शब्द के कई अर्थ हैं: • एकांत, निर्जनता: अकेले रहने की स्थिति, भीड़, विकर्षणों और सांसारिक व्यस्तताओं से अलग। • विवेक, भेदभाव: अंतर करने, भेद करने और सूक्ष्म अंतरों को समझने की क्षमता, विशेष रूप से वास्तविक और अवास्तविक, स्थायी और अस्थायी के बीच। • स्वच्छता, पवित्रता: शुद्ध होने की स्थिति, अशुद्धियों से मुक्त।

दाय: का अर्थ है "देने वाला" या "प्रदान करने वाला"।

एकांत और निर्जनता प्रदान करने वाला कालभैरव, विविक्तदाय के रूप में, वह हैं जो एकांत का अवसर प्रदान करते हैं। आध्यात्मिक अभ्यास (साधना) के लिए अक्सर एक शांत, अबाधित वातावरण की आवश्यकता होती है, जो दुनिया के कोलाहल से मुक्त हो, ताकि आत्मनिरीक्षण और ध्यान को

सुगम बनाया जा सके। वह या तो एक एकांत स्थान (एक गुफा, एक जंगल, एक शांत कमरा) की बाहरी परिस्थिति प्रदान करते हैं या गतिविधि के बीच भी मानसिक एकांत खोजने की आंतरिक क्षमता प्रदान करते हैं। यह एकांत अकेलापन नहीं है, बल्कि आंतरिक शांति और बाहरी उत्तेजनाओं से अलगाव की एक गहरी स्थिति है, जो गहरे आध्यात्मिक कार्य के लिए आवश्यक है।

विवेक प्रदान करने वाला विविक्तदाय के सबसे गहन अर्थों में से एक विवेक, या आध्यात्मिक विवेक का प्रदान करना है। यह आत्मा (सच्चा स्व) और अनात्मा (गैर-स्व) के बीच, ब्रह्म (परम वास्तविकता) और माया (भ्रम) के बीच, शाश्वत और क्षणभंगुर के बीच अंतर करने की बौद्धिक और सहज क्षमता है। यह विवेक मुक्ति (मोक्ष) के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह एक साधक को क्षणभंगुर दुनिया से अलग होने और शाश्वत सत्य पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाता है। कालभैरव, इस पहलू में, साधक को वास्तविकता की सूक्ष्म परतों को समझने, भ्रम को दूर करने और सत्य में रहने के लिए मार्गदर्शन करते हैं।

पवित्रता प्रदान करने वाला एकांत और विवेक से जुड़ा पवित्रता (विविक्त) की अवधारणा है। यह मानसिक और आध्यात्मिक स्पष्टता, मानसिक दोषों, भावनात्मक उथल-पुथल और कर्मिक अशुद्धियों से मुक्ति को संदर्भित करता है। इस शुद्ध अवस्था को प्रदान करके, कालभैरव आंतरिक परिदृश्य को साफ करने में मदद करते हैं, जिससे यह उच्च आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करने और दिव्य का अनुभव करने के लिए अनुकूल हो जाता है। एक "विविक्त स्थान" न केवल एक एकांत स्थान है, बल्कि एक शुद्ध, पवित्र स्थान है, आंतरिक और बाहरी रूप से, जहाँ आध्यात्मिक आरोहण संभव है।

संक्षेप में, विविक्तदाय कालभैरव की उन स्थितियों को सुगम बनाने में भूमिका को दर्शाता है - शारीरिक और मानसिक दोनों - जो गहन आध्यात्मिक प्राप्ति के लिए अनिवार्य हैं। वह एक साधक को मुक्ति के मार्ग पर प्रगति करने के लिए आवश्यक स्थान, मन की स्पष्टता और विवेकपूर्ण ज्ञान प्रदान करते हैं।

721. वसन्ताय

जो सुंदर और जीवंत वसंत ऋतु के ही साक्षात् अवतार हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : वसंत (वसन्ताय) नाम वसंत ऋतु को संदर्भित करता है, जो इसकी सुंदरता, जीवंतता और जीवनदायिनी सार का प्रतीक है।

वसंत का प्रतीक वसंत भारत में एक प्रिय ऋतु है, जो नवीनीकरण, उर्वरता और आनंद का प्रतीक है। भगवान कालभैरव, वसंत के रूप में, उस दिव्य सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करते हैं जो प्रकृति में जीवन भरता है, इसे सर्दियों की नींद से जगाता है। कालभैरव का यह पहलू खिलते हुए फूलों, मधुर पक्षियों के गीत और वसंत की विशेषता वाली कोमल हवाओं की कल्पना को जगाता है। यह जीवन, विकास और अस्तित्व के चक्रीय स्वभाव का प्रतीक है।

नवीनीकरण और सृजन का प्रतीक वसंत ऋतु नई शुरुआत और क्षय पर जीवन की विजय का प्रतीक है। वसंत के साथ पहचाने जाने पर, कालभैरव को इस नवीनीकरण के उत्प्रेरक के रूप में देखा जाता है। वह वह शक्ति है जो सर्दियों की निष्क्रियता को तोड़ती है, जिससे प्राकृतिक दुनिया में रचनात्मकता और प्रजनन का विस्फोट होता है। यह पहलू उनकी शक्ति को न केवल नष्ट करने के लिए, बल्कि जीवन को उसके सबसे सुंदर रूपों में उत्पन्न करने और बनाए रखने के लिए भी उजागर करता है।

उदासी और अज्ञानता का नाश करने वाला जैसे वसंत सर्दियों की कठोरता और बांझपन को दूर करता है, वैसे ही कालभैरव वसंत के रूप में उदासी, ठहराव और अज्ञानता को दूर करते हैं। वह स्पष्टता, जागरण और उत्साह की अवधि लाते हैं, ठीक ऋतु की जीवंत ऊर्जा की तरह। यह भक्तों के

मन को ऊपर उठाने और उन्हें आध्यात्मिक विकास और आंतरिक आनंद की ओर मार्गदर्शन करने में उनकी परोपकारी भूमिका का प्रतिनिधित्व करता है।

सौंदर्यपूर्ण और शुभ उपस्थिति यह विशेषण कालभैरव की शुभ और सौंदर्यपूर्ण प्रकृति पर भी जोर देता है, जो उनके अधिक भयानक अभिव्यक्तियों के विपरीत है। यह बताता है कि उनकी उपस्थिति, वसंत की तरह, अंततः लाभकारी है, जो आशा, सुंदरता और कल्याण की भावना लाती है। यह भक्तों को याद दिलाता है कि दिव्य के दुर्जेय पहलुओं में भी, एक अंतर्निहित सुंदरता और उद्देश्य है जो परम भलाई की ओर ले जाता है।

722. विवस्वते

दीप्तिमान सूर्य देव विवस्वान को नमन।

विस्तार : विवस्वते नाम कालभैरव को सीधे विवस्वान से जोड़ता है, जो एक महत्वपूर्ण वैदिक देवता हैं, जिन्हें अक्सर सूर्य देव के रूप में पहचाना जाता है। "विवस्वान" शब्द का अर्थ स्वयं "तेजस्वी", "चमकदार" या "दीप्तिमान" है।

सौर संबंध (The Solar Connection) विवस्वान अदिति के पुत्रों, आदित्यों में से एक हैं, जो दिव्य प्रकाश और मूलभूत ब्रह्मांडीय सिद्धांतों का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे मनु (मानवजाति के जनक) और यम (मृत्यु के देवता) के पिता हैं। कालभैरव को यह नाम देना कई गहन संबंधों को दर्शाता है:

प्रकाश और जीवन का स्रोत (Source of Light and Life) जैसे भौतिक सूर्य (सूर्य) पृथ्वी पर प्रकाश, गर्मी और जीवन का स्रोत है, जो सभी सृष्टि को बनाए रखता है, वैसे ही कालभैरव परम आध्यात्मिक प्रकाश हैं जो चेतना को प्रकाशित करते हैं और संवेदनशील प्राणियों के आध्यात्मिक जीवन को बनाए रखते हैं। वे अपनी दीप्तिमान उपस्थिति से अज्ञान (अविद्या) के अंधकार को दूर करते हैं, भक्तों को आत्म-साक्षात्कार की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था और समय (Cosmic Order and Time) विवस्वान, सूर्य देव के रूप में, दिन और रात के चक्रों, ऋतुओं और समय की प्रगति से आंतरिक रूप से जुड़े हुए हैं। कालभैरव की काल के रूप में भूमिका को देखते हुए, जो समय का मानवीकरण है, यह संबंध ब्रह्मांडीय घड़ी पर उनके सर्वोच्च अधिकार पर जोर देता है। सूर्य की तरह, जो अपनी दैनिक यात्रा में अडिग रहता है, कालभैरव ब्रह्मांड की अपरिवर्तनीय व्यवस्था और समय के अथक मार्च का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अंधकार और अज्ञान का नाश करने वाला (Dispeller of Darkness and Ignorance) भौतिक सूर्य और कालभैरव दोनों अंधकार को दूर करने का गुण साझा करते हैं। सूर्य भौतिक अंधकार को दूर करता है, जबकि कालभैरव, विवस्वते के रूप में, आध्यात्मिक रूप से "चमकते हैं", अपने भक्तों के मन से भ्रम, भ्रम और भय के अंधकार को दूर करते हैं। वे सत्य और स्पष्टता को प्रकट करने वाली प्रबुद्ध शक्ति हैं।

पैतृक और धार्मिक संबंध (Ancestral and Dharmic Link) विवस्वान को वैवस्वत मनु का पिता माना जाता है, जो मानव जाति के जनक और धर्म स्थापित करने वाले विधि निर्माता हैं। विवस्वान के साथ पहचाने जाने से, कालभैरव परोक्ष रूप से धर्म (धार्मिकता और ब्रह्मांडीय नियम) के परम स्रोत और संरक्षक बन जाते हैं, जो युगों-युगों तक मानवता का मार्गदर्शन करते हैं और नैतिक आचरण सुनिश्चित करते हैं।

संक्षेप में, विवस्वते कालभैरव को केवल एक भयंकर देवता के रूप में नहीं, बल्कि अंतर्निहित, दीप्तिमान ब्रह्मांडीय बुद्धि के रूप में चित्रित करता है जो समय को नियंत्रित करता है, जीवन को बनाए रखता है, चेतना को प्रकाशित करता है, और ब्रह्मांड की मूलभूत व्यवस्था को बनाए रखता है, ठीक वैसे ही जैसे सर्वव्यापी और जीवनदायी सूर्य।

723. वितामसे

सभी अंधकार, अज्ञान और अशुद्धि से पूर्णतः मुक्त रहने वाले को नमन।

विस्तार : वितमस (Vitamase) नाम कालभैरव के उत्कृष्ट स्वरूप का एक शक्तिशाली वर्णन है, जो उनकी पूर्ण पवित्रता और सभी प्रकार के अंधकार, अज्ञान और अशुद्धता से मुक्ति को दर्शाता है। यह नाम संस्कृत से व्युत्पन्न एक यौगिक है।

"वि" (Vi) एक उपसर्ग के रूप में अलगाव, भेद या अनुपस्थिति को इंगित करता है। "तमस" (Tamasa) अंधकार, उदासी, अज्ञान, भ्रम और विस्तार से, सांख्य दर्शन में "तमस्" (Tamas) के गुण को संदर्भित करता है।

अंधकार की अनुपस्थिति (आध्यात्मिक और भौतिक) तमस का शाब्दिक अर्थ अंधकार है। वितमस के रूप में, कालभैरव वह हैं जो किसी भी भौतिक या लाक्षणिक अंधकार से पूरी तरह रहित हैं। वे चेतना और अभिव्यक्ति दोनों में शुद्ध प्रकाश हैं। इसका तात्पर्य उनकी अंतर्निहित चमक और किसी भी अवरोधक तत्व की अनुपस्थिति है।

अज्ञान से मुक्ति (अविद्या) गहरे दार्शनिक अर्थ में, तमस अज्ञान (अविद्या) को दर्शाता है, जो दुख और पुनर्जन्म के चक्र (संसार) का मूल कारण है। वितमस होने के नाते, कालभैरव पूर्ण ज्ञान और बुद्धि (विद्या) का प्रतीक हैं। वे सर्वोच्च चेतना हैं जो सभी को प्रकाशित करती हैं, अज्ञान के अंधकार को दूर करती हैं। वे ज्ञानोदय की अंतिम अवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं।

तमस गुण का अतिक्रमण सांख्य दर्शन में, तमस तीन गुणों (आदिम पदार्थ के गुण) में से एक है, जिसकी विशेषता जड़ता, भारीपन, मंदता और अज्ञान है। वितमस यह दर्शाता है कि कालभैरव इन मूलभूत लौकिक गुणों से भी परे हैं। वे तमस के प्रभाव से परे हैं, जो शुद्ध, असीमित ब्रह्म के रूप में उनकी स्थिति को दर्शाता है, जो प्रकृति (भौतिक प्रकृति) की सीमाओं से अछूता है।

पवित्रता और अशुद्धता तमस की अनुपस्थिति पूर्ण पवित्रता का अर्थ है। उनके अस्तित्व में कोई दाग, कोई धब्बा, कोई अपूर्णता नहीं है। वे शुद्ध जागरूकता का सार हैं, कर्म या द्वैत से अछूते हैं। यह पवित्रता उन्हें अपने भक्तों के लिए अंतिम शोधक बनने की अनुमति देती है, उनके आंतरिक अशुद्धियों और अंधकार को दूर करती है।

इस प्रकार, वितमस नाम कालभैरव को आध्यात्मिक प्रकाश, ज्ञान और पवित्रता के अंतिम स्रोत के रूप में मनाता है, जो उनकी कृपा चाहने वालों के लिए सभी अंधकार और अज्ञान को सहजता से दूर करते हैं।

724. तमसे

तमोगुण (अंधकार, जड़ता और संहार की शक्ति) के मूर्त स्वरूप को नमन।

विस्तार : तमसे नाम उस दिव्य सत्ता को संदर्भित करता है जो सांख्य और योग दर्शन में तीन गुणों (गुणों या प्रवृत्तियों) में से एक, तमस का प्रतीक है या उससे संबंधित है।

तमस को समझना तमस अंधकार, जड़ता, अज्ञानता, भारीपन, प्रतिरोध और विघटन का गुण है। यह अचेतनता, सुस्ती और क्षय तथा विनाश की प्रवृत्ति की विशेषता है। जबकि सूक्ष्म-ब्रह्मांडीय अर्थ में इसे अक्सर नकारात्मक रूप से देखा जाता है (एक व्यक्ति में सुस्ती या भ्रम पैदा करने वाला), एक मैक्रो-ब्रह्मांडीय संदर्भ में, तमस एक आवश्यक और शक्तिशाली शक्ति है।

तमस की ब्रह्मांडीय भूमिका भगवान शिव, और परिणामस्वरूप कालभैरव उनके उग्र रूप के रूप में, अपने ब्रह्मांडीय पहलू में अक्सर तमस से जुड़े होते हैं। यह जुड़ाव नकारात्मकता का अर्थ नहीं है, बल्कि विघटनकर्ता और परिवर्तक के रूप में उनके कार्य का प्रतिनिधित्व करता है।

1. विघटन का सिद्धांत: कालभैरव, तमसे के रूप में, उस ऊर्जा का प्रतीक हैं जो चक्रों के अंत को लाती है - ब्रह्मांड का विघटन, बाधाओं का विनाश, और उन सभी का अंत जो पुराना या भ्रष्ट है। यह नवीनीकरण और सृजन के लिए एक आवश्यक कार्य है। जैसे वसंत के बाद सर्दी आती है, वैसे ही विघटन से पहले एक नई शुरुआत होती है।

2. अज्ञान पर विजय: जबकि तमस अज्ञान (अविद्या) को जन्म दे सकता है, तमस का दिव्य अवतार का अर्थ है कि वह इसका स्वामी है न कि इसका शिकार। उसके पास अज्ञान के अंधकार को दूर करने, सत्य के प्रकाश को प्रकट करने की शक्ति है। तमस को नियंत्रित और पार करके, वह प्राणियों को अचेतनता से जागरूकता की ओर मार्गदर्शन करता है।

3. अव्यक्त और अज्ञेय: तमस अव्यक्त, आदिम अंधकार का भी प्रतीक है जिससे सृष्टि उत्पन्न होती है और जिसमें वह वापस लौटती है। इस अर्थ में, तमसे के रूप में कालभैरव अस्तित्व के परम आधार का प्रतिनिधित्व करते हैं, रूप और गुणों से परे, पूर्ण स्थिरता और संभाव्यता की स्थिति।

4. निराकार का अवतार: जैसे प्रकाश रूप को परिभाषित करता है, वैसे ही अंधकार निराकार या सभी बोधगम्य रूपों से परे परम वास्तविकता का प्रतीक हो सकता है। तमसे को नमन करना दिव्य के इस गहन पहलू की स्वीकृति है - वह जो समझ से परे है, जिसे अक्सर एक गहन स्थिरता या शून्य के रूप में अनुभव किया जाता है।

इसलिए, भक्त के लिए, कालभैरव को तमसे के रूप में पहचानना उनकी शक्ति का आह्वान है जो बाधाओं को दूर करती है, नकारात्मकताओं को नष्ट करती है, और आवश्यक अंत लाती है जो आध्यात्मिक विकास और मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं, अनिवार्य रूप से तमस की विनाशकारी शक्ति को शुद्ध करने वाली शक्ति में बदल देती है।

725. वेदवेद्याय

उन परम सत्य स्वरूप को नमन जिन्हें पवित्र वेदों के माध्यम से जाना जाता है।

विस्तार : वेदवेद्य नाम, वेद और वेद्य का एक यौगिक, पवित्र वेदों में निहित परम ज्ञान से कालभैरव के आंतरिक संबंध को गहराई से व्यक्त करता है।

वेद: ज्ञान और पवित्र ग्रंथ वेद हिंदू धर्म के सबसे प्राचीन और मूलभूत पवित्र ग्रंथों को संदर्भित करते हैं, जिन्हें शाश्वत, प्रकट ज्ञान (श्रुति) माना जाता है, जो मनुष्यों द्वारा रचित नहीं हैं। इन ग्रंथों में भजन, दार्शनिक ग्रंथ (उपनिषद), पौराणिक विवरण और अनुष्ठानिक निर्देश शामिल हैं। वेदों को आध्यात्मिक सत्य के अंतिम स्रोत के रूप में पूजा जाता है, जो ब्रह्म, आत्मा और ब्रह्मांड की प्रकृति को व्यक्त करते हैं।

वेद्य: वह जिसे जानना है, समझने योग्य, या ज्ञान का विषय वेद्य का अर्थ है "वह जिसे जानना है" या "ज्ञान का विषय।" आध्यात्मिक संदर्भ में, इसका तात्पर्य उस परम सत्य या वास्तविकता से है जिसे समझने का प्रयास किया जाता है।

वेदों का परम सत्य जब संयुक्त किया जाता है, तो वेदवेद्य का अर्थ है कि कालभैरव वह परम सत्य या वास्तविकता हैं जिनकी प्रकृति वेदों के अध्ययन, चिंतन और बोध के माध्यम से प्रकट और समझी जाती है। उनका उल्लेख केवल वेदों में नहीं है, बल्कि वे सभी वैदिक ज्ञान का लक्ष्य और सार 'हैं'। सभी वैदिक भजन, अनुष्ठान और दार्शनिक घोषणाएँ अंततः उनकी सर्वोच्च प्रकृति की ओर इशारा करती हैं और उसका महिमामंडन करती हैं।

सतही समझ से परे यह नाम इंगित करता है कि वेदों का केवल बौद्धिक अध्ययन अपर्याप्त है। वेदवेद्य भैरव को वास्तव में जानने का अर्थ है इन ग्रंथों में निहित गहन आध्यात्मिक सत्यों को आंतरिक बनाना और अनुभव करना, जो उस एकीकृत ब्रह्मांडीय वास्तविकता की समझ की ओर ले

जाते हैं जिसे भैरव मूर्त रूप देते हैं। वह आध्यात्मिक अन्वेषण का अंतिम उद्देश्य हैं, परम शुभ, वेदों द्वारा प्रकट सर्वोच्च वास्तविकता।

वैदिक ज्ञान का अवतार वेदवेद्य के रूप में, कालभैरव वैदिक ज्ञान के साक्षात अवतार हैं, वह आदिम ज्ञान जो पूरे ब्रह्मांड को आधार देता है। उन्हें वेदवेद्य के रूप में पूजना ब्रह्म के साथ उनकी अद्वैत प्रकृति की स्वीकृति है, जो उपनिषदों में घोषित परम वास्तविकता है।

726. विश्व रूपाय

जिनका स्वरूप संपूर्ण ब्रह्मांड को समाहित करता है, उन (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : 'विश्वरूपाय' नाम दो संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: 'विश्व' (Vishva) जिसका अर्थ है "सभी," "संपूर्ण," या "सार्वभौमिक," और 'रूप' (Rūpa) जिसका अर्थ है "आकार," "प्रकट होना," या "प्रकृति।" इस प्रकार, विश्वरूप का अर्थ है "जिसका रूप ब्रह्मांड है" या "सार्वभौमिक रूप।"

सार्वभौमिक रूप (The Universal Form) यह नाम कालभैरव को हर उस चीज़ के ब्रह्मांडीय अवतार के रूप में दर्शाता है जो मौजूद है। यह उन्हें पूरे ब्रह्मांड के रूप में चित्रित करता है, एक शानदार और भयानक अभिव्यक्ति जो सभी सृजन, संरक्षण और विनाश को समाहित करती है। यह रूप अस्तित्व की समग्रता का प्रतिनिधित्व करता है - समय, स्थान, सभी प्राणी, तत्व और घटनाएँ। उनके अस्तित्व से बाहर कुछ भी नहीं है।

वैदिक और पौराणिक महत्व (Vedic and Puranic Significance) विश्वरूप की अवधारणा को भगवद गीता में प्रसिद्ध रूप से दर्शाया गया है जब कृष्ण अर्जुन को अपना ब्रह्मांडीय रूप प्रकट करते हैं, जो दिव्य के अनंत, भयानक और विस्मयकारी स्वरूप को प्रदर्शित करता है। इसी तरह, शैव परंपरा में, शिव, और परिणामस्वरूप उनकी सबसे उग्र अभिव्यक्ति, कालभैरव को अक्सर पूरे ब्रह्मांड को समाहित करने वाले के रूप में मनाया जाता है।

अतिक्रमण और अंतर्निहितता (Transcendence and Immanence) विश्वरूप कालभैरव के दोहरे स्वरूप को उजागर करता है: • अतिक्रमण (Transcendence): वह मानवीय समझ और सीमाओं से परे हैं, ब्रह्मांड की विशालता और रहस्य को समाहित करते हैं। • अंतर्निहितता (Immanence): वह एक साथ उस ब्रह्मांड के भीतर हर परमाणु और हर प्राणी में मौजूद हैं, अस्तित्व के ताने-बाने के रूप में।

आध्यात्मिक निहितार्थ (Spiritual Implication) विश्वरूप के रूप में कालभैरव पर ध्यान करने से भक्तों को जीवन के सभी पहलुओं में दिव्य को पहचानने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, स्वयं और ब्रह्मांड के बीच अलगाव के भ्रम को तोड़ते हुए। इसका तात्पर्य है कि सच्ची भक्ति इस सर्व-समावेशी वास्तविकता के प्रति समर्पण को शामिल करती है, यह समझते हुए कि व्यक्ति इस भव्य, भयानक और परोपकारी ब्रह्मांडीय रूप का एक हिस्सा है। यह चिंतन व्यक्तिगत भय और अहंकार को भंग करता है, जिससे दिव्य के साथ एकता की गहरी भावना पैदा होती है।

727. विविक्ताय

जो एकाकी, एकांत और समस्त सृष्टि से भिन्न हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : विविक्त नाम संस्कृत मूल "विच्-" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "अलग करना," "भेद करना," या "विभेद करना।" यह परम सत्य के स्वरूप के बारे में एक गहन दार्शनिक सत्य को व्यक्त करता है।

पृथक और विशिष्ट "विविक्त" का शाब्दिक अर्थ है "अलग किया हुआ," "विभेदित," "अकेला," "एकाकी," या "असंबंधित।" दिव्य संदर्भ में, यह दर्शाता है कि कालभैरव, सर्वोच्च सिद्धांत के रूप में, संपूर्ण सृष्टि से पूरी तरह से भिन्न हैं। वह केवल ब्रह्मांड का एक हिस्सा नहीं हैं, बल्कि इसे पूरी तरह

से पार करते हैं। इसका तात्पर्य क्षणभंगुर, सशर्त और भौतिक दुनिया की द्वैतवादी प्रकृति से एक मौलिक अलगाव है। वह द्रष्टा हैं, दृष्ट नहीं; चेतना हैं, चेतना का विषय नहीं।

अनासक्त और अप्रभावित यह विशिष्टता सृष्टि के प्रति उनकी पूर्ण अनासक्ति (विरक्ति) को भी दर्शाती है। यद्यपि वह सृष्टिकर्ता, पालक और संहारक हैं, फिर भी वह जन्म और मृत्यु, सुख और दुख के चक्रों से अप्रभावित रहते हैं, जो ब्रह्मांड के भीतर व्यक्तिगत अस्तित्व की विशेषता है। वह पुरुषोत्तम हैं, परम सत्ता हैं, जो प्रकृति (स्वभाव/पदार्थ) से अछूते हैं।

अतीत और अप्रकट विविक्त उनके अतीत स्वरूप को इंगित करता है। सृष्टि से पहले, प्रलय के दौरान, और यहां तक कि सृष्टि के भीतर भी, वह अपनी अप्रकट, निरपेक्ष अवस्था (निर्गुण) में रहते हैं, सभी गुणों, रूपों और सीमाओं से परे। यद्यपि वह विभिन्न रूपों और गुणों (सगुण) के माध्यम से प्रकट होते हैं, उनका आवश्यक स्वरूप ऐसी सभी पदनामों से परे है।

सभी का स्रोत, फिर भी सभी से अलग विरोधाभासी रूप से, यद्यपि वह सभी अस्तित्व का स्रोत और आधार हैं, वह साथ ही विविक्त भी हैं—इससे अलग। यह अवधारणा अद्वैत वेदांत के लिए केंद्रीय है, जहाँ ब्रह्म को अंतर्निहित (हर चीज के भीतर) और अतीत (हर चीज से परे) दोनों के रूप में वर्णित किया गया है। विविक्त का सम्मान करना दिव्य के इस परम, अकल्पनीय रहस्य को स्वीकार करता है, जो अंतरंग रूप से उपस्थित और शाश्वत रूप से अलग दोनों है।

728. विश्वभाजनाय

संपूर्ण ब्रह्मांड के योग्य पात्र और प्राप्तकर्ता को नमन।

विस्तार : विश्वभाजन (Viśvabhājana) नाम एक गहन और बहुस्तरीय संस्कृत शब्द है जो दो प्रमुख तत्वों को जोड़ता है: "विश्व" और "भाजन।"

विश्वः यह शब्द "ब्रह्मांड," "समस्त," या "संपूर्ण" को दर्शाता है। यह अस्तित्व की समग्रता को इंगित करता है, जिसमें सभी बोधगम्य और अबोधगम्य, व्यक्त और अव्यक्त शामिल हैं।

भाजनः इस शब्द के कई अर्थ हैं, जिनमें "पात्र," "प्राप्तकर्ता," "आधार," "धारक," "भोग का विषय," "पूजा का विषय," और "योग्य" शामिल हैं।

ब्रह्मांडीय पात्र और आधार कालभैरव, विश्वभाजन के रूप में, संपूर्ण ब्रह्मांड के परम धारक और आधार हैं। इसका तात्पर्य है कि ब्रह्मांड, अपनी समस्त विशालता और जटिलता में, उन्हीं में स्थित है और उन्हीं के द्वारा पोषित है। वे वह मूलभूत आधार हैं जिस पर समस्त सृष्टि निर्मित और विद्यमान है। जैसे एक पात्र अपनी सामग्री को धारण करता है, वैसे ही वे अपने अस्तित्व में संपूर्ण व्यक्त और अव्यक्त वास्तविकता को धारण करते हैं।

आराधना के योग्य प्राप्तकर्ता "योग्य प्राप्तकर्ता" के रूप में, वे संपूर्ण ब्रह्मांड से सभी स्तुति, पूजा, भेंट और भक्ति के योग्य पात्र हैं। उनका सर्वोच्च स्वरूप और शक्ति उन्हें सभी आध्यात्मिक प्रयासों का अंतिम प्राप्तकर्ता और सभी साधकों का अंतिम लक्ष्य बनाती है। ब्रह्मांड, अपने अस्तित्व और विकास के कार्य में, स्वयं को उन्हें अर्पित करता है।

सृष्टि के भोक्ता "भाजन" शब्द का अर्थ "भोग का विषय" भी है। इस अर्थ में, कालभैरव अपनी ही सृष्टि के परम भोक्ता (Bhokta) हैं। ब्रह्मांडीय लीला (Lila) और ब्रह्मांड के भीतर के अनेक अनुभव अंततः उनके दिव्य आनंद और अभिव्यक्ति के लिए हैं। इसका अर्थ सांसारिक आनंद नहीं, बल्कि एक पारलौकिक आनंद है, जहाँ वे अपने अनंत दृष्टिकोण से अस्तित्व की समग्रता का अनुभव करते हैं।

सभी के अवतार यह नाम उनकी सर्वव्यापी प्रकृति और उनके अतिक्रमण पर जोर देता है। वे केवल ब्रह्मांड का एक हिस्सा नहीं हैं; वे ब्रह्मांड हैं, और ब्रह्मांड उनमें है। वे अंतर्निहित और पारलौकिक वास्तविकता हैं, सभी स्थानिक और लौकिक अस्तित्व का आदि, मध्य और अंत हैं, जो उन्हें सब कुछ को समाहित करने और सब कुछ होने में सक्षम एक आदर्श "पात्र" बनाता है।

729. विषयस्थाय

जो इंद्रियों के सभी विषयों में विद्यमान हैं, फिर भी उनसे अछूते रहते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : विषयास्थाय नाम एक गहरा दार्शनिक विचार है, जो संस्कृत शब्दों विषय (Viṣaya) और अस्थाय (Asthāya) से लिया गया है।

• विषय (Viṣaya): यह शब्द "इंद्रियों के विषयों," "इंद्रिय बोध," या "अनुभूत होने वाली वस्तुओं" को संदर्भित करता है। इसमें वह बाहरी दुनिया शामिल है जिसे हम अपनी आँखों, कानों, नाक, जीभ और त्वचा (रूप, ध्वनि, गंध, स्वाद, स्पर्श) के माध्यम से अनुभव करते हैं।

• अस्थाय/स्थाय (Asthāya/Sthāya): यह 'स्था' धातु से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है "खड़ा होना," "निवास करना," या "स्थित होना।" इस संदर्भ में, इसका अर्थ है "भीतर निवास करना।"

इंद्रियों के सभी विषयों में निवास करना नाम का यह भाग भगवान भैरव की सर्वव्यापकता को दर्शाता है। वह सभी अनुभूत होने वाली वस्तुओं का अंतर्निहित सत्य और सार हैं। प्रत्येक रूप, प्रत्येक ध्वनि, प्रत्येक स्वाद, प्रत्येक गंध और प्रत्येक स्पर्श अंततः दिव्य की अभिव्यक्ति है। वह वह आधार हैं जिस पर सभी संवेदी अनुभव उत्पन्न होते हैं और समाप्त होते हैं। यह दिव्य की अंतर्निहितता को इंगित करता है - यह विचार कि ईश्वर स्वयं दुनिया के भीतर मौजूद है, न कि केवल एक दूर का निर्माता।

फिर भी अछूते रहना (असंग) यह महत्वपूर्ण योग्यता भगवान भैरव के पारलौकिक पहलू पर प्रकाश डालती है। सभी संवेदी अनुभवों का आधार होने के बावजूद, वह भौतिक दुनिया की द्वंद्वों और अपूर्णताओं से प्रभावित, दूषित या सीमित नहीं होते हैं। यह अवधारणा पानी में कमल के पत्ते के समान है - यद्यपि पानी में, यह उससे अछूता रहता है। वह शुद्ध चेतना, सभी संवेदी घटनाओं के निर्दोष साक्षी (Sākṣī) हैं। विषयों (Viṣayas) की दुनिया (इंद्रिय विषयों) परिवर्तन, क्षय और अनित्यता के अधीन है, लेकिन उनके भीतर निवास करने वाली दिव्य चेतना शाश्वत और अपरिवर्तनीय है।

दार्शनिक महत्व यह नाम अद्वैत वेदांत और अन्य अद्वैतवादी दर्शनों के एक मुख्य सिद्धांत को समाहित करता है, जहाँ सर्वोच्च आत्मा (ब्रह्म/आत्मन) दोनों ही अंतर्निहित (हर चीज के भीतर निवास करने वाली) और पारलौकिक (सभी श्रेणियों से परे और घटनात्मक दुनिया से अप्रभावित) है। यह भक्त को सबसे सामान्य संवेदी अनुभवों में भी दिव्य सार को समझने के लिए आमंत्रित करता है, जबकि साथ ही भीतर के स्वयं की परम वास्तविकता को पहचानकर उन अनुभवों के प्रति आसक्ति को पार करने का प्रयास करता है। योगियों और आध्यात्मिक साधकों के लिए, इस अवधारणा को समझना संवेदी इच्छाओं से विरक्ति में मदद करता है और चेतना के वास्तविक स्वरूप को साकार करने में सहायक होता है।

730. विविक्तस्थाय

जो एकांत में निवास करते हैं और भौतिक संसार से नित्य पृथक हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : विविक्तस्थाय नाम विविक्त और स्थाय से मिलकर बना है, जो भगवान शिव और विस्तार से, कालभैरव के स्वरूप के बारे में एक गहन आध्यात्मिक सत्य को व्यक्त करता है।

विविक्त (Vivikta): इस शब्द का अर्थ है "अलग," "पृथक," "एकांत," "विशिष्ट," या "शुद्ध।" यह किसी अन्य चीज़ से अमिश्रित, अदूषित और अलग होने की स्थिति को दर्शाता है। आध्यात्मिक संदर्भ में, यह दृढ़ता से वैराग्य और अतिक्रमण का सुझाव देता है।

स्थाय (Sthāya): स्था (खड़े होना, रहना, निवास करना) से व्युत्पन्न, इसका अर्थ है "जो खड़ा है" या "जो निवास करता है।"

एकांत में रहने वाले (Dweller in Solitude) अधिक शाब्दिक स्तर पर, विविक्तस्थाय उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जो एकांत में रहता है। यह शिव की पारंपरिक छवि के साथ मेल खाता है, जो श्मशान घाटों (श्मशान), कैलाश पर, या गहरी ध्यान में, भौतिक संसार के कोलाहल और आसक्तियों से दूर एक एकांतवासी के रूप में निवास करते हैं। यह एकांत अकेलापन नहीं है, बल्कि आत्म-निर्भरता और गहन आत्म-निरीक्षण की एक चुनी हुई स्थिति है, जो बाहरी विकर्षणों या निर्भरताओं से रहित है।

भौतिक संसार से शाश्वत रूप से अलग (Eternally Separate from the Material World) दार्शनिक रूप से, यह शब्द कालभैरव के पारलौकिक स्वरूप को रेखांकित करता है। वह विविक्त हैं क्योंकि वह गुणों (सत्व, रजस, तमस) से परे हैं, जन्म और मृत्यु के चक्रों (संसार) से परे हैं, और नाम, रूप और स्थान की सीमाओं से परे हैं। वह शाश्वत शुद्धता और क्षणभंगुर संसार के साथ गैर-पहचान की स्थिति में मौजूद हैं। वह साक्षी चेतना हैं, जो प्रकृति (भौतिक प्रकृति) के परिवर्तनों और अपूर्णताओं से अछूते रहते हैं, भले ही वह उसका स्रोत और अंतिम नियंत्रक हों।

ब्रह्म की स्थिति (The State of Brahman) यह गुण ब्रह्म की अद्वैतवादी समझ के साथ संरेखित है, जो सगुण और निर्गुण है - सृष्टि के उद्देश्य के लिए गुणों के साथ, लेकिन मौलिक रूप से गुणों के बिना, शुद्ध चेतना (निर्गुण) होने के नाते। कालभैरव, इस पहलू में, उस परम वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करते हैं जो ब्रह्मांड के मायावी खेल (माया) से शाश्वत रूप से भिन्न और अदूषित है।

भक्त के लिए निहितार्थ (Implication for the Devotee) भक्त के लिए, कालभैरव को विविक्तस्थाय के रूप में ध्यान करना सांसारिक आकर्षणों से वैराग्य और आंतरिक एकांत की खेती को प्रेरित करता है - मन की एक ऐसी स्थिति जहाँ कोई इच्छाओं और बाहरी प्रभावों से अदूषित दिव्य चेतना का अनुभव कर सकता है। यह भौतिक की क्षणभंगुर प्रकृति और स्वयं की शाश्वत प्रकृति को उससे अलग पहचान कर मुक्ति (मोक्ष) की खोज को प्रोत्साहित करता है।

731. विद्याराशये

जो सभी ज्ञान और विद्या के एक महान, अपरिमेय ढेर हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : विद्याराशये नाम संस्कृत के पदों विद्या और राशि का एक यौगिक है।

विद्या (Vidyā): ज्ञान, विद्या, विज्ञान, बुद्धि, सच्चा ज्ञान। शैव परंपरा के भीतर, विद्या अक्सर केवल धर्मनिरपेक्ष ज्ञान को ही नहीं, बल्कि विशेष रूप से आध्यात्मिक ज्ञान, दार्शनिक अंतर्दृष्टि और मोक्ष (मुक्ति) की ओर ले जाने वाली गहन बुद्धि को संदर्भित करती है।

राशि (Rāśi): एक संग्रह, ढेर, समूह, राशि, या संचय; साथ ही, एक राशि चक्र या एक माप। यह एक अथाह मात्रा या एक अटूट भंडार के विचार को व्यक्त करता है।

समस्त ज्ञान का मूर्त रूप (The Embodiment of All Knowledge) जब संयुक्त किया जाता है, तो विद्याराशये उस एक को दर्शाता है जो समस्त ज्ञान का साक्षात् मूर्त रूप, असीम सागर या अनंत भंडार है। इसमें ज्ञान के हर कल्पनीय रूप शामिल हैं—अनुभवजन्य विज्ञान और कला से लेकर गहनतम आध्यात्मिक सत्य, वेद, आगम, तंत्र और आत्मा के सर्वोच्च ज्ञान तक। कालभैरव, इस पहलू में, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों तरह की शिक्षा की सभी शाखाओं के स्रोत और परम स्वामी हैं।

सर्वोच्च ज्ञान और पराकाष्ठा (Supreme Wisdom and Transcendence) यह नाम उनकी भूमिका को केवल एक विद्वान देवता के रूप में ही नहीं, बल्कि विवेकी, मुक्तिदायक ज्ञान (परा विद्या) के सार के रूप में भी उजागर करता है। वह वह हैं जो अज्ञानता (अविद्या) के अंधकार को दूर करते हैं और ज्ञान प्रदान करते हैं, जिससे साधकों को परम सत्य और आध्यात्मिक स्वतंत्रता की ओर मार्गदर्शन मिलता है। उनका ज्ञान समय या स्थान की सीमाओं के अधीन नहीं है; यह शाश्वत, अनंत और सर्वव्यापी है।

अज्ञानता का नाश करने वाला (Dispeller of Ignorance) कालभैरव को विद्याराशये के रूप में स्वीकार करके, भक्त अपनी बौद्धिक और आध्यात्मिक सीमाओं को दूर करने, स्पष्टता, समझ और आध्यात्मिक प्रगति के लिए आवश्यक गहन अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए उनकी कृपा का आह्वान करते हैं। वह परम गुरु का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनसे समस्त ज्ञान निकलता है और जिसमें समस्त ज्ञान अंततः विलीन हो जाता है।

732. पतिप्रियाय

उन (भगवान भैरव) को नमन जो अपनी पत्नी, दिव्या जननी को अत्यंत प्रिय हैं।

विस्तार : पतिप्रियाय नाम पति और प्रिया का एक यौगिक (कंपाउंड) है।

• पति (Pati): इस शब्द का मुख्य अर्थ "स्वामी," "प्रभु," या "पति" है। दिव्य संबंधों के संदर्भ में, यह संगिनी या पूजनीय साथी को दर्शाता है।

• प्रिया (Priyā): इस शब्द का अर्थ "प्रिय," "प्यारा," या "दुलारा" है। यह उसे दर्शाता है जिसे अत्यधिक स्नेह और प्रेम दिया जाता है।

अपनी संगिनी द्वारा अत्यंत प्रिय जब संयुक्त किया जाता है, तो पतिप्रियाय भगवान शिव (काल भैरव शिव का एक उग्र पहलू हैं) को संदर्भित करता है, जो "अपनी संगिनी द्वारा अत्यंत प्रिय" हैं। शैव धर्म में, शिव की संगिनी पार्वती (जिन्हें उमा, गौरी, शक्ति आदि के नाम से भी जाना जाता है) हैं। यह नाम शिव और दिव्य माँ के बीच मौजूद गहन, पारस्परिक प्रेम और भक्ति पर जोर देता है।

ब्रह्मांडीय मिलन (The Cosmic Union) यह नाम शिव और शक्ति - पुरुष (चेतना) और प्रकृति (प्रकृति/ऊर्जा) की अविभाज्य प्रकृति को उजागर करता है। उनका मिलन सभी सृजन, संरक्षण और विघटन का स्रोत है। शिव के प्रति पार्वती का प्रेम केवल वैवाहिक स्नेह नहीं है, बल्कि एक ब्रह्मांडीय शक्ति है, जो गतिशील ऊर्जा (शक्ति) का प्रतिनिधित्व करती है जो परम चेतना (शिव) को पूजती और सेवा करती है। भैरव के उग्र रूप के लिए, महादेवी भैरवी, महाकाली, या अन्य उग्र देवियों के रूप में प्रकट होती हैं, जो उनके प्रति समान रूप से समर्पित हैं, नवीनीकरण के लिए उनके ब्रह्मांडीय विनाश के नृत्य में भाग लेती हैं।

दिव्य प्रेम का एक उदाहरण (An Exemplar of Divine Love) यह नाम आदर्श दिव्य संबंध की एक भक्तिपूर्ण याद दिलाता है। यह भैरव को केवल एक भयानक देवता के रूप में नहीं, बल्कि गहरे प्रेम में सक्षम और उसमें डूबे हुए प्राणी के रूप में चित्रित करता है। यह इस विश्वास को रेखांकित करता है कि दिव्य के सबसे दुर्जेय पहलू भी दिव्य स्त्री के अस्तित्व और प्रेम से नरम और पूर्ण होते हैं। यह बताता है कि उनकी उग्रता बुराई की ओर बाहर की ओर निर्देशित है, जबकि भीतर से, वे गहन स्नेह के प्राप्तकर्ता हैं।

दार्शनिक महत्व (Philosophical Significance) तांत्रिक दृष्टिकोण से, पतिप्रियाय को इस बात की स्वीकृति के रूप में देखा जा सकता है कि परम पुरुष सिद्धांत (शिव/भैरव) को परम स्त्री सिद्धांत (शक्ति/देवी) द्वारा शाश्वत रूप से पोषित और ऊर्जावान किया जाता है। भैरव के प्रति देवी की भक्ति

दिव्य शक्ति के दिव्य चेतना के साथ संरेखण का प्रतीक है, जो एक सामंजस्यपूर्ण और अत्यंत शक्तिशाली दिव्य इकाई का निर्माण करती है।

733. शिवाय

जो शाश्वत रूप से शुभ, परोपकारी और सभी अच्छाइयों के स्रोत हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : नाम शिव (शिवाय) शायद देवता के लिए सबसे मौलिक और सार्वभौमिक रूप से मान्यता प्राप्त विशेषण है, जो शुभता, परोपकारिता और सर्वोच्च पवित्रता की अवधारणाओं को समाहित करता है। यह संस्कृत मूल 'शी' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "लेटना", जो सभी अस्तित्व के परम आधार या नींव के रूप में उनकी भूमिका का संकेत देता है।

शुभता (मंगल) शिव का शाब्दिक अर्थ है "शुभ", "मंगलमय" या "परोपकारी"। यह मूल अर्थ उनके परोपकारी पहलू को उजागर करता है, उनके अक्सर भयंकर और विनाशकारी चित्रणों के बावजूद। उनकी शुभता केवल एक गुण नहीं है बल्कि उनका सार है—वह सभी अच्छाई, पवित्रता और आध्यात्मिक रूप से लाभकारी चीजों का स्रोत हैं। वह दिव्य सिद्धांत हैं जो भौतिक और आध्यात्मिक दोनों तरह से कल्याण और समृद्धि लाते हैं।

मुक्तिदाता और शोधक आध्यात्मिक संदर्भ में, शिव की शुभता सीधे मुक्तिदाता के रूप में उनकी भूमिका से जुड़ी है। अज्ञान (अविद्या), आसक्ति (राग) और अहंकार (अहंकार) को नष्ट करके, वह जीव (व्यक्तिगत आत्मा) को शुद्ध करते हैं, उसे मोक्ष (मुक्ति) की ओर ले जाते हैं। इसलिए, उनकी शुभता बाधाओं को दूर करने और प्राणियों को उनके परम आध्यात्मिक कल्याण की ओर ले जाने की उनकी शक्ति में निहित है।

अशुद्धता का नाश करने वाला जबकि शिव को अक्सर त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) में संहारक के रूप में देखा जाता है, उनका विनाश हमेशा सृजन या शुद्धिकरण के लिए होता है। वह नई शुरुआत के लिए रास्ता बनाने और उन अशुद्धियों को खत्म करने के लिए नष्ट करते हैं जो ब्रह्मांडीय और व्यक्तिगत विकास में बाधा डालती हैं। उच्चतर व्यवस्था के लिए विनाश की यह गतिशीलता स्वाभाविक रूप से शुभ है।

परम सत्य दार्शनिक रूप से, शिव परम वास्तविकता (ब्रह्म) का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो शुद्ध चेतना (चित) और आनंद (आनंद) है। वह सभी गुणों (निर्गुण) से परे हैं और फिर भी सभी गुणों (सगुण) का स्रोत हैं। शिव का आह्वान करना सर्वोच्च, अविभाजित ब्रह्मांडीय चेतना का आह्वान करना है जो सभी चीजों में व्याप्त है और शाश्वत रूप से शुद्ध और शुभ है।

734. शर्वाय

दिव्य धनुर्धारी को नमन, जो अपने बाणों से ब्रह्मांड का संहार करते हैं।

विस्तार : शर्व नाम संस्कृत मूल "श्रु" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "चोट पहुँचाना," "तोड़ना," या "नष्ट करना।" यह दिव्य के संहारक पहलू को दर्शाता है, विशेष रूप से भगवान शिव से जुड़ा हुआ है।

दिव्य धनुर्धर शर्व को अक्सर एक दिव्य धनुर्धर, आकाशीय शस्त्रों के स्वामी के रूप में चित्रित किया जाता है। यह कल्पना केवल भौतिक विनाश की नहीं है, बल्कि एक कल्प (ब्रह्मांडीय चक्र) के अंत में ब्रह्मांड के ब्रह्मांडीय विघटन का प्रतीक है। उनके बाण समय और नियति की अटल शक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सभी सृजन का अंत करते हैं। यह विनाश अराजक नहीं है, बल्कि अस्तित्व के चक्रीय स्वभाव—सृजन, संरक्षण और विघटन—का एक आवश्यक और अंतर्निहित हिस्सा है।

ब्रह्मांड का संहारक अपने बाणों से ब्रह्मांड का संहार करने वाले के रूप में, शर्व शिव की रूपों के विघटनकर्ता की भूमिका का प्रतीक है। वह परम शक्ति है जो सभी प्रकट वास्तविकता को उसकी अप्रकट अवस्था में वापस लाती है। यह पहलू ब्रह्मांड पर उनकी पूर्ण शक्ति और संप्रभुता को उजागर करता है, यह दर्शाता है कि ब्रह्मांड की सबसे बड़ी और सबसे जटिल संरचनाएं भी अंततः उनकी इच्छा और ब्रह्मांडीय विघटन की भव्य योजना के अधीन हैं।

परोपकारी संहारक विनाशकारी अर्थ के बावजूद, शर्व की भूमिका आध्यात्मिक दृष्टिकोण से अंततः परोपकारी है। यह विनाश शुद्ध करता है और नई रचना के लिए मार्ग प्रशस्त करता है, ठहराव को रोकता है और अस्तित्व के निरंतर विकास को सुनिश्चित करता है। व्यक्ति के लिए, शर्व अज्ञान, अहंकार और आध्यात्मिक मुक्ति के सभी बाधाओं को नष्ट करता है, उन भ्रमों को तोड़ता है जो आत्मा को भौतिक संसार से बांधते हैं। वह संसार (जन्म और मृत्यु के चक्र) के कारण होने वाले दुख को नष्ट करता है।

वैदिक जड़ें शर्व नाम की जड़ें वेदों में प्राचीन हैं, जहाँ यह एक भयंकर देवता को संदर्भित करता है, जिसे अक्सर रुद्र से जोड़ा जाता है, जो शिव के पूर्ववर्ती हैं। अथर्ववेद में, रुद्र-शर्व को एक शक्तिशाली और दुर्जेय देवता के रूप में आह्वान किया गया है जो आपदाओं को उत्पन्न और टाल दोनों सकते हैं, जो उनके विनाशकारी और सुरक्षात्मक दोनों तरह के दोहरे स्वरूप को दर्शाता है। यह प्राचीन वंशावली शर्व को दिव्य के एक शाश्वत और आदिम पहलू के रूप में स्थापित करती है।

735. सदाचाराय

जो धार्मिक,Sadaacaaraaya: Salutations To The one who is the embodiment of righteous, noble, and virtuous conduct.

विस्तार : सदाचाराय नाम संस्कृत के शब्दों सदाचार और आचार्य से लिया गया है।

सदाचार: इस यौगिक शब्द का अर्थ है "धार्मिक आचरण," "कुलीन व्यवहार," "सदाचारी अभ्यास," या "उचित रीति-रिवाज।" यह ऐसे आचरण को संदर्भित करता है जो धर्म (धार्मिकता), नैतिक सिद्धांतों और आध्यात्मिक कल्याण तथा सामाजिक सद्भाव की ओर ले जाने वाली समय-सम्मानित परंपराओं के अनुरूप हो। यह कार्य, विचार और शब्द की पवित्रता को समाहित करता है।

आचार्य / आराया: यद्यपि यहाँ प्रत्यय "आय" (जो "जो है उसे" इंगित करता है) है, यह आचार्य के गुणों की ओर संकेत करता है, जो ऐसे आचरण का शिक्षक या निर्धारक होता है। इस प्रकार, यह उस एक को दर्शाता है जो पूर्ण आचरण का प्रतीक और उदाहरण है।

धार्मिकता का प्रतीक कालभैरव, सदाचाराय के रूप में, केवल धार्मिक आचरण के प्रस्तावक नहीं हैं, बल्कि इसके साक्षात प्रतीक हैं। उनके कार्य, यद्यपि कभी-कभी अपने ब्रह्मांडीय पैमाने पर भयंकर होते हैं, हमेशा परम धर्म और न्याय में निहित होते हैं। वे उस सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करते हैं जो आध्यात्मिक अनुशासन और नैतिक जीवन का आधार है। वे व्यवहार में पूर्णता का आदर्श और अंतिम मानक हैं जिसके द्वारा सभी कार्यों का मूल्यांकन किया जाना है। वे अपनी दिव्य भूमिका में अपने स्वयं के पूर्ण आचरण के माध्यम से ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखते हैं।

शिक्षक और मार्गदर्शक सदाचार होने के नाते, वे स्वाभाविक रूप से सभी प्राणियों के लिए सद्गुणों से जीने के तरीके के मार्गदर्शक बन जाते हैं। वे ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करते हैं जिसका ईमानदार भक्त अनुकरण करने का प्रयास करते हैं। उनकी उपस्थिति ही नैतिक जीवन और आध्यात्मिक सिद्धांतों के पालन को प्रेरित करती है। भैरव का यह पहलू उनके भयंकर रूप के अक्सर अनदेखे परोपकारी पक्ष पर जोर देता है - कि उनकी कठोरता परम भलाई के लिए है, जो प्राणियों को उनके कार्यों को शुद्ध करने और अधार्मिक (अधर्मी) आचरण से दूर रहने के लिए मार्गदर्शन करती है।

अधर्म का नाश करने वाला चूंकि वे सदाचार का प्रतीक हैं, वे स्वाभाविक रूप से इसके विपरीत - दुराचार (बुरा आचरण) के विनाशक बन जाते हैं। उनका भयानक रूप उस परम शक्ति के रूप में देखा जा सकता है जो अधर्म, अनुशासनहीनता और अनैतिक प्रथाओं को मिटा देती है, यह सुनिश्चित करती है कि ब्रह्मांडीय और आध्यात्मिक व्यवस्था बनी रहे। वे उन लोगों को सुधारते हैं जो धर्म के मार्ग से भटक जाते हैं, उन्हें शुद्ध आचरण के सिद्धांतों पर वापस लाते हैं।

736. शम्भवे

समस्त सुख, आनंद और समृद्धि के परम स्रोत को नमन।

विस्तार : शम्भवे नाम संस्कृत शब्द "शंभु" से लिया गया है, जो भगवान शिव का एक पूजनीय विशेषण है, जो उनके अधिक दुर्जेय भैरव रूपों के विपरीत, उनके परोपकारी और शुभ स्वभाव को खूबसूरती से दर्शाता है।

सुख का स्रोत (शम्): संस्कृत में उपसर्ग "शम्" (शम्) का अर्थ सुख, शांति, कल्याण, समृद्धि और शुभता है। जब इसे शिव पर लागू किया जाता है, तो यह दर्शाता है कि वे इन सभी लाभकारी अवस्थाओं के परम दाता हैं। वे केवल सुख के प्रदाता नहीं हैं, बल्कि सार रूप में, स्वयं सुख हैं। यह पहलू आध्यात्मिक और भौतिक कल्याण के दाता के रूप में उनकी भूमिका को उजागर करता है, जो अपने भक्तों को मन की शांति, संतोष और शुभता की भावना प्रदान करते हैं। वे दुख और संकट को दूर करते हैं, उन्हें शांति और आनंद से प्रतिस्थापित करते हैं।

अंतरंग आनंद (शंभु): "भू" (भू) का अर्थ है "होना," "अस्तित्व में होना," या "स्रोत।" इसलिए, शंभु का अर्थ है "समृद्धि का स्रोत" या "वह जिससे सुख उत्पन्न होता है।" इसका तात्पर्य है कि सभी प्रकार की प्रसन्नता, आराम और सौभाग्य सीधे उनसे उत्पन्न होते हैं। एक आध्यात्मिक साधक के लिए, यह उस गहन आंतरिक आनंद (आनंद) को संदर्भित करता है जो दिव्य के साथ संबंध से उत्पन्न होता है, वह परम आध्यात्मिक सुख जो सांसारिक सुखों से परे है।

शुभ विधान: शम्भवे के रूप में, वे शुभता (मंगल) के अवतार हैं। वे सकारात्मक परिणाम लाते हैं, नकारात्मकता से रक्षा करते हैं, और अपने भक्तों को धर्म और आध्यात्मिक विकास के मार्ग पर मार्गदर्शन करते हैं। उनकी उपस्थिति सुनिश्चित करती है कि सभी प्रयास, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों, सफलता के साथ पूरे हों और अनुकूल परिणाम से धन्य हों। उनके स्वभाव का यह पहलू उन्हें उन लोगों के लिए एक आश्रय बनाता है जो सांत्वना, समृद्धि और एक सामंजस्यपूर्ण जीवन की तलाश में हैं।

परम उपकारक: यह नाम शिव की सर्वोच्च उपकारक के रूप में भूमिका पर जोर देता है जो सभी सृष्टि के कल्याण को सुनिश्चित करते हैं। यह उनके करुणामय पक्ष का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ वे उदारतापूर्वक उन लोगों पर कृपा, आशीर्वाद और आध्यात्मिक और भौतिक लाभों की प्रचुरता प्रदान करते हैं जो उनकी कृपा चाहते हैं।

737. ईशानाय

सर्वोच्च शासक, सभी के राज करने वाले और नियंत्रण करने वाले प्रभु को नमन।

विस्तार : ईशानाय नाम संस्कृत शब्द 'ईशान' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "शासक," "स्वामी," "प्रभु," या "सार्वभौम।" यह वैदिक और पौराणिक दोनों परंपराओं में गहराई से निहित है, विशेष रूप से शैव सिद्धांत में, जहाँ ईशान को शिव के पाँच प्राथमिक पहलुओं (चेहरों या रूपों) में से एक के रूप में पहचाना जाता है।

सर्वोच्च शासक और नियंत्रक ईशान मूलतः सर्वोच्च अधिकार और प्रभुत्व को दर्शाता है। ईशान के रूप में, शिव सभी अस्तित्व पर परम संप्रभु, शासन करने वाले और नियंत्रित करने वाले स्वामी हैं। इसमें सभी क्षेत्र शामिल हैं—भौतिक, खगोलीय, आध्यात्मिक, और यहाँ तक कि प्रकट ब्रह्मांड से परे भी। वह केवल एक राजा नहीं हैं, बल्कि ब्रह्मांडीय सम्राट हैं जो व्यवस्था बनाए रखते हैं, धर्म के नियम स्थापित करते हैं, और समय और स्थान के ताने-बाने को नियंत्रित करते हैं।

उत्तर-पूर्व दिशा से संबंधित हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, ईशान पारंपरिक रूप से उत्तर-पूर्व दिशा (ईशान-कोण) से जुड़ा हुआ है। इस दिशा को अत्यधिक शुभ माना जाता है, आध्यात्मिक ऊर्जाओं के अभिसरण का एक बिंदु, और अक्सर शिव को समर्पित किया जाता है। यह एक विशिष्ट ब्रह्मांडीय दृष्टिकोण से शुभता और आध्यात्मिक कल्याण के संरक्षक और प्रदाता के रूप में उनकी भूमिका को पुष्ट करता है।

शिव का पाँचवाँ मुख (पञ्चानन) शिव के पञ्चानन (पंचमुखी) प्रतिमा विज्ञान में, ईशान ऊपर की ओर मुख वाला या ईथरीय मुख का प्रतिनिधित्व करता है, जो सर्वज्ञ ज्ञान, शुद्ध चेतना और दिव्य के अप्रकट, पारलौकिक पहलू का प्रतीक है। इस मुख को अक्सर सर्वोच्च, छिपा हुआ मुख माना जाता है, जो अनंत की ओर देखता है, जो सभी ज्ञान के स्रोत और धारणा से परे परम वास्तविकता के रूप में उनकी भूमिका का प्रतीक है।

समय और सृष्टि पर शक्ति ईशान, शिव के एक पहलू के रूप में, अज्ञानता को दूर करने और मोक्ष प्रदान करने की शक्ति से भी जुड़ा है। वह सभी विद्याओं (ज्ञान) और कलाओं (कलाओं या समय के पहलुओं) के स्वामी हैं। उनकी शासक प्रकृति सृष्टि, संरक्षण और विघटन के अंतिम नियंत्रक होने तक फैली हुई है, न केवल एक भागीदार के रूप में, बल्कि इन ब्रह्मांडीय प्रक्रियाओं के पीछे सर्वोच्च संयोजक के रूप में।

संक्षेप में, ईशान को नमन करना शिव को उस परम, सर्वव्यापी और सर्व-शासक चेतना के रूप में स्वीकार करना है जो सभी अस्तित्व को व्यवस्थित करती है, बनाए रखती है और उससे परे है।

738. ईश्वराय

जो सर्वोच्च, सर्वशक्तिमान प्रभु और ब्रह्मांड के नियंत्रक हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : ईश्वर नाम हिंदू दर्शन में, विशेष रूप से दिव्य के संदर्भ में, सबसे मौलिक और गहन विशेषणों में से एक है। यह "ईश" धातु से व्युत्पन्न एक यौगिक शब्द है, जिसका अर्थ है "शासन करना," "स्वामित्व रखना," या "सक्षम होना।" इसलिए, ईश्वर का अर्थ है "भगवान," "स्वामी," "शासक," या "नियंत्रक।"

परमेश्वर (The Supreme Lord) कालभैरव के संदर्भ में, ईश्वर पूरे ब्रह्मांड के परम, सर्वोच्च भगवान के रूप में उनकी भूमिका को संदर्भित करता है। यह केवल एक शक्तिशाली देवता नहीं है, बल्कि वह है जो सृष्टि, पालन और संहार पर पूर्ण प्रभुत्व रखता है। वह सभी अस्तित्व का स्वामी है, चाहे वह व्यक्त हो या अव्यक्त।

सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी (All-Powerful and Omnipotent) ईश्वर शब्द स्वाभाविक रूप से सर्वशक्तिमानता (सर्व-शक्तिमान) को दर्शाता है। ईश्वर के रूप में, कालभैरव के पास असीमित शक्ति है और वे कुछ भी प्राप्त करने में सक्षम हैं। उनकी इच्छा या उनके कार्य की कोई सीमा नहीं है। वह वह है जो समय और स्थान के ब्रह्मांडीय नृत्य को सहजता से संचालित करता है।

ब्रह्मांड का नियंत्रक (Controller of the Cosmos) केवल शक्ति से परे, ईश्वर ब्रह्मांड के सक्रिय नियंत्रक और निर्देशक को दर्शाता है। इसमें न केवल भौतिक नियम और घटनाएँ शामिल हैं, बल्कि सभी प्राणियों के भाग्य, कर्म के चक्र और व्यक्तिगत आत्मा का आध्यात्मिक विकास भी शामिल है।

वह वह है जो व्यवस्था (ऋत) बनाए रखता है और ब्रह्मांडीय मशीनरी के सुचारू कामकाज को सुनिश्चित करता है।

सभी अस्तित्व का उद्गम (Origin of All Existence) दार्शनिक रूप से, ईश्वर को अक्सर ब्रह्मांड का कुशल और भौतिक कारण समझा जाता है। वह कुम्हार और मिट्टी दोनों है, वह परम स्रोत है जिससे सब कुछ निकलता है और जिसमें अंततः सब कुछ विलीन हो जाता है। यह उसे परम वास्तविकता और सभी अस्तित्व को नियंत्रित करने वाला केंद्रीय सिद्धांत बनाता है।

व्यक्तिगत ईश्वर (Personal God) जबकि ब्रह्म अक्सर अवैयक्तिक, परम वास्तविकता को संदर्भित करता है, ईश्वर को अक्सर उस परम वास्तविकता के व्यक्तिगत पहलू के रूप में समझा जाता है - वह भगवान जिसकी पूजा की जा सकती है, ध्यान किया जा सकता है और आह्वान किया जा सकता है। वह वह है जो भक्ति का जवाब देता है और कृपा प्रदान करता है, जिससे वह भक्त के लिए सुलभ हो जाता है। भगवान शिव और उनके उग्र स्वरूप कालभैरव के लिए, ईश्वर उनकी पूर्ण संप्रभुता और सभी के परोपकारी फिर भी दुर्जेय शासक के रूप में उनकी भूमिका का प्रतिनिधित्व करता है।

739. श्रुतिधर्मोक्तसंवादिने

जिनके उपदेश शास्त्रों (श्रुति) में घोषित सिद्धांतों के पूर्ण सामंजस्य में हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : श्रुतिधर्मोक्तसंवादिने नाम कई तत्वों से बना एक गहन और जटिल संस्कृत शब्द है: श्रुतिधर्म, उक्त और संवादिन्।

• श्रुति (śruti): यह वेदों को संदर्भित करता है, जो हिंदू धर्म के सबसे प्राचीन और आधिकारिक ग्रंथ हैं। श्रुति, जिसका शाब्दिक अर्थ "जो सुना गया है" है, दिव्य रहस्योद्घाटन, प्राचीन ऋषियों द्वारा सीधे अनुभव किए गए और मौखिक रूप से प्रसारित शाश्वत सत्यों को दर्शाता है। इसे त्रुटिहीन और अपरिवर्तनीय माना जाता है।

• धर्म (dharma): इस शब्द का एक विशाल अर्थ है, जिसमें ब्रह्मांडीय नियम, धार्मिकता, नैतिक व्यवस्था, कर्तव्य, सद्गुण और ब्रह्मांड तथा मानव समाज को बनाए रखने वाले शाश्वत सिद्धांत शामिल हैं।

• उक्त (ukta): का अर्थ है "घोषित", "कहा गया" या "उच्चारित"।

• संवादिन् (saṃvādin): का अर्थ है "के सामंजस्य में", "के अनुरूप", "समान" या "सहमति में"।

श्रुति-धर्म में घोषित सिद्धांतों के पूर्ण सामंजस्य में: यह नाम स्पष्ट रूप से कालभैरव के उपदेशों, कार्यों और उनके स्वयं के स्वभाव की पुष्टि करता है कि वे वेदों में प्रतिपादित शाश्वत, दिव्य रूप से प्रकट नियमों और सत्यों के पूर्ण संरेखण में हैं। वे नए सिद्धांत नहीं गढ़ते या स्थापित ब्रह्मांडीय व्यवस्था से विचलित नहीं होते। इसके बजाय, उनकी प्रत्येक अभिव्यक्ति और निर्देश श्रुति के आदिम ज्ञान को पूरी तरह से दर्शाता है।

वैदिक सत्य के संरक्षक: श्रुतिधर्म के साथ संवादिन् में जिनके उपदेश हैं, कालभैरव वैदिक सत्य के परम संरक्षक और अवतार हैं। वे वेदों के जीवंत ज्ञान का प्रतिनिधित्व करते हैं, यह दर्शाते हैं कि ये शाश्वत सिद्धांत चक्रीय समय की गतिशीलता और आध्यात्मिक व्यवस्था के भयंकर संरक्षण में कैसे प्रकट होते हैं। उनकी भयंकरता और विनाश की क्षमता मनमानी नहीं है, बल्कि धर्म की अभिव्यक्तियाँ हैं, जो ब्रह्मांडीय नियमों का उल्लंघन होने पर संतुलन और पवित्रता बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं।

दिव्य न्याय और व्यवस्था: श्रुतिधर्म के भीतर "धर्म" केवल नैतिक संहिता नहीं, बल्कि अस्तित्व का ताना-बाना है। कालभैरव, इस नाम के माध्यम से, इस दिव्य व्यवस्था के परम प्रवर्तक के रूप में पहचाने जाते हैं, जो श्रुति में निर्धारित सिद्धांतों के ढांचे के भीतर कार्य करते हैं। इसका अर्थ है कि

उनका न्याय हमेशा धार्मिक होता है, उनके दंड हमेशा उचित होते हैं, और उनके वरदान हमेशा कर्म के नियम के अनुसार होते हैं, ये सभी अचूक वेद में निहित हैं।

सनातन धर्म का सार: यह नाम कालभैरव की भूमिका को एक ऐसे देवता के रूप में भी रेखांकित करता है, जिनका अस्तित्व और कार्य सनातन धर्म, "धार्मिकता के शाश्वत मार्ग" के अभिन्न अंग हैं। वे एक परिधीय देवता नहीं हैं, बल्कि दिव्य के एक मुख्य पहलू हैं, जिनकी प्रत्येक आज्ञा और उपस्थिति मौलिक आध्यात्मिक सत्यों के साथ प्रतिध्वनित होती है।

740. सहस्राक्षाय

ब्रह्मांड में सब कुछ देखने और जानने वाले, हजारों आँखों वाले (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : सहस्राक्षाय नाम दो संस्कृत शब्दों से बना है: सहस्र (हज़ार) और अक्ष (आँखें)।

सर्वज्ञता और सर्वव्यापकता यह नाम सर्वज्ञता और सर्वव्यापकता के गुण को दर्शाता है। "हज़ार आँखें" अनंत दृष्टि का एक प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व है, न कि शाब्दिक मात्रा। यह दर्शाता है कि भगवान कालभैरव सब कुछ, हर जगह, एक साथ देखते हैं। ब्रह्मांड में ऐसा कुछ भी नहीं है, दृश्य या अदृश्य, जो उनकी दृष्टि से बच सके। इसमें अतीत, वर्तमान और भविष्य, भौतिक और सूक्ष्म लोक, और सभी प्राणियों के अंतरतम विचार और कार्य शामिल हैं।

ब्रह्मांडीय साक्षी सहस्राक्षाय कालभैरव को परम ब्रह्मांडीय साक्षी (साक्षी) के रूप में चित्रित करता है। वह सृष्टि, पालन और संहार के पूरे नाटक को व्यक्तिगत रूप से प्रभावित या उलझे बिना देखते हैं। इसका अर्थ है परम वैराग्य और निष्पक्ष अवलोकन। हर घटना, हर क्रिया और हर कर्म का परिणाम उनके द्वारा दर्ज और ज्ञात होता है।

काल के स्वामी और शाश्वत सतर्कता काल भैरव के रूप में, काल के स्वामी के रूप में, उनकी हज़ार आँखें समय के प्रवाह पर उनकी शाश्वत सतर्कता का भी प्रतीक हैं। वह हर पल को घटित होते हुए देखते हैं, भव्य ब्रह्मांडीय चक्रों (कल्पों) से लेकर एक सेकंड के सबसे छोटे अंश तक। यह धारणा उन्हें ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखने और न्याय को पूर्णता से प्रशासित करने की अनुमति देती है।

दिव्य चेतना का प्रतीक "हज़ार आँखें" गहन दिव्य चेतना और जागरूकता के लिए एक रूपक हैं जो अस्तित्व की समग्रता को समाहित करती हैं। यह अद्वैतवादी दृष्टि का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ सभी भेद दिव्य की एकवचन, प्रबुद्ध चेतना में विलीन हो जाते हैं। सहस्राक्षाय को नमन करना दिव्य के इस असीम, सर्व-दृष्टिगोचर पहलू को स्वीकार करना और उसका सम्मान करना है जो ज्ञान और सत्य का अंतिम स्रोत है।

741. सहस्रपादे

सहस्र चरणों वाले, जो अपनी सर्वव्यापी उपस्थिति को दर्शाते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : नाम सहस्रपादे (सह् स्रपादम्) दो शब्दों सहस्र (सह् स्र) से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है "एक हजार," और पाद (पाद), जिसका अर्थ है "चरण।" यह विशेषण अक्सर वैदिक भजनों में पाया जाता है, विशेष रूप से पुरुष सूक्त में, जहाँ यह ब्रह्मांडीय सत्ता (पुरुष) का वर्णन करता है।

सर्वव्यापी उपस्थिति "हजारों चरणों" की अवधारणा एक प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व है न कि शाब्दिक शारीरिक विवरण। यह सर्वव्यापकता, सर्वत्र उपस्थिति और असीमता को दर्शाती है। यह बताता है कि कालभैरव की उपस्थिति हर जगह फैली हुई है, ब्रह्मांड के हर बिंदु और अस्तित्व के हर आयाम को छूती है। जिस प्रकार चरणों का उपयोग चलने और जमीन को ढकने के लिए किया जाता है, हजारों चरण सभी स्थान और समय तक पहुँचने, प्रभावित करने और व्याप्त करने की अनंत क्षमता का संकेत देते हैं।

ब्रह्मांडीय पहुँच और नियंत्रण यह उनके असीम और अथाह स्वरूप को भी इंगित करता है। हजारों चरणों के साथ, कोई भी स्थान या इकाई उनकी पहुँच, उनकी शक्ति या उनकी जागरूकता से परे नहीं है। यह सृष्टि, पालन और संहार पर उनके पूर्ण नियंत्रण का प्रतीक है, जो ब्रह्मांड के अंतिम प्रशासक और समय के सर्वोच्च स्वामी (काल) के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है।

आधार और समर्थन गहरे अर्थ में, चरण उस नींव या समर्थन का भी प्रतिनिधित्व करते हैं जिस पर सृष्टि टिकी हुई है। सहस्रपादे इस प्रकार यह दर्शाता है कि कालभैरव पूरे ब्रह्मांड के लिए अंतिम समर्थन प्रणाली हैं, जो अपनी अनंत ऊर्जा और उपस्थिति के माध्यम से सब कुछ एक साथ रखते हैं। वे अस्तित्व की आधारशिला हैं।

परात्परता और अंतर्व्यापकता यह नाम दिव्य के परात्पर (सभी रूपों से परे) और अंतर्व्यापक (सभी रूपों के भीतर) दोनों पहलुओं को खूबसूरती से समाहित करता है। जबकि वे समझ से परे हैं, उनके "हजारों चरण" हर परमाणु और हर प्राणी के भीतर दृढ़ता से स्थापित हैं, जो घटनात्मक दुनिया के हर पहलू के साथ उनके घनिष्ठ संबंध को दर्शाते हैं।

742. सर्वज्ञाय

सर्वज्ञ, सर्व-ज्ञाता और पूर्ण ज्ञान से परिपूर्ण को नमन।

विस्तार : सर्वज्ञ नाम संस्कृत के शब्दों "सर्व" (सब, सब कुछ, पूर्ण) और "ज्ञ" (जानना, ज्ञान) से लिया गया है। इस प्रकार, सर्वज्ञ का शाब्दिक अर्थ है "सब कुछ जानने वाला" या "सर्वज्ञ"।

सीमित ज्ञान का अतिक्रमण (Transcendence of Limited Knowledge) हिंदू दर्शन में, विशेष रूप से शैव धर्म में, सर्वज्ञ दिव्य सत्ता द्वारा धारण किए गए परम और पूर्ण ज्ञान को दर्शाता है। मानवीय ज्ञान के विपरीत, जो सीमित, सापेक्ष और इंद्रियों तथा बुद्धि के माध्यम से प्राप्त होता है, शिव का ज्ञान सहज, निरपेक्ष और असीम है। वे अनुभवजन्य और अनुमानित ज्ञान के सभी रूपों का अतिक्रमण करते हैं।

प्रत्यक्ष और तात्कालिक बोध (Direct and Immediate Perception) सर्वज्ञ के रूप में शिव की सर्वज्ञता का अर्थ है कि वे सब कुछ सीधे और एक साथ, बिना किसी क्रम या विलंब के देखते हैं। वे ज्ञान प्राप्त नहीं करते; वे स्वयं ज्ञान हैं। इसमें अस्तित्व के सभी क्षेत्रों में सभी अतीत, वर्तमान और भविष्य की घटनाएँ, विचार और कार्य शामिल हैं। वे प्रत्येक परमाणु की सूक्ष्मता और प्रत्येक आकाशगंगा की विशालता को जानते हैं।

समस्त ज्ञान का स्रोत (Source of All Wisdom) सर्वज्ञ के रूप में, शिव समस्त ज्ञान, शास्त्रों, कलाओं, विज्ञानों और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के परम स्रोत हैं। ज्ञान के सभी रूप उनसे उत्पन्न होते हैं और उन्हीं में समाहित होते हैं। वे सभी गुरुओं के गुरु हैं, सच्चे ज्ञान (ज्ञान) के दाता हैं जो मुक्ति की ओर ले जाता है।

भक्तों के लिए निहितार्थ (Implications for Devotees) भक्त के लिए, शिव को सर्वज्ञ के रूप में पहचानना उनके पूर्ण न्याय, प्रत्येक प्रार्थना का पूर्ण समझ के साथ जवाब देने की उनकी क्षमता, और सभी कार्यों, चाहे वे पुण्य हों या पापी, पर उनकी अटूट दृष्टि को रेखांकित करता है। यह भक्ति और समर्पण को भी प्रेरित करता है, क्योंकि व्यक्ति यह महसूस करता है कि दिव्य सत्ता से कुछ भी छिपा नहीं है। यह इस विश्वास को बढ़ावा देता है कि वे सबसे अच्छा जानते हैं और संवेदनशील प्राणियों को उनकी परम आध्यात्मिक क्षमता की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

743. सर्वदेवाय

सभी देवताओं के देवता, समस्त देवी-देवताओं के मूर्त स्वरूप को नमन।

विस्तार : सर्वदेवाय नाम कालभैरव की सर्वोच्च स्थिति की एक गहन घोषणा है, जिसमें संस्कृत के शब्द 'सर्व' और 'देव' का संयोजन है।

• सर्व (Sarva): इस शब्द का अर्थ है "सभी," "प्रत्येक," "पूर्ण," या "समस्त।" यह कुल समावेशिता और सार्वभौमिकता को दर्शाता है।

• देव (Deva): यह शब्द "देवता," "ईश्वर," या "दिव्य सत्ता" को संदर्भित करता है। यह चमकने वाले, प्रकाशमान और पारलौकिक सत्ताओं को दर्शाता है।

सभी देवताओं के देवता (The God of All Gods) सर्वदेवाय के रूप में, कालभैरव को परम देवता के रूप में स्वीकार किया जाता है जिनसे अन्य सभी देवी-देवता उत्पन्न होते हैं और जिनमें वे समाहित होते हैं। वह केवल अनेक देवताओं में से एक नहीं हैं, बल्कि सभी दिव्यता का स्रोत और सार हैं। यह दृष्टिकोण उन्हें ब्रह्मांडीय पदानुक्रम के शीर्ष पर रखता है, अन्य दिव्य सत्ताओं के व्यक्तिगत रूपों और कार्यों को पार करते हुए उन्हें पूरी तरह से समाहित करता है।

सभी देवताओं का अवतार (Embodiment of All Deities) यह नाम दर्शाता है कि कालभैरव हिंदू पंथ के प्रत्येक देवता की शक्ति, गुणों और सार को समाहित करते हैं। सभी दिव्य अभिव्यक्तियाँ, ऊर्जाएँ और भूमिकाएँ अंततः उनमें अपना संश्लेषण और मूल पाती हैं। जब कोई कालभैरव की पूजा करता है, तो वह अनिवार्य रूप से सभी देवताओं की पूजा कर रहा होता है। यह अद्वैतवादी दृष्टिकोण दिव्य के विविध रूपों की अंतर्निहित एकता को उजागर करता है।

सर्वोच्च ब्रह्मांडीय अधिकार (Supreme Cosmic Authority) सर्वदेवाय कालभैरव के सर्वोच्च ब्रह्मांडीय अधिकार को रेखांकित करता है। वह सभी दिव्य शक्तियों के नियंत्रक और नियामक हैं, जो ब्रह्मांड के उचित कार्य को सुनिश्चित करते हैं। यह पहलू उनके काल (समय) के स्वामी के रूप में उनकी भूमिका के साथ संरेखित होता है, जो देवताओं के क्षेत्रों सहित सभी अस्तित्व को नियंत्रित करता है।

दार्शनिक महत्व (Philosophical Significance) सर्वदेवाय की अवधारणा ब्रह्म की अद्वैतवादी समझ में निहित है, जहाँ परम वास्तविकता एक है, और सभी देवता उस अद्वितीय सत्य के मात्र विभिन्न पहलू या अभिव्यक्तियाँ हैं। शैव परंपरा में, शिव, और विस्तार से कालभैरव, को अक्सर इस परम ब्रह्म के रूप में पहचाना जाता है, जो अद्वैत वास्तविकता है जो सब कुछ में व्याप्त है और उसे पार करती है।

744. शङ्कराय

सुख, शांति और शुभता प्रदान करने वाले महान शंकर को नमन।

विस्तार : शंकरा (śaṅkara) नाम भगवान शिव का एक गहरा और प्राचीन विशेषण है, जो संस्कृत मूल 'शम्' (śaṃ) और 'कर' (kara) से लिया गया है।

शुभता का दाता (शम्): 'शम्' (śaṃ) मूल का अर्थ शुभता, अच्छाई, शांति, खुशी और कल्याण है। यह अस्तित्व के लिए सभी लाभकारी और वांछनीय चीजों को समाहित करता है। इस संदर्भ में, भगवान शंकर सभी सकारात्मक अवस्थाओं के परम स्रोत और दाता हैं। वे वही हैं जो दुख, पीड़ा और अशुभ परिस्थितियों को दूर करते हैं, अपने भक्तों के जीवन में समृद्धि, सद्भाव और शांति लाते हैं।

निर्माता/कर्ता/दाता (कर): 'कर' (kara) मूल का अर्थ है "निर्माता," "कर्ता," या "जो कारण बनता है या लाता है।" जब इसे 'शम्' (śaṃ) के साथ जोड़ा जाता है, तो यह शंकर बनता है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "जो शुभता का कारण बनता है या लाता है," या "शांति और खुशी का दाता।"

परम परोपकार: यह नाम शिव के परोपकारी और दयालु पहलू पर जोर देता है। जबकि अक्सर विनाश से जुड़े होते हैं, शंकर मुक्ति (मोक्ष), आध्यात्मिक प्रगति और सांसारिक कल्याण प्रदान करने वाले परम परोपकारी के रूप में उनकी भूमिका को उजागर करते हैं। वे दिव्य चिकित्सक हैं जो शरीर और आत्मा दोनों की बीमारियों को ठीक करते हैं, प्राणियों को उनकी उच्चतम क्षमता की ओर ले जाते हैं।

दिव्य कृपा का प्रतीक: इस नाम का जप करने से शिव की कृपा का आह्वान होता है, उनकी शुभ उपस्थिति को बाधाओं को दूर करने, नकारात्मक कर्मों को कम करने और किसी के जीवन को आनंद और आध्यात्मिक संतोष से भरने के लिए आमंत्रित किया जाता है। यह साधकों को याद दिलाता है कि उनके दुर्जेय रूपों के बावजूद, शिव का अंतिम स्वरूप अनंत दया और आशीर्वाद का है।

745. शूलधारकाय

महान त्रिशूल (शूल) धारण करने वाले को नमन, जो बुराई को नष्ट करने की उनकी शक्ति का प्रतीक है।

विस्तार : शूलधारकय नाम शूल और धारक का एक यौगिक है, जो शिव और भैरव की प्रतिमा विज्ञान और दर्शन में अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

त्रिशूल (शूल) शूल, या त्रिशूल (तीन-शूल वाला भाला), भगवान शिव और उनके उग्र स्वरूप, भैरव से जुड़े सबसे प्रतिष्ठित और शक्तिशाली हथियारों में से एक है। त्रिशूल का प्रत्येक शूल अस्तित्व और विनाश के एक गहन पहलू का प्रतीक है:

1. सृष्टि, पालन, संहार (त्रिमूर्ति): तीनों शूल ब्रह्मा (सृष्टि), विष्णु (पालन) और शिव (संहार/परिवर्तन) के ब्रह्मांडीय कार्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं। शूल धारण करके, भैरव इन तीन मूलभूत शक्तियों पर अपनी महारत का संकेत देते हैं, यह दर्शाते हुए कि वे ब्रह्मांड के परम वास्तुकार और संहारक हैं। 2. भूत, वर्तमान, भविष्य (समय): शूल समय के तीनों पहलुओं का भी प्रतीक है, जो स्वयं समय पर भैरव के प्रभुत्व को दर्शाता है। काल भैरव के रूप में, समय के स्वामी, उनका शूल सभी लौकिक आयामों में प्रवेश करता है और उन्हें नियंत्रित करता है। 3. जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति (चेतना की अवस्थाएँ): दार्शनिक रूप से, शूल चेतना की तीन अवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें केंद्रीय शूल अक्सर पारलौकिक चौथी अवस्था, तुरीय का प्रतीक होता है, जो सांसारिक अनुभव से परे है। भैरव, अपने त्रिशूल के साथ, इन अवस्थाओं का मार्गदर्शन और शासन करते हैं। 4. तीन गुण (सत्त्व, रजस, तमस): यह प्रकृति के तीन मूलभूत गुणों पर नियंत्रण का भी प्रतीक है: शुद्धता (सत्त्व), गतिविधि (रजस), और जड़ता (तमस)। भैरव, अपने शूल के माध्यम से, इन गुणों से परे हैं और उन पर शासन करते हैं, उनके प्रभाव से अछूते रहते हैं।

धारक (Dhāraka) धारक का अर्थ है 'धारण करने वाला' या 'पकड़ने वाला'। यह उपसर्ग इस बात पर जोर देता है कि भैरव केवल शूल से जुड़े नहीं हैं, बल्कि इसके सही और शक्तिशाली धारक हैं। वे इस ब्रह्मांडीय हथियार को धारण करने वाले हैं, जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखने, न्याय प्रदान करने और सभी प्रकार की बुराईयों का नाश करने में उनकी सक्रिय भूमिका को दर्शाता है।

बुराई का संहारक शूल का प्राथमिक कार्य बुराई का विनाश करना है। भैरव के लिए, इसका अर्थ केवल द्वेषपूर्ण शक्तियों का भौतिक विनाश नहीं है, बल्कि अहंकार, अज्ञान और आसक्ति जैसे आंतरिक राक्षसों का भी विनाश है जो व्यक्तिगत आत्मा को बांधते हैं। त्रिशूल की भेदन क्रिया रूपक रूप से भ्रमों को भेदने और अंधकार को दूर करने का प्रतिनिधित्व करती है।

इस नाम के माध्यम से, हम भैरव को सर्वोच्च सत्ता के रूप में स्वीकार करते हैं जो ब्रह्मांडीय संतुलन और आध्यात्मिक प्राप्ति में बाधा डालने वाली हर चीज को समाप्त करके आत्माओं की मुक्ति के लिए अंतिम उपकरण का उपयोग करते हैं।

746. शुचये

जो निष्कलंक स्वच्छ, शुद्ध और बेदाग हैं, उनको नमन।

विस्तार : शुचये (Śucaye) नाम संस्कृत मूल 'शुच्' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "चमकना, उज्ज्वल होना, शुद्ध करना।" यह भगवान की पूर्ण पवित्रता, निष्कलंकता और निर्दोष प्रकृति को दर्शाता है।

पूर्ण पवित्रता शुचये अस्तित्व की एक दिव्य अवस्था को संदर्भित करता है जो किसी भी दाग, अशुद्धता या अपवित्रता से पूरी तरह मुक्त है, चाहे वह शारीरिक, मानसिक या आध्यात्मिक हो। कालभैरव के संदर्भ में, यह पवित्रता केवल गंदगी का अभाव नहीं है, बल्कि तीन गुणों (सत्व, रजस, तमस) और माया (भ्रम) के प्रभाव से परे एक पारलौकिक अवस्था है जो सामान्य प्राणियों को बांधती है। वह बेदाग, शुद्ध चेतना का प्रतीक हैं।

अशुद्धियों को शुद्ध करने वाला स्वयं शुद्ध होने के बावजूद, कालभैरव, शुचये के रूप में, शुद्ध करने की शक्ति का भी प्रतीक हैं। उनकी उपस्थिति या उन पर भक्त का केंद्रित ध्यान मन, शरीर और आत्मा को अशुद्धियों, पापों और नकारात्मक कर्मिक छापों से शुद्ध कर सकता है। वह अज्ञानता और आसक्ति के मैल को जला देते हैं, जिससे साधक आंतरिक स्पष्टता और आध्यात्मिक स्वच्छता की स्थिति की ओर अग्रसर होता है।

सृष्टि और विनाश से अछूता सृष्टि, संरक्षण और विघटन के चक्रों में उनकी भागीदारी के बावजूद - ऐसी प्रक्रियाएं जो अक्सर विभिन्न प्रकार के जुड़ाव और परिवर्तन से जुड़ी होती हैं - शुचये अछूते और निर्दोष रहते हैं। उनके कार्य, यहां तक कि सबसे भयानक भी, हमेशा पूर्ण ब्रह्मांडीय व्यवस्था में होते हैं और व्यक्तिगत आसक्ति या अपवित्रता से रहित होते हैं। वह आकाश के समान हैं, जो बादलों, बारिश या तूफानों के बावजूद शुद्ध और स्थिर रहता है जो उससे गुजरते हैं।

आंतरिक पवित्रता का प्रतीक आध्यात्मिक साधक के लिए, शुचये के रूप में कालभैरव का आह्वान अपने स्वयं के अस्तित्व की शुद्धि के लिए एक प्रार्थना है, ताकि बौद्धिक अशांति, भावनात्मक उथल-पुथल और कर्मों के दागों को दूर किया जा सके, जिससे आंतरिक पारदर्शिता और आध्यात्मिक चमक की स्थिति प्राप्त हो सके। वह मुक्ति की अंतिम अवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं जहां आत्मा सभी दूषित पदार्थों से पूरी तरह मुक्त होती है।

747. राशिभ्यो

जो समग्र हैं, समस्त अस्तित्व के महान ढेर हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : राशि (Raaśi) संस्कृत शब्द से व्युत्पन्न नाम 'राशये', कालभैरव को समस्त अस्तित्व के योग, समुच्चय या समग्र रूप में गहनता से वर्णित करता है।

समस्त अस्तित्व का विशाल ढेर राशि का शाब्दिक अर्थ है "ढेर," "समूह," "योग," "समुच्चय," "पुंज," या "संग्रह।" आध्यात्मिक और दार्शनिक संदर्भ में, जब इसे दिव्य पर लागू किया जाता है, तो यह दर्शाता है कि कालभैरव सृष्टि का केवल एक पहलू नहीं हैं, बल्कि जो कुछ भी अस्तित्व में है - भूत, वर्तमान और भविष्य - उसका व्यापक कुल योग हैं। वह परम पुंज हैं, घटनाओं, चेतना और अचेतना की संपूर्णता हैं। इसका तात्पर्य है कि सभी प्राणी, सभी तत्व, सभी रूप, सभी ऊर्जाएँ और सभी अनुभव उनके अद्वितीय, असीम अस्तित्व के केवल घटक भाग या अभिव्यक्तियाँ हैं।

सृष्टि की समग्रता यह उनकी सर्वव्यापी और सर्व-समावेशी प्रकृति पर जोर देता है। जिस प्रकार अनाज के ढेर में प्रत्येक व्यक्तिगत दाना होता है, फिर भी उसे एक ही पुंज के रूप में देखा जाता है, उसी प्रकार कालभैरव ब्रह्मांड की प्रत्येक व्यक्तिगत विशिष्टता को समाहित करते हैं, जबकि साथ ही साथ अद्वितीय, अविभाजित समग्रता बने रहते हैं। वह अपने संपूर्ण रूप में ब्रह्मांड हैं, व्यक्त और अव्यक्त, स्थूल और सूक्ष्म।

वर्गीकरण से परे "समस्त अस्तित्व के समुच्चय" होने के नाते, कालभैरव किसी भी सीमित वर्गीकरण या द्वैतवादी समझ से परे हैं। वह केवल निर्माता, पालक या संहारक नहीं हैं, बल्कि वह सार, संचयी योग हैं, जिससे ये सभी भूमिकाएँ उभरती हैं और जिसमें वे विलीन हो जाती हैं। वह अल्फा और ओमेगा हैं, आदि और अंत हैं, और इनके बीच सब कुछ हैं, जिन्हें ब्रह्मांडीय वास्तविकता के विशाल "ढेर" के रूप में पहचाना जाता है।

748. स्कंदगुरवे

स्कंद (कार्तिकेय) के पूज्य आध्यात्मिक गुरु को नमन।

विस्तार : स्कन्दगुरवे नाम का शाब्दिक अर्थ है "स्कंद के गुरु (आध्यात्मिक शिक्षक)"। यह नाम भगवान शिव (कालभैरव के रूप में उनके भयानक स्वरूप में) और उनके पराक्रमी पुत्र कार्तिकेय, जिन्हें स्कंद या मुरुगन के नाम से भी जाना जाता है, के बीच एक अद्वितीय और गहन संबंध को उजागर करता है।

गुरु की भूमिका हिंदू परंपराओं में, गुरु केवल ज्ञान के शिक्षक नहीं होते, बल्कि एक आध्यात्मिक उपदेशक होते हैं जो ज्ञान प्रदान करते हैं, धर्म के मार्ग पर मार्गदर्शन करते हैं, और परम सत्य की प्राप्ति में सहायता करते हैं। गुरु को स्वयं ईश्वर का एक स्वरूप माना जाता है।

स्कंद का जन्म और उद्देश्य स्कंद को स्वर्गीय सेनाओं के सेनापति के रूप में जाना जाता है, जिनका जन्म विशेष रूप से शक्तिशाली राक्षस तारकासुर को पराजित करने के लिए हुआ था, जिसे शिव या किसी अन्य देवता द्वारा पराजित नहीं किया जा सकता था। स्कंद दिव्य युवा ऊर्जा, युद्ध कौशल और रणनीतिक ज्ञान का प्रतिनिधित्व करते हैं।

परम गुरु के रूप में शिव स्वयं शिव का स्कंद के गुरु के रूप में संबोधित किया जाना अत्यधिक महत्वपूर्ण है: 1. अतींद्रिय ज्ञान (Transcendental Wisdom): यह दर्शाता है कि स्कंद जैसे शक्तिशाली और बुद्धिमान देवता को भी परम चेतना, जो कि शिव हैं, से आध्यात्मिक मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। यह शिव की सभी ज्ञान (ज्ञान) और मुक्ति (मोक्ष) के परम स्रोत के रूप में भूमिका पर जोर देता है। 2. धर्म में मार्गदर्शन (Guidance in Dharma): यद्यपि स्कंद एक योद्धा देवता हैं, उनके कार्य हमेशा धर्म (धार्मिकता) के अनुरूप होते हैं। कालभैरव, उनके गुरु के रूप में, उन्हें केवल युद्ध में ही नहीं, बल्कि ब्रह्मांड को नियंत्रित करने वाले नैतिक और ब्रह्मांडीय सिद्धांतों में भी निर्देश देते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि उनकी शक्ति का उपयोग व्यापक भलाई के लिए किया जाए। 3. गूढ़ ज्ञान प्रदान करना (Imparting Esoteric Knowledge): इसका तात्पर्य है कि कालभैरव, जैविक अर्थ में स्कंद के पिता होने के अलावा, अपने पुत्र को अपनी ब्रह्मांडीय भूमिका को पूरा करने के लिए आवश्यक गूढ़ ज्ञान और आध्यात्मिक अनुशासन भी प्रदान करते हैं। इसमें तांत्रिक ज्ञान, मंत्र, या गहन दार्शनिक अंतर्दृष्टि शामिल हो सकती है जो स्कंद के दिव्य मिशन के लिए प्रासंगिक हैं। 4. अधिकार का प्रतीक (Symbol of Authority): यह कालभैरव के सर्वोच्च अधिकार और आदि गुरु (आदि गुरु) के रूप में उनकी स्थिति को और स्थापित करता है, जिनसे सभी आध्यात्मिक ज्ञान उत्पन्न होता है।

यह नाम कालभैरव की भूमिका को न केवल एक भयंकर रक्षक और दंडदाता के रूप में, बल्कि सर्वोच्च आध्यात्मिक ज्ञान के स्रोत के रूप में भी रेखांकित करता है, जो अन्य दिव्य प्राणियों का भी मार्गदर्शन करने में सक्षम हैं।

749. श्रीकण्ठाय

जिनके कंठ सुंदर और दीप्तिमान हैं (जैसे नीलकंठ) उन्हें नमन।

विस्तार : श्रीकण्ठ (श्रीकण्ठाय) नाम संस्कृत के शब्दों 'श्री' और 'कण्ठ' का एक संयुक्त रूप है।

श्री (Shrī): इस शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है, जिसमें वैभव, सौंदर्य, समृद्धि, शुभता, दिव्य कृपा, पवित्रता और दीप्ति शामिल है। यह अक्सर श्रद्धा और महिमा को इंगित करने के लिए नामों से पहले आता है।

कण्ठ (Kaṇṭha): इसका शाब्दिक अर्थ "गला" या "गर्दन" है।

सुंदर या शुभ कंठ वाले शाब्दिक रूप से, श्रीकण्ठ का अर्थ है "सुंदर, शानदार या शुभ कंठ वाला"। यह तुरंत भगवान शिव के उस प्रसिद्ध आख्यान को याद दिलाता है जब उन्होंने समुद्रमंथन (समुद्रमन्थन) के दौरान हलाहल विष (विष) का सेवन किया था। ब्रह्मांड को विनाश से बचाने के लिए, शिव ने घातक विष पिया और उसे अपने गले में धारण कर लिया। इस क्रिया के कारण उनका गला नीला पड़ गया, जिससे उन्हें नीलकंठ (नीलकण्ठ), "नीले गले वाले" की उपाधि मिली।

इस उपाख्यान से परे, शिव के गले का नीलापन, भक्तों के लिए उनके करुणापूर्ण कार्य के कारण सुंदर होते हुए भी, अपार विनाशकारी ऊर्जा के धारण का प्रतिनिधित्व करता है। उनके गले का दीप्तिमान पहलू (श्री), इसलिए, इस बलिदान की महिमा और शुभता को दर्शाता है, जो मृत्यु के निशान को दिव्य सुरक्षा और कृपा के प्रतीक में बदल देता है। यह उनकी सभी नकारात्मकता को अवशोषित करने और उसे ब्रह्मांड के कल्याण के स्रोत में बदलने की क्षमता को दर्शाता है। यह "सौंदर्य" केवल सौंदर्यपरक नहीं बल्कि गहरा आध्यात्मिक और मुक्तिदायक है।

ब्रह्मांड के स्वामी (दार्शनिक व्याख्या) शैव सिद्धांत और अन्य शैव परंपराओं में, श्रीकण्ठ को शिव के एक पारलौकिक रूप के रूप में भी समझा जाता है जो शुद्ध-विद्या से पृथ्वी तक के तत्वों (अस्तित्व के सिद्धांतों) पर शासन करते हैं। इस संदर्भ में, श्रीकण्ठ केवल एक वर्णनात्मक विशेषण नहीं है, बल्कि शिव के एक विशिष्ट दिव्य सिद्धांत या एक विशेष अभिव्यक्ति को संदर्भित कर सकता है, जो अक्सर ब्रह्मांडीय सृजन, पालन और विघटन की प्रक्रिया से जुड़ा होता है। उनका गला शुद्ध पारलौकिक लोकों और प्रकट ब्रह्मांड के बीच एक प्रतीकात्मक सेतु बन जाता है, जिसमें सृजन का सार और परम मुक्ति निहित है।

इस प्रकार, श्रीकण्ठ दिव्य की राजसी सुंदरता और गहन करुणामय बलिदान दोनों को समाहित करते हैं, जिससे वे सभी प्राणियों के रक्षक और उपकारक बन जाते हैं।

750. सूर्यतापनाय

जो सूर्य की प्रचण्ड ऊष्मा स्वरूप हैं, जो सभी अशुद्धियों को जला देते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : सूर्यातपन (सूर्यातपनाय) नाम संस्कृत के शब्दों सूर्य (सूरज) और तापन (झुलसाने वाला, गर्म करने वाला, जलाने वाला, कष्ट देने वाला) का एक यौगिक है।

सौर शक्ति का अवतार यह नाम सीधे कालभैरव को सूर्य की विशाल शक्ति, ऊष्मा और चमक से जोड़ता है। सूर्य केवल एक खगोलीय पिंड नहीं है, बल्कि अपने आप में एक शक्तिशाली देवता है, जो प्रकाश, जीवन और ऊर्जा का दाता है। सूर्यातपन के रूप में, कालभैरव सभी महत्वपूर्ण ऊर्जा और प्रकाश के अंतिम स्रोत, ब्रह्मांडीय बुद्धि का प्रतीक हैं जो अस्तित्व को प्रकाशित और बनाए रखती है।

शुद्धि की प्रखर ऊष्मा "प्रखर ऊष्मा" (तापन) पहलू अत्यधिक महत्वपूर्ण है। आध्यात्मिक संदर्भ में, तीव्र ऊष्मा (तपस) सीधे तपस्या, प्रायश्चित और आत्म-शुद्धि से जुड़ी है। जैसे सूर्य की झुलसाने वाली किरणें अशुद्धियों को सुखा सकती हैं, कीटाणुरहित कर सकती हैं और कचरे को जला सकती हैं, वैसे ही कालभैरव, सूर्यातपन के रूप में, उस दिव्य ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करते हैं जो अज्ञान (अविद्या), कर्मिक अशुद्धियों, पापों और सभी नकारात्मकताओं को जला देती है जो आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डालती हैं। इस तीव्र ऊष्मा का उद्देश्य जीवन को नष्ट करना नहीं है, बल्कि इसे रूपांतरित और शुद्ध करना है। वह वह जलती हुई अग्नि हैं जो अहंकार और भ्रम के मैल को भस्म कर देती है, जिससे स्वयं का शुद्ध सार पीछे रह जाता है।

प्रकाश और ज्ञान के स्वामी जैसे सूर्य अंधकार को दूर करता है, वैसे ही कालभैरव, इस रूप में, अज्ञान के अंधकार को दूर करने वाले हैं। उनका प्रकाश परम ज्ञान (ज्ञान) और आध्यात्मिक समझ लाता है, जिससे भक्त वास्तविकता को वैसे ही देख पाता है जैसे वह वास्तव में है, भ्रम से अछूता। झुलसाने वाली प्रकृति को कभी-कभी बोध की तीव्र, कभी-कभी दर्दनाक प्रक्रिया के रूप में भी व्याख्या किया जा सकता है जो मौजूदा विश्वासों और धारणाओं को चुनौती देती है जब तक कि सत्य चमक न जाए।

बाधाओं का संहारक यह नाम उनकी भयंकर शक्ति को भी दर्शाता है कि वे उन बाधाओं (विघ्नों) और शत्रुओं को "कष्ट दें" या "जला दें", आंतरिक और बाहरी दोनों, जो भक्त को मोक्ष प्राप्त करने से रोकते हैं। उनकी प्रज्वलित आभा उनके भक्तों के लिए एक अभेद्य ढाल बनाती है, जबकि उनके मार्ग में आने वाली सभी दुर्भावनापूर्ण शक्तियों को भस्म कर देती है।

751. ईशानानिलयाय

जिनका ईशान कोण पवित्र निवास स्थान है, उनको नमन।

विस्तार : ईशाननिलयाय (ईशान-निलय) नाम ईशान और निलय का एक यौगिक है।

ईशान: उत्तर-पूर्व दिशा से संबंधित ईशान आठ मुख्य और उप-दिशाओं में से एक है, विशेष रूप से उत्तर-पूर्व। हिंदू धर्म में प्रत्येक दिशा एक विशिष्ट देवता या ऊर्जा से जुड़ी है। ईशान उत्तर-पूर्व दिशा के अधिष्ठाता देवता हैं और शिव के पांच प्राथमिक पहलुओं (पंचानन) में से एक माने जाते हैं (सद्योजात, वामदेव, अघोर, तत्पुरुष और ईशान)। ईशान शिव के उस पहलू का प्रतिनिधित्व करते हैं जो कृपा और आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करता है। यह दिशा अत्यंत शुभ मानी जाती है, जिसे दिव्य ऊर्जा, ज्ञान और आध्यात्मिक विकास का स्रोत माना जाता है, जिससे यह वास्तु शास्त्र में सबसे पवित्र दिशा बन जाती है।

निलय: निवास, आवास, घर निलय रहने के स्थान या निवास को दर्शाता है। यह एक भौतिक स्थान या होने की आध्यात्मिक स्थिति को संदर्भित कर सकता है।

ईशान का पवित्र निवास इन दोनों को मिलाकर, ईशाननिलय उस एक को संदर्भित करता है जिसका पवित्र निवास उत्तर-पूर्व दिशा है। यह कई गहन आध्यात्मिक अर्थों को दर्शाता है:

1. शुभता और पवित्रता: उत्तर-पूर्व को सबसे शुभ और पवित्र दिशा माना जाता है, जो उगते सूरज की पहली किरणों को प्राप्त करती है और आध्यात्मिक जागरण और ज्ञान से जुड़ी है। इस दिशा में अपना निवास होने से, कालभैरव, ईशान के रूप में, इन गुणों का प्रतीक हैं और उन पर शासन करते हैं। वह स्पष्टता, ज्ञान और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के स्वामी हैं।

2. कृपा और ज्ञान के दाता: ईशान के रूप में, वह शिव का वह रूप हैं जो मुक्ति (मोक्ष) और आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करते हैं। इस दिशा में उनकी उपस्थिति का अर्थ है कि उन पर ध्यान करने या स्वयं को इस दिशा के साथ संरेखित करने से गहन आध्यात्मिक लाभ हो सकते हैं, जिसमें

अज्ञानता का उन्मूलन और दिव्य कृपा का bestowal शामिल है।

3. उत्कृष्टता और विघटन: जबकि भैरव को अक्सर श्मशान घाट (श्मशान) से जोड़ा जाता है, जो विघटन में उनकी भूमिका पर जोर देता है, ईशान कोण से उनका संबंध एक उच्च आध्यात्मिक आयाम पर प्रकाश डालता है। यह इंगित करता है कि उनके भयानक पहलू अंततः शांति और आध्यात्मिक विकास की एक उत्कृष्ट स्थिति की ओर ले जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे शिव का ईशान पहलू सभी दुखों के अंत और परम आनंद की शुरुआत का प्रतिनिधित्व करता है। उत्तर-पूर्व कोण को वास्तु पुरुष (एक भवन लेआउट में सन्निहित ब्रह्मांडीय पुरुष) का "सिर" माना जाता है और यह आध्यात्मिक प्रथाओं के लिए सबसे ऊर्जावान बिंदु है।

संक्षेप में, ईशाननिलयाय कालभैरव की भूमिका को आध्यात्मिक शुभता, ज्ञान और मुक्ति के दिव्य स्वामी के रूप में रेखांकित करता है, जो सबसे पवित्र दिशा में निवास करते हैं, भक्तों को परम वास्तविकता की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

752. स्वस्ति

सभी कल्याण, सौभाग्य, और शुभता के मूर्त स्वरूप को नमन।

विस्तार : स्वस्ति नाम संस्कृत शब्द स्वस्ति (Svasti) से लिया गया है, जो कल्याण, शांति, समृद्धि और शुभता को समाहित करने वाली एक गहन अवधारणा है। इसका उपयोग अक्सर आशीर्वाद या शुभकामना के रूप में किया जाता है।

व्युत्पत्ति और अर्थ स्वस्ति शब्द निम्नलिखित से मिलकर बना है: • सु (Su): जिसका अर्थ है "अच्छा," "भला," या "सही।" • अस्ति (Asti): जिसका अर्थ है "है," जो अस्तित्व या होने का संकेत देता है।

इस प्रकार, स्वस्ति का शाब्दिक अर्थ है "यह अच्छा है," "अच्छा अस्तित्व," या "कल्याण।" जब इसे कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह दर्शाता है कि वे सभी शुभ, लाभकारी और परम कल्याण की ओर ले जाने वाली हर चीज के साक्षात स्वरूप और स्रोत हैं।

कल्याण का प्रतीक स्वस्ति के रूप में, भगवान कालभैरव केवल कल्याण के दाता नहीं हैं, बल्कि वे स्वयं कल्याण हैं। इसका अर्थ है कि उनका स्वरूप और उपस्थिति शांति (śānti), समृद्धि (samṛddhi), स्वास्थ्य (ārogya), और दुख से मुक्ति (duḥkha-nivāraṇa) की एक सर्वव्यापी स्थिति को प्रसारित करती है। ऐसा माना जाता है कि उनकी भक्ति भक्त को इस अंतर्निहित अच्छाई की स्थिति के साथ संरेखित करती है, जिससे भौतिक और आध्यात्मिक दोनों तरह की समृद्धि आती है।

सौभाग्य और शुभता का स्रोत स्वस्ति का अर्थ सौभाग्य, समृद्धि और शुभता भी है। इस पहलू में, कालभैरव उन बाधाओं (vighna-nivāraṇa) को दूर करते हैं जो प्रगति में बाधा डालती हैं और अनुकूल परिस्थितियाँ लाते हैं। उनका उग्र रूप, जिसे अक्सर एक सुरक्षात्मक शक्ति के रूप में देखा जाता है, नकारात्मक प्रभावों को दूर करता है और उन लोगों के लिए एक सुगम, शुभ मार्ग सुनिश्चित करता है जो उनकी कृपा चाहते हैं। वे सकारात्मक ऊर्जा और परिणाम लाते हैं, जिससे वे सभी अच्छी शुरुआत और सफल प्रयासों का अंतिम स्रोत बन जाते हैं।

परम ब्रह्मांडीय सामंजस्य दार्शनिक रूप से, स्वस्ति ब्रह्मांड के अंतर्निहित क्रम और सामंजस्य का प्रतिनिधित्व करता है, जिसे अंततः दिव्य द्वारा शासित और बनाए रखा जाता है। जब कालभैरव को स्वस्ति के रूप में आह्वान किया जाता है, तो यह इस ब्रह्मांडीय संतुलन को बनाए रखने में उनकी भूमिका और बाधित होने पर इसे बहाल करने की उनकी क्षमता की स्वीकृति है, जिससे सभी प्राणियों और ब्रह्मांड के कल्याण (hita) को सुनिश्चित किया जा सके।

753. सामवेदस्वरूपविदे

सामवेद के सच्चे स्वरूप और रूप को जानने वाले को नमन।

विस्तार : सामवेदस्वरूपविदे नाम भगवान शिव की पवित्र वेदों, विशेष रूप से सामवेद पर महारत के लिए एक गहरा और बहुस्तरीय श्रद्धांजलि है। इसमें "सामवेद," "स्वरूप," और "विदे" शामिल हैं।

सामवेद: धुनों का वेद सामवेद चार प्रमुख वेदों में से एक है, जो अपनी मधुर और संगीतमय गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध है। इसमें मुख्य रूप से भजन, या "सामन" होते हैं, जो अधिकतर ऋग्वेद से लिए गए हैं, और जिन्हें वैदिक यज्ञों और अनुष्ठानों के दौरान संगीतमय विधाओं (रागों) में गाया जाता है। सामवेद का गायन विशेष रूप से शक्तिशाली माना जाता है और यह दिव्य ऊर्जाओं को आह्वान करने तथा विशिष्ट आध्यात्मिक लाभ उत्पन्न करने में सक्षम है। यह कंपन के रूप में ध्वनि का, मधुर आह्वान का, और अनुष्ठान के सौंदर्यपरक आयाम का वेद है।

स्वरूप: सच्चा स्वरूप और प्रकृति "स्वरूप" किसी वस्तु के आवश्यक, अंतर्निहित, या सच्चे स्वरूप और प्रकृति को संदर्भित करता है। यह केवल उसकी बाहरी उपस्थिति नहीं है, बल्कि उसका सार, उसकी आंतरिक वास्तविकता और उसकी मौलिक संरचना है। आध्यात्मिक संदर्भ में, किसी वस्तु के "स्वरूप" को जानने का अर्थ है उसके दिव्य मूल, उसके उद्देश्य और उसकी सूक्ष्म कार्यप्रणाली को समझना।

विदे: वह जो जानता है "विदे" मूल "विद्" से आया है, जिसका अर्थ है "जानना," "समझना," या "अनुभव करना।"

भगवान शिव वैदिक ज्ञान के अवतार के रूप में इस प्रकार, "सामवेदस्वरूपविदे" भगवान कालभैरव (शिव का एक उग्र पहलू) को सामवेद के परम ज्ञाता, पूर्ण अवतार और स्वयं सार के रूप में दर्शाता है। यह समझ सामवेदिक भजनों के केवल पाठ या अकादमिक ज्ञान से परे है। इसका तात्पर्य है:

• ब्रह्मांडीय ध्वनि पर महारत: शिव, इस रूप में, ब्रह्मांड को बनाने वाले मौलिक कंपनों और ब्रह्मांडीय धुनों को समझते हैं, जिन्हें सामवेद समाहित करता है। वह जानते हैं कि ये ध्वनियाँ कैसे प्रकट हो सकती हैं, रूपांतरित हो सकती हैं और सृष्टि को विलीन कर सकती हैं।

• मधुर शक्ति का स्रोत: वह सामवेद की शक्ति का स्रोत और पोषक हैं। इसकी अंतर्निहित ऊर्जा और आध्यात्मिक प्रभावकारिता उनके ब्रह्मांडीय अस्तित्व से प्राप्त होती है।

• सौंदर्यपरक और ध्यानपूर्ण गुणवत्ता: सामवेद ध्यान और ध्वनि के माध्यम से दिव्य सौंदर्य के अनुभव से गहराई से जुड़ा हुआ है। शिव, सामवेदस्वरूपविदे के रूप में, इस गहन ध्यानपूर्ण सौंदर्य और दिव्य ध्वनि-दृश्यों की परिवर्तनकारी शक्ति का प्रतीक हैं।

• एकीकृत सिद्धांत: जिस तरह सामवेद ऋग्वेद से भजन लेता है और उन्हें संगीतबद्ध रूप से पुनर्व्याख्या करता है, उसी तरह शिव वह एकीकृत सिद्धांत हैं जो वास्तविकता के विविध पहलुओं को एक सामंजस्यपूर्ण आध्यात्मिक अनुभव में लाते हैं।

इस नाम से कालभैरव का आह्वान करके, भक्त उन्हें सामवेद में निहित पवित्र, कंपनशील ज्ञान के सर्वोच्च अधिकारी और अवतार के रूप में पहचानते हैं, जिसके माध्यम से आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और मुक्ति प्राप्त की जा सकती है।

754. मानिने

जो दैवीय अभिमान से परिपूर्ण हैं, तथा सभी द्वारा सम्मानित और पूजित हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : मानिने नाम, संस्कृत मूल 'मन्' (सोचना, सम्मान करना) से व्युत्पन्न है, जो कालभैरव को उस रूप में वर्णित करता है जो दिव्य गौरव से युक्त है, सम्मानित है और सभी द्वारा पूजित है।

दिव्य गौरव (मान) यहाँ मान का अर्थ मानवीय अर्थ में अहंकार नहीं है, बल्कि आत्म-जागरूकता, गरिमा और संप्रभुता की एक गहरी भावना है जो स्वाभाविक रूप से एक सर्वोच्च सत्ता से निकलती है। यह ब्रह्मांडीय शासक की अंतर्निहित महिमा और आत्म-विश्वास है जो अपनी असीम शक्ति, ज्ञान और सर्वव्यापकता से अवगत है। यह "गौरव" उसकी पूर्ण आत्म-निर्भरता और सभी सृष्टि पर उसके अकाट्य अधिकार का प्रतिबिंब है।

अत्यधिक सम्मानित और पूजित मानिने के रूप में, कालभैरव सार्वभौमिक सम्मान और श्रद्धा के प्राप्तकर्ता हैं। यह सम्मान केवल भय से नहीं दिया जाता, बल्कि उनकी परम वास्तविकता, समय और नियति के स्वामी के रूप में उनकी भूमिका, और मुक्ति प्रदान करने की उनकी क्षमता की पहचान के कारण दिया जाता है। देव (देवता), मनुष्य और यहाँ तक कि सबसे भयंकर आत्माएँ भी स्वाभाविक रूप से उनकी सर्वोच्च शक्ति और ज्ञान के सामने नतमस्तक होती हैं। वह परम सत्ता हैं जिनके निर्णय अंतिम हैं और जिनकी उपस्थिति विस्मय और आराधना को प्रेरित करती है।

अटूट अधिकार का प्रतीक यह नाम उनके अटूट अधिकार और उस गहरे सम्मान को रेखांकित करता है जिसकी वे आज्ञा देते हैं, जो अंतिम ब्रह्मांडीय न्यायाधीश और सांसारिक वरदानों और आध्यात्मिक मुक्ति दोनों के दाता के रूप में उनकी अकाट्य स्थिति का प्रतीक है। मानिने को नमन करना दिव्य के इस सर्वोच्च, राजसी और स्वाभाविक रूप से आत्म-अधिकार वाले पहलू को स्वीकार करना और उसके सामने झुकना है।

755. सुनीति

जो बुद्धिमत्तापूर्ण आचरण और उत्कृष्ट, धार्मिक मार्गदर्शन केM मूर्तरूप हैं, उनको नमन।

विस्तार : सुनीतये नाम संस्कृत शब्द सुनीत (सुनीतः) से लिया गया है, जो उपसर्ग सु (सु) और मूल नीत (नीतः) का एक यौगिक है।

उत्कृष्ट और सदाचारी (सु) उपसर्ग सु (सु) उत्कृष्टता, अच्छाई, धार्मिकता, सहजता और शुभता को दर्शाता है। जब इसे किसी शब्द के साथ जोड़ा जाता है, तो यह उस शब्द के सकारात्मक गुणों को बढ़ाता है।

संचालित, निर्देशित, नेतृत्व किया गया (नीत) नीत (नीतः) क्रिया मूल नी (नी) का भूतकालिक कृदंत है, जिसका अर्थ है "नेतृत्व करना, मार्गदर्शन करना, संचालित करना, ले जाना या निर्देशित करना।" इसका तात्पर्य ऐसी चीज़ से है जो अच्छी तरह से संचालित, प्रबंधित या निर्देशित की गई हो। इस प्रकार, नीत आचरण, नीति या नेतृत्व में बुद्धिमत्ता को संदर्भित करता है।

बुद्धिमान आचरण का प्रतीक एक साथ, सुनीत का अर्थ है "अच्छी तरह से संचालित," "कुशलता से नेतृत्व किया गया," "नीति में बुद्धिमान," "व्यवहार में धार्मिक," या "उत्कृष्ट नैतिक आचरण" रखने वाला। इसलिए, सुनीतये उस दिव्य सत्ता को संदर्भित करता है जो बुद्धिमान और धार्मिक आचरण के उच्चतम मानकों का प्रतीक और उदाहरण है। भगवान कालभैरव, इस पहलू में, आध्यात्मिक और नैतिक नेतृत्व के अंतिम आदर्श का प्रतिनिधित्व करते हैं।

धार्मिक मार्गदर्शन के प्रदाता यह नाम इंगित करता है कि वे ब्रह्मांड और व्यक्तिगत आत्माओं दोनों के लिए सभी उत्कृष्ट और धार्मिक मार्गदर्शन का स्रोत हैं। वे ब्रह्मांडीय धर्म को पूरी तरह से बनाए रखते हैं और जीवित प्राणियों को सद्गुण, ज्ञान और उचित कार्य के मार्ग का अनुसरण करने के लिए प्रेरित करते हैं। वे उन लोगों का मार्गदर्शन करते हैं जो खो गए हैं और उन्हें धर्म के मार्ग पर वापस लाते हैं, उन्हें मुक्ति की ओर ले जाते हैं।

दिव्य नियम और व्यवस्था सुनीत के रूप में, कालभैरव दिव्य नियम और व्यवस्था के अटूट सिद्धांतों को दर्शाते हैं। वे ब्रह्मांडीय निर्देशक हैं, यह सुनिश्चित करते हैं कि सभी कार्य, प्राकृतिक प्रक्रियाएं और कर्मिक परिणाम पूर्ण न्याय और ज्ञान के साथ लागू हों।

756. शुद्धात्मने

पूर्णतः शुद्ध, निर्मल और निष्कलंक आत्मा वाले को नमन।

विस्तार : शुद्धात्मा (Śuddhātman) नाम संस्कृत के शब्द 'शुद्ध' और 'आत्मन' का एक यौगिक है।

शुद्ध (पवित्र, स्वच्छ, निष्कलंक, निर्मल) "शुद्ध" का अर्थ है पूर्ण पवित्रता, किसी भी दोष, अपूर्णता या द्वैतवादी संदूषण से अछूता रहना जो घटनात्मक दुनिया को प्रभावित करते हैं। इसका तात्पर्य है कि यह तीनों गुणों (सत्व, रजस, तमस) से उनके सांसारिक अभिव्यक्तियों में मुक्त है, कर्म, माया (भ्रम), और क्लेशों (अज्ञानता, अहंकार, आसक्ति, घृणा और मृत्यु के भय जैसे कष्टों) से मुक्त है।

आत्मन (आत्मा, स्व, चेतना) "आत्मन" मूल स्व को संदर्भित करता है, शाश्वत, अपरिवर्तनीय सार जो एक व्यक्ति की सच्ची पहचान है और, एक ब्रह्मांडीय अर्थ में, ब्रह्मांड का स्व है।

पूर्णतः शुद्ध स्व जब संयुक्त किया जाता है, तो शुद्धात्मा उस एक को संदर्भित करता है जिसकी आत्मा या स्व पूर्णतः शुद्ध, निष्कलंक और निर्मल है। यह अवधारणा शिव की परम श्रेष्ठता और उनकी आंतरिक प्रकृति को शुद्ध आध्यात्मिक वास्तविकता के रूप में रेखांकित करती है। शरीरधारी प्राणियों के विपरीत जिनकी आत्माएं कर्म और माया से वातानुकूलित प्रतीत होती हैं, शिव का आत्मन शाश्वत रूप से मुक्त और निर्मल है।

सभी दोषों से परे यह नाम इस बात पर जोर देता है कि भगवान शिव, अपने भैरव रूप में या अन्यथा, सभी अपूर्णताओं से परे हैं। वह जन्म और मृत्यु के चक्रों के अधीन नहीं हैं, न ही वह भौतिक संसार की अशुद्धियों से प्रभावित होते हैं। उनका सार शुद्ध चेतना है, जो किसी भी बाहरी या आंतरिक कारक से अछूता है। यह पवित्रता केवल अशुद्धता की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि पूर्ण, बेदाग आध्यात्मिक सार की एक सक्रिय स्थिति है।

भक्तों के लिए पवित्रता का आदर्श भक्तों के लिए, शिव को शुद्धात्मा के रूप में चिंतन करना उन्हें अपने आंतरिक स्व को शुद्ध करने के लिए प्रेरित करता है। यह बताता है कि मुक्ति (मोक्ष) में अपने स्वयं के सच्चे स्वरूप को मौलिक रूप से शुद्ध और दिव्य के समान, शिव के समान ही महसूस करना शामिल है। यह एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है कि आध्यात्मिक ज्ञान का मार्ग आंतरिक शुद्धि और सभी मानसिक और आध्यात्मिक दोषों को दूर करने का है।

757. सोमाय

जो चंद्रमा के पवित्र अमृत (सोम) स्वरूप हैं, अथवा जो उमा (स-उमा) के साथ सदैव रहते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : सोमाय नाम के गहरे दोहरे अर्थ हैं, जो भगवान शिव के बहुआयामी स्वरूप को दर्शाते हैं, विशेष रूप से उनके भैरव रूप में।

सोम: पवित्र अमृत

सोम की प्राथमिक और शायद सबसे प्राचीन समझ एक दिव्य पौधे, उसके रस, या उससे तैयार किए गए मादक अनुष्ठानिक पेय के रूप में है, जिसे वैदिक परंपरा में मनाया जाता है। इस "सोम" की पहचान चंद्रमा और उसके अमृत, अमृत्त से की जाती है, जो अमरता प्रदान करता है।

1. अमरता का अमृत (अमृत): भगवान शिव, विशेष रूप से अपने करुणामय रूपों में, अमृत के दाता हैं, वह दिव्य अमृत जो अमरता, स्वास्थ्य और आध्यात्मिक कायाकल्प प्रदान करता है। कालभैरव के रूप में, वे मृत्यु और समय की सीमाओं को पार करने की शक्ति का प्रतीक हैं, जो आध्यात्मिक मुक्ति प्रदान करते हैं जो सच्ची अमरता का एक रूप है। 2. चंद्रमा (चंद्र): सोम चंद्रमा

देवता (चंद्र) का भी पर्याय है। शिव अपने जटाओं पर अर्धचंद्र (चंद्रशेखर) धारण करने के लिए प्रसिद्ध हैं। चंद्रमा शांति, शीतलता, मानसिक स्पष्टता और प्रकृति में पोषण के सिद्धांत का प्रतीक है। अपने भैरव रूप में, जबकि बाहरी रूप से भयंकर, वे आंतरिक रूप से परम शांति और अज्ञान के अंधकार में प्रकाश लाने की क्षमता का प्रतीक हैं। चंद्रमा मन का भी प्रतिनिधित्व करता है; इसे धारण करके, शिव मन और भावनाओं पर अपनी पूर्ण महारत का संकेत देते हैं। 3. अर्पण और बलिदान: सोम यज्ञ सबसे विस्तृत वैदिक अनुष्ठानों में से एक है। "सोमाय" होकर, भैरव सभी बलि के अर्पणों के अंतिम प्राप्तकर्ता और सार हैं, यह दर्शाता है कि भक्ति के सभी कार्य अंततः उन तक पहुँचते हैं और उनके द्वारा पोषित होते हैं।

स-उमा: उमा के साथ

"सोमाय" की दूसरी शक्तिशाली व्याख्या इसे "स" (के साथ) और "उमा" (देवी पार्वती) में विभाजित करती है। यह शिव-शक्ति के मिलन के एक गहरे पहलू को प्रकट करता है, यहां तक कि भयंकर भैरव रूप के भीतर भी।

1. दिव्य मिलन का प्रतीक: यह व्याख्या दर्शाती है कि शिव (भैरव सहित) उमा (पार्वती/शक्ति) के साथ शाश्वत रूप से एकजुट हैं। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि अपने सबसे दुर्जेय पहलुओं में भी, शिव अपनी दिव्य संगिनी, रचनात्मक और पोषण करने वाली स्त्री ऊर्जा से कभी अलग नहीं होते हैं। भयंकर मर्दाना सिद्धांत (शिव/भैरव) हमेशा शांत और पोषण करने वाले स्त्री सिद्धांत (उमा/शक्ति) द्वारा संतुलित होता है। यह मिलन अस्तित्व की अद्वैतता का प्रतिनिधित्व करता है - चेतना (शिव) और ऊर्जा (शक्ति) एक हैं। 2. पूर्णता और समग्रता: "उमा के साथ" होने का अर्थ है कि वे पूर्ण और समग्र हैं। उमा उनकी शक्ति (शक्ति), उनकी कृपा और उनकी स्वयं की अभिव्यक्ति हैं। कालभैरव के ब्रह्मांडीय कार्यों को संचालित करने वाली ऊर्जा, सृष्टि से लेकर विघटन तक, स्वाभाविक रूप से उनकी शक्ति का प्रतिरूप है। 3. भयंकरता के भीतर परोपकारी पहलू: उमा की उपस्थिति भयंकर पहलू को नरम और पूर्ण करती है। यह भक्तों को आश्वस्त करता है कि यहां तक कि भयानक भैरव रूप में भी अपार करुणा और दिव्य माँ की पोषण ऊर्जा समाहित है।

इस प्रकार, "सोमाय" कालभैरव की दिव्य कृपा और मुक्ति के दाता के रूप में भूमिका, चंद्रमा द्वारा उदाहरणित मन और ब्रह्मांडीय शक्तियों पर उनका प्रभुत्व, और दिव्य माँ, उमा के साथ उनका शाश्वत, अविभाज्य मिलन को समाहित करता है।

758. सोमताराय

जो चंद्रमा से भिन्न हैं, या मन से परे सर्वोच्च वास्तविकता हैं, उनको नमन।

विस्तार : सोमतरयाय नाम एक गहरा और बहुस्तरीय शब्द है जो एक साधारण समझ से परे है और एक गहरे दार्शनिक सत्य की ओर इशारा करता है। यह सोम, तारा का एक यौगिक है, और अंततः परम सत्य को संदर्भित करता है।

चंद्रमा के प्रभाव से परे (सोम चंद्रमा के रूप में) "सोम" अक्सर संस्कृत में चंद्रमा (चंद्र) को संदर्भित करता है। चंद्रमा मन (मानस), भावनाओं, भ्रम (माया) और भौतिक संसार की क्षणभंगुर प्रकृति से जुड़ा है। "सोम से भिन्न" (अ-सोम-तारा) होने का अर्थ एक ऐसी स्थिति है जो चंद्र प्रभाव से परे है। इसका अर्थ है: • मन से परे: वह मन के उतार-चढ़ाव, भावनात्मक ज्वार, या सांसारिक अनुभवों की क्षणभंगुर प्रकृति से प्रभावित नहीं होता है। वह साक्षी है, मूलभूत चेतना जो अपरिवर्तनीय है। • भ्रम से परे: यदि चंद्रमा माया (भ्रम) का प्रतिनिधित्व करता है, तो सोमतरयाय वह वास्तविकता है जो इसके परे है। वह सत्य है जो भौतिक क्षेत्र की द्वैतताओं और भ्रामक धारणाओं से अस्पष्ट नहीं है। • सृष्टि से परे: चंद्रमा स्त्री रचनात्मक ऊर्जा, सृष्टि के आदिम जल का भी प्रतीक है। शिव, इस पहलू में, ब्रह्मांड की जनन शक्तियों से भी परे हैं, जो अप्रकट, परम स्रोत के रूप में विद्यमान हैं।

परम सत्य (सोम अमृत/शिव के रूप में) "सोम" दिव्य अमृत, अमरता के अमृत को भी संदर्भित करता है, और कभी-कभी शिव के लिए एक सम्मानजनक विशेषण के रूप में भी प्रयोग किया जाता है (सोमेश्वर - सोम के भगवान)। इस संदर्भ में, "तारा" का अर्थ "तारा," "पार करना," या "उद्धारकर्ता" हो सकता है। • मार्गदर्शक तारा/उद्धारकर्ता: यदि सोम को दिव्य सार के रूप में देखा जाता है, तो "सोमतरयाय" का अर्थ वह हो सकता है जो इस दिव्य सार का 'तारा' या प्रकाशस्तंभ है, या वह 'उद्धारकर्ता' जो किसी को संसार के सागर को पार करके इस दिव्य स्थिति तक ले जाता है। • सबसे उत्कृष्ट सोम: "तारा" का अर्थ "सबसे उत्कृष्ट" या "सर्वोच्च" भी हो सकता है। इस प्रकार, सोमतरयाय का अर्थ "सर्वोच्च सोम," परम आनंद, परमानंद और अमर सार हो सकता है।

अतींद्रिय चेतना अंततः, यह नाम कालभैरव को परम, अतींद्रिय चेतना के एक प्रकटीकरण के रूप में इंगित करता है। वह परम सत्य है, भौतिक संसार, मानव मन और यहां तक कि समय और स्थान के भ्रम के भीतर संचालित होने वाली ब्रह्मांडीय शक्तियों की सीमाओं से परे है। वह अपरिवर्तनीय, शाश्वत साक्षी है।

759. सुखिने

जो शाश्वत रूप से सुखी, आनंदमय और हर्ष से परिपूर्ण हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : सुखिने (Sukhine) नाम संस्कृत शब्द सुख (Sukha) से लिया गया है, जिसका अर्थ है खुशी, आनंद, परमानंद, सहजता, आराम या प्रसन्नता। जब इसे कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह खुशी की सतही समझ से परे एक गहन आध्यात्मिक सत्य को व्यक्त करता है।

शाश्वत आनंद (आनंद स्वरूप) कालभैरव, अपने परम सार में, शुद्ध चेतना और आनंद (सत्-चित्-आनंद) के अवतार हैं। वे केवल अस्थायी खुशी का अनुभव नहीं कर रहे हैं, बल्कि अपने सबसे गहन, शाश्वत और बिना शर्त रूप में स्वयं खुशी हैं। यह ब्रह्म का अंतर्निहित आनंद है, जो सुख और दुख के द्वंद्व से मुक्त है, जो घटनात्मक दुनिया की विशेषताएँ हैं। उनकी "खुशी" पूर्ण आत्म-संतोष और आत्म-निर्भरता की स्थिति है, जो परम सत्ता की एक विशेषता है।

द्वंद्व से परे कालभैरव का सुख खुशी की उस सांसारिक समझ से परे है जो बाहरी कारकों या इच्छाओं की पूर्ति पर निर्भर करती है। उनका आनंद आंतरिक, अकारण और किसी भी सांसारिक घटना से अविचलित है, जिसमें उनके विनाश या दंड के भयानक कार्य भी शामिल हैं। यह बताता है कि उनके सबसे भयानक अभिव्यक्तियों में भी, पूर्ण संतुलन और आनंद की एक अंतर्निहित स्थिति है।

सभी आनंद का स्रोत परम भगवान के रूप में, वे ब्रह्मांड में प्राणियों द्वारा अनुभव किए जाने वाले सभी सुख के स्रोत भी हैं। जो भक्त उनसे जुड़ते हैं, वे आंतरिक शांति और आनंद के इस भंडार में टैप कर सकते हैं, यह महसूस करते हुए कि सच्ची खुशी बाहरी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि भीतर के दिव्य को पहचानने में निहित है।

खुशी के दाता कालभैरव की सुखिने के रूप में पूजा करने का अर्थ है उन्हें अपने भक्तों को खुशी प्रदान करने वाले के रूप में स्वीकार करना। बाधाओं, भय और अज्ञान (अविद्या) को दूर करके, वे भक्त के लिए सच्ची, स्थायी खुशी का अनुभव करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं, जो शुद्ध मन की स्वाभाविक स्थिति है।

760. सदाशिवाय

जो शाश्वत रूप से शुभ, परोपकारी और कृपालु हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : सदाशिवाय नाम एक गहरा और अत्यंत पूजनीय पद है जो दो शक्तिशाली संस्कृत शब्दों: सदा और शिव का मेल है।

सदा: शाश्वत रूप से, हमेशा "सदा" निरंतरता, शाश्वतता और अटूट अस्तित्व को दर्शाता है। यह एक ऐसी स्थिति को इंगित करता है जो कालातीत, शाश्वत और कभी न समाप्त होने वाली है। जब इसे देवत्व के साथ जोड़ा जाता है, तो यह एक ऐसे गुण पर जोर देता है जो अंतर्निहित और स्थिर है, न कि क्षणभंगुर या सामयिक।

शिव: शुभ, परोपकारी, कृपालु; परम सत्य "शिव" शब्द के अर्थ की कई परतें हैं: 1. शुभता और परोपकारिता: अपने सबसे बुनियादी रूप में, शिव का अर्थ "शुभ," "मंगलमय," "कृपालु," "दयालु," और "परोपकारी" है। यह अंतर्निहित ब्रह्मांडीय व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करता है जो अंततः अच्छी है और अस्तित्व का समर्थन करती है, भले ही स्पष्ट अराजकता या विनाश के बीच भी। 2. परम वास्तविकता: शैव धर्म में, शिव को परम सत्ता, सभी गुणों और रूपों से परे पूर्ण वास्तविकता (परब्रह्म) माना जाता है। वह ब्रह्मांड के स्रोत, पालक और विलायक हैं, जिसमें सृजन, संरक्षण और विघटन शामिल है। 3. शुद्धि और अतिक्रमण: `शी` धातु जिससे शिव व्युत्पन्न हुआ है, का अर्थ "लेटना" या "आराम करना" भी हो सकता है, जो चेतना की उस स्थिति को दर्शाता है जो असीमित है और सभी भौतिक अस्तित्व से परे है। यह "साफ करना" या "शुद्ध करना" से भी संबंधित है, जो एक ऐसी शक्ति का सुझाव देता है जो शुद्ध करती है और मुक्त करती है।

शाश्वत रूप से शुभ और परोपकारी एक साथ, सदाशिव उस एक को दर्शाता है जो 'शाश्वत रूप से शुभ' और 'निरंतर परोपकारी' है। इसका अर्थ है कि इस दिव्य सत्ता का आंतरिक स्वभाव शुद्ध अच्छाई, कृपा और परम कल्याण है, जिसका कोई आदि या अंत नहीं है।

• अपरिवर्तनीय अच्छाई: ब्रह्मांडीय चक्रों (सृजन, संरक्षण, विनाश) की स्पष्ट कठोरता के बावजूद, सदाशिव उस अटूट आध्यात्मिक सत्य का प्रतीक है कि परम वास्तविकता मौलिक रूप से परोपकारी है। इस दृष्टिकोण से परिवर्तनकारी विनाश (जैसे रुद्र/भैरव का) भी नवीनीकरण और शुद्धि के लिए एक परोपकारी कार्य के रूप में देखा जाता है। • शिव का पाँचवाँ मुख: कुछ मूर्तिकला और दर्शनशास्त्र में, सदाशिव को शिव के पाँचवें, ऊपर की ओर देखने वाले मुख (ईशान) के रूप में दर्शाया गया है, जो उनके परम, पारलौकिक और शुभ पहलू का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें सभी दिशाएँ शामिल हैं और जो समय और स्थान से परे है। यह मुख उनकी कृपा, आशीर्वाद और सर्वोच्च आध्यात्मिक सत्य का प्रतीक है। • परम सिद्धांत: सदाशिव के रूप में, वह परम सिद्धांत, आदिम कारण और अंतिम लक्ष्य हैं। वह आनंद, ज्ञान और शुद्ध चेतना का सार हैं जो सभी अस्तित्व में व्याप्त है। यह नाम उनकी भूमिका पर न केवल एक संहारक के रूप में, बल्कि कृपा और मुक्ति के सर्वोच्च दाता के रूप में जोर देता है।

सदाशिव को नमन करना सर्वोच्च दिव्य की सर्वव्यापी, शाश्वत और अपरिवर्तनीय शुभता और कृपा को स्वीकार करना है, भले ही वे रूप भयावह या उग्र क्यों न लगें। यह वास्तविकता के सभी अभिव्यक्तियों के अंतर्निहित परम परोपकार की पहचान है।

761. समावृत्ताय

जो सुडौल, पूर्ण और संतुलित जीवन जीते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : समावृत्त (समावृत्तः) नाम संस्कृत मूल "सम्" (पूरी तरह से, पूर्णतः, अच्छी तरह से) और "वृत्त" (गोलाकार, मुड़ा हुआ, वृत्त, पूर्ण, संचालित, व्यवहार किया गया) से लिया गया है।

सुव्यवस्थित और पूर्ण एक ब्रह्मांडीय अर्थ में, समावृत्त उस एक को संदर्भित करता है जो पूरी तरह से सुव्यवस्थित, पूर्ण और अस्तित्व के सभी पहलुओं को समाहित करने वाला है। कालभैरव, परम वास्तविकता के रूप में, आंशिक या अपूर्ण नहीं हैं; वे सभी द्वैत और अद्वैत, सभी आरंभ और अंत,

सभी सृजन और विनाश को समाहित करते हैं। उनका स्वरूप और अस्तित्व पूर्ण और परिपूर्ण है, जो ब्रह्मांड की समग्रता का प्रतिनिधित्व करता है। यह पूर्णता उनके पूर्ण ज्ञान, शक्ति और उपस्थिति को दर्शाती है।

संतुलित जीवन और आचरण अधिक नैतिक और दार्शनिक स्तर पर, समावृत्त का अर्थ "वह जो संतुलित जीवन जीता है" या "वह जो अच्छी तरह से आचरण करता है" भी है। यह धर्म और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के उनके अवतार को दर्शाता है। अपनी भयंकर उपस्थिति और विनाशकारी क्षमता के बावजूद, कालभैरव ब्रह्मांड के सटीक नियमों के भीतर कार्य करते हैं, संतुलन बनाए रखते हैं। उनके कार्य हमेशा परम दिव्य इच्छा और ब्रह्मांडीय संतुलन के अनुरूप होते हैं। भक्तों के लिए, यह नाम संयम, अनुशासन और धार्मिक आचरण के जीवन को प्रेरित करता है, जो दिव्य संतुलन का अनुकरण करने की कोशिश करते हैं।

उत्तम चक्र "वृत्त" शब्द एक वृत्त या चक्र से भी संबंधित है। इस संदर्भ में, समावृत्त सृजन, संरक्षण और विघटन की उत्तम चक्रीय प्रकृति को इंगित कर सकता है, जिस पर कालभैरव शासन करते हैं। वे इन चक्रों के स्वामी हैं, जो उनके पूर्ण और अटूट निरंतरता को सुनिश्चित करते हैं, इस प्रकार ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखते हैं।

762. सुक्रीतये

महान, श्रेष्ठ और शुभ कीर्तिमान वाले (भैरव) को नमन।

विस्तार : सुकीर्तये नाम संस्कृत के पदों 'सु' और 'कीर्ति' से लिया गया है।

• सु (Su): यह उपसर्ग शुभता, अच्छाई, उत्कृष्टता या पूर्णता को दर्शाता है। यह बाद वाले पद को सकारात्मक गुणवत्ता के उच्च स्तर तक बढ़ाता है।

• कीर्ति (Kīrti): इसका अर्थ है प्रसिद्धि, ख्याति, महिमा, प्रतिष्ठा या प्रशंसा। यह प्रशंसित और अच्छी तरह से सराहे जाने का प्रतीक है।

इसलिए, सुकीर्तये उस एक को संदर्भित करता है जो "महान प्रसिद्धि," "शुभ महिमा," या "उत्कृष्ट ख्याति" का धनी है।

शुभ और श्रेष्ठ प्रसिद्धि (Auspicious and Noble Fame) यह विशेषण इस बात पर जोर देता है कि शिव, अपने कालभैरव रूप में, न केवल प्रसिद्ध हैं बल्कि उनकी प्रसिद्धि स्वाभाविक रूप से अच्छी, श्रेष्ठ और लाभकारी है। सांसारिक प्रसिद्धि के विपरीत जो क्षणभंगुर या कलंकित हो सकती है, कालभैरव की ख्याति उनके दिव्य कार्यों में निहित है: धर्म की रक्षा, बुराई का विनाश, और अपने भक्तों को मुक्ति प्रदान करना। उनकी महान प्रसिद्धि ब्रह्मांड पर उनके परोपकारी और न्यायपूर्ण शासन का प्रमाण है, भले ही उनके भयानक पहलू हों।

सभी द्वारा महिमामंडित (Glorified by All) उन्हें सभी लोकों में - देवों (देवताओं), असुरों (राक्षसों, जब वे उनकी सर्वोच्चता को स्वीकार करते हैं), मनुष्यों और अन्य सभी प्राणियों द्वारा - सराहा और महिमामंडित किया जाता है। उनकी महिमा किसी विशिष्ट संप्रदाय या विश्वास प्रणाली तक सीमित नहीं है, बल्कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था और उसमें उनकी भूमिका को समझने वाले सभी लोगों द्वारा सार्वभौमिक रूप से स्वीकार की जाती है। यह प्रसिद्धि उनके द्वारा मांगी नहीं जाती है, बल्कि सर्वोच्च वास्तविकता के रूप में उनके आवश्यक स्वभाव के कारण स्वाभाविक रूप से प्राप्त होती है।

महिमा का प्रतीक (Embodiment of Glory) सुकीर्तये का अर्थ यह भी है कि कालभैरव स्वयं महिमा और ख्याति के प्रतीक हैं। उनका अस्तित्व ही एक गहन और शानदार आभा बिखेरता है जो श्रद्धा और भक्ति को प्रेरित करता है। सुकीर्तये को प्रणाम करना इस अंतर्निहित महानता और दिव्य

चमक को स्वीकार करना और उसका सम्मान करना है। यह सर्वोच्च देवता के रूप में उनकी निर्विवाद स्थिति की पुष्टि है जिनके कार्य हमेशा धर्मी होते हैं और जिनकी ख्याति शाश्वत रूप से शुद्ध और लाभकारी होती है।

763. छिन्नसंशयाय

जिनके सभी संशय और भ्रम पूरी तरह से सुलझ गए हैं और कट गए हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : नाम छिन्नसंशयाय (Chinnasaṁśayāya) पूर्ण स्पष्टता और मानसिक तथा आध्यात्मिक अनिश्चितताओं से मुक्ति की स्थिति का एक शक्तिशाली वर्णन है। इसका मूल अर्थ है "वह जिसके संदेह कट गए हैं।"

• छिन्न (Chinna): इस संस्कृत मूल का अर्थ है "काटा हुआ," "अलग किया हुआ," "टूटा हुआ," या "विभाजित।" यह एक पूर्ण और निर्णायक क्रिया को दर्शाता है, न कि केवल कमी या राहत को, बल्कि पूर्ण उन्मूलन को।

• संशय (Saṁśaya): यह शब्द "संदेह," "अनिश्चितता," "शक," "भ्रम," या "अस्पष्टता" को संदर्भित करता है। यह मानसिक दोलन की स्थिति को दर्शाता है, जहाँ मन किसी सत्य को दृढ़ता से समझने या स्पष्ट निर्णय लेने में असमर्थ होता है।

संदेह का पूर्ण उन्मूलन जब भगवान कालभैरव पर लागू होता है, तो छिन्नसंशयाय ऐसी स्थिति को दर्शाता है जहाँ सभी प्रकार के संदेह—बौद्धिक, अस्तित्वगत और आध्यात्मिक—पूरी तरह से नष्ट हो गए हैं। यह सभी प्रश्नों के उत्तर होने के बारे में नहीं है, बल्कि अनिश्चितता से उत्पन्न प्रश्नों की आवश्यकता को ही पार करने के बारे में है। यह सर्वोच्च सत्ता की विशेषता वाले पूर्ण ज्ञान और अटूट विश्वास का प्रतिनिधित्व करता है।

स्पष्टता का प्रतीक यह नाम कालभैरव को परम सत्य के प्रतीक के रूप में उजागर करता है, जो मानवीय चेतना को परेशान करने वाली द्वैतताओं और जटिलताओं से मुक्त है। समय के स्वामी और परम वास्तविकता के रूप में, उनके लिए कोई अस्पष्टता या अनसुलझा रहस्य नहीं है। वह निश्चितता और अटूट ज्ञान का सार हैं।

भक्तों के लिए आकांक्षा भक्त के लिए, कालभैरव को छिन्नसंशयाय के रूप में प्रणाम करना अपने स्वयं के संदेह और भ्रम को दूर करने के लिए एक आह्वान है। यह आंतरिक स्पष्टता के लिए, भौतिक संसार के भ्रम और अनिश्चितताओं को दूर करने की बुद्धि के लिए, और अपनी आध्यात्मिक यात्रा में अटूट विश्वास और समझ की स्थिति प्राप्त करने के लिए एक प्रार्थना है। यह उस गहन आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि को दर्शाता है जो किसी को सभी मानसिक उथल-पुथल को पार करने और सीधे सत्य को समझने में सक्षम बनाती है।

764. सर्वकामिने

सभी इच्छाओं के स्वरूप और सभी कामनाओं को पूर्ण करने वाले उन्हें नमन।

विस्तार : सर्वकामिने (सर्वकामिन्) नाम दो संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है: सर्व और कामिन्।

• सर्व (Sarva): अर्थ "सभी," "प्रत्येक," "पूर्ण," या "समस्त।" • कामिन् (Kāmin): काम (Kāma) से व्युत्पन्न, जिसका अर्थ है "इच्छा," "कामना," "अभिलाषा," या "प्रेम।" जब विशेषण या विशेषक के रूप में उपयोग किया जाता है, तो कामिन् का अर्थ है "जो इच्छा करता है," "जो कामना करता है," या "जो सभी इच्छाओं का विषय है।"

सभी इच्छाओं का मूर्त स्वरूप (Embodiment of All Desires) एक गहन दार्शनिक अर्थ में, सर्वकामिने भगवान शिव (अपने भैरव स्वरूप में) को सभी इच्छाओं के परम स्रोत और मूर्त स्वरूप के रूप में संदर्भित करता है। यह इंगित करता है कि सभी इच्छाएँ, चाहे वे सांसारिक हों या

आध्यात्मिक, अंततः दिव्य से उत्पन्न होती हैं और उसी में लौट आती हैं। वह आदिम इच्छा या इच्छा शक्ति (Ichha Shakti) का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो ब्रह्मांड की स्वयं को प्रकट करने और अनुभव करने की मूलभूत इच्छा है।

सभी कामनाओं और इच्छाओं के दाता (Dispenser of All Wishes and Desires) यह नाम यह भी दर्शाता है कि कालभैरव सभी इच्छाओं और कामनाओं के सर्वोच्च दाता हैं। जो भक्त सच्ची भक्ति के साथ उनकी आराधना करते हैं, उनकी आकांक्षाएँ पूरी होती हैं, चाहे वे भौतिक सुख-सुविधाएँ हों, आध्यात्मिक मुक्ति हो, हानि से सुरक्षा हो, या प्रयासों में सफलता हो। यह पहलू उनके भयंकर स्वरूप के बावजूद उनकी परोपकारी प्रकृति और अपने अनुयायियों की सच्ची प्रार्थनाओं का जवाब देने की उनकी क्षमता को उजागर करता है।

सभी इच्छाओं का विषय (The Object of All Desires) भक्ति के दृष्टिकोण से, सर्वकामिने का अर्थ यह भी है कि कालभैरव स्वयं सभी आध्यात्मिक अभिलाषाओं और सर्वोच्च इच्छा का अंतिम विषय हैं। एक सच्चे आध्यात्मिक साधक के लिए, सबसे बड़ी इच्छा दिव्य के साथ मिलन है, और कालभैरव उस परम लक्ष्य का प्रतिनिधित्व करते हैं - वह परम वास्तविकता जो आत्मा की सबसे गहरी अभिलाषा को पूरा करती है। वह परम आनंद (आनंद) हैं जिसे सभी प्राणी अनजाने में खोजते हैं।

काम और धर्म का मिलन (Union of Kāma and Dharma) एक व्यापक अर्थ में, यह नाम इच्छाओं (काम) को धार्मिक जीवन (धर्म) से जोड़ता है। कालभैरव, सर्वकामिने के रूप में, भक्तों को उनकी इच्छाओं को शुद्ध करने, उन्हें ब्रह्मांडीय व्यवस्था और आध्यात्मिक विकास के साथ संरेखित करने में मार्गदर्शन कर सकते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि पूरी हुई इच्छाएँ केवल क्षणिक सुख के बजाय समग्र कल्याण में योगदान करती हैं।

765. सदावासाय

सभी प्राणियों के लिए शाश्वत और स्थायी निवास स्थान स्वरूप को नमन।

विस्तार : सदावासाय नाम दो संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है: सदा और वास।

सदा: इसका अर्थ है "हमेशा," "शाश्वत रूप से," "स्थायी रूप से," या "सदा रहने वाला।" यह एक शाश्वत और अपरिवर्तनीय स्थिति को दर्शाता है।

वास: यह "निवास," "आवास," "घर," या "अस्तित्व का स्थान" को दर्शाता है।

शाश्वत निवास एक साथ, "सदावासाय" कालभैरव को सभी प्राणियों के लिए परम, शाश्वत और स्थायी निवास स्थान के रूप में वर्णित करता है। यह केवल एक भौतिक स्थान नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक और अस्तित्वगत सत्य है। वह वह आधार हैं जिस पर समस्त सृष्टि टिकी हुई है, वह असीमित स्थान जहाँ अस्तित्व स्वयं प्रकट होता है और अंततः लौट आता है।

सार्वभौमिक शरण आध्यात्मिक साधकों के लिए, यह नाम पुष्टि करता है कि कालभैरव परम शरण हैं, सांसारिक अस्तित्व के तूफान में सुरक्षित आश्रय हैं। वह आश्रय प्रदान करते हैं, न केवल लाक्षणिक रूप से बल्कि मौलिक रूप से, अस्तित्व के मूल आधार के रूप में। उनमें, सभी चीजें अपनी उत्पत्ति, पोषण और अंतिम विलय पाती हैं।

ब्रह्मांडीय सिद्धांत दार्शनिक रूप से, इसका तात्पर्य है कि कालभैरव स्व-अस्तित्ववान, अपरिवर्तनीय वास्तविकता हैं जो हमेशा बदलते हुए घटनात्मक संसार के नीचे स्थित हैं। वह शाश्वत सत्य हैं, जो उन्हें अनित्यता के ब्रह्मांड में एकमात्र स्थिर बनाते हैं। सभी सीमित प्राणी और रूप उनमें प्रकट होते हैं, उनके द्वारा पोषित होते हैं, और अंततः उनमें विलीन हो जाते हैं।

आध्यात्मिक महत्व भक्तों के लिए, सदावासाय गहन शांति और सुरक्षा का प्रतीक है। उन्हें शाश्वत निवास के रूप में अनुभव करना भय से परे जाना और मुक्ति प्राप्त करना है, यह पहचानना है कि व्यक्ति हमेशा और लगातार दिव्य की असीम और अपरिवर्तनीय चेतना में समाया हुआ है।

766. सर्वायुधविशारदाय

सभी प्रकार के शस्त्रों के सर्वोच्च विशेषज्ञ और स्वामी को नमन।

विस्तार : सर्वायुधविशारदाय (Sarvāyudhaviśāradāya) नाम एक संयुक्त संस्कृत पद है।

सर्व (Sarva): "सभी," "प्रत्येक," "पूर्ण भेंट।"

आयुध (Āyudha): "हथियार," "उपकरण," "औजार।"

विशारद (Viśārada): "विशेषज्ञ," "कुशल," "स्वामी," "अत्यंत निपुण।"

जो सभी हथियारों के स्वामी हैं यह नाम कालभैरव की शक्ति के एक आवश्यक पहलू पर प्रकाश डालता है: सभी प्रकार के हथियारों पर उनकी पूर्ण और अद्वितीय महारत। यह महारत केवल शारीरिक पराक्रम नहीं है, बल्कि उन सभी शक्तियों पर उनके पूर्ण प्रभुत्व का प्रतीक है जिन्हें तैनात किया जा सकता है, चाहे वह सुरक्षा, विनाश या ब्रह्मांडीय व्यवस्था के रखरखाव में हो। वह हर हथियार को परम कौशल और सटीकता के साथ चलाते हैं, उसकी हर बारीकी और अनुप्रयोग को समझते हैं।

हथियारों की प्रतीकात्मक व्याख्या एक आध्यात्मिक संदर्भ में, "हथियार" अक्सर उन उपकरणों, शक्तियों या ऊर्जाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनका उपयोग बाधाओं को दूर करने, अज्ञान (अविद्या) को नष्ट करने या धार्मिकता (धर्म) की रक्षा के लिए किया जाता है। कालभैरव के लिए, उनके हथियार केवल शाब्दिक शस्त्र नहीं हैं, बल्कि दिव्य ऊर्जाएं, ब्रह्मांडीय नियम और प्रकृति की शक्तियां भी हैं। उनकी महारत का अर्थ है कि उनके लिए कोई भी चुनौती दुर्गम नहीं है, और उनके पास किसी भी स्थिति से निपटने के लिए सही साधन हैं।

दिव्य शक्ति की अभिव्यक्ति यह पहलू एक दुर्जेय रक्षक और बुराई के अथक संहारक के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है। जब वे अपने उग्र रूप धारण करते हैं, तो किसी भी हथियार को चलाने की उनकी क्षमता उन्हें पूरी तरह से अजेय बना देती है। यह उनके भक्तों को आश्वस्त करता है कि उनके पास सभी खतरों, लौकिक और आध्यात्मिक दोनों से उनकी रक्षा करने और उनके आध्यात्मिक मार्ग पर किसी भी बाधा को निर्णायक रूप से जीतने के साधन हैं।

ब्रह्मांडीय योद्धा यह नाम कालभैरव को परम ब्रह्मांडीय योद्धा के रूप में चित्रित करता है, जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था के संरक्षण और आत्माओं की मुक्ति के लिए किसी भी युद्ध में संलग्न होने के लिए सुसज्जित और कुशल हैं। उनकी दक्षता पारंपरिक हथियारों से परे समय, स्थान और मौलिक शक्तियों को अपने उपकरणों के रूप में हेरफेर करने तक फैली हुई है।

767. सुलभाय

अपने सच्चे भक्तों के लिए आसानी से सुलभ और प्राप्य होने वाले को नमन।

विस्तार : सुलभ (सुलभाय) नाम उन लोगों के लिए दिव्य की अंतर्निहित सुलभता और प्राप्यता को दर्शाता है जो सच्ची भक्ति के साथ आते हैं। यह संस्कृत मूल "लभ" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "प्राप्त करना" या "लाभ उठाना", जिसमें "सु-" उपसर्ग लगा है, जिसका अर्थ है "अच्छा", "आसान" या "भली-भांति"।

आसानी से सुलभ और पहुँच योग्य यह विशेषण इस बात पर जोर देता है कि कालभैरव के विस्मयकारी और कभी-कभी भयावह रूप के बावजूद, वह दूर या उदासीन नहीं हैं। अपने सच्चे भक्तों के लिए, वह आसानी से पहुँच योग्य हैं और उन्हें ईमानदारी और विश्वास के साथ आह्वान किया

जा सकता है। यह इस गलत धारणा के विपरीत है कि उग्र देवताओं को प्रसन्न करना या उन तक पहुँचना मुश्किल है। इसके बजाय, उनका स्वभाव ही, जब सच्ची भक्ति के साथ संपर्क किया जाता है, तो उल्लेखनीय रूप से ग्रहणशील हो जाता है।

भक्ति के माध्यम से प्राप्य यहाँ "प्राप्य" का अर्थ भक्ति के आध्यात्मिक फल हैं—आशीर्वाद, सुरक्षा, भय से मुक्ति, और अंततः, आत्म-साक्षात्कार। कालभैरव का मार्ग केवल जटिल अनुष्ठानों या बौद्धिक कौशल से नहीं, बल्कि हार्दिक समर्पण और भक्ति की पवित्रता (भक्ति) से प्रशस्त होता है। ऐसे भक्त के लिए, उनकी कृपा और ज्ञान आसानी से प्राप्त हो जाते हैं।

उग्रता के पीछे परोपकारी स्वभाव यह नाम कालभैरव के उग्र बाहरी रूप के पीछे के परोपकारी मूल को भी सूक्ष्मता से प्रकट करता है। जबकि वह अनाड़ी या अधर्मी लोगों के लिए दुर्जेय लग सकते हैं, अपने सच्चे भक्तों के लिए, वह सबसे दयालु और देने वाले देवता हैं। यह गुण उन्हें उन लोगों के लिए एक आश्रय बनाता है जो जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति चाहते हैं, या केवल संकट के समय में सांत्वना और सुरक्षा चाहते हैं।

बाधाओं का निवारण करने वाले क्योंकि वह "आसानी से प्राप्य" हैं, वह उन बाधाओं को भी दूर करते हैं जो आमतौर पर एक आध्यात्मिक साधक को रोकती हैं। उनकी सुलभता का अर्थ है कि वह अपने भक्तों की प्रार्थनाओं का तुरंत जवाब देते हैं, उनकी आध्यात्मिक यात्रा पर आंतरिक और बाहरी बाधाओं को दूर करते हैं।

768. सूदनाय

सभी बुरी शक्तियों का नाश करने वाले महान और पराक्रमी को नमन।

विस्तार : 'सूदनाय' नाम संस्कृत मूल "सूदन" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "नष्ट करना," "मारना," या "संहार करना।" यह नकारात्मकता और बुराई के भयंकर संहारक के रूप में कालभैरव की भूमिका का एक गहरा वर्णन है।

महान संहारक (The Great Slayer) यह विशेषण दुर्भावनापूर्ण शक्तियों का सामना करने और उन्हें पराजित करने में कालभैरव के अटल स्वभाव पर जोर देता है। उनका संहार मनमाना विनाश नहीं है, बल्कि ब्रह्मांडीय संतुलन को बहाल करने और पुण्यात्माओं की रक्षा करने का एक उद्देश्यपूर्ण कार्य है। वह उन सभी के विरुद्ध परम शक्ति हैं जो अधर्मी, दुष्ट और धर्म के लिए हानिकारक हैं।

बाधाओं का संहारक (Annihilator of Obstacles) एक आध्यात्मिक स्तर पर, 'सूदनाय' उन आंतरिक बाधाओं के विनाश को दर्शाता है जो एक भक्त की आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डालती हैं। ये 'बुरी शक्तियाँ' अहंकार (ahankara), अज्ञान (avidya), आसक्ति (moha), इच्छा (kama), और क्रोध (krodha) के रूप में प्रकट हो सकती हैं। कालभैरव, इस पहलू में, मन को शुद्ध करते हैं और इन बंधनकारी कारकों को हटाकर साधक को मुक्ति की ओर ले जाते हैं।

ब्रह्मांडीय न्याय (Cosmic Justice) काली (समय) के अवतार के रूप में, कालभैरव का विनाश हमेशा न्यायपूर्ण और समयोचित होता है। वह केवल संहार नहीं करते, बल्कि वह "सूदति" – वह बुराई के मूल कारण को काट देते हैं। यह सुनिश्चित करता है कि नकारात्मकता पूरी तरह से मिटा दी जाए, जिससे उसका पुनरुत्थान रोका जा सके। उनके कार्य सृष्टि की पवित्रता बनाए रखते हैं।

धर्म के रक्षक (Protector of Dharma) बुराई का उन्मूलन करके, वह धार्मिकता और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के सर्वोच्च रक्षक (धर्मपाल) के रूप में कार्य करते हैं। 'सूदनाय' के प्रति भक्ति न्याय, सुरक्षा और सभी आंतरिक और बाहरी प्रतिकूलताओं को दूर करने की अपील है।

769. शुद्धाय

जो शाश्वत रूप से शुद्ध, स्वच्छ और सभी दोषों से मुक्त हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : शुद्धाय (Śuddhāya) नाम भगवान कालभैरव को वास्तविकता के शाश्वत रूप से शुद्ध, निर्मल और प्राचीन सार के रूप में संदर्भित करता है। यह गुण उनकी परम श्रेष्ठता और पूर्णता को रेखांकित करता है, जो किसी भी दोष या अपूर्णता से मुक्त है।

निर्मल पवित्रता शुद्ध का शाब्दिक अर्थ है "पवित्र," "स्वच्छ," "निर्मल," या "अदूषित।" आध्यात्मिक और दार्शनिक संदर्भ में, यह पवित्रता शारीरिक स्वच्छता से परे एक पूर्ण आध्यात्मिक और आध्यात्मिक रूप से बेदाग स्थिति को समाहित करती है। कालभैरव, अपने आवश्यक स्वरूप में, द्वंद्वों, अपूर्णताओं और घटनात्मक दुनिया की अशुद्धियों से अछूते हैं। वे कर्म से परे, तीन गुणों (सत्त्व, रजस, तमस) से परे, और माया (भ्रम) की सीमाओं से परे हैं।

द्वंद्व का अतिक्रमण शुद्ध की अवधारणा सभी प्रकार के दोष या 'मल' (अशुद्धियों) से मुक्ति का तात्पर्य है जो जीवित प्राणियों को बांधते हैं, जैसे: • आणव मल (अहंकार-अशुद्धि): व्यक्तिगत सीमा और अलगाव की भावना। • कर्म मल (कर्म-अशुद्धि): कर्मों से उत्पन्न कर्म अवशेष, जो पुनर्जन्म की ओर ले जाते हैं। • मायिक मल (भ्रम-अशुद्धि): भ्रम की आवरण शक्ति जो द्वंद्व की भावना पैदा करती है। शुद्ध के रूप में, कालभैरव परम वास्तविकता (परब्रह्म) के अवतार हैं जो इन सभी अशुद्धियों का अतिक्रमण करते हैं। वे सभी अस्तित्व का आधार हैं, फिर भी इसके उतार-चढ़ाव और अपूर्णताओं से अप्रभावित रहते हैं।

शुद्धि का स्रोत चूंकि वे स्वयं शुद्ध हैं, कालभैरव को शुद्धिकर्ता के रूप में भी पूजा जाता है। उनके प्रति भक्ति, उनके स्वरूप का चिंतन, और उनकी शिक्षाओं का पालन भक्त को उनके कर्मिक अशुद्धियों, मानसिक क्लेशों (क्लेशों), और आध्यात्मिक अज्ञानता से शुद्ध करने वाला माना जाता है। उनकी उपस्थिति ही, काल के स्वामी और अंततः विघटन के रूप में, यह सुनिश्चित करती है कि ब्रह्मांडीय चक्र में सभी अशुद्धियां अंततः घुल जाएं और शुद्ध हो जाएं।

मुक्ति का प्रतीक अंततः, "शुद्ध" मुक्ति (मोक्ष) का प्रतीक है। कालभैरव के शुद्ध स्वरूप को महसूस करना अपनी स्वयं की आंतरिक पवित्रता को महसूस करना है, जो अज्ञानता और कर्म से ढकी हुई है। वे अवांछित, अकृत, और सदा-मुक्त अस्तित्व की स्थिति का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सभी आध्यात्मिक प्रयासों का लक्ष्य है।

770. शुभांशवे

जिनकी किरणें और उत्सर्जन परम शुभ हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : शुभांशवे नाम संस्कृत के शब्दों शुभ और अंशु का एक यौगिक है।

• शुभ (Shubha): इस शब्द का अर्थ है "शुभ," "मंगलमय," "सौम्य," "सुंदर," "अच्छा," या "उत्कृष्ट।" आध्यात्मिक संदर्भ में, यह उस चीज़ को संदर्भित करता है जो कल्याण, समृद्धि और आध्यात्मिक विकास प्रदान करती है।

• अंशु (Aṁśu): इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है "किरण," "प्रकाश की किरण," या "उत्सर्जन।" यह लाक्षणिक रूप से एक भाग, अंश या गुण को भी दर्शा सकता है।

शुभ विकिरण (Auspicious Radiance) जब संयुक्त किया जाता है, तो शुभांशवे उन्हें संदर्भित करता है जिनकी किरणें या उत्सर्जन अत्यंत शुभ हैं। यह एक दिव्य सत्ता की छवि को उद्घाटित करता है जिसकी उपस्थिति, प्रकाश या प्रभाव सौभाग्य लाता है, बाधाओं को दूर करता है और

परिवेश को शुद्ध करता है। जिस प्रकार सूर्य की किरणें गर्मी और जीवन लाती हैं, उसी प्रकार भैरव की शुभ किरणें अंधकार (अज्ञान) और नकारात्मकता को दूर करती हैं, जिससे आध्यात्मिक और भौतिक कल्याण को बढ़ावा मिलता है।

दिव्य उत्सर्जन और कृपा (Divine Emanations and Grace) ये "किरणें" केवल भौतिक प्रकाश नहीं हैं, बल्कि उनकी दिव्य शक्तियों, आशीर्वादों और आध्यात्मिक ऊर्जाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं जो बाहर की ओर विकीर्ण होती हैं। वह वह स्रोत हैं जहाँ से सभी लाभकारी प्रभाव प्रवाहित होते हैं। उनकी कृपा, ज्ञान और सुरक्षात्मक ऊर्जा लगातार उनसे उत्सर्जित होती रहती है, जो ब्रह्मांड में एक परोपकारी शक्ति के रूप में कार्य करती है, भक्तों को धार्मिकता और मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करती है।

अस्पष्टता का निवारण करने वाले (Dispeller of Obscurity) यह नाम साधकों के लिए मार्ग को रोशन करने, अज्ञान को दूर करने और स्पष्टता प्रदान करने में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। उनका शुभ प्रकाश कर्मिक अशुद्धियों को शुद्ध करता है और वास्तविकता के सच्चे स्वरूप पर प्रकाश डालता है, जिससे व्यक्ति आध्यात्मिक बोध की ओर अग्रसर होता है।

771. शुद्धविग्रहाय

ऐसे देवत्व को नमन जिनका दिव्य रूप पूर्णतः शुद्ध और पवित्र है।

विस्तार : शुद्धविग्रहाय नाम संस्कृत शब्दों 'शुद्ध' और 'विग्रह' का एक यौगिक है।

• शुद्ध (Shuddha): इस शब्द का अर्थ है "शुद्ध," "स्वच्छ," "निर्मल," "निष्कलंक," "अदूषित," "पवित्र," या "पुनीत।" यह किसी भी दोष, अशुद्धि या अपूर्णता से पूर्ण स्वतंत्रता की स्थिति को दर्शाता है। आध्यात्मिक संदर्भ में, यह आदिम शुद्धता का तात्पर्य है, जो भौतिक संसार की द्वैतताओं और संदूषणों से अछूती है।

• विग्रह (Vigraha): इसका अर्थ "रूप," "शरीर," "आकृति," "अवतार," "मानवीकरण," या "पदार्थ" हो सकता है। दिव्य संदर्भों में, यह किसी देवता के दिव्य रूप या अभिव्यक्ति को संदर्भित करता है।

परमात्मा का शुद्ध रूप (The Pure Form of the Divine) जब संयुक्त किया जाता है, तो शुद्धविग्रह कालभैरव की दिव्य अभिव्यक्ति को संदर्भित करता है जिसका रूप पूर्णतः शुद्ध, पवित्र और निष्कलंक है। यह शुद्धता केवल शारीरिक नहीं है बल्कि उनके सार, ऊर्जा और अस्तित्व तक फैली हुई है।

भौतिक संदूषण से परे (Beyond Material Contamination) हिंदू दार्शनिक परंपराओं में, भौतिक संसार (प्रकृति) को अक्सर द्वैतताओं, अपूर्णताओं और तीन गुणों (सत्त्व, रजस, तमस) से जोड़ा जाता है जो संदूषण या उलझाव का कारण बन सकते हैं। कालभैरव का शुद्धविग्रह यह दर्शाता है कि उनका रूप इन भौतिक सीमाओं और अंतर्निहित अपूर्णताओं से परे है। वे पूर्णतः शुद्ध स्पष्टता और आध्यात्मिक स्वच्छता की स्थिति में विद्यमान हैं।

दिव्य पूर्णता का प्रतीक (Symbol of Divine Perfection) यह नाम कालभैरव के पारलौकिक स्वरूप को उजागर करता है। उनका रूप कर्म से उत्पन्न नहीं होता है, न ही यह नश्वर शरीरों की तरह क्षय, रोग या मृत्यु के अधीन है। यह चेतना और आनंद का एक पूर्ण, दिव्य अवतार है, जो परम आध्यात्मिक शुद्धता और निष्कलंक पूर्णता का प्रतीक है। यह एक ऐसा रूप है जो स्वाभाविक रूप से पवित्र है, जो इसके संपर्क में आने वाली हर चीज को शुद्ध करने में सक्षम है।

772. सुवर्णाय

जो सुंदर, सुनहरे रंग के हैं, या जो सभी स्वर्ण के स्रोत हैं, उनको नमन।

विस्तार : सुवर्णाय नाम, जो सुवर्ण से लिया गया है, का अर्थ है "सुनहरे रंग का" या "सोना"। कालभैरव को यह गुण देना प्रतीकात्मकता से भरपूर है, जिसमें उनका शारीरिक स्वरूप और उनका गहन आध्यात्मिक महत्व दोनों शामिल हैं।

सुनहरा रंग

• शुभता और पवित्रता: हिंदू प्रतिमा विज्ञान में, सुनहरा रंग लगातार शुभता, पवित्रता, दिव्य प्रकाश और आध्यात्मिक वैभव से जुड़ा है। यह अस्तित्व की उच्चतम अवस्था का प्रतिनिधित्व करता है, जो अपूर्णता से रहित है। कालभैरव के लिए, जिनका उग्र रूप अन्यथा अंधकार का सुझाव दे सकता है, सुनहरा रंग उनकी अंतर्निहित और अंततः परोपकारी, चमकदार प्रकृति को दर्शाता है। यह इंगित करता है कि उनके भयानक रूप में भी, वे परम अच्छाई और पवित्रता का स्रोत हैं।

• दिव्य चमक और ऊर्जा: सोना एक ऐसी धातु है जो धूमिल नहीं होती, जो अपरिवर्तनीयता और अनंतता का प्रतीक है। कालभैरव का सुनहरा रंग एक दीप्तिमान, बेदाग प्रकाश का सुझाव देता है जो दिव्य ऊर्जा का विकिरण करता है। वे सभी प्रकाश, ज्ञान और आध्यात्मिक चमक का स्रोत हैं जो अज्ञानता के अंधकार को दूर करते हैं।

सभी स्वर्ण का स्रोत

• भौतिक और आध्यात्मिक समृद्धि: केवल रंग से परे, "सोना" स्वयं कीमती धातु को भी संदर्भित करता है। इस संदर्भ में, सुवर्णाय का अर्थ वह हो सकता है जो सभी धन और भौतिक समृद्धि का स्रोत है, जो बहुतायत प्रदान करने वाले के रूप में उनकी भूमिका का प्रतिनिधित्व करता है। चूंकि भैरव धन और खजानों की रक्षा से भी जुड़े हैं, "सभी स्वर्ण का स्रोत" होना सभी प्रकार के धन, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पर उनके प्रभुत्व को पुष्ट करता है।

• स्वर्ण सार (हिरण्यगर्भ): एक गहरे दार्शनिक अर्थ में, "सोना" आदिम, चमकदार अंडे या गर्भ (हिरण्यगर्भ) का प्रतीक है जिससे पूरे ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई है। यदि कालभैरव सुवर्ण हैं, तो वे इस सुनहरे ब्रह्मांडीय मूल का सार हैं - अप्रकट क्षमता, शुद्ध चेतना जिससे सृष्टि उत्पन्न होती है। वे अंतर्निहित, प्राचीन तत्व हैं जिससे अन्य सभी तत्व और अस्तित्व प्रवाहित होते हैं, ठीक वैसे ही जैसे कीमती सोना जटिल आभूषणों का आधार है।

इस प्रकार, सुवर्णाय कालभैरव को एक ऐसे प्राणी के रूप में चित्रित करता है जो उत्कृष्ट सुंदरता, प्रबुद्ध ज्ञान, अटूट धन और ब्रह्मांडीय सृष्टि के सुनहरे सार से युक्त है।

773. स्वाश्रयाय

जो आत्म-निर्भर हैं, अपने आप के परम आधार हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : स्वाश्रयाय नाम संस्कृत के शब्दों 'स्व' और 'आश्रय' से लिया गया है।

• स्व (Sva): "स्वयं," "अपना," "स्वतंत्र।" • आश्रय (Āśraya): "सहारा," "शरण," "आधार," "निर्भर," "विश्राम स्थल।"

आत्मनिर्भर और आत्म-पर्याप्त (Self-Dependent and Self-Sufficient) संयुक्त रूप से, स्वाश्रय का अर्थ है "स्वयं-समर्थित," "आत्मनिर्भर," या "जिसका आश्रय स्वयं हो।" यह सर्वोच्च सत्ता की एक आंतरिक विशेषता पर जोर देता है, विशेष रूप से भगवान शिव के कालभैरव स्वरूप में। वे अपने अस्तित्व, शक्ति या कार्यों के लिए किसी बाहरी शक्ति, इकाई या स्थिति पर निर्भर नहीं करते हैं। वे अजन्मे और शाश्वत हैं, प्राथमिक कारण हैं जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है, फिर भी वे स्वयं अकारण हैं।

परम आश्रय (The Ultimate Support) जबकि शाब्दिक अनुवाद स्वयं पर निर्भरता का सुझाव देता है, एक धार्मिक संदर्भ में, इसका अर्थ है कि वे संपूर्ण ब्रह्मांड और उसके भीतर के सभी प्राणियों के परम आश्रय हैं, जबकि साथ ही उन्हें किसी और चीज़ से किसी सहारे की आवश्यकता नहीं है। वे मूलभूत वास्तविकता हैं, जिन्हें किसी और आधार की आवश्यकता नहीं है। सब कुछ उन पर टिका है, लेकिन वे किसी पर नहीं टिके हैं। यह अवधारणा अद्वैत वेदांत में महत्वपूर्ण है, जहाँ परम सत्य (ब्रह्म/आत्मा) स्वाश्रय है।

द्वंद्वों और सीमाओं से परे (Beyond Dualities and Limitations) यह गुण सांसारिक निर्भरता के सभी रूपों, जैसे जन्म, पोषण (भोजन, पानी), या बाहरी सत्यापन से परे है। यह पूर्ण स्वतंत्रता, संप्रभुता और सृष्टि, संरक्षण और संहार के चक्रों से स्वतंत्रता की स्थिति को दर्शाता है जो अन्य सभी संस्थाओं को बांधते हैं। कालभैरव, कालराज (समय के राजा) के रूप में, समय को नियंत्रित करते हैं न कि उसके द्वारा नियंत्रित होते हैं। स्वाश्रय के रूप में, वे किसी भी बाहरी स्थिति से परे हैं।

दार्शनिक निहितार्थ (Philosophical Implication) भक्ति में, कालभैरव को स्वाश्रय के रूप में पहचानना उनकी सर्वोच्च, असीमित प्रकृति को स्वीकार करना और उन्हें एकमात्र और परम आश्रय के रूप में आत्मसमर्पण करना है, यह जानते हुए कि केवल उनके पास ही मुक्ति प्रदान करने की पूर्ण शक्ति है क्योंकि वे स्वयं पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

774. शत्रवे

उन सभी दुष्टों और शत्रुओं को मेरा नमन जो दुर्जेय और विनाशकारी हैं।

विस्तार : शत्रवे नाम कालभैरव के स्वरूप के एक विशिष्ट और शक्तिशाली पहलू को दर्शाता है - एक विरोधी, एक शत्रु या एक दुश्मन के रूप में। हालांकि, कालभैरव जैसे दिव्य प्राणी के संदर्भ में, यह पारंपरिक मानवीय अर्थों में एक शाब्दिक शत्रु नहीं है, बल्कि एक प्रतीकात्मक और ब्रह्मांडीय शत्रु है, जो धार्मिकता के साथ संरेखित है।

दुर्जेय विरोधी शत्रु (शत्रु) का सीधा अर्थ "दुश्मन" या "विरोधी" है। जब इसे कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह उन सभी के लिए एक समझौताहीन और दुर्जेय शत्रु के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है जो अधर्मी, दुष्ट या ब्रह्मांडीय व्यवस्था और आध्यात्मिक प्रगति के लिए हानिकारक हैं। वह दिव्य शक्ति है जो बुराई, अज्ञानता और नकारात्मकता के सीधे विरोध में खड़ी है।

दुष्टता का विनाशक (दुष्कृत) कालभैरव का यह पहलू उनके उग्र और दंडात्मक स्वभाव (दण्डपाणि) के अनुरूप है। वह केवल एक निवारक नहीं हैं, बल्कि उन शक्तियों के सक्रिय विनाशक हैं जो धर्म को कमजोर करना चाहती हैं। इसमें राक्षस (असुर), दुर्भावनापूर्ण आत्माएं, और, लाक्षणिक रूप से, आध्यात्मिक साधकों के आंतरिक शत्रु जैसे अहंकार (अहंकार), वासना (काम), क्रोध (क्रोध), लालच (लोभ), और मोह (मोह) शामिल हैं। वह आध्यात्मिक मार्ग पर आने वाली बाधाओं को दूर करने वाली परम शक्ति हैं।

धर्म के संरक्षक "दुष्टों के शत्रु" होने के नाते, कालभैरव अप्रत्यक्ष रूप से धर्मियों के रक्षक और ब्रह्मांडीय नियम (धर्म) के संरक्षक बन जाते हैं। उनकी उग्रता दिव्य न्याय की अभिव्यक्ति है, यह सुनिश्चित करती है कि बुराई का हमेशा सामना किया जाए और अंततः उसे पराजित किया जाए। यह दंडात्मक भूमिका ब्रह्मांड के संतुलन के लिए आवश्यक है।

"शत्रु" के लिए "शत्रु" सत्य और धार्मिकता के साथ संरेखण चाहने वाले भक्त के लिए, कालभैरव शत्रु नहीं बल्कि एक उग्र रक्षक हैं। उनकी "शत्रुता" केवल सत्य के शत्रुओं के प्रति निर्देशित है, इस प्रकार वह सच्चे साधकों के लिए एक सबसे परोपकारी और शक्तिशाली सहयोगी बन जाते हैं।

775. शत्रुजिते

अपने सभी शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त करने वाले को नमन।

विस्तार : शत्रुजित नाम दो संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: शत्रु और जित।

शत्रु: शत्रु, विरोधी, प्रतिद्वंद्वी। यह शब्द न केवल बाहरी विरोधियों को संदर्भित करता है, बल्कि, अधिक गहराई से, अहंकार (अहंकार), लालच (लोभ), वासना (काम), क्रोध (क्रोध), और भ्रम (मोह) जैसे आंतरिक विरोधियों को भी संदर्भित करता है।

जित: जीता हुआ, विजयी, पराजित करने वाला।

बाहरी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला शाब्दिक अर्थ में, शत्रुजित उस सर्वशक्तिमान योद्धा को दर्शाता है जो सभी बाहरी शत्रुओं को पराजित करता है। कालभैरव का यह पहलू उन्हें धर्म (धार्मिकता) और अपने भक्तों के एक अजेय रक्षक के रूप में चित्रित करता है। वह बाधाओं को दूर करते हैं, बुरी शक्तियों को नष्ट करते हैं, और बुराई पर अच्छाई की जीत सुनिश्चित करते हैं, उन सभी से रक्षा करते हैं जो आध्यात्मिक मार्ग को नुकसान पहुँचाने या बाधित करने का प्रयास करते हैं।

आंतरिक विरोधियों पर विजय प्राप्त करने वाला अधिक प्रतीकात्मक और आध्यात्मिक रूप से, शत्रुजित एक आध्यात्मिक साधक के आंतरिक शत्रुओं पर महारत को उजागर करता है। सच्चे विरोधी केवल बाहरी प्राणी नहीं हैं, बल्कि नकारात्मक भावनाएँ, बुराइयाँ और अज्ञानता हैं जो स्वयं के भीतर निवास करती हैं। कालभैरव, शत्रुजित के रूप में, भक्तों को इन आंतरिक शत्रुओं को जीतने के लिए प्रेरित और सशक्त करते हैं, जिससे आत्म-साक्षात्कार, आंतरिक शांति और मुक्ति (मोक्ष) प्राप्त होती है। शत्रुजित के रूप में उन पर ध्यान करके, व्यक्ति अपनी मानसिक और भावनात्मक कमजोरियों को दूर करने के लिए उनकी कृपा चाहता है, जो दुख और बंधन के मूल कारण हैं।

सर्वोच्च प्रभुत्व की अभिव्यक्ति यह नाम कालभैरव के पूर्ण और निर्विवाद प्रभुत्व को रेखांकित करता है। उनकी विजय केवल एक युद्ध जीतना नहीं है, बल्कि एक ऐसी स्थिति है जहाँ कोई भी विरोधी शक्ति, आंतरिक या बाहरी, उनकी सर्वोच्च आध्यात्मिक शक्ति और ज्ञान के सामने खड़ी नहीं हो सकती। वह परम विजेता हैं, यह दर्शाते हुए कि दिव्य इच्छा हमेशा सभी प्रकार के अज्ञान, अंधकार और नकारात्मकता पर प्रबल होती है।

776. शत्रुतापनाय

अपने शत्रुओं को भीषण कष्ट/पीड़ा और ताप देने वाले को नमन।

विस्तार : शत्रुतापनाय नाम दो संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है:

• शत्रु (Śatru): दुश्मन, विरोधी, शत्रु। • तापन (Tāpana): ताप उत्पन्न करने वाला, जलाने वाला, कष्ट देने वाला, पीड़ा पहुँचाने वाला।

शत्रुओं को कष्ट देने वाला यह नाम विशेष रूप से कालभैरव को उस रूप में पहचानता है जो शत्रुओं को तीव्र रूप से पीड़ित करता है, उन्हें कष्ट देता है और अत्यधिक पीड़ा पहुँचाता है। यह केवल एक प्रतीकात्मक पीड़ा नहीं है, बल्कि एक गहरा और विनाशकारी कष्ट है। सांसारिक अर्थ में, यह उन लोगों को संदर्भित कर सकता है जो द्वेष, अन्याय के साथ कार्य करते हैं, या धर्म में बाधा डालते हैं। भक्तों के लिए, इसका अर्थ बाहरी बाधाओं और दुर्भावनापूर्ण शक्तियों को दूर करना है जो उनके मार्ग में बाधा डालती हैं।

आंतरिक शत्रुओं का विनाशक गहरे, आध्यात्मिक स्तर पर, "शत्रु" आध्यात्मिक साधक के आंतरिक विरोधियों को संदर्भित करते हैं, जैसे अज्ञान (अविद्या), अहंकार (अहंकार), वासना (काम), क्रोध (क्रोध), लालच (लोभ), और आसक्ति (मोह)। कालभैरव, अपनी प्रचंड शुद्धिकारी ऊर्जा के माध्यम से, इन आंतरिक अशुद्धियों को जला देते हैं। वह इन नकारात्मक गुणों को "ताप" (तापन) देते हैं,

लाक्षणिक रूप से उन्हें तब तक जलाते हैं जब तक वे समाप्त नहीं हो जाते, जिससे आध्यात्मिक प्रगति और मुक्ति में सहायता मिलती है। उनका उग्र पहलू आंतरिक शुद्धि के लिए एक उपकरण बन जाता है, साधक के भीतर एक तीव्र, परिवर्तनकारी प्रक्रिया का निर्माण करता है।

दुष्टों का दंडक शिव के एक रूप के रूप में, विशेष रूप से उनके भैरव रूप में, वह ब्रह्मांडीय न्याय के एक दुर्जेय अवतार हैं। इसलिए, "तापन" उन लोगों को कठोर दंड देने में उनकी भूमिका को भी दर्शाता है जो पाप करते हैं या ब्रह्मांडीय नियमों का उल्लंघन करते हैं। उनका कष्ट संतुलन और अनुशासन बहाल करने का एक साधन है।

तीव्रता का प्रतीक "तापन" शब्द तीव्र ऊर्जा और आध्यात्मिक अग्नि को भी दर्शाता है। यह शक्तिशाली ऊर्जा नकारात्मकता को जला देती है, एक परिवर्तनकारी शक्ति का प्रतीक है जो शुद्ध करती है और प्रकाशित करती है। धर्म के शत्रुओं के लिए, यह तीव्रता विनाशकारी है; भक्तों के लिए, यह एक शुद्धिकारी अग्नि है जो मुक्ति की ओर ले जाती है।

777. शनये

जो धीरे चलते हैं, शनि ग्रह को नमन, जो कर्मों के फल प्रदान करते हैं।

विस्तार : शनै (या इसके चतुर्थी रूप में शनये) नाम सीधे शनि ग्रह (शनि या शनैश्वर) को संदर्भित करता है और हिंदू विचार में ब्रह्मांडीय न्याय, समय और कर्म के प्रतिशोध की गहरी दार्शनिक समझ को समाहित करता है।

धीमी गति से चलने वाला संस्कृत शब्द "शनैः" का शाब्दिक अर्थ है "धीरे-धीरे" या "धीरे-धीरे।" यह सीधे शनि ग्रह को शनि नाम देता है, क्योंकि अन्य ग्रहों की तुलना में रात के आकाश में इसकी अपेक्षाकृत धीमी दृश्य गति होती है। शनि को सूर्य के चारों ओर एक परिक्रमा पूरी करने में लगभग 29.5 पृथ्वी वर्ष लगते हैं, प्रत्येक राशि में लगभग 2.5 वर्ष बिताते हैं, इस प्रकार इसे "धीमी गति से चलने वाला" उपनाम मिलता है।

कर्म और न्याय का प्रतीक वैदिक ज्योतिष (ज्योतिष) में, शनि को सार्वभौमिक रूप से कर्म (कारण और प्रभाव का नियम), धर्म (धार्मिक आचरण), अनुशासन, कड़ी मेहनत, पीड़ा, सीमाएं और दीर्घायु से जुड़ा ग्रह माना जाता है। भगवान शिव, अपने उग्र रूपों जैसे कालभैरव में, शनि सहित सभी ग्रह देवताओं (ग्रहों) के सर्वोच्च शासक हैं। इसलिए, कालभैरव को कर्मों के फल का अंतिम प्रदाता या वितरक माना जाता है, जैसा कि शनि द्वारा दर्शाया गया है।

कर्म फल का प्रदाता "कर्मों का फल प्रदान करता है" कहने से यह स्वीकार किया जाता है कि कालभैरव, शनि के माध्यम से, इस जीवन में किसी के संचित कर्मों - अच्छे और बुरे दोनों - के प्रकटीकरण का आयोजन करते हैं। शनि का प्रभाव, हालांकि अक्सर कठोर या चुनौतीपूर्ण माना जाता है, अंततः उपचारात्मक और न्यायपूर्ण होता है। शनि के प्रभाव में चुनौतियाँ यादृच्छिक पीड़ा नहीं हैं, बल्कि विकास, आत्म-अनुशासन और कर्म ऋणों के समाधान के अवसर हैं। कालभैरव, सर्वोच्च सत्ता के रूप में, यह सुनिश्चित करते हैं कि न्याय सटीक और अनिवार्य रूप से किया जाए, जो ब्रह्मांडीय नियम की सावधानीपूर्वक और अटूट प्रकृति को दर्शाता है।

आध्यात्मिक महत्व "शनये" के रूप में कालभैरव की भक्ति विशेष रूप से उन लोगों द्वारा की जाती है जो शनि के प्रतिकूल प्रभावों, जिन्हें "शनि दोष" के रूप में जाना जाता है, से राहत चाहते हैं। यह समय और कर्म के अंतिम नियंत्रक से पीड़ा को कम करने, धैर्य स्थापित करने और भक्त को कठिन चरणों से मार्गदर्शन करने की अपील है, अंततः आध्यात्मिक शुद्धि और कर्म चक्रों से मुक्ति की ओर ले जाती है। उन्हें इस पहलू के रूप में स्वीकार करके, भक्त कर्मिक परिणामों की अनिवार्यता को स्वीकार करते हैं, जबकि उन्हें ज्ञान और लचीलेपन के साथ नेविगेट करने के लिए दिव्य कृपा चाहते हैं।

778. सूर्याय

सभी प्रकाश और जीवन के स्रोत, दिव्य सूर्य स्वरूप को नमन।

विस्तार : नाम 'सूर्य' दिव्य सूर्य को संदर्भित करता है, जो हमारे सौरमंडल का केंद्रीय खगोलीय पिंड है और हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान तथा आध्यात्मिकता में अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

प्रकाश और जीवन का स्रोत सूर्य वस्तुतः वह सूर्य है, जो पृथ्वी पर प्रकाश, गर्मी और जीवन का प्राथमिक स्रोत है। सूर्य के बिना, कोई वनस्पति जीवन नहीं होगा, कोई भोजन नहीं होगा, और इस प्रकार कोई भी जीवित प्राणी नहीं होगा जैसा कि हम उन्हें जानते हैं। इसलिए, उन्हें सभी स्थलीय अस्तित्व के परम पोषक और पालक के रूप में पूजा जाता है। यह पहलू कालभैरव को, सूर्य के रूप में, उस मूलभूत सिद्धांत के रूप में उनकी भूमिका से जोड़ता है जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखता है और जीवन को पोषित करता है।

अंधकार और अज्ञानता का नाशक जैसे भौतिक सूर्य अंधकार को दूर करता है, वैसे ही आध्यात्मिक सूर्य (इस संदर्भ में, कालभैरव सूर्य के रूप में) अज्ञानता (अविद्या) और भ्रम (माया) के अंधकार को दूर करता है। वह ज्ञान (ज्ञान) और आत्मज्ञान के मार्ग को प्रकाशित करता है। उनका प्रकाश दिव्य ज्ञान और सत्य का प्रतिनिधित्व करता है, जो वास्तविकता के वास्तविक स्वरूप को प्रकट करता है।

समय का प्रतीक सूर्य का दैनिक उदय और अस्त होने का चक्र, और राशि चक्र के माध्यम से उसकी वार्षिक यात्रा, समय के मूलभूत संकेतक हैं। इस पहलू में, कालभैरव सूर्य के रूप में स्वयं काल (समय) के रूप में अपनी पहचान पर जोर देते हैं। वह समय के बीतने, सृष्टि, संरक्षण और विघटन के चक्रों को नियंत्रित करते हैं - ये सभी सूर्य की गतिविधियों से अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं।

साक्षी और सर्वज्ञ सूर्य को अक्सर सार्वभौमिक साक्षी (सर्वसाक्षी) माना जाता है क्योंकि उनके सर्वव्यापी प्रकाश से कुछ भी वास्तव में छिपा नहीं रह सकता है। वह सभी कार्यों, विचारों और इरादों का अवलोकन करते हैं, जो दिव्य सर्वव्यापकता और पूर्ण जागरूकता का प्रतीक है। कालभैरव के रूप में, इसका अर्थ उनके पूर्ण ज्ञान और धर्मी निर्णय को बनाए रखने में उनकी भूमिका से है।

779. सर्वकर्मणे

ब्रह्मांड में सभी क्रियाओं के कर्ता और साक्षी (स्वरूप) को नमन।

विस्तार : नाम सर्वकर्मा (सर्वकर्मन् - कर्ता कारक एकवचन) एक गहन धार्मिक अवधारणा है जो सर्व और कर्मन् को जोड़ती है।

सर्व (Sarva): यह संस्कृत शब्द "सभी," "पूर्ण," "समस्त," या "सार्वभौमिक" को दर्शाता है। यह समग्रता को इंगित करता है।

कर्मन् (Karman): यह शब्द बहुआयामी है, जो "कार्य," "कृत्य," "कर्म," "अनुष्ठानिक क्रिया," "भाग्य," या "कार्यों के परिणाम" को संदर्भित करता है। एक दार्शनिक संदर्भ में, इसमें कारण और प्रभाव का पूरा चक्र शामिल है।

सभी कार्यों का कर्ता (निर्माता और कर्ता) सर्वकर्मा के रूप में, कालभैरव ब्रह्मांड में सभी कार्यों के परम प्रेरक और कर्ता हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे प्रत्येक घटना में प्रत्यक्ष, सूक्ष्म-स्तरीय हस्तक्षेप करते हैं, बल्कि यह कि सभी कार्य अंततः उनकी ब्रह्मांडीय इच्छा और शक्ति से उत्पन्न होते हैं, उनके द्वारा पोषित होते हैं, और उनमें विलीन हो जाते हैं। वे आदिम प्रेरक हैं, अकारण कारण हैं, जिनसे सभी गति और गतिविधि उत्पन्न होती है। प्रत्येक अनुष्ठान, प्रत्येक प्राकृतिक प्रक्रिया, प्रत्येक विचार, शब्द और कर्म, अंततः उनका स्रोत और स्वीकृति उन्हीं में है।

सभी कार्यों का साक्षी (सर्वज्ञ द्रष्टा) कर्ता होने के अलावा, वे सभी कार्यों के शाश्वत, अपरिवर्तनीय साक्षी (साक्षी) भी हैं। यह पहलू उनकी सर्वव्यापकता और सर्वज्ञता पर जोर देता है। ब्रह्मांड में कुछ भी नहीं, कोई भी कार्य नहीं, विचार या भावना की कोई सूक्ष्म गति नहीं, उनकी जागरूकता से बच सकती है। वे निष्पक्ष, दिव्य पर्यवेक्षक हैं जो कर्म के unfolding को देखते हैं बिना उसमें उलझे हुए। यह भूमिका ब्रह्मांडीय न्याय सुनिश्चित करती है, क्योंकि सभी कार्य और उनके परिणाम उन्हें पूरी तरह से ज्ञात होते हैं।

कर्म का ही अवतार (ब्रह्मांडीय नियम) गहरे अर्थ में, सर्वकर्मा का अर्थ यह भी हो सकता है कि वे स्वयं कर्म के सिद्धांत हैं - क्रिया और प्रतिक्रिया का ब्रह्मांडीय नियम जो ब्रह्मांड को नियंत्रित करता है। वे न्याय और कारण और प्रभाव के जटिल जाल का प्रतीक हैं जो संतुलन और व्यवस्था सुनिश्चित करता है। भक्तों के लिए, भैरव को सर्वकर्मा के रूप में समझना उनके कार्यों के प्रति सावधानी की भावना पैदा करता है, क्योंकि वे लगातार दिव्य दृष्टि के अधीन हैं और उन अपरिवर्तनीय नियमों के अधीन हैं जिन्हें वे मूर्त रूप देते हैं।

780. सर्वलोकप्रजापतये

समस्त लोकों के सभी प्राणियों के स्वामी और जनक को नमन।

विस्तार : नाम सर्वलोकप्रजापतये एक गहन संस्कृत यौगिक शब्द है जो कालभैरव के सर्वोच्च ब्रह्मांडीय अधिकार और रचनात्मक शक्ति को प्रकट करता है। यह तीन महत्वपूर्ण तत्वों से बना है: सर्व, लोक और प्रजापति।

सर्व (Sarva): इसका अर्थ है "सभी," "पूर्ण," या "समस्त।" यह उनके प्रभुत्व की पूर्ण और सर्वव्यापी प्रकृति पर जोर देता है।

लोक (Loka): यह "लोक," "क्षेत्र," या "अस्तित्व के तल" को संदर्भित करता है। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, कई लोक हैं, जिनमें पृथ्वी, स्वर्गीय और पाताल लोक शामिल हैं। "सर्वलोक" इसलिए सभी संभावित मौजूदा ब्रह्मांडों और आयामों को दर्शाता है।

प्रजापति (Prajāpati): यह एक महत्वपूर्ण उपाधि है, जिसका अर्थ है "सृष्टि के स्वामी," "प्राणियों के जनक," या "प्राणियों के निर्माता।" वैदिक परंपरा में, प्रजापति को अक्सर ब्रह्मा, सृष्टिकर्ता देवता के साथ पहचाना जाता है। हालांकि, जब इसे शिव या भैरव पर लागू किया जाता है, तो यह दर्शाता है कि वे ब्रह्मा के भी परम स्रोत और निर्माता हैं, या कि वे सृष्टि, पालन और संहार के सभी पहलुओं को समाहित करते हैं।

परम सृष्टिकर्ता और पालक (The Ultimate Creator and Sustainer) सर्वलोकप्रजापति के रूप में, कालभैरव को सभी कल्पनीय लोकों और अस्तित्व के तलों में सभी जीवित प्राणियों के आदिम और परम निर्माता के रूप में चित्रित किया गया है। वे केवल एक शासक नहीं हैं, बल्कि वह स्रोत हैं जहाँ से सभी जीवन उत्पन्न होता है। यह उन्हें पारंपरिक पौराणिक त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) से ऊपर उठाता है, यह मानकर कि वे मूलभूत सिद्धांत हैं जिससे रचनात्मक शक्तियाँ भी उत्पन्न होती हैं।

सर्वव्यापी अधिकार (All-Encompassing Authority) "सर्वलोक" शब्द इस बात पर जोर देता है कि उनकी रचनात्मक और शासी शक्ति किसी एक ब्रह्मांड या आयाम तक सीमित नहीं है। वे संपूर्ण ब्रह्मांड के स्वामी हैं, जिसमें सभी आध्यात्मिक, खगोलीय और स्थलीय क्षेत्र, और उनमें सभी ज्ञात और अज्ञात प्राणी शामिल हैं।

आध्यात्मिक महत्व (Metaphysical Significance) दार्शनिक रूप से, यह नाम कालभैरव को सभी सृष्टि के अकृत स्रोत, परम चेतना के रूप में इंगित करता है जो विविधता के रूप में प्रकट होती है। वे निर्गुण ब्रह्म हैं जिससे सभी सगुण अस्तित्व उत्पन्न होते हैं। उन्हें सर्वलोकप्रजापति के रूप में नमन करके, व्यक्ति हर उस चीज़ के दिव्य मूल के रूप में उनकी सर्वोच्च, अचूक और शाश्वत भूमिका को स्वीकार करता है जो मौजूद है।

781. सिद्धाय

सिद्ध स्वरूप, जो शाश्वत रूप से पूर्ण हैं, उनको नमन।

विस्तार : कालभैरव के संदर्भ में सिद्ध (सिद्धाय) नाम परम पूर्णता और सिद्ध प्राप्ति की स्थिति को दर्शाता है। हिंदू परंपराओं में, विशेष रूप से योग, तंत्र और शैव धर्म में, सिद्ध शब्द गहरा अर्थ रखता है।

सिद्ध प्राणी (The Perfected Being) सिद्ध का शाब्दिक अर्थ है "पूर्ण", "सिद्ध", "संतुष्ट", या "वह जिसने एक लक्ष्य प्राप्त किया है"। इस अर्थ में, कालभैरव पूर्ण पूर्णता के प्रतीक हैं। वह पूर्णता के लिए प्रयास नहीं कर रहे हैं; वह स्वयं पूर्णता हैं। इसका तात्पर्य है कि वह सभी अपूर्णताओं, सीमाओं और कारण और प्रभाव (कर्म) के चक्र से मुक्त हैं जो सामान्य प्राणियों को बांधता है।

शाश्वत रूप से सिद्ध (The Eternally Accomplished One) यह पहलू शिव के अंतर्निहित स्वभाव को संदर्भित करता है। मनुष्यों के विपरीत जो आध्यात्मिक अभ्यास के माध्यम से सिद्धियों (अलौकिक शक्तियों या प्राप्तियों) के लिए प्रयास करते हैं, कालभैरव सभी सिद्धियों के स्रोत और स्वामी हैं। उनकी उपलब्धियां अर्जित नहीं की जाती हैं बल्कि उनके दिव्य अस्तित्व के लिए आंतरिक हैं। वह परम योगी, सर्वोच्च तांत्रिक देवता हैं, जिनका अस्तित्व के सभी पहलुओं पर पूर्ण नियंत्रण है।

आध्यात्मिक उपलब्धि का प्रतीक (Embodiment of Spiritual Attainment) साधकों के लिए, सिद्ध कालभैरव की पूजा का अर्थ आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त करने, बाधाओं को दूर करने और सिद्धियों को प्राप्त करने की शक्ति का आह्वान करना है। वह अपने भक्तों को, जो आध्यात्मिक अनुशासन के मार्ग पर चलते हैं, मुक्ति (मोक्ष) और सभी प्रकार की सफलता, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों, प्रदान करते हैं।

परम ज्ञान का प्रतीक (Symbol of Ultimate Enlightenment) यह नाम परम प्रबुद्ध प्राणी के रूप में उनकी भूमिका को भी इंगित करता है, जो द्वैत से परे, समय और स्थान से परे की स्थिति का प्रतीक है, जहाँ परम सत्य और वास्तविकता पूरी तरह से महसूस की जाती है। वह सिद्धों के उपदेशक हैं, जो आत्म-साक्षात्कार के मार्ग पर चलने वालों को उनकी अपनी सिद्ध अवस्था की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

782. सर्वेश्वराय

समस्त अस्तित्व के सर्वोच्च स्वामी और प्रभु (सर्वेश्वर) को नमन।

विस्तार : सर्वेश्वराय नाम दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: सर्व और ईश्वर।

• सर्व (Sarva): इस शब्द का अर्थ है "सभी," "संपूर्ण," "पूर्ण," या "सार्वभौमिक।" इसमें बिना किसी अपवाद के सब कुछ शामिल है - सृष्टि, विनाश, संरक्षण, सजीव और निर्जीव, व्यक्त और अव्यक्त की संपूर्णता।

• ईश्वर (Īśvara): इस शब्द का अनुवाद "भगवान," "स्वामी," "शासक," "नियंत्रक," या "परम सत्ता" के रूप में होता है। यह उस व्यक्ति को दर्शाता है जिसके पास सभी चीजों पर पूर्ण शक्ति, अधिकार और संप्रभुता है।

सभी के परम स्वामी इसलिए, सर्वेश्वराय का अर्थ है "सभी के परम स्वामी।" भगवान कालभैरव, सर्वेश्वर के रूप में, पूरे ब्रह्मांड पर अंतिम अधिकार और प्रभुत्व का प्रतीक हैं। यह नाम सर्वोच्च शासी सिद्धांत के रूप में उनकी स्थिति पर जोर देता है, वह जो सभी घटनाओं को व्यवस्थित करता है, सृष्टि और विनाश के भव्य ब्रह्मांडीय चक्रों से लेकर एक परमाणु के भीतर की सूक्ष्म गतिविधियों तक।

सार्वभौमिक संप्रभुता यह उपाधि उनकी अद्वितीय और निर्विवाद संप्रभुता पर जोर देती है। उनसे ऊपर कोई शक्ति या सत्ता नहीं है; वह अन्य सभी देवताओं, शक्तियों और प्राणियों का स्रोत और अंतिम नियंत्रक है। उनकी इच्छा सर्वोच्च है, और उनका आदेश पूर्ण है।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था का प्रतीक सभी अस्तित्व के स्वामी के रूप में, कालभैरव ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) को बनाए रखते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि सभी प्रक्रियाएं उनके अंतर्निहित स्वभाव और दिव्य कानून के अनुसार हों। यह प्रभुत्व काल (समय) तक फैला हुआ है, यह दर्शाता है कि अंतिम संहारक भी स्वयं अंतिम शासक है।

दार्शनिक महत्व दार्शनिक रूप से, कालभैरव को सर्वेश्वर के रूप में पहचानना एक ही, व्यापक दिव्य चेतना के तहत सभी अस्तित्व की एकता को स्वीकार करना है। यह एक अद्वैत (अद्वैत) समझ की ओर इशारा करता है जहाँ सभी बहुलता अंततः एक सर्वोच्च वास्तविकता में विलीन हो जाती है, जो इस संदर्भ में, कालभैरव है। सर्वेश्वर के प्रति भक्ति परम और सर्वव्यापी दिव्य इच्छा के प्रति समर्पण का एक कार्य है।

783. स्वस्तये

सभी कल्याण और सौभाग्य के परम स्रोत को नमन।

विस्तार : "स्वस्तये" नाम, जो संस्कृत शब्द "स्वस्ति" से लिया गया है, हिंदू दर्शन और आध्यात्मिकता में अत्यधिक महत्वपूर्ण है, जो कल्याण, शुभता और सौभाग्य के अंतिम सिद्धांतों का प्रतीक है।

व्युत्पत्ति और अर्थ "स्वस्ति" शब्द "सु" (अच्छा, ठीक) और "अस्ति" (है, होना) का एक यौगिक है। इस प्रकार, इसका मूल अर्थ "यह अच्छा है," "कल्याण," "सौभाग्य," "शुभता," "शांति," और "स्वास्थ्य" है। इसका उपयोग अक्सर शांति और समृद्धि के लिए एक आह्वान के रूप में किया जाता है।

कल्याण का परम स्रोत जब भैरव को "स्वस्तये" के रूप में संबोधित किया जाता है, तो यह दर्शाता है कि वे केवल कल्याण के दाता नहीं हैं, बल्कि सभी स्वस्ति के साक्षात् स्वरूप और परम स्रोत हैं। वे ब्रह्मांडीय तंत्रों का संचालन करते हैं जो सभी प्राणियों के लिए सद्भाव, स्वास्थ्य, समृद्धि और आध्यात्मिक शांति की ओर ले जाते हैं। यह भौतिक धन से परे मानसिक शांति, शारीरिक स्वास्थ्य और आध्यात्मिक विकास को भी समाहित करता है।

विपत्ति का नाश करने वाले सभी अच्छाई के स्रोत के रूप में, वे स्वाभाविक रूप से सभी बुराई या अशुभ को दूर करते हैं। उनकी उपस्थिति या आह्वान बाधाओं, दुर्भाग्य, बीमारियों और नकारात्मक प्रभावों को दूर करता है, जिससे एक स्थायी सकारात्मक स्थिति आती है। यह एक भयंकर फिर भी परोपकारी देवता के रूप में उनके सुरक्षात्मक कार्य का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

सभी लोकों में शुभता यह नाम इस बात पर जोर देता है कि भैरव शुभता का मूलभूत सिद्धांत हैं जो पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त है। सबसे बड़े खगोलीय पिंडों से लेकर सबसे छोटे उप-परमाणु कणों तक, अस्तित्व, विकास और विकास को संभव बनाने वाली अंतर्निहित "अच्छाई" उनसे उत्पन्न होती है। वे सुनिश्चित करते हैं कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) बनी रहे, जिससे सार्वभौमिक कल्याण हो।

दार्शनिक महत्व स्वस्ति की अवधारणा आवश्यक अच्छाई और एक दिव्य इच्छा द्वारा शासित ब्रह्मांड के विचार से जुड़ी है जो अंततः सभी के कल्याण की तलाश करती है। भैरव को "स्वस्तये" के रूप में स्वीकार करना जीवन की स्पष्ट कठोरता के बावजूद इस अंतर्निहित ब्रह्मांडीय परोपकार में विश्वास की पुष्टि है। इसका तात्पर्य है कि उनका भयंकर रूप भी अंततः अज्ञानता और भ्रम को समाप्त करके एक उच्च आध्यात्मिक भलाई और कल्याण स्थापित करने के उद्देश्य को पूरा करता है।

784. स्वस्तिकृते

सभी शुभता के निर्माता और लाने वाले (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : स्वस्तिकृते नाम संस्कृत शब्दों 'स्वस्ति' और 'कृत' से लिया गया है।

स्वस्ति (SVASTI): यह शुभ शब्द कई गहन अर्थों को समाहित करता है: • कल्याण और भलाई: यह "कल्याण," "सौभाग्य," "समृद्धि," "सफलता," और "स्वास्थ्य" को दर्शाता है। यह पूर्ण सामंजस्य, शांति और आध्यात्मिक उत्थान की स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है। • शुभता: स्वस्ति 'स्वस्तिक' शब्द का मूल है, जो विभिन्न प्राचीन संस्कृतियों, विशेष रूप से हिंदू धर्म में पाए जाने वाले सौभाग्य, समृद्धि और ब्रह्मांडीय व्यवस्था का एक पवित्र प्रतीक है। इसकी चार भुजाएँ चार दिशाओं, चार वेदों, या अस्तित्व की चक्रीय प्रकृति का प्रतिनिधित्व करती हैं। • आशीर्वाद: इसका अर्थ एक आशीर्वाद या एक मंगलकामना भी है, जो दिव्य कृपा का आह्वान करता है।

कृत (KṚT): यह प्रत्यय, 'कृ' (करना, बनाना, सृजित करना) धातु से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है: • निर्माता/कर्ता: वह जो बनाता है, करता है या पूरा करता है। • प्रदाता/देने वाला: वह जो कुछ उत्पन्न करता है या प्रदान करता है।

समस्त शुभता का निर्माता (The Creator of All Auspiciousness) इस प्रकार, स्वस्तिकृते का अर्थ है "वह जो स्वस्ति का निर्माण करता है," या "समस्त शुभता का प्रदाता।" यह नाम कालभैरव की भूमिका को केवल एक संहारक के रूप में नहीं, बल्कि ब्रह्मांड में सभी अच्छी, परोपकारी और शुभ चीजों के अंतिम स्रोत और प्रदाता के रूप में उजागर करता है।

विनाश में शुभता (Auspiciousness in Destruction) जबकि भैरव अपने भयंकर रूप के लिए जाने जाते हैं, उनका विनाश अंततः शुभता का एक रूप है। वे भ्रम, अहंकार, नकारात्मकता और कर्म संबंधी अशुद्धियों को नष्ट करते हैं, जिससे मुक्ति, आध्यात्मिक विकास और सच्ची भलाई का मार्ग प्रशस्त होता है। उनका भयानक रूप इसलिए एक शुभ रूप है, क्योंकि यह परम आनंद के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करता है।

दिव्य विधान (Divine Providence) यह नाम कालभैरव के दिव्य विधान और उनके परोपकारी स्वभाव को रेखांकित करता है, भक्तों को आश्वस्त करता है कि जीवन की चुनौतियों के बावजूद, वे अंतर्निहित शक्ति हैं जो सभी चीजों को परम कल्याण और आध्यात्मिक पूर्णता की स्थिति की ओर ले जाती हैं। वे ऐसे हैं जिनकी उपस्थिति यह सुनिश्चित करती है कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था उन लोगों के लिए अनुकूल परिणाम दे जो उनमें शरण लेते हैं।

785. स्वस्तिभुजे

उन को नमन जो सभी शुभता का आनंद लेते हैं और उसमें भाग लेते हैं।

विस्तार : स्वस्तिभुज नाम दो संस्कृत शब्दों से बना है: स्वस्ति और भुज।

स्वस्ति: यह शब्द "कल्याण," "भलाई," "भाग्य," "समृद्धि," "सफलता," और "शुभता" को दर्शाता है। इसका उपयोग अक्सर सौभाग्य और शांति के लिए एक आह्वान के रूप में किया जाता है – "सब अच्छा हो।"

भुजः इस मूल क्रिया का अर्थ है "खाना," "आनंद लेना," "भाग लेना," "अनुभव करना," "रक्षा करना," या "शासन करना।"

शुभता का आनंद लेने वाला इस प्रकार स्वस्ति-भुज का शाब्दिक अर्थ है "जो स्वस्ति का आनंद लेता है," या "जो शुभता में भाग लेता है।" यह इंगित करता है कि भगवान कालभैरव ब्रह्मांड में सभी अच्छी, स्वास्थ्यवर्धक और लाभकारी चीजों के अंतिम प्राप्तकर्ता और उत्तराधिकारी हैं। उनका स्वभाव ऐसा है कि वे आंतरिक रूप से सभी सकारात्मक लौकिक ऊर्जाओं और परिणामों के साथ संरेखित हैं और उन्हें प्राप्त करते हैं।

सभी अच्छाई का स्रोत अधिक गहन रूप से, इसका तात्पर्य यह है कि वे केवल एक निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं हैं, बल्कि वास्तव में सभी शुभता के स्रोत और आयोजक हैं। सभी सौभाग्य, समृद्धि और कल्याण अंततः उनसे उत्पन्न होते हैं और उन्हीं में वापस प्रवाहित होते हैं। वे उस मूलभूत लौकिक व्यवस्था का प्रतीक हैं जो कल्याण और अच्छाई की अभिव्यक्ति सुनिश्चित करती है।

कल्याण के रक्षक "भुज" के अर्थ "रक्षा करना" या "शासन करना" को देखते हुए, स्वस्तिभुज का अर्थ "कल्याण के रक्षक" भी है। वे ब्रह्मांड की शुभ व्यवस्था की रक्षा करते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि लौकिक नियम समग्र कल्याण की ओर ले जाएं। वे धर्म का पालन करने वालों की रक्षा करते हैं और उन्हें समृद्धि की ओर ले जाते हैं।

दार्शनिक निहितार्थ यह नाम भैरव के भयंकर रूप के भीतर के विरोधाभास को रेखांकित करता है। जबकि वे अक्सर विनाश और समय के भयानक पहलुओं से जुड़े होते हैं, यह नाम उनकी अंतर्निहित परोपकारिता को प्रकट करता है। वे बाधाओं और नकारात्मक शक्तियों को ठीक उसी तरह नष्ट करते हैं ताकि एक ऐसा वातावरण स्थापित और बनाए रखा जा सके जहाँ शुभता फल-फूल सके। उनका विनाश अंततः अधिक कल्याण और लौकिक सद्भाव के लिए है।

786. स्वधायै

पितरों को की जाने वाली पवित्र यज्ञीय आहुति (स्वधा) के स्वरूप को नमन।

विस्तार : स्वधा नाम वैदिक अनुष्ठान और हिंदू परलोक विद्या में गहराई से निहित है, विशेष रूप से पूर्वजों (पितरों) के सम्मान से संबंधित है।

अर्थ और व्युत्पत्ति स्वधा शब्द का शाब्दिक अर्थ "आत्म-शक्ति," "अंतर्निहित प्रकृति," या "अपना तरीका" है। हालाँकि, अनुष्ठान के संदर्भ में, यह विशेष रूप से पितरों या पूजनीय पूर्वजों को दी जाने वाली आहुतियों, बलि या भोजन प्रसाद को संदर्भित करता है। ये प्रसाद दिवंगत आत्माओं की भलाई और मुक्ति के लिए आवश्यक हैं।

पवित्र प्रसाद कुछ ग्रंथों में स्वधा को एक देवी के रूप में व्यक्त किया गया है, जो पितरों की पत्नी हैं, जो पूर्वजों को प्रसाद पहुँचाती हैं। वर्तमान संदर्भ में, कालभैरव को स्वधा के रूप में पहचानना यह दर्शाता है कि वे स्वयं इन पैतृक प्रसादों का सार और प्राप्तकर्ता हैं। यह उनकी दिव्य शक्ति और स्वीकृति के माध्यम से है कि ये प्रसाद अपने इच्छित प्राप्तकर्ताओं तक पहुँचते हैं और उनके फल देते हैं।

पैतृक अनुष्ठानों के संरक्षक उन्हें स्वधा कहकर, हम स्वीकार करते हैं कि कालभैरव पैतृक अनुष्ठानों (श्राद्ध समारोहों) के परम संरक्षक और अधिष्ठाता देवता हैं। वे इन अनुष्ठानों की प्रभावकारिता सुनिश्चित करते हैं, पितरों की आध्यात्मिक यात्रा को सुगम बनाते हैं और उन्हें करने वाले वंशजों को आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

ब्रह्मांडीय संबंध यह नाम कालभैरव की भूमिका को केवल समय और विनाश के एक भयानक देवता के रूप में ही नहीं, बल्कि जीवन, मृत्यु और पैतृक वंश के चक्रों से जुड़ी एक मौलिक शक्ति के रूप में भी रेखांकित करता है। वे उस पवित्र सूत्र का प्रतीक हैं जो जीवितों को उनके पूर्वजों से जोड़ता है, पीढ़ियों में निरंतरता और आध्यात्मिक व्यवस्था सुनिश्चित करता है। वे पैतृक क्षेत्र के भरण-पोषण के पीछे का दिव्य सिद्धांत हैं।

787. वासवे

अच्छाई, तेज और धन के साक्षात स्वरूप को नमन।

विस्तार : वासवे (वासव) नाम गहरा अर्थ रखता है, संस्कृत में अर्थों की कई परतें हैं, जो सभी अच्छाई, चमक और प्रचुरता से जुड़े देवत्व के गुणों की ओर इशारा करती हैं।

अच्छाई का अवतार "वस" मूल से जिसका अर्थ है "निवास करना", वासव का अर्थ उस एक से हो सकता है जिसमें सभी अच्छे गुण पूर्ण रूप से निवास करते हैं। वह सद्गुण, पवित्रता और परोपकार का सार है। यह अच्छाई केवल निष्क्रिय नहीं है बल्कि सक्रिय है, जो भक्तों को धार्मिकता की ओर मार्गदर्शन करती है और नकारात्मकता को दूर करती है।

चमक और दीप्ति एक और व्याख्या "वस" को "चमकना" या "उज्ज्वल होना" के अर्थ से जोड़ती है। इस संदर्भ में, वासव उस एक को दर्शाता है जो अत्यंत चमकीला, दीप्तिमान और तेजस्वी है। यह चमक केवल भौतिक प्रकाश नहीं है बल्कि आध्यात्मिक प्रकाश है - ज्ञान, बुद्धि और दिव्य चेतना का प्रकाश जो अज्ञान और अंधकार को दूर करता है। यह ब्रह्मांड में सभी प्रकाश के अंतिम स्रोत के रूप में उसके स्व-प्रकाशमान स्वरूप को दर्शाता है।

धन और प्रचुरता का दाता "वसु" का अर्थ धन, खजाना या संपत्ति भी है। इस प्रकार, वासव उस एक को संदर्भित करता है जो सभी प्रकार के धन का प्रतीक है और भौतिक और आध्यात्मिक दोनों तरह की समृद्धि का दाता है। इस धन में केवल मौद्रिक धन ही नहीं बल्कि सौभाग्य, स्वास्थ्य, कल्याण, आध्यात्मिक वरदान और सभी इच्छाओं की पूर्ति भी शामिल है। सभी प्रकार की प्रचुरता के नियंत्रक के रूप में, वह अपने भक्तों को वह सब कुछ प्रदान कर सकता है जिसकी उन्हें पूर्ण और संतोषजनक जीवन के लिए आवश्यकता है।

वसुओं के स्वामी ऐतिहासिक रूप से, वासव इंद्र का एक विशेषण भी है, जो वसुओं के प्रमुख हैं, जो वैदिक देवताओं का एक वर्ग है जो मौलिक शक्तियों और समृद्धि से जुड़े हैं। जबकि कालभैरव शिव का एक रूप हैं, उनके नाम अक्सर अन्य देवताओं के गुणों को समाहित करते हैं, जो उनके सर्व-समावेशी स्वरूप को दर्शाते हैं। इस संदर्भ में, यह कालभैरव के सर्वोच्च अधिकार और धन, प्रकाश और अच्छाई लाने वाली सभी दिव्य शक्तियों के स्वामी और नियंत्रक के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देता है।

कुल मिलाकर, वासवे कालभैरव को केवल एक भयानक संहारक के रूप में ही नहीं, बल्कि एक परोपकारी देवता के रूप में भी चित्रित करता है जो सभी सकारात्मक गुणों का स्रोत और अवतार है, जो मार्ग को प्रकाशित करता है और उन लोगों को समृद्धि प्रदान करता है जो उनकी शरण लेते हैं।

788. वसुमनसे

जिनका मन परोपकारी, दयालु और उत्कृष्ट है, उन्हें नमन।

विस्तार : वसुमनसे (या वसुमनस) नाम दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: वसु और मनस।

• वसु (Vasu): इस शब्द के अर्थ की कई परतें हैं। इसका अर्थ है "उत्कृष्ट," "अच्छा," "लाभकारी," "धन," "खजाना," या "तेजस्वी।" देवताओं के संदर्भ में, वसु वैदिक देवताओं का एक वर्ग हैं जो प्राकृतिक घटनाओं और ब्रह्मांडीय धन के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए, वसु स्वाभाविक रूप से अच्छी, मूल्यवान और चमकदार किसी चीज़ को दर्शाता है।

• मनस (Manas): यह "मन," "बुद्धि," "हृदय," या विचार, भावना और धारणा की संकाय को संदर्भित करता है।

परोपकारी और उत्कृष्ट मन (प्राथमिक अर्थ) जब संयुक्त किया जाता है, तो वसुमनसे भगवान कालभैरव को ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित करता है जिसके पास स्वाभाविक रूप से उत्कृष्ट, अच्छा, परोपकारी और शुद्ध मन है। यह एक दिव्य चेतना को इंगित करता है जो मूल रूप से शुभता, करुणा और ज्ञान में निहित है। अपने भयानक बाहरी रूप के बावजूद, उनका आंतरिक स्वभाव, उनकी मानसिक संकाय, सभी प्राणियों के प्रति गहरी दया और परोपकारिता में से एक है। वह दुर्भावनापूर्ण नहीं हैं बल्कि परम भलाई के स्थान से कार्य करते हैं।

धन और तेज के स्रोत के रूप में मन वसु के अर्थ को "धन" या "तेज" के रूप में मानते हुए, वसुमनसे यह भी सुझाव दे सकता है कि उनका मन आध्यात्मिक धन, ज्ञान और दिव्य प्रकाश का एक अटूट स्रोत है। उनके विचार और इरादे शुद्ध और उज्ज्वल हैं, जो पूरे ब्रह्मांड में लाभकारी ऊर्जा का विकिरण करते हैं। यह "धन" भौतिक नहीं बल्कि आध्यात्मिक है - करुणा, न्याय और वैराग्य का धन।

द्वंद्वों से परे यह गुण दिव्य के सर्वोच्च स्वरूप की ओर इशारा करता है, जहाँ दिखावे (कालभैरव का उग्र पहलू) भ्रामक हो सकते हैं। जबकि वह बुराई को दंडित करने और ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखने के लिए भयावह लग सकते हैं, यह क्रिया एक ऐसे मन से उत्पन्न होती है जो अंततः परोपकारी है और सभी के लिए सर्वोच्च भलाई चाहता है। "उत्कृष्ट मन" पूर्ण समझ और समभाव की स्थिति को इंगित करता है, सभी द्वंद्वों और आसक्तियों को पार करता है।

789. सत्याय

जो परम सत्य हैं, पूर्ण और अपरिवर्तनीय वास्तविकता हैं, उनको नमन।

विस्तार : "सत्" संस्कृत मूल से व्युत्पन्न नाम सत्य, अस्तित्व, वास्तविकता और सत्य को दर्शाता है। कालभैरव पर लागू होने पर, यह उन्हें परम, निरपेक्ष और अपरिवर्तनीय वास्तविकता के अवतार के रूप में घोषित करता है।

परम सत्य सत्य केवल तथ्यात्मक शुद्धता नहीं है, बल्कि वह पारलौकिक और शाश्वत सिद्धांत है जो सभी अस्तित्व का आधार है। यह प्रकट संसार की द्वैतता और क्षणभंगुरता से परे, अनगढ़, अपरिवर्तनीय सत्य है। कालभैरव, सत्य के रूप में, वह नींव हैं जिस पर सभी सापेक्ष सत्य निर्भर करते हैं, और वह अंतिम गंतव्य हैं जहाँ सभी भ्रम घुल जाते हैं। वह वह सत्य हैं जो सृष्टि और संहार से परे बना रहता है।

अपरिवर्तनीय वास्तविकता निरंतर परिवर्तन और क्षणभंगुरता से चिह्नित ब्रह्मांड में, सत्य अपरिवर्तनीय, शाश्वत सार का प्रतिनिधित्व करता है। इस पहलू में कालभैरव, वास्तविकता का दृढ़ और अटूट आधार हैं, जो समय, स्थान या कार्य-कारण से अप्रभावित हैं। वह अस्तित्व का अंतिम आधार हैं, वह आदिम सत्य हैं जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है और जिसमें वह अंततः लौटता है।

धर्म का अवतार सत्य धर्म (धार्मिकता, ब्रह्मांडीय नियम) के साथ भी गहराई से जुड़ा हुआ है। सत्य होना ब्रह्मांडीय व्यवस्था और ब्रह्मांड को नियंत्रित करने वाले प्राकृतिक नियम को मूर्त रूप देना है। कालभैरव इस सत्य को बनाए रखते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि ब्रह्मांडीय न्याय और व्यवस्था बनी

रहे, भले ही संतुलन बहाल करने के लिए उनके भयंकर और विनाशकारी पहलुओं की आवश्यकता हो। उनका अस्तित्व ही सत्य की अटूट प्रकृति और अंततः विजयी होने की उसकी शक्ति का प्रमाण है।

आध्यात्मिक सार आध्यात्मिक साधक के लिए, कालभैरव को सत्य के रूप में ध्यान करना स्वयं के भीतर इस परम सत्य को साकार करने की आकांक्षा है। यह वास्तविक आत्म-ज्ञान (आत्म ज्ञान) की खोज और दिव्य का प्रत्यक्ष अनुभव है, जो अस्तित्व का विलक्षण, अद्वैत सत्य है। वह स्वयं, संसार और दोनों से परे परम वास्तविकता के सत्य को प्रकट करते हैं।

790. सर्वपापहराय

सभी पापों के सर्वोच्च निवारक और विनाशक (भैरव) को नमन।

विस्तार : सर्वपापहराय नाम एक गहन संस्कृत यौगिक शब्द है जो भगवान भैरव की सभी अपराधों और उनके कर्मिक परिणामों को मिटाने की परम शक्ति को सीधे संदर्भित करता है।

• सर्व (Sarva): "सभी," "प्रत्येक," "पूर्ण।" • पाप (Pāpa): "पाप," "अशुभ कर्म," "बुरा कर्म," "अपराध," "अधार्मिक कार्यों के कर्मिक परिणाम।" • हार (Hāra): "हरण करने वाला," "नष्ट करने वाला," "दूर करने वाला।"

पापों का परम संहारक (The Supreme Destroyer of Sins) यह नाम स्पष्ट रूप से कालभैरव को सभी प्रकार के पापों और उनके द्वारा उत्पन्न कर्मिक बोझ के परम निवारक के रूप में स्थापित करता है। हिंदू धर्म में, "पाप" केवल एक नैतिक उल्लंघन नहीं है, बल्कि एक ऐसा कार्य (मानसिक, मौखिक या शारीरिक) है जो धर्म के विरुद्ध जाता है, जिसके परिणामस्वरूप नकारात्मक कर्मिक छापें बनती हैं जो व्यक्ति को दुख और पुनर्जन्म के चक्रों से बांधती हैं। भैरव के प्रति भक्ति, विशेष रूप से मंत्र जप और सच्ची भेंट के माध्यम से, भक्तों को न केवल वर्तमान पापों से बल्कि पिछले कर्मिक संचय से भी मुक्ति दिलाने वाली मानी जाती है।

शुद्धि और मुक्ति (Purification and Liberation) उनका उग्र स्वरूप केवल दंड के लिए नहीं बल्कि कठोर शुद्धि के लिए भी है। पापों का उपभोग या विनाश करके, वे व्यक्ति को शुद्ध करते हैं, आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) का मार्ग प्रशस्त करते हैं। पापों को दूर करने का यह कार्य दिव्य कृपा का एक गहरा कार्य है, जो आत्मा को अपनी सीमाओं को पार करने और अपने सच्चे, शुद्ध स्वरूप के करीब जाने की अनुमति देता है। वह सभी नकारात्मक कर्मों के दिव्य भस्मक हैं।

आध्यात्मिक प्रगति में बाधाओं को दूर करना (Dispelling Obstacles to Spiritual Progress) पाप और उनके कर्मिक प्रभाव आध्यात्मिक मार्ग पर दुर्जेय बाधाओं के रूप में कार्य करते हैं। इन्हें दूर करके, भैरव भक्तों के लिए चेतना की उच्च अवस्थाओं, आंतरिक शांति और ईश्वर के साथ अंतिम मिलन प्राप्त करने का मार्ग प्रभावी ढंग से प्रशस्त करते हैं। इसलिए, उन्हें उन लोगों द्वारा आह्वान किया जाता है जो न केवल सांसारिक कल्याण बल्कि आध्यात्मिक शुद्धि और मुक्ति भी चाहते हैं।

791. हराय

महान हरण करने वाले, जो सभी पापों, दुखों और अज्ञान को बलपूर्वक हर लेते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : नाम हर (हराय) संस्कृत मूल "हृ" (hṛ) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "हरण करना," "दूर ले जाना," "नष्ट करना," या "ले जाना।" जब इसे शिव पर लागू किया जाता है, और विस्तार से कालभैरव पर, तो यह गहन धार्मिक और दार्शनिक अर्थों को व्यक्त करता है।

महान हरणकर्ता और संहारक हर के रूप में, कालभैरव परम "हरणकर्ता" या "संहारकर्ता" हैं। यह विनाशकारी पहलू केवल नकारात्मक नहीं है, बल्कि एक शुद्ध करने वाली और परिवर्तनकारी शक्ति है। वह हरण करते हैं और नष्ट करते हैं:

• पाप (Pāpa): वह सभी संचित नकारात्मक कर्मों और अपराधों को बलपूर्वक हटाते हैं, भक्त को उनके बंधनकारी प्रभावों से मुक्त करते हैं। • दुख (Duḥkha): वह पीड़ा, शोक और सभी प्रकार के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक दर्द को मिटाते हैं। • अज्ञान (Avidyā): यह शायद सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। अपने सच्चे दिव्य स्वरूप (अविद्या) का अज्ञान सभी दुखों और पुनर्जन्म का मूल कारण माना जाता है। हर भ्रम के पर्दे को हिंसक रूप से फाड़ देते हैं, जिससे सच्चा ज्ञान (विद्या) और मुक्ति (मोक्ष) प्राप्त होती है। • बंधन (Bandhana): वह सभी आसक्तियों और सीमाओं को दूर करते हैं जो व्यक्तिगत आत्मा को जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) से बांधती हैं।

बाधाओं को दूर करने वाले हर को आध्यात्मिक मार्ग पर और जीवन में सभी बाधाओं को दूर करने के लिए आह्वान किया जाता है। वह विकास और खुशी में बाधा डालने वाली हर चीज को समाप्त करके आध्यात्मिक प्रगति और भौतिक कल्याण के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं।

परिवर्तक पुराने और नकारात्मक को नष्ट करके, हर स्वाभाविक रूप से नए और सकारात्मक को सुगम बनाते हैं। उनका विनाश हमेशा सृजन और नवीनीकरण का अग्रदूत होता है। वह अशुद्धियों को दूर करके भक्त को परिवर्तित करते हैं, आध्यात्मिक विकास और ज्ञानोदय का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

शिव के पहचानकर्ता हर शिव के सबसे प्राचीन और प्रमुख विशेषणों में से एक है, जिसका वैदिक और पौराणिक साहित्य में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। जब कालभैरव को हर कहा जाता है, तो यह सर्वोच्च भगवान शिव के साथ उनकी अद्वैत पहचान को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है और विघटन के माध्यम से परम मुक्तिदाता के रूप में उनके कार्य पर प्रकाश डालता है।

792. सर्वादि

सभी वस्तुओं के आदि और उद्गम को नमन।

विस्तार : सर्वादाय नाम संस्कृत के शब्द सर्व और आदि से लिया गया है।

सर्व: इसका अर्थ है "सभी," "प्रत्येक," "पूर्ण," या "समस्त।" यह समग्रता को दर्शाता है, जिसमें वह सब कुछ शामिल है जो मौजूद है या जिसकी कल्पना की जा सकती है।

आदि: यह "आरंभ," "उत्पत्ति," "पहला," "आदिम," या "स्रोत" को दर्शाता है। यह उस मूलभूत बिंदु को संदर्भित करता है जिससे बाकी सब कुछ निकलता है।

आदिम कारण इस प्रकार सर्वादाय का अर्थ है "सभी का आरंभ" या "हर चीज की उत्पत्ति।" यह स्पष्ट रूप से भगवान शिव की भूमिका पर जोर देता है कि वे अजन्मे निर्माता हैं, वह परम स्रोत हैं जिससे संपूर्ण ब्रह्मांड, अपने सभी असंख्य रूपों, ऊर्जाओं और प्राणियों के साथ, उत्पन्न होता है। वे केवल सृष्टि का एक हिस्सा नहीं हैं, बल्कि उसके अस्तित्व का मूल आधार और कारण हैं।

प्रथम सिद्धांत यह नाम कालभैरव को ब्रह्मांडीय व्यवस्था में परम 'प्रथम सिद्धांत' (प्रथम तत्व) के रूप में स्थापित करता है। किसी भी अभिव्यक्ति, किसी भी भेद या किसी भी रूप से पहले, वे थे। वे परम, अविभाजित एकता हैं जिससे सारी विविधता उत्पन्न होती है। यह ब्रह्म की दार्शनिक अवधारणाओं से जुड़ता है जो एक निरपेक्ष, अद्वैत वास्तविकता है जो सभी का मूल है।

समय और स्थान से परे "सभी" के मूल होने के कारण, वे समय (काल) और स्थान (देश) के भी मूल हैं। इसलिए, वे स्वयं समय और स्थान की पारंपरिक सीमाओं से परे हैं, सभी लौकिक और स्थानिक अस्तित्व के शाश्वत, कालातीत और स्थानहीन स्रोत हैं।

उत्पत्ति के प्रति श्रद्धा सर्वादाय को नमन करना ब्रह्मांड के एकमात्र, स्व-अस्तित्व वाले कारण के रूप में दिव्य के गहन सत्य को स्वीकार करना है, जो उनकी अनंत शक्ति और इच्छा से उत्पन्न होने वाली सृष्टि का एक सतत और निरंतर कार्य है। यह उस परम वास्तविकता की पहचान है जो सभी

घटनाओं का आधार है।

793. सिद्धिदाय

सभी अलौकिक शक्तियों और सिद्धियों के उदार दाता को नमन।

विस्तार : सिद्धिदाय नाम सिद्धि और दाय का एक यौगिक है।

सिद्धि (Siddhi): इस संस्कृत शब्द का शाब्दिक अर्थ है "पूर्णता," "उपलब्धि," या "प्राप्ति।" आध्यात्मिक संदर्भ में, यह असाधारण शक्तियों, अलौकिक क्षमताओं या आध्यात्मिक उपलब्धियों को संदर्भित करता है। ये छोटी सिद्धियों (जैसे दूसरों के विचारों को जानना या हवा में उड़ना) से लेकर बड़ी सिद्धियों (जैसे सर्वज्ञता, सर्वशक्तिमत्ता, या पूर्ण मुक्ति) तक हो सकती हैं। अंततः, सर्वोच्च सिद्धि मोक्ष (जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति) है।

दाय (Dāya): का अर्थ है "देने वाला" या "प्रदान करने वाला।"

आध्यात्मिक शक्तियों का दाता काल भैरव, सिद्धिदाय के रूप में, सभी प्रकार की सिद्धियों के परम दाता हैं। जो भक्त उनकी ईमानदारी से पूजा करते हैं, विशेष रूप से तांत्रिक मार्ग पर चलने वाले, विभिन्न आध्यात्मिक शक्तियों को प्राप्त करने के लिए उनका आशीर्वाद चाहते हैं। वे तत्वों पर महारत, ठीक करने की क्षमता, गहन अंतर्दृष्टि, या कई अन्य असाधारण क्षमताओं को प्रदान कर सकते हैं। इसका तात्पर्य है कि वे चिकित्सकों के भीतर इन सुप्त क्षमताओं को खोलने की कुंजी रखते हैं।

उपलब्धियों और सफलता का अनुदान अलौकिक शक्तियों से परे, सिद्धिदाय प्रयासों में सफलता और समृद्धि प्रदान करने में उनकी भूमिका को भी दर्शाता है। वे बाधाओं को दूर करते हैं और प्रयासों की फल प्राप्ति सुनिश्चित करते हैं, व्यक्तियों को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करते हैं, चाहे वे भौतिक, बौद्धिक या आध्यात्मिक हों। इसमें सांसारिक उपलब्धियां, कलात्मक महारत, या शैक्षणिक pursuits में सफलता शामिल है।

परम सिद्धि: मोक्ष जबकि सांसारिक सिद्धियों की अक्सर तलाश की जाती है, भैरव द्वारा प्रदान की जाने वाली सिद्धि का उच्चतम रूप स्वयं मुक्ति (मोक्ष) है। अहंकार को भंग करके और भक्त को उनके सच्चे स्वरूप की अंतिम प्राप्ति की ओर ले जाकर, वे दुख और भौतिक दुनिया के साथ पहचान से स्वतंत्रता की सर्वोच्च उपलब्धि प्रदान करते हैं। इसलिए, सिद्धिदाय का आह्वान आध्यात्मिक प्रगति के साधनों और अंतिम लक्ष्य दोनों के लिए एक प्रार्थना है।

794. सिद्धये

आध्यात्मिक सिद्धि और पूर्णता के साक्षात् स्वरूप को नमन।

विस्तार : सिद्धि नाम आध्यात्मिक उपलब्धि, पूर्णता या योगिक अभ्यास और भक्ति के माध्यम से प्राप्त अलौकिक शक्ति को संदर्भित करता है। कालभैरव को सिद्धि के रूप में नमन करना इन चरम आध्यात्मिक अवस्थाओं के उनके स्वरूप पर जोर देता है।

पूर्णता का स्वरूप शैव मत में, सिद्धि न केवल आध्यात्मिक उपलब्धियों का प्रतिनिधित्व करती है, बल्कि व्यक्ति के अस्तित्व की परम पूर्णता का भी प्रतिनिधित्व करती है। कालभैरव केवल सिद्धियाँ प्रदान करने वाले नहीं हैं; वे स्वयं सिद्धि हैं। उन्हें प्राप्त करना सर्वोच्च आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त करना है।

आध्यात्मिक शक्तियों का स्रोत सिद्धियों को अक्सर असाधारण क्षमताओं या शक्तियों के रूप में समझा जाता है, जैसे कि दूरदर्शिता, उत्तोलन, या कोई भी रूप धारण करने की क्षमता। कालभैरव, सिद्धि के रूप में, वह स्रोत हैं जहाँ से ऐसी सभी शक्तियाँ उत्पन्न होती हैं। भक्त इन शक्तियों को

प्राप्त करने के लिए उनकी पूजा करते हैं, न कि सांसारिक लाभ के लिए, बल्कि अपनी आध्यात्मिक यात्रा पर उपकरण के रूप में, शिव तत्व (वास्तविकता/सत्य) के मार्गदर्शन में।

आध्यात्मिक प्राप्ति का लक्ष्य विशिष्ट शक्तियों से परे, सिद्धि परम आध्यात्मिक लक्ष्य का भी प्रतीक है: मुक्ति (मोक्ष) और दिव्य के साथ मिलन। कालभैरव को सिद्धि के रूप में ध्यान करके, एक भक्त स्वतंत्रता और बोध की इस दिव्य अवस्था के साथ विलीन होने की इच्छा रखता है। यह उन्हें सभी आध्यात्मिक प्रयासों और तपस्या का गंतव्य बनाता है।

सफलता के प्रदाता सिद्धि का अर्थ सफलता या उपलब्धि भी है। भैरव, सिद्धि के रूप में, अपने भक्तों को न केवल उनके आध्यात्मिक प्रयासों में बल्कि धार्मिक सांसारिक कार्यों में भी सफलता का आशीर्वाद देते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि उनके रास्ते बाधाओं से मुक्त हों और उनके प्रयास सफल हों।

795. सर्वावासाय

सभी प्राणियों के लिए अंतिम निवास और आश्रय स्थान स्वरूप को नमन।

विस्तार : सर्वावासाय नाम कालभैरव के लिए एक गहरा विशेषण है, जो संस्कृत शब्दों सर्व, आवास और आय से बना है।

- सर्व (Sarva): "सभी," "संपूर्ण," या "सार्वभौमिक।" यह पूर्णता और समग्रता को दर्शाता है।
- आवास (Aavāsa): "निवास," "आश्रय," "निवास स्थान," या "शरण।" इसका अर्थ उस स्थान से है जहाँ कुछ रहता है, विश्राम करता है या आश्रय पाता है।

परम निवास (The Ultimate Abode) इसलिए, सर्वावास का अर्थ है "सभी का निवास स्थान" या "वह जिसमें सभी निवास करते हैं।" यह कालभैरव को सभी अस्तित्व के परम आधार या नींव के रूप में इंगित करता है। प्रत्येक प्राणी, प्रत्येक घटना, प्रत्येक परमाणु और प्रत्येक चेतना अंततः उन्हीं में निहित है। वे केवल एक निर्माता नहीं हैं, बल्कि वह स्थान, आधार और सार भी हैं जिसके भीतर सब कुछ प्रकट होता है, विद्यमान रहता है और अंततः विलीन हो जाता है।

ब्रह्मांडीय समावेशिता (Cosmic Inclusivity) यह नाम उनके सर्व-समावेशी स्वभाव पर जोर देता है। जैसे अंतरिक्ष अपने भीतर सब कुछ समाहित करता है, वैसे ही कालभैरव, सार्वभौमिक निवास के रूप में, पूरे ब्रह्मांड को धारण करते हैं - विशालतम आकाशगंगाओं से लेकर सूक्ष्मतम उप-परमाणु कणों तक, उच्चतम देवताओं से लेकर निम्नतम प्राणियों तक। उनके बाहर कुछ भी मौजूद नहीं है; वे पात्र और पात्र में समाहित दोनों हैं।

शरण और आश्रय (Refuge and Shelter) आध्यात्मिक रूप से, एक भक्त के लिए, सर्वावास का अर्थ है कि कालभैरव परम आश्रय हैं। जब कोई सहायता, सुरक्षा या मुक्ति चाहता है, तो सभी प्राणी अंततः उन्हीं की ओर मुड़ते हैं, चाहे वे जानते हों या अनजाने में। वे संसार (जन्म और मृत्यु का चक्र) के तूफानों से आश्रय हैं और सभी आत्माओं के लिए अंतिम गंतव्य हैं।

सत्ता का आधार (The Ground of Being) दार्शनिक रूप से, यह शब्द ब्रह्म की वेदांतिक अवधारणा के साथ संरेखित है, जो परम वास्तविकता, सभी अस्तित्व का आधार (सत्), परम चेतना (चित्त), और परम आनंद (आनंद) है। कालभैरव, इस पहलू में, परम वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसमें सभी द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं, और सभी भेद एक विलक्षण, अविभाजित अस्तित्व में विलीन हो जाते हैं। वे परम घर हैं जहाँ सब कुछ लौट आता है।

796. चतुष्पथाय

जो चारों मार्गों के चौराहे पर स्थित हैं, सभी संभावित दिशाओं और गंतव्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : चतुष्पथाय (Catuṣpathāya) नाम संस्कृत के शब्दों 'चतुः' (चार) और 'पथ' (रास्ता या मार्ग) से लिया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "जो चार रास्तों के चौराहे पर है।" यह नाम अत्यधिक प्रतीकात्मक है और भगवान कालभैरव के स्वरूप और कार्य के कई गहरे पहलुओं को समाहित करता है।

दिशाओं और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के स्वामी भगवान कालभैरव को पारंपरिक रूप से सभी दिशाओं के संरक्षक (दिक्पाल) के रूप में पूजा जाता है, और "चार रास्ते" स्पष्ट रूप से मुख्य दिशाओं (उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम) को संदर्भित करते हैं। चौराहे पर होने के कारण, वे ब्रह्मांड के भीतर सभी गति, प्रगति और स्थानिक व्यवस्था के परम स्वामी और नियंत्रक हैं। उनकी अनुमति के बिना कुछ भी प्रवेश या बाहर नहीं निकल सकता है, जो अंतरिक्ष और गति पर उनके पूर्ण अधिकार को दर्शाता है।

पवित्र स्थानों और जीवन की यात्राओं के संरक्षक अधिक व्यावहारिक अर्थ में, चौराहे (चतुष्पथ) सीमांत स्थान होते हैं, जिन्हें अक्सर पवित्र और शक्तिशाली माना जाता है। वे अभिसरण और विचलन के बिंदु होते हैं, जहाँ रास्ते मिलते और अलग होते हैं। कालभैरव, चतुष्पथ के रूप में, इन महत्वपूर्ण जंक्शनों के संरक्षक हैं। यह मंदिरों, शहरों और यहाँ तक कि व्यक्तियों को उनके जीवन के महत्वपूर्ण मोड़ पर सुरक्षा प्रदान करने में उनकी भूमिका का प्रतीक है। वे यात्रियों और महत्वपूर्ण परिवर्तनों से गुजरने वालों की निगरानी करते हैं, उनकी यात्रा की अखंडता सुनिश्चित करते हैं।

नियतियों और विकल्पों के निर्णायक रूपक रूप से, "चार रास्ते" उन अनंत संभावनाओं, विकल्पों और नियतियों का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं जो व्यक्तियों के सामने आती हैं। जीवन स्वयं एक यात्रा है जिसमें कई चौराहे होते हैं। कालभैरव, इस केंद्रीय बिंदु पर, उस दिव्य चेतना का प्रतीक हैं जो इन जंक्शनों पर किए गए विकल्पों की देखरेख करती है और अक्सर सूक्ष्म रूप से प्रभावित करती है। वे उस ब्रह्मांडीय सिद्धांत का प्रतीक हैं जो इन विकल्पों के परिणामों को नियंत्रित करता है, कर्म और नियति के निर्णायक के रूप में कार्य करता है। उनकी उपस्थिति हमें याद दिलाती है कि असंख्य विकल्पों के बीच भी, एक व्यापक दिव्य व्यवस्था है।

द्वैत का अतिक्रमण चौराहा विरोधी दिशाओं और द्वैत के संश्लेषण का भी प्रतिनिधित्व करता है। इस अभिसरण पर अध्यक्षता करके, कालभैरव सभी द्वैतवादी धारणाओं का अतिक्रमण करते हैं। वे अच्छे और बुरे, सृजन और विनाश, लौकिक और शाश्वत के भेदों से परे हैं, क्योंकि वे अपने भीतर सभी संभावनाओं को समाहित करते हैं। वे परम वास्तविकता हैं जहाँ सभी भिन्न मार्ग अंततः ले जाते हैं।

इस प्रकार, कालभैरव को चतुष्पथ के रूप में नमस्कार करना उनकी सर्वव्यापी उपस्थिति, सभी दिक्काल पर उनकी संरक्षकता, और जीवन की प्रक्षेपवक्र और ब्रह्मांडीय व्यवस्था पर उनके परम अधिकार की स्वीकृति है।

797. संवत्सरकराय

संवत्सर (वर्षचक्र) के निर्माता को नमन।

विस्तार : संवत्सरकराय नाम संवत्सर और कर शब्दों का संयोजन है, जो गहन लौकिक और कालिक महत्व को दर्शाता है।

समय का चक्र (संवत्सर) • संवत्सर: वैदिक और हिंदू ब्रह्मांडीय समझ में, संवत्सर एक वर्ष है, लेकिन यह केवल समय की एक मनमानी इकाई से कहीं अधिक है। यह एक पूर्ण चक्र का प्रतिनिधित्व करता है, विशेष रूप से लगभग 361 दिनों का एक बृहस्पति वर्ष (बृहस्पति का चक्र), जो हिंदू चंद्र-

सौर कैलेंडर से जुड़ा है। व्यापक रूप से, यह सृष्टि, पालन और संहार की चक्रीय प्रकृति का प्रतीक है जो ब्रह्मांड को परिभाषित करती है। प्रत्येक संवत्सर का एक विशिष्ट नाम और विशेषताएँ होती हैं जो उस वर्ष के भीतर की घटनाओं को प्रभावित करती हैं।

निर्माता (कर) • कर: इस शब्द का अर्थ है "करने वाला," "बनाने वाला," या "निर्माता।"

चक्रों का निर्माता इसलिए, संवत्सरकराय उस सर्वोच्च सत्ता को दर्शाता है जो समय की लय और चक्रों को व्यवस्थित और स्थापित करती है। भगवान शिव, कालभैरव के अपने उग्र रूप में, काल (समय) के स्वामी हैं। "संवत्सरों के निर्माता" होने के नाते, वे केवल समय के निष्क्रिय पर्यवेक्षक नहीं हैं, बल्कि सक्रिय शक्ति हैं जो प्रत्येक कालिक चक्र को आरंभ, नियंत्रित और समाप्त करती हैं। यह समय पर उनकी पूर्ण संप्रभुता को इंगित करता है, सबसे छोटे क्षण से लेकर सबसे बड़े ब्रह्मांडीय युग (कल्प) तक।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था और पूर्वनियति यह नाम ब्रह्मांडीय व्यवस्था के परम वास्तुकार के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है, जहाँ प्रत्येक वर्ष, प्रत्येक ऋतु, प्रत्येक घटना समय के ताने-बाने में अंतर्निहित दिव्य इच्छा के अनुसार घटित होती है। यह पूर्वनियति और चक्रीय धर्म की गहरी भावना को दर्शाता है, जिसे उनके द्वारा स्थापित और बनाए रखा जाता है। भक्तों के लिए, यह इस बात पर जोर देता है कि जीवन की सभी घटनाएँ, चाहे वे शुभ हों या चुनौतीपूर्ण, काल के स्वामी द्वारा नियोजित एक बड़ी दिव्य योजना का हिस्सा हैं।

798. श्रीमते

जो महिमामय, समृद्ध और सभी दिव्य वैभवों (श्री) से संपन्न हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : श्रीमते (Shrīmate) नाम संस्कृत शब्द श्रीमान् (Shrīmat) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "श्री से युक्त"। यह नाम अपने अर्थों में समृद्ध है, जो सभी शुभता, दिव्य वैभव और समृद्धि की उपस्थिति को दर्शाता है।

श्री का अवतार श्रीमते, श्री (Shrī) को संदर्भित करता है, जो भारतीय दर्शन में एक बहुआयामी अवधारणा है। श्री में शामिल हैं: • शुभता और सौभाग्य: वह सभी सौभाग्यशाली और अनुकूल चीजों का स्रोत और अवतार है। • समृद्धि और धन: भौतिक धन से परे, यह आध्यात्मिक धन, प्रचुरता और जीवन तथा संसाधनों को उत्पन्न करने और बनाए रखने की क्षमता को संदर्भित करता है। • दिव्य सौंदर्य और चमक: श्री वैभव, चमक और एक अंतर्निहित, मनमोहक सौंदर्य को भी दर्शाता है जो दिव्य और सर्वव्यापी है। • उत्कृष्टता और श्रेष्ठता: वह सभी उत्कृष्ट गुणों से संपन्न है, जो उसे सभी प्राणियों में सर्वोच्च बनाता है। • शक्ति और महानता: श्री अंतर्निहित शक्ति और महिमा से भी जुड़ा है, जो उसके सर्वोच्च अधिकार और प्रभाव को इंगित करता है।

यशस्वी श्रीमते के रूप में, कालभैरव को दिव्य महिमा से चमकते हुए दर्शाया गया है। यह महिमा केवल बाहरी नहीं बल्कि उनके अस्तित्व का आंतरिक हिस्सा है। यह उनकी अंतर्निहित दिव्यता, उनकी पूर्णता और अपने भक्तों पर आशीर्वाद बरसाने की उनकी क्षमता को दर्शाता है। उनकी महिमा सामान्य समझ से परे है, जो विस्मयकारी और गहन रूप से लाभकारी दोनों है।

समृद्धि के दाता यह नाम कालभैरव की समृद्धि के दाता के रूप में भूमिका को भी दर्शाता है, न केवल भौतिक अर्थों में बल्कि एक समग्र तरीके से। वह आध्यात्मिक विकास, मन की शांति, प्रतिकूलता से सुरक्षा और धार्मिक इच्छाओं की पूर्ति प्रदान करते हैं। श्रीमते का आह्वान करके, भक्त स्वयं को इस दिव्य प्रचुरता और शुभता के साथ संरेखित करने का प्रयास करते हैं।

भैरव का विरोधाभास श्रीमते नाम, जब कालभैरव पर लागू होता है, तो एक गहरा विरोधाभास उजागर करता है। जबकि भैरव को अक्सर भयानक और विनाशकारी देखा जाता है, श्रीमते उनके परोपकारी पहलू को सभी समृद्धि और शुभता के स्रोत के रूप में प्रकट करता है। यह इस बात पर जोर देता है कि विनाश में भी, एक अंतर्निहित व्यवस्था और पवित्र उद्देश्य है जो अंततः नवीनीकरण और विकास की ओर ले जाता है, जो दिव्य वैभव से ओत-प्रोत है। वह केवल विनाश की शक्ति नहीं है, बल्कि दिव्य समृद्धि का सार भी है जिससे सभी सृष्टि, पालन और विघटन अंततः उत्पन्न होते हैं।

799. शान्ताय

जो पूर्णतया शांत, स्थिर और शाश्वत रूप से प्रशांत हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : शान्ताय नाम दिव्य के एक गहन और आवश्यक पहलू का वर्णन करता है, विशेष रूप से भैरव के उग्र रूप से जुड़े होने पर यह विशेष रूप से प्रभावशाली है। शान्त का अर्थ है "शांतिपूर्ण," "शांत," "प्रशांत," "स्थिर," या "शांत किया हुआ।"

ब्रह्मांडीय नृत्य की अंतर्निहित शांति जबकि भैरव अपनी शक्तिशाली, भयानक और विनाशकारी पहलुओं के लिए जाने जाते हैं - जो ब्रह्मांडीय विघटन और अज्ञानता को दूर करने के लिए आवश्यक हैं - शान्त विशेषण उस गहन और परम शांति की स्थिति को प्रकट करता है जो सबसे तीव्र ब्रह्मांडीय गतिविधियों के पीछे भी निहित है। यह विरोधाभास शैव धर्म के लिए केंद्रीय है: परम वास्तविकता (शिव) एक साथ भ्रम का भयंकर विनाशक और पूर्ण, अविचल शांति का प्रतीक है।

द्वैत और विक्षोभ से परे शान्ताय अस्तित्व के द्वैत से अछूती रहने वाली स्थिति को दर्शाता है, जैसे सुख और दुख, जन्म और मृत्यु, भय और इच्छा। यह वह शांति है जो केवल अशांति की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि स्वयं की एक सकारात्मक, अंतर्निहित प्रकृति है। यह शांति शाश्वत और अपरिवर्तनीय है, बाहरी परिस्थितियों या ब्रह्मांड के चक्रीय निर्माण और विनाश से स्वतंत्र है।

भक्ति से प्राप्त आंतरिक शांति भक्त के लिए, भैरव को शान्ताय के रूप में देखना यह दर्शाता है कि दिव्य के उग्र पहलुओं के साथ तीव्र साधना या मुठभेड़ों के माध्यम से भी, अंतिम लक्ष्य और आश्रय यह गहन आंतरिक शांति है। जब कोई साधना (आध्यात्मिक अभ्यास) और भैरव की कृपा से अहंकार, भय और आसक्ति को पार कर लेता है, तो वह अपने भीतर इस अंतर्निहित शांतिपूर्ण प्रकृति को महसूस करता है - वह शिव-तत्त्व जो सभी में निवास करता है।

रूपकात्मक संदर्भ कुछ व्याख्याओं में, भैरव के भयानक रूप जीव (व्यक्तिगत आत्मा) को उसके भ्रम और अज्ञानता से बाहर निकालने के लिए डिज़ाइन किए गए प्रकटीकरण हैं, अंततः उसे उसकी सच्ची, शांतिपूर्ण और मुक्त प्रकृति की प्राप्ति की ओर ले जाते हैं। इस प्रकार, भैरव के भयानक कार्य अंततः उस परम शांति की ओर ले जाते हैं जो शान्ताय है।

800. संवत्सराय

जो वर्ष, कालचक्र का ही मूर्त स्वरूप है, उन्हें नमस्कार।

विस्तार : संवत्सराय नाम संवत्सर से लिया गया है, जो "वर्ष" के लिए एक संस्कृत शब्द है, और हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में समय की गहरी समझ को दर्शाता है।

वर्ष का मूर्त रूप संवत्सर केवल समय की एक इकाई नहीं है, बल्कि इसे एक ब्रह्मांडीय सत्ता के रूप में व्यक्त किया गया है, जो सृष्टि, संरक्षण और विघटन के भव्य चक्रों को परिभाषित करता है। संवत्सराय के रूप में, कालभैरव इन कालचक्रों का सार और मूर्त रूप हैं। वह अस्तित्व के निरंतर प्रवाह, ऋतुओं की नियमित प्रगति, जन्म, वृद्धि और क्षय का प्रतिनिधित्व करते हैं जो एक वर्ष और, विस्तार से, सभी जीवन के मार्ग को चिह्नित करते हैं।

कालचक्र यह नाम कालभैरव की कालचक्र पर महारत को दर्शाता है। वह लौकिक वास्तविकता के सूत्रधार और स्वयं पदार्थ हैं। जिस प्रकार एक वर्ष में अनगिनत क्षण और घटनाएँ शामिल होती हैं, उसी प्रकार भगवान कालभैरव वह एकीकृत सिद्धांत हैं जो इन सभी लौकिक घटनाओं को समाहित करते हैं। वह प्रत्येक वर्ष की शुरुआत, मध्य और अंत हैं, और इस प्रकार, प्रत्येक चक्र के।

ब्रह्मांडीय नियामक व्यापक अर्थ में, संवत्सर एक कल्प है, ब्रह्मा का एक ब्रह्मांडीय दिन, जो सृष्टि और विनाश की विशाल अवधियों को इंगित करता है। "वर्ष का मूर्त रूप" होने के नाते, कालभैरव ब्रह्मांडीय समय के अंतिम नियामक के रूप में अपनी भूमिका पर जोर देते हैं, ब्रह्मांडों, देवताओं और सभी प्राणियों के जीवनकाल को नियंत्रित करते हैं। वह यह सुनिश्चित करते हैं कि सब कुछ अपने नियत समय के अनुसार प्रकट हो, ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखते हुए।

दार्शनिक महत्व दार्शनिक रूप से, कालभैरव को संवत्सराय के रूप में पहचानना यह स्वीकार करना है कि समय स्वयं दिव्य की अभिव्यक्ति है। यह लौकिक क्षेत्र के भीतर सभी चीजों की क्षणभंगुरता को रेखांकित करता है और परम वास्तविकता की शाश्वत, कालातीत प्रकृति की ओर इशारा करता है, जिसे कालभैरव स्वयं समय का प्रतीक होते हुए भी पार करते हैं। वह वह शक्ति हैं जो वार्षिक नवीनीकरण और अंतिम विघटन लाती हैं, जिससे वह समय के सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान भगवान बन जाते हैं।

801. शिशवे

शिशु के निर्दोष और पवित्र रूप धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : शिशवे नाम कालभैरव का वर्णन एक बच्चे (शिशु) के निर्दोष और शुद्ध रूप में करता है, जो उनके सामान्यतः भयावह पहलुओं को देखते हुए एक गहरा विरोधाभास है। यह चित्रण उनके दिव्य लीला (खेल) और उनके गहरे आध्यात्मिक महत्व के एक महत्वपूर्ण आयाम पर प्रकाश डालता है।

बाल-रूप (शिशु रूप) हिंदू परंपराओं में, बाल-रूप (बालरूप या शिशु रूप) अक्सर निर्दोषता, पवित्रता, सहजता, निडरता और पूर्ण निर्भरता का प्रतीक होता है। यह अहंकार, आसक्ति और भौतिक दुनिया की जटिलताओं से मुक्त अवस्था है। जब कालभैरव एक बच्चे के रूप में प्रकट होते हैं, तो यह कई गहरे सत्यों को दर्शाता है: • पूर्ण पवित्रता: यह उनके बेदाग, आदिम स्वरूप का प्रतीक है, जो सृष्टि और विनाश के चक्रों से अछूता है जिनकी वे निगरानी करते हैं। • निर्दोषता और चंचलता: अपनी भयानक जिम्मेदारियों के बावजूद, वे चंचल निर्दोषता का भी प्रतीक हैं, जो भक्तों को याद दिलाते हैं कि दिव्य उपस्थिति पोषण करने वाली और कोमल हो सकती है। • कर्म से मुक्ति: एक बच्चे को आमतौर पर संचित कर्म से मुक्त माना जाता है, इस प्रकार इस रूप में कालभैरव कर्म बंधनों से मुक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं।

पहुँच और सुगमता यह रूप अन्यथा दुर्जेय देवता को सुलभ बनाता है। जो भक्त उनके भयंकर रूप से भयभीत हो सकते हैं, वे अधिक कोमल और मनमोहक बाल-रूप के साथ सांत्वना और संबंध पाते हैं। यह सुझाव देता है कि दिव्य के सबसे सर्वोच्च और शक्तिशाली पहलुओं तक भी प्रेम, सादगी और समर्पण के माध्यम से पहुँचा जा सकता है, ठीक वैसे ही जैसे एक माता-पिता का बच्चे के लिए बिना शर्त प्यार होता है।

नई शुरुआत का प्रतीक एक बच्चा क्षमता, नई शुरुआत और निर्दोषता का भी प्रतीक है। यह इस विचार को उद्घाटित करता है कि कालभैरव, विनाशक होने के अलावा, सृष्टि और नवीनीकरण का भी स्रोत हैं, एक हमेशा ताजा और गतिशील सिद्धांत। यह भक्त के लिए दिव्य के पास जाते समय बाल-सुलभ सादगी और विश्वास की स्थिति में लौटने का निमंत्रण भी है।

यह नाम, इसलिए, कालभैरव के आतंक और करुणा को खूबसूरती से संतुलित करता है, यह दर्शाता है कि परम वास्तविकता में भयंकर विनाशक और कोमल, निर्दोष दिव्य बच्चा दोनों शामिल हैं।

802. स्पष्टाक्षराय

उस स्पष्ट, विशिष्ट और अविनाशी अक्षर (ॐ) स्वरूप को नमन।

विस्तार : स्पष्टाक्षराय नाम "स्पष्ट" (साफ, सुस्पष्ट, प्रकट) को "अक्षर" (अक्षर, अविनाशी, शाश्वत) के साथ जोड़ता है। यह नाम सीधे कालभैरव की ब्रह्मांड की मौलिक, शाश्वत कंपन, पवित्र अक्षर ॐ (ओम) के साथ पहचान को संदर्भित करता है।

स्पष्ट और सुस्पष्ट ध्वनि "स्पष्ट" स्पष्टता और सुस्पष्टता के पहलू पर प्रकाश डालता है। जबकि ॐ गहरा और बहुस्तरीय है, कालभैरव की अभिव्यक्ति में, इसे आदिम ध्वनि के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो स्पष्ट रूप से स्पष्ट और मौलिक है। यह दर्शाता है कि परम सत्य और दिव्य का सार अस्पष्ट नहीं है बल्कि प्रकट और समझने योग्य है, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो आंतरिक रूप से attuned (अनुकूलित) हैं। यह स्पष्टता माया (भ्रम) को भेदती है और परम वास्तविकता को प्रकट करती है।

अविनाशी अक्षर (अक्षर) "अक्षर" का मुख्य अर्थ "अक्षर" या "वर्ण" है, लेकिन यह गहराई से "अविनाशी," "अविनाशी," या "शाश्वत" का अर्थ रखता है। यह संदर्भित करता है: 1. ॐ आदिम ध्वनि के रूप में: ॐ को प्रणव माना जाता है, वह ब्रह्मांडीय ध्वनि जिससे सभी सृष्टि उत्पन्न होती है और जिसमें सभी सृष्टि विलीन हो जाती है। यह चेतना की चार अवस्थाओं (जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति और पारलौकिक चौथी अवस्था, तुरीय) का प्रतिनिधित्व करता है। 2. शाश्वत सिद्धांत: अक्षर के रूप में, कालभैरव कालातीत, अपरिवर्तनीय और अविनाशी सिद्धांत का प्रतीक हैं जो सभी क्षणभंगुर घटनाओं के अंतर्गत आता है। वह अस्तित्व का आधार है, वह शाश्वत सत्य जो तब भी बना रहता है जब सब कुछ नष्ट हो जाता है। 3. जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति: अक्षर के साथ उनकी पहचान का अर्थ है कि उनकी भक्ति एक साधक को भौतिक दुनिया की नश्वर प्रकृति से परे ले जा सकती है, जन्म और मृत्यु (संसार) के चक्र से मुक्ति प्रदान कर सकती है, और मोक्ष की अविनाशी अवस्था की ओर ले जा सकती है।

कालभैरव प्रकट ॐ के रूप में इस नाम में, कालभैरव को केवल एक देवता के रूप में नहीं बल्कि ब्रह्मांडीय कंपन ॐ के सार के रूप में पुष्टि की गई है, वह ध्वनि जो शाश्वत, स्पष्ट और सभी अस्तित्व का स्रोत है। वह ब्रह्म, परम वास्तविकता की श्रव्य अभिव्यक्ति है, जो इस पवित्र अक्षर के चिंतन और जप के माध्यम से सुलभ है। यह संबंध काल (समय) के भगवान के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है, क्योंकि ॐ समय से परे है, जिसका न तो आदि है और न ही अंत।

803. सर्वहारिणे

समय के अंत में सभी चीजों का विनाश करने वाले और वापस लेने वाले को नमन।

विस्तार : सर्वहारिणे नाम 'सर्व' (सभी, सब कुछ, हर कोई) और 'हारिन्' (जो ले जाता है, हटाता है, नष्ट करता है, या वापस लेता है) का एक यौगिक है।

महान संहारक इस संदर्भ में, हारिन् ब्रह्मा (सृष्टिकर्ता), विष्णु (पालक) और शिव (संहारक) की ब्रह्मांडीय त्रिमूर्ति में शिव की अंतिम भूमिका (संहारकर्ता) को दर्शाता है। सर्वहारिणे इस विनाश की पूर्ण और सार्वभौमिक प्रकृति पर जोर देता है। यह आंशिक या चयनात्मक नहीं है; इसमें "सभी" चीजें शामिल हैं। प्रत्येक ब्रह्मांडीय चक्र (महाप्रलय) के अंत में, कालभैरव, सर्वहारिणे के रूप में, पूरे ब्रह्मांड के विघटन का कारण बनते हैं, जिसमें सभी सजीव प्राणी, ग्रह, तारे और यहां तक कि वे मूल तत्व भी शामिल हैं जिनसे वे बने थे।

वापस लेने वाला केवल विनाश से परे, हारिन् एक वापसी या पुनः अवशोषण का अर्थ है। यह शून्यता में विनाश नहीं है, बल्कि सभी प्रकट रूपों का उस अप्रकट, आदिम अवस्था में पुनः आत्मसात करना है जिससे वे उत्पन्न हुए थे। वह परम आधार है जिसमें सभी भेद और रूप ढह जाते हैं, एकवचन, निराकार सत्ता (ब्रह्म/परम शिव) में लौट आते हैं। यह वापसी सृष्टि के बाद के चक्रों के लिए आवश्यक है।

समय का अंत कालभैरव का यह पहलू स्वयं काल (समय) के रूप में उनकी पहचान से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। काल के रूप में, वह वह अथक शक्ति है जो सब कुछ भस्म कर देती है। सर्वहारिणे "समय के अंत" पर उनके कार्य पर प्रकाश डालता है - वह बिंदु जिस पर रैखिक समय और उसके प्रकटीकरण का अस्तित्व समाप्त हो जाता है, कालातीत निरंतरता में वापस घुल जाता है। वह सब कुछ को एक ही वास्तविकता में फिर से विलय करके भ्रम (माया) और द्वैत का अंत करते हैं।

दार्शनिक महत्व यह नाम इस समझ का प्रतिनिधित्व करता है कि सभी अस्तित्व क्षणभंगुर हैं। सभी रूप क्षय और विघटन के अधीन हैं। सर्वहारिणे को गले लगाना ब्रह्मांड की चक्रीय प्रकृति और इस परम सत्य की स्वीकृति है कि जिस भी चीज की शुरुआत होती है, उसका अंत अवश्य होता है। यह क्षणभंगुर घटनाओं से वैराग्य और उस शाश्वत, अपरिवर्तनीय वास्तविकता की पहचान को प्रोत्साहित करता है जो सभी विनाशों को रेखांकित करती है और उनसे अधिक समय तक रहती है।

८०४. संग्रामय

युद्ध के अवतार, बुराई के खिलाफ ब्रह्मांडीय युद्ध के स्वरूप को नमन।

विस्तार : नाम संग्रामाय संस्कृत शब्द 'संग्राम' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "युद्ध," "लड़ाई," "संघर्ष," या "मुठभेड़।" जब इसे भगवान कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह ब्रह्मांडीय युद्ध के उनके परम स्वरूप और नकारात्मकता तथा बुराई के विरुद्ध शाश्वत संघर्ष में उनकी भूमिका को दर्शाता है।

ब्रह्मांडीय युद्ध का स्वरूप कालभैरव, संग्राम के रूप में, ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) को बनाए रखने के लिए आवश्यक अथक संघर्ष के सिद्धांत का प्रतीक हैं। यह केवल एक शारीरिक लड़ाई नहीं है, बल्कि अराजकता, अज्ञान (अविद्या), और अधर्म (अधर्म) की शक्तियों के विरुद्ध एक आध्यात्मिक लड़ाई है। वह उस सर्वोच्च शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सभी संघर्षों, बाहरी और आंतरिक दोनों में संलग्न होती है और उन पर विजय प्राप्त करती है।

बुराई और बाधाओं का नाश करने वाला इस पहलू में, कालभैरव भयंकर रक्षक हैं जो राक्षसी संस्थाओं, नकारात्मक ऊर्जाओं और आध्यात्मिक प्रगति तथा सार्वभौमिक सद्भाव में बाधा डालने वाली सभी बाधाओं को परास्त करने के लिए तुरंत युद्ध में उतरते हैं। उनका भयानक रूप विशेष रूप से उन लोगों में भय पैदा करने के लिए बनाया गया है जो बुराई करते हैं, जिससे निर्दोषों की रक्षा होती है और ब्रह्मांडीय कानून को बनाए रखा जाता है।

आंतरिक संघर्ष पर विजय प्राप्त करना गहरे, आध्यात्मिक स्तर पर, संग्राम उस आंतरिक युद्ध को भी दर्शाता है जिसे प्रत्येक आध्यात्मिक साधक को करना चाहिए। इसमें अहंकार, इच्छा, क्रोध, लालच, आसक्ति और भ्रम के आंतरिक राक्षसों से लड़ना शामिल है। कालभैरव, इस युद्ध के स्वरूप के रूप में, भक्तों को इन आंतरिक शत्रुओं का सामना करने और उन पर विजय प्राप्त करने के लिए सशक्त बनाते हैं, जिससे उन्हें आत्म-साक्षात्कार और मुक्ति की ओर ले जाया जाता है। वह इस गहन आंतरिक युद्ध में सफलतापूर्वक संलग्न होने के लिए आवश्यक शक्ति और संकल्प प्रदान करते हैं।

संघर्ष की अंतिम परिणति शिव के एक भयंकर स्वरूप के रूप में, जो परम संहारक हैं, कालभैरव का संग्राम को अपनाना सभी संघर्षों की अंतिम परिणति को भी इंगित करता है। जब वह युद्ध में संलग्न होते हैं, तो यह निर्णायक और पूर्ण होता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि बुराई को न केवल

पराजित किया जाता है बल्कि पूरी तरह से नष्ट कर दिया जाता है। वह संघर्षों को उनके अंतिम समाधान तक पहुंचाते हैं, नवीनीकरण और शुद्धता के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं।

805. संगमाय

उस पवित्र संगम को नमन, जो सभी वस्तुओं का पूर्ण मिलन है।

विस्तार : सङ्गमाय (Saṅgamāya) नाम संस्कृत शब्द "संगम" से लिया गया है, जिसका अर्थ है एक पवित्र अभिसरण, एक संगम, या एक पूर्ण मिलन।

नदियों का संगम संगम का सबसे सामान्य संबंध नदियों के पवित्र संगम से है, विशेष रूप से प्रयागराज (इलाहाबाद) में त्रिवेणी संगम, जहाँ गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती नदियाँ मिलती हैं। इस मिलन बिंदु को अत्यंत पवित्र माना जाता है, जो विविध आध्यात्मिक धाराओं के मिलन का प्रतीक है। संगम होने के नाते, काल भैरव इस परम पवित्र मिलन बिंदु का प्रतीक हैं, जहाँ सभी ऊर्जाएँ, सिद्धांत और मार्ग उनमें अभिसरित होते हैं।

विपरीत का मिलन गहरे दार्शनिक अर्थ में, संगम सभी द्वैत और विरोधों के मिलन का प्रतिनिधित्व करता है - सृजन और विनाश, जीवन और मृत्यु, चेतना और पदार्थ, अंतर्निहित और पारलौकिक। काल भैरव, परम वास्तविकता के रूप में, वह बिंदु हैं जहाँ ये स्पष्ट विरोधाभास एक एकीकृत पूर्ण में समाहित हो जाते हैं। वह इन द्वैतों से परे हैं, उन सभी को अपने अस्तित्व में समाहित करते हैं।

भक्त और दिव्य का विलय आध्यात्मिक साधक के लिए, संगम योग या आध्यात्मिक मिलन की अंतिम अवस्था का भी प्रतिनिधित्व कर सकता है, जहाँ व्यक्तिगत आत्मा (जीवात्मा) सर्वोच्च आत्मा (परमात्मा) में विलीन हो जाती है। काल भैरव, सङ्गमाय के रूप में, इस परम विलय को सुगम बनाते हैं, भक्त को अद्वैत की प्राप्ति और सभी अलगाव की समाप्ति की ओर मार्गदर्शन करते हैं। वह इस पवित्र विलय की प्रक्रिया और अंतिम गंतव्य दोनों हैं।

सद्भाव और एकीकरण यह नाम ब्रह्मांडीय व्यवस्था में मौजूद पूर्ण सद्भाव और एकीकरण की ओर भी इशारा करता है, जिसकी काल भैरव देखरेख करते हैं। वह वह सिद्धांत हैं जो यह सुनिश्चित करता है कि सब कुछ आपस में जुड़ा हुआ है और एक विलक्षण, विशाल और एकीकृत ब्रह्मांडीय नृत्य के हिस्से के रूप में कार्य करता है।

806. प्लवाय

जो संसार सागर से आत्माओं को पार कराने वाली दिव्य नौका हैं, उनको नमन।

विस्तार : 'प्लवाय' नाम संस्कृत मूल 'प्लु' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "तैरना," "तैर कर जाना," या "पालना।" इस मूल शब्द से, 'प्लव' का अर्थ है "नाव," "नौका," या अधिक व्यापक रूप से, कुछ भी जो पानी पार करने में मदद करता है। आध्यात्मिक दर्शन के संदर्भ में, यह "पानी" अक्सर संसार, सांसारिक अस्तित्व, दुख और पुनर्जन्म के सागर के लिए एक रूपक होता है।

दिव्य नाविक भगवान कालभैरव, 'प्लव' के रूप में, इसलिए दिव्य नाविक या परम नौका हैं जो संसार के इस खतरनाक सागर को पार कराती है। इसका तात्पर्य यह है कि वे मुक्ति (मोक्ष) के लिए आवश्यक साधन, मार्गदर्शन और सुरक्षा प्रदान करते हैं। जिस प्रकार एक नाव लहरों और धाराओं को पार करके दूसरे किनारे तक पहुँचती है, उसी प्रकार भैरव अपने भक्तों को जीवन की कठिनाइयों, भौतिक संसार के भ्रम और आसक्तियों से पार कराते हुए आध्यात्मिक स्वतंत्रता की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

संसार से मुक्ति यह नाम एक उद्धारकर्ता और मुक्तिदाता के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है। जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र में उलझे लोगों के लिए, वे इन सीमाओं को पार करने का सीधा मार्ग प्रदान करते हैं। उन्हें समर्पण करके और उनके मार्ग का अनुसरण करके, भक्त रूपक

रूप से सांसारिक अस्तित्व के 'जल' से ऊपर उठ जाते हैं और सुरक्षित रूप से शाश्वत आनंद और परमात्मा के साथ मिलन के 'किनारे' तक पहुँच जाते हैं।

आशा और मुक्ति का प्रतीक 'प्लव' उन लोगों के लिए आशा का एक शक्तिशाली प्रतीक है जो जीवन की कठिनाइयों में बहते हुए महसूस करते हैं। यह भैरव के एक करुणामय पहलू का सुझाव देता है, जो अपने भयानक रूप के बावजूद, अपने भक्तों के दुख को बचाने और दूर करने के लिए सक्रिय रूप से काम करते हैं। वे परम आश्रय हैं, भौतिक अस्तित्व के अन्यथा अंतहीन चक्र से मुक्ति का साधन हैं।

807. इष्टाय

जो सबसे प्रिय हैं, चुने हुए और पूजे जाने वाले देवता हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : इष्टा (इष्टाय) नाम हिंदू आध्यात्मिक अभ्यास में, विशेष रूप से भक्ति और उपासना के संदर्भ में, अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह "इष्" मूल से लिया गया है, जिसका अर्थ है "इच्छा करना," "चाहना," या "चुनना।"

सबसे प्रिय (इष्ट-देवता) इष्टा का अर्थ है "सबसे प्रिय" या "वांछित" देवता। व्यक्तिगत आध्यात्मिक अभ्यास में, एक इष्ट-देवता ईश्वर का वह चुना हुआ रूप है जिसकी एक भक्त अन्य सभी से बढ़कर पूजा करता है, जिससे दिव्य के साथ एक गहरा व्यक्तिगत और अंतरंग संबंध बनता है। कालभैरव के एक भक्त के लिए, वे ही यह परम प्रिय, चुना हुआ मार्ग और उनकी आराधना और आध्यात्मिक लालसा का सर्वोच्च लक्ष्य हैं। यह संबंध केवल बौद्धिक नहीं है; यह एक हार्दिक संबंध है, एक आध्यात्मिक प्रतिध्वनि है जो किसी की पूरी आध्यात्मिक यात्रा का मार्गदर्शन करती है।

चुना हुआ देवता इष्ट-देवता की अवधारणा आध्यात्मिक मार्गों की विविधता और दिव्य के असंख्य रूपों को स्वीकार करती है। जबकि सभी देवता अंततः एक ब्रह्म के ही प्रकटीकरण हैं, एक व्यक्तिगत साधक अक्सर एक विशेष रूप के साथ अधिक दृढ़ता से जुड़ता है। शिव भक्तों के लिए, कालभैरव यह इष्ट-देवता हो सकते हैं, यह दर्शाता है कि वे उनके आध्यात्मिक विकास और मुक्ति के लिए सबसे उपयुक्त और प्रभावी रूप हैं। कालभैरव को इष्टा के रूप में चुनना, उनके उग्र स्वरूप के बावजूद, उनकी परोपकारी, सुरक्षात्मक और अंततः मुक्तिदायक प्रकृति की गहरी समझ को उजागर करता है।

पूजा का उद्देश्य प्रेम और चुनाव से परे, इष्टा "पूजा के उद्देश्य" या "बलिदान" को भी दर्शाता है। इसका तात्पर्य है कि सभी आध्यात्मिक चढ़ावे, प्रार्थनाएं और ध्यान इस विशिष्ट दिव्य रूप की ओर निर्देशित होते हैं। जब कोई कालभैरव को इष्टा के रूप में संबोधित करता है, तो यह दर्शाता है कि वे उनके सभी आध्यात्मिक प्रयासों का केंद्र बिंदु हैं, उनके आशीर्वाद का स्रोत हैं, और उनकी भक्ति का अंतिम लक्ष्य हैं। यह वरदान देने वाले, बाधाओं को दूर करने वाले और आध्यात्मिक प्राप्ति प्रदान करने वाले के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है।

808. विशिष्टाय

जो सभी में सबसे उत्कृष्ट, विशिष्ट और अद्वितीय हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : विशिष्टाय (Viśiṣṭāya) नाम संस्कृत शब्द विशिष्ट से लिया गया है, जिसका अर्थ है "विशिष्ट," "उत्कृष्ट," "विशेष," "अद्वितीय," और "श्रेष्ठ।" यह नाम भगवान कालभैरव के उत्कृष्ट स्वरूप और ब्रह्मांडीय व्यवस्था में उनकी अद्वितीय स्थिति का गहनता से वर्णन करता है।

विशिष्ट और अद्वितीय (Distinct and Unique) विशिष्ट का अर्थ है वह जो अलग खड़ा हो, न केवल मात्रा में बल्कि गुणवत्ता और सार में एक आंतरिक अंतर से। कालभैरव केवल कई देवताओं में से एक नहीं हैं; उनके पास ऐसे गुण और उत्तरदायित्व हैं जो उन्हें अपनी श्रेणी में रखते हैं। समय (काल)

के नियंत्रक, शिव के भयंकर स्वरूप और पवित्र स्थानों के संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका अद्वितीय है। यह विशिष्टता दर्शाती है कि कोई अन्य प्राणी या शक्ति उनके विशिष्ट ब्रह्मांडीय कार्यों को पूरी तरह से मूर्त रूप नहीं दे सकती या दोहरा नहीं सकती।

सर्वोच्च उत्कृष्टता (Supreme Excellence) "उत्कृष्ट" शब्द उनके पूर्ण पूर्णता और सभी पहलुओं में श्रेष्ठता को इंगित करता है। इसमें उनकी शक्ति, ज्ञान, न्याय और करुणा (हालांकि एक भयंकर रूप में व्यक्त) शामिल है। बुराई के अंतिम दंडदाता और मुक्ति के दाता के रूप में, उनके कार्य हमेशा पूरी तरह से संतुलित और सटीक होते हैं, जो उत्कृष्टता के सर्वोच्च मानक को दर्शाते हैं। उनका रूप, हालांकि भयानक है, शिव की भयंकर महिमा और पारलौकिक शक्ति की पूर्ण अभिव्यक्ति में उत्कृष्ट है।

वह जिसके पास विशेष गुण हैं (The One Who Has Specialized Qualities) "विशेष" या "विशिष्ट" का अर्थ यह भी है कि कालभैरव विशेष गुणों या कार्यों को मूर्त रूप देते हैं जो अत्यधिक विकसित और केंद्रित हैं। इन विशेष गुणों में भ्रम को भंग करने, अज्ञान को नष्ट करने, धर्म की रक्षा करने और गहन आध्यात्मिक शुद्धि के माध्यम से आत्माओं का मार्गदर्शन करने की उनकी क्षमता शामिल है। वे दिव्य पदानुक्रम में एक विशिष्ट और महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, एक ऐसी भूमिका जिसे केवल वे ही इतनी तीव्रता और प्रभावशीलता के साथ पूरा कर सकते हैं।

उत्कृष्टता और अंतर्निहितता (Transcendence and Immanence) यह नाम अंततः यह दर्शाता है कि कालभैरव, अपने विशिष्ट स्वरूप में, उत्कृष्ट (सभी श्रेणियों से परे) और अंतर्निहित (ब्रह्मांड के भीतर कार्यरत) दोनों हैं। वे विशेष हैं क्योंकि वे एक साथ विनाश के सिद्धांत और परम ज्ञान और सुरक्षा के दाता हैं। उनकी विशिष्टता उनकी तीव्र भयंकर होने की क्षमता में निहित है, फिर भी उन लोगों के लिए सर्वोच्च रूप से परोपकारी हैं जो उनके प्रति समर्पण करते हैं, उन्हें अपने बंधनों और भयों को काटकर मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

809. शिष्टेष्टाय

शिष्ट, बुद्धिमान और अनुशासित लोगों द्वारा अत्यंत प्रिय को नमन।

विस्तार : शिष्टेष्टाय नाम 'शिष्ट' और 'इष्ट' से मिलकर बना है, जिसमें 'आय' चतुर्थी विभक्ति का प्रत्यय है जो "उस एक को" इंगित करता है।

शिष्ट (Śiṣṭa): इस शब्द के कई अर्थ हैं, जो सभी उच्च नैतिक और आध्यात्मिक गुणों के विचार पर केंद्रित हैं। 1. अनुशासित/सुव्यवस्थित/शिक्षित: वह व्यक्ति जो धर्म (धार्मिक आचरण) का पालन करता है, अपने कार्यों, विचारों और वाणी में अनुशासित है, और पवित्र ज्ञान तथा परंपराओं में पारंगत है। वे शास्त्रोक्त आदेशों और सद्गुणों को बनाए रखने वाले सामाजिक मानदंडों का पालन करते हैं। 2. धर्मात्मा/सद्गुणी: वे व्यक्ति जिनका जीवन सत्य, न्याय और करुणा के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित होता है। 3. बुद्धिमान/विद्वान: वे लोग जिनके पास आध्यात्मिक ज्ञान, विवेक और परम सत्य की समझ होती है।

इष्ट (Iṣṭa): इस शब्द का अर्थ है "वांछित," "प्रिय," "पसंदीदा," या "पूजित।"

धर्मात्माओं के प्रिय शिष्टेष्ट के रूप में, कालभैरव को उन लोगों के प्रेम, आराधना और भक्ति का पात्र बताया गया है जो शिष्ट के गुणों को धारण करते हैं। यह एक पारस्परिक संबंध को दर्शाता है: • दिव्य कृपा: कालभैरव, इस पहलू में, उन लोगों के प्रति विशेष कृपा और स्नेह दिखाते हैं जो एक धार्मिक जीवन जीते हैं, आध्यात्मिक अनुशासन का पालन करते हैं और ज्ञान प्राप्त करते हैं। • आध्यात्मिक प्रतिध्वनि: शिष्टों के शुद्ध और अनुशासित हृदय स्वाभाविक रूप से कालभैरव के भयंकर फिर भी अंततः परोपकारी रूप की ओर आकर्षित होते हैं और उसमें सांत्वना तथा शक्ति पाते हैं। उनका सार उनके सद्गुणी स्वभाव के साथ प्रतिध्वनित होता है।

धर्म और ज्ञान के संरक्षक यह नाम कालभैरव की भूमिका को केवल दुष्टों को दंडित करने वाले के रूप में ही नहीं, बल्कि धर्म का पालन करने वालों के सर्वोच्च संरक्षक और प्रिय देवता के रूप में भी उजागर करता है। यह दर्शाता है कि आध्यात्मिक और नैतिक सिद्धांतों का पालन करना दिव्य को प्रिय है और दिव्य कृपा प्राप्त करता है। वे उन लोगों के लिए अंतिम आश्रय और पोषित आदर्श हैं जो धार्मिकता के मार्ग पर चल रहे हैं और परम ज्ञान की तलाश कर रहे हैं।

810. सुलभाय

अपने सच्चे भक्तों के लिए सहज सुलभ और प्राप्त होने वाले देव को नमन।

विस्तार : सुलभ नाम संस्कृत मूल "लभ" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "प्राप्त करना," और उपसर्ग "सु-", जिसका अर्थ है "अच्छा," "आसान," या "भली-भाँति।" इस प्रकार, सुलभ का शाब्दिक अर्थ है "आसानी से प्राप्त होने वाला," "आसानी से सुलभ," या "आसानी से अर्जित होने वाला।" कालभैरव के संदर्भ में, इस गुण का गहरा आध्यात्मिक महत्व है।

भक्ति के लिए सुलभ अपने दुर्जेय और विस्मयकारी रूप के बावजूद, कालभैरव, सुलभ के रूप में, उन लोगों के लिए आसानी से पहुँचने योग्य और प्राप्त करने योग्य माने जाते हैं जो सच्ची भक्ति अर्पित करते हैं। यह हिंदू दर्शन में एक मूलभूत सिद्धांत को उजागर करता है: कि दिव्य, जबकि ब्रह्मांडीय और विशाल है, earnest seeker (उत्सुक साधक) के लिए अलग या दूर नहीं है। उनकी उग्रता केवल दुष्टों या अहंकार से ग्रस्त लोगों के लिए है; अपने भक्तों के लिए, वे दयालु और सुलभ हैं।

कृपा और परोपकार यह नाम कालभैरव के परोपकारी पहलू को दर्शाता है, यह इंगित करता है कि शुद्ध हृदय और अटूट विश्वास वाले लोगों के लिए उनकी कृपा प्राप्त करना कठिन नहीं है। इसका तात्पर्य है कि सच्ची भक्ति, जटिल अनुष्ठानों या कठिन तपस्या के बजाय, उनकी उपस्थिति और आशीर्वाद को आकर्षित करने के लिए पर्याप्त है। वे अपने सच्चे भक्तों (भक्तों) से छिपे नहीं हैं।

बाधाओं को दूर करना एक भक्त के लिए, कालभैरव को "प्राप्त करना" उनके संरक्षण, मार्गदर्शन और बाधाओं (बाहरी और आंतरिक दोनों) को दूर करने का अनुभव करना है। सुलभ के रूप में, वे मुक्ति और आध्यात्मिक विकास के इस मार्ग को स्पष्ट और प्राप्त करने योग्य बनाते हैं। वे उन लोगों के लिए यात्रा को आसान बनाते हैं जो उनके प्रति समर्पण करते हैं।

पहुँच की सरलता सुलभ की अवधारणा भक्तों को दिव्यता के प्रति सादगी और विश्वास के साथ दृष्टिकोण करने के लिए प्रोत्साहित करती है, बजाय इसके कि ऐसे शक्तिशाली देवता से जुड़ी भव्यता या जटिल दार्शनिक व्याख्याओं से भयभीत हों। यह दिव्य-भक्त संबंध की पारस्परिकता को रेखांकित करता है: जैसे-जैसे भक्त पहुँचता है, दिव्य भी प्रतिक्रिया देने के लिए समान रूप से उत्सुक होता है।

811. सुलभायनाय

जिनके मार्ग का अनुसरण शुद्ध हृदय वालों के लिए सरल है, उनको नमन।

विस्तार : सुलभायनाय (Sulabhaayaṇaaya) नाम संस्कृत के 'सु' (Su), 'लभ' (Labha) और 'अयन' (Ayaṇa) शब्दों का एक यौगिक है।

- सु (Su): इस उपसर्ग का अर्थ है "अच्छा," "आसान," "भली-भांति," "उत्कृष्ट," या "शुभ।"
- लभ (Labha): इस मूल का अर्थ है "प्राप्त करना," "लाभ उठाना," "खोज करना," या "जुटाना।"
- अयन (Ayaṇa): यह शब्द "मार्ग," "रास्ता," "गति," "दिशा," "यात्रा," या "निवास" को संदर्भित करता है।

आसान मार्ग संयुक्त रूप से, सुलभायनाय (Sulabhaayaṇaaya) का अर्थ है "वह जिसका मार्ग आसानी से प्राप्त किया जा सके" या "वह जिसका मार्ग अनुसरण करना आसान हो।" यह इंगित करता है कि भगवान कालभैरव की ओर आध्यात्मिक यात्रा उन लोगों के लिए कठिन या दुर्गम बाधाओं से भरी नहीं है जो सही स्वभाव के साथ उनके पास आते हैं।

शुद्ध हृदय वालों के लिए "शुद्ध हृदय वालों के लिए" की निहित शर्त महत्वपूर्ण है। हिंदू दर्शन में, हृदय की शुद्धता (शुद्ध अंतःकरण) का अर्थ है द्वेष, अहंकार, सांसारिक आसक्तियों और छल से मुक्त मन। ऐसे व्यक्तियों के लिए, जो अपनी भक्ति और इरादे में सच्चे हैं, भगवान कालभैरव आध्यात्मिक मार्ग को सुलभ और सीधा बनाते हैं। वह बाधाओं को दूर करते हैं और उनका मार्गदर्शन करते हैं, उनके मार्ग को प्रकाशित करते हैं।

जटिलता को दरकिनार करना यह नाम बताता है कि जटिल अनुष्ठान, जटिल दार्शनिक बहसें, या कठोर तपस्या अभ्यास एक ऐसे भक्त के लिए दरकिनार या सरल किए जा सकते हैं जिसका हृदय वास्तव में समर्पित है। यह केवल बाहरी अनुष्ठानों पर भक्ति (Bhakti) और निष्कलंक इरादे की शक्ति पर जोर देता है।

दिव्य सुलभता सुलभायनाय (Sulabhaayaṇaaya) कालभैरव के करुणामय पहलू को उजागर करता है, जहाँ, उनके दुर्जेय रूप के बावजूद, वह सच्चे साधकों के लिए अत्यधिक सुलभ रहते हैं। जबकि भैरव को अक्सर एक भयंकर रक्षक और दंड देने वाले के रूप में देखा जाता है, यह नाम एक परोपकारी मार्गदर्शक के रूप में उनकी अंतिम भूमिका को प्रकट करता है जो यह सुनिश्चित करता है कि भक्त आत्माएं वास्तव में उन तक पहुँच सकें और मोक्ष प्राप्त कर सकें।

812. सुब्रह्मण्याय

जो ब्राह्मणों को प्रिय हैं और पवित्र ज्ञान के मूर्त स्वरूप हैं, उन भगवान सुब्रह्मण्य को नमन।

विस्तार : सुब्रह्मण्याय नाम कालभैरव को सीधे भगवान सुब्रह्मण्य (जिन्हें मुरुगा, स्कंद, कुमार, या कार्तिकेय के नाम से भी जाना जाता है) से जोड़ता है, जो शिव के योद्धा पुत्र हैं। यह संबंध गहरा और बहुआयामी है, जो एक साझा सार और गुणों को इंगित करता है।

ब्राह्मणों को प्रिय और पवित्र ज्ञान के अवतार सुब्रह्मण्य का शाब्दिक अर्थ है "जो ब्राह्मणों को प्रिय है," या "जिसके पास अच्छा (सुभ्रम) आध्यात्मिक ज्ञान (मन्यु) है।" ब्राह्मण, पारंपरिक अर्थ में, केवल एक जाति नहीं बल्कि वे हैं जो वैदिक शिक्षा और आध्यात्मिक pursuits के प्रति समर्पित हैं। इसलिए, "ब्राह्मणों को प्रिय" होने का तात्पर्य है कि वह पवित्र ज्ञान, पवित्रता और आध्यात्मिक ज्ञान के उच्चतम आदर्शों का प्रतीक और प्रतिनिधित्व करते हैं जिसके लिए ब्राह्मण प्रयास करते हैं। भगवान सुब्रह्मण्य एक दिव्य शिक्षक और ज्ञान के दाता के रूप में प्रसिद्ध हैं, विशेष रूप से "ज्ञान" (आध्यात्मिक ज्ञान) के रहस्यों के। उनका जन्म और अस्तित्व धर्म की रक्षा और सर्वोच्च ज्ञान प्रदान करने से जुड़ा है।

कालभैरव से प्रतीकात्मक संबंध कालभैरव और सुब्रह्मण्य के बीच का संबंध दिव्य रूपों की अंतर्निहित एकता और शिव की शक्ति के विभिन्न पहलुओं का प्रतीक है। • योद्धा पहलू: जिस प्रकार सुब्रह्मण्य स्वर्गीय सेनाओं के सेनापति और एक भयंकर योद्धा हैं जिन्होंने राक्षस तारकासुर का वध किया था, उसी प्रकार कालभैरव भी एक भयंकर रक्षक और बुराई के संहारक हैं। दोनों राक्षसी शक्तियों और अज्ञान के खिलाफ निर्णायक कार्रवाई का प्रतीक हैं। • युवा शक्ति और पवित्रता: सुब्रह्मण्य शाश्वत युवा हैं, जो पवित्रता, ताज़ा ज्ञान और शुद्ध आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रतीक हैं। कालभैरव, हालांकि प्राचीन हैं, एक आदिम, अप्रतिबंधित ऊर्जा का भी प्रतीक हैं जो अपने सार में शुद्ध है। • अज्ञान के नाशक: ब्रह्मा (स्वयं सृष्टिकर्ता देवता) के शिक्षक के रूप में सुब्रह्मण्य की भूमिका उनके गहन ज्ञान को उजागर करती है। कालभैरव, काल और चेतना के स्वामी के रूप में, अपनी भयंकर रोशनी के माध्यम से अज्ञान (अविद्या) के अंधकार को भी दूर करते हैं, भक्तों को

सच्चे ज्ञान की ओर ले जाते हैं। • पवित्र स्थानों के संरक्षक: सुब्रह्मण्य अक्सर पवित्र पहाड़ों और तपस्या के स्थानों से जुड़े होते हैं। कालभैरव सभी मंदिरों और पवित्र स्थलों के संरक्षक (क्षेत्रपाल) हैं, जो उनकी पवित्रता सुनिश्चित करते हैं।

इस प्रकार, कालभैरव को सुब्रह्मण्याय के रूप में संबोधित करना शुद्ध आध्यात्मिक ज्ञान, भयंकर सुरक्षात्मक शक्ति और ज्ञान और युद्ध कौशल को मूर्त रूप देने वाले एक प्रतिष्ठित देवता के रूप में उनकी भूमिका के साथ उनके अंतर्निहित संबंध को स्वीकार करता है, ठीक शिव के प्रसिद्ध पुत्र की तरह। यह बताता है कि कालभैरव की पूजा भगवान सुब्रह्मण्य से जुड़े ज्ञान और सुरक्षा भी प्रदान कर सकती है।

813. सुरगणाय

देवताओं की स्वर्गीय सेनाओं के दिव्य नेता को नमन।

विस्तार : सुरगण नाम दो संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है: सुर और गण।

सुर: यह शब्द देवों या स्वर्गीय प्राणियों को संदर्भित करता है, जिन्हें अक्सर "देवता" के रूप में अनुवादित किया जाता है। ये परोपकारी देवता हैं जो स्वर्ग में निवास करते हैं, ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखते हैं, और अक्सर वैदिक अनुष्ठानों में उनका आह्वान किया जाता है। वे दिव्य शक्तियों और प्रकृति की शक्तियों का प्रतीक हैं।

गण: इस शब्द का अर्थ है "समूह," "झुंड," या "अनुचर।" दिव्य प्राणियों के संदर्भ में, इसका अक्सर अर्थ होता है परिचारकों या अनुयायियों का एक समूह। यह विशेष रूप से शिव के परिचारकों, जिन्हें गणों के रूप में जाना जाता है, से जुड़ा है, जिन्हें अक्सर भयंकर या चंचल आत्माओं के रूप में चित्रित किया जाता है।

दिव्य समूह के नेता "सुरगण" के रूप में, भगवान कालभैरव को इन स्वर्गीय समूहों के नेता या कमांडर के रूप में चित्रित किया गया है। यह उन्हें हिंदू पंथ के कुछ सबसे प्रतिष्ठित प्राणियों पर अत्यधिक अधिकार और शक्ति का स्थान प्रदान करता है। यह दिव्य कार्यों को व्यवस्थित करने, ब्रह्मांडीय व्यवस्था के उचित कामकाज को सुनिश्चित करने और राक्षसी शक्तियों के खिलाफ अपने कर्तव्यों या लड़ाइयों में देवताओं का नेतृत्व करने में उनकी भूमिका को दर्शाता है।

सर्वोच्च अधिकार यह नाम न केवल सांसारिक मामलों या आत्माओं पर, बल्कि स्वयं देवताओं पर भी उनकी सर्वोच्च स्थिति को रेखांकित करता है। इसका तात्पर्य है कि देव भी कालभैरव से मार्गदर्शन, सुरक्षा या नेतृत्व के लिए देखते हैं, विशेष रूप से अंतिम विघटन से संबंधित मामलों में या ब्रह्मांडीय संकट के क्षणों में जहां उनके भयंकर पहलू की आवश्यकता होती है।

ब्रह्मांडीय शासन वह केवल एक भयंकर देवता नहीं हैं, बल्कि वे हैं जो स्वर्गीय लोकों के शासन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिसका अर्थ है कि उनकी शक्ति अन्य देवताओं के सामान्य कार्यों से परे है और उच्चतम स्तर पर ब्रह्मांडीय संतुलन और न्याय सुनिश्चित करने तक फैली हुई है।

814. सुशरण्याय

सभी प्राणियों के लिए अत्यंत उत्कृष्ट और सर्वोच्च आश्रयभूत को नमन।

विस्तार : सुशरण्य नाम भगवान कालभैरव का एक गहन वर्णन है, जो संस्कृत उपसर्गों "सु-" और "शरण्य" को जोड़ता है।

"सु-": यह उपसर्ग "अच्छा," "उत्कृष्ट," "सर्वोच्च," "भली-भांति," "पूरी तरह से," या "सुंदरता से" को दर्शाता है। यह उस शब्द के अंतर्निहित गुण को उसके उच्चतम स्तर तक बढ़ाता है जिसके पहले यह आता है।

"शरण्य" (शरण्या): इस शब्द का अर्थ है "आश्रय," "शरण," "संरक्षण," "पनाह," या "वह जिसके पास शरण लेने योग्य हो।" यह एक ऐसे आश्रय या अभयारण्य को दर्शाता है जहाँ कोई सुरक्षा, सांत्वना और अंतिम मुक्ति पा सकता है।

परम आश्रय और रक्षक इस प्रकार, सुशरण्य का अर्थ है "सबसे उत्कृष्ट आश्रय," "परम रक्षक," या "पूरी तरह से अच्छा आश्रय।" यह दर्शाता है कि कालभैरव उन सभी प्राणियों के लिए अंतिम और सबसे विश्वसनीय आश्रय हैं जो सुरक्षा, आराम और मुक्ति चाहते हैं। अनित्यता, भय और पीड़ा से भरी दुनिया में, वह सुरक्षा का एक अटूट और परोपकारी स्रोत प्रस्तुत करते हैं।

संसार से आश्रय आध्यात्मिक साधकों के लिए, वह जन्म और मृत्यु (संसार) के चक्र से मुक्ति का आश्रय हैं, जो सांसारिक आसक्तियों को पार करने और चेतना की उच्च अवस्था प्राप्त करने का एक साधन प्रदान करते हैं। उनका सुरक्षात्मक स्वभाव केवल शारीरिक सुरक्षा से परे आध्यात्मिक कल्याण तक फैला हुआ है, जो भक्तों को नकारात्मक प्रभावों, कर्मिक परिणामों और मन की पीड़ाओं से बचाता है।

परोपकारी पहलू जबकि भैरव को अक्सर उनके भयानक रूप में चित्रित किया जाता है, सुशरण्य नाम उनके करुणामय और परोपकारी पहलू को उजागर करता है। यह इस बात पर जोर देता है कि उनकी दुर्जेय शक्ति मनमानी नहीं है, बल्कि धर्मी और उन लोगों की रक्षा के लिए है जो ईमानदारी से उनकी शरण चाहते हैं। उनकी उग्रता बुराई के खिलाफ एक ढाल और आध्यात्मिक शुद्धि के लिए एक उत्प्रेरक है, जो साधकों को परम शांति और मुक्ति की स्थिति की ओर ले जाती है।

विश्वसनीयता की स्वीकृति सुशरण्य को नमन करना कालभैरव को विश्वसनीय और पूर्ण रक्षक के रूप में स्वीकार करना है, वह जिसके पास सभी संकट, भ्रम या आध्यात्मिक खोज के समय में जा सकते हैं, सांत्वना और मार्गदर्शन पाने की पूर्ण निश्चितता के साथ।

815. सुधापतये

अमर अमृत (सुधा) के दिव्य स्वामी और प्रभु को नमन।

विस्तार : सुधापतये (सुधापति) नाम संस्कृत के शब्दों सुधा और पति का एक यौगिक है।

सुधा: इस शब्द का शाब्दिक अर्थ "अच्छा पेय" है और विशेष रूप से यह अमरत्व के दिव्य अमृत को संदर्भित करता है, जिसे अमृत भी कहा जाता है। यह वह स्वर्गीय पेय है जो अनन्त जीवन प्रदान करता है, रोगों को दूर करता है, और सेवन करने पर आध्यात्मिक आनंद प्रदान करता है। व्यापक अर्थ में, सुधा दिव्य ज्ञान, परम ज्ञान और आध्यात्मिक उपलब्धि का प्रतीक हो सकती है।

पति: यह "स्वामी," "मालिक," "अधिकारी," या "रक्षक" को दर्शाता है।

अमरत्व के स्वामी सुधापति के रूप में, भगवान कालभैरव इस दिव्य अमरत्व के अमृत के सर्वोच्च स्वामी और अधिकारी हैं। यह जीवन और मृत्यु पर उनके पूर्ण नियंत्रण पर जोर देता है, एक परम शक्ति जो नश्वर शरीर से परे है। सुधा पर उनका प्रभुत्व का अर्थ है कि वे अमरत्व प्रदान कर सकते हैं या उसे रोक सकते हैं, जो अस्तित्व के चक्रों पर उनके पूर्ण अधिकार को दर्शाता है। इसका यह भी अर्थ है कि उनकी कृपा से, भक्त मृत्यु के भय से परे एक अवस्था प्राप्त कर सकते हैं, आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) प्राप्त कर सकते हैं, जो कि शाश्वत अस्तित्व या दिव्य के साथ मिलन का एक रूप है।

दिव्य ज्ञान के प्रदाता शारीरिक अमरत्व से परे, सुधा सर्वोच्च आध्यात्मिक ज्ञान और आत्मज्ञान का भी प्रतिनिधित्व करती है। इस संदर्भ में, कालभैरव सुधापति के रूप में इस दिव्य ज्ञान के प्रदाता हैं। वे सच्चे आध्यात्मिक साधकों को ऐसी समझ की ओर मार्गदर्शन करते हैं जो मुक्ति और परम सत्य की ओर ले जाती है, जो आध्यात्मिक "अमरत्व" की स्थिति है।

आंतरिक अमृत दार्शनिक रूप से, सुधा आंतरिक आध्यात्मिक सार या अनुभव, गहन ध्यान और आत्म-साक्षात्कार से उत्पन्न होने वाले आनंद (आनंद) को भी संदर्भित कर सकती है। कालभैरव, इस आंतरिक अमृत के स्वामी के रूप में, अपने भक्तों के भीतर इस दिव्य अनुभव को जागृत करते हैं, जिससे उन्हें गहरी शांति और कालातीतता का अनुभव होता है। वे ही हैं जो इस आंतरिक आनंद के प्रवाह को आरंभ करते हैं।

816. शरण्याय

परम शरण के योग्य, जो परम रक्षा के लिए खोजे जाने योग्य हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : शरण्य्याय नाम संस्कृत शब्द शरण्य (Sharaṇya) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "आश्रय के योग्य," "शरण के योग्य," या "वह जिसके पास सहायता और सुरक्षा के लिए जाया जाता है।"

परम आश्रय यह नाम कालभैरव की परम आश्रय और सुरक्षा प्रदान करने वाली भूमिका को गहराई से समाहित करता है। संकट, खतरे या आध्यात्मिक खोज के समय, भक्त उन्हें परम आश्रय के रूप में देखते हैं, एक ऐसी अभेद्य सुरक्षा का स्थान जहाँ बाहरी खतरे और आंतरिक भय घुल जाते हैं। जब सहायता के अन्य सभी रास्ते विफल हो जाते हैं, तो वे अंतिम सहारा होते हैं, जो उनकी पूर्ण और बिना शर्त सुरक्षात्मक शक्ति का प्रतीक है।

संसार से मुक्तिदाता जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) में फंसे लोगों के लिए, वह मुक्ति प्रदान करने वाले हैं, जो उन्हें सांसारिक पीड़ा और प्राणियों को बांधने वाली माया (भ्रम) से परम आश्रय के रूप में चिह्नित करता है। उनकी सुरक्षा शारीरिक सुरक्षा से परे आध्यात्मिक शांति और ज्ञान तक फैली हुई है।

परोपकारी रक्षक जबकि भैरव को अक्सर उनके उग्र रूप में चित्रित किया जाता है, शरण्य नाम उनके भयानक रूप के नीचे छिपी उनकी परोपकारी और करुणामयी प्रकृति पर जोर देता है। वह अपने भक्तों को सभी बुराइयों, आंतरिक और बाहरी, जिसमें नकारात्मक ऊर्जाएं, विरोधी और यहां तक कि कर्मिक प्रतिक्रियाएं भी शामिल हैं, से बचाते हैं जो अन्यथा उन्हें प्रभावित कर सकती हैं। उनकी शरण लेने से, व्यक्ति अपने कर्मों के परिणामों से सुरक्षित रहता है, बशर्ते सच्ची शरणागति और भक्ति हो।

समर्पण का प्रतीक कालभैरव में शरण (Sharaṇa) लेना अहंकार, इच्छाओं और चिंताओं के पूर्ण समर्पण का तात्पर्य है। यह अपनी सीमित शक्ति की स्वीकृति और उनके सर्वोच्च अधिकार और कृपा की स्वीकारोक्ति का प्रतीक है। यह समर्पण कमजोरी का कार्य नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक अनुशासन है जो भक्त को उनकी असीम सुरक्षा और आशीर्वाद के लिए खोलता है।

817. शाश्वताय

जो शाश्वत, स्थायी और अपरिवर्तनीय हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : नाम शाश्वताय भगवान कालभैरव के शाश्वत, स्थायी और अपरिवर्तनीय स्वरूप को दर्शाता है। यह गुण हिंदू दर्शन के भीतर उनके सर्वोच्च दिव्य सार को समझने के लिए मौलिक है।

शाश्वत (समय से परे) "शाश्वत" शब्द का शाब्दिक अर्थ "अनंत" या "नित्य" है। कालभैरव के लिए, इसका अर्थ है कि वे समय (काल) की बाधाओं से परे मौजूद हैं। जबकि वे समय (काल) के स्वामी हैं, विरोधाभासी रूप से, वे कालातीत भी हैं। उनका न जन्म होता है और न ही मृत्यु; उनका न आदि है और न अंत। उनका अस्तित्व सभी सृष्टि से पहले का है और सभी प्रलय के बाद भी बना रहेगा। यह उनके पारलौकिक स्वरूप पर जोर देता है, उन्हें जन्म और मृत्यु (संसार) के चक्र से बाहर रखता है जो सभी सृजित प्राणियों को नियंत्रित करता है।

स्थायी और अपरिवर्तनीय (अपरिवर्तनीय वास्तविकता) "शाश्वत" का अर्थ स्थायी, स्थिर और अपरिवर्तनीय होना भी है। एक ऐसे ब्रह्मांड में जो निरंतर परिवर्तन, वृद्धि, क्षय और अनित्यता की विशेषता है, कालभैरव एकमात्र स्थिर, सदा-वर्तमान वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करते हैं। भौतिक संसार के क्षणभंगुर रूपों के विपरीत, उनका सार अपरिवर्तित रहता है। वे वह आधार हैं जिस पर सभी परिवर्तनशील घटनाएँ प्रकट होती हैं और गायब हो जाती हैं, फिर भी वे स्वयं इन परिवर्तनों से अछूते रहते हैं। यह अद्वैत वेदांत में ब्रह्म की अवधारणा को दर्शाता है, जो बदलते अनुभवजन्य संसार के पीछे की परम, अपरिवर्तनीय वास्तविकता है।

सर्वोच्च चेतना शाश्वत और अपरिवर्तनीय सिद्धांत के रूप में, शाश्वत उनके शुद्ध, सर्वोच्च चेतना (चित्) के स्वरूप को भी इंगित करता है। यह चेतना संशोधन, क्षय या समाप्ति के अधीन नहीं है। यह अव्यक्त स्रोत है जिससे सभी अभिव्यक्ति उत्पन्न होती है और जिसमें वह अंततः लौट आती है, जबकि स्रोत स्वयं अपनी शुद्ध, स्थायी अवस्था में रहता है।

भक्तों के लिए निहितार्थ भक्तों के लिए, कालभैरव को शाश्वत के रूप में पहचानना अत्यधिक सांत्वना और एक गहन दार्शनिक आधार प्रदान करता है। इसका अर्थ है कि अंतिम शरण एक शाश्वत, अटूट सत्य में है, जो परिवर्तन और अनित्यता की दुनिया में स्थिरता प्रदान करता है। इस पहलू पर ध्यान करने से व्यक्ति को मृत्यु और परिवर्तन के भय से उबरने में मदद मिलती है, जिससे भीतर और बाहर मौजूद दिव्य के अमर सार से जुड़ाव होता है।

818. स्कंदाय

जो आक्रमणकारी या 'बिखरे हुए' हैं, भगवान कार्तिकेय को नमन।

विस्तार : स्कंद नाम, जो आम तौर पर शिव के पुत्र भगवान कार्तिकेय से जुड़ा है, जब कालभैरव पर लागू होता है, तो एक अलग, गहरा और कुछ हद तक गूढ़ अर्थ लेता है। यह "स्कंद" मूल से लिया गया है जिसका अर्थ है "छलकना," "तेजी से बहना," या "आक्रमण करना/कूदना।"

"बिखरे हुए" (रचनात्मक शक्ति) (The "Spilled One" (Creative Potency))

शिव की दिव्य ऊर्जा और संतान के संदर्भ में, "स्कंद" को अक्सर शिव की वीर्य ऊर्जा (रेतस) के संबंध में "बिखरे हुए" के रूप में व्याख्या किया जाता है, जो "बिखरी" या उत्सर्जित हुई थी और बाद में अग्नि और गंगा द्वारा ले जाई गई, जिसके परिणामस्वरूप कार्तिकेय का जन्म हुआ। जब कालभैरव पर लागू होता है, तो यह दर्शाता है:

1. दिव्य उत्सर्जन: यह बताता है कि कालभैरव स्वयं शिव की उग्र, विनाशकारी और परिवर्तनकारी ऊर्जा का एक शक्तिशाली उत्सर्जन या "छलकना" हैं। वह केवल शिव द्वारा निर्मित नहीं हैं, बल्कि शिव का सार एक विशिष्ट ब्रह्मांडीय कार्य को पूरा करने के लिए तेजी से बह रहा है। 2. अदम्य शक्ति: "छलकना" एक अनियंत्रित, असीम शक्ति का तात्पर्य है जिसे रोका नहीं जा सकता, एक आदिम शक्ति जो ब्रह्मांड पर unleashed (अदम्य) है। यह कालभैरव की सर्वोच्च दंड देने वाले और अज्ञानता और बुराई के संहारक के रूप में भूमिका को संदर्भित करता है, जहाँ उनकी शक्ति असीम है और अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए स्वतंत्र रूप से बहती है।

आक्रमणकारी/कूदने वाला (बुराई का विजेता) (The Attacker/Leaper (Conqueror of Evil))

"स्कंद" की एक और व्याख्या "आक्रमण करना" या "कूदना" से संबंधित है। इस अर्थ में, कालभैरव हैं:

1. तेज विजेता: वह वह हैं जो बाधाओं, नकारात्मकता, अज्ञानता और राक्षसी शक्तियों पर तेजी से "आक्रमण करते हैं" या "कूदते हैं"। जैसे स्कंद (कार्तिकेय) ने राक्षस तारकासुर का वध किया था, वैसे ही कालभैरव समय और मृत्यु को तेजी से जीतते हैं, और अपने भक्तों के लिए भव-बंधन

(सांसारिक अस्तित्व के बंधन) को नष्ट करते हैं। 2. विनाश का अग्रदूत: वह अग्रिम पंक्ति के योद्धा हैं, अधर्म के विनाश और ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) की स्थापना में अग्रिम रक्षक हैं। उनका "आक्रमण" सटीक, अपरिहार्य है, और अंततः शुद्धिकरण और नवीनीकरण लाता है।

सुब्रह्मण्य से संबंध (Connection to Subrahmanya)

जबकि सीधे कालभैरव को संदर्भित करते हुए, इस विशेषण का चुनाव उन्हें शिव के युद्धप्रिय पुत्र, स्कंद/कार्तिकेय/सुब्रह्मण्य से भी सूक्ष्म रूप से जोड़ता है। यह दिव्य योद्धा-पन, साहस, स्वर्गीय सेनाओं (या भैरव के मामले में भूतिया संस्थाओं) के नेतृत्व, और संतुलन बहाल करने के लिए हानिकारक शक्तियों को नष्ट करने के अंतिम लक्ष्य के साझा गुणों का तात्पर्य है। संक्षेप में, यह शिव के एक सर्वोच्च, उग्र योद्धा पहलू के रूप में कालभैरव की भूमिका पर प्रकाश डालता है।

819. शिपिविष्टाय

प्रकाश की किरणों से व्याप्त रहने वाले, या अनावरित यज्ञपशु के समान (जो आत्मा का प्रतीक है) को नमन।

विस्तार : शिपिविष्टाय नाम अर्थ में अत्यंत समृद्ध है, जो प्राचीन वैदिक और पौराणिक व्याख्याओं से लिया गया है। यह दो संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: शिपि और विष्ट।

प्रकाश की किरणों से व्याप्त एक प्रमुख व्याख्या, जिसे यास्क जैसे प्राचीन टीकाकारों ने अपने निरुक्त में पसंद किया है, शिपि को "प्रकाश की किरणों" (रश्मि) से पहचानती है। इस प्रकार, शिपिविष्ट का अर्थ है "वह जो प्रकाश की किरणों से व्याप्त है" या "वह जिसमें प्रकाश की किरणें प्रवेश कर चुकी हैं।" यह भगवान कालभैरव को एक दीप्तिमान, चमकदार दिव्य सत्ता के रूप में दर्शाता है, जिसका सार ही प्रकाश है। इस प्रकाश को इस प्रकार समझा जा सकता है: • दिव्य दीप्ति: परम सत्ता से निकलने वाली अंतर्निहित चमक और ब्रह्मांडीय ऊर्जा, जो समस्त सृष्टि को प्रकाशित करती है। • ज्ञान और बुद्धि: प्रकाश ज्ञान, बुद्धि और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि के लिए एक सामान्य रूपक है। वह वह है जिसकी चेतना पूरी तरह से प्रबुद्ध है, और जो अपने भक्तों को ज्ञान का यह प्रकाश प्रदान करता है। • ब्रह्मांडीय ऊर्जा: ब्रह्मांड को चेतन करने वाली व्याप्त जीवन-शक्ति या प्राण, जो ऊर्जावान किरणों के रूप में प्रकट होती है।

अनावृत बलि पशु (स्वयं का प्रतीक) शिपि की एक और महत्वपूर्ण व्याख्या "त्वचा" या "कच्ची पशु त्वचा" है, विशेष रूप से एक बलि पशु के रूप में। विष्ट का अर्थ तब "प्रवेश किया हुआ" या "व्याप्त" होता है। इस संदर्भ में, शिपिविष्ट का अर्थ "वह जिसने बलि पशु में प्रवेश किया है" हो सकता है। यह व्याख्या विशेष रूप से वैदिक बलिदानों के संदर्भ में गहरा दार्शनिक और आध्यात्मिक महत्व रखती है: • अंतर्निहित दिव्य: बलि पशु (या उसकी त्वचा) व्यक्तिगत आत्मा, जीव, या भौतिक शरीर का प्रतीक है। इस प्रकार, "वह जिसने बलि पशु में प्रवेश किया है" का अर्थ है दिव्य चेतना (आत्मा) जो प्रत्येक जीवित प्राणी के भीतर, विशेष रूप से मानव रूप के भीतर निवास करती है। कालभैरव, शिपिविष्ट के रूप में, सभी प्राणियों में अंतर्निहित आत्मा हैं। • स्वयं का बलि अर्पण: एक गहरे आध्यात्मिक अर्थ में, बलिदान निचले स्वयं (अहंकार, इच्छाओं, आसक्तियों) को उच्चतर स्वयं को अर्पित करने का प्रतिनिधित्व करता है। शिपिविष्ट इस आंतरिक बलिदान का अंतिम प्राप्तकर्ता है, दिव्य सिद्धांत जो भक्त के अस्तित्व को शुद्ध और रूपांतरित करता है। • बलिदान के स्वामी: वह सभी प्रामाणिक बलिदानों, बाहरी अनुष्ठानों और आंतरिक आध्यात्मिकS अनुशासन दोनों का अंतर्निहित सिद्धांत और लक्ष्य है। वह परम वास्तविकता है जो तब प्रकट होती है जब "त्वचा" (भ्रम और अहंकार के बाहरी आवरण) को हटा दिया जाता है।

अर्थों का संश्लेषण ये दो प्रतीत होने वाली भिन्न व्याख्याएँ एक गहन सत्य पर अभिसरित होती हैं: कालभैरव अनंत रूप से दीप्तिमान, सर्वव्यापी चेतना (प्रकाश) हैं जो सभी प्राणियों के भीतर, यहां तक कि सबसे विनम्र रूपों (बलि पशु) के भीतर भी अंतरतम स्वयं (आत्मा) के रूप में निवास करते

हैं। वह चमकदार उपस्थिति है जो आध्यात्मिक शुद्धि और आत्म-अर्पण के माध्यम से प्रकट होती है, जो सभी सृष्टि को पार करती है और व्याप्त करती है।

820. शिवाश्रयाय

उन परम देव को नमन जो परम कल्याणकारी आश्रय हैं।

विस्तार : शिवाश्रयाय (Shivāśrayāya) नाम 'शिव' और 'आश्रय' से बना एक गहरा संस्कृत यौगिक है।

शिव (Shiva): इस शब्द के अर्थ की कई परतें हैं। मुख्य रूप से, यह "शुभता," "परोपकारिता," "पवित्रता," और "अच्छाई" को दर्शाता है। यह इन गुणों के अवतार और परम वास्तविकता के रूप में स्वयं भगवान शिव को भी दर्शाता है। इस संदर्भ में, "शिव" उस चीज़ को संदर्भित करता है जो स्वाभाविक रूप से अच्छी, शुद्ध और मुक्ति की ओर ले जाने वाली है।

आश्रय (Āśraya): इसका अर्थ है "शरण," "आश्रय स्थल," "सहारा," "आधार," "निवास," या "परम सहारा।" यह निर्भरता, सुरक्षा और निवास के स्थान को इंगित करता है।

शुभता का निवास (The Abode of Auspiciousness) शिवाश्रय (Shivāśraya) के रूप में, कालभैरव सभी शुभ का परम निवास स्थान, उसका सार और उसका स्रोत हैं। इसका तात्पर्य यह है कि किसी भी प्राणी द्वारा अनुभव किया जाने वाला कोई भी सौभाग्य, पवित्रता या आध्यात्मिक लाभ उनसे उत्पन्न होता है और उनके द्वारा समर्थित होता है। वे वह आधार हैं जिस पर सभी परोपकारी शक्तियाँ और वास्तविकताएँ टिकी हुई हैं।

परम आश्रय (The Supreme Refuge) यह नाम शुभता, सुरक्षा और आध्यात्मिक सांत्वना चाहने वाले सभी प्राणियों के लिए उनके परम आश्रय की भूमिका पर प्रकाश डालता है। जब कोई कालभैरव के प्रति समर्पण करता है, तो वे उनकी परोपकारी शक्ति के तहत आश्रय पाते हैं, जो उन्हें शुद्ध करती है और उन्हें अच्छाई की ओर ले जाती है। वे उन लोगों के लिए परम सहारा हैं जो प्रतिकूलता को दूर करना और आध्यात्मिक कल्याण प्राप्त करना चाहते हैं।

पवित्रता का आधार (The Foundation of Purity) इसके अतिरिक्त, शिवाश्रय (Shivāśraya) का अर्थ है कि वे पवित्रता का मूलभूत आधार हैं। शिव के विनाशकारी पहलू के रूप में, कालभैरव नकारात्मकता, अज्ञानता और अशुद्धता का नाश करते हैं, जिससे शिव की अंतर्निहित शुभता की अभिव्यक्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। सभी अशुभ का नाश करके, वे अच्छाई के लिए एक अटूट नींव स्थापित करते हैं।

संक्षेप में, शिवाश्रयाय (Shivāśrayāya) कालभैरव को सभी अच्छे, शुद्ध और शुभ अस्तित्व के परम समर्थन और रक्षक के रूप में पूजता है, जिस पर सभी लाभकारी वास्तविकताएँ निर्भर करती हैं।

821. संसारचक्रभृते

संसार के महान पहिए (संसार) को धारण करने वाले और बनाए रखने वाले को नमन।

विस्तार : संसारचक्रभृते नाम तीन संस्कृत शब्दों - संसार, चक्र और भृत् - से बना एक गहरा विशेषण है।

संसार: अस्तित्व का चक्र संसार जन्म, जीवन, मृत्यु और पुनर्जन्म या आवागमन के निरंतर चक्र की अवधारणा है। यह दुख, अनित्यता और किसी के कर्मों के परिणामों (कर्म) से भरे सांसारिक अस्तित्व को संदर्भित करता है। यह घटनात्मक दुनिया, द्वैत और आसक्ति का क्षेत्र है, जिससे मुक्ति (मोक्ष) की तलाश की जाती है।

चक्र: पहिया चक्र का शाब्दिक अर्थ "पहिया" है। इस संदर्भ में, यह समय, सृष्टि, संरक्षण और विघटन की चक्रीय प्रकृति के साथ-साथ कर्म और उसके फलों के निरंतर घूमने का प्रतीक है। "संसार का पहिया" एक निरंतर, गोलाकार गति का अर्थ है जिसका कोई स्पष्ट आदि या अंत नहीं है, जो प्राणियों को अपनी धुरी में फंसाता है।

भृत्: धारण करने वाला, बनाए रखने वाला भृत् का अर्थ है "धारण करना," "पकड़ना," "समर्थन करना," या "बनाए रखना।"

संसार को धारण करने वाला और बनाए रखने वाला यह नाम भगवान कालभैरव को ब्रह्मांडीय अभिव्यक्ति, अवधि और अंततः विघटन के पूरे चक्र के परम सूत्रधार और संरक्षक के रूप में प्रकट करता है। वह केवल संसार का अवलोकन नहीं कर रहे हैं बल्कि सक्रिय रूप से इसे धारण कर रहे हैं, इसे रूप और निरंतरता दे रहे हैं। इसमें कई गहरे पहलू निहित हैं:

• ब्रह्मांडीय अधिकार: उनके पास ब्रह्मांडीय तंत्र पर पूर्ण अधिकार है जो ब्रह्मांड को नियंत्रित करता है, जिसमें कर्म और नियति के नियम शामिल हैं। उनका पहिया धारण करना समय, अस्तित्व और उन शक्तियों पर उनकी सर्वोच्च महारत को दर्शाता है जो प्राणियों को चक्र से बांधती हैं।

• सृष्टि और विनाश का नृत्य: जबकि भैरव अक्सर विनाश से जुड़े होते हैं, संसार के संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका इस बात पर प्रकाश डालती है कि विनाश सृष्टि और संरक्षण के एक सतत चक्र का एक अभिन्न अंग है। वह ब्रह्मांड की लयबद्ध धड़कन को नियंत्रित करते हैं, जहाँ पुराने रूपों को नए के लिए रास्ता बनाने के लिए नष्ट कर दिया जाता है, जिससे ब्रह्मांडीय नाटक की निरंतरता सुनिश्चित होती है।

• मुक्ति का विरोधाभास: भक्तों के लिए, भैरव को संसार के धारक के रूप में स्वीकार करना महत्वपूर्ण है। इसका अर्थ है कि वही भगवान जो प्राणियों को अस्तित्व के इस चक्र से बांधते हैं, वही हैं जो इससे मुक्ति प्रदान कर सकते हैं। पहिया धारण करके, वह इसे शुरू करने और रोकने दोनों की अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हैं, इस प्रकार पुनर्जन्म के अंतहीन चक्र से मुक्ति (मोक्ष) का मार्ग प्रदान करते हैं। इस पहलू में उनकी पूजा करना लौकिक अस्तित्व की सीमाओं को पार करने की अपील है।

822. साराय

जो परम सार, सर्वोच्च और सबसे मौलिक वास्तविकता हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : साराय नाम संस्कृत शब्द सार (Sāra) से लिया गया है, जो एक गहरा दार्शनिक और आध्यात्मिक अर्थ व्यक्त करता है। यह "सार," "मुख्य बात," "अर्क," "उच्चतम भाग," "मज्जा," या "मौलिक वास्तविकता" को संदर्भित करता है।

परम सार इस संदर्भ में, सार कालभैरव को सभी अस्तित्व के पूर्ण, अविभाज्य सार के रूप में दर्शाता है। वह केवल वास्तविकता का एक पहलू नहीं हैं, बल्कि वह मूल आधार हैं जिस पर सब कुछ टिका हुआ है और जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है। जैसे मज्जा हड्डी का सार है, या मुख्य बात किसी पाठ का मूल अर्थ है, वैसे ही कालभैरव परम, अप्रकट सत्य हैं जो सभी प्रकट रूपों के अंतर्निहित हैं।

उच्चतम वास्तविकता यह नाम कालभैरव को परब्रह्म की स्थिति तक उठाता है - सर्वोच्च वास्तविकता, सभी द्वैत और गुणों से परे परम सत्य। वह वह सत्य हैं जो सभी भ्रमों, क्षणभंगुर घटनाओं और सतही परतों को हटाने पर शेष रहता है। दार्शनिक शब्दों में, सार का अर्थ है कि वह वह तत्व (सिद्धांत) हैं जो अद्वैत, शाश्वत और स्व-अस्तित्ववान हैं।

सभी का अर्क सार का अर्थ "सर्वोत्तम भाग" या "सबसे मूल्यवान पहलू" भी है। इसलिए, कालभैरव को सभी गुणों, शक्तियों और आध्यात्मिक अनुभूतियों का अर्क माना जाता है। वह आध्यात्मिक प्रयास का अंतिम लक्ष्य हैं, शुद्ध चेतना जो आनंद (Ānanda) और ज्ञान (Jñāna) का सार है।

भक्तों के लिए निहितार्थ भक्त के लिए, कालभैरव को सार के रूप में पहचानना उन्हें केवल एक देवता के रूप में नहीं, बल्कि अपने स्वयं के आत्म, आत्मा (Ātman) के सार और ब्रह्मांड की मौलिक वास्तविकता के रूप में देखना है। यह अनुभूति जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति की ओर ले जाती है, क्योंकि व्यक्ति इस परम सार के साथ विलीन हो जाता है।

823. शंकराय

शांति, सुख और शुभता लाने वाले (शंकर) को नमन।

विस्तार : शंकरा (śaṅkara) नाम भगवान शिव से जुड़ा एक गहरा विशेषण है, जिसका अर्थ है "वह जो शांति, कल्याण और शुभता लाता है।" यह संस्कृत मूल "शम्" (कल्याण, शांति, समृद्धि, शुभता) और "कर" (जो बनाता है या कारण बनता है) से लिया गया है।

कल्याण के प्रदाता (शम्) शंकरा शिव के उस पहलू का प्रतीक हैं जो स्वाभाविक रूप से परोपकारी है और सभी सृष्टि के कल्याण के लिए समर्पित है। जबकि शिव को अक्सर भयंकर रूपों (जैसे भैरव) में चित्रित किया जाता है जो पुनरुत्पादन के लिए विनाश का प्रतीक हैं, शंकरा परम परोपकार, करुणा और कृपा का प्रतिनिधित्व करते हैं। वह वह हैं जो दुख को दूर करते हैं और सद्भाव स्थापित करते हैं। यह पहलू शिव की भूमिका को दिव्य चिकित्सक, शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों तरह के सभी दुखों के परम उपचारक के रूप में जोर देता है।

शुभता के दाता (कर) "शम्" के "कर्ता" या "कारक" के रूप में, शंकरा वह स्रोत हैं जो सभी अच्छे, शुभ और आध्यात्मिक विकास के लिए अनुकूल हैं। वह आशीर्वाद के दाता हैं, न केवल भौतिक समृद्धि के, बल्कि आंतरिक शांति और आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) के भी, जिन्हें शुभता के उच्चतम रूप माना जाता है। उनकी उपस्थिति मात्र, उनके स्वरूप पर ध्यान, या उनके नाम का उच्चारण शुद्धता, शांति और सकारात्मक ऊर्जा की स्थिति को उत्पन्न करने वाला माना जाता है।

दार्शनिक महत्व अद्वैत वेदांत परंपरा में, शंकरा पूज्य दार्शनिक आदि शंकरा का भी नाम है, जिन्होंने अद्वैतवाद के दर्शन को व्यवस्थित किया। उनके उपदेशों ने व्यक्तिगत आत्मा (आत्मा) की परम वास्तविकता (ब्रह्म) के साथ अंतिम एकात्मता पर जोर दिया, जिससे अज्ञान का उन्मूलन और परम शांति की प्राप्ति हुई। यह दार्शनिक अर्थ दिव्य नाम के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है, क्योंकि भगवान शिव शंकरा के रूप में इस परम आध्यात्मिक सत्य के साक्षात अवतार हैं जो दुख के चक्र का अंत करते हैं।

इसलिए, शंकरा को नमन करना शिव के सबसे करुणामय और परोपकारी पहलू की स्वीकृति है, जो पूरे ब्रह्मांड के लिए शांति, खुशी और आध्यात्मिक कल्याण का परम स्रोत है।

824. सर्वसाधकाय

सभी लक्ष्यों और इच्छाओं को पूरा करने के परम साधनस्वरूप को नमन।

विस्तार : सर्वसाधकाय नाम 'सर्व' और 'साधक' का एक यौगिक है, जो कालभैरव की सर्वशक्तिमत्ता और परोपकारी प्रकृति में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

सर्व (Sarva): इस संस्कृत शब्द का अर्थ है "सभी," "प्रत्येक," "पूर्ण," या "सार्वभौमिक।" यह अस्तित्व की समग्रता को संदर्भित करता है, जिसमें सभी संभावनाएँ, सभी इच्छाएँ और सभी लक्ष्य, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों शामिल हैं।

साधक (Sādhaka): यह शब्द "साध" धातु से लिया गया है, जिसका अर्थ है "पूरा करना," "प्राप्त करना," "संतुष्ट करना," या "सिद्ध करना।" साधक वह है जो किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए साधना (आध्यात्मिक अभ्यास) करता है। इस संदर्भ में, साधक का अर्थ "साधन" या "उपकरण" है जिसके द्वारा सिद्धि प्राप्त की जाती है, या "वह जो सिद्ध करता है।"

सभी सिद्धियों का अंतिम साधन (The Ultimate Means for All Accomplishments) जब संयुक्त किया जाता है, तो सर्वसाधकाय का अर्थ है कि कालभैरव वह परम साधन या उपकरण हैं जिनके माध्यम से सभी लक्ष्य, इच्छाएँ और कार्य पूरे किए जा सकते हैं। वे केवल वरदान देने वाले नहीं हैं, बल्कि वह प्रक्रिया और शक्ति हैं जो किसी भी प्रयास, चाहे वह सांसारिक हो या आध्यात्मिक, की सफलता को सक्षम बनाती है। इसका तात्पर्य है कि उनकी भक्ति, या उनकी ब्रह्मांडीय ऊर्जा के साथ संरेखण, सार्वभौमिक सफलता की क्षमता को खोलता है।

इच्छाओं को पूरा करने वाले (भौतिक और आध्यात्मिक) (Fulfiller of Desires - Material and Spiritual) यह नाम उनकी सांसारिक इच्छाओं (अर्थ, काम) और आध्यात्मिक आकांक्षाओं (धर्म, मोक्ष) दोनों को पूरा करने की क्षमता पर प्रकाश डालता है। चाहे कोई धन, संतान, स्वास्थ्य, सुरक्षा, ज्ञान, मुक्ति, या आध्यात्मिक उन्नति चाहता हो, वे उस प्राप्ति के स्रोत और सुविधाकर्ता हैं। उनकी शक्ति मानवीय प्रयासों के हर क्षेत्र तक फैली हुई है।

दिव्य प्रवर्तक (The Divine Enabler) सर्वसाधकाय यह विचार व्यक्त करता है कि कालभैरव दिव्य प्रवर्तक के रूप में कार्य करते हैं। अपने भक्तों के लिए, वे बाधाओं को दूर करते हैं (विघ्न निवारण), मार्ग प्रशस्त करते हैं, और अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक शक्ति, संकल्प और परिस्थितियाँ प्रदान करते हैं। वे अभ्यासकर्ता के प्रयासों में एक पारलौकिक ऊर्जा भरते हैं जो सफलता सुनिश्चित करती है।

सफलता के सिद्धांत का प्रतीक (Embodying the Principle of Success) दार्शनिक रूप से, यह नाम बताता है कि कालभैरव ब्रह्मांड के भीतर सफलता और उपलब्धि के सिद्धांत का ही प्रतीक हैं। वे वह अंतर्निहित शक्ति हैं जो कारण को वांछित परिणामों की ओर निर्देशित करती है। उनका सम्मान करना अपने जीवन में उपलब्धि के इस सार्वभौमिक सिद्धांत का आह्वान करना है।

825. अस्त्राय

दिव्य, अलौकिक मिसाइल या अस्त्र स्वरूप को नमन।

विस्तार : "अस्त्राय" नाम संस्कृत शब्द "अस्त्र" से लिया गया है, जो एक दिव्य, अलौकिक हथियार को दर्शाता है, जिसे अक्सर मंत्रों के साथ आह्वान किया जाता है, न कि किसी साधारण प्रक्षेप्य को।

दिव्य हथियार • अस्त्र हिंदू पौराणिक कथाओं में देवताओं या महान नायकों द्वारा उपयोग किए जाने वाले एक खगोलीय या जादुई हथियार को दर्शाता है। साधारण हथियारों के विपरीत, अस्त्र दिव्य ऊर्जा द्वारा सशक्त होते हैं और विशिष्ट, अक्सर विनाशकारी, प्रभाव रखते हैं। उन्हें केवल फेंका या चलाया नहीं जाता है, बल्कि पारंपरिक रूप से सटीक मंत्रों के माध्यम से आह्वान किया जाता है, जो उनसे जुड़े देवता की इच्छा और शक्ति का प्रतीक होते हैं।

विनाश और परिवर्तन का सार • "अस्त्राय" के रूप में संदर्भित होने से, कालभैरव को केवल ऐसे हथियारों के धारक के रूप में ही नहीं, बल्कि इन दिव्य शस्त्रों के सार और अवतार के रूप में भी पहचाना जाता है। यह इंगित करता है कि उनकी विनाश की शक्ति क्रूर या केवल भौतिक नहीं है, बल्कि एक परिष्कृत, लक्षित और दिव्य रूप से स्वीकृत शक्ति है। वह परम प्रक्षेपास्त्र हैं—अदम्य शक्ति जो आवश्यक अंत और परिवर्तन लाती है।

अदम्य शक्ति का प्रतीक • यह नाम कालभैरव की एक अदम्य शक्ति के रूप में भूमिका पर जोर देता है जो बुराई, अज्ञानता और आध्यात्मिक प्रगति में आने वाली सभी बाधाओं को नष्ट कर सकती है। वह वह हथियार हैं जो भ्रम (माया) और आसक्ति को काटता है, भक्त को मुक्ति की ओर ले जाता है। दिव्य हथियार के रूप में, वह अपने कार्य में सटीक, शक्तिशाली और अपरिहार्य हैं, अपने भक्तों की कर्मिक अशुद्धियों और आध्यात्मिक बाधाओं को लक्षित करते हैं।

रक्षक और दंडक • एक रक्षक के रूप में, वह नकारात्मक ऊर्जाओं और दुर्भावनापूर्ण शक्तियों के खिलाफ अंतिम रक्षा तंत्र हैं। एक दंडक के रूप में, वह न्याय का दिव्य साधन हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि ब्रह्मांडीय कानून बनाए रखा जाए और धर्म को बाधित करने वालों को उचित परिणाम भुगतने पड़ें। वह दिव्य प्रक्षेपास्त्र हैं जो अधर्म को नष्ट करते हैं।

826. शस्त्राय

पवित्र एवं दिव्य शक्ति के धारक, हाथ में शस्त्र धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : शस्त्र (या शस्त्राय) नाम दिव्य हथियार को संदर्भित करता है, विशेष रूप से परम शक्ति और सटीकता का एक पवित्र, हस्त-निर्मित हथियार, जो अक्सर भगवान शिव से जुड़ा होता है।

दिव्य शस्त्र दिव्य प्राणियों के संदर्भ में, एक "शस्त्र" केवल विनाश का एक उपकरण नहीं है, बल्कि दिव्य इच्छा और शक्ति की अभिव्यक्ति है। यह देवता की बाधाओं को दूर करने, बुराई को पराजित करने और ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखने की क्षमता का प्रतीक है। शिव के हथियार, जैसे त्रिशूल या पिनाक (धनुष), प्रतिष्ठित हैं; वे उनके विभिन्न गुणों और सृजन से लेकर विघटन तक विभिन्न ब्रह्मांडीय कार्यों को करने की उनकी क्षमता का प्रतिनिधित्व करते हैं।

न्याय और संरक्षण का प्रतीक "जो दिव्य शक्ति का पवित्र हस्त-निर्मित हथियार है" के रूप में, भैरव, शिव का एक रूप, इस सिद्धांत को सीधे मूर्त रूप देते हैं। वह मनमानी हिंसा के लिए नहीं, बल्कि न्याय और संरक्षण के लिए दिव्य शक्ति का प्रयोग करते हैं। उनका शस्त्र वह साधन है जिसके द्वारा वे दुष्टों को दंडित करते हैं और धर्म की स्थापना करते हुए धर्मी लोगों की रक्षा करते हैं। यह दिव्य हस्तक्षेप के एक निर्णायक, अटूट रूप को दर्शाता है।

कार्य और संकल्प का सिद्धांत दार्शनिक रूप से, शस्त्र निश्चित क्रिया (क्रिया शक्ति) और संकल्प के सिद्धांत का प्रतिनिधित्व कर सकता है। यह भ्रम (माया), अज्ञान (अविद्या), और नकारात्मक कर्मों को काटने की शक्ति को दर्शाता है। एक भक्त के लिए, भैरव को शस्त्र के रूप में आह्वान करना दिव्य शक्ति के लिए एक प्रार्थना है ताकि वे अपनी आसक्तियों, भय और आंतरिक शत्रुओं को काट सकें, जिससे आध्यात्मिक प्रगति हो सके।

दिव्य ऊर्जा का एक रूप अंततः, इस संदर्भ में शस्त्र केवल एक वस्तु नहीं है, बल्कि स्वयं दिव्य ऊर्जा का एक मानवीकरण है, जो अपने पवित्र उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए एक शक्तिशाली और भयानक रूप में प्रकट होने में सक्षम है। यह ब्रह्मांडीय सद्भाव या आध्यात्मिक मुक्ति को बाधित करने वाली किसी भी शक्ति का सामना करने और उसे नष्ट करने की भैरव की अंतर्निहित शक्ति को दर्शाता है।

827. सप्तगनाय

उन भगवान को नमन जिनकी सात स्वर्गिक प्राणियों के समूहों द्वारा सेवा की जाती है।

विस्तार : सप्तगनाय नाम सप्त और गण में विभाजित होता है, जो शिव भैरव के विशिष्ट स्वर्गीय समूहों पर प्रभुत्व को दर्शाता है।

सप्त: इस संस्कृत शब्द का अर्थ "सात" है। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान और आध्यात्मिकता के संदर्भ में, सात संख्या का गहरा महत्व है, जो अक्सर दिव्य या अर्ध-दिव्य प्राणियों, लोकों या सिद्धांतों के विभिन्न वर्गीकरणों का प्रतिनिधित्व करती है।

गण: "समूह," "मेजबान," "मंडली," या "अनुचर" को संदर्भित करता है। शैव परंपरा में, गण पारंपरिक रूप से शिव के सेवक या सेना होते हैं, जो अक्सर विकृत और भयंकर होते हैं, लेकिन भक्तों के प्रति अंततः परोपकारी होते हैं।

स्वर्गीय प्राणियों के सात समूह "सात समूहों" या "सप्तगणों" की कई तरह से व्याख्या की जा सकती है, जो सभी ब्रह्मांड में दिव्य, अर्ध-दिव्य और रहस्यमय संस्थाओं की सभी श्रेणियों पर शिव भैरव के सर्वोच्च अधिकार को इंगित करते हैं। जबकि इन सात समूहों की विशिष्ट सूचियाँ विभिन्न पुराणों और आगमों में भिन्न हो सकती हैं, वे आम तौर पर शक्तिशाली प्राणियों के महत्वपूर्ण वर्गों को समाहित करती हैं। कुछ सामान्य व्याख्याओं में शामिल हैं:

• सप्तऋषि: सात महान ऋषि जिन्हें अक्सर ब्रह्मा के मानसिक पुत्र और वैदिक ज्ञान और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के संचार में महत्वपूर्ण माना जाता है। • सप्त मातृकाएँ: सात दिव्य माताएँ, विभिन्न देवताओं की शक्ति की भयंकर अभिव्यक्तियाँ, अक्सर सुरक्षा और उर्वरता से जुड़ी होती हैं। • सप्त मरुत: पवन-देवताओं या तूफान देवताओं के सात वर्ग, गतिशील ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के प्रतीक। • सप्त अप्सराएँ: स्वर्गीय अप्सराओं के सात वर्ग, सौंदर्य और आनंद का प्रतीक। • सप्त किन्नर, किंपुरुष और यक्ष: स्वर्गीय संगीतकारों, अर्ध-दिव्य प्राणियों और प्रकृति आत्माओं की अन्य श्रेणियां। • सात भैरव: कुछ तांत्रिक परंपराओं में, यह आठ भैरवों को सात प्राथमिक समूहों में देखे जाने, या प्राथमिक कालभैरव से सात मुख्य उत्सर्जन को संदर्भित कर सकता है।

सभी समूहों के स्वामी "स्वर्गीय प्राणियों के सात समूहों द्वारा सेवित" होने से, कालभैरव को दिव्य और अर्ध-दिव्य शक्तियों के पूरे पंथ के सर्वोच्च कमांडर और स्वामी के रूप में पुष्टि की जाती है। उनका अधिकार विविध लोकों तक फैला हुआ है, जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था सुनिश्चित करता है और उनकी सर्व-समावेशी शक्ति को दर्शाता है। ये सेवक, हालांकि अपने आप में शक्तिशाली हैं, कालभैरव की अंतिम इच्छा की सेवा करते हैं, जो उनकी सर्वोच्च देवत्व की स्थिति पर जोर देता है।

प्रतीकात्मक महत्व यह नाम इसलिए कालभैरव की प्रकट और अप्रकट ब्रह्मांड के सभी पहलुओं पर, इसे आबाद करने वाले स्वर्गीय और रहस्यमय प्राणियों के असंख्य रूपों के माध्यम से, उनकी महारत का प्रतीक है। यह कर्म शक्तियों, मौलिक शक्तियों और अस्तित्व के विभिन्न स्तरों पर सभी जीवन रूपों पर उनके पूर्ण नियंत्रण का प्रतिनिधित्व करता है।

828. सवित्रे

दिव्य प्रेरक, तेजस्वी सूर्य देवता सविता को नमन।

विस्तार : सवित्रे (Savitṛ) नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो कालभैरव और वैदिक देवता सविता के बीच सीधा संबंध स्थापित करता है, जो दिव्य प्रेरक और जीवनदाता हैं और सूर्य से जुड़े हैं।

प्रेरक और जनरेटर (The Impeller and Generator) संस्कृत मूल "सु" (su) का अर्थ है "प्रेरित करना," "उत्तेजित करना," "उत्पन्न करना," या "भेजना।" इस प्रकार, सविता शाब्दिक रूप से "प्रेरक," "उत्तेजक," या "उत्पन्न करने वाला" है। यह सृष्टि को ऊर्जावान बनाने और उत्पन्न करने, सभी चीजों को गति में लाने में उनकी ब्रह्मांडीय भूमिका को संदर्भित करता है। वह सक्रिय सिद्धांत है जो ब्रह्मांड को चलाता है, जीवन, विकास और चेतना को प्रेरित करता है।

तेजस्वी सूर्य देवता (The Radiant Sun Deity) जबकि सूर्य (भौतिक सूर्य) दुनिया को प्रकाशित करता है, सविता सूर्य की दिव्य, उत्तेजक शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसे अक्सर सूर्य की डिस्क के सुनहरे पहलू, उसकी जीवनदायिनी ऊर्जा और ज्ञान और बुद्धि को प्रेरित करने की शक्ति के साथ पहचाना जाता है। वह प्रसिद्ध गायत्री मंत्र के प्रमुख देवता हैं, जो बुद्धि और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि की उत्तेजना के लिए प्रार्थना करता है।

सविता के रूप में कालभैरव (Kalabhairava as Savitr) जब कालभैरव को सवित्रे के रूप में आह्वान किया जाता है, तो यह उनकी सर्वोच्च उत्पादक और उत्तेजक शक्ति को उजागर करता है, न केवल भौतिक अर्थों में बल्कि आध्यात्मिक रूप से भी। • काल के प्रेरक: वह परम शक्ति हैं जो समय को आगे बढ़ाती हैं, जिससे सृष्टि, पालन और संहार के सभी चक्र चलते हैं। उनकी प्रेरक शक्ति ही समय को अथक और अपरिवर्तनीय बनाती है। • आध्यात्मिक जागृति के उत्तेजक: जिस प्रकार सविता बुद्धि और ज्ञान को प्रेरित करते हैं, उसी प्रकार कालभैरव, इस पहलू में, दिव्य उत्तेजक बन जाते हैं जो भक्तों को आध्यात्मिक जागृति, साहस और अज्ञान के विनाश की ओर प्रेरित करते हैं। वह आत्मा को मुक्ति की ओर "प्रेरित" करते हैं। • जीवन और प्रकाश का स्रोत: वह परम स्रोत हैं जिससे सभी जीवन उत्पन्न होता है, ठीक सूर्य की तरह। भले ही वह विनाश का प्रतीक हैं, उनकी प्रकृति का मूल आवेग वह है जो बनाता और बनाए रखता है। उनका "प्रकाश" परम सत्य का प्रकाश है जो भ्रम (माया) के अंधकार को दूर करता है।

यह नाम इसलिए कालभैरव को केवल एक भयानक संहारक के रूप में नहीं, बल्कि उस मूलभूत गतिशील शक्ति के रूप में पहचानता है जो ब्रह्मांड को प्रेरित करती है, सभी प्राणियों को प्रेरित करती है, और परम वास्तविकता के मार्ग को प्रकाशित करती है।

829. सकलागमाय

समस्त पवित्र शास्त्रों (आगमों) के परम स्रोत और साकार रूप को नमन।

विस्तार : सकलागमाय नाम कालभैरव का एक गहन वर्णन है, जो दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों से बना है: सकल और आगम।

सकल (सकल): इस शब्द का अर्थ है "सभी," "संपूर्ण," "पूर्ण," या "समस्त।" यह समग्रता को दर्शाता है, जिसमें बिना किसी अपवाद के सब कुछ शामिल है।

आगम (आगम): यह संस्कृत शब्द व्यापक रूप से "जो नीचे आया है" को संदर्भित करता है, जिसका अर्थ पारंपरिक पवित्र ग्रंथ हैं, विशेष रूप से तांत्रिक पूजा, अनुष्ठान, योग और दार्शनिक सिद्धांतों से संबंधित। आगम वेदों के समानांतर शास्त्रों का एक निकाय बनाते हैं, विशेष रूप से शैव धर्म, शाक्त धर्म और वैष्णव धर्म में प्रभावशाली हैं, और इन्हें दिव्य रहस्योद्घाटन माना जाता है।

सभी पवित्र ज्ञान का मूर्त रूप कालभैरव, सकलागम के रूप में, इसलिए सभी शास्त्रीय ज्ञान, विशेष रूप से आगमों के परम स्रोत, सार और मूर्त रूप हैं। इसका अर्थ कई स्तरों पर है:

• सभी आगमों के प्रवर्तक: वे दिव्य सत्ता हैं जिनसे सभी आगम उत्पन्न हुए हैं। ये ग्रंथ केवल मानवीय रचनाएँ नहीं हैं बल्कि दिव्य रहस्योद्घाटन हैं, जो स्वयं शिव/भैरव द्वारा या उनके अभिव्यक्तियों के माध्यम से सीधे कहे गए हैं। इस प्रकार, वे इन शास्त्रों में वर्णित सभी सिद्धांतों, अनुष्ठानों और आध्यात्मिक प्रथाओं के मूल स्रोत हैं।

• जीवित शास्त्र: वे केवल स्रोत ही नहीं, बल्कि इन शास्त्रों की जीवंत अभिव्यक्ति भी हैं। उनका अपना अस्तित्व, उनका स्वरूप, कार्य और गुण, आगमों में निहित ज्ञान और शिक्षाओं को समाहित करते हैं। भैरव को समझना आगमों को समझना है; आगमों का अध्ययन करना भैरव के पास जाना है।

• तांत्रिक मार्गों के मार्गदर्शक: आगम विशेष रूप से तांत्रिक परंपराओं के लिए प्रासंगिक हैं, जिनमें अक्सर आध्यात्मिक मुक्ति या विशिष्ट शक्तियों को प्राप्त करने के उद्देश्य से गूढ़ प्रथाएं शामिल होती हैं। सकलागमाय होने के नाते, कालभैरव को सभी तांत्रिक मार्गों पर शासन करने वाले और उनका मार्गदर्शन करने वाले सर्वोच्च भगवान के रूप में पुष्टि की जाती है। वे परम गुरु हैं जो इन गहन आध्यात्मिक विज्ञानों के रहस्यों को प्रकट करते हैं।

• दिव्य ज्ञान का संश्लेषण: यह नाम इंगित करता है कि कालभैरव सभी दिव्य ज्ञान के संश्लेषण और पराकाष्ठा का प्रतिनिधित्व करते हैं। कोई भी शास्त्र या आध्यात्मिक परंपरा उनके बाहर मौजूद नहीं है। वे आध्यात्मिक ज्ञान का पूर्ण, व्यापक भंडार हैं, जो किसी एक ग्रंथ या परंपरा की व्यक्तिगत सीमाओं को पार करते हैं।

कालभैरव को सकलागमाय के रूप में पूजने में, भक्त सभी धार्मिक ज्ञान पर उनके सर्वोच्च अधिकार और दिव्य ज्ञान के परम प्रदाता के रूप में उनकी भूमिका को स्वीकार करते हैं, जो पवित्र ग्रंथों में निर्धारित आध्यात्मिक प्राप्ति के जटिल मार्गों के माध्यम से साधकों का मार्गदर्शन करते हैं।

830. सुचीराय

जो अत्यंत श्रेष्ठ और उत्कृष्ट वंश के हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : सुचीर (सुचीराय) नाम 'सु' और 'चीर' से बना एक यौगिक है, जिसमें 'सु' का अर्थ 'अच्छा', 'उत्कृष्ट', 'कुलीन' या 'बहुत' है, और 'चीर' का अर्थ 'वंश', 'परिवार' या 'पूर्वज' है। इस प्रकार, यह नाम सामूहिक रूप से "बहुत ही कुलीन और उत्कृष्ट वंश वाले" को दर्शाता है।

दिव्य संतान कालभैरव के संदर्भ में, यह नाम उनके दिव्य और अद्वितीय उद्गम पर जोर देता है। उनका जन्म किसी सांसारिक वंश या नश्वर माता-पिता से नहीं हुआ है, बल्कि वे सीधे आदिम शिव से उत्पन्न हुए हैं, जो सभी सृष्टि और संहार के अंतिम स्रोत हैं। इसलिए उनका "वंश" शाश्वत, शुद्ध और सर्वोच्च है, जो उन्हें सामान्य वंशावली के दायरे से परे रखता है। वे परम पूर्वज, स्वयंभू और स्वयंभूत हैं।

उत्कृष्टता और शुद्धता 'उत्कृष्ट' (सु) शब्द उनके उद्गम की पूर्णता और बेदाग प्रकृति को रेखांकित करता है। इसका तात्पर्य है कि उनका अस्तित्व किसी भी दोष, अपूर्णता या भौतिक जन्म की सीमाओं से मुक्त है। यह शिव के 'स्वयंभू' (स्वयं उत्पन्न) और आदि कारण (आदि कारण) जैसे विशेषणों के अनुरूप है।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था का प्रतीक उनका कुलीन वंश ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) को बनाए रखने में उनकी भूमिका को भी दर्शाता है। शिव के एक प्रकटीकरण के रूप में, वे न्याय, सत्य और धार्मिकता के उच्चतम सिद्धांतों का प्रतीक हैं। उनका अस्तित्व ही ब्रह्मांड को नियंत्रित करने वाले शाश्वत और अपरिवर्तनीय नियमों का प्रमाण है, जो पूर्ण शुद्धता और शक्ति के स्रोत से उत्पन्न होते हैं।

831. सप्तदोर्वीराय

सात शक्तिशाली भुजाओं वाले महान वीर को नमन।

विस्तार : सप्तदोर्वीराय नाम सप्तदोः, वीर और आय का एक यौगिक है।

सप्तदोः: यह 'सप्त' (सात) और 'दोः' (भुजा, हाथ, अंग) को संदर्भित करता है। इसलिए, 'सप्तदोः' का अर्थ है 'सात भुजाओं वाला'। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान और आध्यात्मिकता में सात संख्या का अक्सर महत्वपूर्ण प्रतीकात्मक महत्व होता है, जो पूर्णता, ब्रह्मांडीय व्यवस्था और पवित्र चक्रों का प्रतिनिधित्व करता है।

वीर: यह शब्द 'नायक', 'बहादुर योद्धा', 'वीर' या 'चैंपियन' को दर्शाता है। आध्यात्मिक संदर्भ में, यह सर्वोच्च साहस, शक्ति और बाधाओं को जीतने की क्षमता को दर्शाता है।

सात भुजाओं वाला नायक (सात का प्रतीकवाद) यह नाम एक शक्तिशाली, बहु-भुजा वाले देवता की छवि को उद्घाटित करता है, जो हिंदू मूर्तिकला में एक सामान्य रूपांकन है जिसका उपयोग सर्वशक्तिमानता और एक साथ कई कार्य करने की क्षमता को दर्शाने के लिए किया जाता है। सात भुजाएँ विशेष रूप से अनेक क्षमताओं और अस्तित्व के विभिन्न पहलुओं या ब्रह्मांडीय कार्यों पर व्यापक नियंत्रण का सुझाव देती हैं।

भैरव के संदर्भ में, सात भुजाएँ प्रतीक हो सकती हैं: • सात ऊपरी लोकों (सप्त लोक) या सात निचले लोकों (सप्त पाताल) पर नियंत्रण: यह पूरे ब्रह्मांड पर उनकी संप्रभुता को इंगित करता है। • समय और स्थान पर महारत: सात भुजाएँ समय के सात मौलिक विभाजनों या ब्रह्मांडीय तलों पर उनके प्रभुत्व का प्रतिनिधित्व कर सकती हैं। • सात चक्र: आध्यात्मिक ऊर्जा के स्वामी के रूप में, सात भुजाएँ मानव शरीर के भीतर सात प्रमुख ऊर्जा केंद्रों को सक्रिय और नियंत्रित करने की उनकी क्षमता का प्रतीक हो सकती हैं, जिससे आध्यात्मिक जागृति होती है। • सात प्रकार की ऊर्जा या शक्तियाँ: विभिन्न दिव्य ऊर्जाओं या शक्ति के अभिव्यक्तियों, जैसे सृजन, संरक्षण, विनाश, आवरण, प्रकटीकरण, कृपा और ज्ञान पर उनकी आज्ञा का प्रतिनिधित्व करती हैं।

सर्वोच्च शक्ति और क्रिया 'वीर' के रूप में, भैरव इस रूप में सर्वोच्च पराक्रम और किसी भी प्रतिकूलता को दूर करने की क्षमता का प्रतीक हैं। सात भुजाएँ न केवल शक्ति का प्रतीक हैं, बल्कि ब्रह्मांडीय नाटक में उनकी सक्रिय भागीदारी का भी प्रतीक हैं, जो एक साथ और प्रभावी ढंग से विभिन्न कार्य करती हैं। यह एक भयानक और अत्यधिक सक्षम रक्षक का सुझाव देता है जो बिना किसी प्रयास के कई हथियारों या दिव्य इच्छा के उपकरणों का उपयोग कर सकता है, अज्ञानता और बुराई के खिलाफ अपनी ब्रह्मांडीय लड़ाइयों में हमेशा विजयी होता है।

832. षड्विंशायाय

पच्चीस तत्त्वों से परे, पुरुष रूपी छब्बीसवें सिद्धांत को नमन।

विस्तार : नाम षड्विंशाय (षड्विंश) विभिन्न प्राचीन भारतीय दार्शनिक प्रणालियों, विशेष रूप से सांख्य और तंत्र के कुछ विद्यालयों में "छब्बीसवें सिद्धांत" को संदर्भित करता है, जो शिव की ब्रह्मांडीय स्थिति को समझने के लिए मौलिक हैं।

25 तत्व (The 25 Tattvas) शास्त्रीय सांख्य दर्शन में, ब्रह्मांड को 25 सिद्धांतों या तत्वों से बना हुआ समझा जाता है। ये हैं: 1. प्रकृति (Prakṛti): अविभेदित आदिम पदार्थ या प्रकृति। 2. महत् (बुद्धि) (Mahat (Buddhi)): महान, ब्रह्मांडीय बुद्धि। 3. अहंकार (Ahaṃkāra): अहंकार-भाव, व्यष्टिगत सिद्धांत। 4-18. मनस् (मन) (Manas (Mind)) + पाँच ज्ञानेंद्रियाँ (Jñānendriyas) (प्रत्यक्ष के अंग: देखना, सुनना, सूंघना, चखना, छूना) + पाँच कर्मेंद्रियाँ (Karmendriyas) (क्रिया के अंग: बोलना, पकड़ना, चलना, प्रजनन करना, उत्सर्जन करना) + पाँच तन्मात्र (Tanmātras) (सूक्ष्म तत्व: ध्वनि, स्पर्श, रूप, रस, गंध, जो स्थूल तत्वों का सार हैं)। 19-23. पाँच महाभूत (Mahābhūtas) (स्थूल तत्व: आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी)। 24. पुरुष (Purusha): शुद्ध चेतना, आत्मा, प्रकृति से भिन्न; अक्सर 25वां तत्व माना जाता है।

छब्बीसवां सिद्धांत (The 26th Principle) जब कालभैरव को षड्विंश के रूप में संदर्भित किया जाता है, तो यह उनकी अतिक्रमणकारी प्रकृति को दर्शाता है। वे इन 25 या 24 तत्वों से परे हैं। कुछ प्रणालियों में, पुरुष 25वां तत्व है, जबकि षड्विंश सर्वोच्च शिव या परमात्मा को संदर्भित करता है जो इन सभी तत्वों में व्याप्त हैं और उन्हें व्यवस्थित करते हैं लेकिन उनसे सीमित नहीं हैं। वे परम चेतना, सर्वोच्च भगवान हैं जो प्रकृति और पुरुष दोनों के साक्षी, नियंत्रक और स्रोत हैं।

ब्रह्मांडीय चेतना और अतिक्रमण (Cosmic Consciousness and Transcendence) यह नाम कालभैरव की सर्वोच्च, सर्वव्यापी चेतना (चैतन्य) के रूप में भूमिका पर जोर देता है जो संपूर्ण ब्रह्मांडीय अभिव्यक्ति को नियंत्रित और जीवंत करती है। वे वह आधार हैं जिस पर सभी 25 तत्व कार्य करते हैं। जबकि पुरुष प्रकृति के साक्षी के रूप में खड़ा है, कालभैरव 26वें सिद्धांत के रूप में परम दिव्यता, शुद्ध और निरपेक्ष चेतना का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सभी अस्तित्व का स्रोत और अंतिम लक्ष्य है।

तांत्रिक परंपराओं में, 26वां तत्व, जिसे अक्सर शिव-तत्व कहा जाता है, वह मौलिक वास्तविकता है जिससे संपूर्ण ब्रह्मांड उत्पन्न होता है और जिसमें अंततः विलीन हो जाता है। यह अप्रकट, शुद्ध जागरूकता, आनंद और एकता की सर्वोच्च अवस्था है। इसलिए, कालभैरव को षड्विंशाय के रूप में संबोधित करना उनकी सर्वोच्च, अद्वैत और पारलौकिक प्रकृति को परम वास्तविकता के रूप में स्वीकार करता है।

833. सर्वदृशे

समस्त ब्रह्मांड के सर्वदृष्टा साक्षी को नमन।

विस्तार : सर्वदृशे नाम संस्कृत के पदों 'सर्व' और 'दृश्' का एक यौगिक है।

• सर्व (Sarva): इसका अर्थ है "सभी," "प्रत्येक," "संपूर्ण," "सार्वभौमिक," या "समस्त।" यह व्यापकता और समग्रता को दर्शाता है।

• दृश् (Dhṛś) (धातु दृश् से): इस क्रिया धातु का अर्थ है "देखना," "अनुभव करना," "अवलोकन करना," या "साक्षी होना।"

सर्व-दृष्टा साक्षी (The All-Seeing Witness) कालभैरव, सर्वदृशे के रूप में, दिव्य बोध की पूर्ण और सर्वव्यापी क्षमता का प्रतीक हैं। वह संपूर्ण ब्रह्मांड – भूत, वर्तमान और भविष्य – के शाश्वत, निष्पक्ष और सर्वव्यापी पर्यवेक्षक हैं। उनकी चौकस दृष्टि से कुछ भी नहीं बचता; प्रत्येक क्रिया, विचार, इरादा और घटना, चाहे वह प्रकट हो या सूक्ष्म, उन्हें ज्ञात है। यह गुण उनकी सर्वज्ञता और परम ब्रह्मांडीय साक्षी के रूप में उनकी भूमिका को उजागर करता है, जो समय और स्थान की सीमाओं से परे देखते हैं।

धर्म के संरक्षक (Guardian of Dharma) सर्व-दृष्टा साक्षी के रूप में, वह न केवल अवलोकन करते हैं बल्कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) को भी बनाए रखते हैं। उनकी जागरूकता यह सुनिश्चित करती है कि न्याय कायम रहे, और अच्छे तथा बुरे दोनों कर्मों के परिणाम उचित रूप से दिए जाएं। यह पहलू दंडपाणि के रूप में उनकी भूमिका से जुड़ा है, जो दंड के डंडे को धारण करने वाले हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि कर्म संतुलित रहें।

अज्ञान के नाशक (Dispeller of Ignorance) आध्यात्मिक साधक के लिए, कालभैरव को सर्वदृशे के रूप में पहचानना यह दर्शाता है कि किसी की आंतरिक आध्यात्मिक साधना और भक्ति को हमेशा देखा जाता है। यह इस बात का आश्वासन देता है कि मुक्ति के लिए उनके प्रयासों को देखा और स्वीकार किया जाता है। इसके विपरीत, यह अभ्यासकर्ताओं को यह भी याद दिलाता है कि उनकी आंतरिक अशुद्धियाँ और अज्ञान दिव्य दृष्टि के लिए समान रूप से पारदर्शी हैं, जो आत्मनिरीक्षण और शुद्धता के लिए प्रयास करने को प्रोत्साहित करता है। वह माया (भ्रम) के आवरण को देखते हैं और वही हैं जो भक्त को इससे परे देखने में मदद कर सकते हैं।

दिव्य चेतना का प्रतीक (Symbol of Divine Consciousness) यह नाम इस बात पर जोर देता है कि शिव, अपने भैरव रूप में, केवल एक देवता नहीं हैं, बल्कि वह चेतना हैं जो सभी अस्तित्व में व्याप्त और प्रकाशित करती है। वह सभी प्राणियों और स्वयं ब्रह्मांड में अंतर्निहित जागरूकता हैं।

834. स्वाराजे

जो स्वयं शासन करने वाले, परम और स्वतंत्र सम्राट हैं, उनको नमन।

विस्तार : स्वराजे नाम स्वराज्य से लिया गया है, जिसका अर्थ है "स्वयं-शासित," "स्वतंत्र संप्रभु," या "जिसका राज्य स्वयं है।" यह गहन पदनाम कालभैरव के सर्वोच्च, असीमित वास्तविकता के रूप में उनके स्वरूप के एक प्रमुख पहलू को उजागर करता है।

स्वयं-शासित और परम संप्रभुता स्वराज का अर्थ पूर्ण स्वतंत्रता है। कालभैरव, स्वराज के रूप में, किसी भी बाहरी कानून, शक्ति या अधिकार के अधीन नहीं हैं। वे परम कानून निर्माता हैं, सभी नियमों और व्यवस्था के स्रोत हैं, फिर भी वे स्वयं उनसे परे हैं। यह सभी सीमाओं, निर्भरताओं और बाहरी प्रभावों से उनकी पूर्ण मुक्ति को दर्शाता है। उनकी इच्छा सर्वोच्च है, और उनका शासन निर्विवाद है, एक संप्रभुता जो उनके अपने अस्तित्व से उत्पन्न होती है।

असीमित और अबाधित यह नाम उनके असीमित स्वरूप पर जोर देता है। उन प्राणियों के विपरीत जो कर्म, समय या स्थानिक बाधाओं से बंधे हैं, कालभैरव सहज स्वतंत्रता (स्वतंत्र) की स्थिति में विद्यमान हैं। वे अपने भाग्य के स्वामी हैं, और वास्तव में, सभी सृष्टि के भाग्य के स्वामी हैं। वे राजा और राज्य दोनों हैं, शासक और शासित दोनों हैं, जो एक अद्वैत वास्तविकता को दर्शाते हैं जहाँ सभी शक्ति और अधिकार स्वयं से उत्पन्न होते हैं।

ब्रह्मांडीय स्वतंत्रता एक ब्रह्मांडीय अर्थ में, स्वराज का अर्थ है कि कालभैरव ब्रह्मांड के परम नियंत्रक और पालक हैं, फिर भी वे इसके संचालन से विरक्त रहते हैं। उन्हें बाहरी सत्यापन या समर्थन की आवश्यकता नहीं है; उनका अस्तित्व आत्मनिर्भर और स्वयंप्रकाशित है। यह पहलू शाश्वत भैरव के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है जो सृष्टि, संरक्षण और संहार के सभी चक्रों को पार करते हैं, निरंतर, स्वतंत्र पर्यवेक्षक और परम वास्तविकता बने रहते हैं।

835. सम्राजे

जो सर्वोच्च सम्राट हैं, अन्य सभी राजाओं के शासक हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : सम्राज (सम्राज्) नाम, यहाँ चतुर्थी विभक्ति (dative case) में सम्राजे (सम्राजे) के रूप में प्रयुक्त हुआ है, जिसका अर्थ है "परम सम्राट," "संप्रभु शासक," या "अन्य सभी राजाओं के ऊपर का सम्राट।" यह शक्तिशाली उपाधि भगवान कालभैरव के संपूर्ण ब्रह्मांड और उसके सभी निवासियों पर पूर्ण और निर्विवाद अधिकार को रेखांकित करती है।

परम शाही अधिकार (Supreme Imperial Authority) सम्राज शब्द राजा से इस मायने में भिन्न है कि यह एक ऐसे शासक को दर्शाता है जिसका प्रभुत्व स्थानीय राज्यों से परे एक विशाल साम्राज्य तक फैला हुआ है और जो छोटे राजाओं पर आधिपत्य रखता है। कालभैरव के लिए, इसका अर्थ है कि वह केवल अन्य देवताओं में से एक देवता नहीं हैं, बल्कि सभी देवताओं, सभी प्राणियों और सभी लोकों - भौतिक और आध्यात्मिक दोनों - के परम संप्रभु हैं। वह ब्रह्मांडीय शासन के शिखर पर विराजमान हैं, बिना किसी प्रतिद्वंद्वी के सार्वभौमिक व्यवस्था का संचालन करते हैं।

काल और नियति के शासक (Ruler of Time and Destiny) काल भैरव के रूप में, काल के स्वामी के रूप में, उनका साम्राज्य अस्तित्व के ताने-बाने तक फैला हुआ है। वह सृष्टि, संरक्षण और संहार के चक्रों को नियंत्रित करते हैं। सभी घटनाएँ, सभी नियतियाँ और सभी परिणाम उनकी संप्रभु इच्छा के अधीन हैं। यह उन्हें नियति का अंतिम मध्यस्थ बनाता है, वह शासक जो समय के अटूट प्रवाह और उसके परिणामों पर शासन करता है।

निर्विवाद प्रभुत्व (Unchallenged Dominion) यह नाम इस बात पर जोर देता है कि उनकी शक्ति या अधिकार से ऊपर कोई शक्ति या अधिकार नहीं है। अन्य सभी शासक, चाहे वे दिव्य हों या नश्वर, उनके ब्रह्मांडीय जनादेश के तहत कार्य करते हैं। उनका शासन केवल राजनीतिक नहीं बल्कि आध्यात्मिक है, जिसमें ब्रह्मांड के नियम, धर्म के सिद्धांत और कर्म की यांत्रिकी शामिल है। उन्हें सम्राज के रूप में स्वीकार करना इस पूर्ण और व्यापक ब्रह्मांडीय अधिकार के प्रति नमन करना है।

दिव्य संप्रभुता का प्रतीक (Symbol of Divine Sovereignty) एक आध्यात्मिक संदर्भ में, सम्राजे परम आध्यात्मिक गुरु के विचार को उद्घाटित करता है जिन्होंने सभी आंतरिक और बाहरी सीमाओं को जीत लिया है, स्वयं को और अपने भक्तों को सर्वोच्च चेतना के साथ संरेखित किया है। यह माया के भ्रम और घटनात्मक दुनिया की सीमाओं पर उनकी पूर्ण महारत की पहचान है।

836. सुषेणाय

सुंदर, विजयी और दिव्य सेना वाले को नमन।

विस्तार : सुषेण (Suṣeṇāya) नाम संस्कृत के "सु" और "षेण" शब्दों का एक यौगिक है, जो सामूहिक रूप से कालभैरव की दिव्य शक्ति और ब्रह्मांडीय अधिकार के एक गहन पहलू का वर्णन करता है।

"सु" का अर्थ "सु" संस्कृत में एक उपसर्ग है जो उत्कृष्टता, शुभता, अच्छाई, सुंदरता या कल्याण को इंगित करता है। यह उस शब्द की गुणवत्ता को बढ़ाता है जिसके पहले यह आता है, उसे कुछ श्रेष्ठ या दिव्य में बदल देता है।

"षेण" का अर्थ "षेण" का अर्थ "सेना," "मेजबान" या "बल" है। शाब्दिक अर्थ में, यह एक सैन्य दल को संदर्भित करता है। हालांकि, दिव्य विशेषणों के संदर्भ में, यह अक्सर केवल एक भौतिक सेना से अधिक का अर्थ होता है; यह दिव्य प्राणियों, ऊर्जाओं या सिद्धांतों के एक शक्तिशाली मेजबान को इंगित कर सकता है जो देवता की सेवा करते हैं।

शुभ, सुंदर और विजयी सेना जब संयुक्त किया जाता है, तो सुषेण का अर्थ है "वह जिसके पास एक उत्कृष्ट, शुभ, सुंदर या विजयी सेना है।" यह "सेना" केवल सैनिकों का एक संग्रह नहीं है, बल्कि दिव्य ऊर्जाओं और प्राणियों का एक मेजबान है जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखते हैं और कालभैरव की इच्छा को पूरा करते हैं। ये शक्तियां स्वाभाविक रूप से विजयी हैं क्योंकि वे उनकी सर्वोच्च शक्ति के विस्तार हैं; उन्हें पराजित नहीं किया जा सकता है। उनकी "सुंदरता" और "शुभता" उनके कार्यों की दिव्य व्यवस्था और अंतर्निहित शुद्धता को संदर्भित करती है, भले ही उन कार्यों में विनाश या न्याय का प्रवर्तन शामिल हो।

ब्रह्मांडीय नियामक और संरक्षक यह नाम कालभैरव की एक सर्वोच्च सेनापति के रूप में भूमिका को उजागर करता है जिनकी सेनाएं सांसारिक बाधाओं से सीमित नहीं हैं। उनकी सेना की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है: • परिचारक (गण): अनगिनत आत्माएं और देवता जो शिव और भैरव की सेवा करते हैं, उनके आदेशों को पूरा करने के लिए तैयार रहते हैं, चाहे वह सृजन, संरक्षण या विघटन के लिए हो। • ब्रह्मांडीय नियम: ब्रह्मांड के अपरिवर्तनीय नियम, जैसे कर्म, समय और कार्य-कारण, जो त्रुटिहीन और अचूक रूप से कार्य करते हैं, ब्रह्मांडीय न्याय सुनिश्चित करते हैं। • संरक्षक: धर्म को बनाए रखने, निर्दोषों की रक्षा करने और दुष्टों को दंडित करने के लिए जिम्मेदार देवता और संस्थाएं।

नकारात्मक शक्तियों पर विजय उनकी सेना का "विजयी" पहलू अज्ञानता, बुराई, भय और सभी प्रकार की नकारात्मकता पर कालभैरव की अंतिम विजय को दर्शाता है जो आध्यात्मिक प्रगति और ब्रह्मांडीय सद्भाव में बाधा डालती है। वह सभी बाधाओं, आंतरिक और बाहरी दोनों के अंतिम विजेता हैं।

इसलिए, कालभैरव को सुषेण के रूप में संबोधित करना सभी शक्तियों पर उनके पूर्ण नियंत्रण, उनकी निर्णायक शक्ति और ब्रह्मांडीय संतुलन बनाए रखने में उनके अडिग अधिकार की स्वीकृति है।

837. शत्रुघ्नाय

सभी शत्रुओं का पूर्ण रूप से नाश करने वाले (शत्रुघ्न) को नमन।

विस्तार : शत्रुघ्न (शत्रुघ्नाय) नाम दो संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: शत्रु और घ्न।

• शत्रु (Śatru): इस शब्द का अर्थ है "शत्रु," "विरोधी," या "घृणा करने वाला।" आध्यात्मिक संदर्भ में, "शत्रु" केवल बाहरी विरोधी नहीं होते बल्कि आध्यात्मिक प्रगति में आंतरिक बाधाएँ भी होते हैं, जैसे अज्ञान (अविद्या), अहंकार (अहंकार), इच्छा (काम), क्रोध (क्रोध), लालच (लोभ), और भ्रम (मोह)।

• घ्न (Ghna): इसका अर्थ है "वध करना," "नष्ट करना," "मारना," या "हटाना।"

शत्रुओं का संहारक (Destroyer of Foes) प्रत्यक्ष अर्थ में, शत्रुघ्न उस एक को संदर्भित करता है जो शत्रुओं को नष्ट या वध करता है। भैरव, इस पहलू में, धर्म (धार्मिकता) के एक भयंकर रक्षक और सभी बुराई या हानिकारक चीजों के संहारक हैं। उनकी पूजा वे लोग करते हैं जो बाहरी खतरों, विरोधियों और अनिष्टकारी शक्तियों से सुरक्षा चाहते हैं जो उनके मार्ग में बाधा डालती हैं। यह विशेषण एक सर्वोच्च योद्धा के रूप में उनकी शक्ति को दर्शाता है जो दिव्य व्यवस्था के सभी विरोधों को परास्त करते हैं।

आंतरिक शत्रुओं का संहारक (Destroyer of Inner Enemies) अधिक गहन रूप से, आध्यात्मिक साधक के लिए, शत्रुघ्न भैरव की उस भूमिका को इंगित करता है जिसमें वे आंतरिक "शत्रुओं" का उन्मूलन करते हैं जो आत्मा को जन्म और मृत्यु के चक्र से बांधते हैं। ये मन की नकारात्मक प्रवृत्तियाँ और अशुद्धियाँ हैं जो आत्म-साक्षात्कार और आध्यात्मिक मुक्ति को रोकती हैं। उन्हें शत्रुघ्न के रूप में ध्यान करके, भक्त अपने अहंकार, आसक्तियों और उच्च चेतना के सभी सूक्ष्म अवरोधों को भंग करने के लिए उनकी शक्ति का आह्वान करते हैं। वे भ्रम के पर्दों को हटाकर मुक्ति प्रदान करते हैं।

विजय का प्रतीक (Embodiment of Victory) यह नाम पूर्ण विजय और सर्वोच्चता का भी अर्थ रखता है। "सभी शत्रुओं का संहारक" के रूप में, भैरव सभी प्रकार की नकारात्मकता पर अंतिम विजेता हैं, जो अपने भक्तों के लिए शांति, व्यवस्था और आध्यात्मिक कल्याण स्थापित करते हैं। वे लौकिक और व्यक्तिगत दोनों क्षेत्रों में अधर्म (अधर्म) को व्यवस्थित रूप से समाप्त करके धर्म की विजय सुनिश्चित करते हैं।

838. शूरशत्रवे

उन वीरों के शत्रु, जो सभी पराक्रमी फिर भी दुष्ट राक्षसों के लिए एक दुर्जेय शत्रु हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : शूरशत्रवे नाम शूर और शत्रु का एक यौगिक है। यह कालभैरव की भूमिका को बुराई के सर्वोच्च विजेता के रूप में दर्शाता है, विशेष रूप से उन राक्षसी शक्तियों के लिए जो महान शक्ति रखती हैं और स्वयं को नायक मानती हैं।

• शूर (Shūra): इस शब्द का अर्थ "वीर," "बहादुर," या "पराक्रमी" है। राक्षसी संदर्भ में, यह शक्तिशाली, दुर्जेय असुरों को संदर्भित करता है जो पराक्रमी योद्धा हो सकते हैं या महान वरदान प्राप्त कर सकते हैं, अक्सर अपनी शक्ति और आत्म-महत्व की बढ़ी हुई भावना से फूले हुए होते हैं। वे अपने स्वयं के अंधेरे क्षेत्र में "वीर" होते हैं, अपार शक्ति और अक्सर धर्म की एक विकृत भावना का प्रदर्शन करते हैं।

• शत्रु (Shatru): इस शब्द का अर्थ "शत्रु" या "विरोधी" है।

महान बुराइयों के दुर्जेय विरोधी इस प्रकार शूरशत्रवे का अर्थ है "वीर (परंतु दुष्ट) राक्षसों का शत्रु।" यह कालभैरव के विशिष्ट कार्य को उजागर करता है: केवल किसी भी शत्रु को नष्ट करना नहीं, बल्कि विशेष रूप से उन शक्तिशाली, प्रतीत होने वाली अजेय राक्षसी संस्थाओं का सामना करना और उन्हें पराजित करना, जो अपनी शक्ति (शूर) के बावजूद, मौलिक रूप से अधर्म से प्रेरित हैं और ब्रह्मांड में पीड़ा का कारण बनती हैं। ये वे राक्षस हैं जिनसे अन्य देवता भी अपनी अपार शक्ति के कारण संघर्ष कर सकते हैं।

धर्म के संरक्षक कालभैरव का यह पहलू ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) के संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है। जब शक्तिशाली राक्षसी शक्तियाँ सृष्टि के संतुलन को खतरे में डालती हैं, तो वे परम, अडिग विरोधी के रूप में उभरते हैं। उनकी भयंकरता इस प्रकार उन लोगों के खिलाफ निर्देशित एक धर्मी शक्ति है जो स्मारकीय बुराई का प्रतीक हैं, भले ही वह बुराई शक्ति और सामर्थ्य में छिपी हो। वे उनकी अजेयता के भ्रम को तोड़ते हैं।

अहंकारी शक्ति का विनाश यह नाम इस बात पर जोर देता है कि कोई भी दुष्ट इकाई कितनी भी शक्तिशाली या "वीर" क्यों न हो जाए, कालभैरव उनके लिए एक दुर्गम विरोधी हैं। वे उनकी शक्ति को नष्ट करते हैं, उनके अहंकार को समाप्त करते हैं, और अंततः उनके पतन का कारण बनते हैं, यह सुनिश्चित करते हैं कि दुष्टता, चाहे कितनी भी दुर्जेय क्यों न हो, प्रबल नहीं हो सकती।

839. शुभोट्यावाय

जिनकी उपस्थिति शुभता, समृद्धि और सौभाग्य लाती है, उनको नमन।

विस्तार : शुभodayāya नाम संस्कृत के शब्दों "शुभ" और "उदय" से लिया गया है।

शुभ (Shubha): यह शब्द शुभता, अच्छाई, पवित्रता, कल्याण, सौंदर्य, समृद्धि और आशीर्वाद को दर्शाता है। इसमें सभी सकारात्मक और परोपकारी पहलू शामिल हैं।

उदय (Udaya): यह शब्द प्रकट होने, उदय होने, भोर होने, उभरने या सामने आने का प्रतीक है।

शुभता का उदय (The Dawn of Auspiciousness) जब संयुक्त किया जाता है, तो शुभोदयाय उस दिव्य उपस्थिति या अभिव्यक्ति को संदर्भित करता है जो शुभता का अग्रदूत है या उसे सामने लाता है। कालभैरव, इस पहलू में, सभी अच्छी, शुद्ध और शुभ चीजों की भोर हैं। उनका प्रकट होना अंधकार, अज्ञान और नकारात्मकता को दूर करता है, ठीक वैसे ही जैसे उगता हुआ सूरज रात को दूर करता है। एक भक्त के लिए, उनकी अभिव्यक्ति या उनके स्वरूप का चिंतन भी सकारात्मक परिवर्तनों को शुरू करने और दुर्भाग्य को समाप्त करने के लिए पर्याप्त है।

समृद्धि और सौभाग्य लाने वाले (Bringer of Prosperity and Good Fortune) यह नाम कालभैरव की भूमिका पर जोर देता है, न केवल बुराई के एक भयानक संहारक के रूप में, बल्कि आशीर्वाद के एक परोपकारी दाता के रूप में भी। जबकि वे अधर्मियों का सामना करते हैं और उनका नाश करते हैं, जो लोग उनमें शरण लेते हैं, उनके लिए वे उनके कल्याण, समृद्धि और सौभाग्य को सुनिश्चित करते हैं। वे उन बाधाओं को दूर करते हैं जो आध्यात्मिक और भौतिक प्रगति में बाधा डालती हैं, सफलता और खुशी का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

दिव्य कृपा का प्रतीक (Symbol of Divine Grace) शुभोदयाय दिव्य कृपा के पहलू पर प्रकाश डालता है। यह दर्शाता है कि कालभैरव का अस्तित्व और उनकी सुरक्षात्मक उपस्थिति स्वाभाविक रूप से लाभकारी हैं। उनका उग्र रूप, हालांकि डरावना है, अंततः शुद्ध करने और उत्थान करने का काम करता है, जिससे भक्त के भीतर और उसके आसपास शुभ ऊर्जाओं का जागरण होता है।

840. समर्थाय

जो सर्वशक्तिमान, अत्यंत सक्षम और हर तरह से योग्य हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : समर्थाय नाम संस्कृत शब्द समर्थ से लिया गया है, जिसका अर्थ है अंतर्निहित शक्ति, क्षमता और सर्वोच्च योग्यता। यह कालभैरव की पूर्ण और असीमित शक्ति की एक गहन घोषणा है।

सर्वशक्तिमान (सर्व-शक्ति) समर्थ अनंत शक्ति और सर्वशक्तिमत्ता को दर्शाता है। कालभैरव, समर्थाय के रूप में, अपनी इच्छा से सभी ब्रह्मांडों का निर्माण, पालन और संहार करने की परम ब्रह्मांडीय शक्ति रखते हैं। उनकी शक्ति किसी बाहरी बल या आंतरिक कमी से सीमित नहीं है। यह समय (काल), भाग्य और अस्तित्व के ताने-बाने पर उनके पूर्ण नियंत्रण को संदर्भित करता है।

अत्यंत सक्षम (सर्व-सामर्थ्य) यह पहलू किसी भी कार्य को करने, किसी भी रूप को प्रकट करने और बिना किसी प्रयास या बाधा के किसी भी उद्देश्य को प्राप्त करने की उनकी अद्वितीय कौशल और क्षमता पर प्रकाश डालता है। इसका तात्पर्य सभी ज्ञान (सर्वज्ञत्व) और दिव्य कलाओं पर उनकी महारत से है, जिससे वे पूर्ण सटीकता और प्रभावकारिता के साथ जटिल ब्रह्मांडीय प्रक्रियाओं को व्यवस्थित कर सकते हैं। वे अपने भक्तों के लिए सभी दुविधाओं को हल करने, सभी बाधाओं को दूर करने और परिवर्तन लाने में सक्षम हैं।

हर तरह से योग्य (पूर्ण-कर्तृत्व) समर्थाय सभी क्षेत्रों - आध्यात्मिक, भौतिक और अस्तित्वगत - में एक अंतर्निहित और पूर्ण योग्यता को दर्शाता है। वे परम कर्ता, प्रमुख प्रेरक हैं, जिनके कार्य हमेशा पूर्ण होते हैं और वांछित ब्रह्मांडीय परिणाम की ओर ले जाते हैं। यह योग्यता एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में उनकी भूमिका तक फैली हुई है, जो मुक्ति (मोक्ष) प्रदान करने, अहंकार को नष्ट करने और अज्ञानता को दूर करने में सक्षम हैं, साथ ही एक ब्रह्मांडीय दंडक और रक्षक के रूप में उनकी भूमिका भी है। वे विनाश और सृजन दोनों में पूरी तरह से निपुण हैं, विरोधाभासों पर पूर्ण महारत का प्रतीक हैं।

841. सुगमाय

उन भगवान को नमन, जिनके पास जाना सुगम है, जिनका मार्ग सरल और सर्वसुलभ है।

विस्तार : सुगम (सुगमाय) नाम संस्कृत मूल "सु" (अच्छा, आसान, ठीक, या शुभ) और "गम" (जाना, मार्ग, या प्राप्य) से लिया गया है। इस प्रकार, सुगम का अर्थ है "आसानी से पहुँचने योग्य," "जिसके पास जाना आसान हो," या "सहज मार्ग।" यह नाम कालभैरव के एक गहरे पहलू को प्रकट करता है जो अक्सर उनके दुर्जेय स्वरूप के विपरीत होता है।

सुलभ दिव्य उपस्थिति (Accessible Divine Presence) अपने भयंकर और डरावने (भैरव) स्वरूप के बावजूद, सुगम यह दर्शाता है कि कालभैरव कोई दूर या दुर्गम देवता नहीं हैं, बल्कि वे अपने भक्तों के लिए सहज रूप से उपलब्ध हैं। उनकी दिव्य उपस्थिति अनन्य या पहुँच से बाहर नहीं है; बल्कि, वे स्वयं को सच्चे साधकों और उन लोगों के लिए उपलब्ध कराते हैं जो उन्हें भक्ति के साथ पुकारते हैं। यह पहलू आराम और आश्वासन प्रदान करता है, उन भय को संतुलित करता है जो उनके अन्य नाम उत्पन्न कर सकते हैं।

प्राप्ति की सुगमता (Ease of Attainment) "जिसके पास जाना आसान हो" का अर्थ यह भी है कि उन तक पहुँचने वाला आध्यात्मिक मार्ग, या वह मार्ग जिसे वे अपने भक्तों के लिए प्रकाशित करते हैं, दुर्गम बाधाओं से भरा नहीं है। जो लोग उनकी कृपा और सुरक्षा चाहते हैं, उनके लिए आध्यात्मिक बोध और मुक्ति की यात्रा अधिक सहज और कम कठिन हो जाती है। वे बाधाओं को दूर करते हैं और अपने भक्तों का मार्गदर्शन करते हैं, जिससे उनकी आध्यात्मिक प्रगति (गम) सरल (सु) हो जाती है।

भक्ति का मार्ग (The Path of Bhakti) यह गुण अक्सर भक्ति परंपरा में गहराई से प्रतिध्वनित होता है, जहाँ भक्ति को दिव्य से जुड़ने का सबसे सीधा और सुलभ साधन माना जाता है, चाहे किसी की सामाजिक स्थिति, ज्ञान या पिछले कर्म कुछ भी हों। सुगम कालभैरव इसलिए दयालु भगवान हैं जो सभी को अपने आलिंगन में स्वीकार करते हैं, उन लोगों के लिए जटिल आध्यात्मिक यात्रा को सरल बनाते हैं जो उन पर विश्वास करते हैं।

परोपकारी स्वभाव (Benevolent Nature) जबकि वे समय और ब्रह्मांडीय नियम के भयंकर संरक्षक हैं, सुगम एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक और संरक्षक के रूप में उनके परोपकारी स्वभाव को रेखांकित करता है। दुष्टों और आलसी लोगों द्वारा उन्हें डराया जाता है, लेकिन वे सच्चे लोगों के लिए एक दयालु आश्रय हैं। यह नाम इस बात पर जोर देता है कि उनका भयानक पहलू अंततः उनके भक्तों की सुरक्षा और शुद्धि के लिए है, जिससे सत्य और परम स्वतंत्रता के लिए उनका मार्ग "आसान" और "सहज" हो जाता है।

842. शुक्राय

जो अत्यंत शुद्ध, तेजोमय और दैत्यों के आचार्य (शुक्र ग्रह) हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : शुक्राय नाम, संस्कृत शब्द शुक्र से व्युत्पन्न है, जिसमें गहन अर्थों की कई परतें हैं, जिनमें पवित्रता, चमक और एक महत्वपूर्ण ज्योतिषीय और पौराणिक संबंध शामिल हैं।

पवित्रता और निर्मल चमक शुक्र का प्राथमिक अर्थ "शुद्ध," "उज्ज्वल," "तेजस्वी," या "स्वच्छ" है। जब इसे कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह उनके परम, बेदाग स्वरूप को दर्शाता है। वे पूर्ण पवित्रता के प्रतीक हैं, किसी भी दोष या अपूर्णता से रहित हैं। यह पवित्रता केवल अशुद्धियों की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि एक सक्रिय, शानदार चमक है जो उनके दिव्य अस्तित्व से निकलती है, सब कुछ प्रकाशित करती है। यह एक शुद्ध करने वाली शक्ति का भी अर्थ है, क्योंकि उनकी उपस्थिति उन लोगों को शुद्ध और तेजस्वी बनाती है जो भक्ति के साथ उनके पास आते हैं।

वीर्य ऊर्जा और शक्ति का प्रतीक गहरे अर्थों में, शुक्र का अर्थ "वीर्य" या "शुक्र द्रव" भी है, जिसे गूढ़ परंपराओं में जीवन शक्ति और रचनात्मक शक्ति का सार माना जाता है। यह अर्थ सूक्ष्म रूप से कालभैरव को ब्रह्मांड की मौलिक जनन शक्ति, जीवन और सृजन के अंतिम स्रोत से जोड़ता है, यहां तक कि उनके विनाशकारी पहलू में भी। इसका अर्थ शारीरिक प्रजनन क्रिया नहीं है, बल्कि सर्वोच्च शक्ति और जीवन देने वाली ऊर्जा का एक लाक्षणिक प्रतीक है जो परिष्कृत और शक्तिशाली है।

शुक्र ग्रह और उसका महत्व शुक्र ग्रह का संस्कृत नाम भी है, जिसे प्रेम, सौंदर्य, समृद्धि और भौतिक सुखों को प्रभावित करने वाला एक शक्तिशाली खगोलीय पिंड माना जाता है। हिंदू ज्योतिष में, शुक्र को "दैत्य गुरु" या "असुरचार्य" के रूप में जाना जाता है, जो असुरों (राक्षसों) के गुरु हैं।

"राक्षसों के गुरु" के रूप में, भगवान शुक्र सभी वैदिक शास्त्रों, राजनीति विज्ञान और युद्ध कला में अत्यधिक ज्ञानी हैं। उन्हें मृत संजीवनी विद्या, वह ज्ञान जो मृतकों को पुनर्जीवित कर सकता है, धारण करने वाला बताया गया है। जब कालभैरव को शुक्र के साथ पहचाना जाता है, तो यह दर्शाता है: 1. सर्वोच्च ज्ञान: वे सभी ज्ञान के अंतिम स्रोत हैं, जिसमें जीवन और मृत्यु के रहस्य भी शामिल हैं, यहां तक कि दैत्य गुरु द्वारा धारण किए गए ज्ञान से भी श्रेष्ठ। 2. शुक्र के अधिपति: कालभैरव सर्वोच्च स्वामी हैं जो शुक्र ग्रह के प्रभाव को नियंत्रित करते हैं। भक्त अपनी ज्योतिषीय कुंडली में शुक्र के नकारात्मक प्रभावों को कम करने या इसके सकारात्मक गुणों को बढ़ाने के लिए उनके आशीर्वाद की तलाश कर सकते हैं, विशेष रूप से धन, संबंधों और कलात्मक pursuits के मामलों में। 3. द्वैत से परे परोपकार: जबकि शुक्र असुरों के गुरु हैं, कालभैरव द्वारा इस उपाधि को ग्रहण करना इसे

देवों और असुरों के द्वैत से ऊपर उठाता है, जो सभी ब्रह्मांडीय शक्तियों पर उनके सार्वभौमिक प्रभुत्व और सभी प्राणियों पर, उनकी प्रकृति की परवाह किए बिना, आशीर्वाद और ज्ञान प्रदान करने की उनकी क्षमता को दर्शाता है।

इस प्रकार, शुक्राय कालभैरव को अत्यंत शुद्ध, तेजस्वी रूप से शक्तिशाली, और ब्रह्मांडीय प्रभावों के अंतिम स्वामी के रूप में दर्शाता है, जिसमें शुक्र ग्रह से जुड़े आशीर्वाद और चुनौतियां भी शामिल हैं।

843. सद्योगिने

जो तुरंत अपने भक्तों के साथ एकाकार हो जाते हैं, उन सच्चे और पूर्ण योगी को नमन।

विस्तार : सद्योगी नाम 'सद्य' (तत्काल, तुरंत, वास्तव में, पूर्णतः) और 'योगी' (जो जुड़ा हुआ है, योग का अभ्यास करने वाला, एक आध्यात्मिक साधक) से बना है।

तत्काल मिलन (सद्य) यह पहलू कालभैरव की अपने भक्तों के प्रति गहन और त्वरित प्रतिक्रिया को उजागर करता है। उन देवताओं के विपरीत जिन्हें वरदान देने के लिए लंबे समय तक तपस्या की आवश्यकता हो सकती है, कालभैरव, सद्योगी के रूप में, उन लोगों की इच्छाओं या इरादों से तुरंत जुड़ते हैं और उन्हें पूरा करते हैं जो ईमानदारी से उनके पास आते हैं। यह उनकी करुणामयी और सर्वव्यापी प्रकृति पर जोर देता है, जो हमेशा अपने भक्तों के साथ जुड़ने के लिए तैयार रहते हैं। "सद्य" शब्द पूर्णता या समग्रता का भी अर्थ है; वह केवल कोई योगी नहीं, बल्कि पूर्ण योगी हैं।

सच्चे और पूर्ण योगी (योगी) "योगी" उस व्यक्ति को दर्शाता है जो दिव्य के साथ पूर्ण रूप से जुड़ा हुआ है, या जो स्वयं योग का मूर्त रूप है। कालभैरव के संदर्भ में, इसका अर्थ है कि वह सभी योगिक अभ्यासों और गहन मिलन की स्थिति के परम स्वामी हैं। वह योग का लक्ष्य (समाधि या पूर्ण मिलन की स्थिति) और इसे प्राप्त करने का मार्ग दोनों हैं। परम योगी के रूप में, वह सभी द्वैत से परे हैं और परम वास्तविकता में लीन हैं। उनकी "योगी" प्रकृति उनके वैराग्य, ज्ञान और ब्रह्मांडीय शक्तियों पर उनके प्रभुत्व को दर्शाती है।

मिलन का सूत्रधार भक्तों के लिए, सद्योगी कालभैरव की दिव्य के साथ तत्काल मिलन की सुविधा प्रदान करने की शक्ति को संदर्भित करता है, या किसी को विशिष्ट आध्यात्मिक आकांक्षाओं या भौतिक इच्छाओं को तुरंत प्राप्त करने में मदद करने की शक्ति को संदर्भित करता है। वह आध्यात्मिक प्रगति में आने वाली बाधाओं को शीघ्रता से दूर करते हैं और अभ्यासकर्ताओं को चेतना की उच्च अवस्थाओं को प्राप्त करने में मदद करते हैं। वह वही हैं जो तुरंत योग के फल प्रदान कर सकते हैं।

सिद्धि का प्रतीक यह नाम इस प्रकार यह दर्शाता है कि कालभैरव सिद्धि (आध्यात्मिक शक्तियां और उपलब्धियां) और मोक्ष (मुक्ति) के दाता हैं, जो उन लोगों के लिए अंतिम लक्ष्य तक पहुंचने का एक तत्काल और सीधा मार्ग प्रदान करते हैं जो इसे ईमानदारी से चाहते हैं।

844. सदासन्मयाय

जो अस्तित्व (सत्) और गैर-अस्तित्व (असत्) दोनों के साक्षात स्वरूप हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : सदसन्मय नाम एक गहन दार्शनिक शब्द है, जो सत् (अस्तित्व), असत् (गैर-अस्तित्व), और मय (मूर्त रूप, से बना हुआ, या माया) का एक यौगिक है। यह हिंदू विचार में, विशेष रूप से शैव धर्म में समझे जाने वाले परम, विरोधाभासी निरपेक्ष वास्तविकता की प्रकृति को दर्शाता है।

सत्: अस्तित्व, सत्य, वास्तविकता "सत्" उस चीज़ को संदर्भित करता है जो वास्तव में मौजूद है, शाश्वत, अपरिवर्तनीय है, और परम सत्य है। यह परम ब्रह्म, शुद्ध चेतना, सभी सृष्टि का आधार है। कालभैरव के संदर्भ में, सत् उनकी शाश्वत, पारलौकिक और अपरिवर्तनीय प्रकृति को दर्शाता है -

वह स्रोत जिससे सभी प्रकट वास्तविकता उत्पन्न होती है। यह शुद्ध अस्तित्व का पहलू है, सभी गुणों और भेदों से परे।

असत्: गैर-अस्तित्व, अप्रकट, भ्रामक, या संभाव्यता "असत्" अधिक जटिल है। यह संदर्भित कर सकता है: 1. अप्रकट के अर्थ में गैर-अस्तित्व: सृष्टि से पहले की संभाव्यता की स्थिति, वह ब्रह्मांडीय शून्य जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है। इस अर्थ में, असत् पूर्ण शून्यता नहीं है बल्कि दिव्य की अप्रकट स्थिति है, जहाँ रूप और नाम अभी तक उभरे नहीं हैं। 2. भ्रामक के अर्थ में गैर-अस्तित्व: जो मौजूद प्रतीत होता है लेकिन अंततः वास्तविक नहीं है, जो क्षणभंगुर, लगातार बदलते हुए घटनात्मक संसार को संदर्भित करता है, जो अंततः माया है। 3. 'सत् से भिन्न' के अर्थ में गैर-अस्तित्व: जो कुछ भी परम सत्य या शाश्वत नहीं है।

मय: मूर्त रूप या से बना हुआ यहाँ "मय" का अर्थ है "से बना हुआ" या "मूर्त रूप", जिसका अर्थ है कि वे सत् और असत् दोनों 'हैं'। इस यौगिक में यह आवश्यक रूप से माया के रूप में भ्रम नहीं है, बल्कि इसका बहुत सार और संविधान है।

विरोधाभासी वास्तविकता का मूर्त रूप इस प्रकार, सदसन्मय कालभैरव को परम वास्तविकता के रूप में दर्शाता है जो अस्तित्व और गैर-अस्तित्व की द्वैतता से परे है। वे पूर्व-मौजूदा निरपेक्ष (सत्) हैं जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है, और अप्रकट (असत्) भी हैं जिसमें सब कुछ विलीन हो जाता है या वह घटनात्मक संसार जो अंततः पूर्ण अर्थों में वास्तव में वास्तविक नहीं है।

यह नाम एक उच्च दार्शनिक अंतर्दृष्टि की ओर इशारा करता है: परम सत्ता (कालभैरव) "है" और "नहीं है" की हमारी वैचारिक श्रेणियों से सीमित नहीं है। वे दोनों से परे हैं, फिर भी दोनों को समाहित करते हैं। वे सभी अस्तित्व का आधार (सत्) हैं और शून्य, क्षमता, अप्रकट (असत्) भी हैं।

ब्रह्मांडीय चक्र और अतिक्रमण यह नाम परोक्ष रूप से सृष्टि (असत् से सत् में उद्भव), पोषण (सत्), और विघटन (असत् में वापसी) के ब्रह्मांडीय चक्र को संदर्भित करता है; कालभैरव इन सभी चरणों पर शासन करते हैं। वे प्रकट ब्रह्मांड (सत्) के अंतर्निहित परम सत्य हैं और दिव्य का अप्रकट, निराकार पहलू भी हैं जो सभी अभिव्यक्तियों से परे है (असत्)। सदसन्मय के प्रति भक्ति साधक की वास्तविकता की सीमित समझ को भंग करती है, उन्हें दिव्य की पारलौकिक, सर्वव्यापी प्रकृति की अनुभूति की ओर मार्गदर्शन करती है।

845. शास्त्रनेत्राय

संसार को सहस्र पवित्र धर्मग्रंथों की आँखों से देखने वाले (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : शास्त्रनेत्राय नाम संस्कृत के शब्दों शास्त्र (शस्त्र का एक वैकल्पिक वर्तनी) और नेत्र का एक यौगिक है।

• शास्त्र (Shastra): यह शब्द हिंदू परंपराओं में पवित्र ग्रंथों, धर्मग्रंथों, संधियों और आचार संहिताओं को संदर्भित करता है। इन ग्रंथों को दिव्य ज्ञान, बुद्धि और मार्गदर्शन का स्रोत माना जाता है। इनमें वेद, उपनिषद, पुराण, आगम और विभिन्न दार्शनिक तथा अनुष्ठानिक ग्रंथ शामिल हैं।

• नेत्र (Netra): इस शब्द का अर्थ "आँख" या "दृष्टि" है। लाक्षणिक अर्थ में, यह परिप्रेक्ष्य, समझ और सत्य को जानने के साधन को भी दर्शाता है।

दिव्य ज्ञान की दृष्टि इसलिए, शास्त्रनेत्राय का अर्थ है वह जो हजारों (असंख्य या व्यापक का अर्थ) पवित्र धर्मग्रंथों से प्राप्त दृष्टि और समझ रखता है या उसका प्रतीक है। यह धर्म (धार्मिक आचरण), कर्म (क्रिया और परिणाम), ब्रह्म (परम सत्य), माया (भ्रम), और मोक्ष (मुक्ति) के मार्ग की एक पूर्ण, सर्व-समावेशी समझ को दर्शाता है, जैसा कि शैव और वैदिक साहित्य के विशाल संग्रह में वर्णित है।

शास्त्रोक्त ज्ञान का अवतार यह नाम केवल शास्त्रों के बारे में ज्ञान होने का सुझाव नहीं देता है, बल्कि यह कि भगवान शिव, अपने कालभैरव रूप में, सभी शास्त्रोक्त ज्ञान का सार और अवतार हैं। ब्रह्मांड और उसके कार्यों के बारे में उनका दृष्टिकोण पूरी तरह से इन पवित्र ग्रंथों में प्रकट सत्यों के अनुरूप है, और वास्तव में उन्हीं का स्रोत है। वह इस गहन, शास्त्र-सूचित परिप्रेक्ष्य से दुनिया को देखते हैं, उसकी गतिशीलता को समझते हैं और उसकी प्रक्रियाओं को नियंत्रित करते हैं।

परम सत्ता शास्त्र की "आँखों" से देखकर, कालभैरव दिव्य कानून और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के परम अधिकार और व्याख्याकार का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके कार्य, यद्यपि अक्सर भयंकर और अटल होते हैं, हमेशा शास्त्रों में वर्णित उच्चतम आध्यात्मिक सिद्धांतों के पूर्ण अनुरूप होते हैं। भक्तों के लिए, इस नाम का ध्यान करना शास्त्रों के ज्ञान के माध्यम से दिव्य की समझ प्राप्त करने का तात्पर्य है, कालभैरव को सर्वोच्च गुरु और उस ज्ञान के जीवंत अवतार के रूप में पहचानना।

846. सुखश्मश्रवे

सुखद और शुभ कान वाले, जो सभी पवित्र ध्वनियाँ सुनते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : सुखश्मश्रवे नाम सुख, श्म श्राव और चतुर्थी विभक्ति के अंत -ए से बना एक यौगिक शब्द है, जिसका अर्थ "को" होता है। इसकी व्याख्या बहुआयामी है, जिसमें सुखदता, सहजता, पवित्रता और श्रवण के विचार शामिल हैं।

सुख: सुखदता, शुभता और सहजता "सुख" का मूल अर्थ सुखद, agreeable, प्रसन्न या आरामदायक है। यह कल्याण, शुभता और आध्यात्मिक शांति की स्थिति को दर्शाता है। जब किसी दिव्य सत्ता पर लागू होता है, तो यह परोपकार और कृपा के एक अंतर्निहित गुण को दर्शाता है।

श्म: पवित्र शब्दांश और ब्रह्मांडीय ध्वनि "श्म" शब्दांश तांत्रिक और वैदिक परंपराओं में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह अक्सर पवित्र शब्दांश "ॐ" (ओम्) से संबंधित होता है, वह आदिम ध्वनि जिससे संपूर्ण ब्रह्मांड उत्पन्न हुआ। "श्म" ब्रह्मांड के सूक्ष्म, आंतरिक स्पंदनों, स्वयं सृष्टि की ध्वनि, या एक गहरी आध्यात्मिक अनुनादपूर्ण गुंजन को दर्शा सकता है। यह एक बीज मंत्र है, एक बीज ध्वनि जो गहन आध्यात्मिक ऊर्जा को समाहित करती है। कुछ संदर्भों में, यह श्मशान (श्मशान घाट, शिव से जुड़ा) की अवधारणा से भी संबंधित हो सकता है, लेकिन एक अत्यधिक आध्यात्मिक और शुद्ध करने वाले अर्थ के साथ, उस स्थान का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ परम सत्य प्रकट होता है, जहाँ अहंकार नष्ट होता है, और आध्यात्मिक मुक्ति प्राप्त होती है। इस प्रकार, यहाँ "श्म" ध्वनि के एक शुभ या शुद्ध पहलू का अर्थ हो सकता है।

श्राव: श्रवण और प्रवाह "श्राव" सुनने, सुनने या जो सुना जाता है, को संदर्भित करता है। यह एक प्रवाह का भी अर्थ कर सकता है, जो अक्सर ध्वनि या ज्ञान से जुड़ा होता है।

वह जो सभी पवित्र ध्वनियों को सुनता है इन तत्वों को मिलाकर, "सुखश्मश्रवे" का अर्थ है:

1. पवित्र स्पंदनों का श्रोता: कालभैरव वह हैं जो सृष्टि की आदिम, शुभ ध्वनियों (श्म) को सुनते, पहचानते और उनसे प्रतिध्वनित होते हैं। यह ब्रह्मांड की मूलभूत ध्वनि ऊर्जाओं पर उनकी पूर्ण समझ और महारत को दर्शाता है।

2. शुभ ध्वनियों को सहजता से प्राप्त करना: उनके "सुखद कान" इंगित करते हैं कि वे सभी पवित्र उच्चारणों, प्रार्थनाओं, मंत्रों और ब्रह्मांड के सूक्ष्म शुभ स्पंदनों को पूर्ण सहजता और कृपा के साथ समझते हैं। ऐसा नहीं है कि वे केवल सुनते हैं, बल्कि इन पवित्र ध्वनियों को सुनने का कार्य उनके लिए स्वाभाविक रूप से सुखद और agreeable है, जो भक्ति के उनके परोपकारी स्वागत को दर्शाता है।

3. शुभ श्रवण का स्रोत: परम देवता के रूप में, यह नाम यह भी संकेत दे सकता है कि वे अपने भक्तों को पवित्र ध्वनियों को सुनने और समझने की क्षमता 'प्रदान' करते हैं, उन्हें आंतरिक आध्यात्मिक सद्भाव की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

4. ब्रह्मांडीय सद्भाव का अवतार: "श्म" के आदिम ध्वनि के साथ जुड़ाव को देखते हुए, सुखश्मश्रवे का अर्थ है कि कालभैरव ब्रह्मांडीय सद्भाव और मूलभूत, शुभ अनुनाद को मूर्त रूप देते हैं जो सभी अस्तित्व का आधार है। वे सार्वभौमिक सत्य और पवित्रता के साथ पूर्ण सामंजस्य में हैं।

847. स्वाधिष्ठानषडाश्रयाय

स्वाधिष्ठान चक्र के छह गुना आधार स्वरूप को नमन।

विस्तार : स्वाधिष्ठान-षडाश्रयाय नाम शैव धर्म की तांत्रिक और योगिक परंपराओं के भीतर एक अत्यधिक विशिष्ट और गूढ़ संदर्भ है, विशेष रूप से यह सूक्ष्म ऊर्जा शरीर और कुंडलिनी के जागरण से संबंधित है।

स्वाधिष्ठान: स्वयं का निवास स्वाधिष्ठान शब्द का शाब्दिक अर्थ है "अपना निवास" या "जहाँ आपका स्वयं स्थापित है।" यह सूक्ष्म शरीर में दूसरा प्राथमिक चक्र है, जो मूलाधार चक्र के ऊपर और नाभि के नीचे स्थित है, आमतौर पर त्रिक क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। यह चक्र रचनात्मकता, भावनाओं, आनंद, इच्छा और संबंधों का आसन है। इसका तत्व जल है, और यह जीवन शक्ति उत्पन्न करने, जीवन शक्ति बनाए रखने और भावनात्मक संतुलन को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है। एक गहरे रहस्यमय दृष्टिकोण से, यह कर्मिक छापों के शुद्धिकरण और आध्यात्मिक आनंद की अभिव्यक्ति के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र है।

षडाश्रय: षट्कोणीय आधार या सहारा षड्- उपसर्ग का अर्थ "छह" है, और आश्रय का अर्थ "सहारा," "आधार," "निवास," या "आवास" है। स्वाधिष्ठान चक्र के संदर्भ में, यह "षट्कोणीय आधार" स्वाधिष्ठान कमल की छह पंखुड़ियों को संदर्भित करता है। प्रत्येक पंखुड़ी विशिष्ट गुणों, ऊर्जाओं और यहां तक कि संस्कृत अक्षरों (बीजा अक्षराणि) से जुड़ी है, जो चेतना और सृष्टि के मूलभूत पहलुओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। ये छह पंखुड़ियाँ इस केंद्र से उत्पन्न होने वाली छह प्राथमिक वृत्तियों (मन के संशोधन) या भावनात्मक अवस्थाओं को समाहित करती हैं: स्नेह, संदेह, घृणा, भ्रम, विनाशकारिता और क्रूरता (हालांकि विशिष्ट वृत्तियों की व्याख्या भिन्न हो सकती है)।

सूक्ष्म ऊर्जा केंद्र के स्वामी कालभैरव को "स्वाधिष्ठान-षडाश्रयाय" कहकर, हम उन्हें सर्वोच्च अधिष्ठाता देवता (चक्रेश्वर) और स्वाधिष्ठान चक्र से जुड़ी सभी ऊर्जाओं और अभिव्यक्तियों के अंतर्निहित सार और अंतिम समर्थन के रूप में स्वीकार करते हैं। वह दिव्य चेतना हैं जो इसकी छह पंखुड़ियों को चेतन करती हैं, इसके कार्यों को नियंत्रित करती हैं, और इसकी नकारात्मक पहलुओं को शुद्ध करने के साथ-साथ इसकी रचनात्मक और आनंदमय क्षमताओं को सक्रिय करने की कुंजी रखती हैं। इस नाम से उनका आह्वान करना भावनात्मक स्थिरता, रचनात्मक अभिव्यक्ति और सूक्ष्म ऊर्जा प्रणाली के सक्रियण के माध्यम से आध्यात्मिक यात्रा की प्रगति के लिए उनकी कृपा प्राप्त करना है। इसका तात्पर्य है कि वह वह आधार हैं जिस पर चक्र स्थापित है और उसकी शक्ति का अंतिम स्रोत हैं।

848. प्रांशवे

जिनका कद लंबा, प्रभावशाली और भव्य है, उनको नमन।

विस्तार : प्राम्शवे (Prāmśave) नाम संस्कृत शब्द "प्राम्शु" (prāmśu) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "ऊँचा," "विशाल," "उत्कृष्ट," "महान," या "शानदार।" यह गुण भगवान शिव को कालभैरव के रूप में उनके प्रभावशाली शारीरिक और आध्यात्मिक कद के संदर्भ में वर्णित करता है।

शारीरिक भव्यता अपने भयंकर (भैरव) रूप में, शिव को अक्सर एक विशाल, विस्मयकारी रूप में चित्रित किया जाता है। उनका कद केवल मानवीय अर्थ में ऊँचा नहीं है, बल्कि एक विशाल, ब्रह्मांडीय उपस्थिति का सुझाव देता है जो पूरे ब्रह्मांड को समाहित कर सकता है। यह विशालता उनके असीम स्वभाव को व्यक्त करती है, जो सभी सृजन और विनाश से ऊपर उठती है। यह साधारण आयामों से परे उनकी श्रेष्ठता और मानव समझ से परे रूपों में प्रकट होने की उनकी क्षमता का प्रतीक है।

आध्यात्मिक उत्कर्ष शारीरिक ऊँचाई से परे, "प्राम्शु" आध्यात्मिक संदर्भ में उच्चता और उत्कर्ष को भी दर्शाता है। यह कालभैरव की एक देवता के रूप में सर्वोच्च स्थिति को संदर्भित करता है, जो परम वास्तविकता (परब्रह्म) की अभिव्यक्ति है। वह अन्य सभी प्राणियों और घटनाओं से ऊपर उत्कृष्ट हैं, जो सर्वोच्च आध्यात्मिक सत्य और शक्ति का प्रतीक हैं। यह विशेषता उनकी भव्यता, उनके अदम्य ज्ञान और उनके अद्वितीय आध्यात्मिक अधिकार को रेखांकित करती है।

प्रभावशाली उपस्थिति "प्रभावशाली" शब्द एक ऐसी उपस्थिति का सुझाव देता है जो अपनी शक्ति और भव्यता के कारण सम्मान, श्रद्धा और यहाँ तक कि कुछ हद तक भय भी उत्पन्न करती है। कालभैरव का प्राम्शु रूप अपनी अत्यधिक महिमा के माध्यम से भक्ति को प्रेरित करता है, भक्तों को दिव्य की विशालता और सर्वशक्तिमानता की याद दिलाता है। यह विस्मय और समर्पण दोनों की भावना पैदा करता है, क्योंकि व्यक्ति उस परम शक्ति को पहचानता है जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है।

ब्रह्मांडीय पैमाने का प्रतीक यह नाम शिव के अन्य विशेषणों के साथ मेल खाता है जो उनके सार्वभौमिक शरीर पर जोर देते हैं, जहाँ ब्रह्मांड स्वयं उनका रूप है। प्राम्शु के रूप में, वह अस्तित्व का विशाल स्तंभ है, अक्ष मुंडी (axis mundi), जिसके चारों ओर सभी सृजन घूमते हैं। उनकी असीमित ऊँचाई उनके अनंत स्वभाव और सर्वव्यापकता को दर्शाती है।

849. सप्तपतये

सात लोकों, सप्तर्षियों, या सात ब्रह्मांडीय तलों के स्वामी को नमन।

विस्तार : सप्तपतये नाम संस्कृत के शब्दों 'सप्त' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "सात," और 'पति', जिसका अर्थ है "स्वामी" या "मालिक।" यह विशेषण हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान और आध्यात्मिक विचार के भीतर विभिन्न सप्तक वर्गीकरणों पर कालभैरव के सर्वोच्च प्रभुत्व को इंगित करता है।

सात लोकों के स्वामी (सप्त लोक) हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, अस्तित्व के सात अलग-अलग क्षेत्र या तल हैं, जिन्हें सप्त लोक के नाम से जाना जाता है। ये हैं भूलोक (पृथ्वी तल), भुवर्लोक (वायुमंडलीय प्राणियों का तल), स्वर्लोक (देवताओं का स्वर्ग), महर्लोक (महान ऋषियों का क्षेत्र), जनलोक (ब्रह्मा के पुत्रों का निवास), तपलोक (तपस्वियों का क्षेत्र), और सत्यलोक (सत्य और ब्रह्म का सर्वोच्च क्षेत्र)। 'सप्तपति' के रूप में, कालभैरव इन सभी ब्रह्मांडीय डोमेन के परम शासक और निरीक्षक हैं, जिसमें न केवल भौतिक बल्कि सूक्ष्म और कारण तल भी शामिल हैं। यह उनकी सर्व-समावेशी शक्ति और संपूर्ण सृष्टि में उपस्थिति को दर्शाता है।

सात ऋषियों के स्वामी (सप्त ऋषि) सप्त ऋषि सात आदिम ऋषि हैं जिन्हें वैदिक धर्म के पितृपुरुष और मानवता के पूर्वज माना जाता है। उन्हें अक्सर सप्तर्षि तारामंडल के सात तारों के साथ पहचाना जाता है। ये ऋषि दिव्य ज्ञान के संचार और ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार हैं। इस संदर्भ में 'सप्तपति' के रूप में कालभैरव का अर्थ है कि वे उनकी बुद्धि और अधिकार के परम स्रोत हैं, और ये महान पूजनीय प्राणी भी उनके दिव्य आदेश और मार्गदर्शन के अधीन हैं।

सात ब्रह्मांडीय तलों/अवस्थाओं के स्वामी यह व्याख्या चेतना की सात विभिन्न अवस्थाओं या सात चक्रों, या तांत्रिक और योगिक परंपराओं में पाए जाने वाले अन्य सप्तक व्यवस्थाओं तक फैली हुई है। इन "सातों" के स्वामी के रूप में, कालभैरव उस सर्वोच्च चेतना का प्रतिनिधित्व करते हैं जो इन सभी आंतरिक और बाहरी आयामों में व्याप्त है और उन्हें नियंत्रित करती है, आध्यात्मिक साधक को बोध के विभिन्न स्तरों के माध्यम से मार्गदर्शन करती है। वह मानवीय अनुभव के मूलभूत पहलुओं और शरीर और ब्रह्मांड के भीतर की सूक्ष्म ऊर्जाओं को नियंत्रित करते हैं।

संक्षेप में, सप्तपतये कालभैरव की सर्वोच्च, सर्वव्यापी और अस्तित्व के सभी पहलुओं के परम नियंत्रक के रूप में भूमिका को रेखांकित करता है, उच्चतम ब्रह्मांडीय क्षेत्रों से लेकर प्रत्येक प्राणी के भीतर की सूक्ष्म ऊर्जाओं तक।

850. वृद्धाय

जो प्राचीन, वृद्ध, बुद्धिमान और माननीय हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : वृद्धाय (वृद्धा) नाम कलाभैरव से जुड़ी प्राचीनता, ज्ञान और श्रद्धा की गहन और बहुआयामी अवधारणा का आह्वान करता है।

प्राचीन और आदिम वृद्ध का शाब्दिक अर्थ "पुराना" या "प्राचीन" है। दिव्य के संदर्भ में, यह कलाभैरव को एक शाश्वत और आदिम सत्ता के रूप में दर्शाता है, जो स्वयं समय और स्थान के निर्माण से पहले से मौजूद है। उनका न जन्म होता है और न वे मरते हैं; वे बस हैं, हमेशा से रहे हैं और हमेशा रहेंगे। यह उनकी कालातीत प्रकृति पर जोर देता है, उस स्रोत के रूप में जिससे सभी सृष्टि उत्पन्न होती है और जिसमें वह अंततः लौटती है। वे मूल-प्रकृति हैं, अव्यक्त उद्गम।

बुद्धिमान और अनुभवी "वृद्ध" शब्द सृष्टि, संरक्षण और विनाश के अनगिनत चक्रों के माध्यम से प्राप्त अपार ज्ञान का भी अर्थ रखता है। काल के स्वामी (काल) के रूप में, उन्होंने ब्रह्मांडीय अस्तित्व की संपूर्णता को देखा है, सार्वभौमिक नियमों, धर्म और आध्यात्मिक मार्ग के अद्वितीय ज्ञान और समझ को संचित किया है। यह ज्ञान केवल बौद्धिक नहीं बल्कि अस्तित्वगत है, जो वास्तविकता के परम सत्य का प्रतीक है। वे परम गुरु हैं, जो सभी आध्यात्मिक ज्ञान का प्रतीक हैं।

पूजनीय और सम्मानित "वृद्ध" का अर्थ पूजनीयता और सर्वोच्च सम्मान और आदर के योग्य भी है। उनका प्राचीन अस्तित्व और गहन ज्ञान उन्हें परम अधिकार और सर्वोच्च श्रद्धा का पात्र बनाता है। वृद्धाय को नमन करना दिव्य के इस कालातीत पहलू की पवित्रता और सर्वोच्चता को स्वीकार करना है, ज्ञान और अनुभव के परम स्रोत को भक्ति अर्पित करना है।

वृद्धावस्था और क्षय के विनाशक विरोधाभासी रूप से, प्राचीन होने के बावजूद, कलाभैरव, वृद्धाय के रूप में, वृद्धावस्था, क्षय और समय द्वारा प्राणियों पर लगाई गई सीमाओं के विनाश का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। उनकी कृपा से, भक्त लौकिक अस्तित्व की सीमाओं को पार कर सकते हैं और आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) प्राप्त कर सकते हैं, जन्म, बुढ़ापे और मृत्यु के चक्रों से परे जा सकते हैं।

851. शमनाय

शांत करने वाले, शांति प्रदान करने वाले और सभी कष्टों को हरने वाले को नमन।

विस्तार : शमनाय (शमनय) नाम संस्कृत मूल "शम्" से आया है, जिसका अर्थ है शांत, स्थिर या शांत होना। इसका सीधा अर्थ है "जो शांत करता है," "जो शांत करता है," या "जो वश में करता है।" कालभैरव के संदर्भ में, यह नाम उनके भयानक फिर भी अंततः परोपकारी स्वभाव के एक गहरे पहलू को प्रकट करता है।

महान शांतिदायक जबकि भैरव अपनी भयंकर और विनाशकारी शक्ति के लिए जाने जाते हैं, शमनाय परम शांति और स्थिरता लाने में उनकी भूमिका पर जोर देता है। वह सभी उत्तेजनाओं को शांत करने वाले हैं - व्यक्ति के भीतर आंतरिक और ब्रह्मांड के भीतर बाहरी दोनों। यह शांति केवल संघर्ष का अंत नहीं है, बल्कि मूलभूत गड़बड़ी को दूर करके प्राप्त संतुलन की गहरी स्थिति है।

बाधाओं को शांत करना उनकी शांत करने वाली क्रिया कई स्तरों पर काम करती है: • अज्ञान (अविद्या) को शांत करना: किसी भी आध्यात्मिक साधक के लिए प्राथमिक बाधा अज्ञान (अविद्या) है, जो दुख और भ्रम की ओर ले जाती है। भैरव, शमनाय के रूप में, इस मूलभूत अज्ञान को दूर करते हैं, जिससे आध्यात्मिक स्पष्टता और मुक्ति मिलती है। • अहंकार (अहंकार) को वश में करना: अहंकार अशांति, इच्छाओं और आसक्तियों का एक निरंतर स्रोत है। वह बढ़े हुए अहंकार को वश में करते हैं, विनम्रता और आंतरिक शांति लाते हैं। • बाधाओं को दूर करने वाला: वह उन बाधाओं (विघ्नों) को शांत या दूर करते हैं जो आध्यात्मिक प्रगति या सांसारिक प्रयासों में बाधा डालती हैं। इसमें नकारात्मक शक्तियां, कठिन परिस्थितियां या आंतरिक प्रतिरोध शामिल हो सकते हैं। • भय को दूर करने वाला: यद्यपि दिखने में भयानक, वह अंततः अपने भक्तों के सभी भय को दूर करते हैं। परम विनाश (काल भैरव) का सामना करके, वह निर्भयता प्रदान करते हैं, यह जानते हुए कि सच्ची शांति भय से परे है। • ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बहाल करने वाला: ब्रह्मांडीय पैमाने पर, वह अराजक शक्तियों को शांत करते हैं और धर्म (धार्मिक ब्रह्मांडीय व्यवस्था) को फिर से स्थापित करते हैं, जिससे ब्रह्मांड में स्थिरता और सद्भाव आता है। उनका विनाशकारी पहलू अक्सर नए, सामंजस्यपूर्ण सृजन के लिए पुराने को साफ करने के उद्देश्य को पूरा करता है, जिससे शांति मिलती है।

विलय की गहरी शांति अंततः, सबसे बड़ी शांति विलय के माध्यम से प्राप्त होती है। काल भैरव, समय और विनाश के रूप में, सभी चीजों का अंत करते हैं। यह अंत केवल विनाश नहीं है, बल्कि पूर्ण, अव्यक्त शांति की स्थिति में वापसी है - निराकार, निर्गुण ब्रह्म। इस अर्थ में, वह जन्म और मृत्यु के चक्र (संसार) को ही शांत करते हैं, मोक्ष (मुक्ति) की गहरी शांति प्रदान करते हैं।

इस प्रकार, शमनाय भैरव को केवल एक विनाशक के रूप में नहीं, बल्कि शांति के परम दाता के रूप में प्रकट करता है, जो अलग अस्तित्व के भ्रम से उत्पन्न होने वाली सभी प्रकार की गड़बड़ी को कुशलता से शांत और वश में करके प्राप्त होता है।

852. शिखिसारथये

जिनके सारथी दिव्य अग्नि (शिखि) हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : शिखिसारथये नाम दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों: शिखी और सारथी का एक यौगिक है।

शिखी: दिव्य अग्नि शिखी का अर्थ है तेजस, अग्नि (दिव्य अग्नि), ज्वाला, शिखर, या चोटी। आध्यात्मिक संदर्भ में, अग्नि केवल भौतिक अग्नि का ही नहीं, बल्कि प्रबुद्ध आध्यात्मिक अग्नि, परिवर्तनकारी ऊर्जा और ज्ञान की अग्नि का भी प्रतिनिधित्व करती है। शुद्धिकर्ता के रूप में, अग्नि अशुद्धियों का भक्षण करती है और पारगमन की ओर ले जाती है। शिखी, "शिखर वाले" के रूप में, मोर को भी संदर्भित कर सकता है, जो अक्सर कार्तिकेय (स्कंद), शिव के पुत्र, जो परवानी नामक मोर की सवारी करते हैं, से जुड़ा एक प्रतीक है। हालांकि, भैरव के संदर्भ में, प्राथमिक संबंध अग्नि या आध्यात्मिक प्रकाश के शिखर से है।

सारथी: रथ चालक सारथी वह होता है जो रथ चलाता है, एक मार्गदर्शक, या एक निर्देशक। सारथी प्रतीकात्मक रूप से बुद्धि (बुद्धि) या मार्गदर्शक सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करता है जो इंद्रियों (घोड़ों) और मन (लगाम) को व्यक्तिगत आत्मा (यात्री) के निर्देशित करता है। रथ स्वयं शरीर या अस्तित्व के वाहन का प्रतिनिधित्व करता है।

सारथी के रूप में दिव्य अग्नि जब शिखी सारथी होता है, तो इसका तात्पर्य है कि दिव्य अग्नि—प्रबुद्ध, परिवर्तनकारी ऊर्जा—भैरव के लिए मार्गदर्शक शक्ति है। यह दर्शाता है कि भैरव शुद्ध, मिलावट रहित दिव्य ऊर्जा और ज्ञान द्वारा संचालित और निर्देशित होते हैं। उनके कार्य सांसारिक इच्छाओं या अहंकार से प्रेरित नहीं होते हैं, बल्कि आध्यात्मिक अग्नि की प्रदीप्त शक्ति से होते हैं। यह तपस (तपस्वी गर्मी/आध्यात्मिक उत्साह) के अवतार के रूप में उनकी भूमिका को भी व्यक्त करता है, जहाँ सभी कार्य तीव्र एकाग्रता और परिवर्तनकारी शक्ति के साथ किए जाते हैं।

मोर का प्रतीकवाद (कार्तिकेय संबंध) यदि शिखी की व्याख्या मोर के रूप में की जाती है, तो "जिसके सारथी के रूप में मोर है" कार्तिकेय, युद्ध और ज्ञान के देवता, जो शिव के पुत्र और दिव्य सेना के सेनापति हैं, से एक सूक्ष्म संबंध स्थापित करता है। इसका तात्पर्य यह हो सकता है कि भैरव की गतिविधियाँ और कार्य कार्तिकेय से जुड़ी तेज़ी, ज्ञान और रणनीतिक पराक्रम द्वारा निर्देशित होते हैं, जो उनके युद्ध संबंधी और सुरक्षात्मक पहलुओं पर और जोर देता है।

परम मार्गदर्शक सिद्धांत अंततः, यह नाम भैरव की पूर्ण संप्रभुता और उच्चतम आध्यात्मिक सिद्धांतों के साथ उनके संरेखण पर जोर देता है। उनका मार्ग सत्य, ज्ञान और शुद्धि की पवित्र अग्नि द्वारा निर्देशित होता है, जिससे वे एक अदम्य शक्ति बन जाते हैं जो अज्ञान और भ्रम को जला देती है, भक्तों को परम मुक्ति की ओर ले जाती है।

853. सुप्रतीकाय

जिनके पास एक सुंदर, उत्कृष्ट और शुभ रूप है, उन्हें नमन।

विस्तार : सुप्रतीकाय नाम संस्कृत के शब्दों "सु" और "प्रतीक" से बना है।

• सु (Su): इस उपसर्ग का अर्थ है "अच्छा," "उत्कृष्ट," "सुंदर," "भला," या "शुभ।"

• प्रतीक (Pratīka): इस शब्द का अर्थ है "रूप," "छवि," "प्रतीक," "आकृति," "शरीर," या "पहलू।"

इन दोनों को मिलाकर, सुप्रतीकाय का अर्थ है वह जो असाधारण रूप से सुंदर, उत्कृष्ट और शुभ रूप धारण किए हुए हैं।

सौंदर्यपूर्ण और दिव्य रूप (The Aesthetic and Divine Form) भैरव को अक्सर भयंकर और डरावने रूपों में चित्रित किया जाता है, लेकिन यह नाम उनकी अंतर्निहित दिव्य सुंदरता और पूर्णता को उजागर करता है। यह सुंदरता केवल सतही नहीं है, बल्कि दिव्य के परम सौंदर्यपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण स्वरूप को दर्शाती है। यह इस बात पर जोर देता है कि उनके सबसे दुर्जेय अभिव्यक्तियों में भी एक अंतर्निहित व्यवस्था, पूर्णता और पवित्रता है जो स्वाभाविक रूप से सुंदर है। यह रूप "उत्कृष्ट" है क्योंकि यह दिव्य शक्ति और ज्ञान की एक पूर्ण अभिव्यक्ति है, जो सभी आदर्श गुणों को समाहित करता है।

शुभ उपस्थिति (Auspicious Presence) एक "शुभ" रूप का अर्थ है कि उनकी उपस्थिति, यहां तक कि एक भयंकर अभिव्यक्ति में भी, जब भक्ति के साथ पूजा की जाती है, तो सौभाग्य, आशीर्वाद और सकारात्मक ब्रह्मांडीय प्रभाव लाती है। यह बताता है कि उनका रूप, हालांकि विस्मयकारी है, अंततः परोपकारी है और उनके भक्तों के लिए आध्यात्मिक विकास और कल्याण के लिए अनुकूल है।

प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व (Symbolic Representation) "प्रतीक" का अर्थ एक प्रतीक या एक चिह्न भी हो सकता है। इस अर्थ में, सुप्रतीक यह बताता है कि कालभैरव के रूप का हर पहलू, उनके हथियारों से लेकर उनके आभूषणों तक, केवल सजावटी नहीं है, बल्कि उनके दिव्य गुणों, शक्तियों

और ब्रह्मांडीय कार्यों का एक पूर्ण और शुभ प्रतीक है। उनकी प्रतिमा विज्ञान का प्रत्येक तत्व गहन आध्यात्मिक अर्थ और सुंदरता से भरा है।

आंतरिक और बाहरी चमक (Inner and Outer Radiance) यह नाम यह भी संकेत दे सकता है कि कालभैरव बाहरी (शारीरिक) और आंतरिक (आध्यात्मिक) दोनों सुंदरता को समाहित करते हैं। उनका "सुंदर रूप" उनकी पूर्ण चेतना, पवित्रता और सर्वोच्च आध्यात्मिक स्थिति का प्रतिबिंब है। एक भक्त के लिए, इस "सुप्रतीक" का चिंतन आंतरिक शांति, स्पष्टता और दिव्य पूर्णता की गहरी सराहना की ओर ले जा सकता है।

854. सुवृद्धात्मने

जिनकी आत्मा परम गुणी, सुविकसित और धर्मपरायण है, उन्हें नमन।

विस्तार : सुवृद्धात्मा (Suvriddhaatmane) नाम भगवान कालभैरव का एक गहरा और बहुआयामी वर्णन है, जो संस्कृत के शब्दों सु, वृद्ध और आत्मन का संयोजन है।

परम अच्छाई/शुभता (सु) 'सु-' उपसर्ग "अच्छा," "उत्कृष्ट," "शुभ," "भली-भांति," या "परम" को दर्शाता है। यह बाद के शब्दों को उनकी उच्चतम संभव डिग्री तक बढ़ाता है। इस संदर्भ में, यह सकारात्मक गुणों की एक आंतरिक, बेदाग और अंतिम स्थिति का तात्पर्य है।

सुविकसित/बढ़ा हुआ/परिपक्व (वृद्ध) 'वृद्ध' शब्द 'वृध्' धातु से आया है, जिसका अर्थ है "बढ़ना," "बढ़ाना," "फलना-फूलना," "समृद्ध होना," या "विकसित होना।" यह ऐसी चीज को दर्शाता है जिसने पूर्णता, परिपक्वता और पूर्ण विकास की स्थिति प्राप्त कर ली है। जब इसे दिव्य पर लागू किया जाता है, तो यह एक ऐसी पूर्णता को इंगित करता है जो मानवीय कल्पना से परे है—एक आध्यात्मिक और अस्तित्वगत परिपक्वता जो सभी गुणों को समाहित करती है।

आत्मा/स्वयं/सार (आत्मन) 'आत्मन' व्यक्तिगत आत्मा, सार्वभौमिक आत्मा, सच्चे स्व, या किसी प्राणी के सार को संदर्भित करता है। कई दार्शनिक विद्यालयों में, यह ब्रह्म, परम वास्तविकता से अविभाज्य है।

पुण्य और पूर्णता का सार एक साथ, सुवृद्धात्मा दिव्य को ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित करता है जिसका सार, आत्मा, या स्वयं परम रूप से सुविकसित, पूर्णतः पुण्यात्मा और आंतरिक रूप से धर्मी है। यह कालभैरव को एक आदर्श, विकसित और त्रुटिहीन आध्यात्मिक स्थिति के अवतार के रूप में इंगित करता है। उनकी "आत्मा" केवल अच्छी नहीं है; यह परम अच्छी है, जिसने आध्यात्मिक विकास और नैतिक शुद्धता के शिखर को प्राप्त कर लिया है। यह दर्शाता है कि उनके प्रत्येक कार्य, अभिव्यक्ति और आदेश का उद्गम परम धार्मिकता और ब्रह्मांडीय व्यवस्था से होता है।

आध्यात्मिक परिपक्वता का स्रोत यह नाम सूक्ष्म रूप से यह भी बताता है कि कालभैरव अपने भक्तों को ऐसी आध्यात्मिक वृद्धि और परिपक्वता का स्रोत और दाता हैं। उनके साथ जुड़कर, व्यक्ति अपनी आत्मा को इस "सु-वृद्ध" अवस्था की ओर विकसित करने की आकांक्षा कर सकता है। यह एक मार्गदर्शक के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है जो प्राणियों को उनकी उच्चतम क्षमता की ओर ले जाता है, उनमें आध्यात्मिक विकास और पुण्य को बढ़ावा देता है।

ब्रह्मांडीय धार्मिकता सुवृद्धात्मा ब्रह्मांडीय नियमों (धर्म) के संरक्षक के रूप में कालभैरव के आंतरिक स्वभाव की बात करता है। उनके कार्य, यहां तक कि जो भयंकर या विनाशकारी प्रतीत होते हैं, हमेशा इस परम धार्मिकता में निहित होते हैं, जो संतुलन और अंततः मुक्ति सुनिश्चित करते हैं। वह ब्रह्मांड में जो कुछ भी न्यायपूर्ण, अच्छा और पूर्णतः विकसित है, उसका अंतिम मानक हैं।

855. संसृष्टाय

समस्त सृष्टि के साथ पूर्णतः संयुक्त और मिश्रित स्वरूप को नमन।

विस्तार : संसृष्ट नाम, संस्कृत मूल 'सृज्' से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है सृष्टि या उद्भव। विशेष रूप से, संसृष्ट का अर्थ है "पूर्णतः एकाकार," "मिश्रित," "मिला हुआ," "निर्मित," या "उत्पन्न किया गया।"

सर्वव्यापी उपस्थिति यह नाम संपूर्ण ब्रह्मांड में कालभैरव की पूर्ण अंतर्व्यापकता पर जोर देता है। वह केवल सृष्टि के निर्माता या द्रष्टा नहीं हैं; बल्कि, वह अस्तित्व में प्रत्येक परमाणु, प्रत्येक प्राणी और प्रत्येक घटना के साथ जटिल रूप से और अद्वैत रूप से जुड़े हुए हैं। उनकी उपस्थिति बाहरी नहीं है, बल्कि वह प्रत्येक व्यक्त और अव्यक्त वस्तु का मूल ताना-बाना और सार है। वह सब में व्याप्त हैं, ठीक वैसे ही जैसे एक टेपेस्ट्री बनाने वाले अदृश्य धागे, जो उन्हें सभी वास्तविकता का आधार बनाते हैं।

दिव्य मिलन संसृष्ट, दिव्य (कालभैरव) और सृष्टि (संसृष्टि) के बीच पूर्ण एकता (एकत्व) की स्थिति को इंगित करता है। कोई अलगाव नहीं है। यह अद्वैत वेदांत दर्शन के अनुरूप है, जहाँ ब्रह्म (परम वास्तविकता) घटनात्मक दुनिया से भिन्न नहीं है, बल्कि उसका ही सार है। कालभैरव, इस पहलू में, इस अद्वैत सत्य का प्रतिनिधित्व करते हैं - कि दिव्य शक्ति सृष्टि के हर पहलू में पूरी तरह से और पूर्ण रूप से मौजूद है, न केवल एक नियंत्रक के रूप में बल्कि उसके अस्तित्व के एक अंतर्निहित हिस्से के रूप में।

निर्माता और सृष्टि यह शब्द "निर्मित" या "उत्पन्न किया गया" का अर्थ भी रखता है। इस संदर्भ में, यह दर्शाता है कि सृष्टि में सब कुछ उनसे उत्पन्न होता है, फिर भी वह अपने ही उद्भव में पूर्णतः विलीन रहते हैं। वह सभी चीजों के स्रोत और पदार्थ दोनों हैं। यह एकता-के-भीतर-द्वैत एक गहरा रहस्यमय विचार है, जहाँ निर्माता एक साथ पारलौकिक और अंतर्यामी है।

यह नाम, इसलिए, कालभैरव को उस परम वास्तविकता के रूप में पूजता है जो सार्वभौमिक रूप से उपस्थित, घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई, और अस्तित्व के सभी पहलुओं के साथ गहराई से एकीकृत है, जो दिव्य एकात्मता की स्थिति को दर्शाता है जहाँ निर्माता और निर्मित के बीच की सीमाएँ घुल जाती हैं।

856. सुखवांग्निधये

सुखद वाणी और मधुर शब्दों के भंडार को नमन।

विस्तार : सुखवांग्निधये नाम तीन संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: सुख, वाणी (या वाक्), और निधि।

• सुख (Sukha): आनंद, प्रसन्नता, सुखदता, सहजता, आराम। यह अक्सर कल्याण और आंतरिक संतोष की स्थिति को संदर्भित करता है।

• वाणी (Vāṇī) (या वाक्): भाषण, शब्द, आवाज, भाषा, दिव्य उच्चारण। यह शब्द केवल मौखिक संचार को ही नहीं, बल्कि अभिव्यक्ति के गहरे सार और शक्ति को भी संदर्भित करता है।

• निधि (Nidhi): खजाना, भंडार, संचय, एक छिपा हुआ या प्रचुर भंडार।

शुभ वाणी का भंडार (A Repository of Auspicious Speech) इस प्रकार, सुखवांग्निधये का अर्थ है "जो सुखद वाणी और प्रसन्न शब्दों का खजाना है।" यह गुण एक दिव्य गुणवत्ता को दर्शाता है जहाँ कालभैरव द्वारा उच्चारित या उनसे जुड़े प्रत्येक शब्द में शुभता होती है, आनंद लाता है और दुख को दूर करता है। उनकी वाणी केवल संवादात्मक नहीं है; यह परिवर्तनकारी, उपचारक और दिव्य कृपा से परिपूर्ण है।

दिव्य सद्भाव की अभिव्यक्ति (Manifestation of Divine Harmony) यह नाम कालभैरव के परोपकारी पहलू पर जोर देता है, जहाँ उनकी शक्तिशाली ऊर्जाएँ ध्वनि और उच्चारण के माध्यम से सद्भाव और कल्याण के रूप में प्रकट होती हैं। यह बताता है कि उनकी स्तुति सुनना, उनके मंत्रों का जाप करना, या यहाँ तक कि उनके स्वरूप का चिंतन करना भी भक्तों को मानसिक शांति, खुशी और आंतरिक संतोष प्रदान करता है। "सुखद वाणी" का अर्थ ऐसे शब्द हैं जो निर्देश देते हैं, मार्गदर्शन करते हैं, सांत्वना देते हैं और प्रबुद्ध करते हैं, भय के बजाय आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देते हैं।

रचनात्मक शक्ति का प्रतीक (Symbol of Creative Power) व्यापक अर्थ में, हिंदू दर्शन में दिव्य वाणी (वाक्) को आदिम रचनात्मक शक्ति माना जाता है। इस प्रकार, कालभैरव, "सुखद वाणी के खजाने" के रूप में, वह स्रोत हैं जहाँ से ब्रह्मांड में सभी लाभकारी और सामंजस्यपूर्ण अभिव्यक्तियाँ निकलती हैं। उनके शब्द केवल प्रसन्न करने वाले नहीं हैं; वे आंतरिक रूप से सत्य, धार्मिक हैं और ब्रह्मांड के कल्याण और व्यवस्था में योगदान करते हैं।

857. सुखानिळाया

उस सुखद और कोमल समीर के समान स्वरूप को नमन, जो आराम और प्रसन्नता लाता है।

विस्तार : सुखानिलाय नाम सुख (सुखद, आरामदायक, आनंदमय) और अनिल (हवा, समीर) का एक यौगिक है। यह नाम, जो भैरव के उग्र पहलू के विपरीत प्रतीत होता है, उनके दिव्य स्वरूप के एक गहन, परोपकारी आयाम को प्रकट करता है।

कोमल समीर (सुख-अनिल) अनिल हवा को संदर्भित करता है, विशेष रूप से एक समीर को। जब यह सुख से विशेषित होता है, तो यह एक सुखद, कोमल और आरामदायक समीर को दर्शाता है। यह रूपक कलाभैरव के एक ऐसे पक्ष को खूबसूरती से व्यक्त करता है जो विनाश या आतंक के बारे में नहीं है, बल्कि सांत्वना, शांति और सकारात्मक प्रभाव के बारे में है। जिस प्रकार एक कोमल समीर गर्मी के दिन शांत, ताज़ा और आराम दे सकता है, उसी प्रकार कलाभैरव का यह पहलू दुख से राहत, अराजकता के बीच शांति और हृदय को आनंद प्रदान करता है। जब हम जीवन के तूफानों में फंसे होते हैं, तो भैरव सुखानिलाय के रूप में, शांति की ओर हमारा मार्गदर्शन करते हुए, सुखदायक प्रतिरूप प्रदान करते हैं।

आराम और आनंद लाने वाला यह नाम कलाभैरव की अपने भक्तों को सुख—खुशी, आराम, कल्याण और आनंद—प्रदान करने की क्षमता पर प्रकाश डालता है। जबकि उनके उग्र रूप अज्ञान और नकारात्मकता को नष्ट कर सकते हैं, यह रूप पोषण और विकास के लिए आवश्यक सकारात्मक भावनात्मक और आध्यात्मिक समर्थन प्रदान करता है। वह वही है जो निराशा को दूर करता है और आंतरिक शांति की स्थिति लाता है। यह व्याख्या इस समझ के अनुरूप है कि दिव्य, अपने सबसे दुर्जेय अभिव्यक्तियों में भी, अंततः प्राणियों के कल्याण और मुक्ति की तलाश करता है।

सूक्ष्म और व्यापक प्रभाव हवा की तरह, सुखानिलाय के रूप में कलाभैरव का प्रभाव सूक्ष्म, व्यापक और अक्सर अदृश्य होता है, फिर भी गहराई से महसूस किया जाता है। वह सभी चीजों के माध्यम से चलता है और उन्हें प्रभावित करता है, ऐसे तरीकों से समर्थन और आराम प्रदान करता है जो हमेशा स्पष्ट रूप से स्पष्ट नहीं होते हैं, लेकिन गहरे स्तर पर गहरा प्रभाव डालते हैं। यह भक्त के पक्ष में परिस्थितियों को धीरे से व्यवस्थित करने की उनकी क्षमता का सुझाव देता है, जिससे आनंदमय परिणाम मिलते हैं।

विपरीत और संतुलन यह नाम कई हिंदू देवताओं, विशेष रूप से शिव और भैरव जैसे उनके अभिव्यक्तियों में निहित विरोधाभास का एक आदर्श उदाहरण है। वही देवता जो काल (विनाशक के रूप में समय) हो सकते हैं, परिवर्तन और विघटन के भयानक पहलुओं को मूर्त रूप देते हुए,

सुखानिलाय भी हो सकते हैं, जो अस्तित्व के कोमल, जीवन-पुष्टि करने वाले और आनंद देने वाले पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह दिव्य के सर्व-समावेशी स्वरूप को दर्शाता है, जो अपने एकल अस्तित्व के भीतर उग्र और सौम्य, विनाशकारी और आरामदायक दोनों को धारण करता है।

858. सुसंपन्नाय

जो महान धन, समृद्धि और सभी दिव्य गुणों से संपन्न हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : सुसम्पन्न नाम में 'सु' उपसर्ग है, जिसका अर्थ है "अच्छा," "उत्कृष्ट," या "भली-भाँति," और 'सम्पन्न' का अर्थ है "सिद्ध," "से युक्त," "धनी," "पूर्ण," या "संपूर्ण।"

महान धन और समृद्धि सम्पन्न का अर्थ है भौतिक और आध्यात्मिक धन की प्रचुरता होना। कालभैरव के लिए, यह केवल सोना या रत्न नहीं है, बल्कि ब्रह्मांडीय शक्ति, ज्ञान और दिव्य कृपा का एक अंतहीन भंडार है। सभी समय और स्थान के स्वामी के रूप में, वे सभी संसाधनों को नियंत्रित करते हैं और अपने भक्तों को समृद्धि प्रदान करते हैं।

पूर्णता और परिपूर्णता "सु" उपसर्ग इसे "उत्कृष्ट रूप से संपन्न" या "पूरी तरह से सिद्ध" तक बढ़ा देता है। यह इंगित करता है कि कालभैरव पूर्ण पूर्णता की स्थिति का प्रतीक हैं, जिनमें किसी भी चीज़ की कमी नहीं है। वे परिपूर्ण हैं, हर पहलू में पूरी तरह से पूर्ण और परिपूर्ण हैं - दिव्य गुण, ब्रह्मांडीय कार्य और आध्यात्मिक विशेषताएँ। यह पूर्णता उनकी क्षमता को दर्शाती है कि वे उन लोगों को पूर्णता और संतुष्टि प्रदान कर सकते हैं जो उनमें शरण लेते हैं।

सभी दिव्य गुणों के स्वामी वे सभी शुभ और दिव्य गुणों के प्रतीक हैं, जैसे सर्वज्ञता (सर्वज्ञत्व), सर्वशक्तिमत्ता (सर्वशक्तिमत्व), सर्वव्यापकता (सर्वव्यापकत्व), परम आनंद (परमानंद), और पूर्ण पवित्रता (शुद्ध सत्व)। वे वह स्रोत हैं जहाँ से सभी सद्गुण उत्पन्न होते हैं और जिनकी कृपा से इन गुणों को प्राणियों में विकसित किया जा सकता है।

पूर्णता के दाता उन्हें सुसम्पन्न के रूप में पुकारकर, भक्त उन्हें सभी उपलब्धियों का स्रोत और वह मानते हैं जो उन्हें सांसारिक मामलों और आध्यात्मिक प्राप्ति दोनों में अंतिम पूर्णता की स्थिति तक ले जा सकते हैं। वे सभी अच्छी और उत्कृष्ट चीजों के परम दाता हैं।

859. सुरभये

सुगंधित, आकर्षक, और दिव्य इच्छा पूरी करने वाली गाय (सुरभि) के स्वरूप को नमन।

विस्तार : सुरभये (कर्ता कारक में सुरभि) नाम अर्थों की कई परतों से समृद्ध है, जिसमें सुगंध, आकर्षण, दिव्य संस्थाएँ और प्रचुरता शामिल है, ये सभी कालभैरव को समर्पित हैं।

• सुगंधित और आकर्षक सुरभि का प्राथमिक अर्थ "सुगंधित," "मीठी गंध वाला," या "आकर्षक" है। यह कालभैरव की आध्यात्मिक आभा को संदर्भित करता है, जो शुद्ध, शुभ और भक्तों को अपनी ओर आकर्षित करती है। जब भैरव को सुगंधित बताया जाता है, तो यह दर्शाता है कि उनकी उपस्थिति पर्यावरण और उन लोगों के दिलों को शुद्ध करती है जो उनकी पूजा करते हैं, दिव्य पवित्रता और ज्ञान का सार विकीर्ण करती है। यह एक मनमोहक आध्यात्मिक सुंदरता और कृपा का भी अर्थ है जो उनके भयंकर स्वरूप से परे है, साधकों को उनके परम सत्य की ओर आकर्षित करती है।

• इच्छा पूर्ण करने वाली गाय (कामधेनु) "सुरभि" कामधेनु, दिव्य, इच्छा पूर्ण करने वाली गाय का एक विशिष्ट नाम भी है, जिसे सवला के नाम से भी जाना जाता है। यह पहलू कालभैरव को सभी इच्छाओं, कामनाओं और प्रचुरता, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों के परम दाता के रूप में दर्शाता

है। जिस प्रकार कामधेनु अपने भक्तों की सभी आवश्यकताओं और इच्छाओं को पूरा करती है, उसी प्रकार भैरव, सुरभि के रूप में, सभी समृद्धि, कल्याण और अंततः मुक्ति (मोक्ष) के प्रदाता हैं। इसका तात्पर्य है कि वह ब्रह्मांड और व्यक्तिगत आत्माओं के लिए सभी पोषण और जीविका का स्रोत हैं।

• शुभता और पवित्रता "सुरभि" शब्द शुभता और पवित्रता का भी अर्थ है। कालभैरव इन गुणों को अपने भयंकर स्वरूप में भी धारण करते हैं, क्योंकि उनके कार्य हमेशा परम भलाई और धर्म की स्थापना के लिए होते हैं। वह नकारात्मकता को शुद्ध करते हैं और बाधाओं को दूर करते हैं, अपने सच्चे भक्तों के लिए शुभ परिणामों का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

• पवित्रता और दिव्यता "सुरभि" होने से उन्हें हिंदू परंपरा में गायों से जुड़ी पवित्रता से भी जोड़ा जाता है, जो दिव्यता, मातृत्व और निस्वार्थ दान का प्रतीक है। यह कालभैरव की भूमिका पर जोर देता है, न केवल एक दंड देने वाले या संहारक के रूप में, बल्कि एक परोपकारी, पोषण करने वाली शक्ति के रूप में भी जो प्रदान करती है और रक्षा करती है।

860. शिशिरआत्मकाय

जो शीत ऋतु के समान शांत और स्फूर्तिदायक हैं, शीतलता के ही स्वरूप हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : शिशिरात्मकाय नाम संस्कृत शब्दों "शिशिर" और "आत्मन" से लिया गया है, जिसमें संबंधवाचक प्रत्यय "-क" और चतुर्थी विभक्ति का अंत "-आय" (को/के लिए) जुड़ा है।

शिशिर (शीशिर): यह शीत ऋतु को संदर्भित करता है, जिसकी विशेषता ठंडक, ओस और अक्सर स्थिरता होती है। यह छह पारंपरिक भारतीय ऋतुओं में सबसे ठंडी ऋतु है। प्रतीकात्मक रूप से, शिशिर शांति, आत्मनिरीक्षण और शुद्धि की अवधि का भी प्रतिनिधित्व करता है, क्योंकि प्रकृति आराम करती है और नवीनीकरण के लिए तैयार होती है। यह शांति और संयम की भावना से भी जुड़ा है।

आत्मका (आत्मका): इस प्रत्यय का अर्थ है "की प्रकृति वाला," "से बना हुआ," या "आत्मा/सार।" इस संदर्भ में, यह स्वयं सार या अंतर्निहित गुणवत्ता को दर्शाता है।

शीतलता और शांति की आत्मा इस प्रकार, शिशिरात्मा का अर्थ है "वह जिसका सार शीत ऋतु के समान शीतलता है" या "शीतलता की आत्मा।" यह गुण भगवान कालभैरव के अंतर्निहित स्वभाव को इंगित करता है कि वे समय और विनाश के स्वामी के रूप में अपने भयंकर और भयानक पहलुओं के बावजूद, पूरी तरह से शांत, सौम्य और अविचलित हैं।

द्वंद्वों का अतिक्रमण जबकि भैरव अपनी उग्र क्रोध और बुराई और अज्ञान को समाप्त करने की विनाशकारी शक्ति के लिए जाने जाते हैं, शिशिरात्मा उनके विपरीत, फिर भी पूरक, पहलू को प्रकट करता है। यह उनकी पारलौकिक स्थिति को दर्शाता है, जहाँ वे अस्तित्व के द्वंद्वों - गर्मी और ठंड, सुख और दुख, सृजन और विनाश - से अछूते और अविचलित रहते हैं। उनकी "शीतलता" केवल एक भौतिक अवस्था नहीं है, बल्कि एक आध्यात्मिक अवस्था है, जो समता (समतुल्यता) और वैराग्य (विरक्ति) को दर्शाती है।

ताज़गी और शांति का स्रोत अपने भक्तों के लिए, यह नाम शांति, स्थिरता और ताज़गी भरी शांति प्रदान करने के उनके परोपकारी गुण को दर्शाता है। जिस प्रकार शीत ऋतु कायाकल्प कर सकती है और पृथ्वी को नई वृद्धि के लिए तैयार कर सकती है, उसी प्रकार कालभैरव, अपने शिशिरात्मा रूप में, आध्यात्मिक साधक को शुद्ध और ताज़ा करते हैं, सांसारिक चिंताओं, कर्मों के बोझ और मानसिक अशांति की गर्मी को दूर करते हैं। वे परम आश्रय बन जाते हैं जो जलते हुए हृदय को शीतलता और सांत्वना प्रदान करते हैं।

सौंदर्य और दार्शनिक महत्व यह नाम शिव/भैरव की एक सुंदर योगिक और तांत्रिक समझ को भी उद्‌घाटित करता है, जो योग के परम अभ्यासी हैं, जिनका आंतरिक स्वरूप हमेशा शांत और संयमित रहता है, भले ही वे विनाश के सबसे तीव्र ब्रह्मांडीय नृत्य करते हों। यह हमें याद दिलाता है कि सच्ची शक्ति केवल बल के बाहरी प्रदर्शन में नहीं है, बल्कि गहरी आंतरिक शांति और आत्म-नियंत्रण में है।

861. सर्वदेवमयाय

जो सभी देवताओं से युक्त हैं और अपने भीतर सभी देवताओं को समाहित किए हुए हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : सर्वदेवमयाय नाम एक गहन संस्कृत यौगिक पद है जो शिव की दिव्यता के एक महत्वपूर्ण पहलू को समाहित करता है, विशेष रूप से उनके काल भैरव के रूप में। यह "सर्व" से बना है, जिसका अर्थ है "सभी" या "संपूर्ण," "देव," जिसका अर्थ है "देवता" या "दिव्य प्राणी," और "मय," जिसका अर्थ यहाँ "से बना हुआ," "से ओत-प्रोत," या "से युक्त" है।

सर्व-समावेशी दिव्य यह नाम दर्शाता है कि काल भैरव सभी देवताओं के अवतार हैं। वह केवल कई देवताओं में से एक नहीं हैं, बल्कि अपने भीतर हिंदू पंथ के प्रत्येक अन्य देवता, देवी और दिव्य सत्ता के सार, शक्ति और गुणों को समाहित करते हैं। यह सभी दिव्य अभिव्यक्तियों का एक संश्लेषण प्रस्तुत करता है, यह सुझाव देता है कि सभी मार्ग उन्हीं की ओर ले जाते हैं, और सभी दिव्य रूप उनकी परम वास्तविकता के केवल पहलू हैं।

परम निरपेक्ष एक व्यापक दार्शनिक अर्थ में, सर्वदेवमयाय दिव्य की अद्वैतवादी समझ की ओर इशारा करता है जहाँ सर्वोच्च वास्तविकता एक है, और सभी विशिष्ट देवताओं को उस अद्वितीय परम सत्ता के उत्सर्जन या पहलुओं के रूप में माना जाता है। इस संदर्भ में, काल भैरव केवल शिव का एक उग्र रूप नहीं हैं, बल्कि परम, निरपेक्ष ब्रह्म हैं, जिनसे अन्य सभी देवता उत्पन्न होते हैं और जिनमें वे अंततः विलीन हो जाते हैं।

एकता और एकात्मता यह नाम देवताओं की स्पष्ट बहुलता के अंतर्निहित एकता पर जोर देता है। यह सुझाव देता है कि काल भैरव की पूजा करना सभी देवताओं की पूजा करने के बराबर है, क्योंकि वह उन सभी को समाहित करते हैं। यह परिप्रेक्ष्य सांप्रदायिक सीमाओं को भंग करता है और दिव्य की एक समग्र समझ को बढ़ावा देता है, यह पुष्टि करता है कि परम सत्य एकीकृत और अविभाजित है।

सभी दिव्य ऊर्जा का स्रोत जो "सभी देवताओं से बने हैं," काल भैरव को सभी दिव्य ऊर्जाओं, शक्तियों और ब्रह्मांडीय कार्यों का स्रोत और भंडार भी माना जाता है। सृजन (ब्रह्मा), संरक्षण (विष्णु), और संहार (स्वयं शिव) की शक्तियाँ – साथ ही इंद्र, अग्नि, वायु और अन्य की शक्तियाँ – सभी स्वाभाविक रूप से उनके भीतर मौजूद हैं। यह उन्हें ब्रह्मांड में एक अत्यंत शक्तिशाली और सर्व-पोषक शक्ति बनाता है।

862. शैलाय

जो शक्तिशाली, अटल पर्वत स्वरूप हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : शैला (Śailā) नाम "शैल" (Śaila) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "पर्वत," "पहाड़ी," या "चट्टान।" यह भगवान कालभैरव के एक अटल और विस्मयकारी स्वरूप को दर्शाता है, जो स्थिरता और सर्वोच्च शक्ति का प्रतीक है।

अटलता और दृढ़ता जिस प्रकार एक पर्वत अडिग, स्थिर और तत्वों से अप्रभावित रहता है, उसी प्रकार शैला कालभैरव के शाश्वत और अपरिवर्तनीय स्वरूप का प्रतिनिधित्व करता है। वह सृष्टि, पालन और संहार के उतार-चढ़ाव से परे हैं। यह पहलू भक्तों के लिए एक शरण, एक दुर्जेय संरक्षक

और ब्रह्मांडीय नियम की एक अटूट शक्ति के रूप में उनकी विश्वसनीयता को दर्शाता है। उनका "पर्वत" स्वरूप अस्तित्व की उस अटूट नींव का प्रतीक है जो सभी क्षणभंगुर घटनाओं के नीचे स्थित है।

सर्वोच्च शक्ति और भव्यता पर्वतों को अक्सर अपार शक्ति, भव्यता और अदम्य शक्ति से जोड़ा जाता है। कालभैरव, शैला के रूप में, इस दुर्जेय शक्ति को प्रकट करते हैं। वह ब्रह्मांडीय पर्वत हैं, जिससे शक्ति के अन्य सभी रूप निकलते हैं, और जिसमें सभी शक्ति अंततः लौट आती है। यह नाम उनकी अत्यधिक शक्ति और किसी भी विरोध का सामना करने की उनकी क्षमता पर जोर देता है।

उत्कृष्टता और तपस्या पर्वतों को, विशेष रूप से हिंदू परंपराओं में, तपस्या और आध्यात्मिक अभ्यासों के लिए पवित्र निवास स्थान माना जाता है, जो अक्सर भगवान शिव के कैलाश पर्वत पर निवास से जुड़े होते हैं। "पर्वत" होने के नाते, कालभैरव गहन ध्यान, विकर्षण से अलगाव और गहन आध्यात्मिक ऊर्जा की स्थिति का प्रतीक हैं। यह सांसारिक चिंताओं से उनकी अलगाव को दर्शाता है फिर भी आध्यात्मिक खोज से उनका गहरा संबंध है।

अस्तित्व की नींव रूपक रूप से, शैला वास्तविकता की आधारशिला का प्रतिनिधित्व करता है। जिस प्रकार पर्वत पृथ्वी को संरचना प्रदान करते हैं, उसी प्रकार कालभैरव शैला के रूप में ब्रह्मांड को परम, अटूट संरचना प्रदान करते हैं, जिससे ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) सुनिश्चित होती है। वह वह ठोस, अटूट सत्य हैं जिस पर समस्त अस्तित्व टिका हुआ है।

863. सर्वशास्त्रप्रभंजनाय

समस्त अन्य मतों के तर्कों को विखंडित करने वाले को नमन।

विस्तार : सर्वशास्त्रप्रभंजनाय नाम कालभैरव का एक अत्यंत दार्शनिक और बौद्धिक वर्णन है, जो तीन संस्कृत शब्दों से बना है: सर्व, शास्त्र और प्रभंजन।

• सर्व (Sarva): इसका अर्थ है "सभी," "प्रत्येक," या "पूर्ण।"

• शास्त्र (Shāstra): यह "धर्मग्रंथों," "विज्ञानों," "ज्ञान प्रणालियों," "दार्शनिक ग्रंथों," या "विचारधाराओं" को संदर्भित करता है। व्यापक अर्थ में, इसका अर्थ सीखने का कोई भी व्यवस्थित निकाय या स्थापित सिद्धांत है।

• प्रभंजन (Prabhañjana): इस शब्द का अर्थ है "ध्वस्त करना," "तोड़ना," "बिखेरना," या "नष्ट करना।" यह अक्सर एक ज़बरदस्त और निर्णायक खंडन या विघटन का तात्पर्य है।

अन्य सभी सिद्धांतों को ध्वस्त करने वाला एक साथ, सर्वशास्त्रप्रभंजन उस एक को दर्शाता है जो परम सत्य से विचलित होने वाली अन्य सभी विचारधाराओं या ज्ञान प्रणालियों के तर्कों, दर्शनों और सिद्धांतों को निर्णायक रूप से पराजित करता है, खंडन करता है या ध्वस्त करता है। यह उपाधि स्वयं ज्ञान के अस्वीकृति का अर्थ नहीं है, बल्कि सभी बौद्धिक विवादों और आंशिक सत्यों का एक अतिक्रमण और अंतिम समाधान है।

द्वैत और सीमित दृष्टिकोणों का अतिक्रमण दार्शनिक बहस में, प्रत्येक विचारधारा (शास्त्र) अपने दृष्टिकोण को परम वास्तविकता के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करती है। हालांकि, ये अक्सर बौद्धिक ढाँचों, द्वैतवादी व्याख्याओं या वैचारिक सीमाओं से सीमित होते हैं। कालभैरव, परम वास्तविकता के रूप में, उस सत्य का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसे किसी एक दार्शनिक प्रणाली द्वारा पूरी तरह से समाहित नहीं किया जा सकता है। अन्य शास्त्रों का उनका "ध्वस्त करना" प्रतीक है: 1. सत्य के अद्वैत अनुभव में सभी द्वंद्वात्मक तर्कों का अंतिम समाधान। 2. किसी भी दर्शन की

अमान्यता जो शिव/भैरव द्वारा प्रतिनिधित्व की गई सर्वोच्च, अद्वैत चेतना के अलावा किसी अन्य वास्तविकता को प्रस्तुत करती है। 3. यह रहस्योद्घाटन कि सभी आंशिक सत्य पूर्ण सत्य में समाहित और अतिक्रमित हैं।

सर्वोच्च ज्ञान का अवतार यह विशेषण कालभैरव को केवल कच्ची शक्ति के देवता के रूप में नहीं, बल्कि सर्वोच्च ज्ञान (प्रज्ञा) या परम ज्ञान के साक्षात अवतार के रूप में भी स्थापित करता है। वह सत्य का अंतिम मध्यस्थ है, जिसका अस्तित्व किसी भी ऐसे दृष्टिकोण की वैधता को नकारता है जो निरपेक्ष के साथ संरेखित नहीं है। वह सभी तर्कों का अंत है, सभी प्रश्नों का अंतिम उत्तर है, और सभी बौद्धिक जांच का अंतिम विश्राम स्थल है।

भक्त के लिए, कालभैरव को सर्वशास्त्रप्रभंजन के रूप में स्वीकार करना बौद्धिक समर्पण का एक कार्य है - यह पहचानना कि सच्चा ज्ञान केवल बौद्धिक समझ और दार्शनिक बहस की सीमाओं से परे, सभी अस्तित्व के स्रोत से सीधे आता है।

864. शिवालयया

जो शिव का पवित्र और शुभ निवास स्थान है, उन्हें नमन।

विस्तार : शिवालय (Shivālaya) नाम शिव और आलय का एक यौगिक है, जिसका अर्थ है "शिव का निवास", "शिव का पवित्र निवास" या "शिव का मंदिर"।

पवित्रता और शुभता का निवास इस संदर्भ में, शिव शब्द न केवल देवता भगवान शिव को संदर्भित करता है, बल्कि शुभता, पवित्रता और परम परोपकार की आंतरिक प्रकृति को भी संदर्भित करता है। इस प्रकार, शिवालय एक ऐसे स्थान या अवस्था को दर्शाता है जो स्वाभाविक रूप से शुद्ध, शुभ और नकारात्मकता से रहित है। यह नाम इंगित करता है कि कालभैरव ऐसी अवस्था का प्रतीक हैं।

ब्रह्मांडीय निवास ब्रह्मांडीय स्तर पर, शिवालय पूरे ब्रह्मांड को शिव के विशाल, पवित्र निवास के रूप में संदर्भित करता है। कालभैरव, शिव के एक उग्र स्वरूप होने के नाते, इसलिए सर्वव्यापी हैं, जो हर परमाणु और हर क्षेत्र में व्याप्त हैं। वे अस्तित्व का ताना-बाना हैं, और सारी सृष्टि उनका पवित्र स्थान है।

शरीर एक मंदिर के रूप में एक गहन आध्यात्मिक अर्थ में, शिवालय मानव शरीर—विशेष रूप से प्रबुद्ध शरीर—को दिव्य चेतना, आत्मा (Atman) के पवित्र निवास स्थान के रूप में भी संदर्भित कर सकता है, जो शिव से भिन्न नहीं है। कालभैरव को शिवालय के रूप में स्वीकार करके, भक्त अपने स्वयं के शरीर और मन की क्षमता को भी पहचानते हैं कि वे दिव्य के लिए शुद्ध निवास बन सकें।

परम आश्रय भक्तों के लिए, शिवालय परम आश्रय का प्रतिनिधित्व करता है, एक आध्यात्मिक अभयारण्य जहाँ कोई शांति, मुक्ति और दिव्य के साथ मिलन पा सकता है। कालभैरव, शिवालय के रूप में, सांसारिक कष्टों से यह परम सांत्वना और सुरक्षा प्रदान करते हैं, साधकों को आत्म-साक्षात्कार और मोक्ष की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

एकता का प्रतीक यह नाम कालभैरव की चेतना के एकीकृत क्षेत्र के रूप में भूमिका पर जोर देता है जहाँ सभी भेद घुल जाते हैं, और केवल शिव का शुद्ध, शुभ सार शेष रहता है। यह दर्शाता है कि वे शिव सिद्धांत से अलग नहीं हैं, बल्कि इसके सर्वोच्च सार का एक अवतार हैं, जो उन्हें आध्यात्मिक ऊर्जा और भक्ति के लिए अभिसरण का अंतिम बिंदु बनाता है।

865. सूर्यरूपाय

तेजस्वी और कांतिमान सूर्य के स्वरूप वाले को नमन।

विस्तार : सूर्यरूपाय नाम संस्कृत के शब्द 'सूर्य' (Sun) और 'रूप' (Form or Appearance) को मिलाकर बना है, जिसका अर्थ है एक ऐसा अस्तित्व जिसका रूप सूर्य के समान है। कालभैरव के लिए यह विशेषण प्रतीकवाद से भरपूर है और उनके दिव्य स्वरूप के कई गहन पहलुओं को दर्शाता है।

सूर्य की चमक और दीप्ति (The Brilliance and Radiance of the Sun) इस नाम की प्राथमिक व्याख्या सूर्य की भौतिक विशेषताओं से सीधी तुलना है। सूर्य हमारे सौरमंडल में सबसे चमकीला और दीप्तिमान पिंड है, जो सभी चीजों को प्रकाशित करता है और अंधकार को दूर करता है। इस पहलू में, कालभैरव को वह दिव्य प्रकाश माना जाता है जो अज्ञानता, भ्रम (माया) और आध्यात्मिक अंधकार को दूर करता है। उनका रूप केवल उज्ज्वल ही नहीं, बल्कि अत्यधिक दीप्तिमान है, जो शुद्ध चेतना और आत्म-प्रकाश का प्रतिनिधित्व करता है।

जीवन और पोषण का स्रोत (Source of Life and Sustenance) जैसे सूर्य पृथ्वी के लिए ऊर्जा, प्रकाश और जीवन का अंतिम स्रोत है, वैसे ही कालभैरव वह दिव्य स्रोत हैं जिससे सभी अस्तित्व अपना पोषण और जीवन शक्ति प्राप्त करते हैं। वे जीवनदाता हैं, वे हैं जो ब्रह्मांड को ऊर्जा प्रदान करते हैं, जिससे सभी प्रकार के जीवन पनपते हैं। यह ब्रह्मांडीय व्यवस्था के संरक्षक और समर्थक के रूप में उनकी भूमिका से जुड़ा है।

समय के नियंत्रक (Controller of Time) सूर्य देव, समय की अवधारणा से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। दिनों, महीनों और वर्षों का माप मूल रूप से सूर्य की गति पर आधारित है। सूर्य का रूप धारण करके, कालभैरव, काल (समय) भैरव के रूप में, समय पर अपने प्रभुत्व पर और जोर देते हैं। वे समय का सार हैं, ब्रह्मांडीय घड़ी जो जन्म, विकास, क्षय और विघटन को नियंत्रित करती है। उनकी चमक स्वयं काल का अनावरण है।

बुराई और अशुद्धता का विनाश (Destruction of Evil and Impurity) सूर्य की तीव्र गर्मी और प्रकाश शुद्ध और कीटाणुनाशक होते हैं। प्रतीकात्मक रूप से, कालभैरव, सूर्य के रूप में, सभी अशुद्धियों, पापों और नकारात्मक शक्तियों को जलाने की शक्ति रखते हैं। उनकी दीप्तिमान उपस्थिति बुराई और कर्म को भस्म कर देती है, जिससे उनके भक्तों के लिए आध्यात्मिक शुद्धि और मुक्ति मिलती है।

अविनाशी का प्रतीक (Symbol of Imperishability) सूर्य की तरह, जो हर दिन बिना चूके उगता है, निरंतरता और शाश्वत उपस्थिति का प्रतीक है, कालभैरव अविनाशी, शाश्वत सत्य हैं। सूर्य के रूप में उनका स्वरूप उनके अपरिवर्तनीय, अविनाशी स्वभाव का प्रतिनिधित्व करता है, भले ही उनके आसपास की सभी चीजें समय और क्षय के चक्रों के अधीन हों।

866. सहस्रमुखनाशकाय

सहस्रमुखी राक्षस का नाश करने वाले को नमन।

विस्तार : सहस्रमुखनाशकाय नाम तीन शब्दों से मिलकर बना है: सहस्र, मुख और नाशक।

• सहस्र: इसका अर्थ है "हजार" या "असंख्य"। यह विशालता, बहुलता और अत्यधिक मात्रा को दर्शाता है। • मुख: इसका अर्थ है "चेहरा," "सिर," या "पहलू।" इस संदर्भ में, यह अनेक रूपों या अभिव्यक्तियों वाले प्राणी को संदर्भित करता है। • नाशक: इसका अर्थ है "विनाशक," "संहारक," या "पराजित करने वाला।"

हजार सिर वाला राक्षस यह नाम विशेष रूप से भैरव की भूमिका को दर्शाता है जिसमें उन्होंने एक शक्तिशाली राक्षसी इकाई या "हजार मुखों" के रूप में प्रतीकात्मक रूप से दर्शाई गई नकारात्मक शक्तियों के समूह को पराजित किया था। यद्यपि अन्य राक्षस संहारकों की तरह ग्रंथों में इसका विस्तार से वर्णन नहीं किया गया है, यह विशेषण शिव/भैरव के बुराई के विनाशक और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के पुनर्स्थापक के मूलभूत स्वरूप को पुष्ट करता है। "हजार मुख" उन असंख्य तरीकों का प्रतीक हैं जिनसे भ्रम, अहंकार, अज्ञान और अधर्म (अधर्म) दुनिया में और एक व्यक्ति के भीतर प्रकट हो सकते हैं।

विनाश का प्रतीकवाद "हजार मुख वाले राक्षस" का विनाश केवल शारीरिक युद्ध की एक पौराणिक कथा नहीं है, बल्कि एक गहरा आध्यात्मिक रूपक है। • अहंकार और भ्रम का विनाश: अनेक मुख व्यक्तिगत अहंकार (अहंकार) के असंख्य रूपों और सत्य को ढँकने वाले अनगिनत भ्रमों (माया) का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। भैरव, परम वास्तविकता के रूप में, आत्म-धोखे की इन परतों को नष्ट करते हैं, जिससे मुक्ति मिलती है। • बहुलता का विनाश: दार्शनिक अर्थ में, "हजार मुख" ब्रह्मांड की कथित बहुलता का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं, जो परम वास्तविकता के दृष्टिकोण से एक भ्रम है। भैरव का "विनाश" सभी स्पष्ट विविधता के नीचे अंतर्निहित एकता (अद्वैत) की प्राप्ति को दर्शाता है। • बाधाओं का विजेता: भक्त के लिए, यह नाम आश्वस्त करता है कि काल भैरव आध्यात्मिक मार्ग पर अनगिनत बाधाओं को दूर कर सकते हैं, चाहे वे आंतरिक हों (वासनाएं, कर्म) या बाहरी (नकारात्मक प्रभाव, प्रतिकूलताएं)।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था और न्याय काल (समय) और परम न्याय के अवतार के रूप में, भैरव का "हजार मुख वाले का विनाश" ब्रह्मांडीय नियम (धर्म) से विचलित होने वाली हर चीज को भंग करने के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता को दर्शाता है। वह परम शक्ति हैं जो नकारात्मकता के जटिल जालों को नष्ट करती हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि सृजन, संरक्षण और विघटन का चक्र अबाध रूप से जारी रहे।

867. सहस्रबाहवे

उन सहस्र भुजाओं वाले को नमन।

विस्तार : सहस्रबाहु (सहस्रबाहवे) नाम काल भैरव के लिए एक गहन विशेषण है, जो उनकी सर्वशक्तिमत्ता, सर्वव्यापकता और ब्रह्मांड में बहुआयामी क्रिया पर जोर देता है। यह "सहस्र" (हजार) और "बाहु" (भुजा) का एक यौगिक है।

सर्वशक्तिमत्ता और अनंत क्रिया "हजार भुजाओं" को शाब्दिक रूप से नहीं, बल्कि प्रतीकात्मक रूप से समझा जाना चाहिए। यहाँ "सहस्र" का अर्थ "असंख्य," "अनगिनत," या "अनंत" है। इसलिए, सहस्रबाहु का अर्थ है "वह जिसके पास अनगिनत भुजाएँ हैं।" प्रत्येक भुजा एक विशिष्ट शक्ति, एक अलग कार्य, या एक दिव्य गतिविधि का प्रतीक है। यह काल भैरव को एक ऐसी सत्ता के रूप में चित्रित करता है जिसके पास अस्तित्व के सभी आयामों में एक साथ कार्य करने, बनाने, संरक्षित करने और नष्ट करने की असीमित शक्ति है। वह एक ही रूप या संचालन के एक ही तरीके से सीमित नहीं हैं।

सर्वव्यापकता और सार्वभौमिक पहुँच हजारों भुजाओं के साथ, वे हर जगह पहुँच सकते हैं, हर चीज को छू सकते हैं और ब्रह्मांड के सभी पहलुओं को नियंत्रित कर सकते हैं। यह उनकी सर्वव्यापकता का प्रतीक है - ब्रह्मांड के हर परमाणु और हर कोने में उनकी उपस्थिति। यह बताता है कि कोई भी घटना, कोई भी प्राणी और कोई भी क्रिया उनकी जागरूकता और प्रभाव के बाहर नहीं होती है।

बहुआयामी दिव्य कार्य प्रत्येक भुजा को उनके विभिन्न गुणों या भूमिकाओं में से एक का प्रतिनिधित्व करते हुए देखा जा सकता है: एक निर्माता के रूप में, एक पालक के रूप में, एक संहारक के रूप में, एक छिपाने वाले (सत्य को अस्पष्ट करने वाले) के रूप में, और एक प्रकट करने वाले (कृपा

प्रदर्शित करने वाले) के रूप में। यह उनकी इन सभी लौकिक कार्यों को बिना किसी बाधा या सीमा के करने की क्षमता को दर्शाता है। वे एक साथ कई हथियार चला सकते हैं, वरदान दे सकते हैं, दुष्टों को दंडित कर सकते हैं और भक्तों की रक्षा कर सकते हैं।

ब्रह्मांडीय ऊर्जा का प्रतीक सहस्रबाहु पुरुष सूक्त की कल्पना को भी उद्घाटित करता है, जहाँ ब्रह्मांडीय सत्ता को हजारों सिर, हजारों आँखों और हजारों पैरों (सहस्रशीर्षा पुरुषः, सहस्राक्षः, सहस्रपात्) वाला बताया गया है। यह भैरव की पहचान को परम, सर्वव्यापी ब्रह्मांडीय स्व के साथ जोड़ता है, जिससे संपूर्ण ब्रह्मांड उत्पन्न होता है और जिसके भीतर वह निवास करता है। वे सार्वभौमिक ऊर्जा और चेतना की समग्रता का प्रतीक हैं।

868. सर्वेशाय

सभी के परम स्वामी और प्रभु को नमन।

विस्तार : सर्वेशाय नाम दो संस्कृत शब्दों से बना है: सर्व और ईश।

सर्व (Sarva): इस शब्द का अर्थ है "सभी," "पूर्ण," "समस्त," या "सार्वभौमिक।" इसमें बिना किसी अपवाद के सब कुछ शामिल है।

ईश (Īśa): यह शब्द "प्रभु," "स्वामी," "शासक," या "सार्वभौम" को दर्शाता है। यह सर्वोच्चता, अधिकार और नियंत्रण का तात्पर्य है।

समस्त के सर्वोच्च प्रभु (The Supreme Lord of All) जब इन्हें जोड़ा जाता है, तो सर्वेशाय का अर्थ होता है "सभी का प्रभु" या "हर चीज़ का सर्वोच्च स्वामी।" यह नाम कालभैरव की संपूर्ण ब्रह्मांड पर पूर्ण और सर्वव्यापी संप्रभुता पर जोर देता है, जिसमें सभी सजीव और निर्जीव प्राणी, अस्तित्व के सभी क्षेत्र और समय और स्थान के सभी पहलू शामिल हैं। वह केवल एक क्षेत्रीय देवता या कई में से एक नहीं हैं, बल्कि परम सत्ता हैं।

सार्वभौमिक प्रभुत्व (Universal Dominion) यह गुण कालभैरव को दिव्य शक्ति और सार्वभौमिक शासन के शिखर पर रखता है। यह बताता है कि अन्य सभी देवता, शक्तियाँ और नियम उनके परम आदेश के तहत कार्य करते हैं। वह ब्रह्मांडीय सीईओ हैं, जो सृष्टि, संरक्षण और संहार की जटिल मशीनरी का प्रबंधन करते हैं। उनकी इच्छा सर्वोच्च और निर्विवाद है।

जो व्याप्त और आदेश देता है (One Who Pervades and Commands) सर्वेशाय का अर्थ केवल प्रभुत्व ही नहीं, बल्कि अंतर्निहित व्यापकता भी है। सभी के प्रभु के रूप में, वह सृष्टि से अलग नहीं हैं, बल्कि इसके ताने-बाने में जटिल रूप से बुने हुए हैं, जबकि साथ ही साथ इसे पार भी करते हैं। वह अंतर्निहित चेतना हैं जो हर परमाणु और हर आकाशगंगा को नियंत्रित करती हैं। उन्हें सर्वेशाय के रूप में स्वीकार करना अस्तित्व के सभी मामलों में उनकी सर्वशक्तिमानता और सर्वज्ञता को पहचानने का कार्य है।

869. सारमाय

सभी सार और परम सत्य के मूर्त स्वरूप को नमन।

विस्तार : सारामय नाम संस्कृत शब्द सार (Sāra) और प्रत्यय -मय (-maya) से लिया गया है।

सार और मूल तत्व (Sāra) सार का अर्थ है "सार," "मूल तत्व," "गूदा," "पदार्थ," "शक्ति," "मूल्य," या "सबसे अच्छा भाग।" यह किसी चीज की मूल विशेषता या मौलिक गुणवत्ता, अपरिवर्तनीय सत्य या परम वास्तविकता को संदर्भित करता है। दार्शनिक संदर्भ में, यह वह है जो शाश्वत, अपरिवर्तनीय और सबसे वास्तविक है, क्षणभंगुर और सतही के विपरीत।

अवतार और व्याप्ति (-Maya) प्रत्यय -मय (maya) "से युक्त," "से भरा हुआ," "से बना हुआ," "से भरपूर," या "का अवतार" इंगित करता है। जब इसे सार के साथ जोड़ा जाता है, तो यह दर्शाता है कि कालभैरव केवल सार के धारक नहीं हैं, बल्कि सभी सार, सभी सत्य और सभी मौलिक वास्तविकता के साक्षात अवतार, जीवित रूप और पूर्ण अभिव्यक्ति हैं।

सर्वोच्च सत्य इसलिए, सारामय कालभैरव को अस्तित्व के परम और मूलभूत सत्य के रूप में इंगित करता है। वह परम वास्तविकता हैं जो सभी घटनाओं को रेखांकित करती है, ब्रह्मांड का आधार है, "जो वास्तव में है।" यह उन्हें ब्रह्म के साथ पहचानता है, जो ब्रह्मांड में सभी घटनाओं के अंतर्निहित सर्वोच्च अपरिवर्तनीय वास्तविकता है।

सभी का आंतरिक मूल यह नाम दर्शाता है कि कालभैरव हर चीज का आंतरिक, अमूल्य मूल हैं - animating principle (सजीव सिद्धांत), essential nature (आवश्यक प्रकृति), और supreme knowledge (परम ज्ञान)। इस नाम का चिंतन करने वाला भक्त यह पहचानता है कि सभी स्पष्ट विविधता और क्षणभंगुर रूप अंततः इस एक, अद्वितीय, सर्वोच्च सत् (सत्य) से अपना अस्तित्व और सार प्राप्त करते हैं।

870. सर्वलोकधृते

सभी लोकों के परम समर्थक और धारणकर्ता को नमन।

विस्तार : सर्वलोकधृते नाम संस्कृत के शब्दों सर्व, लोक और धृत से व्युत्पन्न एक गहन उपाधि है।

सर्व (Sarva): अर्थ "सभी," "प्रत्येक," या "पूर्ण।" यह सार्वभौमिकता और समग्रता को दर्शाता है। लोक (Loka): "लोक," "क्षेत्र," या "अस्तित्व के तल" को संदर्भित करता है। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, कई लोक हैं - सांसारिक लोकों से लेकर विभिन्न स्वर्गीय और पाताल लोकों तक। धृत (Dhṛita): क्रिया मूल धृ (Dhṛi) का भूतकालिक कृदंत है, जिसका अर्थ है "धारण करना," "समर्थन करना," "वहन करना," या "बनाए रखना।"

सभी लोकों के धारक इसलिए सर्वलोकधृते का अर्थ है "वह जो सभी लोकों को धारण करता है" या "सभी लोकों का धारक।" यह नाम कालभैरव की उस भूमिका पर जोर देता है जिसके तहत वे वह मूलभूत आधार हैं जिस पर समस्त सृष्टि टिकी हुई है। वे इन लोकों के केवल निवासी या शासक नहीं हैं, बल्कि उनके मूल आधार और समर्थक हैं। उनके ब्रह्मांडीय समर्थन के बिना, सभी लोक अस्तित्वहीन हो जाएंगे।

सार्वभौमिक ब्रह्मांडीय स्तंभ यह एक व्यापक और सर्वशक्तिमान उपस्थिति का तात्पर्य है जो चुपचाप लेकिन शक्तिशाली रूप से पूरे ब्रह्मांड के जटिल संतुलन और व्यवस्था को बनाए रखती है। सबसे बड़ी आकाशगंगाओं से लेकर सबसे छोटे उप-परमाणु कणों तक, उच्चतम स्वर्गीय निवासों से लेकर निम्नतम पाताल क्षेत्रों तक, और सभी प्राणियों के हृदयों के भीतर, भैरव सर्वलोकधृते के रूप में अंतर्निहित आधार हैं।

रूपकात्मक और आध्यात्मिक समर्थन लोकों के भौतिक पोषण से परे, यह नाम उनके द्वारा प्रदान किए गए आध्यात्मिक और कर्मिक समर्थन का भी संकेत देता है। वे धर्म (धार्मिकता) और कर्म के नियमों को बनाए रखते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था (ऋत) बनी रहे। आध्यात्मिक अर्थ में, वे विभिन्न लोकों के माध्यम से सभी आत्माओं की यात्रा का समर्थन करते हैं, उन्हें उनकी कर्मिक प्रक्षेपवक्रों के माध्यम से मार्गदर्शन करते हैं। वे सभी अभिव्यक्तियों, स्थूल और सूक्ष्म दोनों के लिए अस्तित्व का अंतिम आधार हैं।

871. दूत्यांशाय

दिव्य दूत की शक्ति के अंश स्वरूप को नमन।

विस्तार : दूत्यांशाय नाम एक गहरा और आकर्षक वर्णन है, जो दूत और अंश का एक यौगिक है।

• दूत: यह संस्कृत शब्द मुख्य रूप से "संदेशवाहक," "दूत," "प्रतिनिधि," या "संदेशवाहक" का अर्थ रखता है। विभिन्न संदर्भों में, इसका अर्थ एक प्रतिनिधि, एक मध्यस्थ, या यहाँ तक कि एक जासूस भी हो सकता है। एक दिव्य संदर्भ में, एक दूत संदेश पहुंचाता है, आदेशों का पालन करता है, या एक उच्च सत्ता का प्रतिनिधित्व करता है।

• अंश: इसका अर्थ "भाग," "हिस्सा," या "अंश" है। यह एक घटक तत्व या एक दिव्य उत्सर्जन को दर्शाता है जो विशिष्ट शक्तियों या गुणों को धारण करता है।

दिव्य दूत की शक्ति का एक अंश यह नाम बताता है कि कालभैरव दिव्य दूत से जुड़े गुणों या शक्तियों का एक 'अंश' धारण करते हैं। इसकी कई तरह से व्याख्या की जा सकती है:

1. दिव्य इच्छा का निष्पादक: जिस तरह एक संदेशवाहक निर्देशों का पालन करता है, उसी तरह कालभैरव, शिव के एक उग्र स्वरूप के रूप में, दिव्य ब्रह्मांडीय नियम और व्यवस्था के सर्वोच्च निष्पादक हैं। वह अंतिम प्रवर्तक, शोधक और धर्म के रक्षक के रूप में शिव की इच्छा का पालन करते हैं। उनके कार्य, यद्यपि अक्सर उग्र होते हैं, हमेशा एक उच्च, दिव्य उद्देश्य की सेवा में होते हैं, ठीक एक शक्तिशाली और अटूट संदेशवाहक की तरह।

2. अज्ञान का नाश करने वाला: आध्यात्मिक अर्थ में, एक "संदेशवाहक" महत्वपूर्ण जानकारी या स्पष्टता भी ला सकता है। कालभैरव, अपने भयानक रूप के माध्यम से, भ्रम और अज्ञान को नष्ट कर सकते हैं, अनित्यता और वास्तविकता की सच्ची प्रकृति का संदेश दे सकते हैं। वह सत्य को प्रकट करके साधकों को अज्ञान के बंधन से "मुक्त" करते हैं, भले ही यह रहस्योद्घाटन शुरू में भयावह या चुनौतीपूर्ण हो।

3. मध्यवर्ती शक्ति: "अंश" शब्द यह दर्शाता है कि जबकि वह इन संदेशवाहक-जैसे गुणों - तेजी से यात्रा करने, कार्यों को निष्पादित करने और दिव्य इरादे को संप्रेषित करने की क्षमता - को धारण करते हैं, वह सर्वोच्च भगवान शिव के एक उत्सर्जन या पहलू के रूप में ऐसा करते हैं, जिनकी पूर्ण शक्ति किसी भी विशिष्ट भूमिका को समाहित करती है और उससे परे है। इसलिए, कालभैरव एक शक्तिशाली अभिव्यक्ति हैं जो विशेष रूप से हस्तक्षेप करने, कार्य करने और आवश्यक परिवर्तन या दंड लाने की शक्ति से संपन्न हैं, जो दिव्य योजना में एक शक्तिशाली दूत के रूप में कार्य करते हैं।

4. दिशा और समय के स्वामी: काल (समय) के स्वामी और दिशाओं (दिक्पाल) के संरक्षक के रूप में, उनकी भूमिका एक संदेशवाहक के समान है जो सभी दिशाओं में यात्रा करता है और समय भर में हमेशा उपस्थित रहता है। वह प्राणियों को समय और स्थान के चक्र के माध्यम से "पार" करते हैं, उन्हें उनके अंतिम गंतव्य की ओर मार्गदर्शन (या बलपूर्वक हटाते) करते हैं।

संक्षेप में, दूत्यांशाय कालभैरव की भूमिका को दिव्य के एक शक्तिशाली, सक्रिय और निर्णायक एजेंट के रूप में उजागर करता है, जो पूर्ण अधिकार और गति के साथ लोकों को पार करने और सार्वभौमिक सिद्धांतों को लागू करने की क्षमता से ओत-प्रोत है।

872. सुरसेव्यमंशाय

सभी दिव्य देवताओं द्वारा पूजे जाने वाले अंश स्वरूप को नमन।

विस्तार : सुरसेव्यांशाय नाम एक गहन यौगिक है जो सुर (दिव्य प्राणी, देवता), सेव्या (पूजनीय, सेवा करने योग्य) और अंश (एक भाग, एक हिस्सा, एक खंड, एक पहलू) में विभाजित होता है। यह नाम इस बात पर प्रकाश डालता है कि सर्वोच्च देवता भी कालभैरव के एक विशेष पहलू के प्रति सर्वोच्च

श्रद्धा रखते हैं।

दिव्य उपासक "सुर" का तात्पर्य स्वर्गीय प्राणियों, देवों या देवताओं से है, जो विभिन्न ब्रह्मांडीय सिद्धांतों का प्रतीक हैं और ब्रह्मांड के विभिन्न पहलुओं को नियंत्रित करते हैं। ये अपने आप में शक्तिशाली संस्थाएँ हैं, जो आध्यात्मिक पदानुक्रम में उच्च स्थान रखती हैं। किसी भी सत्ता की उनकी पूजा उस सत्ता के सर्वोपरि महत्व और श्रेष्ठ स्थिति को दर्शाती है।

पूजित पहलू (सेव्यांश) इस नाम का महत्वपूर्ण भाग "सेव्यांश" है, जिसका अर्थ है "पूजित भाग" या "पूजनीय पहलू"। इसका तात्पर्य यह है कि कालभैरव की बहुआयामी अभिव्यक्तियों के बीच भी, एक विशिष्ट, अत्यंत शक्तिशाली और सार्वभौमिक रूप से पूजित पहलू है जो अन्य सभी दिव्य प्राणियों की आराधना को आकर्षित करता है। यह केवल कोई पहलू नहीं है, बल्कि वह है जो स्वयं देवताओं द्वारा पूजा के योग्य है।

परम अधिकार और प्रधानता यह नाम देवताओं पर भी कालभैरव के परम अधिकार और प्रधानता पर जोर देता है। यह बताता है कि देवता भी कालभैरव के एक निश्चित पहलू को पहचानते हैं और उसका सम्मान करते हैं, शायद काल (समय) के रूप में उनकी अंतिम भूमिका, सर्वोच्च दंड देने वाले, या सभी सृष्टि के अंतिम विलायक के रूप में। उनकी पूजा उनकी निर्विवाद शक्ति और ब्रह्मांडीय महत्व की उनकी स्वीकृति को इंगित करती है। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि कोई भी प्राणी, चाहे वह कितना भी ऊंचा क्यों न हो, कालभैरव के दायरे और शक्ति से परे नहीं है।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था का प्रतीक देवताओं द्वारा इस पहलू का सम्मान इस बात पर जोर देता है कि कालभैरव ब्रह्मांडीय अस्तित्व के एक मौलिक, अपरिहार्य सत्य का प्रतिनिधित्व करते हैं, एक ऐसा अधिकार जिसे वे भी, ब्रह्मांडीय व्यवस्था के संरक्षक के रूप में, स्वीकार और सम्मान करते हैं। यह शिव के नगरों (क्षेत्र-पाल) के संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका को संदर्भित कर सकता है, जहाँ देवताओं को भी उनके नियमों का पालन करना होता है।

873. सर्वदेवोत्तमत्तमाय

सभी देवताओं में सर्वश्रेष्ठ से भी सर्वश्रेष्ठ को नमन।

विस्तार : सर्वदेवोत्तमत्तमाय नाम एक अत्यंत उत्कृष्ट और गहन विशेषण है, जो एक संयुक्त संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है "सभी देवताओं में सर्वश्रेष्ठ में सर्वश्रेष्ठ"। यह ब्रह्मांडीय पदानुक्रम में कालभैरव की सर्वोच्च स्थिति को दर्शाता है।

शब्दावली को तोड़ना: • सर्व (Sarva): सभी, संपूर्ण, पूर्ण। • देव (Deva): ईश्वर, देवता, दिव्य प्राणी। • उत्तम (Uttama): श्रेष्ठ, उत्कृष्ट, बेहतर, उच्चतम। • उत्तमोत्तम (Uttamottama): सर्वश्रेष्ठ में सर्वश्रेष्ठ, उत्कृष्ट में सबसे उत्कृष्ट, या अत्यंत श्रेष्ठ।

सभी देवताओं में सर्वोच्च "सर्वदेव" शब्द हिंदू पंथ के सभी दिव्य प्राणियों की समग्रता को संदर्भित करता है, जिसमें त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, शिव अन्य रूपों में), अर्धदेव, खगोलीय प्राणी और अन्य सभी देवता शामिल हैं।

सर्वोच्चता की दो परतें (उत्तम + उत्तम) "उत्तम" (उत्तमोत्तम) की पुनरावृत्ति केवल अनावश्यक नहीं है; यह अत्यधिक या पूर्ण श्रेष्ठता व्यक्त करने के लिए एक व्याकरणिक और दार्शनिक युक्ति है। यह दर्शाता है कि कालभैरव केवल "देवताओं में सर्वश्रेष्ठ" (देवोत्तम) नहीं हैं, बल्कि उन देवताओं में भी जो "सर्वश्रेष्ठ" या "सर्वोच्च" (जैसे त्रिदेव या अन्य शक्तिशाली देवता) माने जाते हैं, कालभैरव असाधारण रूप से सर्वश्रेष्ठ हैं। यह उच्चतम दिव्य सिद्धांतों के बीच भी एक अतिक्रमण का तात्पर्य है।

अतिक्रमण और परम वास्तविकता यह नाम कालभैरव को सभी अस्तित्व के शिखर पर रखता है, यह दर्शाता है कि वह परम स्रोत, अंतिम अधिकार और दिव्य का सबसे शक्तिशाली प्रकटीकरण है। यह शैव दार्शनिक दृष्टिकोण के अनुरूप है कि शिव, भैरव जैसे अपने विभिन्न उग्र रूपों में, परब्रह्म, परम वास्तविकता हैं, जिनसे अन्य सभी देवता और ब्रह्मांडीय शक्तियां उत्पन्न होती हैं और अंततः विलीन हो जाती हैं। यह उनके परम सत्य और अन्य सभी शक्तियों से परे की शक्ति के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देता है, वह जिसके सामने उच्चतम देवता भी नतमस्तक होते हैं।

874. शिवाध्यानरताय

शिव के ध्यान में निरंतर और गहराई से लीन रहने वाले को नमन।

विस्तार : शिवाध्यानरत नाम शिवा (शिव), ध्यान (चिंतन, मनन) और रत (संलग्न, तल्लीन, आनंदित) का एक गहरा यौगिक शब्द है।

शिव में गहन तल्लीनता यह नाम परम भक्ति और मिलन की स्थिति का वर्णन करता है, जिसका अर्थ है "जो शिव के ध्यान में निरंतर और गहराई से लीन रहता है।" यह एक ऐसे प्राणी की बात करता है जिसका अस्तित्व सर्वोच्च भगवान शिव का एक निरंतर, अटूट चिंतन है। यह ध्यान का क्षणिक कार्य नहीं है, बल्कि अस्तित्व की एक अंतर्निहित, शाश्वत अवस्था है।

शिव के प्रकटीकरण के रूप में भैरव का स्वरूप कालभैरव के संदर्भ में, यह नाम उनकी पहचान के एक सूक्ष्म लेकिन महत्वपूर्ण पहलू को प्रकट करता है। जबकि भैरव शिव का एक उग्र प्रकटीकरण हैं, यह नाम हमें याद दिलाता है कि वह अंततः स्वयं शिव हैं। उनकी उग्रता और ब्रह्मांडीय प्रभुत्व शिव के शांत, पूरी तरह से पारलौकिक स्वभाव से अलग नहीं हैं। बल्कि, वे शिव की इच्छा और शक्ति का विस्तार हैं। भैरव का शिव पर शाश्वत ध्यान उनके अपने अंतर्निहित शिवत्व (शिवत्व) का प्रतिबिंब है।

आदर्श भक्त यह नाम आदर्श भक्त के लिए एक पुरातन रूप (आर्केटाइप) के रूप में भी कार्य करता है। यह आध्यात्मिक अभ्यास के अंतिम लक्ष्य को दर्शाता है: दिव्य में इतना पूरी तरह से डूब जाना कि ध्यानी और ध्यान की वस्तु के बीच कोई अंतर न रहे। भक्त के लिए, शिवाध्यानरत कालभैरव का ध्यान करना पूर्ण भक्ति और सर्वोच्च वास्तविकता में पूर्ण तल्लीनता के सार पर विचार करना है।

मिलन और अद्वैत दार्शनिक रूप से, यह वास्तविकता के अद्वैत (अद्वैत) स्वरूप की ओर इशारा करता है, जहाँ ध्यानी (भैरव) और ध्यान की वस्तु (शिव) मौलिक रूप से एक हैं। भैरव, यद्यपि एक विशिष्ट रूप हैं, अपनी चेतना को मूल, परम शिव के साथ लगातार विलीन करते हैं, जिससे उनके अपने दिव्य स्वरूप और सभी अस्तित्व की एकता को सुदृढ़ करते हैं। उनका ध्यान एक ब्रह्मांडीय नृत्य है, जो उनकी शक्ति और अस्तित्व के स्रोत की लगातार पुष्टि करता है।

875. श्रीमते

दैवीय महिमा, धन और शुभता (श्री) से युक्त व्यक्ति को नमन।

विस्तार : श्रीमते नाम 'श्री' (Śrī) और प्रत्यय '-मात' (या '-मत') से बना है, जो स्वामित्व को दर्शाता है।

श्री (Śrī) की अवधारणा श्री एक समृद्ध और बहुआयामी संस्कृत शब्द है। यह दर्शाता है: 1. दिव्य महिमा, तेज और वैभव। 2. शुभता, समृद्धि और सौभाग्य। 3. सौंदर्य, कृपा और गरिमा। 4. धन, शक्ति और प्रचुरता। 5. सभी दिव्य गुण और सद्गुण।

सभी दिव्य गुणों से युक्त इस प्रकार, श्रीमते उस एक को दर्शाता है जो दिव्य महिमा, वैभव, धन और शुभता के सभी रूपों से स्वाभाविक रूप से संपन्न है। यह कालभैरव की पूर्ण संप्रभुता और सभी संसाधनों - भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पर उनके पूर्ण नियंत्रण पर जोर देता है। इसका अर्थ है

कि वे ब्रह्मांड में सभी सुंदर, गौरवशाली, समृद्ध और शुभ चीजों के साक्षात् स्वरूप और स्रोत हैं।

प्रचुरता का स्रोत श्रीमते के रूप में, कालभैरव केवल समय और विनाश के नियंत्रक नहीं हैं, बल्कि ब्रह्मांड में सभी आशीर्वादों और प्रचुरता के अंतिम स्रोत भी हैं। उनका विनाशकारी पहलू (काल) शुद्ध करता है, जिससे नई सृष्टि (श्री) के लिए मार्ग प्रशस्त होता है। वे अपने भक्तों को समृद्धि प्रदान करते हैं, उन बाधाओं को दूर करते हैं जो उनके भौतिक और आध्यात्मिक कल्याण में बाधा डालती हैं।

ब्रह्मांडीय महिमा यह नाम उनके राजसी और शाही पहलू को उजागर करता है, जहाँ वे सर्वोच्च दिव्यता के सभी गुणों से सुशोभित हैं, परम शक्ति और परोपकारी कृपा का विकिरण करते हैं। यह एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है कि अपने भयंकर रूप में भी, वे सभी वांछनीय और धन्य चीजों के अंतिम स्रोत हैं।

876. शिखिने

मोर की शिखा के समान शिखा धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : शिखिने नाम संस्कृत शब्द शिखी या शिखा से लिया गया है।

चोटी (शिखा) पारंपरिक हिंदू प्रथा में, शिखा सिर के मुकुट पर बालों का एक गुच्छा होता है, जिसे अक्सर आध्यात्मिक और अनुष्ठानिक कारणों से मुंडन के बाद बिना काटे छोड़ दिया जाता है। यह ज्ञान, आध्यात्मिक उपलब्धि और दिव्य से संबंध का प्रतीक है। योगियों के लिए, शिखा सहस्रार चक्र (Sahasrara) पर सूक्ष्म ऊर्जा केंद्र का प्रतिनिधित्व कर सकती है, जहाँ दिव्य ऊर्जा प्रवेश करती है और कुंडलिनी ऊपर उठती है। शिव को शिखिने के रूप में संबोधित करके, यह उनकी सर्वोच्च आध्यात्मिक प्राप्ति और सभी योगिक शक्तियों और ज्ञान के उनके अवतार को दर्शाता है।

कलगी शिखी एक कलगी को भी संदर्भित करता है, जैसे कि एक पक्षी की, विशेष रूप से मोर की। मोर हिंदू धर्म में एक महत्वपूर्ण पक्षी है, जो अक्सर सुंदरता, अमरता और विभिन्न देवताओं (जैसे, कार्तिकेय, शिव के पुत्र, मोर की सवारी करते हैं) से जुड़ा होता है। मोर की शानदार और जीवंत कलगी शिव के उज्ज्वल और गौरवशाली पहलू का प्रतीक हो सकती है, जो अपनी तपस्वी प्रकृति के बावजूद, ब्रह्मांड में सभी सुंदरता और सौंदर्य संबंधी वैभव का स्रोत भी हैं। यह उनकी चकाचौंध, मनमोहक और राजसी उपस्थिति को दर्शाता है।

अग्नि देव (अग्नि) शिखी का एक और गहरा अर्थ "अग्नि" है, विशेष रूप से अग्नि, वैदिक अग्नि देव को संदर्भित करता है। अग्नि को अक्सर अपनी "कलगी" या "बालों" के रूप में लपटों के साथ चित्रित किया जाता है। चूंकि शिव विभिन्न रूपों में अग्नि से गहराई से जुड़े हुए हैं - तपस्या (तपस) की अग्नि से जो अज्ञानता का उपभोग करती है, चिता तक, प्रलय की ब्रह्मांडीय अग्नि तक - शिखिने कहलाना उन्हें अग्नि की आदिम ऊर्जा से जोड़ता है। यह उनकी शक्ति को शुद्ध करने वाले, प्रकाशित करने वाले और परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में सुझाता है जो सृजन और विनाश दोनों को जन्म देती है। यह कालभैरव के रूप में उनके प्रकटीकरण के साथ संरेखित होता है, जो समय और विनाश की अंतिम परिवर्तनकारी शक्ति को समाहित करने वाला भयंकर पहलू है, जो एक ब्रह्मांडीय नरक के समान है।

877. श्रीचण्डिकाधिपाय

महिमामयी देवी चण्डिका के सर्वोच्च स्वामी को नमन।

विस्तार : श्रीचण्डिकाधिपाय नाम श्री, चण्डिका और अधिप का एक यौगिक (कंपाउंड) है।

श्री (Shri): यह सम्मानसूचक उपसर्ग नाम को महिमा, शुभता, समृद्धि और श्रद्धा से भर देता है। यह चंडिका से जुड़ी दिव्य भव्यता को दर्शाता है।

चण्डिका (Chaṇḍikā): यह दिव्य माँ (देवी) का एक भयंकर और शक्तिशाली स्वरूप है, विशेष रूप से देवी माहात्म्य में इसका गुणगान किया गया है। चंडिका परम योद्धा देवी हैं जो अज्ञान, अहंकार और सभी राक्षसी शक्तियों (जैसे चंड और मुंड) का नाश करती हैं जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था और आध्यात्मिक साधकों को खतरा पहुँचाती हैं। वह दिव्य स्त्री शक्ति के पूर्ण स्पेक्ट्रम (भयंकर क्रोध से लेकर परम परोपकार तक) का प्रतीक हैं।

अधिप (Adhipa): इस शब्द का अर्थ है "सर्वोच्च स्वामी", "मालिक", "शासक" या "अधिपति"।

चंडिका के सर्वोच्च स्वामी (The Supreme Lord of Chandika) "चंडिकाधिप" के रूप में, भगवान भैरव को महिमामयी देवी चंडिका के सर्वोच्च पति और स्वामी के रूप में चित्रित किया गया है। यह एक गहन धार्मिक संबंध को दर्शाता है जहाँ शिव (भैरव के रूप में) दिव्य माँ की तीव्र ऊर्जा को पूरक और नियंत्रित करते हैं।

शिव और शक्ति का मिलन (Union of Shiva and Shakti) यह नाम शिव और शक्ति (ब्रह्मांड के मर्दाना और स्त्री सिद्धांतों) के अविभाज्य मिलन को उजागर करता है। भैरव, शिव के भयंकर स्वरूप के रूप में, चंडिका, पार्वती या दिव्य माँ के भयंकर स्वरूप के लिए एकदम सही समकक्ष हैं। उनका जुड़ाव यह दर्शाता है कि ब्रह्मांड की सबसे दुर्जेय और विनाशकारी ऊर्जाएँ भी अंततः सर्वोच्च चेतना के मार्गदर्शन और नियंत्रण में हैं जिसका प्रतिनिधित्व भैरव करते हैं।

परोपकार और संरक्षण (Benevolence and Protection) जबकि चंडिका और भैरव दोनों ही भयावह लग सकते हैं, उनका मिलन, जैसा कि इस नाम से निहित है, अपने भक्तों को परम सुरक्षा और आध्यात्मिक मुक्ति का आश्वासन देता है। भैरव चंडिका के अधिप के रूप में यह सुनिश्चित करते हैं कि उनकी भयंकर शक्ति का उपयोग परम भलाई के लिए किया जाए, सच्चे साधकों के लिए बाधाओं को नष्ट किया जाए। वे दुर्जेय शक्तियों (दिव्य ऊर्जाओं) पर भी परम अधिकार रखते हैं।

878. श्मशाननिलायाय

श्मशान घाट को अपने पवित्र और चुने हुए निवास स्थान के रूप में रखने वाले को नमन।

विस्तार : श्मशानानिलय नाम श्मशान और अनिलय का एक यौगिक है, जो शैव और विशेष रूप से भैरव परंपराओं में गहरा प्रतीकात्मक है।

श्मशान (The Cremation Ground - Shmashaana): श्मशान, या दाह संस्कार स्थल, हिंदू धर्म में, विशेष रूप से शिव और उनके उग्र स्वरूपों जैसे भैरव के लिए, एक गहरा और अक्सर गलत समझा जाने वाला महत्व रखता है। यह केवल मृतकों के निपटान का स्थान नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक शक्ति और परिवर्तन का एक शक्तिशाली केंद्र है। • अनासक्ति का स्थान: यह वह स्थान है जहाँ भौतिक शरीर की क्षणभंगुरता और मृत्यु की अंतिम वास्तविकता का स्पष्ट रूप से सामना किया जाता है। एक आध्यात्मिक साधक के लिए, यह वैराग्य (सांसारिक इच्छाओं से अनासक्ति) और भौतिक अस्तित्व की मायावी प्रकृति की एक शक्तिशाली याद दिलाता है। • शिव का क्षेत्र: शिव, भ्रम के अंतिम संहारक और मुक्ति के प्रदाता के रूप में, श्मशान से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। यह उनका पसंदीदा निवास स्थान है क्योंकि यह एक ऐसा स्थान है जहाँ सभी भेद—जाति, धन, सौंदर्य, स्थिति—राख में घुल जाते हैं। मृत्यु में, सभी प्राणी समान हो जाते हैं, जो शिव के अद्वैत स्वरूप को दर्शाता है। • तांत्रिक शक्ति का स्रोत: तांत्रिक साधकों के लिए, श्मशान एक अत्यधिक ऊर्जावान स्थान है, जो कुछ आध्यात्मिक अभ्यासों (साधना) के लिए अनुकूल है, जिसका उद्देश्य भय, अहंकार और आसक्ति को पार करना है। यह वह स्थान है जहाँ व्यक्ति अपने गहरे भय का सामना करता है और, उन पर विजय प्राप्त करके, गहन आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और शक्ति प्राप्त करता है।

चुना हुआ निवास (Chosen Abode - Anilaya): अनिलय शब्द का अर्थ है "निवास", "आवास" या "रहने का स्थान"। जब इसे श्मशान के साथ जोड़ा जाता है, तो यह इंगित करता है कि श्मशान केवल एक अस्थायी पड़ाव नहीं है, बल्कि एक चुना हुआ और स्थायी निवास है। • सर्वोच्च अनासक्ति: श्मशान को अपना निवास स्थान चुनकर, भैरव सर्वोच्च अनासक्ति और अतिक्रमण का प्रतीक हैं। वे पारंपरिक पवित्रता और अपवित्रता, आराम और बेचैनी, जीवन और मृत्यु के क्षेत्रों से परे हैं। वे इस सत्य को मूर्त रूप देते हैं कि दिव्य सबसे अपरंपरागत और भयभीत स्थानों में भी मौजूद है। • मृत्यु के विजेता: श्मशान में निवास करना मृत्यु पर उनकी महारत (मृत्युंजय) को भी दर्शाता है। वे ही हैं जो विनाश की अध्यक्षता करते हैं, सभी रूपों को उनकी मौलिक अवस्था में वापस घोलते हैं, और फिर भी शाश्वत रूप से सचेत और अछूते रहते हैं। • वास्तविकता के शिक्षक: यह निवास स्थान मानवता को सिखाता है कि जीवन क्षणभंगुर है और सच्चा ज्ञान इस वास्तविकता को समझने और स्वीकार करने में निहित है। भैरव की वहाँ उपस्थिति भक्तों को बिना किसी डर के अस्तित्व की अंतिम सच्चाई का सामना करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

इस प्रकार, श्मशानानिलयाय भैरव को परम संन्यासी, मृत्यु के स्वामी और गहन आध्यात्मिक ज्ञान के शिक्षक के रूप में उद्घोषित करता है, जिनकी उपस्थिति सबसे अपरंपरागत और भयानक क्षेत्रों में भी व्याप्त है, जो उन्हें वहाँ खोजने वालों को मुक्ति प्रदान करते हैं।

879. सेतवे

संसार सागर को पार कराने वाले पवित्र सेतु को नमन।

विस्तार : सेतवे नाम, संस्कृत शब्द सेतु (सेतु) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "पुल," "बांध," या "मार्ग।" कालभैरव के संदर्भ में, इसका एक गहरा आध्यात्मिक और लाक्षणिक अर्थ है।

संसार के ऊपर का पुल संसार (संसार) सांसारिक अस्तित्व का चक्रीय सागर है, जो जन्म, मृत्यु, पीड़ा और क्षणिक सुखों की अंतहीन खोज की विशेषता है। यह अज्ञान (अविद्या) और आसक्ति (मोह) का क्षेत्र है। कालभैरव, सेतवे के रूप में, दिव्य साधन, आध्यात्मिक मार्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो भक्तों को इस खतरनाक सागर को पार करने और मुक्ति (मोक्ष) के तटों तक पहुंचने की अनुमति देता है। वह एक ठोस, अटूट संरचना है जो सीमित व्यक्तिगत आत्मा (जीव) को विशाल, शाश्वत ब्रह्म से जोड़ती है।

बाधाओं को दूर करना एक पुल न केवल दो बिंदुओं को जोड़ता है बल्कि नदियों या घाटियों जैसी बाधाओं को भी दरकिनार करता है। इसी तरह, सेतवे के रूप में, कालभैरव भक्तों को कर्म, अहंकार, भ्रम और भौतिक इच्छाओं की बाधाओं को दूर करने में मदद करते हैं जो आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डालते हैं। वह मार्ग को साफ करते हैं, सांसारिक जीवन के बीच भी आत्म-साक्षात्कार की यात्रा को संभव बनाते हैं।

मुक्ति का मार्ग यह नाम एक उद्धारकर्ता और एक मार्गदर्शक के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है। वह केवल एक विनाशक नहीं हैं बल्कि परम स्वतंत्रता के मार्ग के निर्माता भी हैं। कालभैरव के प्रति समर्पण करके, व्यक्ति सांसारिक अस्तित्व के अशांत जल से एक स्थिर और सुरक्षित मार्ग पाता है, जिससे आध्यात्मिक ज्ञान और पीड़ा का अंत होता है। वह वह साधन हैं जिसके द्वारा कोई क्षणिक से शाश्वत तक, भ्रम से वास्तविकता तक पार कर सकता है।

880. सर्वदेवाय

सभी देवताओं के देव को नमन।

विस्तार : सर्वदेवाय नाम 'सर्व' (सभी) और 'देव' (देवता, दिव्य सत्ता) का एक यौगिक है। यह भगवान कालभैरव को सर्वोच्च देवता, सभी देवताओं के देव के रूप में घोषित करता है, जो हिंदू देवमंडल में उनके परम अधिकार और आदिम प्रकृति को रेखांकित करता है।

सर्वोच्च अधिपति (Supreme Overlord) यह विशेषण कालभैरव को दिव्य पदानुक्रम के शिखर पर रखता है। यह इंगित करता है कि अन्य सभी देवता—चाहे वे ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र, या वेदों या पुराणों के कोई अन्य देवता हों—अपनी शक्ति, अस्तित्व और कार्य उनसे प्राप्त करते हैं। वह केवल अनेक देवताओं में से एक नहीं हैं, बल्कि सभी दिव्य अभिव्यक्तियों का स्रोत और आधार हैं।

सभी देवत्वों का सार (Essence of All Divinities) सर्वदेवाय का अर्थ है कि विभिन्न देवताओं को दिए गए विभिन्न रूप और कार्य केवल कालभैरव के अद्वितीय, सर्व-समावेशी दिव्य अस्तित्व के पहलू या उत्सर्जन हैं। वह सभी देवताओं की सामूहिक चेतना और शक्ति का प्रतीक हैं, जो पूजा के विविध रूपों के अंतर्निहित एकीकृत दिव्य सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करते हैं।

दिव्य अधिकार का स्रोत (Source of Divine Authority) सभी देवताओं के देव के रूप में, वह अन्य देवताओं को अधिकार, संरक्षण और विशिष्ट भूमिकाएँ प्रदान करते हैं। उनके आदेश सर्वोच्च हैं, और उनका ब्रह्मांडीय नियम सभी स्वर्गीय प्राणियों के कार्यों और कर्तव्यों को नियंत्रित करता है। यह अवधारणा शैव धर्म में विशेष रूप से प्रबल है, जहाँ शिव (और विस्तार से कालभैरव) को अक्सर महादेव, महान देव, के रूप में चित्रित किया जाता है, जिनकी पूजा अन्य देवता भी करते हैं।

अतींद्रिय और अंतर्यामी (Transcendent and Immanent) यह नाम कालभैरव की दोहरी प्रकृति को भी इंगित करता है: अतींद्रिय, क्योंकि वह सभी व्यक्तिगत दिव्य रूपों से परे हैं, और अंतर्यामी, क्योंकि वह प्रत्येक देवता के भीतर का सार और शक्ति हैं। सर्वदेव की पूजा करना उस परम, एकीकृत वास्तविकता की पूजा करना है जो विविध देवमंडल के रूप में प्रकट होती है।

881. महेश्वराय

जो महान और सर्वोच्च भगवान हैं, उनको नमन।

विस्तार : महेश्वर (Maheshvara) नाम दो संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: महा (महान, सर्वोच्च) और ईश्वर (प्रभु, स्वामी, शासक)।

परमेश्वर (The Supreme Lord) यह नाम स्पष्ट रूप से कालभैरव को, शिव के एक रूप के रूप में, परम और सर्वोपरि देवता - "महान प्रभु" या "सर्वोच्च शासक" के रूप में स्थापित करता है। यह अन्य सभी देवताओं और अधिकारियों से परे एक सत्ता को दर्शाता है। शैव धर्म में, महेश्वर शिव के पाँच प्राथमिक पहलुओं (या मुखों, पंच-ब्रह्मा) में से एक है, जो ब्रह्मांड के स्वामी (विश्वेश्वर) और अव्यक्त ब्रह्म के सर्वोच्च प्रकट रूप के रूप में उनकी भूमिका का प्रतिनिधित्व करता है।

ब्रह्मांडीय अभिव्यक्ति के स्वामी (Lord of Cosmic Manifestation) महेश्वर विशेष रूप से शिव के उस पहलू को संदर्भित करता है जो सृष्टि (srishti) से लेकर पालन (sthiti) और संहार (samhara) तक संपूर्ण ब्रह्मांडीय लीला (lila) के नियंत्रक और सूत्रधार हैं। वह ब्रह्मांड के भीतर सभी शक्तियों, ऊर्जाओं और प्राणियों के स्वामी हैं। यह नाम अस्तित्व के सभी पहलुओं पर उनकी पूर्ण संप्रभुता को उजागर करता है।

परोपकारी शासक (Benevolent Ruler) जबकि ईश्वर का अर्थ केवल "प्रभु" है, महा जोड़ने से उनके प्रभुत्व की सीमा और उनकी अंतर्निहित महानता पर जोर दिया जाता है। यह महानता न केवल उनकी शक्ति तक फैली हुई है, बल्कि उनकी असीम करुणा, ज्ञान और परोपकारिता तक भी

है। वह महान प्रभु हैं जो अपनी अपार शक्ति के बावजूद सभी प्राणियों के कल्याण के लिए कार्य करते हैं।

दार्शनिक महत्व (Philosophical Significance) दार्शनिक रूप से, महेश्वर उस निरपेक्ष, अनकंडीशन्ड (unconditioned) वास्तविकता को दर्शाता है जो सभी अस्तित्व का स्रोत और अंतिम लक्ष्य है। यह उन्हें नश्वर शासकों या छोटे देवताओं से अलग करता है, जो आध्यात्मिक और भौतिक दोनों लोकों पर शासन करने वाले सर्वव्यापी, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान सत्ता के रूप में उनकी स्थिति को स्थापित करता है।

882. सुविष्टपिने

सुंदर, पवित्र शाखा या सुस्थापित शिखर वाले को नमन।

विस्तार : सुविष्टपिने नाम संस्कृत से व्युत्पन्न एक आकर्षक और बहुस्तरीय शब्द है, जो "सु" और "विष्टपिन्" से बना है।

व्युत्पत्तिगत विश्लेषण:

सु: इस उपसर्ग का अर्थ है "अच्छा," "सुंदर," "पवित्र," "उत्कृष्ट," या "भली-भाँति।" यह पूर्णता, शुभता या सकारात्मक तीव्रता की स्थिति को दर्शाता है।

विष्टपिन्: इस शब्द के कई परस्पर जुड़े अर्थ हैं: 1. शाखा, पेड़ की टहनी: संबंध, विकास और विस्तार का प्रतीक। एक पवित्र संदर्भ में, यह अक्सर एक "दिव्य वृक्ष" या एक ऐसे वृक्ष को संदर्भित करता है जो आध्यात्मिक छाया और पोषण प्रदान करता है। 2. ऊँचा स्थान, चोटी, पर्वत का शिखर: सर्वोच्चता, स्थिरता और एक ऐसे vantage point का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ से सब कुछ देखा जा सकता है। 3. आधार, नींव: कुछ ऐसा जो स्थिरता प्रदान करता है और जिस पर अन्य निर्भर करते हैं।

सुंदर, पवित्र शाखा (आध्यात्मिक पोषण और संबंध): जब "सुंदर, पवित्र शाखा" के रूप में व्याख्या की जाती है, तो सुविष्टपिने कालभैरव को आध्यात्मिक पोषण के दाता और वह जिसके माध्यम से दिव्य ज्ञान प्रवाहित होता है, के रूप में संदर्भित करता है। एक शाखा एक पेड़ का विस्तार है, जो अपनी जड़ों से जुड़ी होती है, जीवन और फल धारण करती है। इस अर्थ में, कालभैरव परम चेतना (शिव) की वह शाखा है जो ब्रह्मांड को प्रकट करने और बनाए रखने के लिए फैली हुई है। वह पवित्र टहनी है जिसके नीचे भक्त शरण, आध्यात्मिक पोषण और दिव्य कृपा की शीतलता पाते हैं, जो परम की अक्षय जड़ से जुड़ी हुई है। यह आध्यात्मिक ऊर्जा के लिए एक माध्यम प्रदान करने और उन लोगों को सहायता प्रदान करने में उनकी भूमिका का सुझाव देता है जो उन्हें खोजते हैं।

सुस्थापित शिखर (सर्वोच्च अधिकार और अटूट उपस्थिति): सुविष्टपिने को "सुस्थापित शिखर" या "चोटी" के रूप में व्याख्या करना कालभैरव की सर्वोच्च स्थिति और अटूट अधिकार को उजागर करता है। एक चोटी उच्चतम बिंदु है, स्थिर और स्पष्ट दृष्टिकोण का स्थान है, जो निचले स्तर की गड़बड़ी के प्रति अडिग है। यह समय और नियति के अंतिम शासक और पर्यवेक्षक के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है, जिनके उच्च vantage point से सभी सार्वभौमिक चक्र नियंत्रित होते हैं। वह ब्रह्मांडीय व्यवस्था की अटूट नींव है, दिव्य शक्ति का अदम्य और सबसे सुंदर प्रकटीकरण है, जो आध्यात्मिक प्राप्ति और ब्रह्मांडीय स्थिरता के शिखर का प्रतिनिधित्व करता है। उनकी उपस्थिति दृढ़, अचल और सर्वोच्च है, जो सभी अस्तित्व के लिए एक सुरक्षित और सुंदर नींव प्रदान करती है।

अर्थों का संश्लेषण: दोनों व्याख्याएँ कालभैरव की दिव्य आशीर्वाद, स्थिरता और सर्वोच्च अधिकार के स्रोत के रूप में भूमिका पर केंद्रित हैं। चाहे वह पोषण करने वाली शाखा हो या राजसी शिखर, वह दिव्य से एक सुरक्षित और उन्नत संबंध का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो ब्रह्मांड पर शरण और अंतिम

नियंत्रण दोनों प्रदान करते हैं।

883. सुराराध्याय

सभी दिव्य देवताओं द्वारा पूजे जाने योग्य (सुराराध्य) को नमन।

विस्तार : सुराराध्याय नाम 'सुरा' और 'आराध्याय' का एक यौगिक है, जो ब्रह्मांडीय पदानुक्रम में एक गहन श्रद्धा और सर्वोच्च स्थान को दर्शाता है।

सुरा: यह शब्द दिव्य प्राणियों, देवों या देवताओं को संदर्भित करता है, जो स्वर्गीय लोकों में निवास करते हैं। ये वे प्राणी हैं जिनकी पारंपरिक रूप से मनुष्य विभिन्न वरदानों और ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने के लिए पूजा करते हैं।

आराध्याय: इसका अर्थ है "पूजा के योग्य," "आराध्य," "पूजनीय," या "श्रद्धेय।" यह ऐसे व्यक्ति को दर्शाता है जो भक्ति और सम्मान के उच्चतम रूप के योग्य है।

सर्वोच्च देवता जब संयुक्त किया जाता है, तो सुराराध्याय का अनुवाद "वह जिसकी सुरों द्वारा पूजा की जाती है" या "वह जो देवताओं द्वारा आराधना के योग्य है" होता है। यह उपाधि कालभैरव को देवताओं के पारंपरिक देवमंडल से भी ऊपर का दर्जा देती है। जबकि छोटे देवताओं की पूजा नश्वर करते हैं, कालभैरव को स्वयं देवताओं से श्रद्धा प्राप्त होती है। यह उनकी उत्कृष्ट शक्ति और अधिकार को उजागर करता है, यह सुझाव देता है कि वह शक्ति और न्याय का अंतिम स्रोत हैं, यहां तक कि स्वर्गीय प्राणियों के लिए भी।

ब्रह्मांडीय अधिकार यह नाम कालभैरव की सर्वोच्च सेनापति और ब्रह्मांडीय कानून के अंतिम मध्यस्थ के रूप में भूमिका को पुष्ट करता है। जब देव भी, जो स्वयं पूजनीय हैं, उनके सामने झुकते हैं, तो यह सभी लोकों और सभी प्राणियों, व्यक्त और अव्यक्त दोनों पर उनके पूर्ण प्रभुत्व को दर्शाता है। वह इस सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करते हैं कि देवताओं से भी परे एक शक्ति है, एक मूलभूत शक्ति जो सार्वभौमिक सिद्धांतों, समय और नियति को नियंत्रित करती है।

धर्म का अवतार देवताओं द्वारा उनकी पूजा का कार्य ही धर्म (धार्मिकता) और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के उनके अंतिम अवतार को दर्शाता है, जिसे देवता स्वयं बनाए रखने के लिए बाध्य हैं। उनकी शक्ति मौलिक और अपरिहार्य है, जो उन्हें सर्वोच्च रक्षक और दंडदाता बनाती है, जिनका देवताओं को भी सम्मान और पूजा करनी चाहिए।

884. सुकुमाराय

अत्यंत कोमल, नाजुक और सुंदर स्वरूप वाले (भगवान को) नमन।

विस्तार : सुकुमार नाम, संस्कृत से व्युत्पन्न है, जो 'सु' (जिसका अर्थ है "अच्छा," "उत्तम," "उत्कृष्ट," या "अत्यधिक") और 'कुमार' (जिसका अर्थ है "कोमल," "नाजुक," "युवा," या "सुंदर बालक/राजकुमार") का एक यौगिक है। जबकि भैरव मुख्य रूप से अपने भयंकर और भयावह पहलुओं के लिए जाने जाते हैं, यह नाम उनके दिव्य स्वरूप के एक गहरे विरोधाभास और अक्सर अनदेखे आयाम को प्रकट करता है।

अत्यधिक कोमल और नाजुक पहलू यह विशेषण उनकी अंतर्निहित सूक्ष्मता और विनाशकारी शिव के सौम्य, पोषणकारी पक्ष को इंगित करता है। यह दर्शाता है कि भयावह बाहरी स्वरूप के नीचे, एक परम कोमलता है जो ब्रह्मांडीय करुणा का सार है। यह कोमलता कमजोरी नहीं है, बल्कि उनकी असीम कृपा की क्षमता का एक गुण है। यह सुझाव देता है कि एक महान संहारक के रूप में भी, उनके कार्य अंततः दिव्य दया का एक कार्य हैं, पुराने को हटाकर नए के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे एक कुशल माली एक पौधे की छंटाई करता है। विशेष रूप से अपने भक्तों के प्रति, वे अविश्वसनीय रूप से सौम्य और उत्तरदायी हो सकते हैं।

सुंदर और युवा दीप्ति "कुमार" युवावस्था और सुंदरता का भी अर्थ है। यह पहलू दिव्य की प्राचीन, बेदाग और शाश्वत सुंदरता को प्रकट करता है। यह एक अनुस्मारक है कि शुद्ध चेतना, अपने भयंकर अभिव्यक्तियों में भी, एक अंतर्निहित सौंदर्य और आध्यात्मिक पूर्णता को बनाए रखती है। यह आंतरिक, अप्रकट सुंदरता को संदर्भित करता है जो भौतिक रूप से परे है, दिव्य स्व का एक चमकदार गुण है।

दिव्य का विरोधाभासी स्वरूप भैरव के नामों में "सुकुमार" का समावेश दिव्य की परम अद्वैतता पर प्रकाश डालता है। यह सिखाता है कि भयावह और कोमल, विनाशकारी और सुंदर, विरोधी शक्तियाँ नहीं हैं, बल्कि एक ही परम वास्तविकता के दो पहलू हैं। भैरव अस्तित्व की संपूर्णता को समाहित करते हैं, अपने सबसे दुर्जेय से लेकर अपने सबसे नाजुक अभिव्यक्तियों तक। यह नाम अंतर्निहित शुद्ध चेतना की ओर इशारा करता है, जो स्वाभाविक रूप से शांतिपूर्ण और सुंदर है, जिससे सभी अभिव्यक्तियाँ, भयंकर या अन्यथा, उत्पन्न होती हैं। यह एक अनुस्मारक है कि दिव्य के भय-उत्पन्न करने वाले रूप अंततः सुरक्षा और आध्यात्मिक विकास के लिए हैं, जो आंतरिक सुंदरता और शांति की स्थिति की ओर ले जाते हैं।

८८५. सुलोचनाय

सुंदर, मनमोहक नेत्रों वाले (देवता) को नमन।

विस्तार : सुलोचनाय नाम 'सु' और 'लोचन' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है "सुंदर आँखों वाला" या "मनमोहक आँखों वाला"। यद्यपि यह एक साधारण शारीरिक वर्णन प्रतीत होता है, लेकिन देवताओं के संदर्भ में, दिव्य आँखों का गहरा प्रतीकात्मक अर्थ होता है।

दिव्य दृष्टि और बोध ("सुंदर" का अर्थ) आध्यात्मिक अर्थ में, "सुंदर" आँखें केवल सौंदर्य अपील को संदर्भित नहीं करतीं, बल्कि उनकी दृष्टि की गुणवत्ता को भी दर्शाती हैं। कालभैरव जैसे देवता के लिए, सुलोचनाय का अर्थ है: • सर्वोच्च जागरूकता: उनकी आँखों में एक निर्मल, पूर्ण बोध होता है जो अस्तित्व की सभी परतों – अतीत, वर्तमान और भविष्य – में प्रवेश करता है। वे सभी प्राणियों के अंतरतम सार और ब्रह्मांड के जटिल कार्यों को देखते हैं। • परोपकारी दृष्टि: यद्यपि भैरव एक उग्र देवता हैं, उनकी "सुंदर" आँखें उनकी अंतर्निहित करुणा का प्रतीक हैं। वे अपने भक्तों के दुख और दुनिया में असंतुलन को देखते हैं, जिससे उनकी सुधारात्मक और सुरक्षात्मक क्रियाएँ प्रेरित होती हैं। यह दृष्टि अंततः सभी के कल्याण और आध्यात्मिक विकास के लिए है। • सर्वव्यापी दृष्टि: उनकी दृष्टि भौतिक बाधाओं या स्थान से सीमित नहीं है। वे सब कुछ एक साथ देखते हैं, सूक्ष्मतम परमाणु से लेकर विशालतम आकाशगंगाओं तक, जो उनकी सर्वव्यापकता को दर्शाता है।

दृष्टि की शक्ति ("मनमोहक" का अर्थ) उनकी आँखों का "मनमोहक" पहलू उनकी अंतर्निहित शक्ति को दर्शाता है: • ज्ञान और कृपा: उनकी दृष्टि ग्रहणशील लोगों को आशीर्वाद, ज्ञान और आध्यात्मिक जागृति प्रदान कर सकती है। यह दिव्य कृपा का एक स्रोत है जो अज्ञान और भ्रम को दूर कर सकता है। • बाधाओं का विनाश: जिस प्रकार शिव की तीसरी आँख कामदेव को भस्म कर सकती है, उसी प्रकार भैरव की दृष्टि भी बाधाओं, नकारात्मक ऊर्जाओं और अपने भक्तों को नुकसान पहुँचाने की कोशिश करने वालों के बुरे इरादों को जला सकती है। यह न्याय और शुद्धि का एक शक्तिशाली साधन है। • सम्मोहक प्रभाव: मनमोहक प्रकृति का अर्थ है सच्चे भक्तों को अपनी ओर आकर्षित करने की क्षमता, उन्हें धर्म और आध्यात्मिक अनुशासन के मार्ग पर चुम्बकित करना। यह दुष्टों में भय भी पैदा कर सकता है, जिससे वे अपने तरीके बदलने के लिए मजबूर होते हैं।

दार्शनिक महत्व यह नाम हमें याद दिलाता है कि ईश्वर सब कुछ देखता है—न केवल शारीरिक दृष्टि से, बल्कि एक गहन और आध्यात्मिक जागरूकता के साथ जिसमें ज्ञान, करुणा और शक्ति शामिल है। सुलोचनाय होना परम द्रष्टा होना है, जिसकी सुंदर और मनमोहक दृष्टि शासन करती है, रक्षा

करती है और अंततः मुक्त करती है।

886. सकलाय

जो पूर्ण, समग्र, सभी अंगों से युक्त और वास्तविकता का व्यक्त रूप हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : सकला (सकाय) नाम संस्कृत शब्द "सकल" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "सभी", "संपूर्ण", "पूर्ण", "समग्र", या "सभी अंगों के साथ"। दार्शनिक और आध्यात्मिक संदर्भ में, यह दिव्य के स्वरूप के बारे में एक गहन सत्य को दर्शाता है।

पूर्ण और समग्र एक सकल दिव्य के उस पहलू को संदर्भित करता है जो पूरी तरह से प्रकट है, जिसमें उसके सभी गुण और अंग हैं। यह "निष्कल" के विपरीत है, जो निराकार, अप्रकट, पारलौकिक पहलू का प्रतिनिधित्व करता है। भैरव के संदर्भ में, सकल उनके एक पूर्ण दिव्य रूप के रूप में अवतार पर जोर देता है, जिसमें उनके भयंकर फिर भी सुरक्षात्मक स्वरूप को परिभाषित करने वाले सभी आवश्यक हाथ, हथियार, गुण और प्रतिष्ठित तत्व शामिल हैं। वह एक आंशिक अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि दिव्य शक्ति और उपस्थिति का एक पूर्ण और उत्तम प्रतिनिधित्व है।

प्रकट वास्तविकता यह नाम इस तथ्य पर प्रकाश डालता है कि भैरव परम वास्तविकता का प्रकट रूप हैं। वह निराकार ब्रह्म का मूर्त, बोधगम्य पहलू हैं। भक्तों के लिए, इसका मतलब है कि वह एक ऐसा रूप है जिसकी पूजा की जा सकती है, ध्यान किया जा सकता है और अनुभव किया जा सकता है। उनका सकल रूप अंतःक्रिया, भक्ति और अन्यथा अमूर्त और असीम परम सत्ता को समझने का एक अधिक सुलभ मार्ग प्रदान करता है।

सभी गुणों का अवतार सकल का यह भी अर्थ है कि वह अपने सभी दिव्य गुणों (गुणों) को पूर्णता में धारण करते हैं - शक्ति, ज्ञान, करुणा, उग्रता, कृपा और सर्वज्ञता। उनके सकल रूप में कोई गुण कम नहीं है; वह सभी दिव्य पूर्णताओं का कुल योग हैं। यह उन्हें पूजा और ध्यान का एक आदर्श विषय बनाता है, क्योंकि वह वह सब कुछ समाहित करते हैं जो दिव्य है।

सार्वभौमिक रूप "पूर्ण" होने के कारण, वह अपने भीतर अस्तित्व के सभी पहलुओं - सृजन, संरक्षण और विघटन को समाहित करते हैं। वह अपने दिव्य रूप के माध्यम से प्रकट ब्रह्मांड हैं। यह उन्हें सभी सीमाओं को पार करने वाले परम ब्रह्मांडीय प्राणी का दर्जा प्रदान करता है।

887. सुमताय

उत्तम, कुलीन और उदार मन वाले (भगवान कालभैरव) को नमन।

विस्तार : सुमता (सुमताय) नाम संस्कृत के 'सु' और 'मता' (या मति) शब्दों का एक यौगिक है।

• सु (Su): यह उपसर्ग "अच्छा," "उत्कृष्ट," "भला," "परोपकारी," या "श्रेष्ठ" को दर्शाता है। यह शुभता और सकारात्मकता का प्रतीक है।

• मता (Mata) (या मति): यह शब्द "मन," "बुद्धि," "विचार," "इरादा," "समझ," या "ज्ञान" को संदर्भित करता है।

परोपकार और ज्ञान का मन इस प्रकार, सुमता ऐसे व्यक्ति का वर्णन करता है जिसके पास अच्छा (सु) और श्रेष्ठ (सु) मन (मति) है। इसका तात्पर्य एक ऐसे प्राणी से है जिसके प्रत्येक विचार, इरादे और समझ स्वाभाविक रूप से शुद्ध, परोपकारी और धार्मिक हैं। ऐसा मन द्वेष, अज्ञान और आसक्ति से मुक्त होता है। भगवान कालभैरव, सुमता के रूप में, केवल विनाश की शक्ति नहीं हैं, बल्कि पूर्ण ज्ञान और करुणा का स्रोत भी हैं, जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था के लिए हमेशा परम भलाई को ध्यान में रखते हुए कार्य करते हैं।

दिव्य बुद्धि और धार्मिकता यह नाम कालभैरव की उस भूमिका पर जोर देता है जिसमें उनके कार्य, यद्यपि कभी-कभी भयावह (जैसा कि उनके विनाशकारी पहलू में) प्रतीत होते हैं, हमेशा एक सर्वोच्च, परोपकारी बुद्धि द्वारा निर्देशित होते हैं। उनके निर्णय हमेशा न्यायपूर्ण होते हैं, उनके निर्णय पूरी तरह से संतुलित होते हैं, और उनकी इच्छा हमेशा धर्म (धार्मिकता) के अनुरूप होती है। वे दिव्य समझ का प्रतीक हैं जो मानवीय सीमाओं और पूर्वाग्रहों से परे है।

द्वैत से परे भैरव के संदर्भ में, जो समय और विघटन को नियंत्रित करते हैं, सुमता इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि दिव्य की सबसे दुर्जेय अभिव्यक्तियों में भी, सर्वोच्च अच्छाई और बुद्धिमत्ता का एक अंतर्निहित सिद्धांत है। यह भक्तों को आश्वस्त करता है कि विनाशकारी पहलू मनमाना नहीं है, बल्कि एक बड़ी, परोपकारी ब्रह्मांडीय योजना का हिस्सा है, जो एक पूरी तरह से बुद्धिमान और दयालु मन द्वारा निर्देशित है। यह उनके विरोधाभासी स्वभाव को पुष्ट करता है कि वे भयंकर होने के साथ-साथ अंततः परोपकारी भी हैं, जिनके प्रत्येक कार्य, यहां तक कि सबसे दुर्जेय भी, एक पूर्ण मन से उत्पन्न होते हैं।

८८८. स्वर्णाय

जो मूल्यवान और तेजोमय धातु, सोना है, उन्हें नमन।

विस्तार : स्वर्णाय (स्वर्ण) नाम का शाब्दिक अर्थ "सोना" या "सुनहरा" है। कालभैरव के संदर्भ में, यह प्रतीत होने वाला सरल शब्द गहरा आध्यात्मिक, दार्शनिक और कीमियाई महत्व रखता है।

शुद्धता और पूर्णता का प्रतीक सोने को सार्वभौमिक रूप से सबसे कीमती, बेदाग और अविनाशी धातु माना जाता है। यह धूमिल या जंग नहीं खाता, अपनी चमक को शाश्वत रूप से बनाए रखता है। स्वर्ण के रूप में, कालभैरव इस परम शुद्धता, अपरिवर्तनीयता और पूर्णता का प्रतीक हैं। वे सभी अपूर्णताओं से परे हैं, भौतिक संसार की अशुद्धियों और उतार-चढ़ावों से अछूते हैं।

चमक और प्रकाश सोने में एक शानदार, अंतर्निहित चमक होती है। यह गुण कालभैरव को अखंड ज्योति, चेतना के अटूट प्रकाश के रूप में दर्शाता है, जो अज्ञान के अंधकार को प्रकाशित करता है। वे सभी प्रकाश, ज्ञान और आध्यात्मिक चमक के स्रोत हैं जो माया के अंधकार को दूर करते हैं।

मूल्य और दुर्लभता सोना दुर्लभ और अत्यधिक मूल्यवान है। यह कालभैरव के सर्वोच्च और उत्कृष्ट स्वरूप पर जोर देता है, जो उनके अमूल्य आध्यात्मिक सार और उन्हें वास्तव में जानने या अनुभव करने की दुर्लभता को इंगित करता है। वे परम खजाना हैं, किसी भी आध्यात्मिक साधक के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि हैं।

शुभता और समृद्धि सोना शुभता, दिव्यता और समृद्धि से जुड़ा है। स्वर्ण के रूप में, कालभैरव न केवल भौतिक धन प्रदान करते हैं, बल्कि आध्यात्मिक समृद्धि भी प्रदान करते हैं, जो आंतरिक शांति, ज्ञान और मुक्ति (मोक्ष) का सच्चा और स्थायी धन है। वे उस दिव्य प्रचुरता का प्रतिनिधित्व करते हैं जो परम वास्तविकता से प्रवाहित होती है।

कीमियाई परिवर्तन कीमिया (भौतिक और आध्यात्मिक दोनों) की प्राचीन परंपरा में, सोना परिवर्तन की पराकाष्ठा का प्रतिनिधित्व करता है - मूल तत्वों का उनके उच्चतम, शुद्धतम रूप में रूपांतरण। कालभैरव, स्वर्ण के रूप में, उस परिवर्तनकारी शक्ति का प्रतीक हैं जो भक्त को शुद्ध करती है, सभी अशुद्धियों को दूर करती है और उन्हें चेतना की उच्च अवस्था तक ले जाती है, अंततः आध्यात्मिक ज्ञान और परमात्मा के साथ मिलन की ओर ले जाती है। वे आंतरिक परिवर्तन के लिए कीमियाई उत्प्रेरक हैं।

८८९. स्वर्मिणे

स्वर्ग के स्वामी को नमन।

विस्तार : स्वर्मिने नाम संस्कृत शब्दों 'स्वर' और 'मीने' से लिया गया है, जिसे 'स्वर-पति' या 'स्वर-ईश' की अवधारणा के विभिन्न रूपों या पहलुओं के रूप में समझा जा सकता है।

• स्वर (स्वर्ग): स्वर्ग, स्वर्गीय लोक। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, स्वर्ग को अक्सर देवताओं (देवों) और धर्मी आत्माओं का निवास स्थान माना जाता है, जो पृथ्वी पर अच्छे कर्मों के माध्यम से प्राप्त सुख, प्रकाश और आध्यात्मिक योग्यता का स्थान है। यह एक उच्च लोक है, लेकिन अंतिम मुक्ति (मोक्ष) नहीं है।

• मीने / पति / ईश: स्वामी, मालिक, शासक, या धारक।

स्वर्गीय लोकों के स्वामी स्वर्ग के स्वामी के रूप में, कालभैरव स्वर्गीय क्षेत्रों पर सर्वोच्च शासन करते हैं, देवों पर भी अपना ब्रह्मांडीय अधिकार स्थापित करते हैं। यह उनकी उत्कृष्ट शक्ति को उजागर करता है, उन्हें पारंपरिक तीन लोकों (त्रिलोक) प्रणाली में सबसे प्रतिष्ठित प्राणियों से भी ऊपर रखता है। जबकि इंद्र को पारंपरिक रूप से देवों के राजा और स्वर्ग के प्राथमिक शासक के रूप में जाना जाता है, भैरव का स्वर्मिने के रूप में शीर्षक एक गहरे, मौलिक नियंत्रण का सुझाव देता है। वह केवल एक अस्थायी अधिवासी या पदनाम द्वारा राजा नहीं हैं, बल्कि परम, मूलभूत सिद्धांत हैं जो स्वर्ग सहित सभी लोकों को नियंत्रित करते हैं।

कर्मफल के दाता स्वर्ग की अवधारणा धर्म (धार्मिक आचरण) और कर्म (क्रियाओं) से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है। स्वर्ग की प्राप्ति पुण्य कर्मों का परिणाम है। स्वर्मिने के रूप में, भैरव इन कर्मफलों के परम दाता हैं, जो उस ब्रह्मांडीय न्याय की देखरेख करते हैं जो यह निर्धारित करता है कि कौन इन लोकों में कब तक आरोहण करेगा। स्वर्ग पर उनका नियंत्रण यह दर्शाता है कि स्वर्गीय सुख और स्वयं देवताओं का जीवनकाल भी उनके दायरे में है, जो समय (काल) के शाश्वत प्रवाह के अधीन है, जिसके वे अवतार हैं।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था का प्रतीक यह नाम कालभैरव की भूमिका को केवल सांसारिक तल से परे ब्रह्मांडीय व्यवस्था के संरक्षक के रूप में पुष्ट करता है। यह दर्शाता है कि उनकी भयानक और सर्वव्यापी शक्ति सबसे परिष्कृत और प्रतीत होने वाले आनंदमय लोकों तक फैली हुई है, यह सुनिश्चित करते हुए कि वहां भी, समय का चक्र और अस्तित्व के नियम कायम रहें। वह परम सत्ता हैं, जो निम्नतम से उच्चतम तक सभी प्राणियों के भाग्य को नियंत्रित करते हैं।

८९०. स्वरमथनाय

संगीत के स्वरों के स्वर्गीय महासागर का मंथन करने वाले को नमन।

विस्तार : स्वरमथनाय नाम एक गहरा और काव्यात्मक शब्द है, जो "स्वर" (संगीत नोट/तान) और "मथन" (मंथन/आंदोलन) को जोड़ता है, जो ध्वनि के रूप में प्रकट होने वाले ब्रह्मांडीय कंपन पर कालभैरव की महारत को इंगित करता है।

स्वर: ब्रह्मांडीय कंपन भारतीय तत्वमीमांसा में, स्वर अपने सामान्य अर्थ, एक संगीत नोट से परे है। यह आदिम, अप्रकट ध्वनि सिद्धांत (परा वाक् या शब्दब्रह्म) का प्रतिनिधित्व करता है जिससे संपूर्ण सृष्टि का उद्भव होता है। स्वर केवल श्रव्य आवृत्तियाँ नहीं हैं; वे ऊर्जावान कंपन हैं, ब्रह्मांड के मूल निर्माण खंड हैं। प्रत्येक स्वर दिव्य चेतना की एक सूक्ष्म अभिव्यक्ति है। सात मुख्य स्वर (सप्त स्वर) ब्रह्मांड की रचना और सामंजस्य के लिए मौलिक माने जाते हैं।

मथन: ब्रह्मांडीय मंथन "मथन" मंथन की क्रिया को संदर्भित करता है। हिंदू पौराणिक कथाओं में शास्त्रीय रूपक समुद्र मंथन है, जो अमृत (अमरता का अमृत) और अन्य खजाने निकालने के लिए ब्रह्मांडीय सागर का मंथन है। इस संदर्भ में, कालभैरव द्वारा "स्वरों का मंथन" एक लाक्षणिक क्रिया

है:

• अभिव्यक्ति: वह वह शक्ति है जो सूक्ष्म, अप्रकट ध्वनि को प्रकट, विभेदित स्वरों और कंपनों में उत्तेजित करती है, इस प्रकार ब्रह्मांड की ध्वनि वास्तुकला को सामने लाती है। जैसे मंथन करने पर सागर खजाने देता है, वैसे ही दिव्य इच्छा द्वारा मंथन करने पर ब्रह्मांडीय ध्वनि सभी प्रकार की रचनाएँ देती है। • शुद्धिकरण और परिवर्तन: शिव के सार के रूप में, कालभैरव भ्रम के विनाशक भी हैं। स्वरों का मंथन विसंगत या अशुद्ध कंपनों को तोड़ने का अर्थ हो सकता है, जिससे सामंजस्य और ब्रह्मांडीय व्यवस्था की स्थापना होती है। वह ध्वनि की कच्ची क्षमता को उद्देश्यपूर्ण रचना में परिष्कृत और परिवर्तित करते हैं। • नियंत्रण और महारत: स्वरों का "मंथन" करके, कालभैरव अस्तित्व के कंपन सार पर पूर्ण महारत प्रदर्शित करते हैं। वह केवल बनाते या प्रबंधित नहीं करते; वह सक्रिय रूप से उन मौलिक आवृत्तियों में हेरफेर औरorchestrate करते हैं जो वास्तविकता को रेखांकित करती हैं। यह ब्रह्मांडीय सिम्फनी के अंतिम कंडक्टर के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है।

दार्शनिक महत्व यह नाम कालभैरव की भूमिका को केवल समय और विनाश के देवता के रूप में ही नहीं, बल्कि सृष्टि के स्वामी और इसे नियंत्रित करने वाली सूक्ष्म ऊर्जाओं के रूप में भी उजागर करता है। वह वह हैं जो ब्रह्मांड के कंपन नृत्य को शुरू करते हैं, सभी रूपों को प्रकट करने के लिए ध्वनि का सार निकालते हैं, और इस प्रकार आदिम ॐ से लेकर हर बोले गए शब्द और संगीत रचना तक सभी ध्वनि वास्तविकता के स्रोत और नियंत्रक हैं।

891. स्वनाय

दिव्य, गुंजायमान ध्वनि स्वरूप को नमन।

विस्तार : स्वनाय नाम, संस्कृत मूल "स्वन" से लिया गया है, जो ध्वनि, अनुनाद और प्रतिध्वनि को संदर्भित करता है। यह कालभैरव को सूक्ष्म, दिव्य ध्वनि और उस आदिम कंपन के अवतार के रूप में दर्शाता है जो सभी अस्तित्व का आधार है।

दिव्य अनुनाद (The Divine Resonance) "स्वन" एक गहरी, गुंजायमान और अक्सर सूक्ष्म ध्वनि का अर्थ है। यह केवल शोर नहीं है, बल्कि एक सार्थक, मूलभूत कंपन है। कालभैरव के संदर्भ में, यह अप्रकट ध्वनि सिद्धांत (परा वाक् या अनाहत नाद) को संदर्भित करता है जो सभी सृष्टि से पहले आता है और उसे जन्म देता है। वह ब्रह्मांडीय गुंजन, शाश्वत कंपन है जिससे ब्रह्मांड निकलता है।

अभिव्यक्ति के रूप में ध्वनि (Sound as Manifestation) ब्रह्मांड में सब कुछ मूल रूप से एक कंपन है। कालभैरव, स्वन के रूप में, इस परम कंपनशील अवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं जिससे सभी रूप, नाम और घटनाएँ उत्पन्न होती हैं। उनका अपना स्वभाव यह अंतर्निहित अनुनाद है जो सभी स्थान और समय में व्याप्त है।

नाद ब्रह्म के रूप में शिव (Shiva as Nada Brahma) कालभैरव का यह पहलू "नाद ब्रह्म" - ध्वनि के रूप में परम वास्तविकता - के रूप में शिव की अवधारणा के साथ संरेखित है। जिस प्रकार शिव द्वारा धारण किए गए डमरू की ध्वनि ब्रह्मांडीय कंपन और ब्रह्मांड के निर्माण और विघटन का प्रतीक है, उसी प्रकार स्वन इस आवश्यक ध्वनि शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

अनाहत नाद (The Unstruck Sound) एक गहरे योगिक और तांत्रिक अर्थ में, "स्वन" ध्यान के दौरान उन्नत साधकों द्वारा अनुभव की जाने वाली आंतरिक, रहस्यमय ध्वनि को इंगित कर सकता है। यह किसी के आंतरिक अस्तित्व की ध्वनि है, सार्वभौमिक चेतना के लिए एक सीधा संबंध, जिसे कालभैरव के रूप में स्वन द्वारा प्रतीकबद्ध किया गया है। वह इस गहन, स्व-अस्तित्व वाली ध्वनि का स्रोत और अभिव्यक्ति है।

892. सामगाय

पवित्र सामवेद के मंत्रों के सर्वोच्च गायक को नमन।

विस्तार : नाम सामगाय साम (सामवेद से) और गाय (गायक या मंत्रोच्चार करने वाला) का एक यौगिक है।

सामवेद परंपरा (The Sāma Veda Tradition) सामवेद चार प्रमुख वेदों में से एक है, जो वैदिक भजनों के मधुर और संगीतमय गायन के लिए प्रसिद्ध है। अन्य वेदों के विपरीत, जो छंदों (मंत्रों) और अनुष्ठानों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, सामवेद मुख्य रूप से अपने गान (मंत्रोच्चार) और स्वर (नोट्स) के लिए मनाया जाता है, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत की जड़ बनाते हैं। ये मंत्र केवल पाठ नहीं हैं बल्कि विशिष्ट आध्यात्मिक कंपन और चेतना की अवस्थाओं को जगाने के लिए डिज़ाइन किए गए गहन संगीतमय गायन हैं।

सर्वोच्च गायक और पवित्र संगीत के प्रवर्तक (Supreme Singer and Originator of Sacred Music) कालभैरव को सामगाय के रूप में संदर्भित करने का अर्थ है कि वे इन गहन वैदिक मंत्रों के परम, सर्वोच्च गायक हैं। इसे कई तरीकों से समझा जा सकता है: • संगीत का दिव्य स्रोत: वे केवल एक कलाकार नहीं हैं, बल्कि वे मूल और सार हैं जिससे सभी पवित्र संगीत, विशेष रूप से सामवेद की जटिल धुनें, उत्पन्न होती हैं। वे ब्रह्मांडीय कंपन (नाद ब्रह्म) का प्रतीक हैं जो ध्वनि और संगीत के रूप में प्रकट होता है। • ब्रह्मांडीय मंत्रोच्चार करने वाला: एक आध्यात्मिक अर्थ में, उन्हें ब्रह्मांडीय क्षेत्र में सामवेद का शाश्वत रूप से पाठ करने वाले के रूप में परिकल्पित किया गया है, एक निरंतर भजन जो ब्रह्मांड को बनाए रखता है और उसके दिव्य क्रम को व्यक्त करता है। उनका "गायन" सृष्टि, संरक्षण और विघटन की लयबद्ध धड़कन है। • पवित्र ध्वनि का अवतार: सामवेद के मंत्रों में अपार आध्यात्मिक शक्ति मानी जाती है। सामगाय होने के नाते, भगवान भैरव इस शक्ति का प्रतीक हैं, जिससे वे सभी पवित्र ध्वनि और ब्रह्मांड और व्यक्तिगत आत्मा पर इसके गहन प्रभावों के स्वामी बन जाते हैं।

गहन आध्यात्मिक महत्व (Profound Spiritual Significance) यह नाम भगवान भैरव को केवल एक भयानक देवता से ऊपर उठाता है। यह उन्हें सौंदर्यपूर्ण सुंदरता, आध्यात्मिक सद्भाव और पवित्र ध्वनि की गहरी, परिवर्तनकारी शक्ति के अवतार के रूप में चित्रित करता है। यह संगीत और आध्यात्मिक अभिव्यक्ति के दिव्य संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है, साधकों को याद दिलाता है कि दिव्य तक पहुंचने का मार्ग पवित्र धुनों की भक्ति और समझ के माध्यम से भी तय किया जा सकता है। इस पहलू के माध्यम से, भैरव भक्तों को वैदिक मंत्रों के गुंजायमान कंपनों द्वारा सुगम आंतरिक सद्भाव और आध्यात्मिक जागृति की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

893. सकलाधाराय

समस्त सृष्टि के परम आधार और अवलंब को नमन।

विस्तार : सकलाधाराय नाम "सकल" और "आधार" का एक गहन संयोजन है, जो कालभैरव के ब्रह्मांडीय कार्य के एक मुख्य पहलू को प्रकट करता है।

सकल: इस शब्द का अर्थ है "सभी," "संपूर्ण," "समस्त," या "पूर्ण।" दार्शनिक संदर्भ में, यह अस्तित्व की समग्रता को समाहित करता है - प्रत्येक प्राणी, प्रत्येक वस्तु, ब्रह्मांड के भीतर प्रत्येक व्यक्त और अव्यक्त वास्तविकता। यह एक ऐसी समावेशिता का तात्पर्य है जो अपने दायरे से कुछ भी बाहर नहीं छोड़ती।

आधार: यह शब्द "सहारा," "नींव," "आधार," "अधोस्तर," या "भूमि" को दर्शाता है। यह उस चीज़ को इंगित करता है जो किसी और चीज़ के अस्तित्व के लिए मूलभूत आधार प्रदान करती है, उसे बनाए रखती है और सहारा देती है।

सार्वभौमिक आधार सकलाधार के रूप में, कालभैरव वह परम और निरपेक्ष नींव हैं जिस पर संपूर्ण ब्रह्मांड टिका हुआ है। वह केवल सृष्टि का एक हिस्सा नहीं हैं, बल्कि स्वयं अस्तित्व का आधार हैं। यह अवधारणा कई हिंदू दार्शनिक विद्यालयों के लिए मौलिक है, जहाँ परम सत्य को सभी घटनाओं के लिए अधोस्तर के रूप में देखा जाता है। इस आधार के बिना, कुछ भी अस्तित्व में नहीं रह सकता या उसकी कल्पना नहीं की जा सकती।

सभी का पालनहार केवल स्थिर आधार होने के अलावा, सकलाधार एक सक्रिय भूमिका का भी अर्थ है, जो पालनहार के रूप में है। वह लगातार ब्रह्मांडीय व्यवस्था, प्रकृति के नियमों और अस्तित्व के जटिल जाल को बनाए रखते हैं। यह सक्रिय पोषण एक सतत दिव्य कार्य है, जो ब्रह्मांड की निरंतरता और सुसंगति सुनिश्चित करता है।

अंतर्निहितता और पराकाष्ठा (Immanence and Transcendence) यह नाम कालभैरव के अंतर्निहित और पराकाष्ठा दोनों स्वरूपों को उजागर करता है। वह हर चीज़ के भीतर सार और समर्थन के रूप में अंतर्निहित हैं, और परम स्रोत के रूप में पराकाष्ठा हैं जो अपनी सृष्टि से परे और स्वतंत्र रूप से मौजूद हैं, फिर भी हमेशा उसका आवश्यक समर्थन प्रदान करते हैं।

दार्शनिक महत्व कालभैरव को सकलाधार के रूप में स्वीकार करना उनकी सर्वोच्च संप्रभुता और उस अद्वितीय, सर्व-समावेशी वास्तविकता के रूप में उनकी भूमिका की पहचान है जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है और जिसमें सब कुछ अंततः लौट आता है। यह इस विचार को रेखांकित करता है कि उनके अलावा कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है; वह अस्तित्व के सभी को बांधने वाला मूलभूत सिद्धांत हैं।

894. सामगानप्रियाय

सामवेद के गायन के अत्यंत प्रिय को नमन।

विस्तार : सामगानप्रियाय नाम सामगान और प्रिय का एक यौगिक है, जो भगवान शिव, विशेष रूप से उनके उग्र भैरव रूप और संगीत की पवित्र वैदिक परंपरा के बीच एक गहरा संबंध प्रकट करता है।

सामगान: सामवेद का गीत सामगान विशेष रूप से सामवेद के भजनों और छंदों के संगीतमय जप को संदर्भित करता है। सामवेद चार वेदों में से एक है, जो ऋक् छंदों (ऋग्वेद से) के मधुर गायन के लिए विशिष्ट है। यह केवल पाठ नहीं है बल्कि भक्ति संगीत का एक अत्यधिक संरचित रूप है, जिसका उद्देश्य चेतना को ऊपर उठाना और ध्वनि के माध्यम से दिव्य उपस्थिति का आह्वान करना है। इस जप को असाधारण रूप से शक्तिशाली माना जाता है, जो पर्यावरण और जप करने वाले को शुद्ध करने में सक्षम है, और गहरे आध्यात्मिक प्रभावों से जुड़ा है।

प्रिय: प्रिय, जिसे पसंद हो प्रिय का अर्थ है "प्यारा," "प्रिय," "पसंद का," या "जो प्रेम करता है।" जब इसे सामगान के साथ जोड़ा जाता है, तो यह दर्शाता है कि भगवान भैरव को सामवेद के जप के प्रति गहरा स्नेह और प्राथमिकता है।

दिव्य की सौंदर्यपरक और आध्यात्मिक प्रशंसा यह नाम कई प्रमुख पहलुओं पर प्रकाश डालता है:

1. दिव्य प्रतिध्वनि और प्राथमिकता: यह हमें बताता है कि भक्ति संगीत का यह विशिष्ट रूप, सामगान, उन्हें विशेष रूप से प्रिय है। इसका तात्पर्य है कि इन पवित्र ध्वनियों के साथ ब्रह्मांड को गुंजायमान करना उनके दिव्य स्वभाव के अनुरूप है और उनकी अनुकूल उपस्थिति का आह्वान करता है। 2. उग्र और सौंदर्यपरक के बीच सामंजस्य: जबकि भैरव एक भयानक रूप हैं, सामगान के प्रति उनकी प्रशंसा दर्शाती है कि दिव्य की सबसे उग्र अभिव्यक्ति भी सुंदरता, सद्भाव और पवित्र ध्वनि की उदात्त शक्ति से गहराई से जुड़ी हुई है। यह उनके विनाशकारी और परोपकारी पहलुओं

के बीच स्पष्ट विरोधाभास को पाटता है, एक एकीकृत दिव्यता को प्रकट करता है। 3. वैदिक अधिकार: यह भैरव को वैदिक परंपरा के भीतर दृढ़ता से स्थापित करता है, उनके अक्सर पौराणिक और तांत्रिक संघों के बावजूद। यह वैदिक पूजा के उच्चतम रूपों के अंतिम प्राप्तकर्ता के रूप में उनकी सर्वोच्च स्थिति पर जोर देता है। 4. भक्ति के लिए मार्गदर्शन: भक्तों के लिए, यह नाम एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है, यह सुझाव देता है कि सामवेद के मधुर और श्रद्धामय जप के माध्यम से पूजा उनकी कृपा का आह्वान करने और आध्यात्मिक निकटता प्राप्त करने का एक शक्तिशाली साधन है। यह दिव्य से जुड़ने में ध्वनि (नाद योग) की परिवर्तनकारी शक्ति को रेखांकित करता है।

895. शुचये

जो पूर्णतः शुद्ध, स्वच्छ और तेजस्वी हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : नाम शुचये (Śucaye) संस्कृत शब्द "शुचि" से लिया गया है, जिसका अर्थ है शुद्ध, स्वच्छ, तेजस्वी, चमकीला और अशुद्धता से मुक्त। यह नाम भगवान कालभैरव के मूलभूत और आंतरिक गुणों में से एक को उजागर करता है।

पूर्ण पवित्रता (आंतरिक और बाहरी) अपने सबसे प्रत्यक्ष अर्थ में, शुचि पूर्ण स्वच्छता और पवित्रता की स्थिति को संदर्भित करता है। कालभैरव जैसे देवता के लिए, यह पवित्रता केवल शारीरिक नहीं है, बल्कि उनके सार, कर्मों और चेतना तक भी फैली हुई है। वे भौतिक संसार की अशुद्धियों, जैसे काम (इच्छा), क्रोध (krodha), लोभ (lobha), मोह (moha), मत्सर (ईर्ष्या) और मद (अहंकार) से अछूते हैं। उनकी पवित्रता उनकी पारलौकिक प्रकृति को दर्शाती है, जो अस्तित्व के द्वंद्वों और संदूषणों से परे है।

तेज और चमक शुचि का अर्थ तेज, चमक और दीप्ति भी है। यह दिव्य चेतना के आंतरिक प्रकाश को संदर्भित करता है जो कालभैरव से निकलता है। वे दिव्य ऊर्जा और ज्ञान से तेजस्वी हैं, जो अपने भक्तों के मार्ग को प्रकाशित करते हैं और अज्ञानता के अंधकार को दूर करते हैं। यह तेज उनकी सर्वोच्च शक्ति और ज्ञान की अभिव्यक्ति है।

अनुष्ठानिक और नैतिक स्वच्छता एक व्यापक धार्मिक संदर्भ में, "शुचि" सभी आध्यात्मिक प्रथाओं, अनुष्ठानिक शुद्धता (शुद्धि) और नैतिक शुचिता के लिए अभिन्न है। कालभैरव, शुचये के रूप में, अनुष्ठानिक और नैतिक स्वच्छता के उच्चतम रूप का प्रतीक हैं, जो उन्हें शुद्धि और आध्यात्मिक उत्थान चाहने वालों के लिए पूजा का आदर्श विषय बनाते हैं। उनकी पूजा भक्त को पापों और नकारात्मक कर्मों से शुद्ध करती है।

अशुद्धता का नाश करने वाले इसके विपरीत, पवित्रता के अवतार के रूप में, कालभैरव सभी अशुद्धियों के नाशक के रूप में भी कार्य करते हैं। वे नकारात्मक शक्तियों को शुद्ध करते हैं, अपने भक्तों के सूक्ष्म शरीरों को स्वच्छ करते हैं, और कर्मिक दोषों से उत्पन्न होने वाली बाधाओं को दूर करते हैं। उन्हें शुचये के रूप में आह्वान करके, व्यक्ति सभी प्रकार की अशुद्धियों - शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक - से शुद्धि चाहता है।

896. तस्मै

उस 'एक', परम, अवर्णनीय सत्ता को।

विस्तार : 'तस्मै' शब्द का अर्थ है "उसको" या "उसको/उसको/उसको," और हिंदू दर्शन के संदर्भ में, विशेष रूप से जब दिव्य के लिए शक्तिशाली मंत्रों या आह्वान में उपयोग किया जाता है, तो यह परम, अवर्णनीय वास्तविकता को संदर्भित करता है।

अवर्णनीय निरपेक्ष "वह" (संस्कृत में 'तत्', जिससे 'तस्मै' व्युत्पन्न हुआ है) उपनिषदों और अद्वैत वेदांत में एक गहरा विचार है। यह परम वास्तविकता, ब्रह्म को दर्शाता है, जो सभी नामों, रूपों, गुणों और परिभाषाओं से परे है। क्योंकि दिव्य, अपने उच्चतम रूप में, मानवीय समझ और भाषाई अभिव्यक्ति से परे है, इसे केवल "वह" के रूप में संदर्भित किया जाता है। इसे नाम देना इसे सीमित करना होगा, ऐसी विशेषताओं को निर्दिष्ट करना होगा जो इसकी अनंत प्रकृति को पूरी तरह से समाहित नहीं कर सकतीं।

अप्रकट और पारलौकिक तस्मै दिव्य के अप्रकट, पारलौकिक पहलू की ओर इंगित करता है—वह स्रोत जिससे सभी अभिव्यक्तियाँ उत्पन्न होती हैं, फिर भी जो उनसे अछूता और अप्रभावित रहता है। यह अस्तित्व का परम आधार है, शाश्वत, अपरिवर्तनीय और शुद्ध चेतना।

परम लक्ष्य आध्यात्मिक साधक के लिए, "तत्" सर्वोच्च सत्य, सभी आध्यात्मिक प्रयासों का अंतिम गंतव्य का प्रतिनिधित्व करता है। "तस्मै" को नमन करना इस परम वास्तविकता को स्वीकार करने का एक कार्य है, जो सभी वैचारिक ढाँचों से परे है, उसके प्रति भक्ति व्यक्त करना और उस अवर्णनीय एकता के साथ मिलन की तलाश करना है।

सार्वभौमिक अनुप्रयोग यह शब्द किसी विशिष्ट देवता तक सीमित नहीं है, बल्कि अपने किसी भी रूप में या निराकार निरपेक्ष के रूप में सर्वोच्च सत्ता को संदर्भित कर सकता है। कालभैरव के संदर्भ में, यह उन्हें इस परम वास्तविकता के अवतार के रूप में पहचानता है, वह जो सभी अस्तित्व का 'वह' है, यहां तक कि उन भयानक रूपों से भी परे है जिन्हें वह धारण करते हैं।

897. ईतिषे

सभी वांछित और अभीप्सित के मूर्त स्वरूप को नमन।

विस्तार : इष्ट (इष्टाय) नाम संस्कृत धातु "इष्" से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है "इच्छा करना, कामना करना या खोजना।" हिंदू परंपरा के भीतर इसके गहरे दार्शनिक और आध्यात्मिक अर्थ हैं।

अभीष्ट वस्तु अपने सबसे बुनियादी अर्थ में, इष्ट का अर्थ है "वह जिसकी इच्छा की जाती है" या "जो खोजा जाता है।" यह सभी इच्छाओं की परिणति, किसी भी प्रयास का अंतिम लक्ष्य या उद्देश्य दर्शाता है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, इच्छा की यह वस्तु केवल सांसारिक सुख या भौतिक लाभ नहीं है, बल्कि इसमें सर्वोच्च आध्यात्मिक आकांक्षाएं शामिल हैं, जिनमें मुक्ति (मोक्ष), आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि (ज्ञान), या दिव्य प्रेम (भक्ति) शामिल हैं। जब इसे कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो इसका अर्थ है कि वे सभी आध्यात्मिक लालसाओं के सर्वोच्च लक्ष्य हैं।

पूर्ति का मूर्त रूप कालभैरव, इष्ट के रूप में, पूर्ति के सार का प्रतीक हैं। वे वह हैं जो, जब प्रसन्न या ध्यान किए जाते हैं, तो सभी धार्मिक इच्छाओं को पूरा करते हैं और व्यक्ति को अंतिम लक्ष्य तक ले जाते हैं। इसका अर्थ केवल इच्छा पूरी करने वाले देवता से नहीं है, बल्कि एक गहन आध्यात्मिक शक्ति से है जो साधक को उनके सच्चे उद्देश्य के साथ संरेखित करती है और इसे प्राप्त करने के लिए बाधाओं को दूर करने में मदद करती है। वे वही हैं जो वांछित है उसकी वास्तविक प्राप्ति हैं।

रथ या वाहन (यज्ञ के रूप में इष्ट) इष्ट शब्द का अर्थ "वह जिससे कोई जाना चाहता है," या "देवताओं के लिए एक बलिदान, भेंट, या वाहन" भी हो सकता है। इस अर्थ में, कालभैरव दिव्य वाहन या साधन हैं जिसके माध्यम से कोई सीमाओं को पार कर सकता है और चेतना की उच्च अवस्थाओं तक पहुंच सकता है। वे पवित्र कार्य, यज्ञ का सार हैं, जो दिव्य मिलन और आध्यात्मिक आकांक्षाओं की पूर्ति की ओर ले जाता है।

भक्ति का लक्ष्य अंततः, भक्त के लिए, इष्ट के रूप में कालभैरव सर्वोच्च सत्ता का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सभी भक्ति और आराधना के योग्य हैं। वे अंतिम आश्रय हैं, सबसे प्रिय और वांछित लक्ष्य हैं, और आध्यात्मिक यात्रा के लिए वास्तव में लाभकारी सभी चीजों के परोपकारी दाता हैं।

898. सत्कृताय

जो सभी के द्वारा सम्मानित, पूजित और अति आदरणीय हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : सत्कृताय नाम संस्कृत शब्द सत्कृत से लिया गया है, जिसका सीधा अर्थ है "सम्मानित," "पूजित," "आदरणीय," या "श्रद्धेय।" यह नाम कालभैरव के दिव्य स्वरूप के एक मूलभूत पहलू पर जोर देता है: उनकी सार्वभौमिक वंदना और वह गहरा सम्मान जो वे सभी प्राणियों से प्राप्त करते हैं।

सार्वभौमिक आराधना "सत्कृत" का अर्थ है कि कालभैरव को केवल स्वीकार नहीं किया जाता है, बल्कि अस्तित्व के सभी स्तरों पर सक्रिय रूप से और भक्तिपूर्वक पूजा जाता है। इसमें मनुष्य, देव (देवता), असुर (राक्षस), ऋषि (संत), और यहां तक कि अन्य शक्तिशाली देवता भी शामिल हैं। उनके कार्य, जो ब्रह्मांडीय नियम और धर्म (धार्मिकता) के रखरखाव में निहित हैं, स्वाभाविक रूप से उन्हें यह व्यापक सम्मान दिलाते हैं।

सही कर्म का प्रतीक (सत्कार) यह शब्द "सत्कार" से भी संबंधित है, जिसका अर्थ है "आतिथ्य," "श्रद्धा," या "अच्छे कर्म करना।" सत्कृत होने के नाते, कालभैरव उचित आचरण और श्रद्धा के सिद्धांतों का प्रतीक हैं। उनका अस्तित्व ही ब्रह्मांड की व्यवस्था और न्याय का प्रमाण है, जो बदले में सम्मान का आदेश देता है। उनकी भक्ति सत्कार का एक रूप है, एक अच्छा और पुण्य कार्य जो भक्त को ब्रह्मांडीय सद्भाव के साथ जोड़ता है।

अधिकार और सर्वोच्चता उन्हें जो सम्मान मिलता है, वह केवल प्रेम या भक्ति से नहीं, बल्कि उनके सर्वोच्च अधिकार और शक्ति की पहचान से भी है। काल (समय) के रूप में, वे परम शक्ति हैं जिसके सामने सभी को झुकना पड़ता है। बुराई के दंडक और धर्म के रक्षक के रूप में उनकी भूमिका स्वाभाविक रूप से उन्हें अत्यधिक वंदना का पात्र बनाती है। यहां तक कि जो उनसे डरते हैं, वे भी उनके अटल सिद्धांतों का सम्मान करते हैं।

आंतरिक और बाहरी श्रद्धा यह नाम भक्तों से कालभैरव को सत्कार (श्रद्धा) अर्पित करने का आग्रह करता है, न केवल अनुष्ठानिक पूजा के माध्यम से, बल्कि उस ब्रह्मांडीय व्यवस्था के प्रति गहरे सम्मान के आंतरिक दृष्टिकोण के माध्यम से भी जिसका वे प्रतिनिधित्व करते हैं। यह दर्शाता है कि उन्हें स्वीकार करना और उनका सम्मान करना सभी प्राणियों के लिए फायदेमंद है, जिससे सुरक्षा, मार्गदर्शन और आध्यात्मिक विकास होता है।

899. शान्ताय

परम शांतिपूर्ण, शांत और प्रशांत रहने वाले को नमन।

विस्तार : शान्ताय नाम, संस्कृत शब्द 'शान्त' से व्युत्पन्न है, जो परम शांति, स्थिरता और शांति के गुण को संदर्भित करता है। जबकि कालभैरव अपनी भयंकर और भयानक विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध हैं, यह नाम उनके अस्तित्व के एक गहन और अक्सर अनदेखे आयाम पर प्रकाश डालता है।

शांति और आतंक का विरोधाभास कालभैरव के भयानक रूप का "शान्त" विशेषण के साथ संयोजन शैव धर्म में एक गहरे दार्शनिक सत्य को समाहित करता है: परम वास्तविकता (ब्रह्म या शिव) सभी द्वैत से परे है। सच्ची शांति केवल अशांति की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि गहन स्थिरता और समभाव की एक अवस्था है जो सभी घटनात्मक अस्तित्व को रेखांकित करती है, जिसमें सबसे भयानक

अभिव्यक्तियाँ भी शामिल हैं। कालभैरव, काल और अहंकार के संहारक के रूप में, अंततः प्राणियों को इस परम शांति की स्थिति में ले जाते हैं। वह जो आतंक पैदा करते हैं, उसका उद्देश्य भ्रम को तोड़ना और व्यक्ति को एक गहरी, अधिक शांतिपूर्ण वास्तविकता के प्रति जागृत करना है।

आंतरिक शांति का स्रोत उनके भक्तों के लिए, कालभैरव की शान्त पहलू के माध्यम से पूजा करने से आंतरिक शांति और दृढ़ता की गहरी भावना उत्पन्न हो सकती है। वह मानसिक उत्तेजना, भय और इच्छा से मुक्ति प्रदान करने वाले हैं, जो मानव मन में अशांति के प्राथमिक स्रोत हैं। अहंकार और उसकी आसक्तियों पर विजय प्राप्त करके, व्यक्ति उस अंतर्निहित शांति का लाभ उठा सकता है जो स्वयं का सच्चा स्वरूप है।

विनाश के बाद की स्थिरता ब्रह्मांडीय चक्र में, कालभैरव द्वारा नियोजित भयंकर प्रलय (विनाश) के बाद, पुनर्सृष्टि से पहले पूर्ण स्थिरता और शांति की अवधि आती है। यह नाम शांति (शांति) की उस परम, बिना शर्त वाली स्थिति को संदर्भित करता है जो ब्रह्मांड में व्याप्त होती है जब सभी लौकिक गतिविधियाँ बंद हो जाती हैं। वह इस आदिम शांति का प्रतीक हैं।

परम समभाव शान्त का अर्थ क्रोध, आसक्ति और घृणा से मुक्त पूर्ण समभाव की स्थिति भी है। जबकि उनका बाहरी रूप क्रोधी हो सकता है, उनका आंतरिक सार गुणों (प्रकृति के गुणों) के खेल से अछूता रहता है। यह भक्तों को याद दिलाता है कि जीवन के तूफानों के बीच भी, अटूट शांति का एक मूल सुलभ है।

९००. सुभूमये

अच्छी और सुंदर पृथ्वी, दृढ़ आधार वाले (भगवान कालभैरव) को नमन।

विस्तार : नाम सुभूमाये (Subhūmaya) संस्कृत शब्दों सु (Su), भू (Bhū) और मय (Maya) का संयोजन है, जो पृथ्वी और उसके आवश्यक गुणों के साथ एक गहरा संबंध दर्शाता है।

• सु (Su): इस उपसर्ग का अर्थ है "अच्छा," "शुभ," "उत्कृष्ट," या "सुंदर।" यह उस संज्ञा के अंतर्निहित गुण को बढ़ाता है जिसके पहले यह आता है।

• भू (Bhū) या भूमि (Bhūmi): यह पृथ्वी, भूमि, ज़मीन, या दृढ़ आधार को संदर्भित करता है। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, भूमि को एक देवी के रूप में पूजा जाता है, एक मातृ आकृति जो सभी जीवन को बनाए रखती है।

• मय (Maya): यह प्रत्यय "से बना," "से युक्त," या "से संबंधित" इंगित कर सकता है। कभी-कभी, यह माया (दिव्य भ्रम या रचनात्मक शक्ति) की अवधारणा से भी संबंधित हो सकता है, यह सुझाव देता है कि पृथ्वी स्वयं दिव्य ऊर्जा की अभिव्यक्ति है।

सुंदर पृथ्वी (The Beautiful Earth) "सुभूमाये" को "वह जो अच्छी और सुंदर पृथ्वी है" के रूप में समझा जा सकता है। यह हमारे पैरों के नीचे की भूमि में ही दिव्य उपस्थिति पर जोर देता है, जो पृथ्वी के जीवन-निर्वाहक, पोषणकारी और सौंदर्य संबंधी गुणों को दर्शाता है। यह प्रकृति के प्रति श्रद्धा को दिव्य की अभिव्यक्ति के रूप में दर्शाता है।

दृढ़ आधार (The Firm Foundation) उन्हें "दृढ़ आधार" के रूप में वर्णित करके, यह नाम स्थिरता, दृढ़ता और समर्थन पर जोर देता है। जिस प्रकार पृथ्वी सभी प्राणियों और संरचनाओं के लिए एक ठोस आधार प्रदान करती है, उसी प्रकार भगवान कालभैरव अस्तित्व का परम, अटूट आधार हैं। वह उस अपरिवर्तनीय सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करते हैं जिस पर सभी क्षणभंगुर घटनाएँ टिकी हुई हैं। यह पहलू ब्रह्मांडीय व्यवस्था के संरक्षक और अटूट शक्ति के स्रोत के रूप में उनकी भूमिका से संबंधित है।

ब्रह्मांडीय सिद्धांत (Cosmic Principle) एक व्यापक दार्शनिक अर्थ में, सुभूमाये (Subhūmaya) कालभैरव को भौतिक संसार के सार या आधार के रूप में संदर्भित कर सकता है। वह केवल पृथ्वी पर नहीं हैं बल्कि अपने सबसे दिव्य और स्थिर रूप में पृथ्वी "हैं", जो इसके मौलिक अस्तित्व में व्याप्त और समाहित हैं। यह उनकी सर्वव्यापकता और भौतिक ब्रह्मांड के स्रोत और पालक के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है।

901. सत्परायणाय

सभी सत्यनिष्ठ और पुण्यात्माओं के लिए परम और अंतिम लक्ष्य स्वरूप को नमन।

विस्तार : सत्परायणाय नाम संस्कृत में एक गहन मिश्रित शब्द है, जो सनातन धर्म के अस्तित्व के अंतिम उद्देश्य के संबंध में एक मुख्य दार्शनिक सिद्धांत को प्रकट करता है। यह "सत्", "पर" और "अयन" से मिलकर बना है।

सत्: सत्य, अस्तित्व, वास्तविकता, अच्छाई "सत्" एक बहुआयामी शब्द है जो सत्य, अस्तित्व, वास्तविकता और अच्छाई को दर्शाता है। आध्यात्मिक संदर्भ में, यह अक्सर शाश्वत, अपरिवर्तनीय और निरपेक्ष वास्तविकता (ब्रह्म) को संदर्भित करता है। यह उन सभी को समाहित करता है जो सत्य, सदाचारी और आध्यात्मिक रूप से शुद्ध हैं।

पर: सर्वोच्च, परम, उच्चतम "पर" उस चीज़ को इंगित करता है जो परे है, परम है, सर्वोच्च है, या उच्चतम है। यह पारलौकिक, अंतिम और सबसे सर्वोच्च स्थिति या सिद्धांत की ओर इशारा करता है।

अयन: लक्ष्य, आश्रय, मार्ग, गंतव्य "अयन" एक मार्ग, एक गंतव्य, एक आश्रय, या एक लक्ष्य को इंगित करता है। यह वह जगह है जहाँ कोई जा रहा है या जहाँ कोई आश्रय लेता है।

सत्य और सद्गुण का परम लक्ष्य जब संयुक्त किया जाता है, तो सत्परायणाय का अर्थ है "उन लोगों के लिए परम लक्ष्य जो सत्य की तलाश करते हैं और सद्गुण का अभ्यास करते हैं।" यह नाम इस बात पर जोर देता है कि भगवान शिव, अपने कालभैरव रूप में, उन सभी प्राणियों के लिए सर्वोच्च गंतव्य हैं जो धार्मिकता, ईमानदारी और आध्यात्मिक अखंडता के प्रति प्रतिबद्ध हैं। ऐसे व्यक्तियों के लिए, वह केवल पूजा करने योग्य देवता नहीं हैं, बल्कि उनके द्वारा खोजे गए सत्य का साक्षात अवतार और उनकी आध्यात्मिक यात्रा में अंतिम आश्रय हैं।

धार्मिकता का अवतार वह आध्यात्मिक आकांक्षा के शिखर, दुख की अंतिम समाप्ति और निरपेक्ष वास्तविकता की प्राप्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। जो लोग "सत्" (सत्य और सद्गुण) से जीते हैं, वे अपना "पर अयन" (सर्वोच्च गंतव्य) उनमें पाते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि स्वयं को सत्य (सत्य) और नैतिक आचरण (धर्म) के साथ संरेखित करना स्वाभाविक रूप से शिव की दिव्य उपस्थिति की ओर ले जाता है, जो सत् का सार हैं।

सदाचारियों के लिए आश्रय सत्यवादी और सदाचारी लोगों के लिए, कालभैरव परम अभयारण्य और मुक्ति (मोक्ष) का स्रोत हैं। वह उन्हें अस्तित्व की जटिलताओं के माध्यम से उनके सच्चे स्व की प्राप्ति की ओर मार्गदर्शन करते हैं, जो परम स्व से भिन्न नहीं है। यह नाम उनकी भूमिका पर जोर देता है, न केवल समय और विनाश के एक भयानक देवता के रूप में, बल्कि उन लोगों के परोपकारी रक्षक और लक्ष्य के रूप में जो अखंडता के मार्ग पर चलते हैं।

902. श्रीवल्लभाय

उन भगवान को नमन जो श्री (देवी लक्ष्मी) के प्रिय पति हैं, यह नाम सामान्यतः विष्णु के लिए प्रयुक्त होता है, पर यहाँ यह सर्वोच्च समृद्धि का सूचक है।

विस्तार : श्रीवल्लभाय नाम एक गहरा विशेषण है, जो पारंपरिक रूप से भगवान विष्णु से जुड़ा है, लेकिन भगवान कालभैरव पर इसका प्रयोग इसके अर्थ को समृद्ध करता है, जो समृद्धि, सौभाग्य और आध्यात्मिक कल्याण पर उनके सर्वोच्च प्रभुत्व को उजागर करता है। यह श्री और वल्लभ का एक यौगिक है।

श्री (Shri): यह शब्द अर्थ से भरपूर है, मुख्य रूप से इसका अर्थ है: • देवी लक्ष्मी: धन, सौभाग्य, समृद्धि, सौंदर्य और शुभता को साकार करने वाली देवी। • शुभता और महिमा: यह अंतर्निहित वैभव, गरिमा और दिव्य कृपा को दर्शाता है। • दिव्य शक्ति: श्री सामान्य शक्ति और प्रभाव की भावना को भी दर्शाता है।

वल्लभ (Vallabha): इसका अर्थ है: • प्रिय, प्यारा, पति: वह जिसे संजोया जाता है। • स्वामी, मालिक: वह जो शासन करता है या नियंत्रित करता है।

शुभता और समृद्धि के स्वामी (Master of Auspiciousness and Prosperity) जब कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो श्रीवल्लभ का अर्थ देवी लक्ष्मी के साथ पारंपरिक अर्थों में वैवाहिक संबंध नहीं है, क्योंकि शिव की पत्नी पार्वती हैं। इसके बजाय, यह दर्शाता है कि कालभैरव "श्री के परम स्वामी" हैं। वह वह स्वामी हैं जिनसे सभी प्रकार की शुभता, समृद्धि और आध्यात्मिक धन उत्पन्न होता है और प्रदान किया जाता है। उनका भयानक रूप, जो स्वयं काल (समय/मृत्यु) है, विरोधाभासी रूप से सभी भौतिक और आध्यात्मिक प्रचुरता का स्रोत और नियंत्रक है।

सौभाग्य के दाता (Dispenser of Fortune) यह नाम इस बात पर जोर देता है कि कालभैरव का सौभाग्य पर पूर्ण अधिकार है। जो भक्त उनकी पूजा करते हैं, उन्हें न केवल भौतिक धन प्राप्त होता है, बल्कि आंतरिक समृद्धि, दुर्भाग्य से सुरक्षा और आध्यात्मिक समृद्धि भी प्राप्त होती है जो मुक्ति की ओर ले जाती है। वह वह हैं जो अपनी गहन शक्ति के माध्यम से सभी लौकिक और आध्यात्मिक आशीर्वाद प्रदान कर सकते हैं या वापस ले सकते हैं।

द्वैत का अतिक्रमण (Transcendence of Dualities) कालभैरव को इस नाम का श्रेय दिव्य के अद्वैतवादी स्वरूप को रेखांकित करता है। यद्यपि पारंपरिक रूप से विष्णु संरक्षक और धन के दाता हैं, शिव, विशेष रूप से अपने भयंकर भैरव रूप में, उस परम वास्तविकता का प्रतिनिधित्व करते हैं जो अस्तित्व के सभी पहलुओं - सृजन, संरक्षण और विनाश को समाहित करती है। इस प्रकार, वह न केवल भ्रम और समय के संहारक हैं, बल्कि वह सब कुछ जो शुभ और जीवन-निर्वाहक माना जाता है, उसका मूल स्रोत और स्वामी भी हैं। यह उनकी पूर्णता को उजागर करता है - कि दिव्य का "भयानक" पहलू भी अंततः परोपकारी और सभी अच्छाई का स्रोत है।

903. शिवायंभ्याय

सभी चीजों के शुभ आरंभकर्ता को नमन।

विस्तार : शिवारम्भाय नाम शिव और आरम्भ से बना एक गहरा संस्कृत यौगिक है, जो शिव के सभी अस्तित्व के आदिम मूल और शुभ शुरुआत के सार को व्यक्त करता है।

शिव: शुभ इस संदर्भ में, शिव का अर्थ मुख्य रूप से "शुभ", "कल्याणकारी" या "शुद्ध" है। यह उनके अंतर्निहित स्वरूप को परम कल्याण, सभी भलाई के स्रोत और शुद्ध चेतना के रूप में समाहित करता है जिससे सब कुछ उत्पन्न होता है। उनका अस्तित्व ही शुभ है, जो उनके साथ शुरू होने वाली किसी भी चीज़ को स्वाभाविक रूप से धन्य और कल्याण के लिए नियत बनाता है।

आरम्भ: शुरुआत आरम्भ का अर्थ "शुरुआत", "प्रारंभ", "दीक्षा" या "उद्यम" है। यह उत्पत्ति के बिंदु, किसी भी रचना या गतिविधि में पहला कदम दर्शाता है।

सभी चीजों का शुभ आरंभ जब संयुक्त किया जाता है, तो शिवारम्भाय शिव को संपूर्ण ब्रह्मांड, सृष्टि के प्रत्येक चक्र और प्रत्येक व्यक्तिगत प्रयास के लिए परम, सबसे शुभ प्रारंभिक बिंदु के रूप में दर्शाता है। वह केवल एक निर्माता नहीं हैं, बल्कि आदिम 'प्रथम कारण' हैं जिससे अस्तित्व के सभी बाद के रूप और चरण प्रकट होते हैं।

दार्शनिक महत्व यह नाम इस बात पर जोर देता है कि सच्ची शुरुआत शिव के शुद्ध, परोपकारी और सचेत सार में निहित है। उन्हें शिवारम्भाय के रूप में स्वीकार करना यह पहचानना है कि सभी सृजन, सभी शिक्षा, सभी कार्य और सभी आध्यात्मिक मार्ग शिव की दिव्य चेतना में अपनी अंतिम, शुभ शुरुआत पाते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि किसी भी कार्य की शुरुआत में शिव का आह्वान उसकी पवित्रता, सफलता और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के साथ संरेखण सुनिश्चित करता है, क्योंकि वह शुभ उत्पत्ति के सिद्धांत का प्रतीक हैं।

९०४. शान्तभद्राय

जो शांत, सौम्य और परम शुभकारी हैं, उनको नमन।

विस्तार : शान्तभद्र नाम दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: शान्त और भद्र।

शांति का सार (शान्त) शान्त का अर्थ है "शांत", "स्थिर", "प्रशांत", "शांतचित्त", और "राग या उत्तेजना से मुक्त"। कालभैरव जैसे देवता के संदर्भ में, यह पहलू उनके उग्र स्वभाव के विपरीत लग सकता है। हालांकि, यह दिव्य के बारे में एक गहरा सत्य प्रकट करता है: परम शक्ति और उग्रता अराजक या उत्तेजित नहीं होती है, बल्कि एक गहरी, अचल और शाश्वत स्थिरता में निहित होती है। यह शांति बाहरी संघर्ष की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि अस्तित्व की एक अंतर्निहित अवस्था है, एक गहन आंतरिक शांति है। इसका तात्पर्य है कि विनाशक के रूप में अपनी भूमिका में भी, एक ब्रह्मांडीय व्यवस्था और एक शांत अलगाव है। वह उस शांति का प्रतीक हैं जो सभी समझ से परे है, ब्रह्मांड के बिल्कुल केंद्र में स्थित स्थिरता।

शुभता का अवतार (भद्र) भद्र का अर्थ है "शुभ", "धन्य", "उत्कृष्ट", "अच्छा", "कृपालु", और "परोपकारी"। यह शब्द पुष्टि करता है कि कालभैरव के भयानक रूप के बावजूद, उनके कार्य हमेशा अंततः ब्रह्मांड और उनके भक्तों के भले के लिए होते हैं। उनका विनाश दुर्भावनापूर्ण नहीं है, बल्कि शुद्धिकरण का एक आवश्यक कार्य है, जो नवीनीकरण और परम शुभता की ओर ले जाता है। वह सौभाग्य, सुरक्षा और आशीर्वाद के दाता हैं। बाधाओं और नकारात्मक प्रभावों (आंतरिक और बाहरी दोनों) को दूर करके, वह आध्यात्मिक और भौतिक दोनों रूप से एक वास्तव में धन्य और समृद्ध जीवन का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

विरोधाभासों का सामंजस्य इस प्रकार, शान्तभद्र विपरीत प्रतीत होने वाले गुणों का एक सामंजस्यपूर्ण सामंजस्य प्रस्तुत करता है। यह हमें याद दिलाता है कि दिव्य के उग्र पहलू (जैसे भैरव) अंततः शांति (शान्त) में निहित हैं और शुभता (भद्र) की ओर ले जाते हैं। उनकी उग्रता ब्रह्मांडीय शांति को फिर से स्थापित करने और सर्वोच्च भलाई लाने का कार्य करती है। यह नाम भक्तों को प्रारंभिक भयानक उपस्थिति से परे देखने और देवता के परोपकारी, रक्षक और अंततः शांतिपूर्ण सार को पहचानने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह अद्वैतवादी समझ की ओर इशारा करता है कि दिव्य की सभी अभिव्यक्तियाँ, उग्र या सौम्य, एक परम, शांतिपूर्ण और शुभ वास्तविकता से उत्पन्न होती हैं।

९०५. समंजसाय

जो उचित, सही और पूर्णतः सामंजस्यपूर्ण हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : समंजसा (या समंजस) नाम संस्कृत मूल "समंजस" से लिया गया है, जिसका अर्थ है जो उपयुक्त, उचित, सही, अनुकूल, सामंजस्यपूर्ण या पूर्णतः संरेखित हो।

व्यवस्था और औचित्य कालभैरव के संदर्भ में, समंजस ब्रह्मांडीय व्यवस्था (ऋत) और धर्म के परम संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है। वे दिव्य औचित्य के मूर्तरूप हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि ब्रह्मांड में सभी कार्य, परिणाम और घटनाएँ अस्तित्व के अपरिवर्तनीय नियमों के अनुसार घटित हों। यह पहलू उनकी भूमिका को केवल एक संहारक के रूप में नहीं, बल्कि संतुलन और धार्मिकता के संरक्षक के रूप में उजागर करता है। वे जिसे नष्ट करते हैं, वह अक्सर अनुचित, अन्यायपूर्ण या भव्य ब्रह्मांडीय डिज़ाइन के साथ असामंजस्यपूर्ण होता है।

पूर्ण सामंजस्य यह नाम कालभैरव के अपने बहुआयामी स्वरूप के भीतर निहित पूर्ण सामंजस्य को भी इंगित करता है। यद्यपि वे अपने विनाशकारी पहलू में भयावह हैं, यह विनाश कभी मनमाना नहीं होता; यह हमेशा पूर्णतः कैलिब्रेटेड और संतुलन बहाल करने के लिए नितांत आवश्यक होता है। वे सृजन, संरक्षण और विघटन के बीच पूर्ण संतुलन का प्रतीक हैं, जो उन्हें ब्रह्मांडीय सामंजस्य का आदर्श बनाते हैं।

सही मार्ग आध्यात्मिक साधक के लिए, समंजस का अर्थ है कि कालभैरव व्यक्ति को "सही" या "उचित" आध्यात्मिक मार्ग की ओर मार्गदर्शन करते हैं। उनके प्रति भक्ति व्यक्ति को अपने कार्यों और इरादों को दिव्य इच्छा के साथ संरेखित करने में मदद करती है, जिससे आंतरिक सामंजस्य और भ्रम या भटकाव से मुक्ति मिलती है। वे सुनिश्चित करते हैं कि न्याय मिले और स्थूल जगत तथा सूक्ष्म जगत दोनों में सही व्यवस्था स्थापित हो।

९०६. सत्यवाचे

जिनकी वाणी सदैव और अचूक रूप से सत्य होती है, उनको नमन।

विस्तार : सत्यवाचे नाम दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: सत्य और वाच। यह नाम एक मुख्य दिव्य गुण को उजागर करता है - संचार में पूर्ण सत्यनिष्ठा।

सत्य: सत्य, वास्तविकता, अस्तित्व सत्य हिंदू धर्म में एक मौलिक अवधारणा है, जिसे अक्सर सर्वोच्च धर्म (धार्मिक आचरण) माना जाता है। यह विचार, शब्द और कर्म में सत्य को दर्शाता है, लेकिन इससे भी अधिक गहराई से, यह उस चीज़ को संदर्भित करता है जो शाश्वत, अपरिवर्तनीय और अंततः वास्तविक है। यह क्षणभंगुर या मायावी के विपरीत, स्वयं अस्तित्व को दर्शाता है।

वाचः वाणी, शब्द, आवाज वाच का अर्थ वाणी, भाषा या अभिव्यक्ति की शक्ति है। वैदिक परंपरा में, वाच को एक देवी के रूप में पूजा जाता है, एक शक्तिशाली रचनात्मक शक्ति, जिसे अक्सर ब्रह्म, परम वास्तविकता के साथ पहचाना जाता है। ध्वनि (शब्द) को दिव्य ऊर्जा की अभिव्यक्ति माना जाता है, जो सृजन और रहस्योद्घाटन में सक्षम है।

दिव्य सत्यता जब संयुक्त किया जाता है, तो सत्यवाचे का अर्थ है "वह जिसकी वाणी सत्य है," "वह जिसका वचन सत्य है," या "वह जो केवल सत्य बोलता है।" यह गुण भगवान शिव की अंतर्निहित और अपरिवर्तनीय सत्यनिष्ठा को इंगित करता है। उनके कथन केवल सत्य कथन नहीं हैं; वे स्वयं सत्य हैं। ऐसे दिव्य प्राणी द्वारा बोला गया प्रत्येक शब्द परम वास्तविकता का प्रतिबिंब है और उस वास्तविकता को प्रकट करने की शक्ति रखता है।

विश्वसनीयता और प्रामाणिकता यह नाम भक्तों को दिव्य की पूर्ण विश्वसनीयता और प्रामाणिकता का आश्वासन देता है। जब शिव (कालभैरव के रूप में) कोई वादा करते हैं, कोई निर्णय देते हैं, या ज्ञान प्रदान करते हैं, तो वह स्पष्ट रूप से सत्य होता है और अनिवार्य रूप से पूरा होगा। उनकी वाणी में कोई छल, कोई त्रुटि और वास्तविकता से कोई विचलन नहीं है।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था और धर्म सत्य-वाच के अवतार के रूप में, कालभैरव ब्रह्मांडीय व्यवस्था (ऋत) और धर्म को बनाए रखते हैं। उनके उच्चारण न्याय स्थापित करते हैं और अस्तित्व के बहुत स्वरूप को परिभाषित करते हैं। यह गुण ब्रह्मांड में परम न्यायाधीश और सत्य के संरक्षक के रूप में उनकी भूमिका को पुष्ट करता है।

९०७. सात्विकाय

सत्वगुण, पवित्रता, अच्छाई और सत्य के साक्षात् स्वरूप को नमन।

विस्तार : सात्त्विकाय नाम उस एक को संदर्भित करता है जो सत्त्व का प्रतीक है या उससे युक्त है, जो हिंदू दर्शन में, विशेष रूप से सांख्य और योग परंपराओं में, और गुणों के केंद्र में एक मौलिक अवधारणा है।

सत्त्व को समझना सांख्य दर्शन में, सत्त्व प्रकृति (आदिम पदार्थ) का निर्माण करने वाले तीन गुणों (गुण या प्रवृत्तियाँ) में से एक है। तीन गुण हैं: • सत्त्व (शुद्धता, अच्छाई, स्पष्टता, संतुलन, प्रकाश, सत्य, ज्ञान) • रजस (गतिविधि, जुनून, गतिशीलता, उत्तेजना, इच्छा) • तमस (जड़ता, अंधकार, अज्ञान, मंदता, विनाश)

शुद्धता और अच्छाई का प्रतीक जब किसी प्राणी या अवधारणा को सात्त्विक के रूप में वर्णित किया जाता है, तो इसका अर्थ है कि उस पर सत्त्व गुण का प्रभुत्व है। भगवान कालभैरव के लिए, सात्त्विक होने का अर्थ है कि उनके भयंकर और दुर्जेय पहलू में भी, उनका अंतिम स्वरूप पूर्ण शुद्धता, अच्छाई और धर्म के साथ संरेखण का है। यह इस बात पर जोर देता है कि उनकी विनाशकारी क्रियाएँ दुर्भावना या तमस से नहीं, बल्कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था और शुद्धता बनाए रखने के दिव्य उद्देश्य से उत्पन्न होती हैं।

प्रकाशमान और मुक्तिदायक गुण सत्त्व प्रकाश (प्रकाश) और सुख (सुख) से जुड़ा है। इसलिए, जब भैरव सात्त्विक होते हैं, तो इसका अर्थ है कि वे आध्यात्मिक प्रकाश के स्रोत हैं, जो अज्ञान के अंधकार (तमस) को दूर करते हैं और मन की उत्तेजना (रजस) को शांत करते हैं। उनका सात्त्विक स्वभाव का अर्थ है कि उनकी भक्ति आध्यात्मिक स्पष्टता, ज्ञान, शांति और अंततः मुक्ति (मोक्ष) की ओर ले जाती है।

सत्य और धार्मिकता सत्त्व सत्य (सत्य) और धार्मिक आचरण से भी जुड़ा है। सात्त्विक के रूप में, कालभैरव अटूट सत्य और न्याय का प्रतिनिधित्व करते हैं। दंडपाणि (दंड के धारक) के रूप में उनकी भूमिका इस प्रकार धार्मिकता में निहित है, यह सुनिश्चित करते हुए कि ब्रह्मांडीय सत्य और व्यवस्था को बनाए रखा जाए, भले ही इसके लिए गंभीर कार्रवाई की आवश्यकता हो। वे नैतिक और आध्यात्मिक अखंडता के अंतिम संरक्षक हैं।

भयंकरता और सत्त्व का विरोधाभास यह नाम कालभैरव के रूप में शिव के प्रकटीकरण में एक गहरा विरोधाभास उजागर करता है। जबकि उनका रूप भयानक (भैरव) हो सकता है, उनका सार शुद्ध, परोपकारी और परम भलाई के उद्देश्य से है। उनकी भयंकरता एक सात्त्विक भयंकरता है - अज्ञान और नकारात्मक कर्म को दूर करने के लिए एक आवश्यक शक्ति, भक्तों को उनकी उच्चतम आध्यात्मिक क्षमता की ओर मार्गदर्शन करती है।

९०८. सत्याय

जो परम, अपरिवर्तनीय सत्य और वास्तविकता हैं, उनको नमन।

विस्तार : सत्य नाम "सत्य," "वास्तविकता," "जो शाश्वत और अपरिवर्तनीय है" को संदर्भित करता है।

परम सत्य (Para-Satya) दार्शनिक और आध्यात्मिक संदर्भ में, सत्य परम, पारलौकिक सत्य को संदर्भित करता है, जो घटनात्मक दुनिया के सभी सापेक्ष और क्षणभंगुर सत्यों से परे है। यह वह सत्य है जो सभी अस्तित्व का आधार है, सत्ता का अचल आधार है। भगवान शिव के लिए, सत्य के रूप में, वे इस परम वास्तविकता के प्रतीक हैं - एक अकृत, शाश्वत सिद्धांत जो न तो बदलता है और न ही नष्ट होता है। यह वास्तविकता के बारे में स्वयं सत्य है, किसी भी व्यक्तिगत दृष्टिकोण या अनुभवों से परे।

अपरिवर्तनीय वास्तविकता अक्सर "मिथ्या" (भ्रम या सापेक्ष सत्य) के विपरीत, सत्य उस चीज़ को दर्शाता है जो तीनों कालों में वास्तविक है: भूत, वर्तमान और भविष्य। यह ब्रह्मांड का अटूट आधार है। भगवान शिव, सत्य के रूप में, इस शाश्वत, अपरिवर्तनीय आयाम का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसका अर्थ है कि वे अस्तित्व का मूलभूत स्वरूप हैं।

सत्यनिष्ठा और अखंडता नैतिक स्तर पर, सत्य विचार, शब्द और कर्म में सत्यनिष्ठा (सत्य-वचन, सत्य-कर्म) को भी दर्शाता है। जबकि यह पहलू आमतौर पर मानवीय आचरण से जुड़ा होता है, जब इसे दिव्य को जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो यह दर्शाता है कि भगवान का स्वभाव ही अखंडता, ईमानदारी और संगति है। उनके नियम अचूक हैं, उनके वादे अपरिवर्तनीय हैं, और उनका अस्तित्व ब्रह्मांडीय व्यवस्था और धार्मिकता की परिभाषा है।

धर्म का आधार सत्य को अक्सर धर्म (धार्मिक आचरण और ब्रह्मांडीय नियम) का एक स्तंभ माना जाता है। सत्य के रूप में, भगवान शिव ब्रह्मांडीय नियमों और नैतिक व्यवस्था के परम संरक्षक हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि सत्य अंततः प्रबल हो। इसलिए सत्य के रूप में उनका स्वरूप ब्रह्मांडीय सत्य के सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करता है जो ब्रह्मांड को नियंत्रित और बनाए रखता है।

९०९. सर्वजिते

समस्त पर विजयी, सब कुछ जीतने वाले को नमन।

विस्तार : सर्वजित् नाम दो संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: सर्व, जिसका अर्थ है "सभी" या "सब कुछ," और जित्, जिसका अर्थ है "विजयी," "विजेता," या "वश में करने वाला।"

सर्व-विजयी यह नाम स्पष्ट रूप से कालभैरव को परम विजेता के रूप में दर्शाता है, वह जो सभी घटनाओं, चुनौतियों और शक्तियों पर विजय प्राप्त करता है। यह विजय केवल बाहरी शत्रुओं पर ही नहीं, बल्कि, अधिक महत्वपूर्ण रूप से, उन सभी पर है जो आध्यात्मिक साधक को सीमित करते हैं या बांधते हैं। यह उनकी पूर्ण सर्वोच्चता और अजेय प्रकृति को दर्शाता है।

काल और मृत्यु पर विजय प्राप्त करने वाला शिव के एक भयंकर रूप के रूप में, विशेष रूप से कालभैरव के रूप में, "सर्वजित्" का गहरा अर्थ काल (समय) और मृत्यु पर विजय प्राप्त करना है। चूंकि भैरव समय और उसके विनाशकारी पहलुओं के प्रतीक हैं, इसलिए उनकी "हर चीज़ पर विजय" का अर्थ है कि वह समय और मृत्यु की उन अवधारणाओं से भी परे हैं जिनका वह शासन करते हैं और जिनका वह प्रतीक हैं। वह क्षय से परे, अंत से परे, और सभी भौतिक और लौकिक सीमाओं से परे हैं।

आंतरिक विजय भक्त के लिए, कालभैरव को सर्वजित् के रूप में स्वीकार करना आंतरिक शत्रुओं - अविद्या (अज्ञान), काम (वासना), क्रोध (क्रोध), लोभ (लालच), मोह (भ्रम), और मद (अहंकार) पर विजय प्रदान करने की उनकी शक्ति का तात्पर्य है। उनके प्रति समर्पण करके, व्यक्ति इन

मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक बाधाओं को दूर करने के लिए उनकी कृपा चाहता है, जिससे आंतरिक मुक्ति और आत्म-नियंत्रण प्राप्त होता है।

ब्रह्मांडीय व्यवस्था के स्वामी उनकी सर्व-विजयी प्रकृति ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) के रखरखाव से भी संबंधित है। वह अराजकता, बुराई और उन सभी शक्तियों को वश में करते हैं जो ब्रह्मांड को बाधित करती हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि सृष्टि, संरक्षण और संहार उनकी दिव्य इच्छा के अनुसार आगे बढ़ें। इसलिए, सर्वजित् वह है जो ब्रह्मांडीय लीला पर निर्णायक रूप से शासन करता है, सब कुछ उसके नियत निष्कर्ष पर लाता है।

910. श्रुतिसागराय

सभी पवित्र विद्याओं (श्रुति) के विशाल और गहरे सागर (श्रुतिसागर) को नमन।

विस्तार : श्रुतिसागराय नाम संस्कृत के शब्दों श्रुति और सागर का एक यौगिक है, जिसका अर्थ है "पवित्र शिक्षा का सागर"। यह नाम कालभैरव की सभी ज्ञान, विशेष रूप से स्वतः प्रकट होने वाले ज्ञान के अंतिम भंडार और स्रोत के रूप में उनकी भूमिका को गहराई से दर्शाता है।

श्रुति: प्रकट ज्ञान श्रुति का अर्थ है वह जो "सुना गया" है और इसमें वेद, उपनिषद और अन्य पवित्र ग्रंथ शामिल हैं जिन्हें दिव्य उत्पत्ति का माना जाता है, न कि मनुष्यों द्वारा रचित। ये शाश्वत सत्य हैं जो प्राचीन ऋषियों को गहन ध्यान में प्रकट हुए थे। इस प्रकार के ज्ञान को आध्यात्मिक सत्य का उच्चतम रूप माना जाता है, जो सीधे स्रोत से आता है। भैरव को श्रुति से जोड़कर, वे इन शाश्वत, अपरिवर्तनीय और पूर्ण आध्यात्मिक नियमों और अंतर्दृष्टि के साक्षात अवतार बन जाते हैं।

सागर: महासागर सागर एक महासागर को दर्शाता है - विशाल, अथाह और असीम। एक महासागर अनंतता, गहराई और सभी नदियों (ज्ञान की विभिन्न धाराओं) के अभिसरण का प्रतीक है। जब श्रुति की तुलना महासागर से की जाती है, तो यह इस बात पर जोर देता है कि भैरव में निहित दिव्य ज्ञान सीमित या सतही नहीं है, बल्कि अनंत, गहरा और सर्वव्यापी है। ज्ञान के अन्य सभी रूप अंततः इस असीम भंडार में प्रवाहित होते हैं और इससे उत्पन्न होते हैं।

समस्त ज्ञान का स्रोत इस प्रकार, "श्रुतिसागर" का अर्थ है कि कालभैरव वह अनंत स्रोत हैं जहाँ से सभी पवित्र ज्ञान उत्पन्न होता है और जहाँ वह अंततः लौटता है। वे वह आचार्य हैं जो सत्य के ब्रह्मांडीय क्रम को चुपचाप बनाए रखते हैं। इस पहलू में उनकी पूजा करना स्पष्टता, ज्ञान और आध्यात्मिक सत्यों की प्रत्यक्ष समझ के लिए एक आह्वान है। वे जीवित वेद हैं, सभी शास्त्रीय शिक्षाओं का सार और अंतिम अर्थ हैं। वे परम शिक्षक और स्वयं ज्ञान का उच्चतम रूप हैं।

911. सहस्रार्चिषे

उन भगवान को नमन जिनकी हजारों तेजस्वी प्रकाश किरणें हैं।

विस्तार : सहस्रार्चिषे नाम सहस्र, अर्चिष और चतुर्थी विभक्ति के प्रत्यय -ए का एक यौगिक है, जिसका अर्थ है "हजारों किरणों/लपटों वाले को।"

• सहस्र: जिसका अर्थ "हजार" है, लेकिन अक्सर प्रतीकात्मक रूप से "असंख्य," "अनेक," या "अनगिनत" का प्रतिनिधित्व करता है।

• अर्चिष (या अर्चिस): प्रकाश की किरण, लौ, चमक या दीप्तिमान ऊर्जा को संदर्भित करता है।

दिव्य की दीप्ति यह नाम कालभैरव को एक अत्यंत दीप्तिमान और चमकदार देवता के रूप में स्पष्ट रूप से चित्रित करता है, जिनकी चमक सभी सांसारिक समझ से परे है। "हजारों किरणें" केवल एक बहुलता को ही नहीं, बल्कि एक अनंत और सर्वव्यापी प्रकाश को दर्शाती हैं। यह प्रकाश केवल भौतिक रोशनी नहीं है, बल्कि दिव्य ज्ञान, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और ब्रह्मांडीय चेतना का प्रतिनिधित्व करता है जो अज्ञान (अविद्या) के अंधकार को दूर करता है।

ब्रह्मांडीय ऊर्जा और अभिव्यक्ति शैव परंपरा में, प्रकाश को अक्सर शिव की शक्तिशाली रचनात्मक, संरक्षक और विनाशकारी ऊर्जा (शक्ति) का पर्याय माना जाता है। इस प्रकार सहस्रार्चिषे उस एक को इंगित करता है जिससे सभी ब्रह्मांडीय ऊर्जा निकलती है, ब्रह्मांड को बनाए रखती है और उसे शुद्ध प्रकाश में वापस विलीन कर देती है। वह सूर्य, चंद्रमा और तारों का स्रोत है, जो उसकी आंतरिक चमक के मात्र प्रतिबिंब हैं।

अंधकार का नाश करने वाला भैरव के रूप में, जो समय और विनाश से जुड़े हैं, यह दीप्तिमान रूप नकारात्मकता, आध्यात्मिक अंधकार और अज्ञान को नष्ट करने की उनकी शक्ति को दर्शाता है। जैसे सूर्य की असंख्य किरणें हर कोने को रोशन करती हैं और छाया को दूर करती हैं, वैसे ही कालभैरव की असंख्य चेतना की किरणें आध्यात्मिक मार्ग पर सभी भ्रमों और बाधाओं को भेदती और भंग करती हैं।

सर्वव्यापी उपस्थिति "हजारों किरणें" उनकी सर्वव्यापकता का भी अर्थ है, जो अस्तित्व के हर कोने तक पहुँचती हैं। वह एक ही रूप या स्थान तक सीमित नहीं हैं, बल्कि शुद्ध, दीप्तिमान चेतना के रूप में हर चीज में व्याप्त हैं, हर परमाणु और हर प्राणी को अपनी दिव्य उपस्थिति से प्रकाशित करते हैं।

912. सदाजिष्णवे

जो सदैव विजयी और हमेशा सफल रहते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : सदाजिष्णवे नाम संस्कृत से व्युत्पन्न एक शक्तिशाली यौगिक शब्द है, जो कालभैरव के दिव्य स्वरूप के एक मूल पहलू को दर्शाता है। यह "सदा" (हमेशा, शाश्वत रूप से) और "जिष्णु" (विजयी, विजयी, विजेता) को जोड़ता है।

सदा-विजयी स्वभाव "सदा" इस विजय के शाश्वत और अटूट स्वभाव पर जोर देता है। क्षणिक सफलताओं के विपरीत, कालभैरव की विजय स्थितिजन्य या सामयिक नहीं है; यह उनके अस्तित्व का एक अंतर्निहित, निरंतर गुण है। वे सभी प्रकार की प्रतिकूलता, अज्ञानता और नकारात्मकता पर परम विजेता हैं। यह एक ऐसी शक्ति का तात्पर्य है जो न केवल सर्वोच्च है बल्कि शाश्वत और अपरिवर्तनीय भी है।

बाधाओं और अज्ञानता के विजेता "जिष्णु" उस व्यक्ति को इंगित करता है जो विजयी है। आध्यात्मिक संदर्भ में, यह विजय केवल भौतिक विजय से परे है। कालभैरव बाहरी और आंतरिक दोनों तरह की बाधाओं (विघ्नहर्ता) के विजेता हैं। वे काम (वासना), क्रोध (क्रोध), लोभ (लालच), मोह (भ्रम), मद (अहंकार) और मत्सर (ईर्ष्या) जैसे छह आंतरिक शत्रुओं (षड्रिपु) को पराजित करते हैं। उनका आह्वान करके, भक्त अपनी कमजोरियों और भौतिक दुनिया की चुनौतियों को दूर करने के लिए उनकी शक्ति चाहते हैं।

दिव्य सर्वोच्चता का प्रतीक यह नाम कालभैरव की पूर्ण सर्वोच्चता स्थापित करता है। ऐसी कोई शक्ति, नकारात्मक प्रभाव या विरोधी शक्ति नहीं है जो कभी उनके सामने खड़ी हो सके। वे अधर्म (अधर्म) पर धर्म (धार्मिकता) की, अराजकता पर दिव्य व्यवस्था की अंतिम विजय का प्रतिनिधित्व करते हैं।

विजय के दाता भक्तों के लिए, सदाजिष्णु वह हैं जो विजय प्रदान करते हैं। उपासक अपने प्रयासों में सफलता के लिए, शत्रुओं से सुरक्षा के लिए और जीवन की कठिनाइयों को दूर करने की शक्ति के लिए उनसे प्रार्थना करते हैं। उनकी शाश्वत विजय प्रेरणा का स्रोत और उनके सच्चे अनुयायियों के लिए एक गारंटी बन जाती है कि वे भी उनकी कृपा से अपने आध्यात्मिक और सांसारिक कार्यों में विजय प्राप्त कर सकते हैं।

913. सप्ताये

दिव्य, तीव्र अश्व या सात संख्या वाले को नमन।

विस्तार : सप्तये नाम प्रतीकवाद से समृद्ध है, जो संस्कृत मूल "सप्त" से लिया गया है, जिसका अर्थ "सात" है, और घोड़ों की तीव्र गति का भी संकेत देता है।

संख्या सात: ब्रह्मांडीय महत्व संख्या सात हिंदू दर्शन और कई प्राचीन परंपराओं में गहरा आध्यात्मिक और ब्रह्मांडीय महत्व रखती है। यह कई तरीकों से प्रकट होती है: • सात लोक (सप्त लोक): भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यम्। ये पृथ्वी से लेकर उच्चतम आध्यात्मिक लोकों तक अस्तित्व के विभिन्न तलों का प्रतिनिधित्व करते हैं। • सात समुद्र (सप्त समुद्र): सृष्टि की विशालता और अंतर्संबंध का प्रतीक। • सात ऋषि (सप्त ऋषि): सात महान ऋषि जिन्हें मानवता के पूर्वज और प्राचीन ज्ञान के संरक्षक माना जाता है। • इंद्रधनुष के सात रंग: प्रकाश के स्पेक्ट्रम और मानव शरीर के भीतर विभिन्न ऊर्जा केंद्रों (चक्रों) से संबंधित। • संगीत पैमाने के सात स्वर (सप्त स्वर): ब्रह्मांड की हार्मोनिक संरचना का प्रतिनिधित्व करते हैं। • शरीर के सात घटक (सप्त धातु): रस (प्लाज्मा), रक्त (रक्त), मांस (मांसपेशी), मेद (वसा), अस्थि (हड्डी), मज्जा (मज्जा), शुक्र (प्रजनन ऊतक), जो शारीरिक रूप को बनाए रखते हैं।

इस संदर्भ में, सप्तये के रूप में कालभैरव अस्तित्व के इन सभी सप्तक पहलुओं पर अपनी महारत और अवतार का प्रतीक हैं। वह अंतर्निहित सिद्धांत, एकीकृत शक्ति और ब्रह्मांड के भीतर सात में संरचित सभी का सार हैं। वह पूर्णता और रहस्यमय पूर्णता को समाहित करते हैं।

दिव्य, तीव्र अश्व वैदिक परंपरा में घोड़ा (अश्व) शक्ति, गति, चपलता और जीवन शक्ति का प्रतीक है। यह जीवन शक्ति, आध्यात्मिक ऊर्जा और अनुशासित बुद्धि का प्रतिनिधित्व करता है जो व्यक्ति को उच्च सत्य की ओर ले जाती है। दिव्य घोड़ा अक्सर सूर्य के रथ का प्रतीक होता है, जिसका अर्थ प्रकाश, ज्ञान और अतिक्रमण है। • "दिव्य, तीव्र अश्व" के रूप में, कालभैरव गतिशील ऊर्जा का अवतार हैं जो ब्रह्मांड को आगे बढ़ाती है, अपनी गति और शक्ति से अज्ञानता को नष्ट करती है, और भक्तों को संसार (चक्रीय अस्तित्व) के सागर से पार ले जाती है। यह पहलू समय (काल) के माध्यम से उनके अटूट आंदोलन पर जोर देता है, यह सुनिश्चित करता है कि चक्र शुरू होते हैं और समाप्त होते हैं, और आध्यात्मिक विकास हमेशा जारी रहता है।

संश्लेषण: समय और सार्वभौमिक व्यवस्था के स्वामी इस प्रकार, सप्तये के रूप में, कालभैरव को उस भगवान के रूप में चित्रित किया गया है जो ब्रह्मांडीय सप्तक व्यवस्था का सार है, और वह तीव्र, दिव्य शक्ति है जो समय के माध्यम से इस व्यवस्था का संचालन और अवतार लेती है। वह परम वास्तविकता है जो ब्रह्मांड की पवित्र ज्यामिति और गतिशील प्रवाह को बनाए रखती है।

914. सप्तजनेश्वराय

सात प्रकार के लोगों या सात लोकों के सर्वोच्च स्वामी को नमन।

विस्तार : सप्तजनेश्वर नाम "सप्त," "जन," और "ईश्वर" का एक यौगिक है, जो एक साथ एक गहन और व्यापक प्रभुत्व को दर्शाता है।

सप्त: इस संस्कृत शब्द का अर्थ "सात" है। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान और दर्शन में, संख्या सात का अत्यधिक महत्व है, जो विभिन्न संदर्भों में प्रकट होती है जैसे सात लोक, सात महासागर, सात महाद्वीप, सात ऋषि, और बहुत कुछ।

जन: इस शब्द का अर्थ "लोग," "जनता," या "प्राणी" हो सकता है। व्यापक अर्थ में, यह संवेदनशील प्राणियों की विभिन्न श्रेणियों या यहां तक कि अस्तित्व के विभिन्न तलों को संदर्भित कर सकता है जहाँ ऐसे प्राणी निवास करते हैं।

ईश्वर: भगवान, स्वामी, या सर्वोच्च शासक।

सात लोकों के स्वामी (सप्त लोक) एक प्रमुख व्याख्या यह है कि सप्तजनेश्वर भगवान भैरव को अस्तित्व के सात तलों, या "सप्त लोकों" के सर्वोच्च शासक के रूप में संदर्भित करता है। ये हैं: 1. भूलोक (पृथ्वी तल) 2. भुवर्लोक (वायुमंडल, आत्माओं और दिव्य प्राणियों द्वारा बसा हुआ) 3. स्वर्गलोक (देवताओं का स्वर्ग) 4. महर्लोक (महान ऋषियों का निवास) 5. जनलोक (ब्रह्मा के पुत्रों जैसे शुद्ध लोगों का निवास) 6. तपोलोक (तपस्वियों का निवास) 7. सत्यलोक (ब्रह्मा का निवास, सत्य का उच्चतम तल)

इन सात लोकों के ईश्वर होने के नाते, भैरव अपनी सर्वव्यापी सत्ता को संपूर्ण ब्रह्मांडीय प्रकट सृष्टि पर स्थापित करते हैं, स्थूलतम भौतिक तल से लेकर सूक्ष्मतम आध्यात्मिक लोकों तक। वे सभी आयामों में ब्रह्मांडीय व्यवस्था के परम संयोजक और संरक्षक हैं।

सात प्रकार के प्राणियों के स्वामी एक अन्य व्याख्या "जन" पर केंद्रित है जो प्राणियों के विभिन्न वर्गीकरणों या प्रकारों को संदर्भित करता है। जबकि इस संदर्भ में "सात प्रकार के लोगों" की कोई सार्वभौमिक रूप से निश्चित सूची नहीं है, यह सभी प्रकार के संवेदनशील और असंवेदनशील जीवन, दिव्य, मानव, पशु और प्रेत पर उनके प्रभुत्व का प्रतीक हो सकता है। यह व्याख्या सभी जीवित संस्थाओं के स्वामी के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देती है, चाहे उनका रूप या अस्तित्व का तल कुछ भी हो।

ब्रह्मांडीय व्यापकता का प्रतीक "सप्त जन" की विशिष्ट व्याख्या के बावजूद, यह नाम मौलिक रूप से भैरव की पूर्ण और व्यापक संप्रभुता को व्यक्त करता है। यह सृष्टि के परम शासक के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है, एक अधिष्ठाता देवता जिनकी शक्ति और प्रभाव अस्तित्व के हर कल्पनीय पहलू, प्रकट और अप्रकट, ज्ञात और अज्ञात तक फैले हुए हैं। वे रूपों और अस्तित्व की अवस्थाओं की बहुलता को नियंत्रित करने वाले अद्वितीय प्राधिकारी हैं।

915. संहारककारणाय

जो ब्रह्मांडीय विघटन और विनाश का परम कारण हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : संहार-कारणाय नाम कालभैरव के ब्रह्मांडीय कार्य के एक गहन पहलू को प्रकट करता है, विशेष रूप से ब्रह्मांड के अंतिम विघटन (संहार) में उनकी भूमिका का जिक्र करता है।

संहार: ब्रह्मांडीय विघटन और विनाश संहार (Saṁhāra) ब्रह्मांड के आवधिक विघटन, वापसी या विनाश को संदर्भित करता है। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, सृष्टि (sṛṣṭi), स्थिति (sthiti) और संहार (saṁhāra) परब्रह्म द्वारा निष्पादित चक्रीय प्रक्रियाएँ हैं। जबकि ब्रह्मा निर्माता हैं और विष्णु पालक हैं, शिव, विशेष रूप से अपने उग्र रूपों जैसे कालभैरव में, संहार के सिद्धांत का प्रतीक हैं। यह मनमाना विनाश नहीं है, बल्कि प्रत्येक ब्रह्मांडीय चक्र का एक आवश्यक निष्कर्ष है, सभी प्रकट अस्तित्व का उसके अप्रकट स्रोत में पुन: अवशोषण है। यह सभी रूपों और नामों (नाम-रूप) का अंतिम अंत है।

कारण: अंतिम कारण कारण (Kāraṇa) का अर्थ है "कारण," "वजह," या "उत्पत्ति।" यह कहकर कि कालभैरव "संहार के कारण" हैं, इस बात पर जोर दिया जाता है कि वे केवल विनाश के एक एजेंट नहीं हैं, बल्कि इस ब्रह्मांडीय प्रक्रिया के बहुत ही मौलिक और अंतिम कारण हैं। इसका तात्पर्य है कि संहार उनके अस्तित्व का एक अंतर्निहित पहलू है, एक दिव्य इच्छा या शक्ति जो सभी सृष्टि के समापन का समन्वय करती है। वे केवल कार्य नहीं करते; वे अंतर्निहित सिद्धांत हैं जो इसे आवश्यक बनाते हैं और इसे आरंभ करते हैं।

दार्शनिक महत्व यह नाम कई प्रमुख दार्शनिक बिंदुओं पर प्रकाश डालता है: • अस्तित्व की चक्रीय प्रकृति: यह समय और अस्तित्व की हिंदू समझ को चक्रीय रूप में रेखांकित करता है, जिसमें सृष्टि और विनाश एक ही शाश्वत सिक्के के दो पहलू हैं, दोनों एक ही दिव्य स्रोत से उत्पन्न होते हैं। • उत्कृष्ट शक्ति: कालभैरव, संहार-कारण के रूप में, सभी प्रकट वास्तविकता पर अपनी पूर्ण शक्ति और उत्कृष्टता का प्रदर्शन करते हैं। वे सृष्टि और संरक्षण से परे हैं क्योंकि वे अंततः उन दोनों को भंग कर देते हैं। • मुक्ति: आध्यात्मिक साधकों के लिए, शिव/भैरव का विनाशकारी पहलू आवश्यक रूप से नकारात्मक नहीं है। यह अज्ञान (अविद्या), अहंकार (अहंकार) और कर्म बंधनों के विनाश का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे मुक्ति (मोक्ष) मिलती है। अलग अस्तित्व के भ्रम को नष्ट करके, वे किसी के सच्चे, अप्रकट स्वरूप की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। • समय एक उपभोगकर्ता के रूप में: कालभैरव के काल (समय) के साथ जुड़ाव को देखते हुए, संहार-कारण के रूप में उनकी भूमिका समय के साथ सीधे जुड़ती है, जो सभी चीजों का अंतिम उपभोक्ता और विघटनकर्ता है। समय में जन्मी हर चीज अंततः समय द्वारा निगल ली जाती है।

इस प्रकार, संहार-कारणाय कालभैरव को ब्रह्मांडीय विघटन के पीछे की परम, मूलभूत शक्ति के रूप में पूजता है, एक ऐसा सिद्धांत जो ब्रह्मांडों को समाप्त करता है और, विरोधाभासी रूप से, नई शुरुआत और परम सत्य की प्राप्ति के लिए मार्ग प्रशस्त करता है।

916. शुद्धाय

जो निष्कलंक शुद्ध और अनंतकाल से स्वच्छ हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : शुद्धाय (शुद्धा) नाम सबसे गहरे आध्यात्मिक और आध्यात्मिक स्तर पर पूर्ण और बेदाग पवित्रता की स्थिति को दर्शाता है।

निष्कलंक पवित्रता "शुद्ध" शब्द का सीधा अर्थ है "पवित्र," "स्वच्छ," "निष्कलंक," या "अदूषित।" आध्यात्मिक संदर्भ में, इसका तात्पर्य ऐसी पवित्रता से है जो केवल औपचारिक या शारीरिक नहीं है, बल्कि अस्तित्व के मूल तत्व के लिए मौलिक है। कालभैरव, शुद्ध के रूप में, सभी अपूर्णताओं, मलिनताओं और किसी भी प्रकार की नकारात्मकता से स्वाभाविक रूप से मुक्त हैं।

द्वैत और माया से परे यह पवित्रता भौतिक संसार के द्वैत से परे है। वे तीनों गुणों (सत्व, रजस, तमस) से अप्रभावित हैं और माया (ब्रह्मांडीय भ्रम) के भ्रम और भ्रष्टाचार से अप्रभावित रहते हैं - वे शक्तियाँ जो व्यक्तिगत आत्माओं को बांधती हैं। उनकी पवित्रता एक ऐसी स्थिति है जो कर्म, इच्छा और पीड़ा की पहुँच से परे है।

शाश्वत और सहज पवित्रता ऐसी पवित्रता के विपरीत जो प्रयास या शुद्धिकरण अनुष्ठानों के माध्यम से प्राप्त की जाती है, कालभैरव की पवित्रता सहज और शाश्वत है। वे शुद्ध नहीं होते; वे, अपने स्वभाव से ही, स्वयं पवित्रता हैं। यह सर्वोच्च चेतना के रूप में उनके पारलौकिक और अपरिवर्तनीय स्वरूप पर जोर देता है।

मुक्ति का प्रतीक भक्त के लिए, कालभैरव को शुद्ध के रूप में ध्यान करना आंतरिक शुद्धिकरण की आकांक्षा को प्रेरित करता है। यह आध्यात्मिक अभ्यास के अंतिम लक्ष्य को दर्शाता है: अपने स्वयं के अंतर्निहित, शुद्ध स्वरूप को महसूस करना, जो सर्वोच्च स्व का प्रतिबिंब है, सभी मानसिक और भावनात्मक अशुद्धियों से मुक्त है। इस प्रकार कालभैरव का यह पहलू उस अछूती, प्राचीन चेतना का प्रतिनिधित्व करता है जो अस्तित्व के मूल में निहित है।

917. शत्रुघ्नाय

अपने सभी शत्रुओं का पूर्ण रूप से संहार करने वाले को नमन।

विस्तार : शत्रुघ्नाय नाम संस्कृत के शब्दों "शत्रु" (दुश्मन) और "घ्ना" (संहार करने वाला या नष्ट करने वाला) से लिया गया है। इस नाम का गहरा आध्यात्मिक और दार्शनिक महत्व है, विशेषकर कालभैरव के संदर्भ में।

बाहरी शत्रुओं का संहारक सामान्य स्तर पर, शत्रुघ्न बाहरी विरोधियों, शत्रुओं और बाधाओं के विजेता को संदर्भित करता है। कालभैरव, अपने सुरक्षात्मक पहलू में, अपने भक्तों को हानि, नकारात्मक प्रभावों और दुर्भावनापूर्ण शक्तियों से बचाते हैं। वह वह संरक्षक हैं जो अपने भक्तों की भलाई और आध्यात्मिक प्रगति के लिए खतरों का सक्रिय रूप से सामना करते हैं और उन्हें समाप्त करते हैं। यह सुरक्षा काले जादू, बुरी नज़र और भक्त की ओर निर्देशित नकारात्मक ऊर्जा के अन्य रूपों के प्रभावों को दूर करने तक फैली हुई है।

आंतरिक शत्रुओं का विनाशक अधिक गहराई से, आध्यात्मिक परंपराओं में, सबसे दुर्जेय शत्रु बाहरी नहीं बल्कि आंतरिक होते हैं। ये "आंतरिक शत्रु" या "आंतरिक राक्षस" कामादि षड्रिपु हैं: काम (वासना/इच्छा), क्रोध (गुस्सा), लोभ (लालच), मोह (भ्रम/आसक्ति), मद (अहंकार/गर्व), और मात्सर्य (ईर्ष्या/द्वेष)। कालभैरव, शत्रुघ्न के रूप में, वह परम और अंतिम शक्ति हैं जो भक्तों को इन गहरी जड़ें जमा चुकी नकारात्मकताओं को दूर करने में मदद करते हैं जो आध्यात्मिक प्राप्ति में बाधा डालती हैं और दुख का कारण बनती हैं। उनका आह्वान करके, व्यक्ति मन को शुद्ध करने और इन स्व-निर्मित बाधाओं को पार करने की कोशिश करता है।

अज्ञान (अविद्या) का विजेता आध्यात्मिक दर्शन में परम शत्रु अविद्या या आध्यात्मिक अज्ञान है, जो प्राणियों को उनके सच्चे दिव्य स्वरूप और अस्तित्व की अंतर्निहित एकता को पहचानने से रोकता है। कालभैरव, अपने उग्र रूप और परिवर्तनकारी ऊर्जा के माध्यम से, इस अज्ञान को मिटाने में मदद करते हैं, जिससे आत्मज्ञान और मुक्ति (मोक्ष) प्राप्त होती है। वह माया के पर्दों को काटते हैं जो अलगाव और द्वैत की झूठी धारणाएं पैदा करते हैं।

दिव्य न्याय और विनाश का प्रतीक यह नाम कालभैरव की ब्रह्मांडीय व्यवस्था और न्याय के प्रवर्तक के रूप में भूमिका को भी रेखांकित करता है। वह निडर होकर उन सभी को समाप्त करते हैं जो अधर्मी, अन्यायपूर्ण और धर्म के लिए विघटनकारी हैं। यह केवल दंड के बारे में नहीं है, बल्कि संतुलन और सद्भाव को बहाल करने के लिए असमर्थक शक्तियों के आवश्यक विनाश के बारे में है, जो काल (समय) के रूप में उनके स्वभाव को प्रतिध्वनित करता है, जो अंततः सभी अधर्म को निगल जाता है।

918. स्वर्णदायकाय

स्वर्ण और महान धन प्रदान करने वाले उदार दाता को नमन।

विस्तार : स्वर्णदायकाय नाम संस्कृत के शब्दों स्वर्ण, दायक और चतुर्थी विभक्ति के अंत 'आय' का एक यौगिक है।

स्वर्ण (Svarṇa): सोना। हिंदू विचार में, सोना केवल एक कीमती धातु नहीं है; यह पवित्रता, अविनाशिता, दिव्य प्रकाश, आध्यात्मिक धन और सूर्य के सार का प्रतीक है। यह समृद्धि, शुभता और देवताओं के निवास से जुड़ा है।

दायक (Dāyaka): देने वाला, प्रदान करने वाला, या अनुदान देने वाला।

सोने और भौतिक धन का दाता भौतिक स्तर पर, यह नाम कालभैरव को लौकिक समृद्धि के दाता के रूप में दर्शाता है। भक्त धन, प्रचुरता और वित्तीय संकट से मुक्ति के लिए उनकी प्रार्थना करते हैं। उनके स्वभाव का यह पहलू इस बात पर प्रकाश डालता है कि यद्यपि वे विनाश का प्रतीक हैं, वे अपने भक्तों का पालन-पोषण भी करते हैं, उनकी सांसारिक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। सोना प्रदान करने की उनकी क्षमता सभी प्रकार के भौतिक संसाधनों पर नियंत्रण और धन उत्पन्न करने तथा वितरित करने की शक्ति का तात्पर्य है।

आध्यात्मिक स्वर्ण का दाता भौतिक सोने के शाब्दिक अर्थ से परे, स्वर्ण आध्यात्मिक धन का भी प्रतिनिधित्व करता है: ज्ञान, बुद्धि, आंतरिक शांति और दिव्य अनुभव जो सोने के समान ही कीमती और स्थायी हैं। इस संदर्भ में, कालभैरव "आध्यात्मिक सोना" प्रदान करते हैं - आत्म-साक्षात्कार और मुक्ति का अंतिम, अविनाशी खजाना। वे मन को शुद्ध करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे सोना अग्नि से शुद्ध होता है, जिससे आध्यात्मिक समृद्धि और ज्ञान की स्थिति प्राप्त होती है।

शुभता और पवित्रता का प्रतीक स्वर्ण के दाता के रूप में, कालभैरव शुभता और पवित्रता से भी जुड़े हैं। सोना पवित्र माना जाता है और लगभग सभी हिंदू अनुष्ठानों में इसका उपयोग किया जाता है। सोना प्रदान करके, वे भक्तों को उनकी कर्मिक अशुद्धियों से शुद्ध करते हैं और दिव्य कृपा और कल्याण की अवधि का सूत्रपात करते हैं। यह नाम उनके भयानक स्वरूप के बावजूद उनके परोपकारी पहलू पर जोर देता है, जहाँ वे उन लोगों के लिए एक रक्षक और प्रदाता के रूप में कार्य करते हैं जो उनकी शरण लेते हैं।

919. सुरेशाय

सभी देवताओं के सर्वोच्च स्वामी और प्रमुख को नमन।

विस्तार : सुरेशाय नाम दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: सुर और ईश।

सुर (Sura): यह शब्द "देवताओं," "दिव्यताओं," या "आकाशीय प्राणियों" को संदर्भित करता है। हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में, सुर परोपकारी देवता हैं जो उच्च लोकों में निवास करते हैं और धर्म का पालन करते हैं। उन्हें अक्सर असुरों (राक्षसों) के विपरीत देखा जाता है।

ईश (Īsha): इस शब्द का अर्थ है "स्वामी," "मालिक," "शासक," या "प्रमुख।" यह सर्वोच्चता, अधिकार और परम नियंत्रण को दर्शाता है।

देवताओं के स्वामी (Lord of the Gods) जब संयुक्त किया जाता है, तो सुरेशाय का शाब्दिक अर्थ है "सुरों के स्वामी" या "देवताओं के प्रमुख।" यह नाम कालभैरव को अन्य सभी देवताओं, जिनमें हिंदू पंथ के प्रमुख देवता भी शामिल हैं, पर सर्वोच्च अधिकार की स्थिति में रखता है। यह दर्शाता है कि उच्चतम आकाशीय प्राणी भी उनकी शक्ति के अधीन हैं और उनके दिव्य विधान के तहत कार्य करते हैं।

सर्वोच्च नियंत्रक (Supreme Controller) यह उपाधि कालभैरव की भूमिका को केवल शिव के एक भयंकर रूप के रूप में ही नहीं, बल्कि परम ब्रह्मांडीय नियंत्रक के रूप में भी रेखांकित करती है। जबकि अन्य देवता ब्रह्मांड के विशिष्ट क्षेत्रों या पहलुओं को नियंत्रित कर सकते हैं, कालभैरव, सुरेशाय के रूप में, वह सर्वोपरि संप्रभु हैं जो सभी देवताओं के कार्यों का संचालन करते हैं। उनकी शक्ति अन्य सभी देवताओं की शक्तियों से परे और उन्हें समाहित करती है।

ब्रह्मांडीय पदानुक्रम (Cosmic Hierarchy) सुरेशाय नाम शैव धर्म के अनुसार ब्रह्मांड की पदानुक्रमित संरचना को पुष्ट करता है, जहाँ शिव, अपने विभिन्न रूपों में कालभैरव सहित, परम ब्रह्म (Parabrahman) हैं जिनसे अन्य सभी देवता उत्पन्न होते हैं और जिनके प्रति वे अंततः अपने अस्तित्व और शक्ति के ऋणी हैं। यह दिव्य क्षेत्र पर उनके पूर्ण और निर्विवाद प्रभुत्व को दर्शाता है।

९२०. शरणाय

परम आश्रय प्रदान करने वाले, पूर्ण सुरक्षा और संरक्षण देने वाले को नमन।

विस्तार : शरणाय नाम संस्कृत शब्द 'शरण' से लिया गया है।

शरण: यह शब्द "आश्रय," "शरणस्थल," "संरक्षण," "सहायता," या "शरण" को दर्शाता है। यह एक ऐसे स्थान या व्यक्ति का वर्णन करता है जिसके पास कोई सुरक्षा और बचाव के लिए जा सकता है।

परम आश्रय और रक्षक जब भगवान कालभैरव पर लागू होता है, तो शरणाय इंगित करता है कि वे सभी प्राणियों के लिए सर्वोच्च और परम आश्रय हैं। अपने सबसे भयंकर रूप में भी, वे एक परोपकारी रक्षक हैं। जब कोई उनके प्रति समर्पण करता है, तो उसे सभी भय, खतरों और adversities (विपत्तियों) से पूर्ण सुरक्षा प्रदान की जाती है, चाहे वे लौकिक हों या आध्यात्मिक। वे ही हैं जो अपने भक्तों को बिना किसी असफलता के आश्रय और सुरक्षा प्रदान करते हैं।

भय का निवारण कालभैरव की शरण लेना अपने अहंकार और सभी चिंताओं को दिव्य सत्ता को समर्पित करने का कार्य है। एक भयानक देवता के रूप में उनका स्वरूप विरोधाभासी रूप से उनके भक्तों को उनकी सुरक्षा का आश्वासन देता है; जो उन पर निर्भर करते हैं उन्हें किसी और चीज़ से डरने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वे स्वयं परम शक्ति के अवतार हैं जो सभी खतरों से परे है। वे न केवल बाहरी शत्रुओं को नष्ट करते हैं बल्कि आंतरिक भय, संदेह और कर्म के बोझ को भी नष्ट करते हैं।

आध्यात्मिक आश्रय शारीरिक सुरक्षा से परे, शरण आध्यात्मिक आश्रय को भी इंगित करता है। मार्ग पर चलने वाले साधक के लिए, कालभैरव मोक्ष के लिए अंतिम उपाय का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनकी शरण लेने से, व्यक्ति जन्म और मृत्यु के चक्रों से, अज्ञान (अविद्या) से और सांसारिक दुखों से आश्रय पाता है। वे भक्त को उनकी आध्यात्मिक यात्रा पर मार्गदर्शन और सुरक्षा प्रदान करते हैं, उन्हें परम सत्य और आत्म-साक्षात्कार की ओर ले जाते हैं। इस प्रकार, वे आत्मा के लिए आश्रय हैं।

९२१. शर्मणे

समस्त सुख, आनंद और संरक्षण के स्रोत को नमन।

विस्तार : शर्मणे (Śarmaṇe) नाम संस्कृत मूल "शर्म" से लिया गया है, जिसका सीधा अर्थ है खुशी, आनंद, परमानंद, सुख, और आश्रय या सुरक्षा। यह नाम कालभैरव के परोपकारी और सुरक्षात्मक पहलुओं को गहराई से समाहित करता है, जो अक्सर उनके उग्र रूप से ढके रहते हैं।

सुख और आनंद का स्रोत शर्मणे इंगित करता है कि कालभैरव खुशी, शांति और आध्यात्मिक आनंद के परम मूल और प्रदाता हैं। यद्यपि उनका रूप भयानक हो सकता है, भक्तों के लिए उनका अंतिम उद्देश्य उन्हें सांसारिक और अस्तित्वगत दोनों तरह के कष्टों से मुक्त करना है, जिससे उन्हें गहरी आंतरिक संतुष्टि (आनंद) की स्थिति की ओर ले जाया जा सके। यह खुशी केवल क्षणिक इंद्रिय सुख नहीं है, बल्कि एक गहरा, स्थायी आनंद है जो आध्यात्मिक बोध और भय तथा कर्म से मुक्ति से उत्पन्न होता है।

सुरक्षा और आश्रय के दाता "शर्म" शब्द का अर्थ आश्रय, शरण और सुरक्षा भी है। इस संदर्भ में, कालभैरव सभी प्राणियों और ब्रह्मांड के सर्वोच्च रक्षक (रक्षक) हैं। वे उन लोगों को एक सुरक्षित आश्रय प्रदान करते हैं जो उनमें शरण लेते हैं, उन्हें दुर्भावनापूर्ण शक्तियों, खतरों और उनके कार्यों के परिणामों से बचाते हैं। शर्मणे की तलाश करना दिव्य अभयारण्य की तलाश करना है, एक आध्यात्मिक शरण जहां व्यक्ति सभी प्रतिकूलताओं, दृश्य और अदृश्य दोनों से सुरक्षित रहता है।

बाधाओं को दूर करने वाले सुख और सुरक्षा के दाता के रूप में, वे स्वाभाविक रूप से उन बाधाओं को दूर करते हैं जो आध्यात्मिक प्रगति और सांसारिक कल्याण में बाधा डालती हैं। उनमें शरण लेने से, भक्त अपने मार्ग को स्पष्ट पाते हैं, जिससे वे सद्भाव और शांति की स्थिति का अनुभव कर पाते हैं। यह सुरक्षात्मक पहलू एक संरक्षक देवता के रूप में उनकी भूमिका को पुष्ट करता है, विशेष रूप से नकारात्मक ऊर्जाओं और कर्मों के बोझ के खिलाफ।

भैरव का विरोधाभास यह नाम भैरव के विरोधाभासी स्वरूप को उजागर करता है। जबकि वे काल (समय/मृत्यु) हैं और उग्र विनाश का प्रतीक हैं, वे शर्मणे भी हैं, जो परम सुख और सुरक्षा के दाता हैं। यह द्वैत यह दर्शाता है कि सच्चा आनंद और स्थायी शांति केवल अज्ञान, अहंकार और आसक्ति के विघटन के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है, एक ऐसी प्रक्रिया जो शुरू में "भयानक" लग सकती है लेकिन अंततः मुक्ति और गहन आनंद की ओर ले जाती है।

922. सर्वस्मै

उस परब्रह्म को नमन जो सब कुछ है, जो संपूर्ण है, जो अस्तित्व की समग्रता है।

विस्तार : सर्वस्मै नाम, संस्कृत शब्द 'सर्वं' से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है "सभी को," "सब कुछ को," या "संपूर्ण।" जब यह भगवान कालभैरव पर लागू होता है, तो यह सर्वोच्च सत्ता के रूप में उनके पूर्ण और सर्व-समावेशी स्वरूप को व्यक्त करता है।

सर्व-समावेशी वास्तविकता सर्वस्मै का अर्थ है कि कालभैरव केवल अस्तित्व का एक हिस्सा नहीं हैं, बल्कि वे अस्तित्व की संपूर्णता हैं। वे सभी के आधार, स्रोत, सार और अंतिम गंतव्य हैं। इसमें सभी रूप, सभी नाम, सभी ऊर्जाएं, सभी चेतना और सभी पदार्थ शामिल हैं—दृश्य और अदृश्य, व्यक्त और अव्यक्त। वे स्थान, समय और कार्य-कारण की सभी सीमाओं को पार करते हैं, फिर भी विरोधाभासी रूप से, वे सृष्टि के प्रत्येक परमाणु और प्रत्येक क्षण में भी अंतर्निहित हैं।

सत्ता की समग्रता यह नाम उपनिषदों में वर्णित ब्रह्म, परम सत्य के रूप में उनके स्वरूप पर जोर देता है। उनके बाहर कुछ भी नहीं है; वे अपने सबसे शक्तिशाली और गतिशील रूप में 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' ("यह सब निश्चित रूप से ब्रह्म है") हैं। उनका अस्तित्व ब्रह्मांड की संपूर्णता को समाहित करता है, सूक्ष्मतम कणों से लेकर विशालतम आकाशगंगाओं तक, जीवन के निम्नतम रूपों से लेकर चेतना की उच्चतम अवस्थाओं तक।

विरोधाभासों का एकीकरण 'सब कुछ' के रूप में, कालभैरव सभी स्पष्ट द्वंद्वों की एकता का प्रतीक हैं: सृजन और विनाश, अच्छा और बुरा, प्रकाश और अंधकार, स्थिरता और गति। वे अंतिम आधार हैं जहाँ सभी भेद घुल जाते हैं, अस्तित्व की अंतर्निहित विलक्षणता को प्रकट करते हैं। यह पहलू उनके भैरव रूप में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जो अक्सर भयावह प्रतीत होता है फिर भी परम मुक्ति प्रदान करता है। जैसे 'सब कुछ' में सुखद और भयावह दोनों शामिल हैं, वे दिव्य के परोपकारी और क्रोधी दोनों पहलुओं का प्रतीक हैं।

प्रणाम और बोध सर्वस्मै को प्रणाम करना इस परम एकात्मता को स्वीकार करना है। यह सब कुछ में और स्वयं के भीतर दिव्य को देखने का एक आध्यात्मिक अभ्यास है, जिससे यह बोध होता है कि व्यक्तिगत आत्मा (आत्मान) अंततः सार्वभौमिक आत्मा (ब्रह्म) के साथ एक है, जिसका प्रतिनिधित्व भगवान कालभैरव अपने 'सर्व' के रूप में करते हैं।

923. वेदाय

पवित्र वेदों के साक्षात् स्वरूप को नमन।

विस्तार : वेदाय नाम उस परम सत्ता को संदर्भित करता है जो सनातन धर्म के पवित्र ग्रंथ वेदों का साक्षात् स्वरूप और स्रोत है।

पवित्र ज्ञान का मानवीकरण वेद का शाब्दिक अर्थ "ज्ञान" या "बुद्धि" है। वेदों को अपौरुषेय (मानव निर्मित नहीं) रहस्योद्घाटन माना जाता है, जिसमें ब्रह्मांड, धर्म और आध्यात्मिक मार्ग के बारे में शाश्वत सत्य समाहित हैं। जब शिव को वेदाय के रूप में संबोधित किया जाता है, तो इसका अर्थ है कि वे इस शाश्वत, पवित्र ज्ञान के परम भंडार और मानवीकरण हैं। वे केवल वेदों के ज्ञाता नहीं हैं; वे स्वयं वेद 'हैं'।

समस्त ज्ञान का स्रोत इसका तात्पर्य है कि ज्ञान की सभी शाखाएँ, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों, अंततः उनसे ही उत्पन्न होती हैं। वेदों को परम सत्ता की श्वास माना जाता है, और इस प्रकार, शिव को वेदाय के रूप में संबोधित करना सभी पारलौकिक ज्ञान के मूल बिंदु के रूप में उनकी भूमिका को स्वीकार करता है। वे परम गुरु हैं, जिनसे समस्त समझ प्रवाहित होती है।

मार्गदर्शन और रहस्योद्घाटन चूँकि वेद मानवीय आचरण, आध्यात्मिक अभ्यासों और ब्रह्मांडीय व्यवस्था को समझने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, वेदाय उस दिव्य सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करते हैं जो समझ का यह प्रकाश प्रदान करता है। वे वैदिक ज्ञान द्वारा प्रकट किया गया मार्ग, मार्गदर्शक और लक्ष्य हैं।

परात्परता और अंतर्निहितता यह नाम शिव के द्वैत स्वरूप को उजागर करता है, जो परात्पर (सभी समझ से परे, शाश्वत सत्यों का स्रोत) और अंतर्निहित (पवित्र ग्रंथों के भीतर उपस्थित, मानवता के लिए उनके ज्ञान को सुलभ बनाना) दोनों हैं।

924. सताङ्गतये

उन (कालभैरव) को नमन, जो सभी पुण्यात्मा और सद्गुणी प्राणियों के परम लक्ष्य हैं।

विस्तार : सतांगतायै नाम संस्कृत शब्दों 'सत्' और 'अंग' से लिया गया है, जो परम लक्ष्य को दर्शाता है।

सत्: इस शब्द के हिंदू दर्शन में गहन और बहुआयामी अर्थ हैं। यह संदर्भित करता है: • सत्य, वास्तविकता, या अस्तित्व: जो शाश्वत, अपरिवर्तनीय और निरपेक्ष है। यह सभी अस्तित्व का मूलभूत सार है, जो समय या क्षय से अप्रभावित है। • अच्छाई या सदाचार: जो नैतिक रूप से सही, धर्मी और परोपकारी है। यह आचरण और इरादे की पवित्रता को दर्शाता है। • अच्छे प्राणी या सदाचारी व्यक्ति: वे व्यक्ति जो सत्य और अच्छाई के इन गुणों को धारण करते हैं; सदाचारी, बुद्धिमान और धर्मी।

अंग: इस शब्द का मुख्य रूप से अर्थ है: • भाग या अवयव: एक पूर्ण का एक घटक। • लक्ष्य, उद्देश्य या वस्तु: अंतिम गंतव्य या प्रयोजन।

इसलिए, जब संयुक्त किया जाता है, तो सतांग उन सभी के लिए परम लक्ष्य या सार को संदर्भित करता है जो अच्छा, सच्चा और वास्तविक है।

सदाचारियों के लिए परम लक्ष्य सदाचारी प्राणियों (सत्) के लिए, भगवान कालभैरव परम आश्रय और गंतव्य (अंग) हैं। इसका अर्थ है कि धार्मिकता, सत्य और वास्तविक अस्तित्व का मार्ग अंततः उन्हीं तक ले जाता है। वे सर्वोच्च सत्य और सर्वोच्च अच्छाई के प्रतीक हैं जिसके लिए आध्यात्मिक साधक प्रयास करते हैं। उन्हें प्राप्त करना मुक्ति (मोक्ष) और परम वास्तविकता के साथ मिलन प्राप्त करना है।

समस्त अच्छाई का प्रतीक यह नाम यह भी दर्शाता है कि भगवान कालभैरव स्वयं सभी सत् का सार हैं - वे स्वयं सत्य, अच्छाई और वास्तविकता हैं। वे उस शाश्वत सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सभी सदाचारी कार्यों और शुद्ध इरादों के मूल में है। जो भक्त सर्वोच्च अच्छाई से जुड़ने की तलाश करते हैं, वे वास्तव में उन्हीं की तलाश कर रहे हैं।

धार्मिकों के उद्धारकर्ता और संरक्षक सदाचारियों के परम लक्ष्य के रूप में, वे उनके संरक्षक और मार्गदर्शक के रूप में भी कार्य करते हैं। वे सुनिश्चित करते हैं कि जो धर्म के मार्ग पर चलते हैं, उन्हें अंततः पुरस्कृत किया जाए और उनकी दिव्य उपस्थिति में लाया जाए। यह इस बात का आश्वासन देता है कि एक अराजक दुनिया में भी, उन लोगों के लिए एक परोपकारी, सच्चा गंतव्य है जो धार्मिक जीवन का पालन करते हैं।

925. संवृताय

जो सामान्य दृष्टि से छिपा हुआ, आच्छादित और अगोचर है, उन्हें नमन।

विस्तार : संवृताय नाम संस्कृत मूल "वृ" (ढकना, घेरना, छिपाना) से लिया गया है, जिसमें उपसर्ग "सम्" (पूरी तरह से, पूर्ण रूप से) जुड़ा है, जिसका अर्थ है "पूरी तरह से ढका हुआ," "आच्छादित," या "छिपा हुआ।" यह नाम दिव्य के एक गहन पहलू पर प्रकाश डालता है - इसकी अंतर्निहित अज्ञेयता और संवेदी धारणा तथा सामान्य मानवीय समझ से परे इसका अस्तित्व।

आच्छादित वास्तविकता संवृत का अर्थ है कि भगवान शिव की परम वास्तविकता, विशेष रूप से उनके भयंकर भैरव रूप में, केवल अनुभवजन्य अवलोकन या बौद्धिक विश्लेषण के माध्यम से सीधे सुलभ नहीं है। यह उन लोगों से छिपा हुआ है जिनमें आवश्यक आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि, मन की पवित्रता या भक्ति की कमी है। यह छिपाना जानबूझकर छिपाने का कार्य नहीं है, बल्कि सर्वोच्च सत्ता के उत्कृष्ट स्वभाव का परिणाम है, जो भौतिक दुनिया और वातानुकूलित मन की सीमाओं से परे है। अदीक्षित या सांसारिक भ्रम में डूबे हुए लोग इस सत्य को समझने में असमर्थ हैं।

सामान्य दृष्टि से छिपा हुआ यह गुण इस बात पर जोर देता है कि भैरव का वास्तविक रूप और सार सूक्ष्म (सूक्ष्म) और गहन रूप से आध्यात्मिक है। उन्हें केवल पांच इंद्रियों (ज्ञानेंद्रियों) या तर्कसंगत विचार (बुद्धि) से नहीं समझा जा सकता है। उनकी उपस्थिति गहरी आत्मनिरीक्षण, ध्यान और आध्यात्मिक अभ्यास (साधना) के माध्यम से महसूस और समझी जाती है, जो धीरे-धीरे अज्ञान (अविद्या) और भ्रम (माया) के पर्दों को हटाती है।

अव्यक्त (Avyakta) व्यापक दार्शनिक अर्थ में, संवृत अव्यक्त, दिव्य की अप्रकट या असीमित अवस्था की अवधारणा से संबंधित है। सृष्टि से पहले, या प्रकट ब्रह्मांड से परे, शिव एक आदिम, असीमित अवस्था में मौजूद हैं जो सभी अभिव्यक्तियों से आच्छादित है। यह छिपा हुआ पहलू वह स्रोत है जिससे सभी सृष्टि उत्पन्न होती है और जिसमें यह अंततः विलीन हो जाती है।

गूढ़ ज्ञान यह नाम यह भी दर्शाता है कि भैरव का ज्ञान गूढ़ और पवित्र है, जो केवल एक गुरु की कृपा से योग्य शिष्य को ही प्रकट होता है। यह सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित नहीं होता है बल्कि आध्यात्मिक ज्ञान के आंतरिक कक्षों में निहित है। संवृत को वास्तव में जानना आत्म-खोज की यात्रा पर निकलना है, जो स्वयं के भीतर दिव्य की प्राप्ति की ओर ले जाता है, सभी बाहरी रूपों और अवधारणाओं को पार करते हुए।

926. असंवृताय

जो अपने भक्तों के लिए पूरी तरह से अनावृत, खुले और प्रकट हैं, उन (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : असम्वृताय नाम संस्कृत शब्द "असम्वृत" से लिया गया है, जिसमें नकारात्मक उपसर्ग "अ" और "संवृत" शामिल है।

अप्रकट और खुला "संवृत" का अर्थ है छिपा हुआ, गुप्त, ढका हुआ या आवरण से ढका हुआ। इसलिए, "असम्वृत" का शाब्दिक अर्थ है छिपा हुआ नहीं, गुप्त नहीं, अनावृत या खुले तौर पर प्रकट।

यह नाम दर्शाता है कि भगवान कालभैरव हैं: • पूर्णतः प्रकट: कई देवताओं के विपरीत, जिनके वास्तविक रूप या शक्तियाँ अक्सर मानवीय धारणा से छिपी रहती हैं, भैरव अपने सच्चे भक्तों के लिए पूरी तरह से अप्रकट हैं। उनका स्वरूप, उनकी शक्ति और उनकी उपस्थिति पूर्णतः प्रकट और सुलभ हैं। • प्रकट और सुलभ: यह पहलू उनकी प्रत्यक्ष और तत्काल उपस्थिति पर जोर देता है। जो लोग सच्ची भक्ति के साथ उनके पास आते हैं, उनके और देवत्व के बीच कोई बाधा या आवरण नहीं होता है। वे अपनी कृपा या अपने वास्तविक रूप को नहीं छिपाते हैं। • अपने न्याय में पारदर्शी: न्याय के वितरक और "दण्डपाणि" (दण्ड धारण करने वाले) के रूप में उनकी भूमिका में, उनके कार्य रहस्य में छिपे नहीं होते हैं, बल्कि अपने उद्देश्य और परिणाम में स्पष्ट होते हैं, जो ब्रह्मांडीय नियम और धर्म को बनाए रखते हैं।

अपने भक्तों के लिए कोई छिपा हुआ पहलू नहीं यह नाम भक्तों को आश्वस्त करता है कि कालभैरव के पास उन लोगों से कोई छिपा हुआ एजेंडा या दुर्गम पहलू नहीं है जो वास्तव में उन्हें खोजते हैं। वे अपनी पूरी महिमा और शक्ति में स्वयं को प्रकट करते हैं, बिना किसी भेष या भ्रम के स्पष्टता, मार्गदर्शन और सुरक्षा प्रदान करते हैं। यह खुलापन देवता के साथ एक गहरे आध्यात्मिक संबंध के लिए एक सीधा और अबाधित मार्ग को बढ़ावा देता है।

927. शिल्पिने

सृष्टि के सर्वोच्च शिल्पकार, ब्रह्मांड के कुशल निर्माता को नमन।

विस्तार : शिल्पिने (Śilpine) नाम संस्कृत शब्द शिल्पिन् (Śilpin) से लिया गया है, जिसका अर्थ कलाकार, कारीगर, शिल्पकार या निर्माता होता है। जब यह शब्द कालभैरव पर लागू होता है, तो यह अर्थ को ब्रह्मांडीय पैमाने पर ऊपर उठाता है, उन्हें ब्रह्मांड के परम निर्माता, मूर्तिकार और वास्तुकार के रूप में चित्रित करता है।

दिव्य वास्तुकार (The Divine Architect) शिल्पिने के रूप में, कालभैरव केवल एक विनाशकारी शक्ति नहीं हैं, बल्कि सर्वोच्च निर्माता भी हैं। यह हिंदू दार्शनिक सिद्धांत को उजागर करता है कि सृजन और विनाश एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, दोनों ब्रह्मांडीय लीला (Lila) के आवश्यक पहलू हैं। वह वह स्वामी शिल्पकार हैं जो ब्रह्मांड की भव्य आकाशगंगाओं से लेकर सूक्ष्मतम कणों तक, पूरे ब्रह्मांड को अद्वितीय कौशल और सटीकता के साथ डिजाइन, आकार और निर्मित करते हैं। उनकी कला प्रकृति के जटिल संतुलन, जीवन की जटिल संरचनाओं और ब्रह्मांड की अंतर्निहित व्यवस्था में प्रकट होती है।

भ्रम और रूप के स्वामी (Master of Illusion and Form) व्यापक अर्थ में, शिल्पिने उनकी निराकार आदिम पदार्थ से घटनात्मक दुनिया के विविध रूपों को प्रकट करने की क्षमता को इंगित करता है। यह माया (Maya), दिव्य भ्रम से भी संबंधित हो सकता है, जहाँ वह, परम कलाकार के रूप में, अस्तित्व के जटिल जाल का निर्माण करते हैं जो उनके सच्चे स्वरूप को छुपाता और प्रकट करता है। ब्रह्मांड में हर रूप, हर संरचना, हर घटना उनकी दिव्य शिल्प कौशल की अभिव्यक्ति है।

पूर्ण सृजन का प्रतीक (Symbol of Perfect Creation) यह नाम उनके सृजन में पूर्णता का अर्थ है। ब्रह्मांड में एक अंतर्निहित सौंदर्य और कार्यात्मक सुंदरता है, जो शिल्पिने की दिव्य कलात्मकता का प्रमाण है। उनके रचनात्मक प्रयास यादृच्छिक नहीं हैं, बल्कि एक गहन ब्रह्मांडीय डिजाइन का पालन करते हैं, जो सुंदरता और व्यवस्था दोनों को प्रकट करते हैं। यह धर्म (Dharma) की अवधारणा से भी जुड़ा है, जो ब्रह्मांड की संरचना और कार्य को नियंत्रित करने वाला अंतर्निहित ब्रह्मांडीय नियम है, यह सब दिव्य वास्तुकार द्वारा व्यवस्थित किया गया है।

928. सिद्धिदाय

समस्त अलौकिक शक्तियों और सिद्धियों को प्रदान करने वाले (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : सिद्धिदाय (Siddhidaya) नाम दो संस्कृत शब्दों से बना है: सिद्धि और दाय।

सिद्धि: इस शब्द के कई गहरे अर्थ हैं। • पूर्णता, उपलब्धि: यह किसी भी वांछित लक्ष्य की प्राप्ति को दर्शाता है, चाहे वह आध्यात्मिक हो या भौतिक। • अलौकिक शक्ति: योग और तांत्रिक परंपराओं में, सिद्धियाँ असाधारण या चमत्कारी क्षमताएँ होती हैं जो उन्नत आध्यात्मिक अभ्यास से उत्पन्न होती हैं, जैसे टेलीपैथी (दूरसंवेदन), लेविटेशन (हवा में उठना), सर्वज्ञता, या कोई भी रूप धारण करने की क्षमता। • आध्यात्मिक बोध: अंततः, सिद्धि सर्वोच्च आध्यात्मिक उपलब्धि को संदर्भित करती है, जो आत्म-साक्षात्कार या मुक्ति (मोक्ष) है।

दाय: देने वाला, प्रदान करने वाला, दाता, या वह जो प्रदान करता है।

आध्यात्मिक और भौतिक सफलता के दाता "सिद्धिदाय" के रूप में, कालभैरव को सभी प्रकार की सिद्धियों के परम दाता के रूप में पूजा जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि वे सांसारिक सफलताओं (जैसे समृद्धि, संतान और शत्रुओं पर विजय) और, इससे भी महत्वपूर्ण बात, आध्यात्मिक पूर्णता दोनों को प्रदान कर सकते हैं। सच्चे साधक के लिए, इसका अर्थ है कि वे गहन ध्यान, अंतर्दृष्टि और अंततः ज्ञानोदय के लिए आवश्यक क्षमताएं प्रदान करते हैं।

अलौकिक शक्तियों का स्रोत अलौकिक शक्तियों को प्रदान करने की उनकी क्षमता ब्रह्मांडीय शक्तियों और ब्रह्मांड की सूक्ष्म ऊर्जाओं पर उनके पूर्ण प्रभुत्व का सीधा प्रतिबिंब है। ये शक्तियाँ, जबकि कभी-कभी मुक्ति के मार्ग में बाधा के रूप में देखी जाती हैं, एक अत्यधिक शुद्ध और शक्तिशाली आध्यात्मिक ऊर्जा की स्वाभाविक अभिव्यक्तियाँ भी हैं, जिसे वे नियंत्रित करते हैं और प्रदान कर सकते हैं।

पूर्णता के सूत्रधार अंततः, सिद्धिदाय भक्तों को उनके आध्यात्मिक जीवन में सर्वोच्च पूर्णता प्राप्त करने में सक्षम बनाने में उनकी भूमिका को संदर्भित करता है। वे बाधाओं को दूर करने में मदद करते हैं और योग और तंत्र के अभ्यासकर्ताओं के लिए उनकी आंतरिक दिव्य क्षमताओं को अनलॉक करने और आध्यात्मिक बोध और मुक्ति के अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक कृपा प्रदान करते हैं। वे सुनिश्चित करते हैं कि जो लोग भक्ति के साथ उनकी पूजा करते हैं, वे न केवल संरक्षित होंगे बल्कि अपने उच्चतम संभव कल्याण को प्राप्त करने के लिए सशक्त भी होंगे।

929. स्वर्णसिद्धिदाय

स्वर्ण बनाने की जादुई शक्ति प्रदान करने वाले को नमन।

विस्तार : स्वर्णसिद्धिदाय नाम एक शक्तिशाली यौगिक है जो एक विशिष्ट, फिर भी अंततः प्रतीकात्मक, दिव्य क्षमता को उजागर करता है। इसमें स्वर्ण (सोना), सिद्धि (पूर्णता, उपलब्धि, जादुई शक्ति), और दाय (देने वाला, प्रदान करने वाला) शामिल हैं।

स्वर्ण की शक्ति शाब्दिक रूप से, स्वर्णसिद्धिदाय का अर्थ है "सोना बनाने की शक्ति प्रदान करने वाला।" प्राचीन भारतीय रसायन विज्ञान (रसायन) में, आधार धातुओं को सोने में बदलना एक उच्च सिद्धि, एक गहन आध्यात्मिक और भौतिक उपलब्धि माना जाता था। यह केवल धन प्राप्त करने के बारे में नहीं था, बल्कि अक्सर एक व्यक्ति के आध्यात्मिक शुद्धिकरण और परिवर्तन का प्रतीक था - अहंकार और अशुद्ध चेतना के 'आधार धातु' को शुद्ध, प्रबुद्ध चेतना के 'सोने' में बदलना। इस संदर्भ में, सोना आध्यात्मिक शुद्धता, अविनाशिता और परम मूल्य का प्रतिनिधित्व करता है।

सिद्धियों का दाता भगवान शिव, और परिणामस्वरूप भैरव, सभी सिद्धियों के परम स्रोत हैं। ये केवल भौतिक शक्तियाँ नहीं हैं बल्कि आध्यात्मिक पूर्णताएँ भी हैं, असाधारण क्षमताएँ जो गहन आध्यात्मिक अभ्यासों और दिव्य कृपा से उत्पन्न होती हैं। "स्वर्ण की सिद्धि" प्रदान करके, भैरव सभी प्रकार की शक्ति पर अपने प्रभुत्व और अपने भक्तों को सबसे प्रतिष्ठित और चमत्कारी उपलब्धियाँ प्रदान करने की अपनी क्षमता को दर्शाते हैं।

प्रतीकात्मक व्याख्या दार्शनिक रूप से, इस नाम की कई तरह से व्याख्या की जा सकती है: 1. आध्यात्मिक रसायन: अपने आंतरिक स्व (मन, शरीर और आत्मा) को उसकी उच्चतम और शुद्धतम अवस्था में बदलना, जैसे आधार धातुओं को सोने में बदलना। भैरव इस आंतरिक शुद्धिकरण और पूर्णता को सुगम बनाते हैं। 2. समृद्धि और प्रचुरता: जबकि शाब्दिक स्वर्ण निर्माण काल्पनिक लग सकता है, यह सभी प्रकार के धन, समृद्धि और प्रचुरता, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों को उत्पन्न करने की शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे भक्तों को गरीबी और कमी को दूर करने में मदद मिलती है। 3. दिव्य क्षमता: यह भैरव की सर्वशक्तिमानता और प्रकृति के नियमों पर उनकी महारत को रेखांकित करता है, जिससे वे अपनी इच्छा से वास्तविकता को बदल सकते हैं।

स्वर्णसिद्धिदाय का आह्वान भैरव को सभी ऊर्जाओं के सर्वोच्च नियंत्रक के रूप में स्वीकार करता है, जो चमत्कारी शक्तियाँ प्रदान करने और असीम समृद्धि और आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करने में सक्षम हैं, जिससे भक्त आत्म-साक्षात्कार के परम "स्वर्ण" की ओर अग्रसर होते हैं।

930. शांतबुद्धये

शांतिपूर्ण और शांत बुद्धि के धनी को नमन।

विस्तार : शान्तबुद्धये (Shāntabuddhaye) नाम कालभैरव का एक गहन वर्णन है, जो उनके परम स्वरूप को प्रकट करता है, जो उनके भयानक पहलुओं से भी परे है। यह शान्त (Shānta) और बुद्धये (Buddhaye) का एक यौगिक शब्द है।

शान्त (Shānta): शांत, शांतिपूर्ण, निर्मल, प्रशांत यह तत्व गहन आंतरिक शांति, समभाव और प्रशांतता की स्थिति को दर्शाता है। यह उत्तेजना, अशांति और भावनात्मक उथल-पुथल की अनुपस्थिति है। एक दिव्य सत्ता के संदर्भ में, शान्त का अर्थ पूर्ण सामंजस्य और अटूट स्थिरता की स्थिति है।

बुद्धि (Buddhi): बुद्धि, ज्ञान, समझ, जागृत चेतना बुद्धि (Buddhi) बुद्धि और विवेक की उच्च क्षमता को संदर्भित करती है - स्पष्ट समझ, वास्तविक और अवास्तविक के बीच भेद करने की क्षमता, और गहन सत्यों को समझने की क्षमता। एक जागृत या प्रबुद्ध चेतना इस शब्द में निहित है।

एक शांत और निर्मल बुद्धि जब संयुक्त किया जाता है, तो शान्तबुद्धये (Shāntabuddhaye) उस एक का वर्णन करता है जिसकी बुद्धि पूरी तरह से शांत, निर्मल और अविचलित है। भैरव के रूप में उनके भयंकर प्रकटीकरण के बावजूद, जो समय को नियंत्रित करते हैं और ब्रह्मांडीय विघटन को प्रेरित करते हैं, उनकी आंतरिक स्थिति पूर्ण शांति और अटूट ज्ञान की बनी रहती है। यह शैव धर्म और हिंदू दर्शन में एक मौलिक सत्य को उजागर करता है: परम वास्तविकता, अपने सबसे शक्तिशाली और विनाशकारी रूपों में भी, सर्वोच्च शांति और एक बेदाग, प्रबुद्ध चेतना में निहित है।

उत्कृष्ट ज्ञान बुद्धि की यह शांति दर्शाती है कि कालभैरव के कार्य, भले ही वे भयावह प्रतीत हों, जुनून, क्रोध या अज्ञान से प्रेरित नहीं होते हैं, बल्कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था और धर्म की पूरी तरह से स्पष्ट, संतुलित और बुद्धिमान समझ से प्रेरित होते हैं। उनका विनाश उद्देश्यपूर्ण है, आध्यात्मिक अशुद्धियों को दूर करने और अभिव्यक्ति के चक्र को सुनिश्चित करने के लिए करुणापूर्ण कृपा का एक कार्य है। ऐसी बुद्धि सभी भ्रमों (अविद्या) से मुक्त होती है और हमेशा परम सत्य में केंद्रित रहती है।

सभी क्रियाओं का मार्गदर्शन करने वाली आंतरिक स्थिरता यह नाम सांत्वना और आश्वासन प्रदान करता है, यह दर्शाता है कि अराजकता और जीवन और मृत्यु के भयावह पहलुओं के बीच भी, एक अंतर्निहित दिव्य बुद्धि है जो पूरी तरह से शांतिपूर्ण है और सभी घटनाओं को पूर्ण निर्मलता के साथ निर्देशित करती है। भक्त के लिए, यह अपने भीतर ऐसी "शान्त बुद्धि" विकसित करने की एक आकांक्षा है।

931. शुद्धबुद्धये

जिनका अंतःकरण पूर्णतः शुद्ध और दोषरहित है, उन्हें नमन।

विस्तार : नाम शुद्धबुद्धाय कालभैरव का एक गहन वर्णन है, जो संस्कृत शब्दों "शुद्ध" (पवित्र, स्वच्छ, निर्मल) और "बुद्धि" (बुद्धि, समझ, तर्क, धारणा) से बना है।

पूर्णतः शुद्ध बुद्धि यह नाम कालभैरव की बौद्धिक शुद्धता और स्पष्टता की परम स्थिति को उजागर करता है। उनकी बुद्धि (बुद्धि) सभी अशुद्धियों (शुद्ध) से पूरी तरह मुक्त है, जैसे अज्ञान (अविद्या), भ्रम, अहंकार (अहंकार), आसक्ति (राग), घृणा (द्वेष), और सभी प्रकार के कर्मिक संस्कार या अवचेतन प्रवृत्तियाँ (संस्कार)। मानवीय बुद्धि के विपरीत, जो अक्सर भावनाओं, पूर्वाग्रहों और सीमित संवेदी धारणाओं से धूमिल होती है, कालभैरव की बुद्धि निर्मल और अबाधित है।

सर्वज्ञ जागरूकता एक शुद्ध बुद्धि का अर्थ सर्वज्ञता है। उनके पास सभी अतीत, वर्तमान और भविष्य की घटनाओं का पूर्ण ज्ञान है, और वे बिना किसी विकृति के वास्तविकता के वास्तविक स्वरूप को समझते हैं। उनकी समझ बाहरी साधनों से प्राप्त नहीं होती है, बल्कि उनके दिव्य अस्तित्व का एक अंतर्निहित पहलू है। यह शुद्ध बुद्ध-प्रकृति (प्रबुद्ध प्रकृति) उन्हें द्वैत और भ्रम से परे, ब्रह्मांड को जैसा है वैसा ही देखने की अनुमति देती है।

सच्चे ज्ञान का स्रोत शुद्ध बुद्धि वाले होने के नाते, कालभैरव सभी सच्चे ज्ञान (प्रज्ञा) और विवेकपूर्ण ज्ञान (विवेक) का स्रोत हैं। आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि, विचारों की स्पष्टता और मानसिक बाधाओं से मुक्ति चाहने वाले भक्त उनकी प्रार्थना करते हैं, क्योंकि वे प्रबुद्ध चेतना के सार का प्रतीक हैं।

अतीन्द्रिय अवस्था यह नाम उनकी अतीन्द्रिय अवस्था की ओर भी इंगित करता है, जहाँ मन (मनस) और बुद्धि (बुद्धि) आत्मन (आत्मा) के साथ पूरी तरह से विलीन हो जाते हैं, मानसिक संशोधनों (चित्तवृत्ति) से मुक्त होते हैं। यह पूर्ण आध्यात्मिक स्पष्टता की स्थिति है, जो भौतिक दुनिया की अस्थिर प्रकृति से अछूती है। यह आध्यात्मिक अभ्यास के अंतिम लक्ष्य का प्रतीक है: शुद्ध, निर्मल जागरूकता की स्थिति प्राप्त करना।

932. स्त्यवाय

जो सभी के द्वारा स्तुति और प्रशंसा के योग्य हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : नाम स्तव्य (स्तव्याय) संस्कृत मूल "स्तु" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "स्तुति करना," "प्रशंसा करना," या "बड़ाई करना।"

स्तुति के योग्य स्तव्य का शाब्दिक अर्थ है "स्तुति के योग्य," "प्रशंसनीय," या "जिसकी स्तुति की जानी चाहिए।" यह गुण भगवान कालभैरव की अंतर्निहित महानता, उनकी सर्वोच्च स्थिति और उन असीम गुणों को उजागर करता है जो सभी प्राणियों, दिव्य और नश्वर दोनों को, उन्हें veneration (श्रद्धा) और adoration (पूजा) अर्पित करने के लिए प्रेरित करते हैं।

वे क्यों प्रशंसित हैं उनकी प्रशंसा कई पहलुओं से उत्पन्न होती है: • उनकी सर्वोच्च शक्ति: शिव के क्रोधित स्वरूप के रूप में, वे समय (काल) और विघटन को नियंत्रित करते हैं, जिससे वे एक परम शक्ति बन जाते हैं। • उनकी संरक्षक भूमिका: वे पवित्र स्थानों के संरक्षक और दुराचारियों को दंडित करने वाले हैं, जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था और न्याय सुनिश्चित करते हैं। • उनका मोक्षदायी स्वभाव: अपने

भयानक स्वरूप के बावजूद, वे अपने भक्तों के आंतरिक और बाहरी बाधाओं को नष्ट करते हैं, भय को दूर करते हैं और उन्हें मुक्ति की ओर ले जाते हैं। • उनका पारलौकिक स्वभाव: वे सभी द्वंद्वों से परे, परम वास्तविकता और सभी अस्तित्व का स्रोत हैं, ऐसे गुण जो स्वाभाविक रूप से awe (विस्मय) और praise (स्तुति) को प्रेरित करते हैं।

सार्वभौमिक आराधना यह शब्द इंगित करता है कि न केवल मनुष्य, बल्कि देवता (देव), आकाशीय प्राणी (गंधर्व), और ऋषि (ऋषि) भी लगातार कालभैरव की स्तुति करते हैं। उनकी महिमा और महत्व इतना गहरा है कि संपूर्ण सृष्टि सहज रूप से उनकी सर्वोच्चता को स्तुतियों और भजनों के माध्यम से स्वीकार करती है। उन्हें स्तव्य कहना उनकी बेजोड़ महिमा और उनकी दिव्य स्थिति की सार्वभौमिक पहचान को घोषित करना है।

933. स्तोत्रे

जो स्वयं स्तुति का भजन है, उन्हें नमन।

विस्तार : स्तोत्रे (स्तोत्रम्) नाम का अर्थ "स्तुति का भजन" या "प्रशंसा" है। जब इसे कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह एक गहन दार्शनिक और भक्तिपूर्ण अवधारणा को दर्शाता है।

स्तुति का मूर्त रूप केवल स्तुति के 'प्राप्तकर्ता' होने के बजाय, स्तोत्रे यह दर्शाता है कि कालभैरव स्वयं भजन 'हैं'। यह बताता है कि उनकी स्तुति करने या उनके नामों का जप करने का कार्य उनकी अपनी सत्ता का एक उत्सर्जन या अभिव्यक्ति है। वह सामान्य कर्ता-कर्म द्वैत को पार करते हैं जहाँ एक भक्त एक देवता की स्तुति करता है। यहाँ, स्तुति स्वयं दिव्य है, स्वाभाविक रूप से उनकी उपस्थिति और शक्ति से ओत-प्रोत है।

जीवित शब्द इस संदर्भ में, पवित्र ध्वनि (मंत्र) या भक्ति गीत (स्तोत्र) देवता से अलग नहीं है; यह 'ही' देवता है। यह शब्द ब्रह्म की अवधारणा के अनुरूप है, जहाँ परम वास्तविकता को ध्वनि से पहचाना जाता है, और स्वयं वेदों को शाश्वत, अकृत शब्द माना जाता है। कालभैरव, स्तोत्रे के रूप में, परम के इस जीवित, गतिशील और शक्तिशाली मौखिक मूर्त रूप का प्रतीक हैं।

आत्म-जागरूक दिव्य यह नाम दिव्य के आत्म-संदर्भित स्वरूप को भी दर्शाता है। कालभैरव स्वयं में पूर्ण और परिपूर्ण हैं, और उनकी महिमा बाहरी स्तुति पर निर्भर नहीं करती है। बल्कि, उन्हें अर्पित की गई कोई भी सच्ची स्तुति, सार रूप में, उनकी अपनी महिमा है जो स्वयं पर प्रतिबिंबित होती है, या उनकी अपनी ऊर्जा है जो ध्वनि और भक्ति के रूप में कंपन करती है।

परम अभिव्यक्ति कालभैरव को "स्तोत्रे" कहना उन्हें दिव्य महिमा, ज्ञान और शक्ति की परम, पुरातात्विक अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार करना है, जो प्रार्थनाओं, भजनों और आध्यात्मिक उच्चारणों के माध्यम से प्रकट होती है। इसका अर्थ है कि उनके नाम का जप केवल भक्ति का कार्य नहीं है, बल्कि उनके आवश्यक स्वरूप के साथ सीधा संबंध है, जो स्वाभाविक रूप से प्रशंसनीय और गौरवशाली है।

934. स्तवप्रियाय

उन (भगवान भैरव) को नमन जो अपने भक्तों द्वारा अर्पित स्तोत्रों और स्तुतियों के अति प्रिय हैं।

विस्तार : स्तवप्रियाय नाम संस्कृत के दो शब्दों, स्तव और प्रिय, का एक यौगिक है।

• स्तव (Stava): यह भजन, स्तुति, आराधना, प्रशंसा या प्रशस्ति को संदर्भित करता है। इसमें दिव्य की मौखिक या मानसिक महिमा का कोई भी रूप शामिल है, जिसे आमतौर पर भक्ति गीतों, मंत्रों, प्रार्थनाओं या काव्य छंदों के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। यह एक भक्त के हृदय से भक्ति और श्रद्धा की सच्ची अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

• प्रिय (Priya): इस शब्द का अर्थ है "प्रिय," "प्यारा," "शौकीन," "पसंद करने वाला," या "प्रसन्न।" यह स्नेह, वरीयता और सहमत या पोषित होने की स्थिति को दर्शाता है। जब इसे स्तव के साथ जोड़ा जाता है, तो यह भक्ति का प्रतिदान करने वाले दिव्य गुण को उजागर करता है।

भक्तिपूर्ण स्तुतियों के प्रति गहरा स्नेह स्तवप्रियाय के रूप में, भगवान भैरव को ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है जो अपने भक्तों द्वारा अर्पित स्तुतियों (स्तव) से वास्तव में प्रेम करते हैं और प्रसन्न होते हैं। यह एक गहरा गुण है जो अन्यथा भयंकर और दुर्जेय देवता का मानवीकरण करता है, एक परोपकारी पहलू को प्रकट करता है जो हार्दिक भक्ति के माध्यम से सुलभ है। यह इस बात पर जोर देता है कि परम सत्ता अलग-थलग नहीं है, बल्कि प्रशंसा और प्रेम के शब्दों के माध्यम से उससे जुड़ने के साधकों के ईमानदार प्रयासों से प्रभावित और प्रसन्न होती है।

भक्ति की शक्ति यह नाम भक्ति-योग, भक्ति के मार्ग के महत्व को रेखांकित करता है। यह बताता है कि विस्तृत अनुष्ठान या भव्य चढ़ावे, हालांकि उनका अपना स्थान है, स्तुति के माध्यम से व्यक्त शुद्ध इरादे और आध्यात्मिक भावनाओं के लिए द्वितीयक हैं। उनके नामों का सबसे सरल पाठ या एक हार्दिक भजन भी उनकी कृपा और ध्यान को आकर्षित कर सकता है। यह भक्त और दिव्य के बीच एक सीधा, व्यक्तिगत संबंध दर्शाता है, जहां देवता भक्त की आराधना के प्रति उत्तरदायी होते हैं।

स्तुति के माध्यम से बाधाओं का निवारण भक्तों के लिए, भैरव को स्तवप्रिय के रूप में जानना अपार सांत्वना और आश्वासन प्रदान करता है। इसका अर्थ है कि उनके नामों का जप करके, उनके सम्मान में भजन गाकर, और उनके गुणों की स्तुति करके, कोई उनकी उपस्थिति का आह्वान कर सकता है, उनका आशीर्वाद प्राप्त कर सकता है, और बाधाओं को दूर कर सकता है। यह पहलू एक शक्तिशाली आध्यात्मिक अभ्यास के रूप में लगातार मौखिक और मानसिक भक्ति को प्रोत्साहित करता है।

935. रसज्ञाय

सभी सारों, स्वादों और सौंदर्य अनुभवों (रस) के परम ज्ञाता को नमन।

विस्तार : रसज्ञाय नाम संस्कृत शब्दों "रस" और "ज्ञ" से बना है, जिसका अर्थ है "जानने वाला"।

रस – सार, स्वाद, अनुभव "रस" शब्द संस्कृत में असाधारण रूप से समृद्ध और गहरा है। यह दर्शाता है: 1. स्वाद: स्वाद का शाब्दिक अर्थ (मीठा, खट्टा, नमकीन, कड़वा, तीखा, कसैला)। 2. सार/रस/सत्व: किसी वस्तु का मौलिक, महत्वपूर्ण सार। 3. सौंदर्यपरक अनुभव/भावना: भारतीय सौंदर्यशास्त्र (विशेषकर भरत मुनि के नाट्यशास्त्र) में, रस एक दर्शक में उत्पन्न होने वाले रसात्मक भाव या कलात्मक भावना को संदर्भित करता है (उदाहरण के लिए, श्रृंगार (प्रेम), हास्य (हास्य), करुणा (शोक), रौद्र (क्रोध), वीर (वीरता), भयानक (भय), बीभत्स (घृणा), अद्भुत (आश्चर्य), शांत (शांति))।

ज्ञ – ज्ञाता, वह जो समझता है "ज्ञ" गहन ज्ञान, समझ, या पूर्ण रूप से समझने वाले को दर्शाता है।

समस्त सारों का परम ज्ञाता एक साथ, रसज्ञ उस एक का वर्णन करता है जो रस के इन सभी पहलुओं को गहराई से जानता और समझता है। 1. ब्रह्मांडीय सारों का ज्ञाता: शिव, रसज्ञ के रूप में, ब्रह्मांड का परम सार हैं। वह वह आधार हैं जिससे अन्य सभी सार उत्पन्न होते हैं और जिसमें वे विलीन हो जाते हैं। वह सभी अस्तित्व की मौलिक प्रकृति और वास्तविक गुणवत्ता को समझते हैं। 2. सभी स्वादों के स्वामी: वह वह हैं जो जीवन के सभी शाब्दिक और लाक्षणिक स्वादों को समझते हैं—सुखद और अप्रिय दोनों अनुभवों का पूरा स्पेक्ट्रम, जो अस्तित्व का निर्माण करते हैं। वह उनके स्रोत और परम पारखी होने के साथ-साथ उनसे परे भी हैं। 3. सौंदर्यपरक अनुभव के स्वामी: सौंदर्यशास्त्र के क्षेत्र में, रसज्ञ सभी भावनाओं और संवेगों पर उनकी महारत को संदर्भित करता है। वह हर

सौंदर्यपरक अनुभव और भावनात्मक स्थिति के स्रोत और परम द्रष्टा हैं। यह उनकी भूमिका को ब्रह्मांडीय नर्तक (नटराज) के रूप में इंगित करता है जहाँ वह अपने दिव्य प्रदर्शन (लीला) के माध्यम से सभी रसों को मूर्त रूप देते हैं और उत्पन्न करते हैं।

दार्शनिक महत्व यह नाम कालभैरव की भूमिका को केवल एक भयानक संहारक के रूप में ही नहीं, बल्कि उस परम चेतना के रूप में भी उजागर करता है जो सृष्टि और अनुभव के हर सूक्ष्म पहलू में सूक्ष्मता से व्याप्त है और उसे समझती है। वह परम अनुभवी हैं और वह चेतना हैं जो सभी अनुभवों को सार्थक बनाती है। उन्हें जानना ही वास्तविकता के सार और स्वाद को जानना है।

936. स्वर्णरूपाय

शुद्ध स्वर्ण से निर्मित सुंदर, तेजोमय स्वरूप वाले को नमन।

विस्तार : स्वर्णरूपाय (स्वर्णरूप) नाम 'स्वर्ण' और 'रूप' का एक यौगिक है।

स्वर्ण: इस संस्कृत शब्द का शाब्दिक अर्थ "सोना" है। आध्यात्मिक संदर्भ में, सोना अत्यधिक प्रतीकात्मक है। यह दर्शाता है: • शुद्धता: सोना एक अविनाशी धातु है, जो दिव्य के बेदाग, शुद्ध और शाश्वत स्वरूप को दर्शाता है। यह धूमिल या क्षय नहीं होता। • मूल्यवानता: यह एक मूल्यवान और पूजनीय धातु है, जो देवता के अपार मूल्य और सर्वोच्च स्थिति को इंगित करता है। • चमक: सोना एक अंतर्निहित चमक के साथ चमकता है, जो दिव्य प्रकाश, ज्ञान और आध्यात्मिक प्रबुद्धता का प्रतीक है। • पूर्णता: इसकी एकसमान और अपरिवर्तनीय प्रकृति दिव्य पूर्णता और परम सत्य का प्रतिनिधित्व करती है। • अमरता: एक धातु के रूप में जो समय की कसौटी पर खरी उतरती है, यह सीधे देवता के अमर और पारलौकिक सार से संबंधित है।

रूप: इस शब्द का अर्थ "रूप," "आकृति," "आकार," या "सुंदर रूप" है।

भैरव का स्वर्णिम रूप जब कालभैरव पर लागू होता है, तो स्वर्णरूपाय उन्हें एक शानदार, स्वर्णिम रूप में चित्रित करता है, जो तीव्र चमक और सुंदरता से विकिरण करता है। यह पहलू न केवल उनकी भयानक शक्ति पर जोर देता है, बल्कि उनके गौरवशाली, शुभ और परोपकारी स्वभाव पर भी जोर देता है। यह दर्शाता है कि अपने उग्र रूप में भी, वे सर्वोच्च शुद्धता, मूल्यवानता और दिव्य प्रकाश का प्रतीक हैं।

शुभता और समृद्धि का प्रतीक स्वर्णिम रूप शुभता (मंगल) और समृद्धि (लक्ष्मी) का सुझाव देता है। जबकि वे उग्र हैं, वे अंततः अपने भक्तों को आशीर्वाद, आध्यात्मिक धन और मुक्ति प्रदान करते हैं। यह स्वर्णिम चमक अज्ञान और भय के अंधकार को दूर करती है, साधकों को सत्य और निर्भयता की ओर मार्गदर्शन करती है।

भौतिक सोने से परे दार्शनिक रूप से, यह "स्वर्णिम रूप" केवल एक भौतिक विवरण नहीं है, बल्कि उनके दिव्य सार का एक लाक्षणिक प्रतिनिधित्व है, जो शुद्धतम सोने के समान शुद्ध, बेदाग, दीप्तिमान और अमूल्य है। वे आध्यात्मिक धन और मानव अस्तित्व के अंतिम लक्ष्य (पुरुषार्थ) के प्रतीक हैं। उनका स्वर्णिम रूप उनके शाश्वत और अपरिवर्तनीय स्वरूप का प्रतिनिधित्व करता है, जो परम वास्तविकता के एक प्रकाशस्तंभ के रूप में खड़ा है।

937. शुद्धाय

जो परम पवित्रता और शुद्धि के साक्षात् स्वरूप हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : शुद्धाय (Śuddhāya) नाम संस्कृत मूल "शुध्" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "शुद्ध करना, पवित्र करना, या उज्ज्वल होना।"

परम पवित्रता (निरंजनम्) • शुद्ध का अर्थ है परम और निष्कलंक पवित्रता। आध्यात्मिक संदर्भ में, इसका अर्थ है संदूषण, अपवित्रता या अपूर्णता से पूरी तरह मुक्त होना। यह तीन अशुद्धियों (मल तत्त्वों) से रहित होने की स्थिति को संदर्भित करता है: 1. आणव मल (अहंकार या व्यक्तित्व की अशुद्धि), 2. कर्म मल (कर्मों और उनके कर्मिक परिणामों की अशुद्धि), और 3. मायिक मल (भौतिक संसार और उसके भ्रम से उत्पन्न अशुद्धि)।

भगवान कालभैरव, शुद्ध के रूप में, इन सभी सीमाओं और अशुद्धियों से स्वाभाविक रूप से मुक्त हैं, और शुद्ध चेतना की स्थिति में विद्यमान हैं।

पवित्र करने वाले और शुद्ध करने वाले पवित्रता के प्रतीक के रूप में, भगवान कालभैरव अपने भक्तों के पवित्र करने वाले और शुद्ध करने वाले भी हैं। ऐसा माना जाता है कि उनकी उपस्थिति या पूजा मन, शरीर और आत्मा को सभी अशुद्धियों और पापों से शुद्ध करती है। वह कर्मिक अवशेषों को जला देते हैं और अज्ञानता को दूर करते हैं जो व्यक्तिगत आत्मा को ढँक लेती है, जिससे वह मुक्ति की ओर अग्रसर होती है। यह केवल बाहरी शुद्धि नहीं है, बल्कि एक आंतरिक आध्यात्मिक परिवर्तन है।

द्वैत से परे उनकी पवित्रता सभी द्वैत और आसक्तियों से परे एक स्थिति का तात्पर्य है जो ससीम अस्तित्व को बांधती है। वह अच्छे और बुरे, सुख और दुख, जन्म और मृत्यु की सांसारिक चिंताओं से अछूते हैं, फिर भी वह उन सभी को समाहित करते हैं और उनसे परे हैं।

शुद्ध नाम कालभैरव के आवश्यक स्वरूप पर जोर देता है, जो परम, निष्कलंक चेतना, सभी पवित्रता का स्रोत और सभी प्रकार की अपवित्रता से मुक्तिदाता हैं।

938. राज्ञे

जो परम राजा हैं, सभी के अंतिम संप्रभु हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : राज्ञे नाम (जो 'राज' मूल से आया है, जिसका अर्थ है "चमकना," "शासन करना," "उत्कृष्ट होना") कालभैरव को परम सम्राट और संप्रभु के रूप में पूजता है।

परम राजा और शासक राजा (King) या राज्ञे (जब "राजा को" के लिए चतुर्थी विभक्ति में रखा जाता है) एक संप्रभु शासक को दर्शाता है, जो पूर्ण अधिकार के साथ शासन करता है, आदेश देता है और नियम बनाता है। कालभैरव के संदर्भ में, यह केवल एक धर्मनिरपेक्ष राजत्व नहीं है, बल्कि पूरे ब्रह्मांड, समय के चक्रों और सभी प्राणियों पर उनके सर्वोच्च प्रभुत्व को संदर्भित करता है। वह ब्रह्मांड के सम्राट हैं, जो शक्ति का अंतिम राजदंड धारण करते हैं।

सभी लोकों के स्वामी यह उपाधि दर्शाती है कि उनका शासन दृश्यमान दुनिया से परे सभी अस्तित्व के लोकों तक फैला हुआ है, जिसमें सूक्ष्म और कारण लोक, स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल लोक शामिल हैं। प्रत्येक देवता, प्रत्येक प्राणी, प्रत्येक घटना उनके अटल नियम और सर्वोच्च आदेश के अधीन है।

उत्कृष्टता और चमक "राज" मूल का अर्थ "चमकना" या "तेजस्वी होना" भी है। यह पहलू कालभैरव की अंतर्निहित चमक, उनकी दिव्य दीप्ति और सभी प्राणियों के बीच उनकी परम उत्कृष्टता को दर्शाता है। वह परम अधिकार और सत्य का चमकता हुआ प्रकाश है, जिसकी महिमा सभी अस्तित्व को प्रकाशित करती है।

न्याय के वितरक एक राजा के रूप में, विशेष रूप से धर्म (धार्मिकता) और कर्म (क्रिया) के संदर्भ में, राज्ञे उनकी न्याय के अंतिम वितरक के रूप में भूमिका को भी दर्शाता है। वह ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि प्रत्येक क्रिया अपना उचित फल दे, एक दिव्य मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हुए। उनका राजत्व अत्याचारी नहीं है, बल्कि पूर्ण ब्रह्मांडीय कानून और व्यवस्था का एक अवतार है।

939. वषट

अग्नि में आहुति देते समय की जाने वाली पवित्र ध्वनि, जो स्वयं देवता का प्रतीक है, को नमन।

विस्तार : 'वषट्' (Vaṣaṭ) शब्द का शाब्दिक अर्थ वैदिक अनुष्ठानों के दौरान यज्ञ अग्नि (अग्नि) में आहुति देते समय उच्चारित की जाने वाली पवित्र उद्घोषणा या अंतःक्षेप है। यह यज्ञ (बलिदान) के कार्य से जुड़ा एक अत्यंत महत्वपूर्ण और शक्तिशाली मंत्र है और इसका अर्थ है 'के लाभ के लिए' या 'यह आह्वान किए गए देवता के लाभ के लिए हो' का समर्पण।

बलिदान का सार जब कोई वषट् के उद्घोष के साथ आहुति देता है, तो यह केवल एक ध्वनि नहीं होती, बल्कि उच्चतर ब्रह्मांडीय शक्तियों के प्रति समर्पण, भक्ति और संरेखण की घोषणा होती है। यह भेंट के भौतिक कार्य को एक आध्यात्मिक लेनदेन में बदल देता है। यह कहकर कि कालभैरव वषट् हैं, इसका अर्थ है कि वे सभी बलिदानों का सार, उद्देश्य और प्राप्तकर्ता हैं। वे ही हैं जिनके लिए सभी भेंट की जाती हैं और जो उन्हें फलित करते हैं।

देवत्वकृत भेंट परंपरागत रूप से, भेंट का कार्य किसी देवता को निर्देशित किया जाता है। हालांकि, कालभैरव को वषट् के रूप में पहचान कर, उनकी सर्वव्यापकता और अंतर्निहितता पर जोर दिया जाता है। वे केवल प्राप्तकर्ता नहीं हैं, बल्कि स्वयं भेंट हैं, वह अग्नि हैं जो इसे भस्म करती है, और वह फल (फल) हैं जो इससे प्राप्त होता है। यह दर्शाता है कि संपूर्ण यज्ञ प्रक्रिया उनकी दिव्य इच्छा और उपस्थिति की अभिव्यक्ति है। वे पवित्रता, तपस्या और यज्ञ अग्नि की परिवर्तनकारी शक्ति का प्रतीक हैं।

ब्रह्मांडीय अंतर्निहितता और अतिक्रमण यह नाम ब्रह्मांडीय व्यवस्था में कालभैरव की भूमिका पर प्रकाश डालता है, जहाँ अनुष्ठान और भेंट संतुलन बनाए रखने और स्थलीय को खगोलीय से जोड़ने के लिए मौलिक हैं। वे परम पोषक हैं, पवित्र आह्वान को स्वीकार करते और पूरा करते हैं। यह उनके सर्वोच्च पुरुष के रूप में उनकी प्रकृति की ओर इशारा करता है, जिसमें सभी अभिव्यक्तियाँ (वैदिक अनुष्ठानों सहित) अपना अंतिम स्रोत और गंतव्य पाती हैं।

940. नमो

'मैं आपको नमन करता हूँ' का पवित्र अभिवादन, जो स्वयं श्रद्धा के कार्य का प्रतिनिधित्व करता है।

विस्तार : "नमो" (नमः, namaha) एक नाम नहीं, बल्कि एक गहन वंदना है, जो स्वयं हिंदू धर्म में कई मंत्रों और भक्ति प्रथाओं का एक मुख्य हिस्सा है। यह संस्कृत धातु "नम्" (nam) से लिया गया है, जिसका अर्थ है "झुकना," "मोड़ना," या "विनम्रतापूर्वक प्रस्तुत करना।"

श्रद्धा का कार्य अपने सबसे मौलिक स्तर पर, नमो श्रद्धा, सम्मान और भक्ति के कार्य को दर्शाता है। यह दिव्य के प्रति शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से झुकने का प्रतिनिधित्व करता है, invoked किए जा रहे देवता की श्रेष्ठता और सर्वव्यापी प्रकृति को स्वीकार करता है। विनम्रता का यह भाव हिंदू आध्यात्मिक अभ्यास के लिए केंद्रीय है, क्योंकि यह भक्त के मन और हृदय को दिव्य कृपा प्राप्त करने के लिए तैयार करता है।

समर्पण और अधीनता साधारण सम्मान से परे, नमो समर्पण (शरणगति) की गहरी भावना को दर्शाता है। जब कोई "नमो" कहता है, तो वे केवल अभिवादन नहीं कर रहे होते हैं, बल्कि प्रतीकात्मक रूप से अपने अहंकार, अपनी इच्छाओं और अपने व्यक्तिगत स्व को दिव्य को अर्पित कर रहे होते हैं। यह स्वीकार करने का एक कार्य है कि दिव्य इच्छा सर्वोच्च है और किसी का अपना अस्तित्व एक बड़े ब्रह्मांडीय क्रम का हिस्सा है। यह समर्पण कमजोरी का संकेत नहीं है, बल्कि गहन आध्यात्मिक शक्ति और विश्वास का है।

अहंकार का विनाश झुकने का कार्य, लाक्षणिक और शाब्दिक दोनों तरह से, एक आंतरिक प्रक्रिया की बाहरी अभिव्यक्ति है - अहंकार (अहंकार) का विनम्र होना और अंततः विघटन। "नमो" घोषित करके, भक्त आत्म-केंद्रितता से दूर होकर शुद्ध भक्ति की स्थिति की ओर बढ़ता है, यह पहचानते हुए कि दिव्य ही सच्चा कर्ता और पालक है।

मेरा नहीं (न-मम) दार्शनिक रूप से, नमो की व्याख्या 'न मम' (न मम) के रूप में की जा सकती है, जिसका अर्थ है "मेरा नहीं" या "कुछ भी मेरा नहीं है।" यह गहन समझ सांसारिक संपत्ति और आसक्तियों से वैराग्य पर जोर देती है, यह दावा करती है कि सब कुछ दिव्य का है। यह परिप्रेक्ष्य निस्वार्थता की भावना और भौतिक अस्तित्व की क्षणभंगुर प्रकृति की स्वीकृति को विकसित करता है।

भक्ति योग का सार भक्ति योग (भक्ति का मार्ग) की परंपरा में, नमो एक मौलिक उच्चारण है। यह प्रेम, भक्ति और निस्वार्थ सेवा के सार को समाहित करता है, जो दिव्य से जुड़ने और अपनी गहन आध्यात्मिक लालसा को व्यक्त करने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य करता है।

कालभैरव के लिए, उनके नामों से पहले "नमो" का उच्चारण करने से उनकी भयानक फिर भी अंततः परोपकारी शक्ति, समय और भय पर उनके अधिकार, और भगवान शिव के एक पहलू के रूप में उनकी सर्वोच्च इच्छा के प्रति किसी के पूर्ण समर्पण को स्वीकार करने का महत्व होता है।

941. स्थूलाय

विशाल, स्थूल और असीमित शारीरिक रूप वाले को नमन।

विस्तार : स्थूलाय नाम संस्कृत शब्द स्थूल से लिया गया है, जिसका अर्थ है "भारी," "बड़ा," "स्थूल," "घना," या "असीम।" जब इसे दिव्य, विशेष रूप से कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह कई गहन अर्थों को व्यक्त करता है।

विशाल और विस्तृत रूप यह कालभैरव की ब्रह्मांडीय, सर्व-समावेशी भौतिक उपस्थिति को संदर्भित करता है। यह दर्शाता है कि उनका रूप पारंपरिक आयामों से सीमित नहीं है, बल्कि असीम रूप से विशाल है, जो सभी स्थान को घेरे हुए है। यह स्थूल रूप (स्थूल रूप) स्वयं प्रकट ब्रह्मांड है, जिसमें सभी ग्रह, तारे, आकाशगंगाएँ और प्रत्येक बोधगम्य वस्तु समाहित है। वह स्थूल जगत का ही साकार रूप हैं, जो वस्तुनिष्ठ वास्तविकता की समग्रता का प्रतीक है।

प्रकट ब्रह्मांड दार्शनिक अर्थ में, स्थूल प्रकट, बोधगम्य दुनिया - भौतिक क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है जिसे हम अपनी इंद्रियों के माध्यम से अनुभव करते हैं। स्थूल होने से, कालभैरव को ब्रह्मांड के ब्रह्मांडीय शरीर के साथ पहचाना जाता है। वह सभी सृष्टि का आधार और सामग्री हैं, जो उन्हें अंतर्निहित (सृष्टि के भीतर उपस्थित) और पारलौकिक (इससे परे) दोनों बनाते हैं।

मानवीय समझ से परे "स्थूल" रूप का विचार अपूर्णता या अशिष्टता का अर्थ नहीं है, बल्कि एक ऐसी विशालता का अर्थ है जो मानवीय बौद्धिक या अवधारणात्मक समझ से परे है। यह वह रूप है जो इतना विशाल है कि यह सब कुछ समाहित करता है, फिर भी यह उन लोगों के लिए दिव्य का सबसे मूर्त पहलू है जो अभी भी भौतिक वास्तविकता के भ्रम में फंसे हुए हैं।

सूक्ष्म और कारण से विपरीत भारतीय दर्शन में, तीन मुख्य शरीर या अवस्थाएँ हैं: स्थूल (स्थूल), सूक्ष्म (सूक्ष्म), और कारण (कारण)। स्थूल शरीर भौतिक शरीर है, सूक्ष्म शरीर सूक्ष्म या प्राणिक शरीर है, और कारण शरीर कारण या आनंद शरीर है। स्थूल होने से, कालभैरव उस मूलभूत स्थूल वास्तविकता को समाहित करते हैं जो सभी रूपों को जन्म देती है। हालांकि, सर्वोच्च सत्ता के रूप में, वह इन भेदों से भी परे हैं, तीनों के स्रोत हैं।

942. सूक्ष्माय

जो सूक्ष्म, लघु और अगोचर हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : सूक्ष्माय (सूक्ष्म) नाम दिव्य के सूक्ष्म और अगोचर स्वरूप को संदर्भित करता है।

सूक्ष्मता और अमूर्तता • सूक्ष्म का अर्थ है "सूक्ष्म," "लघु," "बारीक," "नाजुक," या "ईथर।" यह स्थूल (सकल, भौतिक, मूर्त) का विपरीत है। • यह कालभैरव को एक दृश्य रूप वाली भौतिक इकाई के रूप में नहीं, बल्कि एक अंतर्निहित, अदृश्य वास्तविकता के रूप में वर्णित करता है जो पूरे अस्तित्व में व्याप्त है। • वह इंद्रियों (आँखें, कान, स्पर्श, आदि) और भौतिक मन की पकड़ से परे हैं।

समय का अगोचर स्वरूप • कालभैरव के संदर्भ में, जो समय के सर्वोच्च स्वामी हैं, 'सूक्ष्म' शब्द इस बात पर जोर देता है कि समय स्वयं, अपने अंतिम अर्थ में, एक ठोस, मापने योग्य वस्तु नहीं है, बल्कि एक सूक्ष्म, निरंतर प्रवाहित होने वाली और अगोचर शक्ति है जो पूरे ब्रह्मांड को नियंत्रित करती है। • जबकि हम इसके प्रभावों को महसूस करते हैं, इसका सार अदृश्य रहता है।

अव्यक्त और सर्वव्यापी • यह नाम दिव्य के अव्यक्त (अव्यक्त) पहलू की ओर इंगित करता है। • सृष्टि से पहले, और वास्तव में सभी सृष्टि के मूल में, एक सूक्ष्म, आदिम ऊर्जा या चेतना निहित है जो रूप और नाम से परे है। • कालभैरव, सूक्ष्म के रूप में, इस सर्वव्यापी, फिर भी अगम्य, सार का प्रतिनिधित्व करते हैं जो हर जगह है और फिर भी कहीं भी विशेष रूप से पहचानने योग्य नहीं है।

आध्यात्मिक बोध • कालभैरव के सूक्ष्म पहलू को समझने के लिए स्थूल संवेदी धारणा की नहीं, बल्कि एक परिष्कृत आध्यात्मिक जागरूकता, गहन ध्यान और आंतरिक बोध की आवश्यकता होती है। • भक्त इस सूक्ष्म उपस्थिति को अपने भीतर आंतरिक चेतना के रूप में और वास्तविकता के मूलभूत ताने-बाने के रूप में अनुभव करने का प्रयास करते हैं।

943. सहस्रार्कप्रकाशाय

सहस्रों सूर्यों की चकाचौंध भरी चमक से प्रकाशित होने वाले (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : नाम सहस्रार्कप्रकाशाय एक शक्तिशाली यौगिक है, जो सहस्र (हजार), अर्क (सूर्य), और प्रकाश (प्रकाश, चमक, दीप्ति) में विभाजित होता है। यह नाम कालभैरव की विस्मयकारी और अत्यधिक दिव्य दीप्ति का विशद वर्णन करता है।

अत्यधिक चमक "हजारों सूर्य" वाक्यांश संस्कृत साहित्य में एक सामान्य अतिशयोक्ति है, जिसका उपयोग अकल्पनीय रूप से तीव्र, चकाचौंध भरी और लगभग अंधा कर देने वाली चमक को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। यह एक ऐसे प्रकाश को दर्शाता है जो प्रकाश के सभी सामान्य स्रोतों को समाहित करता है और उनसे बढ़कर है। कालभैरव के लिए, यह केवल भौतिक प्रकाश नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक और निरपेक्ष प्रकाश है—सर्वोच्च चेतना का प्रकाश जो सभी अंधकार को दूर करता है।

अज्ञान का नाश करने वाला जिस प्रकार सूर्य भौतिक अंधकार को दूर करता है, उसी प्रकार कालभैरव का दीप्तिमान रूप, हजारों सूर्यों के समान, अपने भक्तों के हृदय और मन से अज्ञान (अविद्या) और मोह (भ्रम) के अंधकार को दूर करता है। यह तीव्र प्रकाश परम ज्ञान (ज्ञान) और आध्यात्मिक बुद्धि का प्रतीक है।

दिव्य ऊर्जा की अभिव्यक्ति यह चमक दिव्य की अकल्पनीय शक्ति और ऊर्जा (शक्ति) को भी समाहित करती है। हजारों सूर्यों की गर्मी और प्रकाश कालभैरव की दुर्जेय, सर्वव्यापी ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो ब्रह्मांडों को एक पल में बना, बनाए रख और भंग कर सकती है। यह एक भयानक फिर भी शुद्ध करने वाली ऊर्जा है।

ब्रह्मांडीय उपस्थिति यह कल्पना उनकी सर्वव्यापकता और उनके अस्तित्व की निरपेक्ष प्रकृति को उद्घाटित करती है। वह केवल चमकदार नहीं हैं, बल्कि सभी प्रकाश, चेतना और अस्तित्व के स्रोत हैं, जो बिना कम हुए पूरे ब्रह्मांड में विकिरण करते हैं। उनका अस्तित्व ही सभी लोकों को प्रकाशित करता है।

उत्कृष्ट महिमा अंततः, यह नाम कालभैरव की उत्कृष्ट महिमा और सर्वोच्च वास्तविकता के रूप में उनकी स्थिति पर जोर देता है, जिसकी भव्यता को सीमित मानव बुद्धि द्वारा पूरी तरह से समझा नहीं जा सकता है। यह भक्त में विस्मय, श्रद्धा और पवित्रता की गहरी भावना को प्रेरित करता है।

944. सर्वतोमुखाय

उन को नमन जिनके मुख सभी दिशाओं में हैं, जो सबको देखते और जानते हैं।

विस्तार : नाम सर्वतोमुख "सभी दिशाओं में मुख वाले" या "हर जगह मुख वाले" होने के दिव्य गुण को संदर्भित करता है। यह एक गहन अवधारणा है जो सर्वज्ञता, सर्वव्यापकता और देवत्व के सर्व-समावेशी स्वरूप को व्यक्त करती है।

सर्वव्यापकता और सर्वज्ञता सर्वतोमुख का शाब्दिक अर्थ है "सभी दिशाओं में मुख वाला"। यह कल्पना देवता की असीम दृष्टि और समझ को दर्शाती है। इसका अर्थ है कि कोई ऐसी दिशा, कोई ऐसा क्षेत्र, कोई ऐसा आयाम नहीं है जहाँ दिव्य उपस्थित न हो, देखता और अवलोकन करता न हो। कालभैरव, सर्वतोमुख के रूप में, उस परम जागरूकता का प्रतीक हैं जो पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त है। प्रत्येक विचार, प्रत्येक क्रिया, अस्तित्व का प्रत्येक छिपा हुआ कोना उनकी अविचल दृष्टि के लिए खुला है।

मुखों का प्रतीकवाद हिंदू प्रतिमा विज्ञान में, कई मुख वाले देवता (जैसे शिव, ब्रह्मा या देवी के कुछ रूप) उनके व्यापक स्वरूप का प्रतीक हैं। "सभी दिशाओं में मुख होना" केवल शारीरिक बनावट के बारे में नहीं है, बल्कि चेतना, ज्ञान और शक्ति की समग्रता के लिए एक रूपक है। इसका तात्पर्य है कि वे एक साथ सभी दृष्टिकोणों से द्रष्टा, निर्माता और पालक हैं।

एकीकृत सिद्धांत यह नाम कालभैरव को उस एकीकृत सिद्धांत के रूप में दर्शाता है जो सभी अस्तित्व को बांधता है। जिस प्रकार एक गोले का केंद्रीय बिंदु सभी दिशाओं में बाहर की ओर विकीर्ण होता है, उसी प्रकार वे मूल सार हैं जिससे सभी अभिव्यक्तियाँ उत्पन्न होती हैं और जिसकी ओर सभी मार्ग ले जाते हैं। उनके "मुख" असंख्य रूप और अभिव्यक्तियाँ हैं जिनके माध्यम से विभिन्न अवस्थाओं और आयामों में प्राणियों द्वारा दिव्य उपस्थिति का अनुभव किया जाता है।

द्वैत से परे सर्वतोमुख की अवधारणा द्वैत से भी परे है। यह सुझाव देता है कि उनके दृष्टिकोण से, कोई 'अन्य' नहीं है - उनकी जागरूकता के बाहर कोई स्थान या प्राणी नहीं है। वे एक साथ अंतर्निहित और पारलौकिक वास्तविकता हैं, भीतर और बाहर से सभी का अवलोकन करते हैं। यह अंतरिक्ष और समय पर उनकी पूर्ण महारत को दर्शाता है, क्योंकि वे अतीत, वर्तमान और भविष्य को उनकी संपूर्णता में देखते हैं।

945. सारमेयानुगाय

उन देव श्वानो के अनुगामी को नमन।

विस्तार : सारमेयानुगाय नाम दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों से बना है: सारमेय और अनुग।

सारमेय (Sārameya): यह शब्द कुत्तों को संदर्भित करता है, विशेष रूप से उन कुत्तों को जो ऋग्वेद में वर्णित देवताओं की दिव्य कुतिया सरमा से जुड़े हैं। सारमेय वंश के कुत्तों को अक्सर पौराणिक, शक्तिशाली और कभी-कभी डरावने जीवों के रूप में चित्रित किया जाता है। भैरव के

संदर्भ में, ये कुत्ते साधारण सांसारिक कुत्ते नहीं हैं, बल्कि दिव्य, अलौकिक सेवक हैं। वे तीव्र इंद्रियों, वफादारी, सतर्कता और अक्सर श्मशान घाटों और सीमांत स्थानों से जुड़ाव का प्रतीक हैं, जो भैरव के भयंकर और अलौकिक स्वभाव के साथ मेल खाते हैं।

अनुग (Anuga): इसका अर्थ है "अनुयायी," "सेवक," या "जो साथ चलता है।" यह भक्ति, सेवा और घनिष्ठ संबंध को दर्शाता है।

दिव्य अनुचर (The Divine Entourage) यह नाम भगवान भैरव के एक आवश्यक मूर्तिपूजक और प्रतीकात्मक पहलू को उजागर करता है: उनके कुत्तों का दल। ये केवल पालतू जानवर नहीं हैं, बल्कि शक्तिशाली आध्यात्मिक संस्थाएं हैं जो उनके साथ चलती हैं। वे पशु साम्राज्य पर उनके अधिकार का प्रतिनिधित्व करते हैं, विशेष रूप से उन जीवों पर जो अक्सर जंगली, रहस्यमय और अनियंत्रित से जुड़े होते हैं।

दिशाओं के संरक्षक (Guardians of the Directions) कई परंपराओं में, भैरव को चार कुत्तों के साथ चित्रित किया गया है जो चारों दिशाओं की रक्षा करते हैं, जो उनकी सर्वशक्तिमानता और अंतरिक्ष और समय के रक्षक के रूप में उनकी भूमिका को दर्शाता है। वे उनके वफादार प्रहरी हैं, जो बुराई को सूंघते हैं और अपने भक्तों की रक्षा करते हैं।

भयंकर संगति का प्रतीक (Symbol of Fierce Companionship) कुत्ते भैरव के अपरंपरागत और दुर्जेय चरित्र पर और जोर देते हैं। अन्य देवताओं के विपरीत जिनके पास शांत वाहन (vahanas) हो सकते हैं, भैरव के साथी भयंकर कुत्ते हैं, जो श्मशान घाट (śmaśāna) के स्वामी, आत्माओं के स्वामी और धर्म के एक भयंकर समर्थक के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करते हैं जो अस्तित्व के गहरे, अधिक चुनौतीपूर्ण पहलुओं से नहीं कतराते हैं। वे प्रकृति की आदिम, अनियंत्रित शक्तियों का प्रतीक हैं जिन पर भैरव का अधिकार है।

आध्यात्मिक सतर्कता (Spiritual Vigilance) प्रतीकात्मक रूप से, कुत्ते भक्त की सतर्क इंद्रियों का भी प्रतिनिधित्व कर सकते हैं, जो, जब ठीक से निर्देशित और नियंत्रित (भैरव के आदेश के तहत) होती हैं, तो आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और सांसारिक विकर्षणों से सुरक्षा प्रदान कर सकती हैं। वे अशुद्धियों को दूर करने और साधक को आध्यात्मिक मार्ग पर मार्गदर्शन करने में सहायता करते हैं।

946. शंभवे

सभी सुख और शुभता के स्रोत स्वरूप को नमन।

विस्तार : शम्भव (Śambhava) नाम शिव के विशेषण "शम्भु" (Śambhu) से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है "शुभता, सुख और कल्याण का निवास या स्रोत"।

शुभता का स्रोत संस्कृत में 'शम्' (Śam) शब्द शुभता, कल्याण, शांति और सुख को दर्शाता है। 'भू' (Bhū) का अर्थ अस्तित्व, होना या स्रोत है। इस प्रकार, शम्भव उस एक को संदर्भित करता है जिससे सभी शुभता, अच्छाई और कल्याण उत्पन्न होते हैं। वह ब्रह्मांड में सभी लाभकारी और सकारात्मक चीजों का अंतिम स्रोत है। यह सीधे उन्हें ब्रह्मांडीय व्यवस्था के सिद्धांत और सृष्टि के अंतर्निहित सद्भाव से जोड़ता है।

सुख और कल्याण के दाता सुख (sukha) और कल्याण (kalyāṇa) के स्रोत के रूप में, भगवान कालभैरव, इस पहलू में, आंतरिक शांति, संतोष और कल्याण की स्थिति के प्रदाता के रूप में देखे जाते हैं जो भौतिक परिस्थितियों से परे है। जबकि कालभैरव अपने उग्र पहलू के लिए जाने जाते हैं, शम्भव उनकी परोपकारी प्रकृति को उजागर करता है, जहाँ उनके अनुशासनात्मक कार्य अंततः

उनके भक्तों के आध्यात्मिक विकास और कल्याण की ओर ले जाते हैं। उनका अक्सर भयावह रूप आत्माओं को शुद्ध करने और उन्हें परम सुख और मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करने का एक साधन है।

शुभ रक्षक एक रक्षक के रूप में, विशेष रूप से भैरवों में से एक के रूप में, वह अपने भक्तों को दुर्भाग्य, बाधाओं और नकारात्मक प्रभावों से बचाता है, जिससे उनके कल्याण को सुनिश्चित करता है। यह सुरक्षात्मक कार्य सभी अच्छाई के स्रोत के रूप में उनकी अंतर्निहित प्रकृति से उत्पन्न होता है। उन्हें शम्भव के रूप में पूजना भक्तों को सकारात्मक ऊर्जा और सुरक्षा के इस अनंत स्रोत का लाभ उठाने में मदद करता है।

947. प्रेतवाहाय

जिनकी सवारी प्रेत और मृत आत्माएं हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : प्रेतवाह्याय नाम प्रेत और वाह का एक यौगिक है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "वह जिसका वाहन (वाह) प्रेत (भूत/आत्माएँ) हैं।"

• प्रेत (Preta): यह शब्द मृत आत्माओं को संदर्भित करता है, विशेष रूप से वे जिन्होंने अभी तक अस्तित्व की उच्च अवस्था प्राप्त नहीं की है, जिन्हें अक्सर भटकती या निराकार आत्माओं के रूप में चित्रित किया जाता है। व्यापक अर्थ में, इसमें विभिन्न प्रकार के भूत और प्रेत-जैसी सत्ताएँ शामिल हो सकती हैं। पारंपरिक रूप से, प्रेतों को मृत्यु के बाद की मध्यवर्ती अवस्था से जोड़ा जाता है और अक्सर उन्हें पीड़ित या बेचैन के रूप में देखा जाता है।

• वाह (Vāha): यह एक वाहन, सवारी या वाहक को दर्शाता है। प्रतिमा विज्ञान में, देवताओं को अक्सर विशिष्ट वाहनों के साथ चित्रित किया जाता है जो उनके स्वभाव, शक्तियों या प्रभुत्व का प्रतीक होते हैं।

प्रेतलोक के स्वामी (Lord of the Spirit Realm) प्रेतों को अपने वाहन के रूप में रखने वाले के रूप में, कालभैरव पूरे प्रेतलोक पर अपना पूर्ण प्रभुत्व स्थापित करते हैं। वह सभी निराकार आत्माओं, भूतों और सूक्ष्म सत्ताओं के स्वामी हैं, जो उन शक्तियों पर शासन करते हैं जो मनुष्यों की तत्काल धारणा से परे संचालित होती हैं। यह प्रतीकवाद मृत्यु और उसके परे जो कुछ भी है, उस पर उनके परम अधिकार की भूमिका को उजागर करता है।

भय और अज्ञान पर विजय (Conquering Fear and Ignorance) प्रेतों पर सवारी करके, कालभैरव अपनी निर्भीकता और मृत्यु तथा अज्ञात से जुड़े सांसारिक भयों को पार करने की अपनी क्षमता का प्रदर्शन करते हैं। वह उन सत्ताओं को वश में करते हैं जो आमतौर पर भय उत्पन्न करती हैं। यह एक गहरा आध्यात्मिक संदेश देता है: सच्ची आध्यात्मिक शक्ति मृत्यु के भय पर विजय पाने और भौतिक दुनिया की क्षणभंगुरता को समझने में निहित है। उनके भक्तों के लिए, यह मृत्यु के भय और भौतिक शरीर से प्रस्थान से जुड़े कष्टों को दूर करने की उनकी शक्ति को दर्शाता है।

परलोक में संरक्षक और मार्गदर्शक (Guardian and Guide in the Afterlife) यह पहलू उन्हें मृत आत्माओं के लिए एक मार्गदर्शक और संरक्षक के रूप में भी चित्रित करता है। वह वही हैं जो प्रेतों के मार्ग को निर्देशित करते हैं, या तो उन्हें मुक्ति प्रदान करके या उन्हें उनके नियत अस्तित्व के लोकों तक ले जाकर। इस प्रकार वह परलोक में कर्मिक न्याय के परम निरीक्षक बन जाते हैं।

वैराग्य और क्षणभंगुरता का प्रतीक (Symbol of Detachment and Transience) प्रेतों को वाहन के रूप में चुनना, किसी अधिक राजसी या शक्तिशाली जानवर के बजाय, भैरव के सांसारिक मोह से वैराग्य और अस्तित्व की क्षणभंगुर प्रकृति पर जोर देता है। वह उस चीज को गले लगाते और

नियंत्रित करते हैं जिसे मानवता अक्सर घृणित या भयावह पाती है, जो पारंपरिक द्वैत से परे उनके अतिक्रमण का प्रतीक है।

948. सहस्रकृते

सहस्त्रों वस्तुओं के सृष्टा, या हज़ार गुना कार्य करने वाले को नमन।

विस्तार : सहस्रकृते नाम कालभैरव की सर्वशक्तिमत्ता और सर्वव्यापकता की एक गहन अभिव्यक्ति है, विशेष रूप से उनके रचनात्मक और सक्रिय पहलुओं में। यह संस्कृत शब्दों सहस्र और कृत से लिया गया है।

• सहस्र (Sahasra): इस शब्द का शाब्दिक अर्थ "हजार" है। हालांकि, आध्यात्मिक और दार्शनिक संदर्भ में, "सहस्र" अक्सर एक असंख्य, अमाप्य, या अनगिनत मात्रा को दर्शाता है। यह केवल एक संख्यात्मक मान के बजाय अनंतता, विशालता और एक सर्व-समावेशी प्रकृति का तात्पर्य है।

• कृत (Krit): यह शब्द मूल √कृ (कर) से आया है, जिसका अर्थ है "करना," "बनाना," या "रचना करना।" यह क्रिया या सृजन के एक एजेंट को संदर्भित करता है।

असंख्य अभिव्यक्तियों के निर्माता (The Creator of Innumerable Manifestations) "हजारों वस्तुओं के निर्माता" के रूप में, सहस्रकृते पूरे प्रकट ब्रह्मांड के पीछे कालभैरव की प्राथमिक शक्ति के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है। वह केवल एक अद्वितीय निर्माता नहीं हैं, बल्कि वह स्रोत हैं जिससे अनगिनत रूप, प्राणी, घटनाएँ और संसार उत्पन्न होते हैं। यह एकवचन, अविभेदित वास्तविकता से अस्तित्व की बहुलता को उत्पन्न करने में उनकी ब्रह्मांडीय भूमिका पर जोर देता है। प्रत्येक कण, प्रत्येक जीवन रूप, प्रत्येक तारा और प्रत्येक आकाशगंगा उनकी दिव्य इच्छा और शक्ति से उत्पन्न होने वाली एक "रचना" है।

हजारों गुना कार्य करना (Acting a Thousandfold) "जो हजारों गुना कार्य करता है" की व्याख्या उनकी असीम गतिविधि को और अधिक विस्तृत करती है। यह दर्शाता है कि उनके कार्य सीमित नहीं हैं, बल्कि उनके दायरे और प्रभाव में निरंतर, विविध और अनंत हैं। यह ब्रह्मांड के प्रेरक और नियामक के रूप में उनकी गतिशीलता को इंगित करता है, जो अनगिनत साधनों और रूपों के माध्यम से सृजन, पालन और विलय की प्रक्रियाओं में लगातार संलग्न रहते हैं। उनका दिव्य लीला (Lila) अनंत प्रकार से प्रकट होता है, जो अस्तित्व के हर पहलू को प्रभावित करता है, चाहे वह बोधगम्य हो या अबोधगम्य।

सर्वशक्तिमत्ता और असीमित शक्ति (Omnipotence and Limitless Power) यह नाम अनिवार्य रूप से कालभैरव को असीमित शक्ति वाले एक ऐसे अस्तित्व के रूप में घोषित करता है, जिनकी रचनात्मक ऊर्जाएँ और सक्रिय सिद्धांत मानवीय समझ से परे हैं। यह ब्रह्मांडीय व्यवस्था के भीतर अभिव्यक्ति और क्रिया के सभी पहलुओं पर उनकी सर्वोच्च महारत को उजागर करता है।

949. ग्रहात्मकाय

जो सभी ग्रहों की आत्मा और सार हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : ग्रहात्मकाय नाम एक गहन संस्कृत यौगिक है जो ग्रह और आत्मन से बना है, जो ब्रह्मांडीय प्रभुत्व और आंतरिक सार की एक शक्तिशाली घोषणा में परिणत होता है।

ग्रह: आकाशीय पिंड और ब्रह्मांडीय प्रभावक "ग्रह" का शाब्दिक अर्थ है "पकड़ना," "जकड़ना," या "अभिभूत करना।" हिंदू ज्योतिषीय और ब्रह्मांडीय संदर्भ में, ग्रह उन आकाशीय पिंडों (सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, और छायादार नोड्स राहु और केतु जैसे ग्रह) को संदर्भित करते हैं जिनके बारे में माना जाता है कि वे मानव नियति और सांसारिक घटनाओं को "पकड़ते" या दृढ़ता से प्रभावित करते हैं। प्रत्येक ग्रह विशिष्ट गुणों, ऊर्जाओं और कर्मिक परिणामों से जुड़ा है।

आत्मन: आत्मा, सार और आंतरिक स्व "आत्मन" व्यक्तिगत आत्मा, जीवन के सार्वभौमिक सिद्धांत, स्व, या आवश्यक आध्यात्मिक वास्तविकता को दर्शाता है। यह किसी चीज के मूल या सार को दर्शाता है, जो उसे चेतन करता है और उसे अस्तित्व प्रदान करता है।

ग्रहों की आत्मा और सार जब संयुक्त किया जाता है, तो ग्रहात्मकाय का अर्थ है "वह जो आकाशीय ग्रहों की आत्मा और सार है।" इसका तात्पर्य है कि भगवान कालभैरव केवल इन आकाशीय पिंडों के बाहरी नियंत्रक नहीं हैं, बल्कि वे उनके आंतरिक चेतन सिद्धांत हैं। वे चेतना और शक्ति हैं जो प्रत्येक ग्रह के भीतर निवास करती हैं, जिससे वे कार्य करते हैं और अपना प्रभाव डालते हैं।

ब्रह्मांडीय नियंत्रण और अभिव्यक्ति यह नाम कालभैरव की उन ब्रह्मांडीय शक्तियों पर पूर्ण संप्रभुता को दर्शाता है जो समय, नियति और अस्तित्व के चक्रों को नियंत्रित करती हैं। ग्रहों के आत्मन होने के नाते, वे उनकी शक्ति, उनकी गतिविधियों और उनके कर्मिक प्रभावों के अंतिम स्रोत हैं। यह उन्हें इन ग्रहों के प्रभावों को प्रकट करने, विनियमित करने या यहां तक कि पार करने की शक्ति प्रदान करता है। भक्तों के लिए, इसका मतलब है कि कालभैरव की शरण लेने से ग्रहों के अशुभ प्रभावों को कम किया जा सकता है, क्योंकि वे उनके संचालन का मार्गदर्शन करने वाली आत्मा हैं।

कर्म और नियति के परम स्वामी चूंकि ग्रहों को कर्म के एजेंट के रूप में देखा जाता है जो पिछले कर्मों के परिणाम वितरित करते हैं, इसलिए ग्रहात्मकाय के रूप में कालभैरव स्वयं कर्म और नियति के परम स्वामी हैं। वे ब्रह्मांडीय नियम का प्रतीक हैं जो आकाशीय शक्तियों और व्यक्तिगत नियति के बीच परस्पर क्रिया को नियंत्रित करता है।

950. रुद्ररूपाय

रुद्र के भयंकर, गर्जने वाले और भयानक रूप धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : रुद्ररूपाय नाम का सीधा अर्थ है "जो रुद्र का रूप धारण करते हैं" या "जिनका स्वभाव रुद्र जैसा है।" यह नाम अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह स्पष्ट रूप से कालभैरव को रुद्र के साथ पहचानता है, जो शिव के सबसे प्राचीन और शक्तिशाली अभिव्यक्तियों में से एक हैं।

रुद्र का रूप "रूप" केवल शारीरिक उपस्थिति को ही नहीं, बल्कि अंतर्निहित प्रकृति, विशेषता और सार को भी दर्शाता है। इस प्रकार, कालभैरव रुद्र के सार को ही मूर्त रूप देते हैं।

भयंकर और गर्जनापूर्ण पहलू रुद्र, जो "रुद" धातु से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ है "रोना," "गर्जना करना," या "चीखना," शिव का भयावह और विनाशकारी पहलू है। वह तूफान के देवता, शिकारी, धनुर्धर और जंगली स्थानों, मृत्यु तथा विनाश से जुड़े देवता हैं। यह संबंध दर्शाता है कि कालभैरव रुद्र की दुर्जेय शक्ति, प्राकृतिक आपदाओं का कारण बनने की उनकी क्षमता और ब्रह्मांड के प्रलय (विघटन) में उनकी भूमिका को साझा करते हैं। गर्जनापूर्ण पहलू उनकी अदम्य इच्छा और बुरी शक्तियों में आतंक पैदा करने की उनकी क्षमता का प्रतीक है।

अज्ञान और बुराई का नाश करने वाला रुद्र की तरह, कालभैरव भी इस रूप में अज्ञान (अविद्या) और राक्षसी संस्थाओं के खिलाफ एक भयावह शक्ति हैं। उनका उग्र स्वभाव मनमाना नहीं है; यह ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बनाए रखने और सच्चे भक्तों को अंतिम मुक्ति प्रदान करने के लिए निर्देशित है। साधकों के लिए, यह भयावह पहलू उस विनाशकारी शक्ति का प्रतिनिधित्व कर सकता है जो भ्रम, अहंकार और आध्यात्मिक मार्ग पर आने वाली सभी बाधाओं को तोड़ देती है।

परोपकारी चिकित्सक और रक्षक भयंकर कल्पना के बावजूद, रुद्र का एक परोपकारी पक्ष भी है, जिन्हें अक्सर एक शक्तिशाली चिकित्सक, रक्षक और वरदान देने वाले के रूप में invoked किया जाता है। यह विरोधाभास शिव के स्वभाव का केंद्रीय बिंदु है। कालभैरव भी, अपने रुद्र रूप के

माध्यम से, उन लोगों को गहरा संरक्षण और उपचार प्रदान करते हैं जो भक्ति के साथ उनके पास आते हैं, भय को दूर करते हैं और अंतिम आश्रय प्रदान करते हैं।

शिव के साथ एकीकरण कालभैरव को रुद्ररूपाय के रूप में आह्वान करना, शिव की सबसे गतिशील और अनियंत्रित रूप में आदिम विनाशकारी और परिवर्तनकारी ऊर्जा के साथ उनकी सीधी वंशावली और पहचान को स्वीकार करना है। यह शिव के समग्र और सर्व-समावेशी स्वरूप को गले लगाने का प्रतीक है, जो सर्वोच्च तपस्वी और भयानक संहारक दोनों हैं।

951. वसवष्टस्वर्णकृते

जो आठ प्रकार के धन (वसुओं) और स्वर्ण (सोने) का निर्माण करते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : वस्वाष्टस्वर्णकृते (Vasvaṣṭasvarṇakṛte) नाम कालभैरव का एक गहरा और बहुस्तरीय विशेषण है, जो कई संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है: व (धन/वसु), अष्ट (आठ), स्वर्ण (सोना), और कृते (जो बनाता/प्रदान करता है)।

आठ वसु (अष्ट वसु) वैदिक और पौराणिक परंपराओं में, वसु आठ सहायक देवताओं का एक समूह हैं, जो ब्रह्मांडीय प्राकृतिक घटनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं और भौतिक प्रचुरता और कल्याण के देवता माने जाते हैं। उन्हें आमतौर पर इस प्रकार पहचाना जाता है: 1. धार (पृथ्वी) 2. ध्रुव (ध्रुव तारा/स्थिरता) 3. सोम (चंद्रमा/जल) 4. आप (जल/ब्रह्मांडीय जल) 5. अनल (अग्नि) 6. अनिल (वायु) 7. प्रत्यूष (भोर/प्रकाश) 8. प्रभास (तेज प्रकाश/वैभव)

ये आठ वसु उन मूलभूत तत्वों और ऊर्जाओं का प्रतीक हैं जो भौतिक संसार और उसकी समृद्धि का निर्माण और पोषण करते हैं। जब कालभैरव को आठ वसुओं को "बनाने" या "प्रदान करने" वाला बताया जाता है, तो इसका अर्थ है कि वे ब्रह्मांड में सभी प्रकार के भौतिक धन, प्राकृतिक संसाधनों, स्थिरता और प्रकाश के अंतिम स्रोत और नियंत्रक हैं। वे उन घटकों के स्वामी हैं जो प्रचुरता का वातावरण बनाते हैं।

स्वर्ण (सोना) स्वर्ण, या सोना, सार्वभौमिक रूप से धन, शुद्धता और कीमतीपन का प्रतीक माना जाता है। हिंदू विचार में, सोना अक्सर स्थायित्व, दिव्यता और पवित्रता से जुड़ा होता है। यह केवल भौतिक धन का ही नहीं, बल्कि आध्यात्मिक चमक और शुद्ध समृद्धि का भी प्रतिनिधित्व करता है। "सोने के निर्माता" होने के नाते, कालभैरव को सभी कीमती धातुओं और, विस्तार से, सभी प्रकार के मूल्यवान और शुद्ध धन के अंतिम प्रदाता के रूप में चित्रित किया गया है। यह आर्थिक स्थिरता और संसाधनों की शुद्धता पर उनके प्रभुत्व को दर्शाता है।

निर्माता और प्रदाता (कृते) कृते (कृ, "करना," "बनाना," "रचना करना" से) प्रत्यय यह दर्शाता है कि कालभैरव इन धन के रूपों को प्रकट करने में सक्रिय कारक हैं। वे केवल एक धारक नहीं हैं, बल्कि भौतिक कल्याण के स्रोत और आयोजक हैं। यह उनकी समृद्धि प्रदान करने, गरीबी दूर करने और अपने भक्तों और समग्र रूप से ब्रह्मांड के भौतिक पोषण को सुनिश्चित करने की शक्ति को दर्शाता है।

प्रतीकात्मक अर्थ यह नाम कालभैरव की भयंकर उपस्थिति के बावजूद एक परोपकारी प्रदाता के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। वे न केवल विनाश और समय को नियंत्रित करते हैं, बल्कि विशेष रूप से भौतिक धन और मूलभूत ब्रह्मांडीय तत्वों से संबंधित सृष्टि और पोषण को भी नियंत्रित करते हैं। वे यह सुनिश्चित करते हैं कि जो लोग भक्ति के साथ उनकी पूजा करते हैं, वे अभाव से मुक्त हों और पवित्र व्यवस्था द्वारा शासित सभी प्रकार की भौतिक और आध्यात्मिक समृद्धि से धन्य हों।

952. वशिने

जो स्वयं पर और समस्त ब्रह्मांड पर पूर्ण नियंत्रण रखते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : नाम वशी (Vaśī) संस्कृत मूल "वश" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "नियंत्रित करना," "वश में करना," या "माहिर होना।" जब इसे दिव्य, विशेषकर कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो यह पूर्ण और निर्विवाद प्रभुत्व को दर्शाता है।

आत्म-नियंत्रण (आत्म-वशी) उच्चतम आध्यात्मिक स्तर पर, वशी उस एक को इंगित करता है जिसका अपनी इंद्रियों, मन और आंतरिक अवस्थाओं पर पूर्ण और संपूर्ण नियंत्रण है। यह एक सिद्ध योगी का चिह्न है, जो इच्छाओं, घृणाओं और घटनात्मक संसार के उतार-चढ़ाव से पूरी तरह से विरक्त है। कालभैरव, शिव के एक प्रकटीकरण के रूप में, आत्म-नियंत्रण की इस अंतिम स्थिति का प्रतीक हैं, जहाँ उनकी चेतना हमेशा सर्वोच्च शांति और नियंत्रण की स्थिति में रहती है, किसी भी बाहरी या आंतरिक शक्ति से अछूती रहती है।

ब्रह्मांडीय नियंत्रण (जगत-वशी) आत्म-नियंत्रण से परे, वशी संपूर्ण ब्रह्मांड पर प्रभुत्व को दर्शाता है। कालभैरव, वशी के रूप में, सर्वोच्च शासक हैं जो सृष्टि (सृष्टि), संरक्षण (स्थिति) और विघटन (संहार) के कार्यों का संचालन करते हैं। वे सभी समय (काल), सभी तत्वों (भूतों), सभी प्राणियों (जीवों) और प्रकृति की सभी शक्तियों पर शासन करते हैं। ब्रह्मांड में कुछ भी उनके आदेश या प्रभाव के बाहर संचालित नहीं होता है। यह नियंत्रण मनमाना नहीं है बल्कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) और दिव्य इच्छा की अभिव्यक्ति है।

प्रयास रहित प्रभुत्व उनके नियंत्रण की पूर्णता ऐसी है कि यह सहज है। सांसारिक नियंत्रण के विपरीत, जिसमें प्रयास की आवश्यकता होती है, उनका प्रभुत्व उनके स्वभाव (स्वरूप) में निहित है। वे केवल नियंत्रक हैं, और संपूर्ण ब्रह्मांड स्वाभाविक रूप से उनकी दिव्य इच्छा के साथ संरेखित होता है।

संप्रभुता का प्रतीक इस प्रकार, वशी कालभैरव को परम संप्रभु के रूप में प्रतीक करता है, वह जिससे सारी शक्ति निकलती है, और जिसमें सारी शक्ति लौट आती है। वशी के प्रति भक्ति उनकी पूर्ण सर्वोच्चता की स्वीकृति है और उनकी दिव्य व्यवस्था के साथ संरेखण के लिए एक प्रार्थना है, जो व्यक्तिगत नियंत्रण के भ्रम से मुक्ति और सर्वोच्च स्वामी के प्रति समर्पण के माध्यम से आत्म-नियंत्रण की ओर ले जाती है।

953. आदित्याय

अदिति के पुत्र, तेजस्वी सूर्य देव को नमन।

विस्तार : आदित्याय नाम आदित्य से लिया गया है, जो वैदिक और हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में एक महत्वपूर्ण शब्द है।

उत्पत्ति और अर्थ आदित्य का शाब्दिक अर्थ है "अदिति का पुत्र", जहाँ अदिति आदिम मातृ देवी हैं, जो असीमता, अनंतता और ब्रह्मांडीय विस्तार का प्रतिनिधित्व करती हैं। वह बारह आदित्यों की माता हैं, जो स्वर्गीय देवता हैं, जिनमें सबसे प्रसिद्ध सूर्य (सूर्य देव) शामिल हैं। इस संदर्भ में, आदित्याय कालभैरव को सूर्य से जुड़े प्रकाशमान और जीवन-प्रदायक गुणों के अवतार के रूप में संदर्भित करता है।

तेजस्वी सूर्य देव "तेजस्वी सूर्य देव" के रूप में, कालभैरव प्रकाश, ऊर्जा और जीवन शक्ति का प्रतीक हैं। जैसे सूर्य अंधकार को दूर करता है और जीवन को जन्म देता है, वैसे ही कालभैरव अज्ञान और भय को दूर करते हैं, आध्यात्मिक साधकों के मार्ग को प्रकाशित करते हैं। उनका तेज केवल

भौतिक प्रकाश नहीं है, बल्कि ज्ञान का प्रकाश भी है जो आत्मज्ञान लाता है और अज्ञान (अविद्या) के अंधकार को दूर करता है।

ब्रह्मांडीय नियामक सूर्य एक ब्रह्मांडीय नियामक भी है, जो समय, मौसम और जीवन के चक्रों को सटीक रूप से नियंत्रित करता है। यह कालभैरव की समय (काल) के स्वामी के रूप में भूमिका के साथ पूरी तरह से मेल खाता है। वह सृष्टि, संरक्षण और संहार के ब्रह्मांडीय नृत्य का संचालन करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे सूर्य ब्रह्मांड की लय को नियंत्रित करता है।

सर्वव्यापी ऊर्जा इसके अलावा, सूर्य की ऊर्जा सर्वव्यापी है और पृथ्वी पर जीवन के लिए आवश्यक है। इसी तरह, कालभैरव की दिव्य ऊर्जा (शक्ति) सभी अस्तित्व में व्याप्त है, सभी प्राणियों को बनाए रखती है और चेतन करती है। वह ब्रह्मांड में शक्ति और गतिशीलता का अंतिम स्रोत हैं।

954. सर्वकर्त्रे

सभी चीजों के परम कर्ता और निर्माता को नमन।

विस्तार : सर्वकर्त्रे नाम शिव की परम सर्वोच्चता की एक गहन घोषणा है, जिसमें "सर्व" (सभी, सब कुछ) और "कर्ता" (करने वाला, निर्माता, कारक) का संयोजन है।

परम कर्ता सर्वकर्ता के रूप में, भगवान शिव केवल एक दर्शक या पालक नहीं हैं, बल्कि ब्रह्मांड में सभी कार्यों, घटनाओं और सृष्टियों के पीछे प्राथमिक स्रोत और पूर्ण कारक हैं। प्रत्येक घटना, प्रत्येक गति, प्रत्येक विचार और प्रत्येक श्वास अंततः उनकी दिव्य इच्छा और ऊर्जा से उत्पन्न होती है। यह अवधारणा एक अद्वैतवादी समझ को रेखांकित करती है जहाँ दिव्य के अलावा कोई स्वतंत्र "कर्ता" नहीं है।

एकमात्र निर्माता वह वह है जो सब कुछ आरंभ करता है, अधिनियमित करता है और पूरा करता है (कर्ता)। वह ब्रह्मांडीय नृत्य का सूत्रधार, ब्रह्मांडों का निर्माता और व्यक्तिगत नियति का वास्तुकार है। इसका तात्पर्य यह है कि ब्रह्मा, हिंदू त्रिमूर्ति में पारंपरिक निर्माता देवता भी, अंततः शिव की इच्छा के एक कारक हैं, जो शिव की सर्वोच्च आज्ञा के तहत अपना कार्य करते हैं।

सर्वशक्तिमत्ता और संप्रभुता यह नाम उनकी सर्वशक्तिमत्ता (सभी-शक्ति) और सभी अस्तित्व पर उनकी पूर्ण संप्रभुता को उजागर करता है। उनकी स्वीकृति या प्रत्यक्ष भागीदारी के बिना कुछ भी नहीं होता है। यह दिव्य नियंत्रण की भावना को व्यक्त करता है जो व्यापक और जटिल दोनों है।

दार्शनिक निहितार्थ दार्शनिक रूप से, यह नाम सगुण ब्रह्म, योग्य निरपेक्ष को सभी अस्तित्व के परम कारण और आधार के रूप में इंगित करता है। भक्त के लिए, यह समर्पण की भावना पैदा करता है, यह समझते हुए कि सभी परिणाम अंततः इस सर्वोच्च कर्ता द्वारा निर्धारित होते हैं, उन्हें परिणामों के लिए पूर्ण व्यक्तिगत जिम्मेदारी के बोझ से मुक्त करते हैं, जबकि अभी भी धर्मी कार्य (कर्म योग) को प्रोत्साहित करते हैं।

955. सर्वगाय

जो सर्वव्यापी हैं, जो हर जगह और हर चीज़ में विद्यमान हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : सर्वगाय नाम संस्कृत के शब्द सर्व और ग से बना है।

सर्व (Sarva): इसका अर्थ है "सभी," "प्रत्येक," या "संपूर्ण।" यह समग्रता, सार्वभौमिकता और पूर्णता को दर्शाता है, जिसमें बिना किसी अपवाद के सब कुछ शामिल है।

ग (Ga): यह "गम्" धातु से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है "जाना," "चलना," या "व्याप्त होना।"

सर्वव्यापी उपस्थिति (The All-Pervading Presence) सर्वगाय का शाब्दिक अर्थ है "जो हर जगह जाता है" या "जो हर चीज़ में व्याप्त है।" यह नाम कालभैरव के असीम और सर्वव्यापी स्वरूप को उजागर करता है। यह दर्शाता है कि वे स्थान, समय या रूप से सीमित नहीं हैं; वे हर परमाणु, हर प्राणी, हर आयाम और हर पल में मौजूद हैं। वे समस्त अस्तित्व का आधार हैं।

अंतर्व्याप्ति और परात्परता (Immanence and Transcendence) सर्वव्यापकता की यह अवधारणा दिव्य के अंतर्व्यापी और परात्पर दोनों पहलुओं को दर्शाती है। जबकि वे अंतर्व्यापी हैं, प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक रचना के भीतर निवास करते हैं, वे सभी रचनाओं से परे भी हैं, उस ब्रह्मांड की सीमाओं से परे मौजूद हैं जिसमें वे व्याप्त हैं। उनकी उपस्थिति केवल एक निष्क्रिय प्रसार नहीं है, बल्कि हर चीज़ में एक सक्रिय, सचेत और sustaining (धारण करने वाली) शक्ति है।

दार्शनिक महत्व (Philosophical Significance) योगिक और वेदांतिक दर्शन में, परम सत्य (ब्रह्म या परमात्मा) को सर्वव्यापी (Sarvavyāpī) के रूप में वर्णित किया गया है। कालभैरव को सर्वगाय कहकर, इस सर्वोच्च, सर्व-समावेशी वास्तविकता के साथ उनकी पहचान की पुष्टि की जाती है। वे सर्वव्यापी चेतना हैं जो सबसे छोटे कण से लेकर सबसे बड़ी आकाशगंगा तक पूरे ब्रह्मांड को चेतन और अंतर्निहित करती है।

अविभाजित पूर्णता (Undivided Wholeness) उनकी सर्वव्यापी प्रकृति एक अविभाजित पूर्णता को दर्शाती है। कोई ऐसी जगह नहीं है जहाँ वे न हों, कोई ऐसा समय नहीं है जब वे उपस्थित न हों। यह समझ एक भक्त को दिव्य और सभी रचनाओं के साथ एकता की भावना की ओर ले जा सकती है, अलगाव के भ्रम को दूर कर सकती है।

956. स्वर्णसिद्धिदाय

स्वर्ण बनाने की दिव्य शक्ति प्रदान करने वाले को नमन।

विस्तार : स्वर्णसिद्धिदाय नाम एक शक्तिशाली यौगिक है जो कालभैरव की सृजनात्मक और परिवर्तनकारी शक्ति के एक विशिष्ट पहलू को दर्शाता है, विशेष रूप से भौतिक अभिव्यक्ति और आध्यात्मिक रसायन विज्ञान से संबंधित।

व्युत्पत्ति और घटक • स्वर्ण (Svarṇa): इस शब्द का सार्वभौमिक अर्थ "सोना" है। भौतिक अर्थ में, यह कीमती धातु को संदर्भित करता है। आध्यात्मिक या रासायनिक संदर्भ में, यह शुद्धता, पूर्णता और सर्वोच्च प्राप्ति का प्रतीक हो सकता है। • सिद्धि (Siddhi): यह शब्द आध्यात्मिक शक्तियों, असाधारण क्षमताओं, उपलब्धियों या पूर्णताओं को दर्शाता है। यह कुछ प्राकृतिक या अलौकिक नियमों पर महारत को संदर्भित करता है। • दाय (Dāya): यह "दा" मूल से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है "देना," "प्रदान करना," या "बख्शना।"

रासायनिक शक्ति का दाता जब संयुक्त किया जाता है, तो स्वर्णसिद्धिदाय उस एक को संदर्भित करता है जो स्वर्ण (सोना) से संबंधित सिद्धि (शक्ति/पूर्णता) प्रदान करता है। इसकी कई परतों पर व्याख्या की जा सकती है:

• सोने की शाब्दिक अभिव्यक्ति: एक सांसारिक अर्थ में, यह आधार धातुओं को सोने में बदलने, या सीधे सोने को प्रकट करने की क्षमता को संदर्भित करता है। यह एक शास्त्रीय रासायनिक शक्ति है, जिसे अक्सर रसायनज्ञों (रसवादियों) द्वारा खोजा जाता है। कालभैरव, तंत्र और सिद्धि से जुड़े देवता के रूप में, ऐसी शक्तियों को प्रदान करने के लिए पूजे जाते हैं। यह मौलिक पदार्थ पर पूर्ण नियंत्रण को दर्शाता है।

• शुद्धता और पूर्णता की शक्ति: शाब्दिक से परे, "सोना" शुद्धता, ज्ञान और आध्यात्मिक पूर्णता का प्रतीक है। इसलिए, स्वर्णसिद्धिदाय का अर्थ आध्यात्मिक "सोना"—चेतना की सर्वोच्च अवस्था, मुक्ति, या प्राप्ति—को प्राप्त करने की सिद्धि का दाता हो सकता है। इस संदर्भ में, परिवर्तन धातु का नहीं बल्कि स्वयं का होता है, एक सांसारिक अवस्था से एक दिव्य, चमकदार और शुद्ध अवस्था में।

• धन और समृद्धि का दाता: सोना धन, समृद्धि और शुभता का एक सार्वभौमिक प्रतीक है। सोने की सिद्धि प्रदान करने का अर्थ उन भक्तों को प्रचुर भौतिक धन प्रदान करना भी हो सकता है जो ईमानदारी से उनकी पूजा करते हैं, उन्हें ब्रह्मांडीय धन के प्रवाह के साथ संरेखित करते हैं।

आंतरिक रसायन यह नाम भक्त के भीतर निहित शक्ति को इंगित करता है, जो कालभैरव की कृपा से सक्रिय होती है, बदलने और बनाने के लिए। यह एक अनुस्मारक है कि दिव्य न केवल बाहरी दुनिया को नियंत्रित करता है बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर के रसायनज्ञ को भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रचुरता प्राप्त करने के लिए सशक्त भी करता है।

957. सदारुष्टाय

जो दुष्टता के प्रति सदैव क्रोधित और कुपित रहते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : सदारुष्टाय (Sadāruṣṭāya) नाम दो संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है: सदा (Sadā) और आरुष्ट (Aruṣṭa)।

बुराई के प्रति शाश्वत क्रोध (सदा आरुष्ट) सदा (Sadā) का अर्थ है "शाश्वत," "अनंत," "हमेशा," या "सदा के लिए।" यह एक अपरिवर्तनीय और स्थायी अवस्था को दर्शाता है। आरुष्ट (Aruṣṭa) का अर्थ है "क्रोधी," "गुस्से वाला," "उग्र," या "नाराज़।" जब इन्हें जोड़ा जाता है, तो सदारुष्ट (Sadāruṣṭa) एक ऐसी सत्ता का वर्णन करता है जो निरंतर क्रोधी है। यह क्रोध मनमाना या तुच्छ भावनाओं से उत्पन्न नहीं होता है, बल्कि बुराई, अन्याय और सभी प्रकार की लौकिक अव्यवस्था के प्रति एक स्थिर और अथक आक्रोश है।

ब्रह्मांडीय नियामक और धर्म का संरक्षक यह नाम कालभैरव की भूमिका को ब्रह्मांडीय व्यवस्था के सर्वोच्च नियामक और धर्म (धार्मिकता) के प्रबल संरक्षक के रूप में उजागर करता है। उनका शाश्वत क्रोध एक दिव्य शक्ति है जो सक्रिय रूप से नकारात्मकता का मुकाबला करती है और उसे नष्ट करती है। यह सुनिश्चित करता है कि बुराई अनिश्चित काल तक प्रबल नहीं हो सकती। यह क्रोध ब्रह्मांड के लिए एक सुरक्षात्मक तंत्र के रूप में कार्य करता है, जो संतुलन और सद्भाव को बाधित करने वाली शक्तियों के खिलाफ लगातार पीछे धकेलता है।

अज्ञान और भ्रम का विनाश एक आध्यात्मिक स्तर पर, उनके शाश्वत क्रोध को उस निरंतर शक्ति के रूप में समझा जा सकता है जो आध्यात्मिक साधक के भीतर अज्ञान (अविद्या), भ्रम (मोह), और अहंकार (अहंकार) को नष्ट करती है। जिस प्रकार वे बाहरी बुराइयों पर क्रोधित होते हैं, उसी प्रकार वे मुक्ति के आंतरिक अवरोधों को दूर करने में भी शाश्वत रूप से लगे रहते हैं। यह "क्रोध" शुद्धिकरण और ज्ञान की ओर ले जाता है।

एक दिव्य विरोधाभास जबकि "क्रोध" को अक्सर एक नकारात्मक मानवीय भावना के रूप में देखा जाता है, दिव्य संदर्भ में, विशेष रूप से भैरव जैसे व्यक्तित्वों के लिए, यह एक उद्देश्यपूर्ण और परोपकारी गुण है। यह वह प्रचंड करुणा है जो सृष्टि और संवेदनशील प्राणियों के अंतिम कल्याण के लिए सीमाओं के आवश्यक विनाश की अनुमति देती है। वे हमेशा सतर्क रहते हैं, जो हानिकारक है उसे मिटाने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।

958. स्वर्णदात्रे

स्वर्ण और धन के सबसे उदार दाता को नमन।

विस्तार : स्वर्णदात्रे नाम 'स्वर्ण' (सोना) और 'दात्रे' (देने वाला/प्रदान करने वाला) का एक यौगिक है।

सोने और धन का प्रदाता यह नाम कालभैरव के एक ऐसे पहलू पर प्रकाश डालता है जो उनके उग्र, तपस्वी स्वभाव को देखते हुए विरोधाभासी लग सकता है। हालाँकि, हिंदू देवी-देवताओं की समृद्ध परंपरा में, सबसे कठोर रूप भी अक्सर प्रचुर दान को समाहित करते हैं। स्वर्णदात्रे विशेष रूप से उन्हें सोने, धन और भौतिक समृद्धि के परोपकारी प्रदाता के रूप में इंगित करता है। यह केवल अपने आप में धन संचय करने के बारे में नहीं है, बल्कि अक्सर भक्त के भरण-पोषण, धार्मिक कर्तव्यों और धर्म के पालन के लिए आवश्यक संसाधनों के प्रावधान को दर्शाता है।

सोने का प्रतीकवाद हिंदू धर्म में सोना (स्वर्ण) अत्यधिक प्रतीकात्मक है। यह दर्शाता है: • शुद्धता और शुभता: इसकी धूमिल न होने वाली गुणवत्ता शुद्धता और स्थायित्व का प्रतीक है, जो इसे एक शुभ धातु बनाती है। • समृद्धि और प्रचुरता: यह सीधे धन, भाग्य और भौतिक कल्याण से जुड़ा है। • दिव्य प्रकाश और अमरता: सोने की चमकदार चमक इसे सूर्य और दिव्य प्रकाश से जोड़ती है, और इसकी अविनाशी प्रकृति अमरता का संकेत देती है। • आध्यात्मिक मूल्य: सोना चढ़ाना देवी-देवताओं और गुरुओं को एक पारंपरिक दक्षिणा (भेंट) है, जो श्रद्धा और आशीर्वाद के आदान-प्रदान का प्रतीक है, जिसमें दी गई सामग्री अक्सर आध्यात्मिक लाभों को प्रकट करती है।

भैरव का परोपकारी पहलू जबकि भैरव अपने भयानक रूप के लिए जाने जाते हैं, यह नाम एक सुरक्षात्मक और परोपकारी पक्ष को प्रकट करता है - एक जो अपने भक्तों के कल्याण और भौतिक सुरक्षा को सुनिश्चित करता है। यह दर्शाता है कि कालभैरव, परम भगवान के रूप में, अस्तित्व के सभी पहलुओं, जिसमें भौतिक प्रचुरता भी शामिल है, पर प्रभुत्व रखते हैं। सोना और धन प्रदान करने की उनकी क्षमता समृद्धि में आने वाली बाधाओं को दूर करने और अपने सच्चे भक्तों को सांसारिक सुखों का आशीर्वाद देने की उनकी शक्ति को दर्शाती है, जिससे वे वित्तीय चिंताओं से मुक्त जीवन जी सकें, जो बदले में उनके आध्यात्मिक प्रयासों में सहायता कर सकता है।

959. घुर्घुराय

ऐसी गहरी, घुर्घुर या गर्जना करने वाली ध्वनि उत्पन्न करने वाले (भगवान शिव) को नमन।

विस्तार : घुर्घुरय नाम, संस्कृत मूल "घुर्-घुर्" से व्युत्पन्न, तुरंत एक शक्तिशाली और गुंजायमान ध्वनि को उद्‌घाटित करता है, जो कालभैरव को अत्यधिक ध्वनि बल के अनुभवों से सीधे जोड़ता है। यह ध्वनि, जिसे गड़गड़ाहट, गर्जना या गुर्राना के रूप में वर्णित किया गया है, बहुआयामी प्रतीकात्मकता रखती है।

सृष्टि और संहार की ब्रह्मांडीय गर्जना यह गहरी, प्रतिध्वनित ध्वनि ब्रह्मांड के आदिम स्पंदनों का प्रतिनिधित्व करती है। जिस प्रकार ब्रह्मांड को एक प्रारंभिक कंपन (परा नाद) से उत्पन्न माना जाता है, उसी प्रकार भैरव की गड़गड़ाहट भी एक समान आदिम स्रोत से निकलती है। यह समय के खुलने की ध्वनि है और, समान रूप से, इसके अंततः पुनः अवशोषण की ध्वनि है। यह ब्रह्मांडीय चक्रों में निहित अपार शक्ति को दर्शाता है, एक ऐसी ध्वनि जो शुरुआत और अंत दोनों है।

भयानक अभिव्यक्ति गड़गड़ाहट की ध्वनि अक्सर उन लोगों के लिए भयानक होती है जो समय और परिवर्तन के प्रवाह का विरोध करते हैं। यह परम भक्षक, काल की ध्वनि है, जो सब कुछ भस्म कर देता है। यह पहलू भैरव की भयानक दंड देने वाले (दंडपाणि) और सभी चीजों के अंत को लाने वाले के रूप में भूमिका पर जोर देता है। यह भ्रमित लोगों के लिए एक चेतावनी है कि क्षणभंगुर दुनिया से लगाव अनिवार्य रूप से उसके विनाश की ओर ले जाएगा।

भूमिगत शक्ति और पार्थिव प्रतिध्वनि गड़गड़ाहट और गर्जना की ध्वनियाँ भूमिगत शक्तियों से भी जुड़ी होती हैं, जैसे भूकंप, ज्वालामुखी और पृथ्वी की गहरी आंतरिक हलचलें। यह कालभैरव को पृथ्वी की कच्ची, अनियंत्रित शक्ति से जोड़ता है, जो सभी स्थलीय और पाताल लोक की शक्तियों पर उनके प्रभुत्व को दर्शाता है। वह परम आधार और सहारा हैं, फिर भी वह ऐसे भी हैं जो सभी नींवों को हिला सकते हैं और ध्वस्त कर सकते हैं।

आंतरिक परिवर्तन की ध्वनि एक आध्यात्मिक स्तर पर, गहरी, गुंजायमान ध्वनि आंतरिक मंथन और शुद्धि का प्रतीक हो सकती है जो एक भक्त अस्तित्व के सत्य का सामना करने पर अनुभव करता है। यह गहरी, आंतरिक "गड़गड़ाहट" अहंकार के घुलने, पुराने प्रतिमानों के टूटने और गहन आध्यात्मिक परिवर्तन की ध्वनि हो सकती है जो मुक्ति की ओर ले जाती है। यह सत्य की ध्वनि है, जो भ्रम की परतों को तोड़ती है।

९६०. रक्तलोचनाय

भयानक, रक्त जैसे लाल नेत्रों वाले (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : नाम रक्तलोचन संस्कृत शब्दों रक्त और लोचन का संयोजन है।

रक्त: यह शब्द "रक्त" को दर्शाता है, और विस्तार से, "लाल" या "रक्त-लाल" को। इसमें जुनून, तीव्रता, उग्रता और महत्वपूर्ण जीवन शक्ति के अर्थ भी निहित हैं। एक दिव्य संदर्भ में, यह सर्वोच्च ऊर्जा और शक्ति का संकेत दे सकता है।

लोचन: इसका अर्थ "आँख" या "दृष्टि" है।

दिव्य न्याय की भयंकर दृष्टि रक्तलोचन देवता की आँखों के रक्त-लाल होने को संदर्भित करता है, जो एक प्रभावशाली प्रतीकात्मक विवरण है जो एक तीव्र, अटूट और भयंकर स्वभाव का प्रतीक है। यह लालिमा केवल सौंदर्यपरक नहीं है; यह कई शक्तिशाली अर्थों को व्यक्त करती है:

१. उग्रता और क्रोध: रक्त-लाल आँखें दिव्य क्रोध और बुराई, अज्ञानता और अधर्म के प्रति एक समझौताहीन रवैये को दर्शाती हैं। यह दृष्टि उन लोगों के लिए भयावह है जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था का विरोध करते हैं, लेकिन भक्तों के लिए सुरक्षात्मक है। भगवान शिव, अपने भयंकर रूपों जैसे भैरव में, अक्सर ऐसी आँखें प्रकट करते हैं, जो सभी बाधाओं को नष्ट करने के लिए तैयार रहती हैं।

२. विनाशकारी शक्ति: लाल रंग अक्सर अग्नि से जुड़ा होता है। इस प्रकार, रक्तलोचन की दृष्टि को विनाश की एक सर्व-भक्षी अग्नि के रूप में देखा जा सकता है, जो नकारात्मकता, अशुद्धियों और व्यक्तिगत आत्माओं को फँसाने वाले बंधनों (पाशों) को नष्ट करने में सक्षम है।

३. सतर्कता और सर्वव्यापकता: निरंतर, अग्नि-लाल दृष्टि सर्वोच्च सतर्कता, एक सदा-जागरूक उपस्थिति को दर्शाती है जो सब कुछ देखती है, सभी भ्रमों को भेदती है, और संपूर्ण ब्रह्मांडीय कार्यप्रणाली की देखरेख करती है। यह एक ऐसी आँख है जो कुछ भी नहीं चूकती।

४. परोपकारी संरक्षण (विरोधाभासी): यद्यपि भयावह, यह उग्रता अंततः एक परोपकारी उद्देश्य की पूर्ति करती है। भैरव का भयावह पहलू उनके भक्तों के लिए एक ढाल है। उनकी लाल आँखें, यद्यपि भयंकर हैं, उनके उपासकों के कल्याण पर टिकी हुई हैं, उनके कर्मों और भयों को जलाती हैं।

५. तपस और आंतरिक ताप: योगिक परंपराओं में, लाल रंग तपस (तपस्वी ताप/आध्यात्मिक उत्साह) का भी प्रतीक हो सकता है। रक्त-लाल आँखें आध्यात्मिक ऊर्जा, तपस्या और ब्रह्मांडीय संतुलन बनाए रखने पर एक अटूट ध्यान के एक विशाल भंडार का संकेत देती हैं।

इस प्रकार, रक्तलोचन कालभैरव की दुर्जेय शक्ति, एक धर्मी दंडक के रूप में उनकी भूमिका, और एक संरक्षक का एक ज्वलंत वर्णन है जिसकी तीव्र सतर्कता ब्रह्मांडीय व्यवस्था की रक्षा करती है।

961. पादुकासिद्धिदयाय

जो अपनी पवित्र पादुकाओं (खड़ाऊँ) द्वारा अलौकिक शक्तियाँ प्रदान करते हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : नाम पादुकासिद्धिदयाय, पादुका, सिद्धि और दय का एक यौगिक है।

- पादुका (Pādukā): यह पवित्र खड़ाऊँ या पैर के पैड को संदर्भित करता है, विशेष रूप से गुरु, देवता या पूजनीय आध्यात्मिक व्यक्ति से जुड़े हुए। हिंदू धर्म में, किसी आध्यात्मिक गुरु की पादुकाओं को छूना, रखना या उन पर ध्यान करना उनके आशीर्वाद और आध्यात्मिक संचार प्राप्त करने का एक शक्तिशाली साधन माना जाता है। वे देवता की उपस्थिति, शक्ति और आशीर्वाद का प्रतीक हैं।
- सिद्धि (Siddhi): यह शब्द अलौकिक शक्तियों, आध्यात्मिक उपलब्धियों या सिद्धियों को दर्शाता है। ये छोटी रहस्यमय क्षमताओं (जैसे दूरदर्शिता या उत्तोलन) से लेकर आध्यात्मिक मुक्ति की उच्चतम अवस्था तक हो सकती हैं।
- दय (Dāya): का अर्थ है "देने वाला" या "प्रदान करने वाला"।

पवित्र खड़ाऊँ के माध्यम से अलौकिक शक्तियों का दाता यह नाम भगवान कालभैरव की अद्वितीय क्षमता को दर्शाता है कि वे साधकों (आध्यात्मिक जिज्ञासुओं) को अपनी दिव्य पादुकाओं के सम्मान के माध्यम से सिद्धियाँ प्रदान करते हैं। यह अवधारणा तांत्रिक और सिद्ध परंपराओं में गहराई से निहित है, जहाँ "पादुका पूजा" (खड़ाऊँ की पूजा) एक सामान्य और शक्तिशाली अनुष्ठान है। एक शक्तिशाली देवता या गुरु की पादुकाएँ केवल जूते नहीं हैं; उन्हें दिव्य ऊर्जा के पात्र माना जाता है, जो स्वयं दिव्य चरणों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

पादुकाओं का प्रतीकवाद (Symbolism of the Pādukās) पादुकाएँ पृथ्वी पर देवता की शक्ति के आधार और प्रकटीकरण का प्रतीक हैं। कालभैरव की पादुकाओं से जुड़कर, भक्त उनकी अतुलनीय शक्ति, सुरक्षा और सामान्य सीमाओं को पार करने की क्षमता तक पहुँच सकते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि उनकी प्रतीकात्मक उपस्थिति (जो पादुकाओं द्वारा दर्शायी जाती है) की गहरी भक्ति, ध्यान या अनुष्ठानिक पूजा के माध्यम से, कोई भी असाधारण क्षमताएँ और आध्यात्मिक प्रगति प्राप्त कर सकता है।

एक तांत्रिक मार्ग (A Tantric Pathway) भैरव परंपराओं में, पादुकाओं की पूजा विभिन्न सिद्धियों को प्राप्त करने का एक सीधा और शक्तिशाली मार्ग हो सकती है, जिसमें सूक्ष्म ऊर्जाओं को नियंत्रित करने, बाधाओं को दूर करने, शत्रुओं से सुरक्षा और अंततः, आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) में सहायता करने वाली सिद्धियाँ शामिल हैं। भगवान के चरणों से उतरने वाली कृपा को सबसे शक्तिशाली माना जाता है, जो कर्मों को शुद्ध करती है और ज्ञान प्रदान करती है।

962. पाताय

जो परम रक्षक और संरक्षक हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : 'पाताय' नाम संस्कृत धातु "पा" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "रक्षा करना," "संरक्षण करना," "बचाना," या "शासन करना।" कालभैरव के संदर्भ में, यह नाम ब्रह्मांडीय व्यवस्था, धर्म और अपने भक्तों के परम रक्षक और संरक्षक के रूप में उनकी सर्वोच्च भूमिका को दर्शाता है।

परम रक्षक 'पाताय' के रूप में, कालभैरव वह दिव्य सत्ता हैं जो सृष्टि को सभी प्रकार के विनाश, अराजकता और दुर्भावनापूर्ण शक्तियों से बचाते हैं। यह सुरक्षा केवल शारीरिक सुरक्षा तक ही सीमित नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों तक भी फैली हुई है। वह अपने भक्तों को भय, अज्ञानता, अहंकार जैसे आंतरिक शत्रुओं और नकारात्मक ऊर्जाओं, बुरी आत्माओं और विपत्तियों सहित बाहरी खतरों से बचाते हैं।

धर्म के संरक्षक वह धर्म (धार्मिकता और ब्रह्मांडीय नियम) के कर्मठ संरक्षक हैं। इस भूमिका में, वह सुनिश्चित करते हैं कि ब्रह्मांड की प्राकृतिक और नैतिक व्यवस्था बनी रहे। इस व्यवस्था से कोई भी विचलन या कोई भी कार्य जो इसके संतुलन को खतरे में डालता है, उनके सुरक्षात्मक और दंडात्मक पहलू को जागृत करता है। वह ब्रह्मांडीय प्रवर्तक के रूप में कार्य करते हैं जो संतुलन बिगड़ने पर उसे बहाल करते हैं।

समय के संरक्षक काल (समय) के साथ उनके जुड़ाव को देखते हुए, उनकी सुरक्षा सृष्टि, पालन और संहार के चक्रों के संरक्षण तक भी फैली हुई है। वह समय के प्रकट होने की अध्यक्षता करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि प्रत्येक चरण ठीक उसी तरह घटित हो जैसा कि निर्धारित है, इस प्रकार ब्रह्मांड की मौलिक लय को बनाए रखते हैं।

भैरव का परोपकारी पहलू जबकि भैरव को अक्सर भयंकर रूप में चित्रित किया जाता है, उनका 'पाताय' पहलू उनकी गहन परोपकारिता को उजागर करता है। उनकी सुरक्षात्मक प्रकृति दिव्य प्रेम और करुणा की अभिव्यक्ति है, जो उनकी ब्रह्मांडीय निगरानी में सभी प्राणियों के कल्याण और आध्यात्मिक विकास को सुनिश्चित करती है। भक्त बाधाओं को दूर करने और सुरक्षा व निर्भयता प्रदान करने के लिए उनका आह्वान करते हैं।

963. पारुष्यविनिषूदनाय

सभी कठोरता और क्रूरता के पूर्ण संहारक को नमन।

विस्तार : पारुष्यविनिशूदन (पा़रुष्यविनिशूदन - Pāruṣya-Viniśūdana) नाम कालभैरव का एक गहन और करुणामय पहलू है, जो एक शोधक और पीड़ा को कम करने वाले के रूप में उनकी भूमिका को प्रकट करता है।

नाम का विश्लेषण:

पारुष्य (Pāruṣya): यह संस्कृत शब्द "कठोरता," "क्रूरता," "खुरदुरापन," "तीव्रता," या "निर्दयता" को संदर्भित करता है। इसमें न केवल शारीरिक कठोरता शामिल है, बल्कि वाणी की कठोरता (अपमानजनक या अशिष्ट भाषा), कर्मों की कठोरता (हिंसा, उत्पीड़न), और यहाँ तक कि मन की कठोरता (असहिष्णुता, कठोरता, सहानुभूति की कमी) भी शामिल है। आध्यात्मिक संदर्भ में, पारुष्य ऐसे कार्यों के कर्मिक परिणामों को भी संदर्भित कर सकता है, जो पीड़ा के रूप में प्रकट होते हैं।

विनिशूदन (Viniśūdana): यह शब्द "शूद्" (शूद्) धातु से लिया गया है, जिसका अर्थ है "नष्ट करना," "मारना," या "दबाना।" उपसर्ग "वि" (वि) इस क्रिया को तीव्र करता है, जो पूर्णता, समग्रता या विशिष्टता को इंगित करता है। इस प्रकार, विनिशूदन का अर्थ है "पूर्ण विनाशक," "संपूर्ण संहारक," या "पूरी तरह से उन्मूलन करने वाला।"

समस्त कठोरता का विनाशक: जब संयुक्त किया जाता है, तो पारुष्यविनिशूदन इसलिए कालभैरव को उस रूप में वर्णित करता है जो कठोरता और क्रूरता के सभी रूपों को पूरी तरह और समग्र रूप से मिटा देता है। यह विनाश केवल दंडात्मक नहीं बल्कि मुक्तिदायक है।

• क्रूरता और अन्याय का उन्मूलन: इस रूप में कालभैरव को दिव्य शक्ति के रूप में देखा जाता है जो क्रूरता के अपराधियों और प्रभावों को हटाकर संतुलन और न्याय बहाल करती है। वह उन लोगों को दंडित करते हैं जो बिना पछतावे के पीड़ा पहुंचाते हैं, जिससे निर्दोषों की रक्षा होती है और धर्म का पालन होता है। • हृदय को कोमल बनाना: बाहरी कार्यों से परे, यह पहलू आंतरिक कठोरता को बदलने की उनकी शक्ति की बात करता है। एक भक्त के लिए, वह उनके अपने हृदय से पारुष्य को हटा सकते हैं - उन्हें अधिक करुणामय, कम कठोर, और क्रोध या घृणा जैसी नकारात्मक भावनाओं की पकड़ से मुक्त कर सकते हैं। • पीड़ा का निवारण: प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, कठोरता की

उपस्थिति पीड़ा की ओर ले जाती है। पारुष्य को नष्ट करके, कालभैरव क्रूरता के कारण होने वाले शारीरिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक दर्द को कम करते हैं, चाहे वह स्वयं द्वारा किया गया हो या दूसरों द्वारा थोपा गया हो। • दिव्य न्याय: वह सुनिश्चित करते हैं कि कठोरता में निहित कार्य ब्रह्मांडीय व्यवस्था में चुनौती के बिना न रहें। गंभीर नकारात्मक कर्मों को नष्ट करने और संतुलन बहाल करने के लिए उनका उग्र रूप आवश्यक है।

यह नाम कालभैरव की भूमिका को न केवल एक भयानक देवता के रूप में उजागर करता है, बल्कि एक परोपकारी रक्षक के रूप में भी उजागर करता है जो दुर्भावना और अन्याय के कारण होने वाली पीड़ा को कम करने के लिए सक्रिय रूप से हस्तक्षेप करते हैं। वह दुनिया को उसकी कठोरता से शुद्ध करते हैं, शांति और धर्म का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

964. अष्टसिद्धये

अष्ट सिद्धियों के शाश्वत स्वरूप को नमन।

विस्तार : नाम अष्टसिद्धि भगवान कालभैरव को अष्ट सिद्धियों, यानी योग और तांत्रिक परंपराओं में वर्णित आठ महान अलौकिक क्षमताओं के मूर्त रूप और दाता के रूप में संदर्भित करता है।

अष्ट सिद्धियों को समझना अष्ट का अर्थ है "आठ," और सिद्धि का अर्थ है "पूर्णता," "उपलब्धि," या "अलौकिक शक्ति।" अष्ट सिद्धियाँ उन्नत आध्यात्मिक अभ्यासों और दिव्य कृपा के माध्यम से प्राप्त असाधारण शक्तियाँ हैं। इन्हें आमतौर पर इस प्रकार गिना जाता है:

1. अणिमा (Aṇimā): अत्यंत सूक्ष्म होने की शक्ति। 2. महिमा (Mahimā): असीम रूप से विशाल होने की शक्ति। 3. गरिमा (Garimā): असीम रूप से भारी होने की शक्ति। 4. लघिमा (Laghimā): अविश्वसनीय रूप से हल्का होने की शक्ति। 5. प्राप्ति (Prāpti): इच्छित कुछ भी प्राप्त करने, या किसी भी स्थान तक पहुँचने की शक्ति। 6. प्राकाम्य (Prākāmya): अपनी इच्छा से कुछ भी प्राप्त करने की शक्ति (असीमित इच्छाशक्ति), या प्राकृतिक बाधाओं को दूर करने की शक्ति। 7. ईशित्व (Īśitva): सृष्टि पर प्रभुत्व, निर्माण और नियंत्रण करने की शक्ति। 8. वशित्व (Vaśitva): सभी तत्वों और प्राणियों पर नियंत्रण, दूसरों को वश में करने की शक्ति।

सिद्धियों का मूर्त रूप जब कालभैरव को अष्टसिद्धि के रूप में संबोधित किया जाता है, तो इसका अर्थ है कि वे केवल इन सिद्धियों को प्रदान करने में सक्षम नहीं हैं, बल्कि वे इन शक्तियों का सार 'हैं'। वे इन सभी पूर्णताओं के दिव्य स्रोत और परम स्वामी हैं। उनका अस्तित्व ही इन सर्वोच्च क्षमताओं को समाहित करता है।

शक्तियों के दाता भक्त कालभैरव की पूजा इन सिद्धियों को आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्राप्त करने या आध्यात्मिक विकास को रोकने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए करते हैं। उन्हें साधक के भीतर सुप्त क्षमताओं को अनलॉक करने और भौतिक तथा सूक्ष्म लोकों पर महारत प्रदान करने के लिए आह्वान किया जाता है। सिद्धियों की प्राप्ति को अक्सर गहन आध्यात्मिक प्रगति और दिव्य के साथ गहरे संबंध का एक उप-उत्पाद माना जाता है।

दिव्य महारत का प्रतीकवाद यह नाम कालभैरव के सर्वोच्च ब्रह्मांडीय अधिकार और सभी भौतिक तथा आध्यात्मिक नियमों के स्वामी के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है। यह दर्शाता है कि वे प्रकृति और चेतना की सभी शक्तियों को नियंत्रित करते हैं, और उनकी कृपा से, एक साधक सामान्य सीमाओं को पार कर सकता है और असाधारण क्षमताओं का उपयोग कर सकता है।

965. महासद्धये

सभी दिव्य उपलब्धियों में सबसे महान और सर्वोच्च को नमन।

विस्तार : महासिद्धये नाम एक गहन संस्कृत शब्द है जो "महा" और "सिद्धि" के संयोजन से बना है, जो कालभैरव के संदर्भ में एक गहरा आध्यात्मिक महत्व प्रकट करता है।

महा: इस शब्द का अर्थ है "महान," "विशाल," "सर्वोच्च," या "परम।" यह किसी चीज़ की उच्चतम संभव डिग्री या सबसे बड़ी सीमा को दर्शाता है।

सिद्धि: इस शब्द के अर्थ की कई परतें हैं: 1. दिव्य उपलब्धियाँ या शक्तियाँ: ये असाधारण आध्यात्मिक क्षमताएँ हैं (जैसे उत्तोलन, दूरदर्शिता, टेलीपोर्टेशन, आदि) जो गहन आध्यात्मिक अभ्यास, योग, ध्यान और दिव्य कृपा के माध्यम से प्राप्त की जाती हैं। आमतौर पर आठ प्रमुख सिद्धियाँ (अष्ट सिद्धियाँ) और कई छोटी सिद्धियाँ होती हैं। 2. पूर्णता या पूर्ति: सिद्धि अपने अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति को भी दर्शाती है, चाहे वह आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष), आत्म-साक्षात्कार, या किसी भी प्रयास का सफल समापन हो। 3. सफलता या समृद्धि: व्यापक अर्थ में, यह महान सफलता, समृद्धि, या अलौकिक उपलब्धियों को संदर्भित कर सकता है।

कालभैरव सबसे बड़ी सिद्धि के रूप में जब कालभैरव को महासिद्धये के रूप में पुकारा जाता है, तो यह दर्शाता है कि वे केवल सिद्धियों के दाता नहीं हैं, बल्कि सभी सिद्धियों के साक्षात् स्वरूप और परम स्रोत हैं। वे स्वयं 'परम उपलब्धि' हैं।

सभी शक्तियों का स्रोत भक्त विभिन्न सिद्धियों को प्राप्त करने के लिए कालभैरव की पूजा करते हैं, यह मानते हुए कि वे ही हैं जो सच्चे अभ्यासकर्ताओं को ये शक्तियाँ प्रदान करते हैं। केवल सिद्धियों के स्वामी होने के बजाय, वे परम शक्ति हैं जिससे सभी आध्यात्मिक उपलब्धियाँ उत्पन्न होती हैं।

परम पूर्णता विशिष्ट शक्तियों से परे, महासिद्धये कालभैरव को आध्यात्मिक पूर्णता और पूर्ति की अंतिम अवस्था के रूप में इंगित करता है। कालभैरव को जानना सबसे बड़ी संभव आध्यात्मिक उपलब्धि प्राप्त करना है - समय और अहंकार के चक्रों से पूर्ण मुक्ति, कालातीत चेतना के साथ विलय। वे सभी आध्यात्मिक मार्गों की परिणति और योग के उच्चतम रूप का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्राप्ति के स्वामी यह नाम उन सभी के सर्वोच्च संरक्षक और स्वामी के रूप में उनकी भूमिका पर जोर देता है जो आध्यात्मिक या सांसारिक सफलता चाहते हैं। उनके प्रति समर्पण करके, व्यक्ति उस परम शक्ति के साथ संरेखित होता है जो सभी प्रकार की प्राप्तियों को सुगम बनाती है, जिससे सांसारिक और पारलौकिक दोनों तरह की सफलता मिलती है।

966. सुप्रसिद्धये

समस्त ब्रह्मांड में अत्यंत प्रसिद्ध और विख्यात को नमन।

विस्तार : नाम सुप्रसिद्धाय (Suprasiddhāya) उपसर्ग "सु-" और मूल "प्रसिद्ध" का एक यौगिक है, जो असाधारण रूप से प्रसिद्ध और विख्यात होने की स्थिति को इंगित करता है।

• सु- (Su-): यह संस्कृत उपसर्ग "अच्छा," "उत्कृष्ट," "भली-भांति," या "बहुत" को दर्शाता है। यह उस शब्द के अर्थ को तीव्र करता है जिसके पहले यह आता है, एक उत्कृष्ट गुणवत्ता को व्यक्त करता है।

• प्रसिद्ध (Prasiddha): इस शब्द का अर्थ है "प्रसिद्ध," "विख्यात," "सुविख्यात," "मशहूर," या "प्रमुख।" यह व्यापक पहचान और प्रशंसा को संदर्भित करता है।

ब्रह्मांडीय प्रशंसा (Cosmic Acclaim) जब भगवान कालभैरव पर लागू होता है, तो सुप्रसिद्धाय (Suprasiddhāya) का अर्थ है कि उनकी प्रसिद्धि और ख्याति किसी विशेष क्षेत्र, भक्तों के एक विशिष्ट समूह, या यहां तक कि एक ही दुनिया तक सीमित नहीं है। इसके बजाय, यह पूरे ब्रह्मांड में,

अस्तित्व के सभी लोकों – स्वर्ग (Swarga), मृत्युलोक (Mrityuloka), और पाताल (Patala) – तक फैली हुई है। उनका नाम, उनकी शक्ति और उनकी दिव्य लीला (खेल) देवताओं, मनुष्यों, आत्माओं और जीवन के सभी रूपों द्वारा सार्वभौमिक रूप से स्वीकार और मनाई जाती है।

अधिकार और प्रभाव (Authority and Influence) यह गहन प्रसिद्धि काल (Kala) के भगवान के रूप में उनके पूर्ण अधिकार और बुराई के संहारक के रूप में उनके भयानक पहलू से उत्पन्न होती है। उन्हें ब्रह्मांडीय व्यवस्था बनाए रखने, दुष्टों को दंडित करने और धर्मियों की रक्षा करने में उनकी भूमिका के लिए सराहा जाता है। उनकी ख्याति उनकी अद्वितीय शक्ति और दिव्य अर्थव्यवस्था के भीतर उनके अपरिहार्य कार्य का एक प्रमाण है।

आध्यात्मिक महत्व (Spiritual Significance) भक्तों के लिए, भैरव को सुप्रसिद्धाय (Suprasiddhāya) के रूप में पहचानना आराम और आत्मविश्वास लाता है। इसका मतलब है कि वे जिस देवता की पूजा करते हैं, वह कोई अस्पष्ट या छोटा देवता नहीं है, बल्कि एक सार्वभौमिक रूप से मान्यता प्राप्त और शक्तिशाली शक्ति है जिसकी कृपा सभी सीमाओं को पार कर सकती है। यह उनकी सर्वव्यापकता और उनकी दिव्य ऊर्जा के व्यापक प्रभाव को रेखांकित करता है। उन्हें सुप्रसिद्धाय (Suprasiddhāya) के रूप में नमन करना उनकी सर्वोच्च महिमा और सार्वभौमिक पूजा को स्वीकार करने का एक कार्य है।

967. स्वर्णदाय

स्वर्ण के उदार प्रदाता को नमन।

विस्तार : स्वर्णदाय नाम संस्कृत के शब्दों स्वर्ण और दाय का एक यौगिक है।

स्वर्ण (Svarṇa): इसका अर्थ है सोना। यह केवल कीमती धातु नहीं है, बल्कि धन, समृद्धि, पवित्रता, आध्यात्मिक ज्ञान और दिव्य के परम सार का प्रतीक है। आध्यात्मिक संदर्भों में, यह चेतना के सुनहरे प्रकाश या आत्मा के दीप्तिमान सार का भी प्रतिनिधित्व कर सकता है।

दाय (Dāya): इसका अर्थ है उपहार, प्रदान करना, दान या देना।

भौतिक धन के दाता एक सरल और प्रत्यक्ष व्याख्या में, स्वर्णदाय कालाभैरव को भौतिक धन, विशेष रूप से सोने के उदार दाता के रूप में संदर्भित करता है। यह पहलू एक प्रदाता और पोषक के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है, जो अपने भक्तों को सांसारिक समृद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं। यह अक्सर धन के उनके संरक्षण और वित्तीय बाधाओं को दूर करने की उनकी क्षमता से जुड़ा होता है।

आध्यात्मिक स्वर्ण के दाता भौतिक से परे, "सोना" सर्वोच्च आध्यात्मिक धन का भी प्रतीक है। इसमें शामिल हैं: • आध्यात्मिक ज्ञान (Spiritual Illumination): शुद्ध चेतना या आत्मज्ञान का सुनहरा प्रकाश। • आंतरिक पवित्रता (Inner Purity): आत्मा का परिष्करण, अशुद्धियों से मुक्त। • दिव्य ज्ञान (Divine Wisdom): अमूल्य ज्ञान जो मुक्ति की ओर ले जाता है। • शुभता (Auspiciousness): सामान्य कल्याण, सफलता और सौभाग्य जो दिव्य कृपा से आता है।

स्वर्णदाय के रूप में, कालाभैरव ये अमूल्य आध्यात्मिक उपहार प्रदान करते हैं, भक्तों को आंतरिक समृद्धि और परम मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करते हैं। वह सभी आशीर्वादों, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों का अंतिम स्रोत हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि उनके समर्पित अनुयायियों को उनकी यात्रा के लिए कुछ भी आवश्यक नहीं है।

968. भूतवेतालघातिने

भूतों, राक्षसों और वेतालों का वध करने वाले को नमन।

विस्तार : नाम भूतवेतालघातिनी तीन संस्कृत शब्दों से बना है: भूत, वेताल और घातिन। यह नाम दिव्य के एक शक्तिशाली और सुरक्षात्मक पहलू का स्पष्ट रूप से वर्णन करता है, विशेष रूप से कालभैरव की भूमिका को दुर्भावनापूर्ण संस्थाओं के विजेता के रूप में दर्शाता है।

भूत (Bhūta): जैसा कि पहले बताया गया है, भूत में मौलिक शक्तियों, सभी प्रकार के जीवन, और विशेष रूप से निराकार आत्माओं, भूतों और निम्न सूक्ष्म संस्थाओं सहित प्राणियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है जो सांसारिक क्षेत्रों में निवास कर सकते हैं। इन्हें अक्सर बेचैन, अशांत या दुर्भावनापूर्ण इरादों वाला माना जाता है, जो अक्सर मनुष्यों को संकट में डालते हैं।

वेताल (Vetāla): यह शब्द विशेष रूप से "पिशाच-जैसी" या "घोल" इकाई को दर्शाता है। प्राचीन भारतीय विद्या और मिथकों में वेतालों को ऐसी आत्माओं के रूप में वर्णित किया गया है जो मृत शरीरों में निवास करती हैं, उन्हें नियंत्रित करती हैं और अक्सर भय, बीमारी और दुर्भाग्य का कारण बनती हैं। वे शक्तिशाली, चालाक होते हैं, और आमतौर पर श्मशान घाट और अन्य सीमांत स्थानों से जुड़े होते हैं।

घातिन (Ghātin): इसका अर्थ है "संहारक," "विनाशक," या "हत्यारा।" यह किसी चीज को पूरी तरह से पराजित करने और समाप्त करने की शक्ति को दर्शाता है। जब इसे भूत और वेताल के साथ जोड़ा जाता है, तो यह इन संस्थाओं के खिलाफ एक सक्रिय, निर्णायक और दुर्जेय कार्रवाई पर जोर देता है।

बुरी आत्माओं का सर्वोच्च संहारक (The Supreme Vanquisher of Evil Spirits) इसलिए, भूतवेतालघातिनी उस परम सत्ता को संदर्भित करता है जो सभी प्रकार की दुर्भावनापूर्ण आत्माओं, भूतों, घोलों और पिशाच-जैसी संस्थाओं का संहारक है। यह नाम कालभैरव के उग्र और सुरक्षात्मक स्वभाव को उजागर करता है। वह सूक्ष्म, अदृश्य नकारात्मक शक्तियों के खिलाफ संरक्षक हैं जो व्यक्तियों और समुदायों को प्रभावित कर सकती हैं।

प्रतीकात्मक अर्थ शाब्दिक व्याख्या से परे, इस नाम का एक प्रतीकात्मक महत्व है। "भूत और पिशाच" आंतरिक राक्षसों और नकारात्मक मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं (जैसे अनसुलझे भय, जुनून, मानसिक बीमारियाँ, या आध्यात्मिक रुकावटें) का भी प्रतिनिधित्व कर सकते हैं जो किसी की महत्वपूर्ण ऊर्जा का उपभोग करते हैं और आध्यात्मिक प्रगति में बाधा डालते हैं। कालभैरव को इस पहलू में इन आंतरिक "घोलों" को दूर करने और भक्त को उनकी पकड़ से मुक्त करने के लिए आह्वान किया जाता है, जिससे मानसिक शांति और आध्यात्मिक मुक्ति मिलती है।

पवित्र स्थानों के संरक्षक (Protector of Sacred Spaces) कई शैव और भैरव परंपराओं में, भैरव को पवित्र स्थलों (जैसे मंदिर और तीर्थ स्थान) और श्मशान घाटों (श्मशान) के संरक्षक के रूप में माना जाता है। भूतवेतालघातिनी के रूप में उनकी भूमिका इन स्थानों को शुद्ध और हानिकारक या भ्रष्ट आध्यात्मिक प्रभावों से मुक्त रखने की उनकी शक्ति को पुष्ट करती है, जिससे निर्बाध आध्यात्मिक अभ्यास संभव हो पाता है।

969. वेतालानुचराय

उन (कालभैरव) को नमन, जिनके पीछे वेतालों की सेनाएँ चलती हैं और सेवा करती हैं।

विस्तार : वेतालानुचराय नाम वेताल और अनुचर का एक यौगिक है।

वेताल (Vetāla): यह शब्द हिंदू पौराणिक कथाओं में एक विशिष्ट प्रकार की द्वेषपूर्ण आत्मा या पिशाच को संदर्भित करता है, जिसे अक्सर पुनर्जीवित शवों के रूप में दर्शाया जाता है जो श्मशान घाटों में निवास करते हैं। वे दुर्जेय और भयानक संस्थाएँ हैं, जो मानव शरीरों पर कब्जा करने, दुर्भाग्य पैदा करने और छिपे हुए खजानों या ज्ञान के संरक्षक के रूप में कार्य करने की अपनी क्षमता के लिए जाने जाते हैं। लोकप्रिय संस्कृति में, भर्तृहरि द्वारा रचित "वेताल पञ्चविंशति" (वेताल की पच्चीस कहानियाँ) जैसी कहानियों ने इन शक्तिशाली, अक्सर बुद्धिमान, लेकिन खतरनाक आत्माओं की छवि को और लोकप्रिय बनाया है।

अनुचर (Anucāra): इस शब्द का अर्थ है एक अनुयायी, परिचर, साथी या सेवक। यह एक दल या व्यक्तियों की एक सेना का तात्पर्य है जो एक विशेष स्वामी के प्रति समर्पित और सेवा करते हैं।

मृतकों के स्वामी "वेतालों की सेनाओं द्वारा पीछा किए जाने और सेवा किए जाने वाले" के रूप में, कालभैरव को इन भयानक, अलौकिक प्राणियों के सर्वोच्च स्वामी और कमांडर के रूप में चित्रित किया गया है। यह अस्तित्व के गहरे, अधिक रहस्यमय और अक्सर भयभीत पहलुओं पर उनके पूर्ण अधिकार को दर्शाता है। उनका प्रभुत्व जीवितों से परे, मृतकों के दायरे और सूक्ष्म लोकों तक फैला हुआ है।

भय और मृत्यु पर नियंत्रण का प्रतीकवाद वेताल, मृत्यु, क्षय और भयावहता से जुड़ी आत्माओं के रूप में, मृत्यु और अज्ञात के आसपास मानव भय के प्रतीक का प्रतिनिधित्व करते हैं। कालभैरव का उन पर नियंत्रण मृत्यु पर उनकी अंतिम विजय और सबसे नकारात्मक ऊर्जाओं को भी नियंत्रित और परिवर्तित करने की उनकी शक्ति का प्रतीक है। वह वह है जो उन शक्तियों को वश में कर सकता है और निर्देशित कर सकता है जो अन्यथा सामान्य प्राणियों को अभिभूत कर देंगी। यह पहलू अपने भक्तों से भय को दूर करने वाले के रूप में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है, क्योंकि वह स्वयं उस चीज़ के स्वामी हैं जिससे भय लगता है।

श्मशान घाटों और गुप्त ज्ञान के संरक्षक यह देखते हुए कि वेताल अक्सर श्मशान घाटों (श्मशान) में पाए जाते हैं, इन स्थानों को कालभैरव के लिए पवित्र माना जाता है। उनके नेता के रूप में, वह इन सीमांत स्थानों के अंतिम संरक्षक हैं जहाँ जीवन और मृत्यु का संगम होता है। इसके अलावा, वेतालों को कभी-कभी प्राचीन ज्ञान रखने या छिपे हुए रहस्यों तक पहुँच रखने के रूप में चित्रित किया जाता है। उन्हें नियंत्रित करके, कालभैरव ऐसे गुप्त ज्ञान और गूढ़ प्रथाओं के भी निहित स्वामी बन जाते हैं।

हानिकारक शक्तियों से सुरक्षा जो भक्त इस नाम से कालभैरव की पूजा करते हैं, वे बुरी आत्माओं, काले जादू और अन्य नकारात्मक प्रभावों से उनकी सुरक्षा चाहते हैं। उनका सम्मान करके, वे ऐसी शक्तियों के स्वामी का पक्ष प्राप्त करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि कोई भी छोटी आत्मा या अंधेरी इकाई उन्हें नुकसान नहीं पहुँचा सकती है।

970. रवये

गर्जना करने वाले, तेजस्वी और शक्तिशाली सूर्य को नमन।

विस्तार : रवये नाम गहरा अर्थ रखता है, जिसकी जड़ें संस्कृत व्युत्पत्ति और प्रतीकवाद में हैं, विशेष रूप से भगवान शिव और उनके भैरव जैसे उग्र रूपों के संबंध में।

गर्जना करने वाले (सृष्टि और विनाश की ध्वनि) "रु" (ru) मूल धातु, जिससे "रव" (rava) व्युत्पन्न हुआ है, का प्राथमिक अर्थ है "गर्जना करना," "चिल्लाना," या "एक शक्तिशाली ध्वनि उत्पन्न करना।" इस प्रकार, रवा का अर्थ है "जो गर्जना करता है।" कालभैरव के संदर्भ में, यह गर्जना केवल एक आक्रामक ध्वनि नहीं, बल्कि एक ब्रह्मांडीय कंपन है। • ब्रह्मांडीय ध्वनि (नाद): यह गर्जना आदिम ध्वनि (नाद) को दर्शाती है जो सृष्टि, संरक्षण और विघटन के साथ होती है। यह वह अव्यक्त ध्वनि है जो सभी अभिव्यक्तियों से पहले आती है और वह ध्वनि भी है जो प्रत्येक ब्रह्मांडीय चक्र के

अंत की घोषणा करती है। • विनाश की ध्वनि: शिव के उग्र रूप के रूप में, उनकी गर्जना एक भयानक ध्वनि हो सकती है जो अज्ञान, अहंकार और सभी मायावी चीजों के विनाश का प्रतीक है। यह वह ध्वनि है जो माया के बंधनों को तोड़ती है। • अधिकार का प्रतीक: गर्जना पूर्ण प्रभुत्व और शक्ति की घोषणा भी है। जब भैरव गर्जना करते हैं, तो यह समय, मृत्यु और सभी अस्तित्व पर उनके सर्वोच्च अधिकार को स्थापित करता है।

तेजस्वी, सूर्य (प्रकाश और जीवन का स्रोत) ध्वनि से परे, "रवि" (Ravi) सूर्य के लिए एक प्रसिद्ध संस्कृत शब्द है। जब भैरव को रवये के रूप में पहचाना जाता है, तो यह उन्हें सूर्य के गुणों से भर देता है: • प्रकाश और चेतना का स्रोत: सूर्य प्रकाश का दाता है, जो अंधकार को दूर करता है। आध्यात्मिक रूप से, यह चेतना के प्रकाश (ज्ञान) का प्रतीक है जो अज्ञान (तमस) को मिटाता है। रवि के रूप में भैरव आध्यात्मिक मार्ग के प्रकाशक हैं। • जीवन का पालनकर्ता: सूर्य पृथ्वी पर सभी जीवन के लिए आवश्यक है। ब्रह्मांडीय अर्थ में, रवि के रूप में भैरव परम पालनकर्ता हैं, वह ऊर्जा जो सभी अस्तित्व का आधार है, यहां तक कि अपने विनाशकारी पहलू में भी। • समयबद्धता और व्यवस्था: सूर्य अटूट नियमितता के साथ उगता और अस्त होता है, जो ब्रह्मांडीय व्यवस्था (ऋत) और समय के निरंतर मार्च का प्रतीक है, जिस पर कालभैरव का शासन है। • दुर्भावना का नाश करने वाला: जिस प्रकार सूर्य की किरणें शुद्ध और कीटाणुरहित करती हैं, उसी प्रकार रवि के रूप में भैरव सभी नकारात्मक ऊर्जाओं, बुराइयों और भय को दूर करने वाले हैं, उन्हें अपने तीव्र आध्यात्मिक प्रकाश से जलाकर भस्म कर देते हैं।

संश्लेषण इसलिए, "रवये" कालभैरव को एक साथ गर्जना करने वाली, शक्तिशाली शक्ति के गुणों को प्रदान करता है जो ध्वनि के माध्यम से ब्रह्मांडीय चक्रों का संचालन करती है, और सूर्य के समान तेजस्वी, जीवन-प्रदायक और चेतना-प्रदान करने वाली ऊर्जा है, जो अंधकार को दूर करती है और सभी अस्तित्व को बनाए रखती है। वह परम वास्तविकता की भयानक ध्वनि और सत्य का शानदार प्रकाश दोनों हैं।

971. कालाय

काल के स्वरूप, परम संहारक को नमन।

विस्तार : कालाय नाम संस्कृत शब्द 'काल' से लिया गया है, जिसका मूल अर्थ "समय" है, लेकिन इसमें "काला," "मृत्यु," और "भाग्य" भी शामिल हैं। कालभैरव के संदर्भ में, यह इन सभी अवधारणाओं पर उनके पूर्ण प्रभुत्व को दर्शाता है।

समय का अवतार कालभैरव स्वयं काल (समय) हैं। वे केवल समय के नियंत्रक या उससे जुड़े देवता नहीं हैं, बल्कि समय का सार और मानवीकरण हैं। समय वह परम शक्ति है जो सभी चीजों का निर्माण, पोषण और फिर भक्षण करती है। ब्रह्मांड में सब कुछ, सबसे छोटे परमाणु से लेकर सबसे बड़ी आकाशगंगा तक, काल के अथक प्रवाह और परम शक्ति के अधीन है। यह पहलू उनकी शाश्वत, अजेय प्रकृति को दर्शाता है, जो सभी सीमाओं से परे है।

परम संहारक समय के अवतार के रूप में, काल परम संहारक भी हैं। समय के भीतर जो कुछ भी अस्तित्व में आता है, उसे अंततः नष्ट होना ही है। यह विनाशकारी पहलू दुर्भावनापूर्ण नहीं है, बल्कि ब्रह्मांडीय चक्र—सृष्टि, पालन और संहार—का एक आवश्यक घटक है। कालभैरव, काल के रूप में, सभी अस्तित्व का अंत करते हैं, सभी रूपों को अप्रकट क्षमता में वापस विलीन कर देते हैं। यह विनाश जीव (व्यक्तिगत आत्मा) के लिए भौतिक संसार से मुक्ति है।

काला पहलू काल का "काले" या "अंधेरे" से जुड़ाव उनकी अगम्यता और सभी कथित रूपों और गुणों से परे उनकी पारलौकिक प्रकृति का प्रतीक है। वे द्वैत से परे हैं, प्रकाश और अंधकार से परे हैं, फिर भी गहरे अंतरिक्ष का अंधकार और रात का आकाश अक्सर उनकी अनंत, निराकार उपस्थिति

को दर्शाने के लिए उपयोग किया जाता है जो सब कुछ समाहित करता है।

भाग्य के स्वामी चूंकि वे समय हैं, वे स्वाभाविक रूप से भाग्य को नियंत्रित करते हैं। घटनाओं का अनावरण, व्यक्तियों का भाग्य, और ब्रह्मांड की गति सभी काल के ताने-बाने में बुने हुए हैं। कालाय को प्रणाम करके, व्यक्ति भाग्य और समय की अदम्य शक्ति को स्वीकार करता है, ब्रह्मांडीय व्यवस्था के प्रति समर्पण करता है और जीवन के उतार-चढ़ावों को नेविगेट करने के लिए ज्ञान की तलाश करता है।

९७२. कालाग्निरुद्रश्रियै

जो ब्रह्मांड को समाप्त करने वाली काल अग्नि के रूप में रुद्र की महिमामयी शोभा से युक्त हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : कालाग्निरुद्रश्रियै नाम भगवान शिव के एक भयानक और शक्तिशाली पहलू का वर्णन करने वाला एक गहन और बहुस्तरीय विशेषण है, विशेष रूप से उनके भैरव स्वरूप में। यह कई शक्तिशाली संस्कृत शब्दों का संयोजन है: काल, अग्नि, रुद्र और श्री।

काल (विनाशक के रूप में समय) काल "समय" को दर्शाता है, न केवल एक रैखिक प्रगति के रूप में बल्कि विनाश और विघटन की अंतिम शक्ति के रूप में। ब्रह्मांडीय अर्थ में, काल सभी का भक्षक है, वह अथक कारक जो हर चीज को उसके अंत तक ले जाता है। कालाग्निरुद्र के रूप में, शिव समय के इस पहलू का प्रतीक हैं जो सभी सृष्टि का उपभोग करता है।

अग्नि (विघटन की अग्नि) अग्नि का अर्थ है "आग"। जब काल के साथ जोड़ा जाता है, तो "कालाग्नि" का अर्थ "समय की अग्नि" है - ब्रह्मांडीय नरक जो एक ब्रह्मांडीय चक्र (प्रलय) के अंत में पूरे ब्रह्मांड को जलाने के लिए फूटता है। यह अग्नि कोई सामान्य ज्वाला नहीं है बल्कि एक आध्यात्मिक ऊष्मा है जो सभी भौतिक रूपों को उनके आदिम सार में वापस घोल देती है। कहा जाता है कि यह अग्नि सार्वभौमिक विघटन के समय शिव के माथे से निकलती है।

रुद्र (गर्जना करने वाला, विनाशक, भयभीत करने वाला) रुद्र शिव का एक पुरातन और उग्र रूप है, जिसके नाम का अर्थ है "गर्जना करने वाला" या "चीखने वाला"। वह तूफान, विनाश और तीव्र, भयानक शक्ति से जुड़ा है। रुद्र वह देवता है जो पीड़ा और मृत्यु लाता है, लेकिन अशुद्धियों को जलाकर उपचार और मुक्ति भी लाता है। कालाग्निरुद्र के संदर्भ में, वह सर्वोच्च विनाशक है जो ब्रह्मांडीय विघटन की अध्यक्षता करता है, ब्रह्मांड के ढहने पर गर्जना करता है।

श्री (वैभव, महिमा, शुभता) श्री का अर्थ है "वैभव," "महिमा," "सौंदर्य," "धन," या "शुभता।" यहाँ, यह इस विनाशकारी रूप की राजसी और विस्मयकारी चमक, अंतर्निहित दिव्य शक्ति और भव्यता को दर्शाता है। यह इंगित करता है कि ब्रह्मांडीय भस्मक के रूप में अपने सबसे भयानक पहलू में भी, भगवान शिव सर्वोच्च दिव्य महिमा और भव्यता से संपन्न हैं। यह "वैभव" कोमल या शांत करने वाला नहीं है; यह परम ब्रह्मांडीय विनाशक की भारी, उग्र महिमा है।

ब्रह्मांडीय विघटन और मुक्ति इस प्रकार, कालाग्निरुद्रश्रियै शिव को रुद्र के गौरवशाली, शानदार और भयानक रूप के रूप में वर्णित करता है, जो समय की ब्रह्मांडीय अग्नि के रूप में प्रकट होता है, जो ब्रह्मांड के अंतिम विघटन के लिए जिम्मेदार है। यह रूप सभी अस्तित्व के अंतिम बिंदु को दर्शाता है, जहाँ सब कुछ भस्म हो जाता है और राख में बदल जाता है। आध्यात्मिक साधक के लिए, यह अज्ञान, अहंकार और सभी आसक्तियों के विनाश का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे अंतिम मुक्ति (मोक्ष) प्राप्त होती है। यह भयानक फिर भी अंततः परोपकारी शक्ति है जो सभी भ्रमों को समाप्त करके सृष्टि को शुद्ध और नवीनीकृत करती है।

973. स्वर्णाकर्षणभैरवाय

भैरव के उस रूप को नमन जो स्वर्ण को आकर्षित करते हैं और प्रदान करते हैं।

विस्तार : स्वर्णाकर्षण भैरव नाम तीन संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: स्वर्ण, आकर्षण और भैरव। भैरव का यह विशिष्ट स्वरूप धन और समृद्धि को आकर्षित करने की अपनी शक्ति के लिए विशेष रूप से पूजनीय है।

• स्वर्ण (Svarṇa): इस शब्द का शाब्दिक अर्थ "सोना" है। व्यापक अर्थ में, यह सभी प्रकार के धन, समृद्धि, शुभता और प्रचुरता का प्रतिनिधित्व करता है, चाहे वह भौतिक हो या आध्यात्मिक। सोना शुद्धता, अविनाशिता और दिव्य प्रकाश का प्रतीक है।

• आकर्षण (Ākarṣaṇa): इसका अर्थ है "आकर्षण," "अपनी ओर खींचना," या "चुंबकित करना।" यह किसी चीज को अपने प्रभाव क्षेत्र या अधिकार में खींचने की शक्ति को संदर्भित करता है।

• भैरव (Bhairava): जैसा कि पहले बताया गया है, भैरव शिव का एक उग्र रूप हैं, जो भय-नाशक और संरक्षक के सिद्धांतों का प्रतीक हैं।

स्वर्ण और समृद्धि के आकर्षक (The Attractor of Gold and Prosperity) इस प्रकार स्वर्णाकर्षण भैरव "भयंकर भगवान हैं जो स्वर्ण (और सभी समृद्धि) को आकर्षित करते हैं।" भैरव के इस विशेष पहलू का आह्वान भौतिक धन, वित्तीय स्थिरता और सांसारिक प्रयासों में सफलता प्रदान करने के लिए किया जाता है। धन से जुड़े कुछ अन्य देवताओं के विपरीत जो इसे विशिष्ट उद्देश्यों के लिए प्रदान कर सकते हैं, स्वर्णाकर्षण भैरव को धन के प्रत्यक्ष दाता के रूप में देखा जाता है, जो वित्तीय प्रवाह में आने वाली बाधाओं को दूर करते हैं और प्रचुरता सुनिश्चित करते हैं।

भौतिक धन से परे (Beyond Material Wealth) हालांकि मुख्य रूप से भौतिक समृद्धि से जुड़े हैं, "स्वर्ण" को आध्यात्मिक धन और आंतरिक चमक के रूप में भी प्रतीकात्मक रूप से समझा जा सकता है। "स्वर्ण" का आकर्षण किसी के जीवन में दिव्य आशीर्वाद, सकारात्मक ऊर्जा और शुभ परिस्थितियों को आकर्षित करने का संकेत दे सकता है, जिससे भौतिक प्रचुरता के साथ-साथ समग्र कल्याण और आध्यात्मिक विकास होता है। वह किसी के जीवन को "शुद्ध" करने में मदद करते हैं, जैसे सोना एक शुद्ध धातु है, गरीबी और नकारात्मकता को दूर करते हैं।

धन के संरक्षक (Guardian of Wealth) भैरव के एक रूप के रूप में, वह एक संरक्षक भी हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि प्राप्त धन का बुद्धिमानी से और धार्मिक उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाए, इसे नुकसान और दुरुपयोग से बचाते हैं। उनका उग्र पहलू यह सुनिश्चित करता है कि वह समृद्धि के प्रवाह में आने वाली आंतरिक (जैसे कमी की चेतना) और बाहरी (जैसे वित्तीय रुकावटें) दोनों बाधाओं को दूर करते हैं। उन्हें अक्सर सोने या रत्नों का एक बर्तन पकड़े हुए चित्रित किया जाता है, जो अथाह धन के दाता के रूप में उनकी भूमिका का प्रतीक है।

974. कालमालय

काल की माला धारण करने वाले या काल का प्रतिनिधित्व करने वाली खोपड़ियों की माला धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : नाम 'कालमालाय' काल (Kālá) और माला (Mālā) से व्युत्पन्न एक गहरा यौगिक शब्द है, जो शैव परंपरा के भीतर गहरा प्रतीकात्मक अर्थ रखता है।

काल (Kālá): इस शब्द का मुख्य अर्थ "समय" है। इसमें न केवल कालानुक्रमिक समय शामिल है, बल्कि वह परम विनाशकारी शक्ति भी शामिल है जो हर चीज का अंत करती है। इसे अक्सर काल के रूप में व्यक्त किया जाता है, जो सृष्टि, पालन और संहार को नियंत्रित करने वाला सर्वोच्च सिद्धांत है।

माला (Mālā): इसका अर्थ "माला" या "जपमाला" है। संदर्भ के आधार पर, एक माला विभिन्न सामग्रियों से बनी हो सकती है, जिनमें से प्रत्येक का विशिष्ट प्रतीकवाद होता है।

समय की माला जब "समय की माला" के रूप में व्याख्या की जाती है, तो कालमालाय भगवान कालभैरव को संदर्भित करता है जो स्वयं समय को एक आभूषण के रूप में धारण करते हैं। यह समय पर उनके पूर्ण प्रभुत्व का प्रतीक है। उनके लिए, समय एक रैखिक प्रगति नहीं है जो उन्हें बांधती है, बल्कि एक सजावटी आभूषण है, जो दर्शाता है कि वे सभी लौकिक चक्रों - अतीत, वर्तमान और भविष्य - को पार करते हैं और नियंत्रित करते हैं। वे समय की पकड़ से परे हैं; वे स्वयं समय हैं, और इसलिए, समय उनके अधीन है। यह यह भी दर्शाता है कि सभी घटनाएँ, सभी सृष्टि, सभी संरक्षण और सभी विनाश उनकी माला पर केवल मोती हैं, जो उनकी इच्छा और शक्ति से एक साथ पिरोए गए हैं।

खोपड़ियों की माला (कपालमाला) भैरव और तांत्रिक परंपराओं में, माला को अक्सर "कपालमाला" या "खोपड़ियों की माला" के रूप में निर्दिष्ट किया जाता है। माला में प्रत्येक खोपड़ी एक पिछले युग (कल्प), एक विलीन ब्रह्मांड, या एक पराजित अहंकार के सिर का प्रतिनिधित्व करती है। समय के भगवान के रूप में, वे अनगिनत युगों की खोपड़ियों को धारण करते हैं, यह दर्शाता है कि सभी रूप, चाहे कितने भी भव्य या शक्तिशाली क्यों न हों, अंततः उनकी परम शक्ति (काल) के आगे झुक जाते हैं। खोपड़ियाँ भौतिक शरीर की क्षणभंगुरता और भौतिक दुनिया की सीमाओं को पार करने से मिलने वाली परम मुक्ति का भी प्रतीक हैं। यह भक्तों को अस्तित्व की क्षणभंगुर प्रकृति और शारीरिक मृत्यु के बाद भी जीवित रहने वाली चेतना की परम वास्तविकता की एक कठोर याद दिलाता है। इस भयावह कल्पना का उद्देश्य वैराग्य (vairagya) और शाश्वत पर ध्यान केंद्रित करना है।

सर्वोच्च अधिकार का प्रतीक चाहे समय की माला के रूप में देखा जाए या खोपड़ियों की माला के रूप में, कालमालाय कालभैरव के सर्वोच्च अधिकार, अंतिम संहारक के रूप में उनकी भूमिका और अस्तित्व के चक्रों को नियंत्रित करने वाली उनकी अटल शक्ति के रूप में उनकी प्रकृति पर जोर देता है। वे ब्रह्मांडीय व्यवस्था को सख्ती से बनाए रखते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि सभी चीजें अंततः अपने स्रोत पर लौट आएं।

975. कलामालाय

सभी कलाओं और ब्रह्मांडीय विभाजनों की माला धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : कलामालाय नाम एक गहरा और बहुस्तरीय शब्द है जिसमें कलात्मक अभिव्यक्ति, ब्रह्मांडीय संरचना और काल की परम वास्तविकता शामिल है। यह दो संस्कृत शब्दों से बना है:

कला (Kālā): इस शब्द के कई महत्वपूर्ण अर्थ हैं जो यहाँ प्रासंगिक हैं: 1. कलाएँ या ललित कलाएँ: संस्कृत में, 'कला' कौशल, तकनीकों और विशेष रूप से 64 पारंपरिक कलाओं (चतुःषष्टि कला) को संदर्भित करती है, जिसमें संगीत, नृत्य, चित्रकला, कविता, वास्तुकला, ज्योतिष और विभिन्न शिल्प और विज्ञान शामिल हैं। 2. भाग या विभाजन: 'कला' एक छोटे भाग, एक विभाजन, एक अंश, या एक विशिष्ट माप को भी दर्शाती है। यह समय के विभाजनों (जैसे चंद्रमा का एक अंक या एक विशिष्ट समय इकाई) या ब्रह्मांड के विभाजनों पर लागू हो सकता है। 3. काल (समय): जबकि अपने अंतिम, विनाशकारी पहलू में काल (समय) के लिए अधिक सामान्य शब्द 'काल' (दीर्घ 'आ' के साथ) है, 'कला' भी समय के भीतर चक्रों और विभाजनों से संबंधित है।

माला (Mālā): इसका अर्थ है एक माला, मोतियों की एक लड़ी, या एक संग्रह।

सभी कलाओं का अवतार (सौंदर्यपरक आयाम) यह व्याख्या कालभैरव को सभी कलाओं और विज्ञानों के संरक्षक और स्वामी के रूप में उजागर करती है। वह रचनात्मकता, कौशल और ज्ञान का अंतिम स्रोत और अवतार हैं। कलाओं की एक माला का अर्थ है कि कलात्मक अभिव्यक्ति के सभी रूप उनसे उत्पन्न होते हैं और उन्हें अर्पित किए जाते हैं। एक साधक के लिए, उन्हें कलामालाय के रूप में ध्यान करना उनकी चुनी हुई कला के रूप में रचनात्मकता और महारत को प्रेरित कर सकता है, सौंदर्य और कौशल की हर सूक्ष्म अभिव्यक्ति में उनकी उपस्थिति को पहचानते हुए।

ब्रह्मांडीय विभाजनों की माला (ब्रह्मांडीय और लौकिक आयाम) इस अर्थ में, कालभैरव ब्रह्मांड के घटक भागों या विभाजनों से बनी एक माला पहनते हैं। यह संदर्भित करता है: • काल के विभाजन: काल के स्वामी (काल) के रूप में, वह सभी चक्रों, युगों, क्षणों और काल के विभाजनों - सबसे छोटे अंश से लेकर सबसे बड़े युगों और कल्पों तक - से सुशोभित हैं। वह लौकिक अस्तित्व का ताना-बाना हैं। • अस्तित्व के विभाजन: यह अस्तित्व के विभिन्न तलों, मौलिक विभाजनों (पंचभूत), तत्वों (वास्तविकता के सिद्धांत), और ब्रह्मांड की विभिन्न अभिव्यक्तियों को भी संदर्भित कर सकता है, जो सभी एक माला में मोतियों की तरह उनके दिव्य सार द्वारा एक साथ गुंथे और धारण किए हुए हैं।

विविधता में एकता माला की छवि महत्वपूर्ण है। जबकि विविध, एक माला में फूल या मोती एक सामान्य धागे से एकजुट होते हैं। इसी तरह, कलामालाय का अर्थ है कि कला के असंख्य रूपों और ब्रह्मांड के अनगिनत विभाजनों के बावजूद, सभी अंततः परस्पर जुड़े हुए हैं और कालभैरव की अद्वितीय, सर्वोपरि शक्ति और चेतना द्वारा एक साथ धारण किए हुए हैं। वह सभी बहुलता के पीछे का एकीकृत सिद्धांत हैं, सभी ज्ञान और अस्तित्व का अंतिम संश्लेषण हैं।

976. त्र्यम्बकाय

तीनों नेत्रों वाले, तीनों लोकों के स्वामी को नमन।

विस्तार : त्र्यंबक नाम हिंदू धर्मग्रंथों में एक गहरा और प्राचीन विशेषण है, जो प्रमुख रूप से भगवान शिव और विस्तार से, कालभैरव से जुड़ा है। इसकी व्याख्या आमतौर पर दो प्राथमिक तरीकों से की जाती है, दोनों संस्कृत यौगिक "त्रि" (तीन) और "अंबक" से उत्पन्न होते हैं।

तीन नेत्रों वाले (त्रिनेत्र) त्र्यंबक की सबसे आम व्याख्या "तीन नेत्रों वाले" को संदर्भित करती है। • तीसरा नेत्र: यह नेत्र, जो माथे पर स्थित होता है, त्रिनेत्र के नाम से जाना जाता है। यह पारंपरिक भौतिक नेत्रों (सूर्य और चंद्रमा, जो गतिविधि और शांति का प्रतिनिधित्व करते हैं) की द्वैतता से परे गहरी बुद्धि, अंतर्ज्ञान और विवेक का प्रतिनिधित्व करता है। कालभैरव का तीसरा नेत्र दर्शाता है: • सर्वज्ञता: अतीत, वर्तमान और भविष्य को एक साथ देखने की उनकी क्षमता, सभी समय की अंतर्संबंधता को समझना। • अज्ञान का विनाश: तीसरा नेत्र एक भयंकर, सर्व-भक्षी अग्नि उत्सर्जित करता है जो माया (भ्रम), अहंकार और अज्ञान के सभी रूपों को जलाकर भस्म कर देता है, जिससे आध्यात्मिक मुक्ति मिलती है। • अतिक्रमण: यह आध्यात्मिक दृष्टि और भौतिक दुनिया से परे देखने, परम वास्तविकता को समझने की क्षमता का प्रतीक है।

तीनों लोकों के स्वामी (त्रिभुवनेश्वर) "अंबक" की एक और व्याख्या "अंबु" मूल से ली गई है, जिसका अर्थ पानी या स्रोत है, या "अंबक" से एक संबंधवाचक संज्ञा के रूप में "माता-पिता" या "उत्पत्ति" का संकेत मिलता है। इस संदर्भ में, त्र्यंबक का अर्थ "तीनों का पिता/माता" है। • तीनों लोक (त्रिलोक): ये आमतौर पर संदर्भित करते हैं: • भू-लोक (पृथ्वी/मृत्युलोक) • भुवर-लोक (वायुमंडल/मध्यवर्ती लोक) • स्वर-लोक (स्वर्ग/दिव्य लोक) • प्रभुत्व और संप्रभुता: "तीनों लोकों के स्वामी" के रूप में, कालभैरव अस्तित्व के सभी स्तरों पर, स्थूल भौतिक से सूक्ष्म खगोलीय लोकों तक, पूर्ण प्रभुत्व और नियंत्रण प्रदर्शित करते हैं। वे इन लोकों के पालक, निर्माता और संहारक हैं। यह गुण उनकी ब्रह्मांडीय संप्रभुता और उनकी शक्ति की सर्व-समावेशी प्रकृति पर जोर देता है।

प्रतीकवाद साथ मिलकर, ये व्याख्याएं कालभैरव की भूमिका को सर्वोच्च आध्यात्मिक द्रष्टा के रूप में उजागर करती हैं जो अज्ञान को नष्ट करते हैं और पूरे ब्रह्मांड के परम शासक और संरक्षक भी हैं। उनके तीन नेत्र ज्ञान (ज्ञान), क्रिया (क्रिया) और इच्छा (इच्छा) के एक अभिन्न संतुलन का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो दिव्य की मूलभूत शक्तियां हैं।

977. त्रिपुरांतकाय

त्रिपुर नामक तीन राक्षसी नगरों का महान संहार करने वाले को नमन।

विस्तार : त्रिपुरांतक नाम त्रिपुरा (तीन नगरों का जिक्र) और अंतक (विनाशक या संहारक) का एक यौगिक है।

तीन राक्षसी नगर त्रिपुरा का तात्पर्य महान असुर वास्तुकार, मय द्वारा तारकासुर के पुत्रों, तारकाक्ष, विद्युन्माली और कमलाक्ष नामक दानव भाइयों के लिए निर्मित तीन स्वर्गीय नगरों से है। ये नगर अविश्वसनीय रूप से शक्तिशाली थे, सोने, चांदी और लोहे से बने थे, और एक अभेद्य किले में गतिमान और एकजुट हो सकते थे। ब्रह्मा से वरदान प्राप्त कर इन नगरों के निवासी अहंकारी हो गए और ब्रह्मांड को आतंकित करने लगे, जिससे देवताओं (देवों) को भी शिव के हस्तक्षेप की तलाश करनी पड़ी।

त्रिपुरा के संहारक शिव ने अपने भयंकर रूप में इन नगरों को नष्ट करने का कार्य किया। इस ब्रह्मांडीय घटना को त्रिपुरांतक-लीला के नाम से जाना जाता है। विभिन्न देवताओं और तत्वों से बने एक ही बाण से, शिव ने तीनों नगरों और उनके निवासियों को भस्म कर दिया। इस कार्य ने बुराई को नष्ट करने और ब्रह्मांडीय व्यवस्था को बहाल करने की शिव की परम शक्ति को प्रदर्शित किया।

प्रतीकात्मक व्याख्या दार्शनिक रूप से, त्रिपुरा के विनाश का गहरा प्रतीकात्मक अर्थ है: • तीन गुणों पर नियंत्रण: तीन नगर तीन गुणों (सत्व, रजस, तमस) का प्रतिनिधित्व करते हैं जो व्यक्तिगत आत्मा को भौतिक संसार से बांधते हैं। शिव द्वारा त्रिपुरा का विनाश भौतिक अस्तित्व के चक्रों से मुक्ति और इन गुणों को पार करने का प्रतीक है। • अज्ञान का विनाश: नगर चेतना की तीन अवस्थाओं (जागृत, स्वप्न और सुषुप्ति) या तीन शरीरों (स्थूल, सूक्ष्म और कारण) का भी प्रतीक हैं जो स्वयं के वास्तविक स्वरूप को अस्पष्ट करते हैं। शिव, त्रिपुरांतक के रूप में, उस अज्ञान का नाश करते हैं जो जीव (व्यक्तिगत आत्मा) को इन सीमित अवस्थाओं से बांधता है, जिससे तुरीय (अतींद्रिय) अवस्था प्राप्त होती है। • अहंकार और इच्छा पर विजय: त्रिपुरा के राक्षसी निवासी अहंकार (अहंकार), इच्छाओं (काम) और आसक्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो दुख का स्रोत हैं। शिव का कार्य इन आंतरिक शत्रुओं के विनाश का प्रतीक है, जो आध्यात्मिक प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करता है।

इस प्रकार, भगवान शिव त्रिपुरांतक के रूप में उस परम शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं जो भ्रम को भंग करती है, बुराई का उन्मूलन करती है, और आत्मा को भौतिक अस्तित्व की बेड़ियों से मुक्त करती है, जिससे उसे मोक्ष (मुक्ति) की ओर ले जाती है।

978. सर्वाभिचारहन्त्रे

सभी काले जादू और दुर्भावनापूर्ण मंत्रों के परम संहारक को नमन।

विस्तार : सर्वाभिचारहन्त्रे नाम कालभैरव के लिए एक गहन और सुरक्षात्मक विशेषण है, जो तीन भागों से बना है: सर्व, अभिचार और हन्त्रे।

सर्व (Sarva): इस संस्कृत शब्द का अर्थ है "सभी," "प्रत्येक," या "पूर्ण।" यह कालभैरव की शक्ति के सर्वव्यापी स्वरूप को दर्शाता है। उनकी दुर्भावना का विनाश किसी विशिष्ट प्रकार या दायरे तक सीमित नहीं है, बल्कि यह अंधकारमय प्रथा के हर कल्पनीय रूप तक फैला हुआ है।

अभिचार (Abhicāra): यह शब्द विशेष रूप से "काला जादू," "द्वेषपूर्ण मंत्र," "जादू-टोना," "नेक्रोमेंसी," "बुरी तांत्रिक क्रियाएं," या किसी अन्य प्राणी को नुकसान पहुँचाने, नियंत्रित करने या नष्ट करने के इरादे से की गई किसी भी अनुष्ठानिक क्रिया को संदर्भित करता है। इसमें नकारात्मक गुप्त प्रथाओं के सभी रूप शामिल हैं।

हन्त्रे (Hantre): "हन्" (मारना, वध करना, नष्ट करना) धातु से व्युत्पन्न, "हन्त्रे" का अर्थ है "विनाशक," "वध करने वाला," या "पराजित करने वाला।"

काले जादू का परम विनाशक (The Ultimate Destroyer of Black Magic) जब संयुक्त किया जाता है, तो सर्वाभिचारहन्त्रे कालभैरव को सभी प्रकार के काले जादू और द्वेषपूर्ण मंत्रों के परम और पूर्ण विनाशक के रूप में दर्शाता है। यह गुण एक भयंकर रक्षक के रूप में उनकी भूमिका को उजागर करता है जो न केवल ऐसी नकारात्मकता को दूर करता है बल्कि उसके स्रोत और प्रभावों को पूरी तरह से नष्ट कर देता है। वह सभी बुरी गुप्त प्रथाओं के लिए सर्वोच्च मारक हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि कोई भी अंधकारमय शक्ति उन लोगों के खिलाफ सफल नहीं हो सकती जो उनकी सुरक्षा चाहते हैं।

द्वेषपूर्ण शक्तियों से रक्षा (Guard against Malevolent Forces) इस नाम से कालभैरव की भक्ति किसी भी प्रकार के आध्यात्मिक हमले, मानसिक हानि या बुरी नज़र के खिलाफ उनकी शक्तिशाली सुरक्षा के लिए एक आह्वान है। भक्त उन्हें तब पुकारते हैं जब उन्हें लगता है कि वे ऐसी कुटिल प्रथाओं का निशाना बन रहे हैं, और तत्काल और निर्णायक हस्तक्षेप चाहते हैं। उनकी शक्ति इतनी पूर्ण है कि यह सबसे शक्तिशाली और जटिल काले जादू के अनुष्ठानों को भी बेअसर करने वाली मानी जाती है।

धर्म और व्यवस्था के पुनर्स्थापक (Restorer of Dharma and Order) कालभैरव का यह पहलू ब्रह्मांडीय व्यवस्था (धर्म) के संरक्षक के रूप में उनके कार्य को रेखांकित करता है। काला जादू इस व्यवस्था का एक विकृति और उल्लंघन है, जिसका उद्देश्य पीड़ा और अराजकता पैदा करना है। ऐसे कृत्यों को नष्ट करके, कालभैरव संतुलन बहाल करते हैं और निर्दोषों की रक्षा करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि आध्यात्मिक और भौतिक कल्याण द्वेषपूर्ण हस्तक्षेप के बिना फल-फूल सके। वह इस सिद्धांत का प्रतीक हैं कि अंततः अच्छाई बुराई पर सबसे निश्चित तरीके से विजय प्राप्त करती है।

979. परकृत्यनिषूदनाय

दूसरों द्वारा की गई बुरी तांत्रिक क्रियाओं का नाश करने वाले को नमन।

विस्तार : पराकृत्यनिशूदनाय नाम एक यौगिक संस्कृत पद है जो कालभैरव के एक विशिष्ट, सुरक्षात्मक और दुर्जेय पहलू को दर्शाता है, विशेष रूप से दुर्भावनापूर्ण शक्तियों और गुप्त प्रथाओं के संबंध में।

नाम की व्युत्पत्ति: • पराकृत्य (Parākṛtya): यह शब्द "दूसरों द्वारा किए गए कार्यों" या "बाहरी एजेंसियों द्वारा किए गए कर्मों" को संदर्भित करता है। एक विशिष्ट संदर्भ में, विशेष रूप से तांत्रिक और आध्यात्मिक परंपराओं में, यह "बुरी जादुई अनुष्ठानों," "काला जादू," या "दुर्भावनापूर्ण गुप्त प्रथाओं" को दर्शाता है जो विरोधियों द्वारा किसी व्यक्ति को नुकसान पहुँचाने के लिए किए जाते हैं। इसका तात्पर्य विनाश या दुर्भाग्य के लिए इरादा की गई बाहरी, अक्सर अनदेखी, शक्तियों या मंत्रों से है। • निषूदनम् / निषूदनाय (Niṣūdanam / Niṣūdanāya): इसका अर्थ है "हत्यारा," "विनाशक," "विजेता," या "दमनकर्ता।" यह किसी चीज़ को पूरी तरह से मिटाने या रद्द करने के कार्य को दर्शाता है।

काला जादू और दुर्भावनापूर्ण शक्तियों का विजेता: यह नाम स्पष्ट रूप से कालभैरव को सभी प्रकार के जादू-टोना, शाप और नकारात्मक मंत्रों के खिलाफ अंतिम रक्षक के रूप में नामित करता है जो एक भक्त की ओर निर्देशित होते हैं। वह दिव्य शक्ति है जो न केवल ऐसे बुरे प्रभावों को बेअसर करती है बल्कि उनके मूल और प्रभाव को पूरी तरह से नष्ट कर देती है। उनकी उपस्थिति सबसे शक्तिशाली मंत्रों को तोड़ने और काले जादू का अभ्यास करने वालों के बुरे इरादों को उलटने के लिए आह्वान की जाती है।

अदृश्य के विरुद्ध संरक्षक: आध्यात्मिक परिदृश्य में, कई परंपराएं दुर्भावनापूर्ण ऊर्जावान संस्थाओं या मानव चिकित्सकों के अस्तित्व को स्वीकार करती हैं जो काली शक्तियों का प्रयोग करते हैं। पराकृत्यनिशूदनाय भैरव की सर्वोच्च संरक्षक के रूप में भूमिका पर जोर देता है जो अपने भक्तों और ऐसे अनदेखे खतरों के बीच खड़ा होता है। वह आध्यात्मिक और ऊर्जावान वातावरण को शुद्ध करता है, उन लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करता है जो उनकी शरण लेते हैं।

दिव्य न्याय और संरक्षण का प्रतीक: यह गुण कालभैरव के दिव्य न्याय के वितरक के रूप में उनके पहलू को रेखांकित करता है। जब अन्यायपूर्ण साधनों से, विशेष रूप से गुप्त प्रथाओं के माध्यम से नुकसान पहुँचाया जाता है, तो भैरव निर्दोषों की रक्षा और अपराधियों को दंडित करने के लिए तुरंत हस्तक्षेप करते हैं। यह धर्म को बनाए रखने और अपने अनुयायियों को सभी प्रकार की दुर्भावनाओं, दृश्य और अदृश्य दोनों से बचाने के उनके अटूट संकल्प को दर्शाता है।

९८०. मंत्रमालिने

sacred मंत्रों की माला धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : मन्त्रमालिने नाम कालभैरव के लिए एक गहरा और उद्दीपक विशेषण है, जो "मंत्र" (पवित्र उच्चारण) और "मालिन्" (माला धारण करने वाला) को जोड़ता है।

मंत्र: पवित्र ध्वनि और दिव्य ऊर्जा हिंदू धर्म में मंत्र केवल एक शब्द नहीं है, बल्कि एक देवता (देवता) का ध्वनि-शरीर है। प्रत्येक मंत्र विशिष्ट दिव्य स्पंदनों और शक्ति से ओत-प्रोत होता है। इसे स्वयं देवता का सूक्ष्म रूप माना जाता है। जब उचित इरादे और सटीकता के साथ उच्चारण किया जाता है, तो एक मंत्र देवता की उपस्थिति और ऊर्जा का आह्वान करता है। मंत्र आध्यात्मिक मुक्ति के उपकरण हैं (मननात् त्रायते इति मंत्रः – जो चिंतन से बचाता है)।

मालिन्: माला धारण करने वाला मालिन् (माला से, माला) शब्द उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जो माला धारण करता है। एक माला सम्मान, सौंदर्य, आध्यात्मिक महत्व और ऊर्जा या गुणों के संचय का प्रतीक है। एक दिव्य संदर्भ में, एक माला देवता की शक्ति, गुणों या उन्हें अर्पित की गई भक्ति का प्रतिनिधित्व कर सकती है। उदाहरण के लिए, उग्र देवताओं द्वारा पहनी जाने वाली खोपड़ियों की माला मृत्यु और अहंकार पर विजय का प्रतीक है।

मंत्रों की माला जब कालभैरव को मन्त्रमालिने के रूप में वर्णित किया जाता है, तो यह गहरे अर्थों की कई परतों को दर्शाता है:

१. सभी मंत्रों का अवतार: वह सभी पवित्र मंत्रों का सार और स्रोत हैं। सभी मंत्र, उनके विशिष्ट देवता या उद्देश्य के बावजूद, अंततः अपनी शक्ति उनसे प्राप्त करते हैं। वह केवल उनसे सुशोभित नहीं हैं बल्कि उनके मूलभूत आधार हैं।

२. सभी मंत्र ज्ञान के स्वामी: मन्त्रमालिने के रूप में, वह सभी मंत्र ज्ञान (मंत्र विद्या) के सर्वोच्च स्वामी हैं। सभी तांत्रिक और वैदिक मंत्र उनके प्रभुत्व में हैं और उनकी शक्ति के माध्यम से प्रकट होते हैं। इसका तात्पर्य है कि उनकी कृपा से, कोई मंत्र सिद्धि (मंत्र अभ्यास में पूर्णता) प्राप्त कर सकता है।

3. दिव्य का ध्वनि-शरीर: यह नाम बताता है कि उनका अस्तित्व पवित्र ध्वनि के स्पंदनों से बना है। वह ब्रह्मांडीय ध्वनि, आदिम गुंजन (नाद) हैं जिससे सभी मंत्र उत्पन्न होते हैं और जिसमें सभी ध्वनि विलीन हो जाती है। उनका रूप केवल ठोस नहीं है, बल्कि दिव्य ध्वनि ऊर्जाओं का एक जीवंत ताना-बाना है।

4. मंत्रों के संरक्षक: वह मंत्रों की अखंडता और शक्ति की रक्षा करते हैं। वह सुनिश्चित करते हैं कि उनकी प्रभावकारिता को नियंत्रित करने वाले ब्रह्मांडीय कानूनों का पालन किया जाए।

एक गूढ़ अर्थ में, कालभैरव को मन्त्रमालिने के रूप में ध्यान करने से एक भक्त को सभी मंत्रों के स्रोत से जुड़ने, उनके गहरे स्पंदनों को समझने और पवित्र ध्वनि की शक्ति के माध्यम से आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करने में मदद मिलती है।

981. सर्पमालिने

जीवित, दिव्य सर्पों की माला धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : नाम सर्पमालिने (सर्पमाली) भगवान कालभैरव का वर्णन करता है कि वे ऐसे हैं जो स्वयं को सर्पों की माला से सुशोभित करते हैं। यह प्रतिमा हिंदू शास्त्र में, विशेष रूप से शिव से जुड़े देवताओं के लिए, अत्यधिक प्रतीकात्मक है।

सर्पों की माला (सर्प-माला) "सर्प" शब्द सर्पों या साँपों को संदर्भित करता है, और "मालिन्" या "मालिने" का अर्थ है "जो माला पहनता है।" पारंपरिक फूलों की माला के विपरीत, कालभैरव (और शिव) जीवित, अक्सर विषैले, सर्पों को पहनते हैं। यह केवल एक सौंदर्यपूर्ण चुनाव नहीं है बल्कि इसका गहरा आध्यात्मिक और प्रतीकात्मक अर्थ है।

ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं और मृत्यु पर प्रभुत्व सर्प, विशेष रूप से कोबरा, आदिम ऊर्जा (कुंडलिनी), सृष्टि और विनाश के ब्रह्मांडीय चक्रों, लौकिक शक्ति और मृत्यु के प्रतीक हैं। उन्हें आभूषण के रूप में धारण करके, कालभैरव इन शक्तियों पर अपना पूर्ण प्रभुत्व प्रदर्शित करते हैं। वे मृत्यु और विष की पहुँच से परे हैं, अमरता और जीवन तथा मृत्यु को नियंत्रित करने की शक्ति का प्रतीक हैं। सर्प की विषैली प्रकृति, जिस पर विजय प्राप्त कर उसे आभूषण के रूप में धारण किया गया है, उनकी सबसे शक्तिशाली और खतरनाक ऊर्जाओं को भी रूपांतरित करने और पार करने की क्षमता का प्रतीक है।

निर्भयता और शुभता जबकि सर्प भय उत्पन्न कर सकते हैं, कालभैरव पर उनकी उपस्थिति उनकी पूर्ण निर्भयता (अभय) को दर्शाती है। भक्तों के लिए, उन्हें इस प्रकार सुशोभित देखना सुरक्षा की भावना पैदा करता है; यदि वे ऐसे खतरनाक जीवों को नियंत्रित करते हैं, तो वे निश्चित रूप से अपने अनुयायियों को सभी हानियों से बचा सकते हैं। इसके अलावा, कुछ परंपराओं में सर्पों को शुभ भी माना जाता है, जो उर्वरता, पुनरुत्पादन और दिव्य ज्ञान का प्रतिनिधित्व करते हैं।

शिव से संबंध यह गुण कालभैरव को उनके सर्वोच्च रूप, भगवान शिव से दृढ़ता से जोड़ता है, जिन्हें प्रसिद्ध रूप से नागेश्वर (सर्पों के स्वामी) के रूप में जाना जाता है और वे भी सर्पों को धारण करते हैं। यह इस बात पर जोर देता है कि कालभैरव एक उग्र अभिव्यक्ति हैं जो शिव के मूलभूत दिव्य गुणों और ब्रह्मांडीय अधिकार को साझा करते हैं।

काल पर नियंत्रण सर्पों का कुंडली बनाना और खोलना स्वयं समय (काल) का भी प्रतीक हो सकता है - इसकी चक्रीय प्रकृति, इसकी अथक गति, और अंततः, इसका विघटन। सर्पों को धारण करके, कालभैरव, काल भैरव के रूप में, समय पर अपने पूर्ण नियंत्रण का संकेत देते हैं।

982. स्वर्णाकर्षण भैरवाय

उन भैरव को नमन, जो भैरव का विशेष स्वरूप हैं और शक्ति के साथ स्वर्ण तथा धन को आकर्षित करते हैं।

विस्तार : स्वर्णाकर्षण भैरव नाम तीन संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है: स्वर्ण, आकर्षण और भैरव। भैरव के इस विशिष्ट रूप को धन और प्रचुरता को आकर्षित करने की अपनी अनूठी क्षमता के लिए पूजा जाता है।

• स्वर्ण: सोना, धन, संपत्ति स्वर्ण का शाब्दिक अर्थ "सोना" है। व्यापक अर्थ में, यह भौतिक धन, समृद्धि, शुभता और मूल्य के सभी रूपों का प्रतिनिधित्व करता है। सोने को एक शुद्ध, दिव्य धातु के रूप में देखा जाता है, जो परम समृद्धि और स्थिरता का प्रतीक है।

• आकर्षण: खिंचाव, चुंबकत्व, अपनी ओर खींचना आकर्षण का अर्थ है आकर्षित करने, अपनी ओर खींचने या अपनी ओर खींचने की क्रिया। यह एक चुंबकीय शक्ति, इकट्ठा करने और संचित करने की शक्ति का तात्पर्य है। आध्यात्मिक संदर्भ में, यह इच्छाओं को प्रकट करने और उन्हें वास्तविकता में लाने की शक्ति का प्रतीक है।

• भैरव: शिव का भयंकर और भय-नाशक पहलू जैसा कि स्थापित है, भैरव शिव का एक भयंकर रूप हैं, जो भयानक शक्ति और बाधाओं और भयों को नष्ट करने की परोपकारी क्षमता दोनों का प्रतीक हैं। जब स्वर्ण और आकर्षण के साथ जोड़ा जाता है, तो उनकी भयंकर ऊर्जा भौतिक समृद्धि की अभिव्यक्ति की ओर निर्देशित होती है।

सोने और धन को आकर्षित करने वाले स्वर्णाकर्षण भैरव को भैरव के विशिष्ट रूप के रूप में पूजा जाता है जो शक्तिशाली रूप से सोने और वित्तीय कल्याण के सभी रूपों को आकर्षित करते हैं। उन्हें ऐसे देवता माना जाता है जो समृद्धि प्रदान करते हैं, वित्तीय कठिनाइयों को दूर करते हैं और धन के संचय में सहायता करते हैं। यह आकर्षण केवल स्वार्थी लाभ के लिए नहीं है, बल्कि अक्सर व्यक्तियों, परिवारों और नेक प्रयासों के भरण-पोषण के लिए आह्वान किया जाता है।

प्रतीकवाद और दर्शन स्वर्णाकर्षण भैरव की पूजा इस समझ पर जोर देती है कि सांसारिक समृद्धि (अर्थ) भी धर्म (धार्मिक आचरण) के भीतर एक वैध खोज है और यह कि दिव्य को न केवल आध्यात्मिक मुक्ति के लिए बल्कि भौतिक कल्याण के लिए भी आह्वान किया जा सकता है। उनकी पूजा को धन सृजन में आने वाली बाधाओं को दूर करने, व्यावसायिक सफलता को बढ़ावा देने और संचित संपत्ति की रक्षा करने वाला माना जाता है। उन्हें अक्सर एक सुनहरे बर्तन को पकड़े हुए चित्रित किया जाता है, जो अनंत प्रचुरता का प्रतीक है। भक्त मानते हैं कि उनका आह्वान करके, वे उस ब्रह्मांडीय ऊर्जा का उपयोग करते हैं जो धन को नियंत्रित करती है और इसे अपने जीवन में खींचती है।

983. श्रीधराय

श्री (ऐश्वर्य, वैभव और समृद्धि) को धारण करने वाले को नमन।

विस्तार : श्रीधर नाम संस्कृत के शब्दों श्री (Shrī) और धर (Dhara) का एक यौगिक है।

श्री (Shrī): यह शब्द अत्यंत महत्वपूर्ण है और इसके अर्थ की कई परतें हैं। यह संदर्भित करता है: 1. महिमा, वैभव, राजसीपन, ख्याति। 2. समृद्धि, धन, प्रचुरता, सौभाग्य। 3. सौंदर्य, अनुग्रह। 4. दिव्यता, जिसे अक्सर देवी लक्ष्मी, विष्णु की पत्नी के रूप में व्यक्त किया जाता है। 5. आध्यात्मिक संदर्भ में, यह सर्वोच्च आध्यात्मिक ऊर्जा या दिव्य कृपा को संदर्भित कर सकता है।

धर (Dhara): इसका अर्थ है "धारण करने वाला," "वाहक," "समर्थक," या "स्वामी।"

सभी महिमा और वैभव का स्वामी इसलिए श्रीधर नाम का अर्थ है वह जो सभी प्रकार की शुभता, महिमा, सौंदर्य और दिव्य वैभव को धारण करता है, उसका स्वामी है या उसे वहन करता है। कालभैरव, इस पहलू के रूप में, केवल इन गुणों से सुशोभित नहीं हैं, बल्कि वे उनके स्रोत और अवतार हैं। वे सभी शानदार गुणों और दिव्य शक्ति के अंतिम भंडार हैं।

समृद्धि और सौभाग्य के दाता जबकि श्री को अक्सर देवी लक्ष्मी और विष्णु से जोड़ा जाता है, कालभैरव पर इसका प्रयोग भौतिक और आध्यात्मिक समृद्धि पर उनके सर्वोच्च अधिकार को दर्शाता है। वे अपने भक्तों को सौभाग्य, प्रचुरता और सफलता के अंतिम दाता हैं। यह भैरव के एक परोपकारी पहलू को उजागर करता है, जो उनकी शरण लेने वालों के कल्याण और समृद्धि को सुनिश्चित करता है।

दिव्य कृपा के वाहक गहरे आध्यात्मिक अर्थ में, श्रीधर का अर्थ है कि कालभैरव सर्वोच्च दिव्य कृपा के वाहक हैं। वे वह हैं जिनके माध्यम से आध्यात्मिक समृद्धि, ज्ञान और मुक्ति प्राप्त होती है। उनकी कृपा अज्ञानता को दूर करती है और साधक को परम सत्य और आंतरिक समृद्धि की ओर ले जाती है।

एकीकृत अभिव्यक्ति यह नाम इस बात पर जोर देता है कि कालभैरव, अपने भयंकर बाहरी रूप के बावजूद, दिव्य गुणों के पूरे स्पेक्ट्रम को समाहित करते हैं, जिसमें वे भी शामिल हैं जो पारंपरिक रूप से अन्य देवताओं को दिए जाते हैं। वे दिव्य की पूर्ण अभिव्यक्ति हैं, जो अपने भीतर परिवर्तन की शक्ति और सभी शुभता के सार को धारण करते हैं।

984. श्रीकराय

सभी दिव्य शुभता और धन के निर्माता और प्रदाता को नमन।

विस्तार : श्रीकराय नाम कालभैरव के लिए एक गहरा विशेषण है, जो दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों: श्री और कर से मिलकर बना है।

श्री (Shrī): इस प्राचीन और पूजनीय शब्द के कई अर्थ हैं। यह दर्शाता है: • शुभता, समृद्धि, आध्यात्मिक चमक और सौंदर्य। • दिव्य ऊर्जा, जिसे अक्सर देवी लक्ष्मी के रूप में व्यक्त किया जाता है, जो विष्णु की पत्नी हैं और बहुतायत और धन का प्रतिनिधित्व करती हैं। • आध्यात्मिक योग्यता, कृपा और महिमा।

कर (Kara): जिसका अर्थ है "बनाना," "करना," "उत्पन्न करना," या "करने वाला/निर्माता।"

शुभता के निर्माता (The Creator of Auspiciousness) जब संयुक्त किया जाता है, तो श्रीकर (श्री-कर) का शाब्दिक अर्थ है "श्री का निर्माता" या "वह जो श्री प्रदान करता है।" यह इंगित करता है कि कालभैरव वह परम स्रोत हैं जहाँ से सभी प्रकार की शुभता, समृद्धि और आध्यात्मिक आशीर्वाद उत्पन्न होते हैं। वह केवल श्री के प्राप्तकर्ता नहीं हैं, बल्कि इसके स्वयं के जनक और वितरक हैं।

धन के प्रदाता (भौतिक और आध्यात्मिक) (Bestower of Wealth - Material and Spiritual) यह पहलू भौतिक धन और आध्यात्मिक समृद्धि दोनों को समाहित करता है। श्रीकर के रूप में, वह अपने भक्तों को सांसारिक अर्थों में समृद्धि, सफलता और बहुतायत प्रदान करते हैं। हालांकि, इससे भी अधिक गहराई से, वह आध्यात्मिक धन प्रदान करते हैं: आंतरिक शांति, आत्म-साक्षात्कार, दिव्य कृपा और मोक्ष, जो श्री के उच्चतम रूप हैं। वह उन बाधाओं को दूर करते हैं जो किसी के सांसारिक कल्याण और आध्यात्मिक विकास के मार्ग में बाधा डालती हैं।

दिव्य अभिव्यक्ति का अवतार (Embodiment of Divine Manifestation) व्यापक अर्थ में, श्रीकर ब्रह्मांड को उसके गौरवशाली और शुभ रूपों में प्रकट करने में उनकी भूमिका को दर्शाता है। सृष्टि का प्रत्येक परमाणु, सौंदर्य और उद्देश्यपूर्ण अस्तित्व से ओत-प्रोत, उनकी श्री-निर्माण शक्ति को

दर्शाता है। उनका भयंकर रूप, हालांकि भयावह प्रतीत होता है, अंततः शुद्ध करने और सच्ची श्री को प्रकट करने के लिए एक मार्ग बनाने का कार्य करता है। नकारात्मकता और अज्ञानता को नष्ट करके, वह वास्तविक शुभता के पनपने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

इसलिए, श्रीकराय नाम कालभैरव को उस सर्वोच्च भगवान के रूप में पूजता है जो ब्रह्मांड और उसके प्राणियों पर सभी प्रकार की दिव्य शुभता और बहुतायत को सक्रिय रूप से उत्पन्न करते हैं, पोषण करते हैं और प्रदान करते हैं।

985. श्रीलाय

उत्तम, पवित्र और उत्कृष्ट चरित्र वाले प्रभु को नमन।

विस्तार : श्रीला (या Śrīla) नाम संस्कृत शब्द 'श्री' (Śrī) से लिया गया है, जिसके मात्र भौतिक धन से परे कई गहरे अर्थ हैं।

शुभता और दिव्यता (श्री) अपने मूल में, 'श्री' शुभता, दिव्यता, समृद्धि, चमक, सौंदर्य, कृपा और आध्यात्मिक भव्यता को संदर्भित करता है। यह अत्यधिक सम्मानित व्यक्तियों या देवताओं के लिए उपयोग किया जाने वाला एक पूजनीय उपसर्ग है, जो सम्मान और पवित्रता को दर्शाता है। जब एक विशेषण के रूप में उपयोग किया जाता है, तो 'श्रीला' इन दिव्य गुणों को उत्कृष्ट डिग्री में धारण करने का संकेत देता है।

महान और सदाचारी चरित्र इसलिए, 'श्रीला' ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जो आंतरिक कुलीनता, उदात्त चरित्र और अटूट सदाचार का प्रतीक है। यह एक ऐसे प्राणी की ओर इशारा करता है जिसके कार्य, विचार और स्वयं का सार पवित्रता, धार्मिकता और आंतरिक अच्छाई से चिह्नित है। यह केवल एक बाहरी प्रदर्शन नहीं है बल्कि अस्तित्व की एक आंतरिक स्थिति है।

उत्कृष्ट और गौरवशाली यह शब्द उत्कृष्टता और महिमा का भी अर्थ है। यह एक ऐसे प्राणी का वर्णन करता है जिसकी प्रकृति इतनी पूर्ण रूप से व्यवस्थित और आध्यात्मिक रूप से उन्नत है कि वह एक स्वाभाविक भव्यता और वैभव को विकीर्ण करता है। यह उत्कृष्टता सभी आयामों - नैतिक, आध्यात्मिक और सौंदर्यवादी - को समाहित करती है।

पूर्णता का आदर्श कालभैरव पर लागू होने पर, यह दर्शाता है कि उनके भयंकर और दुर्जेय पहलू में भी, ब्रह्मांडीय विनाश और न्याय की सतह के नीचे, एक अत्यंत शुद्ध, महान और अंततः परोपकारी चरित्र निहित है। उनके कार्य, चाहे वे भयानक हों या सुरक्षात्मक, धर्म (धार्मिकता) को बनाए रखने और प्राणियों को मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करने के एक दिव्य, सदाचारी इरादे से उत्पन्न होते हैं। वह आध्यात्मिक पूर्णता और चरित्र का अंतिम आदर्श हैं, जो अपने सच्चे भक्तों के लिए शुभ परिणाम लाते हैं।

986. श्रीनिवासाय

जो समस्त महिमा और समृद्धि (श्री) के पवित्र और शाश्वत निवास स्थान हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : श्रीनिवास (अक्सर श्रीनिवास के रूप में लिखा जाता है) नाम कालभैरव के लिए एक गहरा और भावपूर्ण नाम है, जो दो महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों: श्री और निवास का संयोजन है।

श्री: श्री (श्री) संस्कृत में एक बहुआयामी शब्द है, जो निम्नलिखित का प्रतिनिधित्व करता है: 1. शुभता, समृद्धि, धन और प्रचुरता। 2. महिमा, वैभव और सौंदर्य। 3. दिव्य शक्ति और कृपा। 4. अंततः, यह दिव्य माँ, लक्ष्मी, भाग्य की देवी का एक ब्रह्मांडीय गुण है, और किसी भी पूजनीय देवता या व्यक्ति के लिए एक सम्मानजनक उपाधि भी है।

निवास: निवास (निवास) का अर्थ है: 1. एक निवास स्थान, घर या आवास। 2. एक स्थायी घर या विश्राम स्थल।

समस्त महिमा और समृद्धि का निवास जब संयुक्त किया जाता है, तो श्रीनिवास का अर्थ है "श्री का निवास" - वह जिसमें सभी शुभता, समृद्धि, महिमा और दिव्य शक्ति शाश्वत रूप से निवास करती है। इसका तात्पर्य है कि कालभैरव केवल इन गुणों के प्राप्तकर्ता नहीं हैं, बल्कि उनके मूलभूत स्रोत, उनके अंतिम आश्रय हैं। उनका सार ही इन दिव्य गुणों से बना है और उन्हें विकीर्ण करता है।

ब्रह्मांडीय भंडार श्रीनिवास के रूप में, कालभैरव को ब्रह्मांडीय धन के अंतिम भंडार के रूप में चित्रित किया गया है, न केवल भौतिक धन, बल्कि आध्यात्मिक कल्याण, ज्ञान और ब्रह्मांड की अंतर्निहित सुंदरता और व्यवस्था भी। कालभैरव का यह पहलू उनके भयानक भैरव रूप के विपरीत लग सकता है, लेकिन हिंदू धर्मशास्त्र में, उग्र रूप अक्सर विरोधाभासी रूप से सर्वोच्च परोपकार और सुरक्षात्मक गुणों को समाहित करते हैं, जो उचित व्यवस्था (धर्म) सुनिश्चित करते हैं जिससे समृद्धि उत्पन्न होती है।

आशीर्वाद के दाता जो भक्त उन्हें श्रीनिवास के रूप में पूजते हैं, वे केवल भय और बुराई से सुरक्षा ही नहीं, बल्कि सभी प्रकार की समृद्धि और कल्याण की प्राप्ति भी चाहते हैं। वह उन लोगों को सफलता, प्रचुरता और शुभता प्रदान करते हैं जो उनके प्रति समर्पण करते हैं, क्योंकि वह स्वयं वह स्रोत हैं जिससे ये आशीर्वाद प्रवाहित होते हैं। यह नाम अस्तित्व में सभी अच्छी चीजों के दाता और पालक के रूप में उनके परोपकारी पहलू पर जोर देता है।

987. सदाशिवाय

जो शाश्वत रूप से शुभ, परोपकारी, और समस्त शुभ का स्रोत हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : सदाशिवाय नाम दो संस्कृत शब्दों - सदा और शिव - से बना एक गहरा विशेषण है।

सदा: इसका अर्थ है "हमेशा," "शाश्वत रूप से," "लगातार।"

शिव: यद्यपि आमतौर पर त्रिमूर्ति में संहारक के रूप में जाने जाते हैं, शिव की व्युत्पत्तिगत जड़ "शुभ," "परोपकारी," "दयालु," "कृपालु," "शुद्ध," और "अच्छा" है।

शाश्वत रूप से शुभ और परोपकारी इसलिए, सदाशिवाय का अर्थ है "जो शाश्वत रूप से शुभ हैं," "जो हमेशा परोपकारी हैं," या "जो शाश्वत अच्छाई हैं।" यह नाम देवत्व के एक मूलभूत स्वभाव पर जोर देता है जो सभी अस्थायी अभिव्यक्तियों और कार्यों से परे है। जबकि शिव रुद्र या भैरव जैसे उग्र रूप धारण कर सकते हैं, उनका आंतरिक सार परम शुद्धता, शुभता और परोपकारिता का ही रहता है। यह पहलू भक्तों को याद दिलाता है कि सृष्टि, पालन और संहार के सभी ब्रह्मांडीय चक्रों के पीछे, अंतर्निहित वास्तविकता शुद्ध, शुभ-इच्छुक और अंततः भलाई के लिए है।

सभी अच्छाईयों का स्रोत सदाशिव, शिव के परम, पारलौकिक पहलू का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिन्हें अक्सर शैव धर्म में परब्रह्म का सर्वोच्च रूप माना जाता है। वह मूल स्रोत हैं जिससे त्रिमूर्ति सहित अन्य सभी अभिव्यक्तियाँ उत्पन्न होती हैं। इस रूप में, वह केवल अच्छा 'करते' नहीं हैं; वह स्वयं अच्छाई 'हैं'। वह शुद्ध, निर्मल चेतना (चित) और आनंद (आनंद) हैं जो पूरे ब्रह्मांड के मूल में हैं।

शिव का पाँचवाँ मुख (ईशान) कुछ परंपराओं में, सदाशिव को पाँच मुख वाले शिव के पाँचवें मुख (ईशान) के रूप में पहचाना जाता है, जिसे ऊपर की ओर देखते हुए दर्शाया गया है, जो भौतिक क्षेत्र और चारों दिशाओं से परे उनके पारलौकिक, सर्वव्यापी स्वरूप का प्रतिनिधित्व करता है। यह मुख उनकी शाश्वत शांति, स्थिरता और सभी ज्ञान के शासक तथा कृपा के दाता के रूप में उनकी भूमिका का प्रतीक है।

सभी अशुद्धियों को दूर करने वाले उनकी शाश्वत शुभता यह सुनिश्चित करती है कि वह प्राणियों के वास्तविक स्वरूप को अस्पष्ट करने वाली अशुद्धियों (मल) को दूर करने में लगातार लगे रहते हैं, जिससे उन्हें मोक्ष (मुक्ति) की ओर ले जाया जाता है। उनकी कृपा स्थिर और अटूट है।

988. श्रीस्वरूपकृतये

जिनकी उत्पत्ति और रूप दिव्य तेजोमय हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : श्रीईस्वरूपकृतये नाम एक गहन संस्कृत यौगिक है जो भगवान कालभैरव के आंतरिक और शानदार स्वरूप पर प्रकाश डालता है। यह कई प्रमुख घटकों में विभाजित होता है:

श्रीई (Śrīī): यह उपसर्ग हिंदू परंपराओं में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसे अक्सर "शुभता," "समृद्धि," "दिव्य चमक," "वैभव," "महिमा," "सौंदर्य," या "धन" के रूप में व्याख्यायित किया जाता है। यह उस शब्द को एक उच्च दर्जा प्रदान करता है जिसके पहले यह आता है, जो परम पूर्णता और दिव्य कृपा का सुझाव देता है। इस संदर्भ में, यह कालभैरव की अंतर्निहित, राजसी दिव्यता को संदर्भित करता है, न केवल एक गुण के रूप में बल्कि उनके सार के रूप में।

स्वरूप (Svarūpa): इस शब्द का अर्थ है "अपना रूप," "अपना सच्चा स्वभाव," "सार," या "अंतर्निहित संरचना।" यह किसी चीज की आंतरिक वास्तविकता, उसके मौलिक अस्तित्व को इंगित करता है, न कि एक सतही या अर्जित विशेषता को। जब इसे दिव्य के साथ प्रयोग किया जाता है, तो यह परम सत्ता के अव्यक्त, शुद्ध और शाश्वत सार को संदर्भित करता है।

आकृति (Ākṛti): इस शब्द का अर्थ है "रूप," "आकार," "दिखावट," "आकृति," या "अभिव्यक्ति।" यह किसी चीज के बोधगम्य, दृश्य या अनुभवात्मक पहलू को संदर्भित करता है।

एक साथ, श्रीईस्वरूपकृतये का अर्थ है "जिनका स्वरूप या अभिव्यक्ति दिव्य वैभव का है।"

दिव्य वैभव का अवतार यह नाम इस बात पर जोर देता है कि कालभैरव का भौतिक या प्रकट रूप (आकृति) केवल वैभव का प्रतिनिधित्व नहीं है, बल्कि अपने सार (स्वरूप) में, दिव्य वैभव (श्रीई) है। यह दर्शाता है कि उनका अस्तित्व परम शुभता, दीप्तिमान महिमा और दिव्य सौंदर्य का पर्याय है। उनके रूप का हर पहलू, चाहे वह उग्र हो या शांत, इस परम श्रीई से ओत-प्रोत है।

भैरव के स्वरूप का विरोधाभास जबकि भैरव को अक्सर नुकीले दांतों, गहरे रंग और खोपड़ियों की माला के साथ भयानक रूप में चित्रित किया जाता है, यह नाम इस बात पर जोर देता है कि यह भयानक रूप भी दिव्य वैभव का अवतार है। यह एक गहरे आध्यात्मिक सत्य की ओर इशारा करता है: सच्ची दिव्यता सौंदर्य या सुखदता की पारंपरिक धारणाओं से परे है। उनका "भयानक" रूप अपनी शक्ति, ब्रह्मांडीय नियम के प्रति अपनी अटल निष्ठा, और भ्रम और भय को भंग करने की अपनी क्षमता में शानदार है। उग्र पहलू ब्रह्मांडीय व्यवस्था और आध्यात्मिक मुक्ति के लिए आवश्यक दिव्य शक्ति की अभिव्यक्ति है, और इस प्रकार स्वयं एक अंतर्निहित दिव्य महिमा रखता है।

परम वास्तविकता यह नाम अद्वैत अवधारणा के साथ भी प्रतिध्वनित होता है जहां परम वास्तविकता (ब्रह्म) सत्-चित्-आनंद (अस्तित्व-चेतना-आनंद) के स्वभाव की है। उनके स्वरूप (सच्चे स्वभाव) में "श्रीई" आनंदम (परमानंद) और परम सत्ता की सर्व-समावेशी पूर्णता का संकेत देता है। वह केवल शक्तिशाली या ज्ञानी नहीं हैं, बल्कि अपने सबसे दुर्जेय अभिव्यक्तियों में भी स्वाभाविक रूप से गौरवशाली और शुभ हैं।

भक्त के लिए, कालभैरव को श्रीईस्वरूपकृतये के रूप में स्वीकार करना स्वयं ब्रह्मांड की अंतर्निहित दिव्यता और शुभता को पहचानने और परम भगवान की सर्व-समावेशी महिमा के प्रति समर्पण का एक कार्य है।

989. श्रीमते

जो यशस्वी, तेजस्वी और सभी दिव्य सौभाग्य से संपन्न हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : श्रीमते (Shrīmate) नाम संस्कृत शब्द 'श्रीमत्' से लिया गया है, जिसका अर्थ है "यशस्वी," "तेजस्वी," "भाग्यशाली," "धन और सौंदर्य से युक्त," "शानदार," या "समृद्धि से संपन्न।" इसका उपयोग अक्सर "पूजनीय" या "प्रख्यात" अर्थ वाले एक सम्मानजनक उपसर्ग के रूप में किया जाता है।

दिव्य महिमा और वैभव कालभैरव के रूप में, श्रीमते के रूप में संबोधित किया जाना उनकी अंतर्निहित दिव्य महिमा और राजसी वैभव को उजागर करता है। यह दर्शाता है कि वे एक बेदाग, चमकदार आभा में नहाए हुए हैं जो परम वास्तविकता के रूप में उनके अस्तित्व से ही निकलती है। यह महिमा केवल बाहरी नहीं है बल्कि उनकी सर्वोच्च दिव्यता का एक आंतरिक गुण है, जो उनकी पूर्णता और परम शक्ति को दर्शाता है।

सभी शुभता और सौभाग्य के स्वामी "श्री" देवी लक्ष्मी से जुड़ा एक शक्तिशाली शब्द भी है, जो धन, समृद्धि, शुभता, सौंदर्य और सभी प्रकार के दिव्य सौभाग्य का प्रतीक है। जब इसे कालभैरव पर लागू किया जाता है, तो इसका तात्पर्य है कि वे ऐसे सभी शुभ गुणों के परम स्रोत और स्वामी हैं। वे केवल भौतिक अर्थों में धनी नहीं हैं, बल्कि आध्यात्मिक समृद्धि, दिव्य सौभाग्य और सर्व-समावेशी कल्याण के अवतार हैं। भक्त सांसारिक समृद्धि और आध्यात्मिक मुक्ति दोनों के लिए उनके आशीर्वाद की तलाश करते हैं, उन्हें उस स्रोत के रूप में पहचानते हैं जिससे सभी अच्छी चीजें निकलती हैं।

परम संप्रभु श्रीमते शब्द सर्वोच्च अधिकार और संप्रभुता के विचार को भी व्यक्त करता है। यह ब्रह्मांड के परम शासक के रूप में उनकी स्थिति को रेखांकित करता है, जिनका शासन न्याय, समृद्धि और दिव्य व्यवस्था की विशेषता है। उनकी संप्रभुता यह सुनिश्चित करती है कि ब्रह्मांडीय कानूनों का पालन किया जाए और सभी लाभ, चाहे भौतिक हों या आध्यात्मिक, अंततः उनकी दिव्य इच्छा से वितरित किए जाते हैं।

पूजनीय और प्रख्यात श्रीमते की सम्मानजनक प्रकृति इस बात पर जोर देती है कि कालभैरव सर्वोच्च श्रद्धा और आदर के योग्य हैं। वे अपने कर्मों में प्रख्यात, अपनी बुद्धिमत्ता में सर्वोच्च और अपनी शक्ति में अद्वितीय हैं, जो उन्हें ब्रह्मांडीय व्यवस्था में सबसे पूजनीय इकाई बनाते हैं।

990. श्रीहाराय

वे, जो अयोग्य व्यक्तियों से समृद्धि छीन सकते हैं, अथवा वे विनाशक जो श्री से सुशोभित हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : श्रीहाराय नाम एक गहरा और बहुआयामी विशेषण है, विशेष रूप से भगवान शिव और उनके भयंकर स्वरूप भैरव से जुड़ा हुआ है। यह एक यौगिक पद है, जो मुख्य रूप से "श्री" (Shrī) और "हर" (Hara) से व्युत्पन्न है, जिसमें चतुर्थी विभक्ति का अंत "आय" (aya) है।

श्री (Shrī): इस शब्द के अर्थ अत्यंत समृद्ध हैं। • समृद्धि, धन, शुभता: सबसे सामान्यतः, श्री समृद्धि, भाग्य और शुभता को संदर्भित करता है, जिसे अक्सर देवी लक्ष्मी के रूप में व्यक्त किया जाता है। • सौंदर्य, वैभव, महिमा: यह सौंदर्य, चमक, महिमा और ऐश्वर्य को भी दर्शाता है। • दिव्य शक्ति: व्यापक अर्थ में, श्री दिव्य शक्ति और श्रेष्ठता का प्रतीक हो सकता है।

हर (Hara): इस मूल शब्द की दो प्राथमिक व्याख्याएँ हैं: 1. दूर करना, नष्ट करना, हटाना: शिव से जुड़े होने पर यह सबसे सामान्य अर्थ है। हर शिव के हजार नामों में से एक है, जिसका अर्थ है "हटाने वाला" या "नष्ट करने वाला"—वह जो पापों, दुखों, आसक्तियों और अंततः, एक चक्र के अंत में ब्रह्मांड को नष्ट करता है। 2. ले जाना, धारण करना, रखना: श्रीहर के संदर्भ में यह कम सामान्य है, लेकिन इसका अर्थ "जो धारण करता है" या "जो रखता है" भी हो सकता है।

इनका संश्लेषण करते हुए, श्रीहाराय भैरव के स्वरूप में शक्तिशाली अंतर्दृष्टि प्रदान करता है:

1. अयोग्य के लिए समृद्धि का संहारक: भैरव जैसे भयंकर देवता के संदर्भ में यह सबसे सामान्य और शक्तिशाली व्याख्या है। न्याय के परम वितरक के रूप में, भैरव श्रीहर के रूप में उन लोगों की समृद्धि, धन और शक्ति को तुरंत छीनने की भूमिका निभाते हैं जो दुष्ट, अन्यायपूर्ण, अनैतिक हैं, या जिन्होंने अपने ऐश्वर्य का दुरुपयोग किया है। वह सुनिश्चित करते हैं कि गलत तरीके से प्राप्त लाभ या दुर्भावनापूर्ण उद्देश्यों के लिए उपयोग किया गया धन स्थायी लाभ प्रदान न करे। यह पहलू एक दुर्जेय दंडदाता (दण्डधर) के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है जो अधर्मी के सतही लाभों को भंग करके ब्रह्मांडीय संतुलन को बहाल करता है।

2. वह संहारक जो श्री (महिमा/शुभता) से सुशोभित है: एक अन्य व्याख्या यह स्वीकार करती है कि अपने विनाशकारी पहलू में भी, शिव/भैरव स्वाभाविक रूप से गौरवशाली और शुभ हैं। यहाँ "श्री" भौतिक धन को नहीं, बल्कि उनकी अंतर्निहित महिमा, दिव्य वैभव और उनसे निकलने वाली शुभता को संदर्भित करता है, भले ही वे विनाश कर रहे हों। यह दर्शाता है कि उनके विनाशकारी कार्य अराजक नहीं हैं, बल्कि एक दिव्य, उद्देश्यपूर्ण और अंततः शुभ ब्रह्मांडीय व्यवस्था का हिस्सा हैं। उनका भयंकर रूप स्वयं दिव्य सौंदर्य का एक रूप है, जिसमें एक भयानक भव्यता है।

3. माया और सांसारिक आसक्तियों को दूर करने वाला: भौतिक समृद्धि से परे, श्री भौतिक संसार (माया) के भ्रामक सौंदर्य और आकर्षण को भी संदर्भित कर सकता है। इस अर्थ में, श्रीहर वह है जो सांसारिक "श्री"—क्षणभंगुर सौंदर्य, धन और सफलता—के प्रति व्यक्ति की आसक्ति को "हटाता" या "नष्ट करता" है, जिससे भक्त को परम मुक्ति (मोक्ष) की ओर ले जाता है। इन बाहरी आवरणों को हटाकर, वह सच्चे आध्यात्मिक सार को प्रकट करते हैं।

4. वह जो श्री को धारण करता/रखता है: यह कम सामान्य व्याख्या का अर्थ होगा "वह जो समृद्धि, महिमा या दिव्य शक्ति रखता है।" यद्यपि व्याकरणिक रूप से संभव है, यह आमतौर पर भैरव के "हर" (संहारक) के सार को अन्य व्याख्याओं की तरह शक्तिशाली रूप से व्यक्त नहीं करता है। हालांकि, इसका अर्थ यह हो सकता है कि वह सभी प्रकार की श्री के परम स्रोत और स्वामी हैं।

संक्षेप में, श्रीहाराय कालभैरव को उस दुर्जेय देवता के रूप में पूजता है जो अन्यायपूर्ण या दुरुपयोग की गई समृद्धि को न्यायपूर्वक छीन सकता है, ब्रह्मांडीय शुद्धता सुनिश्चित कर सकता है, और भक्तों को सांसारिक आसक्तियों के बंधन से मुक्त कर सकता है, यह सब दिव्य वैभव और उद्देश्य के एक व्यापक ढांचे के भीतर।

991. श्रीमूखाय

जिनके पास गौरवशाली, शुभ और सुंदर मुखमंडल है, उन्हें नमन।

विस्तार : श्रीमखाय नाम श्री और मुख का एक यौगिक है, जो दिव्य उपस्थिति की गहन और बहुआयामी समझ को दर्शाता है।

श्री: यह शब्द अनेक अर्थों से समृद्ध है। यह मुख्य रूप से शुभता, समृद्धि, महिमा, सौंदर्य, चमक और दिव्य कृपा को दर्शाता है। आध्यात्मिक संदर्भ में, श्री को अक्सर लक्ष्मी, धन और भाग्य की देवी से जोड़ा जाता है, लेकिन व्यापक रूप से, यह दिव्य वैभव और शुभता के सभी रूपों का प्रतिनिधित्व करता है। यह दिव्य के एक अंतर्निहित, जीवंत गुण को इंगित करता है जो आशीर्वाद और कल्याण लाता है।

मुख: इसका सीधा अर्थ "चेहरा" है। हालांकि, दिव्य गुणों के संदर्भ में, "चेहरा" केवल एक भौतिक विशेषता नहीं है, बल्कि दिव्य की पहुंच, अभिव्यक्ति और उस पहलू का प्रतिनिधित्व है जिसके माध्यम से भक्त देवता को देखते और उनसे बातचीत करते हैं। चेहरा जागरूकता, भावना और

संचार का केंद्र बिंदु है।

गौरवशाली और शुभ मुख इस प्रकार, श्रीमखाय कालभैरव को उस रूप में संदर्भित करता है जिसका मुख स्वाभाविक रूप से गौरवशाली, दीप्तिमान और शुभ है। भयंकर देवता का यह पहलू, भैरव के अक्सर भयावह रूपों को देखते हुए, शुरू में विरोधाभासी लग सकता है। हालांकि, यह दर्शाता है कि उनके सबसे दुर्जेय रूपों के भीतर भी, भक्ति के साथ आने वालों के लिए दिव्य कृपा और परोपकार की एक अंतर्निहित धारा है। उनका मुख, हालांकि अधर्मी के लिए कठोर हो सकता है, अपने भक्तों पर आशीर्वाद, सुरक्षा और समृद्धि प्रदान करता है।

दिव्य सौंदर्य और कृपा का प्रतीक उनका "सुंदर मुख" पारंपरिक सौंदर्य से परे है; यह पूर्ण ब्रह्मांडीय व्यवस्था, दिव्य करुणा और अटूट न्याय का सौंदर्य है। यह अपनी पारलौकिक प्रकृति में सुंदर है, जो परम सत्य और निर्माता की अंतर्निहित अच्छाई को दर्शाता है। यह मुख (चेहरा) सभी दिव्य वैभव और प्रकाश का स्रोत है, जो उन लोगों के लिए अंधकार और भय को दूर करता है जो उसमें सांत्वना चाहते हैं।

समृद्धि और कल्याण के दाता श्री के धारक के रूप में, उनका मुख उस स्रोत का प्रतीक है जिससे सभी प्रकार की समृद्धि, आध्यात्मिक विकास और कल्याण उत्पन्न होता है। उनके श्रीमख को देखना आशीर्वाद प्राप्त करना और एक शुभ उपस्थिति से अनुग्रहित होना है जो आत्मा को शुद्ध और उन्नत करता है।

992. शिवाय

परम शुभकारी, परम सत्य स्वरूप को नमन।

विस्तार : 'शिव' (Śivāya) नाम शायद परिवर्तन के भगवान का सबसे मौलिक और सार्वभौमिक रूप से मान्यता प्राप्त विशेषण है, जो केवल नामकरण से परे जाकर हिंदू दर्शन में सर्वोच्च सत्ता के सार को ही समाहित करता है।

परम शुभ शिव का शाब्दिक अर्थ "शुभ", "मंगलमय", "परोपकारी" और "कृपालु" है। यह पहलू कल्याण, सौभाग्य और मुक्ति (मोक्ष) के अंतिम प्रदाता के रूप में उनकी भूमिका को संदर्भित करता है। जबकि उनका रूप भयंकर (भैरव के रूप में) प्रतीत हो सकता है, यह अंतर्निहित शुभता सुनिश्चित करती है कि उनके विनाशकारी पहलू भी अंततः ब्रह्मांड और व्यक्तिगत आत्माओं के लाभ के लिए नवीनीकरण और शुद्धि की ओर ले जाते हैं। वह अस्तित्व के मूल में निहित अच्छाई और पवित्रता का प्रतिनिधित्व करते हैं।

परम सत्य दार्शनिक रूप से, शिव परमात्मा, परम सत्य और अव्यक्त, निराकार ब्रह्म का प्रतिनिधित्व करते हैं। वह गुणों से परे (निर्गुण) हैं और फिर भी सभी गुणों (सगुण) के स्रोत हैं। इस अर्थ में, वह केवल एक देवता नहीं हैं, बल्कि वह मूलभूत चेतना हैं जिससे सभी अभिव्यक्तियाँ उत्पन्न होती हैं और जिसमें वे वापस लौटती हैं। वह शाश्वत, अपरिवर्तनीय और पारलौकिक सत्य का प्रतीक हैं।

अशुद्धता के संहारक शिव की शुभता उनके संहारक के रूप में भी विस्तारित होती है। वह अज्ञान (अविद्या), अहंकार (अहंकार), भ्रम (माया) और सभी कर्म बंधनों को नष्ट करते हैं जो एक आत्मा को अपने वास्तविक स्वरूप को जानने से रोकते हैं। यह विनाश अराजक नहीं है, बल्कि शुद्धि का एक परोपकारी कार्य है, जो आध्यात्मिक विकास और ज्ञानोदय के मार्ग को प्रशस्त करता है।

चेतना का स्रोत शिव शुद्ध चेतना (चित) और आनंद (आनंद) से भी जुड़े हैं। वह शाश्वत ध्यानी हैं, जो अपने ही आनंदमय स्वरूप में लीन रहते हैं, साधकों को आंतरिक शांति और आत्म-साक्षात्कार की ओर मार्गदर्शन करते हैं। उनका नाम सांसारिक दुखों से परे जाने और गहरी, स्थायी आध्यात्मिक संतुष्टि की स्थिति प्राप्त करने की संभावना को जगाता है।

993. श्रीशान्ताय

ऐसे व्यक्ति को नमन, जो महिमामयी शांति और प्रशांतता का साकार रूप है।

विस्तार : श्रीशान्ताय नाम कालभैरव के लिए एक गहरा विशेषण है, जो दो संस्कृत शब्दों: श्री और शान्त को जोड़ता है, और उनके दिव्य स्वरूप के एक महत्वपूर्ण पहलू को दर्शाता है।

श्री: महिमामय और शुभ श्री (Shrī) शब्द बहुआयामी है और इसमें गहरे आध्यात्मिक अर्थ निहित हैं। यह दर्शाता है: • चमक और दीप्ति: यह एक शानदार, महिमामय, या चमकते हुए गुण को संदर्भित करता है। • शुभता: यह समृद्धि, सौभाग्य और सभी लाभकारी चीजों का प्रतीक है। • पूजनीयता: अक्सर पूजनीय नामों (जैसे श्री राम, श्री कृष्ण) के उपसर्ग के रूप में उपयोग किया जाता है, यह सम्मान, आदर और दिव्यता को व्यक्त करता है। इस संदर्भ में, श्री शान्त के गुण को बढ़ाता है, जो एक महिमामय, शुभ, या सर्वोच्च शांति का सुझाव देता है। यह केवल शांति नहीं है, बल्कि शांति का एक दिव्य, उज्ज्वल और आंतरिक रूप से परोपकारी रूप है।

शान्त: शांति और स्थिरता शान्त (Shānta) का सीधा अर्थ "शांत," "स्थिर," "शांत" या "निर्मल" है। भैरव का यह पहलू उनके उग्र स्वभाव को देखते हुए विरोधाभासी लग सकता है, लेकिन यह एक गहरा आध्यात्मिक सत्य प्रकट करता है। भैरव का भयानक रूप अंततः ब्रह्मांडीय व्यवस्था की स्थापना और धर्म की रक्षा के लिए है। एक बार जब "द्वैत पूरी तरह से अस्तित्व में समाहित हो जाता है, तो शांति होती है।"

उग्रता और शांति का विरोधाभास कालभैरव को अक्सर उन लोगों के लिए भयानक चित्रित किया जाता है जो भ्रम और अहंकार से चिपके रहते हैं, लेकिन वे अपने भक्तों के लिए परम शांति का स्रोत हैं। उनकी उग्रता संतुलन प्राप्त करने, विनाशकारी शक्तियों को नष्ट करने और संतुलन बहाल करने का एक साधन है। एक बार जब यह विनाशकारी कार्य पूरा हो जाता है, तो जो बचता है वह ब्रह्मांडीय व्यवस्था की गहरी स्थिरता है - एक महिमामय शांति। वह उस शांति का प्रतीक है जो सभी अराजकता और नकारात्मकता के नष्ट होने के बाद उत्पन्न होती है।

आंतरिक स्थिरता आध्यात्मिक साधक के लिए, श्रीशान्ताय आत्म-साक्षात्कार और अपनी निम्न प्रकृति पर महारत के माध्यम से प्राप्त गहरी, आंतरिक शांति का प्रतीक है। भय, क्रोध और इच्छा जैसे आंतरिक शत्रुओं को नष्ट करके, भैरव अपने भक्तों को सर्वोच्च, उज्ज्वल और अटूट शांति की स्थिति प्रदान करते हैं। यह पूर्ण में पाई जाने वाली शांति है, घटनात्मक दुनिया की अशांति से परे शुद्ध चेतना की शांति।

994. श्रीवराहाय

महिमावान और उत्कृष्ट वरदान देने वाले को नमन।

विस्तार : श्रीवराहाय नाम श्री और वराह का एक यौगिक है।

श्री: यह उपसर्ग "यशस्वी," "शुभ," "तेजस्वी," या "दिव्य" का अनुवाद करता है। यह महिमा, समृद्धि, सौंदर्य और सम्मान को दर्शाता है।

वराह: इस शब्द का अर्थ है "वरदान देने वाला," "आशीर्वाद देने वाला," या "उत्कृष्ट।" संस्कृत में, "वर" का अर्थ "वरदान" या "आशीर्वाद" है, और "ह" "देने वाला" या "धारण करने वाला" को दर्शा सकता है। इसलिए, वराह का अर्थ है वह जो वरदान धारण करता है या प्रदान करता है। हालांकि, यह ध्यान रखना भी महत्वपूर्ण है कि वराह विष्णु के तीसरे अवतार का नाम है, जहां वे पृथ्वी को ब्रह्मांडीय जल से बचाने के लिए एक जंगली सूअर का रूप लेते हैं। जबकि कालभैरव मुख्य रूप से

एक शैव देवता हैं, पुराण अक्सर विष्णु और शिव की आवश्यक एकता को दर्शाते हैं, और यह नाम शिव की सर्वोच्च शक्ति को दर्शाता है जिसमें सभी दिव्य कार्य शामिल हैं। इस संदर्भ में, यह शिव के परम प्रदाता और दाता के पहलू पर प्रकाश डालता है।

वरदानों का यशस्वी दाता जब संयुक्त किया जाता है, तो श्रीवराह कालभैरव की भूमिका पर जोर देता है जो अपने भक्तों को वांछित वरदान प्रदान करने वाले यशस्वी और उत्कृष्ट परोपकारी हैं। यह केवल भौतिक इच्छाओं को पूरा करने के बारे में नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक आशीर्वाद, सुरक्षा और बाधाओं को दूर करने के बारे में भी है जो सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों तरह की समृद्धि की ओर ले जाती हैं। वरदान देने की उनकी क्षमता उनकी सर्वोच्च शक्ति और उन लोगों के प्रति उनके परोपकारी स्वभाव से उत्पन्न होती है जो उनकी शरण लेते हैं।

समृद्धि और शुभता का स्रोत "श्री" का समावेश यह दर्शाता है कि कालभैरव द्वारा दिए गए वरदान आंतरिक रूप से शुभ होते हैं और समग्र कल्याण और समृद्धि की ओर ले जाते हैं। वह दिव्य स्रोत हैं जिससे सभी अच्छी चीजें निकलती हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि प्राप्त आशीर्वाद न केवल उत्कृष्ट हैं बल्कि भक्त के वास्तविक कल्याण के लिए भी अनुकूल हैं। यह पहलू उनके परोपकारी पक्ष पर प्रकाश डालता है, जो उनके भयानक रूप को उनके सच्चे भक्तों के प्रति उनकी दयालु प्रवृत्ति के साथ संतुलित करता है।

995. श्रीनिवासय

जिनमें सभी महिमा, धन और शुभता निवास करती है, उनको नमन।

विस्तार : श्रीनिवास नाम 'श्री' और 'निवास' का एक यौगिक है।

श्री: यह एक बहुआयामी संस्कृत शब्द है जो शुभता, समृद्धि, धन, महिमा, सौंदर्य, चमक और दिव्य कृपा का प्रतिनिधित्व करता है। इसे अक्सर देवी लक्ष्मी, विष्णु की पत्नी के रूप में व्यक्त किया जाता है। व्यापक अर्थ में, यह सभी सकारात्मक और वांछनीय गुणों को दर्शाता है।

निवास: इसका अर्थ है निवास स्थान, घर, या वह जिसमें "निवास करता है"।

समस्त शुभता का निवास स्थान श्रीनिवास के रूप में, कालभैरव सभी शुभ और गौरवशाली चीजों का अंतिम निवास स्थान और स्रोत हैं। वह केवल इन गुणों के धारक नहीं हैं, बल्कि वे सार और भंडार हैं जिनसे वे उत्पन्न होते हैं। इसका अर्थ है कि वह पूर्ण समृद्धि, दीप्तिमान सौंदर्य, सर्वोच्च कृपा और गहन शुभता का प्रतीक हैं। भक्तों के लिए, इसका तात्पर्य है कि उनमें शरण लेने से, वे सभी आशीर्वादों और सकारात्मक गुणों के स्रोत से जुड़ते हैं।

दिव्य महिमा का सर्वोच्च निवास यह नाम अस्तित्व के अंतिम आधार के रूप में उनकी भूमिका को रेखांकित करता है जहाँ सभी दिव्य महिमाएँ और उत्कृष्टताएँ स्वाभाविक रूप से निवास करती हैं। यह आध्यात्मिक और भौतिक कल्याण की एक अतिप्रचुरता का सुझाव देता है जो उनके दिव्य स्वभाव से प्रवाहित होती है।

भौतिक धन से परे जबकि "श्री" भौतिक धन को संदर्भित कर सकता है, एक आध्यात्मिक संदर्भ में, यह आंतरिक समृद्धि, आध्यात्मिक योग्यता और दिव्य ज्ञान और आनंद की प्रचुरता को दर्शाता है। इस प्रकार, श्रीनिवास उस एक का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसमें सभी आध्यात्मिक धन और पूर्णता शाश्वत रूप से निवास करती है। वह सांसारिक समृद्धि और परम आध्यात्मिक मुक्ति दोनों के दाता हैं, क्योंकि वह उस परम अवस्था के साक्षात अवतार हैं। वह स्वयं आशीर्वाद हैं।

996. श्रियाम् वराय

सभी यशस्वी प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ और अत्यंत उत्कृष्ट को नमन।

विस्तार : श्रीयाम्वराय नाम एक गहन वर्णनात्मक विशेषण है जो कालभैरव की सर्वोच्च स्थिति और अंतर्निहित महिमा को समाहित करता है। यह तीन संस्कृत तत्वों के एक यौगिक से लिया गया है: श्रीया, अम् और वराय, जो संयुक्त होने पर उनकी परम उत्कृष्टता और श्रेष्ठता को दर्शाते हैं।

श्रीया (Shriyā): यह शब्द "श्री" (Shirī) में निहित है, जो महिमा, चमक, वैभव, समृद्धि, सौंदर्य और शुभता को दर्शाता है। यह दिव्य तेज या अंतर्निहित भव्यता को संदर्भित करता है जो देवत्व की विशेषता है। कालभैरव के संदर्भ में, "श्रीया" उनके आंतरिक और अद्वितीय दिव्य गुणों, उनकी अंतर्निहित भव्यता और उनके अस्तित्व को घेरने वाले दीप्तिमान आभा की बात करती है। यह दिव्य सौंदर्य और समृद्धि, दोनों आध्यात्मिक और भौतिक का सार है।

अम् (Am): यह एक व्याकरणिक कण है जिसका उपयोग अक्सर संस्कृत में अतिशयोक्तिपूर्ण डिग्री बनाने के लिए किया जाता है, जिसका अर्थ है "सभी में से" या "के बीच"। जब इसे गुणों का वर्णन करने वाले विशेषणों या संज्ञाओं से जोड़ा जाता है, तो यह उन्हें उच्चतम संभव डिग्री तक बढ़ाता है।

वराय (Varaaya): "वर" (Vara) का अर्थ है "उत्कृष्ट," "सर्वश्रेष्ठ," "सर्वोच्च," "सबसे प्रतिष्ठित," या "सबसे पसंदीदा।" यह गुणवत्ता के शिखर, सबसे वांछित, या सबसे मेधावी को दर्शाता है। "वराय" वर का चतुर्थी विभक्ति रूप है, जिसका अर्थ है "सर्वश्रेष्ठ को" या "उत्कृष्ट को।"

संश्लेषित अर्थ: सभी यशस्वी प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ जब इन तत्वों को जोड़ा जाता है, तो श्रीयाम्वराय का अर्थ होता है "उन सभी में सर्वश्रेष्ठ जो महिमा रखते हैं" या "सभी यशस्वी प्राणियों में सबसे उत्कृष्ट।" यह नाम कालभैरव को सभी दिव्य अभिव्यक्तियों और प्रबुद्ध संस्थाओं के शिखर पर दृढ़ता से रखता है। यह घोषणा करता है कि उन लोगों में भी जिन्हें यशस्वी, दीप्तिमान और सर्वोच्च माना जाता है, कालभैरव परम और सबसे प्रतिष्ठित के रूप में खड़े हैं।

यह उपाधि उनकी परम सर्वोच्चता को न केवल एक भयंकर देवता के रूप में बल्कि परम वैभव और पूर्णता के अवतार के रूप में भी पहचानती है। वह केवल यशस्वी नहीं हैं, बल्कि महिमा का सार और मानक हैं, जो उन्हें सबसे पूजनीय और श्रद्धेय बनाते हैं। यह नाम उनकी पारलौकिक महिमा का सम्मान करता है, उन्हें सभी दिव्य गुणों के प्रतीक और आराधना के सर्वोच्च उद्देश्य के रूप में स्थापित करता है।

997. स्वर्णदाय

स्वर्ण के उदार दाता को नमन।

विस्तार : स्वर्णदाय नाम संस्कृत के शब्दों 'स्वर्ण' (सोना) और 'दाय' (देने वाला या प्रदान करने वाला) का एक यौगिक है।

स्वर्ण का दाता (भौतिक समृद्धि) शाब्दिक रूप से, स्वर्णदाय का अर्थ है "सोना देने वाला"। भौतिक अर्थ में, यह भैरव की अपने भक्तों को धन, समृद्धि और प्रचुरता प्रदान करने की क्षमता को संदर्भित करता है। सोना (स्वर्ण) को सार्वभौमिक रूप से धन, पवित्रता और स्थायी मूल्य के प्रतीक के रूप में मान्यता प्राप्त है। यह पहलू एक परोपकारी रक्षक के रूप में उनकी भूमिका से जुड़ता है जो गरीबी को दूर कर सकते हैं और अपने सच्चे अनुयायियों की सांसारिक आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं, उनकी भलाई और भौतिक सुरक्षा सुनिश्चित कर सकते हैं। इसका तात्पर्य है कि उनकी कृपा से, कोई केवल जीविका ही नहीं, बल्कि सच्ची समृद्धि भी प्राप्त कर सकता है।

आध्यात्मिक स्वर्ण का दाता (आध्यात्मिक धन) लाक्षणिक और आध्यात्मिक रूप से, "सोना" केवल भौतिक धन से कहीं अधिक गहरा अर्थ रखता है। यह आध्यात्मिक ज्ञान, आंतरिक विवेक, आत्मज्ञान और परम आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) का प्रतीक है। इस संदर्भ में, भैरव स्वर्णदाय के रूप में आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और समझ का अमूल्य "सोना" प्रदान करते हैं, मन को शुद्ध करते हैं और भक्त को परम सत्य की ओर ले जाते हैं। यह आध्यात्मिक सोना अविनाशी है और आत्मा की गहरी इच्छा को पूरा करता है।

उदारता की अभिव्यक्ति यह नाम भैरव की अपार उदारता और लौकिक और पारलौकिक दोनों लाभों को प्रदान करने की उनकी क्षमता पर प्रकाश डालता है। अपने भयंकर स्वरूप के बावजूद, वे अपने सच्चे भक्तों के प्रति गहरे परोपकारी हैं, उनकी इच्छाओं को पूरा करते हैं और उन्हें वह प्रदान करते हैं जो उनकी आध्यात्मिक और भौतिक यात्रा के लिए वास्तव में लाभकारी है। उनका देना केवल दान का कार्य नहीं है, बल्कि कृपा (अनुग्रह) का एक दिव्य प्रवाह है जो बनाए रखता है और उत्थान करता है।

९९८. सिद्धिदाय

सभी सिद्धियों और अलौकिक शक्तियों को प्रदान करने वाले (कालभैरव) को नमन।

विस्तार : सिद्धिदाय नाम संस्कृत के शब्द सिद्धि और दाय/दायिन का एक यौगिक है।

सिद्धिः इस शब्द का हिंदू दर्शन और आध्यात्मिक प्रथाओं में एक समृद्ध और बहुआयामी अर्थ है। • पूर्णता/उपलब्धिः यह आध्यात्मिक पूर्णता, आत्म-साक्षात्कार, या मुक्ति (मोक्ष) के अंतिम लक्ष्य की प्राप्ति को संदर्भित करता है। • अलौकिक शक्तियाँ: अधिक सामान्यतः, विशेष रूप से योगिक और तांत्रिक परंपराओं में, सिद्धियाँ अलौकिक शक्तियाँ, असाधारण क्षमताएँ, या जादुई करतब हैं। ये छोटी उपलब्धियों (जैसे भूत और भविष्य को जानना, जानवरों की बोली समझना) से लेकर प्रमुख शक्तियों (जैसे अणिमा, लघिमा, प्राप्ति, ईशिता, वशिता - छोटा होने, हल्का होने, कुछ भी प्राप्त करने, सब कुछ नियंत्रित करने, सब कुछ वश में करने की क्षमता) तक हो सकती हैं। • सफलता/पूर्तिः इसका अर्थ केवल सफलता, समृद्धि, या इच्छाओं और लक्ष्यों की पूर्ति भी हो सकता है।

दाय/दायिनः का अर्थ है "देने वाला," "प्रदान करने वाला," या "दाता।"

आध्यात्मिक पूर्णता (मोक्ष) के दाता सिद्धियों के उच्चतम अर्थ में दाता के रूप में, शिव, कालभैरव के रूप में, परम आध्यात्मिक पूर्णता प्रदान करते हैं, जो भक्त को आत्म-साक्षात्कार और जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति की ओर ले जाते हैं। यह सभी सिद्धियों में सबसे बड़ी सिद्धि है, जो सभी सांसारिक उपलब्धियों और अस्थायी शक्तियों से परे है।

अलौकिक शक्तियों (योगिक सिद्धियों) के दाता जो आध्यात्मिक साधक उनका पीछा करते हैं, उनके लिए कालभैरव विभिन्न अलौकिक शक्तियों के स्रोत और दाता हैं। ये शक्तियाँ, हालांकि अक्सर मोक्ष के लिए द्वितीयक मानी जाती हैं, दुनिया में सकारात्मक कार्य के लिए उपकरण या तंत्र और योग के मार्ग पर आध्यात्मिक उन्नति के संकेत हो सकती हैं। वह सभी रहस्यमय शक्तियों के परम स्वामी हैं।

इच्छाओं और लक्ष्यों के पूर्णकर्ता अधिक सांसारिक स्तर पर, सिद्धिदाय का अर्थ है कि कालभैरव अपने सच्चे भक्तों को सभी प्रयासों में सफलता और पूर्ति प्रदान कर सकते हैं, चाहे वे भौतिक हों या आध्यात्मिक। वह बाधाओं को दूर करते हैं और भक्त के लिए उनकी उचित इच्छाओं और लक्ष्यों को प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

इस प्रकार सिद्धिदाय नाम कालभैरव की सर्वोच्च परोपकारी शक्ति के रूप में भूमिका को रेखांकित करता है, जो अपने भयानक बाहरी रूप के बावजूद, अंततः स्वयं पर, दुनिया पर और स्वयं वास्तविकता पर महारत प्रदान करता है, जिससे पूर्ण उपलब्धि और पूर्ति होती है।

999. सिद्धाय

जो शाश्वत रूप से सिद्ध और पूर्ण प्राणी हैं, उन्हें नमन।

विस्तार : सिद्धाय (Siddhāya) नाम संस्कृत मूल "सिद्ध" से आया है, जिसका अर्थ है सफल होना, प्राप्त करना या सिद्ध करना। यह उस एक को संदर्भित करता है जो हर कल्पनीय तरीके से शाश्वत रूप से सिद्ध, पूर्ण और संपूर्ण है, जिसने सर्वोच्च आध्यात्मिक उपलब्धि और महारत प्राप्त की है।

सिद्ध और पूर्ण एक हिंदू दर्शन के संदर्भ में, विशेष रूप से योग और तंत्र जैसी परंपराओं में, एक 'सिद्ध' एक प्रबुद्ध प्राणी, एक सिद्ध गुरु होता है जिसने आध्यात्मिक मुक्ति (मोक्ष) प्राप्त की है और असाधारण शक्तियां (सिद्धियां) रखता है। भगवान कालभैरव को सिद्ध के रूप में नामित किया जाना उनकी परम पूर्णता की अंतर्निहित और शाश्वत स्थिति को दर्शाता है। वह कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो पूर्णता के लिए प्रयास कर रहा है बल्कि वह स्वयं पूर्णता है। यह पूर्णता सभी पहलुओं तक फैली हुई है: • आध्यात्मिक पूर्णता: वह सभी अपूर्णताओं, अज्ञानता, कर्म बंधनों और जन्म और मृत्यु के चक्रों से शाश्वत रूप से मुक्त हैं। • ब्रह्मांडीय महारत: वह सभी ब्रह्मांडीय नियमों, शक्तियों और रचनाओं के स्वामी हैं। ब्रह्मांड में उनके ज्ञान या नियंत्रण से परे कुछ भी नहीं है।

सिद्धियों के प्राप्तकर्ता सिद्ध आठ शास्त्रीय सिद्धियों (अष्ट सिद्धियों) और अन्य कम जादुई शक्तियों का भी संकेत देता है। सभी सिद्धियों के स्रोत और अवतार के रूप में, कालभैरव वह हैं जो योग्य भक्तों को ये शक्तियां प्रदान करते हैं। उनकी पूजा से आध्यात्मिक faculties का जागरण और असाधारण क्षमताओं की प्राप्ति हो सकती है, लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह आत्म-साक्षात्कार की अंतिम सिद्धि की ओर मार्गदर्शन करती है।

आध्यात्मिक अभ्यास का लक्ष्य एक आध्यात्मिक साधक के लिए, "सिद्ध" बनना अंतिम लक्ष्य है। कालभैरव को "सिद्ध" कहकर, भक्त उन्हें उस अवस्था के जीवंत अवतार के रूप में स्वीकार करते हैं - आध्यात्मिक पूर्णता का एक आदर्श। वह सभी आध्यात्मिक यात्राओं का अंतिम गंतव्य है, जहाँ सभी इच्छाएँ पूरी होती हैं, और सभी ज्ञान प्राप्त होता है। वह भक्तों को अपनी पूर्णता और अंतिम मुक्ति के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित करते हैं।

1000. भक्तानां स्वर्णदायकाय

अपने भक्तों को विशेष रूप से स्वर्ण प्रदान करने वाले को नमन।

विस्तार : भक्तानां स्वर्णदायकाय नाम कई महत्वपूर्ण संस्कृत शब्दों का एक यौगिक है जो कालभैरव के परोपकारी और भक्तिपूर्ण स्वभाव के एक विशिष्ट पहलू को प्रकट करता है।

• भक्तानां (Bhaktānām): यह "भक्त" का षष्ठी बहुवचन है, जिसका अर्थ है "भक्तों का" या "भक्तों को"। यह इस दिव्य कृपा के प्राप्तकर्ताओं को निर्दिष्ट करता है – वे जो वास्तव में उनके प्रति समर्पित हैं। यह देवता और भक्त के बीच पारस्परिकता के संबंध पर जोर देता है, जहाँ सच्ची भक्ति उनके आशीर्वाद को आमंत्रित करती है।

• स्वर्ण (Svarṇa): यह सार्वभौमिक रूप से मान्यता प्राप्त संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ "सोना" है। सोना, अपने भौतिक मूल्य के अतिरिक्त, गहरा प्रतीकात्मक महत्व रखता है। यह शुद्धता, समृद्धि, दिव्य प्रकाश, आध्यात्मिक धन और अविनाशीता का प्रतिनिधित्व करता है।

• दायकाय (Dāyākāya): यह शब्द "दायक" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "देने वाला" या "प्रदान करने वाला", और उदारता तथा देने के कार्य को दर्शाता है।

उदार दाता (भौतिक और आध्यात्मिक समृद्धि) (Generous Bestower - Material and Spiritual Prosperity) जबकि शाब्दिक व्याख्या भौतिक धन (सोना) के प्रदान करने की ओर इशारा करती है, गहरा आध्यात्मिक अर्थ महत्वपूर्ण है। कालभैरव, एक भयंकर अभिव्यक्ति के रूप

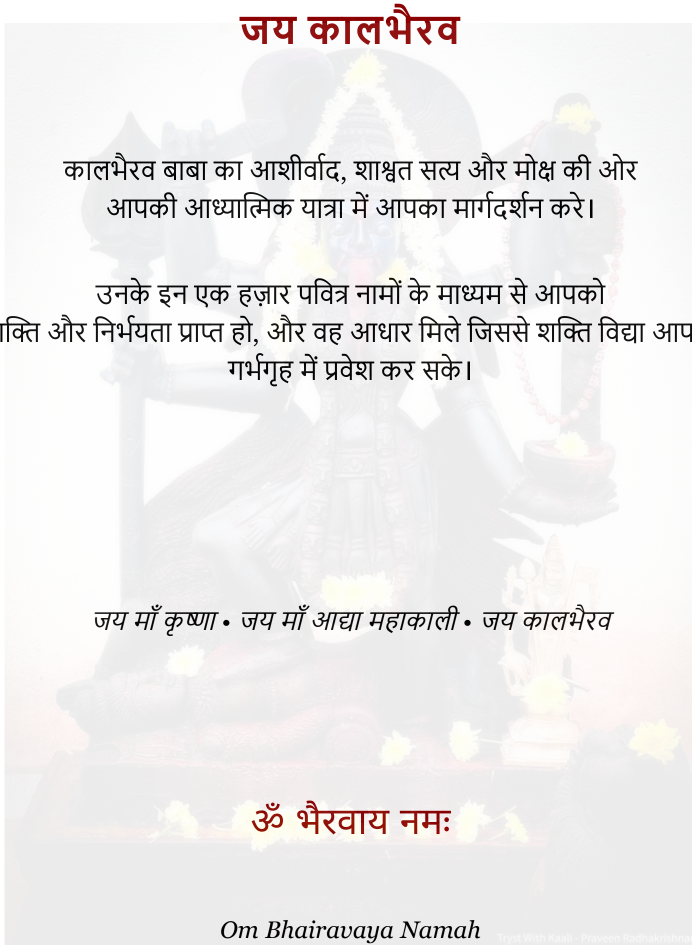
में, अक्सर बाधाओं और कर्मिक नकारात्मकताओं के विनाश से जुड़े होते हैं। जब वे "सोना" प्रदान करते हैं, तो यह केवल भौतिक धन ही नहीं, बल्कि परम आध्यात्मिक धन, शुद्धि और सभी रूपों में गरीबी को दूर करने का भी प्रतीक है – चाहे वह भौतिक भरण-पोषण की कमी हो, आध्यात्मिक समझ की कमी हो, या आंतरिक शांति की कमी हो।

धन और समृद्धि के संरक्षक (Guardian of Wealth and Prosperity) एक संरक्षक देवता के रूप में (अक्सर मंदिर के खजानों की रक्षा करते हुए), यह नाम अपने भक्तों के कल्याण और समृद्धि को सुनिश्चित करने में उनकी भूमिका पर प्रकाश डालता है। जो लोग उनके प्रति समर्पण करते हैं और भक्ति के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं, वे उनकी आजीविका सुनिश्चित करते हैं और उन्हें वित्तीय संकट से उबरने में मदद करते हैं।

स्वर्ण का प्रतीकवाद (Symbolism of Gold) कालभैरव द्वारा प्रदान किया गया "सोना" आंतरिक शुद्धि और आध्यात्मिक चमक का भी प्रतीक हो सकता है जो एक भक्त उनकी कृपा से प्राप्त करता है। यह भीतर के दिव्य का अनमोल बोध है, अपने सच्चे स्वरूप का सुनहरा सार है। जैसे सोना लचीला फिर भी अविनाशी होता है, वैसे ही भैरव द्वारा प्रदान किया गया आध्यात्मिक धन भक्त को लचीलापन और दिव्य से एक अटूट संबंध प्रदान करता है।

इस प्रकार, भक्तानां स्वर्णदायकाय कालभैरव को परम संरक्षक के रूप में चित्रित करता है जो अपने सच्चे भक्तों को उदारतापूर्वक लौकिक और शाश्वत "सोना" प्रदान करते हैं, जिससे उन्हें भौतिक आराम और आध्यात्मिक ज्ञान दोनों की ओर अग्रसर किया जाता है।

ॐ



जय कालभैरव

कालभैरव बाबा का आशीर्वाद, शाश्वत सत्य और मोक्ष की ओर
आपकी आध्यात्मिक यात्रा में आपका मार्गदर्शन करे।

उनके इन एक हज़ार पवित्र नामों के माध्यम से आपको
शक्ति और निर्भयता प्राप्त हो, और वह आधार मिले जिससे शक्ति विद्या आपके
गर्भगृह में प्रवेश कर सके।

जय माँ कृष्णा • जय माँ आद्या महाकाली • जय कालभैरव

ॐ भैरवाय नमः

Om Bhairavaya Namah